महाभारतम्।

বনপৰ্ব ৷

ন হ যি বেদ ব্যাদ প্র পীত ম্ শীলকণ্ঠবিরচিতয়া 'ভারতভাবদীপ'-সমাপ্রশ্লা টীকয়াত্বতম্

প্রাচীনার্য্য-বিদ্যান্তরাগিণঃ স্থবিখ্যাত-চতুর্ধুরি-বংশাবভৎসস্য

এীযুক্ত হরিশ্চন্দ্র দেব মহানুভাবস্ত

चकार्थनहां--- वार्यन **ठ**

শ্রীকালীবর বেদান্ত বাগীশ ভট্টাচার্থ্যেণ

সংস্ত প্রকাশিতম্।

(ভাষান্তরীকৃতঞ।)

--000---

এরামপুর।

আলুফে ড্ যন্তে

বীবছুন। থ বন্দোপাধাশরেন প্রবন্ধতামুক্তিত্ব।

এত্রীজগীশবো।

জয়তি।

-:::-

মহাভার[®]ীয় বন পর্ববঃ।

ष्ठी প वस् मृतया।

প্রকরণ	***	পৃষ্ঠা	পড়িক।
পাওবানাং বনগ্ৰন্	•••	ર	>
ব্রাক্ষণ যুধিতিরয়োঃ সম্বাদঃ	•••	۲	20
সেনক যুধিষ্ঠিরয়ো: স্থাদঃ	•••	٥.	۵
স্ধ্যোন(মাউশতক্ষ্	•••	२७	• •
যুধিষ্ঠিরদ্য হর্ষোপাদনা	•••	२७	8.
स्र्वाचा रवनामग्		,७१	3
বিছ্র প্রতরাফ্রয়োঃ সম্বাদঃ		400	2
বিহুর পাতিবয়োঃ সম্বাদঃ	•••	৩৭	>€
ধ্তরাক্ত সঞ্জো: সম্বাদঃ	•••	: 8₹	\$
শঞ্য বিভ্রয়োঃ সম্বাদঃ	•••	80	. 18
হ্ৰোধনাদীনাং মন্ত্ৰ।	***	84	\$
नगमटकोदनरशः मधामः	***	86	3
স্থান্তা উপাধানং	•••	Œ.o	9
প্ৰতিকাট্ট মৈতেরব্যুঃ সন্ধাদঃ	•••	45	> >4
कृर्वाधन रेषट्वजरहाः मचानः	***	48	. 8
क्वि द्रमावंश द्रकारः		49	3
लावरमर्गनार्थर कालानीनार			
বন গ্ৰহ		3 4	3

	*	. سکت	-4-5
শ করণ	***	পৃষ্ঠা	পঙ্জা
কৃষ্ণ সমীপে ক্রোপদ্যাঃ বিলাপ	:		
कृत्यन (जीशनाः मायुनाः		92	w
भाख्युक्षां मि मश्दथे कथनम्	•••	k-8	. ک
তৎ সবিভারেণ কথনম্		b &	59 , 6
পাতবানাং দৈতবনে গমনম্		, 879	۵
শুভিৰ মাৰ্কতেরয়োঃ সন্থাদঃ		# 258	<i>و.</i> ۱
বকদাল্ভ যুধিষ্ঠিরয়োঃ সম্বাদঃ	•••	259	۵ .
জৌপদী যুধিন্তিরয়ো: সম্বাদঃ ^৫	• • • •	25%	29
ভীম যুধিছিররো: সৃদ্রাদঃ	n :1	29¢	>5
পাত্তবন্যাসরোঃ সম্বাদঃ	•••	369	৬
व्यक्तिमा उभमार्थ शमानात्	যাগঃ		
অজ্নেস্য হিমালর গ্ননং			
ইক্রাতর্ন সম্বাদশ্যঃ	•••	227	20
মহর্ষি মহাদেবরোঃ সন্থাদঃ	•••	792	>>
' কিরাতার্জুনয়ে; সন্বাদঃ			
व्यर्क्न मभीरथ ममूख निक्थ	 नि		
নামাগমনঞ	•••	200	>
व्यक्त्नगामदावर्जी गमनः	•••	२১१	>
অৰ্জুনোৰ্বশো: সমাদঃ	•••	२ २ १	
रेख लामगार्क्नानार			
কথোপ কথনং	•••	२०७	\$
ধ্তরাইস্য পরিতাপঃ	•••	2.05	22
অৰ্জুনাৰ্থে পাশুবানাং পরিতা	역:	+02	s'
রুহদার মুখিতির রোঃ স র্থীদঃ	•••	२०५	•
न(नाभागानादृष्टः	•••	206	30
ममञ्जी अवश्यन्त्रताः मन	म2		La The Arts
इर्म ममज्ञत्स्याः ममापन	679	leen	a

কর্ম	পৃষ্ঠা	পড়িক
मभूत्रस्था विश्वस्था	२७३	6
हेळा नावण्या मधाणः नलामनगर्भ		•
मच्यान≃5ः ं	२७७	20
ষ্মাষ্ক্র সভারস্তান্তঃ		
मघश्रकी ननवृत्रवस्य	293	22
নলংপ্রতি ইন্দ্রাদীনাং বরদানং	২ 98	53
দেবগ্ৰ দ্বাপর কলীনাং কথোপ		
কখনং নল পুষ্ণরয়োদ্তিকীড়া [ঁ]		
নল দমরভেগ্রনগমনং ছিরণা		
শকুনিরভাত্তশ্চ	૨૧ ৬	· •
নলেন দমরস্তা; পরিত্যাগঃ	२৮७	۵
मभग्रखारिनाभः	ミアン	۵
সংশ্ৰ দময়ৰ্গাপ্ৰাসঃ	597	, 72
বাধ দমরন্তি সম্বাদঃ	\$25	8
দময়ন্ত্যাঃ পুনর্বিলাপঃ	.4>8	>
মারামর আশ্রমন্য রন্তান্তঃ	424	t
দমরন্তা ভূতীর বিলাপঃ	৾৽৽৽	24
र्याटिकः महनमञ्जा मर्ननः	٥٠8	34
ममत्रका (किमित्रोजशद्वत्यमनः	۷۵۵	1
ननकर्केटश्चाः मञ् षिः	928	20
ঋতুপর্ণ নগরে নলসাগমনং	474	20
नन कीरनद्याः क्रांश्रकश्यर	472	51
नम ममत्रद्रात्रद्रकार	650	30
विवर्धनशास ममग्रस्ताः श्रञ्जानः	૭ ૨ ૬	3
म्लना चार्यप्रश्चमश्चार विजीय		
অর্থর শ্চ_	6.50	•

প্রকরণ	•••	পৃষ্ঠা	পড়িক।
বাক্তক ঋতুপ্ৰহোঃ সম্বাদ	• • •	৩৩২	Œ
बलगा श्वमा भद्रीका	•••	৬৬৬	ά
নল কলি কথে পিকথনং	•••	ಆಲ್ಡ	8
अञ्चलन्मा विषट्डशयनः	• . •	680	>
কেশিনী বাত্তকয়োঃ সন্বাদঃ	•••	٠, ٩٤٥	. \$
नलहुअस्टलाः क्रथान्यक्थनः	*	່ອນເຂ	39
অতুপর্বনলয়েশঃ কথেপকখনং	•••	الله الله	•
নলসা পঞ্চরসমীপেগ্মনং প্রনূর্	ত	•	
ক্ৰীড়া রাজাপ্রাপ্তিক		৫১৩	30
অর্থনসা বিরহে পাওবানাং উ	্কগ্ৰ	७४७	>
यूर्धिकंत्र नात्रमस्याः मचानः	•••	७१०	2
ভীষা পুলস্তায়োঃ সম্বাদঃ ভীষাং ও	প্রতি		
পুলন্তসা-ভীর্থাদিফল কথনঞ্চ	•••	७१२	Œ
মঙ্গকমুনিবৃত্তানঃ	•••	৩৯৫	•
ধ্যৈ মু স্থিতিরয়োঃ কথোপকথনং	•••	848	2
ধৌমা কথিত তীর্থবৃত্তান্তঃ	•••	809	22
ধৌমাক সমীপে লোমণত আগ	1 মনং	٠	
লোমশ যুধিতি ট্য়োঃ কথোপক	ধনঞ্চ	884	2
যু ধিষ্ঠিরস্যতীর্থযাত্রা		869	20
গয়চরিত কথনং	•••	897	5 .
বাতাপি হন্তান্তঃ '	•••	8७२	Œ
অগন্তা পিতৃলোকয়ো: সম্বাদ:			
অগন্তান্ত রিবাহাদি বৃত্তান্তশ্চ	•••	ૃકૃષ્ઠ	20
ভৃগু তীর্থ রতাঁ হঃ জামদধ্য রাম সং	इ/म≈5	89	۵
কাদকের হৃত্যন্ত:	•••	895	>>
বিশ্বাপৰ্কত রক্তান্ত	•••	8%	28
কালকের বধরভাতঃ		843	30

		. (
প্রকরণ	•••	र्च है।	পঙ্জ।
সগর রাজোপাখ্যানং	. •••	848	59
* শ্বভ তপশী বৃত্তাতঃ	•••	Cop	24
सया ग्रामाभागानः	•••	477	28
कामनभा इंखारू:	•••	. 602	. 9
পাওবানাং , প্রভাসতীর্থে ।	গমনং		
যভূকূলস্য পরশার কথোপ	কথনঞ	¢85	> 1
छारता शिशां मर	•••	aar	8
'মুদাসুর স র্ক্তান্তঃ	•••	asa	৬
মান্ধাতৃকপাধ্যানং	•••	699	22
<i>শো</i> মক রন্তান্তঃ	•••	¢98	۲
শোন কপোতীয় রন্তান্তঃ	•••	arg	. 9
অফ্টাবক্রোপ্যাশ্যানং	•••	675	>
যরকীতরৈভ্য রম্ভান্তঃ		<i>۵۲۵</i>	24
মৈনাক প্রভৃতি পর্বভানাং	রভাষঃ	X	
ভীম যুধিষ্ঠিরয়োঃ কথো	পকথনং	•	
পাওবানাং হ্যবাছরাজ্যে গমন	\$3	७७ 8	5
নরকাহ্মর হতা ভঃ	•••	988	2
পাওবানাং গন্ধমাদন পর্কতে	গ্ৰনং	\$82	۵
দৌগদ্ধিক পুষ্পত্ত রভার	:		
ভীমহন্ত্মৎ সম্বাদশ্চ	***	৬৬•	>8
পাণ্ডবানাং ভীমান্বেবনে গম	रि		
পুনর্বদরিকার্ত্রমে প্রবেদন্ত	•••	466	33
ज ोञ्चरमा वशः 🚎	•••	900	3
পাওবানাং গদ্ধমাদন দৰ্শনম্	•••	950	3
व्यक्तित्व वृधिष्ठित्रकाः मधानः	•••	928	3
भविभानमा निधनह	•••	908	ď
भाखरानार क्रिकेन मनग्		906	7.2

প্রকরণ	•••	পৃষ্ঠা	পড়িক
মহ্ৰিগণ সহিত পাওবানাং	मर्भनः	989	` à
वर्ष्ट्रनमा প্রত্যাগমনং	• • •	9 ৫ २	33
इस्त्र मात्र मनश	•••	903	·. •
অৰ্কুন যুধিষ্ঠিররোঃ সম্বাদঃ	•••	465	•
নিবাভুকবচানাং বধঃ	•••	968	20
क्रियंगाश्रयतमार माननः देव	ত্যানাং	•	
निधनथः	***	956	•
जब मर्गन्र	•••	454	59 ,
লোমশাগমনং	•••	F.02	2
পাওবানাং দৈতবনে প্রনঃ	व्यादमः	४०७	2
षक्रभारत्व जीयमाक्रियनः	•••	F22	>
ভীমেনসহ মুধিষ্ঠিরস্য সাক্ষা	क दि:	P.78	•
অজগর খুধিতিরয়ো: সমাদ:	•••	20	ъ.
ভীমস্য মোচনং	***	24	20
পাণ্ডবানাং কামাকারণো	প্রত্যা-		
গমনং	4	505	2
মার্কতেয় বাক্যং	•••	680	9
বাৰণ মাহাজকখনৎ	•	F & 8	22
সরস্বতী তাক্ষ্যাসম্বাদঃ	•••	865	>>
रिवयराजी भी था। मर	•••	492	5
মার্কতের প্রন্ন:	•••	898	2
मार्कटल्य नावायन मचापः	•••	499	\$
কলিকৃত্য কথনং	•••	-7 205	53
হুৰিছিরাত্ম শাসনং	<i>i</i>	3:4	30
বামদেৰ চারতং	***	270	3
বক্শক্ সম্দঃ	•••	* Ex	1.5
শিবিরাজ ভাগ্যকথনং	100 m	*05°	39

कत्रन	•••	পৃষ	পতি্ক
যয়'তি চবিতং	•••	200	20 .
শিবিচরিতং	•••	200	ć \$
हे <u>ल</u> ज्राद्यां भी था। नः	•••	288	2
দান কথনং		589	2
ধ্রুমারো পাখানং	•••	247	. .
পতিরতোপাখনকং	•••	299	6.
बाचन नाथ मश्रीमः	•••	タ トフ	٣
আজিরসো পাখ্যানং	***	208Œ	30
ऋत्मा भाशानः	***	2090	78
মহ্ব গ্ৰহকথনং	•••	2025	24
ऋभ रूषः	•••	2200	. 2
कार्खितग्रसः	•••	2222	2
দ্ৰেপদী সভাভাষা সন্থাদঃ	•••	227 C	<u> </u>
घायगाः जा त्यागः	•••	>><9	\$
शक्षक्र इत्याधन मञ्जानः	•••	27.85	20
इर्र्याधनामीनाः इत्रगः	• • • •	2285	9
পাত্ৰগন্ধৰ মুদ্ধং	***	2248	¢
হুৰ্ব্যোধন মোকঃ	•••	2202	30
कर्व्हार्थाभन मन्नानः	•••	22 <i>9</i> 2	٢
হুৰ্যোধন প্ৰায়োপবেশনং	•••	22 42	34
ছুৰ্যোধন পুরপ্রবেশঃ	•••	2390	78
কর্ণনাদিধিজয়:	•••	2742	9
ष्ट्रिं। भन यणः	***	22P.P.	, >
সুমিজিরস্য চিন্ত।	•••	2798	3
इशक्दबा खनः	. •••	2299	3
बीहिएकोनि स्वयानः	•••	2222	•
इर्दाधनानदेव देवामना जि	ধ্য প্রাছণ্	3250	

প্রকরণ	•••	গৃষ্ঠা	পঙ্ক
পাত্যাত্রমে হ্রাসনা তিখা	গ্ৰহণং…	ેર ફક	\$
- त्योभनी काष्टिकामा मश्यान		2552	3 " " "
জয়দ্রথেন দ্রোপদী হরণং	•••	3403	>
क राजा (थन जार्जी नमा यूकार (उ	रोशनी-		•
মোকণং জয়ত্রথ গ্রহণঞ	••• c	३२७ ९	2 ,
जरुप्त थ विष्याक्र नेश		\$208	۵,
व्याभाषान -	•••	25 3 0	3
রামাদি কুবেরাণ,মুৎপতিঃ	•	2266	3 a
वानगानीना प्रशिक्त अवला	g*5	2362	2
रानदामीनागू<পতिः	***	३२१७	α
ৰামস্য বনবাসঃ	•••	2590	C
নীতাহ রণং	•••	2542	Œ
निषं विक्ल्याकनः	•••	25 FB	>
দীতায়াঃ দাৰ্না	•••	2422	\$
দীতা রাবণ সম্বাদঃ	•••	2522	>
रु म्पा ने जारश्यनः	•••	2003	2
সেত্ৰস্কাৰং	•••	3009	22
त्रामगानका अट्यमं:	•••	2020	3
রামরাবনয়ো যুদ্ধং	•••	2029	۵
কুন্তকর্ণা রণে গ্রমনং	•••	५७२२	9
কুন্তকৰ্দ্য বধঃ	•••	५५ २	20
देखिकित्जा द्रावश्वमनः	•••	ડ ે ડેર્જ	9
इस्टिक्टिंग निधनः	•••	2050	۵
র(বণস্য বধঃ	•••	2002	5
রামসা রাজাতিবেকঃ	•••	3008	>
वृधिष्ठिक्ता आश्रीमनर		2087	3
সাবিত্রী জবহুতাতঃ স্বর্থ	5	:480	

ক্ রণ	•••	পূৰ্চা	পড়িক।
সাবিত্রী জন্ম রক্তান্তঃ স্বয়ম্বরশ্চ	•••	5080	5
দাবিত্রী বিবাহেনারদান্ত্রমতিঃ	•••	5089	20
সাবিত্রী বিবাহঃ	•••	১৩৫২	' \$
সাবিত্রী পতিসমভিব্যাহারে অর	गानी	·	٠
প্রবেশঃ	• • •	3008	.20
সতাৰলোঃত্যঃ পুনজীবনং আ	অমে-		
প্রত্যাগ্রমনঞ		2062	\$8
হ্যমৎসেনস্য বিলাপঃ	•••	2098	5
হামংসেনসা রাজালভঃ	•••	2000	2
কর্ণ স্ব্যায়োঃ সম্বাদঃ	***	2025	2 ·
कूरी मख व्याखिः	•••	20%0	5
কুন্তী স্থায়োঃ সম্বাদঃ	•••	५८०८	2.5
কৰ্ণসা জননং কুন্তা সলিলে নিশে	দ-পান প্র	28°¢	٩
রাধায়াঃ কর্ণ গ্রহণং	•••	2802	u
कर्गा वर्षक्थन (शामीनः	•••	2872	9
হুগেন অরণী হরণং পাতবানাং	মুগা-		
দ্বেষণ প্ৰ	* • •	2829	2
পাগুৰানাং সরোদর্শনং ভীমার্গ	नीनांश		
মরণঞ	•••	১ 8১৬	2
যক্ষ্থিঠিরযোঃ প্রশেষ্তরং	•••	\$800	७,
পাত্তবানাং প্রজীবনং	•••	₹88 8	30
ত্রামাণার অরণী প্রদানং অ	<u>कां ठ</u>		
वाटमाटल्यानं = इ	***	2862	. 44
শুদ্ধিপ	बः भूलखा।		
	म्पूर्वर ।		

মহাভারতীয় বনপর্বাণঃ

শুদ্ধি পত্ৰম্।

			-::-	
			টীকায়::	
পৃষ্ঠাক্তাহ		পঙ্জো	• অশুদ্ধিঃ	শুদ্ধি:
ર	•••	• 5	ভক্তে	च रक
ર	•••	• •	ডোপদী	(जोशनो
	•••	8	জগদান্তর,ত্মত্বং	জগদস্তরাত্মহং
8	****	ર	শত্ৰৰ •	শত্ৰৰ
Œ	•••	৬	শ্ৰতঃ	च्कार्जः
Œ	•••	ล	गशीशान्	गत्रीश्रान्
æ	•••	20	শস্তি	শান্তি
৬	•••	৬	ধন্যাবয়ত্যাদিনা	ধন্যাইত্যাদিনা
b	•••	>	ञन भ्रय	जनभग्रखम्(ना
ک	•••	8	m/5 to and	সংক ্ষ্প
22	•••	ર	विद्वांधी '	বিরোধী
22	•••	39	রি ন্ত র	্বি স্ত র
20	•••	Œ	मूजार	মুখ্যং
20	•••	b "	বিয়য়েন	বিষয়েণ
20	•••	28	ৰুক্তেৰু	যুক্তেয়ু
30	•••	39	শুভিলাষ	खम जिन्।य
22	•••	20	বুজ	ু বুদ্ধি
22	•••	≈ 3.α	বশ্ব	যশ্য
२२	•••	ь	তোজোভি	তেজে†ভি
		•		3-111-

বিভায়তি

আপায়কঃ

চতুথী

. বিভাজরতি

আপ্যারকঃ

ठजूशी

₹8

२8

२७

30

\$8

				•
পৃষ্ঠায়াৎ	•	পঙ্কো	অশুদ্ধিঃ	শুদ্ধি:
२৮	•••	5	मस्तरेमकाञ्चा र	সর্বস্যেকাত্মাৎ
७२	•••	9	প্রমণে '	প্রমাণে
७७	•••	8	মাষ্	শ্মাৰ্থং
७७	: •••	৬	পগুৰাৰাং	পাণ্ডবাৰাং
v 8	e	৩	হ্রাত্মাক	হুরাত্মভি:
¢ o	•••	ર	<u>অে</u> চং	• শ্রেষ্ঠং
¢ o	•••	8	হিরণ ং	হিরণ্যং
42	•••	৩	ক শ্বহৎ	ক <i>শ্চি</i> ৎ
æ	***	2•	বিভাস্ত	বিক্ৰান্ত
48	•••	٠° •	মিভ পাঠে	মিভিপাঠে
ሬን	•••	\$		₹•
95	•••	20	কুপিতেয়্	কুপিতেয়ু
৮২	•	2	ব্ছিষ্ মি	ব হি ৰ্যামি
b 9	•••	₹	<u> পৃছত</u>	পৃছতি
۵ د	•••	٠	শৌর্ব্যভূত	শৌধ্যভূত
20	•••	ં	` নিশ্বতৈঃ	निर्मू रेकः
20	•••	. 9	देन की द्य	रेनलंक शीर श
86	•••	8	দিহ্যচ্ছ বিতং	বিহাচ্ছ বিতং
\$ ¢	•••	ર	<u> </u>	3
200	•••	5	হি দ	হ্বদি
300	•••	« २	नग्रः	न्य:
202	•••	, ৬	শ্র স্ত	শ্র হত
222	•••	ર .	প্রাগন্তেন	् थागर न् डान
>><	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	હ	ধেয়ৰ্	ধ্যেয়ন্
220	•••	ર	অতিমাহধ্যায়	অগ্রিমাধ্যার
250	•••	3	ল্ড	ন্তা
300	•••	3	अभि	াৰ হ

পৃষ্ঠায়	12	পঙ্জৌ	অশুদ্ধি:	3
30	8	3	আত্রাপীতি	অত্তাপীতি
20	8	2	আগতাগমং	অগতাগমং
3 03	6	9	প্রকদেণ	প্রকরেণ
.28	•	2	ক্ৰুকো	কু দো
:80	• •••	8	শকো	শত্তো
>80		9	मृ देश	मू रेथ
288	•••	9	ভারত	ভারত
386	•	৯	স্থল ক্ৰীক	সূল হক্ষ
789	• > •	5 ₹	অশতে	অশুতে অপিতৃ
000	•••	૭	वारिक	चारक
200	•••	24	গুপ্য।	গোপ্যা
১৫৬	***	2	अ टग्रा	শ্রেয়ে
১৫৬	***	*	কন্তরীয়	কালান্তরীয়
১৬০	•••	2	প্ৰৰূপান্	পাৰুৰ্বাহ
90	•••	٥.	প্রাকর্মেন	পাক গৈব
90	•••	22	কঞ্চিতি	কিঞ্চিদিভি
હ	•••	۵	কোলিকা	কৌলিকা
७१	•••	৬	मार शहरीकी	• সাংগ্ৰহণী টী
\$	•••	25	আনৃশ্যং	व्यानुनाः
৬৭	•••	2	নি যেবিতো	নি ষেবিতা ং
৬৮	•••	2	কুধর্মং	কুধৰ্মং
৬৯	(27 ,	न इनी ऱ	ল্ড্যনীয়
92	•••	Ċ	পূত্তকৌ	পুশুকৌ
94	•••	b	म कून्	শকু নৃ
92	•••	৬ •	রহা	কু ৰ া
0	•••	5	প্রমথাথে:	প্ৰমুখাবৈশ্যঃ
9	•••	8	জনরন্ত্যোক্তদ	

পৃষ্ঠায়াং	•	পঙ্কো	অশুদ্ধি:	শুদ্ধি:
२२२	•	α	মুং উলুখন	य्र पु ष् म
२ २२	•••	20	হরৈতাপ পঠিঃ	হরৈরিত্যপ পাঠঃ
২ ২8	•••	৬	পরিগাং	পুরিগানং
ં ૨૨૯	•••	>	উन् र े ज	छम ारे ः
२२०	***	2	বাৰ্ছণ	বৰ্হিণ
२२७	ę	2	রিত্য র্থ ঃ	্রিভার্থ: 8
૨ ૨૬	•••	ર	8-4	c
२७०	•••	২	े देनक थीरम	নৈলকগীয়ে
२७१	•••	٠	অনিরদ্ধত্বেন	অনিৰুদ্ধত্বেন
২ ৪২	•••	રં,	पृप् उ	হৃদ্ ত
२৫७	•••	৩	र्शटन	र्थ देन
200	•••	8	করিষাসে	ক্রিযাদি
620	•••	>	মারিয়	ম†্রয
७२৮	•••	৩	পত্যুর	পতা
ہم کوہ	•••	8	মা্ষং	মাৰ্বং
७२৮	•••	΄ α	শাসানাৎ	শাসনাৎ
७२४	***	Œ	ব	₹\$
७७ 8	•••	49	স্ত য়ং	স্ তত্বং
90r	•••	8	ধান্যাদিনাং	धनामीनार
68 0	• • •	١. ١	কন্তা:	কুন্তা:
७७३	• • •	٥		¢
७७३	•••	২	ৈ ণঙ্গ	নল
OFC	•••	4	वार्धन्	व्यटकान
७४१	••	2	প্রাপ্রকম্	প্রতিপ্রকৃ
800	•••	<i>50</i>	রটি ০	রুচি
8 . 8	***	. 2	হস্কত	হক্ষৃত
864	•••	& .	যাবন্দ্রহ	शांतक वश

X

পৃষ্ঠায়াং		পঙ্জো	অশুদ্ধিঃ	শুদ্ধিঃ
820	•••	૭	কু <i>পু</i> ত্তকে	কঃ পুস্তকে
870	•••	α	এফডুঃ	এত হতুঃ
850	•••	> -	5, x1, \$	∌ ६ म् इ
8 २७	•••	r	बू ७ म्	ब् अम्
8२४	•••	, 9	মহান্ত্যোপ	মাহ:ব্যোপ
895		*	মহানিত ত্তা	মহানিত্যত্ত
805	•••	à	দক্ষিণ সামিতি	দক্ষিণ সাগমিতি
. 818	• - •	ર	^ৰ গাপ্তিনি	বাগ্ৰানি
8.98		25	পর্তিযক্তা •	প তিযুক্তি।
898	• • •	ર	গদ রঃ	গঙ্গারাঃ
898	• • • •	৩	जायनगः	कामनभाः
895	•••	૭	क अग्रीन्	ক্তিয়ান্
Co>	•••	৬	খ্যভা	ঋষভা •
৫ 5२	•••	4	প্রস্থ	প্র
¢>9	***	ર	মোটনাদীনি	গোটনাদীনি
(१३)	•••	ર '	মাংদিদান্তি '	मार्मिन जिथ
લહજ	•••	\$	ङक् रि	ভক্ ো ন
aoa	•••	৩	অশ্বশেত্মরয়ে	াঃ অশ্বংখাডুখররোঃ
482	• • •	2	બૂલ ી	ઝ્ થી .
080	•••	2	७० । ७५ ७३ । ७	०० २०।२১।२२।२७
aa?	•	২	ড ং	5 € .
a 98	• ••	8	গ্ৰহণং	গৃহানং
ans	***	7 36	क् मश	कृ न१
ανα	4 ==	₹ .	অভুএব	অ তএব
ara	5 #r*	3	উদিগ্যানাং	উদিচ্যানাং
900	•••	1 5	কুৎস্তাস্ত	কুৎস্বসাম্য
७०२	•••	1 3	প্রক্রাক্ৎ	প্রত্যেকং

পৃষ্ঠায়াং	•	পঙ্কো	অশুদাঃ	रुकि:
620		b"	পরামশী	প্রামশ্য
৬১২	•••	9	পূররপ	পুকরূপ
હુડ્હ	• · •	2,	যেয়	যেয়ু '
৬১৪		5	ৰ য	रर्ब
	.	9	পুরষ	পুৰুষ
<i>જી</i> ટ્રેલ્	•••	22	পুকৃতি	প্রকৃণ্ডি
450	•••	2	ভীঘেন	তীক্ষেন
৬২৯	• • •	2	હ	¢18
৬৫৬	***	₹ ′	36	७४ । ३३ । २०
৬৬৮		α	অভূগ্নং	অভূগং
હ છ ≿	• • •	>	উড়ুপৰচন্দ্ৰ:	উড়ুপংচন্দ্রং
৬৭২	• • •	ર્	কোয়	কোশ
৬৭৬	***	2	নিশ্চিতেত্বতাৰ্থ	ঃ নিশ্চিতোভার্থঃ
950	***	•	{ গিরেশ্চ বিশ্ব গিরেরিব ইবি	ন- { গিরিশ্চ বিয়ন্ত ভা
977	• · •	٤'	বাংখচ	शितितितन्त्रवाद र्यहः
シ レレ	***	۵	नौट्डः	नीरेजः
909	•••	>	গ্ৰহম্	গৃহম্
924	•••	ર	অলমাঃ	অবলসাঃ
. 909	•••	2	বধে।	বংধ
409	•••	Œ	শাৱ	অব্ৰু
185	. •••	ર	মোখাৎ	भार्थार,
984	•••	9'	শকুনা	मं ब्रा
-184	•••	9	দেশাকালয়ো	(म महानेल देव)
988	• • •	22	यूत्रश	ু যুরং
998	P.000	\$	তিমের পি	ভিমিরিব
993	***	8	मक्ना	শত্ৰা ^হ
9>2	•••	2	শক্ত	मंज्र न्

1				
পৃষ্ঠারাং	•••	পঙ কো	অশুদ্ধিঃ	শুদি:
925	•••	9	আৰুবহ্য	অ†কছা
cod	•••	ર	হোতো	হেতো
৮২৫	•••	• 20	टेमथन	মৈথুন
४२७	•••	30	যোগনন্তর	যোগানন্তর
· 8-03	••••	્ર	• স্থোরো	স্থারে।
686	***	• 5	বৃষ্ট্যাদর্থ,ং	. इक्रामार्थार
P48	•••	• 9	কথ্যতং	কথ্যতাং
•৮৫٩	•••	۶.	ভূয়এবেঁতি	ভূরএবেডি
449	•••	Œ	रेख .	इस .
۲۹ ۷	***	b	২ জার:	ঽহলারঃ
b b9	•••	>	मृ ल १	স্থূল ৭
860	***	~	স্ত্ৰ্য	সূত্ৰ
444	•••	22	भानवा	ম†লয়া
644		30	বেবলাং	রেলাং
804	•••	8	রোহিণীনাৎ	রে(হিণী নাং
৯৩৪	•••	Œ	ৰু গ্মি	ৰুগি ্ভ
৯৩৭	•••	Œ	ভর্য্যেণ	ত্তৰ্যোগ
৯৪২	•••	ર	চিয়	চির
۵۵۵	•••	8	भवशे दशह्	मद्यी (याह
2029	•••	२०	ম তি	মিতি
2029	•••	ે	পাৰি	श िष
2002	•••	`9	কালুযা	কালুষা
(a)	***	8	স্ ত্ৰ1	কিছা
308¢	•••	9	গুকোন্ট	श्रद्भांक
2089	•••	α	ठा ञ्चा मानिव	ठा ष्ट्रमानामिश्
2082		b	সহকঃ	সএকঃ
(4)	•••	ं	প্রভাপত	প্রকাপতে

পৃষ্ঠারাই	পঙ্জো	অন্তৰিঃ	ভাৰি:
3060	20	শেষত	সে মশ্য
3048 ···	9	স্য়তে	স্যতে
30aa	Ċ	छ म उ	উদ •
3005 ···	ર	সপুৰ্ব্বাধা	সপূৰ্ববাধা
69°C	9 .	इरका देखाः	त्रद्भारिश्रः
১ <u>০</u> ৬9 ···	50	ধাতন্	ধাক্ন
à ·	2.	পীতাদী	পীতাদীত্
2220	ર .	[া] রর্ভতে	রভতে
(4)	٥,	যহ	যদূ
3389	۶ ۰۰	ভাতরতা	তান্ত্রপ্র
3309	ર	প্রাপ্তোমি	ভাবোম
225¢	ર	ক্ য়িবে	কধিরে
ش	৩	ত্যকে	ত্যক্ষ্য
\$200	9	তপনসাজা	নে তপসাজ্ঞানেন
3209	, ۲	বিচারয়নি	বিচারয়সি ১
必 …	8	গ্ৰান্দি	গ্মনাদি
A	α	ন্তবিরিতি	ন্তাশিনিতি
2570	۲,	.۵	215
3202 ···	4	সমহত্য	সম †হত্য
250r	œ	भूमकृ ख्	गू मकू ख़ श
3080	30	<u>ভোতাহা</u>	ভোতাৰ্ছা
30bo	3	₩	712
580°	Š	প্রশ্বন্	প্রানু
··· 598¢	v	দেস	(मर्ग
	ভ টীকায়	দ্বিপত্রম্। যিঃ সম্পূর্ণ	i Ž
	. ₹	~	

মহাভারতীয় বনপর্বাণঃ

শুদ্দিপত্রন্।

মলস্থ

		· ¥	ল স্ত	
পৃষ্ঠায়াং		পঙ্কো	অশুদ্ধিঃ	श्रिः ,
ัง	•••	9	ু ন্নিৰ্যযু	ন্নি ৰ্যযু
. 9	. •••	ש	विक् भा	নিক্ম্য
8	•••	30	यूत्र॰	যূ য় ং
৬	•••	ъ	ব্যস্ত্রী	ব্যস্তা
6	•••	9	তে যাং	তে ষাং
۵	•••	20	সহাষ	সহা য়
22	, •••	ર	যুক্তাং	যুক্তাং
22	•••	৩	क्राच्यू,	क्र एष्ट्र बू
>5	•••	α	মাদেন •	শানসেন
29	•••	v	<u>*চাব*চাব</u>	≈ চাব
24	***	2	যহ	বহু
२०	•••	9	ক্ষাণি	কৰ্মাণ
२०	•••	30	সি শ্বি	সিদ্ধি
42	•••	ર	কু কৰ্মত্ব	কুৰুষ স্থা
२७	•••	5	ভীমদেন উবা	চ বৈশম্পায়ন উবাচু
ve	•	२०	धर्या टन मार्	धटर्बा टन मां २
83	25	24	রিদ্র ং	বিছ্রং
42	•••	22	যথানায়ং	যথান্যায়ং
89	***	28	দেবশস্থাং	দেবশত্ গাং
48		5¢ .	অম্পস্থ	কিম্মীর্থ্য
48	ų.	2F	সমরশ্রদী	সমরশ্বী

পৃষ্ঠায়াং		পঙ্কো	অশুদি:	শুদ্ধিঃ
4 6	***	२०	কূ ল তাং	কুলভাং
¢৯	•••	α	क्रुंद:	কূরঃ
% 0	•••	. 7	মভূদেতো	মভ্যুদ্যতা
৬১	•••	¢	ক্ৰদ্ধ:	কুৰ:
৬১	•••	२०		ূৰ্তা
৬৩	•••	৬	স্ চির ১ ি	ু স্থাচিরং
৬৩	•••	৬	মচেতনম	মচেতন ম্
৬৬	•••	8	ভূদং	কুদ্ধং
৬৬	•••	*.55	মূনিঃ	মুৰিঃ
46	•••	ά	यू र्का	मूर्का
45	•••	₽ .	লাভৃ ডিঃ	ৰ্জাতৃতিঃ
40	•••	৯	মন্ত্ৰাঃ	মাহ্ৰাঃ
90	•••	ર	ষা দৃশঃ	যানৃশঃ
	•••	22	াক্স	<u>ৰা</u> ক্তী
45	•••	b	ভাষ্য!	ভাষ্যা
95	•••	28	भा कार्नी	भाक्षा ली
95	•	24	₹8	૨ ৫ ·
45	•••	२०	<i>দুঃ</i> খং	হঃখ ং
b-0	•••	. 58	পতিয়	পতিম্
· b 3	•••	৬	মূপা স্থিত	াঃ মুপাছিতাঃ
• 54	•••	34	হ্যা ত	•मार्ड
. ba	*	8	ন্সাত্মা	नावा
. 50	• •••	<i>50</i>	প্রবন্ত্রিচ	চ প্রবনায় চ
. >2		२२	• শক্তু	क्षांक
22	•••	२२	ব ং ধা খ ্যাত্	ন বধোপাখ্যানে
200	***	۲	্ য∖তবন্	যাতাবন্

.

পৃষ্ঠায়াং		পঙ্জো	অশুদ্ধি:	শুদ্ধিঃ
५० २	4	. 7.	প্রহুম	व्यञ्ज
7 . 8	•••	22	বিনিম্ক	বিনিশ্ভ
208.	•	3 %	অচিন্তরন্ত	অচিন্তরন্ত
277	•••	ર	ৈ প্ৰযয়ং	্রে ষয়ং
225	•••	2 €	শ্চু জু শু.	कर्जू ज
225		3 a.	ভেদন্	्य् ভেদন ग् ∗
220	• • • •	9.	শকু	শক্ত
, 22 4	•••	5	প্রেয্যা:	শ্ৰেষা:
222	•••	9	কুরণ,	কুর ণ
255	***	78		ৰ্ম তপান্ধিভিধ্ৰ
252	•••	39	ব্ৰাগ্যণেষৰ	ব্ৰাক্ষণেদেৰ
५० २	•••	১৬	मञ्जाशाश्च	মনুষ্;ংশ্চ
700	•••	20	ख्रा	কুছো
78°		ર	কুদ্ধে।	কুদো
১৬৭	*	22	•	হ ক্ষমাণাহনলং
2 92	***	৯	শত্ৰ	मंज म्
599	•••	ર .૦	যশ্বা	যন্থ
227	•••	8	ত্থেবচ	ভথৈৰচ
५	•••	28	সন্তপ্তেগ	मखरखा
725	•••	>9,	ভবিয়াতি	ভবিষাতি
Pro	•••	١۵ .	ঢবিয়াতি	চরিষাতি
be	•••	3	.কুন্তী	क्छी
b-6	***	२०	হাভোদা	श्टला
b		3 C	निक्दमा	বিৰুধো
レカ	•••	5.	मूखम्	मू ज म ग्
3 8-	#	·	বিভূষিতং	বিভূষিতং
20	***	20	मी खिमां ख	मी शिमखः

পৃষ্ঠায়াং		পঙ্কো	অশুদ্ধিঃ	শুদ্ধিঃ
22 C		39	দ্গ্ যতং	দ্দ য়িতং
२७8	•••	Œ	বৈশ ম্পায়ন	देव भन्भा । यन
२७१	•••	20	ধেন	যেন
২ 85		Œ	ভদ্রথ	তদ্রথ
२ 8२		8	ি নজুগুস্তী বি	জুগুপান্তীতি
૨ 8ઙ૿ૼ	•••	\$	ম দ্ভত্য্ ⁽ ্	় মদ্ভুত্যু
484	•••	78 •	হসি য়ান্তি	হ রিষান্তি
209	•••	25 '	ভাতৃতি	ভাতৃতি
২৬৩	•••	3a.	প্রজ্যে	প্রাজ্যে
२৯১	•••	8	म्हर्भ	म्मू:श
२৯৫	•••	α	मभ्यक्तावाह	দময়ন্ত্যবাচ
२৯७	•••	8	ভায়দে	ভাষদে
२२१	•	٥٠	७०	৩৬
229	•••	20	भा र्फल	শাদ্দ
२४४	•••	42	ভতৃ	ভত্
900	•••	26	তপশ্বমিষু	তপঃস্বায়িষু
905	•••	· b ·	বি র্ভে য়ু	বিদর্ভেষু
٥٠5	•••	\$5	প্রভঃ	সমপ্রভঃ
% 08	•••	ર	কল্ছিত্বং	কচ্চিত্ৰং
909	•••	હ	নি বেবিতং	নিষেবিতৎ
(. 50	***	a	ত্তশ	ঃ তকা
,930		٠ ২٠	স্বস্থ	শ্বয়ম্বর
<i>্ ৬১৬</i>		22	শকু	30 PE
ં ૭૨ ૭	•••	৯	ऋ प्रव	ऋटमव
' ७ २৫	• • •	45	কস্তু	কর্ত্তু
७२७		30	ব্যুষ্টা	ৰু ফী

ঠ্ ঠায়াং		পঙ্কো	অশু 🖣 :	শুদ্ধি:
७२ १	·	۶،	ব্যা	জ্ঞায়1
990		8	অস্থান	অগুত্মান
৩৪২		৩	নিৰ্ঘেষো	নিৰ্ঘোষ
७१०	•••	29	द्रक	जू रके
990	•••	8 ,	क ल	कल्ट
000	• • •	22	পূৰ্বাং	পূর্বাং
७४७	***	Œ	মাপত্যাৎ	মাপ্ল রাৎ
७५१	•••	22	০ সহা	হ্মাহা
800		2	মূৎ স্ত ্ৰ	মুৎসৃজ্য
800	•••	9	\$ •	9
807	•••	२०	প্রাবি	প্রাপ্তো
8\$2	•••	55	, রাজস্ব	র†জন্ম
8:0	•••	20	তেরূপ	ভেুমূপ
854	•••	26	গুহাবেষু	গুহাকেয়ু
83%	•••	20	অগিভয়্য	অভিগ্ৰম্য
859	•••	.	রাজন্ত্র	রাজেন্দ্র
884	•••	>	র াজ রন	রজিরস
8२ ৫	•••	2.9	ক/লঞ্জো	কাল প্রবং
8२७	•••	۵	কুপো .	কূপো
83%	•••	3.0	গ জ রাং	গদায়াং
8२ व्र		> &	পুষ্করৎ	পুক্রং
8৩৬	• • •	ડર	সকা	म स्वा
809	•••	\$8	কথয়ন্ত্ৰৎ	কথয়স্ত্রাৎ
889	•••	২ 8	নি ষোবিত ম্	নিষে বিতম্
880	• • •	234	বৰণো	বৰৰে
889	•••	ર	বদী	वमती
४७०	•••	b '	কুট	कृषे

পৃষ্ঠায়াং		পঙ্কো	षडितिः	रु किः
893		₹ २	কেন† ১ৎ	কেনচিৎ
898	•••	5 %	আ'প্স্	অপিন
8৬৮ '	•••	२०	বিহিংস্যানানি	
895	•••	72	अञ्	क्षरम्
896 6	•••	2	বধু	कर्
84%	•••	<i>اه</i> ر	শকু	শক্ত
829	• . •	` ₹ •	ভূমিঃ	ভূমি:
879	•••	२०	মধ্সদন	মধুস্দন
822	• •••	ů.	জগপংত	জগৎপতে
866	•••	ર ૭	মৃযিভি	মৃ ষিভি
888	•••	2	কুর	ক্র
835	•••	36-	গৰ্ভালাৰুং	গর্ৱালাবুং
७५ ८	• • • • •	२७	অলাবূ	অনারু
.¢00	•••	7	यूर्कि	মূৰি
800	•	৩	মাহাবাতঃ	মহাবাহঃ
¢75	•••	29	তেনশ	তেনশ্য
472	• • •	• 2a	স্থাতা	স্থাপিতা
०२०	•••	ર	কুজন্তি	কুজন্তি
\$ \$\$	•••	२७	শ্বয়	সুষা
452	•••	۵	গাত্মনুপ	গায়ঃপুপ
650	•••	20	বাজনূ	র্জেন্
(00	•••	5	উনমে 1	ভ নমো
600		22	भाखवानार •	পাতুরাণাং
(100	• •••	২৩	পাওয়াগাং	পাতু রাণাং
৫७८	•••	્ર	পাশুরাণাং	<u> भाजूबागार</u>
402	•••	ર .	জম্মি '	जमनी व

18.0	•••	2	पृ क	मृक्षे
00	•••	₹ 5	সমৃতঃ	সমন্ততঃ
22	•••	22 •	जीवजीवरिकः	जी राजी गरेकः
59	•••	5 28	প্লকাহতম্বর	প্লক ভুত্বর
3¢	•••	b "	भवस्य •	भवमञ्
Do		2	পাৰ্থনাং	পাৰ্থানাং
৯৯৯	•••	22	कृष	/क्षक
640	•••	73	ভাতৃত্বং	ভাতৃথং
トラ	. •••	20	जक ्मग्र	জ शक ्म श
976	•••	२२	धर्म(थी	• धर्माटथी
693	•••	78	বায়ুপ্ত	বাযুপুত্ৰ
৬৬৬	•••	9	मगू ष्ट्रान्	• সমুদ্দু য়†ন্
৬৬০	• · •	, ,	শীতাং	শীতাং
৬৪৬	***	२०	বৰ্তিভূম্	বৰ্ত্তি সুম্
98¢	• • •	74	ধারণীধরা	ধরনীধ্রুবা
989	•••	78	ভাতা	তাত!
७२ १	• • •	78	কর্বাবহে	করব†মহে
७२१	•••	20	অব শ্ব ্	অবলুঞ্চা
હરર	***	20	রূপা	ব্পা
¢ % 9	•••	25	্স হৈয়ব্য	मदत्र द्वा
are	***	৬	भाष्ट्रमः	श्वार्यटेमः
(Po	•••	৩	চৈত্তম য	চৈতত্তমন্
ά 90	•••	42	७ रेम	তক্তৈ
৫৬৬	*	>%	मुकरी	मृकिनी
৫৬৪	•	۵	মহারজ!	মহারাজ!
৫৩৯	***	20	সর্ব্ব ভূতে	স র্শ্বভূতে
		পঙ্জে	অশুদ্ধিঃ	শুদ্ধিঃ

পৃষ্ঠায়াং		পঙ্কৌ	অশুদ্ধিঃ	শুদ্ধি:
980	•••	ર	যগে	যুদেশ
985	•••	8	শক্ৰুণাং	শত্ৰাং
989		Ъ	ষষ্ট্যধি	যফ্টাধিক
900	• • •	9	স্থ্যা	व्या:
৭৬৯ •		3	ক্রুর 🕈	<i>কু</i> ৰু
995	• • •	22	ঞ্জত	(क्षुड
979	•••	39	শকুহন্	শক্তহন্
950		>	প্রশাস্য	প্রশাস্য
930		۶, • ۱	ভূকণ্ডানাঞ	ভুৰতানাঞ্চ
F00	•••	ď	র ভায়	হ তায়
509	• • •	৩	বভূূূ	বভূরু
F22		20	मृ टक्†मद्रः	র্কোদরঃ
৮ २8	•	8	निर्मः थ	निर्म्हःथ
४२७	• • •	ર	• टेमथन	. মৈপুন
৮ 8३	***	' >9	রাফ্রিণি	রাফ্রণনি
89	•••	33	খ্যাতবং	খ্যাত্ৰাং
F-98	•••	۵ .	ধেহৃং দত্ত্বা	ধেহং দকা ছঞ-)
			श्रूथात्वार	🕽 ভাং স্থপ্রদোহাং 🕽
699		હ	যোংগভাগং	যোগান্ত/াং
447	•••	ર	এম	এষ
F>2	***	30	ই হাস্	हेरा ,
F>2	•••	, 25	আস্থ	আশ্ব
679		28	হনিষ্যামেত।	হানিখামেতা
229		30	ম্যে •	শে
250	. **	۵	•{ অন্তঃপুরে রাগ পুত্রং জ্বান জবিষ্ট	ল অন্তঃপুরে রাজপুত্রং জ্বান দ্যায়কভিন্মতে

পৃষ্ঠায়াং		পঙ্জো	অশুদ্ধিঃ	শুৰি:	
৯২৬	• • •	20	কর্ত়্ং	কর্ত্তৃৎ	
290	•••	20	ব্ধাত	বুধ্যত	
ಖಳನ	•••	22	স্হলু ভঃ	মুহ্লভ:	
2000	•••	? ン ・	क्रज	यू ज	
>०३¢	_k		বিশেষেন	বিশেবেশ	
5004	ALC:	22	বক্ত্ৰ	বক্তু1	
5005	• • •	¢	তদ†দ1	ভদা	
2000	•••	α	মহত†কৈব	মহতা ঞ্চিৰ	
১০৬৯	•••	20	প্ৰকীৰ্বিকৃঃ	প্ৰকীৰ্ত্তিতা:	२७
2099	•••	36	জগ্ৰহ	জ্ঞাহ	
2040		39	প:রিবদাং	পারিষদাং	
2 20	•••	\$5	মাত্ তৃ	মাতৃ.	
2200	• • •	. 3^	मिट्योयमः	দিবৌক সঃ	
2220	***	২	半重	- শত্ৰু	
2750	***	2	ত্রা	গ্ৰ	
2259	***	৯	কুমার	কু মার	
2202	•••	58	মন্ত্ৰ\	মন্ত্ৰ.	
2202		ર	য োয	ঘোষ	
2288	•••	39	কূবের	কুবের	
2205	•••	৬	সত্ৰ বং	मजर९	,
2500	٠	\$	পতাবা	91031	
250K	•••	હ	শ্বতিঃ	লুভি:	
১ २७•	•••	8	শ্বি	নাপু (ই	
५२७३	•••	. 26	কুম্ব	কুজ	
2502	···*	8 .	বছ†বনং	মহাবনং	•
५२० ৮	***	8	শতুভি	শতুভি	
2509	•••	२०	'ब्लाशनी	(ज । शेनी	أبي

> 280	• * •	9	ৰ্দ্দৰাণ	মৰ্দ্দনানাং
८ ४ं८८	•••	28	মহন্তে।	মহাতে ।
ऽ२८५	•••	3	4 cel	কল্মা
>2¢¢	•••	28	বোপরা	মারোপয়া
2२৫१	# m#	20	প্রভূঃ	প্রভু:
১ २.७०	•••	২	প্রযুখ।	প্রিমুখা
১২৬০	•••	20	প্রভূ	क्रम्
३ २७७	•••	28	ত্র	<u>ত্</u> রি
२१५	•••		যথেপস্য!	यत्थ श्रात्
५ ५२	•••	· 50,	কাকুং	কাকুৎ
7078	•••	· à	ল ডফ্বণ	লক্ষ্যণ
7 <i>0</i> 08	•••	२७	শচ র†ত	শ্চরতি
\$ 980		8	বিভী য়ৰ	বিভীষণ
५७००	•••	ર	নি ত্যশং	- নিত্যশঃ
2002		28	পাশহ সং	পাশহন্তং
১৩৯০	•••	22	ত বম্বীং	তমত্ৰণীৎ
५७ ५२	•••	29	মন খে	মনঘে
८८८	•••	٠ ٥٥	কিংকিল	কিঞ্চন্

সম্পূৰ্ণম্—মূলস্য। শুদ্ধিপত্ৰম্।

बीबीजगरीश्वरता।

জয়তি।

মহাভারতম।

•বনপর

অরণ্যযাত্রা পর্বং (১)

প্রথমে হিধারঃ।



उनातायन नमक्छा नतरेक्षव नरताख्मम्। एनवी नतस्र जीरेक्षव তर्जा क्य भूनीतरयः॥

চীকা ক্তোমজলাচর শৃ।

যো দেবা মুনি নিচয় ক্ষ্যা ক্ষ্যাণান্,
যত্তা মুনি নিবছোছণি তৃতি মাণ।
তিসোবং নিজ-জগদন্তরাত্মভাবং,
ব্যাকর্ত্ঃ পদ মুপ্যাম গোপস্নোঃ—(১)।
যজ্জিজাসা লভাতে যজ্জমুখ্যা,
র্যকোগ্রং প্রার্থিতে সংয্যাদিয়ে।
তং সেবেছ সদ্গুকং লক্ষ্যান্যিং,
বন্ধ বন্ধজানি-বংশাবভংসম্—(২)।
প্রণম্য নারারণ, তীর্থবর্ধান্,
বীরেশ মিজাংশ্চ হমীর পূর্যান্।
হুর্মো গুরুণাংহদয়াহ্রণ,
মারণ্যকে প্রবিণ ভাব দীপ্য্—(৩)

अनस्यक्षत्र छेन। ५। १

" এবং দৃতিভিতঃ পার্থাঃ কোপিতাশ্চ ছুরাছাভিঃ। ধার্ত্তরাইঃ সহাম তৈ নির্ক্ত্যা দিজসন্তম। । ১॥ আবিতাঃ পরুষা বাচঃ স্কল্ট কৈরে মুন্তমম্। কিমকুর্বাত সৌরবা মম পূর্বাপিতামহাঃ॥ ২॥ কগপেগ্র্যাবিজ্ঞটাঃ সহসা তুঃখমীরুষঃ—। বনে বিজন্তিরে পার্থাঃ শক্রপ্রতিম-তেজসঃ॥ জী কে বৈ তান্ত্রবিত্ত প্রাপ্তান্ বাসন মুন্তমন্। শাহ কিমাচারাঃ কিমানারাঃ কিমানারাঃ কি কালারাঃ ক চ বাসো মহাজ্যনাম্॥ ৪॥ কথপে দাশে সমাব্রনে তেষা মহাজ্যনাম্॥ ৫॥ ব্যতীযুর্ত্রান্ধিশেজি । শূরাণা সরিঘাতিনাম্॥ ৫॥ কথপে রাজপূজী সা প্রবরা সর্বিয়েষিতাম্। ৬॥ পতিব্রতা মহাভাগা সতত সত্যবাদিনী॥ ৬॥

ত্র পুর্বনিন্ পর্বাণ দৌপদীতাণেন তকে মহিছাং দর্শিতং—সাচ প্রতিজ্ঞাপালন-সংস্নাগ্য-তীর্থাটন-স্বধর্মাচরণাদিন। লভ্যত ইতি তল্ত-দাখ্যারিকা মুখেনেই প্রতি পাদ্য দ্রোপদীদত্রশাক লেশাশনেন ক্ষে তৃপ্তে-সতি দৌর্বাস্যাসেণাখ্যানেন ভগবতো ক্রাণান্তরাম্বাহ দর্শিতং—ধর্ম মুখিন্তির সম্বাদেন ভগবত্বং স্বাধানামন্ত্রায় সহতঞ্চ সংক্ষেপেনোক্তং— " এবং দ্যুভজিতাং পার্থা ইত্যাদিনা মন্ত্রায় সমুপাবিশন্" ইত্যন্তেনপ্রস্থেন—ভত্ত প্রথমেইধায়ে সদসং সঙ্গরো গুলিদাবৌ—বিতীয়ে শৌনক মুধি-চির সম্বাদেন কাম্যধর্মনিকা যোগ প্রশংসাচ দর্শিতা। এব মিতি—পার্থবিভ ক্রিন্যায়েন মান্ত্রাস্ত্রেরা রপ্য পলকাং, ভ্রাম্মিভ ক্রিন্যায়েন মান্ত্রাস্ত্রেরা রপ্য পলকাং, ভ্রাম্মিভ ক্রিন্তিতে: সহামাতিগং সকর্ণাদিভিং, নিক্ত্যা ক্রেন্ন ॥ ১ ॥ পুর্বং পিতা প্রিক্ষিৎ ত্যা পিতামহাং ॥ ২ ॥ এরুষং প্রাপ্তর্ভ ॥ ৩ ॥ উত্যং তীরম্ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৩ ॥

[🌣] মহাঅন(ণ্ ইতি ক পুত্তক্ষা পাচি: ।

বনবাস মতু:খাই। দাকণং প্রত্যপদ্যত ?—।

এতদাচক্ষ্ব ম সর্বং বিস্তরেণ তপোধন । ॥ ৭ ॥

শ্রোতুমিচ্ছামি চরিতং ভুরিদ্রবিণতেজনাম্।
কথামানং স্থান বিপ্রা! পরং কৌতুইলং হি মে ।

বৈশন্পায়ন উবাচ।

বিধাতসন্ত্রাকাল পার্থন কোপিতাক ছুরাকাভিঃ।
ধার্ত্রাপ্ত্রেঃ সহ্দ্রাতৈর নির্মান্ত কামবাৎ নির্মান প্রদারী দভিনিছ্ন্য পাতেবাং।
উদপ্তর্থাঃ শস্ত্রভঃ প্রয়াঃ সহ ক্ষরা॥ ১০॥
ইন্দ্রনাদযদৈর ভ্তাঃ পরি চতুর্দশ্।
রথৈ রন্ম্যাঃ শীঘা স্ত্রিয় আদায় সর্বাশং ॥ ১১॥
গতানেতান্ বিদিত্বা তু পৌরাঃ শোকাভিপীডিতাঃ।
গহ্যন্তে।হসক্তীশ্ব-বিহুর্দ্রোগ্রোত্যান্ ন্ ১২॥
উচু বিধ্যতসন্ত্রাগাঃ সমাগ্রম্য পরস্পরম্—।
পৌরা উচুঃ।

" নেদ মস্তি কুলং সক্ষ্মন ন বয়ং ন চ নো গুরাই॥ ১৩॥ মত্র ছুর্যোধনঃ পাপাঃ সৌবলেয়েন পালিতঃ। কর্ণছঃশাসনাভ্যাঞ্চ রাজ্য মেতচ্চিকীর্যতি॥ ১৪॥

॥ १ ॥ দ্বিণং প্রাক্রমঃ, তেজো দেহকাতিক, তে উতে প্রান্ধ বেষাং তে ভূরি জবিণ তেল্পমঃ " স্থাবিণঞ্চ পরাক্রমে" ইতি বিশ্বঃ ॥ ৮ ॥ গ্রসাক্ষরাং ছন্তিনা পুরাং ॥ ৯ ॥ বদ্ধমান পুরং নাম প্রাম বিশেষঃ, তদভিমুখং দারং, ক্রমাং, "র্প্ হিংসায়াং, বর্দ্ধমানাঃ হিংসকা, স্তেষাং পুরং, কুংসিত মার্গেণ নিঃসারিতা ইত্যনো,॥ ১০॥ পরি চতুর্দ্দশ অধিক চন্তর্দিশাঃ পুঞ্চদশেত্যর্থঃ, " সংখ্যরাহ্ব্যরাস্থেতি" সম্পানঃ । সমাসান্ত বিধে রনিভাষাং "বহুবীছো সংখ্যের" ইতিপ্রান্ধ্যা ড্রুত্র প্রভারস্যাভিবিঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ দোবলেরেন শকুনিনা॥ ১৪॥

তভেদ্যত জিতা ইত্যেবং ক পুস্তকে পাঠ:।

ন তৎকুলং ন চাচারো ন ধর্মোহর্থঃ কুতঃ স্থখম্?—। ষর পাপসহাযোহয়~ পাপো রাজ্যঞ্চিকীর্ষতি ॥ ১৫॥ ছুর্য্যোধনো গুরুদ্বেষী ত্যক্তাচারস্ক জ্জন:। অর্থলুকোইভিমানী চ নীচঃ প্রকৃতিনির্ঘৃ । ১ । । (नग्रमिक गरी कुल्झ। यख छूर्यग्रांथरना नृथः। সাধু গচ্ছামহে সর্বেষ যত্র গচ্ছন্তি পাঠপ্রবা:॥ ১৭ । সানুকোশা মহাঝানো বিজিতেন্তিরশত্রবং ル द्दीमसः कीर्जिमस्य धर्मा हात्रभवायगाः"—॥ १५ ॥ বৈশস্পায়ন উবাচ। এব মুক্তানুজগাতে পা গুবা~ন্তান गरम । উচুঃ প্রাঞ্জলয়ঃ সর্ব্বে কৌন্তেয়ান্ * মান্ত্রিনন্দনান্ । ১৯ । '' क গমিষ্যথ ভদ্রং ব স্তাক্ত্রাম্মান ছুঃখভাগিনঃ। বয় মপ্যন্তুয়াস্যামে যত্র যুষ্ং গমিষ্যথ—॥ ২০ 🛭 অধর্মেণ জিতান শ্রুত্বা যুগ্মা স্ব্যুক্ত মৃথৈ: পরে:। উদ্বিয়াঃ স্মো,ভূশং সর্কো নাম্মান হাডু মিহার্হথ।। ২১। ভক্তানুরক্তান স্থহন: সদা প্রিযহিতে রতা**ন**।

॥ ১৫॥ প্রকৃতি নিয়নিং অভাব নির্দ্দরঃ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ সাম্কোশাঃ
সদয়াঃ, মহাস্থানঃ উদারচিত্রাঃ, বিজিতানি ইন্দ্রিরাণিচ শক্রবন্ধ যৈ স্তে
বিজিতেন্দ্রির শত্রবং, ছীঃ অকার্যারি বর্ত্তিকা চিত্ত র্ত্তিঃ, ধর্মো যম
নিয়মাদি অস্যাচরণং আচারঃ ধর্মাচার ইতি যাবং ॥ ১৮ ॥ কেন্তেয়ত্বং
মান্দ্রেরত্বক জ্ঞ্তিন্যায়েন প্রভাবং পঞ্চমপি পর্যাপ্তং, মান্ত্রীতি
হুম্বত্ব মার্যন্ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ভক্তান্ আরাধনাপরান্, অম্বরজ্ঞান্ প্রীত্বিষয়ান্, স্ক্লিঃ বেতনাহ্যপ্রার মনপেক্যাউপকারকান্, প্রিয়ান্
প্রীতিবিষয়ান্, হিতেরতান্ অভ্যাদয় সাধন পরান্, "হিতেরতানিত্যলুকু সমাসঃ" প্রিয়াক্ট তে হিতেরতা ক্রেতি বিগ্রহঃ, ন বিনশোম বিনাশং

* তান্ কৃতী মাজি নন্দনান্ ইতিক:।।

কুরাজাধিষ্ঠিতে রাজ্যে ন বিনশ্যেম সর্বাশ:। ২২।

শ্রুবাঞ্চাভিধাস্যামো গুণদোবাল্লরর্ষ হাঃ।
শুভাশুভাধিবাসেন সংস্কাঃ কুরুতে যথা—। ২৩।
বস্ত্র মাপ জিলান ভূমিং গরো বাস্যতে যথা।
পুজানা মধিবাসেন তথা সংস্কাজা গুলাঃ॥ ২৪॥
মোহজালস্য যোনি হি মুটেরের সমাগ্যঃ।
অহন্যহনি ধর্ম্ম্য যোত্তিঃ সাধুস্মাগ্যঃ॥ ২৫॥
তত্মাৎ প্রাইজ্বের স্বত্তাই স্থপন্থিভিঃ।
সন্তিশ্ব সহার্ধ্য যোত্তিঃ সমপ্রায়শৈঃ॥ ২৬॥
যেষাং ত্রীণ্যবদাতানি বিদ্যা যোনিশ্ব কর্ম্ম চ।
তান সেবেকৈঃ সমাস্যা হি শাস্ত্রেভ্যোইপি গরীর্দী॥ ২৭॥
নিরার্দ্তা হালি ব্য়ং প্রাশীলেমু সাধুমু।
পুণ্য মেবাপ্রুম্বামেহ পালং পাপোপ্রেননাৎ॥ ২৮॥

ন প্রার্থনামহে "প্রার্থনারাংলিঙ্" নেতি বিতর্কে, বিনশ্যে মেতি তর্করামহে ইতিপ্রাঞ্চঃ ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ আপাঃ অপাঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ আবদার তানি শুলানি. বিদ্যা বৈদিকী নতু কৌলিক্যাদিঃ, কর্ম বেদার্থা স্থ্যানং, রোনিঃ পূর্ব্বপ্রজ্ঞা, শ্যেন যাগাদে হিংসা সাধনস্য বেদার্থদ্বেপি নাবদাত্ত্ব মন্তি অতো জন্মন্তরীয় সংস্কারোপি শুল্ধ এবাপেক্লিতঃ, "তং বিদ্যাক্র্যনী সমন্বারভেতে পূর্ব্বপ্রজ্ঞাচ" ইতি অতেঃ, অত্র গোনিশবেন মুখ্যাহ প্রেক্রারণং পূর্ব্ব প্রক্রের গ্রাহাং, অন্যেতু—গোনি শবেন পিতৃ মাতৃ প্রেক্রারণং পূর্ব্ব প্রক্রের গ্রাহাং, অন্যেতু—গোনি শবেন পিতৃ মাতৃ শুল্ল মাত্রু, সমাস্যা সংগতিঃ, "সংপূর্বক্যাসগতা বিত্যাসরপন্" অপিশ্বনা ছোক্রমপি সমাক্জান হেতৃত্বা গুলু, সৎসক্ত ততোপি গায়ীয়ানু "ন্যাথা গার্থনংশন্তি" ইতি কেবল শক্ত্রিয়া প্রার্থাকিছে কর্বোক্তেঃ ॥ ২৭ ॥ নিরারজাঃ জ্বামিহোত্রোদ্যকুর্বাণাঃ, অপি হি শব্দঃ " এতদ্ব আ বৈ তান্বিদ্বাহাত, সংস্কাল্লকাত্ব বিদ্যানাং কি ম্যিহোত্রেণ ?—ইতি ভাবঃ, পা-পোপ সেবনাদিতি—অসংস্ক্র্যা পাপ্রেত্রহং দ্যোত্রত্বতি ॥ ২৮ ॥ বি

অসতা দর্শনাৎ স্পর্ণাৎ সংজ্ঞপান্ত সহাসনাৎ।
ধর্মানারা: প্রহীয়ন্তে সিধ্যন্তি চন সানবা: । ২৯ ॥
বুদ্ধিশ্চ হীয়তে পুংসাং নীটিঃ সহ সমাগমাৎ।
মধ্যমৈম ধ্যতাং যাতি শ্রেষ্ঠতাং যাতি চোল্ডমৈ: ॥ ৩০ ॥
অনীতৈ নাপা বিষয়ে নাহধর্মিটে বিশেষত : ।
বে গুণাং কীর্তিতা লোকে ধর্মকামার্থসম্ভব:।
লোকাচারেষু সম্ভূতা বেদোক্তাঃ শিষ্টসম্মতাঃ ৩০ ॥
তে যুম্মান্ত সমাস্তাশ্চ ব্যস্তাশৈচবেহ সদাণাঃ।
ইচ্ছামো গুণবন্মধ্যে বস্তং শ্রেষোহভিকাজিকণঃ"—॥ ৩২ ॥
যুম্ধিটার উবাচ।

"ধন্যা বয়ং যদস্মাক শেষ্ট্রকারুণ্যযন্ত্রিতাঃ।
অসত্যেহপি গুণানাছ ব্রাহ্মণপ্রমুখাঃ প্রজাঃ। ৩৩॥
তদহং ভ্রাতৃসহিতঃ সর্বান্ বিজ্ঞাপয়ামি বঃ।
নান্যথা তদ্ধি কর্ত্তার্য মস্মৎস্লেহানুকস্পায়া॥ ৩৪॥
ভীন্মঃ পিতামহো রাজা বিদ্বরো জননী চ মে।
সুহজ্জনশ্চ প্রায়ে মে নগরে নাগদাহ্বয়ে॥ ৩৫॥

নসিদ্ধান্তি—সিদ্ধি কিতে শুদ্ধি ন্তাংন প্রাপ্থ, বন্তি ধর্মাচার হীনহাং ॥ ২১॥ অবিষয়ে: অপোচরেঃ অপরিচিতৈ রিতার্থঃ, ধর্ম কামার্থ সন্তবাঃ ধর্মাদীনাং সন্তব মুংপত্তি রেডা ন্তে, শিক্ষানাং বেদপ্রামাণ্য বাদিনাং সন্মতাঃ ॥ ৩১॥ সমন্তাঃ একীভূজাঃ, ব্যন্তাঃ পৃথক্ পৃথক্ভূতাঃ, প্রেয়ঃ স্বর্গাদিপি প্রশন্ততর মাল্লস্থন্ ॥ ৩২॥ এবং পৌরজনিঃ সংসদগুণাঃ অসংসদদেশ্যাক্ষ উপাদানার হানায় চ উক্তাঃ, ধন্যাব্রীত্যাদিনা—শক্তোরপি স্বংদেয়মিতি দর্শরাজি পৌর নিবর্তনপ্রসদ্দেন ॥ ৩৩॥ স্লেহো বাৎসলাং তংসহিতা অনুকল্পা দর্মা স্বেহান্ত্ৰণা তয়া ইত্যর্থঃ ॥ ৩৪॥ ৩৫॥

^{*} নাল্ডেম গ্রন্থাগাঃ ক-পুস্তকে ঘ-পুস্তকে ।

তে সুস্মদ্বিতকামার্থং পালনীয়াঃ প্রযন্তরঃ। যুগাভিঃ সহিতাঃ সর্বে শোকসম্বাপবিহ্বলাঃ॥ ৩৬ । নিবর্ত্তভাগত। দুর্থ মমাগমন-সাপিতাঃ। 🛊 ক্ষজনে ন্যাসভূতে মে কার্য্যা ক্ষেহান্বিতা মতি:॥ ৩৭ ॥ এতদ্বি মম কার্যাণাং পরমং হৃদি সংস্থিতম্। ক্বতা চানেন ভৃষ্টিমে সংকারশ্চ ভবিষ্যতি'' ॥ এ৮ ॥ रिवमन्शायन छेवाह। তথানুমন্ত্রিক্র কৈন ধর্মরাজেন তাঃ প্রজাঃ। চকু রার্তস্বরং ঘোর৲ হারাজনিতি সংহ্তাঃ—॥ ৩৯ ॥ গুণান্ পার্থক্ত সংস্মৃত্য ছুঃখার্ডাঃ পরমাতুরাঃ। অকামাঃ সন্নাবর্ত্তর সমাগম্যাথ পাওবানু-॥ ৪০॥ নিরুত্তেমু চ পৌরেমু রখানাস্থায় পাওবাঃ। আজগ্মজাহ্রীতীরে প্রমাণাখ্য মহাবটম্ ॥ ৪১ ॥ তে তং† দিবসশেষেণ বটং গত্বা তু পাগুবাং। উষু স্তাং রজনীং বীরাঃ সংস্পৃশ্য সলিলং শুচি ॥ ৪২ ॥ উদকেনৈৰ তাং রাত্রি মূষুত্তে ছু:থকর্ষিতাঃ। অনুজগাুশ্চ তত্তৈতান্ স্নেহাৎ কেচিদ্দি জাতয়ঃ ॥ ৪৩ ॥

শোক সন্তাপ বিহ্বলাঃ—শোক ইন্ট বিরোগজং ছঃখং, তেন সন্তাপঃ দে ছেন্দ্রিরাদেরৰ সাদঃ, তেনবিহ্বলাঃ ব্যাকুলাঃ ॥৩৬॥আগমনে তাবিহুক্তিকং, আনাতিঃনহ আগমনে শাপিতা—মুমুপথং কারিতাইতার্থঃ॥ ৩৭॥ ৩৮॥॥ ৩৯॥ সমাগম্য সংপুছা ॥ ৪০॥ নির্ভেয় ছু পৌরেষিত্যাদিনা—ধিক্ পাপান্ প্রবাক্তিজান্—ইতান্তেন প্রস্থেন ধর্মাথান মনি ছন্তম্পি বলাৎ, সন্তোহ্ন গৃত্বভি ছুট্টতে॥ ৪১॥ উত্তঃ ব্যাংচক্তুঃ॥ ৪২॥ উদকেনিব ন জ্বেন উর্ নিহাঃ॥ ৪৩॥

^{*}তাপিতাঃ ইতি ক পুস্তক্সা, মমাগমন ইত্যসাচ ছানে "সমাগমন ইত্য চ ঘ-পুস্তক্সা—

[🕇] তং তে ইত্যেবং বিপর্বায় পাঠ: ক পুস্তকত্ম।

সাগ্নযোহনগ্নযদৈতৰ সশিষ্যগৰ্ণ বাস্তবাং।
স তৈঃ পরিবৃত্তা রাজা শুশুভে ব্রহ্মবাদিভিঃ॥ 88॥
তেষাং প্রাত্তম্ক তাগ্নীনাশ মুহুর্ত্তে রম্যদারুণে।
ব্রহ্মঘোষ পুরস্কারঃ সংজ্পাঃ সমজাযত॥ ৪৫॥
রাজানস্ত কুরুল্রেষ্ঠাং তে হংসা মধুরস্বরাঃ।
আখাস্যন্তো বিপ্রাব্র্যাঃ ক্ষপাং সর্ব্বাং ব্যনোদ্যন্॥ ৪৬॥
ইত্যারণ্টকে পর্কানি অরণ্যযাত্রাপ্রবৃদি পৌর-প্র্ত্যাগ্মনং নাম
প্রথমোহ্ধ্যায়ঃ॥ ১॥

, বৈশম্পায়ন উবাচ। প্রভাতায়াস্ক সর্বিহ্যাপতেষা মক্লিফকর্মাণামু।

বনং যিযাসতা বিপ্রা স্তস্থ জিক্ষাভূজোহগ্রত: ॥ ১ ॥ তানুবাচ ততো রাজা কৃষ্টীপুজো যুধিষ্ঠির:।

্বয়ং হি হৃতসর্বস্থা হৃতরাজ্যা হৃতশ্রেয়ঃ॥ ২॥

সাগ্রঃ দারেঃ সহিতাং, অনগ্রঃ স্নাতকত্রজার্ধনাদয়ঃ ॥ ৪৪ ॥ প্রাহুস্তাঃ প্রকটীকৃতা অগ্নরোথৈ তে, রমান্তং তাপনিরহাৎ সন্ধ্যা রাগাদি শোভাতক, দাকণো রক্ষঃ পিশাচাদি সঞ্চার কালভাশ, ত্রহাঘোষ পুরস্কারঃ উচ্চৈপ্রেচ্ছা পনাাস পুর্বকঃ, সংজ্পাঃ পরস্পার সম্বাদঃ ॥ ৪৫ ॥ আশ্বাসয়ন্তঃ বন বাস-স্যাপি শ্রেষক্রর ব্যোপপাদনেন ইতি শেষঃ ॥ ৪৬ ॥ ইত্যারনাকে পর্কনি নৈলকগ্রীয় ভারত ভাব দীপ্রে প্রথমাহধারঃ ॥ ১ ॥

প্রভাতায়ামিতি—প্রভাতায়াং অরুণোদয়ে নোদীপিতায়াং রঙ্গনাশ্চর মভাগে ইতিবাবং, বিবাসতাং যাতুং গস্তুমিচ্ছতাং, ভিক্ষাভুক্ক: ব্রাক্ষণাঃ ॥ ১ ॥ ধনং রাজ্যং প্রভ্রত্ত কৃতাপ্রীঃ ব্রাক্ষণ তর্পণাদি রূপা শোভাচ অন্যাকং নস্ট্যাই ত্যাহ বয়ং হীতি॥ ২ ॥

^{*} ষ ক পুস্তকে " হংস-মনুর স্বরা" ইত্তোবং পাঠঃ, এতমতে—হংস বন্মুধুরস্বরা ।ইতার্থঃ, সর্বাত্র পাশ্চাতা পুস্তকে তু—হংসা ইতি ভিন্নং পদং, এতন্মতে হংসা যতয় ইতার্থঃ, এতমনোরন্তমের।

ফলমূল।মিষাহারা বনংগক্তাম তুংথিতা:। বনঞ্চাৰ্যভল্প বছব্যাল্যরীস্থায় ॥ ৩ ৷ পরিক্লেশশ্চ বো মন্যে ধ বং তত্ত্র ভবিষ্যতি। ব্রাহ্মণানা - পরিক্লেশো দৈবতান্যপি সাদ্ধেই : কিং পুন ম্মা মিতো বিপ্ৰা! নিবৰ্ত্তধ্বং যথেষ্টতঃ' — 🛭 ৪ 🗓 • বাদাণা উচুঃ। ^৫পতি যা ভরুতাং রাজন্ ! তাং ব<mark>যং গতু মু</mark>দ্যতঃ । না≨য়সাশ্^ঠারিতাজুং ভ<mark>জান্ সকর্দশিনঃ</mark> ; ৫॥ অন্ত্রন্পাশ হি ভক্তেযু দেবতা ছাপি কুর্বতে। বিশেষতো ত্রাহ্মণেষু সদাচারাবলিষ্বিশু"—, ৬ ঃ युभिछित छैनाछ। " মমাপি পরমা ভক্তি ত্রান্সণেষু সদা ছিজাঃ!। সহ,যবিপরিভংশস্থং সাদ্যতীব মাম্॥ ৭ ॥ আহরেয়ু রিমে যেহপি ফলমূলংমূগাংস্তথা। ত ইমে শোকজৈ ছু ঃথৈ ভাতিরো মে বিমোহিতাঃ ॥ ৮ ॥ Cजीलमा विश्वकर्षं त्राजालहत्त्वन ह। ছুংখাৰ্দিত।নিমান্ ক্লেশৈ নাহং যোক্ত মিহোৎসহে"॥ ৯॥

'' অন্মৎপোষণজা চিন্তা মাভুত্তে হৃদি পার্থিব!। স্বয় মাহৃত্য চান্নানি ত্বাহ্নু যাস্যামহে ব্যম্*॥ ১০॥

ব্যালা: স্বাপদা: ব্যুক্ত শ্বাদ্য়: "বাণলো ভুজদমে কুরে শ্বাপদে ত্র্যুট দন্তিনি।" হতি বিশ্ব: ১০॥৪॥ভক্তা অপি মূঢ়াশেচংস্কুট কিন্তুর্হি তৈঃ ?—
ইত্যত আত্তঃ সদ্ধান দন্দিন ইতি— সতো ত্রন্ধণো যে ধর্মাঃ সত্যক্ষিত্ব সত্য শংক্ষপার্শনয় স্তদ্সু ভবিনঃ॥৫॥৬॥৭॥৮॥৯॥১০॥

ব্ৰাহ্মণা উচু:।

^{*} উপধোক্ষ্যামছে বয় মিতি ক ঘ।

অনুধ্যানেন জপ্যেন বিধাস্যামঃ শিবং তব। কথাভিশ্চাভিরম্যাভিঃ * সহ রংস্যামহে ব্যম্' । ১১॥ যুধিষ্ঠির উবাচ।

" এব মেত র সন্দেহে। রমেহহং সতত ছিজৈ;।
ন্যুনভাবাতু পশ্যামি প্রত্যাদেশ মিবাত্মন: । ১২ ॥
কথং দ্ক্যামি বং সর্কান্ স্বযমাহৃত্য, ভোজিন:।
মন্তক্ত্যা ক্লিশ্ডেই নহান্ধিক্ পাপান্ধুতরা কলে।
বৈশ্লায়ন উবাচ।

ইত্যুক্ত্বা স নৃপঃ শোচন নিষ্মাদ মহীতলে।
ত মধ্যাত্মরতো বিদ্ধান শৌনকো নাম বৈ দিজঃ ॥ ১৪ ॥
যোগে সামধ্যে চ কুশলো রাজান মিদমন্ত্রবীৎ—॥ ১৫ ॥ †
শোকস্থান সহস্রাণি ভযস্থানশতানি চ ।
দিবসে দিবসে মৃত মাবিশন্তি ন পণ্ডিতম্ ॥ ১৬ ॥
ন হি জ্ঞানবিরুদ্ধেষু বহুদোষেষু কর্মস্থ ।
শোহাতিষু সূজ্জতে বুদ্ধিমন্তো ভবদিধাঃ !—॥ ১৭ ॥

অনুধ্যানেন ইফচিন্তনেন, জপ্যেন স্বস্তায়নেন, ইতানুফীৰারা উপকার মুক্তবা দুফীৰারাপি ত মাহু: কথাতি রিতি—॥ ১১ ॥ প্রত্যাদেশং ধিক্কারম্ ॥ ১২ ॥ ॥ ১৩ ॥ এবং বান্ধণভরণ সামর্থাভাবাং ধিন্নং রাজানং প্রতি শোকমোহ নিবর্তকং বচনংশোনক আছ ইত্যাহ ইত্যুক্তে ভি—অধ্যাত্মং আত্মানং পারী-রং (শারীরো জীবঃ) অধিকতা প্রকংশারুং অধ্যাত্মংবেদান্ত শুত্র রতঃ ॥১৪॥ যোগান্তির্ভাত নিরোধঃ, সাংখ্যংপ্রকৃতি পুরুষ বিবেক শুয়ো নিঞ্চাতঃ ॥ ১৫ ॥ শোকে স্থীয়তেহনেনেতিরাং পাত্রা স্থানশন্দো হেতৃব্চনঃ, শোকঃ মনস্তাপঃ, ভয়ং মরণাং ত্রাসঃ, ডয়োহ্ভিব ইফবিরোগা ছনিফ সংযো-গাদিয় স্থোং সহস্তাদীনি ॥ ১৬ ॥ নমু?—ধর্ষে সামর্থ্যভাবাদেব মম

^{*} কথাতি কাতি রম্যাতিরিত পুস্তকান্তরত্ত ক পুস্তকত্ত চ—

† অত্র " শৌনক উবাচ" ইতাধিকঃ পাঠঃ ক পুস্তকে।

† ক পুস্তকেতু—নভি জ্ঞানেতার্কং শ্লোকত্ত পশ্চাং প্রবিষ্ঠং।

অন্ত ক্ষাং বৃদ্ধি মান্ত বাং সংবাজে যে যে ছিল তিনাম।
আক্তি ক্ষাতিসমামুক্তাং রাজন্! সা স্ব্যাবস্থিতা॥ ১৮॥
অর্থক ছেনুমু তুর্বেমু ব্যাপৎস্থ স্থজনস্য চ।
শারীর-মানইস দ্ংথৈ নিসীদক্তি ভবদ্ধিং---। ১৯॥
আরতাঞ্চাভিধাস্যামি জনকেন যথা পুরা।
আন্তব্যবস্থানকরা গীকাং শ্লোকা মহাত্মনা॥ ২০॥
মনোদেহসমুপ্রাভ্যাং তুংখাভ্যাং মন্দিতং জগৎ।
তবো ব্যাসসমালাতা শমোপায় মিমণ শূণু— ২১॥
ব্যাধে রনিইস শ্লেশিৎ শ্রমাদিই বিবর্জনাৎ। শ্লুখং চতুর্ভিঃ শারীরং কারণৈঃ সম্প্রভৃতিতে॥ ২২॥

শোক ভয়ে, নতু রাজ্যচ্যতি-বন বাসক্তে, ইত্যাশাঙ্ক্যাহ নহীতি-প্রবৃত্তি-क्राली यज्जनानानिधायी ज्ञानित्राधी, ज्ञातिह 'यज्ञप्रा मर्क मारेज-বাড়ং তংকেন কংপশোং ?—" ইতি দ্বৈতোপমর্দ্ধঃপ্রায়তে, কর্মাণি ডু দৈতোপজীবনানি, অত স্তরো বিরোধঃ প্রসিদ্ধই তি হি-শব্দে। দ্যোতয়তি, পশুৰীজ বুধাদি সাধাত্বা দেশে বছল ১০, অতএব শ্রেরো ছাতী মোক্ষ বি-রোধী, তত্ত্ব সক্তন্তে নাত্যস্তমতি নিবেশিনে ভবন্তি ॥ ১৭ ॥ এবং কর্ম-নিষ্ঠাং নিন্দিত্বা যোগনিষ্ঠাং আহমতি অফান্সামতি—'' মমনিয়মাসন প্রাণায়াম প্রত্যাহার ধারণা ধানে সমাধ্যোহটো বন্ধানি" ইতি যোগ স্থতোক্তানি সকল্প সংবাধানীনি বা বক্ষামাণানি অফাবজানি যস্যা: সা বুদি শুরুমস্যাদি বাক্যজা প্রজা, যাং সর্বাং কুৎস্নং অল্রো মূলাজানং তদভি যাতিনীং ল্ঞাতি স্মৃতিভাগং সমাযুক্তাং সমাক্দুঢ়ীকুতাং সা ঘরি অবস্থিতা হম্মৎ সলিধানা দিতি ভাবঃ॥ ১৮॥ অর্থকুচ্ছে, মু ধন নাশেষু অসনবসনা দ্যভাবাৎ হুর্গেরু হুন্তরেরু শারীর হু:খেরু বিপরীতা্য জাপংসু জ্রী-কর্ষণাদিরু মনোত্বংধরুচ উপস্থিতেরু তৈঃ সন্তো নাবসী দন্তি, শারীরংগৃঃখং তিতিক্ষা মানসং বিবেকেন চ নাশরিতৃং সম্পা ইতার্থ: ॥ ১৯ ॥ আফ্রান্র স্থানকরাঃ মনঃ স্থৈর হেতব: ॥ ২০ ॥ ব্যাস-সম্প্র সাভ্যাং রিস্তর-সংক্ষেপাভ্যায়॥ ২১॥ ব্যাধিঃ প্রাসিদ্ধঃ, অনিষ্ঠং কণ্ট-

^{*} বিসৰ্জ নাদিতি ক-

তদা * তৎপ্রতিকারাচ্চ সততঞ্গবিচিন্তনাৎ।

আধিব্যাবিপ্রশানন কিরাবোগদ্বেন তু ॥ ২০ ঃ
নতিমত্যে হাতো বৈদ্যাং শমং প্রাণেব কুর্নতে—
মানসন্য প্রিয়াখ্যানৈঃ সন্তোগে!পানধৈ নৃণাম্ ॥ ২৪ ॥
মাদেন হি ছংখেনশরীর মুপতপ্যতে।
আরংপিজেন তপ্তেন কুস্তুসংস্থ মিবাদকম্ ॥ ২৫ ॥
মানসং শম্বেজ্মাজ্জানেনাগ্রিমিবাসুনা।
প্রশাল্ডে মানদে হান্য শারীর মুপশাম্যতি॥ ২৬ ॥
মনসো ছংখ্যুলন্ত স্কেই ইত্যুপলভাতে।
স্কেহাল্ডু সজ্জতে জন্ত ছুংখ্যোগ মুপৈতি চ ॥ ২৭ ॥
স্কেহ্যুলনি ছুংখানি স্নেইজানি ভ্রানিচ।
শোকহ্যো তথাযাসং স্কাং স্ক্রেছে বিষ্থে তথা।
আন্ত্রার্ক্ষা বুভা বেতৌ পূর্বান্তত্ত গুকুঃ স্মৃতঃ ॥ ২৯ ॥
আন্ত্রার্ক্ষা বুভা বেতৌ পূর্বান্তত্ত গুকুঃ স্মৃতঃ ॥ ২৯ ॥

কাদি, প্রমে। ব্যায়ায়ং, ইঞ্ং অন্নাদি॥ ২২॥ প্রতিকারতে ঔবদোপানং স্বাস্থ্যান্তাদিভি কপশমনাং, আধি ব্যাধি প্রশমনং, অধিচিন্তনাচ্চ, কচি দিবলৈ অতান্তনিমন্তিরদান মনোব্যথা ব্যাধিপ্রভবা বেদনা বা ভবতীতি প্রদিদ্ধং, ইদমেব ক্রিয়া যেগাদ্বয়ন্ ॥ ২৩॥ মতীতি—অতঃ বক্ষামা গাদ্ধেতোঃ বৈদ্যাঃ বিদ্যাবন্তঃ সদস্দর্শিনঃ (পক্ষাস্থরে সচ্চিকিংসকা গৃছীতব্যাঃ) প্রাণোধ মানস্যা শমংকুর্বতে, প্রিরাখ্যানিঃ—অত্কুলবঙলৈঃ, বহুলাক্তদর্শনৈ ধ্নহানাদিজং, সন্তোগোপনিয়েঃ স্ত্যাদি সমপ্রিণাচ কামাদিজং॥ ২৪॥ মানস্য প্রাকৃপ্রশমনে হেতুমাই মানসে নহীতি—॥ ২৫॥ ২৬॥ ক্রেয়া রাগঃ, সক্ততে প্রবর্ততে, প্রব্যাচ হঃখী ভবতি হঃখবোগ মুপেতি॥ ২৭॥ আয়াসঃ ক্লেশঃ, স্বেহাৎ রাগাং॥ ২৮॥ তাবঃ ভাবনা সঙ্কপাসংজ্ঞা, অত্রাগাং পশ্চাংভাবিনী প্রীতিঃ, অয়ংভাবঃ, "হঃখুজন্ম প্রভিদ্যে মিথা জ্ঞানান মুত্রোবরার পারে তদনভ্রাহপারাদপ্রগাঃ "—"দোধনিমিতং রূপাদ্যো বিষয়াঃ সঙ্কপাক্তাং"—ইতিনায়ে স্ব্রাভাং অজ্ঞানাং

^{*} সদেতি প!ঠঃ ক পুশুকে।

কোটর প্রির্থা শেবং সমূল পাদপং দহেং।
ধর্মাথোঁ তু তথা পোহাপ রাগদোষো বিনাশ্যেং॥ ৩০॥
বিপ্রযোগে ন তু ত্যাগাঁ দোষদাাঁ সমাগমে। †
বিরাগ ভজতে জন্ত নিকোরো নিরবগ্রহঃ॥ ৩১॥
তক্ষাৎ ক্ষেহণ ন লিপ্সেত মিত্রেভ্যাে ধন্য প্রযাৎ।
স্থানীর সমুপঞ্চ জ্ঞানেন বিনিবর্ত্তিখেং॥ ৩২॥
জ্ঞানান্তিমু মৃক্তেমু শাস্ত্রজ্ঞেমু কৃত্যান্ত্র ।
ন তেমু সজ্জাতি ক্ষেহং পদ্মপত্রেদিবোদকম্॥ ৩৩॥
রাগাভিভূতঃ পুরুষং কামেন পরিক্ষয়তে।
ইচ্ছা সংজায়তে তস্য তত শৃষ্ণা বিবর্দ্ধক্তে ।

সহস্প স্তাতে বিষয় স্তত স্তত্ত প্রীতি স্তত স্তর্গাভায়প্রস্থাতি স্তাত জন্ম ততঃ হুখ হুংখে ততে৷ রাগদেষ বাসনা ততঃ পুনঃ সঙ্কপা ইতিক্রমঃ, তত্ত্বগুল ভূতে: রাগঃ স্নেহ শব্দে নে: ৬০ঃ ,স ভাবতা হেতু স্ততে বিষয় সিদ্ধ্য তরং জারমানো রাগো ২তুরার ইতি, তত্র ভাবাতুরার্গায়ে। মুধ্যে পুর্বেভিবেঃ অত্যন্ত মশ্রেমক্ষরঃ, তকাং সক্ষপাত্যাগ এব মুখ্যং সাধনং, তথাচ বক্ষাতি "যৎ কিঞ্চিদপি সঙ্কণ্য নরে। তুঃখে নিমজ্জতি।ন কিঞ্চিদ্পি সঙ্কণ্যা স্থ মক্ষণ মূখতে।" ইতি॥২৯॥ কোটরেইতি—রাগএব দেখিঃ॥৩০॥ বিপ্রয়োগে বিষয়েন সহ বিয়োগে তাগা ন, কিন্তু সভাপি সমাগ্রে যো বিষয়দোষ দশী সত্রব ত্যাগী, সত্রব চাবিঞ্চাং ভজতে, নির্ফ্রেজ্চ, দ্বেশ ভাবান্তিরবগ্রহঃ মুএব॥ ৩১॥ মিত্রাণি ধন্যনিচ প্রাপ্য তেয় স্কেছং ন লিপ্সেত নকাময়েৎ "মিত্রেভা ইভাদিকে লাব লোপে পঞ্চমৌ" কিঞ্চ অণ্টীরাল্লি দাখাণ সমুখং উৎপ্রম্পি শ্বেহং জ্ঞানেন ভোগানা মণস্ত রানিতার জ্ঞানেন নাশয়েদিত্যর্থ:॥৩২ ॥জ্ঞানিবতেয়ু নিতানিতা বিবেকবৎস্থ, যুক্তেয়ু নিতাবস্তু প্রাপ্তরে উন যুক্তেয়ু, তত এব শাস্ত্রজেয়ু কুত্রিমূ জ্ঞানেন সংস্তৃতিত্তের তেয়ু প্রাসদ্ধের স্বেছো রাগোন সক্তৃত্তেন সঙ্গুপ্রোতি ॥৩৩॥ রাগঃ রমান্ত্রনর্শনে ,চিত্রনোব্রুপ্রতা, কাম তাল্লিকা, ইক্ষা **লব্ধেতিয়ান্ কচ্যতি শ**য়াৎ পুনস্ততিনাত তামিন্ কচাতিশয়াৎ পুন স্তৰ -

^{*} দহেদি তাত্র হরেদিতি হ।
, ্ণ সমাগমাদিতি ক-হ।

ভূষণ হি সর্বপাপিষ্ঠা নিত্যোদ্বেগকরী স্মৃতা। অধর্মবছলা চৈব ঘোরা পাপামুবন্ধিনী ॥ ৩৫॥ যা ছুস্তাঙ্গা ছুৰ্শ্মতিভি ৰ্যা ন জীৰ্যাতি জীৰ্য্যতঃ। যোহসৌ প্রাণান্তিকো রোগ স্তাৎ তৃষ্ণা৲ ত্যজ্ঞতঃ সুথম্। তিওঁ । ष्यनामुखा जुना जुकै। ष्यस्पर्भश्गठा नृगाम्। বিনাশ্যতি ভূতানি অযোনিজ ইবানল: ॥ ৩৭ ॥ যথৈধঃ স্বদমুপ্থেন বহ্নিনা নাশ মিচ্ছতি।ু ত্থাকুতাত্মা লোভেন সহজেন বিনশ্যতি। 🗫 🛚 রাজতঃ সলিলাদয়ে শেচীরতঃ স্বজনাদিপ। ভয় মর্থবতাং নিত্যং মৃত্যোঃ প্রাণভূতামিব 🛭 🤒 🛭 যথা হামিব মাকাশে পক্ষিভিঃ শ্বাপদৈ ও বি। ভক্ষ্যতে সলিলে মংগ্রৈয় স্তথা সর্বত্ত বিস্তবান । ৪০ ॥ অর্থ এব হি কেষাঞ্চি দনর্থং ভজতে নুণাম। অর্থশ্রেয়সি চাসক্তো ন শ্রেয়ো বিন্দতে নর: । ৪১॥ তক্মাদর্থাগমাঃ সর্বে মনোমোহবিবর্দ্ধনাঃ। * कार्भगार मर्भ-भारती ह खत्र मूर्यं व व ह । 82 ॥

ভিলাষঃ, পুনঃপুনন্তল্লাভে পাতৃপ্তি জ্ঞা॥ ৩৪॥ জীর্যাভঃ জরা মৃত্যুগ্রন্থানা ॥ ৩৬॥ অনাদ্যন্তা তথাল বাসনানা মনাদিছাৎ, অন্তর্দেহঃ বাহ্যতরো দেহোহরময়ঃ বাহ্যো লিজশরীরং অন্তর্দেহে! মন ভালাতা, অয়ঃ
তপ্তায়ঃ পিণ্ড০ নিজঃ স্বরূপস্থঃ অনলো বহ্লিঃ, অয়োনিজমিবানল মিভি
পাঠেতু—নান্তি অলং পর্যাপ্তি র্যস্য তৎ ইন্ধন সহল্পৈ রতৃপ্তং তেজাহগ্রাধ্যং ইতি বিশেষ্য মধ্যাহত্য যোজ্যম্ ॥ ৩৭॥ অকৃতাদ্বা অনির্জিত
চেতাঃ॥ ৩৮॥ ৩৯॥ কেবাঞ্চিত্ম দানাৎ ধীমতামপ্যর্ণোন আভিন্তিক
শ্রেষদ্বর ইত্যাহ—অর্থ-শ্রেম্য অর্থসাধ্যে শ্রেম্য জ্যোতিট্টোম্বাদৌ॥ ৪১॥
কাপণ্যৎ অর্থব্যয়োপস্থিতো দৈন্যং, দর্পঃ পর পরিভ্রেছা, মানঃ অহ

^{*} লোভ মোহ বিবৰ্জনা ইতি ৰ---

অর্থজানি বিদ্যুং প্রাজ্ঞা দুংখান্যেতানি দেহিনাম। অর্থস্যোৎ পাদনে চৈব পালনে চ তথা ক্ষয়ে। ৪৩॥ गश्खि व सर्म ४० प्रस्ति देवरार्थकात्रगार। অর্থ দু:খন পরিতাক্ত্র পালিতালৈর শতরং॥ ৪৪॥ ष्ट्रः स्थन हा थिशमारख जन्मान्ना मन्न हिन्तरत्र । অসন্তোষপরা মুচাঃ সন্যোষং যান্তি পণ্ডিতাঃ ॥ ৪৫॥ অন্তো নান্তি পিপাসাযাঃ সন্তোবং পরমং সুখম। তম্মাৎ সন্তোষ মেবেই পরং # পশ্যন্তি পণ্ডিতা: ॥ ৪৬ ॥ অনিত্য^ যৌবন^ ৰূপং জীবিতং রুত্মঞ্চয়ঃ। ঐশ্বর্যাং প্রিয়স্বাসো পুধ্যেত্তত ন পশ্তি:॥ ৪৭॥ ত্যজেত সঞ্যাং স্থাতজ্ঞান ক্লেশানু সহেত চ। ন হি সঞ্চয়বান্ কশ্চিদ্দুশ্যতে নিরুপদ্রব:। অতক্ষ ধার্দ্মিকৈ: পুংভি রনীহার্থ: প্রশস্যতে। ৪৮॥ ধর্মার্থং যস্য বিজেহা বরং তস্য নিরীহতা। প্রকালনাদ্ধি প্রস্যা ভোয়োন স্পর্শন্ নৃণাম্ † ॥ ৪৮ ॥ যুধিষ্ঠিরৈবং সর্বেষু ন স্পৃহাং কর্তু মর্হসি। ধর্মেণ যদি তে কার্যাং বিমুক্তেচ্ছো ভবার্থত:"—। ৫ ।।

^{*} ধন মিভি ক—

† দুরাদম্পর্শনৎবর্মৃ* ইভি ক—

যুর্ণিভার উন্য5।

"নারোগভোগ লিপার্থ মির মর্থেপাতা মম।
ভরণার্থক্ত বিপ্রাণাং ব্রহ্মণ কাজ্যেন লাভতঃ। ৫১।
শক্ষণ হালাদিলা ব্রহ্মানা গৃহাপ্রামেন বিলান বাপি ন কুর্যা দরুষায়িনাম ?—॥ ৫২॥
নারভাগো হি ভূতানাং নর্বের্মানা ম্বর্মারেনা ম্বর্মার লাভাগে।
ভিন্ন বিপ্রান্ত প্রান্ত ক্রের্মার লাভাগে।
ভ্রাণ্ডমানেভাঃ প্রদেব গৃহমেরিনা । ৫০॥
ভ্রানি ভূমি রুদকং বাক্ চভুর্থী চ স্ত্র্ম্তা।
স্তা মেতানি গেহেমু নোজিলান্তে কদ্যুক্ম। ৫৪॥
দেয় মার্ভিস্য শ্যানং স্থিত আন্তর্মা চাসন্ম।
ভূমিত স্যুক্ত পানীয়া জ্বিত স্যুচ ভোজন্ম্। ৫৫॥
চক্ষ্দিলালনো দলাভাগে দলাৎ স্বভামিতান্।
ভ্রাণ্য চাসন দলাদেষ বর্মাঃ সনাতনঃ।
প্রাণ্যাভিগ্যনং কুর্যাল্যাযেন চার্চ্যম্য ॥ ৫৬॥
আনহোত্র মন্ড্রাণ্ড জনাত য়োই ভিথিবাল্যবাঃ।
পুল্রা দ্রাণ্ড ট্রাণ্ড নির্দ্ধেরুরপুজিতাঃ॥ ৫৭॥

অর্থেপিভোগঃ বিবয়োপভোগঃ, অর্থেপ্স্তাধনেপ্স্তা, "অর্থঃ প্রকাবর বিত্ত কারণ বস্তুর্" ইতি বিষঃ। আকোপভোগেতি পাঠো নির্মূলঃ॥ ৫১॥ ৫২॥ ভূতানামিতি—দে পিতৃ মহ্যাণা মুপলক্ষান্, দৃশ,তেচ পঞ্চ মহাযজের অপ্সানেভাঃ "যতিক ব্রলারীচ পকার স্থামনা বুছে," ইত স্থাত ইত্যাদিভাঃ॥ ৫৩॥ ভূণানি আসনার্থানি॥ ৫৪॥ স্থিত প্রতিষ্ঠা উর্ক্থিতঃ তংসহিত্যা প্রভিন্য আসমং ভূণমনং দিলাং অতিথ্যে ইতি শেষঃ॥ ৫৫॥ ন্যায়েন বণ্গিমা ভ্রপোণ॥ ৫৬॥॥ ৫৭॥

^{*} কথ মশ্বদিতি ক—

ক শস্যত ইতি ক।

বৈ প্ত-দারা কেতি সমস্ত পাঠঃ ক পুতকে।

আত্মার্থং * পাচ্যেরারং ন রুথা ছাত্ত্যেং পশূন্। ন চ তৎ স্বয় মশ্লীযাছিধিবদ্ যন্ন নির্ব্বপেৎ॥ ৫৮॥ শ্বভাশ্চ শ্বপচেভাশ্চ বযোভাশ্চাবশ্চাবপেদ্ধবি। ্বেশ্বদেবং হি নামৈতৎ সাযং প্রাতশ্চ দীয়তে॥ ৫৯॥ বিঘদাশী ভবেত্তসান্নিতাঞ্চামূতভোজনঃ। বিঘদো ভুক্তশেষম্ভ যজ্ঞশেষং তথামৃত্যু ॥ ৬০॥ চকুৰ্দদ্যান্মনো দদ্যাদ্বাচ্ দদ্যাচ্চ স্থনুতাম্। অনুব্রজেত্নপানীত স্বজ্ঞঃ পঞ্চদক্ষিণঃ , ৬১ । যো দন্যাদপরিক্লিউ মন্ন মধ্বনি বর্ত্ততে। প্রায়াদৃউপূর্বায় তদ্য পুণাফলং মহৎ ॥ ৬২॥ এবং যো বর্ত্ততে রুক্তিশ বর্ত্তমানো গুহার্ত্রমে। ত্রস্য ধর্ম্মং পরং প্রান্তঃ কথং বা বিপ্র ! মন্যদে ?''—॥ ৬৩ ॥ শোনক উবাচা ''অহো বত! মহৎ কফইং বিপরীতমিদ্দ জগৎ। যেনাপত্রপতে সাধু রসাধু স্তেন তুষ্যতি। ৬৪। শিশ্বোদরক্লতে২প্রাজ্ঞঃ করে।তি বিঘসং বছ। মোহরাগবশাকান্ত ইন্দ্রিযার্থবশানুগঃ ॥ ৬৫ ॥

র্থা— আদ্ধ যজাদি নিমিতংবিনা "দেবান্ পিতৃন্ সমভাচ্চা খাদন্
মাংসং নদোষভাক্" ইতি স্মৃত্ত ইদরংন নির্ব্বপেৎ তর দদ্যাং দেবপিতৃ
মন্ত্রেডা ইতি গেষঃ ॥ ৫ / ॥ বিশ্বং সর্ব্জাতীরং প্রাণি জাতং দেবো
দেবতা যন্মিন্ তৎ বিশ্বদেবং " স্বার্থে তদ্ধিতঃ" বৈশ্বদেবং নাম কর্ম। ৫৯॥॥ ৬০॥ ৬১॥ অপরিক্রিক্টং কার্প্যন্তং বিনা, অধনি বর্ত্তে মার্গস্থার ॥ ৬২॥,
ধর্মং পরং গার্হস্থৎ পরো ধর্মো নাস্তীতিভাবঃ ॥ ৬০॥ অপত্রপতে
নির্লজ্জ ইত্যপ্রাদংক্লভতে ॥ ৬৪॥ অপ্রাজ্জ ইত্তিক্লেদঃ, প্রকর্ষেণ জজঃ
প্রাজ্জ ইতি বা, শিয়োদরক্তে ইতি—দিবাান্ধনাভোগ নিপন্তা দিব্য-

^{*} অত্মার্থে ইতিচ্ছুর্থান্ত-পাঠঃ ক—আত্মনে ইতি ঘ—।

ত্রিয়তে বুধ্যমানোহপি নরে। হারিভি রিন্দ্রিয়ঃ।
বিমৃত্দংজ্ঞা জুফান্সৈ রুজ্বান্ত রিব সারথিঃ॥ ৬৬॥
বডিন্দ্রিয়ানি বিবয়ং শন্মাগছন্তি বৈ যদা।
প্রাজুর্ভবেক্তত স্থেবাং পূর্বাসঙ্কপেজং মনঃ॥ ৬৭॥
মনো যদ্যোক্রিয়ান্যেই বিষয়ান্ যাতি সেবিত্ম।
তস্যোৎস্করং সম্ভবতি প্রবৃত্তিশ্রেসায়তে॥ ৬৮॥
ততঃ সঙ্কপেবীজেন কামেন বিষয়েযুভিঃ।
বিদ্ধঃ পত্তি লোভামৌ জ্যোতির্ব্যেভাৎ প্রিস্করং॥ ৬৯॥

রপাদি ভোগ লিপ্টা চ বিষমং দেবতাত্বাপথুক্ত শেষং কামুকো যত্ করোতি, মোহ আত্মজানং, রাগ স্তজ্জে প্রপঞ্চে প্রীতিঃ, বশং ইচ্ছা ঐশ্বর্থ বা তৈ রাক্রান্তঃ, "বশমিচ্ছা প্রভুত্বয়ে। " ইতি বিশ্বঃ। ইন্দ্রি-য়ার্থাঃ শব্দাদর ত্তেবাংবশ আয়ত্তা, তদমুগ স্তদ্ধী॥৬৫॥ হারিভিঃ इत्रनगीरिनः, এবং বর্ণাশ্রমাভিমানপূর্ব্বকং यজ्ঞाদীনত্রতিষ্ঠতাং আত্মম-রপাজানাৎ তত্তৎকর্মফলতয়৷ উপস্থিতেয়ু বিষয়েয়ু রাগবতাং ইন্সিয়ে বিষয়ান্ প্রতি ছতানাং তত্ত্ব নিমগ্ন চিন্তানাং প্রমার্থস্য জত্যন্তাক্ত্রণ লক্ষাং বিমৃঢ় সংজ্ঞহং ভবতীতু।ক্তণ ॥ ৬৬ ॥ তত্নপাপাদয়তি যডিতি— দীপপ্রভাবৎ তৈজ্ঞসং মনঃ নেত্রাদিদ্ধরা তত্তদ্বিষয়ং প্রতি গ্রাভালাবরক মজ্ঞান মভিভাব্য তংবিষয়ং প্রকাশরতি যদা তদা এষাং বিষয় বিদাং মনঃ তত্তবিষয় হানোপাদানোপেকালোচনাখ্য মননাত্মক মন্তঃকরণং প্রাত্ত-ৰ্ভবতি বিশেষেণ পীনপভৰতি, তত্ত্ব পূৰ্ব্ব সঙ্কপজং যথাপূৰ্ব্ব সংস্কারং হীনে প্রাপাদেয় বুদ্ধি কত্তমে হানবুদ্ধ বি পরীতা বা বুদ্ধি উবতি দোহয়ং মনঃপ্রান্থর্ভাবঃ॥ ৬৭॥ তামিৎ শত জাতে কিংস্যাৎ ?—তদাছ মনোযদে,তি। वमा श्रुश्मः भनः दे जिल्लामा दे जिल्लामा , विष्णान् नंकानीन् मिरिकृश्माि উচ্চলতি তদ্য ভোগার্থং তদ্বিষয় ঔ স্থক্যং বিলম্বাদহয়ং ভবতি চ ততঃ-প্রবৃত্তি জারতে। ৬৮। প্রবৃত্তক লোভাগ্নৌ মোছাগ্নৌচ প্রতি যতঃ কামেন কিবয় বাবৈ নিছতঃ, অতি রাগানুমুখতীতার্থঃ॥ ৬৯॥

[ै] বিষম মিতি ক।

ŧ

ততো বিহারৈ রাহারৈ শ্রোহিত্র যথেচ্ছয়।
মহামোহে স্থে ময়ো নাম্মান মববুধাতে ॥ ৭০॥
এবং পততি সংসারে তাস্থ তাস্থিহ যোনিয়।
আবিদ্যাকর্ম্মাভি ভ্রাম্যমাণাহথ চক্রবং॥ ৭১॥
ব্রহ্মাদিয়ু তৃণান্তেয়ু ভূতেয়ু পরিবর্ত্তত।
জলে ভূবি তথাকাশে জায়মানঃ পুনঃ পুনঃ॥ ৭২॥
আবুধানাং গতিস্তেয়া বুধানামপি মে শৃণ্—।
যে ধর্মা ভ্রেমিন রতা বিমোক্ষরতয়ো জনাঃ॥ ৭৩॥
তদিদং বেদবচনং কুরু কর্মা তাজেতি চ।
তত্মাদ্ধর্মানিমান্ সর্বালাভিমানাৎ সমান্তরেং॥ ৭৪॥
ইজ্যাধ্যয়নদানানি তপঃ সত্যং ক্ষমা দ্মঃ।
আলোভ ইতি মার্গোহয়ং ধর্মান্সমিথিঃ স্কৃতঃ॥ ৭৫॥
আত্র পূর্বা শত্র্বার্গঃ পিতৃযানপথে স্থিতঃ।
কর্ত্ব্যমিতি যৎ কার্যাং নাভিমানাৎ সমান্তরেং॥ ৭৬॥

মহামোহে অন্ধে তমিদ ॥ ৭০ ॥ অবিদা আত্মাজানং, ততঃ প্রমানন্দ তিরোধানাৎ ক্ষুদ্রানন্দ প্রাপ্তার কর্ম তৎফলভোগে মতৃপ্তি শুফা॥ ৭১ ॥ ॥ ৭২ ॥ অবুধানাং গৃহস্থানাং বিষ্যাশন মেব পরমো ধর্ম ইতি মন্বানানং-গতঃ কর্মনিঠফলং উক্তং, বুধানাক তেন্তোই নোষাং সন্নামিনান্মপি গাভিং মে মতঃ শৃণু—ধর্মে শ্রেয়াস,—প্রক্তি ধর্মোপি প্রশাসঃ, নির্ভিধর্মস্ত প্রশাসতরঃ, তন্মিন্ রতা অতএব বিমোক্ষ রতয়ঃ ॥ ৭২ ॥ তদিদমিত—' কুর্মনেবেছ কর্মাণি জিজীবিষেৎ শতংসমাঃ' ইতি "তাজতৈব হি তজ্জেষং তাক্তঃপ্রতাক্ পরক্পদেন্" ইতি চ দ্বিধা অপি শুডরঃ সন্তি, তত্ত্ব যে অভিমানাং কর্ম কুর্মতে তে পুর্ব্বোক্ত রীত্যাই স্কংতমো বিশন্তি, যে চ শুদ্ধাঃ সন্নামিন স্তে রতক্ত্যা এব ভবন্তি, তব তু মধ্যমস্য গতি রিয়ামিতাছে ত্মাদিতি—তথাচ বক্ষাতি " এতানাপি তু কর্মাণি সক্তেই তাক্ত্বী ফলানিচ। কর্তব্যানীতি মে পার্থ! নিক্রিতং মত মুক্তমন্" ইতি ॥ ৭৪ ॥ ৭৫ ॥ পিত্যান পথে ধুমাদি মার্গে আবুতিফলে, কর্তব্যং অবশ্যান্তুট্য়ং নিত্যামি হোত্রসন্ত্রো পাসনাদি, অভিমানাৎ সন্ত্রিং ॥ ৭৬ ॥

উত্তরো দেবযানস্ত সন্তি রাচরিতঃ সদা।

অফীক্ষেনৈর মার্গেন বিশুদ্ধান্মা সমাচরেৎ ॥ ৭৭ ॥
সমাক্ সঙ্কপাসম্বাৎ সমাক্ চেন্দ্রিয়নিব্রাই।
সমাগ্রতবিশেষাচ্চ সমাক্ চ গুরুসেবনাৎ ॥ ৭৮ ॥
সমাক্ কর্মোপা সংসাক্ চাধ্যয়নাগমাৎ ।
সমাক্ কর্মোপা সংসাদাৎ সমাক্ চিন্তানিরোধনাৎ ॥ ৭৯ ॥
এবং কর্মাণি কুর্নন্তি সংসার বিজিগীষবঃ ।
রাগছেববিনিম্মুক্তা ঐশ্বর্যাৎ দেবতা গতাঃ ॥ ৮০ ॥
রুদ্রাঃ সাধ্যা স্তথাদিত্যা বসবোহথ তথাশ্বিনৌ ।
যোগৈশ্র্যাণ সংযুক্তা ধার্যন্তি প্রজা ইমাঃ ॥ ৮১ ॥
তথা ত্বমপি কৌন্তের। শম মাস্থায় পুষ্কলম্ ।
তপা ত্বমপি কৌন্তের। শম মাস্থায় পুষ্কলম্ ।
তপা সমিদি সন্বিচ্ছ যোগিদিনিঞ্চ ভারতঃ ॥ ৮২ ॥
পিতৃমাতৃম্যী সিন্ধিঃ প্রাপ্তা কর্ম্মযী চ তে ।
তপদা সিদ্ধি মন্থিছ হিজানাৎ ভরণায় বৈ ॥ ৮৩ ॥

উত্তর শত্রুর্বর্গঃ—,সতাংদমঃ ক্ষমা অলোভশ্চ, দেবযানো ইচ্চিরাদি মার্গোহ নারত্তি ফলঃ, অফাঙ্গেন বক্ষ্যমাণ সঙ্কপ্সমন্ত্রাদ্যমাক বতা মার্গেণ
প্রকারেণ যৎকর্তব্যং তদাচরেং ইতি পূর্বেণ সম্বন্ধঃ শুদ্ধান্ত্রা শুদ্ধচিতঃ ॥৭॥
সংক্ষ্যে মানসং কর্ম, তস্য সংবদ্ধা নিরোধঃ, তেন অন্তরিন্দ্রিয় নিপ্রহাধ্য
শম এব উক্তঃ, বছিরিন্দ্রিয় নিপ্রহো দমঃ, বতবিশেষঃ অহিংসাদীনি বতানি
তেবাং বিশেষঃ সার্বভৌমত্বং সর্ব্র দেশেরু সর্ব্ব কালেরু চ সর্ব্বপ্রকারেণ
হিংসা ত্যাগ ইত্যর্থঃ ॥ ৭৮ ॥ আহারো হিত মিত মেধ্যাশনং, তস্যযোগাৎ
কর্মনাং বিধিবত্যাগঃ, তত কিত্তনিরোধনাৎ ॥ ৭৯ ॥ ৮০ ॥ ৮১ ॥ ৮২ ॥ কর্ম
মরী রক্ত মুদ্ধাদি কর্মরূপ সাধন প্রধানা সিদ্ধিঃ, পিতৃ মাতৃ মন্ত্রী "দ্যোঃ
পিতা পৃথিবী মাতা " ইতি শুন্তঃ পরলোক ইহলোক কল প্রধানা,
সা ত্রা প্রাহিত্ব " চকার এব শব্দার্থঃ" তপসা দেবতাধ্যান জপাদিনা
যা সিদ্ধি স্তাম্॥ ৮৩ ॥ অন্ত্রহাৎ তপস ইতি শেষঃ।

দিদ্ধা হি যদ্যদিচ্ছন্তি কুর্বতে তদনুগ্রহাৎ।
তক্ষান্তপঃ সমাস্থায় কুরুম্ব অমনেরথম্' ॥ ৮৪ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অরণ্যযাত্রাপর্বাণি পাগুরানাং প্রব্রজনে *
দিতীয়োহধ্যায়ঃ ॥ ২ ॥

বৈশিন্সায়ন উবাচ। শৌনকেনৈব মুক্তস্ত কুন্তীপুজো যুধিষ্ঠিরঃ। পুরোহিত মুপাগম্য ভাতৃমধ্যেহত্ত্রবীদিদম্॥১॥ † 'প্রস্থিতংমানুষান্তীমে ত্রাহ্মণা বেদপারগাঃ।

কালি পোষণে শক্তো বছতুঃখনমন্বিতঃ ॥ ২ ॥
পরিত্যক্ত ন শক্তোহিমি দানশক্তিশ্চ নান্তি মে ।
কথমত্র ময়া কার্য্য> তদু ছি ভগবয়য়য়—॥ ৩ ॥
বৈশম্পায়ন উবাচ।

মুহূর্ত্ত মিব স ধাত্বা ধর্ম্মেণান্বিষ্য তাং গতিম। যুধিষ্ঠির মুবাচেদ^ ধৌম্যো ধর্ম্মভৃতান্বরঃ॥ ৪॥

ধেষ্য উবাচ।
"পুরা স্ফানি ভূতানি পীড়ান্তে ক্ষ্ধরা ভূশম্।
ততোহনুকম্পরা তেষাং দবিতা স্বপিতা যথা॥ ৫॥
গত্বোক্তরাযণং তেজো রসানুক্ত্য রশ্মিভিঃ।
দক্ষিণায়ন মার্ডো মহীৎ নিবিশতে রবিঃ॥ ৬॥

॥ ৮৪॥ ইত্যারন্যকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয় ভারত ভাবদীপে দ্বিতীয়েছিধ্যায়ঃ॥ ২॥

শৌনকে নেতি—॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ধর্মেণ যোগময়েণ নতু কর্মণা॥ ৪॥ স্ব্যারাধনং বিব্দুঃ স্ব্যাস্য সার্ব্বাদ্মাং তাবদাহ প্রয়োচনার্থং—সবিতা প্রসবিতা উৎপাদকঃ প্রমাদ্মেত্যধঃ॥ ৫॥ তেজোরসান্ জুলানি উদ্ধৃত্য

^{*} যুধিষ্ঠির শৌনক সম্বাদে ইতি ক পৃস্তকে পঠাতে। † অত্র "যুধিষ্ঠির উবাচ" ইতাধিকপাঠঃ ক পৃস্তকে লভাতে।

ক্ষেত্রভূতে ততস্তমি নোষধী রোষধীপতিঃ।

দিবস্তেজঃ সমুদ্ধৃত্য জনযামাস বারিণা॥ ৭॥

নিষিক্ত শক্তরতেজোভিঃ স্বযোনৌ নির্গতে রবিঃ।

ওষধ্যঃ ষড়ু সা মেধ্যা স্তদন্ধ প্রাণিনাং ভুবি॥ ৮॥

এবং ভানুময়ং হল ভুতানাং প্রাণধারণম্।

পিতৈষ সর্বভূতানাং তত্মান্তং শরণং ব্রজ॥ ৯॥

রাজানো হি মহালানো যোনিকর্দ্মবিশোধিতাঃ।
উদ্ধরন্তি প্রজাঃ সর্বা স্তপ আস্থায় পুদ্ধলম্॥ ১৯॥
ভীমেন * কার্ত্তবীর্ঘাণ বৈণ্যেন নহুষেণ চ।

তপোযোগসমাধিস্থৈ রুদ্ধৃতা হাপদং প্রজাঃ॥ ১১॥

তথা ত্বমপি ধর্দ্মান্দ্রন্ কর্মণা চ বিশোধিতঃ।

তপ আস্থায় ধর্মেণ দিজাতীন্ ভর ভারত। ১৯॥

জনমেজ্য উবাচ।

ক্রেণং কুর্নণা মৃষভঃ স তু রাজা যুধিষ্ঠিরঃ।

বিপ্রার্থ মারাধিতবান্ স্থ্যা মন্তুতদর্শনম্॥ ১৯॥

আদার মহীং নিবিশতে স্বোম্বাণা মহীংবাসরাভি॥ ৬॥ ওবধি পতিশ্চল্রঃ. দিব স্তেজঃ (বাস্পং) অন্তরিক্ষণাভং মেঘাকারেন পরিনতংতেজঃ, উদ্বৃত্যু মেঘাহ্যুবোতার্থঃ, "জনরামাস তহুখেন বারিনা ঔষধী রিত্যর্থঃ॥ ৭॥ স্বযোনো বীজে নির্গতে অঙ্কুরাদিরপেণ নিপ্পারে সতি রবি রেব ওর্ষি রপো ভবতি, তদরং, তান্ত্য ও্যধিভ্যোহরং অদনীয়ং ধানাং তচ্চ পুন জ'লোম্ম-যোগাৎ অঙ্কুরাদি ক্রমেণ ধানাযোনি রিতি রবি রেবারং অন্নযোনিরাৎ, অন্যত্ত—যদাদর্শে চল্রে স্বরোনো স্বর্গ্য একতাংগক্ষতি তদা চল্রু তোজোভি রমৃত্যুর্র নিষিক্রো ভবতি, তত শ্চল্ররপেণ বহি নির্গত্য ও্যধী রাপ্যায়তি তেনারংভবতীত্যান্তঃ॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ তপোযোগঃ ব্রভ স্থী-, কারঃ তৎপূর্ব্বঃ সমাধি ধ্যানং তৎ স্থৈ শুরিষ্ঠিঃ॥ ১১॥ ধর্মেণ ধ্যানেন ॥ ১২॥ ১০॥

^{*} ধৌম্যনৈতি ক-

ভীমসেন উবাচ।

শৃণ্ ছাবহিতো রাজন্। শুচি ভূবি। সমাহিতঃ।
ক্ষণঞ্চ কুরু রাজেন্দ্র ! সংপ্রবক্ষ্যাম্যশেষতঃ॥ ১৪।
ধৌম্যেন ভু যুথা পূর্বিৎ পার্থায় স্থমহালনে।
নামাউশত মাখ্যাতং তচ্ছ্বেছ মহামতে !॥ ১৫॥
. ধৌম্য উবাচ।

" সূর্য্যাহ্য্যমা ভগ স্থ কী পূষার্কঃ সবিতা রবিঃ।
গভন্তিমানজঃ কালো মৃত্যু ধাতা প্রভাকরঃ॥ ১৬॥
পৃথিব্যাপশ্চ তেজশ্চ খং বাষুশ্চ পরায়ণম।
দোমো রহস্পতিঃ শুজো বুধোহঙ্গারক এব চ॥ ১৭॥
ইন্দো বিবস্থান দীপ্তাংশুঃ শুচিঃ শৌরিঃ শনৈশ্চরঃ।
ব্রন্ধা বিষ্ণুশ্চ রুদ্রশ্চ স্কন্দো বৈ বরুণো যমঃ#॥ ১৮॥
বৈছ্যতো জাঠরশ্চামি রৈন্ধন স্কেজ্সাং পতিঃ।
ধর্মমন্ত্রা বেদক্তা বেদাঙ্গো বেদবাহনঃ॥ ১৯॥

॥ ১৪॥ ১৫॥ স্রেগির্গানেতি—জত্ত স্র্ব্যোপাধিকং ব্রহ্ম সর্ব্য কর্ত্ব সর্ব্যজ্জ্ব সর্বাজ্জ্বাদিভি ধ মৈ ভ্রতে তদ্যথা, স্থাঃ স্তে আলোক মিতি স্থাঃ (১) অর্থানা গতিমজ্বাং (২) ভগঃ সর্ব্যেপ্র্যা সম্পান্তরাং (৬) জন্তী বিশ্বনিপাকরত্বাং (৪) পুষা পোষকঃ (৫) অর্কঃ অর্চনীয়ঃ (৬) সবিতা জ্বগংপ্রাকনাং (৭) রবিঃ বেদত্তন্ত্রী শব্দমায় (৮) গভন্তিমান সহন্ত্র কিরাঃ (১) অজোহনাদিঃ (১০) কালঃ মুহূর্তাদি স্তংপ্রবর্ত্তন্ত্র কিরাঃ (১) অজোহনাদিঃ (১০) কালঃ মুহূর্তাদি স্তংপ্রবর্ত্তন্ত্র কিরাং (১) অজোহনাদিঃ (১০) প্রভাকরঃ দীন্তিকর (১৪)॥ ১৬॥ পৃথিবীত্যাদি নামভিঃ সার্ব্যাস্থানার প্রপঞ্চঃ, পরায়নং মুলকারনং (১৫, ১৬, ১৭, ১৮, ১৯, ২০)॥ ১৭॥ (২১, ২২, ২৬, ২৪, ২৫, ২৬, ২৭, ২৮)—শুচিঃ অগ্ন (২৯) শেবিঃ ক্রমঃ (৩০)॥ ১৮॥ (৩১, ৩২, ৩৬, ৩৪, ৩৫, ৩৬, ৩৭, ৩৮, ৩৯, ৪০)—তেরসাংপতিঃ স্থাঃ (৪১) ধর্ম ধর্জো প্রধানঃ (৪২, ৪৬,) বেদালঃ বেদশরীরঃ ত্রী ময়রাং (৪৪, ৪৫,)

^{*ৈ}ৰেবণোৰম ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ক্তত্ত ত্রেতা দ্বাপরশ্চ কলিঃ সর্বমলাশ্রয়ঃ।
কলা কাষ্ঠা মুহূর্ভশ্চ ক্ষপা যাম স্তথা ক্ষণঃ॥২০॥
সম্বংসরকরোহশ্বথাঃ কালচক্রো বিভাবস্থঃ।
পুরুষঃ শাশ্বতো যোগী ব্যক্তাব্যক্তঃ সনাতনঃ॥২১॥
কালাধ্যক্ষঃ প্রজাধ্যক্ষো বিশ্বকর্মা তমোরুদঃ।
বরুণঃ সাগরোহংশশ্চ জীমুতো জীবনোহরিহা॥২২॥
ভূতাপ্রযো ভূতপতিঃ সর্বলোক নমস্কৃতঃ।
স্রন্থী সম্বর্তনা বহিঃ সর্ববিস্যাদি রলোলুপাঃ॥২৩॥
স্বন্থঃ কামদঃ সর্বতোর্থঃ।
জযো বিশালো বরদঃ সর্ববিত্যনুধানীর বিশালো বরদঃ সর্ববিত্যনিষ্টিতা॥২৪॥
মনঃ স্কুপরেশ্ ভূতাদিঃ শীঘ্রগঃ প্রাণধারণঃ।
ধন্বন্তরি ধূমকেতু রাদিদেবোহদিতেঃ স্কুতঃ ॥২৫॥

॥ ১৯॥—(৪৬, ৪৭, ৪৮,) কলিঃসর্ব্বিল্পার ইত্যেকং নাম (৪৯)॥ ২০॥ অখ্যঃ সংসাররক্ষঃ সএব সংবৎসরকরঃ নতু ষষ্ঠঃ পদার্থঃ কালো নাম কশ্চিদন্তি কালোপাধিভূতং দ্রুব্যমের স্বদ্য অতীতাহনাগভাদি ব্যবহার হেডু ভর্ম্ভীতিভানঃ (৫০, ৫১, ৫২, ৫৬, ৫৪, ৫৫, ৫৬,) কাল চক্রঃ কালপ্রবর্তনো যো বিভাবন্তঃ স ইত্যেকংনাম (৫৭) পুরুষঃ পূর্ কর্মে-ক্রিয়পঞ্চক-মন আদি চতু ক্টয়-প্রাণাদিপঞ্চক-ক্রামকর্মাবিদ্যাখ্যান্ত বসতি ইতি পুৰুষঃ জীবর্মপঃ (৫৮) সএব শাশ্বত আদান্তশ্নাঃ (৫৯). याती कर्मका नाधिकाती (७०) वाकाश्वाकः कार्याकात्रवाचा (७১) সনাত্যনা নিৰুপাধিঃ (৬২)॥২১॥(৬৩, ৬৪, ৩৫,) তমোহাদঃ অজ্ঞান হন্তা মোক্ষদইতার্থঃ (৬৬, ৬৭, ৬৮,) অংশঃ অংশয় তি বিভা-য়তি কর্ম ফলানি ইত্যংশঃ (৬৯) জীবনঃ জলবজ্জীবনহেতুঃ (৭০, ৭১, ৭২) ॥ ২২ ॥ সম্বর্ত কঃ প্রলয় কালিকো বহ্লি রিত্যেকংনাম (৭৩, ৭৪, ৭৫, ৭৬, ৭৭,) ॥২৩ ॥ সার্বেশংধাতৃনাৎ ত্রগাদীনাৎ নিষেচিত। আপায়কঃ (৭৮, ৭৯, ৮০, ৮২, ৮৩, ৮৪, ৮৫. ৮৬, ৮৭, ৮৮,) ॥ ২৪॥ মনোরপী স্থপর্ণ ইত্যেকং (৮৯) ভূতাদি রহন্ধরঃ (৯০) আদি দেবোহ-দিতেঃ স্থত ইত্যেকং নাম, বিঞ্ রিতার্থঃ (৯১, ৯২, ৯৩, ৯৪, ৯৫, ॥ २० ॥

দাদশারারবিন্দাক্ষঃ পিতা মাতা পিতামহঃ।
স্বর্গদারং প্রজাদারং নােকদারং ত্রিপিউপম্*॥২৬॥
দেহকর্তা প্রশান্তাত্মা বিশ্বাত্মা বিশ্বতামুখঃ।
চরচিরাত্মা স্থকাাত্মা মৈত্রেরং করুণান্তিতঃ॥২৭॥
এতদৈ কীর্ত্রনীয়স্য স্থ্যস্যামিততেজসঃ।
নামাউশতকঞ্চেদং প্রোক্ত মেতং শ্রন্তুবা॥২৮॥
স্থরগণপিতৃ যক্ষমেবিতং,
হস্তর নিশাচর সিদ্ধবন্দিতম্।
বরকনক স্থতাশনপ্রভং,

প্রণিপতিতোহিন্দি হিতার ভাষরম্। ই৯।
স্থ্যোদরে যা সুস্মাহিতঃ পঠেং,
স পু্লুদারান্ধনরত্বসঞ্যান্।
লভেত জাতিসারীতাং নরঃ সদা,
ধ্রতিঞ্চ মেধাঞ্চ স বিন্দতে পুমান্। ৩০॥

ইম তবং দেব বরুস্য যো নরঃ,

প্রকার্ত্তরেচ্ছু চিস্থমনাঃ সমাহিতঃ 🕆

পিতামাতা পিতামহঃ দাবাপৃথিবায়ে পিতা হিরনাগর্ভ শুদাপি পিতা জনক ইতার্থঃ (৯৬,৯৭,৯৮) অর্গদারং একালোক প্রাপ্তিদারং "স্থাদারেন তে বিরক্ষাপ্রাপ্তি" ইতি শুন্তেঃ, তদেব প্রজাদারং "অগ্নো প্রাপ্তান্তিঃ সম্যাগাদিতা মুপ্তিষ্ঠতে। আদিতাা জ্ঞায়তে রুফি রুক্তি-রন্ধ ততঃ প্রজাঃ" ইতি ক্রমেন ইহলোক পরলোক প্রাপেক ইতার্থঃ (৯৯) মোক্ষদারং ক্রম্যুক্তি,স্থানভূতং, ক্রিপিক্টপং অ্বসভূমি রিত্যের মর্থঃ (১০০) ম ২৬॥ মৈত্রেয় মিত্রেয় সর্বভূতা ভয় প্রনেয়্ম স্থুমৈত্রেয়ঃ (১০১, ১০২, ১০৩. ১০৪. ১০৫, ১০৬, ১০৭,) করণাম্বিত ইতি পতিত-বাতাদীনা মপি ক্রাভেত,র্থঃ (১০৮)—॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০॥ শুদ্ফির্যা স্থানা

শ্ব ক পুস্তকে "বোনর" ইত্যত্ত—"মানব" ইত্যধীয়তে—"শুচি স্থমনাঃ" ২ত্যত্ত "শুদ্ধমনাঃ" ইত্যবীয়তে চ।

^{*} ত্রিবিষ্টপমিতি কেচিৎ।

বিমূচ্যতে শোকদবানিসাগরা-লভেত কামামনসা যথেশিতান্। ৩১ ॥

্ৰেশস্পায়ন উবাচ।

এব মুক্তস্ত ধৌম্যেন তৎকালসদৃশৎ বচঃ।
বিপ্রভ্যাগসমাধিস্থঃ সংখতাত্মা দৃচব্রতঃ॥ ৩২॥
ধর্ম্মরাজা বিশুদ্ধাত্মা তপ আতিষ্ঠত্নত্তমম্।
পূপোপহারৈ কালিভি রচ্চয়িত্মা দিবাকরম্॥ ৩৩॥
মোহবগান্ত জলৎ রাজা দেবসাভিমুখোহভবৎ।
যোগ মাস্থায় ধর্মাত্মা বাযুভক্ষ্যো জিতেক্রিয়ঃ॥ ৩৪॥
গাঙ্গেয়ং বাযুপিস্পৃশ্য * প্রাণায়ামেন তন্থিবান্।
শুচিঃ প্রযতবান্ধূত্মা স্তোত্র মারন্দবাংস্ততঃ॥ ৩৫॥
মুধিটির উবাচ।

' স্থং ভানো ! জগতশ্চক্ষু স্ত্ৰুমাস্মা সৰ্বদেহিনান্। স্থং যোনিঃ সৰ্বভূতানাং স্থ মাচারঃ ক্রিয়াবতান্॥ ৩৬॥ স্থংগতিঃ সৰ্বাদাংখ্যানাং যোগিনাং স্থং পরাযণম্। অনার্তার্গলদ্বারং স্থং গতি স্থং মুমুক্ষতাম্॥ ৩৭॥

শেষতি কর্মধারয়ঃ, • শোকতাৰ দৰাগ্নি যান্তিন্ তামাৎ সাগারাৎ সাগারবদপারাৎ সংসারাৎ ॥ ৩১ ॥ বিপ্রতাশা সমাধিছঃ—বি প্রেভা ন্তাগা ন্তাজামান মন্নংতদর্থং সমাধিছঃ নিরমন্তঃ "যুপ দার্কাদিবং প্রকৃতি বিকার
ভাবেপি চত্তথী সমাসঃ— অপ্রধাসাদিবং যতী সমাসো বা"সংযতাতা নির্মানতিত্ত ॥৩২॥ তাপঃ স্থ্যাকশত নাম জপাখ্যন্॥ ৩৩॥ যোগং চিত্তি কাপ্রং,
আন্থার কৃষ্যা ৩৪ ॥ প্রানানাং আসমতাৎ যমনং নিগ্রহতেন প্রানামেন
আরক্রান্, ততঃ অপানত্রম্॥ ৩৫॥ চক্ষুঃ চক্ষুরাদিপ্রস্তিকত্বাং বাহ্যান্তাপেনচ চক্ষুরভূপ্রাহকরাৎ, অত্রব সর্ব্ব দেহিনা মালা যোগিঃ উৎপত্তিলক্ষ্যানং, ভত্তানাং বিরদ্দিনাং, আচারঃ আ সমতাৎ চাররতি ইত্যাচারোই ভাগানী॥ ৩৬। ব্যানাং জান নির্মানং, যোগিনাং চিত্ত নিরে।

^{👻 &}quot;পায়ু স্পূৰ্ণ," ইতি যা।

ত্বয়া সংধাৰ্য্যতে লোক স্তুয়া লোকঃ প্ৰকাশ্যতে। ত্বয়া পবিত্রীক্রিয়তে নির্ব্যাজং পাল্যতে ত্বয়া। ৩৮।। ত্বা মুপাস্থায় কালে ভু ব্রাহ্মণা বেদণারগাঃ। यभाषाविहिटे यादि तर्छ गुरिशना छि छ ॥ ७०॥ তব দিব্যং রথং যান্ত মনুষান্তি বরার্থিনঃ। সিদ্ধচারণগন্ধবা যক্ষ-গুহুকপরগাঃ॥ ৪০॥ ত্রয়স্ত্রিংশচ্চ বৈ দেবা স্তথা বৈমানিকা গণাঃ। সোপেন্দ্রাঃ সমহেন্দ্রান্দ হা মিফুা সিদ্ধি মাগতাঃ ॥ ৪১ ॥ উপযান্তার্চয়িত্বা তু ত্বাপ বৈ প্রাপ্তমনোরগাঃ। দিব্যমনদারমালাভি স্তূর্ণং বিদ্যাধরোক্তমঃ॥ ৪২॥ গুছাঃ পিতৃগণাঃ সপ্ত যে-দিব্যা যেচ মান্ত্র্যাঃ। তে পূজ্যিত্বা ত্বামেব গচ্ছন্ত্যাশু প্রধানতাম্ ॥ ৪৩॥ বসবো মারুতো রুদ্রা যে চ সাধ্যা মরীতিপাঃ। * বালখিল্যাদয়ঃ সিদ্ধাঃ শ্রেষ্ঠত্ব> প্রাণিনাং গতাঃ ॥ 88 ॥ সব্রহ্মকেযু লোকেযু সর্গুস্বপ্যথিলেযু চ। ন তদ্ভত মহ~ মন্যে যদক।দতিরিচাতে ॥ ৪৫॥ ।

কানাং অনার্ভার্গল দারং বং, আর্ণোতীত্যা রতংকপাটং " কর্তরি কঃ" অর্গলং কপাট বিফ্রাক্তন তিব্যক্ কাঠংতছ্ভয় রহিতং মুক্তিয়ারং বং মুমুক্ষতাং রতিক ত্রেব, প্রাপাপদ মাপি ও মেবেতার্থঃ ॥ ৩৭ ॥ নির্যাজং রাজবং প্রভুপেকারাশাখাং মিষং বিনা কেবলং ক্লপয়ৈবেতার্থঃ ॥ ৩৮ ॥ ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥ ত্রান্তিংশং—" অফো বদবঃ, একাদল কন্দ্রা, দাদশাদিতার্থঃ, প্রজাপতিক্ষা, ব্যট্কারক্ষ" ইতি জ্ঞাতি প্রসিদ্ধাঃ, র্গণ স্তদনানি বিধেনের দীনি সমুদায় দৈবতানি, সিদ্ধিং জ্ঞানং ॥ ৪১ ॥ উপয়াত্তি ও মেব, ছাং অর্চয়িত্ব প্রপ্রাক্রমানর্থা ভবন্তি ॥ ৪২ ॥ সপ্ত—অর্যমান্ত্রমান্তাদয়ঃ, প্রধানতাং জর্গৎ কারণতান্ ॥ ৪০ ॥ ৪৪ ॥ অস্য সার্ক্রাত্মান্ত্রাদয়ঃ,

^{* &#}x27;বালিখিল্যাদ্যু" ইতি ক—প্রাণিনা মিতাত্র "প্রণতা" ইতাপি ক ঘ।

সন্তি চান্যানি সন্ত্রানি বীর্যাবন্তি মহান্তি চ। ন ত্ৰ তেষা তথা দীপ্তিঃ প্ৰভাবো বা যথা তব। ৪৬॥ ক্যোতীংবি বৃদ্ধি সর্বাণি বুৎ সঞ্চাতেয়াৎ পতিঃ। ত্বয়ি সত্যঞ্চ সত্ত্বঞ্চ সর্কো ভাবাশ্চ সাত্ত্বিকাং । ৪৭॥ স্বত্তেল্যা কুত্ৰ চক্ৰত স্থলাভৎ বিশ্বকৰ্মণা। দেবারীণাং মদো যেন নাশিতঃ শাঙ্গ ধন্বনা ৷ ৪৮ ৷৷ ত্ব মাদায়াংশুভি স্তেজো নিদাঘে সর্বদেহিনাম। সর্বেষিধি-রসানঞ্চে পুন বর্ষাস্থ যুঞ্চি॥ ৪৯ 🛚 তপত্যন্যে দহন্তানো গৰ্জন্তানো তথা ঘনাং। বিদ্যোতত্তে প্রাথতি তব প্রার্থি রশ্মর: ॥ ৫০ ॥ ন তথা সুখ্যত্যাম ন প্রাবারা ন কর্লাঃ। শীতবাতাৰ্দ্ধিতং লোকং যথা তব মরীচয়ং॥॥ ৫১॥ ত্রয়োদশদ্বীপবতীং গোভি ভানয়সে মহীম। ত্রয়াণামপি লোকানাং হিতারৈকঃ প্রবর্ত্তে ॥ ৫২ ॥ তব যত্তাদয়ো ন স্যাদক্ষৎ জগদিদং ভবেৎ। न চ धर्मार्थकारम्यु अवर्र्छत्रमनीविनः ॥ ৫৩ ॥ আধানপশুবন্ধেটি মন্ত্রযক্ততপঃক্রিয়া:। ত্বৎপ্রসাদাদবংপ্যন্তে ব্রহ্মক্তবিশাংগগৈ: ॥ ৫৪ ॥ যদহত্র হ্লাঃ প্রোক্তৎ সহস্রযুগসন্মিতম্। **ত**म्य प्राप्तितस्य कानोस्त्रः পরিকীর্ত্তি ॥ ৫৫ ।

কেছি ত— ন মন্যে নাজীতি মন্যে সর্ববেদ কাল্যাৎ ॥ ১৫ ॥ ৪৬ ॥ সতাং সৎ পৃথিবাপ্তেজাংসি, তাল্বায়া কাণো তদাল্লকং সতাং সহং বুদ্ধিনতং, সাছিকা ভাগাঃ ধর্মে। জ্ঞানং বরাগ ঐথায়ং ইত্যাল্যাঃ ॥ ৪৭ ॥ অনাভং অদর্শনিষ্ ॥ ৪১ ॥ ৫০ ॥ প্রাবারাঃ বস্ত্রবিশ্বাঃ ॥ ৫১ ॥ ত্রোদশ দ্বীপ্রতীং স্থলশনাদ্যশন্তর দ্বীপ্ যোগাং, গোভিঃ রশ্মিভিঃ॥ ৫২॥ ৫৩ ॥ ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥

মকুন†ং ম**নুপু**ক্র:৭†ং জগতো মানবদা চ। মন্বন্তরাণাং সর্কোষা মীশ্ব ্রাণাং স্ব সীপ্রঃ। ৫৬॥ সংহারকালে সংপ্রাপ্তে তব ক্রোধবিনিঃস্তঃ। সম্বর্ত্তকাথি স্ত্রৈলোক্যং ভদ্মীক্ষ্ত্যাব্তিষ্ঠতে॥ ৫৭ ॥ जुक्नीविजिमगुरुणना नानावर्गा महाचनाः। বৈরাবতঃ সাশনরঃ কুর্বভ্যাহ্রসংশ্লবষ্ ॥ ৫৮ ॥ কুত্বা দ্বাদশধাত্মানং দ্বাদশাদিত্যতাপ গতঃ। সংহ্রত্যৈকার্ণবিশ্ সর্ধাশ স্বশ্ শৌষয়সি রশ্মিভিঃ॥ ৫৯॥ ত্বা মিন্দ্রমাছ তুং রুদ্র তুং বিষ্ণু তুং প্রজাপতিঃ । ত্ব মনি স্তুং মনঃ স্থানাং এভু স্তুং ব্ৰাণী পাৰ্য । ৬০০ ত্বং হংসঃ সবিতা ভারু রণশুমালী র্যাকপিঃ। বিবস্বান্মিহিরঃ পূষা মিত্রো ধর্ম্ম স্তথৈব চ। ৬১ সহস্রাশ্ম রাদিত্য স্তপন স্তৃ<u>ণ গবাণ পতিঃ।</u> মার্কুণ্ডোহর্কো রবিঃ স্থর্য্যঃ শরণ্যো দিনক্লন্তথ্য ॥ ৬২ ॥ দিবাকরঃ সপ্তমপ্তি ধামকেশী বিরোচনঃ। আশুগামী তমোত্মশু হরিতাশ্বশু কীর্ত্তাদে। ৬৩।

অমানবদ্যেতি চ্ছেনঃ, অমানবোহচ্চিরাদি মার্গেণ গতস্য ব্রহ্মলোক প্রাপকঃ পুরুবঃ ॥ ৫৬ ॥ ৫৭ ॥ দদীধিতয়ঃ তৎকিরণাঃ, দৈরাবতাঃ "মেঘ-দ্যোপরি যো মেঘঃ স ঐরাবত"— স্তৎসহিতাঃ, আহুতং আভূতং যাবচ্ছু হিধ ভূতপ্রামৎ, তদ্য সংপ্লবঃ জলেনাভিপ্লাবনন্ ॥ ৫৮ ॥ দাদশধা " অকণো মাঘমাসেছু স্থোগাবৈ কাল্পনে তথা " ইত্যাদি স্মৃত্যুক্তাহরুণাদি রূপে-ণেতার্থঃ ॥ ৫৯ ॥ ৬০॥ হন্তি গচ্ছতি বিশ্বংসংহর তীতি বা হংসঃ, র্যাকপিঃ হরি হরে। বা ॥ ৬৯ ॥ গবাং রশ্মীনান্ ॥ ৬২ ॥ সপ্তসপ্তিঃ স্থাশ্বঃ, ধাম-কেশী জ্যোত্রিশ্যকের গবান্, আশুগামীতাত্র আশা বহু ইতি পাঠে—

^{* &#}x27;'বামিজ-মাত্ স্ত্র্ণ বিষ্ণু স্ত্রং কদ্রস্ত্রং প্রজাপতি" রিত্যেবং ক—

সপ্তন্যা মথবা ঘঠাাং ভক্ত্যা পূজাং করেতি যঃ।
আনির্নিরেহ্নহন্ধারী তং লক্ষী ভজতে নরম্ ॥ ৬৪ ॥
ন তেয়া মাপদং সন্থি নাধয়ো ব্যাধয় স্তথা।
যে তবাহনন্যমনসং কুর্বেন্ত্যর্জনবন্দনে ॥ ৬৫ ॥
সর্বরে: গৈ ব্রিরহিতাং সর্বাপাপবিবর্জ্জিতাং।
ছড়াবভক্তাঃ স্থানো ভবন্তি চিরজীবিনং ॥ ৬৬ ॥
ত্বং মমাপ্যারকামশ্র সর্বাতিথাঞ্চিকীর্যতং।
আর মরপতে ! দাতু মভিতঃ ভাদ্ধয়াই সি ॥ ৬৭ ॥
যে চ তেই মুচরাং সর্বে পাদোপান্তং সমাজিতাং।
মাঠরারুণদণ্ডাদ্যা স্তাৎস্থান্ বন্দেইশনিক্ষ্ভান্ ॥ ৬৮ ॥
কুভয়া সহিতা মৈত্রী যাশ্চান্যা ভূতমাতরং।
তাশ্চ সর্বা নমস্যামি পাস্ত মাং শর্ণাগতম্''—॥ ৬৯ ॥
বৈশ্পায়ন উবাচ।

(এব॰ স্তুতো মহারাজ! ভাস্করো লোকপাবনঃ)।†
ততো দিবাকরঃ প্রীতো দর্শরামাস প্রত্যায় ।
দীপ্যমানঃ স্ববপূষা জ্লালিব হুতাশনঃ—॥ ৭০॥
বিবস্থাল্পাচ।

'যন্তেহভিলষিতং কিঞ্চিত্তত্ত্বং সর্ব্ব মবাপ্স্যাসি। অহ মন্নং প্রদাস্যামি সপ্ত পঞ্চ চ তে সমাঃ॥৭১॥

দিখ্যবহার নির্বাহক আশারাঃ প্রাসিদ্ধারা ইফার্থ সমর্পণেন পূরকো বা ॥৬৩॥ অনির্বিন্ধঃ পূজনে আসক্তঃ ॥৬৪॥৬৫॥ বৃদ্ধার ক্রান্থ ক্রান্

^{* &}quot; কুৰ্ব্বতে হাভি বন্দন্" ইতি য— † এবং স্ত্ৰুতেতি শ্লোকভাগঃ ঘ-প্ৰস্তুকে নাধীনতে।

গৃহ্লীম্ব পিঠবু তাত্রং ময়া দক্ত নর†ধি**ন**!। যাবদ্বংস্যতি পাঞ্চালী পাত্রেণানেন স্কুত্রত। ॥ ৭২ ॥ कलभूलाभियः भाकः मःकुठः यग्रहानरम। চতুঁর্বিধণ ভদ্মাদ্য সক্ষয়ান্তে ভবিষ্যতি॥ ৭৩॥ ইত শচভুদ্দশে বর্ষে ভূয়ো রাজ্য মব†প্যাসি''—। বৈশস্পায়ন উবাচ। এব মুক্ত্র ভূ ভগবান্ তবৈব ত্তরধীয়ত। ৭৪॥ हेम॰ खदर श्रवज्यनाः ममाधिना, পঠে দিহান্যাহিপি বরং সমর্থয়ন্। তত্ত্রস্য দদ্যাচ্চ রবি র্ম্মনীষিতং, তদাপ্ল মান্যদ্যপি তৎ স্বত্র্লভম্—। ৭৫॥ য শ্চেদৎ ধারয়েন্নিত্যং শৃণুয়াদাপ্যভীক্ষশঃ। পুত্র থী লভতে পুত্র ১ ধন। থী লভতে ধনম্। বিদ্যার্থী লভতে বিদ্যাৎ পুরুষোহপ্যথ বা স্ত্রিয়ঃ॥৭৬॥ উত্তে সন্ধ্যে পঠেন্নিত্যং নারী বা পুরুষো যদি। আপদং প্রাপ্য মুচ্যেত বন্ধো মুচ্যেত বন্ধনাৎ॥ ৭৭॥ এতদ্ব দ্বা দদৌ পূর্বাৎ শক্রায় স্কুমহাত্মনে। শক্রাচ্চ নারদঃ প্রাপ্তো ধৌমাস্ত তদনন্তরম্। (धोगान्युधिष्ठितः व्याला मर्त्वान् कामानवाञ्चवान् ॥ १৮ ॥ म ् आरम ह करत्रिक छः विश्व लक्षा भ्रावस्त्र । মুচ্যতে সর্বাপাপেভাঃ সূর্যালোকং স গছতি॥৭৯॥

গৃহ্লী স্ব গৃহাণ, পিঠঞ পানি বেশনপাত্রং, তামুং তামুময়ং, বৎসাৃতি বৃত্তিং-জনজীবিকারূপাং করি যাতি, পাত্রেন পাত্রপ্রতনারেন ॥ ৭২ ॥ যাবদ্বংসাতি তাবদর্শনং ওদনাদিকং অক্ষয়ংভবিষাতীতি সম্বন্ধঃ, চতুর্বিধং—
লে২ং চোষ্যাং ভক্ষাং পেরঞ্জু॥ ৭০॥

• रिनमस्थाहन छेदाह।

লক্ষা বরস্ত কৌতেরলো জলাতুতীর্যা ধর্মাবিং। জগ্রহ পাদৌ ধৌগ্যন্য ভাত ংশ্চ পরিষয়কে ॥ ৮০ ॥ (जोलनाः गर गक्रमा वन्तामान खता थएडा!। মহানদে তদানীস্ত সাধয়।মাস পাওবঃ॥ ৮১॥ স∾ক্তং প্রসবং য∤তি স্ব**পোমর প্রভৃতিবিধন্**। অক্ষয়াপ বৰ্দ্ধতে চান্নং তেন ভোজয়তে দিজান্॥৮২ ॥ ভুক্তবৎস্ক চ বিপ্ৰেষু ভোজয়িত্বা**নু**জানপি। শেষং বিঘস সশ্জ্ঞ পশ্চাদ্তত্তে যুধিষ্ঠিরঃ॥ ৮৩॥ যুধিষ্ঠিরং ভোজয়িত্বা শেব মশ্লাতি পার্বতী। দৌপদাং ভুজামানায়াং তদরৎ ক্ষয় মেতি চ। এব৲ দিবাকরাৎ প্রাপ্য দিবাকরসমপ্রভঃ ॥ ৮৪ ॥ কামান্মনোভিল্যিতান্ ব্রাক্সণেভ্যোদদৌ প্রভুঃ। পুরোহিতপুরোগাশ্চ তিথিনক্ষত্রপর্ববস্থ । যজ্ঞে পার্থাঃ প্রবর্তন্তে বিধি মন্ত্রপ্রমাণকঃ ॥ ৮৫ ॥ ততঃ ক্লতস্বস্তায়না ধৌন্যেন সহ পাণ্ডবাঃ ৷ দ্বিজসজ্জৈঃ পরির্তাঃ প্রয়ত্ত্ব কাম্যক বন্ম। ৮৬॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অরণ্যযাত্রাপর্বাণি কাম্যক্বন প্রবেশে তৃতীয়ে। ২ধায়ঃ। ৩।

। ৭২॥ ৭৫॥ ৭৬॥ ৭৭॥ ৭৮॥ ৭১॥ ৮০॥ মহানদে পাক শ্রায়ং,
সাধ্যামাস করিয়া মাস অন্ন মিতিশেই॥ ৮১॥ সংস্তং পক্ষ্॥ ৮২॥
॥ ৮৩॥ পার্ষতী পৃষতঃ ক্রপদপিতু র্গোতাপত ম্॥ ৮৪॥ যজিলার্থাঃ যজাহালি বস্ত্রি আলিপণ্ড পুরোডাণাদীনি, পুরোডাণ সাধনানি চ,
প্রেডিডে নিংলাডে, বিধি মন্ত্রমানতঃ—বিধিঃ—'বনভে বসভে জোণতিষা যন্তেওঁ ইতাদি রজাতজাপনরপঃ, মন্ত্রু অন্তের্গ্রার্থনারকঃ
'ইবেরাদিঃ" তাবেব প্রমনে তাভামিতার্থঃ॥ ৮৫॥ ৮৬॥

ইত্যারণাকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভারদীপে কান্যক বন প্রবেশে ভূতীয়েবিধ্যায়ঃ॥ ৩॥ ০ रिवनम्भाग्न छेवात।

বনং প্রবিষ্টেম্বর্থ পাগুবেমু,
প্রজ্ঞাচক্ষু স্তপ্যমানোহম্বিকেয়ঃ।
ধর্মাঝানং বিত্তুর মগাধবুদ্ধিণ,
স্থাদীনো বাক্য মুবাচ রাজা---॥ >॥

প্ৰতরণ ট উপচ।

— ' প্রজ্ঞা চ তে ভার্গবস্যেব শুদ্ধা,
ধর্মাঞ্চ ত্বং পরমং বেপ্থ স্থান্ধান্য
সমশ্চ ত্বং সম্মতঃ কৌরবাণাং,
পথ্যক্ষৈষাং মম চৈব ত্রবীহি—॥ ২॥ •
এবং গতে বিতুর! যদদ্য কার্যাং,

এবং সতে বিপ্লুর: বন্ধা কাব্যং, পৌরাকেমে কথ মক্ষান্ ভজেরন্।

তে চাপ্যক্ষানোদ্ধরেয়ুঃ সমূলিং,-স্তত্ত্বঃ ক্রয়াঃ সাধুকার্য্যাণি বেৎসি'-—, ৩॥

বিছুর উবাচ।

' ত্রিবর্গে হয়ং ধর্মমূলো নরেন্দ্র !
রাজ্যপ্টেদণ ধর্মমূলণ বদন্তি।
ধর্মে রাজন্ ! বর্তুমানঃ স্থশক্ত্যা,
পুত্রান্ সর্কান্ পাহি পাড্রোঃ স্থতাণ্শ্য ॥ ৪ ॥

বনমিতি—ন্মেবং কর্মজ নিদ্ধাপেক্ষা যোগজনিদেঃপ্রাবলাংচেং!—
কিমিত সর্কেইপি তাং না জিয়ন্তে?—ইত্যাপিয়া মুটাঃ দৃষ্টবারক ফলে
মর্থেয়ু হিতোপ দেঠারং দিবন্তি কিমুতা দৃষ্টবারকেয় ইত্যাহ—বনংপ্রাবিষ্টে
মিতাধ্যায়েন, আমিকেয় ইত পূর্বরূপ মাধ্য ॥ ১০॥ স্থাকা ধর্মজ্ঞানং
তদ্ভাদেব বং কৌর্ব্যাং পাত্তব ধার্তরাস্ট্রাং সমঃ পক্ষ্পাত্ত্নাঃ,
এবাং প্রানাং মম্ট সম্বাদ্যতিশেবঃ ॥ ২ ॥ এবংগতে এবং পাত্তব
প্রাজনাহ্যক্তরূপে সঙ্গে গতে প্রাত্তে সতি উদ্ধেরষুঃ উন্লুল্যেষ্ট্রঃ ॥ ৩ ॥
॥ ৪ ॥

म देव धर्म्या विश्वलकः मजाग्राः, পাপাত্মভিঃ সৌবলেয়প্রধানৈঃ। আহুর কুন্তীস্কৃত মক্ষবত্যাং, পরাজৈষীৎ সত্যসন্ধং স্কৃতত্তে—॥ ৫॥ এত্য্য তে ছুষ্পাণীত্স্য রাজন্! শেষসাহং পরিপশ্যাম্যুপার্য্ম। যথা পুত্রস্তব কৌরব্য ় পাপা,-মুক্তে।লোকে প্রতিতিষ্ঠেত সাধু—ঃ ৬ ॥ তদৈ সৰ্বাং পাণুপুজা লভন্তাং, যন্তদ্ৰাজন্নভি স্ফু বুয়াসীৎ। এষ ধর্মাঃ পরমো যৎ শ্বকেন, রাজা তুষোর পর**স্বেষু গৃ**ধ্যেৎ—॥ ৭ ॥ যশো,ন নশ্যেজ্জাতিভেদ্শ ন স্যা, দ্ধর্ম্মো ন স্যাধ্যের চৈবণ ক্তে স্বয়। এতৎ কার্যাং তব সর্বপ্রধানং, তেষাং ভুষ্টিঃ শকুনে-ক্যাবমানঃ—॥ ৮॥ এবং শেষং যদি পুক্লেম্ব তে স্যা,-দেতদাজং স্থরমাণঃ কুরুষ। তথৈতদেবং ন করোষি রাজন! ধ্ৰবংকুৰণাং ভবিতা বিনাশঃ—॥ ৯ ॥

স ইতি—উক্তবিধঃ সএব ধর্মো মুধিষ্ঠিররপো বিপ্রালব্ধঃ বঞ্চিতঃ, অক্ষবতাাং দূতে ক্রীড়ারাং, সত্যা সন্ধা প্রতিজ্ঞা যস্য তমিত্যর্থঃ॥ ৫॥ ছুম্পূনীত্বস্য হরাছাতঃ ক্রতস্য, শেষস্য পাণ্ডব মান হানি লক্ষ্ণম্য বধসা উপায়ং দোষ প্রশান্তি প্রকার্য॥ ৬॥ অভিস্কাং দত্তং স্বকেন ধনেনতি শেষঃ॥ ৭॥ এবং ক্তেসতি ছাংধর্মো নস্যাদিতি নৈব, কিন্তু স্যাদেব, স্যাদিত্যবায়ং সজ্জেদিত্যর্থে॥ ৮॥ এবং ক্রবা শেষং নাটা বশিষ্টং ভাগাস্

न हि कुरका जीमरमरनाश्र्र्जुरन। वा, শেষং कुर्याष भाजवाना मनीत्क। যেষাপ যোদ্ধা সব্যসাচী কুতাস্ত্রো, थमु (र्यवार् नाखितः (लाकमात्रम् ॥) ।॥ যেষা ভীমো বাছশালী চ যোদা, তেষা শলেকে কিন্না প্রাপ্যমন্তি?। উক্তং পূৰ্বাং জাতমাত্ৰে স্থুতে তে, ময়া যত্তে হিত মাসীত্তদানীমু॥ ১১॥ পুল্রং তাজেম মহিতং কুল্সা, হিত^ প্ররং ন চ তত্ত্ব^ চকর্থ। ইদঞ্চ রাজন্ ! হিত মুক্তং ন চেত্ত্ব্যু-মেবৎ কর্ত্তা পরিতপ্তাসি পশ্চাৎ ॥ ১২ ॥ যদ্যেতদেব মনুমন্তা স্কৃতন্তে, সংপ্রীয়মাণঃ পাওুবৈ রেকরাজাম্। তাপো ন তে ভবিতা প্রীতিযোগা,-ন্ন চেন্নিগৃহ্লীঘ স্থতং স্থায়—॥ ১৩ ॥ দুৰ্য্যোধনস্থহিত^ বৈ নিগৃহী পাণ্ডোঃ পুত্রং প্রকুরুম্বাধিপত্যে। অজাতশত হি বিমুক্তরাগো, ধর্মণেমাং পৃথিবীং শাস্ত্র রাজন্। ॥ ১৪॥ ততো রাজন ! পার্থিবাঃ সর্ব্ব এব, বৈশ্যা ইবান্মানুপতিষ্ঠম্ভ সদ্যঃ গ

॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ চকর্থ কৃতবান্, ইদঞ্চ বক্ষামাণঞ্চ কর্তা করিষ্যাদি॥ ১২॥ একরাজ্ঞাং যদ্যস্থাতা হি. তাপো ন ভবিতা, নচেৎ যদিবানস্মন্তা তার্হি স্তাং নিগৃত্বীয় ॥ ১৩॥ পকান্তর মাহ হুর্যোধনমিতি—॥ ১৪॥ ১৫॥ ছুর্য্যোধনঃ শকুনিঃ স্থতপুত্রঃ, প্রীত্যা রাজন্। পাওুপুত্রান্ ভজন্ত —॥ ১৫॥ তুঃশাসনো যাচতু ভীমসেনং, म जी मर्था फुश्नमा जिल्ला थि। যুধিটিরং স্বং পরিসাত্ত্রয়স্থ, রাজ্যে চৈনং স্থাপয়শ্বাভিপূজ্য॥ ১৬॥ ত্বয়া পৃষ্টঃ কি মহমন্যদ্বদেয়,-মেতৎ কৃত্ব। কৃতকৃত্যোহ্দি রাজন্। "॥ ১৭॥ প্লতরাফ্র ঊবাচ। '' এতদ্বাক্যং বিতুর! যত্তে সভায়া,-মিহ প্রোক্তং পাঞ্বান্ প্রাপ্য মাঞ্চ। হিতং তেষা মহিতং মামকানা,-মেতৎ সৰ্ব্বৎ মম নাবৈতি চেতঃ—॥ ১৮॥ ইদন্তিদ'নীং গত * এব নিশ্চিতং, তেষামর্থে পা গুবানাং যদাখ। তেনাদ্য মনো নাসি হিতো মমেতি, কথ^ হি পুত্র্রু পাগুবার্থে ত্যজেয়ম্ ?—॥ ১৯॥ অসংশয়ং তেইপি মমৈব পুজা, তুর্য্যোধনস্ত মম দেহাৎ প্রস্তুতঃ।

বাচতু মদপরাধং ক্ষমস্বেতি প্রার্থিয়তু ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ নাবৈতি নান্ধীকরোতি ॥ ১৮ ॥ তত্ত্ব হেতুমাই ইদমিতি, তথা ছুর্য্যোপন বন্ধনং যুধিন্তিরায় রাজ্য প্রদানং ইত্যেবস্প্রকারকং স্থাপোরং ষৎ আব তৎ ইদং কুত এব নিশ্চিতং?—ন কুতন্তিং, গাত ইতি বা পাচঃ—পাণ্ডবানামর্থে গতঃপ্রাপ্ত ইত্যর্থঃ, লুব্ধপদাঃপাণ্ডবাঃ মদীয়ান্ ন হিংস্থারিত্যক্ত নিয়ামকং নাস্তী ডিভাবঃ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥

^{*} গত ইত্যত্ত কুত ইতি ক—

স্বং বৈ দেহণ পরহেতো স্তাজেতি,
কো সু ত্রয়াৎ সমতা মন্থবেক্ষ্য ?—: ২০॥
স মাং জিন্ধং বিছুর ! সর্বাং ব্রবীষি,
•মানঞ্চ তেইহ মধিকণ ধারয়ামি।
যথেচ্ছকং গচ্ছ বা তিষ্ঠ বা ত্বং,
স্থান্ত্রমানা হুসতী স্ত্রী জহাতি"—॥ ২১॥
বৈশস্পায়ন উবাচ।
এতাবছুক্বা ধৃতরাষ্ট্রোহ্মপদ্য,দন্তর্বোশ্ম সহসোপ্তায় রাজন্!।
নেদ মন্ত্রীত্যথ বিছুরো ভাষমাণঃ,

নদ মস্ত্রীত্যথ বিজুরে ভাষমাণঃ,

সংপ্রাক্তবদ্যত্র পার্থা বভূবুঃ—॥ ২২ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অরণ্যযাত্রাপর্বাণি বিজুরবাক্যে

চতুর্থোহধ্যায়ঃ ॥ ৪ ॥

বৈশন্দারন উবাচ।
পাপ্তবাস্ত বনে বাস মুদ্দিশ্য ভরতর্ষভাং।
প্রয়ের জারুবীকুলাৎ কুরুক্ষেত্রং সহারুগাং॥ ১॥
সরস্বতীদৃশন্ধত্যৌ ষমুনাঞ্চ নিষেব্য তে।
যযুর্বনেনৈব বনৎ সততং পশ্চিমাং দিশম্॥ ২॥
ততঃ সরস্বতীকুলে সমেষু মরুধ্যস্ত ।
কাম্যকং নাম দদৃশ্য র্বনং মুনিজনপ্রিয়ম্॥ ৩॥
জিশংকুটিলং॥ ২১॥ নেদমন্তি ইদংকুলম্॥ ২২॥
ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলকগায়ে ভারতভাবদীপে
চতুর্বোহ্যারঃ॥ ৪॥

পাগুবাইতি—হিতোপদেশেপি মুফাঃ কুপান্তি ইতু,ক্ত্বা সন্তন্ত ত্রবতুষ্যন্তি ইত্যাহ পাগুবা ইত্যধ্যায়েন—॥ ১ ॥ ২ ॥ মুক্ষম্বস্থ মুক্ষ্ নির্জ্জলদেশের ধ্যুস্থ জান্তনদেশের "ধ্যা জান্তনদেশে স্যাৎ" ইতি বিশ্বঃ ॥ ৩ ॥

তত্র তে ন্যবসন্ বীরা বনে বছষ্ণুগদিজে। অন্বাস্যমানা মুনিভিঃ সান্ত্যুমানাশ্চ ভারত।॥৪॥ বিতুরস্তুথ * পাওুনাৎ সদা দর্শনলালসঃ । জগ†रेमकর (थरेनव का मारक ॰ वन मृक्तिम ॰ ॥ ¢ ॥ ততো গত্বা বিছুরঃ কাম্যকৎ ত,-ष्हीरेघ तरेश वंशिता मान्हरनत । দদর্শাসীনং ধর্মারাজং বিবিক্তে, সাৰ্দ্ধং ফ্ৰৌপদ্যা ভ্ৰাতৃভিত্ৰ াক্ষণৈশ্চ ॥ ৬ ॥ ততোহপশ্যদ্বিত্বর্ণ তুর্ণমারা,-দভ্যায়ান্তং সত্যসন্ধান বাজা। অথাত্রবীদ্ধাতরং ভীমসেনং, কিন্তু ক্ষাতি নঃ সমেত্য?—। १॥ কচ্চিন্নায়ৎ বচনাৎ সৌবলস্য, সমাহ্বাত। দেবনায়োপযাত:। ক্চিৎ ক্ষুদ্রঃ শকুনি নাযুধানি, জেষ্যত্যস্মান্ পুনরেবাক্ষবত্যা**ন্ !—**। ৮॥ সমাহূতঃ কেন্চিদাদ্রবৈতি, नाहर भारका जीयरमनाभयावृत् । গাঞীবে চ সংশ্যারতে কথং নু, রাজ্যপ্রাপ্তিঃ সংশয়িতা ভবেলঃ ?৷ ৯ ৷

॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ আরিং দ্রতঃ "আরাং দ্রসমীপয়ো" ইতি কোষঃ॥ ৭॥
॥ ৮॥ আফেব আগাদ, অপযাতুং নিবর্তিতুং, সংশরিতে পণীকৃতে সতি
কথং নঃ রাজ্যপ্রাপ্তিঃ ?—যতঃ সংশয়িতা গাওীব নাশাদিত্যর্থঃ॥ ১॥

^{*} বিহুরস্থপীতি ক পুস্তকঃ।

বৈশম্পায়ন উবাচ।

তত উপায় বিছুরং পাগুবেয়াঃ,

প্রত্যগৃহন্পতে! সর্ব্ব এব,

তৈঃ সংকৃতঃস চ তা নাজমীটো,

যথোচিতং পাণ্ডুপুক্তান্ সমেয়াৎ—: ১০ ॥

সমাশ্বস্ত্র বিজুর্থ তে নরর্মভা,-

স্ততোহ পৃচ্ছনাগমনায় হেতুম।

স চাপি তেভ্যো বিস্তরতঃ শশংস,

যথারুত্তে। ধৃতরাষ্ট্রোহৃদ্বিকেরঃ—, ১১ 🏾

বিহুর উবাচ।

শ্বে বিল্লা প্রতরাষ্ট্রোহনুগুপ্তন্তন্ত্র।
 মজাতশত্রো। পরিগৃহাভিপূজ্য।

এব॰ গতে সমতা মভ্যুপেত্য,

পথ্যকৈষাং মম চৈব ত্ৰবীছি—॥ ১২ ॥

ময়াপ্যক্ত^ যৎ ক্ষমং কৌরবাণা^,

্হিত[ু] পথ্যং ধুত্তরাষ্ট্রস্য চৈব।

তদৈ তদ্মৈ ন ৰুচা মভ্যুপৈতি,

ততশ্চাহং ক্ষম মন্যন্ন মন্যে—॥ ১৩॥

Above analysis of the second o

পর্ব্ধ শ্রেষ্ট্র পাণ্ডবেয়া! ময়োক্ত্র্

ন মে ভচ্চ শ্রুতবানাশ্বিকেয়ঃ।

যথাতুরস্যেব হি পথ্য মন্নং,

ন রোচতে স্মাৃদ্য ততুচামানম্—॥ ১৪॥

॥ ১০॥ যথারতঃ যাদৃশাচারঃ ॥ ১১॥ অন্প্রপ্তং অনুরক্ষিতারং হিতোপ দেশে নেতিশেষঃ "কর্ত্তরি ক্তঃ, ব্রবাছী তাবোচদিতি সম্বন্ধঃ ॥ ১২॥ কচাং প্রতিং অনীৎ সামোহনাৎ বৈরম্॥ ১৩॥ ১৪॥

ন শ্রেরসে নীয়তেইজাতশতো! ন্ত্রী শ্রোতিয়দ্যের গুহে প্রতুষ্টা। ধ্রুব ্ন রোচেন্তর তর্মভ্স্যা, পতিঃ কুমার্যা ইব ষ্টিবর্ষঃ—। ১৫॥ ধ্রুবং বিনাশো নূপ! কৌরবাণাং; ন বৈ শ্রেয়ো ধ্রতরাষ্ট্রং পরৈতি। যথা চ পর্বে পুষ্করস্যাবসিক্তৎ. জল ন তিঠেৎ পথ্য সূক্তং তথা স্মিন্ –॥ ১৬॥ ততঃ কুনো ধৃতরাষ্ট্রোইব্রবীমাণ, যন্মিন শ্রদ্ধা ভারত। তত্র যাহি। নাহং ভূয়ো কাময়ে ত্বাং সহায়ং, মহী মিমাং পালয়িতুং পুরং বা—॥ ১৭॥ সোহহং ত্যক্তো ধৃতরাষ্ট্রেণ রাজ্ঞা, প্রশাসিতু বা মুপ্যাতো নরেন্দ্র!। তবৈ সকং যক্ষয়ে ক্তং সভায়াং, তদ্বার্য্যতাং তৎ প্রবক্ষ্যামি ভূয়ঃ—॥ ১৮॥ क्रिटेन छोटेख पूंकामानः मशरेषुः, ক্ষমাপ কুৰ্বন্ কাল মুপাসতে য়ং। সংবর্দ্ধাং স্তোক মিবাগ্নি মাল্যবান্, স বৈ ভুঞ্জে পৃথিবী মেক এব—, ১৯॥

॥ ১৫॥ পরিতি পরাহশতি, পৃষ্করম্য কমন্স্য ॥ ১৬॥ গ্রছাঃ ইংফী-হয়মিতি ধীঃ ॥ ১৭॥ ধার্যাতাং ন হিন্দর্ভ্রাষ্ ॥ ১৮॥ উপাসতে উপাত্তে প্রতীক্ষতে তৃণাঃ স্তোক মগ্লিমিব আত্মানং সহায় সম্পত্যা সংবর্ধ রন্ এক এব শত্রণাং কাং স্থানো, ত্রেদাং ॥ ১৯॥ ' যন্যাহবিভক্তং বন্ধ রাজন্! সহারৈ,সহারানা মেষ সংগ্রহণেহ ভুগোরঃ,
সহারানা মেষ সংগ্রহণেহ ভুগোরঃ,
সহারাপ্তো পৃথিবীপ্রাপ্তিমান্তঃ—॥ ২০॥
সত্যান শ্রেষ্ঠঃ পাশুব! বিপ্রকাপং,
ভুল্যঞ্চারং সহ ভোজ্যং সহারৈঃ।
আত্মা চৈষা মগ্রতো ন স্ম পূজ্য,এবং বৃত্তি ব্রত্তিতে ভূমিপালঃ"—, ২১॥
য়ুধিন্টির উবাচ।

' এব করিষ্যামি যথা এবীষি,
পরা বুদ্ধি মুপগন্যাপ্রমন্তঃ।

যক্তাপ্যন্যদেশকালোপপন্নং,
তথৈ বাচ্যং তৎ করিষ্যামি কুৎস্কম্"॥২২॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অরণ্যযাত্রাপর্বাণি বিত্রনির্বাদে
পঞ্চমোহধ্যায়ঃ॥৫॥

•

সহাযায়েজনোপায়মাহ বদেতে। তাবিভক্তং সাধারণং, বস্থ বিভান্ ॥ ২০॥ বিপ্রলাপং বিশ্বতঃ প্রলাপেছনর্থকং বচোষশাভভ্যা, পূজাঃ ভবাঃ, বনবাসাতে বহুনা ধনেন বহুন্ সহায়ান্ প্রাপা জমেব শক্তাভ্রহ ক্রা রাজ্যং প্রাপ্রাক্ত পঃ ॥ ২১॥ ২২॥

ইত, গুরণ্যকে পর্বাণ নৈ নক্তীয়ে ভারতভাব দীপে। পঞ্চাহ্যায়ঃ ॥ ৫॥

^{*} সতাং শ্ৰেৰ ইতি ক---

रिम्माशित छेना । গতে তু বিচুরে রাজয় শ্রমং পাণ্ডবান প্রতি। ধূতরাষ্ট্রো মহ্প্রাজ্ঞঃ পর্যাতপ্যত ভারত। ॥ ১ ॥ বিত্ররম্ম প্রভাবঞ্চ স্ক্রিবিগ্রাহকারিকম্। বির্দ্ধিঞ্চ পরাণ মত্বা পাগুবানাং ভবিষ্যতি ॥ ২ ॥ স সভাষার মাপ্রম্য বিছুরস্মারমোহিতঃ। সমক্ষং পার্থিবেন্দ্রাণাং পপাতাবিষ্টচেতনঃ ॥ ৩॥ ম তুলকা পুন: সংজ্ঞাং সমুখায় মহীতলাৎ। সমীপোপিস্থিত গাজা সঞ্জাং বাকামব্রীৎ— ! 8 II ভাতা মম সুহ্লজৈব সাক্ষাদ্ধর্ম ইবাপরঃ। তস্য স্মৃত্বাদ্য সুভূপণ হৃদয়ৎ দীৰ্য্যতীৰ মে॥ ৫॥ ত মানয়স্থ ধর্ম্মজ্ঞং মম ভ্রাতর মাশু বৈ। ইতি কেবন্দ নুপতিঃ কুপণং পর্যদেবয়ৎ ॥ ৬॥ পশ্চান্তাপাভিসন্তপ্তো বিতুর-ক্মারমোহিতঃ। ভাতুমেহাদিদং রাজা সঞ্জয়ং বাক্য মত্ত্রবীৎ॥ १॥ গচ্ছ সঞ্জয় ! জানীহি ভাতরং বিজুর মম। यपि जीविं द्वारम् गरा পार्यन निर्कृतः ॥ ৮॥ ন হি তেন মৰ্ম ভাত্ৰ। স্বস্থুক্ষমপপি কিঞ্চন। বালীকণ ক্লন্তপূৰ্ব্বণ বৈ প্রাজ্ঞেনামিতবুদ্ধিনা । ১॥

গতে ইতি—মহাপ্রাক্তঃ—িছ্রোপ দেশেনস্থিতানাং জয়ো ভবিষাতি ইতি জানন্ ॥ ১ ॥ সন্ধি বিগ্রহ কারিতং সন্ধিবি গ্রহাদি নীতিজ্ঞ - কৃতং ভবিষাতি আলামিনি কালে ॥ ২ ॥ বিহুর স্মার মোহিতঃ—ম্বরঃ কামঃ তম্মাৎ কেনচিৎ প্রতিবন্ধা ইৎপরোদ্বেষঃ স্মার ইতাচুতে, বিহুরম্বেষণ মম নাশো ভবিষ্যতীতি চিত্তয়া মোহং প্রাপ্ত ইত,র্থঃ, স্লেহেত্যপ পাঠঃ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ রেষ মেব স্লেহ রূপেন নাট্রিছুং সভ্, দ্বারে রাজ্ঞাং সমক্ষং প, তরোপার আহ ভাতেতাাদি—॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ নিধৃতঃ নিঃসারিতঃ ॥ ৮ ॥ বালীকং অপ্রির্ম্॥ ১ ॥ ষ বালীক পরং প্রাপ্তো মন্তঃ পরমবৃদ্ধিদান্।
তাক্ষ্যামি জীবিত প্রাজ্ঞ ! তং গচ্ছানয় সঞ্জয় !॥ ১০॥

দ তস্য তন্ত্বনং প্রুল্জা রাজ্ঞ ন্ত মনুমানা চ।

সঞ্জয়ো বাচমিত্বাক্ত্বা প্রাক্তবং কাম্যক প্রতি॥ ১১॥
সৌহচিরেন সমাসাদ্য তন্ত্বন যত্র পাগুবাঃ।
রৌরবাজিনসমীতং দদর্শাথ যুধিন্তিরম্॥ ১২॥
বিত্রেন সহাসীন ত্রাক্ষণেক সহস্রশঃ।
ভাতৃতিক্চাপি স গুপুর মোন সঞ্জয়ঃ।
ভীমার্জ্জিন যুমাক্ষাপি তদ্যুক্ত প্রতিপেদিরে॥ ১৪॥
রাজ্ঞা পৃষ্টং স কুশলং সুখাসীনক্ষ সঞ্জয়ঃ।

শশংসাগমনে হেতু মিদক্ষৈবাত্রবীদ্বচঃ—॥ ১৫॥
সঞ্জয় উল্বান

"রাজা মারতি তে ক্ষত্তর্ছি ইয়িকাস্তঃ। ত৲ পশ্য গত্তা ত্বং ক্ষিঞ্চং সংজীবয় চ পার্থিবম্॥ ১৬॥ সোহসুমান্য নরশ্রেষ্ঠান্ পাগুবান্ কুরুনক্ষনান্। নিয়ে গাড়াজসিংহস্য গদ্ভ ম≨সি সন্তম:"॥ ১৭॥

देवनकात्रम छेवाछ।

এবমুক্তস্ত বিজ্রো ধীমান্ স্বজনবল্লভঃ। † যুধিন্তিরস্যানুমতে পুনরায়ালাজ।হ্বয়ম্॥ ১৮॥

॥ ১০॥ সানিতঃ সন্ ইতর,ন্ মানরিজাভুমানে;ত্যস্যার্থঃ ॥ ১১॥ ১২॥ ॥ ১০॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥

^{*} কপুস্তকে চাত্র—বৈশস্পায়ন উবাচ ইত্যাৱিক পাঠঃ। † বংসদঃ ইতিক পুস্তকে পাঠঃ।

তমত্ত্রীশ্বহাতেজা ধৃতর ছেই। ইশ্বিকাস্কৃতঃ ! ই দিন্দ্যা প্রাপ্তোহদি ধর্ম জ্ঞাদিন্দ্যা স্মরদি নেহ্নম! ১৯॥ মদ্য চাহং দিবারাত্রৌ স্বংক্তে ভরতর্মভ!। প্রজাগরে প্রপশ্যামি বিচিত্রং দেহমাস্থানঃ॥২০॥ সোহক্ষ মানীয় বিজ্বং মূর্জন্যান্তায় চৈব হি। ক্ষম্যতামিতি চোবাচ যতুকো, হসি ময়াহন্ম "॥২১॥ †
বিহুর উবাচ।

'ক্ষান্তমেব ময়া রাজন্। গুরুর্দের্ম পরমো ভবান্। এবোহহমাগতঃ শীঘ্রং হৃদ্দর্শনপরায়ণঃ॥ ২২॥ ভবন্তি হি নরব্যাঘ্র। পুরুষা ধর্মাচেতসঃ। দীনাভিপাতিনো রাজমাত্র কার্যা বিচারণা॥ ২০॥ পাজোঃ স্কুতা যাদৃশা মে ত,দৃশান্তব ভারত।। দীনা ইতীব মে বৃদ্ধিরভিপন্নাদ্য তান্ প্রতি"। ২৪॥

বৈশশারন উবাচ।
ভান্যোন্যমনুনীরেবং ভ্রাতরো ছো মহাত্যুতী।
বিত্ররো প্রতরাষ্ট্রশচ লেভাতে পরমাণ মুদম্॥২৫॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অরণ্যযাত্রাপর্বাণ বিত্রপ্রত্যাগমনং
নাম যঠোহধ্যায়ঃ॥৬॥

ধ্তরাক্তঃ প্রতাপবা নিতি পাঠে—মেছেন প্রকৃষ্টং তাপং প্রাপ্তইত্যর্থঃ ॥ ১৯ ॥ প্রজাগরে আধিজবায়া মুরিক্রায় ং, বিচিত্রং বিগতিদিবা বস্তুকং অপেত লক্ষীকমিত।র্থঃ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ভবন্তীতি দীনহাৎ পাঞ্বেরু মমণক্ষপাতে। নতু বংপুত্র দেবাদিতি ভাবঃ ॥ ২১ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥

ইত্যারণ্যকৈ পর্কান নৈলকঠায়ে ভারত ভাব দীপে বঙ্গোহধ্যায়ঃ ॥ ৩ ॥

শুভাপবানিতি পাঠঃ ক খ পুস্তকরে।
 দ মরাক্ষা ইতি ক—

रिवमन्त्राशित छेताह।

শ্রুত্রা চ বিজুর প্রাপ্তং রাজ্ঞা চ পরিসান্থিতম্।

গ্রুরা ট্রু, আজো রাজ্ঞা পর্যাতপাত তুর্মাতিঃ ॥ ১॥

স সৌবলেয় মান য় কর্ণ কুঃশাসনৌ তথা।

অব্রবীন্ধনং রাজা প্রবিশ্যাবৃদ্ধিজং তমঃ ॥ ২॥

' এব প্রত্যাগতো মন্ত্রী গ্রুত্রা ট্রুস্য ধীমতঃ।

বিজুরঃ পাণ্ডুপুজ্ঞাণাং স্কুদ্ধিলান্ হিতে রতঃ ॥ ৩॥

যাবদস্য পুনর্ক্ দিশ বিজুরো নাপকর্ষতি।

পাণ্ডবানয়নে তাবম্মস্তর্মং হিতশ মম ॥ ৪॥

অথ পশ্যাম্যাহং পার্থান্ প্রাপ্তানিহ্ কর্মান।

পুনং শোষং গমিষামি নিরম্ নিরব্রাহঃ *॥ ৫॥

বিষ্ মুদ্ধানিশ্বের শাস্ত্র মান্তিবেশনম্।

করিষ্যে ন হি তান্দ্ধান্ পুনর্জ ক্রিছে। ংসহে"॥ ৬॥

শক্ষিক্রাচ।

" কিং বালিশ-মতিশ রাজন্নান্থিতোইসি বিশা স্পতে!। গতান্তে সময়ং কৃত্বা নৈতদেবং ভবিষাতি॥ ৭॥ সত্যবাক্যে স্থিতাঃ সর্বে পাণ্ডবা ভরতর্ষত।। পিতৃত্বে বচনং ভাত! ন গ্রহীষ্যন্তি কর্ছিচিং॥ ৮॥

শ্রুহাচেতি—॥ ১॥ অবুদ্ধ রজানং তর্জাংতমং, রাগদ্বোদ্ধকং মোহম্
॥ ২॥ স্কং শুভচিন্তকঃ, হিতেরতঃ শুভ কর্তা॥ ৩॥ ৪॥ বারণো বা নবগ্রহ
ইতি পাঠে—বা শব্দ ইবার্থে, নবগৃহীতো গঞ্জইবেতার্থা, নিরম্মু নিরবগ্রহ
ইতি পাঠে—নিরবগ্রহঃ প্রতিবন্ধা হভাবেপি নিরমু রিরাহারোভূহা শোষং
গমিষামীতার্থঃ, "প্রতি বন্ধে পাবগ্রহঃ" ইতি বিশ্বঃ, নির্মুরিতি নিরাপ্রিতিচ পাঠে চিন্তো ॥ ৫॥ মরাম্থিং বিষাদিকং করিষ্যে স্বীকরিষ্যে, গুদ্ধান্
শ্র্মিতঃ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥

^{* &#}x27;' বারণো বা নৰগ্রছ ইতি" কচিত্রপদভ তে।

অথ বা তে গ্রহীয়ান্তি পুনরেষান্তি বা পুরম্।
নিরস্য সময়ং সর্বে পণোহস্মাকং ভবিষ্যাতি ॥ ৯ ॥
সর্বে ভবামো মধ্যস্থা রাজ্ঞস্ছনদামুবর্তিনঃ।
ছিদ্রং বহু প্রপশ্যন্তঃ পাগুবানাং স্থসংবৃতাঃ?'॥ ১০॥ '
হঃশাসন উলাচ।

ে এবমেতন্মহাপ্রাজ্ঞ। যথা কাসি মাতুল!।
নিত্যং হি মে কথায়ত স্তব বুদ্ধিছি রোচতে"। ১১॥
কর্ণ উবাচ।

" কাম মীক্ষামহে সর্বের ছুর্য্যোধন। তবেংশিতম্ । ঐকমতাং হি নো ঝাজন্। সর্বেষামেব লক্ষয়ে ॥ ১২ ॥ নাগমিষ্যন্তি তে ধীরা অক্সা কাল সংবিদম্। আগমিষ্যন্তি চেমোহাৎ পুনদুর্যতেন তান্ জয়"—॥ ১৩॥

বৈশশারন উবাচ।

এব মুক্তন্ত কর্ণেন রাজা পুর্য্যোধন স্থান।

নাতিক্ষমনাং ক্ষিপ্র মভবৎ স পরাপ্ত্যুধাং॥ ১৪ ।

উপলভ্য ততঃ কর্ণো বির্ত্য নয়নে শুভে।

রোষাক্ষ্ণোসনঞ্জৈব সৌবলঞ্চ তমেব চ॥ ১৫॥
উবাচ পরমকুদ্ধ উদ্যম্যান্ত্রান মান্সনা।

" অথো মম মতং ষতু তরিবোধত ভূমিপাং—॥ ১৬॥

পণঃ কার্যাকার্য বিবেকলকণো ব্যবহার অস্মাক্ষিতি পাওবানিতি গৃহী-ছোজন্ ॥ ৯ ॥ ক্ছিত্রং সমরাতিক্রম দোষং, বহু বহুলং, প্রপশ্যভোগ্যনাপ স্থান্ত পাওবেড়ো ২ এর্মবন্ডো ভীতাঃ সন্তো নিলীর স্থাস্তিত র্থঃ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ নাতি হৃষ্ট্যনাঃ পাওবানাং নিক্লারাং সত্যা মপি আগমনাং সহিষ্ট্রাৎ কর্ণেন স্থাপরাক্রম যৌগ্যস্য বচনসাভ্তেক্ত ॥১৪ ॥ উপলভ্য ভ্রোধনাশ্রমিতি শেষঃ ॥১৫ ॥ উন্মা উংক্তিপ্য জাল্পানং দেহ্য ॥১৬ ॥

थियु० मर्द्य क्रियारमा तांखाः किस्तर्भाष्यः । ন চাস্য শক্ষঃ স্থাডু প্রিয়ে সর্বে ছ চন্দ্রিঃ ॥ ১৭॥ বযস্ত্র শস্ত্রাণ্যাদার রথানাস্থার দ^শিতাঃ। গজাম: সহিতা হস্ত্ৰ- পাগুরান্ বনগোচরান্॥ ১৮॥ তেষু সর্বেষু শান্তেষু গতেম্বিদিতাং গতিম। निर्दिवामा ভिषियांत्र धार्खनाड्डा छथा वसम् । ১৯। যাবদেব পরিদ্যানা খাবচ্ছোকপরায়ণাঃ। যাবিন্মতবিহীনাশ্চ ভাবচ্ছক্যা মতং মম"॥ ২ ।॥ তগ্য তথ্চনং শ্রুষা পূজয়ন্তঃ পুনঃ পুনঃ ৷ বাঢমিত্যেব তে দর্বে প্রত্যুচ্ঃ স্থতজং তদা ॥ ২১॥ এবমুক্ত্রা স্থস রক্ষা রথৈঃ সর্বে পৃথক্ পৃথক্। নির্যযু: পা গুরান্ হস্তং সহিতাঃ ক্লুতনিশ্বয়াঃ ॥ ২২ ॥ তানু প্রস্থিতান্ পরিজ্ঞার কুফারৈপায়নঃ শুভুঃ। আজগাম বিশুদ্ধাপু। দুষ্ট্য দিব্যেন চকুৰা॥২৩॥ প্রতিষিধ্যাথ তান সর্বান্ ভগবান লোকপুলিত। প্রস্তাচকুষ মাসীন মুবাচাভ্যেত্য সম্বর্ম—॥ ২৪ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অরণ্যান্তাপর্বাণ ব্যাসাগমনং নাম সপ্তমোহধ্যারঃ॥ १॥

বরং কিছরা: পাণ্যইব কিছর পা।র:, পাণ্ডশ্চার চরুষা ইতিবং কিংকুর্মা ইতি ক্যা ক্তাঞ্জি পাণ্য ইতিপ্রাঞ্চঃ, প্রিয়ং চিকীধামো নতু শক্ষঃ প্রিয়ে স্থাতু মিতি সম্বন্ধঃ, প্রতরাফ্রেণ নিক্ষরাং ॥ ১৮ ॥ ১৮ ॥ ৮৮ শিতাঃ সর্বাঃ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ পরি দ্নোঃ ধিরাঃ, বর্জিত বিজিগীয়া বা, শক্ষঃ জেতু মিতিশেষঃ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৪ ॥

> ইত্যারণাকে পর্কাণ নৈলকণ্ঠারে ভারত ভাবদীপে সপ্তমেহিধ্যায়ঃ ॥ १॥

वाम डेवाह।

' ধূজরাষ্ট্র! মহাপ্রাজ্ঞ! নিবোধ বচন মম। বক্ষ্যামি ত্রাং কৌরবাণাং সর্কেষাং হিভমুক্তমম্ ॥ ১ ॥ ন মে প্রিয়ং মহাবাহো! যক্ষাতাঃ পাগুবা বনম্। निक्रजा निक्रजाटेन्टर व ष्ट्राधिनश्रुद्धागरेमः ॥ २ ॥ তে শ্বরন্তঃ পরিক্লেশান্ বর্ষে পুর্ণে ত্রয়োদশে। विस्माकान्ति विषः कुषाः कोतरवस्त्रम् ভात्र ।॥ ०॥ তদয়~ কিন্নু পাপাত্মা তব পুত্র: স্থমন্দধী:। পাগুবান্নিত্যসংক্রদ্ধো রাজ্যহেতে৷ ধ্রিঘাণ্যতি ?—। বাৰ্য্যতাং সাধ্য়ং মূঢ়া শম্প গছতু তে স্থতা। বনস্থা শ্ৰানয় শ্ৰু মিচ্ছন্ প্ৰাণান্ বিমোক্ষাতি ॥ ৫॥ यथा हि विष्ठ्रः व्याख्डा यथा जीत्या यथा वस्त्र। যথা কুণশ্চ দ্রোণশ্চ তথা সাধু র্ডবানপি ॥ ৬ । বিগ্রহে। হি মহাপ্রাজ্ঞ: স্বজনেন বিগহিতঃ। অধর্ম্য ময়শস্যঞ্জ মা রাজন্। প্রতিপদ্যথাঃ ॥ १ ॥ সমীক্ষা যাদৃশী ছ্দ্য পাপ্তবান্ এতি ভারত।। উপেক্ষ্যমাণা হা রাজন্! মহান্ত মনয়ং স্পূদেং॥৮॥ অথ বাহয়ং সুমনদাত্ম। বনং গচ্ছতু তে সূতঃ। পাগুবৈ: সহিতো রাজন্মেক এবাইসহায়বান্। ১॥

ধ্ততি—॥ ১॥ নিক্তা: নির্জিতা: ॥ ২॥ বিষমিব বিংং শস্ত্রম্ ॥ ৩॥ ॥ ৪॥ ৫॥ তবানপি, অন্তীতি শেষ: ॥ ৬॥ অজনেন সার্ত্ধং মা আতিপদ্তাং ভবান্ মাগাদিত্যুগ: ॥ ৭॥ সমীকা বিচার পুর্বিকা বৃদ্ধিঃ॥ ॥ ৮॥ অথবৈতি—ভীমাদিবং বনে সহবাসাং তব পুত্রস্য মুধিটেরেণ স্বেহ-শেতং ত্বকৃতকৃত্যো ভবিষ্যসীত্যুগ: ॥ ৯॥

^{*} নিক্ত।। নিাৰ্জভান্তৈর হতি ক—

ততঃ সংসর্গতঃ স্নেহঃ পুক্রস্য তব পাগুবৈঃ।

যদি স্যাৎ ক্রতকার্য্যাহদ্য ভবেন্ত্রং মনুজেশ্বর!॥ ১০॥

অথ বা জায়মানস্য যজীল মনুজায়তে।

ক্রাতে তমহারাজ! নামৃতস্যাপসর্পতি॥ ১১॥

কথণ বা মন্যতে ভীয়ো দোণোহ্থ বিচুরোহ্পি বা।
ভবান্ বাহত্র ক্ষমণ কার্যাণ পুরা বোহর্থো নিবর্ত্তে"॥ ১২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি শ্বরণ্যা,ত্রাপর্বাণি ব্যাস্বাক্যে

অফ্যোহধ্যায়ঃ॥ ৮॥

প্রতরাক্র উলা ।

ভগবন্নাই মপোডজোচয়ে দ্যুতসম্ভবন্ত্ত্ত্বা

মন্যে তদ্বিধিনাক্ষা কারিভোইস্মীতি বৈ মুনে।॥ ১॥

নৈতজোচয়তে ভীগ্নো ন জোণো বিতুরো ন চ।

গাস্থারী নেচ্ছতি দৃতেং তচ্চ মোহাৎ প্রবর্ত্তিক্ ॥ ২॥

পরিত্যক্তত্ত্ব্ত্ত্ত্ত্ব্ত্ত্ত্ব্ত্ত্ত্ব্

প্রস্তাক্ত্ত্ব্

শক্ষামি তুর্যোধন মচেতনম্।

পুল্লস্লেহেন ভগবন্! জানন্ত্রি প্রিয়ন্ত্ত্ত্য্যা ১॥

শক্ষাস্থিত্তিক ভগবন্! জানন্ত্রি প্রিয়ন্ত্রত !"॥ ১॥

কাস উবাচ। "বৈচিত্ৰবীৰ্য্য! নূপতে! সত্যমাহ যথা ভবান।

দৃঢং বিদ্ধাং পরং পুত্রং পরং পুত্রান্ন বিদাতে ॥ ৪ ॥

॥ ১০॥ এতদিপি তুর্বট মিডাছে—অথবেতি, ন মৃতস্যাপি সর্পতী তি পাঠে—সহজে। দোনো জন্ম ভরে পাতৃহন্তত ইতঃর্থঃ॥ ১১॥ অতা যৎ ক্ষমং উচিতং তৎ পুরা কার্যং, প্রাণোব কর্তুবায়, অনাধা হঃ গুমাকং অর্থঃ প্রয়োজনং ভতিবর্দ্ধতে নশ্যতি, নিবর্ততেইতি পাঠেপি সএবার্থঃ, অভিবর্তত ইতি পাঠে—বঃ গুমান অর্থঃ অভি ক্রামতি অতীত্য গত্তীত্যর্থঃ॥ ১২॥
ইত্যারণাকে পর্মণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত খ্বনীপেছন্টমোগায়ঃ॥ ৮॥

ভগবিন্তি—॥ ১ বি । ৩ । প্রথ শত্রথ শোক্তেতুরাৎ, পরং শ্রেষ্ঠং

ইন্দ্রোহপ্যক্রানিপাতেন সুরভ্যা প্রতিবোধিতঃ।
অন্যৈঃ সমূদ্রে রপ্যথৈ ন স্কাল্লনাতে পরম্। ।
অন্ত কে কীর্নিধ্যানি মহদাখ্যানমুক্তমম্।
স্থানভাইশ্চন সংবাদ মিন্দ্রমা চ বিশাম্পতে! ॥,৬॥
কিনিধ্যাপতা রাজন! স্থাভী প্রাক্রদং কিল।
গবাং মাতা পুরা ভাত! তামিক্রোহস্বক্রপারত॥ ৭॥
ইক্র উবাচ।

" কিমিদং রোদিষি শুভে! কচিছে ক্ষেমং দিবৌকসাম্ ?—।
মনুষ্যেম্বথ নাগেমু নৈ ভদপ্পং ভবিষ্যতি"—। ৮॥
• স্থাভিক্বাচ।

"বিনিপাতো ন তে কশ্চিদ্শতি তিদশাধিপ!।
অহস্ত পুক্রং শোচামি তেন রোদিমি কৌশিক!॥৯॥
পশ্যনং কর্ষকং কৃদ্ধং দুর্বলং মম পুক্রকম্।
প্রত্যেদনাভিনিম্মন্তং লাঙ্কলেন চ পীডিতম্॥ ১০॥
নিষীদমানং সোৎকর্তং বধ্যমানং স্থাবিপি!।
কৃপাবিফাম্মি দেবেক্র! মনশ্যেষিজতে মম।
এক ন্তত্র বলোপেতো ধুর মুদ্ধতেহধিকাম্॥ ১১॥
জপরোহপ্যবলপ্রাণঃ কৃশো ধমনিসন্ততঃ।
কৃচ্ছাদ্ধহতে ভারং তং বৈ শোচামি বাসব!॥ ১২॥

প্রতি হেতুরাং " ন কু-পূত্রাং পরঃ শক্ত র সংপুত্রাং পরঃ সধা ইত্যুক্তেঃ
॥ ৪॥ স্ব্রভাঃ দেবধেরাঃ, অন্যৈ রয় বন্ত্রানিভি হেত্রভঃ, পরং শ্রেঃং
ছানং ন বিদ্যুক্ত অপিতু পিরাদেব, তথাচ শুক্তঃ " অয়ংছ প্রানং শরাংছ
বাসে! রূপং ছিরণং পশ্বো বিবাহাঃ সধা ছ জারা রূপানংছ ছহিতা
জ্যোতি ই পুত্রঃ পর্মে ব্যোমন্" ইভি॥ ৫॥ আর পুত্রবাশোক হেতুত্বেংগ্রি। ৬॥ অস্বরূপায়ত অম্কল্পায়ত আমুক্লিত বান্॥ ৭॥ ৮॥
কোলিক ছে ইন্দ্রা। ১॥ প্রত্যোদন ভীক্ষাত্রা লোছ বতা দংশুন॥ ১০॥
ধুরংভারন্॥ ১১॥ ধ্যানি সন্ততঃ শিরাভি গ্রাপ্তঃ নির্মাংস ইত্যুর্থঃ॥ ১২॥

বধামানঃ প্রতোদেন ভুদ্যমানঃ পুনঃ পুনঃ।

নৈব শক্রোতি তং ভার মুদ্ধোচুং পশ্য বাসব!॥ ১৩॥
ততে হং ভদ্য শোকার্ত্তা বিরোমি ভূশতুঃথিতা।
অক্রাধ্যবর্ত্তরত্ত্বী চ নেত্রাভ্যাং করুণায়তী''॥ ১৪॥
শক্ষ উবাচ।

' তব পুজ্রসহস্রেষু পীড্যমানেষু শোভনে!। *কি৲ কুপায়িত মন্তাত পুজ্র একত হন্যতি ?''—॥ ১৫॥ স্কাভিক্ষার।

"যদি পুত্র সহস্রাণি সর্বতি ক্মতৈব মে। দীনস্য ভু সভঃ শক্ত ! পুত্রস্যাভ্যধিকা কুপা''॥১৬॥ বাসে উবাচ।

'ত তিন্তঃ সুরভীবাকাং নিশম্য ভূশবিশ্বিতঃ।
জীবিতেনাহিবি কৌরব্য! মেনেহভারিক মাত্মজন্ ॥ ১৭॥
প্রবর্ষ চ তত্তিব সহসা ভোষ মুল্লন্ ।
কর্ষকস্যাচন্ত্রন্ বিত্বং ভগৰান্ প্রাকশাসনঃ ॥ ১৮॥
তাল্বথা সুরভী প্রাহ সম্মেবাস্ত তে তথা।
স্থতেষু রাজন্! সর্কেষু হীনেমভাধিকা ক্লপা॥ ১৯॥

যাদৃশো মে সূতঃ পাণুস্তাদৃশো মেহসি পুক্তক!। বিদুরক্ষ মহাপ্রাজ্ঞঃ স্নেহাদেতদুবীম্যহৃত্যু॥২০॥ চিরার তব পুক্রাণাং শতমেক্ষ ভারত!।

পাণ্ডোঃ পঞ্চৈব লক্ষ্যন্তে তেহপি মন্দাং স্কু হৃংখিতাঃ॥ ২১॥

बर्धा मखाषर्जन, (ज.मः প্রত্যেশন ॥ ১०॥ ১৪॥ क्रुशाशिज वजी क्रुशाश्च कुठव जी. প্রচাত্ত্র—ক্স্পায়িতং ক্রেপ্ব, হন্যতি হন্যানে, পুত্র একোছি হন্যত ইতি পাঠে—व्ह्यू পুত্রেষু হি প্রাসিদ্ধং একঃ ক শ্চং হন্যত এবে এর্থঃ॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ উল্বাং উৎকটন্॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ সন্দাঃ •র্জংপুত্রং কপটান ভিজ্ঞাঃ॥ ২১॥

^{*} কিংৰূপা।য়তবতী পুত্ৰ একত্ৰহন্যতি ইতি গ—

কথং জীবেয়ু রত্যন্ত কথং বর্দ্ধেয়ু রিতাপি।
ইতি দীনেয়ু পার্থেষু মনো মে পরিতপাতে । ২২ ॥
যদি পার্থিব । কৌরব্যান্ জীবমানানিহেছ্গদি।
তুর্ঘ্যে ধনন্তব স্থতঃ দমং গচ্ছতু পাশুবৈঃ'' । ২৩ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্কানি অরণ্যযাত্রাপ্রকানি স্থরভ্যুপ।খ্যানং
নাম নবমোহধ্যায়ঃ ॥ ৯ ॥

ধৃতরাক্তি ইবাচ।

' এবমেতন্মহাপ্রাক্ত! যথা বদসি নো মুনে!।

অহপ্রেব বিজানামি সর্বের চেমে নরাবিপাঃ॥ >॥
ভবাৎশ্চ মন্যতে সাধু যথ কুরুণাং মহোদরম্।
তদেববিত্বরোহপ্যাহ ভীন্মো জোণশ্চ মাৎ মুনে!॥ ২॥
যদি ত্বহ মনুপ্রাহঃ কৌরবেষু দয়। যদি।
অনুশাধি তুরাত্মানং পুত্রণ তুর্যোধনং মম''॥ ৩।
বাদ উবাচ।

ভারমায়তি বৈ রাজন্। মৈত্রেয়ো ভগবান্ধিঃ।
ভারিষ্য পাণ্ডবান্ ভাত নিহৈবাক্ষদিদৃক্ষা। ৪
এষ তুর্যোধনং পুত্রং তব রাজন্মহান্ধিঃ।
ভানুশান্তা যথানায়ং শমায়ান্য কুলস্য চ । ৫॥
ত্রুয়াদ্দদেষ কৌরব্য । তৎ কার্যা মবিশঙ্কয়া।
ভাত্র্যায় স্তু কার্যাস্পুত্রং তে শপ্যতে রুষা" । ৬॥
। ২২॥ ২০॥

ইত্যারন্যকে পর্বাধি নৈলকণীয়ে ভারত ভাবদীপে নবমোন্ধ্যায়ঃ॥৯॥

এবমিত্র— বিনাশকালে সাধ্নপি মূচ। অবজানতি ইতাধার তাৎ পা ম ১॥২॥ ৩॥ আ মধ্য অবৈক্ষা, ভাতুন্ পঞ্চেতিশেষঃ ॥৪॥ অনুনাস্তা অনুশাসিয়াতি॥৫॥ আক্রিয়াই অকরনে, ক্যাসা অব্ধানত নাস।॥৬॥ বৈশশায়ন উনাত।

এবমুক্ত্বা যযৌ বাসো মৈত্রেয়ঃ প্রতাদৃশ্যন্ত।
পূজয়া প্রতিজ্ঞাহ সপুত্র স্তং নরাধিপঃ ॥ ৭ ॥
অর্কাদ্যাভিঃ, ক্রিবাভিকৈ বিশ্রান্তং মুনিস্ত্তমম্।
প্রশ্রেণাব্রবাদ্রাজা প্রবাস্ত্রে হৃষিকাস্কৃতঃ ॥ ৮ ॥
স্থেনাগমনং ক্রিন্তুগবন্! কুরুজাঙ্গলাৎ।
ক্রিণ্ডে কুশলিনো বীরা ভাতরঃ পঞ্চ পাপ্তবাঃ ॥ ৯ ॥
সময়ে স্থাতৃমিচ্ছন্তি ক্রিচ্চ ভরতর্ষভাঃ।
ক্রিণ্ডে কুরুণাং সৌভাত্র মরু চ্ছিন্নং ভবিষাতি ?"— > > ॥
মেত্রের উবাত।

॥ ৭॥ ক্রিয়াভিঃ সৎকারে:॥৮॥৯॥১০॥ ষ ৃচ্ছয়া দৈবাং॥,১১॥১২॥ বিভ্রমং দ্তোনর্থেপার্থারুদ্ধিয় ॥১৩॥১৪॥ ওপারকং ফোগাং, মেনীভূতঃ খলদাম স্তরীভূতঃ, প্রাঞ্জিফ্ অন্তর্যোচ॥১৬॥

^{*} এষ পাঃ কৈ পুস্তকে ন দাঠ,তে কাচ্চ মেধীভূত ইতি লভাতে

দস্থানামিব যদ্ব জং সভাষা কুরুনন্ন।। তেন ন ভাজসে রাজ~স্তাপিসানাং সমাগমে''। ১৭॥ বৈশন্পায়ন উবাচ। ততো ব্যার্ত্য রাজানং তুর্য্যোধন মমর্থাম্। উবাত শ্লক্ষরা বাচা মৈতেয়ো ভপবানৃষিঃ--॥ ১৮ 🛭 देश दिवा छेना है। " ছুর্য্যোধন। মহাবাহে।! নিবোধ বদতাম্বর।। বচন প্রেমহাভাগ। ব্রুবতো যদ্ধিতং তব ॥ ১৯॥ ম। फ्रहः পা ওবানাজন্। কুরুম্ব প্রিয়মাল্লন:। পাগুবানাং কুৰুণাঞ্চ লোকস্য চ নর্মভ। ॥ ২ 。॥ তে হি সর্কো নরব্যান্তাঃ শূরা বিক্রান্তব্যেধিনঃ। সর্বে নাগাযুক্তপ্রাণা বজ্ঞসংহননা দুটাঃ ॥ ২১ ॥ সত্যত্রতধরাঃ সর্বের সর্বের পুরুষমানিন:। হন্তারো দেবশতুণ ২ রক্ষ**ণং কামৰূপিণাম্॥ ২২**॥ হিডিম্ব-বকমুখ্যানাং ি ীরস্য চ রক্ষসঃ। ইতঃ প্রদ্রবতাং রা ়া যা স তেষাৎ মহাত্মনাম্॥ ২৩ ॥ আরত্য মার্গং রৌ এজা তত্মে গিরি রিবাচল:। তং ভীমঃ সমর্শ্ল হা বলেন বলিন মুরঃ জঘান পশুমারেণ ব্যাদ্রঃ কুদুমূগং যথা—৷ পশা দিগ্নিজয়ে রাজনু! যথা ভীমেন পাতিতঃ ॥ ২৫॥ জরাসন্ধো মহেম্বাসে। নাগাযুত্তবলো যুধি।

॥ ১৭॥ ব্যার্তা অভি মুখীভূরেতার্থঃ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ বিত্রান্ত বেধিনঃ
বিজ্ঞান্ত মুদ্ধ শীলাশ্চ, বজ্ঞসংছননাঃ বজ্ঞ কারাঃ অভ্ঞাব দুনুঃ ॥ ২০ ॥
॥ ২২ ॥ প্রক্রান্ত বাক্তান্ ॥ ২৬ ॥ সমরে স্ক্রেমি তি পাচে—ক্ষম ইভ্রেদ্ধ্যহারঃ ॥ ২৪ ॥ প্রমারেণ পশুমারণ প্রক্রেণ ॥ ২৫ ॥ ২৪॥

সম্বন্ধী বাস্কুলবন্দ শ্যালাঃ সর্কোচ পার্যভাঃ ॥ ২ 🖦 🛚

ক স্তান্ যুধি সমাসীত জ্বরামরণবাল্লরঃ ?— তস্য তে শম এবাল্প পাগুবৈ র্ডর্ডর্ড !" ॥ ২৭ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ।

कुक (म वहन् दोकन् मा मनुविक मश्री:। এবং ভু ক্রবত স্তদ্য মৈত্রেয়দা বিশাম্পতে ! । ২৮॥ উরুং গজকরাকারং করেণাভিজ্যান সং। कूट्याधनः त्रिष्ठः कृष्। हत्त्वत्वालिश्रेश्वरीय् । २ ন কিঞ্চিত্তকু । তুর্দেখা । স্তম্মে কিঞ্চিদবাপ্ত মুখঃ। ত মশুশ্রেষমাণস্ক বিলিখন্তং বসুন্ধরাম্।। ৩০॥ ष्ठे । इर्द्याधन ताकरेत्राखन काल पाविष् । স কোপবশ্যাপন্নো মৈতেয়ে। মুনিস্ভ্য:। ৩১॥ বিধিনা সংপ্রপুদিতঃ শাপায়াস্য মনো দধে। ততঃ স বায়ুর্গম্পুশ্য কোপস্বক্তলোচনঃ। মৈত্রে: রা ধার্ত্তরাষ্ট্রং ত মশপদ্য উচেতসম্॥ ৩২ ॥ যত্মাত্ত্বং মা মনাদৃত্য নেযাৎ বাচৎ চিকীৰ্ষসি। তশাদস্যভিমানস্য সদ্য: ফলমবাপ্লছি। ৩০। वनाजराह-मे युक्त युक्त युक्त युक्त युक्त स्था তত্র ভীমো গদ,ঘ,তৈ স্তবোরুং ভেৎস্যতে ব'লী—॥ ৩৪॥ ইত্যেবসুক্তে বচনে ধ্রতরাষ্ট্রে। মহীপতিঃ। थानामशोभाम गुनि- रेनडरमव- खरविष्ठि ॥ १९४॥

মৈত্রের উবাচ। " শমং যাস্যতি চেৎ পুজ্র স্তব রাজন্! যদা তদা। শাপোন ভবিতা তাত্ত! বিপরীতে ভাবষ্যতি"॥ ৩৬॥

॥ ২৭ ॥ মহাবশং ক্রোধবশং মেতি নিষেধার্থো নিপাতঃ নতু মাঙ্ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ প্রান্তিঃ প্রেরিতঃ প্রচুনিত ইতি পার্চেপি স্থাবার্থঃ ॥ ৩২ ॥ ৩১ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ বৈশ্লাক্তন উপাচ।
বিলক্ষয় স্থা রাজেন্দ্রো তুর্য্যোধনপিতা তদা।
মৈত্রেয়ং প্রাহ কিন্দ্রীরঃ কথন ভীমেন পাতিতঃ ?—॥ ৩৭ ॥
মৈত্রেয় উপাচ।
"নাহন বক্ষ্যামি তে ভূয়ো ন তে শুক্রাবতে স্কৃতঃ।
এম তে বিত্রুরঃ সর্ব্বে মাখ্যাস্যাতি গতে মার্ন্নি"॥ ৩৮॥
ইত্যেব মুক্ত্রা মৈত্রেয়ং প্রোভিষ্ঠত যথাগতম্।
কিন্দ্রীরবধসন বিগ্নো বহি তুর্য্যোধনো যযৌ॥ ৩৯॥
ইত্যারণ্যকে প্রবিশি অরণ্যাত্রা পর্ববিশি মৈত্রেয়বাক্যে

तम्याव्याव्यावः ॥ ३०॥

সমাপ্তঞার। যাত্রাপর।

বিলক্ষন্ ভীমস্যবলং বিশেষেণ অয়মশ্বজ্ঞা নবেতি রাক্ষস বলদ্বারা লক্ষ্যন্, কেতৌ শতৃ প্রত হঃ, বিলক্ষণ ইতি পাঠে—হুর্বোঃধনস্য হুরাগ্র-ছেন শাপভয়াৎ বিচ্ছায়ঃ বলক্ষ্য ত্রেডি পাঠে—" বলক্ষোধবলোই ছ্রাঃশ ইতি কোশাৎ স এবার্থঃ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ কিন্মী র বধসংবিগ্রঃ কিন্তীরস্য বধো যশ্মভিশান্তীমসেনাৎস হয়ঃ, শক্র যশো হুঃধ কর্মিভার্থঃ ॥ ১ ॥

তিয়ারগাকে পর্বাণি নৈল্পীয়ে ভারত ভাবদীপো

मन्द्रभाष्ट्रशासः ॥ ३० ॥

ধ্বতরাফ্র উবাচ।
কিন্মীরসা বধং ক্ষপ্তঃ শ্রেভাতুমিক্রামি কথ্যতাম্।
রক্ষসা ভীমসেনসা কথমাসীৎ সমাগমঃ॥ ১॥
বিহুর উবাচ।

শৃণু ভীমস্য কর্মেদমতিমানুষকর্মণঃ।

ফাতপূর্বং ময়া তেবাং কথান্তেমু পুনঃ পুনঃ ॥ ২॥
ইতঃ প্রয়াতা রাজেন্দ্র পাগুবা দ্যুতনির্জ্জিতাঃ।
জগ্মুন্তিভিরহোরাত্রৈঃ কাম্যকং নাম তদ্বনম্॥ ৩॥
রাত্রৌ নিশীথে ত্বাভীলে গতেহর্জসময়ে নূপ।
প্রচারে পুরুষাদানাং রক্ষসাং ঘোরকর্মণাম্॥ ৪॥
তদ্বনং তাপসা নিত্যুৎ গোপাশ্চ বনচারিণঃ।
দূরাৎ পরিহর্জি স্ম পুরুষাদভয়াৎ কিল॥ ৫॥
তেবাৎ প্রবিশতাং তত্র মার্গমার্ত্য ভারত।
দীপ্তাক্ষং ভীষণং রক্ষঃ সোলাকং প্রত্যপদ্যত *॥ ৬॥
বাহু মহান্তৌ কৃত্রা চ তথাস্যঞ্জ ভয়নকম্।
হিতমার্ত্য পন্থানং যেন যান্তি কুর্ম্বাং॥ ৭॥

কিন্মীরসোতি—॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ আভীলে ভয়স্করে, স্বাভীলে ইতাপি পাঠঃ "আভীলং ভীষণে কুচ্ছে" ইতি বিশ্বঃ, অধ্বসময়ে অধ্বজানে গতে নতি লোকে তন্ত্রাবতি সতীতার্থঃ " সময়ঃ শপশাচার কালে সিদ্ধান্ত সম্বিদোঃ।" ইতি বিশ্বঃ, সম্প্রাপ্তে ইত্যপ পাঠঃ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৩ ॥ ৭ ॥

^{*}প্রাদৃশাতে ইতিক।

স্পটাইটদং ট্রং তাম্রাক্ষং প্রদীপ্তোর্দ্ধশিরোরুহম্। সার্করশ্মিতডিচ্চক্রৎ স্বলাক্মিবায়ুদ্য ॥ ৮॥ স্থল্ভ বাক্ষ্মীং মারাং মহানাদ্যিনাদিতম্। মুঞ্ত বিপুলালাদান্ সতোয়মিব তোয়দম্॥ ৯॥ ত্য্য নাদেন সংত্ৰস্তাঃ পক্ষিণঃ সর্বতো দিশম্। বিমুক্তনাদাঃ সংপেতৃস্থলজা জলজৈঃ সহ ॥ ১০ ॥ সংপ্রদ্রুতমুগদীপিমহিষক সমাকুলম্। তদ্বন তস্য নাদেন সম্প্রস্থিতমিবাভবৎ ৷ ১১ ৷ তস্যেক্ষবাতাভিহতান্তাম পল্লববাহবঃ। বিদুর জাতাশ্চ লতাঃ সমালিষ্যন্তি পাদপান্॥ ১২ ॥ তিমিন্ কণে হথ প্রবর্ণী মারুতো ভূশদারুণ:। রজসা মংরুতং তেন নফজ্যোতিরভুলভঃ॥ ১০॥ পঞ্চানাং পাণ্ডুপুক্রাণামবিজ্ঞাতো মহারিপুঃ। পঞ্চানামিন্দ্রিয়ার্থানাৎ শোকাবেশ ইবাতুল: ॥ ১৪ ॥ স দৃষ্টা পাণ্ডবান্ দুরাৎ কৃষ্টাজিনসমার্তান্। আরুণোত্তদ্বনদ্বারং সৈনাক ইবপর্বতঃ ॥ ১৫॥ তং সমাসাদ্য বিত্রস্তা কুফা কমললোচনা। অদুষ্ঠপূর্বং সংত্রাসান্যমীলয়ত লোচনে ॥ ১৬॥ তুঃশাসনকরোৎ স্বন্ধবিপ্রকীর্ণ শিরোরুছ।। পঞ্চপৰ্বতমধ্যস্থা নদীবাকুলতাং পতা ॥ ১৭ ॥ মোমুহ্যানাং তাং তত্ত জগৃহঃ পঞ্চ পাগুবাঃ। ইন্দ্রিয়াণি প্রদক্তানি বিষয়েষু যথা রতিম্॥ ১৮॥

স্পাটোতি—আন্ধি বলাকরোঃ কেশার্করশ্যোদিন্ততড়িতো শ্চোপমোপ্রেন্ রভাবঃ, তড়িদ্ব নিত্যপপাঠঃ ॥৮॥" মহানাদঃ কুঞ্জের স্যাদার্থিকাকে ভরানকে।" ইতি বিশ্বঃ ॥৯॥সম্পেডুঃ একী বভূবঃ॥১০॥১১॥১২॥ ॥১০॥ পঞ্চানাং শব্দাদীনাং ইন্দ্রিয়ার্থানাং ইন্দ্রিয়ে রর্থামানানাং কৃতে, শোকাবেশঃ শোক্ষামঃ ॥১৪॥১৫॥১৬॥১৭॥১৮॥

যুধিষ্ঠিরস্ত ভচ্ছুত্বা বচস্তব্য ছুরাত্মনঃ । আচচক্ষে ততঃ দৰ্বাৎ গোত্রনামাদি ভারত॥ ২৫॥

বুধিন্তির উকাচ।

পাগুবো ধর্মরাজোহহং যদি তে শ্রোত্রমাগতঃ।
সহিতো ভাতৃভিঃ সর্বৈর্ভীমদেনার্চ্জুনাদিভিঃ॥ ২৬॥
হুতরাজ্যো বনে বাসং বস্তুং কুতমতিস্ততঃ।
বনমভ্যাগতো ঘোরমিদ্ধ তব পরিগ্রহঃ॥ ২৭॥

বিহুর উবাচ। কিন্মীরস্কুত্রবীদেনং দিফ্যা দেবৈরিদং মম। উপপাদিতমদ্যেহ চিরকালান্মনোগতম্॥ ২৮॥

॥ ७७ ॥ २७ ॥ २१ ॥ २७ ॥ २८ ३० ॥ ३० ॥ २७ ॥ २৮ ॥ २० ॥

ভীমসেনবধার্থং হি নিত্যমভ্যুদ্যতাযুধঃ। চরামি পৃথিবীং কুৎস্নাং নৈনঞ্চাদাদ্যাম্যহম্॥ ২৯ ॥ সোহয়মাসাদিতো দিষ্ট্যা ভ্রাতৃহা কাঞ্জিতশ্চিরম্। অনেন হি মম জাতা বকো বিনিহতঃ প্রিয়ঃ। ৩০। (यक्रीयरानः ताजन् वाजन्ष्वक्रिया। বিদ্যাবলমুপাঞ্জিত্য ন ছস্তাস্যৌরসং বলম্। ১১॥ হিডিম্বশ্চ স্থা মহা প্রিতো বনগোচরঃ। হতো তুরাত্মনানেন স্বসা চাস্য হৃতা পুরা। ৩২।। সেহিয়মভ্যাগতো মুঢো মমেদ গহনং বনম্। প্রচারসময়েহস্মাকষদ্ধরাত্তে স্থিতে সমে।। ৩৩।। অদ্যাস্য পাতয়িষ্যামি তদ্বৈরং চিরসম্ভূতম্। তর্পরিষ্যামি চ বকং রুধিরেণাস্য ভূরিণ। ৩৪॥ অদ্যাহমনৃণো ভূত্বা ভ্রাভুঃ সখ্যুস্তথৈব চ। माखिः नकामि প्रमाः इषा त्राक्रमक्लेक्म् ॥ ७६॥ যদি তেন পুরা মুক্তো ভীমদেনো বকেন বৈ। অদ্যৈনং ভক্ষযিষ্যামি পশ্যতন্তে যুধিষ্ঠির॥ ৩১॥ এন হি বিপুলপ্রাণমদ্য হত্বা রুকোদরম্। সণভক্ষ্য জর্ষিব্যামি যথাগস্ত্যো মহাস্থুরম্ ॥ ৩৭ ॥ এবমুক্তস্ত ধর্মাত্মা সত্যদক্ষো যুধিষ্ঠিরঃ। নৈতদন্তীতি মজোধোভৎ সয়ামাস রাক্ষমমু ॥ ৩৮॥ ততে! ভীমো মহাবাছরারুজ্য তরুমা দ্রুমম্। দশব্যামমথোদ্ধিক নিজাত্রমকরোন্তদা ॥ ৩৯॥

॥ ২১॥ ৩০॥বেত্রকীর বনে এক চক্রনার্যায্ ॥৩১॥ মছং মম ॥৩২॥ ৩৩॥ ৩৪॥ লক্ষাশিয় লপ্ল্যাশিম ॥৩৫॥৩৬॥ মহাস্থ্রং বাতাশিয়্॥৩৭॥৩৮॥ আৰু জ্যভংক্ত্যা, দশব্যামণ বিস্তারিতরোঃ কররোস্তীর্যানস্তরং উদ্ধিদ্ধং উৎপাটিত্য্॥ ৩৯॥

^{*} গৃহ ইতি ক পুত্তকে পাঠ।

চকার সভ্যং গাঞীবং বজ্ঞনিষ্পেষ্ণোরবম্। নিমেষ ন্তরমাত্রেণ তথৈব বিজয়োহর্জুন: ॥ ৪০॥ নিবার্য্য ভীমো জিফুৎ তং তদ্রক্ষো মেঘনিস্বনম্। অভিদ্রত্যাব্রথীদাক্য- তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি ভারত ॥ ৪১ ॥ ইত্যুকৈ নমভিকুদ্ধঃ কক্ষামুৎপীড্য পাগুৰঃ। নিষ্পিষা পাণিনা পাণি স্পটোষ্ঠপুটো বলী ॥ ৪২ ॥ তমভ্যধাবদ্বেগেন ভীমো রক্ষাযুধস্তদা। যমদগুপ্রতীকাশং ততন্ত তদ্য মুর্দ্ধনি। ৪০॥ পাতরামান বেগেন কুলিশ > মঘবানিব। অস^ভান্তম্ভ তদক্ষ: সমরে প্রত্যদৃশ্যত ॥ ৪৪॥ চিক্ষেপ চোলাকং দীপ্তমশনিপ জ্বলিতামিব। তচুদস্তমলাতম্ভ ভীমঃ প্রহরতাৎ বরঃ ॥ ৪৫॥ পদা সব্যেন চিক্ষেপ তদ্রুকঃ পুনরাব্রজং। কিশারিশ্চাপি সহসা রক্ষমুৎপাট্য পাগুবম্॥ ৪৬ ॥ দপ্তপাণিরিব কুদ্ধঃ সমরে প্রত্যধাবত। তদুক্ষযুদ্ধমভব অহীরুহ্বিনাশনম্। ৪৭ ॥ বালিস্ত্তীবয়ে।ভ'তে।র্যথা জীকাক্ষিণোঃ পুরা। শীর্ষযোঃ পতিতা রক্ষা বিবিধুনৈকধা তয়ে: ॥ ৪৮॥ যথৈবোৎপল মালানি মন্তয়োদ্বিপয়োন্তথা। মুঞ্জবজ্জরীভুতা বহবস্তত্র পাদপাঃ॥ ৪৯॥

বজ্ঞে, নিম্পেষশ্চূ শী ভাবো যক্ত পর্বভক্ত তত্ত্বং গৌরবং গুরুত্বং যক্ত তত্ত্বং॥৪০॥৪১॥কক্ষামুৎপীডা পরিধান বস্ত্রং দৃঢ়ীকৃত্য॥৪১॥৪০॥ ৪০॥ ৪০॥ ৪০॥ ৪০॥ ৪০॥ ৪০॥ জাতং উল্পুক্য্ ॥৪৫॥ রক্ষঃ রাক্ষ্যং, আরজৎ আগক্তং ॥৪৬॥৪৭॥ জী তারা ॥৪৮॥ উৎপ্রমালানি প্রক্ষেত্রানি, মালং কেত্রে জনে মালং ইতি বিশ্বঃ প্রমৃষ্থ ইতার্থঃ॥৪৯॥

চীরাণীব ব্যুদন্তানি রে**জুন্তত্র মহাবনে**। তদৃক্ষযুদ্ধমভবনাৃহুর্ত্ণ ভরতর্বভ। রাক্ষসানাঞ্চ মুখ্যস্য নরাণামুত্তমস্য চ। ৫০। ততঃ শিলাং সমুৎক্ষিপ্য ভীমদ্য যুধি তিষ্ঠতঃ । প্রাহিণ্যেকাক্ষদঃ কুদ্ধো ভীমশ্চ ন চচাল হ ॥ ৫১॥ তংশিলাতাডনজড় পর্যাধাবত রাক্ষসঃ। বাছবিক্ষিপ্তকিরণঃ স্বর্ভানুরিব ভাস্করম্। ৫২ । তাবন্যোহন্যং সমাল্লিষা প্রকর্ষস্তৌ পরস্পরম। উভাবপি চকাশেতে প্রবৃদ্ধৌ রুষভাবিব॥ ৫৩॥ তযোরাদীৎ স্থতুমুলঃ সংপ্রহারঃ স্থদারুণঃ। नथनः द्वे रायुभवत्कात्राचित्रातित मृश्वत्याः ॥ ८८ ॥ ছুর্য্যোধননিকারাচ্চ বাহুবী্র্যাচ্চ দর্পিতঃ। ক্ষণনয়ন দৃষ্টশ্চ * ব্যবর্জত র্কোদরঃ॥ ৫৫॥ অভিপদ্য চ বাহুভ্যাৎ প্রত্যগৃহ্ছাদমর্ষিতঃ। মাতঙ্গমিব মাতঙ্গঃ প্রভিন্নকরটামুখম্॥ ৫৬॥ তচ্চাপ্যেনং ততো রক্ষঃ প্রতিদ্ধগ্রাহ বীর্য্যবৎ। তদাক্ষিপদ্ভীমদেনো বলেন বলিনাম্বরঃ। ৫৭॥ তয়োভূ'জবিনিম্পেষাছুভয়োর্বলিনোস্তদা। শकः সমভবদেবারো বেণুক্ফোটসমো যুধি॥ ৫৮॥ ष्यदेशनमाकिना वनामा इ मद्या इंदनानतः। ধূনয়ামাস বেগেন বাযুশ্ভগু ইব ক্রমম। ৫৯॥

চীরাণি রক্ষ বন্দলগণি ॥৫০॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ৫৩ ॥ ॥ ৫৪ ॥ নিকারাৎ পরিভবাৎ, কৃষ্ণানরনং, দৃষ্টংযেন সভথা জৌপদ্যাকর্বনে কুপিত ইতার্থঃ ॥ ৫৫ ॥ প্রভিন্নকরটা মুখং—প্রভিন্নে ব্যক্তীভূতে করট্রো গণ্ডরো মুর্থে মদ-নির্গমন্বার্গে যন্ত্র তথ্। ৫৬ ॥ ৫৮ ॥ ৫৮ ॥ ৫১ ॥

^{*} कृषा करीक पृष्ठ कि क—

স ভীমেন পরাস্বটো দ্বর্বলো বলিনা রণে। ব্যস্পন্দত যথা প্রাণং বিচকর্ষ চ পাগুবম ॥ ৬. ॥ তত এনং পরি**শ্রান্তমুপলক্ষ্য রুকোদ**রঃ। যোক্তরামাদ বাহুভ্যাং পশুং রসনয়ং যথা॥ ৬১॥ ভামরামাদ স্থৃচিরং বিক্ষরস্তমচেতনম । ৬২ ॥ তং বিষীদন্তমাজ্ঞায় রাক্ষসং পাণ্ডুনন্দনঃ। প্রগৃহ তর্সা দোর্ড্যাং পশুমারমমারয়ৎ॥ ৬৫॥ व्यक्तिमा ह क्लिएए क्लान्न्या ताक्तिमाधमम्। পীডয়ামাস পাণিভ্যাং তস্য কণ্ঠং রুকোদরঃ ॥ ৬৪॥ वर्ष कर्कत्रम्याकः वार्विकन्यनाम्बर्भः। ভূতলে ভাময়ামাস বাক্যঞ্চেদ্যুবাচ হ। ৬৫॥ হিডিম্ববকযোঃ পাপ ন ত্বমশ্রুপ্রমার্ক্তনম। করিয়াসি গতশ্চাপি যমস্য সদনং প্রতি॥ ৬৬॥ ইত্যেবমুক্ত্বা পুরুষপ্রবীরস্তং রাক্ষমং ক্রোধপরীতচেতাঃ ; বিস্রস্তবন্ত্রাভরণং ক্ষুরস্তমুদ্ধ স্তিচিত্তং ব্যস্থমুৎসমর্জ ॥ ৬৭ ॥ তিমিন্ হতে তোয়দতুলাৰূপে কুফাং পুরস্কৃত্য নরেঞ্রপুক্রা:। ভীমং প্রশ্ন্যাথ গুণৈরনেকৈছ ফাস্ততো দৈতবনায় জগ্মঃ॥ ৬৮॥

বিছয় উবাচ। এবং বিনিহতঃ সংখ্যে কিন্মীরো মনুজাধিপ। ভীমেন বচনান্তস্য ধর্ম্মরাজস্য কৌরব॥ ৬৯॥

ব্যস্পন্দত কিঞ্চিলনং কৃতবান্॥ ॥ ৬০ ॥ যোক্ত্রয়ামাস ব্রুদ্ধ রশনরা (রজ্জুনা) পশু মিব ॥ ৬১ ॥ ৬২ ॥ পশু মারং পশুমিব মার্য়িত্বা ক্যাদিত্বদন্ত্ প্রয়োগঃ সনুল্যাতং ন্যবধীদর ং শ্চেতিবং ॥ ৬৩ ॥ ৬৪ ॥ ৬৫ ॥ ৬৬ ॥ ॥ ৬৭ ॥ ৬৮ ॥ ৬৯ ॥ ততো নিছ্ককং কৃত্বা বনং তদপরাজিতঃ।

দৌপদ্যা সহ ধর্মজ্ঞো বসতি তামুবাস হ ॥ १ • ॥
সমাশ্বাস্য চ তে সর্বে দৌপদী ভরতর্ষভাঃ।
প্রক্রেইনসং প্রতিয়া প্রশশংস্কর্কোদরম্॥ ৭ > ॥
ভীমবাছবলোৎপিটে বিনফে রাক্ষসে ততঃ।
বিবিশুন্তে বনং বীরাং ক্ষেম নহতক্তকম্॥ ৭ ২ ॥
স ময়া গচ্ছতা মার্গে বিনিকীর্ণো ভয়াবহঃ।
বনে মহতি তুইাত্মা দৃষ্টো ভীমবলাজ্জঃ॥ ৭ ৩ ॥
তত্রাশ্রোষমহক্ষৈত্ত কর্মা ভীমস্য ভারত।
ব্রাহ্মণানা কথ্যতাং যে তত্রাসন্ সমাগতাঃ॥ ৭ ৪ ॥
বিশশ্বায়ন উবাচ।

এবং বিনিহত সপথো কিন্সীরং রক্ষসায়রম্। শ্রুত্বা ধ্যানপরো রাজা নিশশ্বাসার্ভবন্তদা ॥ ৭৫ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ কিন্সীরবধপর্বাণ বিত্রবাক্যে একাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১১ ॥

॥ ৭০ ॥ ৭১ ॥ ৭২ ॥॥ ৭৩ ॥ ৭৪ ॥ ৭৫ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে
একাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১১ ॥

* नांट्याय भारेः थ-

সমাপ্তঞ্চ কিন্মীর বধপর্ব।

ৈ প্ৰতিভাৱত বিভাগত বি

বৈশপায়ন উবাচ।
ভোজাঃ প্রব্রজিতান্ শ্রুত্বা রুফরশ্চান্ধকৈঃ সহ।
পাণ্ডবান্ তুংখসন্তপ্তান্ সমাজগ্মুর্সাহাবনে॥ ১॥
পাঞ্চালস্য চ দায়াদা প্রফকেতুশ্চ চেদিপঃ।
কৈকেয়াশ্চ মহাবীর্যা ভাতবো লোকবিশ্রুতাঃ॥ ২॥
বনে দ্রুত্ব্ প্যুং পার্থান্ কোধামর্ষসমন্তিতাঃ।
গর্হান্তো ধার্ত্রপ্রাপ্তান্ কিন কুর্মাইতি চাক্রবন্॥ ৩॥
বাস্থদেবং পুরস্কৃত্য সর্কে তে ক্ষান্ত্রেয়র্ষভাঃ!
পরিবার্য্যোপবিবিশুর্ধর্ম্মান্তং যুধিষ্ঠিরম্।
অভিবাদ্য কুরুশ্রেষ্ঠং বিষরঃ # কেশবোহ্রবীৎ॥ ৪॥
বাস্থদেব উবাচ।

ছুর্য্যোধনস্য কর্ণস্য শকুনেশ্চ ছুরাত্মনঃ।
ছুঃশাসনচতুর্থানাং ভূমিঃ পাসাতি শোণিতম্। ৫॥
এতান্নিহত্য সমরে যে চ তেঝাং পদানুগাঃ।
তাংশ্চ স্কানু বিনিক্ষিত্য সহিতানু সনরাধিপানু॥ ৬॥

ভোজাইতি—এবমধর্মকটনাং ছুর্যোধনাদীনাং ব্যাসাদিভি রাজি কপ্লেদে কৃতেপি মৈত্রেরণাপেপি কিন্দীরবধেন মহাভরে পি প্রভাগিছিত কপ্লেদে কৃতেপি মৈত্রেরণাপেপি কিন্দীরবধেন মহাভরে পি প্রভাগিছিত কাতি ন ধর্মে কৃতিকংপদাত ইত্যুক্তন, সম্প্রতি ধর্মকচীনাং পাণ্ডবানা মুপরি প্রমেশ্রস্য ইতরেবা প্রাভ্তাহং পাণ্ডবানাং কৃষ্ণতন্ত্র বিজ্ঞানক্ষ বর্ণরিভি ভোজাঃ প্রজ্ঞানিকা ইব্যাদিনা ইব্যাদেন ॥১॥২॥৩॥৪॥ ছঃণাসনশ্চতুর্থো যেবাং॥৫॥তসা ছ্র্যোধনস্য পদাস্থ্যাঃ সহারাঃ॥৬॥

^{*} নিষ্ম ইতি ক।

ততঃ সৰ্বেহভিষিঞ্চামো ধর্মরাজং যুধিষ্ঠিরম্। নিক্তোগিচরন্ বধ্য এষ ধর্মঃ সনাতনঃ ॥ ৭ ॥

বৈশশায়ন উবাচ।
পার্থানামভিষক্সেণ তথা কুদ্ধ জনার্দ্দনম্।
আর্জুনঃ সময়ামাস দিধক্ষন্তমিব প্রকাং ॥ ৮ ॥
সংকুদ্ধ কেশব দৃষ্ট্বা পূর্বেদেহেষু ফাল্পনঃ।
কীর্ত্তরামাস কর্মাণি সত্যকীর্ত্তেমহান্ধনঃ॥ ৯ ॥
পুরুষস্যাপ্রমেয়স্য সত্যস্যামিততেজসং।
প্রজাপতিপতের্বিফোর্লোকনাথস্য ধীমতঃ॥ ১০ ॥

নিক্তা। চ্ছলেন, উপচরন্ বর্তমানঃ ॥ ৭ ॥ অভিবঙ্গেণ ছঃখেন পরা ভবেন বা ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ পুরুষস্যা—পুরি শরীরে শরানস্য অপ্রমেয়স্য অহকারা দিবৎ প্রমাতু ম্যোগ্যস্য বিষয়িছাৎ, অতএব সত্যস্য কাল এয়েপি বাধ শূনাস্য, বিষয়স্য হি বাধঃ অপ্রাদেশ দৃষ্টঃ, অমিততেজসঃ ত্রিবিধ পরিচ্ছেদশ্ন্যা- চিন্মাত্রস্য প্রজাপতি-পতেঃ স্ক্রবিরাজারপি আমিন ; বিকো বা পক্ষ্য লোকনাথস্য অন্তর্ধামিনঃ, এবং তৎপদার্থমুক্তবাহৎ পদার্থ মাহ ধীমত ইতি —বুজু,পাধেঃ, অনরোঃ সামানাধি করণ্যাৎ আভেদঃ, অস্যেব স্ত্রভুত্না ক্লোকস্বিবরণ মুক্তরো প্রস্থঃ ॥ ১০ ॥ তত্র তপ্রমাণ ক্ষমবোচিতা ইতি দশ্বিতুৎ ভগবতঃ ক্লোধোপশমনার তদীরং জন্মান্তরীয়ং তপ্রব তাবছুদাহরতি দশেত্যাদি না—যত্র সায়ং কাল শুবৈরব গৃহংযান্য ম যত্র-সায়ংগৃহ ইত্যেকং পদম্ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥

অবক্ষোন্তরাসকঃক্শোধমনিসন্ততঃ।
আসীঃ ক্ষ সরস্বত্যাং সত্তে দাদশবার্ষিকে ॥ ১৪ ॥
প্রভাসমপ্যধাসাদ্য তীর্থং পুণাজনোচিত্যু।
তথা ক্ষ মহাতেজা দিবাৎ বর্ষসহক্রকম্ ॥ ১৫ ॥
আতিষ্ঠন্ত্ব মথৈকেন পাদেন নিয়মন্থিতঃ।
লোকপ্রবৃত্তিহেতোন্ত্বমিতি ব্যাসো মমাত্রবীং ॥ ১৬ ॥
ক্রেজ্ঞঃ সর্ব্বভূতানামাদিরস্তশ্চ কেশব।
নিধানং তপসাৎক্ষ যজ্ঞন্ত্ব স্থ সনাতনঃ ॥ ১৭ ॥
নিহত্য নরকং ভৌমমাহ্লত্য মণিকুগুলে।
প্রথমোৎপাদিতং কৃষ্ণ মেধ্যমশ্বমবাস্তরঃ ॥ ১৮ ॥
কৃত্বা তৎ কর্মা লোকানাস্থকঃ সর্বালোকজিং।
অবধীস্ত্বংরণে সর্বান্ সমেতান্ দৈত্যদানবান্ ॥ ১৯ ॥
ততঃ সর্বেশ্বরত্বক্ষ সংপ্রদায় শচীপতেঃ।
মানুবেশ্ব মহাবাহে। প্রাত্বভূতিহে সি কেশব॥ ২০ ॥

অবক্ষ্যেতিরাসকঃ তাজেভিরীর বন্ধঃ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ তপসঃ প্রয়োজন মাহ লোকেতি—॥ ১৬ ॥ ক্ষেত্রজঃ সর্বভূতানা মাদি রস্তুক্ত, কেলবেতাস্যার্থঃ, ক্ষেত্রং,—" মহাভূতানাহঙ্কারো বৃদ্ধিরবাজ মেব চ। ইন্দ্রিরাণি দলৈকঞ্চ পঞ্চ টেন্দ্রিয় গোচরাঃ। ইন্দ্রা রেমঃ স্থংহঃখং সংঘাত ক্ষেত্রনা প্রতিঃ। এতংক্ষেত্রং—" ইতি ভগবতা ব্যাখ্যাতং কোল পঞ্চকাত্মকং তজ্জ ভংপ্রকালকঃ অন্তর্গাত্মত্যর্থঃ, সর্বভূতানাং সর্বেয়াং বিয়লাদীনাং জরায়জাদীনাঞ্চ জীবানা মাদিঃ পর্ম কারণং, অন্তঃ লয় স্থানং, রজতস্যেব শুক্তিঃ, অবান্তর কারণানা মবিদ্যা কাম কর্মাদীনাংক্ষেত্রমধ্যে অব্যক্তেকাদিপদৈ কপাত্তপাং, প্রতেন প্রপঞ্চস্য মিখ্যাত্মং জীব-পরয়ো রৈক্যাচ্চ অবৈত্যেন কৃষ্ণতত্ত্বমূক্তম্ ॥ ১৭ ॥ ভেমং ভূমিপুত্রং, প্রথমোৎপাদিতং সর্বভূতানাক প্রথমেন অহঙ্কারেণ উৎপাদিতং ভূতাদি রহ্কারঃ" ইতি প্রাস্থাং যজীয়ম্ ॥ ১৮ ॥ তৎকর্ম অধ্যোৎসর্গাখ্যম্ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥

স ত্ব^ নারায়ণো ভূত্বা হরিরাসীঃ পরন্তপ। ব্ৰহ্মা স্কুৰ্য্যশ্চ সোমশ্চ ধৰ্মোঃ ধাতা যমোহনলঃ॥ ২১॥ বায়ু**ক্তেশ্রতার ক্রডঃ কালঃ খং পৃ**থিবী দিশঃ। অজশ্বরাচরগুরুঃ স্রফা ত্বং পুরুষোত্তম। ২২ ॥ পরায়ণ দেবমুর্দ্ধ কেতুভি**র্মধুস্থদ**ন। অয়ঙ্গোভূরিতেজা বৈ কৃষ্ণ চৈত্ররথে বনে॥ ২৩॥ শতণ শতসহস্রাণি স্কুবর্ণস্য জনার্দ্ধন। একৈকিষ্মং স্তদা যজ্ঞে পরিপূর্ণানি ভাগশঃ॥ ২৪॥ অদিতেরপি পুত্রত্বমেত্য যাদবনন্দন। ত্বং বিষ্ণুরিতি বিখ্যাত ইন্দাদবরজো বিভুঃ॥২৫॥ শিশুর্জুত্বা দিবং খঞ্চ"পৃথিবীঞ্চ পরন্তপ। ত্রিভিব্বিক্রমণেঃ কৃষ্ণ ক্রান্তবানসি তেজস্।॥ ২৬॥ সংপ্রাপ্য দিবমাকাশমাদিত্যস্যক্ষনে স্থিতঃ। অত্যরোচশ্চ ভূতাত্মন্ ভাক্ষরং স্বেন তেজসা॥ ২৭॥ প্রাত্মন্থাবসহস্রেষু তেষু তেষু ত্বরা বিভো। অধর্ম্মরুচয়ঃ কৃষ্ণ নিহতাঃ শতশেহিস্কুরাঃ। ২৮।

সঃ তং ক্ষেত্রজ্ঞঃ শুদ্ধ চিন্নাত্রঃ ভূছানীয়ঃ সন্ নারায়ণঃ নরেগ পরমাত্মনা সৃষ্টং নারং ছূল-স্ক্রন-কারণ-রূপং উপাধিত্রয়ং তদেব অয়নং বাদস্থানং যস্য স তথা বৃক্ষাক্র বীজ ছানীয় বিরাট স্থা শুর্মামি রূপো ভূত্বা হরিঃ পরিণত বীজ সহস্ত্রগর্ভ ফল স্থানীয়ঃ সাম্মূর্ত্তিঃ আসীঃ, ঈষংপকফলোপমাশ্চ ব্রক্ষাদয় শুমেব ॥২১॥ ছে পুরুষো-ত্রম! উক্তেভ্যো বীজাদিস্থানীয়েত্য উত্তম ভূস্থানীয় নির্বিশেষ চিমাত্ররূপ আজোবিষ্ণুঃ চরাচর গুরুঃ ক্রেঃ প্রষ্টা দক্ষ প্রজাপত্যাদিঃ॥ ২২॥ পরায়ণং সর্বোৎ কৃষ্টং প্রাপাং, দেবমুর্যা দেব শ্রেষ্ঠঃ, ক্রুভ রযজ ইত্যময়ঃ অপ্প্রয়া ইতি পাঠেতু—অয়জ ইত্যমাহারঃ ॥২০॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ সম্প্রাপ্য সম্যক্ ব্যাপ্য, আদিত্য-স্যক্ষনে স্থ্যদেহে ভাক্ষরমণ্ডলাভি মানিনং জীবম্॥ ২৭॥ ২৮॥

मानिका भोतवाः शामा निस्नुननत्र को इटको। কুতঃ ক্ষেমঃ পুনঃ পন্থাঃ পুরু প্রাগ জ্যোতিবং প্রতি ॥ ২৯॥ জাৰ্থ্যামান্ত্তিঃ * ক্ৰাথঃ শিশুপালো জনৈঃ সহ। জরাসন্ধশ্চ হৈসব্যশ্চ শতধন্ব। চ নিৰ্জ্জিতঃ ॥ ৩০॥ তথা পর্যাণ্যযোষেণ রথেনাদিত্যবর্চ্চসা। অবাপ্দীম হিষীং ভোজ্যাং রণে নিৰ্ছ্কিত্য রুক্মিণম ॥ ৩১॥ ইন্দ্র্যুয়ো হতঃ কোপাল্বনশ্চ ক্ষেক্ষান্। হতঃ দৌভপতিঃ শালস্তুরা সৌভঞ্চ পাতিতম্॥ ৩২॥ (এবমেতে যুধি হতা ভূয়ুশ্চান্যান্ শৃণুম্ব হ) † ইরাবত্যাৎ হতো ভোজঃ কার্ত্তবীর্ঘ্যসমো যুধি ॥ ৩৩॥ গোপতিস্তালকেভুক্ত স্বয়া বিনিহতা বুঁভৌ। তাঞ্চ ভোগবতীং পুণ্য।মূষিকাং তাৎ জনাৰ্দ্দন ॥ ৩৪॥ দারকামাত্মদাৎ কুত্বা সমুদ্রং গময়িষ্যাদ। न क्लार्या न ह मार्म्याः नान् जः मधुस्रमन। স্বয়ি তিষ্ঠতি দাসা∉ ন নৃশ^স্য^ কুতোহনৃজু ়া ৩৫ ॥ ষাসীনং চৈত্যমধ্যে ত্বাং দীপ্যমান^ স্বতেজসা। আগম্য ঋষয়ঃ সর্কেহ্যাচন্তাভয়মচ্যুত॥ ৩৬॥

দাদিতাঃ চ্ছিয়াঃ, মেরবাঃ আন্তেজিময়াঃ 'মুরবেষ্ট্রনে' অস্মাদোনিণাদিকে উক-প্রতায়ে তদ্ধিতঃ, মৌর্স্ক-শকোপাতএব মধ্যম স্বর লোপেন নিপায়ঃ ॥ ২৯ ॥ জাকথাাং নগর্যাম্ ॥ ৩০ ॥ অবাপ্দীঃ অবাপ্তবানসি, ভোজাাং ভোজ বংশজাম্ ॥ ৩১ ॥ সৌভং খেচরং পুরেম্॥ ৩২ ॥ ৩৪ নৃশংসাং নিদ্ধিয়ায়, দীর্ষপাঠেছু—আন্তপুর্বোহয়ং শব্দোজেয়ঃ ॥ ৩৫ ॥ আসীনং চৈতামধ্যেতাং— চৈতাং আয়তনং আধ্যাদ্ধিকং হৃদয় পুঞ্রীকং বাহাং দেবালয়াদি, চিত্ত মধ্যন্থ মিক্তাপি পাঠঃ,

 ^{*} মাক্কতিরিতি পাঠঃ ক পুস্তকে মহ্বতিরিতি খ—
 † নাস্ত্যেতৌ পাঠো খ-পুস্তকে।

যুগান্তে সর্বভূতানি সংক্ষিপ্য মধুস্থদন। আত্মনৈবাত্মসাৎ কৃত্বা জগদাসীঃ পরস্তুপ॥ ৩৭॥ যুগাদৌ তব বাফে য় নাভিপদাদজায়ত। ব্রহ্মা চরাচরগুরুর্যস্যেদ সকলং জগৎ॥ ৬৮॥ ত হন্তমুদ্যতো ঘোরো দানবো মধুকৈটভৌ। তয়েব্যতিক্রমণ দৃষ্ট্ব। কুদ্ধস্য ভবতে। হরে: ॥ ৩১ । ললাটাজ্জাতবান শস্তঃ শূলপাণিস্ত্রিলোচনঃ। ইত্থ~ তাবপি দেবেশৌ ত্বচ্ছরীরসমুদ্ভবৌ ॥ ৪০ ॥ ত্বন্নিয়োগকরাবেতাবিতি মে নারদোহত্রবীৎ। তথা নারায়ণ পুরা ক্রছভির্ড রিদ্ফিণৈ:। ৪১। ইফবাশ্স্তুশ মহাসত্রং ক্লফ চৈত্ররথে বনে # নৈবং পরে নাপরে বা করিষ্যন্তি ক্লতানি বা । ৪২ ॥ যানি কর্মাণি দেব স্বং বাল এব মহাবল:। ক্তবান পুগুরীকাক্ষ বলদেবসহায়বান। किलाम्बद्धत हालि बाक्यरेनम्बरः मर ॥ ८० ॥ বৈশস্পায়ন উবাচ ৷ এবমুক্তা মহাত্মানমাত্মা ক্লফন্ত পাগুবঃ। তৃষ্ণীমাসীত্তত: পার্থামভূরবাচ জনার্দ্দনঃ ॥ ৪৪॥ 🕇 মনৈব স্বং ভবৈবাহ^ যে মদীয়াস্তবৈব তে। যন্তাং দ্বেটি স মাং দ্বেটি যন্ত্যামনু স মামনু ॥ ৪৫ ॥

নিতামধান্থ মিতি পাঠেপি, মধ্যং হৃদরাজ্ঞমেব ॥ ৩৬ ॥ আত্মনৈব নিমিভাত্তরং বিনা আত্মনাৎ আত্মমাত্রং ॥ ৩৭ ॥ যুগাদৌ তব বাফে রৈতাদি
দার্জনোকত্তরং কচির দৃষ্টং, যদ্য ক্তরিদং সকলং অদে দিবোপি
ছিরিয়েগকর ইতি বিপরিণামেন যোজ্যয্ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥
কর্মাণি পূত্না বধাদীনি ॥ ৪৩ ॥ এবং তৎপদার্থ অরূপং প্রপঞ্জা তদ্য
ছংপদার্থাই ভেদ মাহ এবমিতি—॥ ৪৪ ॥ মমেব ছংব্রুল এব অরূপং

^{*} নৈবং পূর্বে ইতি ক— † মর্মবেত্যন্দাৎ প্রাকৃ " বাস্থদেব উবাচ" ইত্যধিকঃ পঠ্যতে কপুস্তকে।

নরস্ত মিসি তুর্দ্ধর্য হরিনারায়ণো অহম।
কালে লোকমিমং প্রাপ্তো নরনারায়ণার্থী। ৪৬॥
অনন্যঃ পার্থ মন্তস্ত্রং ত্বন্তশাহং তথৈব চ।
নাবহয়ারস্তরং শক্যম বেদিতুং ভরতর্যভ। ৪৭॥
বৈশম্পায়ন উবাচ।

এবমুক্তে তু বচনে কেশবেন মহাত্মনা।
তিম্মিন্ বীরসমাবায়ে সংরক্ষেথ রাজস্থ ॥ ৪৮ ॥
ধুউদুমেমুথৈকী বৈ ভ্রাতৃভিঃ পরিবারিতা।
পাঞ্চালী পুগুরীকাক্ষমাসীনং ভ্রাতৃভিঃ সহ।
অভিগম্যাত্রবীৎ কুকা শরনাং শরণৈষিণী। ৪৯॥
ক্রেপিহ্যবাহ।

পূর্ব্বে প্রজাভিসর্গেত্বামান্তরেকং প্রজাপতিম্। প্রফারেং সর্বলোকানামসিতো দেবলোহত্রবীৎ॥ ৫০়॥

জীবঃ, ত বৈৱাহহং জীবলৈত শুদ্ধংরূপং ব্রশ্ব, ন ততোহনাৎ, যে ম দীয়া স্তবৈৰ তে, ব্ৰহ্মগতা ঔপাধিকাঃ সর্বেশ্বরহাদয়,স্তেপি জীবসৈৰ, जन्मार या जीवश्राकि मजन (पिक, या जीवश गांक मजन गांक. অন্রোহী সন্ সর্বভূতেরু ভগবন্তাবং পশোদিতার্থ: ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ । নম্ন?— মিত্ররো মমান্ত্রা বং তবাত্মাহ হং. ইতাভেদোপচারো দুষ্টঃ — নবভেদঃ — ইত্যাশক্ষাহ অননা ইতি—মিত্তয়ে হি অনত্তং প্রত্যক্ষদৃষ্টং তদিহ নিরসাতে অপূর্বার্থ জ্ঞাপকত্বাদাক্যসা, অনন্যত্বমপ্যৌপচারিকমন্তি?— ইত্যাশঙ্ক হৈ–নাৰ্যোরিতি–অন্তরংভেদঃ বেদিছুং বিচারয়িছুং, জীবেশয়ো র্ভেনো ত্রনিরপ্য ইতার্থঃ, তথাহি,—কিংদেহ ভেদাদাঘভেদঃ—উত জাত্ম-ভেলং ?—নাদ্যঃ, কায়বৃহক্ত বোগিনাব্যাঞ্চে, নান্তাঃ, উপাধিপরামর্শং বিনা ভেদস্যাবিভাব্যমানতাৎ, মুক্তাত্মানো জীবেশো বা ন স্বভাব ভিরে উক্ত হেতোঃ ঘটমচাকাশনৎ ইতি দিঙ্গাত্রং বোধ্যম ॥ ৪৭ ॥সমানায়ে সমূহে, কুপিতেয় ॥৪৮॥৪৯॥ এবস্থিস্যা আক্স ভত্সশ্রি গমার ধ্যান-স্তবন-দেলনাদিনা কৃষ্ণ এব শরনী করনীয় ইত্যাহ ক্রেপদীবাকোন পুর্বের ইত্যাদিনা—পুর্বের সৃষ্টেঃপ্রাকালে তাং একং আতঃ "সদেব সোম্যেদ মতা আসীৎ"—ইত্যাদ্যাঃ জ্ঞতয়ঃ—" প্রজাভিসর্গেচ প্রজা-

বিষ্ণুস্থ মিদ তুর্দ্ধর্ম বং যজ্ঞো মধুস্থদন!

যটা অমিদি যটবো জামদশ্যো যথাব্রবীৎ॥৫১॥

ঋষয়স্থাং ক্ষমামাছঃ সত্যঞ্চ পুরুষোন্তম।
সত্যাদ্যজ্ঞোহিদি সম্ভূতঃ কশ্যপস্থাং ষথাব্রবীৎ॥৫২॥
সাধ্যানামপি দেবানাং শিবানামীশ্বরেশ্বর।
তূতভাবন ভূতেশ যথা আং নারদোহব্রবীৎ॥৫৯॥
ব্রহ্মশঙ্করশক্রাদ্যৈ বালকীড়নকৈরিব॥৫৪॥
দ্যৌশ্চ তে শির্দা ব্যাপ্তা পদ্যাঞ্চ পূথিবী প্রভো।
জঠরং ত ইমে লোকাঃ পুরুষোহিদি সনাতনঃ॥৫৫॥
বিদ্যাতপোভিস্তপ্তানাং তপসা ভাবিভাত্মনাম্।
আল্মদর্শনত্প্তানাং শ্বরীণামিদি সন্তমঃ॥৫৬॥

রাজর্ষীণাক পুণাক্কতামাহবেদ্বনিবর্ত্তিনাম্।
সর্ববর্ণ্যোপপল্লানাং অং গতিঃ পুরুষর্যত।
অং প্রভুত্ত্বং বিভুশ্চ অক ভূতাল্লা অং বিচেক্টলে॥ ৫৭॥
লোক-পালাশ্চ-লোকাশ্চ নক্ষত্রাণি দিশো দশ।
নভশ্চন্দ্রক স্থ্যাশ্চ অয়ি সর্ববং প্রতিষ্ঠিত্রম্ন ৫৮॥
মত্যতা চৈব ভূতানামমরত্বং দিবৌকসাম্।
অয়ি সর্বাক মহাবাহে। লোককার্যাং প্রতিষ্ঠিত্রম্ন ৫৯॥
শা তেইহং জুংখমাখ্যাস্যে প্রণয়াল্লযুম্থদন।
ঈশস্ত্বং সর্বভূতানাক যে দিব্যা যে চ মানুষাং॥ ৬০॥
কথক মু ভার্যা পার্থানাং তব ক্লক্ত-গ্রী বিভো।
ধ্রক্ত্রামন্ত্র ভারনী সভাক ক্ষেত্র মাদৃশীক॥ ৬১॥
স্ত্রীধর্মিণী বেপমানা শোনিতেন সমুক্তিতা।
একবস্তা বিক্লান্ম্ম ছুংখিতা কুরুসক্সন্দি॥ ৬২॥

সর্বেধ ধর্মাঃ পাপপুরাদেরঃ তৈ ৰূপপুরানামপি বুমেব গতিঃ দীনদালুবাৎ পাপিঠানামপি উদ্ধৃতা ই।ত ভাবঃ, প্রভু নিরন্তা, বিভূ বাপেকঃ, ভূতারা জীবঃ, বুদ্ধাদ্যাকারেণ পরিণতানি ভূতানোবাঅবেন মন্মানঃ "অন্তিখল্ল পরোভূতারা যোষ্ট্রাং সিতানিতঃ
কর্মকলৈ রভিভূরমালঃ সদস্বোনি মাপদ্যতে" ইতি মৈত্রার্ণীয়ে ভূতারা
পদ্য জীবে কঢ়ি দর্শনাৎ, বিচেষ্টেসে কর্মাণি কুক্রে ॥ ৫৭ ॥ বুরি সর্বাং
প্রতিষ্ঠিতং লোকপালা, দপদ্য তুমেব প্রাপক ইত্যর্থঃ ॥ ৫৮ ॥ অসৈ্যব
ব্যাখ্যা মত্যতাচেতি—মত্যতা সংসারঃ, ভূতানাং সাধারণ জীবানাং,
অহতত্বং মুক্তিঃ, দিবোকসাং দিবাদুকিমতাং নাহিকানান্ ॥ ৫৯ ॥ এবং
স্বর্গাপার্কারিশি স্থান্ত সক্ষর্পর শ্রনীকরণীর ইতি কুফ্সন্ত প্রসাহ্তিং,
সন্ত্রতি দৃষ্টকলার্গমপি স্থান্ত স্বত্যাই "সা তেইহং হুঃখ মান্ধান্ত্রা—" ইতাদিনা, অত্র আত্মনি কুফ্স কর্কণোৎপাদনার্থং ছুঃখ
নিবেদনং তৎপ্রসন্তেন চ মহামহিন্না মির্বা সংসারিণাং ছুর্গতিঃ প্রপঞ্জিতা
বৈরাব্যাক্রিশ্রা ৬০ ॥ ৬১ ॥ স্ত্রীধ্মিণী রজস্বরা ॥ ৬২ ॥
মিতি—॥ ৬০ ॥ ৬১ ॥ স্ত্রীধ্মিণী রজস্বরা ॥ ৬২ ॥
মির্বা—॥ ৬০ ॥ ৬১ ॥ স্ত্রীধ্মিণী রজস্বরা ॥ ৬২ ॥

রাজ্ঞাং মধ্যে সভায়াস্ত রজদাভিপরিপ্লুতা ! দৃক্যা চ মাং ধার্ত্রাষ্ট্রাঃ প্রাহমন্ পাপচেতসঃ॥ ১০॥ मानी ভ! दिन भार (ভाकु **भी शू**टल भधू स्वतन। জীবংস্থ পাওপুলেষু পাঞ্চালেষু চ রফিষু॥ ৬৪॥ নমূহণ ক্লফ ভীয়াস্য প্রতরাষ্ট্রম্ম চোভয়োঃ। স্যা ভবামি ধর্মেণ সাহং দাসী কুতা বলাং॥ ৬৫॥ গर्रा प्राख्वाराख्य यूपि त्यक्षान् महावलान्। য়ং ক্লিশ্যমানাং প্রেক্ষন্তে ধর্মপত্নীৎ যশব্দিনীমু॥ ৬৬॥ धिधन ॰ जीयरगनमा धिक् शार्थमा ह गाखिवम् । যৌ মাণ বিপ্রকৃতাণ ক্ষুদৈর্ঘর্ষয়েতাণ জনার্দ্দন॥ ৬৭॥ শাশ্বতে হয়ং ধর্মপথঃ সন্ধির চরিতঃ সদা। যদ্ভার্য্যাৎ পরিরক্ষন্তি ভর্ত্তারোহ পেবলা অপি । ৬৮॥ ভার্য্যায়াং রক্ষ্যমাণায়াং প্রক্ষা ভবতি রক্ষিতা। প্রজারাং রক্ষ,মাণায়ামাত্রা ভবতি রক্ষিতঃ॥ ৬৯॥ আত্মা হি জায়তে তদ্যাং তত্মাজ্জায়া ভবতাত। ভর্ত্তা চ ভার্যায়া রক্ষ্যঃ কথৎ জায়ালমোদরে ॥ ° • ॥ নিয়িনে শরণং প্রাপ্তপ ন ত্যজন্তি কদাচন। তে মাং শর্ণমাপনাং নাম্বপদান্ত পাপ্তবাঃ ॥ ৭১ ॥ পঞ্চতঃ পতিভিৰ্জাতাঃ কুমারা মে মহৌজসঃ। এতেয়ামপাবেক্ষার্থং ত্রাতব্যামি জনাদিন ॥ ৭২ ॥ প্রতিবিক্ষাে যুধিষ্ঠিরাৎ স্কুতসামে। রুকোদরাৎ। অৰ্জুনাৎ শ্ৰুতকীৰ্ত্তিম্ভ শতানীকস্ত নাকুলি:॥৭৩॥

॥ ৬৩ ॥ ঈরুং ঐচ্ছন্ ॥ ৬৪ ॥ স্থা বধুং ॥ ৬৫ ॥ ধর্ম পত্নীং যজ্ঞসংযোগিনীম্ ॥ ৬৬ ৫ বিপ্রকৃত ং হঃখং প্রাপ্তিতাং, মর্বরেতাং ক্ষমেতাং ॥ ৬৭ ॥ ৬৮ ॥ ॥৬৯॥ জারাৎ উৎপদ্যে ॥ ৭০॥ নাম্বপদান্ত নাত্নসূহীতবত্তঃ ॥ ৭১ ॥ ৭২॥ ৭০॥ কনিষ্ঠাৎ শ্রুতকর্মাচ সর্বের সতঃপরাক্রমাঃ। প্রত্যান্ত্র ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষান্ত মহারথ। ॥ ৭৪॥ নলিনে ধনুষি শ্রেষ্ঠা অজেয়া যুগি শাত্রবৈঃ। কিমর্থং ধার্তুর্বুট্রাণাং সহতে ছুর্ববলীয়সাম্॥ ৭৫॥ অধর্মোণ হৃতং রাজ্যং সর্ব্বেদাসাঃ কৃতাস্তথা। সভায়াং পরিকৃ**উ। হমেকবস্তার জস্বলা।** ৭৬॥ নাধিজ্যমপি যজ্ঞক্যং কর্ত্তুমন্যেন গাণ্ডিবন্। অন্ত্ৰাৰ্জ্নভীমাভ্যাং স্বরা বা মধুস্থদন ॥ ৭৭ ॥ বিশ্বলং ভীমসেনস্য ধিক্ পার্থস্য চ পৌরুষণ্। যত্ত তুর্ব্যোধনঃ কৃষ্ণ মুহূর্ত্তমপি জীবতি॥ ৭৮॥ য এ জীন।ক্ষিপদ্ৰ খ্ৰাৎ সহ মাত্ৰ!বিহিংসক।ন্। অধীয়ানান্ পুরা ঝালান্ ব্রতস্থান্ মধুস্থদন ॥ ৭৯ ॥ ভোজনে ভীমসেনস্য পাপঃ প্রাক্ষেপয়দ্বিষ্। ক†লকূটং নবণ তীক্ষং মস্ত্তণ লোমহর্ণম্ । ৮০॥ । তজ্জীর্ণমবিকারেণ সহান্নেন জনার্দ্দন। সশেষুত্রাগ্রহাবাহো ভীমস্য পুরুষোত্তম ॥ ৮১॥ প্রমাণ্টোটাং বিশ্বস্ত^ তথা স্কুপ্ত॰ রুকে। দর্য। বদ্ধৈনং কৃষ্ণ গঙ্গায়া ও প্রক্ষিপ্য পুরমাত্র জং । ৮২॥ यमा विवृक्षः कोत्ख्यस्त्रमा गः ছिम् वन्ननम्। উদ্তিষ্ঠন্মহাবাহ্নভীমদেনো মহ্বিলঃ ॥ ৮৩॥

॥৭৪॥ ধার্তরাফ্রানাং অপরাধং, ছুর্বলীয়সাং ছুর্বলতরানান্ ॥৭৫: ৭৬॥ অ.ধিজ্যাং আবেরাপিত এনং॥ ৭৭ ॥ ৭৮ ॥ আব্দিপং দুরে কতবান, অবিছিংসকান্
অছ্ঃখদান্ ॥ ৬৯ ॥ সন্তৃতং সহিতং, সন্তুত মিতি পাঠে—বক্লন ॥ ৮০॥
সশোরত্বাং আয়ুষ ইতি শেষঃ ॥ ৮১ ॥ প্রমান কোটারং প্রমানাথেয়। গালাতীরস্থো বটবিশেষ স্তংপ্রদেশে ॥ ৮২ ॥ ৮৩ ॥

^{*} পুনরাব্রজৎ ইতি ঘঃ।

আশীবিধৈঃ ক্লফন্ট্রেসীমদেনমদংশয়ং। সর্কেম্বেক্সেদেশেযু ন মমার চ শক্রহা॥৮৪॥ প্রতিবুদ্ধস্ত কৌন্তেয়ঃ সর্বান্ সর্পানপোথয়ং। সার্থিঞাস্য দয়িতমপহস্তেন জল্পিবান্। ৮৫॥ পুনঃ স্বপ্তানুপাধাকীদালকান্ বারণাবতে। শয়ানানার্য্য়া সার্দ্ধং কো সু তৎ কর্ত্তমহ তি॥ ৮৬॥ যত্রার্ঘ্যা রুদতী ভীতা পাণ্ডবানিদমত্রবীং। মহদ্বাসন্ম।পরা শিথিনা পরিবারিতা ॥ ৮৭। হা হত স্মিকুতো স্বদ্য ভবেচ্ছান্তিরিহানলাও। অনাথা বিনশিষ্যামি বালকৈঃ পুক্রকৈঃ সহ॥ ৮৮॥ তত্র ভীমো মহাবাহ্বর্কায়ুবেগপরাক্রমঃ। আর্থ্যামাধ্যমরামাস ভাতৃংক্ষাপে রুকোদরঃ॥ ৮৯॥ বৈনতেরো যথা পক্ষী গরুৱান পততাম্বরঃ। তথৈবাভিপতিষ্যামি ভয়॰ বো নেহ বিদ্যুতে॥৯০॥ আর্যাসক্ষেন বামেন রাজানৎ দক্ষিণেন চ। অংসরোশ্চ যমৌ রূত্বা পৃষ্ঠে বীভৎস্থমের চা। ৯১ ৷ সহসেং পত্য বেগেন সর্বানাদায় বীর্যাবান্। ভাতৃনাৰ্যাঞ্বলবা<mark>ন্ মোক্ষমাস</mark> পাৰকাৎ তে রাত্রৌ প্রস্থিতাঃ সর্বেষ্ঠের সহ মাত্রা যশস্থিনঃ। অভ্যগচ্নাব্যাং হিডিম্বনমন্তিকাৎ॥ ৯৩॥ আন্তাঃ প্রস্তুপ্তিমে মাতা সহ সুতুঃখিতাঃ। স্তাং শৈচন নভাগছ দিভিয়া নাম রাক্ষদী ॥ ৯৪॥

॥৮৪॥ অশোষরৎ প্রহতবান, অপহত্তেন হস্তপৃঠেন॥৮৫॥ উপাধাকীৎ দাহার্থ্যসহতবান, আধ্যা শ্বশ্রঃ॥৮৬॥৮৭॥৮৮॥৮৯॥ বৈন্তেরঃ বিন্-ভাপুত্রঃ॥৯০॥৯১॥৯২॥৯২॥৯৪॥ সা দৃষ্ট্য পাণ্ডবাংস্তত্ত স্পুন্ মাত্রা সহ ক্ষিতৌ। হৃচ্ছেরেনাভিভূতাত্মা ভীমদেনমকাময়ৎ॥ ৯৫॥ ভীমদ্য পাদৌ कृषा जू य উৎসঙ্গে তভোহবলা। পর্যামর্দত সংক্ষা কল্যাণী মৃত্পাণিনা ॥ ৯৬ ॥ তামবুধ্যদমেয়াত্মা বলবান্ সভ্যবিক্রমঃ। প্র্যাপুক্তত তাং ভীমঃ কিমিহেচ্ছ্স্যানিন্দতে ॥ ৯৭॥ এবযুক্তা তু ভীমেন রাক্ষসী কামৰূপিণী। ভীমসেনং মহাত্মানমাহ চৈবমনিন্দিতা।। ৯৮। পলায়ধ্মিতঃ ক্ষিপ্রং মম ভ্রাতৈষ বীর্য্যবান। আগমিষ্যতি বো হন্তং তক্মাদাছত মা চির্মু ॥ ৯.১॥ অথ ভীমোহভূাবা চৈনাং সাভিমানমিদং বচঃ। নোদিজেয়মহং তত্মালিহ্নিব্যেহ্সাগতম্ ॥ ১০০॥ তয়েঃ শ্ৰুষা তু সংজ্পামাগচ্চদাক্ষ্যাথমঃ! ভীমৰপো মহানাদান্ বিস্জন্ ভীমদর্শনঃ। ১০১॥ द्राक्रम छेत्राह । কেন সাৰ্দ্ধং কথয়সি আন্তৈয়নং মমান্তিকমু।

হিড়িষে ভক্ষরিব্যামোন চিরং কর্তুমইসি॥ ১০২॥
সা রূপাসংগৃহীতেন হৃদয়েন মনস্থিনী।
নৈনমৈচ্ছন্তদাখ্যাতুমমুক্রোশাদনিন্দিতা॥ ১০৩॥
স নাদান্ বিনদন্ ঘোরান্ রাক্ষমং পুরুষাদকং।
অভ্যন্তবত বেগেন ভীমসেনং তদা কিল॥ ১০৪॥
তমভিদ্রত্য সংক্রুদ্ধো বেগেন মহতা বলী।
অগুহৃত্ব পাণিনা পাণি ভীমসেনস্য রাক্ষমং॥ ১০৫॥

॥ ४৫॥ २७॥ २१॥ २४॥ २०॥ २००॥ २००॥ २०२॥ कृष्री गः गृही एउन स्वहत्यान ॥ २०७॥ २०४॥ २०৫॥

ইন্দ্রাশনিসমস্পর্শৎ বক্তসংহননং দৃঢ়য়। সংক্রত্য ভীমদেনায় ব্যাক্ষিপৎ সহস্য কর্ম্। ১০৬ । গৃহীতং পাণিনা পাণিং ভীমসেনস্য রক্ষসা ৷ নাম্যাত মহাব ছত্তাকুধাদ্কোদরঃ ॥ ১০৭ ॥ जनामी कुन्त्र यूक्तः जीनतमन इिष्म्रायाः। नर्वाञ्चविष्ट्रसार्यात्र रूबवानवरस्राहित ॥ ১०৮॥ বিক্রীড্য স্থচিরং ভীমে রাক্ষ্যেন সহান্য। নিজ্বান মহাবীর্যান্তং তদা নির্বলণ বলী ॥ ১০৯ ॥ হত্বা হিড়িয়ং ভীমোহ্থ প্রস্থিতো ভ্রাতৃভিঃ সহ। হিড়িয়ামগ্রতঃ কুত্বা যন্যাং জাতো ঘটে। ৭কচঃ ॥ ১১০॥ ততঃ স্পাদ্রন্ সর্কো সহ মাত্রা পরন্তপাঃ! একচক্রামভিমুখাঃ সংরুতা ব্রাহ্মণব্রজৈঃ ॥ ১১১॥ প্রস্থানে ব্যাস এষাঞ্চ মন্ত্রী প্রিয়হিতে রতঃ। ততে ইগচ্ছনেকচক্রাং পা গুবাং সা সিতব্রতাং ॥ ১১২ ॥ তত্রপ্যাদাদর মাস্ত্রকং নাম মহাবলম। পুরুষাদ^ প্রতিভয়ং হিড়িষেনৈব সাম্যতম্ ॥ ১০৩॥ তঞ্চাপি বিনিহত্যোগ্রং ভীমঃ প্রহরত। মুরঃ। সহিতো ভাতৃভি: সবৈদ্রু পদস্য পুরং যযৌ॥ ১১৪ ॥ লকাহমপি ভবৈৰ বসতা সব্যসাচিনা। যথা স্বয়া জিতা কৃষ্ণ রুক্মিণী ভীম্মকাত্মজা॥ ১১৬॥ এবং স্থুবুদ্ধে পার্থেন জিতাহং মধুস্থদন। স্বরস্বরে মহৎ কর্মা রুত্বা ন স্থকরণ পরেঃ ॥ ১১৬॥

मश्ह्ला मूकीकृता ॥५०७ ॥ ५०० ॥ ५०० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥ ५५० ॥

এবং ক্লেপৈঃ সুবছভিঃ ক্লিশ্যমানা সুতুঃখিতা। নিবস। মার্থ্যয়া হীনা কুষ্ণ ধৌম্যপুরঃ দরা॥ ১১৭॥ ত ইমে সিশ্হবিক্রাস্তা বীর্য্যেণাভ্যধিক।ঃ পরেঃ। নিহীনৈঃ পরিক্লিশান্তীং সমুপেক্ষন্তি মান কথ্য। ১১৮॥ এতাদৃশানি ছুংখানি সহন্তী ছুর্বলীয়সাম। দীর্ঘকালং প্রদীপ্তাম্মি পাপানাং পাপকর্মাণাম্॥ ১১৯॥ কুলে মৃহতি জাতাম্মি দিব্যেন বিধিনা কিল। পাপ্তবানাং প্রিয়া ভার্ষ্য স্বা পাঞ্চোম হাত্মনঃ॥ ১২০॥ কচগ্রহমনু প্রাপ্তা সাম্মি ক্লফ বরা সতী। পঞ্চানাং পাণ্ডপুক্রাণাং* প্রেক্ষতাং মধুস্থদন ॥ ১২১ ॥ हेर्जुाकु । श्राइम १ कृष्ण पूर्य श्रष्ट्रामा शानिना । পত্মকোষ প্ৰকাশেন মৃত্যুনা মৃত্যুভাষিণী॥ ১২২॥ স্তনাবপতিতো পীনৌ স্কুজাতো শুভলক্ষণো। অভ্যবর্ষত পাঞ্চার্লী তুঃখক্তৈরশ্রুবিন্তুভিঃ॥ ১২৩॥ চকুষী পরিমার্জ্জন্তী নিশ্বদন্তী পুনঃ পুনঃ। বাস্পপূর্বেন কণ্ঠেন ক্রুদ্ধা বচনমত্রবীৎ॥ ১২৪॥ নৈব মে পতয়ঃ সন্তি ন পুক্রা ন চ বান্ধবাঃ। ন ভ্রতিরো ন চ পিতা নৈব স্বং মধুস্থদন ॥ ১২৬॥ যে মাং বিপ্রকৃতা শুটের রূপেক ধং বিশোকবং। ন চ মে শাম্যতে দুঃখন কর্ণো যৎ প্রাহ্মন্তদা॥ ১২৬॥

॥ ১১৭ ॥ ১১৮ ॥ ১১৯ ॥ দিব্যেন অমাস্থ্যেণ অগ্নিকুণ্ডেণ্ড্ৰেড্ৰণ ॥ ১২০ ॥ ১২৪ ॥ ১২৫-॥ বিশেধ-কংৎ বিশেধকাইব ॥ ১২৬ ॥

^{*} ইন্দ্ৰ কম্পানামিত ক-

চতুর্ভিঃ কারণৈঃ কুষ্ণ ত্বয়া রক্ষ্যাত্মি নিত্যশঃ। সম্বন্ধান্দোরিবাৎ স্থা। প্রভুত্ত্বন চ কেশব॥ ১২৭॥ বৈশস্থায়ন উপাচ। অথ তামব্রবীৎ কুফস্তব্মিন বীরসমাগমে। বাস্থদেব উবাচ। রোদিষ্যন্তি স্ত্রিয়ো ছেব ে যেবাং ক্লুদ্ধাসি *ভামিনি। বীভৎস্কশরসংছন্ন শে। ণিতৌঘপরিপ্লতান্ । ১২৮॥ নিহতান বলভান বীক্ষা শ্যানান বস্থাতলে ! যৎ সমর্থং পাপ্তবানাং তৎ করিষ্যামি মা †শুচঃ ॥ ১২৯ ॥ সতাং তে প্রতিজানামি রাজ্ঞাং রাজ্ঞী ভবিষ্যসি!! পতেক্টোৰ্হিমবান্ শীৰ্ষ্যেৎ পৃথিবী শকলীভবেৎ॥ ১৩०॥ শুষ্যেত্তোয়নিধিঃ ক্লুষ্ণে ন মে মোঘ বচো ভবেং। তজ্বা দৌপদী বাকাং প্রতিবাকামথাচ্যতাৎ। ১৩১॥ সাচীকুতমবৈক্ষৎ সা পাঞ্চালী মধ্যমৎ পতিয়। আবভাষে মহারাজ দ্রৌপদীমর্জ্জনন্তদা ॥ ১৩২ ॥ মা রোদীঃ শুভতান্রাকি যথাহ মধুস্থদনঃ। তথা তম্ভবিতা দেবি নান্যথা বরবর্ণিনি ॥ ১৩৩॥

সংবন্ধাৎ পিতৃষত্রীয় ভার্যাত্বাৎ, গৌরবা, অগ্নি কুণ্ডোন্ডবত্বাৎ, সখাৎ ভক্তিমহাৎ, প্রভুষেন সামর্থ্যবেজন জ্বনীয়েন ॥ ১২৭ ॥ ১২৮ ॥ ॥ ১২৯ ॥ ১৩০ ॥ জেপিদীবাক্যৎ প্রতিবাক্যঞ্চ অর্জুন আবভাষে ইতি ব্যবহিতেন সম্বন্ধঃ ॥ ১৩১॥ অত্ত হেডুঃ—যতঃ পাঞ্চালী সাচীক্বতং বক্রীকৃতং বক্রীভূতং ব্যান্তাভ্যা মধ্যমং পাতিং ত মবৈক্ষৎ ইতি যত ইত্যধ্যাহ্বত্য ব্যোজ্যম্ ॥ ১৩২ ॥ ১৩৩ ॥

 ^{*} ভাবিনি ইতি ঘঃ।
 † শুচ নির্বিদর্গ পাঠঃ ক-পুশুকারঃ।
 া ভিন্যাতি ইতি ক।

श्रकेशन छेटा ।

আহ্ দোণং হনিষামি শিখণ্ডী তুপিতামহন্।
ছুর্মোধনং ভীমসেনঃ কর্ণ হন্তা ধনঞ্জয়ঃ ॥ ১৩৪ ॥
রামক্কফৌ ব্যপাঞ্জিতা অজেয়াঃ স্ম রণে স্থসঃ ।
জপি রুত্রণা মুদ্ধে কিং পুনপ্তরাষ্ট্রকৈঃ ॥ ১৩৫ ॥
বৈশন্ধারন উবাচ।

ই হ্যাক্তেখ্ভিমুখা বীরা বাস্তদেবমূপাস্থিতাঃ। তেষাণ মধ্যে মহাবাস্তঃ কেশবো বাক্যমন্ত্রবীৎ॥ ১৩৬॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি অর্জুনাভিগমন পর্বাণি

> ক্রোপদ্যাশ্বাসনে দ্বাদশোহ্ধ্যায়ঃ॥ ১২॥ শক্ষদেব উশ্চ

নৈতৎ কৃচ্ছ মনুপ্রাপ্তো ভবান সাদিসবাধিপ।

যদ্যহং দারকারাং স্যাপ রাজন্সনিহিতঃ পুরা॥ ১॥

ভাগচ্ছেরমহং দূতে মনাহুতোহপি কৌরবৈঃ।
ভাষিকেয়েন তুর্দ্বি রাজ্ঞা তুর্যোধনেন চ।

১৩৪॥ স্বদঃ ! ছে ভাগিনি !॥১৩৫॥১৩৬॥ ইত্যারণাকে পর্ব্ধণি অর্জুনাতিগমন পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে জৌপদী সাস্ত্রে দ্বাদর্শেহধ্যায়ঃ॥১২॥

নৈতদিতি—নিরূপিতা সমাধনা ব্রহ্মবিদ্যা, মণ্ড্রতি ভগবংশার্ণমেব তংসার্থিতেতুঃ, সারিধাঞ্চ—সর্বাপত্তরণক্রণিত ভগাওরেণ প্রতি পাদাতে নৈতদিত্যাদিনাইধ্যায়েন, যদহং দ্বারকায়াং নবদারবতায়াং দেহ-নগ্রাথে তব মাং চিত্তরতঃ সনিহিতঃ স্যাথ—তহি এতংকুদ্ধুং বনবাস সঙ্কটং ভগারাহ্ প্রাপ্তঃ স্থাং— যথা (দ্রোপদী কুদ্ধু কালে মাধ-ত্তবতী বস্ত্রাশি প্রবানন ময়। সভায়াং কুদ্ধু (নাগিতা—তথা হুমপি অক্ষপাতন কালে মাথ্যদিশারে ভাহি নৈতং কুদ্ধু প্রাপ্তর্মাধিভোপি ব্রয়েরং বারয়েয়মহং দূচতং বহুন্ দোষান্ প্রদর্শা ২॥ ভীন্নদোণৌ সমানায্য ক্লপণ বাহ্লীকমেব চ। বৈচিত্রবীর্যাং রাজানমল্ম দ্যুতেন কৌরব॥ ৩॥ পুত্রাণাং তব রাজেন্দ্র ত্বরিমিন্ত মিতি প্রভো। তত্রাচক্ষমহং দোষান্ থৈর্ডবান্ ব্যতিরোপিতঃ ॥ ৪ ॥ বীরসেনস্থতো থৈস্ত রাজ্যাৎ প্রভ্রংশিতঃ পুরা। অভর্কিত্রবনাশশ্চ দেবনেন বিশাশ্পতে॥ ৫॥ স∣তভাঞ্ প্রসম্পা বর্ষেয়^ ম্থাতথ্যু ॥ ৬ ॥ ব্রেয়েহক্ষা মূগয়া পানমেতৎ কামসমুখিতম্। তুঃখন চতুষ্টয়ং প্রোক্তং ধৈর্মরো ভ্রশ্যতে প্রিয়ঃ॥ ৭॥ তত্র সর্বতি বক্তব্য[়] মন্যন্তে শাস্ত্রকোবিদাঃ। বিশেষতশ্চ বক্তবাং চ্বাতে পশান্তি ভদ্বিধঃ 🖟 ৮ 🏾 অভুক্তনাশশ্বানাং বাক্পারুষ্যঞ্চ কেবলম্ ॥ ৯ ॥ এতচ্চান্যচ্চ কৌরব্য প্রদঙ্গিকটুকোদয়ম্। দ্যুতে ব্য়াং মহাবাহো সমাসাদ্যাম্বিকাস্তম্॥ ১০ ॥

দূতেং অন্তর্গমিকেন, কথাপকেতু—ঋজুরেবার্গঃ ॥ ২ ॥ বহিবামিজেনাপি
দূতে বারনোপার মাহ—ভীত্মেতি দ্বাভাং— ॥ ৩ ॥ রাজেন্দ্র ! প্রতরাষ্ট্র !
তবপুত্রাণাং দূতেন অলং ইতি বৈচিত্র বীর্ষাদীন্ প্রতি ত্ত্তি মতং হে
প্রতো ! যুধিন্তির ! অহংতত্র দূতেে দোষান্ অচক্ষং ব্যক্তং কথিত বান্
আমিতি সম্বন্ধঃ ॥ ৪ ॥ বীরসেন মতো নলঃ, থৈঃ অক্ষেরিতি শেষঃ ॥ ৫ ॥
মাততাং অনিপ্রেদং প্রসঙ্গতা দূতেকীডায়াঃ, হীয়মানোপি জয়াশয়া
পুনঃ পুন দীবাতেবে ইতার্থঃ ॥ ৬ ॥ কামঃ রাগঃ॥ ৭ ॥ বক্তবাং অধিগন্তবাং
ভাতবাং 'গতার্থ জ বলে বিদং রূপং, বচে বাছ্থান্তরম্'॥ ৮ ॥ তদেবাহ্
একাহাদিতি—বাসনং রাজ্য এশাদি, অর্থানাং ধর্মার্থকামানাং পুমর্থানাং
॥ ১ ॥ ১০ ॥

এবমুক্তো যদি ময়া গৃহ্নীয়াদ্বচনং মম। অনাময়ং স্যাদ্ধর্মশ্চ কুরুণাং কুরুবর্দ্ধন ॥ ১১॥ ন চেৎ স মম রাজে জ গৃহ্ণীয়া অধুরং বচঃ। পথ্যঞ্চ ভরতশ্রেষ্ঠ নিগৃহ্নীয়া^ বলেন তম্॥ ১২॥ षरिथनप्रश्नीराउन स्वक्रामा नाम प्रक्रामः। সভাসদেহিকুবর্ত্তরং স্তাংশ্চ হন্যাৎ ছুরোদরান্॥ ১৩॥ অসান্নিধ্যম্ভ কৌরব্য মমানত্তেম্বভূতদা। যেনেদং ব্যসনং প্রাপ্তা ভবন্তো দ্যুতক†রিভম্॥ ১৪॥ সোহহমেত্য কুরুজেঠ ছারকাং পাওুনন্দন। অত্যোষং স্বাং ব্যসনিন্দ যুযুধানাদ্যথাতথম্॥ ১৫॥ শ্রুত্বৈর চাহং রাজেন্দ্র পরমোদ্বিগ্নমানসং। তুর্মভ্যাগতে।হৃশ্মি স্বাং দ্রুফ্টুকামো বিশাস্পতে। ১৬। অহো কুছুমমুপ্রাপ্তাঃ সর্বে স্ম ভরতর্বভ। সোহহং তাং ব্যসনে মথং পশ্যামি সহ সেদেরৈঃ॥ ১৭॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি অর্জুনাভিগমন পর্বাণ বাস্থদেববাক্যে ত্রোদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩ ॥

॥ ১১॥ ১২॥ অপনীতেন অন্যায়েন, ত্নোদ্রান্ দ্যুভকারান্॥ ১৩॥
আনর্তের্ আ সমস্তা রর্ত্যন্তি তের্ ধীবিলাসের, পক্ষে দেশ বিশেষের্
॥ ১৪॥ কথান্তর মবতারয়িত্ব কথাপক্ষ মেবাল্ল সরতি—সোহহ মিত্যাদিনা
—এত্য—আগত্য, র্বুধানাৎ সাত্যকেঃ॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে "

অ্যোদশোহধ্যা য়ঃ॥ ১৩॥

মুগিটির উনাত। অমালিধাণ কথং কৃষ্ণ তবাসীদ্ধিনন্দন। কু চাসীদিপ্রবাসস্তে কিঞ্চাকাষীঃ প্রবাসতঃ॥ ১॥

শাল্লস্য নগরণ সৌভং গতোহহণ ভরতর্বভ।
শাল্লস্য নগরণ সৌভং গতোহহণ ভরতর্বভ।
নিহন্তণ কৌরবশ্রেষ্ঠ তত্র মেশুণু কারণম্ ॥ ২ ॥
মহাতেজা মহাবাছর্বং স রাজা মহাযশাঃ।
দমঘোষাক্সজো বীরং শিশুপালো ময়া হতঃ ॥ ৩॥
যজ্ঞে তে ভরতশ্রেষ্ঠ রাজস্থায়েই গাণ প্রতি।
স রোঘবশ্যাপালো নাম্যাত তুরাত্মবান্॥ ৪॥
শ্রুত্বা তণ নিহতং শাল্ভীব্ররোষসমন্বিতঃ।
উপারাদ্ধারকাং শূন্যামিহ স্থে ময়ি ভারত॥ ৫॥
স তত্র যোধিতো রাজন্ কুমারের্ক্ষিপুস্পবৈঃ।

আগতঃ ক্ষগণ নৌভমাছতে।বং মূশংসবৎ * ॥ ৬ ॥

অসারিধা মিতি— অত্র সংক্ষেপ বিস্তারাত্যাং সৌত বধ উপাখ্যায়তে, তম্ম তাৎপর্যাং সংসারসাগার মধ্যে দারকাথ্যে স্থূল স্ক্রম দেহদ্বয় রূপে ক্ষেত্রে বিশারনর্ত্তপা ন্ত্রাবদসরিধানাৎ কামগ্যমং মনোরথাখাং সোভ মাক্র্যায়তেন শাল্লাখোন মহামোহেন শোকাল্রৈ কপজতে সতি প্রহ্য় মাদি সরপা যজ্ঞান্যে ধর্মা স্তংবারয়তু মক্ষমা অতুবন্, ততােই হং চিত্রদারকা মেতা চিদাআনং মা মধিক্ষপতং শাল্ল মোহং অহং এলা বিদ্যান্ত্রেণ হতবান্, তংপুরঞ্চ মনোরথ সৌভং পাতিতানি ত. এবমেব মুদ্দাদরপ্রকা সর্ব্রোধ্যায়িকা তাংপর্য মুনেয়ং, তথাচ জ্ঞাতঃ "দ্বলাহ প্রকাশতা দেবা স্ক্রাক্তাশ—ইতাদিনা দেবাস্থর শাক্ষঃ কামাদীন্ বিবন্ধিয়া তন্ত্র্দ্ধ রপকেনাধ্যাত্মিক মর্থং নিরপয়তি, তদ্বাদ্ধাপ জ্ঞেয় জ্ঞাতান্ত্রা জারতা্তঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ স-রোধ্যশং—রোধেণ সহিতং সামর্থাং "বশ মিচ্ছা প্রভূত্বয়েঃ" ইতি বিশ্বঃ। ত্রাত্ববান্— ত্র্ম্ব চিত্তঃ, বদ্ধা হঃস্থিতঃ রোধ্যশহাৎ আত্মবান্যুদ্ধাদে প্রতিমান্ সামর্থ্যবাহ হঃস্থিত স্কান্যান্ত্রাং শেকতিসমাসঃ ॥ ৪ ॥ ইহস্থে ত্রুংসমীপস্থে ॥ ৫ ॥ সৌতং স্ক্রুভান্তি তে স্বভাঃ কাঞ্চনাদ্রো ধাত্র স্বজ্জন্॥ ৬ ॥

^{*} আৰু**হৈງবং নৃশংসবদিতি_ক**—

ততো রুফিপ্রবীরা শস্তান্ বালান্ হত্বাবহুং স্তদা। পুরোদ্যানানি সর্বাণি ভেদয়ামাস হর্মাতিঃ ॥ १॥ উক্তবাংশ্চ মহাবাহো কাসে) রুফিকুলাধমঃ! বাস্থাদেবঃ সম্পাতাবিস্থাদেবস্থাতো গতঃ॥৮॥ তস্য যুদ্ধার্থিনো দর্পং যুদ্ধে নাশয়িত।স্মাহ্য। আনর্ত্তাঃ সত্যমাথ্যতি তত্ত গন্তান্মি যত্র সং॥ ১॥ ত > इन्ना विनिवर्न्धिका कश्मरकिमिनिस्ननम्। অহ্ত্বা ন নিবর্তিধ্যে সত্যেনায়ুধমালভে ॥ ১ ॥ কাগো কাসাবিতি পুনস্তত্র তত্র প্রধাবতি। ময়া কিল রণে যোদ্ধং কাজক্ষমাণঃ স সৌভরাট ॥ ১১॥ অদ্য তং পাপকর্মাণং কুদ্রু বিশ্বাসঘাতিনম্। निरुপानवशाम्बामामशिषा यमकत्रम् ॥ ১२ ॥ মম পাপস্বভাবেন ভ্রাতা যেন নিপাতিতঃ। শিশুপালো মহীপালন্তং বধিষ্যে মহীপতে ! # 11 ১৩ 11 ভাতা বালশ্চ রাজা চন চ সংগ্রামমূর্দ্ধনি। প্রমন্ত্রশ্চ হতো বীরস্তং হনিষ্যে জনার্দ্দনম্॥ ১৪॥ এবমাদি মহারাজ বিলপ্য দিবমাস্থিতঃ । কামগেন স সৌভেন ক্ষিপ্ত। মাণ কুরুনন্দন । ১৫॥ তমশ্রৌষমহৎ গত্বা যথারতঃ স দুর্ম্মতিঃ। ময়ি কৌরব্য চুফীত্মা মার্ত্তিকাবতকো নূপঃ॥ ১৬॥

॥৭॥৮॥ আনর্ত্তাঃ ভো আনর্ত্তদেশ্যাঃ ! আখাত কথয়ত॥ ৯॥ ১০॥
॥১১॥১২॥১৩॥১৪॥ কিংগু । কুৎসয়িতা ॥১৫॥ মার্তিকাবতক এত-নামক দেশবাসী ॥১৬॥

^{*} মহীতলে ইতি ক ঘ।

ততোহহমপি কৌরব্য রোষব্যাকুলমানসঃ।
নিশ্চিত্য মন্সা রাজন্ বধায়াস্য মনো দধে॥ ১৭॥
আনর্ভেষু বিমর্দ্ধণ ক্ষেপঞ্চায়নি কৌরব।
প্রব্ধমবলেপঞ্চ তস্য তৃষ্কৃতকর্মণঃ॥ ১৮॥
ততঃ সৌভবধায়াহ্ম প্রতন্থে পৃথিবীপতে।
স ময়া সাগরাবর্ভে দৃষ্ট আসীৎ পরীপ্সতা॥ ১৯॥
ততঃ প্রধ্যাপ্য জলজং পাঞ্চজন্যমহ্ম নূপ।
আহ্য় শাল্পং সমরে যুদ্ধায় সমবস্থিতঃ॥ ২০॥
তত্ম হুর্ভমভূদ্যুদ্ধ তত্র মে দানবৈঃ সহ।
বশীভূতাশ্চ মে সব্বে ভূতলে চ নিপাতিতাঃ॥ ২৯॥
এতৎ কার্য্য মহাবাহো যেনাহং নাগমং তদা।
ফ্রান্তের হান্তিনপুরং দ্যুতঞ্চাবিনয়োথিত্য।
ফ্রতমানতবান্ যুয়ান্ দ্রুষ্ট্রনাহ স্বত্থাবিল সৌভবধোপ্রাধ্যানে চতুর্দ্ধশোহধ্যায়ঃ॥ ১৪॥

যুধিষ্ঠর উবাচ। বাস্তুদেব মহাবাহো বিস্তুরেণ মহানতে। সৌভস্য বধমাচক্ষু ন হি ভূপ্যামি কথ্যতঃ ॥ ১॥

॥ ১৭ ॥ অবলেপং গর্কং জ্ঞাত্ত্বতি শেষঃ ॥ ১৮ ॥ সাগারস্থ আগমস্তাৎ বর্ত্তো বর্তকং যদ্মিন্ সাগার দীপে ইত্যর্গঃ॥ ১৯॥ জলজং শঙ্খম্॥ ২০॥ ২১॥ দু,তং ত্রুটেয়ৰ ছান্তিনপুরং অংগতবান্॥ ২২॥

> ্র ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকথীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুর্দ্দশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪ ॥

বেতি—অর্থাধীনে ধর্মকামে —অর্থস্ত স্বরাজ্যরক্ষা পর রাজ্যাব

द्रश्चानन छेन्।

হতং প্রজ্বা মহাবাহো ময়া শ্রোতশ্রবং নৃপ! *।
উপায়ান্তরতশ্রেষ্ঠ শালো দারবতীং পুরীম্॥ ২॥
অরুক্তাৎ স্কুফালা দর্শবতং পাণ্ডুনন্দন।
শালো বৈহায় দঞ্চাপি তৎপুরং ব্যুক্ত ধিষ্ঠিতঃ॥ ৩॥
তত্ত্রস্থেই থ মহীপালো যোধয়ামাদ তাং পুরীম্।
অভিসারেণ সর্ব্বেণ তত্ত্ব যুদ্ধমবর্ত্ত ॥ ৪॥
পুরী দমন্তাদিহিতা দপতাকা সতোরণা।
সচক্রা সন্তো হৈব দয়ন্ত্রখনকা তথা॥ ৫॥
সোপশল্য প্রতোলীকা সাট্টোট্টলকগোপুরা।
সচক্রগ্রহণী চৈব সোক্রালাত্রাবপোথিকা॥ ৬॥

মৰ্দ্নভাং রাজ্ঞা প্রাণ্যতে, ইতি তার্যের শাল্প প্রসন্ধাৎ সম ক্ শ্রোভুক্ষিঃ পুদ্দ ত বাস্ত্রেতি—কথ,তঃ কথড়তঃ, কণ্ডাদি যড়তাং শত্রস্তমরপন্ ॥১॥ তাত প্রবা শিশুপাল মাতা তজ্জং প্রেতিপ্রবং, উপায়াং উপারতঃ ॥ ২ ॥ অকল্প॰ দেনলা, বৈহার সং খেতরং, বাহ্ন স্বরক্ষা পরোপন্নর্দ্ধোগ্য রচনা বিশেষেণ স্থাপয়িত্বা, ধিউটঃ সমাক্ স্থিতঃ॥৩॥ অভিতঃ পারত উপরিতশ্চাযুধানাং সর্বং নিঃসর্ব মভিসার স্তেন সর্বেব অচ্ছিলেন मर्खारङ्गान्तित् ङ, । युग्यम् दिवना युध्य मधुरागम्यान द्वार्थः পতাকা ধজাঞ্জঃ, তোৰণানি বহিন্ধানা, চক্রাণি ঘোষগনাঃ, হুড়া স্তৰাপ্ৰয়ন্থানি ভাষায়ং 'বুকল্' ইতি সংজ্ঞানি, আনে তু—বিশ্ব ত্রেংসর্জন শৃঙ্গানি : হুড়া' ইত্যান্তঃ, উদাহরন্তিচ "কম্প্যান্তে হুড় শৃঞ্গানি র্থন্ডে পরি হারভিঃ। বিশাত স্পর্শশুদ্ধার্থং করাদিস্পর্শ উদ্যত।" ই ত —যন্ত্রাণি আগ্লেরৌষধ বলেন দৃষৎপিত্তোৎ ক্ষেপনানি মহান্তি ''কামান্" ইতি সংজ্ঞানি, কুন্তানি সীস গুলিকোৎক্ষেপনবস্ত্রানি ''বল্পখ্" সংজ্ঞানি, थनकाः स्त्रष्ट्राता खन्नभागं कर्लातः ॥ १ ॥ छे । मनाः कीना सन् । काः. প্রতেলেশ রখ্যা মার্গা যস্যাৎ সা, অট্রালকা উপরি গৃহঃ, গ্রেপ্রের্গান পুরদ্বারাণি, সাউ,নি—অউেন অন্নেন সহিত্যান অউলিকাদীনি "মসাবং সা (সাউেতি বিশেষণং উপাশলাসা প্রামান্তস্য রখ্যায় শতা হত্তা সম্বধ্যত)

^{*} নৃপমিতি ক—

সেটিকা ভরতশ্রেষ্ঠ নভেরীপণবানকা।
সভেনির ক্ষ্ণা রাজন্ সশতল্পীকলাঞ্চলা॥ ৭॥
সভুশুগুশাগুডকা সায়ুধা সপরশ্বা।
লোহচর্ত্যবতী চাপি সাগ্নিঃ সগুডশুঞ্চিকা॥ ৮,॥
শাস্ত্রদূটেন বিধিনা স্ক * যুক্তা ভরতর্ষভ।
রগৈরনেকৈর্বিবিধর্গদশায়োদ্ধবাদিভিঃ॥ ৯॥
পুরুষেঃ কুরুশাদিল সমর্থৈঃ প্রতিবারণে।
অতিখ্যাতকুলৈবী বৈর্দ্ধিবীবৈর্গশ্চ সংযুগে॥ ১০॥
মধ্যমেন চ গুলোন রক্ষিভিঃ সা স্কর্মিতা।
উৎক্ষিপ্তগুলোশ্চ তথা হয়েশ্চ সপতাকিভিঃ॥ ১১॥
আঘাষিতঞ্চ নগরে ন পাতব্যা স্করেতি বৈ।
প্রাদং পরিরক্ষ্ডিরু গ্রেসেনাদ্ধবাদিভিঃ॥ ১২॥

চক্র প্রহলী সৈনা নিপ্রাহিকা "মার্চা" ইতি মেল্ছ প্রাদ্ধানা, সোলকা লাভাবপো থকা—সোলক মলাভং জ্বালা সহিত মুল্লুকং যসাং সা সোলকা লাভা, অব্বদ্ধাঃ পে, থিকাঃ যন্ত্র বদ্ধাঃ কাষ্ঠ পাধানাদযো রিপূনা মুপরি পাতনার যসামিতি প্রাঞ্জঃ, উল্কে বোলকা প্রাণ হরহাৎ যন্ত্রেং ক্ষিপ্রেণ গোলাঃ, অলাভৎ সকাষ্ঠ দণ্ডং লোহমর মায়েয়ং প্রহরণ বাণ ইতি ভাষালাং প্রাদ্ধান ত্রো রপ্রভাবেশ্যর গভোরারিপ পোথিকাঃ পাভরিকাঃ, মন্ত্র ম্বাঃ শক্তরঃ কর্নায়েন্দ্রকর শক্তি সদৃশা শুন্তুলাঃ সোলকা লাভাব পোথিকাঃ ॥ ৬ ॥ উন্তিকা মুগচর্মমানানি ভাজানি সন্ধি কৈতি পাঠে— ঋইয় আয়ুধ বিশেষাঃ ॥ ৭ ॥ অশ্বঞ্জকাঃ বর্জুলীকতাঃ পাধানাঃ, লোহময়াণি চর্মানি কম্ব পূর্তা কারণি প্রহার বারকাণি " চাল্" ইতি প্রখানান, সাগ্র জালারার্থ সহিতা গুড়া গোলকাঃ শ্লিকা শুন্তুল ক্ষেণ্ডানি, সাগ্র জালারাক্ষি সহিতা গুড়া গোলকাঃ শ্লিকা শুন্তুল ক্ষেণ্ডাত্রে ভ্রানি শুনা মুপরি পাতনার তপ্ত গুড়ো ক্রনীভূতো যত্র শিখ্রে খাপান্তে ভংগহিতেভান্তে ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ মন্যমা গুলাঃ যত্র জ্বিতন ঘোধসংঘেন চত্রন্ধিকা রিপ্রো ক্রন্তুং বানাদিনা প্রহর্ত্ত্ব শক্তান্তে ভাদৃণ মুচ্চ স্থানং, উৎক্ষিপ্ত গুটনঃ পারনীয় গুলোচাটন করিঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥

^{*} সংযুক্ত। ইতি হয়।

প্রমন্তেম্বভিদাতং হি কুর্য্যাচ্ছাল্কো নরাধিপঃ। ইতি কুত্বাপ্ৰমন্তান্তে মৰ্কো রুঞ্চান্তকাঃ স্থিতাঃ , ১৩॥ আনর্ত্তঃশ্চ তথা সর্বে নটা শন্ত্রকগায়নাঃ। বহির্নিকাসিতাঃ ক্ষিপ্রং রক্ষান্তিকিব্রুসঞ্চয়ম্। ১ ।। সংক্রমা ভেদিতাঃ সর্বে নাবশ্চ প্রতিষেধিতাঃ। পরিখাশ্চাপি কৌরব্য কীলৈঃ স্থানিচিতাঃ ক্লতাঃ॥ ১৫॥ উদপানাঃ কুরুশ্রেষ্ঠ তথৈবাপ্যশ্বরীষকাঃ। সমস্তাৎ ক্রোশমাত্রঞ্চ কারিতা বিষমা চ ভুঃঃ ১৬ ঃ প্রকুত্যা বিষমং তুর্গং প্রকুত্যা চ স্থুরক্ষিত্য ॥ প্রকৃত্যা চায়ুধোপেতং বিশেষেণ তদান্য॥ ১৭ ॥ স্বক্তিতং স্বগুপ্তঞ্চ দক্ষায়ুধনমা<mark>প্ৰতম্।</mark> তৎ পুরং ভরতশ্রেষ্ঠ যথেক্রভবনং তথা॥ ১৮॥ ন চামুদ্রে: হভিনির্যাতি ন চামুদ্রঃ প্রবেশ্বতে। রুঞ্জাক † পুরো রাজংস্তদা সৌভসমাগমে ॥ ১৯॥ व्यञ्जद्वशास्त्र मर्कास्त्र हव्यदः मु ह (को दव। বলং বভুব রাজেন্দ্র প্রভূতগজবাভিমৎ ॥ ২০ ॥ দত্তবেতনভক্তঞ্ব দ তায়ুধগরিচ্ছদম্। ক্তোপধানঞ্ তদা বলমাদী মহাভুজ ॥ ২১॥ ' ন কুপ্যবেতনী কশ্চিন্ন চাতিক্র'ন্তবেতনী। না**নুগ্রহভূতঃ** কশ্চিন চাদুষ্টপরাক্রমঃ॥ ২২ ॥

অপ্রমন্তা ইতি চ্ছেদঃ॥ ১০॥ ১৪॥ সংক্রমাঃ নদী সেতবং, কীলেঃ শুলৈঃ স্থানিচিতাঃ ব্যাপ্তাঃ॥ ১৫॥ উদপানাঃ কুপাঃ "অষ্বীদো ভবেদ্ভাই্ট" ইতি বিশ্ব গুপ্তানি রিতানো, বিষমা লোছ কণ্টকাদ্য কীৰ্ণাঃ॥ ১৫॥ ১৭॥॥ ১৮॥ ১৯। অন্ত্রথাস্থ প্রতির্থাং॥ ২০॥ বেডনং ধনং, ভক্তং নিত্ত-ভোৱ নং, কুতোপধানং কৃতবিশেষং॥ ২১॥ কুপাঃ স্থা রূপোত্রদ্ধনং

* নট ই, ত ক পুস্তকে পাঠ। 🕂 পুরে ইতিক ঘ।

এবং সুবিহিতা * রাজনু দ্বারকা ভূরিদক্ষিণা।
আছেকেন স্গুপ্তা চ রাজ্জা রাজীবলোচন ॥২৩॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অর্জুনাভিগমন পর্বাণি সৌভবধোপাখ্যানে পঞ্চদশোহধ্যায়ঃ॥১৫॥

বাস্থদেব উবাচ।

† তা পুপষাতে। রাজেন্দ্র শাল্প: কৌভপতিস্তদা।
প্রভূতনরনাগেন বলেনোপ্রিবেশ হ॥ ১॥
সমে নিবিফা সা সেনা প্রভূতসলিলাশয়ে।
চতুরঙ্গবলোপেতা শাল্পরাজাভিপালিতা॥ ২॥
বর্জ্জয়িত্বা শাশানানি দেবতায়তনানি চ।
বল্মীকা প্রভার্ক্ষাংশ্চ তল্লিবিফীমভূদ্বলম্॥ ৩॥
অনীকানা বিভাগেন পন্থানঃ সংর্তাভবন্।
প্রবাস্থচ ! চ নৈবাসন্ শাল্পক্য শিবিরে নূপ॥ ৪॥

তামুদি, এহো রণোদ্যম—শুমত্ব লক্ষীকৃতা, ভৃতোইত্বএই ভৃত শুংকাল স্বীকৃতো ন ক'শ্চং কিন্তু চিরসন্ত তাএব কুপা ভৃতো ন, কিন্তু শৌর্ষ্য ভূতি এবেতি বা ॥ ২২ ॥ ভূরিদক্ষিণাবছবো দাক্ষিণা যুক্তা যস্যাং, সান্তকেন উগ্রসেনেন ॥২৩॥

ইত্যারণ্যকে পর্বানি নৈলকণ্ঠারে ভারতভাব দীপে পঞ্চদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫ ॥

তামিতি—॥১॥সমে দেশে, চতুরকং চড়ারি এথ-নাগাছখ-পালাতা ন্যকানি বস্যা ২ ॥৩॥ পান্থানঃ পুরে ধান্যাদ্যাগ্যন মার্গাঃ, প্রব্যায় গুঢ়ভা-বেন নিষ্যমনায়॥ ৪॥

^{*} বিদিতা ইতি ক ঘ। † কৃষ্ণ ইতি ষ— ‡ এবণানি ইতি ক পুস্তকে পাঠ।

সর্বায়ুধসমোপেতং সর্বশস্ত্রবিশারদম্। রথনাগাশ্বকলিল পদাতিধ্বসকুলম্ ॥ ৫ ॥ তৃষ্টপুষ্টবলোপেতং বীরলক্ষণলক্ষিত্য। বিচিত্ত ধজ সনাই > বিচিত্ত রথকামুক্ম্ ॥ ৬ ॥ সল্লিবেশ্য চ কৌরব্য দ্বারকায়াৎ নর্মভ। অভিসারয়ামাস তদা বেগেন পতগেক্তবং ॥ १॥ তদাপতন্ত্ৰ সম্দৃষ্ঠ বলং শাল্পতেন্ত্ৰদা। নির্যায় যে¦ধয়ামাস্কঃ কুমারা রুঞ্চিনন্দনাঃ॥৮॥ অসহস্থেহিভিমান তৎ শাল্ববাজ্য কৌরব। ठाक्टएसक्**न्ड नाञ्चन्ड श्राह्मान्ड महात्रथः** ॥ २ ॥ তে রথৈদিংশিতাঃ সর্বে বিচিত্রাভরণধ্বজাঃ। সংস্ক্রাঃ শাল্তরাজস্য বহুভির্যোধপুঙ্গবৈঃ ॥ ১০ ॥ গুহীত্ব। কাম্মুকং শাষ্ক্ষ শাল্পন্ত সচিবং রণে। যোধয়।মাস সংক্ষেঃ ক্ষেমরুদ্ধিঞ্মু পতিম্॥ ১১ ॥ তস্য বাগময়ং বৰ্ষ~ জাম্ববত্যাঃ স্থতো মহৎ। মুমোচ ভরতভাঠ যথা বর্ষণ সহস্র । ১২॥ তদ্বাণবৰ্ষং ভুমুল বিষেহে স চমুপতিঃ। ক্ষেমরুদ্ধিশাহারাজ হিমবানিব নিশ্চলঃ॥ ১৩॥ ততঃ শাস্থায় রাজেন্দ্র ক্ষেমর্দ্ধিরপি স্থয়ম্। মুমোচ মারাবিহিতং শরজালং মহত্তরম্। ১৪॥

কলিলং সঙ্কটং ॥৫॥৬॥ অভিসারয়ামাস নগর সমীপং গময়ামাস সৈন নাং, পতগেন্দ্রবং, সৌডঞোপরিতঃ অভি সারয়ামাস ইত;র্থঃ॥ ৭॥ আপতন্তং আগতৎ, নির্যায় নির্গত্য পুরাছবিঃ॥৮॥৯॥ দংশিতাঃ সয়দাঃ॥১০॥১১॥১২॥১৩॥১৪॥ ততো মারাময়ং জালং মায়রৈর বিদীর্ঘ্য সং:
শাষ্ট্রং শরসহত্রেণ রথমস্যাভ্যবর্ষত ॥ ১৫ ॥
ততঃ স বিদ্ধঃ শাষ্ট্রেন ক্ষেমরুদ্ধিক্ষমুপ্রিঃ।
অপারাজ্জবনেরক্ষঃ শাষ্ট্রবাণ প্রপীডিতঃ ॥ ১৬ ॥
তাম্মন্ বিপ্রদ্রুতে ক্রুরে শাল্পস্যাথ চমুপ্রতৌ,

বেগবালাম দৈতেয়ঃ স্থত প্ৰেহ্ভ্যদ্ৰবলী ॥ ১৭ ॥ অভিপন্নস্ত রাজেক্র শাস্বো রুফিকুলোছহং। বেগং বেগবতো রাজ অস্তম্বৌ বীলো বিধারয়ন্। : ৮ ॥ সবেগৰতি কৌন্তেয় শাস্বো বেগৰতীং গদাম্। চিক্ষেপ তরসা বীরো ব্যাবিধ্য সত্যবিক্রমঃ॥ ১৯॥ তরা অভিহতো রাজন বেগবান্ ন্যপতদ্ধি। বাতরুগ্ন ইব কুল্লো জীর্ণমূলে। বনস্পতিঃ ॥ ২০॥ তিমান বিনিহতে বীরে গদারুল্লে মহাস্তুরে। প্রবিশ্য মহতীং সেনাপ যৌধয়ামাস মে স্কুতঃ॥২১॥ ठाङ्गरिक्षन, प्रशास्त्रः। विविद्या। नाम नानवः। মহারথঃ সমাজ্ঞাতো মহারাজ মহাধনুঃ । ২২ ॥ ততঃ স্বতুমুলং युक्तः हाक्राम्यविविकारयाः । রুত্রবাসবয়ো রাজন্ যথা পূর্বং তথাভবং ॥২৩॥ অন্যোন্যস্যাভিদ^ কুদ্ধাবন্যোন্যং জন্মভুঃ শরৈঃ। विनम्दली महातावान् मिश्हाविव महावदली ॥ २८॥ রৌক্সিণেরস্ততো বাণমগ্রাকোপমবর্চ্চদম্। অভিমন্ত্র্য মহাস্ত্রেণ সন্দধে শকুন।শনম্॥ ২৫॥

॥ ১৫॥ অপায়াৎ পদায়িতঃ, জবলৈঃ শীদ্রগৈঃ॥ ১৬॥ ১৭॥ অভিপন্নঃ
আভিমুখ্যেনাসাদিতঃ॥ ১৮॥ ব্যাবিধ্য ভ্রাময়িত্ব।॥ ১৯॥ কয়ঃ ক্লুশ্চ গজা
দ পদায়াতৈঃ॥ ২০॥ ২১॥ ২১॥ ২০॥ ২৪॥

 শ স বিবিক্রায় সক্রেধঃ সমাহ্র মহারথঃ। চিক্ষেপ মে **সুতো** রাজন্ স গতা**সু**র্থাপতং॥ ২৬॥ বিবিন্ধ্যং নিহতং দৃষ্ট্য তাঞ্চ বিক্ষোভিতাৎ চমুম্। কামত্যের স দ্বৌতেন শাস্ত্রঃ পুনরু পাগমৎ॥ ২৭॥ ততো ব্যাকুলিতং সর্বিং দ্বারকাবাসি তদ্বলম্। দুকী শাল্প মহাবাহো সৌভস্তং নুপতে তদা॥ ২৮॥ ততো নির্যায়কৌরব্য অবস্থাপ্য চ তদ্বলম্ ! আনর্ভানাৎ মহারাজ প্রত্রামো বাক্যমত্রবীৎ ॥ ২৯ ॥ সর্বে ভবততিষ্ঠন্ত সংব্ পশ্যন্ত মাং যুধি। নিবারয়ন্ত্রণ স্থানে বলাৎ সৌভং সরাজক্ষ্ ॥ ৩০ ॥ অয়ং সৌভপতেঃ সেনামায়নৈ ভুজিগৈরিব। थ**ञ्च क्र विनिम्न रिक्ट नाम** सामामा या मवाः । ७১ ॥ আশ্বসধ্বং ন ভীঃ কার্য্য। সৌভরাডদ্য নশ্যতি। ময়াভিপন্নো তুকীক্সা সসৌভো বিনশিষ,তি ॥ ৩২ ॥ এবং ক্রবতি সংক্ষটে প্রত্ন্যুমে পাণ্ডুনন্দন! ধিষ্ঠিতং তদ্বল বীর যুযুধে চ যথ। স্থম্ ॥ ৩ ।। ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অর্জুনাভিগমন পর্বাণ্ সৌভবধো-পাখ্যানে ষোডশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬ ॥

॥ ২৫॥ ২৬॥ সৌতেন খেসরেণ পুরেণ॥ ২৭॥ ২৮॥ নির্যায় নির্সাতা, অবছাপা আখাসা আনর্তানাং দারকাবাসিনাত॥ ২৯॥ ৩০॥ ধন্তু জবিনির্মা কৈঃ—ধন্ত্রঃ ভুজেন কৌটলে। ন অত্যাকর্ষাজেন নির্মাতি "ভুজ
কৌটলো" ভুশদিরয়ন্॥ ৩১॥ নণ্যতি আশু মরিষ্যতি, বর্তমান সামীপো বর্তমান বদ্বেতি লটু॥ ৩২॥ ধিষ্ঠিতং অধিষ্ঠিতং, ধিষা বঃন্প্রাগস্ত্যেন্
ভিত মিতি বা॥ ৩৩॥

ছত্তারণাকে পর্বাণ নৈলগীয়ে ভারত ভাবদীপেগ্রেড় শেহিধায়ঃ ॥১৬॥

^{*} স ইত্যত্ত মিতি ক---

বাস্থদেব উবাব। এবমূজ্বা রৌক্সিণেয়ো যাদবান্ ভরতর্বভ। দংশিতৈহ রিভিষ্তকং রথমাস্থায় কাঞ্চনম্॥ ১॥ উচ্ছি ত্য মকরং কেতুণ ব্যান্তাননমিবান্তকস্। উৎপতদ্ভিরিবাকাশং তৈ ইয়েরম্বয়াৎ পরান্ ॥ ২॥ विकिशनामय काशि धनुः व्यक्तं महावरेनः। তৃণখড্গধরঃ শূরো বদ্ধানাধাঙ্গুলিত্রবান্॥ ৩॥ স বিচ্যাচ্ছরিতং চাপং বিহরন্ বৈ তলাভলম্। মোহয়ামাস দৈতেয়ান্ স্বান্ সৌভনিবাসিনঃ॥ ৪॥ তম্ভ বিক্ষিপতশ্চাপং সন্দধানদ্য চাসকুৎ। নান্তর্ দদুশে কশ্চিন্নিম্নতঃ শাত্রবান ণে॥ ৫॥ মুখস্য বর্ণো ন বিকল্পতেহস্তা, চেলুশ্চ গাত্রাণি ন চাপিতস্তা। সিংহোন্নত্ চাপ্যভিগৰ্জতোহ্য্য, শুশ্রাব লোকোহদুত্রীর্যামগ্রাস্ ॥ ৬॥ अटलहतः क्रांश्न्यिकिन्ररङ्गा, ব্যান্তাননঃ সর্বতিমিপ্রমাথী। বিত্রাসয়ন জিতি বাহমুখো, শার্ষ্য সেনাপ্রমুথে ধ্রাগ্রাঃ ॥ १ ॥ ততন্ত্রণং বিনিষ্পত্য প্রহায়ঃ শত্রুকর্ষণঃ। শাল্পমেবাভিত্নডাব বিধিৎস্থ: কলহং নূপ ॥ ৮ ॥

এবমুক্তেতি—হরিভিঃ অধৈঃ ॥ ১ ॥ অবরাৎ উপগতঃ ॥ ২ ॥ বিক্লিপন্ পরান্ধি মুর্বন্, মহাবলৈ ইয়েঃ ॥ ৩ ॥ সমানং বিহ্যুচ্ছু বিতেন বহু ছে-কম্পানেতি স বিহ্যুচ্ছু রিতং, তলাজলং সৱ বহুপদব্য হস্ততল পারি বর্দ্ধনেন্দ্র মীনঃ, তিমি মানিঃ, বাহমুখ্যে রথক্তে ॥ ৭ ॥ ৮ ॥

* অভিষানস্ত বীরেণ প্রত্যুদ্দেন মহারণে। নামৰ্ষয়ত সংকুদ্ধঃ শাল্বঃ কুরুকুলোছ । ৯॥ স রোষ্থ্যমতে বৈ কামগা দবরুছ চ। প্রত্যুত্রং যোধ্য়।মাস শার্বঃ পরপুরঞ্জাঃ॥ ১०॥ তয়োঃ স্বৃত্নুলং যুদ্ধং শাল্তর্ফিপ্রবীরয়ো:। সমেতা দদৃশুর্কোকা বলিবাসবয়োরিব॥ ১১॥ তস্য মায়াময়ো বীর রথো হেমপরিস্কৃতঃ। সপতাকঃ সম্বজ্ঞ সামুকর্ষঃ স তুণবানু॥ ১২॥ স তংরথবরং শ্রীমান সমারুছ কিল প্রভো। মুমোচ বাণান্ কৌরব্য প্রত্যুসায় মহাবলঃ । ১৩॥ ততে। বাণময়ং বর্ষং ব্যক্তজ্ঞরসারণে। প্রত্যুমো ভুজবেগেন শাল্প সংমোয়হন্নিব ॥ ১৪ ॥ স তৈ রভিহতঃ সম্খ্যে নামর্যয়ত সৌভরাটু। শরান্ দীপ্তাগিসক্ষাশান্ মুমোচ তনয়ে মম। ১৫॥ তানাপততো বাণৌঘান্ স † চিচ্ছেদ মহাবল:। ‡ ততশ্চান্যান্ শরান্ দীপ্তান্ প্রচিক্ষেপ স্থতে মম। ১৬। म भाववारेन ब्राटकक विष्का क्रिक्शिनन्त्रनः। মুমোচ বাণ্ ত্রিতো মন্ত্রভিদিন মাহবে। ১৭। তম্ভ বর্ম্ম বিভিদ্যাশু স বাণো মৎস্কতেরিতঃ। বিব্যাধ হৃদয় পত্রীস মুমোহ পপাত চ ॥ ১৮ ॥ তিশান্নিপতিতে বীরে শাল্বরাজে বিচেতিন। मः প্রাদ্রবন্ দানবেক্রা দারয়ত্তো বস্থারাম্ ॥ ১৯ ॥ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥১১ ॥ সাত্তকর্বঃ রথাধন্থ:কাঠং অতুকর্বঃ, সঃ রথঃ ভূণবান্ ॥ ১২ ॥ ১৩ । ১৪ । ১৫ । আপততেতি বিদর্গলোপ আর্ব: । ১৬ । ১৭ ৷ ৮ । ১৯ ৷

* অভিযান ইতি ঘ পুস্তকঃ।
† সঞ্চিচ্ছেদ ইতি ক পুস্তকে পাঠঃ। ‡ পুনশ্চান্যানিতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

হাহাক্তমভূৎ সৈন্য শাল্ম পৃথিবীপতে।
নফসংজ্ঞে নিপতিতে তদা সৌভপতৌ নূপে॥২০॥
তত উপায় কৌরব্য প্রতিলভ্য চ চেতনাম্।
মুমোচ বাণান্ সহ্মা প্রজ্যুমায় মহাবলঃ॥২১॥
তৈঃ সবিদ্ধো মহাবাছঃ প্রজ্যুমায় সমরে স্থিতঃ।
জক্রদেশে ভূশা বীরো ব্যবাসীদদ্রথে তদা ॥২২॥
তা স বিদ্ধা মহারাজ শাল্পো রুক্মিণিনন্দনম্।
ননাদ সিশ্হনাদং বৈ নাদেনাপূর্য়ন্ মহীম্॥২৩॥
ততো মোহণ সমাপত্রে তন্য়ে মম ভারত।
মুমোচ বাণাণস্থুরিতঃ পুনরন্যান্ ছুরাসেদান্॥২৪॥
স তৈরভিহতো বাণৈ ক্ছেভিস্তেন মোহিতঃ।
নিশ্চেষ্টঃ কৌরবশ্রেষ্ঠ প্রজ্যুমোহভূদ্রণাজিরে॥২৫॥
ইত্যারণ্যকে পক্ষণি অর্জ্কুনাভিগমন পর্ববিণ সৌভবধোপাখ্যানে
সপ্তদশোহধ্যায়ঃ॥১৭॥

বাস্থানের উবাচ।

'শাল্লবাণার্দ্ধিতে তন্মিন্ প্রচ্যুমে বলিনায়রে।
রফ্ষারো ভগ্নসঙ্কণপা বিব্যবুং পৃতনাগতাঃ॥ ১॥
হাহাক্তমভূৎ সর্বাং রফ্যন্ধাকবল ততঃ।
প্রত্যুমে মোহিতে রাজন্ পরে চ মুদিতাপভূশম্॥ ২॥
॥ ২০॥ ২১ জক্রদেশে কণ্ঠমূলে, ব্যবাসীদং বিশেষেশ্বসাদংপ্রাপ্তঃ॥ ২২॥
॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥
ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলকণ্ঠীরে ভারত ভাবদীপে
সপ্তদশেহধায়ঃ॥ ১৭॥

শার্তে—॥১॥২॥৩॥

তং তথা মোছিতং দৃষ্ট্য সারথি জ বনৈ ইয়ৈ।
রণাদপাহরভূর্ণং শিক্ষিতো দারুকি স্তদা॥ ৩॥
নাভিদুরাপ্যাতে ভূ রণে রথবরপ্রপূৎ।
ধনুর্গ্রীয়া যন্তারং লক্ষ্যংজ্ঞাহত্তবীদিদম্॥ ৪॥
সৌতে! কিস্তে ব্যবসিতং কক্ষাদ্যাসি পরাজ্মখং।
নৈব ক্ষিপ্রবীরাণা মাহবে ধর্ম উচাতে॥ ৫॥
কচিঙং সৌতে! ন তে মোহং শাল্বং দৃষ্ট্য মহাহবে।
বিবাদো বা রণং দৃষ্ট্য ত্তি মে ত্বং যথাতথম্"—॥ ৬॥

সৌতিৰবাচ।

"জানার্দনে! ন মে মোহো নাপি মাং.ভরমাবিশং।
অতিভারস্ত তে মন্যে শালং কেশ্ব-নন্দন!॥ १॥
সোহপ্যামি শনৈ ক্রির! বলবানের পাপকুং।
মোহিতক্ষ রণে শুরো রক্ষ্যঃ সার্হিনা রথী॥ ৮॥
আয়ুশ্বংস্ত্র ম্য়া নিত্যং রক্ষিতব্য স্ত্র্যাপ্যহ্ম।
রক্ষিতব্যে রথী নিত্যমিতি কুত্রাপ্যাম্যহ্ম॥ ৯'॥
একভাসি মহাবাহো! বহুবভাপি দানবাং।
ন সমং রৌক্ষিনেয়াহ্হং রণে মত্বাপ্যামি বৈত্য। ১০॥

বাহ্বদেব উনাত।

" এক ক্রেকি স্থাতে তু তদা মকরকেতুমান্।
উবাচ স্থতং কৌরব্য! নিবর্ত্তর রখন পুন:॥ ১১॥
* দারুকাত্মজ! মৈচিন ত্বং পুন: কার্ষী: কথঞন।
ব্যপ্যানন রণাৎ সৌতে! জীবতো মম কহিচিৎ॥ ১২॥

H 8 H C 1 S H T H P H P H P S H P S H P S H

দেতিপ্রাক্"প্রভাষতবাচ" ই ত পাঠাতরমধিকং দ্ব পুত্তকীয়য়ৄ ।

ন স বৃষ্ণিকুলে জাতো যে। বৈ ভ্যন্ধতি সঙ্গরম্। যো বা নিপতিতং হস্তি তবাস্মীতি চ বাদিনমু॥ ১৩ । তথা ব্রিয়ঞ যো হন্তি বালং রুদ্ধং ভথৈব চ। বিরথং বিপ্রকীর্ণা ভয়শস্তায়ুগং তথা ॥ ১৪॥ ত্বঞ্চ স্থতকুলে জাতো বিনীতঃ স্থতকর্মণি। धर्माक्कण्डानि द्वश्रीना गाह्तवस्ति माक्रत्क ! ॥) e । স জানংশ্চরিতং ক্লৎস্নং রুফীনাং প্রতনামুখে। অপ্যানং পুনঃ সৌতে! মৈবং কাৰ্ষীঃ কথঞ্ন ॥ ১৬ ॥ অপ্যাত্ত হতত পুষ্ঠে ভ্রন্তেত্র রণপলায়িতম্। গদাঞ্জো তুরাধর্ষঃ কিং মাং বক্ষ্যতি মাধবঃ ?—॥ ১৭ ॥ †কেশবস্যাপ্রজে। বাপি নীলবাসা মদোৎকটঃ। কিং বক্ষাতি মহাবান্ত ব্ৰলদেবঃ সমাগতঃ ?—॥ ১৮॥ কিং বক্ষ্যতি শিনে র্মস্তা নর্দিংছো মহাধ্যুঃ। অপ্যাতং রণাৎ স্তুত। শ: স্কে সমিতিঞ্য়ঃ ॥ ১৯॥ हां इर दिस् के कुर्क्तर्य खटेंचे व भन भारति। ভাকুর 🕶 মহাবাছঃ কিং মান বক্ষ্যতি সার্থে। ॥ ২০॥ भूतः भञ्जाविष्यः भागः निष्ठाः श्रुक्षमानिन्य । স্ত্রিরশ্চ রুফিবীরাণাং কিং মাং বক্ষান্তি সংহত,: ?—॥ ২১॥ প্রত্যুমোহরমুপাধাতি ভাতস্তাক্ত্র মহাহবম্। ধিগেনমিতি বক্ষান্তি ন তু বক্ষান্তি সাধিতি। ২২ ॥ ধিগ্ৰাচা পরিহাসোহপি মম বা মদ্বিদ্যা বা। মৃত্যুনাভ্যধিক ে সৌতে! স স্বং মা ব্যপয়াঃ পুনঃ ॥ ২৩ ॥ ১७॥ ५८॥ १८॥ विरामिश्या मा जाकिः॥ ५०॥ २०॥ २०॥ २०॥

^{*} ভ ত মিতি ক পুস্তকঃ। † "অচু ভুমা,এডাবাপি" ইত্যাপ দৃশ্যতি কচিৎ।

ভার: হি ময়ি সংনাস্য যাতো মধু নিহা হরিং। যজ্ঞ ভারত সিংহসা ন হি শকোহদা মধিতুম্। ২৪॥ ক্লভবর্মা ময়া বীরো নির্ঘাস্যন্তের বারিভঃ। শাল্প নিবারব্রিষোহহং তিষ্ঠ ত্রমিতি স্থতজ। ॥ ২৫॥ म ह मञ्जावयन् मान देव निवृत्का ऋषिकाञ्चकः। ত > সমেত্য রণ > ত্যক্ত্রা কি > বক্ষ্যামি মহারথম্ ?—। ২৬॥ উপয। স্ত > তুরাধর্ষ শব্द। চক্র গদাধরম্। পুরুষং পুগুরীকাক্ষং কিৎ বক্ষ্যাম মহাভুক্ষ্ ?—॥ ২৭॥ माञाकिः वलाप्तवक्ष य हारनाश्चाकत्रकाः। ময়া স্পর্নন্তি সভতং কিং নু বক্ষ্যামি তানহম্ १--। ২৮॥ ত্যক্তা রণমিমং সৌতে। পৃষ্ঠতোহভাাহতঃ শরে:। স্বয়াপনীতো বিবশো ন জীবেয়ৎ কথঞ্চন ॥ ২৯॥ সন্নিবর্ত্ত রথেনাশু পুনর্দারুকনন্দন!! নচৈত্তদেবং কর্ত্তব্য মপ্যাপৎস্কু কথঞ্চন ॥ ৩०॥ ন জীবিতমহং দৌতে! বহু মন্যে কথঞ্চন। অপবাতো রশস্কীতঃ পৃষ্ঠতোহভ্যাহতঃ শরৈঃ॥ ৩১॥ कना ह स् उश्वा : दश्यानीत्र मार अग्राफि उम्। ष्मभयाज्य तनर हिद्दा यथा काश्रुक्रयः छथा । ७२॥ ন যুক্তং ভবতা ত্যক্তং সংগ্রামং দারুকাত্মদ!: মরি যুদ্ধার্থিনি ভূশং দ বৃং যাহি যতো রণম্'—। ৩৩। ইত্যারণ্যকে পর্কাণ অর্জুনাভিগমনপর্কাণ সৌভবধো-थाति अञ्चात्रवाका॰ नामाव्योपत्माव्याप्रः॥ ১৮॥

॥ २८ ॥ २८ ॥ २९ ॥ २९ ॥ २० ॥ ७० ॥ ७० ॥ ७२ ॥ ७० ॥ इंड्यादनगुरुक शर्कान स्विनक्कीरत्र क्षत्रक कावनीरल स्कोनस्नास्थानुत्रः ॥ ১৮ ॥ বাস্থদেব উনাচ।

' এবমুক্তস্তু কৌতের! স্তপুক্ত স্ততোহত্তবীৎ।
প্রজ্যান্থ বলিনাং শ্রেষ্ঠং মধুরং শ্লাক্ষমঞ্জনা ॥ ১ ॥
ন মে ভয়ং রৌক্মিনের! সংগ্রামে মক্ততো হয়ান ।
* যুদ্ধজ্ঞশ্চাহিম্মি রুফীনাং নাত্র কিঞ্চিদতোহন্যথা ॥ ২ ॥
আয়ুম্মুপদেশস্তু সার্থো বর্ত্তবাং শ্রুত্তঃ ।
সর্বার্থেমু রুথী রক্ষ্য স্কুঞ্চাপি ভূশপীডিতঃ ॥ ৩ ॥
ত্বং হি শাল্পপ্রতুক্তন শরেণাভিহতো ভূশম্ ।
কশ্মলাভিহতো বীর! ততোহ্হমপ্যাতব!ন্ ॥ ৪ ॥
স ত্বং সাত্তমুখ্যাদ্য লক্ষ্যংজ্ঞো যদুক্ত্য়া ।
পশ্য মে হয়সংখানে শিক্ষাং কেশ্বনন্দন! ॥ ৫ ॥
দাক্রকেণাহমুৎপন্নো যথাবকৈব শিক্ষিতঃ ।
বীতভীঃ প্রবিশাম্যেতাং শাল্প প্রথিতাং চ্মুম্,,—॥ ৬ ॥

बाञ्चलव छेवाह।

" এবমুক্ত্বা ততো বীর! হয়ান্ সঞ্চোদ্য সঙ্গুরে। রিশ্মভিস্ত সমুদ্যম্য জবেনাভ্যপতন্তন। । ৭ ॥ মঞ্জানি বিচিত্রাণি যমকানীতরাণি চ। সব্যানি চ বিচিত্রাণি দক্ষিণানি চ সর্বশঃ ॥ ৮ ॥ প্রতোদেনাহতা রাজনুশ্মিভিক্ষ সমুদ্যতাঃ। উৎপতন্ত ইবাকাশে ব্যচরংস্তে হয়োভ্তমাঃ ॥ ৯ ॥ তে হস্তলাঘ্রোপেতং বিজ্ঞায় নূপ! দারুকিম্। দক্ষ্মানা ইব তদা নাক্ষ্পশ্শুরণৈর্মহীম্॥ ১০ ॥

্ ॥ ১॥ ২ ॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ७॥ १॥ यमकानि সন্শানি, ইতরাণি বিসদৃশানি ॥ ৮ ॥ ৯॥ ১০॥

^{* &#}x27;'বুৰজানোশি' ইতি ৰ পুত্তক:।

সোহপদব্যাং চমুং ভদ্য শাল্পদ্য পুরুষর্বভঃ*। চকার নাতিষত্বেন তদদ্ভত মিবাভবৎ॥ ১১॥ ष्यमुष्ठामार्गार् भनवार अञ्चारत्रन न त्रोजता है। যন্তার মস্য সহ্সা ত্রিভিব্রাণেঃ সমার্দরে । ১২ । দারুকস্য স্থতন্তত্ত বাণবেগ মচিন্তয়ন্। ভুয় এব মহাবাছো। প্রয়থাবপসব্যতঃ ॥ ১৩ । ভতো ৰাণান্ বছবিধান্ পুনরেব সসৌভরাটু। मुत्माठ जनरत्र वीतः। सम ऋक्तिनिनन्तरन ॥ ১৪॥ তানপ্রাঞ্জিতৈর্বাণৈ শ্চিক্টেদ পরবীরহা। রৌক্সিণেয়ঃ স্মিতং কুত্বা দর্শয়ন্ হস্তলাঘবম্ ॥ ১৫ ॥ ছিরান্ দৃষ্ট্রা তু তান্ বাণান্ প্রছ্যুদ্ধেন শ সৌভরাট্। আসুরী দরেণীং মায়ামাস্থায় ব্যস্জচ্চরান্ ॥ ১৬॥ প্রযুজ্যমান মাজ্ঞায় দৈতেয়ান্তং মহাবলম্। ব্রহ্মান্তের। জিল্লা মুমোচান্যান্ পতজিণঃ ॥ ১৭ ॥ তে তদক্তং বিধুয়াশু বিব্যধু রুধিরাশনাঃ। শিরস্থারিদি বক্তে চ স মুমোহ পপাত চ॥ ১৮॥ তিমিনিপতিতে কুদ্রে শাল্বে বাণ প্রপীডিতে। রৌক্সিণেয়োহপরং বাণং সন্দধে শক্রনাশনম্ । ১৯। তমৰ্ক্চিতং সৰ্বদশা≨পূগৈ, রাশীবিষাগ্নিজ্বলনপ্রকাশম্। দুফুা শরং জ্যামভিনীয়মান ১,

বভূব হাহাক্কতমন্তরীক্ষন্॥ ২০॥ ততো-দেবগণাঃ সর্বে সেন্দ্রঃ সহধনেশ্রাঃ। নারদং প্রেষয়ামাস্থঃ শ্বসনঞ্চ মনোজবম্। ২১॥

27 || 25 || 50 || 28 || 26 || 39 || 31 || 32 || 50 || 57 || 1

^{* &#}x27;'ভরতর্বভ" ইতি পাঠান্তর্য্।

তৌ রৌক্সিণেয়মাগমা বচোহজুতা দিবৌকসাম্।
নৈষ বধ্যস্থা নীর শাল্বরাজঃ কথঞ্চন। ২২ ॥
সংহরম্ব পুনর্বাণে মবধোহয়ং প্ররা রণে।
এতস্ত চ শরস্যাজৌ নাবধ্যোহস্তি পুমান্ ক্লচিং। ২৩ ॥
মৃত্যুরস্য মহাবাহো! রণে দেবকিনন্দনঃ।
কৃষ্ণং সঙ্কল্পিতো ধাত্রা তন্ন মিধ্যা ভবেদিতি ॥ ২৪ ॥
ততঃ পরমসংস্থাইঃ প্রত্যুমঃ শরমুক্তমম্।
সংক্রহার ধরুংশ্রেষ্ঠাৎ তুণে চৈব ন্যবেশয়ৎ ॥ ২৫ ॥
তত উপায় রাজেক্রা! শাল্বঃ পরম-জুর্মনাঃ।
বাপায়াৎ সবলস্ভূর্ণং প্রত্নম্পরপীডিতঃ ॥ ২৬ ॥
স দ্বারকাং পরিত্যক্রা কুরো র্ফিভি রান্দিতঃ।
দৌভমাস্থায় রাজেক্রা! দিবমাচক্রমে তদা"॥ ২৭ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বণি অর্জুনাভিগমন পর্বণি সৌভবধোপাখ্যানে
শাল্পরাজয়োনানৈকোনবিংশতিতমোহধায়ঃ॥ ১৯॥

বাহ্নদেব উবাচ।

'আনর্ত্তনগরং মুক্তং ততোৎহমগম তদা।

মহাক্রতৌ রাজস্থায়ে নিরুত্তে নূপতে! তব ॥ ১॥

অপশ্যং দ্বারকাঞ্চাহ মহারাজ। হ তত্ত্বিষম্।
নিঃস্বাধ্যায়বষ্টুকারা নিজুবিগবরক্রিয়ম্॥ ২॥

॥ २२ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २० ॥ २० ॥

ইত্যারণ্যকে পর্কাশি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে একোন্থিৎ শোহধ্যারঃ॥১৯॥

আনঠেতি—॥ ১॥ २॥

অনভিজ্ঞেয়ৰপাণি বারকোপবনানি চ। দৃষ্ট্। শঙ্কোপপশ্লোহহ মপুক্তং ক্লদিকাত্মজন্ ॥ ও॥ অবস্থ-নরনারীক মিদ্দ রুঞ্জিপুরণ ভূশম্। কিমিদং ন্রশার্দ্ধল। শ্রোভূমিকামি তত্ত্তঃ ॥ ৪॥ **এব মুক্তঃ म कु ময়া বিস্ত**ারেণেদমন্ত্রবীৎ। রোধন মোক্ষঞ্চ শালেন হার্দ্দিক্যো রাজসন্তম। ॥ ৫॥ ততোহহং ভরতশ্রেষ্ঠ। প্রদর্গ সর্বাম শেষতঃ। বিনাশে শাল্বরাজস্য তদৈবাকরবং মতিম ॥ ৬॥ ততোহহ । ভরত্তপ্রেষ্ঠ ! সমাখাস্য পুরে জনম। রাজান মাছককৈ তথৈবানকত্বস্তুভিম্॥ १॥ সর্বান রফিপ্রবীরাংশ্চ হর্ষয়ন্ত্রকং তদা। व्यथमानः मना कार्या। नगरत याप्यर्थकाः।॥ ৮॥ শাল্বরাজবিনাশার প্রয়াত মান নিবোধত। নাহত্বা তং নিবর্জিয়ে পুরীৎ শ্বারবতীং প্রতি॥ ৯॥ সশাল্ প্রতিনগরং হত্ত্বা দ্রক্তান্দ্র ব : পুনঃ। * ত্রি সামা হন্যভামেষা চুক্তভী × ক্রভীষণা ॥ ১ • ॥ তে ময়াশ্বাসিতা বীরা যথাবস্তরতর্মভ!। मर्द्ध भा मद्भवन् इन्छै। अयोहि कहि भोजवोन् ॥ >> ॥ তৈঃ প্রহৃষ্যাত্মভি ক্রীরে রাশীর্ভি রভিনন্দিতঃ। वाहित्रिया विकार्ष्यकान व्यवमा निव्ना खवम । >२॥ रेगवा-क्रुबीवयुरक्तन त्रत्थनाना प्रान् प्रिनाः। প্রধায় শব্ধপ্রবরং পাঞ্জনামহ্ নৃপ।॥ ১৩॥

কিদকাত্মজং ক্তবর্মানং ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৩ ॥ ৭ ॥৮ ॥ ৯ ॥ এসামা- কিসরা: নীচ-মন্ত্র-তার-ভাবেন, ডিঃসমাছনাতা মিত্যাপি পঠন্তি ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ বাচ-ক্তির অভিযাদানিতি শেষঃ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥

^{*} ত্রি: সমাহন্যাতা মিতি ক-

প্রয়,তে। হিন্ম নরব্যান্ত। বলেন মহতা রুতঃ। ক্প্রেন চতুরক্ষেণ যত্তেন জিতকাশিনা॥ ১৪॥ সমতীত্য বহুন্ দেশান্ গিরীংশ্চ বছপাদপান্। সরাৎসি সরিভ শৈতব মার্ভিকাবত মাসদম্॥ ১৫॥ তত্রাশ্রেষং নরব্যান্ত! শাল্প সাগরমন্তিকাৎ। প্রয়ান্ত^ সৌভমাস্থায় তমহং পৃষ্ঠতোহররাম্॥ ১৬॥ ততঃ সাগরমাসাদ্য কুকো তস্য মহোর্ম্মিণ:। সমুদ্রনাভ্যাং শালোহভুৎ সৌভমাস্থায় শতহন্।॥ ১৭॥ न नमालाका मृदाना न्यात्रित यूरिकित!। আহ্বরামাস দুফাত্মা যুদ্ধারৈব মুছমুছি:। ১৮॥ ত্যা শাঙ্গ বিনিশ্ব ক্রৈ ব্রহুভি শ্বর্শ্মভেদিভিঃ। পুর্ব নাসাদ্যত শরৈ স্ততো মাং রোষ আবিশং॥ ১৯॥ म চাপি পাপপ্রকৃতি দৈতেয়াপদদো নূপ!। ময্যবর্ষত তুর্দ্ধরঃ শরধারাঃ সহস্রশঃ॥ ২০॥ সৈনিকান্মম স্তুতঞ্চ হয়াংশ্চ সমবাকিরৎ*। অচিন্তয়ন্তন্ত্ত শরান্বয়ৎ যুধ্যাম ভারত।॥২১॥ ততঃ শতসহস্রাণি শরাণাং নতপর্বাণাম। চিক্ষিপু: সমরে বীরা মার শাল্পদানুগা:॥ ২২॥

জিতকাশিনা ভয় শোভিনা, ভিতাং কাশরো দেশ বিশেষা যেনেতি বা, তে হি শুর্জেনাছতি প্রসিদ্ধাং "কাল্যো বা বৈদেছো বা" ইতি জ্ঞাতি লিজাৎ ॥ ১৪ ॥ মার্তিকাবতং দেশ বিশেষং, আসদং প্রাপ্তঃ ॥ ১৫ ॥ সাগার মতিকাৎ সাগার সমীপে, অবসাং অভ্যাত বানিমা ॥ ১৬ ॥ মহোমি বিঃ মহোমিমতঃ "বীখাদিতা দিনিং" আভ্যাৎ গর্ভে গুপুইতঃপঃ ॥ ১৭ ॥ ॥ ১৮ ॥ উস্যা পুরুৎ মদীহৈঃ শরৈ নাসাদ্যত ইতি সম্বন্ধঃ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ নতানি নিমীকৃত্যি পর্বাণি গ্রন্থায়ো যেষাৎ শ্লাপামিতঃপঃ ॥ ২২ ॥

^{* &}quot; হয় १ रेम्फर मभा कदर" ইতি ম পুস্তকে পাঠঃ।

তে হয় । শচ রথক্তৈব তদা দারুকমেব চ। ছাদরামাস্ত রম্বরা স্তৈ কা ণৈর্ম্মতেদিভিঃ ॥ ২৩ ॥ ন হয়। ন রথে। বীর! ন যতা মম দারুকঃ। অদুশান্ত শরৈশুছরাত্তথাহু দৈনিকাশ্চ মে ॥ ২৪॥ ততোহস্মপি কৌন্তেয়! শরাণামযুতান্ বহুন্। আমন্ত্রিতানাং ধরুষা দিব্যেন বিধিনাক্ষিপম্॥ ২৫॥ ন তত্র বিষয়স্থাদীঝম সৈন্যস্য ভারত:। থে বিষক্তং হি তৎ সৌভৎ ক্রোশমাত্র ইবভেবৎ ॥ ২৬॥ তভত্তে প্রেক্ষক।ঃ সর্বের রঙ্গবাট ইব স্থিত।ঃ। হর্ষরামাস্ত রুটেচ স্মাণ সিংহনাদতলস্থলৈ:॥২৭॥ মৎকরাগ্রবিনিমুক্তা দানবানাং শরাস্তথা। অঙ্গেষু রুচিরাপাঙ্গা বিবিশুং শলভা ইব॥ ২৮॥ ততো হলহলাশকঃ সৌভমধ্যে ব্যবদ্ধত। বধ্যতা॰ বিশিথৈ স্তীকৈঃ পততাঞ্চ মহাৰ্ণবে ॥ ২৯॥ তে নিক্নন্তভুজস্বস্থাঃ কবস্বাক্ষতিদর্শনাঃ। নদন্তো ভৈরবালাদালিপতন্তি আ দানবাঃ ॥ ৩০ ॥ পতিতান্তেপি ভক্ষ্যন্তে সমুদ্রাস্থ্যে!নিবাসিভিঃ। তা গোক্ষীরকুন্দেন্দুমূণালরজত প্রভম্॥ ৩১॥ জলজং পাঞ্জন্য रेव थार्यनाइ मशूतस्य । তান্দৃষ্ট্যা পতিকাংস্তত্ত শাল্প: সৌভপতিস্ততঃ ॥ ৩২ ॥

॥ ২০॥ ২৪॥ আমজ্রিতানাং অভি মতানাং, দিবোন বিধিনা অলোকিকয়া
আন্ত বিদ্যা ॥ ২৫॥ বিষয় গোচরঃ, তত্র হেডুঃ থে বিষক্তং লয়ঃ॥ ২৬॥
তল স্থানঃ হস্ততল শকৈঃ ॥ ২৭॥ দানবানাং অলেছিভি সম্বন্ধঃ, কুচিরাপালা শিচত্র পুঞ্জাঃ॥ ২৮ বধ্যকাং বধ্যম নানাং॥ ২৯॥ ৩০॥ ১॥ প্রাণেন
বলেন॥ ৩২॥

মায়াযুদ্ধেন মহতা যোধয়ামাস মাশ যুধি। ততো গদা হলাঃ প্রাসাঃ শূলশক্তিপরশ্বধাঃ॥ ৩০॥ অসয়ঃ শক্তিকুলিশপাশষ্টি কনপাঃ শর†ঃ। পাট্টশাশ্চ ভুশুণ্ডাশ্চ প্রাপতন্ত্রনিশং ময়ি * ॥ ৩৪ ॥ তামহং মায় য়ৈবাশু প্রতিগ্রন্থ ব্যনাশয়ম্। তস্যান হতায়ান সায়ায়াং নিরিশুকৈ রযোধয়ৎ। ৩৫। † ততোহভবন্তম ইব প্রকাশ ইব চাভবৎ। पूर्किन॰ स्थानिरेक्षर भीजमुक्क जात्रजः॥ ७७॥ অঙ্গারপাংশুবর্ষঞ্চ শস্ত্রবর্ষঞ্চ ভারত।। এব॰ মায়া॰ প্রকৃৰ্বাণো যোধয়ামাস মাং রিপুঃ॥ ৩৭ ॥ বিজ্ঞায় তদহং সর্বাপ মায় গৈব ব্যনাশায়ম। যথাকালন্ত যুদ্ধেন ব্যধমণ সর্কতঃ শরৈঃ ॥ ৩৮ ॥ ততো ব্যোম মহারাজ। শতস্থ্যমিবাভবৎ। শ্রচন্ত্রপ কৌন্তের! সহস্রাযুত-তারকম্ ॥ ৩৯ ॥ ততো নাজ্ঞায়ত তদা দিবারাত্রং তথা দিশঃ। ততো ২২ং মোহমাপানঃ প্রজান্ত্রণ সমযোজয়মু॥ ৪০ ॥

॥ ৩০॥ অসয়ঃ খড়গাঃ, শক্তিঃ কে মারী, কুলিশানি বজাণি পালাঃ বাৰুনাঃ, ঝছয়ো দণ্ডাঃ, শক্তানীনাং কনো দীপ্তি গ ডঃ শোভা বা তাংপান্তি তে শক্তি-কুলিশ-পাশক্তি-কনপাঃ কাতিকেয়েক্রবৰুল মমাগুধ ভুল্যা ইত্যথঃ, "কনীত্রি জীগাত হাতৌ" ইতি বোপদেনঃ॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ॥ ৩৬॥ ৩৭॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ৪০॥

ততন্ত্রং কৌন্তের! ধৃতং ত্লমিবানিলৈঃ।
তথা তদতবদ্যুদ্ধং তুমুলণ লোমহর্ষণম্।
লক্ষালোকস্ত রাজেন্দ্র! পুনঃ শক্র মধোধয়ম্''॥ ৪১॥
ইত্যারণ্যক্ পর্বাণি অর্জুনাভিগমন পর্বাণি সৌতবধোপাখ্যানে
বিশ্বতি-তমোহধ্যায়ঃ॥ ২০॥

বাস্থানের উপাত।

'এবং স পুরুষব্যান্ত! শালুরাজো মহারিপুঃ।

যুধ্যমানো ময়া সম্বো বিয়দভ্যগমং পুনঃ॥:১॥

ততঃ শতদ্বীশ্চ মহাগদাশ্চ,

দীপ্তাংশ্চ শূলান মুষলানসীংশ্চ।

চিক্ষেপ রোষাম্ময় মন্দ বুদ্ধিঃ,
শালো মহারাজ! জয়াভিকাজ্ফী—॥ ২॥

তানাশুনৈ রাপততোহহমাশু,
নিবার্য্য হস্তং খগমান্ খ এব।

দ্বিগা ত্রিধা চাচ্ছিদ মাশু মুক্তৈ,

সতেহেন্তরীক্ষে নিনদো বভূব॥ ৩॥

ততঃ শতসহত্রেণ শরাণাং নতপর্বণাম্।

দারুকং বাদ্ধিনপ্তির রথক্ষ সমবাকিরং॥ ৪॥

তদক্তং মায় ময়ং ॥ ৪১ ॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভারদীপে বিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ২০ ॥

এবং স ইতি-11 2 11 2 11 2 11 8 11.

ততো মা মত্রবীদ্বীর! দারুকো বিহ্বলন্নিব। স্থাতব্যমিতি তিষ্ঠামি শাল্পবাণপ্রপীড়িতঃ। অবস্থাত্ৎ ন শক্ষোমি অঙ্গৎ মে ব্যবসীদতি॥ ৫॥ ইতি তৃদ্য নিশম্যাহং সার্থেঃ করুণং বচঃ 🖫 অবেক্ষমাণো যন্তার মপশ্যং শরপীভিত্য ॥ ৬॥ ন তত্তোরিদি নো মুর্দ্ধি ন কায়েন ভুজন্বয়ে। অন্তরং পাগুরশ্রেষ্ঠ। পশ্যাম্যনিচিতং শরৈ: ॥ १॥ ম তু বাণবরোৎপীড়াৎ বিস্তবতাসগুল্বণম্। 🔻 অভিরুষ্টে যথা মেঘে গিরি গৈরিকধাতুমান্। ৮॥ অভীষুহস্তং তপ দৃষ্ট্য সীদন্তং সার্থিশ রণে। অন্তন্ত্রং মহাবাহো! শালবাণপ্রপীড়িতম্। ৯ ॥ व्यथ मार शुक्रवः किन्द्रातकानिन ह्या ३ वरी ९। স্বরিতো রথমাভোত্য সৌহৃদাদিব ভারত।॥ ১০ ॥ আ,ছকস্ম বচো বীর! তদ্যৈব পরিচারকঃ। বিষন্ধঃ সন্নকণ্ঠেন তলিবোধ যুধিষ্ঠির!॥ ১১॥ দারকাধিপতি ঝীর! আহ ত্বামান্তকো বচঃ। কেশবৈহি বিজানীয় যত্ত্বাং পিতৃসখোহব্ৰবীৎ॥ ১২॥ উপযায়।দ্য শালেন দারকাং রুফিনন্দন।। বিষক্তে ত্রায় তুর্দ্ধর্য! হতঃ শূরস্কতো বলাৎ॥ ১৩॥

॥ ৫॥ ৬॥ १॥ বাণ ব্রোৎপিণ্ডাৎ ক্ষতস্থানাং, উল্ল-ং উংকটং ॥ ৮॥ অন্ত এবং আশ্বিতবান্ ॥ ৯॥ অথ মাংপুক্ষঃ কশ্চি দিতাবদে রধার শোষদা তাৎপর্যাং ভগবানপি কুদ্র জন মার্যা মোহিতঃ কিমুত কুদ্রে লা-ভগবন্ধার্যা ইতি, শুদ্ধ চৈতন্যান্ত্রিত মেবাজান মিতি বা ॥ ১০॥ ॥ ১১॥ পিতৃস্থঃ আক্কঃ ॥ ১২॥ উপাযার উপগমা, বিষ্ক্তে অন্তর্বায়িকে, শূরস্তো স্থানের ॥ ১০॥

^{* &#}x27;অভিরক্তে" ইতি কঃ।

তদল > সাধু যুদ্ধেন নিবর্ত্তম্ব জনার্দ্দন!। দারকামেব রক্ষস্থ কার্য্যমেত্রাহন্তব ॥ ১৪ ॥ ই তাহং তদ্য বচনং শ্রুত্বা পরমতুর্মান : ! निम्हार नाधिशक्कामि कर्डवारमा इत ।। २०॥ मार्जाकिः वनार्मवक्ष श्राह्मक महात्रथम्। জগর্হে মনসা বীর! তচ্ছত্বা মহদপ্রিয়ম্॥ ১৬॥ षरः हि दातक। य्रान्छ পिতृन्छ कूक्रनन्तन !। তেষু রক্ষাং সমাধায় প্রযাতঃ সৌভপাতনে ॥ ১৭ ॥ বলদেবো মহাবাছঃ ক্লিজ্জীবতি শক্ৰহা: ল। তাকী রৌক্রিণেয়শ্চ চারুদেফশ্চ বীর্যাবান্। ১৮॥ শাষ্ত্রভূতরকৈবেতাহমাসং স্তর্গ্রনারী। এতেমু হি নরব্যান্তা! জাবংস্কু ন কথঞ্চন॥ ১৯॥ শক্যঃ শূরস্কতে। হন্তমপি বজ্ঞ ভূতা স্বয়ম্। হতঃ শুরস্থতো ব্যক্তৎ ব্যক্ত ঞ্চিতে প্রাস্বঃ । ২০॥ वलात्वज्ञुथाः मर्त्व हेिक (म निन्धिका मकिः।. সোহহং দক্ষবিনাশং তং চিন্তয়ানো মুহুৰ্য হুঃ। . ऋ विश्वता भराताकः श्रुदः भाखभाषायायायाया ॥ ३३॥ ততোহপশ্যং মহারাজ! প্রপতন্তমহ তদা। দৌভাৎ শূরস্থতং বীর! ততো মাং মোহ আবিশৎ : ২২॥ ত্যা ৰূপং প্ৰপততঃ পিতৃৰ্ম্মন নরাধিপ!। যযাতেঃ ক্ষীণপুণ্যস্য স্থৰ্গাদিব মহাতলম্ ॥ ২৩ ॥ विभीन्यनितास्थिः अवीर्वाञ्च पूर्वकः। প্রপতন্ দৃষ্ঠাতে হ সা ক্ষীণপুণ্য ইব গ্রহঃ॥ ২৪॥

॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ অহৎ জগর্হে বৈচিত্যাৎ, পারোকে পিটু নিন্দিতবা

নিতাৰঃ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১১ ॥ २० ॥ २১ ॥ २२ ॥ २० ॥ २৪ ॥

ততঃ শাঙ্গ ৭ ধনুঃশ্রেষ্ঠং করাৎ প্রপতিতং মম। মোহাপল্ল কৌন্তের! রথোপস্থ উপাবিশম্॥ ২৫॥ ততো হাহাকুতং সর্বং সৈনাং মে গতচেতনম্। মাং দৃষ্টা রথনীড়স্থ গতাস্থমিব ভারত। ॥ ২৬ ॥ প্রদার্যা বাহু পততঃ প্রদার্য্য চরণাবপি। ৰূপং পিতৃৰ্ম্মে বিবভৌ শকুনেঃ পততো যথা ॥ ২৭ ॥ তং পতন্ত্ৰ মহাবাহো! শূলপি ট্রশপাণয়ঃ। অভিন্নরো ভূশং বীর! মমচেতো হাকম্পার্ন ॥ ২৮॥ ততো মুহূর্ত্তাৎ প্রতিলভ্য সংজ্ঞা, मह९ जमा वीत! महाविमार्फ । ন তত্র সৌভ~ ন রিপুঞ্চ শাল্ব~, পশ্যামি রুদ্ধৎ পিতরং ন চাপি॥২৯॥ ততো মুমাসীলনসি মায়েরমিতি নিশ্তিম্। প্রবুদ্ধোহন্মি ততো ভূয়ঃ শতশোহবাকিরং শরান্" ॥ ৩০ ॥ ইত্যারণকে পর্বাণি অর্জুনাভিগমনপর্বাণি সৌভবধো-পাখ্যানে একবি~শতিতমো২ধ্যায়ঃ॥২১॥

বাপ্তদেব উবাচ। '' ততোহহণ ভরতশ্রেষ্ঠ! প্রগৃহ্য রুচিরং ধন্মুঃ। শরৈ রপাতয়ং সৌভাচ্ছিরাংসি বিবুধদ্বিধাম্॥ ১॥

॥ ২৫॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে

কবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ২১ ॥

ততোহ হমিতি—॥ ১॥

শরাৎশ্চাণীবিধাকারামূর্দ্ধ্বগাৎস্তিগাতে লগঃ। প্ৰৈষয়ং শাৰ্ক্তাজায় শাঙ্কামুক্তান্ সুবাসসং ॥ ২॥ ততো নাদৃষ্ঠত তদা সৌভ শুরুকুলো ছহ!। অন্তৰ্ভিত∿ মায়য়াভূত্ততোহহং বিশ্বিতোহভবম্ । ৩॥ অথ দানব-সঞ্জাত্তে বিক্বতানন-মূর্দ্ধজাঃ। উদক্রোশন্মহারাজ! ধিষ্ঠিতে ময়ি ভারত!॥৪॥ ততোহস্ত্রং শব্দসাহ্ বৈ স্বর্মাণো মহারণে। অযোজয়ং তদ্বধায় ততঃ শব্দ উপারমৎ। ৫। হতান্তে দানবাঃ সর্ব্বে যৈঃ স শব্দ উদীরতঃ। শবৈ রাদিত্যসঙ্কাশৈ জ লিতেঃ শব্দসাধনৈঃ ॥ ৬॥ তস্মিন্নপরতে শব্দে পুনরেবান্যীতাহভবং। শব্দোহপরে। মহারাজ! তত্তাপি প্রাহরং শব্রৈ:॥ १॥ এবং দশ দিশঃ সর্বান্তির্য্যগৃর্দ্ধ ভারত!। নাদয়ামাসু রস্কুরা তেও চাপি নিহতা ময়া#॥৮॥ ততঃ প্রাগ্জোতিষং গত্বা পুনরেব বাদৃষ্ঠাত। সৌভং কামগমং বীর! মোহয়ন্মম চক্ষ্মী। ৯।

স্বাসসঃ স্পৃথান্ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ বিকৃতানন মুর্দ্ধজা ইতি তেষাংস্বক্লপ কথনং নতুতদ্ধনং, ধিন্তিতে প্রাণৱেন স্থিতে, বিন্তিতে ইতি পাঠে
—সএবার্থঃ ॥ ৪ ॥ শব্দএব সাহোলক্ষাং যত্র তত্ত্বথা শব্দ বেধি শব্দে
অন্ত্রং উপারমং নাপতিদিতার্থঃ শব্দসাহং শব্দ বাধা নিবারকং বা
॥ ৫ ॥ শব্দ সাধনেঃ শব্দএব সাধনং লক্ষ্য সম্বন্ধে কারণং যেষাং তৈঃ
প্রস্যাহদৃশ্যাং ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ প্রাণ্ডিবং পূর্বে সমুদ্রতীরস্থং নগর
বিশেষং যতঃ কামগমং অতঃ প্রাণ্ডিবং গ্রাবাদৃশ্যত॥ ৯ ॥

^{*}অত্ত—"শবৈর্নানাবিধাকা বৈদিব্যান্ত্রপ্রতিমন্ত্রিতঃ। অত্তরঃ শব্রৈশ্চ বিবি-থৈঃ শস্থা হতাহিতা অপি"। ইত্যেবঃ শ্লোকঃ থ পুস্তকেন পচ্যতে, কিন্তুন্যত্র পচ্যতে।

ততো লোকাস্তকরণো দানবো দারুণাকুতিঃ। শিলাবর্ষেণ মহতা সহসা মাং সমার্কোৎ॥ ১০॥ সে হং পর্বতিবর্ষেণ বধ্যমানঃ পুনঃ পুনঃ। বল্মীক ইব রাজেন্দ্র। পর্বতে পিচিত্রে হভবমু ॥ ১১॥ ততোহ্যং পর্বতচিতঃ সহয়ঃ সহসার্থিঃ। অপ্রথাতিমিয়া বাজন্। সধুজঃ পর্বতিশ্ভিতঃ ॥ ১২ ॥ ততো রুফিপ্রবীরা যে মমাসন্ সৈনিকাস্তদা। তে ভয়ার্ত্ত। দিশঃ সর্বের সহস্য বিপ্রদ্রুদ্রন্থ । ১৩॥ ততে। হাহাক্কতমভূৎ সর্বাং কিল বিশাম্পতে!। দ্যৌশ্চ ভূমিশ্চ খল্পৈবাইদৃশ্যমুনে তথা ময়। ১৪। ততো বিষণ্ণমনসো শম রাজন্। সুহজ্জনা:। রুরুত্ব-চ্বু শুনেচব তুঃখনোক-সমন্বিতা: ॥ ১৫॥ দ্বিষতাঞ্চ প্রহর্ষোইভূদার্ভিশ্চাদ্বিষতামপি। এব বিজিতবান বীর! পশ্চাদশ্রৌষমচ্যত! ॥ ১৬॥ ততে হৈ হমিক্রদরিত পর্বপাধাণভেদ্য। বজ মুদ্যম্য তান্ সর্কান্ পর্বতান্ সমশাতয়ম্॥ ১৭॥ ততঃ পর্বাতভারার্ত্তা মন্দ্রপ্রাণবিচেষ্টিতাঃ। হয়া মম মহারাজ! বেপমানা ইবাভবন্॥ ১৮॥ মেঘজালমিবাকাশে বিদার্য্যাভ্যুদিত রবিষ্। দৃষ্টা মাং বাক্সবাঃ সবে হর্ষমাহারয়ন্ পুনঃ ॥ ১৯ ॥

॥ ১০ ॥ ১১ ॥ অপ্রথ্যাতিং অদর্শনং ইয়াং প্রাপ্তবান্ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥১৪ ॥
॥ ১৫ ॥ এবমিতি— হে বীর ! হে অচ্যুত ! এবং মাং সৌভ রাজো বিজিত
বান্ এতদপাহং পাশ্চাদক্রোষং পূর্বং মোহমাপারঃ সন্ সংজ্ঞালাভানন্তরং
ক্রুতবান্ সার্থি মুখেনেতি শেষঃ ॥ ১৬ ॥ ইন্দ্র দিরতং ইন্দ্র দৈবত্যং
বক্তং বক্তাস্ত্রং ইন্দ্রোপ্যসৈত্র বিভৃতিঃ অতন্তজ্জ্জ্জ মপ্যেতদীয়মেবেতি
ধেয়ন্, সমণাতরং নাশিতবান্ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ আহারয়ন্ প্রাপ্তবতঃ ১৯ ॥

ততঃ পর্বতভারাতান্ মন্দ্রপাণবিচেটিতান্। হয়ান সন্দু শ্র মাং সূতঃ প্রাহ তাৎকালিক পবচ: ॥ ২০॥ সাধু সংপশ্য বাফে 🛪 ! শাবং সৌভপতিং স্থিতম্। चलः कृष्ण्यमदेनानः माधु यञ्जः ममाहत ॥ २०॥ মার্দ্দবং স্থিতাক্তিব শালাদ্দ্য ব্যপাহর। कहि मांचर महावादना ! टेमनर कीवय कमत ! ॥ २२ ॥ সকৈঃ পরাক্রমৈ বীর ! বধাঃ শক্ত রমিত্রহন্।। ন শত্রবমন্তব্যো তুর্বলোহপি বলীয়সা॥ ২৩॥ यार्भि मार् भौकेशः कष्कि कि भूनः ममदङ्ख्यः। স বৃং পুরুষশার্দ্ধ ল! সর্বয়েবৈ রিমং প্রভো!॥ ২৪॥ জহি ইফিকুলভোষ্ঠ। মা তাং কালোইত্যগাৎ পুন:। रेनव मार्फ्रवगारधा रैव मर्छा नां शि मश्री खर ॥ २०॥ যেন ত্রং যোধিতো বীর! দ্বারকা চাবমাদিতা। এবমাদি তু কৌম্বের! প্রুত্বাহ্ সার্থে ব্রচঃ॥ ২৬॥ তত্ত্বমেতদিতি জ্ঞাত্বা যুদ্ধে মতি মধারয়ম্। বধায় শালুরাজ্ঞ সৌভ্সা চ নিপাতনে ॥ ২৭ ॥ দারুকঞ্চাহক্রবং বীর! মুহূর্ডং স্থীরতামিতি। ততোহপ্রতিহতং দিব্য মভেদ।মভিবীর্যাবান্॥ ২৮॥ चारभग्न मञ्जर मग्निजर मर्सामाहर महाधान्य। যোজায়ং তত্র ধন্তবা দানবাস্থকরং রগে॥ ২৯॥ যকাণা । রাক্ষসানাঞ্গানবানঞ্স । রাজ্ঞাঞ্চ প্রতিলোমানাং ভক্ষান্তকরণ মইং॥ ৩.॥

তাৎকালিক তৎকালবোৱান্ ॥ ২০॥ ২১॥ ২১॥ ২০॥ শীঠাঃ স্বাসনস্থঃ, অযুধামানোপীতার্থঃ ॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ প্রতি লোমানাং

পুরান্ত মমলং চক্রং কালান্তক-যমোপমগ্। অনুমন্ত্রাহ মতুলং দ্বিতাং বিনিবর্হণম্ ॥ ৩১॥ জহি সৌভং স্ববীর্যোণ যে চাত্র রিপবে। মম। ইত্যক্ত্রা ভুজবীর্যোণ তদ্মৈ প্রাহিণবং রুষা ॥ ৩২॥ ৰূপং স্থদৰ্শনস্যাসী দাকাশে পতত স্তদা। দিতীয়দ্যের সূর্যাস্য যুগান্তে প্রতিপিষ্যতঃ ॥ ৩৩ ॥ তৎসমাসাদ্য নগরং সৌভং ব্যপগ্রতিষ্ম। মধ্যেন পাটয়ামাস ক্রকচো স্থাবিববৈ।চ্ছি তম্ ॥ ৩৪ 🛊 দিগারুতং ততঃ সৌভ**্ স্থদর্শন-বলাদ্ধতম্।** মহেশ্র-শরোদ্ধৃতং পপাত ত্রিপুরং যথা। ৩৫। তিশালিপতিতে সৌভৈ চক্রমাগাৎ করং মম। পুনশ্চ দায় বেগেন শাল্বায়েত্যহ মক্রবম্॥ ৩৬॥ ততঃ শালুং গদাং গুকী মাবিধ্যন্তং মহাহবে। বিধা চকার সহসা প্রজন্মাল চ তেজসা। ৩৭॥ তিমানু বিনিহতে বীরে দানবাঃ অস্তচেতসং। হাহাভূতা দিশো জগ্রদিতা মম্ সায়কৈ: " ৩৮ 🛊 ততে। ২হং সমবস্থাপ্য রথং সৌভসমীপতঃ। শঙ্খণ প্রধ্যাপ্য হর্ষেণ স্কুদঃ পর্য্যহর্ষয়ম্। ৩৯॥ তল্মেরুশিথরাকারং বিধন্তাট্টালগোপুরম্। দহানান মভিপ্রেক্ষ্য স্ত্রিয় স্তাঃ সংপ্রত্নকরুঃ । ৪০ ॥ এবং নিহত্য সমরে সৌভ্রু শাল্প নিপাত্য চ। আনর্তান পুন্রাগম্য স্কুদাণ জীতি মাব্হন্। ৪১॥

বিপরীতাঁচারাণাং শ্লেচ্ছানাম্॥ ৩০॥ ক্ষুরান্তং তীক্ষ্ণ পরিধি॥ ৩১॥ ত শ্রে সৌভায়, প্রাহিণবং প্রহিতবান্॥ ৩২॥ ৩১॥ ক্ষেকচঃ দস্তর খড়াঃ॥ ৩৪॥ ॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩৭॥ ৩৮॥ ৩১॥ ৪০॥ ৪১॥ তদেতৎ কারণ নাজন ! যদহং নাগসাহ্বয়ম ।
নাহগমং পারবীরম্ম ! ন হি জীবেৎ স্থানাধনঃ ॥ ৪২ ॥
ময্যাগতেহথ বা বীর ! দ্যুতং ন ভবিতা তথা ।
অদ্যাহং কি ক্রিষ্যামি ভির্মেতু রিবোদকম্?"—॥ ৪০॥
বৈশম্পায়ন উবাচ।

এবমুক্তা মছাবাছ: কৌরবৎ পুরুষোত্তম:। व्यामन्तर अयःयो जीमान् পा खवान्तर्यू एनः ॥ ८६॥ অভিবাদ্য মহাবাছ ধু শ্বরাজং যুধিষ্ঠিরম্। রাজ্ঞা মুর্দ্ধারাপাত্রাতো ভীমেন চ মহাভুজঃ ॥ ৪৫ ॥ পরিষক্তশ্চার্জ্জনেন যমাভ্যাঞ্চাভিবাদিত:। সশানিত চ ধৌম্যেন দ্রৌপদ্যা চার্চ্চিত্রেই শ্রুভিঃ ॥ ৪৬॥ সুভদা মভিমনুঞ্ রথমারে।প্য কাঞ্চনম্। আরুরোই রথণ রুষ্ণ: পাঙ্বৈ রভিপুজিত: ॥ ৪৭ ॥ শৈবাস্থগ্রীবযুক্তেন রথেনাদিত্যবর্চসা। दातकार अयायो कृषः नमायाना यूपिछितम्॥ १৮॥ ততঃ প্রয়াতে দাশাংই ধুউচ্যুমোহপি পার্ষতঃ। क्तिश्रान्त्रान्त्रशामात्र श्रवस्यो अशूतः जमा ॥ ८० ॥ धुरुत्ककुः स्रमात्रक मगामायः २थ (ठिमतारे ।ः জগাম পাওবান্ দৃষ্টা রম্যাং শুকিমতীং পুরীম্। ৫০॥ रेकरक्याम्बालाञ्चकाजाः कोत्खरयनामिरजोबना । আমস্ত্রাপাণ্ডবান্সর্কান্ প্রযযু স্তে২ পি ভারত।॥ ৫১॥

যদ্যা গল্ডেরং তর্হি নহি জীবেৎ ॥ ৪২ ॥ কিং করিষ্যামি অদ্যাহমকি-ঞ্চিংকর ইতার্থঃ, উদকং ধার্মিডু মিতি শেষঃ ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ধ্রম্ভাকেডুঃশিশুপাল স্তঃ, স্বসারং করেন্নতীং নকুল-ভার্মাম্ ॥ ৫০ ॥ কৈক্যাঃসহদেবশ্যালাঃ ॥ ৫১ ॥ ব্ৰাহ্মণাশ্চ বিশব্দেব তথা বিষয়বাদিনঃ।
বিষ্ক্ত্যমানাঃ স্কৃশাশ্যন তাজন্তি স্ম পাগুবান্। ৫২
সমবায়ঃ স রাজেন্দ্র! স্থমহাদুতদর্শনঃ।
আসীমহাত্মনাং তেবাং কাম্যকে ভরতর্ষতঃ। ৫৩।
যুধিন্তিরস্ত বিপ্রাংস্তাননুমান্যঃ মহামনাঃ।
শশাস পুরুষান্ কালে রথান্ যোজয়তেতি বৈ॥ ৫৪॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অর্জুনাভিগ্যমনপর্বাণি সৌভবধোন্
পাখ্যানে স্থাবিশ শতিতমোহধ্যায়ঃ। ২২॥

বৈশন্দায়ন উবাত।
তিমান্ দশার্থাপিতের প্রয়াতে,
যুধিষ্ঠিরো ভীমসেনার্জ্বনৌ চ।
যমৌ চ রুফা চ পুরোহিতশ্চ,
রথামহার্থান্ পরমাশ্বযুক্তান্॥ ১॥
আস্থায় বীরাং সহিতা বনায়,
প্রতন্থিরে ভূতপতিপ্রকাশাং।
হিরণ্যনিস্কান্ বসনানি গাল্ড,
প্রায় শিক্ষাক্ষরমন্ত্রবিস্ত্যঃ॥ ২॥

॥ १२॥ সমবায়ঃ মেলকঃ॥ ৫৩॥ শশাস আজ্ঞাপায়াস । এবমুক্ত্বা মছা-বাতঃ—"ইত্যাদ্যধ্যায় শেষস্যাত্রিম হেধায়ে সহিত্স্য তাৎপর্যাংপ্তেবেশ্বিব সাধুষু দ্বেষ্বক্তো ভবন্তীতি॥ ৫৪॥

> ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে দৌভবধোপাখ্যানে দ্বাবিংশেহধ্যায়ঃ ॥ ২২ ॥

ত স্মিতি—॥ ১॥ ভূতপতিঃ শিবঃ, নিচ্চঃ অফৌত্তরণতং স্বর্ণনি, বক্ষোহলকারো বা, শিক্ষেতি বা,কর নদালানা মুগলক ।ং, অক্ষর শি প্রেষণাঃ পুরো বিংশতি রান্তশস্ত্রা ध्यूर्वि भञ्जानि भंतारण मौश्रान्। (मोर्क्श चर्डानि **ह** मायका ~ "ह, मर्स्व मयोगात्र अचना मौशूः ॥ ७ ॥ তত্ত বাসাংসি চ রাজপুত্র্যা, थाळाञ्ड मागाञ्ड विञ्चवश्य । তদিন্দ্রমেন স্থুরিত: প্রগৃহ, कचनात्मरवाश्वरयो त्रर्थन ॥ ८ ॥ ততঃ কুরুশ্রেষ্ঠ মুপেত্য পৌরাঃ, প্রদক্ষিণ ঞ্চকু রদীনসভ্যা:। তং ব্রাহ্মণাশ্চভ্যবদন্ প্রসন্না, यूथाक मर्त्य कुङ्काक्रवानाम्॥ ८॥ স চাপি তানভ্যবদং প্রসন্নঃ, সহৈব তৈ ভাতৃভিধর্মরাজঃ। তত্বো চ তত্রাধিপতি মহাত্মা, पृष्णे जतोघः कुरूकाक्षतानाम् ॥ ७ ॥ পিতেব পুজেষু স তেষু ভাব,-ঞ্চক্ৰে কুৰণা মূষভো মহাত্মা। তে চাপি তিমিন্ ভরতপ্রবহের্, তদা বভুবুঃ পিত ীব পুত্রাঃ ॥ ৭ ॥ তত স্ত মাসাদ্য মহাজনৌঘাঃ

কুরুপ্রবীর পরিবার্য্য তস্থু:।
বেদঃ, নিভাগাৎ করণগুনাঃ, "বাচাবিরপনিভায়া" ইতি আচভেঃ, মন্ত্রঃ
প্রাবঃ, তান্পচতোহর্থতক জানদ্রাঃ শিকাকর মন্ত্র বিদ্যাঃ ॥ ই॥ প্রেষ্যাঃ
কথকরাঃ, পুরঃ প্রাবেশ, জবল্যং পাক্ষাভিং দারকাদেশন্॥ ৩॥ রাজ
প্রাথা স্ভদ্রাসহ ॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ প্রহের্গ্রেষ্ঠে॥ ৭॥ ব্রীভাঃ কুরাজ্যে

হা নাথ! হা ধর্ম। ইতি ক্রবাণা,
ক্রীতান্চ সর্বেহ ক্রবাণাল রাজন্। ॥ ৮॥
বর: কুরণ। মধিপঃ প্রজানাং,
পিতেব পুলানপহায় চাম্মান্।
পোরানিমান জানপদা শ্চ সর্বান্,
হিত্বা প্রযাতঃ কু মুধর্মাজঃ!॥ ৯॥
ধিক্ ধার্তরাষ্ট্রং স্কুন্শ স্বুদ্ধিং,

ধিক্ সৌবলৎ পাপমতিঞ্চ কর্ণম্। অনর্থমিচ্ছন্তি নরেন্দ্র! পাপা,

যে ধর্মনিতাস্য সত স্তবৈবম্॥ ১০॥

স্বরং নিবেশ্যাপ্রতিমং মহাজা পুর্ক মহাদেবপুরপ্রকাশম্। শতক্রতুপ্রথ্য মমেয়কর্মা হিত্বা প্রযাতঃ ক্ব রু ধর্মরাজঃ!॥ ১১॥ চকার যা মপ্রতিমাং মহাজা সভাং ময়ো দেবসভাপ্রকাশাম্। তাং দেবগুপ্তামিব দেবমায়াক,

হিত্বা প্রয়াতঃ ক মু ধর্মরাজঃ । ॥ ১২ ॥
তান্ ধর্মকা মার্থবিচুত্তমৌজা,
বীভৎস্থ রুচেঃ দহিতার্মুবাচ ।
আদাস্যতে বার্স মিমং নিরুষ্য,
বনেষু রাজা দ্বিতাং যশাংসি ॥ ১৩ ॥
দ্বিজাতিমুখ্যাঃ সহিতাঃ পৃথক্ চ,
ভবদ্ভি রাসাদ্য তপস্থিনক্ষ ।

প্রসাদ্য ধর্মার্থবিদশ্চ বাচ্যা যথার্থসিদ্ধিঃ পরমা ভবেলঃ । ১৪॥
ভিচাম ইতি হেতোঃ শক্ষা লক্ষিতাঃ, ভীতা ইতি বা পাঠান্তরম্॥৮॥
॥৯॥ অনর্থং দ্যুতজ্ঞং, এবং এবংপ্রকারম্॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ বীভংস্থ রর্জুলঃ, আদাস্যতে আদ্দিদ্য প্রহায়তি, রশাংসি যশক্ষাণি দিব্য সভাদীনি॥ ১৩॥ ভবন্তিঃ পৌরেঃ; বাচ্যাঃ প্রার্থ্যাঃ॥ ১৪॥ ইত্যেবমুক্তে বচনেহজুনেন তে ব্রাহ্মণাঃ সর্ব্বর্ণান্দ রাজন্!।
মুদান্ত্যনন্দন্ সহিতান্দ চকুঃ,

প্রদক্ষিণং ধর্মজ্তা বরিষ্ঠম্॥ ১৫॥
আমস্ত্রা পার্থক রুকোদরক্ষ ধনঞ্জাং বাজ্ঞাননীং যমৌ চ।
প্রত্যিরে রাষ্ট্র মপেতহর্ষা যুধিষ্ঠিরেণালুমতা যথাস্বম্॥ ১৬॥
ইত্যারণ্যকে পর্কণি অর্জুনাভিগমনপর্কণি দ্বৈতবনপ্রবেশে
ত্রোবিংশতিতমোহধায়ঃ॥ ২৩॥

বৈশস্পায়ন উণাচ।

তত স্থেষ্ট প্রথাতেষু কৌন্তেয়ঃ সত্যসঙ্গরঃ।
অভ্যভাষত ধর্মাকা আত্ন সর্বান্ যুমিন্তিরঃ॥ ১॥
দাদশেমাঃ সমাহস্মাভি ব্যস্তবাং নির্দ্ধনে বনে।
সমীক্ষয়ং মহারণ্যে দেশং বহুমুগদ্বিজম্॥ ২॥
বহুপুস্ফল্ রমাং শিবং পুণ্যজনার্তম্!
যত্রেম্ঃ শ্রদঃ সর্বাঃ স্থাং প্রতিবসেমহি॥ ৩॥
এবমুক্তে প্রত্যুবাচ ধর্মরাজং ধনপ্রয়ঃ।
শুরুবন্মান বশুরুং মানয়িয়া মনস্থিনম্॥ ৪॥
আর্জুন উবাচ।

" ভবানেব মহর্ষীণাং রুদ্ধানাশ পর্যাপাসিতা। অজ্ঞাতং মানুষে লোকে ভবতো নাস্তি কিঞ্চন॥ ৫॥

11 30 11 39 11

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠ য়ে ভারত ভাৰদীপে অয়োণিং শোষধ্যায়ঃ ॥ ২৩ ॥

তত ইতি—সতাসদরঃ সত্যপ্রতিজ্ঞঃ ॥ ১ ॥ সমাঃ বর্ধাণ সন্ধ্রিরার্ধঃ ॥ ২॥ শরদেবিৎসরান্ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ত্বা ছুপানিতা নিতাং ব্রাহ্মণা ভরতর্ব ।।

বৈপায়নপ্রভ্রেয়া নারদশ্চ মহাতপাং ॥ ৬ ॥

যং সর্বলোকদারণি নিতাং সঞ্চরতে বলী ।

দেবলোকাল্ব হ্মলোকং গহার্বলিশারসামপি ॥ १ ॥

অমুভাবাংশ্চ জানাসি ব্রাহ্মণানাং ন সংশয়ং ।

প্রভাবাংশ্চ জানাসি ব্রাহ্মণানাং ন সংশয়ং ।

প্রভাবাংশ্চ বিশেষ ত্বং সর্বেষামের পার্থির ! ॥ ৮ ॥

ত্বমের রাজন্ ! জানাসি শ্রেয়ং কারণমের চ ।

যব্রেহ্মসি মহারাজ্য নিবাসং তত্র কুর্মাহে ॥ ৯ ॥

ইদং দৈতবনং নাম সরং পুণ্যজলোচিত্য ।

বহুপুপাকলং রম্যং নানাদ্বিজনিবেবিত্য ॥ ১০ ॥

যব্রেমা দ্বাদশ সমা বিহরেমেতি রোচয়ে ।

যদি তেই মুমতং রাজন্ ! কিমন্যং মন্যতে ভবান্?"—॥ ১১ ॥

যুধিটির উবাচ।

"মমাপ্রেত্ত অত্ত পার্থ ! স্বয়া যৎসমুদাহ্বতম্। গচ্ছামঃ পুণ্যবিখ্যাতং মহদ্যৈতবনং সরঃ"॥ ১২॥ বিশম্পায়ন উবাচ।

ততত্তে প্রয়য় সর্বে পাশুবা ধশ্মচারিণঃ। ব্রাহ্মণৈ বৃহুভিঃ সার্দ্ধং পুণাং দ্বৈত্বনং সরঃ॥ ১৩॥ ব্রাহ্মণাঃ সাগ্নিহোত্তাশ্চ তথৈব চ নিরগ্নয়ঃ। স্বাধ্যায়িনো ভিক্ষবশ্চ তথৈব বনবাসিনঃ॥ ১৪॥

॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ অন্তাবান্ কর্ত্ব্যাহকর্ত্ব্য বিষয়ান নিশ্চয়ান্, প্রভাবো নিশ্চয়েস্যাৎ প্রভাব: শক্তি ভেলসোঃ।" ইতি বিশ্বঃ ॥ ৮॥ জেরো মৌক্ষঃ, কারণং তৎসাধন্য ॥ ৯॥ ছৈতং—ছৌ শোকমোক্রো ইতো গতৌ যন্মাৎ তদ্বীতং দ্বীত মেব দ্বৈতং 'স্বাপ্তিক্রং, বনং জলং যান্মিন দ্বৈত্বনং পুণোন পাবনেন জলেন উচ্তং সম্বত্থ এতেন দ্বৈত্বন শন্মার্থ: স্কৃতিতঃ "উচ সম্বাদেয় দিবাদিঃ"॥১০॥ বিহরেম প্রীত্যানরেম॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥

ৰহবো ত্ৰাহ্মণা স্তত্ৰ পরিবক্ত যুধিষ্ঠিরম্। ততঃ সিদ্ধা মহাআন: শতশঃ সংশিতব্তা:॥ ১৫॥ তে যাত্বা পাগুবাস্তত্র বছভিত্র ান্সণৈঃ সহ। পুণ্যং দ্বৈতৰ্নং রুমাং বিবিশু র্ডরতর্ষভাঃ ১৬ ॥ # তৎ শালতালাম্মধ্কনীপ,-कप्रमुक्तं उर्जुन-कर्निक देतः। তপাত্যয়ে পুষ্পধরৈ রুপেত^, মহাবল । বাষ্ট্রপতি দদর্শ । ১৭ ॥ মহাক্রনাণাং শিখরেষু তস্থ্-म द्रांत्रभार वाह भूनीत्रष्ठः। ময়ুর-দাত্যুহ-চকোরসজ্বা,-স্তিম্মিন বনে বৰ্ছিণ-কোকিলা । ১৮॥ करत्रपृथिः मङ यूथेशानाः, মদেহিক টানা মচলপ্রভানাম। মহাত্তি যুথানি মহাদ্বিপানা ১, তিম্মন বনে রাষ্ট্রপতি দিশ্প ॥ ১৯॥ মনোরমাৎ ভোগবতী মুপেতা, পুতাত্মনাং চীরজটাধরাণাম। তিমানু বনে ধর্মান্ততাৎ নিবাসে, प्तर्म त्रिक्षर्थिशशान्त्वकान्॥ २ • ॥

॥ ১৫॥ যাত্বা গ্রা॥ ১৬ ॥ তপাতায়ে বর্ষাস্থা, মহাবলং মহাবনং দন্ত্যাদিরয়ং শব্দঃ, "দেবা বৈ বলেগাঃ পর্যপশ্মন্" ইতি বনে বলশব্দস্য প্রয়োগ
দর্শনাং॥ ১৭ ॥ ১৮॥ করেণুঃ হস্তিনী ॥ ১৯ ॥ ভোগবতীং সরস্বতীঃ নদীন্,
॥ ২০ ॥

* "তংশাল ভ্যান" ইতি দ পুস্তক:।
 † বন মিতি ক-ঘ। ধনমিতিচ কচিংভন্নচাক।

ততঃ স্যানাদ্বরুহ্ র জা, সভাতৃকঃ সজনঃ কাননং তৎ। বিবেশ ধর্মা স্থাবতা > বরিষ্ঠা-স্ত্রিবিষ্টপং শক্র ইবামিতৌজাঃ॥২১॥ তং সত্যসন্ধং সহিতাভিপেতৃ,-फिनुकार कार्रानिकार शाः। বনৌকস্কাপি নরেক্রসিণ্ছং, মনস্থিন ও ত পরিবার্য্য ভস্কুঃ ॥ ২২ ॥ স তত্র নিদ্ধানভিবাদ্য সর্বান্ প্রত্যক্তিতো রাজবদ্দৈববচ্চ। বিবেশ সাইৰ: সহিতো দ্বিজাগ্ৰ্য্যঃ, কুতাঞ্চল ধর্মভূতাং বরিষ্ঠঃ ॥ ২৩ ॥ সপুণ্যশীলঃ পিতৃৰন্মহাত্মা, তপস্থিভি ধর্ম্মপরৈ রূপেত্য। প্রতার্চিতঃ পুষ্পধর্মা মূলে, মহাক্রমদ্যোপবিবেশ রাজা ২৪॥ ভীমশ্চ কুষ্ণা চ ধনপ্লয়শ্চ, यस्मो ह एक हासुहता नरतन्त्रम् । বিমুচা বাহানবশাশ্চ দর্বের, ত্তোপতস্থ্রতপ্রবর্ধা:॥২৫॥

॥ ২১ ॥ চারণা: দেবগারলাঃ, িন্দাঃ মছর্ষঃ । ২২ ॥ ২৩ ॥ মছাজ্মঃ কদস্বঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥

লতাবতানাবনতঃ স পাগুবৈ,মহাদ্রনঃ পঞ্চতিরেব ধশ্বিভিঃ।
বভৌ নিবাসোপগতৈ শ্বহাত্মতি,শ্বহাগিরি ক্রিরণযুথপৈ রিব ॥২৬॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অর্জুনাভিগমন পর্বাণি দৈতবন
প্রবেশে চতুর্বিৎশতিতমোহধ্যায়ঃ॥২৪॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

তৎ কাননং প্রাপ্য নরেন্দ্র পুদ্রাঃ,
স্থোচিতাবাস মুপেত্য রুজ্ ম।
বিজহুরিন্দ্র প্রতিমাঃ শিবেষু,
সরস্বতীশালবনেষু তেষু ॥ ১ ॥
যতীংশ্চ রাজা স মুনীংশ্চ সর্বান্,
তিমিন বনে মূলফলৈ রুদ্দৈগ্রা।
বিজাতিমুখ্যানুষভঃ কুর্নাং,
সন্তর্পরামাস মহারুভারঃ ॥ ২ ॥
ইকীশ্চ পিত্রাণি তথা ক্রিয়াশ্চ,
মহাবনে বস্তাং পাগুরানাম্।

লতবতানাবনতঃ—বল্লীতস্কুভিরারতত্ত্বা নম্র:॥ ২৬ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বাণি নৈলক্ষীরে ভারত ভাবদীপে চড়ুর্ব্বিং শেহধ্যায়ঃ ॥ ২৪ ॥

তৎকানন মিত্যাদ্যপার দ্বরেন র্ছতেমাভ্যাৎ মার্কণ্ডের দাণ্ড বভাং ধর্মসাত্যাগো বাহ্মব ভক্তিশ কর্তব্যস্তাচতে, তৎকারন মিতিপাচে—তৎ বনং কারণং চিক্রীভিষাহেতুঃ, রুচ্ছু ংবনবাস সন্ধটন্ ॥ ১॥ ২॥ ইক্রীঃ দর্শ পোর্ণ মান্দায়াঃ, পিত্রাবি পিত

পুরোহিত স্তব সমৃদ্ধতেজা-শ্চকার ধৌম্যঃ পিতৃবন্ধুপাণাম্॥ ৩॥ অপেত্য রাষ্ট্রাদ্বসতাস্ত তেখা-মৃষিঃ প্রাণোহতিথি রাজগাম। তমাশ্রমং তীব্রসমূদ্বতেজা, মাৰ্কণ্ডেয়: শ্ৰীমতাং পাণ্ডবানামু॥ ৪॥ ত্যাগত জ্বিতছত শ্ৰপ্ৰভং, মহামনাঃ কুরুর্যভাে যুধিষ্ঠিরঃ। অপূজয়ৎ স্থুরঋষিমানবার্চিতং, মহামুনি হ হুপম-সত্ত্বীৰ্য্যবান্ ॥ ৫ ॥ म मर्काविएम् ने भेरी के किया कुछा के যুধিষ্ঠিরং ভীমদেনার্জ্জুনৌ চ। সংস্তা রাম মনসা মহাত্মা, তপস্বিমধ্যেহস্ময়তামিতৌজা:॥ ৬॥ তং ধর্মারাজো বিমনা ইবাত্রবীৎ, " সর্বে হ্রিয়া সন্তি তপস্থিনোহ্মী। ভবানিদং কিং স্ময়তীব হৃষ্ট,-স্তপস্থিনাৎ পশ্যতাং মা মুদীক্ষা?"—॥ १ ॥ मार्कटलम डेवाह। 'ন তাত। হৃষ্যামি ন চ স্ময়ামি, প্রহর্ষজো মাং ভল্পতে ন দর্প:। তবাপদ বুদ্য সমীক্ষ্য রামং,

পিতৃ যজ্ঞ দৰ্শশ্ৰাদ্বাদীনি ॥ ৩ ॥ রাষ্ট্রাৎ অপেত্য নির্গতা বনে বসতাং তীব্রং হঃসত্বং সমৃদ্ধং পৃদ্ধনঞ্জ তেজোযস্য ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ অন্মত বিস্মিত বান্ জহাস বা অপ্যান্ ॥ ৬ ॥ ক্রিয়া প্রাণস্ক্রা সক্ষোচন ॥ ৭ ॥ ৮ ॥

সত্যক্তং দাশর্থি স্বরামি॥ ৮॥

স চাপি রাজা সহ লক্ষণেন, বনে নিবাসং পিতুরেব শাসনাৎ! ধন্বী চরন্ পার্থ! মরৈর দুষ্টো, গিরেঃ পুরা ঋষ্যমুক্ত সানৌ ॥ ৯॥ সহস্রনেতপ্রতিমো মহাত্মা যমস্ত নেতা নমুচেশ্চ হন্তা। পিতৃৰ্নিদেশাদনঘঃ স্বধৰ্মং, বাস্প বনে দাশর্থিশ্চকার ॥ ১০॥ স চাপি শক্রন্য সমপ্রভাবো, মহামুভাবঃ সমরেম্বজেয়ঃ। বিহায় ভোগানচরন্বনেযু, নেশে বলস্যেতি চরেদধর্ম্য- । ১১॥ ङ्रशां•ाइः न⊺ভাগ-ভগীরথাদয়ো, মহীমিমাং সাগরান্তাং বিজিত্য। সভোন তেহপাজয়°স্তাত! লোকা,-লেশে বলসোতি চরেদধর্মায়॥ ১২॥ অলর্কমান্ত নরবর্যা! সন্তং, সত্যত্রত্রত কাশি-কর্ষরাজগ্। বিহায় রাজ্যানি বস্থুনি চৈব. নেশে বলস্যোত চরেদধর্ম্ম। ১৩। ধাতা বিধিয়ো বিহিতঃ পুরাবৈদ-ন্তং পুজয়ন্তো নরবর্য্য। সন্তঃ।

॥৯॥ সহস্র নেত্রঃ প্রতিমারপান্তরংযস্য "দেবানাম্যি বাসবং" ইত্যুক্তরাং, অত্তব যমস্থ নিয়ন্ত রপিনেতা নির্বাহকঃ, নতুচেন্চ হন্তা ইতি সর্বং ইন্দ্র কর্ম তদ্মেব কর্ম ইত্যুব্ধঃ॥১০॥তদেবাহ সচেতি — শক্রম্য সমপ্রভাবঃ কংমপ্রভাবঃ শক্রম পর্যায়ঃ" সর্বনামা প্রভাবঃ শক্তিঃ অভ্যতাবে! ভাবস্থ চনং বিদ্যা বলমিত্যুর্থঃ, শক্রম্য প্রভাবাদিক মর্মেব, অভোগে সমরেম্ব-জেয়ঃ,তন্মাদিতি সর্বতাহধ্যাহারঃ,বল্ম্য বহুসামর্থাস্য ইবে প্রভাবামি ইতি হেতোর ধর্মং ন চরেং, শক্তো সত্যাং ধর্মমেবাচরে মত্ত্রর্থ মিত্যুর্থঃ ॥ ১১॥ ১২॥ ১০॥ ধ্রেন ইবেন, প্রবাবে বেদ বাক্রা বিহিত্যে বিধি র্নিহোল্ডাদিঃ

^{* &}quot;নৃপাশ্চ" ইত্ক-ছ।

সপ্তর্যয়ঃ পার্থ ! দিবি প্রভান্তি,

(नत्म वलरमाणि ठरतम्थर्माग्—॥ ১8°॥

মহাবলান পর্বে তকুট মাত্রান্, বিষাণিনঃ পঞ্চ গজানরেক্র!। স্থিতান্নিদেশে নরবর্যা! ধাতু --

र्तिष वलरमा कि हरत्र वर्षा मु-॥ ১৫ n

সর্ববাণি ভূতানি নরেক্র। পশ্য, তথা যথাবদ্বিহিত ে বিধাতা। স্বযোনিতঃ কর্ম্ম সদা চরন্থি,

तिर्भ वलरमाजि हरतम्थर्माम्—॥ ১७ !

সভ্যেন ধর্মোণ মধার্হ রুজ্ঞা ক্রিয়া তথা সর্ব্বভূতান্যতীত্য। যশক তেজক তবাপি দীপ্তং,

বিভাবদোর্ভাক্ষরস্যেব পর্থে । ১৭ ॥

যথাপ্রতিজ্ঞঞ্মহামুভাব! কুচ্ছং বনে বাস্মিমং নিরুষ্য। ততঃ শ্রেরং তেজসা তেন দীপ্তা.-

মাদাস্যদে পার্থিব! কৌরবেভ্যঃ"—॥ ১৮ ঃ

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ত মেবমুক্তা বচনং মহর্ষি,-

স্তপাস্বমধ্যে সহিতং সুহান্তিঃ-

আমন্ত্র্য ধৌম্যং সহিত্যংশ্চ পার্থাং.-স্ততঃ প্রতম্থে দিশমুক্তরাং সং॥ ১৯॥

इंज्यातगारक পर्वाव अर्ज्जुनाजिनमन পर्वाव देवजनश्रातरम পঞ্বিংশতিতমোহধ্যায়ঃ॥২৫॥

॥ ১৪ ॥ পণবের্ণ বলবানম্মীতি দর্পেণাধর্মংন চরন্তীত্যাহ মহাবলানীতি —" বিষাণং দন্তশৃন্ধরে। " ইতিকোশঃ ॥ ১৫ ॥ এবং সপ্রদিন্ধপি জের-মিত্যাহ সৰ্ধানীতি—স্বথোনিতঃ জন্মাহ্যুরপন্ ॥ ১৬॥ বিভা প্রভা দৈব বস্তু-বিতং ষ্মা । ১৭॥ আদাসানে প্রছীবাসি ॥ ১৮ ॥ ১৯॥

> ইত্যারণাকে পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে शक्किविश्राक्षाम् ॥ २०॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

বসৎস্থ বৈ দ্বৈতবনে পাগুবেষু মহা ৎস্থ। অনুকীর্ণ মহারণ্যং ব্রাহ্মণৈঃ সমপদ্যত। ১॥ ঈর্ঘ্যমাণেনু সক্ততং ব্রহ্মঘোষেণ সর্ব্বশং। ব্রহ্মলোকসমং পুণ্য মাসীদ্বৈত্তবনং সরঃ॥২॥ यजूषाभूठां भाषाक शम्यान देशव मद्यानः। আগীতুচ্চাৰ্য্যমাণানাপ নিশ্বনো হৃদয়ঙ্গমঃ॥ ৩ ॥ জ্যাঘোষশৈচৰ পাৰ্থ,নাং ব্ৰহ্মঘোষশচ ধীমতাম্। সংস্ফাং ব্রহ্মণা ক্ষত্রণ ভূয় এব ব্যব্যাচত ॥ ৪॥ অথাত্রবীদ্বকো দাল্ভ্যো ধর্ম্মরাজং যুধিষ্ঠিরম্। সন্ধ্যা^কৌত্তেয় মাসীন মূষিভিঃ পরিবারিতম্॥ ৫॥ পশ্য দ্বৈতবনে পার্থ! ব্রাহ্মণানাং তপস্থিনাম্। হোমবেলাং কুরুজেষ্ঠ ! সংপ্রজ্বলিতপাবকাম্॥ ৬॥ ় চরন্তি ধর্মং পুণ্যেহস্মিংস্কুরা গুপ্তা ধৃতত্ততাঃ। ভূগবোহঙ্গিরসকৈব বাশিষ্ঠাঃ কাশ্যপৈঃ সহ ॥ ৭॥ আগস্ত্যাশ্চ মহাভাগা আত্রেয়াশ্চোক্তমন্ত্রতাঃ। সর্বিদ্য জগতঃ শ্রেষ্ঠা ব্রাহ্মণাঃ সঙ্গতান্ত্রা ॥ 🕨 ॥ इं पञ्च वहन १ भार्थ ! मृशूष भारता सम। ভ্রাতৃতিঃ সহ কৌন্তেয়। যত্ত্বাং বক্ষামি কৌরব!॥ ৯॥ ব্ৰহ্মকভেণ সংস্ফুৎ ক্ষপ্ৰহ্মণা সহ। উদীর্ণে দহতঃ শত্র বনানীবাগ্নিয়ারুতৌ ॥ ১০ ॥ নাব্রাহ্মণস্তাত! চিরং বুভূষে দিছেনিমং লোক মমুঞ্চ জেতুম্। বিনীতধর্মার্থমপেতমোহং,

বসংস্থিতি—অভ্কীর্ণ ব্যপ্তিং॥ ১॥ ২॥ গদ্যানাং ব্রাক্ষণ ব্যক্ষানাৎ প্রাক্ষরাদিনিয়ম হীনানাম্॥ ৩॥ ৪॥ সন্ধ্যাং উপাস্যেতি শেষঃ॥ ৫॥ ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ অবান্ধাে ব্যক্ষণ হীনো নৃপঃ রুভূষেং ঐশ্ব্য লক্ষা বিজং মুদতি নৃপঃ সপত্মান্॥ ১১॥
চরলৈঃশ্রেরসং ধর্মাণ প্রজাপালন-কারিতম্।
নাধ্যগচ্ছলির্লোকে তীর্থমন্যত্ত বৈ বিজাৎ॥ ১২॥
অন্যুন মাসীদস্করস্য কামে বৈরোচনেঃ প্রীর্না চাক্ষরাসীৎ।
লক্ষ্য মইং ব্যাক্ষাসংপ্রয়োগা,-

ত্তেম্বাচরন্ জুইসথো ব্যনশ্রত। ১৩॥ নাব্রাহ্মণং ভূমিরিয়ং সভূতি,

ব্ধনং দ্বিতীয়৲ ভজতে চিরায়। সমুদ্রনেমি র্মতে তু তব্দ্যৈ

যং ব্রাহ্মণঃ শাস্তি নরৈ বিনীতম্॥ ১৪॥
কুঞ্জরন্থের সংগ্রামে পরিগৃহাঙ্কুশগ্রহম্।
ব্রাহ্মণৈরিপ্রহীণস্য ক্ষজ্রস্য ক্ষীয়তে বলম্॥ ১৫॥
ব্রাহ্মণারুপমা দৃষ্টিঃ ক্ষ্যুক্ত মপ্রতিমং বলম্!
তৌ যদা চরতঃ সার্দ্ধি তদা লোকঃ প্রসীদতি॥ ১৬॥
যথা হি স্থমহানগ্রিঃ কক্ষং দহতি সানিলঃ।
তথা দহতি রাজন্যো ব্রাহ্মণেন সমং রিপুম্॥ ১৭॥
ব্যাহ্মণেষর মেধারী বৃদ্ধিপর্য্যেষণঞ্চরেং।
অলক্ষ্যা চ লাভায় লক্ষ্য পরির্হ্ময়ে॥ ১৮॥
অলক্ষাভায় চ লক্ষ্ময়ে যথাহ তীর্থপ্রতিপাদনায়।
যশিষ্কিং বেদবিদ্ধ বিপশ্চিতং।

বছশ্রতং ব্রাহ্মণমেব বাসয়—॥ ১৯॥

মিন্ডেং তদুসাকীতোপি জারো তুল ভ ইতার্থ:, বিনীতৌ সমাক শিক্ষিতৌ ধর্মার্থী যেন॥ ১১ তীর্থং উপায়ন্॥ ১২ ॥ বৈরোচনে: বলে:॥ ১৩॥ ১৪॥ অঙ্কৃশগ্রহং অঙ্কুশেন নিগৃত্বাভিতং পরিগৃহা বর্জয়িত্বা 'পরি বর্জনে"॥ ১৫॥ ॥ ১৬॥ ১৭ বুদ্ধিপর্যে, বাং বুদ্ধে: সাকল্যেন সংগ্রহণম্॥ ১৮॥ যথার্ছতীর্থে ব্রাহ্মণেষ্ত্রমা রৃত্তি স্তব নিত্যং যুধিন্তির!।
তেন তে সর্বালোকেষু দীপাতে প্রথিতং যশং"॥ ২০॥
বৈশন্দারন উবাচ।
ততন্তে ব্রাহ্মণাঃ, সর্বের বকণ দাল্ভ্য মপুজয়ন্।
যুধিন্তিরে স্তুর্মানে ভ্রঃ স্থমনসোহভবন্॥ ২১॥
বৈপারনো নারদশ্চ জামদগ্যঃ পৃথুপ্রবাঃ
ইন্দ্র্যুর্মো ভালুকিশ্চ কৃতচেতাঃ সহস্রপাৎ॥ ২২॥
কর্ণপ্রবাশ্চ মুঞ্জশ্চ লবণাশ্বন্দ কাশ্যপঃ।
হারীতঃ স্থলকর্ণশ্চ প্রায়েবেশ্যোহথ শৌনকঃ॥ ২০॥
কৃতবাক্ চ স্থবাক্ চৈব রহদশ্যে বিভাবস্থঃ॥
উর্দ্ধুরেতা র্যামিত্রঃ স্থহোত্রো হোত্রবাইনঃ। ২৪॥
এতে চান্যে চ বহবো ব্রাহ্মণাঃ সংশিত্রতাঃ।
অঙ্গাতশক্র মানর্চ্যু পুরন্দর মিবর্ষয়ঃ॥ ২৫॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি অর্জ্নাভিগমনপর্বাণি হৈত্বনপ্রবেশে
যত্ বিংশভিত্রমোহধ্যায়ঃ॥ ২৬॥.

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততো বনগতা: পার্থাঃ সাযাছে সহ রুঞ্রা। উপৰিক্টাঃ কথাশ্চকু দুঃখশোকপরায়ণাঃ॥ >॥

ষধাযোগ্য পাত্তে প্রতি পাদনার দানার ॥ ১৯ ॥ বৃত্তি বর্তনং ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৫ ॥ ইত্যারগাকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠারে ভারতভাব দীপে বড়বিংশোহধায়ঃ ॥ ২৬ ॥

ততইতি—ইতোহধানাস্য তাৎপর্যাং সুশীলাপি স্ত্রী ধর্মং তাাজয়তি কিমৃত ইতরা ইতি ॥ ১ ॥ প্রিয়া চ দর্শনীয়া চ পশ্ভিতা চ পতিব্রতা। অথ কৃষ্ণা ধর্মান্স মিদ্দ বচনমত্রবীৎ—॥২॥ ক্রোপত্যবাচ।

"ন নূন< তম্বা পাপি**ন্তা তুঃখ-মম্মান্ত কিঞ্চন** ব বিদ্যতে ধার্ত্তরা**ষ্ট্রস্থা নৃশংসম্খা তুরাত্মন**ঃ॥ ৩॥ যন্ত্রাপ রাজন্। ময়া সান্ধ মজিনৈঃ প্রতিবাসিতম্। বনং প্রস্থাপ্য ছুফীত্মা নাম্বতপ্যত ছুর্ম্মতিঃ॥ ৪ ॥ আয়েদ क्रमः स्नः उत्र उत्र प्रकृत्कर्मनः। যস্ত্রাং ধর্ম্মপরং জ্যেষ্ঠ কক্ষাণ্যশ্রাক্যন্তদা।। ৫।। স্বর্থোচিত মতুঃখার্হ প তুরাত্মা দ স্বহৃদ্যাণঃ। ঈদুশং ছুঃখমানীয় মোদতে পাপপুৰুষ:। ৬॥ চতুর্ণামের পাপানা মত্রং ন পতিত তদা। ত্বি ভারত! নিষ্টুত্তে বনারাজিনবাসসি॥ १॥ তুর্যোধনন্ত কর্ণজ্ঞ শকুনেশ্চ তুরাজ্মনः। তুল্ বিস্থা বে প্রাজন । তুঃশাসনক্ষ চ ॥ ৮ ॥ ইতরেষাম্ভ সর্বেষাং কুরণাং কুরুসভ্ষ।। তুঃখেনাভিপরীতানাং নেত্রেভ্যঃ প্রাপতজ্ঞলম্॥ ১॥ ইদঞ্চ শরনং দৃষ্টা যক্ষাসীত্তে পুরাতনম্। শোচামি ত্রাং মহারাজ। তুথানহ ং স্থােচিতম্॥ ১০ ॥ দান্তং যচ্চ সভামধ্যে আসন সরত্বভূষিতম্। দৃষ্ট্। কুশর্ষীঞ্মোন শোকে। মান রুক্ষরত্যরম্॥ ১১॥

॥२॥ অন্যাস ড়ংখিতেখিতি শবং॥ ৩॥৪॥৫॥ আনীর প্রাপিষ্য॥ ৬॥ অন্তং নেত্রজন্ম ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ দান্তং গঞ্জদন্ত মরং, কুণর্বীং(বৃৰীং ব্তিযোগ্যেমাননং) কুশাসনং, কন্ধরতি আর্গোতিমোহ্যতীতার্থঃ॥ ১১॥

যদপশ্যং সভায়া বুং রাজভিঃ পরিবারিতম্। তচ্চ রাজন্নপশ্যস্ত্যাঃ কা শাস্তিক্দয়স্য মে!—॥ ১২॥ या जारः हन्मनामिक्ष मश्रमा प्रश्रावक्रम्। সা ত্বাপ পর্মলাদিশ্বং দৃষ্টা মুহামি ভারত। ॥ ১৩॥ যা ত্বাহন কৌশিকৈ ব্ৰিক্তে: শুলৈ রাচ্ছাদিতন পুরা। দৃষ্টবত্যাম রাজেন্দ্র । সা স্থাং পশ্যামি চীরিণম্॥ ১৪॥ যক্ত তদ্রুক্সপাত্রীভি ত্রাক্সণেত্যঃ সহস্রশঃ। ব্রিয়তে তে গৃহাদন্ধ সংস্কৃতং সার্বকামিকম্॥ ১৫॥ যতীনাম গৃহাণাং তে তথৈব গৃহমেধিনাম্। দীয়তে ভোজনং রাজনতীব গুণবং প্রভো! ॥ ১৬॥ সৎক্তানি সহস্রাণি সর্বকামে: পুরা গৃহে। স্বাকাদেঃ স্থৃবিহিতৈ র্দপুজয়থা ছিজান্॥ ১৭ ॥ তচ্চ রাজন্নপশ্যন্ত্যাঃ কা শান্তিক্ দয়স্য মে !—। যতে ভাতৃন্ মহারাজ! মুবানো মৃষ্টকুগুলাঃ ॥ ১৮ ॥ । অভোকয়ন্ত মিফালৈ: স্থুদাঃ পরম সংস্কৃতিঃ। সর্ব্বাংস্তানদ্য পশ্যামি বনে বন্যেন জীবিনঃ ॥ ১৯ ॥ অচুঃখাহান্ত্রহাক্ত । নোপশামাতি মে মন:। जीयरमन प्रियक्षां प्रकृतिकर वनवामिनम् ॥ २०॥

॥ ১২॥ তাহং তামহং, আদিয়ং লিশুন্ ॥১৩॥ কৌশিকৈঃ কোশজৈঃ বজৈঃ
॥ ১৪॥ ১৫॥ অগৃহানাং এক চারিণাম্॥ ১৬॥ সহআণি সহস্র সংজ্ঞানি
সত্ত পরিবেষণ পাতাণি "তেষাং যৎসহত্তং সত্ত পরিবেষণং ততে
অর্বান্তো দাল্যন্তি" ইতি বহুত তাক্ষণে দর্শনাং। সংক্রতানি প্রত্যাহ
মুশ্বোগাং সন্তানিতানি, সর্ব কামেঃ কাম্যমানে রলিঃ, যংয়েঃ সহত্তঃ
সাক্ষেঃ কামে মালার্থে ছিজান্ অপুজয়ধাঃ—বনেতু এক্মেব স্থ্যদত্তং
পরিবেষণ পাত্তমিত্যর্থঃ॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥

ধ্যায়ত: কিপ ন মন্যু স্তে প্রাপ্তে কালে বিবর্দ্ধতে ?—। ভীম্দেন্ হি কর্মাণি স্বয়ং কুর্বাণ মচ্যুত্ম্॥ २১॥ স্থাই ^ ছঃখিত পদুষ্ট্বা কন্মান্মন্তা ন বৰ্দ্ধতে ?—। সংকৃতং বিবিধৈ যানৈ কাক্সে ক্লচাবচৈত্তথা ॥ ২২ ॥ তত্তে বনগত পৃষ্ণু। কন্মান্মন্ত্যু ন বৰ্দ্ধতে ?— : অয় কুরুনু ণে দর্কান্ হস্ত মুৎসহতে প্রভু:॥ ২৩॥ ত্বৎপ্রতিজ্ঞাণ প্রতীক্ষণস্ত সহতেহয়ণ রুকোদরঃ। (यार्क्क्राननाक्क्र्नखला! विवाह वहवाहना॥२८॥ শরাবমর্দে শাঘ্রত্বাৎ কালান্তক্যমোপম:। ষদ্য শস্ত্রপ্রতাপেন প্রণতাঃ সর্ব্বপার্থিবাঃ॥২৫॥ যজ্ঞে তব মহারাজ। দ্রাহ্মণানুপতস্থিরে। তমিমং পুরুষব্যাত্রং পুঞ্জিত দেবদানবৈ: ॥ ২ ॥ ধাারন্তমর্জ্বং দৃষ্টৃ৷ কন্মান্তাজন কুপানি ?—। দৃষ্টা বনগতং পার্থ মতঃখাহ - স্বথোচিতম্ ॥ ২৭ ॥ নচ তে বৰ্দ্ধতে মন্ত্যু স্তেন মুহামি ভারত!। ट्या (प्रवारण मेलू। या। ००० मर्लार टेण्डकत्र था २० व তং তে বনগতং দৃষ্ট্ব। কন্মান্মন্ত্র। ন বর্দ্ধতে ?—। (या यारेन त्रष्टुंगकारेत इरेग्न नारेनच्छ महकूणः ॥ २२ ॥ প্রসম্থ বিস্তান্যাদন্ত পার্থিবেভাঃ পরন্তপঃ। ক্ষিপত্যেকেন বেগেন পঞ্চ বাণশতানি যঃ॥ ৩०॥ তং তে বনগতং দৃষ্ট্বা কন্মান্মন্তা ন বৰ্দ্ধতে ?—। শ্যামং বৃহস্ত তরুণ চর্ম্মিণামুক্তম রণে॥ ৩১॥

মহাঃ তেল্ধং॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ অর্জুনেন কার্তবীর্বোণ ॥ ২৪ ॥ শরাবমর্কে বাণ পাতে ॥ ২৫ ॥ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ আদিত আতিবান্ ॥ ৩০ ॥ চর্মিণাং খড়া চর্ম ধরাণাম্॥ ৩১ ॥

নকুল > তে বনে দৃষ্ট্ৰা কম্মান্মন্ত্ৰাৰ্ম বৰ্দ্ধতে ১—। पर्मनोग्नथ भ्रथ गाजीशुक्तः युधिष्ठितः ॥ '१२ ॥ महानवः वत्त पृष्ठे। कन्मां क्रमिन शार्थित!। নকুলং সহদেবঞ্ল দৃষ্ট্বা তে ছুংখিতাবুভৌ। ৩০॥ অতু:খার্হো মনুষোক্র ! কমান্মন্তা র্ন বর্দ্ধতে ?—। ক্রপদস্য কুলে জাতাং স্বাং পাজ্যোর্মহাত্মনঃ॥ ৩৪॥ ধৃষ্টগ্রাম্বর ভূমিনীং বীরপত্নী মনুত্রতাম। মাং বৈ বনগতাং দুষ্টা কন্মাৎ ক্ষমদি পাৰ্থিব।॥ ৩৫॥ মূনঞ্চ তব বৈ নান্তি মন্ত্যু র্ভরতসন্তম!। यर्ख लाज्र म प्रारंभव मुख्य न वायर्ज मनः—॥ ७७ ॥ ন নির্মানুঃ ক্ষজ্রিয়োহস্তি লোকে নির্বাচনং স্মুঙ্গ। তদদ্য ত্বরি পশ্যামি ক্ষজ্রিয়ে বিপরীতবং ॥ ৩৭ ॥ যোন দর্শয়তে তেজঃ ক্ষজ্রিয়ঃ কাল আগতে। সর্বাভূতানি তৎ পার্থ! সদা পরিভবস্কাত॥ ৩৮॥ তত্ত্বা ন ক্ষমা কাৰ্য্যা শত্ৰ নু প্ৰতি কথঞ্চন। তেজদৈব হি তে শক্যা নিহন্তং নাত্র সংশয়:। ৩৯। তথৈব যঃ ক্ষমাকালে ক্জিয়ো নোপশাম্যতি। অপ্রিয়ঃ সর্বাস্তানা∿ সোহমুত্রেহ্ চ নশ্যতি"—॥ ৪০ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অর্জুনাভিগমনপর্বাণি দ্রৌপদীপরি-তাপবাক্যে সপ্তবিংশতিতমোহধ্যায়:॥ ২৭॥

॥ ৩২॥ ৩৩॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬॥ নির্বাচনং ক্ষাত্রের শব্দস্য ক্ষরতে হিন জীতিকতা মিতি॥ ৩৭॥ হিংজারং নিক্ষ্য মিতিচেং ?—ততাছ যো নেতি —তেজঃ ক্রোধঃ॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ৪০॥ •

> ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈল কণ্ঠীয়ে ভারতভাব দীপে সপ্তবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ২ १ ॥

त्वीभद्दानाह।

ত্তাপুদাহরন্তীম মিতিহাস পুরাতনম্। প্রাহ্লাদস্য চ সংবাদং বলে বৈরোচনস্য চ । ১ ॥ অস্থরেক্রং মহাপ্রাক্তং ধর্মাণামাগতাগমম্। , বলিঃ পপ্রচ্ছ দৈত্যেক্রণ প্রহ্লাদং পিতরণ পিতৃঃ—॥ ২ ॥

"ক্ষমা সিচ্ছেরদী তাত! উতাহো তেজ ইত্যুত।
এতকো সংশরং তাত! যথাবছু হি পৃচ্ছতে—॥ ৩॥
শ্রেয়ো যদত্ত ধর্মজ্ঞ ! বু হি মে তদসংশরম্।
করিষ্যামি হি তৎ সর্বাপ যথাবদমুশাসনম্"॥ ৪॥
তামে প্রোবাচ তৎ দর্শমেবং পৃষ্টঃ পিতামহঃ।
দর্শবিশ্চরবিৎ প্রাক্তঃ সংশরং পরিপৃচ্ছতে—॥ ৫॥
প্রশাদ উবাচ।

নে শ্রেষ্ণ সতত তেজা ন নিতাং শ্রেষ্ণী ক্ষমা।
ইতি তাত! বিজানী ছি দ্বামেতদসং শ্রম্॥ ৬॥
যো নিতাং ক্ষমতে তাত! বহুন্ দোষান্ স বিন্দৃতি।
ভূত্যাঃ পরিভবস্তোন মুদাসীনাস্তথারয়ঃ॥ ৭॥
সর্বভূতানি চাপ্যাসা ন নমস্তে কদাচন।
তন্মান্নিতাং ক্ষমা তাত। পশ্তিতৈ রপবর্জ্জিতা #॥ ৮॥
অবজ্ঞায় হি ত ভূত্যা ভজস্তে বহুদোষতাম্।
অদাতুঞ্গাস্য বিস্তানি প্রার্থরস্তেহপ্পচেতসং॥ ৯॥

আরাপীতি— । ১ ॥ আগতাগমং প্রাপ্তরহস্যন্ । ২ ॥ ৩॥ শেকত রন্। অর ক্মাতেজসে। ম্ধো ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ অস্য এনন্ ॥ ৮ ॥ ॥ ৯ ॥

^{*} অপবাদিতা ইতি ক ঘ পুস্তকো।

यान- वञ्चागालकातान् वमनानग्रमनानि ह। ভোজনান্যথ পানানি সর্বোপকরণানি চ ॥ ১০ ॥ व्याननीत्रविधक्तका यथाकाम मरहज्यः। প্রদিক্তানি চ দেয়ানি ন দত্যু র্ভর্কুশাসনাৎ ॥ ১১ ॥ ন চৈনং ভর্তৃপূজীভিঃ পূজয়ন্তি কথঞ্চন। অবজ্ঞানং হি লোকেহাম্মনু মরণাদপি গহিতিম । ১২ ॥ ক্ষমিণং ভাদৃশং তাত। ব্রুবন্তি কটুকান্যপি। প্রেব্যাঃ পুজাশ্চ ভূত্যাশ্চ তথোদাসীনরুত্তয়ঃ॥ ১৩॥ অথাস্য দারানিচ্ছি পরিভুয় ক্ষমাবতঃ। দারাশ্চাস্য প্রবর্ত্তম্ভে যথাকাম মচে তসঃ॥ ১৪॥ তথা চ নিতামুদিতা যদি নাম্পমপীশ্বরার। দণ্ড মহ ন্তি ছুষ্যান্তি ছুফাশ্চাপ্যপকুরুতে॥ ১৫॥ এতে চান্যে চ বহুবো নিত্যৎ দোষাঃ ক্ষমাবতাম্। অথ বৈরোচনে ! দোষানিমানু বিদ্ধ্যক্ষমাবতাম্—॥ ১৬॥ অস্থানে যদি বা স্থানে সতত> রজসা রুত:। কুছো দণ্ডান প্রণয়তি বিবিধান স্বেন তেজসা ॥°১৭ ॥ মিত্রৈঃ সহ বিরোধঞ্চ প্রাপ্পেতে তেজসা রুতঃ। আপ্নোতি দ্বেষ্যতাঞ্চৈব লোকাৎ স্বজনতন্ত্রথা । ১৮॥ সোহবমানাদর্থহানি মুপালন্ত মনাদরম। সন্তাপিৰেবমোহাংশ্চ শত্রংশ্চ লভতে নরঃ॥ ১৯॥

॥ ১০॥ অধিকৃতাঃ অনুপানাল্দংরক্ষণে নিযুক্তাঃ, প্রদিকীনি ইদমধ্যে দেরমিত্যক্তাপিতানি ॥ ১১॥ এনং ক্ষমিনং, ভতুপুর্রাভিঃ আ্যুচিত্রানেন ॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ নিত্যমুদিতাঃ নিত্যং কোলাকাত্যংসবপরাঃ
॥ ১৫॥ ১৬॥ তেরুদা ক্রোবেন ॥ ১৭॥ ১৮॥ উপলেস্থং ধিকার্॥ ১৯॥

क्तिथाक श्रामञ्जूरवायु विविधान् श्रुक्तरवानशाएक। ভ্ৰশ্বতে শীঘ্ৰমৈশ্ব্যাংশ প্ৰান্তেঃ স্বন্ধনাদপি ॥ ২ ० ॥ যোহপকত ৃংশ্চ হস্তুংশ্চ তেজ সৈবোপগছতি। তস্মাতু ছিজতে লোকঃ সর্পাছেশ্মগতাদিব ॥ ১১ ॥ যশাচুদ্ধিজতে লোকঃ কথং তস্য ভবো ভবেৎ ?—। অন্তরং তত্ত দৃষ্টৈ ব লোকো বিকুক্সতে ধ্রুবম্ ॥ ২২ ॥ তশানাত্যুৎস্বজেজেজা ন চ নিত্য স্মুত্তবে । কালে কালে ভু সংপ্রাপ্তে মৃতুন্তীক্ষোহপি বা ভবেৎ। ২৩। কালে মৃত্র্যো ভবতি কালে ভবতি দারুণঃ। স বৈ স্থথ মবাপ্পোতি লোকেই মুন্মিনিইইব চ॥ ২৪॥ कमोकालाः ख वक्गामि मृग् (म विखटतन छान्। ষে তে নিত্য সসংত্যজ্যা যথা প্রান্তর্শ্বনীয়িণঃ॥ ২৫॥ शूर्व्वापकाती यट्ड मान्यतार्थ भतीयमि । উপকারেণ তত্ততা ক্ষন্তব্য মপরাধিনঃ ॥ ২৬ ॥ অবুদ্ধিমাশ্রিতানাস্ত ক্ষন্তব্য মপরাধিনাম্। নহি সর্বাত্র পাণ্ডিত্যং স্থলভৎ পুরুদ্বেণ বৈ॥ ২৭ ॥ #অথ চেং বুদ্ধিজং কৃত্বা ত্ৰুয়ুন্তে তদবুদ্ধিজম্। পাপোন্ স্বম্পেহপি তান্ হন্যাদপরাধে তথানৃজুন্॥ ২৮॥

॥২০॥ উপকত ৄন্ইতিচ্ছেদঃ, সদ্ধিরার্ধঃ, উপকর্তৃন্কোশানিরদ্ধি করান্, ছস্তৃন্ চৌরান্॥ ২১॥ ভবঃ ঐশব্যং, অন্তরংচ্ছিদ্রেং, বিকুক্তে প্রথমতি ॥২২॥২০॥ ॥ ২৪॥ অসন্ত্যদ্যাঃ ক্রোধেনানতি ক্রমণীয়াঃ॥২৫॥ পূর্বেষাং পূর্বেকা-দেবা উপকারী উপকর্তা॥ ২৬॥ অবৃদ্ধিং মৌতান্॥ ২৭॥ ২৮॥

^{*} পৰুষোদয়ান্ ইতি কঃ। ' অংথ যে বুদ্ধি জং ইতি ক পুস্তকে পঠাতে ।

সর্ববৈদ্যকোহপরাধন্তে কন্তব্যঃ প্রাণিনো ভবেৎ। দ্বিতীয়ে সতি বধ্যস্ত স্বম্পেইপাপকতে ভবেং॥২৯॥ অজানতা ভবেৎ কশ্চি দপরাধঃ ক্বতো যদি। ক্ষুবামেব তুস্থান্তঃ স্থুপরীক্যু পরীক্ষয়া॥ ৩०॥ মৃত্রনা দারুণং হব্তি মৃত্রনা হন্তাদারুণম্। নাদাধ্য~ মূদুনা কিঞ্চিত্তস্মান্তীব্রতর্ মৃদু ॥ ৩১॥ (मनकारनो उ मश्टा वनावन मथायानः। নাদেশকালে কিঞ্জিৎ স্যাৎ দেশকালৌ প্রতীক্ষতাম ॥ তথা লোকভয়াচৈচৰ ক্ষন্তব্য মপ্রাধিনঃ॥ ৫২॥ এত এবন বিধাঃ কালাঃ ক্ষনায়াঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ। অতোহন্যথানুবৰ্ত্ৎস্থ তেজসঃ কাল উচ্যতে—॥ ৩৩॥ তদহং তেজসঃ কালং তব মন্যে নরাধিশ।। ধার্ত্রাষ্ট্রেষ ল্বেষ সততঞ্পকারিষ ॥ ৩৪ ॥ ন হি কশ্চিং ক্ষমাকালো বিদ্যতেইদ্য কুৰুন্ প্ৰতি। তেজসন্চাগতে কালে তেজ উৎঅফ মর্হসি॥ ৩৫॥ মৃত্বুৰ্ভবত্যনুজ্ঞাত ন্তীক্ষাতুদ্বিজতে জনঃ। কালে প্রাপ্তে দ্বরপ্তৈতদেবা বেদ স মহীপতিঃ",॥ ৩৬॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অর্জ্জনাতিগমনপর্বাণি দ্রৌপদীবাক্যে অফাবিংশতিতমোহধাায়: ॥ ২৮॥

অপরতে অপকারে॥ ২৯॥ ৩০ ॥মূহনা সামা। ॥ ৩১॥ সামাপি দেশকান:।
পেক্ষয়ৈব কর্দ্তব্য মিতানছ দেশেতি—॥ ৩২॥ ৩৩॥ ৩৪ উৎভ্রন্ত : প্রয়ে জুন্। ৩৫॥ ৩৬॥

> ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলফন্টীরে ভারতভাবদীপে অফাবিংশোহধানয়: ॥ ২৮ ॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

"ক্রোধা হন্তঃ অনুষ্যাণাং ক্রোধো ভাবয়িত। পুনঃ। ইতি বিদ্ধি মহ প্রাজ্ঞে! ক্রোধমুলৌ ভবাভবৌ । ১॥ যে হি সংহরতে ক্রোধং ভব স্তদ্য স্থূপোভ্নে।। য়ং পুনঃ পুরুষঃ ক্রেধিং নিত্যং ন সহতে শুভে!; তস্যাভাবায় ভবতি ক্রোধঃ পরমদঃরুণঃ ॥ ২॥ ক্রেধিমূলো বিনাশো হি প্রজানা মিছ দুশ্যতে। তৎকথং মাদৃশঃ ক্রোধ মুৎস্কেল্লোকনাশনম্ ? ।। ৩॥ কুদ্ধঃ পাপ - নরঃ কুর্যাৎ কুদ্ধো হন্যাদারনপি। কুন্ধঃ পরুষয়া বাচা শ্রেয়সোহপ্যবমন্যতে। ৪। বাচ্যাবাচ্যে হি কুপিতো ন প্রজানাতি কহিচিৎ। ন্;কাৰ্য্যমন্তি ক্ৰুদ্ধস্য নাবাচ্যং বিদ্যতে তথা।। ৫॥ হিংস্যাৎ ক্রোধাদবধ্যাংস্ত বধ্যান্ সংপূজয়ীত চ। আত্মানমপি চ কুকঃ প্রেষয়েদ্বমসাদনম্ । ৬ ॥ এতান্ দোষান্ প্রপশ্যন্তি জিত: ক্রোধো মনীবিভি:। ইচ্ছদ্তিঃ প্রমং শ্রেষ ইহ চামুত্র চোত্তমম্॥ ৭ ॥ ত ~ ক্রোধ শু বৃদ্ধিত শু ধীরৈঃ কথম স্মৃত্তিধ শু রেৎ ?—। এতদ্রৌপদি! সন্ধায় ন মে মন্ত্রাঃ প্রবর্ধতে —॥ ৮॥ আত্মানঞ্চ পরাংকৈত তায়তে মহতো ভয়াৎ। তুধ্যন্ত মপ্রতিকুধান্ ধ্যোরেষ চিকিৎসক: ॥ ই ॥

কোধ ইতি—পরৈরপক্তা আতিংশেদি পিডাঃ সামর্থাবন্তোপি সতঃ
ক্ষামেব প্রায়ন্ত ইত্যধার তাৎপর্যান্, ভাবরিতা বন্ধরিতা জিতঃ স্রিতি
শেষঃ ॥ ১ ॥ লোক আতা অর্গো বা ভ্রাণকন্ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ তদেবাই কুমইতি
—প্রের্সঃ প্রেচান্ প্রেরোপি প্রাপাই ত বা লাব্লোপে পঞ্চা মাপ্রিতা
ব্যাথোরন্ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬॥ ৭। তংকোধংবিক্ষমং মীরে রিতি পাচ—বিপরীতঃ
ক্রেন্ যেন ভ্রমিত্যর্থঃ, চরেৎ আচরেৎ ॥ ৮ ॥ অপ্রতি কুধান্ লায়তে দ্বো

^{*} প্রবর্ততে ইতি কঃ।

মুটো যদি ক্লিশ্যমানঃ ক্লিশ্যতে ইশক্তিমান্নরঃ ! বলীয়সাং মনুব্যাণাং ভ্যজভ্যাহান মান্মনা। ১০॥ ত্যালান সংত্যভতে লোকা নশান্তানালানঃ। ज्याकि ने भागका महा महा विश्व मन क्षेत्र ॥ >> ॥ বিশ্বাংস্ত থৈব ষঃ শক্তঃ ক্লিশ্যমানো ন কুপ্যাতি। অনাশয়িত্বা ক্লেফ রং পরলোকে চ নন্দভি॥ ১২॥ তস্মান্ধলবতা চৈব জুর্নবেলন চ নিতাদা। ক্ষন্তব্য ্পুরুষেণ ছে রাপৎস্বপি বিজানতা। ১৩॥ মন্যোহি বিজয় কুষে! প্রশংসন্তীহ সাধবঃ। ক্ষমাবতো জয়ো নিভাপ সাধোরিং সভাং মতম ॥ ১৪॥ সতাঞ্চানুততঃ শ্রেয়ো নুশংসাচ্চানুশংসতা। তমেবং বহুদোষস্ত ক্রোধং সাধুবিবজি তম্॥ ১৫॥ মাদৃশঃ প্রস্তাজৎ কম্মাৎ স্কুযোধনবধাদপি। তেজস্বীতি য মাছকৈ পণ্ডিতা দীর্ঘদর্শিনঃ ১১৬॥ ন ক্রোধোহভান্তরস্তম্য ভবতীতি বিনিশ্ভিম।. যম্ভ ক্রোধং সমুৎপন্নং প্রজ্ঞরা প্রতিবাধ ত॥ ১৭॥

রাত্মপররো শিচকিৎসকঃ দোষাপছর্তা॥ ৯॥ এত দেবাছ মৃট্ইতি—বলীরসা
মুপরি যদি অশক্তিমান্ত্রিশ্বতে কুধাতে তর্হি আত্মানং দেহংতাজতি॥ ১০॥
অনাত্মনঃ অজিতচিত্র স্থানিয়মনং কর্ত্ববাং ইতিমৃতং অশক্তঃ ক্রোধং জিহা
আত্মানং আত্মহত্যাদোষাৎ পরঞ্চ পরহত্যা দোষাৎ ক্রায়ত ইত্যর্থঃ॥ ১১॥
শক্তস্যাপি ক্রোধজরে আত্ম পরক্রাত্ম মাহ বিদ্যানিতি॥ ১২॥ ১০॥ ১৪॥
॥ ১৫॥ প্রস্কুত্রে প্রক্রের প্রযুক্তীত, স্থ্যোধন বধাদপি স্থ্যোধনা দ্বং
প্রাপ্যাপীত্যর্থঃ। যহকতং "তেজস শ্বাগতে কালে তেজউংপ্রক্তি মইনি"
ইতি, তক্রাহ তেজস্বীতি—ক্রোধজিদেব তেজস্বী নতু ক্রোধীত্যর্প্তঃ॥ ১০॥
॥ ১৭॥

^{*} ক্লিশাত ইতার ক্রধাতে ইতি ক:।

তেজ স্বিনং তং বিশ্বাংশো মন্যন্তে তত্ত্বদর্শিনঃ।
কুলো হি কার্যাণ স্থানোলি! ন যথাবং প্রপশ্যতি। ১৮॥
ন কার্যাং ন চ মর্যাদাং নরঃ কুলোহ মুপশ্যতি। ১৮॥
হন্যবধ্যানপি কুলো গুরুন্ কুল্ডদত্যপি।
তত্মাত্তেজ সি কর্ত্বাঃ কোধো দূরে প্রতিষ্ঠিতঃ॥ ১৯॥
দাক্ষ্য হ্মর্যাঃ শৌর্যাঞ্চ শীত্রত্বমিতি তেজসং।
গুলাং কোধাভিভূতেন ন শক্যাঃ প্রাপ্ত্যমঞ্জসা ॥ ২০॥
কোবং ত্যক্তব্ব তু পুরুষঃ সম্যক্ তেজে। হভিপদ্যতে।
কালযুক্তং মহাপ্রাজে! কুলৈ স্তেজঃ স্বত্বংসহম্॥ ২১॥
কোধস্ত পণ্ডিতঃ শ্বাত্তে ইত্যভিনিশ্চিত্র।
রজস্ত লোকনাশায় বিহিতং মানুষং প্রতি॥ ২২॥
তত্মাছ্রেই ত্যজেৎ ক্রোধ্ব পুরুষঃ সম্যাচরন্।
শ্রেয়ান্ স্বর্দ্বানপগো ন কুল্ক ইতি নিশ্চিত্র্॥ ২৩॥
যদি সর্ব্ব মবুদ্বানা মতিকান্ত মচেত্সাম্।
অভিক্রমো মহিবদ্য কথং স্বিৎ স্যাদনিশ্বতে॥ ২৪॥

প্রত্যাত ক্রোধাইজ্য়ে দোষ মাহ কুন্ধাইতি—॥১৮॥ তুদতি ব্যথয়তি
পাক্ষােজ্যাদিনা, তেজান সতি ক্রোধজারির্মের তেজােনান্যদিত্যর্থঃ
॥১৯॥ এতদের তেজােলকণ প্রদর্শনেন প্রতিপাদয়তি দাক্যায়িতি
—দাক্ষাং কর্ম্ম কৌশলং, অমর্থঃ শক্রোরপকারোপায় চিন্তনং, শৌর্থাং
পরাভিতরশাক্তঃ, শীর্থং আশুকারিত্থ, অঞ্না আর্থানেন ॥ ২০॥
কুন্ধৈঃ কাল বুক্তং দেশকালােপপরং তেজঃ মহঃসহন্ ॥ ২১॥ পণ্ডিতৈ
রিত্যুপ হানাে মৃথিরিত্যর্থঃ, অপণ্ডিতে রিতি গৌড় পাঠংমক্তঃ, রজঃ—
রজােগুলপিরিণামঃ ॥ ২২॥ স্বধর্মান্ অপনঃ অপহায়্যাক্তনীতি তথা
় ছিতীয়ায়া অলুগার্থঃ, জাতি ভ্রমাং প্রতিদেপিক্রোধী হীন ইত্যর্থঃ
॥ ২০॥ সর্বাং ক্রমার্জবাদিকং অবুদ্ধানাং মৃট্য়ে অভিক্রতং লজ্বিতং,

যদি ন স্থা ম বিষুক্ষমিশঃ পৃথিবীসমাঃ। ন স্যাৎ সন্ধি ম মুষ্যাণাং ক্রোধমূলো হি বিগ্রহ: ॥ ২৫॥ অভিষক্তো হৃতিষ্চেদাহন্যাদারুণা হতঃ। এব॰ বিনাশে স্ভভান! মধর্মঃ প্রথিতো ভবেৎ॥ ২৬॥ আক্রুফীঃ পুরুষঃ সর্বাং প্রত্যাক্রোদেনন্তর্য । *প্রতিহন্যাদ্ধতশৈচব তথা হিশ্ন্যাচ্চ হিংসিতঃ॥২৭॥ হরু হি পিতরঃ পুত্রান্ পুত্রাশ্চাপি তথা পিতৃন্। হরু।শ পত্রো ভার্যাঃ পতীন ভার্যান্ত থৈবচ ॥ ২৮ ॥ এবং সংকুপিতে লোকে জন্ম ক্লফে! ন বিদ্যতে। প্রজানাৎ সন্ধিমূলৎ হি জন্ম বিদ্ধি শুভাননে। ॥ ২৯॥ তাঃ কিপেরন্ প্রজাঃ সর্বাঃ কিপ্রং দ্রৌপদি! তাদুশে। তক্ষাক্ষ্যার্কিনাশায় প্রজানা মভবায় চ॥ ৩ ।॥ যন্মাকু লোকে দৃশ্যন্তে ক্ষমিণঃ পৃথিবীসমাঃ। তস্মাজ্জন্ম চ ভূতানাং ভবশ্চ প্রতিপদাতে॥ ৩১॥ ক্ষন্তব্যং পুৰুষেণেই সর্বাপৎস্থ স্থাভানে।।. ক্ষমাবতো হি ভূতানাং জন্ম চৈব প্রকীর্ত্তিতমু ॥ ৩২ ॥

অনিনিতে প্রণান্ত বিষয়ে ক্ষমানো ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ অভিযক্তঃ তাপিতঃ, আভিয়জেৎ তাপায়েৎ, গুৰুণাপি হত ন্তং আছনানি তাড়য়েৎ কিনুতাহনামিতি ভাবঃ। এবং বিনাশোহ ধর্মক প্রথিতাভবেৎ ইতাম্বরঃ ॥ ২৬ ॥ আকুকৌ বাচা তাড়িতঃ হতোহনোনাভিহতঃ, হিংসিত ন্তাড়িতঃ ॥ ২৭ ॥ ॥ ২৮ ॥ জন্মউৎপান্তিঃ, তত্র হেডুঃ প্রজানাং সন্ধিঃ দম্পত্যাঃ প্রতিঃ, শম ইতি পাঠে—ক্ষমা ॥ ২৯ ॥ তাদৃশে কোধপারে ত্রাজ্ঞি নতি ক্ষিপেরন্নশায়ঃ, অভবার অনির্থার ॥ ৩০ ॥ জন্মপ্রতিপদাতে অন্যথা ক্রোধ-প্রবাল পূর্ববিরসোর দম্পত্যো নাশাৎ জন্মহসন্তব ইতার্থঃ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥

^{*} অতি হন্যাৎ ইতি কঃ।

আকু কস্তাডিতঃ কুদ্ধঃ ক্ষমতে যো বলীযসাই। যুশ্চ নিভাং জিতকোধো বিদ্বানুত্তমপূরুষঃ॥ ৩৩ ॥ প্রভাববানপি নর স্তম্য লোকাঃ দ্রাতনঃ। ক্রোধনস্থ পেবিজ্ঞানঃ প্রেত্য চেহ্ চ নশাতি 🛊 ৩৪ ॥ অত্রপুদাহরন্তীমা গাথা নিত্যং ক্ষমাবতাম্ : গীতাঃ ক্ষমাৰতা ক্লেষ্টে। কাশ্যপেন মহাল্লনা ॥ ৩৫॥ ক্ষমাধর্মঃ ক্ষমা যজ্ঞঃ ক্ষমা বেদ্য ক্ষমা এন্তম্। য এতদেব জানাতি স সর্বাং ক্ষন্ত মহতি॥ ৩৬॥ ক্ষমা ব্ৰহ্ম ক্ষমা সতাৎ ক্ষমা ভূতঞ্চ ভাবিচ। ক্ষমা তপঃ ক্ষমা শৌচৎ ক্ষময়েদং ধূতং জগং। ৩।॥ অতিযক্তবিদাং লোকান্ ক্ষমিণঃ প্রাপ্পরবিত্ত চ। অতিব্ৰন্ধবিদাণ লোকানতি চাপি তপস্থিনামু॥ ৩৮॥ অন্যে বৈ যজুষা েলোকাঃ কর্মিণামপরে তথা। ক্ষমাবতাং ব্রহ্মলোকে লোকাঃ পরম পূজিতাঃ॥ ৩৯॥ ক্ষমা তেজিব্বনাং তেজঃ ক্ষমা ব্ৰহ্ম তপ্ৰিনাম। ক্ষমা সত্যং সত্যবতা পক্ষমা যজ্ঞ ক্ষমা শমঃ ॥ ৪০॥

বলীয়দা বলবত্তবেণ স্থাম্যাদিনা যথা আকুষ্ট শুড়িতো বা আশক্ত ক্ষমতে, তথা যথ প্রভাববানপি ক্ষমতে, তত্ম লোকাইতি সাদ্ধ্যনাকো বাক্যম্য ৩৩ ॥ অন্তথাদোষ মাছ অর্দ্ধন ক্রোধনন্তি—॥ ৩৪ ॥ অত্রেতি—ক্ষমাবতাং বাধাঃ প্রশংসাঃ ক্ষমাবতাং মধ্যে মহাত্মনা ॥ ৩৫ ॥ ক্ষমাধর্মইতি—ক্ষমাইনিন্য ধর্মাদি রনর্থকর ইতার্থঃ, যথ ধর্মাদি কলার্থী ॥ ৩৬ ॥ বক্ষ বাধান ছাতিঃ, সতাং পরংব্রশ্বাপি ক্ষমা প্রাপাং, ভূতং সাঞ্চতংতপঃ হাবি চক্ষমৈব রক্ষতি ॥ ৩৭ ॥ অতি অতিক্রম্য প্রাপ্ত তদ্ধিং পদ্মিতি শেষঃ, বক্ষবিদাং বেদবিদায্ ॥ ৩৮ ॥ যজ্মাং ব্রেতার্গ্য সাধ্য কর্মাবতাং, কর্মিনাং বাপীকুপাদি ধর্মবিতায় ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥

^{*} বলীয়দঃ ইতি কঃ।

जः का गोनृगीर कृत्यः। कथमऋषितस्राद्धः ?—। যস্যাং ব্রহ্ম চ সভ্যঞ্চ যজ্ঞা লোক। শচ ধিষ্ঠিতাঃ ॥ ৪১ ॥ ক্ষন্তব্যমের সতত্ত পুরুষেণ বিজ্ঞানতা। যদা হি ক্ষমতে সূৰ্ব্বং ব্ৰহ্ম সম্পদ্যতে তদা ॥ ६২ ॥ ক্ষমবিতা মর্ লোকঃ প্রকৈর ক্ষমবিতাম। ইহ সন্মানমৃচ্ছন্তি* পরত্র চ শুভাৎ গতিম্॥ ৪৩॥ यिषाः पञ्चा र्जाञ्चाना क्रमग्राच्डिं का मना। তেষাং পরতরে লেকিস্তিমাৎ ক্ষান্তিঃ পরা মতা॥ ৪৪॥ ইতি গীতাঃ কাশ্যপেন গংখা নিত্যং ক্ষমাবতাম্। প্রদার পাথাঃ ক্ষমায়াস্ত্রং তুষ্য দৌপদি! মা কুধঃ॥ ৪৫॥ পিতামহঃ শান্তনবং শমং সংপূজয়িষ্যতি। ক্লক্ষণ দেবকীপুত্রঃ শমং সংপূজয়িষ্যতি ॥ ৪৬ ॥ व्याहार्रया विष्नुतः कछा भगरमव विषयुज्य । क्रुशन्क मञ्जूशत्क्वत भागत्मव विषयुक्तः ॥ ९१ ॥ সোমদত্তো যুযুৎস্কুল্চ দ্রোণপুত্রস্তথৈব চ। পিতামহশ্চ নে। ব্যাসঃ শমং বদতি নিত্যশঃ॥ ৪৮॥ এতৈহি রাজা নিয়ত-স্থোদ্যমানঃ শমং প্রতি। রাজ্য- দাতেতি মে বুাদ্ধ নচেল্লোভানশিষ্যতি॥ ৪৯॥ कारलार्शः माङ्गाः आरक्षा ভরতানামভূতয়ে। निक्तिं र प्रमेरिक व्यवस्था प्रिकारिन । ॥ ४०॥

॥ ৪১॥ সর্বাং মনঃ-প্রাণেল্ডিরাণাং বেগং ক্ষতে সোচ্ং শক্তে। ৪২॥ ৪১॥ ৪১॥ ৪১॥ ৪১॥ ৪১॥ ৪১॥ ৪১॥ ৪১॥ ৪১॥ রাজা গ্রুরাফ্র শুংপুরো বা দাতা দাসাতি ॥ ২৯॥ অভূত্রে নাশার॥ ৫০॥

^{*} সমান্থহন্তি ইতি কঃ।

স্থাধনো নাহ তীতি ক্ষমামেবং ন বিন্দতি।
আহ স্তত্তাহমিতোবং তত্মাশ্বাশ বিন্দতে ক্ষমা। ৫১॥
এতদাত্মবতাং বৃত্ত মেষ ধর্মাঃ সনাতনঃ।
ক্ষমা চৈবানুশশ্মাঞ্চ তৎ কর্ত্তাস্মাহহমঞ্জদা"—। ৫২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অর্জুনাভিগমনপর্বাণ দৌপদীযুধিন্ঠিরসন্থাদে একোনতিংশত্তমোহধ্যায়ঃ॥২৯॥

ক্রেপিছাবাচ।

"নমা ধাতে বিধাতে চ যৌ মোহঞ্চক্রতুম্বন।
পিতৃপৈতামহে বৃত্তে বোচব্যে তেহন্যথা মতিং ॥ ১॥
কর্মাভিশ্চিন্তিতো লোকো গত্যাপ গত্যাপ পৃথিধিং।
তক্ষাৎ কর্মানি নিত্যানি লোভামোক্ষং যিয়াসতি ॥ ২॥
নেহ ধ্র্মানৃশংস্যাভ্যাং ন ক্ষান্তাা নাজ বৈন চ।
পুরুষং শ্রিয়মাপ্রোতি ন ঘূনিত্বেন কহিচিৎ॥ ৩॥

নাৰ্ছতি রাজামিতি শেষঃ, তত্ত্তেত্ঃ ইতীতি—এবমুক্তরীতাা॥ ৫১॥ অঞ্জ্যা ভত্তঃ॥ ৫২॥

ইত্যারণকে পর্বান নৈলকণ্ঠীয়ে তারত ভাবদীপে উনত্তিংশো-২ধ্যায়ঃ ॥ ২৯ ॥

নমোধাত ইতি—ধাতে ঈশ্বরায়, বিধাতে পূর্ব্ব কর্মণে, রুত্তে বলেন রাজ্যা ক্রমণ রূপে ॥ ১ ॥ ঈশ্বরস্থাপি কর্মাপেকতাৎ প্রথমৎ কর্ম প্রাবল্য মেবাছ কর্মজিরিতি—চিন্তিত: সঙ্কাপিতো লোকোভোগসাধনং উদ্ধাধোমধ্যমোজমাধ্য যোনির, নিত্যানি অপরিহার্য্য ফরামি, লোভাৎ মোহাৎ, মোকং কর্ম ফলেভ্যো হুংখেভ্যোঃ মুক্তিং বিয়াসতি প্রাপ্ত বিধ্য মানো ধর্মাদিনা ব্রেমবাহ—নেহেতি, ইছ জন্মনি পূক্তঃ পূর্বকর্মভি বাধ্য মানো ধর্মাদিনা ন জিয়ম্প্রোতি, আনুশাস্যং দরা, হুণা লোকাপবাদ ভরম্॥ ৩॥

ত্বাঞ্চ্যেদন মভ্যাগা দিদং ভারত। তুঃসহম। যস্ত্রং নার্হাস নাপীমে ভাতর স্তে মহৌদ্দাঃ ॥ ৪ ॥ নহি তেহধ্যগমং জাতু তদানীং নাদ্য ভারত।। ধর্মাৎ প্রিয়তরং কিঞ্চিদিপি চেজ্জীবিতাদিই ॥ ৫॥ ধর্মার্থমেব তে রাজ্যৎ ধর্মার্থং জীবিতঞ্চ তে। ব্রাহ্মা গুরুবলৈচ্ব জানস্ত্যুপি চ দেবতাঃ। ৬॥ **जीमरामनार्क्कुरनो रहारजो** मारकरहो ह महा मह। ত্যজেস্ত্রমিতি মে বুদ্ধি ন তু ধর্মাং পরিত্যজে: । ৭॥ রাজানং ধর্মাগোপ্তার্ত ধর্মো রক্ষতি রক্ষিতঃ। ইতি মে শ্রুতমাধ্যাণাং ত্বাস্তু মন্যে ন রক্তি॥ ৮॥ অনন্যা হি নরবা্যন্ত্র ! নিত্যদা ধর্মামেব তে। বুদ্ধিঃ সততমন্বেতি ছায়েব পুরুষং নিজা॥ ৯॥ নাবমংস্থা হি সদৃশালাবরান্ শ্রেয়সঃ কুতঃ। অবাপ্য পৃথিবীং কুৎস্নাং ন তে শৃঙ্গ মবৰ্দ্ধত। ১০॥ স্বাহাকারেঃ স্বধাভিশ্চ পূজাভিরপি চ দ্বিজান্। দৈৰতানি পিতৃংকৈৰ সততং পাৰ্য! সেৰসে॥ ১১॥ ব্রাহ্মণাঃ সর্বাকামৈ স্তে সততং পার্থ! তর্পিতাঃ। যতয়ো মোক্ষিণ্শৈচব গৃহস্বাশৈচব ভারত।। ভুঞ্জত্তে রুক্সপাত্রীভি র্যত্রাহং পরিচারিকা ॥ ১২ ॥

তত্র থমেব দৃষ্টান্ত ইত্যাহ থাঞ্চেত্যাদিন।—॥৪॥ তদানীং রাজ্যকালে, অদ্য রাজ্যচুত্তৌ, জাতু কদাচিৎ, ধর্মাৎ প্রিয়তরং নহি তে অধ্যামন্ জ্ঞাতবন্তঃ কিন্তু জীবিতাদিশি প্রিয়তরং ধর্মমেবাহধ্যামন্ ॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ১॥ শৃঙ্গং প্রভুত্বাভিমানঃ॥ ১০॥ ১১॥ তে ধ্য়া, মোকিনঃ সন্ত্যাদিনঃ মোকা-

 ^{* &}quot;চোউভৌ" ইতার—"চেমৌ" ইতি ক ষ পুস্তকৌ।

আরণ্যকেভ্যো লৌহানি ভাজনানি প্রয়ছ্সি ! নাদেয়ং ব্ৰহ্মণেভ্য স্তে গুছে কিঞ্চন বিদ্যভে ॥ ১৩ ॥ যদিদং বৈশ্বদেব ওড শাস্ত্র ক্রিয়তে গুহে। তদত্ত্বাতিথিভূতেভোগ রাজন্। শিষ্টেন জীরসি ॥ ১৪॥ ইন্টরঃ পশুবন্ধাশ্চ কামানৈমিত্তিকাশ্চ যে। বৰ্ত্তে পাক্যজ্ঞাশ্চ যজ্ঞকৰ্ম্ম চ নিত্যদা । ১৫॥ অস্মিন্নপি মহারণ্যে বিজনে দস্থ্যসেবিতে। রাষ্ট্রাদপেত্য বসতো ধর্দ্মন্তে নাবদীদতি॥ ১৬ । অশ্বমেধো রাজস্থাঃ পুগুরীকোহথ গোসবঃ। এতৈরপি মহাযজ্ঞৈ রিউৎ তে ভূরিদক্ষিণৈঃ॥ ১৭॥ রাজনু। পরীতয়া বুদ্ধা বিষমেহক্ষপরাজয়ে। রাজ্যং বস্থন্যায়ুধানি ভাতৃন্মাঞ্চাপি নিজিভিঃ॥ ১৮॥ ঋজো মুদো কাদান্যস্য ব্রীমতঃ সত্যবাদিনঃ। ক্ধৰ্মক্ষব্যসনজা বুদ্ধি রাপতিতা তব?—॥ ১৯ ॥ অতীব মোহমায়াতি মনশ্চ পরিভূয়তে*। নিশম্য তে তুঃখনিদ মিমাঞ্চাপদ মীদৃশীম্॥ ২০॥ অত্রাপুদাহরন্তীম মিতি হাসং পুরাতনম্। केश्वरक वर्ग (माका शिकेटल नाजान। यथा ॥ २>॥

শ্রমন্থাঃ ॥ ১২॥ আরণ্যকেভ্যো বানপ্রস্থেভাঃ, লৌহানি সেবর্গদীনি, 'লৌহানাং কাঞ্চনং বরং" ইতি লিজাৎ ॥ ১৩॥ ১৪॥ পাক্যজ্ঞাঃ গৃহ্যায়ি সাধ্যা ইন্টাঃ ॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ পরীতরা বিপরীতরা ॥ ১৮॥ খড়োঃ অবক্রসা, মূদো দ্যালোঃ ॥ ১৯॥ নিশমা আলোচ্য মম মনঃ মোহং মে ঢাঃ আবাতি পরিভূরতেচ ইতাধ্যঃ, পরিভব আর্তিঃ ॥ ২০॥ লোকাঃ ভোগ্যানি, তিঠন্তে প্রকাশন্ত, "প্রকাশন-ছেরা-খ্যোক্ট" ইতি তঙ্

^{*} দুয়তে ইতি ক খ।

ধাতৈব খলু ভূতানাং স্থাত্যথে প্রিয়াপ্রিয়ে।
দথাতি সর্বনীশানঃ পুরস্তাৎ শুক্রমুচ্চরন্॥ ২২॥
যথা দারুময়ী যোষা নরবীর! সমাহিতা।
ঈরয়তাঙ্গমঙ্গানি তথা রাজনিমাঃ প্রকাঃ॥ ২৩॥
আকাশ ইব ভূতানি ব্যাপ্য সর্বাণি ভারত!।
ঈশ্বরো বিদ্যাতীহ কল্যাণ্ যচ্চ পাবকম্॥ ২৪॥
শকুনিস্তম্ভবদ্ধো বা নিয়তোহ্যমনীশ্বরঃ।
ঈশ্বরস্য বশেতিষ্ঠনান্যেশাং নাল্মনঃ প্রভুঃ॥ ২৫॥
মণিঃ স্থাত্রইব প্রোতো নস্যোত ইব গোর্ষঃ।
সোত্রো মধ্যমাপন্নঃ কুলাদ্ধু ক্ষ ইব চ্যুতঃ ॥ ২৬॥
ধাতুরাদেশমন্থেতি তন্ময়ো হি তদর্পনঃ।
নাল্মাধীনো মন্ত্র্যোহ্য় কলাং ভঙ্গতি কঞ্চন॥ ২৭॥

॥ ২১॥ ধাতা ঈশ্বরঃ, শুক্রং প্রাক্তম্বীজন্— হে নরবীর! স্ত্রধারের সমাহিতা সমাক্ নিযুক্তাসতী অঙ্গং ঈরয়তি হথা, তথা ইমাঃ প্রজাঃ, অঞ্চানি হস্তাদীনি, ঈরয়তাল কর্মানি ইতি পাঠে—হে অঙ্গা কর্মানি কতু নি কর্মান্তরোধী ঈশ্বর ইতার্থঃ, ইমাপ্রজাশেচ টয়ন্তীতি সম্বন্ধঃ ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ অন্তর্বহি ব্যাপ্তো আকাশ দৃষ্টান্তঃ, ভূতানি জরাযুজাদীনি ॥ ২৪ ॥ বদ্ধোবা বন্ধাইব, বা শক্ষরণর্ধে, অন্যেশং উপাধ্যায়াদীনাং ॥ ২৫ ॥ নিস নাসিকায়াঃ, নসাং নাসা স্ত্রং তেন বা ওত প্রোতঃ, অত্তরো আকাশ শক্ষি স্ত্র দৃষ্টান্তো ঈশ্বরত্ব ব্যাপকত্ব-প্রেরকর্মাঃ, ত্রেয়া মনি-রক্ষ দৃষ্টান্তা জীবস্থাই শাতন্ত্রো ॥ ২৬ ॥ আদেশং আজ্ঞাং, অত্তেগি অনুসমতি, তত্ত্ব তেমুহোহি ভদপন ইতি, যথা মুন্মের্যিটো মুদ্যেব লীয়তেহতো মধ্যেইপি মুদ্ধীনো নানাঃ, এবং জীবোপীশ্বইস্যাব রূপভেদ জ্বার স্তদর্পন ক্রান্তর্থা মধ্যেইপি তৎপ্রের্যান্ত্রের্থঃ, যথোক্তং ' অজ্ঞানচ য্যায়ন্তদ্বি মুচ্যানিয়ন্ত,ভবেং" ইতি। যদ্ যশ্বয়ং তত্ত্তিরম্মা মিতি ত্যাপ্তঃ, অয়ং

^{*} অত্ত নান্তেষে পাঠঃ ক ঘ পুশুকরোঃ কিন্তু " ভদ্ধতিকঞ্চনেতি পপ্তবিংশ শ্লোকানন্তর মন্ট বিংশশ্লোক প্রারুত্তে বর্ততে ইত্যেতদ্ধ্রীবান্।

অজ্ঞো জন্তু রনীশোহয় মাত্মনঃ স্থুখছুঃখয়োঃ।
ঈশ্বপ্রেষিতো গচ্ছেৎ স্বর্গং নরক মেব চ॥ ২৮॥
যথা বায়েন্ত্রগাঞানি বশং যান্তি বলীয়দঃ।
ধাতুরেবং বশং যান্তি সর্ব্বভূতানি ভারত!॥ ২৯॥
আর্যাকর্শ্মনি যুঞ্জানঃ পাপে বা পুনরীশ্বরঃ।
ব্যাপ্য ভূতানি চরতে ন চাহয়মিতি লক্ষ্যতে॥ ৩০॥
হেতুমাত্রমিদং ধাতুঃ শরীরং ক্ষেত্রসঙ্গিতম্।
যেন কারয়তে কর্মা শুভাশুভফলং বিভুঃ॥ ৩১॥
পশ্য মায়াপ্রভাবোহয়মীশ্বরেণ যথা ক্রতঃ।
যো হস্তি ভূতানি মোহয়িত্বাত্মমায়য়॥ ৩২॥
আন্যথা পরিদ্টানি মুনিভি স্তত্ত্বদর্শিভিঃ।
আন্যথা পরিবর্তত্তে বেগা ইব নভস্বতঃ॥ ৩০॥

আত্মাণীনো ন কিন্তু কঞ্চন অনির্দেশ্যরপং কালং কালয়িতারং ঈশৎভজত্য হুসরতি ॥২৭॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ চরতে ভুডে্ক্ত 'কর্ম ব্যতিছারেডঙ্, ফল প্রদত্তেনোপকারক মীশং জীবো ভুঙেক কর্ম কর্তৃত্বে নোপকারকং জীব মীশো ভুঙেকে ইত। থঃ; অয়মিতি রাজবত্তীমৃত্য। নচ লক্ষাতে অন্তর্গামিতাৎ ॥ ৩০ ॥ নথীখারো জীবাদনোক্সননাবা ?—আদেন নচাহয় মিতি লক্ষ্ত ইতাহপপরং, দ্বিতীয়ে শাস্ত্ শাস্ভাবা হপপত্তি রিত্যাশস্ক্যাছ হৈতুমাতামতি—বিভুশ্চিদাত্মা যেন প্রয়োজ্যেন কর্ম কারয়তে 'ততইদং শরীরং মহাভূতানাছকার' ইতাাদিনা উক্তরপং স্থলস্ক্ষ দেহদ্বরং তদেব কর্ত্ত ইত্যর্থঃ, নমু জড়ে কর্ত্তৃহাৎসম্ভবঃ?— ইত্যাশক্ষ্যাই ধাতুরিতি—ধাতঃ কেত সজিতং কেত্রিব কেত্রং চিদাত্মন আভাসরপ বীজ নিবাপস্থানং চিদাভাস মৃক্তং ক্ষেত্ৰং কর্তৃ ইত্যর্থঃ, তচ্চ হেতুমাত্রং ইছাদ্যাত্মকরাৎ, হেতুরপিন ন মুখ্যহেতুভূতং, বিশ্বপ্র তিবিষ দুষ্টান্তেন চিদাভাসস্য চিদান্তভদ্ৰনাৎ, তিথাচাভাসস্যাহন্যত মাদায় শান্ত শাস্য ভাবো ব্যাবহারিকঃ, পরমার্থতম্ভ ক্ষেত্রস্য ইত্যুক্ত মিতি ভা ে ॥ ৩১ ॥ অরং পূর্বোকো মারারা অঘটন-ঘটন পটীয়দা আনিব্রচ নীয়া ২জানাখ্যায়া প্রভাবঃ, য ঈশ্বরো ভূতিঃ পৃথক্ পৃথক্ ক্ষেত্রাভি মানিভি মেছিরিতা অনাতানি দেহাদা বাতারুছিৎ জনরিতা ॥ ৩২ ॥ মোছছেব

अनारेथव हि मनार**ख পুরুষ**। छ। नि छ। অন্যথৈব প্রভুম্ভানি করোতি বিকরোতি চ ॥ ৩৪॥ यथा कार्छन वा कार्छ मन्त्रानक्षीरूमाना श्रुनः। অয়সা চাপ্যহয় শ্ছেন্দ্যাৎ নির্বিচেষ্ট মচেতনম্॥ ৩৫॥ এব সভগবান দেবঃ স্বয়স্তুঃ প্রপিত। মহঃ। হিনস্তি ভূতৈ ভূ তানি ছন্ম কুত্বা যুধিষ্ঠির ! ॥ ৩৬ ॥ সংপ্রয়োজ্য বিয়োজ্যায়ং কামকারকরঃ প্রভুঃ। ক্রীড়তে ভগবান্ ভূতৈ ব্যালঃ ক্রীড়নকৈরিব ॥ ৩৭॥ ন মাতৃপিতৃবদ্ধাজন্! ধাতা ভূতেষু বৰ্ততে। রোষাদিব প্রব্রোহয়ং যথাহয়মিতরো জনঃ ॥ ৩৮॥ আর্যান্ শীলবতো দৃষ্ট্। হ্রীমতো রুত্তিকর্ষিতান্। অনাৰ্য্যান্ স্থানিকৈব বিহ্বলামীৰ চিন্তয়া॥ ৩৯। তবেমা মাপদং দৃষ্ট্বা সমৃদ্ধিঞ্চ স্থবোধনে। ধাতার~ গহ'রে পার্থ। বিষমং যোহনুপশ্যতি ॥ ৪০ ॥ আর্যাশাস্তাতিগে ক্রুরে লুকে ধর্মাপচায়িনি। ধার্তরাষ্ট্রে জ্রেং দত্ত্বা ধাতা কিং ফলমশ্লুতে?—॥ ৪১ ॥

বির্ণোতি ঘাত্যাং অন্যথেতি—তত্ত্বদর্শতিঃ অপ্ন মায়েল জালব দ্ ফান্যপি
মুঢ়ানাং সত্যবং পরিবর্তন্তে ভাসন্তে, বেগাঃ কর প্রসরাঃ, নভস্বতঃ আকাশ
গামিনঃ, স্থ্যস্য তেজামরাঃ অন্তো জলহুদবদবভাসন্তে ॥ ৩৩ ॥
অনিত্যাশুচি হুঃখরপাণ্যপি তানি নিত্যশুচি স্থখন্তরপাণি মন্যন্তে, অন্যথা
করে।তি গগনবদজাতমপি অঙ্কুরাদিক্রমেণ জনয়তি, বিকরোতিচ
জীর্থাদিভাবং নয়তিচ ॥ ৩৯ ॥ অযোবত্তক্বর কেবলং নিশ্চেন্তং কিন্তু
আচেতন মপি ॥ ৩৫ ॥ সংপ্রযোগং কৃত্বা, কামকার ইছা তয়ৈব করোতীতি
কামকার করঃ, বালঃ প্রাকৃতঃ, ক্রীড়নকৈঃ সারী প্রভৃতিভিঃ ॥ ৩৭ ॥
নমাত্রিতি—কশো ন দয়ালুঃপ্রত্যুত নৃশংস ইত্যর্থঃ ॥ ৩৮ ॥ কিঞ্চ ঈশস্য
হুফের পক্ষপাতঃ সাপ্রমুচ দ্বেগে দৃশ্যতে, অতঃ স নিন্দ্য এব ইত্যাহ আর্ধ্যা
নিত্যাদিত্রিভিঃ—চিন্তরাধনাদিধ্যানেন ॥ ৩৯॥ ৪০ ॥ ধর্মাভি শঙ্কিনীতি পাঠে

ধর্ম শ্রদাশুন্যে, কলং যজাদিনাতৃপ্তিং কিং অশ্ব তে ?—নৈবেত্যর্থঃ॥৪১॥

কর্দ্ম চেৎ ক্রতমন্থেতি কর্ত্তারং নান্যমৃচ্ছতি !
কর্ম্মণা তেন পাপেন লিপ্যতে নুনমীশ্বঃ ॥ ৪২ ॥
অথ কর্দ্মক্রত পাপং ন চেৎ কর্ত্তারমৃচ্ছতি ।
কারণং বলমেবেই জনান্ শোচামি ছুর্বলান্থ ॥ ৪৩ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অর্জুনাভিগমনপর্বাণি যুধিষ্ঠির
দৌপদীস্বাদে ত্রিশ্বসেমাহ্ধ্যায়ঃ ॥ ৩০ ॥

যুধিতির উবাচ।

'বল্প চিত্রপদং শ্লক্ষং যাজ্ঞদেনি! স্বয়া বচঃ। উক্তং তৎ শ্রুত্তমন্মাতি নান্তিক্যন্ত প্রভাষদে॥ ১॥ নাহং কর্মফলান্থেষী রাজপুত্রি! চরাম্যুত। দদামি দেয়মিত্যেব যজে যফীব্যমিত্যুত॥ ২॥

কর্মোতি—কৃতং কর্ম যদি কর্তারমেব গছতি নহন্যং,—তর্হি কারয়ি-তৃতা দীখরেপি পাপেন লিপ্যতৈব ইতার্থঃ ॥ ৪২ ॥ অথেতি—কর্তারং কারমিতারং ঈশ্বরং ঐশ্বর্যাদেব কর্ম স্পৃশতি তর্হি তৎপ্রয়োজ্যা জীবাএব কর্মাভি হতাঃ, তথাচ ঈশ্বরো বলাদীনান্ নরকে পাত্যতীতি অত্যন্তং নিন্দ্যএব স ইতি ভাবঃ ॥ ৪৩ ॥

> ইত্যার শ্রুকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে ত্রিংশোহধ্যাস্যঃ॥ ৩০॥

বৈতি—এবং ধর্মেশ্বরয়ো রাক্ষেপে প্রাপ্তে প্রত্যক্ষান্ত্রমানাগমৈ স্তৌ
সমর্থয়িতু মধাায় আরভাতে বল্প চিত্রেতি—বল্প শোভনং, শ্লুফ্লং স্কুমারং,
নাস্তিকাং বেদবিদ্বিষ্টং॥ ১ ॥ যত্তকং হার্পেদ্বাসনিন মিতাাদিনা কর্মণো
নৈক্ষল্যে হুদভিভব এব দৃষ্টাস্ত ইতি ত্রোহ নাহ্মিতি—কর্মধর্মং
কলার্থিনা ক্তো ধর্মো যদি নিক্ষলঃ স্যা তার্হি তবেদময় মাক্ষেপো ভবেৎ
নত্তহং তথা চরামীতার্থঃ. নত্ত্ব কলেছায়া অভাবেকি মর্থং ধর্মঃ কর্তব্য ?—
ইত্যত আহ দদামীতার্গদিনা—দেরং ঋণং ইত্যেব দদামি "জায়মানোবৈ
ব্রাক্ষণ ক্রিভি ঋণবা জায়তে ব্রক্ষ চর্ষেণে ৠবিভোগ যজেন দেবেভাঃ

অস্ত বাত্র ফল মা বা কর্ত্তবান পুরুষেণ যথ।
গৃহে বা বসতা ক্ষেণ্ড যথাশক্তি করোমি তথা ও ॥
ধর্মপ্রামি সুশ্রোণি! ন ধর্মফলকারণাথ।
আগমাননভিক্তমা সভাং রক্ত মবেক্ষা চ ॥ ৪ ॥
ধর্ম এব মনঃ ক্ষেণ্ড! সভাবাচৈত্র মে ধৃত্য।
ধর্মবাণিজ্যকো হীনো জঘনো ধর্মবাদিনাম ॥ ৫ ॥
ন ধর্মফলমাপ্রোতি যো ধর্ম্মং দোক্ষ, মিচ্ছতি।
যশ্চনং শক্তে কৃষা নাস্তিক্যাৎ পাপচেতনং ॥ ৬ ॥
অতিবাদাঘদাম্যেষ মা ধর্ম মভিশক্ষিথাং।
ধর্ম্মাভিশক্ষী পুরুষ স্তির্যাগ্যতিপরায়ণং ॥ ৭ ॥
ধর্মো যস্যাভিশক্ষ্যঃ স্যা দার্ষণ বা তুর্বলান্ধনঃ।
বেদাৎ শুদ্র ইবাপেয়াৎ স লোকাদজরামরাৎ ॥ ৮ ॥

প্রজয়া পিতৃভঃ ইতি আচতেঃ। ঋণবা ঋণবান্ (অনুণঃ দেয়মূণে ইতি স্ত্রম্) ॥ ২ ॥ ২থাশক্তি যৎকর্ত্তবাৎ তৎকরোমীতান্বরঃ ॥ ৩ ॥ ধর্ম মিতি— বেদৰাক্যাৎ শিষ্টাচারাচ্চ নিজাম মেৰ ধৰ্মৎ চর,মি " অনি ছোত্রৎ জুত্রাৎ স্বৰ্গ কামঃ" ইতি স্বৰ্গাদি ফল আগতিন্ত ধৰ্মে প্ৰব্যাচ নাৰ্থেতিভাবঃ ॥ ৪ ॥ স্বভাবাৎ "শৌষ্যাং তেজে। প্লতি দক্ষিয়ং যুদ্ধেচাপ্যপলায়নং। দান মীশ্বর ভাবশ্ব কাত্রং কর্ম স্বভাবজন্।" ইতি গীতা,বচনোক্ত ধর্মাচরণ শীল এব ক্ষতিয়ো নানা ইতি নিয়মাৎ মে ময়া ধর্মে মনো প্লতং, যতঃ ধর্ম বাণিজ্যকে। ধর্মাৎ স্বর্গাদি ফল মিচ্ছন হীনঃ মুখ্যফলাৎচ্যুতঃ, অতএব জঘনাঃ নীচঃ ॥ ৫ ॥ ধর্ম ফলং " তমেতং বেদাত্মবচনেন ব্রাহ্মণা বিবিদিষ্তি যজেন দানেন তপসাহনা শকেন" ইতি আততে বিদ্যা বিবিদ্যা বা ধর্মস্য ফলং মুখ্যাং তল্লাপোতি, হ'শেচনং ধর্মং শঙ্কতে বিশ্বাসং নকুকতে সোপি ধর্মফলং নাপ্রোতি, পাপ চেতনঃ পাপর্দ্ধিঃ॥ ৬॥ অতিবাদাৎ—মানান্তর মতিক্রান্তো বাদো বচনৎ তস্মাৎ বেদৈক প্রামাণ্যাৎ ॥ ৭ ॥ আধৎ ক্ষরোমন্ত্রা স্তন্ধ্রামন্ত্রাকার বাধর্ম মূলভূতং মন্ত্র জাতং আ মন্ত্রি বাক্যং বেতার্থঃ, অর্থেবেতি পাঠে—ফলে বিষয়ে ইতার্থঃ, হুর্বলাম্বনঃ বিবেকাক্ষমচিত্তস্য, অপেয়াৎ অপগচ্ছেৎ, লোকাৎ, স্বৰ্লোকাদিতি পাঠেৎ প্যানন্দরপাণাত্ম লোকাদিতার্থঃ, অনাত্মলোকেরু অত্ররা মরহয়ে৷ রস-ন্তবাৎ অজরামরাৎ মোক্ষরপাৎ॥৮॥

বেদাধ্যায়ী ধর্মপরঃ কুলে জাতো মনস্থিনি।। স্থবিরেষু স যোক্তব্যা শরাজর্ষি ধর্মচারিভিঃ ॥ ১ ॥ পাপীয়ান্ স হি শৃদ্রেভ্যস্তক্ষরেভ্যো বিশিষ্তে। শাস্ত্রাতিগো মন্দবৃদ্ধি যো ধর্ম মভিশঙ্কতে ॥ ১৫ । প্রত্যক্ষং হি বুয়া দৃষ্ট ঋষির্গচ্ছনু মহাতপাঃ। মার্কণ্ডেয়োহপ্রমেয়াত্মা ধর্ম্মেণ চিরজীবিতা॥ ১১॥ বাংসো বশিষ্ঠো মৈত্রেয়ো নারদো লোমশঃ শুকঃ। অন্যে চ ঋষয়ঃ সর্বে ধর্মেণৈব স্কুচেতসঃ ॥ ১২ ॥ প্রত্যক্ষং পশাসি ছেতান্ দিবাযোগসম্মিতান। শাপানুগ্রহণে শক্তান্ দেবেভাগহপি গরীয়স:॥ ১৩॥ এতে हि धर्मारमवार्मी वर्गश्चि मनानरम्।। কর্ত্ব্য মমর প্রখ্যাঃ প্রত্যক্ষাগমবৃদ্ধরঃ ॥ ১৪॥ অতো নার্সি কল্যাণি! ধাতার পর্যামেব চ। রাজ্ঞি! মূঢেন মনস। ক্ষেপ্ত ্ শক্ষিতু মেব চ॥ ১৫॥ উন্মন্তান্মন্যকে বালঃ সর্বানাগতনিশ্চয়ান। ধর্মাভিশঙ্কী নান্যমাৎ প্রমাণমধিগচ্চতি ॥ ১৬ ॥ আত্মপ্রমাণ উন্নদ্ধঃ শ্রেরদো হবমন্যকঃ। रेक्टिय़ श्री जिम विषय यिष्ट (लोक माकिक म । এতাবন্মন্যতে বালো মোহ মন্যত্র গছতি॥ ১৭॥

বালোপি স্থবিরেষ্ যোজবেনা নিযোজবেনা গণনীয়ইত।র্থঃ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ এবং ধর্মন্ত বেলৈক গমান্তা দনতি শঙ্কান্তং বেদন্তচ শ্রেষ্ঠপ্রমাণ । মুক্ত্বা প্রতক্ষেণা দিশি ধর্ম ফলসাহিনতি শঙ্কান্ত মাহ প্রতক্ষেহহীতান দিনা—চিরজীবিতা চির জীবা ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ধর্মাং কর্ত্তবাহ বর্ব।ন্তি, প্রত্যক্ষাগমবৃদ্ধয়ঃ অস্থাকং বৈদেক গমামপার্থং প্রতাক্ষেণ পশ্যন্ত ইত্যর্থঃ ॥ ১৪ ॥ কেপোনিন্দা, শঙ্কা কলে সংশয়ঃ ॥ ১৫ ॥ এতচ্চ মৃঢ় ক্র্যি মিতাহে উম্বতানিতাাদিনা—আগত নিশ্বয়ান্ প্রশুভ্জ নিশ্বয়ান্ ॥ ১৬ ॥ উল্লেঞ্চঃ দৃপ্তঃ

^{* &}quot;রাজভিধ র্ম সরিভিরিতি" কঃ।

প্রায়শিতেং ন তস্যান্তি যে। ধর্ম মভিশঙ্কতে। ধ্যায়ন্স কুপণঃ পাপো ন লোকানু প্রতিপদ্যতে ॥ ১৮ ॥ প্রমাণাদ্ধি নিরুত্তো হি বেদশাস্ত্রার্থনিন্দকঃ। কামলোভাতিরো মূঢো নরক প্রতিপদাতে । ১৯॥ যস্তু নিত্যং কুতমতি ধ শ্বমেবাভিপদ্যতে। অশক্ষমানঃ কল্যাণি! সোহমুক্তানস্ত্যমশ্বতে ॥ ২০॥ আর্ষং প্রমাণমুৎক্রম্য ধর্ম্মং ন প্রতিপালয়ন্। সর্বাশাস্তাতিগো মূঢঃ শং **জন্মস্থ ন** বিন্দতি॥২১॥ यमा नार्वर अभागर मा क्रिकानात्रक जाविति।। নৈৰ তস্য পৰে৷ লোকো নায়মস্তীতি নিশ্চয়ঃ॥২২॥ শিকৈ রাচরিতং ধর্মং কুফে! মা স্মাভিশঙ্কিথাঃ। পুরাণমূষিভিঃ প্রোক্তং সর্বাক্তেঃ সর্বাদর্শিভিঃ॥ ২৩॥ ধর্ম্ম এব প্লবো নান্যঃ স্বর্গং দ্রৌপদি! গচ্ছতাম। দৈব নৌঃ সাগরস্যেব বণিজঃ পার্মিচ্ছতঃ ॥ ২৪ ॥ অফলো যদি ধর্মঃ স্যা চ্চবিতো ধর্মচারিভিঃ। অপ্রতিষ্ঠে তমস্যেত-জ্ঞগন্মজ্জেদনিন্দিতে । । ২৫॥

শ্রেমণে ধর্মস্যা, অন্ত্রাভীন্ত্রিয়ে ধর্মাদ্যর্থে॥ ১৭ ॥ ধারের্থান্ চিন্তরর্মপি লোকান্ ধর্ম প্রাপান্॥ ১৮ ॥ কামলোভো অতি অত্যন্তং গছতি প্রাপ্রেটীতি কাম লোভাতিগঃ ॥ ১৯ ॥ আনন্তাং ব্রন্ধভাবং ॥ ২০ ॥ শং কল্যান্য্॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ অভ্যান মিশ ধর্মে প্রমান মিতাছে অফল ইতি—অরংভাবং, যদি ধর্মোনস্যা তর্হি উর্দ্ধগতিং কন্চিদপি না পুরাৎ, জাহত্ব ভ্রিয়েখেতি মশকাদীনাম্পি পূর্বে সংক্ষারাৎ প্রনঃপুন স্ত্রজ্ঞাতীর দেহত্যৈব প্রাপ্তি আতে বন্ধত্যঃ প্রাপ্তিরেব সর্বেষ্ঠাৎ, তত্তক শাস্ত্রানর্থক্যং, যদিত্ব ধর্মোন্তি তর্হি তেষা মিপি বিশিক্ত দেশ নিবাসাদি জনিত্যা পুণাস্তাৎপরিহার্যাড়াৎ উর্দ্ধ গতিঃ সন্তব্তি ॥ ২৫ ॥

নির্বাণং নাধিপচ্ছেয়ু র্জীবেয়ুঃ পশুজীবিকাম।

*বিদ্যান্তে নৈব যুজ্যেয়ুর্ম চার্থণ কেচিদাপ্সয়ৣঃ॥২৬॥
তপশ্চ ব্রহ্মচর্যাঞ্চ যজ্ঞঃ স্বাধ্যায় এব চ।
দানমার্জ্জবমেতানি যদি স্থা রফলানি বৈ॥২৭॥
নাচরিষ্যন্ পরে ধর্মঃ পরে পরতরে চ যে।
বিপ্রস্রোহয়মতান্তণ যদি স্থা রফলাঃ ক্রিয়াঃ॥২৮॥
ঋষয়শ্চৈব দেবাশ্চ পজ্মবিশ্বেররাক্ষসাঃ।
ঈশ্বরাং কস্য হেতোস্থে চরেয়ু র্ধর্মা মাদৃতাঃ?—॥২৯॥
ফলদস্থিই বিজ্ঞায় ধাতারং প্রেয়সি ধ্রুবম্।
ধর্মঃ তে ব্যচরন্ কুষ্ণে। তদ্ধি জ্রেয়ঃ সন্তনম্ণ॥৩০॥
স নায় মফলো ধর্মো নাধর্মোহফলবানপি।
দশ্যন্তেইপি হি বিদ্যানাং। ফলানি তপসাং তথা॥৩১॥

নহ ?— যথা তৃণাৎ ক্ষীরং ক্ষীরাদ্ধি ইতিবৎপরিণামক্রমাদেব তত্তবিশিষ্ট দেশলাভা দৃর্ক গাতিভবিষ্যতি কিং ধর্মেণেত্যাশঙ্কাহ নির্বাণ মিতি—
দর্গ্রেপি গবোপভুক্তাৎ ক্ষীরমুত্রাদি নীচ পরিণাম দৃষ্টে নৈত দ্যুক্তং, তথাচ মোক্ষাসিদ্ধিং, তপ্যাঞ্চ সভ্যাং বোধ শ্রাং পশু জীবিকাং জীবেয়ু রন্ধংতমঃ প্রবিশেষু রেবেত্যর্থঃ, ততক্ত তে পশুভুল্যাং, বিদ্যাং বিদ্যাং নিব যুজ্যেরন্, সন্ত তর্হি সভাবেইনেব সর্বেপি প্রাণিনঃ কিং বিদ্যাং কিংবা মোক্ষেণ ?—
ইত্যাশঙ্কাই নচার্থং কেচিদাপ্র যুরিতি—অয়ং ভাবঃ, ষট শরা বোদঞ্চনাদিকার্য বৈচিত্রংতৎ ক্রিয়া বৈচিত্র্যায়ন্তং যথা চুষ্টং, তথা ঐছিক যত্বাভাবেপি নৃষ্ পশ্বাদিষ্চ জানৈশ্বর্ধ্য তারতম্যং দৃশ্যমানং জন্মান্তরীয় ক্রিয়াহ্য মাপকং, তদভাবে জগাইছিদ্রিস্যাকন্মিক নিধি লাভাদেশ্চাহ সম্ভবঃ স্যাদিতি। ২৬ ॥ অনাদি পরন্পরাগতঃ শিষ্টাচারোপি ধর্মান্তিত্বে প্রমাণ মিত্যাই তপশ্বেত্যাদিনা—॥ ২৭ ॥ বিপ্রলম্ভো বঞ্চনং, অয়ং যজাদি ধর্মঃ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ শ্রেয়ান শ্রেরানিমিত্তং ধর্মং ব্যচরন্, তদ্ধি ধর্মোহি শ্রেয়ঃ সাধনং সন্যভনং আনাদ্যনন্তম্ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥

^{*} বিদ্যান্তে ইত্যত্ত বিদ্যান্ত ইতি কঃ।

† " তদ্ধিশৰ্ষ সনাতনম্" ইতি ক্ল-পুন্তকয়োঃ পাঠঃ।

‡ বিদ্যানামিত্যত্ত বিজ্ঞানামিতি অপুন্তক স্তদসং।

স্বমাস্থনো বিজানী হি জন্ম ক্ষেষ্টে যথাঞাত্য।
বেপা চাপি যথা জাতো ধৃষ্ট ক্যুন্ধঃ প্রতাপবান্ ॥ ৩২ ॥
এতাবদেব পর্যাপ্ত মুপমানং শুচিম্মিতে!।
কর্মাণাং ফলমাপ্লোতি ধীরোহুল্পেনাপি তুষাতি ॥ ৩৩ ॥
বছনাপি স্ববিদ্বাং মো নৈব তুষ্যন্তাবুদ্ধঃ।
তেষাপ ন ধর্মজং কিঞ্ছিৎ প্রেত্য শর্মান্তি বা পুনঃ ॥ ৩৪ ॥
কর্মাণাং শ্রুতপুণ্যানাপ পাপানাঞ্চ কলোদয়ঃ।
প্রভবন্দাত্যয়নৈত্ব দেবগুছানি ভাবিনি! ॥ ৩৫ ॥
এতানি বেদ যঃ কন্দি নুস্তেইত্ব প্রজা ইমাঃ।
(অপি কল্পস্হত্রেণ ন স শ্রেয়োইধিগছতি) ॥ ৩৬ ॥

অত্নভবোপি ধর্মে প্রমাণ মিত্যাহ রমিতি—অয়ং ভাবঃ,''অয়ে) প্রান্তান্ততিঃ সম্য-গাদিত্য মুপ ভিষ্ঠতে। আদিত্যাজ্ঞায়তে রুক্টি রু ফৌ রন্নং ততঃপ্রজাঃ:" ইতি স্মৃতেঃ পঞ্চামি বিদ্যারাঞ্চ হ্যা-পর্যান্য-পৃথিনী-পুরুষ-যোষাস্থ অমিছ শ্রদা-দোম-বর্ষাইন্ন-রেত আছতয়ো হুয়ন্তে,ততঃ শরীর মিতি ক্রমেণ 'পঞ্চ-ম্যা মাত্তা বাপ: পুৰুষবচনো ভবন্তি" ইতি চ্চাতেশ্চ সর্বেবাং প্রাণিনা মুৎপত্তি রবগভা, ভত্ত গর্ভবাসাখ্যা রেভোক্রব্যক পঞ্চমাহত্যবন্ধা অভ্যন্ত इः थमती शुना बना (मृ रनमा नामी), त्मीभनी श्रुक्के क्षामरता खाँ शूना बनार রেতোরপ মলপরিণাম ছেতু রবাত্তিরপি নান্তি, সাক্ষাদ্ধিকুণ্ডোডব্রাৎ, তদিদং ধর্ম ফলং তবাতুভব সিদ্ধং অতোধর্মং মাবমংস্থ। ইতি॥ ৩২॥ উপমানং নিদর্শনং, কর্মস্থাদর বশাৎ অপ্পেন অল্লাচ্ছাদন মাত্রেট ভুষ্টোভৰতি নতু কৰ্মাণ্যপেকা বহুলাভাৰ্থং মতত ইত্যৰ্থ:॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ व्यञ्जर (तरमामिन्छर भूनार (यवार, भाभाना मनिके माधनानाक करलामिनः স্বৰ্গ নরক হেতৃহং, প্রভব উৎপত্তিঃ অবিদ্যোতি যাবৎ, অতায়োনাশঃ বিদ্যোতি যাবৎ, দেব গুছানি বৈদৈক বেদাছাৎ, ''তস্মাদেবানাং জন্ম প্রিয়ং যদেতশামুষ্যা বিহ্যঃ" ইতি চ্ছাতে র্দেব গুপ্যানোতানি স্ব-পশুভূত পুৰুষ বিনাশকভাৎ । ৩ঃ ৷ এতানীতি—অত্ত এতেয়ু দেবগুছোমু বিষয়েয়ু हेमा: श्राकुछा: श्रेष्ठा: मृहात्स, व्यावमामिश विमादिन विमामिशा বিদ্যাদ্বেন গৃহুন্তি, এবং পুণাপাপ বিপর্যায়োপি জ্বেরঃ, অভএব তানি

^{*} এঘনোকাৎশো নান্তি ক্-প্নন্তকে।

রক্ষ্যাণ্যেতানি দেবানাং গৃত্মায়া হি দেবতাং।
ক্ষতাশাশ্চ ব্রতাশাশ্চ তপসা দক্ষাকিল্পিয়াঃ।
প্রসাদে মানসৈ মৃক্তাঃ পশ্যন্তোতানি বৈ দিক্ষাঃ॥ ৩৭॥
ন কলাদর্শনাদ্ধর্মঃ শঙ্কিতবাোন দেবতাঃ। "
ফেইব্রপ্ত প্রযন্ত্রেন দাতব্যক্ষানস্থয়তা॥ ৩৮॥
কর্মাণাং কলমন্ত্রীই তথৈতদ্ধর্মাশাশ্বতম্।
ব্রহ্মা প্রোবাচ পূজ্রাণাং যদৃষির্বেদ কশ্যপাঃ॥ ৩৯॥
তক্ষান্তে সংশ্রঃ ক্ষেং! নীহার ইব নশ্যতু।
ব্যবস্য সর্ব্যমন্ত্রীতি নান্তিক্যং ভাব মুৎস্ত্রনা ৪০॥
ক্রম্বঞ্গাপি ভূতানাং ধাতারং মা চ বৈ ক্ষিপ।
শিক্ষান্ত্রনং নমন্ত্রনং মা তেহভূদ্দ্রি শ্রী। ৪১॥

বস্তত্বতোবেদ সং প্রায়ো দেবানাং হিত তরং কর্ম নাধিগছিতি নালুসরতি কর্ত্বাদিমদক্ত কুরণসা বিবিজ্বাদিতিভাবং ॥ ৩৬ ॥ কৃতা নাশিত। আশা হৈ তে কৃতিংসারাং স্বাদিঃ, ব্রতং হিতং মিতং মেধ্যঞ্চ অশ্বন্তি তে কৃতাশাশ্চ ব্রতাশাশ্চ শাস্তা দাস্তা ইত্যুৰ্থঃ, তপসা প্রবণ মননাত্মকেন আলোচনেন মনঃ প্রসাদৈ ধ্যান ফলৈ বুক্তাঃ দ্বিজাঃ যোগিনঃ, এতানি দেবগুহ্যানি॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ধর্ম শাশ্বতং ধর্মসা শশ্বন্তবোরং স্বভাবঃ॥ ৩৯ ॥ ব্যবস্য নিশ্চিত্য, তাবং অভিপ্রায়ন্॥ ৪০ ॥ এবং ধর্ম শ্রেষ্ঠাং নিশ্চিত্য ক্ষার প্রৈষ্ঠ মপ্যাহ ক্ষার মিতি—ধাতারং দধ্যতি কর্ম ফলানি হথাস্বং বিভজতীতি তং, কর্মণা মাশুতর বিনাশিবাৎ নঞানাঞ্চ ক স্তারীয় কল হেতুত্বাই যোগাৎ অপূর্ব্ব কপনারাশ্চ " সর্বন্তি বলী সর্বাদ্যো শানঃ" ইতি সর্বাদ্যেশ্বরাধীনত্ব প্রতি পাদক প্রভাবাধাৎ লে।কিক রাজ ভৃত্য দৃষ্টান্তাচ্চ কর্মতি স্তাক্টো বা ক্ষার এব সদসংকলবিভালক ইতি ভাবঃ, মা

যদ্য প্রদাদান্তভক্তো মর্ত্ত্যে গচ্ছত্যমত্যিতাম । উত্তমাং দেবতা শুকুষ্ণে। মাবমংস্থাঃ কথঞ্চন''॥ ৪২ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি অর্জুনাভিগমন পর্ব্বণি যুধিষ্ঠির

দ্রেপিত্রাবাচ।

"नारमत्ना न शरक् b धर्माः शार्थ! कथक्षन। ঈশ্বং কৃত এবাহ মবমংস্যে প্রজাপতিম্?—। ১॥ আর্ত্তাহং প্রলপামীদ মিতি মাণ বিদ্ধি ভারত!। ভুয়শ্চ বিলপিষ্যামি স্থমনাস্ত্রু নিবোধ মে। ২॥ কর্ম খল্লিহ কর্ত্তব্যং *জানতামিত্রকর্ষণ !'। অকর্মাণো হি জীবন্তি স্থাবরা নেতরে জনাঃ॥ ৩॥ यावाका अने नाम यावकारशां भरतवार । জন্তবঃ কর্ম্মণা হৃত্তি মাপ্লুবন্তি যুধিষ্ঠির ! ॥ ৪ ॥ ক্ষিপ মা নিন্দাং কুক, শিক্ষস্থ শাস্ত্রাচার্যোপদেশা দধীয়। ৪১॥ ৪২॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকণ্টীয়ে ভারত ভাবদীপে একতিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৩১॥

নাৰমন্য ইতি-॥ ১ ॥ ২॥ স্থাৰর। ইতরে জনা বা,-ছি যন্মাৎ অকর্মাণো নজীবন্তি, অতঃ কর্ম কর্তান্য মিতি খোলনা, তথাচায়ং প্রয়োগঃ, স্থাবর জীবিকা প্রাত্তর্মা পূর্বিকা জীবিকাহাৎ পাকাদি ক্রিয়া পূর্বি কাহমাদাদে জীবিকা বাদিতি॥৩ । স্থাংরেষক্তং নাায়ং তীর্যাকু যোজ श्रु श्रिक्ति—मामाकारमा (भावरममा खन्यानामि अहुन द्रि স্থজনক সংস্থারহেতু-প্রাক্তন কর্ম সত্ত্বে প্রমাণ মিতার্গঃ, মাবস্লো স্তনপানাৎ সে - ভ নপানাদে বিভাৰ্থঃ, যাকচায়ে।প সেবনাৎ প্ৰতিমান্তা-রক ভোগবদিতার্থঃ, অয়ং ভাবঃ, কেলিক শাস্ত্র প্রসিদ্ধণ শক্র নিম্বিতায়াৎ চৈত্রপ্রতি মায়াং শক্রণা কওকাদিনা মুন্নায়াং চৈত্রো ব্যথতে, তত্র ব্যথা

^{*} জাতেন ইতি কঃ।

জঙ্গনেষু বিশেষেণ মনুষ্যা ভরতর্ষভ!।
ইচ্ছন্তি কর্মনা রক্তি মবাপ্তঃ প্রেত্য চেই চ॥ ৫॥
উপ্থানমভিজানন্তি সর্ব্বভূতানি ভারত!।
প্রত্যক্ষং কলমশ্বন্তি কর্মনাং লোকসাক্ষিক্য,॥ ৬
সর্ব্বে হি স্বং সমুপ্থান মুপজীবন্তি জন্তবः।
অপি ধাতা বিধাতা চ যথায় মুদকে বকং॥ ৭॥
অকর্মনাং বৈ ভূতানাং রক্তিঃ স্যান্ন হি কাচন।
তদেবাভিপ্রপদ্যেত ন বিহ্ন্যাৎ কদাচন॥ ৮॥
স কর্ম্ম ক্রুম মা প্লাসীঃ কর্মনা ভব দংশিতঃ।
কৃতং হি যোহভিজানাতি সহত্রে সোহন্তি নান্তি চ॥ ৯॥
তস্য চাপি ভবেৎ কার্যাং বিহুদ্ধো রক্ষণে তথা।
ভক্ষ্যমানো হ্যনাদানাৎ ক্ষীয়েত হিমবানপি॥ ১০॥

নিমিত্তং আত্তরং ধাতু বৈষম্যং বাছ্যং বা কণ্টক বেধাদি ন কিঞ্চিদ্টেমন্তি, किन्छ (करन मनुष्ठेरमर, जान्तिन नाराय जन्न कर्मना व्याप्तीरनरेनर রৃদ্ধিং জীবনং আপুবন্তি ॥ ৪॥ জঙ্গমেশিতি--প্রেত্য মৃত্য ॥ ৫॥ উখানং উত্তিষ্ঠতি প্রবর্ততে অমাদিত্যখানং প্রাকর্ম সংস্কারঃ, তং সর্বেপি প্রাণিনঃ অভিজানত্তি অভ্যাত্ৰন্তি, ততঃ কৰ্মস্থ প্ৰবৰ্ত্তব্তে তৎফলঞ্চাপু বৃদ্ধি, তন্মাৎ কর্ম-তৎসংস্কার পরস্পারেয় মনাদিরিতার্থঃ ॥ ৬ ॥ সর্কেছীতি—যথাইয়ং বক: পূর্বে সংস্কারাৎ রক্তার্থী ধাবতি এবং ধাতা ঈশ্বরোপি অনাদি সংস্কার বশাৎ পূর্ব্ব পূর্ব্বকম্প স্বরূপামের সৃষ্টিং করোতি 'ধাতা যথা পূর্ব্ব भकल्पात्र ? के ज व्यार्टिंग, ज्या विश्वाजा धर्मालि भूकी मश्काता सरदार्धिनव কর্মণি প্রবর্তমতি, অন্যথা সংসারাহনানিয়ানভ্যুপগমে কুতহানাহ কৃতাভ্যুপগমাদি দোষ: স্থাদিতিভাব: ॥ १॥ এবং প্রাক্তন কর্ম প্রাবল্য মাহ অকর্মামিতি:-- याह्या মুখচালনাদি দৃষ্ট यञ्ज भूना न জীবিকান্তি, অত শুদেব দৃষ্ট ফলং, কর্মেব ন বিহন্যাৎ দৈবপরোভূহা নত্যাজেদিতার্থঃ ॥ ৮॥ দংশিতঃ সরজঃ, কৃতং কর্মা কর্ত্তব্যমিতি শেষঃ॥ ৯॥ তম্মকর্মণঃ काशार প্রহোজনং, রক্ষণে হর্ণানামিতি শেষঃ, অনাদানাৎ অসং গ্রহাৎ, मस्त्रनार्थिन न मरखोकेवार किन्छ **उधिहक्षार्थर कर्य कर्जना मि**जार्थः ॥ ১०

উৎসীদেরন্ প্রজাঃ সর্ববা ন কুর্য্যুঃ কর্মা চেচ্চুবি। তথা ছেতান বদ্ধেরন্ কর্মা চেদফলং ভবেং॥ ১১॥ অপি চাপ্যফলং কর্ম পশ্যামঃ কুর্বতো জনান্। নানাথা ছপি গচ্ছন্তি বৃত্তি লোকাঃ কথঞ্চন। ১২। यक्त मिके भरता लात्क यक्तां वि इठेवा मिकः। উভাবপদদাবেতৌ# কৰ্মাবুদ্ধিঃ প্ৰশ্সাতে॥ ১৩॥ या हि निकेमुलामो वा निर्वित्वकः सूथना गरतः । অবদীদেৎ স তুর্বি দ্ধি রামো ঘট ইবোদকে 🗱 ॥ ১৪॥ ††তথৈব হঠবুদ্ধি র্যঃ শক্তঃ কর্ম্মণ্যকর্ম্মরুৎ। षाशील न हित्र कीरव मनाथ देव क्र्रलः ॥ :० ॥ অকসাদিহ যঃ কন্তি দর্থন প্রাপ্তে পুরুষঃ। ত হঠেনেতি মন্যন্তে স হি যত্নো ন ক্যাচিৎ ॥ ১৬ ॥ যক্তাপি কিঞ্চিৎ পুরুষো দিষ্টৎ নাম ভজতাত। দৈবেন বিধিনা পার্থ! তদ্ধৈবমিতি নিশ্চিতম্॥ ১৭॥ ষৎ স্বয়ং কর্মাণা কিঞ্চিৎ ফলমাপ্লোতি পূরুষঃ। প্রত্যক্ষমেতলোকেষু তৎ পৌরুষমিতি স্মৃতম্ ৷ ১৮ ৷

॥ ১১॥ অপিচেতি—কর্মাং কচিদফলত্বেপি আবশুক্রং নিতাত্মিতার্থঃ
॥ ১২ ॥ যশ্চেতি—দিউপরো মন্ত্রোষধাদ্য হৃদ্ট দ্বারেবার্থ সাধন পরঃ
কৌলিকঃ, হচবাদিকঃ প্রাণ্যজন্মভাবাৎ অকৃত মেবোপস্থাস্থ তীতিবদন্
চার্কাকঃ এতৌ শঠো, প্রাক্রমানদীকারাৎ, পাচান্তরে—অপসদে অধমৌ,
কর্ম বৃদ্ধিঃ প্রাক্তনং তাৎকাদিক্রঞ কর্ম সহিতং দং ইন্ট সাধন মিতি
বৃদ্ধিমান্ ॥ ১৩ ॥ নির্বিচেন্টঃ দৃষ্ট যত্রহীনঃ, শঙ্গের শেরাৎ, আম অপকঃ
॥ ১৬ ॥ ১৫ ॥ হ্চাদীন্ বাচন্টে—অক্মাদিতি, অচিন্তিত্ত অতর্কিত্ত্রচ্
লাভোহঠঃ ॥ ১৬ ॥ দৈবং দেবতারাধন্ম ॥ ১৭ ॥ পেশিক্ষং যথোক্ক প্রতি

^{* &#}x27;'উভাবপি শঠা বেতে।" ইতি ষঃ।

† উপাসীন ইতি ষঃ। ‡ স্বপন্নিতি কঃ।

** উথৈবহঠনুবুদ্ধি রিতি ষ পুস্তক পাঠঃ †† ইবাস্তুসীতিকঃ।

স্বভাবতঃ প্রবৃত্তো যঃ প্রাপ্রোত্যর্থণ ন কারণাৎ। তৎ স্বভাবাত্মকং বিদ্ধি ফলং পুরুষসন্তম।॥ ১৯॥ এবং ইঠাচ্চ দৈবাচ্চ স্বভাবাৎ কর্ম্মণস্তথা। যানি প্রাপ্নোতি পুরুষ স্তৎ ফলৎ পূর্ব্বকর্মাণ্যু ঃ ২০॥ ধাতাপি হি **স্বক্ষৈব তৈন্তৈ হে** তুভি রীশ্বরঃ। বিদ্বাতি বিভজোহ ফলং পূর্বাক্কত্ত নৃণাম্।। ২১।। যদায়ং পুরুষঃ* কন্দিৎ কুরুতে বৈ শুভাশুভম্। তদ্ধাতৃবিহিতং বিদ্ধি পূবাকৰ্মফলোদয়ম্॥ ২২॥ কারণ্ণ ভস্য দেহোহয়ং ধাতুঃ কর্ম্মণি বর্ত্ততে। স যথা প্রেরয়ত্যেনং তথায়॰ কুরুতেহ্বশঃ॥২৩॥ তেষু তেষু হি ক্তোষু বিনিয়েক্তা মহেশ্বরঃ। সর্বভূতানি কৌন্তেয়। কারয়ন্ত্যবশান্যপি॥২৪॥ মনসার্থান্ বিনিশ্চিত্য পশ্চাৎ প্রাপ্রের্গিত কর্ম্মণা। বুদ্ধিপূর্নাৎ স্বয়ৎ বীর ! পুরুষস্তত্ত কারণম্ ॥ ২৫ ॥ সম্ব্যাতুৎ নৈব শক্যানি কর্ম্মাণি পুরুষর্যভ !। অগার-নগরাণাং হি দিদ্ধিঃ পুরুষহৈতুকী॥ ২৬॥

তাহাদি বৃত্তিঃ ॥ ১৮ ॥ সভাবো রঃ প্রকর্মান্ত্ তাহঃ যথা নট কপদিকা দেয়ল প্রক্রম্য রত্নলাভঃ ॥ ১৯ ॥ এতচ্চতু ইয়জোপি লাভঃ পূর্বে কর্মা ফলমেব ॥ ২০ ॥ স্বকর্মাব কর্মাধীন এব বিদধাতি অপরাতি পূর্বেকর্মান্ত্র ॥ ২১ ॥ কারণ মিতি—যঃকর্মানি বর্ততে সোরঃ মান্ত্র দেহঃ প্রাণাভ বীয় স্তম্ম প্রবর্তক্রমা ধাতুর পিকার নাং প্রবর্তকঃ. সঃ ধাতা, এনং বর্তমান দেহং, বীজাক্বরবং ধাতৃ প্রের্যোদেহঃ দেহপ্রের্যাক্ত ধাতাইত্যর্থঃ, দেহো দেহসাধাং কর্মা ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ নত্ন ং পূর্বেক গৈত্ব প্রবর্তকংকে কিং পূর্বক ব্রেণ ং—ইত্যা শক্ষাছ মনসেতি— ॥ ২৫ ॥ এতদিপ প্রাক্রমান্ত বেতা শক্ষাছ সংখ্যাতু মিতি—সংখ্যাতু প্রাক্রমেব কারণংন প্রক্রমকারঃ ইতি নিশ্চেত্বং, তত্ত্ব হেতুঃ অগারেতি—॥ ২৬॥

^{*} ক(শ্চদিভাত্র কঞ্চিতি ঘঃ ;

ভিলে তৈলং গৰি ক্ষীরং কাঠে পাৰকমন্ততঃ। धिया धीरता विकानीताकुशायकामा मिक्रास ॥२१॥ ডতঃ প্রবর্ত্তে পশ্চাৎ কার্থে স্কত্র সিদ্ধয়ে। তাং সিদ্ধি মুপজীবন্তি কর্মাণামিহ জন্তব: ॥ ২৮॥ কুশলেন ক্লতং কর্মা কর্ত্রা সাধুষমুষ্ঠিতম্ ইদন্ত কুশলেনেতি বিশেষাতুপলভাতে ॥ ২৯ ॥ इंग्रें शृर्क्कल न मा न मिर्या न शुक्र हरिय । পুরুষः কর্মাধ্যেষু স্যাচেদয় মকারণম্॥ ৩ ।। কর্তৃত্বাদেব পুরুষঃ কর্ম্মসিদ্ধৌ প্রশস্যতে। অসিন্ধৌ নিন্দতে চাপি কর্তা নাসীৎ কথন্তি হ॥ ৩১॥ সর্ব্যমেব হঠেনৈকে দৈবেনৈকে বদন্ত্যুত্ত। পুংসঃ প্রযুক্ত কিঞ্চি দ্রৈধ মেতন্নিরুচ্যতে ॥ ৩২ ॥ ন চৈবৈতাবতা কার্যাং মনান্ত ইতি চাপরে। অন্তি সর্বামদৃশ্যম্ভ দিউঞ্চৈব তথা হঠঃ॥ ৩৩॥ मुभारक हि र्घाटेकर निकाकार्थमा मञ्जूकिः। াকঞ্চিদেবাদ্ধঠাৎ কিঞ্চিৎ কিঞ্চিদেব স্বভাবতঃ । ৩৪ ।

তিল ইতি—পদ্ধ নাবেন প্রাকর্ম সিদ্ধমেব পুক্ষকারেছ ভিব্যনজীতার্থঃ, আন্ত তেলাদেঃ সিদ্ধরে আপ্তরে ॥ ২৭ ॥ কারণেঃ যন্ত্র নিপাড়নাদিভিঃ, তাংসিদ্ধিং তৈলাদি প্রাপ্তিং, কর্মণামিতি পাঠে—সিদ্ধিং ফলং, তাং তৈলাদি প্রাপ্তিম্ ॥ ২৮ ॥ কুশলেনেতি—বিশেষাৎ ফলভেদাৎ, ঐহিক কর্মণোপি প্রাবল্য মন্তীতার্থঃ ॥ ২৯ ॥ বিশ্বিপ্রতিষেধ-শান্ত বৈর্থ্যানাথান্ত্রপ পন্ত্যাপি প্রক্ষকারস্য শ্রেষ্ঠমাই ইটেতি দ্বাভ্যাং—ইফং যাগাদি, আপুর্তং তড়াগারামাদি ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ সক্ষমিতি—ইচাদ্যঃ অকন্মাদিই যঃ কন্ফিদিত্যাদিক্ষোক্তরেল ব্যখ্যাতাঃ, অভাবত্যাপি ইঠএবান্তর্ভাবঃ, হঠেনৈকে চার্কাকাঃ—দৈবেনেকে কোলিকাঃ—প্রমন্ত্রভং প্রাক্তাঃ ॥ ৩২ ॥ এতেরেব নার্থ সিদ্ধি রিতি বৈদিকা ইত্যাহ নচেতি—অদৃশ্বং ধর্মধির্মরপং প্রাক্রর্ম তদেব দিক্টা ইটাদিকং সর্ক্ষিত্যর্থঃ ॥ ৩০ ॥ অন্ত পূর্বপক্ষঃ—

^{*} বিনিশ্চিত মিতি ক:।

পুরুষ: ফল মাপ্লোতি চতুর্থং নাত্র কারণম্। कुमलाः প্রতিজ্ञানন্তি যে বৈ তত্ত্ববিদে। জনাঃ॥ ৩৫॥ তথৈৰ ধাতা ভূতানা ফিফানিফফলপ্ৰদঃ। যদিন স্যান্ন ভূতানাপ ক্লপণো ন,ম কশ্চন॥ ৩৬॥ যং য মর্থমভিপ্রেপ্স্: কুরুতে কণ্ম পুরুষ:। তত্তৎ সফলমেব স্যাদ্যদি ন স্যাৎ পুরাক্কতম্।। ৩৭॥ ত্রিদারা মর্থাসিদ্ধিন্ত নাত্রপশ্যন্তি যে নরাং। তথৈবানৰ্থ সিদ্ধিঞ্চ যথৈবাত্মা তথৈব তে॥ ৩৮॥ কর্ত্তব্যমেব কর্ম্মেভি মনোরেষ বিনিশ্চয়:। একান্তেন শ্বনীহোহয়ং পরাভবতি পুরুষঃ॥ ৩৯॥ কুর্ব্বতো হি ভবত্যের প্রায়েণেই যুধিষ্ঠির !। একান্তফলসিদ্ধিন্ত ন বিন্দত্যহলসঃ ক্লচিৎ ! ৪০॥ অসম্ভবে ত্বস্য হেতুঃ প্রায়শ্চিত্তম্ভ লক্ষয়েৎ। ক্তে কর্মাণ রাজেন্দ্র। তথানুণ্য মবাপ্লুতে ॥ ৪১॥ অলক্ষী রাবিশত্যেনং শ্য়ান মলসং নরম্। নিঃস^শয়ং ফল^ লকু। দক্ষো ভূতি মবাশুতে॥ ৪২॥

দৃষ্ঠতে হীতি—স্কভাবতঃ বত্বতঃ ॥৩৪॥ চতুর্থং প্রাক্ষ কুশলা ইত্যুপছাসঃ,
ইতি প্রতি জানভীত্যধাছত্য যোজ্যয় ॥ ৩৫॥ দিদ্ধান্ত মাহ তথেতি—
॥ ৩৬॥ ৩৭॥ তিম্বামিতি—হঠাদি ত্রংং ঘারমেবার্থসিদ্ধে মুখ্যং
কারণং কর্মে বেডার্থঃ, আত্মা দেহঃ দেহবত্তে জড়া ইত্যর্থঃ, যথা লোকা
ইতি পাঠে—লোকাঃ লোকায়তিকাঃ ॥ ৩৮॥ কর্ত্ব্য মেবেতি—যথা
প্রামকামশ্র সাংগ্রহণীষ্ঠা রাজসেবা চ ই ১ মর মহুষ্ঠেয়ং তম্বদিহ দিষ্ট
পৌক্ষাত্মকং কর্ম কর্ত্ব্যমেব হঠপক্ষন্তার্ত্য এবেতার্থঃ, একান্তেন অতি
শরেন, অনীছো নিক্টেইঃ হঠবাদীতার্থঃ ॥ ৩৯॥ ভাত্যেব কল্ সিদ্ধিঃ,
জলসঃ অসম্যক্ষারী ॥ ৪০॥ অসম্ভবেত্তি—অক্টবকুল্যাৎ কর্মকলা হত্তপা
দেতু অত্য ক্ষলত্য হেতুঃ প্রায়াল্ডবং দোর প্রতি সমাধানং লক্ষ্যেৎ কর্মতঃ
ফল্ভাবেহক্ষ বৈকুল্যং ক্ল্যাং নতু কর্ম্ম বিয়র্থ্য মিতিভাবঃ, কর্মণি সাক্ষে
ক্তে আনুণ্যং ক্লায়ংপাদোপি নির্দ্যেবছং ॥ ৪১॥ ৪২॥

***অনর্থ: সংশ্রাবন্থাঃ সিধ্যন্তে মুক্তসংশ্রা:।** ধীরা নরাঃ কর্ম্মরতা ন ত নিঃদ<শরাঃ ক্রচিৎ* ॥ ৪৩॥ এক তেও ছনর্থো হয়ং বর্ত্ত তেই সাম্প্র সাম্প্রতম্। স তু নিঃসশ্রহ্ণ ন সাাৎ তুরি কর্মণাবস্থিতে॥ ৪৪॥। অথ বা সিদ্ধিরের স্যাদভিমানং তদেব তে। রকোদরস্য বীভৎসো ভ্রাত্রোশ্চ যময়ে রপি ॥ ৪৫ ॥ : অন্যেষা কর্ম সফল মস্মাকমপি বা পুনঃ। বিপ্রকর্ষেণ বুধ্যেত ক্লভকর্মা যথাফলম্ ॥ ৪৬ ॥: পুথিবী লাঙ্গলেনেই ভিত্তা বীজ পবপত্যত:: আস্তেইয়ং কর্ষকস্তৃষ্টীং পর্জ্জন্যস্তত্র কারণমু॥ ৪৭ ॥ वृक्ति (भवा मुश्कीश परनना खज कर्यकः। यদন্যঃ পুরুষঃ কুর্য্যাৎ ক্লতং তৎ সফল সমা ॥ ৪৮॥ তচ্চেদফলমম্মাক মপরাধোন মে ক্লচিৎ। ইতি ধীরোৎস্ববেক্ষাব নাত্মানৎ তত্র গছ যেও॥ ৪৯॥ কুর্বতো নার্থসিদ্ধির্ম্মে ভবতীতি হ ভারত।। নির্কেদো নাত্রকর্ত্তব্যা দ্বাবন্যৌ হত্তকারণমূ। ৫০। সিদ্ধির্বাপ্যথবাইসিদ্ধি রপ্রবৃত্তি রতোইন্যথা। বছুনাৎ সমবায়ে হি ভাবানাং কর্ম্মসিদ্ধয়ঃ ॥ ৫১॥

অনর্থা: অর্থহীনাঃ, নত্ন নিশ্চিতং ধীরা নিঃসংশরা তুর্ল ভা,ইত্যর্থ: ॥ ৪৩ ॥ অনর্থো রাজাচুতিঃ, কর্মনিপৌক্ষে ॥ ৪৪ ॥ অসিদ্ধি রিতিছেলঃ কৃতেপি পৌক্ষে যদি ফলাসিদ্ধি রেবসাং তর্হি তদৈবতে তব রকোদরাদীনাং অভিমানং সাকলেন প্রমাণং রাজাহনইত্বে স্যাৎ,তদা রাজ্যাশা বিচ্ছেদাং ন মম রাজ্যার্থ মুদ্ধোঃ প্রাদিতিভাবঃ ॥ ৪৫ ॥ অন্যেষা মুশাকং বা কর্মা সকলং ঘথা তথা কৃতকর্মা বিপ্রকর্ষেণ কর্মকরণান্তে বুধ্যেত, তৃদ্ধ অকৃত কর্মা কথং বুদ্ধেঃ ?— ইতিভাবঃ ॥ ৪৬ ॥৪৭॥ ৪৮॥৪৯ ॥ নির্কেটো বৈরাগাং ছাবনো পৌক্ষানির্কেটো, অত্র কর্ম সিদ্ধা ॥ ৫০ ॥ সিদ্ধি বাইস্ত কিন্তু

^{* &#}x27;'অনর্থং সংশ্যাবন্থংগৃৰতে মুক্ত সংশয়।" ইত্যেবং ক পুক্তক পাঠঃ।

* নিঃসংশ্যং কচিদি তি কঃ

গুণাভাবে ফলং নৃনং ভবত্যফলমেব চ।

অনারস্তে তুন ফলং ন গুণো দৃশ্যতে ক্চিং॥ ৫২॥

দেশকালাবুপায়াংশ্চ মঙ্গলং স্বস্তির্জয়ে।

যুনক্তি মেধয়া ধীরো ষথাশক্তি মথাবলম্॥ ৫০॥

অপ্রমন্তেন তং কার্য্য মুপদেই। পরাক্রমঃ॥ ৫৪॥

ভূয়িঠং কর্মযোগেষু দৃশ্যমেব পরাক্রমঃ॥ ৫৪॥

যত্র ধীমানবেক্ষেত শ্রেয়াংসং বছভি গুলিঃ।

সামেবার্থং ততো লিপ্সেং কর্ম চাম্মে প্রযোজয়েরং॥ ৫৫॥

ব্যসনঞ্চাস্য কাক্ষেত বিবাসং বা যুধিষ্ঠির!।

অপি সিক্ষো গিরেকাপি কিং পুনর্মার্ত্য-ধর্মাণঃ!—॥ ৫৬॥

উপ্রানযুক্তঃ সততং পরেষামন্তরৈষণে।

আন্গ্য মাপ্রোতি নরঃ পরস্যাত্মন এবচ॥ ৫৭॥

ন স্থাত্মগারিভূতস্য ভূতির্ভবিতি শোভনা॥ ৫৮॥

প্রবৃত্তি রেব মাহস্ত ইতার্থঃ, বহুনাং সর্কোং সমবায়ে সমুদায়ে, ভাবানাং কারণানাম্ ॥ ৫১ ॥ গুণঃ অপ্রধান মলং, তদভাবে গুণঃ শৌর্যাদিঃ ॥ ৫২ ॥ উপায়াঃ সামাদয়ঃ, অন্তি র্জমে কল্যাণ র্জয়ে ॥ ৫০ ॥ অপ্রমতেনেতি—তৎদেশকালাদিনে গাখাং কার্যঃ আদরণীয়ং, তত্র পরাক্রমঃ পুক্ষকারস্ত উপদেক্তা কার্যা কর্তা মুখ্য ইতার্থঃ, ভূমিচং শ্রেচং, কর্মষোগেয় কার্যা ঘটনাম, পরাক্রমঃ দৃশ্যমেব প্রসিজ্ঞব শ্রেচ্ছেন; তথাৎ পরাক্রমে যতিত্যমিতি ভাবঃ ॥ ৫৪ ॥ নম্ ভাতৃষু ধার্ত রাফ্রেমু কথং পরাক্রাভং শক্যং ?—ইত্যাশক্রা সামাহসম্ভব মাহ যত্রেতি—অবেক্ষেত আদরং কুর্যাৎ শ্রেষাংসং প্রশন্তবরং, কর্মচ ভেদং দানাখাং বা ॥ ৫৫ ॥ ছর্মোধনি ছর্মোধনে তু ন সামভেদ দানান। মুপায়ানাং সম্ভবেশ্তি, অতন্ত্রে দণ্ডএব শ্রেষান্ ইত্যাহ ব্যসন।মতি—ব্যসনং রাফ্রোপপ্লবাদি, বিবাসনং দেশারিঃ সারণম্ ৯ ৫৬ ॥ উখান মুক্তঃ যত্রবান্, অন্তরেমণে ছিল্রাবেষণে, আনুর্গৃহ নির্দেহিছৎ, পরস্থাই মাত্যাদেঃ ॥ ৫৭ ॥ নরশক্তঃ কর্ম মুখানং কুর্ব্যাৎ পু—

^{*} সিদ্ধিরেব পরাক্রমে ইতি কঃ

এবং সংস্থিতিকা সিদ্ধি রিয়ন লোকস্য ভারত!।

তত্র সিদ্ধিগতিঃ প্রোক্তা কালাবস্থাবিভাগতঃ ॥ ৫৯ ॥

ব্রাহ্মণন মে পিতা পূর্বন বাসয়ামাস পণ্ডিতম্।

সোহপি সর্বামিমান প্রাহ পিত্রে মে ভরতর্ষভ!॥ ৬০ ॥

নীতিং বৃহস্পতিপ্রোক্তাং ভাতুন মেংগ্রাহয়ৎ পুরা।

তেবাং সকাশাদ্রভাষ মহমেতত্ত্বলা গৃহে॥ ৬১ ॥

স মান রাজন্! কর্মাবতী মাগতামাহ সান্ত্রুমন্।

শুক্রাবনা মাসীনান পিতুরক্ষে যুধিন্তির!"॥ ৬২ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি অর্জুনাভিগমন পর্বাণি দৌপদীবাক্যং

নাম দ্বাত্রিশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৩২ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

যাজ্ঞসেন্যা বচঃ শ্রুত্বা ভীমসেনো হুমর্ষণঃ।
নিশ্বসন্নুপসঙ্গম্য কুন্ধো রাজান মত্তবীৎ—॥ ১॥
রাজ্যস্য পদবীং ধর্ম্মা৲ ব্রজ সংপুরুষোচিতামু।
ধর্মকামার্থহীনানাং কি৲ নো বস্তুক তপোবনে ১—॥ ২॥

ইতাশেলাছ—নত্ত্বেজ্—॥ ৫৮ ॥ এবং সংস্থিতিক। ঈদ্ধাবস্থাবতী সাংসিদ্ধিনীতিপাঠে—স্বাভাবিকীতার্থ:, সিদ্ধি: ফল সিদ্ধি:, তত্ত্তি কালাবস্থায়ো রাম্কুল্যেন গতি রবেষণে যত্ত্ব: সৈব সিদ্ধি: সিদ্ধি মূল্য ॥ ৫১ ॥ ৬০ ॥ ৬১ ॥ কর্মবতী মাগতাং,—কিঞ্ছিৎ কার্যোদেশেন পিতৃর ন্তিকে আগতবতীং ॥ ৬২ ॥

ইত্যারনাকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দাত্রিংশোহধ্যারঃ । ৩২॥

যাজসেনা ইতি ॥ ১ ॥ এবং দ্রেপদা প্রাকর্মাধীনাং ক্লিসিদি
মদীক্ত্যাপি তদ্বারা তৃতত্ত পুক্ষকারত্ত প্রাবল্যে প্রতি পাদিতে রাজান
মুদ্েযাজয়ন্ ভীম আহ রাজান্য পদবী মিত্যাদি—পদবীং প্রাপ্তিমার্গং,

নৈব ধর্মেণ ভদ্রাজ্যং নার্চ্জবেন ন চৌজসা। অক্ষকৃট মধিষ্ঠায় হৃত্ত ছুর্যোধনেন বৈ ॥ ৩ ॥ গোমায়ুনেব সিংছানাং ছুর্বলেন বলীয়সাম্। আমিষ বিঘসাশেন তথ্তাজ্য হিনো হৃত্যু॥ ৪॥ ধর্মলেশপ্রতিচ্ছনঃ প্রভবং ধর্মকাময়োঃ। অর্থমুৎস্ক্র্ কিং রাজন্ ! ছুংখেষু পরিতপাদে ?— ভবতোহনবধানেন রাজ্য নঃ পশ্যতাং হৃত্যু। অহাৰ্য্যমপি শক্তেণ গুপ্ত~ গাণ্ডীবধন্বনা॥ ৬॥ কুণীনানিব বিল্লানি পঙ্গুনামিব ধেনবং। হ্লতমৈশ্বৰ্য্য মস্মাকৎ জীবতাৎ ভবতঃ ক্লতে॥ १॥ ভবতঃ প্রিয়মিত্যেবং মহন্ত্যসন্মীদুশম্। ধর্মকামে প্রতীতস্য প্রতিপন্না: স্ম ভারত!॥৮॥ *কর্ষয়াম: স্থমিতাণি নন্দ্যামশ শাত্রবান্। আত্মান^ ভবতা^ শাস্ত্রৈ র্নিয়ম্য ভরতর্বভ ! ॥ ৯ ॥ যদ্বয়ং ন তদৈবৈতান ধার্ত্তরাষ্ট্রানিহমহি। ভিবতঃ শাস্ত্রমাদায় তন্ন স্তপতি চুষ্কৃত্যু॥ ১০॥

ধর্মাৎ বনবাস কাল পালন রূপান্ধর্মা দনপেতাৎ, কিং ?—প্রয়োজন মিতি শেষ: ॥ ২ ॥ কূটং কপট্ । ৩ ॥ বিষস্যো ভূত বলিশেষ:, শ্ব-কাকাদি যোগান স্তদ্ধেকে। শুনকেলেতার্থ: ॥ ৪ ॥ ধর্মলেশ: প্রতিজ্ঞা-পালন জ স্তেন প্রতিজ্ঞা আরুত:, অর্থং রাজ্যাখান্ ॥ ৫ ॥ অনবধানেন প্রমাদেন, পশ্যতামিতানাদরে বর্তী ॥ ৬ ॥ কুণীনাং হস্ত বিকলানাং. পালুনাং পাদ বিকলানাং 'বর্তী পূর্ববং' ভবত: ক্তে ভবলিমিত্তম্ ॥ ৭ ॥ ধর্মকামে ধর্মে চহায়াং, প্রতীত্সা বিশ্বস্তুত্ত, ধর্মকাম্যা প্রতীতত্তেতি পাঠে—ধর্মেচহায়াং বিশ্বস্তুত্ত ॥৮ ॥ শাক্তি: শম্বচনৈঃ, ভবতাং ভাসমানানাংযোগিনান্ ॥৯॥১০॥

^{*} কৰ্মামশ্চ ইতে।বং ক-ঘ।

व्यर्थनाययद्यक्य मृत्रवर्धात्रिवाज्ञनः। তুর্বলাচরিতাং রাজন্। ন বলক্তৈরিকেবিতামৃ॥ ১১॥ ষাং ন ক্লো ন বীভৎস্থ নাভিমন্ত্যু ন স্ঞ্লয়াঃ। ন চাহমভিনন্দামি ন চ মাদ্রীস্কৃতাবুভৌ॥ ১২॥ ভবান ধর্মো। ধর্ম ইতি সততং ব্রতকর্ষিতঃ। কচিদ্রাজন নির্কেদ।দাপনঃ ক্লাব-জীবিকাম্॥ ১৩॥ তুর্মনুষ্যা হি নির্বেদ মফল প্রার্থঘাতকম্। অশক্তাঃ শ্রেরমাহর্কারনঃ কুর্বতে প্রিয়ম্॥ ১৪॥ স ভবান্ দৃষ্টিমান্ শক্তঃ পশ্যন্তমাস্থ্র পৌরুষম্। আনৃশৎস্যপরো রাজনানর্থ মবরুধ্যসে—॥ ১৫॥ ष्यानमी धार्खदाष्ट्रा क्रममागानश्लः मञ्हा जनकानिव मनारम जम् :थः नाहरव वसः ॥ ১৬ n তত্র চেদ্যুধ্যমানানা মজিকা মনিবর্ত্তিনাম। সর্বশোহি বধঃ শ্রেয়ান প্রেত্য লোকান্ লভেমহি॥ ১৭॥ অথবা বয়মেবৈতান নিহত্য ভরতর্ষভ!। व्याननीयहि शार मक्वार उथानि त्यां এव नः ॥ ५ ॥ দৰ্ববৰা কাৰ্যামেতন্নঃ স্বধৰ্মমনুতিষ্ঠতাম্। কাজ্জতাং বিপুলাং কীর্ত্তি বৈরং প্রতিচিকীর্ষতাম্ ১৯ ৷ আত্মার্থ যুধ্যমানানাং বিদিতে কুত্যলক্ষণে। অন্যৈরপি হৃতে রাজে, প্রশানীব ন গর্হণা॥ ২০॥

মৃগ্য চর্যামিব এনাংবনচর্যাং, অবলস্থৈ নিষেবিতা ইতে।কং পদং, বলবন্তি রসেবিত। মিতার্থঃ॥ ১১॥ ১২॥ ন আপার ইতি.সম্বন্ধঃ॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ আলং সমর্থান্ সতঃ॥ ১৬॥ ১৭॥ গাং পৃ.ধবীন্॥ ১৮॥ ১৯॥ কৃত্য লক্ষণে করণীয় স্বরূপে॥ ২০॥

कर्षनार्था हि त्या धर्म्या मिजानामाञ्चनस्था। ব্যসনং নাম ভদ্ৰাজন্! ন স ধর্মঃ কুধর্ম ভৎ ॥ ২১॥ সর্বাথ ধর্মনিতান্ত পুরুষং ধর্মত্বলম্। ত্যজত স্তাত ! ধর্মাথৌ 'প্রেতং ডুঃখম্বথে যুথা ॥ ২২ ॥ যদ্য ধর্ম্মো হি ধর্মার্থং ক্লেশভাপ্তন স পণ্ডিতঃ। ন স ধর্মস্য বেদার্থং সূর্যাস্যান্ত্রঃ প্রভামিব॥২৩॥ यम् हाजार्थ (यवार्थः म ह नार्थम् (कार्विमः । রক্ষেত ভূতকোহরণ্যে যথা গা স্তাদুগেব সং॥ ২৪॥ অতিবেলং হি যোহর্থার্থী নেতরাবন্ধতিষ্ঠতি। স বধ্যঃ সর্বভূতানাং ব্রহ্মহেব জুগুপ্সিতঃ ॥ ২৫॥ সততং যশ্চ কামার্থী নেতরাবন্ধতিষ্ঠতি। মিত্রাণি তস্য নশ্যন্তি ধর্ম্মার্থাভ্যাঞ্চ হীয়তে ॥ ২৬ ॥ তস্য ধন্মার্থহীনস্য কামান্তে নিধন প্রধ্বমৃ। कामर्का तममानमा मीनरमानाखमः कराय ॥ २१॥ তস্মাদ্ধর্মার্থয়োর্নিতাং ন প্রমাদ্যন্তি পণ্ডিতাঃ। প্রকৃতিঃ সা হি কামস্য পাবকস্যারণির্যথা ॥ ২৮ ॥ मर्काश धर्मा मृत्ना ५८थी धर्म न्हार्थ भन्नि छाइः। ইতরেতরয়োনীতৌ বিদ্ধি মেঘোদধী যথা ॥ ২৯ ॥

কুধর্মং তনোতীতি কুধর্মতং, কুধর্ম বীজ মিতার্থ: ॥ ২১ ॥ ধর্মার্থো বলসাধ্য ছেমন্ত প্রাতঃস্থান শক্ত জন্ম সন্তবৌ ॥ ২২ ॥ ধর্মার্থং নত্বর্থ কামার্থং, অর্থং প্রব্যোজনন্ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ অতি বেলং অত্যন্তম্ ॥ ২৫ ॥ ইতরো অর্থকামো ॥ ২৬ ॥ কামতো রমমানত তস্য কামান্তে নিধন মিতি সমুদ্ধ: ॥ ২৭ ॥ সাহি ধর্মার্থরপাছি ॥ ২৮ ॥ অর্থপার গ্রহঃ অর্থার্থমেবালম্বনীয়ঃ, ইতরেভরন্নো নীতো ধর্মাদর্থঃ প্রণীয়তেইর্থাচ্চ ধর্ম ইভার্থঃ, মেষা ভুদ্ধিপ্রক্তি ক্লধে মেষ্ পূর্তিরিব ॥ ২৯ ॥

^{* &#}x27;'ধৰ্ম: সংকুল ধৰ্মতং" ইতি ঘ পুস্তকঃ, নৈষপাঠঃ সমীচীনঃ।

দ্রবার্থস্পর্শসংযোগে যা প্রীতি রুপজায়তে। স কামশিভন্তসঙ্কপোঃ শরীরং নাস্য দৃশ্যতে ॥ ৩০॥ অর্থার্থী পুরুষে। রাজন্ ! রুহন্তং ধর্মামিচ্ছতি। অর্থমিচ্ছতি কামাথী ন কামাদন্যমিচ্ছতি ॥ ৩১ ॥ ন হি কামেন কামে। হন্যঃ সাধ্যতে ফলমেব তং। উপযোগাৎ ফলসৈাব কাষ্ঠান্তস্মেব পণ্ডিতঃ ॥ ৩২ ॥ ইমান শকুনকান।জন্ ! হস্তি বৈতং সিকে। যথা । এতদ্রপমধর্মদা ভূতেষু হি বিহিংসভা। ৩০॥ কামালোভাচ্চ ধর্মদ্য প্রকৃতিং যো ন পশ্চতি। স বধ্যঃ স্বাভূতানা**ু প্রেত্য চেহ চ দুর্ম্মতিঃ ॥ ৩**৪ ॥ ব্যক্তং তে বিদিতো রাজন্ ! নার্থো দ্রবাপরিগ্রহঃ। প্রকৃতিঞাপি বেখাস্য বিকৃতিঞাপি ভূরসীযু ॥ ৩৫ ॥ ত্যা নাশে বিনাশে বা জরয়া মরণেন বা। অনুধ ইতি মন্তে সোহয়মশাস্থ বৰ্ততে॥ ৩৬॥ इिन्द्रानाक প्रकाना॰ यनत्मा क्रम्यमा छ। বিষয়ে বৰ্ত্তমানানাং যা প্ৰীতি ৰুপুজায়তে ॥ ৩৭ ॥

নাদেঃ স্পৃশঃ, অর্প্য অর্ণাদেঃ সংযোগো লাভঃ॥ ৩০ । তথা উপবোগঃ
সাক্ষাৎ প্রভুংপাদনেন কুডার্থইং, কাষ্ঠাৎ ভত্ম সাধ্যং, নতু ভত্মতোপি
ভত্মান্তরং সাধ্য মান্ত ভত্বং॥৩২॥বৈতংসিকঃ—বীডংসেন জীবভিইভি বৈতং
সিকঃ পক্ষিত্তঃ ''বাতংসং বন্ধনোপারে মুগানং পক্ষিণামপি।"ইভিবিশ্বঃ ।
বিহিৎসভা বিশিক্ষ হিংসাবন্ধন্ম ৩০॥ প্রকৃতিং অরপন্ম ৩৪॥ ব্যক্ত
মিতি—অর্থঃ প্রয়োজনং কামাধ্যং সঃ দ্রব্যেন জী-ধন-গো-হন্ত্যংখালন
পরিগৃহত ইতি দ্রবাপরিগ্রহঃ, অস্য দ্রবাস্য প্রকৃতিং জ্র্যাদিরপাং,
বিকৃতিং ত্যাগভোগাদিরপান্ম ॥ ৩৫॥ তস্য জ্রীধনাদিরপদ্রবাস্থা নাশে
অদর্শনে অভাবে বিনাশে লক্ষ্যা বিরোগে জ্রাম্বরে জ্রী-গোহ্খাদীনাং,
সোহয়মনর্থঃ জ্রী-পর্যামর্শ-রাজ্যনাণাদিরপাঃ, জনর্থ পরিহারায় ধর্মোপি
লঙ্ক নীয় ইতি ভাবঃ॥ ৩৬॥ পঞ্চ,নাং শ্রোভাদীনাং বিষয়ে শন্সাদে

স কাম ইতি মে বুদ্ধি: কর্ম্মণাং ফলমুন্তমম্। এবমেব পৃথগ্দৃফ্বী ধন্মাথৌ কামমেব চ॥ ৩৮॥ ন ধর্ম্মপর এব স্যান্ন চার্থপরমো নরঃ। ন কামপরমো বা স্যাৎ সর্বান্ সেবেত সর্বৃদা ু ৩৯ ॥ थर्चा पृर्ट्स थनः मर्या जचरना काम माहरत्र । অহন্যস্কুচরেদেব মেষ শাস্ত্রক্তো বিধিঃ॥ ৪০॥ काम॰ शूर्व॰ धनः मर्या जचरना धर्मा माहरतः । বয়সানুচরেদেব মেষ শাস্ত্রক্তে। বিধিঃ॥ ৪১॥ ধর্মাঞার্থঞ কামঞ্ যথাবন্ধনতাম্বর !। বিভজ্য কালে কালজ্ঞঃ সর্বান্ সেবেত পণ্ডিতঃ॥ ৪২ 🛭 মোকো বা পরমং ভার এবাং রাজন্ ! সুখার্থিনাম্ । প্রান্তির্বা বুদ্ধিমাস্থায় সোপোয়াং কুরুনন্দন।॥ ৪৩॥ তরাশু ক্রিয়তাং রাজন্। প্রাপ্তির্বাপ্যধিগম্যতাম্। জীবিতং ছাতুরস্যের ছুঃখমন্তরবর্তিন: ॥ ৪৪ ॥ ৰিদিত**ৈষ্ঠ্য_ঞ্মে ধৰ্ম্ম: সততং** চরিতশ্চ তে। জানন্তস্ত্রি শংসন্তি স্কুলং কর্মচেদেনাম্ ॥ ৪৫ ॥ मानः य**ळः मे**ठाः शृका (वनशात्रगमार्क्कवम्। এষ ধর্মঃ পরো রাজন্। বলবান্ প্রেত্য চেহ চ।। ৪৬।। এষ নার্থবিহীনেন শক্যো রাজন্নিষেবিতৃম্। অথিলাঃ পুরুষব্যান্ত। গুণাঃ স্থা র্যদ্যপীতরে॥ ৪৭ ॥

মনসোবিষয়: সক্ষা:, দ্বন্ধা নিশ্চয়: ॥ ৩৭ ॥ পৃথক ভিন্নান্ দৃষ্ট্রা ॥ ৩৮ ॥ ॥ ৩৯ ॥ ধর্মং পূর্বে অছনি চরেৎ ॥ ৪০ ॥ কামং পূর্বে বর্মনি চরেৎ ॥৪১॥৪২॥৪৩॥ প্রাপ্তিং মছোনদ্মং বা রাজ্য লাভজং "প্রাপ্তি লাভে মছোনদ্মে" ইতি কোংঃ, তৎ মোক্ষাধাং শ্রেয়ঃ, ত্রুখং ত্রুখন্ম্ ॥ ৪৪ ॥ কর্মচোনদ্মাং প্রেরিভ জনকং বেদবাক্যম্, শংসন্তি কথ্যন্তি ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ অধিলাঃ

^{*} বিদিতভৈবতে ধর্ম ইত্যেবং ক :--

* ধর্মমূলং জগদ্রাজন্। নান্যদ্ধর্মাদ্বিশিষাতে। ধর্ম শ্চার্থেন মহতা শক্যো রাজন্মিধেবিতৃম্॥ ৪৮॥ न চার্থে। ভৈক্ষাচর্য্যণ নাপি ক্লৈব্যেন কহিচিৎ। বেজুং শক্যঃ गरी जाजन् ! क्विलः धर्मात्किना ,४৯॥ প্ৰতিষিদ্ধা হি তে যাচ্ঞা যয়া সিধাতি বৈ দ্বিজঃ। C अ देन वार्थितिश्नाशाः य उत्र शूक्षवं छ !॥ ०० ॥ ভৈক্ষ্যচর্য্যা ন বিহিতা ন'চ বিট্পুদ্রজীবিকা। ক্ষজিয়স্য বিশেষেণ ধর্মস্ত বলমৌরসম্ ৫১ ॥ স্বধর্মং প্রতিপদাস্ব জহি শতুন সমাগতান্। ধার্ত্রবাষ্ট্রবলং পার্থ! ময়া পার্থেন নাশয় ॥ ৫২ ॥ উদারমেব বিদ্বাংসো ধর্মাং প্রান্তর্মানীবিণঃ। উদারং প্রতিপদ্যস্থ নবেরে স্থাতুমর্হাসি॥ ৫৩॥। অনুবুধ্যন্ত রাজেন্দ্র ! বেশ্ব ধর্মানু সনাতনান্। কুরকর্মাভিজাতে।২পি যুমাতুদ্ধিজতে জনঃ॥ ৫৪॥ **প্রজাপালনসন্তুতং ফলং তব ন গ**হিতম্। এষ তে বিহিতো রাজনু ! ধাতা ধর্মঃ সনাতনঃ 🔰 ৫৫ ॥ তন্মাদশচিতঃ পার্থ! লেকে হাসং গমিষাসি। স্বধর্মাদ্ধি মনুষ্যাণাং চলনং ন প্রশাস্যতে॥ ৫৬॥ म काखः इत्रः कृषा ठाटकृषः निर्णितः मनः। বীর্য্য মাস্থায় কৌরব্য! ধুরমুদ্ধহ ধুর্য্যবৎ ॥ ৫৭ ॥

ধিলং শল্যং তক্সছিতা: ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ক্লেব্যেণ কাতর্ব্যেণ, বেঝুং লব্ধু যু ॥ ৪৯ ॥ দ্বিদ্ধঃ ব্রাধানঃ, তেজসা পরাভিত্তব শক্তা। ॥ ৫০ ॥ ঔরসং উৎসাহঃ ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ উদারং ঈশ্বর ভবং, অবরে অনৈশ্বর্যে॥ ৫০ ॥ ক্রুরী হিংসা দ্বকং ক্ষাত্রং ক্যা যস্য ॥ ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥ অপটেডঃ ছীনঃ॥ ৫৬ ॥ শিথিলং

^{*} ধর্ম দুলমিনং রাজন্মিতি ক-ব পুস্তকৌ। 🕇 ক্ষাত্রধর্ম: সনাতন ইতি ঘ।

নহি কেবলধর্মান্তা পৃথিবীং জাতুকশ্বন।
পার্থিবো ব্যজয়দ্রজন্! ন ভৃতিং ন পুনঃ শ্রিয়ম্ ; ৫৮॥
জিহ্বাং দত্ত্বা বহুনাং হি কুদ্রাণাং লুকচেতসাম্।
নিক্ত্যা লভতে রাজ্য মাহারমিব শল্যকঃ ॥.৫৯।
ভাতরঃ পূর্বজাতাশ্চ স্থসমূদ্ধাশ্চ দর্বশাং।
নিক্ত্যা নির্জিতা দেবৈ রস্ত্রাঃ পার্থিবর্মভ!॥ ৬০॥
এবং বলবতঃ দর্ব্ব মিতি বুদ্ধ্য মহীশতে!।
জহি শত্তুন্ মহাবাহো! পরান্নিক্তিমান্থিতঃ॥ ৬০॥
ন হার্জুনসমঃ কশ্চিদ্যুধি যোধো ধন্তুর্দ্ধরঃ।
ভবিতা বা পুমান্ কশ্চিং মৎসমো বা গদাধরঃ ৬২॥
সত্ত্বেন কুক্তে যুদ্ধং রাজন্! স্থবলবানপি।
ন প্রমাণেন নোৎসাহাং সন্তুম্থো ভব পাগুব!॥ ৬০॥
সত্ত্বং হি মূলমর্থক্ত বিতথং যদতোহন্যথা।
ন তু প্রসক্তং ভবিত বুক্ষছারেব হৈমনী॥ ৬৪॥

ত্বলেষ্ । ৫৭ । নভূতিং অনৈশ্বাং, ন পুনঃ প্রিয়ং নান্তি পুনঃ
প্রায়েতি নভূবেরের বিশেষণাং, উভয়ত্ত নৈক্ষেতিবল্প শব্দেন সমাসঃ,
ব্যক্তরং পরাভূতবান্ ॥ ৫৮ ॥ জিব্বাং জিব্বায়াঃ প্রিয়ং সাধ্রন্ধ উৎকোচ
মিতার্থঃ। ক্ষুত্রানাং শক্ত পক্ষীয়ানাং, নিক্ত্যা ভেদরপেণ জ্বেন,
শলাকো ব্যাধঃ, সহি মুগোভ্যো ভক্ষাং দ্বা বিশ্বাস্য হত্বা আহারং
লভতে তত্বং, শলাকঃ শাবিং ক্ষুত্রান্ মধুমক্ষিকা বিশেষান্ জিব্বাং
দ্বা বহিনিঃসার্থা ভক্ষাতি, তম্বজিব্বাং বাচং দ্বা শক্তুন্ জহীতি প্রাঞ্চঃ
॥ ৫৯ ॥ ৬০ ॥ বলবতঃ শক্তুন্, পরাং নিক্তিং—সম্বংসর শব্দং মীমাং
সক ন্যায়েন দিনপরং ক্ষ ইতি ভাবঃ ॥ ৬১ ॥ ৬২ ॥ সত্বেন বলেন,
প্রমাণেন সংঘেন, উৎসাহেন শক্ত পক্ষীয়েঃ সহ সন্ধান লক্ষণেন স্ত্রেণ
'প্রমাণের নিত্যমর্গ্যাদা সংঘবাদি প্রমাদিরু। উৎসাহস্তুদ্যমে সূত্রে—"
ইতি বিশ্বঃ, অপ্রমাদী মহোৎসাহী ইত্যাপে পাঠঃ ॥ ৬০ ॥ স্বাদন্যস্য়

অর্থত্যাগোহিপি কার্য্যঃ স্যাদর্থ শ্রেয়াংস মিচ্চতা।
বীজৌপম্যেন কৌস্থেয়! মা তেহভূদত সংশ্রঃ । ৬৫॥
অর্থেন ভু সমো নার্থো যত্র লভ্যেত নোদরঃ।
ন তত্র বিপল্যঃ কার্য্যঃ খরকভূয়ন হি তংশ ॥ ৬৬॥
এবমেত্রসুষ্ট্রেরণ ধর্মাং ত্যক্ত্যাম্পকং নরঃ।
রহস্তং ধর্মমাপ্রোতি স বুদ্ধ ইতি নিশ্চিত্র্য় ॥ ৬৭॥
অমিত্রং মিত্রসম্পন্নং মিত্র জিন্দন্তি পণ্ডিত্যাঃ।
ভিন্নৈর্মিত্রৈঃ পরিত্যক্ত যুবানং কুরুতে বশ্য ॥ ৬৮॥
সভ্রেন কুরুতে যুদ্ধং রাজন। স্বলবানপি।
নোদ্যমেন ন হোত্রাভিঃ সর্বাঃ স্বীকুরুতে প্রজাঃ ॥ ৫৯॥
সর্বধা সংহতৈ রেব জুর্বিল ব্লবানপি।
অমিত্রঃ শক্যতে হস্তং মধুহা ভ্রমরৈরিব ॥ ৭০॥

মিতার্থঃ ॥ ৬৪ ॥ অর্থত গের পীতি— ছর্ব্যোধনে রাজ্যার্পণিং ল শ্রেরদে ইপিতৃ থর কণ্ডুরনবদপলারাট্যেব, ২খা খর কণ্ডুরনং স্পর্ল দোষাৎ সদ্যোহ্ঃখদ স্থান নিমিত্তঃ গোকণ্ডুরন বচ্চ পরত্র নহিতং, এব মেতদ পীতি শ্লোক দ্বর্যার্থঃ ॥ ৬৫ ॥ বিপাঃ প্রতিজ্ঞা ন কার্যাঃ ন নির্বাহঃ ॥৬৬॥ এবমেব বীজ্ঞোপম্যেন প্রতিজ্ঞা নির্বাহজ মম্পার্থমাং তাজ্যারাজ্য লাভজো দান্যার্যাদি মহান্ ধর্ম আদর্ভব্য ইতার্থঃ ॥ ৬৭ ॥ যুবানং অপ্পর্বাহণ গাদ্দেরা ব্রেরা বেত্তি নতত্ত্বণ কোটঃঃ ।" ইত্যক্তেঃ, হর্বল মিত্যার্পি পাঃঃ ॥ ৬৮ ॥ পক্রুদ্ধেঃ সর্বত্ত কার্যধান্য্য মিত্তানি হর্তেদানি অভজাদৃশে হুর্যোধনে বলমেব শ্রের ইত্যাহ সর্বেন্তি— যুদ্ধেনিব শত্রু জারে কতে প্রজাঃ স্বাধীনা ভবন্তি নতুদ্ধেন নির্যাহণ, নহোবাভিঃ সাজ্বেন আহ্বানৈঃ ॥ ৬৯ ॥ সংহতে মার্লিট্ডঃ, মধুহা মহর্ছং গভঃ ' গুহাছ গাতো' ইত্যায় রূপন্য, ভ্রমরৈ মর্পটলক্তঃ সবিষ্বত্তি যুর্বা পদ্যন্তীতি ভাবঃ॥ ৭০॥

^{*} ক গু ্যতংহিতৎ ই,ত ক্ল-স পুস্তকো।

† তৃৰ্বল মিতি কঃ।

যথা বাজনা প্রজাঃ সর্কাঃ সূর্যাঃ পাতি গভন্তিভিঃ ৷ অত্তি চৈব তথৈব স্বং সদৃশঃ সবিতুর্ভব ॥ ৭১ ॥ এডচাপি তপে রাজন্! পুরাণমিতি নঃ প্রুত্য । বিধিনা পালন ভূমে র্যৎ ক্লতং নঃ পিতামহৈঃ ॥ ৭২ ॥ ন তথা তপসা রাজন্! লোকান্ প্রাপ্তে ক্ষজিয়ং। যথা স্কেন যুদ্ধেন বিজয়েনেতরেণ বা ॥ ৭৩॥ অপেয়াৎ কিল ভাঃ সূর্যালক্ষীশ্চক্রমসন্তথা। ইতি লোকো ব্যবসিতো দুফৌুমাং ভবতো ব্যথাম্॥ ৭৪ 🛭 ভবতশ্চ প্রশৎসাভিরিক্যাভিরিতর্গ্য छ। কথা যুক্তাঃ পরিষদঃ পৃথপ্রাজন্! সমাগতাঃ॥ ৭৫ ॥ ইদমভ্যধিক^ রাজন্! ত্রাহ্মণাঃ কুরবশ্চ তে। সমেতাঃ কথয়ন্তীহ মুদিতাঃ সত্যসন্ধতাম্ ॥ ৭৬ ॥ ষন মোহান কার্পণ্যান লেভোন ভয়াদ্পি। অনৃতং কিঞ্চিত্তক তে ন কামালার্থকার বাৎ ॥ ৭৭ ॥ যদেনঃ কুরুতে কিঞ্চিদ্রাজা ভূমিমবাপ্লবন্। मर्तः उन्नारत् शाका प्रदेख र्तिश्वमिकरैनः ॥ १৮ ॥ বান্ধণেভ্যো দিশ্রোমান্ গাশ্চ রাজন্! সহস্রশঃ। মুচ্যতে সর্বাপাপেভ্য স্তমোভ্য ইব চক্রমা: ॥ ৭৯ ॥

যথেতি—অতি রস শোরণেন, পাতি বর্ষেণ, তথাইং ত্র্যোধনাদীন্
বশমানীয় পালয়েতার্থঃ॥ ৭১॥ এতং ভূমেঃ পালনং বক্ষ্যানাণ তপঃ
অধর্মঃ, পুরানাং অনাদি, এতচাবিতথ মিতি পাচান্তরে—পুরানাং বেদ
বিহিত মিতার্থঃ॥ ৭২॥ সৃষ্টেন বিহিতেন ধর্মে ণেতার্থঃ, ইতরেগ মরণেন
॥ ৭০॥ অপেরাং অপরাক্তেং, ব্যবসিতঃ নিশ্চিতঃ॥ ৭৬॥ ৭৫॥ ৭৬॥ ৭৭॥
নম্ম কথংতর্হি মরা রাজ্যার্থ মনৃতং কর্ত্ব্যং ?—অতআহ বদেন ইতি—
এনঃ পাপাং, অবাপ্রুবন্ অবাপ্তি হেতোঃ॥ ৭৮॥ ৭৯॥

পৌরজানপদাঃ সর্বেব প্রায়শঃ কুরুনন্দন।। সর্দ্ধা বালস্হিতাঃ শ্প্সন্তি ত্বাপ্ যুধিষ্ঠির ! ॥ ৮০ ॥ अपृट्ठो कीत्रमामञ्जू बक्त वा त्यटल यथा। সত্যুৎ স্তেনে বলং নাৰ্য্যাং রাজ্যং ছুর্যোধনে তথা ॥ ৮১॥ ইতি লোকে নির্বাচনং পুনশ্চরতি ভারত।। অপিটেতাঃ স্ত্রিয়ো বালাঃ স্বাধ্যায়মধিকুর্বতে ॥ ৮২ ॥ ইমামবস্থাঞ্চ গতে সহাস্মাভি ররিন্দম!। হন্ত নফাঃ মা সৰ্পে বৈ ভবতোপদ্ৰবে সতি ॥ ৮৩॥ স ভবানুথমাস্থায় সর্কোপকরণ†শ্বিতম্। ত্বরমাণে ইভিনিষ্। তু বিপ্রেভ্যোহর্থবিভাবক: ॥ ৮৪॥ বাচয়িত্ব৷ দ্বিজভোঠানলৈয়ব গজসাহ্বয়ম্ ৷ অস্ত্রবিদ্তিঃ পরিরতো ভ্রাকৃভিদ্চধশ্বিভিঃ॥ ৮৫॥ वानीविषम् देय कीरित र्मक्छितिव वृज्य।। অমিত্রাংস্তেজসা মৃদুরস্কুরানিব রুত্রহা। শ্রিয়মাদংস্ব কৌন্তেয়! ধার্ত্তরাষ্ট্রাক্সহাবল!॥ ৮৬॥ न हि शा खीवमुक्तानार भवानार शार्क वामनाम् । স্পর্শমাশীবিষাভানাং মত্যঃ কশ্চন সংসহেৎ॥ 1/৭॥ ন স বীরো ন মাতক্ষো ন চ সোহখোহন্তি ভারত!। যঃ সহেত গদাবেগং মম কুৰুস্য সংযুগে ॥ ৮৮ ॥

॥ ৮০॥ পরস্যাপি রাজ্যান গ্রা দবরোপণ মুচিত মিত্যাছ খাদৃতাবিতি— খাদৃতে সারমের চর্ম কোশে, ব্রহ্ম বেদঃ, র্বলে খুন্তে ॥ ৮১ আধ্যার মাধি কুর্বতে—খাদৃতাবিতি লোকং বেদবং ব্র্যাদরোপি নিত্যং পঠন্তীতার্থঃ॥৮২॥ ভংতা হেতুনা, উপদ্রেবে রাজ্যভংশে ॥ ৮০ ॥ অর্থ বিভাবকঃ জয়ার্ম্ভিতমর্থং প্রদাতুং '' তুমুন্ ঘুলো কিরারাং কিরার্থারাম্" ইতি ঘুল্ ॥ ৮৪ ॥ বাসরিত্বা অণীর্বাদান্ ॥ ৮৫॥ ধার্ত্রাক্রীং ইতি ছেদঃ ॥ ৮৬ ॥ গার্ধ বাসসাং গ্রপক্ষমরপথবতাং, সংস্ক্রেই সম্যক্সাহেত ॥ ৮৭॥ ৮৮ ॥ সঞ্জ য়ৈ: সহ কৈকে য়ৈ ব্ৰুঞ্জীনাং ব্ৰভেণ চ।
কথং স্থিদ্যুধি কৌন্তেয়! ন রাজ্যং প্রাপ্তায়।মহে?—॥ ৮৯॥
শক্রহন্তগতাং রাজন্! কথা স্থিনাহরে মহিন্।
ইহ যত্নমুপাহ্লত্য বজেন মহতান্থিতঃ"॥ ৯০॥
ইত্যারণাকে প্রাণি অর্জুনাভিগমনপ্র্বণি ভীমবাক্যে
ক্যুস্তিংশন্তমে। ২ধ্যায়ঃ॥ ৩৩॥

रिनम्भाशम छेत्राह ।

স এবমুক্তস্তু মহানুভাবঃ,

সত্যত্রতো ভীমসেনেন রাজা।

अङ्गाजगळखननखत्र देव,

ধৈৰ্য্যান্বিতো বাক্যমিদং বভাষে—॥ ১॥

যুধিষ্ঠির উব্বচ।

'অস্তশ্রও ভারত। সত্যমেতদ-

यबार जुमन् वांकाभटेलाः कित्।िम ।

ন স্বাং বিগদ্ধে প্রতিকূলমেব,

মমানয়া বি ব্যসনং ব আগাৎ ॥ ২॥

चर् शकानरें भार जिरीधन,

রাজ্যং সরাষ্ট্রং ধৃতরাষ্ট্রন্য পুত্রাৎ।

স্ঞ্যাদিভিঃ সহায়ৈঃ, স্থিদিভি বিস্যাসন শিরশ্চাননে ॥ ৮১ ॥ উপাছত্য আলম্ম ॥ ১০ ॥

> ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে ত্রুয়ান্ত্রংশোহধায়ঃ॥ ৩৩॥

সএব কিতি—॥ ১ ॥ এব মম ম মৈব, ১ঃ মুখান্ ॥ ২ ॥ অৰপদ্যং অহুসৃত বান্, জিছীৰ্ষ্ হৰ্জুমিচ্ছন্, শঠঃ কুটপাণ কৰ্ডুছাৎ, কিতবে। দ্যুতকারঃ

* •' ইছ হত্ন মুপাতিষ্ঠ" ইতি পাঠান্তরং পুস্তকান্তরসা।

তন্মাং শঠঃ কিতবঃ প্রত্যদেবীৎ, ্স্থোধনার্থ স্থবলদ্য পুক্তঃ। ৩॥ মহামায়ঃ শকুনিঃ পার্বভীয়ঃ সভামধ্যে প্রবপন্নকপুগান্। অমায়িন মায়ুয়া প্রতারেজ্বীৎ ততোহপশ্যং রুজিন্শ ভীমসেন! ম ৪ ॥ অক্ষাৎক্ষ দৃষ্ট্বা শকুনে র্যথাবৎ, কামানুকুলান্যুজো যুজ্ত। শক্যং নিয়ম্ভ মভবিষ্যদাত্মা, मञ्जू इन्।। श्रुक्षमा रेथराम् ॥ ७ ॥ ৰম্ভং নাত্মা শক্যতে পৌৰুষেণ, মানেন বীর্য্যেণ চ ডাতে। নদ্ধঃ। ন তে বাচো ভীমদেনাভাম্বয়ে, মন্যে তথা ভদ্ধবিত্ব্য মাসীৎ॥ ৬॥ স নো রাজা ধৃতরাষ্ট্রদ্য পুজো, ন্পাতয়য়ৢসনে রাজ্যমিচ্ন্। দাস্যঞ্চ নোহগময়ন্তীমসেন ! যত্রাভবচ্ছরণং দ্রৌপদী নঃ—॥ १॥ ত্বঞাপি তদ্বেশ ধ্নঞ্জয়ক, পুনৰ্দ্যভায়া গভান্তাংশ সভাং নং।

যক্ষা বিশিষ্ তরা ব্রীস্থা পুত্র এক গ্লহার্থং ভরতানা সমক্ষ্ ॥ ৮॥
॥ ৩॥ প্রবণন্ পাতরন্, অকপুণান্ পাশসমূহান্, রজিনং হংখদং বাসনম্॥ ৪॥ কামানুকূলান্ ইছানুকূলান্, অর্জঃ বিষমান্, যুজঃ সমান্,
শকামিতি—যঃ পুক্ষসা ধৈর্গং হনাাং সম্মার্গদি নাহতবিষাং তর্হি
আত্মামনঃ নিয়ন্তং শকামতবিষাং ইতাধা হতা বোজান্। পর্নীসালুকূলা
নকান্ দৃষ্ট্বাপি মহাবশাম্ম দ্তোপরমে বুদ্ধি নাসীদিতার্থঃ॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥

* গতা নামি তক ৰ পুস্তকো।

বনে সমা দ্বাদশ রাজপুত্র। যথাক্যে বিদিত মজাতশতো!।
তথাপরঞাবিদিতঞ্চরেথাঃ,

নৰৈঃ দহ ভাতৃভিশ্বগৃদঃ॥ ৯॥

স্বাঞ্চেৎ শ্রুস্থা তাত। তথা চরন্তঃ-

মবভোৎসাত্তে ভারতানাঞ্চরা 🖦 ।

অন্যাংশ্চরেথা স্তাবতোহন্দাংস্তথা স্ব্

নিশ্চিত্য তৎ প্ৰতিজ্ঞানীহি পাৰ্থ! ॥ >০ ॥

চরৈশ্চেনোহবিদিতঃ কালমেত্র

্যুক্তো রাজন্। মোহয়িতা মদীয়ান্।

ব্ৰবীমি সত্য ক্রু-সংসদীহ,

তবৈব তা ভারত! পঞ্চনদ্যঃ ॥ ১১ ॥

বর ঞৈতন্তারত! সর্ব্ব এব

ত্বয়া জিতাঃ কাল মপাস্য ভোগান্।

বদেম ইত্যাহ পুরা দ রাজা,

মধ্যে কুৰাণাপ স ময়োক্ত স্তথেতি। ১২॥

তত্র দূতে ম∳বলো জঘন্য∾,

তিমান্ জি)গাং প্রবেষত।শ্চ সর্বে।

इलाक (मनानसूत्रक्रतारमा,

বনানি কৃচ্ছ । ি চ কৃচ্ৰপা: ॥ ১৩॥

मूर्याधनकाशि न गासिमक्न,

जुराः म महन्त्रा स्व व मदश्रक्र ।

॥ ৮॥ সমা বর্ষাঝি অথাপ্রং বর্ষ্ ॥ ৯ ॥ অবভেংসাতে জাগান্তি।
। ১০॥ নাে ইতি নিপাতঃ, বিভস্তাদি পঞ্নহাপ লক্ষিতে। দেশঃ ॥ ১১॥
সর্কে শতমপি ডাতরঃ, স রাজা ছ্রোধনঃ ॥ ১২॥ নঃ অসাক্ষ্, জঘনাং
নীচং, কুন্দু রগাঃ ক্লিইরপাঃ ॥ ১৩॥ শান্তিং ন ইচ্ছন্ অনিচ্ছন্ উন্যোজয়া

^{*} इद्रा व इंडि क-

উদেব। জয়ামাস কুৰং শচ সৰ্বান্, যে চাসা কেচিদ্বশমম্বগচ্ছন ॥ ১৪॥ তং দক্ষি মাস্থায় সতাপ সকাশে, কো নাম জহাদিহ রাজ্য হৈতে৷: ?—; वार्यामा मदना मत्नाकातीद्या, यकर्त्र युरुक्तमा महीन क्षमात्मर । ১৫॥ তদৈব চেম্বীর কর্মাকরিয়ো,-যদা দূাতে পরিঘ্ পর্যামৃক্ষঃ। বাছু দিধক্ষন্ বারিতঃ ফাল্পনেন, কিং ছ্বন্ধুতং ভীম! তদাভবিষ্যৎ—, ১৬ ॥ व्यारभव टेठवल ममझकियां शार, কিং নাত্ৰবীঃ পৌৰুষ মাবিদানঃ। প্রাপ্তন্ত কলেং স্থভিপদ্য পশ্চাৎ, কিং মা মিদানী মতিবেল মাক্ষ?—॥ ১৭॥ ভুরোহপি তুঃধং মম ভীমদেন! দুয়ে বিষ্ণ্যেব রসংহি পীত্রা यम्बाङ्करमनी० शिक्तिक्रमामानाः. সংদৃশ্য তং ক্ষান্তমিতি স্ম ভীম!॥ ১৮॥ ন স্বদ্য শক্যং ভরতপ্রবীর! क्ष यञ्च क्रू कुक् वीत्रमध्य ।

মাস উৎকর্ষো ব্যেছরা তের তের তুর্গদেশাদি পালন কার্য্যের ইন্টান্ যোজিতবান্ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ পর্যায়ক্ষঃ পরায়ন্টবানসি, দিংকন্ দার্ মিক্ছন্ ॥ ১৬ ॥ সমর জিরাতঃ প্রাণের চেদিদং অত্রবী স্তর্ছি কিং হৃষ্কৃতং অভ-বিষয়ং ন কিমণীতার্থঃ, আবিদানঃ জানন্, প্রাণ্ডং কালং কীলত্ল্যাং বিপদং অভিপদ্য স্থীকৃত্য, অভিবেনং অভিশয়েম ॥ ১৭ ॥ ভূয়োপি বহুবিপ দুয়ে উপত্পোঃ ॥ ১৮ ॥ যহুক্তং যাৎ প্রতিজ্ঞাং রুহা, বীজবাপঃ ক্ষীবকঃ

কালং প্রাক্তিস্ব স্থাবাদয়স্য
পঙ্জিং ফলানামিব বীজবাপঃ ॥ ১৯॥
যদা হি পূর্বং নিক্তাে নিক্তােংৎ,
বৈরং সপুষ্পা সফলং বিদিছা।
মহাগুণং হরতি হি পৌরুবেণ,
তদা বীরাে জীবতি জীবলােকে॥ ২০॥
শ্রিরঞ্চ লােকে লভতে সমগ্রাং,
মন্যে চাল্মৈ শত্রং সংনমস্তে।
মিত্রাণি চৈন মচিরান্তল্পন্তে,
দেবা ইবেল মুপল্লীবস্তি চৈনম্॥ ২১॥
মম প্রতিজ্ঞাঞ্চ নিবাধ সত্যাং,
রণে ধর্ম মম্তাজ্জীবিতাক।
রাজ্যঞ্চ পুল্রান্ড মনো ধনঞ্চ,
সর্বাং ন সত্যস্য কলামুপৈতি"—॥ ২২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণ্যর্জুনাভিগমনপর্বাণি যুধিন্তিরবাক্যে

॥ ১৯॥ পূর্বাৎ নিক্তো ৰঞ্চিতঃ, বৈরং বৈরিসমূহৎ সপুষ্পাং সফলং বিদিয়া পুষ্ঠতরং জ্ঞাত্বা, যদা যদি নিক্তেং ছিন্দ্যাৎ তদা হি প্রসিদ্ধং মহাগুণং মহ ভং গুণং হরতি জাহ। ৩॥ ২০ .. ২১॥ অমৃতাৎ দেব ভাবাৎ, কদাং ব্যোড়শং ভাগম্॥ ২২॥

চতুন্ত্রি~ শোহধ্যারঃ॥ ৩৪॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈল কণ্ঠীয়ে ভারত ভাব-দীপে চতুদ্রিংশোহধ্যায়:॥ ৩৪॥ ভীম উবাচ।

"সন্ধিং কৃত্বৈর কালেন ছান্তকেন পতজিণা।
অনন্তেনাপ্রমেরণ জ্রোতসা সর্বহারিণা॥ ১॥
প্রত্যক্ষং মন্যাসে কালেও মার্ট্য সন্কাল বন্ধনা।
কেনধর্মা মার্ট্য ছা ফলধর্মা। তথেব চ॥ ২॥
নিমেষাদপি কৌন্তের! যস্যায়ু রপচীয়তে।
স্কারোঞ্জনচুর্ণস্য কিমিতি প্রতিপালয়েৎ?—॥ ৩॥
যো ভূন মমিতায়ুং স্যাদথবাতিপ্রমাণবিং।
স কালং বৈ প্রত্যক্ষেত সর্বপ্রত্যক্ষদর্শিবান্॥ ৪॥
প্রত্যক্ষ্যাণাঃ কালোনা সমা রাজংক্রয়েদেশ।
আয়ুষোহপচয়া কৃত্বা মরণায়োপনেষ্টি॥ ৫॥
শরীরিণাং হি মরণং শরীরে নিত্যমাপ্রতম্।

প্রাদেশ মরণাক্তমাজাজ্যা হৈর ঘট।মহে ॥ ৬॥
যোন যাতি প্রসংখ্যান সম্প্রেটা ভূমিবর্দ্ধনঃ।
অযাত্রিত্বা বৈরাণি সোহ্বসীদতি গৌরিব ॥ ৭॥

যো ন যাতয়তে বৈর মপেসত্ত্বোদ্যমং পুমান্। অফল∽ জন্ম তস্যাহি∾ মন্যে ছুৰ্ক্জাতজায়িনঃ॥ ৮॥

সদ্ধিষিতি—পত্তিণা বাণবং শীর্ণামিনা প্রাণ করিব বা, স্রোত্সা নিত্যবাহিনা ॥ ১ ॥ প্রত্যক্ষণ জ্ঞাতং, কালবন্ধনঃ কলবশ্যঃ. কেনধর্মা নিঃসারঃ, কলধর্মা পত্তনশীলঃ ॥ ২ ॥ স্চ্যেবাঞ্জন চূর্ণসা—যথা কজ্ঞল-ক্ষোদসা অতিলক্ষাস্য স্ক্ষাগ্রায়া স্চ্যাপি কিঞ্চিং কিঞ্চিদপটীয়তে, এবং নিমেষাদপি যস্যায় রপতীয়তে স কিমিতি অবধিং প্রতিপালয়েং ?— ন কথমপি ইত্যধান্ধত্য যোজ্যম্, " চূর্ণং কোদে কারভেদে" ইতি বিশ্বঃ, শূনোবেতি পাচেপি—সএবার্থঃ, শ্বাতে প্রবিশতীতি শূনঃ স্থুল স্চী ' স্বা'ইতি প্রসিদ্ধঃ, অপ্যঃ শূনী তরেতি যোগাং, পূর্বসাত্যপ্র পাঠঃ ॥ ৩ ॥ পুমাণবিং আরুং প্রমাণক্ষঃ ॥ ৫ ॥ ৩ ॥ যাতি প্রাপ্রোত, প্রসংখ্যানং প্রকৃষ্টাং সাধু কীন্তিং যতঃ অস্পন্তঃ শৌর্যাদ্যবাদি তৈর বিদিতঃ, ভূমি বর্ধনঃ ভূমি হিংসকঃ, ভূমে ভারভূত ইত্যপ্তঃ, অ্যাত্রিজ্ আনন্তীর্য গৌ বলীবর্দইব সোপ্যক্ষেক্তং গোষু সংখ্যানং ক্ষমতাং বা প্যবাদ্বন্ভ্যে ভারভূতো ভ্রতি ॥ ৭ ॥ দুর্জ্যত জারিনঃ কুজম্যভাজঃ

হৈরন্যৌ ভবতো বাছু শ্রুতির্ভবতি পার্থিবী। হত্বা দ্বিষন্ত সংগ্রামে ভুক্ষা বাহ্বজি তং বহু ॥ ন ॥ হত্বা বৈ পুরুষো রাজন্। বিকর্তার মরিন্দম।। আহু য়ে নরকং গচ্ছে**ৎ স্থর্গেণাস্য স সন্মিতঃ। ৮১**০॥ অমর্ষজো হি সন্তাপঃ পাবকাদীপ্তিমন্তরঃ। যেনাছমতিসম্ভপ্তোন নক্ত্রণ ন দিবা শ্যে। ১১॥ অয়ঞ্চ পার্থো বীভৎস্থ ব্বরিষ্ঠো জ্যাবিকর্ষণে। আতে প্রমসন্তপ্তে। নূনং দি^হ ইবাশয়ে॥ ১২॥ যোধ্য়মেকোইভিমনুতে স্বান্ লোকে ধনুভূতি।। সোহয়সাত্মজমুমাণং মহাহন্তীব যচ্ছতি॥ ১৩॥ নকুলঃ সহদেবশ্চ রুদ্ধা মতোচ বীরস্থ:। তবৈব প্রিয়মিচ্ছন্ত আসতে জডমূকবৎ॥ ১৪॥ সবে তে প্রিয়মিচ্ছন্তি বান্ধবাঃ সহ সঞ্জরৈঃ। অহমেকশ্চ সন্তপ্তো মাতা চ প্রতিবিক্সাতঃ॥ ১৫॥ প্রিয়মেব ভু সুকোষা । যদু বীম্যুত কিঞ্চন। সর্বেহি ব্যস্নং প্রাপ্তাঃ সর্বে যুদ্ধাভিনন্দিনঃ ॥ ১৬॥ নাতঃ পাপীয় মী কাচিদাপদ্রাজন্। ভবিষ্যতি। यत्त्रा नीटें त्रन्भवरेन ताकामाष्ट्रिमा जुङाउ ॥ ১१॥ नीलरावाम्य्वाविके वान्न-मा९ भर्तेखन!। ক্লেশাংস্তিতিক্ষদে রাজন্নন্যঃ কশ্চিৎ প্রশংসতি॥ ১৮॥ ॥ ৮॥ হৈরন্যৌ হির্ণা স্বামিনৌ, আংতি: কীর্ত্তি:, পুথিবী পুথে! রাজ্জইব ইত্যর্থ: ॥ ৯ ॥ নিকর্তারং বঞ্জ , অহ্লায় সদ্যঃ স নরকং আপদ্য ॥ ১০ ॥ ॥ ১১ ॥ আশারে স্বস্থানে॥ ১২ ॥ অভি মৃত্তে—হিনন্তি, " যদি বেম মভি মংক্রে কনীয়োহরং করিষো" ইতি বহুদারক্রকাদা বভি পূর্বাপ্ত মন্তে হিংসার্থর দৃষ্টেঃ, ইমং প্রথমজং স্ক্রমং বীজভূত মিতি আততি পদস্থার্থ:, আত্মধং চিত্তজ মুখানং তাপম্॥১৩॥১৪॥ প্রতি বিন্দাতঃ

প্রতিবিন্দ্রে মাতা দেপিদী॥ ১১॥ ১৬॥ ১৭॥ য় । বিষ্টঃ " কথং সত্যং

শ্রেরিয়স্যের তে রাজন্মন্দক্ষ্যাবিপশ্চিতঃ। অনুবাকহতা বুদ্ধি নৈধা তত্ত্বার্থদর্শিনী॥ ১৯॥ ঘূণী ব্ৰাহ্মণৰপোহসি কথং ক্ষজেধুজায়থাঃ?—#। অস্যাং হি যোনৌ জারত্তে প্রায়শঃ কুরবুদ্ধরঃ ॥ ২০॥ ष्याचीसु - ताक धर्मान् यथा देव मनू तत्ववी । কুরান্নিকৃতিসম্পন্নান্ বিহিতানশমাত্মকান্॥ ২১॥ ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ত্রাক্ষর ক্ষমদে কিং ভ্রাক্সনঃ। কর্ত্তব্যে পুরুষব্যান্ত! কিমান্সে পীঠদর্পবৎ ?—॥ ২২॥ বুছা। বীর্য্যেণ সম্যুক্তঃ শ্রুতেনাভিজনেন চ। তৃণানা মুফিলৈকেন হিমবস্তঞ্প পর্বাতম্ ॥ ২৩॥ ছন্নিচ্ছাদ কৌদ্বের! যোহস্মান্ সংবর্তুনিচ্ছাদ। অজ্ঞাতচর্যা। গূচেন পৃথিব্যা > বিশ্রুতেন চ ॥ ২৪॥ দিবীব পার্থ! স্থর্য্যেণ ন শক্যা চরিতু**~ ত্ব**য়া। রহছাল ইবানুপে শাখাপুষ্পপলাশবান্। ২৫॥ হস্তীখেত ইবাজাতঃ কথং জিফুশ্চরিষ্যতি ?—। ইমৌ চ সিংহসঙ্কাশৌ ভাতরৌ সহিতৌ শিশু॥ ২৬॥ নকুলঃ সহদেবশ্চ কথ্ পার্থ! চ্রিষ্যতঃ ?—। পুণাকীন্ত্রী রাজপুল্রী দ্রৌপদী বীরস্থরিয়ম ॥ ২৭ ॥ বিশ্রুতা কথমজ্ঞতি। কুঞা পার্থ! চরিষ্যতি ?—। মাঞাপি রাজন্! জানবি ছাকুমার মিমাঃ প্রজা:॥ ২৮॥

ত জেয়ং৺ইতি লজ্জ রাক্যাপ্তঃ, আনুশংস্যাৎ দরালুহাৎ ॥ ১৮॥ মন্দকসা কুংলিতমন্দ্যা, জহুবাকঃ গুরুজি মহুবচনং তেন হতা অর্থজান শুনাস্য বেদাক্ষর মাত্রা হত্যাসিনঃ ॥১৯॥ স্থা দরালুঃ, জারখাঃ জাতোহসি॥ ২০॥ ॥ ২১॥আন্সে ভূফীস্কুতোসি, শীষ্টসর্পবং অজগারবং ॥ ২২॥ অজ্ঞাত বাসস্থ হুষ্করত্ব মাহ তৃপানা মিতি—॥ ২০॥ সংবর্ত্ত সংব্রিজুং ছাদিতু মিতার্থঃ ॥ ২৪॥ অনুপো বহুজলো দেশো॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥

^{*} কথং ক্ষতেই বজায়থাঃ ইতি ক—

নাজ্ঞাতচ্য্যাং পশ্যামি মেরোরিব নিগৃহনম্ণ তথৈব বহুবোহস্মাভী রাষ্ট্রেভ্যো বিপ্রবাসিত: ॥ ২৯। রাজানো রাজপুত্রাশ্চ ধৃতরাষ্ট্রমমুব্রতাঃ। ন হি তেইপুপেশামান্তি নিক্কতা বা নিরাক্কতাঃ ॥ ৩০॥ অবশ্যং তৈ র্নিকর্ত্তব্য মন্মাকৎ তৎপ্রিহোষভিঃ। তেহপ্যাম প্রযুঞ্জীরন্ প্রচ্ছন্নান্ স্ববহুং শ্রেরান্। আচক্ষীরংশ্চ নো জ্ঞাত্বা ততঃ স্যাৎ সুমহন্তরম্॥ ৩১ । অস্মাভিরুষিতাঃ সমাধনে মাসাস্ত্রয়োদশ। পরিমাণেন তান্ পশ্য তাবতঃ পরিবৎসরান্॥ ৩২ ॥ অন্তি মাসঃ প্রতিনিধি র্যথা প্রাছর্মনীষিণঃ। পৃতিকামিব সোমস্য তথেদং ক্রিয়তামিতি॥ ৩৩॥ অথবানভুহে রাজন্। সাধবে সাধুবাহিনে। সৌহিত্যদানাদেতক্ষাদেনসং প্রতিযুচ্যতে ॥ ৩৪॥ তক্মাচ্ছক্রবধে রাজন্! ক্রিয়তাং নিশ্চয়স্তুয়া। ক্ষজিয়স্য হি সর্বাস্য নান্যো ধর্মোহস্তি সংযুগাৎ"—॥ ৩৫॥ ইত্যারণাকৈ পর্বাণি অজ্জুনাতিগমনপর্বাণ ভীমবাক্যে ্য পঞ্চত্রিৎশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৩৫॥

॥২৯॥৩০। নিকর্ত্বাং নীচং স্ট্রাদি কর্ম কর্ত্ত্বান্ ॥ ৩১ ॥ "যোগিমাসঃস সংবংসরঃ" ইতি আচতে মাসঃ প্রতিনিধিঃ সংবংসরস্যান্তি, " সোমাভাবে পুতিকা মভির্ভ্রাং" ইতি আচতেঃ পুতিকাঃ সোমস্য প্রতিনিধয়ঃ ॥ ৩০ ॥ " অমৃত্ত্বে পূর্ণং যাস মুপান্ধতাহিন্তা অচাতে" ইতি ধর্মণাজোক্তং প্রায়াশ্চন্তং বা কর্ত্তবা মিত্যাই অধ বৈতি—সৌহিত্যং আত্তিভোজনং, তক্ত দানাণ্ড এতন্মান্মিধাবাদ কৃতাং এনসঃ পাপাং ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্মাণ নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চত্তিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৫ ॥ বৈশলালন উবাচ।
ভীমনেনবচঃ শ্রুত্বা কৃত্তীপুল্লো যুধিছিরঃ।
নিশ্বস্যপুরুষব্যান্ত! সংপ্রদধ্যে পরস্তপঃ ॥ ১॥
শ্রুত্বা মে রাজ্রধর্মান্ত বর্ণানাঞ্চ বিনিশ্চয়াঃ।
আরত্যাঞ্চ তদাত্বে চ যঃ পশাতি স পশাতি ॥ ২॥
ধর্মস্য জানমানোহহং গতিমগ্র্যাং স্কৃত্বিদাম্।
কথং বলাৎ করিব্যামি মেরোরির বিমর্দ্দনম্॥ ৬॥
স মুহুর্ত্তমিব ধ্যাত্বা বিনিশ্চিত্যেতিকৃত্যতাম্।
ভীমনেনমিদং বাক্য মপদাস্তর মন্ত্রবীং—॥ ৪॥
যুধিষ্টির উবাচ।

ণেএবমেতরহাবাহে!! যথা বদসি ভারত!।
ইদমন্যৎ সমাদংশ্ব বাচ্য^মে বাচ্যকোবিদ!*॥ ৫॥
মহাপাপানি কর্মানি যানি কেবলসাহসাৎ।
আরভান্তে ভীমসেন! বাথন্তে তানি ভারত!॥ ৬॥
স্থমন্ত্রিতে স্থবিক্রান্তে স্কৃতে স্থবিচারিতে।
সিদ্ধান্ত্যর্থা মহাবাহো! দৈরকাত্র প্রদক্ষিণ্য॥ ৭
যভুকেবলচাপল্যাৎ বলদর্শোপিতঃ শ্বয়ম্ব।
আরক্ষব্যমিদং কর্মাঃ মন্সে শৃণু তত্র মে॥ ৮॥

ভীমসেনেতি— ॥১॥ আরত্যা মুন্তর কালে, তদাবে বর্তমানকালে, যন্তান্ পশ্যতি ॥ ২ ॥ জানসানঃ জানন্ 'শ্বন্ বিক্ররণত্ব মার্থন্'॥৩॥ ইতি কৃত্যতাং ইতি কর্ত্তব্যতাং, অপদান্তর মবিদাশ্বতম্ ॥ ৪ ॥ সমাদংখ্য অদীকুৰ ॥ ৫ ॥ ব্যথন্তে ব্যথন্তি ॥ ৬ ॥ স্মান্তিতে শোতন মন্ত্রে ক্রিয়মাণে সাতি, স্বিক্রান্তে উৎকর্বেণোপছিতে, স্কুক্তে পুণাকর্মণি, স্ববিচারিতে বিনিশ্চিতে সতি, 'চকারো যদ্যবেশীণ।বলং শারীরং সাম্বাহ, দুপোর্যারং,

* 'বাক্লাং মে বাক্লা কোবিদ।" শীভ ক—

• প বলদংশান্তি, জ-ইতি কঃ।

‡ সধাৰত্ব যিদং কাৰ্ব্য যিতি ব—

ভূরিশ্রবাঃ শলকৈর জলসন্ধশ্চ বীর্যাবান। ভীয়ো দ্রোণশ্চ কর্ণশ্চ দ্রোণপুত্রশ্চ বীর্য্যবান্ ॥ ৯ ॥ थार्जवाष्ट्री क्रवाथकी क्रूट्याधनश्रुटवाशमाः। সর্বন এব কুতাস্ত্রাশ্চ সততঞ্চাততায়িন: ॥ ১৭ ॥ রাজানঃ পার্থিবা**শ্চৈব যেংস্মাভিরুপতাপিতাঃ।** সংশ্রেতাঃ কৌরবন পক্ষং জাতমেহাশ্চ তং প্রতি ॥ ১১॥ ছুর্য্যোধনহিতে যুক্তা ন তথাংস্মাস্থ ভারত!। পূর্ণকোষা বলোপেতাঃ প্রয়তিষ্যন্তি সঙ্গরে॥ ১২॥ সর্বে কৌরবদৈন্যস্য সপুত্রামাত্যদৈনিকা:। সংবিভক্তা হি মাত্রাভি র্ভোগৈ রপি চ সর্ক্ষা: ॥ ১৩॥ তুর্য্যোধনেন তে বীরা মানিতাশ্চ বিশেষতঃ। প্রাণাংস্তাক্ষ্যন্তি সংগ্রামে ইতি মে নিশ্চিতা মতিঃ ॥ ১৪ ॥ সমা যদাপি ভীয়াস্য রক্তি রক্ষাম্ম তেমু চ। Cक्षांनगा ह महावाद्या ! क्रुपमा ह महाख्रनः ॥ ১৫ ॥ অবশ্যং রাজপিও স্তৈ র্মিবেশ্য ইতি মে মতিঃ। তস্মান্ত্যক্ষ্যায়ি সংগ্রামে প্রাণানপি স্বত্নস্তাজান্॥ ১৬॥ मदर्ख हिवाशिविषा भाः मद्द्व धर्माश्रदाय्याः। অজেয়াশ্চেতি মে বুদ্ধি রপি দেবৈ: সবাসবৈ ॥ ১৭ ॥ অমৰী নিত্যসংবন্ধ স্তত কৰ্ণো মহারথং। गर्ताखितिमग्रीश्रा श्रामा करा के विषय व्यविकिं जा तर्व मर्खारनजान् श्रुक्षमञ्ज्यान् । অশক্যো হসহায়েন হন্ত পুর্ব্যোধনন্ত্রা। ১৯॥ উপিত: প্রতঃ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ সৈন্যক্ত সৈন্য সম্বন্ধিনঃ, সর্কে মাত্রাভিঃ অংশ পরিছেদৈ: ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ রাজ পিশু: রাজদত্তে আসং, নির্বেশাঃ আনুগার্থিং শোধনীরঃ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ * সকৈ: সুরাস্থরে রভি কঃ।

ন নিজামধিগছানি চিন্তুরানো বৃক্টোদ্র!।
অতি সর্বান্ধনুপ্র হোন স্থতপুজ্ঞস্য লাঘবম্''—॥ ২০॥
বৈশম্পায়ন উবাচ।
এতন্ত্রচন মাজ্ঞায়•ভীমসেনোহত্যমর্ধণঃ।
বভূব বিমনাস্ত্রস্থোন চৈবোবাচ কিঞ্চন॥ ২১॥

তয়োঃ সংবদতোরেব তদা পাপ্তবয়োছ য়োঃ। আজগাম মহাযোগী ব্যাসঃ সত্যবতীস্কৃতঃ॥২২॥ সোহভিগম্য যথান্যায়ং পাপ্তবৈঃ প্রতিপূজিতঃ। যুধিষ্ঠির মিদং বাক্য মুবাচ বদতাস্বরঃ॥২৩॥

ব্যাস ঊবাচ।

"যুধিষ্ঠির! মহাবাহো! বেদ্ধি তে হৃদয়স্থিতম।
মনীষয়া ততঃ ক্ষিপ্রমাগতোহিন্দা নর্মভ!॥ ২৪॥
ভীন্ধান্দোণাৎ ক্ষপাৎ কর্নাৎ দ্রোণপুলাচ ভারত!।
ছুর্যোধনান্দপস্থতাৎ তথা ছুঃশাসনাদপি॥ ২৫॥
যত্তে ভয় সমিত্রস্থ! ক্ষ্ সম্পরিবর্ত্ততে।
তত্তেহহং নাশ্যিষ্যামি বিধিদৃষ্টেন কর্ম্মণা॥ ২৬,1

তচ্ছুত্বা ধৃতিমাস্থায় কর্মাণা প্রতিপাদয়। প্রতিপাদ্য ভু রাজেন্দ্র! ততঃ ক্ষিপ্রং জ্বরং জহি॥২৭॥

তত একান্তমুমীয় পারাশর্যো যুধিষ্ঠিরম্।

অত্রবীতুপপন্নার্থ মিদং বাক্যবিশারদ: ॥ ২৮॥।
শ্রেয়সন্তে পর: কাল: প্রাপ্তো ভরতসন্তম!।

যেনাভিভবিতা শতু<u>ন</u>্ণে পার্থো ধনুর্দ্ধরঃ**#॥ ২৯॥**

লাৰবং শীত্ৰতাম্ ॥ २०॥ २১ ॥ २२ ॥ २७॥ २८ ॥ २৫ ॥ २७ ॥ २৮ ॥ ॥ २৯॥

ধনঞ্জর ইতি ক ব পুশুকৌ.।

গৃহাণেমাণ ময়া প্রোক্তাং সিদ্ধিং মূর্ত্তিমতীমিব। বিদ্যাং প্রতিম্বৃতিং নাম প্রপন্নান্ন ত্রবীমি তে॥ ৩ ॥ যামবাপ্য মহাবাছ রক্ত্রনঃ সাধরিষ্যতি। অস্ত্রহেতো মহেন্দ্রঞ্চ রুদ্রকৈবাভিগচ্ছতু । ৩১ ॥ বরুণঞ্চ কুবেরঞ্চ ধর্ম্মরা**জঞ্চ পাগুব**়। শক্তো ছেষ স্থরান ক্রফুং তপসা বিক্রমেণ চ ॥ ৩২ ॥ अविदिव महा ८७का नाता प्रग्नहा प्रवान । পুরাণ: শাশ্বতো দেব স্তুজেয়ো জিঞু রচ্যুত:॥ ৩৩॥ অক্রাণীক্রান্ত রুদ্রান্ত লোকপালেভ্য এব চ। সমাদার মহাবাছ শৃহৎ কর্ম করিব্যতি॥ ৩১॥ वनानमाळ कोटलसः। वनमनाविधिलाजाम्। * নিবাসার্থায় যদ্যুক্তং ভবেদ্ধ: পৃথিবীপতে! ॥ ৩৫॥ একত্র চিরবাসো হি ন প্রীতিঙ্গননো ভবেৎ। তাপদানাঞ্চ সর্বেষাং ভবেত্বধেশকারক: ॥ ৩৬॥ मुनानामुन्द्रानम्ह वीक्रमांचिम-क्रमः। विভर्षि ह वेहुन विश्वान् दिनदिनाक्ष्मशात्रभान्"—॥ ७५॥ रिमन्भात्रन छेगा ।

এব মুক্ত্বা প্রপন্নার শুচরে ভগবান্ প্রভু:। প্রোবাচ লোকভত্ত্বজ্ঞো যোগী বিদ্যামমুক্তমাম্॥ ৩৮॥ ধর্মরাজায় ধীমান্ স ব্যাস: সতাবতীস্কৃত:। অমুক্তার চ কেইন্টেরং ভবৈবাক্তরধীয়ত॥ ৩৯॥

॥ ৩০ ॥ সূখেরিয়াতি রাজ্যম্॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৬ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ উপথোধা ব্যায়ঃ, বীৰুধং প্রতান বজ্ঞাঃ, গুমধ্যঃ ক্ষল পাকান্তাঃ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ আত্মজার পৃষ্ঠ_ুণ ॥ ৩৯ ॥

[.] क्रियामार्थक रेडि कः।

যুধিনিত্তন্ত ধর্মা আ ত জুক্ষ মনসা যতঃ।
ধারয়ামাস মেধাবী কালে কালে সদাভাসন্ ॥ ৪০ ॥
স বাসবাকামুদিতো বনাদ্যৈতবনান্ততঃ
যথৌ সরস্থতীকুলে কাম্যক নাম কাননম্* ॥ ৪১ ॥
তমন্তমু মহারাজ! শিক্ষাক্ষরবিশারদাঃ।
ব্রাহ্মণান্তপসা যুক্তা দেবেক্সমূষয়ো যথা ॥ ৪২ ॥
ততঃ কাম্যক মাসাদ্য পুনস্তে ভরতর্ষভাঃ।
ন্যবসন্ত মহাত্মানঃ সামাত্যাঃ সপরিচ্ছদাঃ ॥ ৪৩ ॥
তত্র তে ন্যবসন্ জিন্! কঞ্জিৎ কাল মনস্থিনঃ।
ধন্তুর্বেদপরা বীরাঃ শৃণ্বুন্তা বেদমূত্তম্ ॥ ৪৪ ॥
চরস্তো মৃগয়া নিভাং শুকৈ ব্যাণৈর্ম্ম্ গার্থিনঃ।
পিতৃদৈবতবিপ্রেভ্যা নির্বাপত্তো যথাবিধি ॥ ৪৫ ॥
ইত্যার্যকে পর্বাণি আর্জুনাভিগমনপর্বাণি কাম্যকবনপ্রবেশে
যট ব্রিংশন্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৬ ॥

বৈশম্পারন উবাচ।
কস্য চিত্ত্বথ কালস্য ধর্ম্মরাজো যুধিন্ঠির:।
সংস্থৃত্য মুনিসন্দেশ মিদং বচন মত্রবীং—॥ ১ ॥
বিবিক্তে বিদিতপ্রজ্ঞ মর্জুনং পুরুষর্বত!।
সাত্রপূর্বাং স্থিতং কৃত্বা পানিনা পরিসংস্পৃশন্॥ ২ ॥
বশ সম্ভেদ্ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪০ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥
ইতারনাকে পর্বাণ নৈলক্তীয় ভারত ভাবদীপে
বটুত্তিংশোহধায়ঃ ॥ ৩৬ ॥

करमाजि-कमाहिर कन्मिर्भिट । ।। ।।

^{*} তম্বনিতি ক'ব পুস্তকৌ। প্ৰণ্নানাবেদনিক্ষনীয়তি ক: ।

1 পুৰুষৰ্বভন্ন ইতি হিতীয়ান্ত পাঠঃ ক'পুস্তকে ব প্ৰভকে চ।

স মুহুর্ত্তমিব ধ্যাত্মা বনবাসমরিন্দমঃ। ধনপ্তায়ং ধর্মারোজো রহসীদ মুবাচহ॥ ৩॥ যুধিষ্ঠির উবাচ।

গ্রান্তর ভবাচা

গভীয়ে জোণে ক্লেপ কর্ণে জোণপুজে চ ভারত!!
ধরুর্বেদশ্চ বুস্পাদ এতেম্বদ্য প্রতিষ্ঠিতঃ ॥ ৪॥
ব্রাহ্মং দৈবং মানুষঞ্চ বায়বাৎ শাচিকিৎসিতম্।
সর্বাস্ত্রাণাং প্রয়োগঞ্চ অভিজানন্তি ক্লংস্লশং ॥ ৫॥
তে সর্বের ধৃতরাষ্ট্রদ্য পুজেণ পরিসাম্বিতাঃ।
সন্বিভক্তাশ্চ তুষ্টাশ্চ গুরুবন্তেমু বর্ততে ॥ ৬॥
সর্ববেয়েধেমু চৈবাস্য সদা প্রীতিরমুন্তমা।
আচার্যামানিতাস্তম্ভাঃ শান্তিং ব্যবহরস্কাত॥ ৭॥
শক্তিং ন হাপয়িষ্যন্তি তে কালে প্রতিপ্রজিতাঃ।
আদ্য চেয়ং মহী ক্লেমা ছুর্যোধনবশানুগা॥ ৮॥
সগ্রামনগরা পার্থ! সসাগরবনাকরা।
ভবানেব প্রিয়োহস্মাকং অয়ি ভারঃ সমাহিতঃ॥ ৯॥
আত্রা কৃত্যং প্রবক্ষ্যামি প্রাপ্তকাল মরিন্দম!।
কৃষ্ণবৈপায়নান্তাত! গৃহীতোপনিষ্ময়া॥ ১০॥

বনবাসং জৌপদী বিয়োগং "গৃহিণী গৃহ মুচ্যতে" ইতি স্তে: ॥আঁ চতুষ্পাদ্য-আদান-সন্ধান-বিসর্গ-সংহারা শ্চনারঃ পাদা যদ্য ॥৪॥ দৈবং—ইন্দ্র বন্ধ্যাদ্যন্তং, ত্রান্ধং—ত্রন্ধান্ত্রং মানুষং ধন্ধরণাদি, যত্তঃ গ্রহণ ধারণ-প্রয়োগর-পং, চিকিৎসা পর প্রযুক্তানামেষাং প্রতীকারঃ, এবংতে সর্বান্ধাণাং প্রয়োগং আভিতঃ সাকল্যেন জানন্তি সমত্য মত্যে বায়ব্য মিতি পাঠান্তর মাপ । গ্রাহ্য ॥৫॥ গুরুবং গুরুবি ॥৬॥ শান্তিং দোষ পরি হারং কর্তুং ব্যবহরন্তি যতন্তে ॥ ৭ ॥ শক্তিং সামর্থাং ন হাপরিষান্তি ত্যাজরিষ্যন্তি অপিতৃ উদীপরিষান্তি ॥৮॥৯॥ উপনিবং রহ্ন্যা বিদ্যা ॥ ১০॥

^{*} বায়বামিতাত্ত্ব সমত্বমিতি য:।
† তেহ ডিজানন্তীতি ক—য:।

‡ তত্ত্বে ডিক—প্ৰবন্ধ্যামীতাত্ত্ব প্ৰপশ্যমি ইতি য:।

তরা প্রযুক্তরা সম্যক্ জ্বাৎ সর্বাণ প্রকাশতে।
তেন বং ব্রহ্মনা তাত! সংযুক্তঃ স্থসমাহিতঃ ॥ ১১ ॥
দৈবতানাং যথাকালং প্রসাদং প্রতিপাদর।
তপসা যোজয়াত্মান মুগ্রেণ ভরতর্বভ!॥ ১২ ॥
ধনুয়ান কবচী খড় গী মুনিঃ সাধুবতে স্থিতঃ।
ন কস্যচিদ্দিলার্গণ গচ্ছ তাতোজরাণ দিশম্॥ ১৯॥
ইন্দে হাস্ত্রাণি দিব্যানি সমস্তানি ধনপ্রয়!।
রুজান্তীতৈর্বলং দেবৈ স্তদা শক্রে সমর্পিতম্॥ ১৪॥
তান্যেকস্থানি সর্বাণি ততন্ত্বণ প্রতিপৎস্যমে।
শক্রমেব প্রপদাস্থ স তেহস্তাণি প্রদাস্যতি॥ ১৫॥
দীক্ষিতোহদৈয়ব গচ্ছ ত্বং দ্রফুং দেবণ প্রন্দরম"—।
বিশ্বসান উবাচ।

এবমুক্তা ধর্মরাজ স্তমধ্যাপয়ত প্রভুঃ ॥ ১৬ ॥
দীক্ষিতং বিধিনানেন ধৃতবাক্কায়মানসম্ ।
অরুজজ্ঞে তদা বীরু আতা ভাতরমগ্রকাঃ ॥ ১৭ ॥
নিদেশাদ্ধরাজস্য জেইকামঃ পুরন্দরম্ ।
ধরুর্গাণ্ডীব মাদায় তথাক্ষয্যে মহেষুধী ॥ ১৮ ॥
কবচী সভলতাণো

কবচী সভলতাণা

কবচী সভলতাণ

কবচী মাদাম

কবচী

॥ ১১॥ প্রতি পালয় প্রাপ্তি॥ ১২॥ মার্গংন দদং অদদং॥ ১৩॥ বলং
সর্বাক্তরপ্ত্॥ ১৪॥ ততঃ শক্তাং॥ ১৫॥ দীক্ষিতঃ স্বীকৃতরতঃ, অধ্যাদ্
প্রতঃ বিদ্যাল বোজিতবান্॥ ১৬॥ অভ্যক্তে বান্
॥ ১৮॥ ১৮॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥

^{*} তমুত্রাণ ইতি যঃ।

ত^ দৃষ্টা তত্র কোন্তেরং প্রগৃহীতশরাসনম্।
আক্রবন্ ব্রাহ্মণাঃ দিদ্ধা ভূতানান্ত হিতানি চ ॥ ২১ ॥
ক্রিপ্র মাপ্লাই কোন্তের ! মনসা বাদ্দদিছ্গি।
আক্রবন্ ব্রাহ্মণাঃ পার্থ মিতি কুত্বা জয়াশিষ্ট ॥ ২২ ॥
সংসাধরস্ব কোন্তের ! প্রবোহন্তু বিজয়ন্তব।
তং তথা প্রস্থিত বীরং শালক্ষ্যোক্ত মর্ক্রনম্॥ ২৩ ॥
মনাংস্যাদার সর্বোধা ক্ষ্ণা বচন মত্রবীং—;

কুকোবাচ।

—'' যতে কৃত্তী মহাবাহো। জাতলৈ জ্জনপ্পর!॥ ২৪॥
তত্তেহন্ত সর্বাং কৌন্তের। ষথা চ স্বর্গমিক্ষ্যি।
মাস্মাকং ক্ষজ্রিরকুলৈ জন্ম কন্দিদবাপ্পুরাং। ২৫॥
ব্রাক্ষণেভোগ নমো নিত্যং যেষাং তৈক্ষ্যেণ জীবিকা!!
ইদং মে পরমং ছুঃখং যঃ স পাপঃ সুষোধনঃ॥ ২৬॥
দৃষ্টা মান গৌরিতি প্রাহ প্রহুসনাজসনসদি।
তক্ষাদ্বংখাদিদং ছুঃখং গরীয় ইতি মে মতিঃ॥ ২৭॥
যত্তৎ পরিষদো মধ্যে বহ্বযুক্ত মভাষত।
নূনং তে জীতরং সর্ব্বে ছুংকখাভিঃ প্রজাগরে॥ ২৮॥
রংস্যন্তে বীর কর্মাণি কথ্যন্তঃ পূনঃ পূনঃ।
নৈব নঃ পার্ষ। ভোগেষু ন ধনে নোত জীবিতে॥ ২৯॥
তৃত্তিক্র জির্তবিত্রী বা ত্রি দীর্ষপ্রবাসিনি।
ত্রির নং পার্ষ। সর্বেব্রাং স্থবছুংখে সমাহিতে। ৩০॥

। ২১ । ইতি বক্সমাণং অক্তবন্ । ২২ । ২৩ । বং মকলং তে তব । ২৪ । । ২৫ । ২৬ । গো দিতি বহু পুক্ষ ভোগোতাপ হাসঃ । ২৭ । অভাবত শক্তঃ যৎ তথাৎ হংখাৎ ইদং অভিযোগক মিতিপূৰ্বেণ সমন্ধঃ ॥২৮ । ২৯। । ৩০ ।

জীবিত্ত মরণকৈব রাজ্য মৈশ্বর্যামের চ।

আপৃটো মেহসি কৌন্তের ! স্বন্তি প্রাপ্তাই ভারত !॥ ৩১॥
বলবন্তি কিন্দেন্ধং ন কার্যামেতত্ত্ব্যানম্ব !।
প্রবাহ্যবিমেনেরাশুবিজয়ায় মহাবল !।
নমো ধাত্রে বিধাত্রে চ স্বন্তি গচ্ছ হ্যনাময়ম্॥ ৩২॥
ক্রীঃ ক্রীঃ কিন্তি প্র কিঃ পুষ্টি রুমা লক্ষ্যীঃ সরস্বতী।
ইমা বৈ তব পাস্কুত্ত পালয়ন্ত ধনপ্রয় !॥ ৩৩॥
ক্যোষ্ঠাপচায়ী জ্যেষ্ঠায় ভাতু ব্রচনকারকঃ।
প্রপদ্যেহহং বহুন জানাদিত্যান সমরুদ্যাণান্॥ ৩৪॥
বিশ্বেদেবা তথা সাধ্যান শান্ত্যর্থত ভরতর্যভ !।
স্বন্তি তেহন্ত নুরীক্ষেতাঃ পার্থিবেভাক্ষ ভারত !॥ ৩৫॥
দিব্যেভাকেব ভূতেভোগ যে চানো পরিপন্থিনঃ—।
বিশেশায়ন উবাচ।

— এবমুক্ত শিষং ক্ষণ বিররাম যশন্ত্রী। ৩৬॥
ততঃ প্রদক্ষিণং কৃত্বা জাতুন ধৌম্যঞ্চ পাপ্তবং।
প্রাতিষ্ঠত মহাবাছঃ প্রগৃহ ক্ষতিরং ধরুং। ৩৭॥
তদ্য মার্গদেপাক্রামন সর্বাস্কৃতানি গছতঃ।
ব্যুক্ত দ্যৈক্রেণ যোগেন পরাক্রান্তক্ষ শুমিনং। ৩৮॥
সোহগক্ত পর্বাতা শুলাং। তপোধননিবেবিভান্।
দিব্যং হৈমবত পুণাং দেবকুই পরস্তাং। ৩৯॥

অগচ্ছৎ পর্বতং পুণ্য মেকাক্লৈব মহামনাঃ। মনোজবগতিভূঁত্বা যোগযুক্তো যথানিলঃ॥ ৪০॥

॥ ৩১॥৩২॥ তব সাম্॥ ৩৩॥ জ্যেষ্ঠাপচারী জ্যেষ্ঠপুরন শীলঃ, জ্যেষ্ঠোপ চারীতি পাঠে—জ্যেষ্ঠ রৃদ্ধি করণ শীলঃ॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩৭॥ শুশিলঃ বলিনঃ "শুম মিতি বল নাম" ইতি যাকঃ॥ ৩৮॥ ৩১॥ ৪১॥

হিমবস্ত মতিক্রম্য গল্পমাদন মেব চন অত্যক্রামৎ স্বত্নগানি দিবারাত্র মতন্দ্রিতঃ॥ ৪১ । हेलुकीलः म्यामामा ততো १ जिन्न मध्यः। অন্তরীক্ষেহতিশুশ্রাব তিষ্ঠেতি স বচস্তদা—॥ ৪২॥ ডেচ্ছ ত্বা সর্বতো দৃষ্টিং চারয়ামাস পাগুবঃ। অথাপশাৎ সব্যুসাচী রক্ষমূলে তপস্থিনম্ ॥ ৪৩ :৷ ব্রাক্ষ্যা প্রিয়া দীপ্যমানং পিঙ্গলৎ জটিলৎ রুশম্। সোহব্রীদর্জ্বন তত্ত্র স্থিত দুট্য মহাতপাঃ । ৪৪॥ কন্তুং তাতেই সংপ্রাপ্তো ধনুষ্মান কবচী শরী। নিবদাসি তলতাণঃ কল্ড-ধর্মমনুব্রত? "—॥ ৪৫ ॥ নেহ শক্তেণ কর্ত্তবাং শান্তানামেষ আলয়ঃ। বিনীতকোধহ্যাণাং ত্রাহ্মণানাং তপস্থিনাম্॥ ৪৬॥ নেহান্তি ধনুষা কার্যাৎ ন সংগ্রামোহত কহিছিল। নিক্ষিপৈতদ্বস্তাত। প্রাপ্তোহসি পরমাং গতিম ॥ ৪৭ ॥ अक्रमा (उक्रमा वीत ! यथा नानाः श्रमान् क्रिटि ! ভথা হসন্নিবাভীক্ষং ব্রাক্ষণোহর্জ্ঞ্বনমত্রবীৎ---। न टेडनक्शलशौभाग रेथशां ऋधू जिन्ह्सम् ॥ १६ ॥ ত মুব্চে ততঃ প্রীতঃ স দ্বিজঃ প্রহুসন্নিব। বরং রণীম্ব ভদ্রব্যে শক্তো২্হ মরিস্থদন। ॥ ৪৯॥ এবমুক্তঃ সহস্রাক্ষণ প্রত্যুবাচ ধনপ্রয়ঃ। व्याञ्जलिः व्यनरका सूचा सूद्रः कुरूकुरला परः ॥ ८० ॥ मेरिनारा श्वास देव कारमा वत्रेक्षने ध्याक रम। ত্বভোহদ্য ভগবন্নস্ত্রং কুৎস্পমিচ্ছামি বেদিভুম্। ৫১॥ ॥ ८১ ॥ ८२ ॥ ८० ॥ ८८ ॥ বিনীতৌ জিতৌ ক্রেপ্ছমৌ থৈঃ ॥ ৪৬ ॥ 89 || 84 || 83 || 40 || 43 ||

* ক.তাং ধৰ্মং ইতি ক—

প্রত্যবাচ মহেন্দ্র স্থং প্রীতাত্মা প্রহুসলিব। ५ ইহ প্রাপ্তস্য কিং কার্য্য মক্তৈন্তব ধনপ্রয়।॥ ৫২ ॥ কামান্ রুণীয় লোকাংস্তু শুপ্রেছিসি পরমাং গতিম। এবমুক্তঃ প্রভ্রারাচ সহস্রাক্ষং ধনঞ্জয়ঃ॥ ৫৩ ॥ ন লোকান পুনঃ কামান্ন দেববং কুতঃ স্থাম্। ন চ সর্বামরৈশ্বর্য্য কাময়ে ত্রিদশাধিপ ! ॥ ৫৪ ॥ ভাত, ংস্তান্ বিপিনে ত্যক্ত্য বৈর মপ্রতিষাত্য চ। अकीर्डि नर्नितारक्यू भरक्यः भाषातीः ममाः। ee । এবমুক্তঃ প্রভাবাত রুত্রং। পাণ্ডুনন্দনম্। সাস্ত্রন্ শ্লক্ষ্যা বাচা সর্বলোক নমস্কৃত: ॥ ৫৬॥ যদা দ্রক্ষাসি ভূতেশং ত্রাক্ষ্ণ শূলধরং শিব্য। তদা দাতাশ্মি তে তাত। দিব্যান্যস্ত্রাণি সর্বশং । ৫৭॥ দর্শনে ক্রিয়তাং যত্রে। দেবস্তা পরমেক্টিনঃ। দর্শনান্তত্ত্ব কৌন্তের ! সংসিদ্ধঃ সর্বমেঘ্যসি ॥ ৬৮॥ हेर्जु का द्धनः भरका जगामामर्भनः श्वनः। অৰ্জুনে।হপ্যথ তত্ত্ৰৈব তস্থে বোগদমন্বিতঃ''— ॥ ৫৯ । ইত্যারণ্যকে পর্বাণজ্জুনাভিগমনপর্বাণ ইন্দ্রদর্শনে

সপ্তত্তিংশোহধ্যায়: । ৩२ ॥ সমাপ্তথ্য অজ্জুনাভিগমন পর্ব ।

॥ ৫২॥ কামান্ কামান্ত ইতি বুংৎপত্তা। ইফ্টান্ লোকান্ ভোগান্ ॥৫৩॥ ন লোভা ন্নপুনঃ কামাদিতি ন-শকো বা-শকাথোঁ লোভাদ্য। কামাদ্বতার্থঃ ॥ ৫৪॥ অপ্রতিয়াত, অনিন্তীয়া এতেন জ্যেষ্ঠ জাত্রাদি সেংনং ঐশ্রপদ প্রাপ্তাবিপি নোপেক্ষণীয়মিত্যক্তম্॥ ৫৫॥ ৫৬॥ ৫৭॥ ৫৮॥ ৫৯॥ ইত্যারণ কে পর্বানি নৈলকণ্ঠান্তে ভারত ভাবদীপে•

সপ্তত্তিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৩৭॥

^{*} দক্ষ মাপ্যাদি হ ত্যাশি পাচান্তরম্।

ই প্রত্যাত্র করাত পর্ব ॥ ৪॥ ই ক্রেন্সাত্র করাত পর্ব ॥ ৪॥ ই ক্রেন্সাত্র ক্রেন্সাক্র ক্রেন্সাক্র

जनरमञ्ज्य छेन्। " ভগবন্। শ্রোভূমিচ্ছামি পার্থস্যাক্লিফকর্মাণঃ। বিস্তরেণ কথামেতাং যথাস্তাণ্যপলক্ষ্যান্ ॥ ১॥ यथा ह शुक्रवत्राद्या मीर्चवार्क्कनक्षयः। বন^ প্রবিষ্ট স্তেজস্বী নির্মানুষ্য মন্ত্রীতবং ॥ ২ ॥ কিঞ্চ তেন ক্লতং তত্ত্ত-বসতা ব্রহ্মবিত্তম।। কথঞ্চ ভশ্নবান স্থাণুর্দ্বেরাজন্চ তোষিতঃ ॥ ৩ ॥ এত दिन्हा मार्ट (आंजू प्रश्ना ना कि कि कि ।। वः इ भक्षे छ । मिना १० मानू यरेश व दग्थ इ ॥ ८ ॥ অত্যন্তুততমং ব্ৰহ্মন্! লোমহৰ্ষণ মৰ্জ্জুনঃ। ভবেন সহ সংগ্রামং চকারাপ্রতিম কল ॥ ৫ ॥ পুরা প্রহরতাং শ্রেষ্ঠ: সংগ্রামেম্বপরাজিত:। যচ্চত্রা নরসিংহানাং দৈন্যহর্ষাতিবিস্ময়াৎ ॥ ৬॥ শূরাণামপি পার্থানা হৃদয়ানি চকম্পিরে। यन्यक्रक्र छ वा नग्द शार्थ खप्रियं वर ११ १ ॥ ख्यारिजि ॥ ३ ॥ २ ॥ ० ॥ 8 ॥ ए ॥ रिम्बा स्थां जि विस्पारा — रिम्बार

ভাষাত্রতি—॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৫ শা । বিশায় তাংপ্রসাদেনালোকিক নাশভয়াৎ, হর্ষে: মহাদেবপ্রতিভট্ডাৎ, বিশায় তাংপ্রসাদেনালোকিক সামর্থালাভাৎ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥

ন ছাগ্য নিন্দিত্র জিকো: সুসূক্ষমপি লক্ষরে! চরিত্র তথ্য শ্রস্য তথ্যে সর্বাৎ প্রকীর্ত্তর — । ৮।
বৈশন্ধায়ন উবাচ।

কথরিব্যামি তে ভাত। কথামেতা শহাত্মন:। দিব্যং কৌরবশার্দ্র ! মহতীমন্ত্রোপমাম্ ॥ ৯ ॥ গাত্রসংস্পর্শসংবদ্ধাং ত্রায়কেন সহানঘ!। পাर्थमा (प्रवाहत्वन मृत् ममाक् ममाभम् ॥ >०॥ যুধিষ্ঠিরনিয়ে। গাৎ স জগামা মিতবিক্রমঃ। भक्तः स्टूरत्रश्वतः क्रके प्रतिप्रविश्व भक्कत्रम् ॥ ১১ ॥ দ্ব্যং তদ্বসুরাদায় খড়গঞ্চ কনক-ৎসরুমু। মহাবলো মহাবাছ রজ্ঞানঃ কার্যাসিদ্ধয়ে ॥ ১২ ॥ मिशः श्रुमोहीः कोत्रद्या श्रिमविष्ट्रश्वरः अ**छि।** ঐ क्तिः चित्रमना ताकन्। मर्लालाकमहात्रथः ॥ >७॥ ত্বরয়া পরয়া যুক্ত স্তপদে ধৃতনিশ্চয়:। বনং কণ্টকিতং ঘোর মেক এবাস্থপদাত ॥ ১৪॥ নানাপুষ্পফলোপেত্র নানাপক্ষিনিষেবিতম্। नानामुभभगवाकीर्व निक्रांत्रवाकिष्ण । > । ততঃ প্রয়াতে কৌস্তেয়ে বনং মানুষবর্চ্চিতম্। শস্থানাং পটহানাঞ্চ শব্দঃ সমভবদিবে॥ ১৬॥ পুষ্পাবর্ষঞ্চ স্থমহ নিপপাত মহীতলে। মেঘজালঞ্ব বিতত্ত ছাদ্যামাস স্কৃতঃ ॥ ১৭ ম সোহতীত্য বনতুর্গাণি সল্লিকর্ষং মহাগিরে:। **७७**८७ विसव १ प्रके वन सारना ३ व्यक्त छन। ॥ ১৮ ॥

॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ কনক-ৎসকং স্বৰ্ণনুকিষ্ ॥ ১২ ॥ ঐব্দ্র: অর্জ্ন:॥১৩॥ কণকৈতং কণকাক্ষান্তম্ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

তত্রাপশাদ, মান্ ফুলান্ বিহরৈ র্বল্পনাদিতান্। নদীক বিপুলাবর্ত্ত। বৈদুর্যাবিমলপ্রভাঃ ॥ ১৯ ॥ হৎসকারগুবে ক্ষীতাঃ সারসাভিত্রতান্তথা थुः स्कार्किलक्क **ाटेन्डर** क्लोक्षर्याईन नामिलारं॥ २०॥ মনোহরবনে।পেতা স্তাম্মনতিরখোহর্জ্ঞা। পুণ্যশীতাহমল জলাঃ পশ্যন্ প্রীতমনাহভবৎ ॥ ২১ ॥ त्रभगीरत वरनारकत्न त्रमगरनार क्रिनलना । তপস্থাগ্রে বর্ত্তমান উত্রতেজা মহামনাঃ॥ ২২॥ দর্ভচীরং নিবস্যাথ দগু'জিনবিভূষিতঃ। শীর্ণঞ্চ পতিতং ভূমৌ পর্ণ সমুপযুক্তবান্॥ ২৩ ॥ পুর্ণে পূর্ণে ত্রিরাত্তে তু মাসমেকং ফলাশনः। দ্বিগুণেন হি কালেন দ্বিতীয়ং মাসমত্যয়াৎ॥ ২৪॥ তৃতীয়মপি মাসং স পক্ষেণাহার মাচরৎ। চতুর্থে বৃথ সংখ্রাপ্তে মাসে ভরতসত্তমঃ॥ ২৫॥ বায়ুভকো মহাব ছ রভবৎ পাওুনন্দনঃ। উর্বান্ত নিরালয়ং পাদাঙ্গুঠাগ্রধিষ্ঠিতঃ ॥ ২৬ ॥ সদোপত্পর্শনাচ্চাস্ত বভুবুরমিতৌজসঃ। বিচ্যুদস্তোরুহনিভা জটাস্তস্ত মহাত্মনঃ॥ ২৭॥ ততোমহর্ষয়ঃ সর্বেজগ্মুদ্দেবং পিনাকিনম্। * বিবেদয়িষবঃ পার্থং তপস্ক্যাগ্রে সমাস্থিতমু ॥ ২৮ ॥ ॥ বহু মধুরম্॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ দর্ভচীর তৃণময়ং বাসঃ নিবস্য পরি

[•] নিবেদ য়িষবঃ ইতি ক্ষ।

ত প্রথম্য মহা দেবং শশংস্থা পার্থকর্ম্ম তং ।

এব পার্থো মহাতেকা হিমবং পৃষ্ঠমান্থিক। । ১॥

উপ্রে তপদি ছুম্পারে স্থিতো ধুমাররদিশা।

তক্ত দেবেশা ন ব্যং বিদ্ধান দেবি চিকীর্মিতম্ ॥ ৩০॥

সন্তাপরতি না সর্বানদৌ সাধু নিবার্যাতাম্।

তেবাং তদ্বচনং শ্রুমা মুনীনাং ভাবিতাম্মনাম্॥ ৩১॥

উমাপতির্ভূতপতির্বাক্য মেত্রুবাচ হ—।

মহাদেব উবাচ।

"ন বে৷ বিষাদঃ কর্ত্তবাঃ ফাল্গুনং প্রতি সর্বাশঃ ॥ ৩২ ॥
শীঘ্রণ গচ্ছত সংক্রমী যথাগতমতন্দ্রিতাঃ ।
অহমস্য বিজানামি সঙ্কপ্রেং মনসি স্থিতম্ ॥ ৩৩ ॥
নাস্য স্বর্গস্প্ হা কাচিন্মৈশ্র্যাস্য তথামুষঃ ।
যন্ত্রস্য কাজ্জিতং সর্বাং তৎ করিষ্যেহহমদ্য বৈ''॥ ৩৪ ॥
বৈশস্পায়ন উবাচ ।

তচ্ছু জা সর্ববচনম্যয়ঃ সত্যবাদিনঃ।
প্রহারকানসো জগ্মহথা স্থান পুনরালয়ান ॥ ৩৫ ॥
ইত্যারণাকে পর্বানি কৈরাতপর্বাণি ঋষিশঙ্করসংগাদে অইত্রিংশভ্রমোহধ্যায়ঃ॥ ৩৮॥

वर्षे जिश्तार्था ॥ ७৮॥

रिवनम्भात्रम छेवात्र। গতেষু তেষ্ সর্বেষু তপশ্বিষু মহ অহ । পিনাকপাণিভগবান সর্ব্বপাপহরে। হর: ॥ ১॥ কৈরাতং বেশমাস্থায় কাঞ্চনদ্রুমসন্নিভম্ ৷ বিভাজমানো বিপুলো গিরিশ্রেরুরিবাপরঃ। ২ ॥ अभिक्षकुक्षिक्षं भवार्षः भविष्याभिमान् । নিষ্পূপাত মহাবেগো দহনো দেহবানিব ॥ ৩॥ দেব্যা সহোময়া শ্রীমানু সমানত্রতবেশয়া। নানাবেশধরৈ হৃ ফৈ ভূ তৈ রমুগতন্তথা ॥ ৪॥ কিরাতবেশস ছন্নঃ স্ত্রীভিশ্চাপি সহস্রশঃ। অশোভত তদা রাজনু! স দেশোহতীব ভারত!॥ ৫॥ ক্ষণেন তম্বনং সর্বাং নিঃশব্দমভবন্তদা। নাদঃ প্রস্রবর্ণানাঞ্চ পক্ষিণাঞ্চাপ্যাপারমং ্ব ৬ ॥ স সন্নিকর্ষমাগম্য পার্থস্থাক্লিউকর্মণঃ। মুকং নাম দনোঃ পুক্ত দদশাদ্ভদশনম্॥ १॥ বারাহং রূপমাস্থায় তর্কয়ন্তমিবার্জ্যুনম্। হস্ত্রং পরংদীপ্যমানং * ত মুবাচাথ কাল্কুনঃ ॥ ৮॥ शाखीव भन्न त्रामाय भनामाभीवित्यापमान्। मकार धनुकात कृषा कार्राचारमण निनामसन्॥ क ॥ যন্ত্রাং প্রার্থরেদে হস্তু মনাগদ মিহাগতম। তক্ষাজ্বাং পূর্ব্বমেবাছণ নেতাদ্য ষমসাদনম্॥ ১০॥

গতেছিতি—॥১॥२॥०॥ ভূতি: প্রমথাথৈ ঃ অপার্বদে: ॥৪॥৫॥ ॥৬॥৭ ৮ আর্জুনং হস্তং তুর্করস্তং উচ্ছস্তং ক্রোধেন দীপ্য মান্মিব॥৮॥ ॥৯॥ নেতা নেষ্যামি। ॥১০॥

^{* &#}x27; হন্তং পরম হস্তাত্মা" ইত্যেবং ক প্রস্তুক পাঠঃ।

पृष्टे। जः श्रद्धाराखः का**ख्यन** पृष्ट्यविनम् । কিরাতৰপী সহসা বারয়ামাস শঙ্কর: ॥ ১১॥ মরৈষ প্রার্থিতঃ পূর্বে মিন্দ্রকীলসমপ্রভঃ 🛊 🗠 অনাদৃত্য চ তন্ত্রাক্যং প্রজহারাথ কাল্কুনঃ॥ ১২॥ কিরাতশ্চ সমং তিমা নেকলফো মহাদ্যাতিঃ। প্রযুমোচাশনিপ্রথাং শর মগ্নিশিথোপমম ॥ ১৩॥ তৌ মুক্তৌ শায়কৌ তাভ্যাৎ সমস্তত্র নিপেতত্বঃ। মুকস্তা গাত্রে বিস্তীর্ণে শৈলসংহননে তদা॥ ১৪॥ যথাশনে বিবিনির্ঘোষো বজ্ঞস্থেব চ পর্বিতে। তথা তয়োঃ সন্নিপাতঃ শর্মো রভর্তদা॥ ১৫॥ म विष्का वछ्छि क्वारेन मीक्षारेखः श्रन्नरेन बिव। মমার রাক্ষদ্ ৰূপং ভুষ্ণ কুত্বা বিভীষণম্ ॥ ১৬ ॥ স দদৰ্শ ততো জিফু: পুরুষং কাঞ্চনপ্রভম্ । কিরাতবেশপ্রচ্ছন্নং স্ত্রীসহায় মমিত্রহা । ১৭॥ ত মত্রবীৎ প্রীতমনাঃ কৌন্তেয়ঃ প্রহসন্নিব। কো ভবানটতে শূন্যে বনে স্ত্রীগণ্সং রুতঃ ॥ ১৮॥ ন ত্বমস্মিন্ বনে ছোরে বিভেষি কনকপ্রভ?—। (কিমর্থঞ ত্বয়া বিদ্ধো বরাহে। মৎপরিগ্রহঃ ?—॥ ১৯॥ ময়াভিপন্নঃ পূর্বাৎ হি রাক্ষদোহয়মিহাগতঃ। কামাৎ পরিভবাদ্বাপি ন মে জীবন বিমোক্যাসে ॥ ২০॥

॥১১ । ইন্দ্রকীলঃ মাহেন্দ্র মণিমরঃ পর্বতঃ ॥ ১২ ॥ সমং এককালম্ ॥ ১৩॥
শৈলসংছননে শৈলবন্দ্রে । ॥ ১৪ ॥ অশনি মেঘজং বজ্ঞং, বজ্ঞং ইন্দ্রপ্র ছরণম্, সন্নি পাতো যোগঃ ॥ ১৫ ॥ সদানবঃ রাক্ষ্য মিব ॥১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮॥ ॥ ১৯ ॥ অভিপন্নঃপরিগৃহীতবান্, কামাৎ যদৃচ্ছাতঃ, পরিভবাৎ ম্মাভি ভবার ॥ ২০॥

^{*} ইন্দ্ৰ নীল সমপ্ৰভ ইতি ক---

ন ছেষ মৃগয়াধর্মো বস্তুরাদ্য ক্রতো মরি।
তেন বাং লুপ্শরিষ্যামি জীবিতাৎ পর্বতাশ্রয় ! ॥ ২১॥
ইত্যুক্তঃ পাগুবেয়েন কিরাতঃ প্রহসন্নিব।
উবাচ শ্লক্ষরা বাচা পাগুবং সব্যসাচিনম্ ॥ ২২॥
ন মৎক্রতে ব্রয়া বীর ! ভীঃ কার্যাা বনমন্তিকাৎ।
ইয়্ম ভূমিঃ সদান্দাক মুচিতা বসতাম বনে ॥ ২৩॥
বয়া তু ছয়য়ঃ কন্দাদিহ বাসঃ প্ররোচিতঃ।
বয়স্তু বহুসত্ত্বেহ্মিনিবসাম স্তুপোধন!॥ ২৪॥
ভবাংস্তু ক্ষবর্জাভঃ স্থকুমারঃ স্কুখোচিতঃ।
কথং শূন্যমিমং দেশ মেকাকী বিচরিষ্যতি?"—॥ ২৫॥
অর্জ্র্ন উবাচ।

"গাঞ্জীবমাশ্রম্ম কৃষা নারাচাং শ্রাগ্রিসন্নিভান্। নিবসামি মহারণ্যে দ্বিতীয় ইব পাবকিঃ # ॥ ২৬॥ এব চাপি মহাজস্তু র্মুগরূপং সমাশ্রিতঃ। রাক্ষসো নিহতো ঘোরো হস্ত্রণ মামিহ চাগতঃ''॥ ২৭॥

কিরাত উবাচ।

েমরৈষ ধন্দিশু কৈ স্থাডিতঃ পূর্বমেব হি।
বাণৈ রভিহতঃ শেতে নীতক্ষ যমুসাদনম্ ॥ ২৮ ॥
মরেষ লক্ষাভূতো হি মম পূর্বপরিগ্রহঃ।
মনৈব চ প্রহারেণ জীবিভাষ্যপরোপিতঃ ॥ ২৯ ॥
দোষান্ শালাইসেহন্যুমে বকুং স্ববলদ্পিতঃ।
অবলিপ্রোহ্যি মন্দাস্থন্! ন মে জীবন্ বিমোক্যাসে॥ ৩০ ॥

॥ ২১ ॥ ২২ ॥ সংকৃতে সন্নিমিত্তৎ বনমন্তিকাৎ বনস্য সমীপো ॥ ২৩ ॥ প্রাচিতঃ স্বীকৃতঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥পাবকিঃ স্বামিকার্তিকেরঃ। ২৬ ॥ ২৭ ॥ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ দোষান্ মৃগয়াধ্যাতিক্র ম কুপান্ ॥ ৩০ ॥

^{*} भावक रेजिकः

স্থিরো ভবস্থ মোক্যামি শায়কানশনীনিব *। ঘটস্ব পরয়া শক্ত্যা মুঞ্চ ত্বমপি শায়কান্"॥ ৩১॥ † তম্ম তদ্বচনং শ্রুত্বা কিরাতম্মার্জুনন্তদা। রোষ মাহারয়।মাস তাডয়ামাস চেষুভিঃ ॥ ৩২॥ ততো হুফেন মনসা প্রতিজ্ঞাহ শায়কানু। 'ভুয়ো ভুয় ইতি প্রাহ মন্দ মন্দেত্যুবাচ হ।। ৩৩।। প্রহরম্ব শরানেতান নারাচামর্মভেদিনঃ''। ইত্যক্তো বাণবর্ষ সমুমোচ সহসাৰ্জ্ব ও৪॥ ততস্তৌ তত্ত সংরক্ষো রাজ মানৌ মুহুমুহিঃ !। শরৈ রাশীবিধাকারৈ স্ততক্ষাতে পরস্পরম্। ৩৫॥ ততোহর্জুনঃ শরবর্ষ কিরাতে সমবাস্থজৎ। তৎ প্রসন্মেন মনসা প্রতিজ্ঞাহ শঙ্করঃ॥ ৩৬॥ মুহূর্ত্তং শরবর্ষন্তৎ প্রতিগৃহ পিনাকধৃক্। অক্ষতেন শরীরেণ তত্ত্বৌ গিরিরিবাচলঃ॥ ৩৭ ॥ স দৃষ্টা বাণবর্ষম্ভ মোঘীভূতং ধনঞ্জয়ঃ। পরমং বিশ্বয়ঞ্চকে সাধু সাধিতি চাত্রবীৎ। ৩৮। অহোহয়ৎ স্থুকুমারাঙ্গো হিমবচ্ছিথরাশ্রয়ঃ। রাত্তীবমুক্তানারাচান্ প্রতিগৃহ্হাত্যবিহ্বলঃ ॥ ৩৯ ॥ কোহয়ং দেবে! ভবেৎ সাক্ষাৎ রুদ্রো যক্ষঃ স্বরোহস্করঃ !। বিদ্যতে হি গিরিজেষ্ঠে ত্রিদশানাং সমাগমঃ ॥ ৪০ ॥

স্থিরঃসন্ ভবস্থাপ্ন ছি॥৩১॥৩২॥৩৩॥ নারাচান্ শরজাতি ভেদান্।। ৩৪॥ ৩৫॥৩৬॥৩৭॥ ৩৮॥ অহোয় মিতিসন্ধিরার্থঃ॥৩৯॥ ৪০॥

^{*} অশনীরিব ইতি ক খ পুস্তকয়োঃ পাঠঃ

া তদ্যেতিপ্রাক্ বৈশস্পায়ন উবাচ ইত্যধিক পাঠঃ ক পুস্তক

া গর্জমানৌ ইতি কঃ

ন হি মন্বাণ্জালানামুৎস্টানা সহস্রশঃ। শক্তোহন্যঃ সহিতৃং বেগ মৃতে দেবং পিনাকিনম্॥ ৪১॥ (मत्वा वा यमि वा यत्का क्रमामत्वा वावश्विः। অহ মেনং শরৈন্তীকৈ র্মামি ষ্মসাদনম্ ॥ ৪২ ॥ ততো হৃষ্টমনা জিষ্ণু র্নারাচাক্মর্মভেদিনঃ। ব্যস্জচ্চতথা রাজন্! মযুথানিব ভাস্কর:॥ ৪৩॥ তান্ প্রসন্মেন মনসা ভগবান্ লোকভাবনঃ। শূলপাণিঃ প্রত্যগৃহ্ণাচ্ছিল।বর্ষমিবাচলঃ॥ ৪৪॥ कर्तन कीन्वार्तार्थ मः त्रुः काल्डन्छन । ভী শৈচন মাবিশন্তীত্রা তং দৃষ্টা শরসক্ষয়য়॥ ৪৫॥ চিন্তুর।মাস জিফুশ্চ ভগবন্তং গুতাশনম্। পুরস্তাদক্ষয়ৌ দত্তৌ তুণৌ যেনাম্ম থাওবে ॥ ৪৬ ॥ কিপ ন্তু মোক্যামি ধনুষা যন্মে বাণঃ ক্ষয়ং গতাঃ। অয়ঞ্চ পুরুষংকোহপি বাণান গ্রসতি সর্বাশঃ ॥ ৪৭ ॥ इजा रेजनः वज्रकारेश भूनाखाराव कुळात्र। নয়ামি দপ্তধারস্থা যমস্থা সদনং প্রতি॥ ৪৮॥ প্রগৃহ্যাথ ধনুষ্টোট্যা জ্যাপাশেনাবরুষ্য চ। মুফিভিশ্চাপি হতবান বজকাপে শ্বহা ছাতিঃ ॥ ৪৯ ॥ সৎপ্রযুদ্ধো ধনুক্ষেট্যা কৌন্তেয়ঃ পরবীরহা। তদপ্যস্থ ধমুদ্বিত্ত জ্ঞাহ গিরিগোচর:॥ ৫০ ॥

সহিতৃং (সাচুং, খতে বিনা॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ সংপ্রযুদ্ধঃ সমাক্ প্রযুদ্ধং প্রহৃতং প্রহৃতিরা যস্য সঃ ॥ ৫০ ॥

ততোহর্জুনো গ্রন্তথনুঃ খড়্গপাণিরতিষ্ঠত। যুদ্ধস্থান্ত মভীপান্ বৈ বেগেনাভি জগাম তম্॥ ৫১॥ তস্য মূর্দ্ধি, শিতং খড়্গ মসক্তপ্ পর্বতেম্বপি। মুমোচ ভুজবীর্যোণ বিক্রম্য কুরুনন্দনঃ॥ ৫২॥ ত্যা মুর্দ্ধান মাসাদ্য পফালা হসিবরো হি সং। ততো রুকৈঃ শিলাভিক্ষ যোধয়ামাস ফাল্গুনঃ ॥ ৫৩॥ তদা রক্ষান্মহাকায়ঃ প্রত্যগৃহ্গদথে। শিলাঃ। কিরাতৰপী ভগবা~স্ততঃ পার্থো মহাবলঃ॥ ৫৪॥ मुक्छि जि जि कारेन धूम मुल्लान ये । প্রজহার তুরাধর্ষে কিরাতসমন্ধপিণি। ৫৫॥ ততঃ শক্রাশনিসমৈ শ্মৃ্টিভি ভূশদারুণৈঃ। কিরাতরূপী ভগবানর্দয়ামাস ফাল্কুনং॥ ৫৬॥* তত শ্টেটোশব্দঃ সুঘোরঃ সমপদ্যত। পাগুবস্য চ মুফীনাং কিরাতস্য চ যুধ্যতঃ ॥ ৫৭ ॥ श्चर्यु इंड उन्युक मज्य लागर्यं गर्म। ভুজপ্রহারসংযুক্তং রুত্রবাসবয়োরিব ॥ ৫৮॥ জঘানাথ ততো জিফুঃ কিরাত মুরসা বলী। পাগুবঞ্চ বিচেফক্তং কিরাভোইপ্যহনদলী॥ ৫.১॥ তয়োভ্জবিনিজ্পেষাৎ সংঘর্ষেণারসোস্তথা। সমজায়ত গাত্রেষু পাবকোহঙ্গারধুমবান্॥ ৬০ ॥ তত এন মহাদেবঃ পীড্য গালৈঃ স্থুপাডিতম্। তেজসা ব্যক্রমধ্যোষাচ্চেতস্তস্য বিমোহয়ন্॥ ৬১॥

॥ ৫১॥ অসক্তং অকৃষ্ঠিতম্ ॥ ৫২॥ পকাল বিশীর্ণঃ ॥ ৫৩॥ ৫৪॥ ধুমং কোধাবেশেন ॥ ৫৫॥ ৫৬॥ ৫৭॥ ৫৮॥ ৫৯॥ ৬০॥ পীড়া নিপীড়া ॥ ৬১॥

^{*} পাণ্ডৰ মিতি ক য পুস্তকৌ।

ততোহতিপীড়িতৈর্গাল্তঃ পাঞ্জীকত ইবাবতো।
কাল্কনো গাত্রসংক্ষদো দেবদেবেন ভারত! ॥ ৬২ ॥
নিরুদ্ধাসোহভবদৈব সংনিরুদ্ধো মহাত্মনা।
পপাত ভূম্যাং নিশ্চেটো গতসত্ত্ব ইবাভবং ॥ ৬৩ ॥
স মুহুর্ত্তপ্তথা ভূত্বা সচেতাঃ পুনরুপিতঃ ।
রুধিরেণাপ্পতাঙ্গস্ত পাগুবো ভূশকুঃখিতঃ ॥ ৬৪ ॥
শরণ্যং শরণং গত্বা ভগবস্তং পিনাকিনম্ ।
মূমরং স্থপ্তিলং কৃত্বা মাল্যেনাপুজয়ন্তবম্ ॥ ৬৫ ॥
তচ্চ মাল্যং তদা পার্থঃ কিরাতশিরসি স্থিতম্ ।
ভাপশ্যং পাগুবেশুঠো হর্ষেণ প্রকৃতিং গতঃ ॥ ৬৬ ॥
পপাত পাদয়োস্তস্য ততঃ প্রীতোহভবদ্ভবঃ ।
উবাচ চৈনং বচসা মেঘগন্তীরগী হরঃ ।
ভাতবিশ্ময়্মালোক্য তপঃক্ষীণাঙ্গসংহতিম্ ॥ ৬৭ ॥

'ভো ভোঃ কাল্কন! তুটোইশ্মি কর্ম্মণাপ্রতিমেন তে। শৌর্যোণানেন ধৃত্যা চ ক্ষত্রিয়ো নাস্তি তে সমঃ॥ ৬৮॥ সমং তেজ দুর্গ বীর্যাঞ্চ মসাদ্য তব চানম।। প্রীতন্তেইইং মহাবাহো। পশ্য মাং ভরতর্বভ।॥ ৬৯॥ দদামি তে বিশালাক্ষ! চকুং পূর্বে ঋষির্ভবান। বিজেষ্যসি রণে শত্রনপি সর্বান্ দিবৌকসঃ॥ ৭০॥ প্রীত্যা চ তেইইং দাস্যামি যদস্ত মনিবাঙ্গিতম।
ত্বণ হি সক্তো মদীয়ন্ত দক্ত্রণ ধারয়িত্বণ ক্ষণাং"॥ ৭১॥

ভব উবাচ।

शांदिवत् मश्कमा भवनन श्रीनः ॥ ७२ ॥ ७० ॥ ७८ ॥ ७৫ ॥ ध्वकृष्टिः स्वास्त्रम् । ॥ ७७ ॥ ७१ ॥ ७৮ ॥ ७৯ ॥ वस्तुः मिराक्कानम् ॥ १० ॥ १১ ॥ বৈশশ্যান উবাচ।

ততো দেবং মহাদেবং নিরিশং শ্লপালিনম্।
দদর্শ ফাল্গুনস্তত্ত্ব সহ দেব্যা মহাত্ব্যতিম্॥ ৭২॥
স জানুভ্যাং মহীং গড়া শিরদা প্রণিপত্য চ।
প্রসাদরামাদ হর্ত্ত পার্থঃ পরপুরঞ্জয়ঃ॥ ৭৩॥
অর্জ্জন উবাচ।

"क्षिन्। मर्वापित्यां। जगतिवानिभाजन।। (प्रवाहत । प्रशाहत । भीन और । क्रियंत । ॥ १८ ॥ কারণানাঞ্চ পরমং জানে ত্বাপ ত্রায়কং বিভুম। দেবানাঞ্চ গতিপ দেব। ত্বৎপ্রস্থতমিদং জগৎ। ৭৫॥ অজেয়ন্ত্রং তিভি র্জোকৈঃ সদেবাস্থরমানুইষঃ। শিবায় বিষ্ণুৰূপায় বিষ্ণুবে শিবৰূপিণে ॥ ৭৬॥ দক্ষযজ্ঞবিনাশায় হরিরুদ্রায় বৈ নমঃ। नमारोकां स नर्या स मीए त्य भूम भावत । ११॥ পিনাকগোপ্তে স্থ্যায় মার্জালীয়ায় বেধসে। প্রসাদয়ে ত্বাং ভগবন্! সর্বভূতমহেশ্বর! ॥ ৭৮ ॥ গণেশ জগতঃ শস্তুং লোক কারণ কারণম্। প্রধানপুরুষাতীতং পর্ সুক্ষাতরং হর্ম ॥ ৭৯॥ वाजिक्रम । जनवन्! कहमर्गि महत्।। ভগবদর্শনাকাঙ্কী প্রাপ্তোহস্মীম মহাগিরিম ॥ ৮০ ॥ দ্য়িতং তব দেবেশ! তাপসালয়মুত্তমম্। প্রসাদয়ে ত্বাপ ভগবনু। সর্বলোকনমস্কৃত্যু ॥ ৮১ ॥

॥ ৭২ ॥ ৭৩ ॥ কপর্দ্দিন্ ইত্যাদি নামানি শিব সহজ্ঞনাম ব্যাখ্যাবাং ব্যাখ্যাস্যান্তে ॥ ৭৪ ॥ ৭৫ ॥ ৭৬ ॥ মীচ হৈ বর্ষকার ॥ ৭৭ ॥ মার্জালীরার কিরাতার
ভব্ধ দেহার বা 'মার্জালীরঃ প্রতঃ শুড়ে বিডালে কার্শোধনে" ইতি
বিশ্বঃ ॥ ৭৮ ॥ ৭৯ ॥ ৮০ ॥ ৮১॥

ন মে স্যাদপরাধোহয়ং মহাদেবাতিসাহসাৎ। কৃতো ময়াহয় মজ্জানাদ্বিমর্দো যস্ত্র রা সহ। শরণ প্রতিপন্নায় তৎ ক্ষমস্থান্য শঙ্কর!''॥ ৮২॥
বৈশপ্যান উবাচ।

ত মুবাচ মহাতৈজাঃ প্রহস্থ র্ষভগ্ধজঃ ।
প্রগৃহ্য রুচিরং বাছং ক্ষান্তমিত্যেব কাল্কনম্ ॥৮০॥
পরিষ্ক্র্য চ বাছভ্যান প্রীতাত্মা ভগবান্ হরঃ ।
পুনঃ পার্থং সান্ত্রপূর্ব্ব মুবাচ র্ষভগ্ধজঃ"—॥৮৪॥
ইত্যারণ্যকে প্রবিণি কৈরাতপ্রবিণি অর্জুনক্কৃতমহাদেবস্তবে
একোনচত্মারিণশক্তমোহধ্যায়ঃ॥৩৯॥

* বাম দেব উবাচ।

'নেরস্তুন্ পূর্বেদেহে বৈ নারায়ণ্সহায়বান।
বদর্যাঃ ভপ্তবানুগ্রন্থ তপো বর্ষাযুতান বহুন ॥ > ॥ ॥
ত্বিয়ি বা পরমন ডেজাে বিফৌ বা পুরুষোজ্তমে।
যুবাভ্যাং পুরুষাজ্যাভ্যাং তেজসা ধার্যতে জগং॥ ২ ॥
শক্রাভিষেকে স্থমহন্ধনু র্জনদনিস্থনম্।
প্রগৃষ্ঠ দানবাঃ শস্তা স্থায় ক্ষেন চ প্রভা! ॥ ৩ ॥
তদেতদেব গাঞ্জীবন তব পার্থ! করােচিতম্।
মায়ামাস্থায় যদাে স্তং ময়া পুরুষসন্তম! ॥ ৪॥

॥ ৮২॥ ৮৩॥ পরিষজ্ঞা আংলিন্ধ্যা ॥ ৮৪॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধনি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে একোন চত্তারিংশোহধায়ঃ ॥ ৩৯॥

নরন্ত্রমিতি—॥ ১॥ ২॥ শন্তাঃ মারিতাঃ॥ ৩॥ ব্য়াপুক্ষ ইতি পাঠে— সমং ইতঃধ্যাহারঃ॥ ৪॥

^{* &}quot; দেব দেব উবাচ" ইতি ক পুস্তকঃ।

তুনো চাপ্যক্ষরো ভূয় ন্তব পার্থ! যথোচিতো।
ভবিষ্যতি শরীরঞ্চ নীরুজ কুরুনন্দন! ॥ ৫ ॥
প্রীতিমানশ্ম তে পার্থ! ভবান সত্যপরাক্রমঃ।
গৃহাণ বর মন্মক্তঃ কাক্ষিতং পুরুষোত্তম! ॥ ৬ ॥
* ন ত্বয়া পুরুষংকশিৎ পুমান মতে সুমানম!।
দিবি বা বর্ততে ক্রন্তং ত্বপ্রধান মরিন্দম!"॥ ৭ ॥
আর্জুন উবাচ।

"ভগবন্! দদাসি চেমহাং কামং প্রীত্যা ব্যয়জ!।
কাময়ে দিবামস্ত্রং তদ্বোরং পাশুপতং প্রভো!॥৮॥
যতু ব্রহ্মশিরো নাম রৌদ্রং ভীমপরাক্রমৃম্।
যুগান্তে দারুলে প্রাপ্তে কৃৎসং সাহরতে জগৎ॥৯॥
কর্ণ ভীম কুপদোলৈ র্ভবিতা তু মহাহবঃ।
ত্বৎ প্রসাদান্তহাদেব! জ্বয়েয়ং তান্ ষ্পাযুধি †॥ >०॥
দহেয়ং যেন সংগ্রামে দানবানাক্রসাংস্তথা।
ভূতানি চ পিশাচাম্শু গন্ধরান্থ পর্গান্॥ >>॥
যিমন্ শ্লসহ্রাণি গদাশ্লোগ্রপ্রদর্শনাঃ।
শরাশ্লাশীবিষাকারাঃ সম্ভবন্তানুমজ্রতে॥ >২॥
যুধ্যয়ং যেন ভীয়েণ জোনেন চ কুপেণ চ।
স্থেপুজেণ চ রণে নিত্যাম কটুকভাষিণা॥ >৩॥
এম মে প্রথমঃ কামো ভগবন্! ভগনেত্রহন্!।
ত্বৎপ্রসাদান্তিনির্ভঃ সমর্থঃ স্যা মহং যথা॥ >৪॥

॥ ৫॥ ७॥ जुब्धाश्वार जंताव खाटका यन्त्रिम् कटल ॥ १॥ कामश् वृत्रम्॥ ৮॥ ॥ ৯॥ ১०॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ বিনির্ভঃ বিশেবেণকৃতকৃতঃ॥ ১৪॥

^{*} পুৰুষ ইতাত্ত সদৃশ ইতি কঃ। শ "ৰুধি" ইতাত্ত—" বিধি" ইতি ক পুন্তকঃ।

ক্তব উবাচ 1

'দদামিতেইস্ত্রং দয়িত মহং পাঞ্চপত বিভো।।
সমর্থো ধারণে মোক্ষে সংহারে চারি পাগুব! ॥ ১৫ ॥
নৈত্রেদ মহেক্রোহপি ন মুমো ন চ মক্ষরটে।
বরুণোহপ্যথ বা বায়ুং কুতো বেৎস্যন্তি মানবাং?—॥ ১৬ ॥
ন ত্বেতৎ সহসা পার্থ! মোক্রবাং পুরুষে ক্রচিৎ।
জগদ্বনাশ্যেৎ সর্বা মন্পতেজসি পাভিতম্॥ ১৭ ॥
অবধ্যো নাম নাস্তাস্য বৈলোক্যে সচরাচরে।
মনসা চক্ষা বাচা ধরুষা চ নিপাত্যতে"—॥ ১৮ ॥
বিশন্ধায়ন উবাচ।

তচ্ছ বা ব্রিতঃ পার্থঃ শুচির্ছ বা সমাহিতঃ।
উপসঙ্গমা বিশ্বেশ মধী ষেত্যথ সোহরবীৎ॥ ১৯॥
ততন্ত্র ধ্যাপরামাস সরহস্যানিবর্ত্তনম্।
তদন্ত্রং পাণ্ডবশ্রেষ্ঠং মুর্ভিমন্তমিবান্তকম্॥ ২০॥
উপতন্তে চ তৎ পার্থং যথা ত্রাক্ষ মুমাপতিম্।
প্রতিজ্ঞাহ তচ্চাপি প্রীতিমানর্জ্জ্নন্তদা॥ ২১॥
ততশ্চাল পূথিবী সপর্বত্তবন্দ্রমা।
সমাগর বনোদ্দেশা স্থাম-নগরাকরা॥ ২২॥
শক্ষ্তুন্তুভিঘোষাশ্চ ভেরীণাঞ্চ সহস্রশঃ।
তিশ্বিরুহুর্তে সম্প্রাপ্তে নির্যাত্যশ্রাপতন্ত্র হঃ। ২০॥
অথান্তং জাত্বলদ্বোরং পাণ্ডবদ্যামিতৌজসঃ।
মুর্ভিমদ্বৈ স্থিতৎ পাথে দদৃশ্য দ্বেবদানবাঃ॥ ২৪॥

সংহার নিবর্তনে ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ খনসা সঙ্কপ মাত্রের্থ নিপাতরেৎ শত্রুৎ, গমুবেতি বাণ প্রয়োগেন ॥ ১৮ ॥ অধীৰ অধ্যাপর ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ উপত্তের 'কর্মব্যতি হারে তঙ্" পার্বঃ অন্তং প্রত্যাপনরত এব মন্ত্রং পার্বং পুতীত্যর্বঃ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ নির্বাতা উৎপাতাঃ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ শ্পৃষ্ঠ স্য ত্রায়কেনাথ কাজ্কনস্যামিভৌ দ্বসঃ।

যং কিঞ্চিদশুভং দেহে তৎ সর্বাং নাশমীঘিবং ॥ ২৫ ॥

স্বর্গং গচ্ছেত্যসুক্তাত স্ত্রায়কেন তদার্জুনঃ।
প্রান্যা শিরসা রাজন্। প্রাপ্তনিকেইমক্ষত ॥ ২৬॥
ততঃ প্রভুদ্ধিবিনবাসিনাৎ বশী,

মহাত্যুতি র্গিরিশ উমাপতিং শিবঃ।
ধরুর্মাহদ্দিতিজপিশাচম্থানং,

দদৌ ভবঃ পুরুষবরায় গাণ্ডিবম্॥ ২৭॥
ততঃ শুভৎ গিরিবর মীশ্বরস্তান,

সহোময়া সিত্তটসান্ত্রকলর্ম।
বিহার তং পত্রসহর্ষিসেবিতং,

জ্বনাম খণ পুরুষবর্স্য পশ্যতং॥ ২৮॥
ইত্যারণাকে পর্কানি কৈরাতপর্কানি শিবপ্রস্থানে চত্মারিংশভুমোহধ্যায়ঃ॥ ৪০॥

বৈশন্পারন উবাচ।
তাস্য সৎপশ্যতন্ত্বে পিনাকী ব্যভগজঃ।
জ্ঞামাদর্শনং ভান্প লে'কাস্যোত্তমীযিবান্॥ ১॥
ততোহর্জুনঃ পরঞ্জে বিশ্বয়ৎ পরবীরহা।
ময়া সাক্ষান্তাদেবো দৃষ্ট ইত্যেব ভারত।॥২॥
ধন্যোহ্মান্ত্রগৃহীতোহন্মি যন্ত্রয়া ত্রায়কো হরঃ।
পিনাকী বরদো ৰূপী দৃষ্টঃ স্পৃষ্টশ্চ পাণিনা॥ ৩॥
॥২৫॥ ২৬॥ বশং ইছা তথান্ ভজ্জনীতার্থঃ॥ ২৭॥ ২৮॥
ইত্যারণাকে পর্কণি নৈদক্তীয়ে ভারত ভাবদীপে
চন্ত্রারিৎশোহধারঃ॥ ৪০॥

उत्प्राठि—षखः वर्षानः जनर्गनकः। ১ ॥२॥७॥

ক্লভার্থঞাবগজ্ঞামি পরঞ্চাত্মান#মাহবে। শত্রংশ্চ বিজিতান্ সর্বান্ নির্ব্যুত্তঞ্চ প্রয়েজনম্। ৪॥ ইত্যেবং চিন্তয়ানস্য পার্থস্যামিততেজ্ঞসঃ। ততো देवमूर्यावर्गाटका खामग्रन् मर्व्यटका मिनाः । যাদোগণরুভঃ জ্রীমানাজগাম জলেশ্বর:॥ ৫॥ नारेश नरिष नंगीजिन्छ रेष्ट्रेजाः मारेधान्ड रेषवरेजः। वक्रां वो ममा ७ छर्छ। वनी छः (मन स्नेशमः ॥ ७॥ व्यथ जात्र नमवश्र स्विमातन महाक्रिया । কুবের: সমন্ত্রপ্রাপ্তো যকৈ রমুগতঃ প্রভুঃ॥ ৭ ॥ বিদ্যোতয়ন্নিবাকাশ মন্ত্ৰতোপমদর্শনঃ। धनाना भीश्वतः जीमानं ज्कूनः फरो माभाउः ॥ ৮॥ তथा लाकान्त्रहर जीयान् ययः माकार প্রতাপবাन्। মৰ্ত্ত্যমূৰ্ত্তিধরৈ: দাৰ্দ্ধৎ পিতৃতি লে কিভাবনৈ: ॥ ৯॥ দশুপাণি রচিন্ত্যাত্মা সর্ব্বভূতবিনাশক্তং। বৈবস্বতো ধর্মরাজে। বিমানেনাবভাসয়নু॥ ১০॥ ত্রী লোকান শুঞ্কাৎ কৈব গন্ধবাৎক্ত সপন্নগান। দিতীয় ইব মার্ভত্যে যুগান্তে সমুপস্থিতে ॥ ১১ n তে ভামুমন্তি চিত্রাণি শিখরাণি মহাগিরে:। সমান্থায়াৰ্জুনং তত্ৰ দদৃশু স্তপসান্বিতম্॥ ১২॥ তত্যে মুহুর্ভান্তগবানৈরাবতশিরোগতঃ। আজগাম সহেন্দ্রাণাণ শক্তঃ সুরগণৈ ব্রুড:। ১৩। পরং অত্যন্তং কৃতার্থং কৃতকৃত্যং নির্বৃত্তং নিষ্পান্নমূ ॥ ৪ ॥ বৈতুর্ব্যং রতু विटमयः, रामार्थम जनज्ञस्य खरार गंगः ॥ १ ॥ नार्टेगः मरेर्यः ॥ ७ ॥ १ ॥ ॥ २॥ २०॥ २२॥ जाङ्मिख मोखिमखि॥ ,२॥ २०॥

> * প্রমান্ত্রান মিতি যঃ। ক '' মহেন্দ্রাণ্যা" ইতি ক পুত্তকে পাচিঃ।

পাগুরেণাতপত্তেণ ধিষমাণেন মুর্দ্ধনি। শুশুভে তারকারাজঃ সিত মন্ত্রমিবাস্থিতঃ॥ ১৪॥ मः खु य्रमारना शक्तरेक अविভिन्छ **जर**शांधरेनः । শৃঙ্গং গিরে: সমাসাদ্য তত্ত্বী সূর্য্য ইবোদিত: ॥ ১৫ ॥ অথ মেঘস্থনো ধীমান্ব্যাজহার শুভাং গিরম্। যমঃ পরমধর্মজ্ঞা দক্ষিণাং দিশ মাস্থিত: ॥ ১৬॥ অর্জুনার্জুন! পশ্যাম্মান্ লোকপালান্ স্মাগভান্। দৃষ্টিণ তে বিভরামোহদ্য ভবানহ তি দর্শনম্। ১৭॥ পূর্ব্বর্ষি রমিতাত্মা ত্বং নরো নাম মহাবলঃ। নিয়োগাৰু শ্বণস্তাত! মত্যতা সমুপাগতঃ । ১৮। ত্বয়া চ বস্থুসন্ত,তো মহাবীর্ঘ্যঃ পিতামহং। ভীম: পরমধর্মাত্ম। সৎসাধ্যশ্চ রণেহ্নঘ়। ১৯ ॥ ক্ষজ্রপারিসমস্পর্লং ভারদ্বাজেন রক্ষিত্য। দানবাশ্চ মহাবীর্ঘ্যা যে মনুষাত্র মাগতাঃ। ২০॥ নিবাতকবচালৈব দানবাঃ কুরুনন্দন!। পিতৃর্ম্ম মাংশো দেবসা সর্বলোকপ্রতাপিন: ॥ ২১॥ कर्णक स्मार्गाचीया खुद्रा वर्षा धनक्षत्र !। অংশাশ্চ ক্ষিতিসংপ্রাপ্তা দেবদানবরক্ষসাম্॥ ২২ ॥ ত্বয়া নিপাতিতা যুদ্ধে স্বৰুৰ্মফলনিৰ্দ্ধিতাম । গতিং প্রাপ্দান্তি কৌন্তেয়! যথা স্বা মরিকর্ষণ! ॥ ২৩ ॥ অক্ষয়া তব কীর্ত্তিশ্চ লোকে স্থাস্যতি ফাল্গুন!। ত্বরা সাক্ষাব্রহাদেব স্তোষিতো হি মহামুধে ॥ ২৪ ॥ ।

॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ বিভর্মিঃ বচ্ছামঃ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ সংসাধাঃ জেভবাঃ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ মমপিতুঃ স্বাস্য ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ মূধে সংগ্রামে ॥ ২৪ ॥ লঘ্বী বস্ত্ৰমতী চাপি কৰ্ত্তবা বিষ্ণুনা সহ।
গৃহাণান্ত্ৰং মহাবাহো! দণ্ড মপ্ৰতিবারণম্।
অনেনান্ত্ৰেণ স্থমহৎ ত্ব^ হি কৰ্ম্ম করিষ্যাসি"॥ ২৫॥

* বৈশন্ধায়ন উবাচ। .• .

প্রতিজ্ঞাই তৎ পার্থে। বিধিবৎ কুরুনন্দন!।
সমস্ত্রং সোপচারঞ্চ সমোক্ষবিনিবর্ত্তনম্ ॥ ২৬ ॥
ততো জলধরশ্যামো বরুণো যাদসাম্পতিঃ।
পাশ্চমাং দিশমাস্থায় গির মুচ্চারয়ন্ প্রভুঃ ॥ ২৭ ॥
—'পার্থ! ক্ষপ্রিয়মুখ্যস্ত্রং ক্ষপ্রধর্ম্মে ব্যবস্থিতঃ।
পশ্য মাং পৃথ্তান্তাক্ষ্ণ! বরুণোহন্মি জলেশ্বরঃ॥ ২৮ ॥
ময়া সমুদ্যভান পাশান বারুণাননিবারিতান।
প্রতিগৃহীম্ব কৌন্তেয়! সরহস্যানিবর্ত্তনান্ ॥ ২৯ ॥
এভি স্তদা ময়া বীর! সংগ্রামে তারকাময়ে।
দৈতেয়ানাং সহস্রাণি সংগ্রামে তারকাময়ে।
তত্মাদিমান মহাসত্ত্ব! মৎপ্রসাদসমুপ্রতান্!
গৃহাণ ন হি তে মুঞ্চে দস্তকোইপ্যাততায়িনঃ ॥ ৩১ ॥
অনেন ত্বং যদান্ত্রেণ সংগ্রামে বিচরিষ্যানি।
তদা নিঃক্ষপ্রিয়া ভূমি ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ"॥ ৩২ ॥

* বৈশম্পায়ন উবাচ।
 ততঃ কৈলাসনিলয়ো ধনাধ্যক্ষোহভাভাষত।
 দত্তেষত্ত্রেয়ু দিবোয়ু বরুণেন যমেন চ॥ ৩০॥

লঘ্বী ভারশুনা। ॥ ২৫ ॥ সোপচারং সেতি কর্ত্তব্যতাকম্ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ॥ ২৯ ॥ সংযতানি - বন্ধানি ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ অজিতেন ক্ষেত্র

^{*} বৈশন্পায়নেতি পাঠঃ ক পুস্তকে নান্তি।

"প্রীতোহহমপি তে প্রাজ্ঞ। পাগুবেয়! মহাবল!। ত্বয়া সহ সমাগম্য অজিতেন তথৈব চ। ৩৪॥ मवामाठिश्रहावाद्याः भूर्यदस्यः मनाजनः।। সহাম্মাভি র্বান্ আন্তঃ পুরাকম্পেষু নিত্যশঃ ॥ ৩৫ ॥ पर्भनाटख जिपर पिवार श्रीप्रभाम नतर्वछ!। অমনুষ্যান্ত্রাবাহো! কুর্জন্তনানপি জেয়াসি॥ ৩৬ ॥ মত্তশ্চৈব ভবানাশু গৃহ্নাস্ত্রত্বমমুত্তমম্। অনেন ত্ব মনীকানি ধার্ত্তরাষ্ট্রস্থ ধক্ষ্যসি॥ ৩৭॥ তদিদং প্রতিগৃহীয় অন্তর্দ্ধানণ প্রিয়ং মম। ওজস্তেজাদ্যুতিকরং প্রস্থাপন মরাতিরুৎ , ১৯৮ ৷ মহাত্মনা শক্ষরেণ ত্রিপুরং নিহতং যদা। তদৈতদক্তং নিমূক্তং যেন দগ্ধা মহাস্থরাঃ॥ ১৯॥ স্বদর্থ মুদাতঞ্চেদ ময়া সত্যপরাক্রম !। স্বনহো ধারণে চাস্য মেরুপ্রতিমগৌরব:"-॥ ৪০॥ ততোহজুনো মহাবাছ বিধিবৎ কুরুনন্দনঃ। কৌবের মভিজ্ঞাহ দিব্যমন্ত্রং মহাবলঃ। ৪১॥ ততোংব্রবীদ্দেবরাজঃ পার্থ মক্লিফকারিণম্। । সাৰ্যন্ শ্লম্মা বাচা মেঘ্তুম্তু ভিনিশ্বনঃ ॥ ৪২ ॥ "কুস্তীমাত শ্মহাবাহো! স্ব মীশানঃ পুরাতনঃ। পরাৎ সিদ্ধি মনুপ্রাপ্ত: সাক্ষাদেবগতিৎগত: ॥ ৪৩॥ प्तिवकार्याख स्रमहर जुड़ा कार्यामतिन्त्र !। আবে। চবান্ত রা স্বর্গঃ সজ্জীভব মহাত্মতে। ॥ ৪৪ ॥

যথা তথিব প্রতিব্যাল ॥ ৩৪ ॥ পূর্ব্বের ! নর নারারণ স্থা ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ উদ্যতং উপস্থিতম্ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ দেবগতিং দেবানাং পরায়ণ্যম্ ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥

রথো মাতলিস-যুক্ত আগন্তা ত্রুহতে মহীম্।
তত্ত্ব তেহহু প্রদাক্তামি দিব্যান্যস্তানি কৌরব!"— ৪৫॥
তান্ দৃষ্ট্বা লোকপালাংস্ক সমেতান্ গিরিমুর্দ্ধনি।
জগাম বিশ্বয়ং ধীমান্ কৃষ্টীপুজো ধনপ্পয়ং॥ ৪৬॥
তত্তাহর্জুনো মহাতেজা লোকপালান্ সমাগতান্।
পূক্ষরামাস বিধিবৎ বাগিত রক্তিঃ ফলৈরপি॥ ৪৭॥
ততঃ প্রতিষয় র্দেবাঃ প্রতিমান্য ধনপ্পয়ম্।
যথাগতেন বিবুধাঃ সর্কে কামমনোজবাঃ॥ ৪৮॥
ততোহর্জুনো মুদং লেভে লক্কান্তঃ পুরুষর্ষতঃ।
কৃতার্থ মথ চাত্মানং স মেনে পূর্ণমানসম্"॥ ৪৯॥
ইত্যারণ্যকে পর্কানি কৈরাতপর্কানি ইক্রাদিদেব প্রস্থানে
একচত্মারি শন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৪১॥
সমাপ্তঞ্চ কৈরাতপর্কা।

কৈরাতপর্ব সমাপ্তম্।

আগন্তা আয়াস্যতি ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ইত্যারণাকে পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে এবচড়াবিং শেহধ্যায়ঃ ॥ ৪১ ॥

বেশশারন উবাচ।
গতেরু লোকপালেরু পার্থঃ শক্রনিবর্ধণঃ।
চিন্তরামাস রাজেন্দ্র! দেবরাজরথং প্রতি॥ >॥
ততশ্চিন্তরমানস্য শুড়াকেশস্য ধীমতঃ।
রথো মাতলিসম্যুক্ত আজগাম মহাপ্রভঃ॥ ২॥
নভো বিতিমিরংকুর্বন্ জলদান্ পাটারীরব।
দিশঃ সংপ্রয়নাদৈ র্মহামেষরবোপমৈঃ॥ ৩॥
অসয়ঃ শক্তরো ভীমা গদাশ্চেগ্রপ্রদর্শনাঃ।
দিব্যপ্রভাবাঃ প্রামাশ্চ বিদ্যুত্ত মহাপ্রভাঃ॥ ৪॥
তবৈবাশনর কৈব চক্রযুক্তান্তলাগুড়াঃ।
বাযুক্ষোটাঃ সনির্যাতা মহামেষস্থনান্তথা॥ ৫॥
তত্ত নাগা মহাকায়া জলিতাসাাঃ স্থদারুলাঃ।
দিবাজ্বত্বালিয়াঃ সংহতাশ্চ তথোপলাঃ॥ ৬॥
দশ বাজিষহ আনি হরীণাং বাতরংহসাম্।
বহস্তি ষে নেত্রমুবং দিবাং মায়াময়ং রথম্॥ ৭॥

গতেষি ত—॥ ১॥ ২॥ পাট্যন্ বিধা কুৰ্বন্॥ ৩॥ ৪॥ তুলাগুড়া ভাণ্ড-গোলকাঃ, ভাণ্ডানি 'ছুনাল্—বহুখ্" ইন্ডাদি ফ্লেছ ভাষর। প্রসিদ্ধানি আয়েয়ে বিধ বলেন পাষান গোলকাদি নিকেপ পাঞানি, বাযুক্ষাটাঃ বেগ বশাৎ বাযুং জনয়ন্তোজ্বভেদাঃ, সনিষ্ঠা অশানি ইনি যুক্তাশ্চ মহামেঘ অনাঃ॥ ৫॥ ৬॥ দশেতি—" ত্কেগ বাসকোমাণি স্বর্ণভানি বস্তু। হরিঃ স্বর্ণভাহেশস্ত্র পীত কোশের সন্ধিভঃ"। বাত্তরংহ্রাংহরীণাং ব্যক্তিনাং সহস্তাণিত্যকদেশাবয়ঃ, নেরমুখং দৃষ্টিচোরং দৃষ্টিহর্ম॥ ৭॥

তত্রাপশার্গানীলং বৈজয়ন্তং মহাপ্রভম্।
ধ্রুমন্দীবরশ্যামং বংশং কনকভূষণম্॥৮॥
তন্মিনুথে স্থিতং স্থতং তপ্তহেমবিভূষিতম্।
দৃষ্ট্বা পার্থো মহাবাছ র্দ্দেবমেবায়তর্কয়ৎ॥৯॥
তথা তর্কয়তন্তস্য ফাল্গেনস্যাথ মাতলিং।
সন্নতঃ প্রভিত্য ভূত্বা বাক্যমর্জ্কন মন্তবীৎ—॥১০॥
মাতলিকবাচ।

"ভো ভো: শক্রাক্সজ! প্রীমন্! শক্রস্থান দ্রুষ্ট্ মিচ্ছতি।
আরোহতু ভবান্ শীঘ্রন রথমিক্রস্য সম্মত্র্॥ >> ॥
আহ মা মমরশ্রেষ্ঠা পিতা তব শতক্রতুঃ।
কুত্তীস্থতমিহ প্রাপ্তং পশ্যস্ত ক্রিদশালয়াঃ॥ >২ ॥
এব শক্রং পরিরতো দেবৈ ঋ বিগবৈত্তথা।
গল্পবৈ রপ্পরোভিশ্ব ভাং দিদৃক্ষ্ণ প্রতীক্ষতে॥ >৩॥
আনাল্লোকাদেবলোকং পাকশাসনশাসনাং।
আরোহ ত্বন ময়া সার্জ্বং লক্ষান্ত্রঃ পুনরেষ্য সি"॥ >৪॥
ভক্ত্বন উবাচ।

পোতলে! গছ্ শীত্র^ ত্ব মারোহস্ব রথোত্তমম্।
রাজস্বাশ্বমেধানাং শতৈরপি স্বত্র্বভম্॥ ১৫॥
পাথিবৈঃ স্থমহাভাগৈ র্যজ্জি ভূরিদক্ষিণৈঃ।
নাতপ্রতপ্রা সমারোচ্ শানবৈ ব্বা রথোত্তমম্॥ ১৬॥
নাতপ্রতপ্রা শক্য এষ্ দিব্যো মহারথঃ।
দেইং বাপ্যথ বা স্পুষ্ট মারোচ্ শক্ত এব চ॥ ১৭॥
ত্বিরি প্রতিষ্ঠিতে সাধো! রথস্থে স্থিরবাজিনি।
পশ্চদেহ মথারোক্ষ্যে স্কুতী সংপর্থং যথা"॥ ১৮॥

रिवज्ज्ञवर मामा (म्रिवक्ट धज्ज्य् ॥ ৮ ॥ २ ॥ २० ॥ १२ ॥ १२ ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥

रिवमन्त्रभाग्रम छेत्राह*।

তস্য তদ্বচনং শ্রুত্বা মাতলিং শক্রসারথিং।
আরুরোহ রথ শীঘ্র হয়ান যেমে চ রশ্মিভিং॥ ১৯॥
ততোহর্জুনো ক্ষর্টমনা গঙ্গায়া মাপ্লুতং শুচিং।
জজাপ জপ্যং কৌন্তেয়ো বিধিবৎ ক্রুনন্দনং॥ ২০॥
ততং পিতৃন যথান্যায়ং তপ্য়িত্বা যথাবিধি।
মন্দর শৈলরাজ ত মাপ্রফ মুপচক্রমে—॥ ২০॥
'সাধুনা পুণাশীলানাং মুনীনা পুণ্যকর্ম্মণাম্।
ত্র সদা সংশ্রেয়ং শৈল। অর্গমার্গাভিকাজ্ক্রিণাম্॥ ২২॥
ত্বংপ্রসাদাৎ সদা শৈল। ব্রাক্ষণাং ক্ষ্রিয়া বিশং।

তব সাফ্নি কুঞ্জাশ্চ নদ্যং প্রস্রবণানি চ।
তীর্থানি চ স্থপুণ্যানি ময়। দৃষ্টান্যনেকশং ॥ ২৫॥
ফলানি চ স্থগন্ধীনি ভক্ষিতানি ততন্ততঃ।
স্থস্থগন্ধাশ্চ বার্য্যোঘা স্বৃচ্ছরীরবিনিংস্তাং ॥ ২৬॥
অমৃতাশ্বাদনীয়া মে পীতাং প্রস্রবণাদকাং।

স্বর্গং প্রাপ্তাশ্চরন্দ্রি স্ম দেবৈঃ সহ গতব্যথাঃ ॥ ২৩॥

অদ্রিরাজ। মহাশৈল। মুনিসংশ্রয় তীর্থবন্।।

গচ্ছাম্যামন্ত্রন্নিত্রা ত্বা৲ স্থখমন্ম্যবিতস্তুন্নি ॥ ২৪ ॥

শিশুর্থা পিতুরক্ষে স্কুস্থং বর্ত্তে নগ!॥ ২৭॥
তথা তবাক্ষে ললিতং শৈলরাজ। ময়া প্রভো!।
অপ্যরোগণসৎ কীর্ণে ব্রহ্মঘোষাসুনাদিতে॥ ২৮॥

যেমে নিয়। মতবান্ ॥ ১৯॥ আসে তঃ আবিঃ ॥ ২০॥ ২১॥ হ২॥ ২৩॥ । ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ ললিতং ক্রীড়িতম্॥ ২৮॥

^{*} নান্ড্যেষ পাঠ: কচিৎপুশুকে, গ পুশুকে চ।

সুখনস্মাৰিতঃ শৈল। তব সামুষু নিতাদা"—। এবমুক্তাহর্জুনঃ শৈল মামন্ত্র পরবীরহা ॥ ২৯ ॥ আরুরোহ রথং দিব্যং দ্যোত্যন্ত্রিব ভাক্ষরঃ। স তেনাদিত্যৰূপেণ দিব্যেনাদ্ভকৰ্মাণা ॥ ৩০ গা . উर्क माठकरम शीमान् श्रक्तकः कुक्रनमनः। সোহদর্শনপথং যাতো মর্ক্যানাং ধর্মচারিণাম্ ॥ ৩১॥ দদশান্ত্তৰূপাণি বিমানানি সহস্ৰশ:। ন তত্ৰ স্থৰ্গ্যঃ সোমো বা দ্যোততে ন চ পাবকঃ 🛊 ৩২ 🛊 স্বরৈব প্রভয়া ভত্র দ্যোতন্তে পুণ্যলক্ষা। তারাৰপাণি যানীহ দৃশ্যন্তে ছ্যুতিমন্তি বৈ ॥ ৩৩ । मी পविष्यक्र खेवा खनू नि स्वश्रामा । তানি তত্ৰ প্ৰভাষন্তি ৰূপৰন্তি চ পাঞ্ডবঃ॥ ৩৪॥ पपर्म (त्रुषु धिरकाषु मीश्विमी**छ स्र**ताकियाः . তত্র রাজর্ময়ঃ সিদ্ধা বীরাক্ষ নিহতা যুধি । ৩৫ ॥ তপসা চ জিতং স্বর্গং সম্পেতৃঃ শতসঞ্চাশঃ। গন্ধবাণাং সহস্রাণি সূর্যাত্রলিততেজনাম্। ৩৬॥ গুহুকানা মুখীণাঞ্চ তথৈবাস্পরসান গণাব্। লোকানাজ্যপ্রভান পশ্যন ফাল্কনো বিশ্বরান্বিতঃ ॥ ৩৭ ॥ পপ্রচ্ছ মাতলিং প্রীষ্ঠ্যা স চাপ্যেন মুবাচ হ। "এতে স্কৃতিনঃ পার্থ! স্বেমু ধিষ্ণেম্ববহিতাঃ 📲 । ৩৮ ॥

॥ ২৯॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ ৫৩॥ বিপ্রাকৃত্বকাৎ দ্রহাৎ, স্থমহান্তাপি ভব্নি স্কান্তি দৃশ্যন্তে॥ ৩৪॥ থিক্যের্ স্থানের্॥ ৩৫॥ ৩৬॥ আত্মনৈব স্থা-দিবৎ প্রভাৱি তান্ আত্মপ্রভান্॥ ৩৭॥ ৩৮॥ বৈজ্ঞানং—বিজ্ঞানিমের বৈজ্ঞানং আহ্পি তদ্ধিতঃ॥ ৩৯॥

^{*} ভূমিচারিণা মিতি কঃ।
* স্থিত ইত্যেক বচন পাঠঃ ক—

*তান্দৃষ্টবানসি বিজে: তারাক্ষপাণি ভূতলে"—।
ততোহপশাৎ স্থিত বারি শুল্ বৈজ্ঞানং গদ্ধ ॥ এ৯ ॥
এরাবতং চতুর্দন্তং বৈলাস মিব শ্লিণ্য ।
স সিদ্ধ মার্ক মার্ক ক্ষুণা গুবসভ্য: ॥ ৪০ ॥
বারোচত যথা পূর্বং মার্কালা পার্থিবোভ্য: ।
অভিচক্রামা লোকান্ স রাজ্ঞা রাজীবলোচন: ॥ ৪১ ॥
এবং স সংক্রমংস্তত্ত স্থালোকে মহাযশা: ।
ততো দদর্শ শক্রস্য পুরীন্তা মমরাবতীম্ ॥ ৪২ ॥
ইত্যারণাকে পর্বানি ইক্রলোকাভিন্নমন প্রানি শক্রপ্রীদর্শনে
দিচ্ত্বারি শন্তমোহধ্যায়: ॥ ৪২ ॥

বৈশন্দারান উবাচ।

স দদর্শ পুরী ন রম্যা নিজচারণসৈবিতাম্।
সর্বান্ত্রপুষ্ট মং পুণ্ডাং পাদপৈ রুপ্শোভিতাম্॥ ১॥
তত্র সৌগন্ধিকানাঞ্চ পুষ্পাণাং পুণ্ডগন্ধিনাম্।
উদ্বীজ্যমানো মিশ্রেণ বাযুনা পুণ্ডগন্ধিনা॥ ২॥
নন্দনঞ্চ বনং দিব্য মস্পরোগণসেবিতম্।
দদর্শ দিব্যকুষ্ট মরাহ্বান্তরিব ক্রন্টমং॥ ৩॥
নাতপ্তত্পসা শক্যো ক্রন্ট্রেব ক্রন্টমং॥ ৪॥
ভারণাক্র প্রাক্ত্রণান্দ্রিক্রিব ক্রন্টান্তর্ভাব দীপে
ভিত্যারিং শোহধ্যায়ং॥ ৪২॥

দদর্শেতি—॥ ১॥ দৌগদ্ধিক। ণাং কহলারাণাং, পুস্পাণাঞ্চ মিজেন বাযুনেতি সম্বন্ধ:॥ ২॥ নদ্দনং নামতঃ॥ ৩॥ নাতগুত্তপস ইতি তপ্

^{*} যাৰু দৃষ্টবানসি ইতি ক— ধু অতি চক্ৰাম ইতি ক খু পুস্তকো।

নাযজ নিত্রতিক নি বেদশ্রুতিব জ্জিতেঃ।
নানাপ্ল তাকৈ তীর্থেষু যজ্ঞদানবহিন্ধ তৈঃ॥ ৫॥
নাপি যজ্ঞহনৈঃ ক্ষুদ্রে দ্র ক্ষুং শক্যঃ কথঞ্জন।
পানপৈ গুরুতিপেশ্চ মাৎসাদৈকা ছুরাত্মিভঃ॥ ৬॥
স তদ্বির বনং পশ্যন্ দিব্যগীতনিনাদিতয়।
প্রবিবেশ মহাবাছঃ শক্রস্য দয়িতাৎ পুরীম্॥ ৭॥.
তত্র দেববিমানানি কামগানি সহস্রশঃ।
সংস্থিতান্যভিযাতানি দদশাযুতশস্তদা॥ ৮॥
সংস্থ্রমানে গঙ্গাক্র রক্ষরোভিশ্চ পাগুরঃ।
পুষ্পান্ধবিংং পুন্য ক্রায়ুভিশ্চান্ধবীজিতঃ॥ ১॥
ততো দেবাঃ সগন্ধবাঃ সিদ্ধাশ্চ পরমর্ষয়ঃ।
হ্রটাঃ সৎপুজয়ামাস্থাং পার্থ মক্লিইকারিণম্॥ ১০॥
আশীক্রাদৈঃ স্তুয়মানো দ্ব্যবাদিত্রনিস্বনৈঃ।
প্রতিপেদে মহাবাছঃ শক্ষত্র ভ্নাদিতম্॥ ১১॥

আদীনাং নিষেধ মুখেন স্বৰ্গ সাধন হং বিধীয়তে ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ যজহুনঃ—

দ্ৰেবাং দেবতাচ যজস্বরূপং তত্ত্ব যো দক্ষিণা হীনং দেবতা স্বরূপজানহীনঞ্চ

যজং করোতি স বুখা পশুবীজঘাতী যজ্ঞ হন ইড়াচাতে, তথাচ জারতে

শাতপথে " দ্বন্ধি, বা এডদবজ্ঞং যদেনং তম্বতে যত্বেব রাজান মভিষ্ণ ক্তি
ভক্তং মন্তি যথ পশুং সজ্ঞপরন্তি বিশাসতি তক্তং মং উলুখল মুয়লাভ্যাং দৃষ
দ্পলাভ্যাং হবি র্যজ্ঞংমন্তি সএষ বা যজহুতো যেজ হনো) নদদক্ষে তংদেবা

দক্ষিণাভি রদক্ষয়ং শুন্যদেনং দক্ষিণাভি রদক্ষয়ং শুদক্ষিণামিতি।" রাজানং সোমবল্লীং, অভিযুণ ভি কগুরন্তি, স০১জপরন্তি মন্তি, বিশাসতি বিশাসনং
(হিংসনং) করোতি, নদদক্ষে দক্ষো নবভূব, অদক্ষর্য দক্ষমকুর্মন্, 'আদংজ্ঞারা মপি হন্তের্যঃ,—যজ্ঞ হরৈত্যপপাঠঃ, অতএব ক্ষুট্রেঃ,লুব্রৈঃ, পানশব্দো নিরুপপদো মদ্যবাচী, গুরুত্তপা সমভিব্যাহারাদ্বা পানপৈঃ

মদ্যপৈঃ, 'মাংসাদৈঃ রুখামাংস ভক্ষকৈঃ অন্যত্তমু " দেবান্ পিতৃন্

গমভার্চ্য খাদন্মাংসং ন দোষভাক্।" ইতি স্মৃতে র্ম দোষঃ, অতএব

হুরাত্বভিঃ হিংসেঃ ॥ ৬॥৭॥ অভিতঃ যান্তি এতান্ দেশানিত্য হিত্যাভানি

আপানভূময়ঃ॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥

নক্ষত্রমার্গ্ন বিপুলং স্থরবীথীতিবিশ্রুত্য । हे**ला** छा । या भार्थः स्नुत्रमानः नमस्रकः ॥ ১२ ॥ তত্ত্র সাধ্যান্তথা বিশ্বে মরুতোহ্থাশ্বিনৌ তথা। আদিত্যা বদবো রুদ্রান্তথা ত্রন্ধরোহ্মলা:॥১৩॥ র। জর্ষরশচ বহুবো দিলীপপ্রমুখা নৃপাঃ। তুষুরুর্নারদশ্চৈব গন্ধর্কৌ চ হাহাছহু। ১৪॥ তান্ স্কান্ স সমাগম্য বিধিবৎ কুরুনক্নঃ। ততোহপশাদেবরাজং শতক্রতুমরিন্দমঃ॥ ১৫॥ ততঃ পার্থে। মহাবান্ধ রবতীর্য্য রথোক্তমাৎ। দদর্শ সাক্ষাদেবেশং পিতরং পাকশাসনম্ ১৬॥ পা ওরেণ্ডেপত্রে। হেমদপ্তেন চারুণা। দিব্যপক্ষাধিব†সেন ব্যজনেন বিধুয়তা।i ১৭ ॥ বিশ্ববেস্থ প্রত্তিভি র্গন্ধবৈঃ স্তুতিবন্দিভিঃ। স্ত্রমানং দ্বিজাবৈত্যাশ্চ ঋগ্যজুঃসামসম্ভবৈঃ ॥ ১৮ ॥ ততোহভিগম্য কৌন্তেয়ঃ শিরসাভ্য হগমহলী।* স চৈন- বৃত্তপীনাভ্যাং বাছভ্যাং প্রত্যগৃহত । ১৯। ততঃ শক্রাসনে পুন্যে দেবর্ষিগণসেবিতে। শক্রঃ পানৌ গৃহীত্ত্বন মুপাবেশয়দন্তিকে ॥ ২০ ॥

॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ পাকশাসনং—পাকণকঃ প্রণন্তে ন চৈ চ বর্ততে, "যো মাপাকেন মনসা চরতং যোহ মাৎপাকতর" ইত্যাদি প্রয়োগাং, তেন দেবানীনা মধিপতি রিতিবা হুফীনাং দগুয়িতা ইতি বা শাসন পদসাবয়বার্থঃ, পাক নামা দৈত্য ইত্যানেঃ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ স্তাতিব্যাদিতঃ স্ত্রতা বন্দম্যানিঃ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥

^{*} শিরসাভানম দলী ইতি কঃ।

মূর্দ্ধি চৈন মূপাছায় দেবেন্দ্র: পরবীরহা। অস্কমারোপয়ামাস প্রশ্রেয়াবনত তদা॥ ২১। সহস্রাক্ষনিয়োগাৎ স পার্থ: শক্রাসনং গতঃ। অধ্যক্রাম্দমেয়াত্মা দ্বিতীয় ইব বাসবঃ ॥ ২২.॥ ততঃ প্রেমা বৃত্তশক্ত রব্জুনস্য শুভ^ মুখম্। পস্পর্শ পুণ্যপক্ষেন করেণ পরিসাম্ব্রুয়ন্॥২৩॥ প্রমার্ক্সমানঃ শনকৈ ক্বাছু চাস্যায়তৌ শুভৌ 1 জ্যা**শরক্ষেপক্ঠিনৌ স্তম্ভ**াবিব ছিরণাুুুুরো ॥ ২৪ ॥ বজ্রগ্রহণচিত্নেন করেণ পরিসান্ত্রন্। मुरुपूर्व र्वज्जभरता वाद्य हारक हे ग्रङ्गरेनः ॥ २०॥ স্ময়ন্নিব গুডাকেশং প্রেক্ষমাণঃ সহস্রদৃক্। হর্ষেণে হে ফুলনয়নো ন চাতৃপ্যত বৃত্রহা ॥ ২৬ ॥ একাসনোপবিষ্টো তৌ শেভিয়াঞ্চক্রতঃ সভাম। स्र्वाहिन्स्मरतो त्याम हर्ज्यमामित्यानिट्यो ॥ २२ ॥ তত্ত্ব সাথা গায়ন্তি সামা পর্মবন্তুনা। গন্ধর্কা স্তয়ুকুশেষ্ঠাঃ কুশলা গীতসামস্থ॥ ২৮॥ ঘৃতাচী মেনকা রম্ভা পুর্বাচিত্তিঃ স্বয়ম্প্রভা। উৰ্বাশী মিশ্ৰকেশী চ দণ্ডগৌরী বৰ্ষথিনী ॥ ২৯॥

প্রজ্ঞাবনতং বিনয়েন প্রস্তিত্য ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ বক্ত প্রছণস্য চিত্রং কিলো যদ্মিন্ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ চতুর্দশ্যমিতি—দর্শএব স্থোদ্দো রেকাসন গততং একনক্ষত্রস্থা দৃত্তি ন চতুর্দশ্যাং তথাপি সামীপ্য লক্ষণরা একরাশিস্থ মাত্রপ্রাহ্যং অন্যথা অধিনীস্থে স্থো চতুর্দশ্যাং রেবতী যোগে একরাশিস্থস্যাপ্যলাভাং ॥ ২৭ ॥ সামা প্রত্যা, বল্পা, রম্মেন, গীতানি অম্জ্রোপরিগাতং, সাম মজ্রোপরিগান্ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥

গোপালী সহজন্যা চ কুন্তবোনিং প্রজাগরা।
চিত্রসেনা চিত্রলেখা সহা চ মধুরস্বরার্ক্ষ ॥ ৩০ ॥
এতাশ্চান্যাশ্চ নন্তু স্তত্ত তত্ত্ব সহস্রশাং।
চিত্তপ্রসাদনে যুক্তাং সিদ্ধানাং পাল্লোচনাং ॥ ৩১ ॥
মহাকটিতটক্রোণ্যং কম্পমানেং পয়োধরৈঃ।
কটাক্ষহাবমাধুর্য্য শেচতোবুদ্ধিমনেহেরেঃ॥ ৩২॥
ইত্যারণ্যকে পর্কণি ইন্দ্রলোকাভিগমনপর্কণি ইন্দ্রসভাদর্শনে
ত্রিচম্বারিংশস্ত্রমোহধ্যায়ং॥ ৪৩॥

বৈশন্দায়ন উবাচ।
ততো দেবাঃ সগন্ধবাঃ সমাদায়ার্যমুক্তম্ম্।
শক্রস্য মত মাজ্ঞায় পার্থ মানর্চ্চরঞ্জনা॥ > ॥
পাদ্যমাচমনীয়ঞ্চ প্রতিগৃহ্ছ নূপাত্মজম্।
প্রবেশয়ামাস্থ রথো পুরন্দর।নবেশনম্॥ ২ ॥
এবং সংপুজিতো জিফু রুবাস ভবনে পিতুঃ।
উপশিক্ষমহাস্তানি সসংহারানি পাওবঃ॥ ৩ ॥
শক্রপ্য হস্তাদায়তং বজ্জমন্ত্রঞ্চ তুঃসহম্।
অশনাশ্চ মহানাদা মেঘ্বাইণলক্ষ্ণাঃ॥ ৪ ॥

॥৩০॥৩১॥ চেতঃ আনুলোচনাত্মিকা হাতঃ, বুদ্ধি রধ্যবসায়রপা, মনঃ
সঙ্গণাবকপাত্মকং, কটাক্ষাদিভিঃ চতত্ত্বা হতাতরং হরস্তীতার্থঃ॥৩২॥
হতারন্যকে পর্বাণি নেলকগীয়ে ভারতভাব দীপে
। ত্রচত্বারিং শোহব্যায়ঃ॥৪৩॥

ভত ইতি—॥১॥২॥৩॥ মেঘ বার্হণলক্ষণা অকালেপি উদ্ধতৈ মেঘৈ নৃতি,মানৈক মুধুরৈ বঁৎ অশন্যক্তং দেশান্তরে প্রগুক্ত মিতি লক্ষ্যতে

^{*} ম্ধুর স্বনা ইতি ক-খ পুস্তকো।

গুহীতান্ত্রস্ত কৌন্তেয়ো ভাত্ন সম্মার পাগুবং ৷ পুরন্দরনিয়োগাচ্চ পঞ্চাব্দানবসৎ স্থুখী। ৫॥ ততঃ শক্তোহব্ৰবীৎ পাৰ্থ~ ক্লতান্ত্ৰ^ কাল আগতে 1 "নৃতাং গীতঞ্চ কৌন্তের! চিত্রনেন দবাপ্ল হি॥ ৬॥ বাদিত্রণ দেববিহিতণ নূলোকে যন্ন বিদ্যতে। তদজ রম্ম কৌন্তের ! শ্রেয়ো বৈ তে ভবিষ্যতি" । ৭ । मथायः अनुक्ति होगा हिज्यम्बर श्रुवन्त्रः। স তেন সহ সঙ্গস্য রেমে পার্থে। নিরাময়ঃ॥ ৮ ॥ গীতবাদিত্রবুত্যানি ভুয় এবাদিদেশ হ#। তথাপি নাংলভচ্ম তরশ্বী দ্যুতকারিতম্। ৯। তুঃশাসনবধামর্ঘী শঝুনেঃ সৌবলস্য চ। ততত্তেনাতৃলাং প্রীতি মুপাগম্য কৃচিৎ কৃচিৎ। গান্ধ্ব মতুলং নৃত্যং বাদিত্রঞোপলক্ষবান্॥ > ॥ স শিক্ষিতো নৃত্যগুণাননেকান্, বাদিত্রগীত।র্থগুণাংশ্চ সর্বান্। ন শর্মা লেভে পরবীরহন্তা, ভাতুন্ সারন্ মাতরঞৈব কুন্তীম্॥ ১১॥ ইত্যারণাঝে পর্বানি ইক্রলোকাভিগমনপর্বানি অর্জুনাস্তা-দিশিক্ষারাং চতুশ্চত্তারিং শত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৪॥

দেশান্তরীয়েঃ, তা অশনি বহুনী রিতার্থ: ভাতৃন্ সন্মার স্বর্গেপি হুঃথিত ভাতৃন্মরণেন হুঃথবানেবাহভূদিতার্থ: ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ১ ॥ ১ ০ ॥ ॥ ১১ ॥

ইত্যারগ্রাকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে চতুশ্চতারিংশো-ইধ্যায়ঃ॥ ৪৪॥

^{*} जामाम मह हे जि कः।

বৈশস্পায়ন উনাচ ! #আদাবেবাথ তং শক্ত শিক্তদেনং রহে। ইত্রবীৎ। পার্থদ্য চচ্চু রুর্বেশ্যা সক্তং বিজ্ঞায় বাসবং ॥ ১ ॥: "গন্ধরাজ! গ্লছাদ্য প্রতীতোহপারদায়রাম্। উৰ্বলী পুৰুষব্যাঘ্ৰং সোপতিষ্ঠতু ফাল্পনম্॥ ২॥ যথাচিতে। গৃহীত⊦স্ত্রো বিদ্যাবান্ মলিয়োগতঃ#। তথা ত্বয়া বিধাতব্যঃ স্ত্রীষু সঙ্গবিশারদঃ"—॥ ৩॥ এবমুক্তস্তথেত্যুক্ত্র। সোহমুজ্ঞাং প্রাপ্যে বাসবাৎ। গন্ধবরাজোহপারস মভ্যগাত্ববিশীং বর।মৃ॥ ৪॥ তাং দৃষ্ট্য বিদিতো হৃষ্টঃ স্বাগতেনার্চিতস্তয়া। স্থাসীনঃ স্থাসীনাং স্মিতপূর্বাং বচোই ব্রবীৎ—। ৫। "বিদিতং তেহস্তু সুজোণি! প্রহিতে। হুহমিছাগতঃ। ত্রিদিবসৈয়করাজেন স্বৎপ্রসাদাভিনন্দিনা॥ ৬॥ যস্ত দেবসমুষ্যেষু প্রখ্যাতঃ সহজৈ গুর্ণিঃ। শ্ৰিয়া শীলেন ৰূপেণ ব্ৰতেন চ দুমেন চ। প্রখ্যাতো বলবীর্য্যেণ সম্মতঃ প্রতিভানবান্ ॥ ৭. ॥ वर्षश्री (ज्ङ्मना यूकः क्रमावान् वीज्ञरमतः। . সাক্ষোপনিষদ। নৃ বেদান্ চতুরাখ্যানপঞ্মান্॥ ৮॥ (यार्यो ७ अ.स.च्यायाः (मधाकाकेक्षनायाम् । अक्त हर्रा न पारकान अमरेव र्वस्मानि ह । a ।

আদাবিতি—॥ ১ ॥ উর্বাশীংগছ—সাচ ক্ষান্ত্র উপাতিষ্ঠ ছু ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ প্রতিভানং সময়ে ক্ষার্তিঃ ॥ १ ॥ বর্চঃ শরীরে বিদ্যৈশ্বগাদিতং তেজঃ তদ্বান্ বর্চন্দী, তেজঃ শোষ্যং তেন যুক্তঃ, চতুরাখ্যান পঞ্চন্দ্র তত্ত্বং সংখ্যান্ 'বিভক্তিলোপ আর্থঃ, আখ্যানমিতি মধ্যপদ্দেশ্যেন বা শাক পার্থিবাদি বং সমাসঃ ॥৮॥ গুক্তজ্ঞাবাংমেধ্য প্রত্তেক

^{*} কণাচিদথ ইতি কঃ। * বিদ্যয়া মন্নিযোগতঃ ইতি ঘ পুস্তক পাঠঃ।

একো বৈ রক্ষিতা চৈব তিদিবৎ মঘবানিব।

অকপনো মানয়িতা স্থালক্ষ্যঃ প্রিয়ম্বরণঃ ॥ ১০ ॥

স্কালক্ষালপানেন বিবিধেনাভিবর্ষতি।

সত্যবাক্ পূজিতো বক্তা ৰূপবাননহস্কৃতঃ ॥ ১১॥
ভক্তানুকল্পী কান্তক্ষ প্রিয়ক্ষ স্থিরসঙ্গরঃ।
প্রার্থনীয়ে গুণগণৈ শ্বহেন্দ্রবরুণোপমঃ ॥ ১২ ॥
বিদিতন্তেহজ্জ্নো বীরঃ স স্বর্গকলমাপুয়াৎ।
তব শক্রাভ্যনুজ্ঞাতঃ পাদাবদ্য প্রপদ্যতাম।
তদেবৎ কুরু কল্যাণি! প্রপন্নস্ত্রাং ধনপ্রয়ং"—॥ ১০ ॥
প্রমুক্তা স্মিতৎ কুত্বা সমানৎ বছমন্য চ।
প্রত্যুবাচোর্বাশী প্রীত্যা চিত্রসেন মনিন্দিতা ॥ ১৪॥
মন্তব্যু কথিতঃ সাত্যো গুণো দ্দেশস্ত্র্যা মম।
তং প্রান্থাং পুংসো রণুয়াং কিমতে। জ্বানম্?—*॥ ১৫ ॥

মইন্তলাং অধীতে প্রাপ্তি, গুলাক্ত বাক্যালের হথায়থ মুহাঃ, বেক্ষাহ্যং উপস্থ নিপ্রহঃ, লাক্ষাং অনাল্যাং, প্রস্বৈ—দ্বে মাতুঃকুলে দ্বে পিতু স্তে কতুর্ভিঃ, বয়সা তাব্ধানা ॥ ৯ ॥ রক্ষিতা পালকঃ, অকখন ইতি পালককেতি প্রাধা রাহিতিং, স্থ্লমিব স্থাজ্যং লক্ষাংলক্ষাইতুং বোগাং স্ক্রং যস্য স্ক্রানপ্যর্থান স্থলবং ঝটিতেবাবগছতীতার্থঃ, দাতা বা ॥ ১০ ॥ রপবান স্থলরঃ ॥ ১১ ॥ কাতঃ স্থকরঃ, অতএব প্রিয়ঃ প্রেমাস্পদং, প্রস্বব্যোবাতিরিক্তা বক্ষর্যাদ্যোহফৌ শুক্রার গুলাঃ, সত্যবাক্তাদয়ঃ পুজিত্যা দন্যেহফৌ কেমাজলাইতি বিজ্ঞানং তত্ত্তানক্ষ গীগুলাঃ"—ইতি গ্রেমাইন্য ॥ ১২ ॥ স্বর্গকলং বংসকং, তব পাদা বিতি প্রপন্ন ইতি বতার্থিনো দীনতা দর্শিতা ॥ ১০ ॥ বহুমনা মহা ॥ ১৪ ॥ গুলোদেশঃ গুণ্ডলেগঃ, তং অর্জনং, পুংসঃ যতঃ কুত্রিত সকাশাং প্রত্না অব্যথমং ' স্বার্থিন, প্রানের কামব্যথাং প্রস্বিত্রিক্ষ অতো হেতো রর্জনং কিং

^{* &}quot; তংশ্রহণ ব্যথিতা প্রদোরণুয়াং কিমু নার্চ্ছনং" ইত্যেবং পাঠ পরি

মহেন্দ্রস্য নিয়োগেন ত্বন্তঃ সংপ্রণয়েন চ।
তস্য চাহণ গুণোঘেন কাল্কনে জাতমন্মথা।
গচ্চ ত্বং হি যথাকাম মাগমিষ্যামাহং স্থখন্"—॥ ১৬ ॥
ইত্যারণ্যকে প্রাণি ইন্দ্রলোকাভিগমন পর্বাণি চিত্রসেনোর্বানীসংবাদে পঞ্চত্বারিংশভ্রমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৫॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততো বিষ্ণা গন্ধবং কুতকুত্য> শুচিমিতা। উর্বেশী চাকরে। স্থানং প্রার্থপ্রার্থন লালসা॥ ১॥ ञ्चानालक्षत्रतेशक्षिण र्राज्यमारेलाक स्थिते । धनक्षत्रमा करभग भरेत र्यम्यराहित । २॥ অতিবিদ্ধেন মনসা মন্নথেন প্রদীপিতা। मिवाश्वित्वन्य क्षीर्त् विखीर्त् भग्रताख्या ॥ **०॥** চিত্তসঙ্কম্পভাবেন স্বচিত্তানন্যমানসা। মনোরথেন সংপ্রাপ্তি রমন্ত্যেনং হি ফাল্কেনমৃ * ॥ ৪ ॥ निर्भा हत्सामयत विशाह तकनीयूटथ। প্রস্থিতা সা পৃথুপ্রোণী পার্থস্য ভবন^ প্রতি ॥ ৫॥ ্মৃত্রুঞ্চিতদীর্ঘেণ কুস্থমোৎকরধারিণা। কেশহস্তেন ললনা জগামাথ বিরাজতী—॥ ৬॥ ক্রকেপালাপমাধুর্টিয়ঃ কান্ত্যা সৌমাতয়াপি চ। শশিনং বক্তক্রেণ সা হ্রয়ন্তীব গছতী। ৭। বুণ মাং ইতি কাকা প্রাণোব বুতবংদর্শয়তি॥ ১৫॥ ১৬॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে পঞ্চত্বারিংশো-र्थाशः ॥ ८०॥

তত ইতি—॥ ১॥ রূপেণ দেশিকর্ব্যেণ ॥ ২॥ ৩ ॥রমন্তী রময়ন্তী ॥ ৪॥ ৫॥ কেশহন্তেন—হন্তঃ শুগুদিওঃ তেনেব বেশ্যেবেত্যর্থঃ ॥ ৬॥ আহ্নয়ন্তী

^{*} রম্যন্তীব ইতি কঃ।

मिवाकितारणी स्वयूर्थी मिवाहन्मनकिरिछो। গচ্ছন্তা হাররুচিরৌ * স্তনৌ তদ্যা ববল্পতুঃ ॥ ৮ ॥ स्ताबहनमटक्कां जानगामां ना भए भए । ত্রিবলীদাসচিত্রেণ মধোনাতীব শেভিনা॥ ১১॥ অধো ভূধরবিস্তীর্ণ^ নিতম্বোন্নতপীবরম্। মর্থায়তনং শুভাণ রসনাদামভূষিতম্॥ >•॥ খাষীণামপি দিব্যানাং মনোব্যাঘাতকারণম । स्रकारञ्जधद्रश (तर्ष कच्न० नित्रवनावर ॥ >> ॥ भृष्छल्कथरतो † भारतो डाखायड-डलाब्रुली। কুর্মপ্রফোন্নতৌ চাপি শোভেতে কিঙ্কিণীকিণৌ ॥ ১২ ॥ मीधुपारनन हार्ल्यन जुक्याथ महरनन ह। বিলাসনৈশ্চ বিবিধিঃ প্রেক্ষণীয়তরাহভবৎ ॥ ১৩ ॥ সিদ্ধচারণগন্ধবৈর সা প্রয়াতা বিলাসিনী। বহ্বাশ্চর্যোহপি বৈ স্বর্গে দর্শনীয়তমাক্রতিঃ॥ ১৪॥ স্বস্থক্ষেণোত্তরীয়েণ মেঘবর্ণেন রাজতা 🕻 তমুরব্রার্তা! ব্যোমি চক্রলেথেব গচ্ছতী। ১৫॥ ততঃ প্রাপ্তা ক্রণেনৈর মনঃপ্রন-গামিনী। ভবনং পাণ্ডুপুত্রস্থ ফাল্গুনস্থ শুচিস্মিতা॥ ১৬॥

স্পর্দ্ধরা ' এছি যুদ্ধা বছে—কঃকং জেতু মইতি" ই তবদন্তী ব ॥৭॥৮॥৯ ॥উন্নতঃ পীবরশ্চ নিতম্ব এব ইতি " বিশেষণং বিশেষোণ বহুলং" ইতি বাহুলকাৎ সমাসঃ ॥ ১০॥ অবদ্যবৎ দেখিবৎ তদভাবে নিরবদ্যবৎ ॥ ১১॥১২॥ ১৩॥ ॥ ১৫॥ ১৫॥ ১৬॥

^{* &}quot;গছন্তা হার বিকনৌ " ইতি ক ঘ পুশুকো † "শিরে।" ইতি কঃ। াু "তম্ব ভার্দারত" ইতি পাঠঃ ক—

তত্র দ্বার মনুপ্রাপ্তা দ্বারকৈশ্য নিবেদিতা।
আর্জুনস্থা নর শ্রেষ্ঠ! উর্বিশী শু ভলোচনা ॥ ১৭ ॥
উপাতিষ্ঠত তদ্বেশ্ম নির্দ্মলং স্থমনোহরম্।
স শক্ষিতমনা রাজন্! প্রত্যুদ্গান্তত তাং নিশি॥ ১৮॥
দৃক্রৈব চোর্বিশীং পার্থো লক্ষ্যানংরতলোচনঃ।
তদাভিবাদনং রুত্বা শুরুপূজাং প্রযুক্তবান্—॥ ১৯॥

অৰ্জ্জন উবাচ।

—'অভিবাদয়ে ত্বাং শিরসা প্রবরাপারসাম্বরে!। কি মাজ্ঞাপয়সে দেবি! প্রেষাস্তেহ্ছ মুপস্থিতঃ"—। ২০॥

रेवनम्भाग्रन छेवाइ।*

ফাল্গুনস্থ বচঃ শ্রুত্বা গতসংজ্ঞা তদোর্বশী। গন্ধব্বচনং সর্বাং শ্রাবয়ামাস ত^ তদা॥২১॥

উৰ্ব্বেশু বাচ।

'ষ্থা মে চিত্রসেনেন ক্থিত মনুজোক্তম!।
তত্তেই ইং সম্প্রক্ষ্যামি যথা চাহ্মিহাগতা॥ ২২ ॥
উপস্থানে মহেন্দ্রস্থা বর্ত্তমানে মনোরমে।
তবাগমনতো রুত্তে স্থর্গপ্তা পরমোৎসবে॥ ২৬ ॥ '
রুদ্রাণাপ্তের সালিধ্য মাদিত্যানাঞ্চ সর্ব্বশং।
সমাগ্রেই স্থিনে। শৈচ্ব বস্থ্যাঞ্চ নরোক্তম!॥ ২৪ ॥
মহ্র্মিণাঞ্চ সংঘেরু রাজ্র্ষি প্রবরেষু চ।
দিদ্ধ চারণ্যক্ষেষু মহোরগগণেষু চ॥ ২৫॥
উপবিষ্টেষু স্বেক্সে স্থান-মান-প্রভাবতঃ।

ঋদ্যা প্রজ্বনমানেষু অগ্নিসোমার্কবন্ধ य । ২৬॥

॥ ५० ॥ ५४ ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५० ॥ ५८ ॥ ५० ॥ ५७ ॥

^{* &#}x27; নান্ডোৰ পাঠঃ খ পুশুকে।

বীণাস্থ বাদ্যমানাস্থ গন্ধবৈর্ধঃ শক্রনন্দন! । मित्वा मत्नांतरम भारत श्रवा श्रवा पृथुत्ना हन! ॥ २१ ॥ ত্বং কিলানিমিষং পার্থ। মা মেকাং তত্র দুইবান্॥ ২৮ । তত্র চাবভূথে তব্মিন্নপস্থানে দিবৌকসায়। তব পিত্রাভ্যমুজ্ঞাতা গতাঃ স্ব॰ স্বং গৃহং স্করাঃ ॥ ২৯ ॥ ্তবৈথবার্পারসঃ সর্বা বিশিষ্টাঃ স্বগৃহ্ৎ গতাঃ। অপি চানাশ্চ শত্ৰুত্ব! তব পিত্ৰা বিসৰ্জিতাঃ॥ ৩০॥ ততঃ শক্তেণ সন্দিষ্ট শিত্রসেনো মমান্তিকম্। প্রাপ্তঃ কমলপত্তাক্ষ! স চ মা মত্রবীদথ—॥ ৩১ ॥ ত্বৎক্ষতেইহৎ স্থারেশেন প্রেষিতো বরবর্ণিনি!। श्विय़ क्कू मा मा क्षेत्र क्ष्म मा कियो ज्ञान क ह ॥ ७२ ॥ শক্তবুল্যং রণে শূরং সদৌদার্যাগুণান্বিতম্। পার্থং প্রার্থয় স্কুমোণি। স্ব মিত্যেব তদাব্রবীৎ 🛭 ৩৩ 🛭 ততোহহং সমনুজ্ঞাতা তেন পিত্রা চ তেহনঘ!। তবান্তিক মনুপ্রাপ্তা শুক্রবিতু মরিন্দম!॥ ৩৪॥ ত্বলাণ।কৃষ্টচিত্তাই মনঙ্গবশমাগতা। **हित्रा** जिल्लाविंट वीत्र! ममारिश्य मरनातथः"—। ७० ॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

তা তথা ক্রেবতীং ক্রজা ভূশং লর্জারতোইর্জুনঃ। উবাচ কর্নো হস্তাভ্যাং পিধায় ত্রিদশলেয়ে॥ ৩৬।

॥ २५ ॥२৮॥ অবভূথো যজানন্তরন্ধানং তংপ্রাপ্যে ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ॥ ৩২ ॥ ৩০ ॥ তেন চিত্রদেনেন তব পিত্রাচ ইন্দ্রেণ চ, শুক্রাবিতুর্ । ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥

শুং ক্রুন্তং মেহন্ত স্কুত্বে! যশাং বদি ভাবিনি!।
শুকুদারৈ: সমানা মে নিশ্চয়েন বরাননে!॥ ৩৭॥
(যথাকুত্তী মহাভাগা যথেকাণী শচী মম।
তথাস্বসপি কল্যাণী নাজকার্ম্যা বিচারণা)॥ ৩৮॥ †
যচেক্রিতাদি বিশ্পন্তং বিশেষেণ ময়া শুভে!।
তচ্চ কারণপূর্বিং হি শুণু সত্যং শুচিস্মিতে!॥ ৩৯॥
ইয়ং পৌরববংশসা জননী মুদিতেতি হ।
স্থামহং দৃষ্টবাণস্ত্রে বিজ্ঞায়োৎসুল্ললোচনঃ॥ ৪০॥
ন মা মইনি কল্যাণি! অন্যথা ধ্যাতু মন্সরঃ!!
শুরোগ্রুক্ররা মে স্থুণ মম বুণ্শবিবর্দ্ধিনী"॥ ৪১॥
উর্ব্যবাচ।

"অনার্তাশ্চ সর্কাঃ স্ম দেবরাজাভিনন্দন!।
শুরুস্থানে ন মাং বীর! নিযোক্ত ং ত্ব মিহার্ছসি ॥ ৪২॥
পুরোর্কংশে হি ষে পুক্রা নপ্তারো বা ত্বিহাপতাঃ।
তপসা রময়ন্তাসাল চ তেষাং ব্যতিক্রমঃ॥ ৪৩॥
তৃৎপ্রসীদ ন মা মার্ভান বিসর্ক্তরিতু মর্হসি।
হচ্ছেরেন চ সন্তপ্তান ভক্তাঞ্চ ভক্ত মানদ!"॥ ৪৪॥
অর্জন উবাচ।

শৃণু সত্যং বরারোহে ! যত্ত্বাপ বক্ষ্যাস্যানিন্দিতে ! ।
 শৃণু স্ক মে দিশলৈচৰ বিদিশক সদেবতাঃ ॥ ৪৫ ॥

ত্ঃশ্রুতংহেছন্ত মম্প্রবরণ বার্থ মন্ত যৎ তং এবসিধ হকর্ম যোগাতাং ময়ি সন্তাবয়সীতার্থ: ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ৩১ ॥ ৪০ ॥ অপন্য ইভোকত্মার্থং, যথা " স্যাদেক্তেৎপ্রাঅপি" ইতি শব্দাব্বাদেকত্বং সাধু॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥

^{*}হঃ শ্ৰুত মিতাশাৎ প্ৰাকৃ " অৰ্জুন উবাচ" ইতি পাচা ধকাং ঘ-পু স্ত কে লভাতে।

যথা কুন্তী চ মাদ্রী চ শচী চেহ মমানযে ! ।
তথা চ বংশ-জননী ত্ব^ হি মেহদ্য গরীয়সী ॥ ৪৯॥
গচ্ছ মূর্দ্ধ্য প্রপ্রোহস্মি পাদের তে বরবর্নিনি ! ।
ত্বং হি মে মাত্বৎ পূজ্যা রক্ষ্যোহহ্ পুত্রবন্ত্বয়া"—॥ ৪৭॥
বিশক্ষ্যান উবাচ ।

এবমুক্তা ভূ পার্থেন উর্ব্বাদী ক্রোধমুচ্ছি তা। বেপন্তী জ্রকুটীবক্তা শশাপাহথ ধনঞ্জম্—॥ ৪৮॥ উর্বস্থানার।

ধতব পিত্রাভারুজ্ঞাতা স্বরঞ্চ গৃহমাগতাম।

যক্ষাঝা নাভিনন্দেথাঃ কামবাণবশঙ্গতাম ॥ ৪৯ ॥
তক্ষাত্ত্বং নর্ভনঃ পার্য। স্ত্রীমধ্যে মানবর্জ্জিতঃ।
অপুমানিতি বিখ্যাতঃ ষশুবৎ বিচরিষ্যসি'—॥ ৫০ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

এবং দৃত্বাহজ্ঞান শাপং ক্ষুরদে তি শ্বসন্তাথ।
পুনঃ প্রত্যাগতা ক্ষিপ্র মুর্বিশী গৃহমালনঃ ॥ ৫১ ॥
ততোহজ্ঞানন্ত্রমাণশ্চিরসেন মরিন্দমঃ।
সংপ্রাপ্য রজনীরত্তং ততুকাশ্যা যথা তথা ॥ ৫২ ॥
নিবেদমামাস তদা চিত্রসেনায় পাগুবঃ।
ক্ষুত্রভং মাপঞ্চৈব পুনঃপুনঃ ॥ ৫৩ ॥
ন্যবেদমাক শক্রম্ভ চিত্রমেনোইপি সর্বাণঃ।
তত আনাযা তনমং বিবিক্তে ইরিবাহনঃ ॥ ৫৪ ॥
শাস্ত্রমিলা শুনৈ ক্যিকঃ আয়মানোইভাভাষত।
'স্পুক্রাদ্য পৃথা তাত। ত্রা পুক্রেণ সত্তম ! ॥ ৫৫ ॥

॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ অকুটা । বজু । নতু মনসা হিতার্থরাক্ছাপদ্য ইতি ভাবঃ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯॥ ৫১॥ ৫১॥ ৫২॥ ৫৩॥ ৫৪॥ ৫৫॥

^{* &}quot; अबटेहरम्" इंडि क-

ঋষয়োপি হি থৈৰ্যোণ জিঙা বৈ তে মহাভুজ!। যতুদন্তবভী শাপ মুর্বাশী তব মানদ! ॥ ৫৬॥ স চাপি তেহ**র্থকুভাত!** সাধক**শ্চ ভবিষ্যতি ॥ ৫**৭:॥ অজ্ঞাতবাসো বস্তব্যো ভবস্তি উূতলেহনঘ!। বর্ষে ত্রাে দশে বীর! তত্ত ত্ব^ ক্ষপায়ষ্যসি ॥ ৫৮ ॥: তেন নর্ভনবেশেন অপুংস্তেন তথৈব চ। বর্ষমেকং বিহুটভাব ততঃ পুংস্তু মবাপাসি'—॥ ৫১ ॥ এব সুক্তস্তু শক্তেণ ফাল্গুনঃ পরবীরহা। মুদ্ধ পরমিকাং লেভে ন চ শাপং ব্যচিন্তয়ৎ॥ ৬० ॥ চিত্রসেনেন সহিতো গস্ত্রার্কেণ যশস্থিনা 4 রেমে স স্বর্গভবনে পাণ্ডুপুলো ধনঞ্জয়ঃ ১'৬১ ৮ य हेम्र मृतुवाधिकार बुखर পाछु युक्क रेव। ন তম্ভ কামঃ কামেষু পাপকেষু প্রবর্ত্ত ৷ ৬২ ৮ देन ममत वताञ्चक्छ (घातः, শুচি-চরিত^ বিনিশম্য ফাল্কনন্দ্র : ৰাপগত-মদ-দন্ত্রাগদোশা, ক্রিদিবগতাভিরমন্তি মানবেক্রাঃ—॥ ৬৩॥ ইত্যারণাকে পর্বাণ ইন্দ্রলোকাভিগমনপর্বাণ উর্ধানীশাপে यप्टेड्यादिर्भेख्टमार्थायः ॥ ८७ ॥

॥ ৫৬॥ ৫৭।। ৫৮।। ৫৯।। ৬০।। ৬১।। ৬২।। ৬৩।।
ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈক্ষীয়ে ভারত ভাবদীপে ষট্চডারিংগোদ ২ধ্যার:। ৪৬॥ বৈশস্থায়ন উণাচ।

কদাচিদটমানস্ত মহর্ষি রুত লোমশং। জগাম শক্তভবনং পুরন্দরদিদৃক্ষ্য।॥ ১॥ স সমেত্য নমস্কৃত্য দেবরা**জং মহামু**নিঃ। मनर्भाक्षामनशब्द शाख्य वामयमा हि। २॥ ততঃ শক্রাভ্যমুজ্ঞাত আগনে বিফরোত্তরে। নিষসাদ বিজ্ঞোষ্ঠঃ পুজ্যমানো মহর্ষিভিঃ॥ ৩ ॥ ত स पृष्ये २ ७ वष् किः भार्थ मिलामान वि उम्। কথন্ত ক্ষজ্ৰিয়ঃ পা**ৰ্থঃ শ**ক্ৰাসন মবাপ্তবান ? " ৪ " কিৎ স্বস্য স্থক্তং কর্ম্ম লোকা বৈ কে বিনিন্ধি তাঃ। য এব মনুস∽প্রাপ্তঃ স্থান∽ দেবনমস্তৃত্যু ৄ—" ॥ ৫ ॥ তস্য বিজ্ঞায় সঙ্কপ্পং শক্রো বৃত্তনিস্থদনঃ। লোমশং প্রহুসন্ বাক্য মিদমাহ শচীপতিঃ॥ ৩৯॥ '' ব্ৰহ্মৰ্যে ! শ্ৰুয়তাং যন্তে মনসৈতদ্বিবক্ষিতম্ । নারং কেবল মর্ভ্যো বৈ ম্যুমুষত্ব মুপাগতঃ॥ ৭॥ মহর্ষে। মম পুজোইয় কুন্তাং জাতো মহাভুজঃ। অস্ত্রহেতোরিহ্ প্রাপ্তঃ কন্মাচ্চিৎ কারণাস্তরাৎ॥ ৮॥ অহো নৈনং ভবান বেত্তি পুরাণ মৃষিসত্তময়। मृं (म वषर्डा उक्तन्। याश्वः यकासा कात्रम्॥ ৯॥ নরনারায়ণৌ যৌ তৌ পুরাণার্ষিগন্তমৌ। তা বিমা বন্ধুজানীহি স্বীকেশধনঞ্জয়ৌ॥ ১০॥ বিখাতে তিষু লোকেষু নরনারায়ণার্ষী। কার্যার্থ মবতীর্ণৌ তৌ পৃথীং পুণ্যপ্রতিশ্রয়াম । ১১॥

कार्यार्थिक विकास मार्थिक मार्यिक मार्थिक मार्यिक मार्थिक मार्थिक मार्थिक मार्थिक मार्थिक मार्थिक मार्थिक मार्

যন্ন শক্যং স্থারৈ ক্র ক্রু মুবিভি ব্রা মহাজভি:। তদাআমপদং পুণ্যং বদরীনামবিশ্রুতম্ ॥ ১২ ॥ স নিবাসে। হভবছিপ্র। বিষ্ণোজি ফোস্তবৈধৰ চ। যতঃ প্রবরতে গঙ্গা সিম্বচারণসেবিতা। ১৩॥ তৌ মনিযোগাৰ ক্ষৰ্ষে! ক্ষিতৌ জাতৌ মহাদ্বাতী। ভূমে র্ভারাবতরণং মহাবীর্য্যের করিষ্যতঃ ॥ ১৪॥ উৰুত্তা হৃত্যুৱাঃ কেচিন্নিবাতকবচা ইতি। বিপ্রিয়েষু স্থিতাম্মাকং বরদানেন মোহিতাঃ ॥ ১৫॥ তর্করন্তে সুরান্ হন্তং বলদর্পসমস্থিতাঃ দেবাল গণয়স্তোতে তথা দম্ভবরা হি তে॥ ১৬॥ পাতালবাসিনো রৌদ্রা দনোঃ পুক্রা মইবিলাঃ। मर्क्टानर्वाकारा हि नालः याध्याञ्च हि ,जान्॥ ३०॥ या १८मो ज्ञान जः श्रीमान विकृ स्मृश्निकृतनः। किं शिर्मा नाम (मर्वाश्रमी खन्नवानिकर्ला इतिः॥ ১৮॥ যেন পুর্বাং মহাত্মানঃ খনমানা রসাতলম। দর্শনাদেব নিহ্তা: সগরস্যাত্মজা বিভো! ॥ ১৯॥ তেন কাৰ্য্যং মহৎকাৰ্য্য মস্মাকং ছিজস্তুম ! ।, পার্থেন চ মহাযুদ্ধে সমেতাভ্যাং ন সংশয়ঃ ॥ ২০॥ সোহস্থান্ দর্শনাদেব শক্তো হস্ত্র সহাসুগান্। নিবাতকবচানু সর্বানু নাগানিব মহাফ্রদে॥ ২১ ॥

॥১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥১৬॥দেব নিকায়াঃ দেব সমূহাঃ, নালং ন সমর্ধাঃ ॥১৭॥
কপিলঃ—" ঋষিং পুরাাং কপিলং যন্তমত্যে জ্ঞানৈ বিভক্তি,জায়মানঞ্চপশ্যেৎ" ইতি ক্রতি পুসিদ্ধঃ, অস্তে সায়মানং পাঞ্চৰা ত্রাগ্রেম অনিবন্ধবেন
বেদে স্ত্রাত্ত্বেন ব্যবহৃতিং নারার্ণ্য ॥ ১৮ ॥ ১৯॥ ২০ ॥ ২১॥

কিন্তু নাজ্পেন কার্য্যের প্রবোধ্যো মধুসুদ্নঃ। তেজসং সুমহারাশিং প্রবৃদ্ধः প্রদহেজনগণ । ২২ B অর্থ তেষাং সমস্তানাং শক্তঃ প্রতিসমাসনে। তানিংত্য রণে খুরঃ পুন র্যাস্যতি মামুফান্ ॥২৩॥ ভবানস্মলিয়োগেন যাতৃ তাবন্দহীতলম। কাম্যকে দ্রক্ষাদে বীরং নিবসন্তং যুধিষ্ঠিরমু ॥ ২৪:॥ স বাচো মম সন্দেশাদ্রমাত্মা সভাসঙ্গরঃ। নোৎকণ্ঠা কাল্কনে কার্য্যা ক্লভাক্তঃ শীঘ্র মেষ্যতি॥ ২৫॥ নাশুদ্ধবাছবীর্য্যেণ নাক্সভাব্রেণ বা রণে। ভীন্নভোণাদয়ে। যুদ্ধে শক্যাঃ প্রতিসমাসিত্ম ॥ ২৬॥ গৃহীতাত্ত্বে। গুড়াকেশো মহাবান্ত শ্বহামনাঃ। মত্যবাদিত্রগীতানাং দিব্যানাং পার মীষিবানু॥ ২৭॥ ভবানপি বিবিক্তানি তীর্থানি মনুজেশ্ব ! । ভ্রাতৃতিঃ সহিতঃ সর্কৈ জুফু মহতারিন্দুম।॥ ২৮॥ তীর্থেম্বাপ্ল ত্য পুণ্যেমু বিপাপাা বিগতজ্বঃ। রাজ্য~ ভোক্যাসি রাজেন্দ্র ! সুখী বিগতকলামঃ॥ ২৯॥ ভবা শৈচনং ছিজ শ্রেষ্ঠ! পর্যাটন্ত মহীতলমু। ত্রাভূমর্ছতি বিপ্রাগ্র্য! তপোবলসমন্বিতঃ ॥৩॰ ॥ शितिष्ठर्शिषु ह मना प्रत्भेषु विष्रिष्यु ह। বসন্তি রাক্ষসা রৌদ্রান্তেভ্যো রক্ষাং বিধাস্যতি"—॥ ৩১॥ এবমুক্তে মহেক্রেণ বীভৎস্থ রপি লোমশম। উবাচ প্রয়তো বাক্যং "রক্ষেথাঃ পাণ্ডুনন্দনম্—॥ ৩২ ॥

প্রবোধ্যা বিজ্ঞাপ্যঃ ॥ ২২ ॥ তেবাং নিবাত কবচানাং, প্রতিসমাসনে
সংক্রেপণে ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ গুড়াকেশোহর্জুনঃ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥
॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥

যথা গুপ্তজ্বা রাজা চরেজীর্থ।নি সন্তম্!।
দানং দদ্যাদ্যথা চৈব তথা কুরু মহামুনে!"॥ ৩৩॥
বৈশন্পায়ন উন্চ।
তথেতি সংপ্রতিজ্ঞায় লোমশঃ স্থমহাতপাঃ।
কাম্যকং বন মুদ্ধিশ্য সমুপায়ামহীতলম্॥ ৩৪॥
দদর্শ তত্র কোন্তেয়ন ধর্ম্মরাজ মরিন্দমম্।
তাপনৈ ভ্রতিশিক্তব সক্ষতঃ পরিবারিতম্॥ ৩৫॥
ইত্যারণ্যকে পর্কাণি ইক্রলোকাভিগমনপর্কাণি লোমশাগমনে
সপ্রচন্থারিংশপ্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৭॥

জনমেজর উবাচ।

'গেতাদূত মিদং কর্মা পার্থস্যামিততেজদঃ।
ধ্বতরাষ্ট্রো মহাপ্রাক্তঃ শ্রুজ্য বিপ্র! কিমব্রবীৎ?"—॥ ১ ॥

বৈশন্পারন উবাচ।

শক্রলোকগতং পার্থং শ্রুজ্বা রাজাম্বিকাস্কৃতঃ।
দৈপারনাদ্যিশ্রেষ্ঠাৎ সঞ্জয় বাক্য মব্রবীৎ॥ ২ ॥

* 'শ্রুজং মে স্কৃত! কার্ৎস্ক্রোন কর্ম্ম পার্থস্য ধী মতঃ।
কচ্চিত্রবাপি বিদিতং যাথাতথ্যেন সার্থে?"—,॥ ৩॥

॥ ৩৩ ॥ সংপ্রতিজ্ঞায় অশীকৃত্য ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ইত্যারণাকে পর্ব্বণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারতভাবদীপে সপ্তচ্যারিংশো ২ধায়ঃ ॥ ৪৭ ॥

অত্যন্ত মিদংকর্মেতাাদে রধাায়দ্বরুস্য তাৎপর্ব্যং পর্বোৎকর্ষে আচতে স্থানাশ শইয়। মৃঢ়ন্তপ্যত ইতি—॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥

^{* &}quot; অব্রীদিতানন্তরং "—"গ্রুরাফ্র উবাচ " ইউ্যাধিক পাঠ: ক ছ পুস্তক ময়েপি লভ্যতে।

প্রমত্তো গ্রাম্যধর্মেষু মন্দাত্মা পাপনিশ্চয়ঃ। মম পুল্রঃ স্থুতুর্ব্য ፍঃ পৃথিবী^ ঘাতরিব্যতি ॥ ৪ ॥ যস্য নিত্যমূতা বাচঃ স্বৈরেম্বপি মহাত্মনঃ। তৈলোকামপি তদ্য স্যাদ্যোদ্ধা যদ্য ধনপ্ৰয়ঃ ॥ ৫॥ অক্সতঃ কর্ণিনারাচাংস্তীক্ষাগ্রাৎক্ষ শিলাশিতান্। কোহর্জ্নস্যাগ্রভন্তিষ্ঠেদপি মৃত্যুজরাতিগং ॥ ৬ ॥ মম পুজা ছুরাত্মানঃ সর্বে মৃত্যুবশানুগাঃ। যেষাং যুদ্ধ ছুরাধর্ষৈঃ পাগুরৈঃ প্রভ্যুপস্থিতম্ ॥ ৭ ॥ তথৈব চ ন পশ্যামি যুধি গাঞ্জীবধন্বনঃ। অনিশঞ্চিত্তয়ানোহপি য এন মুদিয়াদ্রথী ॥ ৮॥ দ্রে:নুকুণৌ প্রভীয়ান্তা মর্দি ভীল্মোইপি বা রণে। মহান্ স্যাৎ সংশয়ো লোকে তত্ত্ব পশ্যামি নো জয়ম্॥ ৯॥ चुनी कर्नः अभागी ह व्याहायाः ऋविता श्रुकः । অমর্থী বলবান পার্থঃ সংরম্ভী দুঢবিক্রমঃ ॥ ১০॥ সম্ভবেতুমুলং যুদ্ধং সর্ব্বশেহিপাপরাজিতঃ । गर्द्य श्रुविषः भूताः मर्द्य व्यक्ति महष्यभः ॥ ১১ ॥ অপি সর্কেশ্বরত্ব হি তেবাঞ্জ্যা পরাজিতাঃ #। বধে মূনং ভবেচ্ছান্তি রেতেবাং ফাল্কুনস্য বা ॥ ১২ ॥ ন ত হন্তাৰ্জ্বকান্তি জেতা বাষ্য ন বিদ্যতে। মন্যুম্ভদা কথ~ শামোঝাঞৈব প্রতি সংহিত: ॥ ১৩॥ ত্রিদশেশ-সমো বীরঃ খাপ্তবেহগ্নি মতর্পয়ৎ। জিগায় পার্থিবান সর্বান রাজস্থায় মহাক্রতী। ১৪।

॥ ৪ ॥ ঋতাঃ সত্যাঃ ॥ ৫ ॥ ७ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ প্রতীয়াতাং প্রতিগত্তাম্ ॥ ৯ ॥ মুণী দয়ালুঃ, প্রমাদী অনবহিতঃ, সংরম্ভী উদ্যমী ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২॥১৩॥১৪ ॥

^{* &}quot; ন বাঞ্চেন্ পরাজিত। ॥ " ইভিক:—

শেষং কুর্যাদিশরে ব্রজ্ঞা নিপত্যমূদ্ধি, সঞ্জয়!।
ন তু কুর্যুঃ শরাঃ শেষণ ক্ষিপ্তা স্তাত! কিরীটিনা॥ ১৫॥
যথা হি কিরণা ভানো স্তপন্তীহ চরাচরম্।
তথা পার্যভুজোৎস্কাঃ শরা স্তম্পান্তি মৎস্কুতান্॥ ১৬॥
ঋ অপি তদুরপ্র্যোষেণ ভয়ার্তা স্বাসাচিনঃ।
প্রতিভাতি বিদীর্ণের সর্ব্বতো ভারতী চয়ৄঃ॥ ১৭॥
যত্ত্বমন্ প্রবপং শৈচর বাণান্স্থাতাততায়ী সমরে কিরীটা।
স্কেটাহস্তকঃ স্ব্বহরো বিধাতা।
ভবেদ্যথা তদ্বদপারনীয়ঃ"—॥ ১৮॥
ইত্যারণাকে প্র্বেণি ইন্দ্রলোকাভিগমন প্র্বেণি প্রতরাষ্ট্রবিলাপে
অইচন্থারিৎশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৮॥

সঞ্জয় উবাচ। " যদেতৎ কথিত^ রাজ^স্তৃ্বয়া ছুর্য্যোধনং প্রতি। সর্বামেতৎ যথাতত্ত্বং নৈত্মিথ্যা মহীপত্তে!॥ ১॥

॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ অপীতি সব্যস্তিনে। রথঘোষেণাপি, তৎতত্ত্ব রণে ॥ ১৭ ॥ যথ যদ্ধা, উদ্বমন্, নিয়ন্ধা ছন্ধারন্, প্রবপন্ প্রেরন্, স্থাতা স্থাস্যতি আতিতায়ী শক্তপানিঃ, যথো ক্তং—'' অগ্নিদে৷ গ্রদক্তেব শক্তপানি ধনাপছঃ। ক্ষেত্র-দারাপছারী চ যড়েতে আতিতাগ্নিঃ।" অপারণীয়ঃ অন্ত্রভ্রনীয়ঃ জেতুমশক্ত ইতাথঃ ॥ ১৮ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে ইন্দ্রলোকাভিগ্যমন পর্ব্বণি অষ্টচন্বারিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৪৮॥

यदमङ्मिङि—॥ ১॥

*. " অপিসা রথ ছোষেণ " ইতি ক—

ম্নুদা হি সমাবিষ্টাঃ পাগুবান্তে মহৌজসঃ। দৃষ্ট্য রুফাং সভাং নীতাং ধর্মপত্নীং যশস্বিনীম্॥ ২॥ তুঃশাসনস্য তা বাচঃ শ্রুহা তে দারুণোদয়াঃ। কর্নস্থ চ মহারাজ। ন জুগুদ্যন্তীতি 🐕 মে মতিঃ॥ ৩॥ জ্রুতং হি মে মহারাজ। যথা পার্থেন সংযুগে। একাদশতবুঃ স্থাণু ধ'রুষা পরিতোষিতঃ॥ ৪॥ কৈরাত^ বেশ মাস্থায় যোধয়ামাস ফ.ল্ফুনম্। জিজ্ঞাস্থঃ সর্বাদেবেশঃ কপর্দ্ধী ভগবান স্বয়ম্।। ৫।। তত্রৈন লোকপালান্তে দর্শরামাস্থ রচ্যুত্য। অস্ত্রহেতোঃ পরাক্রান্তং তপদা কৌরবর্ষভম্। ৬। रेनजब्रू ९ महरू हात्या नक् मनाव का सुनार। সাক্ষাদর্শন মেতেষা মীশ্বরণাং নরে। ভুবি॥৭॥ মহেশ্বরেণ যো রাজন্! न জীর্ণো ছফ মূর্ত্তিনা। ক স্ত ঘুৎ সহতে বীরো যুদ্ধে জর্মিতু পুমান্ ?—॥ ৮॥ আসাদিত মিদং ছোরং তুমুলং লোমহর্ষণম্। দ্রৌপদীং পরিকর্ষদ্ধিঃ কোপয়দ্ভিশ্চ পা গুবান ॥ ৯॥ যত্ত্ব প্রস্কুরমানৌষ্ঠে। ভীমঃ প্রাহ বচোহর্থবং। मुक्ते। कूर्यार्थरनरनाक स्कोलना मर्भिजावुर्व्हो ॥ >०॥ ঊৰ ভেৎস্যামিতে পাপ! গদয়া ভীমবেপয়া। ত্রয়েদশানা বর্ষাণা মন্তে ছুর্দ্যুতদেবিনঃ॥ >>॥ সর্বে প্রহরতাং শ্রেষ্ঠাঃ দর্বে চামিততেজসঃ। সর্বের সর্ব্বান্ত্রবিদ্বাংসো দেবৈ রপি স্বত্নুর্জয়াঃ ॥ ১২ ॥

॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ७॥ १॥ न জীরেণান ক্ষীণঃ, অফৌ—পঞ্চুতানি স্থা-চন্দ্র পুক্ষাশ্চ মূর্ত্রোষস্য ॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ দৃদ্যিত দেবিন শ্ছমদ্যতেন জেডু কা-মস্ত ॥ ১১॥ ১২॥

^{* &}quot; ন কংস্যন্তি " ইতি ক—

মন্যে মনুসমুদ্ধূতাঃ পুজাণাৎ তব সংযুগে।
অত্তং পার্থাঃ করিষান্তি ভার্য্যাহ্মর্ষসমন্থিতাঃ"—॥ ১৩॥
ধতনাক্র উবাচ।

শ্কিং ক্তৃতং সূত! কর্ণেন বদতা পদ্ধবং বচ: ।
পর্যাপ্ত^ বৈর মেঁতাবং যৎ কৃষ্ণা সা সভাং গতা॥ ১৪॥
অপীদানী মম স্থতান্তিষ্ঠেরশ্বন্দেততসঃ।
যেবাং ভ্রাতা গুরুজে গ্রেষ্ঠা বিনয়ে নাবতিষ্ঠতে॥ ১৫॥
মমাপি বচন স্থত! ন শুক্রাষ্ঠি মন্দভাক্।
দৃল্যা মা চকুষা হীন নির্বিচেট মচেতনম্॥ ১৬॥
যে চাস্য সচিবা মন্দাং বর্ণসৌবলকাদরঃ।
তে তস্য ভূয়সো দোষান্ বর্দ্ধরন্তি বিচেতসঃ॥ ১৭॥
বৈষ্বমুক্তা হাপি শরাঃ পার্থেনামিততেজ্বসা।
নির্দ্দেহয়ু ম্ম স্থতান্ কি পুনর্ম্মন্তানেরিতাঃ ?— ॥ ১৮॥
পার্থবান্থবলাৎস্টা মহাচাপবিনিঃস্কাঃ।
•দিব্যান্ত্রমন্ত্রমুদিতাঃ সাদয়েয়য়ুং স্থরানপি॥ ১৯॥
যস্য মন্ত্রী চ গোপ্তা চ স্ক্রুটেন্ব জনার্দ্দনঃ।
হরিস্তৈলোক্যনাথঃ স কিন্ন তম্য ন নির্জ্জিতম্ ?—॥ ২০॥
হরিস্তেলোক্যনাথঃ স কিন্ন তম্য ন নির্জ্জিতম্ ?—॥ ২০॥

ইদ^ হি স্থমহচ্চিত্র মর্ল্জুনস্যেই সঞ্জয়!।

মহাদেবেন বাছভ্যাপ যথ সমেত ইতি আছি:॥২১॥
প্রত্যক্ষপ সর্বলোকস্য খাগুবে যথ কৃতং পুরা।

ফাল্কুনেন সহাযার্থে বহুে দ্বামোদরেণ চ॥২২॥

অন্তং নাশন্॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ বিনয়ে নীতো ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ _। ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥

^{* &}quot; মহুা সেবিডাঃ" ইতিক—

*সর্বাথা ন ছি মে পুজ্রাঃ সহামাত্যাঃ সমৌবলাঃ। কুদ্ধে ভীমে চ পার্থে চ বাস্থদেবে চ সাত্ত্বতে''--- ২৩॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি ইন্দ্রলোকাভিগমনপর্বাণি ধৃতরাষ্ট্রখেদে একোনপঞ্চাশত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৯॥

জনমেজয় উবাচ।

'বিদিশং শোচিতং রাজা প্রতরাপ্ট্রেন বৈ মুনে!।
প্রবাজ্য পাগুবান্ বীরান্ সর্বমেতল্লিরর্থকম্॥ >॥
কথঞ্চ রাজা পুত্ত্র ত মুপেক্ষেতাম্পচেতসম্।
ছুর্ন্যোধনং পাণ্ডুপুত্রান্ কোপযান মহারথান্॥ ২॥
কিমাসীৎ পাণ্ডুপুত্রানা কনে ভোজন মুচ্যতাম্।
বানেয় মথ বা কৃষ্ট মেতদাখ্যাতু মে ভবান্ '--॥ ৩॥
বৈশম্যায়ন উবাচ।
বানেয়ঞ্চ ম্গান্শৈচব শুলৈ ব্যাবৈ নিপাতিতান্।
বোজ্যানা নিবেদারে মভঞ্জন প্রস্থাহ্নাঃ॥ ৪॥

বানের্প মৃগাৎশ্চেব শুলে বাবে। নপা। ততান্।
ব্রাহ্মণানাৎ নিবেদ্যাগ্র মভুঞ্জন্ পুরুষর্যভাঃ ॥ ৪ ॥
তাংস্ত্ শুরান্ মহেম্বাসাংস্তদা নিবসতো বনে।
অনুয়ু ব্রাহ্মণা রাজন্! সাগ্নয়োহ্নগ্নয়স্তথা ॥ ৫ ॥
নহি সভীতি শেষ্ম। ২০ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারতভাব দীপে একোন পঞ্চা-শতুমোহধ্যায়ঃ ॥ ৪৯ ॥

যদিতি—যদিদংশোচিত মিত্যাদে রধ্যার দ্বর্মা তাৎপর্যাং সভাসংরক্ষণে কতে দেবা মান্ত্রান্ধ অনুগৃত্ব নি হিত ॥ ১ ॥ বানেরং বনভবং নীবারাদি, কৃষ্টং কর্ষণজং প্রামাধানাম্ ॥ ৩ ॥ শুদ্দে বিষ্কৃতি গুঃ "বিষ লিপ্তেন বাণেন থে হতে মুগপক্ষিণো। তরোমাংসং কলঞ্জং তদুক্ত্যা চাল্রারণঞ্চরেৎ" ইতি স্মৃতেঃ, অপ্রথ হস্তকারপ্রদেরন্ ॥ ৪ ॥ অন্মরঃ পরিবাজকাঃ ॥ ৫ ॥

^{* &}quot; ममर्था" रेंडि क-घ श्रुखरको ।

ব্রাহ্মণানাং সহস্রাণি স্নাতকানাৎ মহাত্মনাম। দশ মোক্ষবিদাং তত্ত্র যান্ বিভর্ত্তি যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৬॥ क्रकन् क्रक्षप्रशाः टेम्हव (मधाः महान्। व्यानहतान्। वारेनक्रम्था विविदेश स्वाक्रामण्डा नारविषय ॥ १॥ ন তত্র কশ্চিদ্ধর্বের্নে। ব্যাধিতো বাপি দৃশ্যতে। কুশো বা ছুর্বলো বাপি দীনো ভীতোহপি বা পুনঃ ॥ ৮ ॥ পুজানিব প্রিয়ান ভাতৃন্ জ্ঞাতীনিব সংহাদরান্। পুপোষ কৌরবশ্রেষ্ঠো ধর্ম্মরাজে। যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৯ ॥ পতीং क क्वोभनी मक्वान विका छोशक यमश्विनी। মাতৃবদ্ধোজয়িত্বাগ্রে শিষ্টমাহারয়ন্তদা॥ ১০॥ व्याघीर ताजा मिक्गार जीयरमत्ना, यभो अजीठी मथ वाश्वामीहीम्। ধনুর্দ্ধরা মাৎসহেতো স্মৃগাণাং, ক্ষয়ঞ্চকু র্নিত্যমেবোপগম্য॥ ১১॥ তথা তেষাপ বসতাং কাম্যকে বৈ, বিহীনানা মর্জ্জনেনোৎস্কুকানাম। পঞ্চিব বর্ষানি তথা ব্যতীয়ু রধীয়তা ওজপতাং জুহ্বতাঞ্চ ॥ ১২ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ ইন্দ্রলোকাভিগমনপর্বাণ পার্থাহার-কথনে পঞ্চাশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫০॥

॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ আহারয়ৎ আহারং ক্তবতী॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ইত্যারণ্যকে পর্মণি নৈলকগীয়ে ভারত-ভাবদীপে পঞ্চাশত্ত-মোহধ্যায়ঃ॥ ৫০॥

रिवमन्त्राशित खेता । তেষাং তচ্চরিত্র শ্রুত্বা মরুষ্যাতীত মদ্ভুত্ম। চিন্তাশোকপরীতাত্মা মন্ত্রনাভিপরিপ্লুতঃ। ১॥ দীর্ঘমুফঞ্ নিশ্বস্ত প্রতরাষ্ট্রোহস্বিকাস্কতঃ। অব্ৰবীৎ সঞ্জয় স্ফুত মামন্ত্ৰ্য পুৰুষৰ্যভ! ॥ ২ ॥ ন রাত্রৌ ন দিবা স্থত। শান্তিং প্রাপ্নে।মি বৈ ক্ষণম্। সঞ্চিন্তা মূর্বর বার মতীতং দ্যুতজং হি তৎ 🗱 । 🗘 🛭 তেষা মসস্থীর্য্যাণাংশোর্যাং ধৈর্য্য ধৃতি পরাম। অন্যোন্য মনুরাগঞ্জ ভাতৃণা মতিমানুষম্॥ ৪॥ দেবপুত্রো মহাভাগো দেবরাজসমত্যতী। নকুলঃ সহদেব চ পা ওবৌ যুদ্ধ ছুর্ম্ম দৌ ॥ ৫॥ দৃচাযুধৌ তুরপাতৌ যুদ্ধে চ ক্নতনিশ্চয়ৌ। শীঘ্রহস্তৌ দৃঢক্রোধৌ নিত্যযুক্তৌ তরস্বিনৌ ॥ ৬ ॥ ভীমার্জ্জুনৌ পুরোধায় যদা তৌ রণমূর্দ্ধনি। স্থান্তেতে সিণ্হবিক্রান্তা বিশ্বনাবিব ছুঃস্হৌ ॥ ৭ ॥ নিংশেষ মিহ পশ্যামি † মম দৈন্যস্থ সঞ্জয়!। তৌ হৃপ্রতিরথৌ যুদ্ধে দেবপুত্রৌ মহারথৌ ॥ ৮॥ দৌপদ্যান্তং পরিক্লেশংনক্ষংন্তেতে স্বমর্ষিণৌ। রুফ্যোহ্থ মহেম্বাসাঃ পাঞ্চালা ব। মহৌজসঃ ॥ ৯॥ যুধি সত্যাভিসক্ষেন বাস্কদেবেন রক্ষিতাঃ। প্রধক্ষান্তি রণে পার্থাঃ পুজাণাং মম বাহিনীম্॥ >०॥

তেথামিতি—মহানা দৈন্যেন ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৩ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ নক্ষংস্তত্তে কুমাং ন করিবাতঃ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥

রামক্বঞ্চ প্রণীতানাং রুঞ্চীনাণ স্থতনন্দন।। ন শক্যঃ সহিতু ে বেগঃ সর্বৈষ্ঠ স্তৈ রপি সংযুগে ॥ >> ॥ তেষাং মধ্যে মহেম্বাদো ভীমো ভীমপর ক্রমঃ। শৈক্যয়া বীরঘাতিন্যা গদয়। বিচরিষ্যাসি ॥ ১২ ॥ তথা গাণ্ডীবনির্ফোষ্ বিক্ষুক্তি চমিবাশনেঃ। গদাবেগঞ্ভীমস্য নাল্প সোচুং নরাধিপাঃ॥ ১৩॥ ততোহহং সুহৃদাং বাচো ছুর্য্যোধনবশাসুগঃ। শ্বরণীয়াঃ শ্বরিষ্যামি ময়া যা ন কুতাঃ পুরা"—॥ ১৪

সঞ্জয় উবাচ।

"ব্যতিক্রমোধ্য় সুমহাশ্বুয়া রাজনুপেক্ষিতঃ। সমর্থেনাপি যন্মোহাৎ পুত্রস্তে ন নিবারিতঃ ॥১৫॥ প্রত্বাহি নিজ্জিতান্ দূতেে পাগুবান্ সধুস্থদনঃ। ত্বরিতঃ কাম্যকে পার্থান্ সমভাবয়দচ্যুতঃ॥ ১৬॥ দ্রুপদক্ত তথা পুজা ধৃষ্টতুরপুরোগমাঃ। বিরাটো ধ্রুটকেভুশ্চ কৈকেয়াশ্চ মহারথাঃ॥ ১৭ ॥ তৈশ্চ যথ কথিতং রাজন। দৃষ্ট্য পার্থান্ পরাজিতান্। চারেণ বিদিত্র সর্বাং তল্ময়া বিদিতঞ্চ তে॥ ১৮॥ সমাগম্য রুত স্তত্ত পাণ্ডবৈ মধুস্থদনঃ। সারখ্যে ফ.ল্কুনস্যাজৌ তথেত্যাহ চ তান্ হরিঃ ॥ ১৯॥ অমর্ষিতো হি কুফোংপি দৃষ্টা পার্থাংস্তথাগতান্। ক্ষুঞ্চাজিনোন্তর সঙ্গনেত্রবীচ্চ যুধিষ্ঠিরম্।। ২০।। "যা সা সমৃদ্ধিং পার্থানা মিক্রপ্রস্থে বভূব হ। রাজস্থরে ময়া দৃষ্টা নৃপৈ রন্যৈঃ স্বত্ন্ন ভা॥ ২১॥

॥ সহিতুং সোচুম্ ॥ ১১॥ শৈকায়া শিকাস্থা, ভূমিংভিয়া পাতালং প্রকোতাতি ভয়ীদভরীক্ষএব প্রভয়া ইত্যর্থঃ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ প্র-ट्ख इत्रा १३० ॥ ३० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १०

যত্র সর্বান্ত্রীপালান্ শস্ত্রতেজোভয়াদিতান। সবঙ্গাঞ্জান সপৌণ্ডোড ানু সচোলদ্রবিভান্ধকানু॥ ২২ ॥ সাগরাকুপকাং শৈচব যে চ প্রাস্তাভিবাসিনঃ "। সিংহলানু বর্বরান্ ক্লেচ্ছানু যে চ লঙ্কানিবাসিনঃ ॥ ২৩ ॥ পশ্চিমানি চ রাষ্ট্রাণি শতশং সাগরান্তিকান। পহলবান দরদান সঝান কিরাতান যবনাঞ্জান ॥ ২৪॥ श्रवह्नारण हीनारण जुथातान् रेमञ्चवारख्या। জাগুডানুমিঠামুগুান্ জ্রীরাজ্যানথ তঙ্গণান্ ॥২৫॥ किरकशात्रालवाः टेम्ध्व छथा काम्ग्रीतकानिश । অক্রাক্ষ মহ মাহুতান্ যজে তে পরিবেশকান্॥ ২৬॥ সা তে সমৃদ্ধি থৈ রাজা চপলা প্রতিসারিণী। আদার জাবিত তেষা মাহরিষ্যামি তা মহম্ ॥ ২৭॥ त्रारम् नर कोत्रयाः जीमार्क्तन्यरेम ख्या। অক্ররগদশাধৈশ্চ প্রত্যামেন।হুকেন চ ২৮॥ ध्रुकेद्वारमन वीरत्र मिख्यभाना ज्ञारकन ह। ছুর্যোধনণ রণে হত্বা সদ্যঃ কর্ণঞ্চ ভারত।॥ ২৯॥ ছুঃশাসনং সৌবলেয়ং যশ্চান্যঃ প্রতিযোৎস্যতে । ততস্ত্র^ হাস্তিনপুরে ভ্রাতৃভিঃ সহিতো বসন্ ॥ ৩০॥ श्रार्खता द्वीर व्यायः व्यापा व्यमाधि पृथियो मिमान्। অথৈন মত্রবীদ্রাজ্য তিম্মনু বীরসমাগ্রমে ॥ ৩১॥

॥ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ প্রতিসারণী—প্রতিপংসরতীতি নীচার্ গামিনীত্যর্থঃ, আছরিষ্যামি ইদানী মেধেতিশেষঃ, অতএব প্রার্থনাসত্যং-মাংকুর্বিতি ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥

^{*} যেচপত্তন বাসিনঃ ইতি ক পুতকে পাঠঃ

শূণ ৎস্ত তেষু বীরেষু ধৃষ্ট ছামমুথেষু চ''—।
য়গচির উবাচ।

। "প্রতিগৃহ্ণামি তে বাচ মিমাং সত্যাৎ জনার্দ্দন। ॥ ৩২ ॥ অমিত্রান্মে মহাবাহো! শানুবন্ধান্ হনিষাদি। वर्षा ९ बरशानमा मूर्क १ मजा १ मा १ कूक (कनव! ॥ ७२ ॥ প্রতিজ্ঞাতো বনে বাসো রাজ মধ্যে ময়া ছায়মৃ"—। তদ্ধরাজ বচনং প্রতিশ্রুত্য সভাসদঃ ॥ ৩৪॥ ধুউত্বারপুরোগা তে সম্যামান্ত রঞ্জ্য।। किनाबः मधूरेत स्वारेकाः कालयुरेक तमर्विष्य् ॥ ७० ॥ পাঞ্চালী প্রান্থ রক্লিফীং বাস্থদেবদ্য শুণুতঃ। ছুর্য্যোধন স্তব ক্রোধার্কেবি! ত্যক্ষ্যতি জীবিতম্ ॥ ৩৬॥ প্রতিজানীমহে সত্যং মা শুচো বরবর্ণিনি!! যে স্ম তেইকজিতাং ক্লেণ্ড দৃষ্ট্য বাং প্রাহসংস্তদা। মাংসানি তেষাং থাদন্তে। হসিষ্যন্তি মুগদ্বিজাং ॥ ৩৭ ॥ পাস্যন্তি রুধিরং তেষা পুরা পোমারবস্তথা। উত্তমাঞ্চানি কৰ্ষন্তো যৈঃ কুফীহ্সি সভাতলে । ৩৮। **८७याः फ्रकामि शाकानि श्रविजैज्या ।** ক্রব্যাবৈঃ কুষ্যমাণানি ভক্ষামাণানি চাসকুৎ ॥ ৩৯ ॥ পরিক্লিফাসি থৈ স্তত্ত থৈশ্চাসি সমুপেক্ষিতা। তেবা মুৎকুত্তশিরসাং ভূমিঃ পাস্যতি শোণিতমু॥ ৪০॥

॥ ৩২॥ ৩৩ । তি৪॥ সময়ামাস্থঃ সমং যুক্ত মিত্যাচখ্যঃ, সমশব্দভেদাচফ ইতিনিচ্, লিটি আম্, শময়ামাস্থরিতি পাঠে—স্পেফৌহর্থঃ॥ ৩১॥ ৩৬॥ ॥ ৩৭॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ৪০॥

* "রুক্দিজাঃ" ইতি ঘ—

এবং বছবিধা বাচ স্ত উচু র্ভরতর্ষভাঃ। সর্বে তেজস্বিনঃ শ্রাঃ সর্বে চাহতলক্ষণাঃ ॥ ৪১॥ তে ধর্মারাজেন হতা বর্ষাদূর্দ্ধ্ব তরে, দশাং। পুরস্কৃত্যোপযাস্যন্তি বাস্কুদেব মহারথাঃ ॥ ১৪২॥ রামশ্চ কুঞ্চ ধনপ্রয়শ্চ প্রত্যুত্রশাম্বৌ যুযুধানভীমৌ। মাদ্রীস্থতৌ কৈকয়রাজ পুত্রাঃ, পাঞ্চালপুজাঃ সহ মৎসারাজ্ঞা। ৪৩॥ এতান স্কান লোকবীরানজেয়ান, মহাত্মনঃ সামুবন্ধান্ সলৈনাৰ । কো জীবিতাৰী সমরেইভ্যুদীয়াং, · কুদ্ধান্ সিৎহান্ কেশরিণো যথৈব"—॥ ৪৭॥ প্লতরাষ্ট্র উবচে । ''যন্মাইব্রবীদ্বিদ্ধুরো দূয়তকালে, यः পाञ्चनान् (कबानि एकादतनः । । क्षवः कुक्नाग्यमञ्जाला, মহাভয়ো ভবিতা শোণিতৌঘঃ॥ ৪৫ ॥ মন্যে তথা ভদ্ধবিতেতি স্থত!, যথা ক্ষন্তা প্রাহ্ বচঃ পুরা মাম্ ।

অহত লক্ষণাঃ অখণ্ডিতধজাঃ আহবলক্ষণা ইতি পাঠে—আহবযোগ্যানি শোষ্য দ্যেতকানি লক্ষণানি সামুদ্রিকচিত্নানি যেখা মিত্যর্থঃ॥ ৪১॥ ৪২॥ যুষুধানঃ সাত্যকিঃ॥ ৪৩॥ কেসরিণঃ ক্রোধেন উচ্ছিত সটান্॥ ৪৪॥ ৪৫॥

* " আহব লক্ষ্ 11" ইতি ক—

অসংশয়ং ভবিতা যুদ্ধনেতদ্
গতে কালে পাগুবানাং যথোক্তম্"—। ৪৬ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণ ইন্দ্রলোকাভিগমনপর্বাণি ধৃতরাষ্ট্রবিলাপে

একপঞ্চাশস্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫১ ॥

1 89 1

ইত্যারগাকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত-ভাবদীপে একপঞ্চাশত মেহিধ্যায়ঃ ॥ ৫১ ॥

সমাপ্তঞ্চ ইক্রলোকাভিগমনপর্র।

ত্তি ভিত্তি ভি

জনমেজয় উবাচ।
'অস্ত্রহেতো র্গতে পার্থে শক্রলোকং মহাত্মনি।
যুধিষ্ঠির প্রভৃতয়ঃ কিমকুর্বত পাগুবাঃ ?"—॥ ১॥
বৈশন্পায়ন উবাচ।

অক্তে—॥ ১ ॥ আবসন্ আবাসংকৃত-স্তঃ॥২॥৩॥পুর্বে প্লাবিত-বান্॥৪॥৫॥নিদেশাৎ আজাতঃ ॥৬॥৭॥

^{*} ন্যবসন্ ইতি কঃ।

ষোহসৌ গচ্ছতি ধর্মাত্মা বহুন ক্লেশান বিচিত্তয়ন্। ভবন্নিয়োগাৎ বীভৎস্থ স্ততে। ছুঃখতরং নু কিম্ ?—॥ ৮॥ যদ্য বাহু সমাজিতা ৰয়ং সর্বে মহাত্মনঃ। মন্যামহে জিত্যনাজৌ পরান্ প্রাপ্তাঞ্চ মেদিনীম্ ॥ ৯ ॥ যদ্য প্রভাবান্ন ময়া সভামধ্যে ধনুক্ষতঃ। নীতা লোক মনুং সর্বে ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ সদৌবলাঃ ॥ ১ ॥ তে বয়^ বাছবলিনঃ ক্রোধ মুম্বিতমাত্মনঃ। সহামহে ভবন্ম লং বাস্তুদেবেন পালিতা: ॥ ১১॥ বয়ং হি সহ ক্লফেন হত্বা কর্ণমুখান্ পরান্। স্ববান্ত বিজিতাং কুৎস্নাৎ প্রশাসেম বস্থন্ধরাম্। ১২। ভবতো দ্যুতদোষেণ সর্বে বয় মুপপ্ল তাই। অহীনপৌরুষা বলো বলিভি ব্রলবন্তরাঃ॥ ১৩॥ ক্ষাজ্রধর্মং মহরোজ। ত্বমবেক্ষিভুমহ সি। ন হি ধর্ম্মো মহারাজ। ক্ষজিয়স্য বনাশ্রয়ঃ ॥ ১৪ ॥ রাজ্যমেৰ পরং ধর্মং ক্ষজ্রিয়স্য বিত্রব্ব ধাঃ। স ক্ষত্রধর্মবিদ্রাজা ধর্ম্ম্যামা নীনশঃ পথঃ॥ ১৫ ॥ প্রাগ্রাদশ সমা রাজন্। ধার্ত্তরাষ্ট্রালিহলহি।. নিবৰ্ত্তা চ বনাৎ পাৰ্থ মানায্য চ জনাৰ্দ্দনমু ॥ ১৬ ॥ ব্যতানীকান্মহারাজ। জবেনৈব মহামতে।। ধার্ত্তরাষ্ট্রানমুং লোকং গময়ামি বিশাম্পতে।। ১৭। मक्तानइ श्रियामि धार्खता होन् मरमीवलान्। ছুর্য্যোধনঞ্চ কর্ণঞ্চ যো বান্যঃ প্রতিযোৎস্যতে ॥ ১৮ ॥ । ৮॥ ৯॥ অমুং লোকং পরং লোকম ॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ অহীন পৌৰুষা। অ পি বয়ং উপপ্লুতাঃ, কৃতাঃ, যে বালা মূখা হুর্য্যোধনাদয় স্তে, বলিভিঃ সামন্তদন্তি ধ'নে বলবতরাঃ হৃত্যঃ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ মানীনশঃ মানাশয়

ময়া প্রশমিতে পশ্চাৎ ত্ব মেষাসি বনং পুনঃ। এব^ ক্লতে ন তে দোষো ভবিষ্যতি বিশাম্পতে ৷ ১৯ ॥ यरेक्डम् विविदेश छ। क्रजः পाপ यतिन्त्रमः।। অবধূর মহারাজ! গচ্ছেম স্বর্গ মুক্তমম্ 🗈 ২০ 📭 এবমেতদ্ভবেদ্রাজন ! যদি রাজা ন বালিশঃ। অস্মাক^ দীর্ঘসূত্রঃ স্যান্ত্রান্ ধর্মপরায়ন্ঃ॥২১॥ ' নিক্নত্যা নিক্নতপ্রজা হস্তব্যা ইতি নিশ্চয়ঃ। ন হি নৈক্তিকং হত্বা নিক্তাা পাপমুচাতে ॥ ২২ ॥ তথা ভারত। ধর্মেষু ধর্মাজে রিহ দৃশাতে। অহোরাত্রং মহারাজ। তুল্যং সংবৎসরেণ হ॥ ২৩॥ তথৈব বেদবচনং জ্রায়তে নিতাদা বিভো।। স্বৰ্মরো মহারাজ। পূর্ণো ভবতি ক্লচ্ছ তঃ ॥ ২৪ ॥ यपि दिनाः अभागत्छ पिरमामृक् भठ्ठाछ।। ত্রোদশ সমাঃ কালো জ্ঞায়তা~ পরিনিষ্ঠিতঃ। ২৫। कारना कुर्याधिन रहुः मानूवन महिन्स्म !। একাগ্রাৎ পৃথিবীৎ সর্বাং পুরা রাজন্! করোতি সং ॥ ২৬ ॥ দ্যুতপ্রিয়েণ রাজেন্দ্র! তথা তদ্ভবতা কৃতম্। প্রায়েণাজ্ঞাতচর্য্যায়া বয়ং সর্বে নিপাতিতাঃ ॥ ২৭ ॥

॥১১॥২০॥ বালিশঃ বাং বদ্ধা হঠী, দীর্ষস্ত্তঃ চিরকারী ॥ ২১ ॥২২ ॥২০॥বেদে জায়তে '' বিশ্বসূজা সহজ্ঞ সম্বংসর্থ ইতি, অত্তাহি সম্বংসর শক্ষো দিন পরঃ কৃতঃ, অনাথা " শতামুর্বৈ পুক্ষঃ" ইতি জাতে রন্ধিকারিকং শাস্ত্র মপ্রমাণংখ্যাৎ তাবদামুষো লোকেহদর্শনাচ্চ, কৃক্ত্রত ইতি দাদশ বার্ষিকং প্রায়ন্তিতং প্রতিজ্ঞাতং তৎ কৃচ্ছ তঃ কৃচ্ছে রপিসদ্যোভবতি তথাহি—
" ত্রিংশতা প্রাজাপতা কৃচ্ছে রেকোহন্যোভবতি " এবং মিত্রবিন্দেষ্টি প্রিরেক্টি ম্বারাড্নি প্রভৃতিত্ত দশ্শশ প্রাজাপতা স্থানে ধর্মশাস্ত্রে বিহিতাতি দ্বাদশ্বাধিকংব্রতং সমাপিতৃং শক্ষা মিত্যর্থঃ ॥ ২৪॥ ॥ ২৫॥ পুরা অ্ব্যে ॥ ২৬ ॥ ২৭॥

1 00 1

ন তং দেশং প্রপঞ্চামি যত্র সোইস্মান্ স্বভুক্ষন:। ন বিজ্ঞাস্যতি ছুফীাল্ম' চারৈ রিতি স্থযোধনঃ॥ ২৮॥ অধিগম্য চ দক্ষালে। বনবাস মিমং ততঃ। প্রবাজয়িষ্যতি পুন নিক্ত্যাহধমপুরুষ্ঃ॥ ২৯ ॥ যদ্যস্মানভিগচ্ছেত পাপঃ স হি কথঞ্চন। দ্যুত্যেন তে মহারাজ। পুনদ্যিত মবর্তত। ভবাংশ্চ পুনরাহ্নতো দ্যুতেনৈবাপনেষাতি । ৩১ ॥ স তথাক্ষেম্বকুশলো নিশ্চিতো গতচেতনঃ। চরিষাসি মহারাজ! বনেষু বসতীঃ পুনঃ॥ ৩২ ॥ †যদ্যস্মান্ ন ম্হারাজ। ক্রপণান্ কর্ত্তু মইনি। यावज्जीव मरवक्कम्र (वनधर्माः क्र क्र व्यनः॥ ७७॥ নিক্বত্যা নিক্বতিপ্রজ্ঞো হন্তব্য ইতি নিশ্চয়ঃ!। অনুজ্ঞাত স্তুয়া গত্বা যাবচ্ছক্তি স্থগোধনম্॥ ৩৪ ॥ यरेथव कक मल्यरको मर्मिननगात्रिकः। হনিষ্যামি তথা মন্দ মনুজানাতু মেভবান্'—॥ ৩৫॥ বৈশস্পায়ন উবাচ। এবং কেবাণং ভীমন্ত ধর্মারাজো যুধিষ্ঠিরঃ। উবাচ সাৰুয়ন্ রাজা মুর্ক্রাপাত্রায় পাওবম্। ৩৬। ॥ ২৮ ॥ ২০ ॥ ৩০ ॥ দূতেন দৃতোর্থং প্রবাহ্বয়েৎ, নরাহ্তোপ্যহৎ ন গমিষ্যামীত্যাশঙ্ক্ষাছ পুনদুত্তি মবর্ত্ত-পূর্ব্ব মন্ত্রত্সা কৃত্তাৎ পুনর-

্ব 'নিকৃতি প্রজা হন্তব্যা ইতি নিশ্চয়" ইতি ঘ-ক-পুস্তক দয়েপি পঠাতে।

পিদাতং করিষাদে এবেতোর্থ:, অপনেষাতি দ্বীকরিষাতি বিরমিতি

শেষঃ॥৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ কক্ষংতৃণং অভিসক্ষোতিশেষঃ

^{*} অজ্ঞাত বাসা দিতি কঃ— † "নমহা হাজ" ইত্যত্ত—" স্থমহারাজ !" ইতি ঘঃ

"অস্থ্যায়ং মহাবাহো! হনিষ্যাস স্থাধনম্। ে বৰ্ষাৎ ত্ৰয়োদশাদূৰ্দ্ধুং সহ গাণ্ডীবধন্বনা॥ ৩৭॥ যত্ত্বংমাং ভাষদে পার্থ। প্রাপ্তঃ কাল ইতি প্রভো!। অনুতং নোৎসহে বক্তুণ ন ছেতন্ময়ি বিদ্যতে । ৩৮ ॥ অন্তরেণাপি কৌন্তেয়! নিক্কতিৎ পাপনিশ্চয়ম্। হন্তা ত্বমদি তুর্দ্ধবং সানুবন্ধং স্থযোধনম্''—॥ ৩৯ ॥ এবং ক্রবতি ভীমস্ত ধর্মরাজে যুধিষ্ঠিরে। আজগাম মহাভাগো রুহদখে। মহানৃষিঃ ॥ ৪০ ॥ ত মভিপ্রেক্য ধর্মাত্মা সম্প্রাপ্তং ধর্মচারিণম্। শাস্ত্রবন্মধুপর্কেব পুজয়ামান ধর্মরাট্॥ ৪১॥ वाश्वरुक्षिन मानीन भूलामीरना यूधिर्छितः। অভিপ্রেক্য মহাবাহুঃ কুপণং বহুবভাষত ॥ ৪২ ॥ "অক্ষুদ্ৰতেন ভগবনু! ধনং রাজ্যঞ্চ মে হৃত্যু। আহুর নিক্কতিপ্রজ্ঞৈঃ কিতবৈ রক্ষকে†বিদৈঃ॥ ৪০॥ অনকজ্ঞ হি সতো নিক্নত্যা পাপনিশ্চয়ৈঃ। ভার্যা চ মে সভা নীতা প্রাণেভ্যোহপি গরীয়সী ॥ ৪৪॥ পুনদ্যতেন মাং জিন্বা বনবাসং স্থদারুণম্। প্রাব্রজিয়ন্মহারণ্য মজিনৈঃ পরিবারিতম্ ॥ ৪৫ ॥

৩৭॥ অনৃতমিতি—বিশ্বস্থাপদত্রে সম্বং সর শব্দোন কালপরঃ, কিন্তু
—"পঞ্চ পঞ্চাশত ব্রিবৃতঃ সম্বংসরাঃ পঞ্চ পঞ্চাশতঃ পঞ্চদশ" ইতাাদিল্রুটো সম্বংসরপদস্য ত্রিবৃদ্দি শব্দ সামানাধিকরণ্যা দহঃ শব্দবাঢ়া
ক্রুপরত্বং দৃষ্টং, অতঃ সম্বংসরশব্দো দিনপর ইতি প্রবাদ মাত্রং "পঞ্চ পঞ্চাশত" ইতি পঞ্চাশদ্ধিকং শতদ্বর মুচাতে, নহি কালেন কর্ত্ব্যংব্রতং কর্মণা সমাপরিত্বং শক্ষিতিভাবঃ ॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪৩॥
॥ ৪৪॥ ৪৫॥ অহণ বনে তুর্ব্বসতী ব্রসন্ পরমত্বঃখিতঃ।

অক্ষানা প্রাথিকারে চ নিরঃ শৃণ্ন স্থারুলার লাঃ ॥ ৪৬॥
আর্ত্রানাং স্থার বাচো দাতপ্রভৃতি শংসতার।
অহণ ক্ষদি প্রিতাঃ শৃত্রা সর্বা রাজী ব্রিচিন্তর্য়ন্ ॥ ৪৭॥
যক্ষিং শৈচব সমস্তানাং প্রাণা গাণ্ডীবধন্বনি।
বিনা মহাত্মনা তেন গতসত্ত্ব ইবাভব্য ॥ ৪৮॥
কদা দক্ষামি বীভৎস্প কৃতান্ত্রং পুনরাগত্য।
প্রিয়বাদিন মক্ষুদ্ধ দরাযুক্ত মতক্রিত্য় ॥ ৪৯॥
অন্তি রাজা ময়া কশ্চিদশপভাগ্যতরো ভূবি।
ভবতা দৃষ্টপূর্ব্বো বা প্রত্তপূর্ব্বাহিপি বা ক্ষ্রচিং।
ন মন্তো তুঃখিততরঃ পুমানস্ত্রীতি মে মতিঃ"—॥ ৫০॥
য়হনশ্ব উনাচ।

যদু বীবি মহারাজ! ন মন্তো বিদ্যুতে কচিৎ।
অপ্পে ছাগ্যতরঃ কশ্চিৎ পুনানস্তীতি পাগুব! ॥ ৫১॥
ভাত্র তে বর্ণয়িব্যামি যদি শুজাবসেহনঘ!।
যস্তো জুঃখিততরো রাজাসীৎ পৃথিবীপতে!॥ ৫২॥
হিশ্পাযন উন্চ।

অথৈন মত্রবীদ্রাজা ত্রবীতু ভগবানিতি। ইমামবস্থাং সংপ্রাপ্তং শ্রোতুমিচ্ছামি পার্থিবম্॥৫০॥

হৃহদধ উপাস। শৃণু রাজন্নবহিতঃ সহ ভাতৃতি রচ্চাত!। যস্তুত্তো ছুঃখিততারো ঝাজাসীৎ পৃথিবীপতে।॥ ৫৪॥

॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ১৮ ॥ ৪৯ ॥ অত্তিবার্থে সত্যং সর্বাধা ন তার্ত্তে ইতাগ্যা-রিকা দ্বারা ভীমসেনং ব্যেরহিছুং রাজ্ঞা স্ক্রন্ত্র প্রবর্ততে "অন্তিরাজা ম্যাকশ্চিং"—ইত্যাদিনা॥ ৫০॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ৫৩ ॥ ৫৪॥ নিষধেষু মহীপালো বীরসেন ইতি প্রুতঃ।
তদ্য পুজােহভবলায়া নলাে ধর্মার্থকােবিদঃ॥ ৫৫॥
দ নিক্তাা জিতাে রাজা পুস্করেণেতি নঃ প্রুত্তম্।
বনবাদ স্তুঃখার্তাে ভার্যয়া ন্যবদং সহ॥ ৫৬॥
ন তদ্যা দানা ন রথাে ন ভাতা ন চ বান্ধবাঃ।
বনে নিবসতাে রাজন্! শিষ্যত্তে স্ম কদাচন॥ ৫৭॥
ভবান্ হি সংরতাে বীরৈ ভ্রাতৃভির্দ্দেবস্মিতিঃ
বন্দকণৈপ দ্বিজাগ্রৈশ্ব তন্মালা
হাধিষ্ঠর উবাচ।

"বিস্তব্যেণাহমিচ্ছামি নলস্য স্ক্রমহাত্মনঃ।
চরিতং বদতাং শ্রেষ্ঠ! তত্মমাথ্যাতু মর্হদি"—॥ ৫৯॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যানপর্বাণি রহদশ্বমুধিষ্ঠিরসংবাদে দ্বিপঞ্চাশন্তমোইধ্যায়ঃ॥ ৫২॥ •

বৃহদখ উবাচ।
আসীদ্রাজা নলো নাম বীরসেনস্থতো বলী।
উপপল্লো গুণৈরিফৈ ৰূপবানশ্বকোবিদঃ॥ >॥
অতিষ্ঠনসুজেন্দ্রাণাৎ মূদ্ধি দেবপতি র্যথা।
উপর্যাপরি সর্বেষা মাদিত্য ইব তেজসা॥২॥

॥ ৫৫॥ পুষ্করো রাজ্ঞা ॥ ৫৬ ॥ শিষাতে অবশিষ্টাঃ কালস্থাবিবক্ষিতঃ

ইত্যার গ্যকে পর্ব্বণি নৈলকতীয়ে ভ,রত-ভাগদিপে দ্বিপঞ্চাশত্ত-মেইখ্যায়ঃ॥ ৫২॥

আসীদিতি—উপপন্নঃ যুক্তঃ॥১॥২॥

^{*} সন্নিতৈ রিতি কপুস্ত কীয় পাঠঃ ঘ পুস্তকীয় পাঠশ্চ।

बक्तराता त्वनविष भूरता नियर्थयू महीशिजः। অক্ষপ্রিয়ঃ স্তাবাদী মহানক্ষৌহিণীপতিঃ॥ '१। ऋष्मिতा नतनातीना पूरातः সংযতে क्रियः। রক্ষিতা ধন্বিনা ু শ্রেষ্ঠঃ সাক্ষাদিব মনু: স্বয়ম্॥ ৪॥ তথৈবাসীদ্বিদর্ভেষু ভীমো ভীমপরাক্রমঃ। শূরঃ সবাগুণৈর্ক্তঃ প্রজাকামঃ দ চাপ্রজঃ॥ ৫॥ ন প্রজার্থে পরং যতু মকরোৎ স্থানমাহিতঃ। ত মভাগচ্ছ ক্ষর্ষি দমনো নাম ভারত। ॥ ৬॥ ত প ভীমঃ প্রজাকাম স্তোষ্য়ামাস ধর্ম্মবিৎ। মহিষা। সহ রাজেন্দ্র সৎকারেণ স্কুবর্চসমূ॥ ৭॥ ত रिय व्यन द्या ममनः मार्चा गात्र वतः परि।। कन्यातज्ञः कुमाताः क बोजूनाताम्यश्यभाः॥ ৮॥ प्रमासी प्रमास का स्थाप का स्थाप का का स्थाप का स्याप का स्थाप का উপপন্নান্ গুলৈ: সর্কৈ ভীমান্ ভীমপরাক্রমান্ ॥ ৯ ॥ দময়ন্তী তু ৰূপেণ তেজদা যশদা ভাষা। সৌভাগ্যেন চ লোকেষু যশ: প্রাপ স্থমধ্যমা। ১০॥ व्यथं जार वयनि श्रीतिश्च मानीनार नमनकृ जाम्। শতং শত্ স্থীনাঞ্ পর্য্যপাসচ্চ্টীমিব ॥ ১১ ॥ তত্র স্ম রাজতে ভৈমী সর্ব্বভিরগভূষিতা। मथीमत्थार्भनंतमाञ्ची विद्यादिमोनामिनी यथा ॥ ১२ ॥

॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ७॥ १॥ ৮॥ ৯॥ ১०॥ ১১॥ সে । সে । প্রার্থিন প্রের্থিন নী, স্বর্জ কাতে। জীবনংদদতি তে স্থামানো মেখা শুবাং সমূহঃ সৌদামানঃ প্রেট্কাল শুৎসম্বারনী, সাহি অত্যন্তংদ্যোতমানা ভবতীতি প্রাসিদ্ধ্য ১২॥

অতীবৰপদম্পন্না শ্ৰীরিবায়তলোচনা। ন দেবেষু ন ৰক্ষেষু তাদৃগ্ৰপুবতী কচিৎ॥ ১৩॥ মান্তবেম্বপি চান্যেয়ু দৃষ্টৰপাথ বা জ্ৰুতা। চিত্তপ্রসাদনী বালা দেবানামপি স্থন্দরী। ১৪॥ নলশ্চ নরশার্চ্চ লো লোকেমপ্রতিমো ভুবি। কন্দৰ্প ইব ৰূপেণ মূৰ্ত্তিমানভবৎ স্বয়ম্॥ ১৫ ॥ তস্যাঃসমীপেতু নল প্রশেশ স্থঃ কুতৃহলাৎ। নৈষধস্য সমীপে তু দময়ন্তীং প্নঃ পুনঃ ॥ ১৬ ॥ তয়ে। রদৃষ্টঃ কামোহভূৎ শৃণুতোঃ সতত গুণান্। অন্যোন্য প্রতি কৌন্তেয়! স ব্যবর্দ্ধত হৃচ্ছয়ঃ॥ ১৭॥ অশকুবন্নলঃ কামং তদা ধার্য়িতু । হৃদা। অন্তঃপুরদমীপত্থে বন আত্তে রহোগতঃ ॥ ১৮॥ স দদৰ্শ ততে। হংসান্ জাতৰপ-পরিষ্কৃতান্। বনে বিচরতাং তেষা মেকং জগ্রাহ পক্ষিণাম্॥ ১৯॥ ততোহন্তরীক্ষণো বাচ্ ব্যাজহার নলং তদা। হস্তব্যোহন্মি নৃ তে রাজন্! করিষ্যামি তব প্রিয়ম্॥ ২০॥ प्रमञ्जीमकारण जांश कथित्रवामि रेनवथ!। यथा ज्रान्माः পুরুষং ন সা মংস্যাতি কৰিচিৎ ॥ ২১ ॥ এবমুক্ত স্ততো হংস মুৎসমন্ত্র মহীপতিঃ। তে তু হৎসাঃ সমুৎপত্য বিদর্জানগমংস্ততঃ ॥ ২২ ॥

॥ ১৩॥ ১৪ এ মৃর্তিমান্ শরীরী॥ ১৫॥ প্রশশং স্থঃবার্তাছর। ইতিশেষঃ॥১৬॥ হুচ্ছয়ঃ কামঃ ॥ ১৭ ॥ ১৮॥ জাতরূপপরিস্কৃতান্ স্বর্ণপক্ষান্॥ ১৯॥ অন্তরীক্ষ্ণঃ খগঃ॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ বিদর্ভনগরীং গত্বা দময়ন্তীসমস্তিকে *। নিপেতু ত্তে গরুত্মন্তঃ সা দদর্শ চ তান্ থগান্†॥২৩॥ সা তানদ্ভুতৰপান বৈ দৃষ্ট্বা স্থিগণার্তা। হৃতী গৃহীতুং খগুমাংস্ত্রমাণোপচক্রমে ॥ ২৪। অথ হু না বিসম্পুঃ সর্বতঃ প্রমদাবনে। একৈকশ স্তদা কন্যা স্তান্ হংসান্ সমুপাদ্রবন্॥ ২৫॥ नगरे छो ज् यः इ॰प॰ मगुलाकावनिस्ति । স মানুষীং গিরু কুত্বা দময়ন্তী মথাত্রবীং ॥ ২৬ ॥ "দময়ন্তি! নলো নাম নিষ্ধেষু মহীপতিঃ। অশ্বিনোঃ সদুশো ৰূপে ন সমা স্তস্য মানুষাঃ॥ ২৭॥ (কন্দৰ্প ইব-ৰূপেণ মূৰ্ত্তিমানভবৎ স্বয়ম্) 🗓 ২৭ ॥ তস্য বৈ যদি ভাষা। ত্বং ভবেথা বরবর্ণিনি। ॥ ২৮॥ मकलाख ভবেজ্জন ৰপঞ্চেদং স্থমধ্যমে!। वয়ং हि (प्रवाक्तर्य मनुष्यात्रात्राक्रमान् । २०॥ দৃষ্টবন্তো ন চাম্মাভি র্দৃষ্টপূর্বে স্তথাবিধঃ। प्रक्षाि तज्ञ नातीवार नरत्यु ह नरना वतः॥ ७०॥ বিশিষ্টায়া বিশিষ্টেন সংগ্রামো ** গুণ্বানু ভবেৎ"—। এব মুক্তা তু হংসেন দময়ন্তী বিশাম্পতে ! 🕆 ৩১ ॥

গৰুত্বস্তঃ পক্ষবস্তঃ ॥২৩ ॥২৪ ॥২৫ ॥২৬ ॥২৭ ॥২৮ ॥২৯ ॥৩০॥ সংগ্ৰা মঃ কামযুদ্ধং স্থারতমিত্যর্থঃ, সঙ্গম ইতি পাঠেপি সএবার্থঃ॥৩১॥

অব্রবীক্তর তং হংসং স্বমপ্যেবং নলে বদ।
তথেত্যুক্ত্বাহপুদ্ধঃ কন্যাপ বিদর্ভন্ত বিশাল্পতে!।
পুনরাগম্য নিষধান্নলে সর্বাপ ন্যাবেদর্গে॥ ৩২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যান পর্বাণি হৎসবাক্যে
ত্রিপঞ্চাশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৩॥

ব্হদশ্ব উনাচ।

দময়ন্তী তু তচ্চুত্বা বচো হৎসম্য ভারত!।
ততঃ প্রভৃতি ন স্বস্থা নলং প্রতি বভূব মা॥ ১॥
তত শ্চিন্তাপরা দীনা বিবর্ণবদনা ক্রশা।
বভূব দময়ন্তী তু নিশ্বামপরমা তদা॥ ২॥
উর্দ্ধৃদ্টি ধ্যানপরা বভূবোয়ন্তদর্শনা।
পাণ্ডবর্ণা ক্ষণেনাথ ক্রচ্ছেয়াবিউচেতনা॥ ৩॥
ন শ্যাসনভোগেষু রতিং বিন্দৃতি কহিচিৎ।
ন নক্তং ন দিবা শেতে হা হেতি রুদতী পুনঃ॥ ৪॥
তা মস্বস্থাং তদাকারাং সথান্তা জল্জুরিঙ্গিতৈঃ।
ততো বিদর্জপ্তয়ে দময়ন্তাঃ স্থীগণঃ॥ ৫॥
ন্যবেদয়ন্তামশ্বস্থাৎ দময়ন্তীৎ নরেশ্বরে *।
তচ্ছুত্বা নৃপতি ভীমো দময়ন্তীস্থীগণাৎ॥ ৬॥

॥ ७२ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত-ভাবদীপে ত্রিপঞ্চাশত্ত-মোহধ্যায়ঃ॥ ৫৩॥

দমরন্তীশতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ জাজ্ব; জাতবত্যঃ, ইদিকৈ: অভিপ্রায়সূচ কৈ শেচকিতৈঃ ॥ ৫॥ ন্রেখরে নলনিমিত্তম্ ॥ ৩ ॥

* নরেশ্বর ! ইতি সম্বোধন পাঠঃ কঃ—

চিন্তরামাস তৎ কার্যাং স্থমহৎ স্বাং স্থতাৎ প্রতি। *''কিমৰ্থং ছুহিভা মেহদ্য নাতিশ্বস্থেব লক্ষ্যতে ?''॥ ৭॥ म मभीका महीलालः स्वाः स्रुठा श्वाश्वरागेवनाम्। অপশ্যদাত্মনা কার্য্যণ দময়ন্ত্যাঃ স্বয়য়য়য়য়ৢ॥৮॥ স সলিমন্ত্রামাস সহীপালান বিশাম্পতিঃ। অমুভূয়তাময়ৎ বীরাঃ স্বয়ম্বর ইতি প্রভাে!॥৯॥ শ্রু পার্থিবাঃ সর্বে দময়ন্ত্র্যাঃ স্থয়ম্বরম্। অভিজগ্মস্ততো ভীমং রাজানো ভীমশাসনাৎ॥ ১০॥ रखायत्रवारवना शृत्रात्छा वस्त्रताम् । বিচিত্রমাল্যভেরণৈ ব্বলৈ দ্ ৈশ্যঃ স্বলক্ষ্তেঃ॥ ১১॥ তেষাপ ভীমো মহাবাছঃ পার্থিবানাং মহাত্মনাম্। যথাई মকরোৎ পূজাং তেহ্বস স্তত্ত পূজিতাঃ ॥ ১২ ॥ এতস্মিন্নেব কালে তু স্কুরাণামৃষিসন্তমৌ। অটমানৌ মহাত্মানা বিক্রলোকমিতো গতৌ ॥ ১৩॥ নারদঃ পর্বাতকৈর মহাপ্রজ্ঞৌ মহাব্রতৌ। দেবরাজস্য ভবনং বিবিশাতে স্থপূজিতৌ ॥ ১৪॥ তাবর্চয়েত্ব। মঘবা ততঃ কুশল মব্যয়ম্। পথজ্ঞানাময়ঞ্চাপি তয়োঃ সর্বাগতং বিভুঃ ॥ ১৫ ॥

নারদ উবাচ!

" আবিয়োঃ কুশলু^ দেব ! সর্ব্বত্র গত মীশ্বর ! । লোকে চ মঘবন্ ! কুৎস্নে নূপাঃ কুশলিনো বিভো !" ॥ ১৬॥

॥৭॥৮॥ সরিমিঞ্রামাস আমাজুতিবান্, অস্ভূরতাং— প্রেক্যতাং ভব-ডিঃে ॥ ৯॥১০॥১১॥১২॥১৩॥ ১৫॥১৬॥

^{*} কি মিয়ং ইতি ঘ—

ব্রহদশ্ব উগাচ।

নারদদ্য বচঃ প্রান্থ পঞ্জ বলর্ত্তহা।
ধর্মজ্ঞাঃ পৃথিবীপালা স্তাক্তজীবিত-যোধিনঃ॥ ১৭॥
শক্তেণ নিধনং কালে যে গচ্ছন্ত্যপরাধ্যথাঃ।
আয়ং লোকোইক্ষয় স্তেষাং যথৈব মম কামধুক্॥ ১৮॥
ক মু তে ক্ষজ্রিয়াঃ শূরা ন হি পশ্যামি তানহম্।
আগচ্ছতো মহীপালান্ দ্যিতানতিথীন্ মম"—॥ ১৯॥
এবমুক্তস্ত শক্তেণ নারদঃ প্রত্যভাষত—

নারদ উবাচ।

"শৃণু মে মঘবন্! যেন ন দৃশ্যন্তে মহীক্ষিতঃ॥২০॥
বিদর্জনাজ্ঞা ছুহিতা দম্যন্তীতি বিশ্রুতা।
ৰূপেণ সমতিক্রান্তা পৃথিব্যাং সর্বযোধিতঃ॥২১॥
তস্যাঃ স্থায়রঃ শক্র! ভবিতা নচিরাদিব।
তত্র গচ্ছন্তি রাজানো রাজপুল্লান্চ সর্বাশঃ॥২২॥
তাং রত্ত্রভাং লোকস্য প্রার্থান্তা মহীক্ষিতঃ।
কাক্ষন্তি স্ম বিশেষেণ বল্বত্রনিস্থানন!॥২৩॥
এতন্মিন্ কথ্যমানে তু লোকপালান্চ সাগ্রিকাঃ।
আজগ্মুর্দ্দেবরাজস্য সমীপ মমরোজ্মাঃ॥২৪॥
ততত্তে শুশ্রুত্ব সর্বে নারদন্ত বচো মহং।
শাবৈৰ চাক্রবন্ হৃদ্ধী গচ্ছামো বয় মপুতে॥২৫॥
ততঃ সর্বে মহারাজ! সর্বাঃ সহবাহনাঃ।
বিদ্ভানভিজগ্মুন্তে যতঃ সর্বে মহীক্ষিতঃ॥২৬॥

॥ २९॥ २०॥ २०॥ महोक्किण्डः शृथ्वी श्वंत्र । २०॥ २०॥ २०॥ २०॥ २०॥ २०॥

নলোহপি রাজা কোন্তের ! শ্রুড়া রাজ্ঞান সমাপমন্।
অভ্যগক্দদীনাঝা দময়ন্তী মনুত্রতঃ ॥ ২৭ ॥
অথ দেবাং পথি নলং দদৃশু ভূতলে স্থিতম্।
নাক্ষাদেব স্থিতং মূর্ত্ত্যা মন্ত্রথন রূপসম্পদা ॥ ২৮ ॥
ত॰ দৃষ্ট্যা লোকপালান্তে ভ্রাজমানং যথা রবিষ্।
তত্ত্বিগতসকল্পা বিশ্বিতা রূপসম্পদা ॥ ২৯ ॥
ততোহন্তরীক্ষে বিইভা বিমানানি দিবৌকসং।
অক্রবনৈষ্ধন রাজন্বতীর্য্য নভন্তলাৎ ॥ ৩০ ॥
ওভো ভো নিষ্ধরাজেক্তা! নল! সভাত্রতো ভবান্।
অস্মাকং কুরু দাহাষ্যং দুভো ভর নরে:ভ্রম!"—॥ ৩১ ॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি নলোপাধ্যানপর্বাণি নলদৌত্যে চতুঃপঞ্চাশন্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৪ ॥

রহদর্শ উবাচ।

"তেভাঃ প্রতিজ্ঞায় নলঃ করিষ্য ইতি ভারত !।

অবৈনান পরিপপ্রচ্ছ কৃতাঞ্চলি রুপস্থিতঃ ॥ ১ ॥

"কে বৈ ভবতঃ কশ্চাসৌ যস্যাহং দৃত ঈম্পিতঃ?।

কিঞ্চ তালা ময়া কার্যাং কথ্যধং বথাতথ্য্"॥ ২ ॥

এবমুক্তে নৈষ্ধেন মন্থ্যনভ্যভাষ্ত।

"অমরান্ বৈ নিৰোধান্মান দ্ময়ন্ত্যর্থমাগতান্॥ ৩ ॥

॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ বিগতো বিলম্ভো দমরত্তীং প্রাণ্ট্যাম ইতি সহক্ষেণ্ট্যেষাং
॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠায়ে ভারত-ভাবদীপে চতুঃপঞ্চাশত-মোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৪ ॥

তেভাইতি—॥১॥२॥०॥

অহমিক্রেহ্র মগ্লিচ তথৈবার মপাল্পতিঃ ।
শরীরান্তকরো নৃণাশ যমোহ্য মপি পার্থিব!।॥৪॥ '
ত্বং বৈ সমাগতানস্মান দমরক্যৈ নিবেদর।
লোকপালা মহেক্রাদ্যাঃ সভাং ম্বান্তি দিচ্জবঃ॥৫॥
প্রাপ্ত্রি দেবা স্থাং শক্রোহগ্রিক্রণো যমঃ।
তেষা মন্যতমং দেবং পতিত্বে বররস্ব হ''॥৬॥
এব মুক্তঃ স শক্রেণ নলঃ প্রাপ্তালি রব্রবীং—
"একার্থসমুপেতং মাং ন প্রেষয়িতু মহ্প॥৭॥
কথনু জাতসঙ্কপাঃ স্তির মুৎসহতে পুমান।
পরার্থ মীদৃশাশ বক্তুশ তৎ ক্ষমধ্য মমেশ্ররাঃ!'—॥৮॥

(मवा छेट्टू: ।

"করিষ্য ইতি সংশ্রুত্য পূর্ব্ব মস্মাস্থ নৈষধ!। ন করিষ্যাসি কমাত্ত্বং *বদ নৈষধ! মা চিরম্ ?"—॥ ৯॥ রহদশ উবাচ।

এবমুক্তঃ স দেবৈ কৈ নৈষ্ধঃ পুনরত্রবীৎ।

'মুরক্ষিতানি বেশ্মানি প্রবেষ্ট্রং কথ মুৎসহে?"—॥ ১•॥

প্রবেক্ষ্যসীতি ত^ শক্তঃ পুনরেবাভ্যভাষত।

স জগাম তথেত্যুক্তা দময়ন্ত্যা নিবেশনম্॥ ১১॥

দদর্শ তক্র বৈদ্ভীক স্থীগণসমার্তাম্।

দেদীপ্যসানাং বপুষা শ্রিয়া চ বরবর্ণিনীম্॥ ১২॥

॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ একার্থং একপ্ররোজনং, মূরমিবাছহ মলি দমরন্তীং প্রার্থামি ইত্যর্থঃ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ প্রবেক্ষ্যমীতি অদর্শন শক্তি স্তভ্যং দত্তেতি হাবঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥

^{*} এজ ইতি পাঠ। শুরুণ্।

অতীবস্থকুম।রাঙ্গীং তনুমধ্যাং স্থলোচনাম্। আক্ষিপন্তীমিব প্রভাঃ* শশিনঃ স্থেন তেজসা॥ ১৩॥ 'ভস্য দুফৈ ব বরুধে কাম স্তাঞ্চারুহাসিনীমু। মত্যঞ্জিকীর্যমাণ্ডর ধারয়ামাস হৃচ্ছয়ত্ম ॥ ১৪॥ ততন্তা নৈষধং দুল্। শংলান্তাঃ পরমাঙ্গনাঃ। আসনেভ্যঃ সমুৎপেতৃ স্তেজ্ঞসা তদ্য ধর্ষিতাঃ ॥ ১৫ ॥ প্রশশ্বস্থাত মুপ্রীতা নলৎ তা বিষয়ান্বিতা:। ন চৈন মভাভাষন্ত মনোভিত্তভাপূজয়ন্॥ ১৬॥ এঅহো ৰূপ মহো কান্তি রহো ধৈর্ঘ্যং মহাত্মনঃ। কোইয়ং দেবে। হথ বা যক্ষো গন্ধৰ্বোবা ভবিষ্যতি !'' ॥ ১৭ ॥ ন তান্ত^ শকুবন্তি সাব্যাহর্ত্মপি কিঞ্ন। তেজসা ধর্ষিতাস্তম্য লক্ষ্যাবত্যো বরাঙ্গনঃ ॥ ১৮॥ অধৈন~স্ময়মানস্ক স্মিতপূর্মাভিভাষিণী। দময়ন্ত্রী নলং বীর মভ্যভাষত বিশ্বিতা ॥ ১৯১॥ कन्छ ९ मर्का नवना । मम क्राक्त्य वर्षानः । প্রাপ্তোহস্যমরবদ্বীর ! জ্ঞাতুমিচ্ছামি তেইনঘ!॥ ২০॥ कथ गागमन एक कथका मिन लिक कः ?। স্থাকিত হৈ মে বেশা রাজা হৈবোগ্রশাসনঃ"—॥২১॥ ্এব মুক্তস্ত্র বৈদর্জ্যা নলস্তাৎ প্রভাবাচ হ।

নল উগাচ।

শনলং মাং বিদ্ধিকল্যাণি! দেবদূত মিহাগতম্॥ ২২ ॥

॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ধর্ষিতা অভিতূতাঃ ॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ^১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০॥ ২১ ॥ । ॥ ২২ ॥

^{* &}quot;আক্ষিপত্তী মি ৰ চ ভাঃ" ইত্যেবং ক—

দেবাস্ত্রাং প্রাপ্ত মিচ্ছন্তি শক্তোই মির্বায়ণো যমঃ।
তেষা মন্যতম দেবং পতিং বরয় শোভনে।॥ ৩ ০॥
তেষামেব প্রভাবেন প্রবিক্টোইছ মলক্ষিতঃ।
প্রবিশন্তং ন মাং কল্চিদপশ্যমাপ্যবার্যৎ॥,২ ৪॥
এতদর্থ মহং ভক্তে। প্রেষিতঃ স্থরসন্তমৈঃ।
এতদ্প্র শুভে। বৃদ্ধি প্রকৃত্রন্থ যথেছ্সি"—॥ ২ ৫॥
ইত্যারন্যকে পর্বানি নলোপাখ্যানপর্বানি নলস্য দেবদৌত্যে
পঞ্চপঞ্চাশন্তমোই ধ্যায়ঃ॥ ৫ ৫॥

বৃহদশ উবাচ।

'সা নমস্ত্তা দেবেওাঃ প্রহ্মা নল মত্রবীৎ।
প্রাণয়স্থ যথাজ্ঞান্ধং রাজন্! কিৎ করবানি তে?—॥ >॥
অহপ্রেব হি ফলানামান্তি বস্থ কিঞ্চন:।
তৎ সর্বাৎ ক্তব বিজ্ঞান্ধং কুরু প্রণায় মীশ্বর!॥ ২॥
হৎসানাৎ বচনং যতু তন্মাং দহতি পার্থিব!।
ঘুৎকৃতে হি ময়া বীর! রাজানঃ সন্নিপাতিতাঃ॥ ৩॥
যদি ত্বং ভজমানাং মাং প্রত্যাখ্যাস্যাদি মানদ!।
বিষ মগ্নিং জলং বজ্জু মাস্থাস্যে তব কারণাং॥ ৪॥

11 30 11 38 11 30 11

ইত্যারন্যকে পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত-ভাবদীপে পঞ্চপঞাত্ত-মোহধ্যকে: ॥ ৫৫॥ ·

সেতি—হথাজন দেবেভ্যো নমস্কৃত্য, প্রণয়স্মেতি সম্বন্ধঃ, ওণ্য স্থ পরি-ণ্যুস্থ মামিতি শেষঃ॥ ১॥ বিজ্ঞান্ধ স্বিশ্বাসং যথাসাত্তিখা প্রণয়ং পরিণ্য়ং বিবাহং॥ २॥ সন্ধিপাতিতাঃ মেলিতাঃ॥ ৩॥ ৪॥ এব মুক্তস্তু বৈদ্বৰ্ড্যা নল স্তাং প্ৰত্যুবাচ হ। ' তিষ্ঠৎস্থ লোকপালেষু কথ মানুষ মিচ্ছসি ?—॥ ৫ ॥ বেষা মহং লোককুতা মীশ্বরাণাৎ মহাত্মনাম্ । ন পাদরজসা ভুল্যে। মনস্তেষু প্রবর্তাম্ ॥ ৬॥ বিপ্রিয়ং হাচরন মর্ত্যো দেবানাং মৃত্যু মৃচ্ছতি। काहि मा मनवनाकि ! वदशक स्टाइ कान् ॥ १॥ বিরঙ্গাপদি চ বাসাংদি দিব্যাদিতাঃ অজস্তথা। ভূষণানি চ মুখ্যানি দেবান্ প্রাপ্য ভু ভুক্ষ বৈ ॥ ৮ ॥ য ইমাং পৃথিবীং কুৎস্না৲ সংক্ষিপ্য গ্রসতে পুনঃ। ছতাশ মীশং দেঝনাপ কা তং ন বরয়েৎ পতিমৃ ?—॥ ৯॥ যস্য দপ্তভয়াৎ সর্বে ভৃতগ্রামাঃ সমাগতাঃ। ধর্ম মেবানুরুধ্যন্তি কা তং ন বরয়েৎ পতিমৃ!—॥ ১০॥ ধর্মাত্মানং মহাত্মানং দৈতাদ।নব মর্দ্দনম্। মহেন্দ্র সর্বাদেবানাং কা তং ন বরয়েৎ পতিম !—॥ ১১॥ ক্রিয়তা মবিশঙ্কেন মনদা যদি মন্যদে। বৰুণং লেখকপালানাং সুক্ৰাক্যমিদং শুণু"—॥ ১২ ॥ रेनषर्धरेनव मुक्त। मा प्रमञ्जी वरहाश्खवीथ। সমাপ্ল,তাভ্যাপ নেক্রাভ্যাপ শোকজেনাথ বারিণা॥ ১৩॥ দেবেভ্যোহ্হ নমক্ষৃতা সর্বেভ্যঃ পুথিবীপতে।। রুণে ত্বা মেব ভর্তারৎ সত্য মেত্রুবীমি তে॥ ১৪॥ তা মুবাচ ততো রাজা বেপমানাং ক্লতাঞ্চলিম্। দৌত্যেনাগত্য কল্যাণি ! তথা ভদ্ৰে ! বিধীয়তাম্ ॥ ১৫ ॥ কথং হাহং প্রতিশ্রুতা দেবতানা বিশেষতঃ। পরার্থে যত্ন মারভ্য কথং স্বার্থ মিহে ংসহে ?—॥ ১৬॥ 3 1 7 1 9 1 70 11 37 11 34 70 11 38 11 70 11 70 11

এষ ধর্ম্যো ফদি স্বার্থো সমাপি ভবিতা ততঃ 1 এবং স্বার্থণ করিষ্যামি তথা ভদ্রে! বিধীয়তাম্' ॥ ১৭ ॥ ততো বাস্পাকুলাং বাচং দময়ন্তী শুচিম্মিতা। अवगर्त्रश्री^क मनरेक नंतर त्राकान मखवीर्ा ३७ ॥ 'উপায়ে। হয়ং ময়া দুকৌ নিরপায়ে। নরেশ্বর!। ষেন দোষো ন ভবিতা তব রাজন্। কথম্বন ॥ : ৯ ॥ তুঞ্বৈ হি নরশ্রেষ্ঠ। দেবাস্পেন্দ্রপুরোগমাঃ। আয়ান্ত সহিতাঃ সর্বে মম যত্র স্বয়য়রঃ। ২০। ততে৷ হুহং লোকপালানা > সন্নিধৌ ড্বাং নৱেশ্বর ! ৷ वद्गशिखा नवनाध ! रेनवः मार्या ভবিষ্যতি"—॥ २১॥ এবমুক্তস্ত্র বৈদর্ভ্যা নলো রাজা বিশাস্পতে !। আজগাম পুনস্তত্র যত্র দেবাঃ সমাগতাঃ ॥ ২২ ॥ ত মপশা শত্তথায়াত্তং লোকপালা মহেশ্বরাঃ। দুষ্ট্য চৈনং ততোংপুচ্ছন রুত্তান্ত সর্বামের তম্ ॥ ২৩॥ " কচ্চিদ্রু উ। ত্রা রাজনু ! দময়ন্তী শুচিস্মিতা। কি মত্রবীচ্চ নঃ সব্বানু বদ ভূমিপতেৎনঘ!"॥ ২।। " जविष्ठ तर भाषि एके। प्रमास्त्रा निरंगनम् । প্রবিষ্টঃ স্থুমহাকক্ষং দণ্ডিভিঃ স্থবির ব্রুতম্ ॥ ২৫॥ প্রবিশন্তঞ্চ মাপ তত্র ন কশ্চিদ্র উবালরঃ। ঋতে তাং পার্থিবস্থতা ওবতামেব তেজসা॥ ২৬॥ স্থ্যশ্চাস্যা ময়া দৃষ্টা স্তাভিশ্চাপ্যাপলক্ষিত:। বিন্মিতাশ্চাভবন্ সর্বা দৃষ্ট্রা মাশ বিবুধেশ্বরাঃ। ॥ ২৭ ॥ ১१॥ ১**८॥ १८॥ १८॥ १८॥ १८॥ १८॥ महोककः म**होरुः अप्ज-

* প্রত্যাহরস্তাতি ঘ-

রহদর্য উবাচ।

'অথ কালে শুভে প্রাপ্তে তিথো পুণ্যে ক্ষণে তথা।

আজুহাব মহাপালান ভীমো রাজা স্বয়্রহরে॥ ১॥

অজুত্রা পৃথিবীপালাঃ সর্বে হুজ্য়পীডিতাঃ।

অরিতাঃ সমুপাজগ্মু দময়ন্তী মভীপ্সবঃ॥ ২॥

কনকস্তম্ভক্লচিরং তোরণেন বিরাজিতম।

বিবিশুন্তে নূপা রক্ষং মহাসিম্হা ইবাচলাঃ॥ ৩॥

তত্রাসনেষু বিবিধেষাসীনাঃ পৃথিবীক্ষিতঃ।

স্বরভিত্রশ্বরাঃ মর্বে প্রমৃষ্টমণিকুগুলাঃ॥ ৪॥

২৮॥ ২৯॥ ৩৩॥ ৩১॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত-ভাবদীপে ষট্পঞ্চাশত-মেহিধ্যায়ঃ॥ ৫৬॥

অবেতি—। ১।२।७॥ ।।

তা - রাজ-সমিতি - পুণ্যাৎ নাগৈর্জোগ বতীমিব। সম্পূর্ণাৎ পুরুষব্যাত্রৈ ব্যাত্রে গিরিগুহামিব ॥ ৫ ॥ তত্ত্ব পানা দৃশ্বত্তে বাচবঃ পরিছোপমা;। আকারবন্তঃ সুশ্লমাঃ পঞ্চশীর্ঘা ইবোরগাঃ॥ ৬॥ স্থুকেশান্তানি চাৰণি সুনাসান্মিক্রবাণি চা মুখানি রাজ্ঞাং শোভত্তে নক্ষত্রাণি যথা দিবি ॥ ৭ ॥ দময়ন্তী ততো রক্ষং প্রবিবেশ শুভাননা। মুফস্তী প্রভয়া রাজ্ঞাং চক্ষু বি চ মনা পদি চ। ৮। তস্যা গাতেষু পতিতা তেষাং দৃষ্টি শ্মহাত্মনাম্। তত্র তত্ত্বৈর সক্তাভূর চচাল চ পশাতাম্॥ ৯ ॥ ততঃ স-কীর্ত্যমানেষু রাজ্ঞাং নামস্থ ভারত!। पपर्भ टेज्भी शुक्रवान् शक्ष जुलाक्क्रजीनिह# ॥ >०॥ তান সমীক্ষ্য ততঃ সর্বান্ নির্বিশেষাক্ষতীন স্থিতান। मत्म्हाम्य रेवमर्जी नाजाकानाव्रमः नृथम्॥ ১১॥ यः यः हि मम् भा उवा ० ७० ७० त्यान नलः नृशम्। সা চিন্তয়ন্তী বুদ্ধ্যাথ তৰ্কয়ামাস ভাবিনী॥ ১২॥ कथ र (प्रवान जानी शार कथर विमान नलर जुलम् ?। এবং সংচিত্তর স্তী সা বৈদ্ভী ভূশকঃখিতা ॥ ১৩ ॥ প্রুতাণি দেবলিঙ্গানি তর্কয়ামাস ভারত !। দেবানাং যানি লিঙ্গানি স্থবিরেভ্যঃ শ্রুতানি মে॥ ১৪॥ তানীহ তিষ্ঠতাং ভুমা বেক্স্যাপি ন লক্ষয়ে। সা বিনিশ্চিত্য বছধা বিচার্য্য চ পুনঃ পুনঃ ॥ ১৫ ॥

॥ ८॥ ७ १ १ ॥ भूकखी इत्रकी ॥ ৮॥ ५॥ ५०॥ ५५ ॥ ५२ ॥ ५०॥ ५८॥ ५८॥

^{*}कृषीनथ हें उक य श्रृष्टिको।

শরণং প্রতি দেবানাং প্রাপ্তকাল মমন্যত। বাচা চ মনসা চৈব নমস্কারং প্রযুক্তা সা॥ ১৬॥ (मरविष्यः श्राक्षणि र्वृत्वा त्वभगातम मखवीर। "इ~मानार यहनर अन्दा यथा (म रेनयरश वृज्ः। পতিত্বে তেন সভ্যেন দেবান্তং প্রদিশম্ভ মে ॥ ১৭ ॥ वहमा मनमा हिव यथा ना जिह्नामारम् । তেন সত্যেন বিৰুধা স্তমেব প্ৰদিশস্ত মে॥ ১৮॥ यथा (प्रदेश म त्य छर्डा विहिट्छ। निषधािं भिशः। তেন সত্যেন মে দেবা স্তমেব প্রদিশস্ক মে॥ ১৯॥ यरथम् अञ मात्रकः नलमात्राधरन महा। **टिंग मट्डान स्म दिन्दा छ स्मर श्रीमण्ड स्म ॥ २० ॥** স্ববৈধ্ব ৰূপ-কুৰ্ববস্তু লোকপালা মহেশ্বরাঃ। যথাহ মপি জানীয়া পুণ্যশ্লোকং নরাধিপম্। ২১॥ निभमा प्रमासा उर कक्न । श्रीतापिकम् । निन्ह्य প्रतमः उथा मनुतानक दैनयद्य ॥ २२ ॥ মনোবিশুদ্ধিং বৃদ্ধিঞ্ ভক্তিং রাগঞ্চ নৈষধে। यरथाक क्षकित्र (मर्याः नामर्थाः लिक्रधातर्व ॥'२०॥ मार्थमाहित्थान् म्यानत्यमान् उक्तानामन्। ক্ষিতত্রপ্রজোহীনানু স্থিতানস্পূশতঃ ক্ষিতিমু॥ ২৪॥ ছায়। দ্বিতীয়ে। সান্ত্ৰাজঃবেদসম্বিতঃ। ভূমিষ্ঠো নৈৰধশৈচৰ নিমেৰেণ চ স্থচিতঃ ॥ ২৫ ॥

॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ মহ্যাঃ সম্বেদা সনিমে বা সামমান জ্ঞান সরজ্বা ভূমি-ম্পূশঃ, দেবা শুদিপরীতাঃ, ছবিত জ্ঞজন্চ তে রজো হীনা শ্চেতি সমাসঃ ॥ ২৪ ॥

সা সমীক্ষ্য তু তান্দেবান পুণ্যক্লোকঞ্চ ভারত!। নৈষধং বরয়ামাস ভৈমী ধর্মেন পাগুব !॥ ২৬॥ বিলজ্জমানা বস্ত্রান্তে জগ্রাহায়তলোচনা। ক্ষনদেশেহসজ্জস্য অকং প্রমশোভনাম ॥ ২৭॥ বরয়'মাস টেটবনং পতিত্বে বরবর্ণিনী। ততো হা হেতি সহসা মুক্তঃ শব্দো নরাধিপৈ: ॥ ২৮॥। দেবৈ শ্বহর্ষিভি ন্তত্র সাধু সাধিতি ভারত !। বিশ্বিতৈ রীরিতঃ শব্দঃ প্রশংসন্তি র্নলং রূপমু ॥ ২৯ ॥ দমরন্তীন্ত কৌরব্য! বীরসেনস্থতো নৃপঃ। আশ্বাদয়দ্বরারোহাং প্রহৃষ্টেনান্তরাত্মনা। ৩০॥ "যত্ত্বং ভজসি কল্যাণি! পুমাৎসৎ দেবসন্নিধৌ। তক্ষাঝাং বিদ্ধি ভর্তার মেতত্তে বচনে রতমু॥ ৩১॥ যাবচ্চ মে ধরিষান্তি প্রাণা দেহে শু.চিম্মিতে!। তাবস্তুয়ি ভবিৰাণি সভ্যমেতদ্বীমি তে"—॥ ৩২॥ দময়ন্ত্রী তথা বাগি ভ রভিনন্দা কু গঞ্জলিং। তৌ পরস্পরতঃ প্রীতৌ দৃষ্ট্। ত্রিপুরোগমান্। ৩ । তানেব শরণ% দেবান্ জগ্ম বুর্গ্মনসা তদা। त्रुट जु रेनच्रा (जाक्रा लाक्रिना मरहोक्रमः ॥ ७८ ॥ প্রকৃষ্টমনসঃ সর্বে নলায়াটো বরান দতুঃ। প্রত্যক্ষদর্শনং যজে গতিঞামুত্তমান শুভাম ॥ ৩৫ ॥ देनवधात्र मर्ता नकः श्रीत्रमानः महीপ्रिकः। অগ্নি রাজ্মভবং প্রাদাদ্যত বাঞ্জুতি নৈষ্ধঃ । ৩৬ ॥

়ে২৫॥ ২৬ ॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০॥ যদ্যক্ষামাং ভক্ষ তমা তে তব বচনে বতং ইত্যেতং বিদ্ধি॥ ৩১॥ ৩২॥ ৩১॥ ৩৪॥ ৩৫॥ আত্মভবং আত্মন আবিভাবন্॥ ৬৬॥

লোকানাৰ প্ৰভাংকৈৰ দদৌ তলৈ ছতাশনঃ। ষম স্তুলরসং প্রাদান্ধর্মে চ পরমান স্থিতিম্।। ৩৭।। অপান্সতি রপাস্তাবং যত্র বাঞ্চৃতি নৈষধঃ। ব্ৰজ্লেজমগন্ধাট্যাঃ দৰ্কে চ মিধুনং দছুঃ॥ ৩৮॥ व्यात्मव् श्रमायामा त्मवात्य जिम्वि भाषाः। পার্ষিবাশ্চানুভূয়াস্য বিবাহ্ণ বিশ্ময়ান্বিতাঃ॥ ৩৯॥ দময়ন্ত্যাশ্চ মুদিতাঃ প্রতিক্রগার্যথাগতম্। গতেষু পার্থিবেক্রেষু ভীমঃ প্রীতো মহামনাঃ॥ ৪०॥ বিবাহং কার্য়ামাস দময়ন্তা। নলস্য চ। উষ্য তত্র যথাকামং নৈষধো দ্বিপদাম্বরঃ ॥ ৪১ ॥ ভীমেন সমনুজ্ঞাতো জগাম নগরং স্বকর্ম। অবাপ্য নারীরত্নন্ত পুণ্যশ্লোকোহপি পার্থিব: ॥ ৪২ ॥ রেমে সহ তয়া রাজনু! শচ্যেব বলরুত্রহা। অতীৰ সুদিতো রাজা ভ্রাজমানোহংশুমানিব॥ ৪৩॥ অরঞ্জয়ৎ প্রজা বীরো ধর্ম্মেণ পরিপালয়ন। ঈজে চাপ্যশ্বমেধেন য্যাতি রিব নাছ্য: ॥ ৪৪ ॥ ष्यतेगुम्ह वद्य धीं मान् क्रवृष्टिम्हाश्वनिक्रतेनः .। भूनक त्रभीरायु वरनयूभवरनयुष्ठ ॥ ८० ॥ দময়ন্ত্যা সহ নলো বিজহারামরে।পামঃ। জনয়ামাস চ ততো দময়ন্ত্যাং মহামনাঃ। ইন্দ্রমেন্ স্বতঞাপি ইন্দ্রমেনাঞ্চ কন্যকাম্। ৪৬॥

অন্তরসং—যাদৃশে তাদৃশে পানে বিশিষ্ট রস বক্তাং॥ ৩৭॥ ভাবং সতাং, ° মিপুনং একৈকেন দরং দরমপীতার্থ: ॥ ৩৮॥ অন্ত-ভূর দৃষ্ট্বা॥ ৩৯॥ ॥ ৪০॥ উদ্যাবাসংক্রা॥ ৪১॥ ৪১॥ ৪১ ॥ ৪০॥ ৪৫॥ ৪৫॥ ৪৬॥ এবং স যজমানশ্চ বিহর শ্চ নরাধিপঃ। ররক্ষ বস্থসম্পূর্ণাশ বস্থধাং বস্থধাধিপাঃ॥ ৪৭॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যান পর্বাণি দময়ন্তীম্বয়ম্বরে সপ্তপঞ্চাশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৭॥

वृष्टमश्च छेवाह।

"রতে তু নৈষধে ভৈম্যা লোকপালা মহৌজসঃ।

যাস্তো দদৃশু রাষাস্তং দাপরং কলিনা সহ॥ ১॥

অথাত্রবীৎ কলিৎ শক্রঃ সংপ্রেক্ষ্য বলর্ত্তহা।

'দ্বাপরেণ সহায়েন কলে।ক্রহি ক যাস্যাসি ?''॥ ২॥

ততোহত্তবীৎ কলিঃ শক্রং "দময়স্ত্যাঃ স্বয়সরম্।

গত্বা হি বর্য়িষ্যে তাৎ মনো হি মম তাঙ্গতম্' ॥ ৩॥

ত মত্রবীৎ প্রহস্যেক্রো 'নির্কৃত্তঃ স স্বয়স্বরঃ।

রত স্তরা নলো রাজা পতি রক্ষৎসমীপতঃ' ॥ ৪॥

এব মুক্তস্ত শক্রেণ কলিঃ কোপসমন্বিতঃ।

দেবানামস্ত্র্য তান্ সর্কান্ত্রবাচেদং বচন্তদা॥ ৫॥

'দেবানাং মান্ত্র্যং মধ্যে যৎ সা পতি মবিন্দৃত।

তত্র তথা ভবেন্ধ্যায়াং, বিপুলং দণ্ডধারণম্'—॥ ৬॥

1 89 1

ইত্যারণ্যকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভারদীপে সপ্তপঞ্চাশতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৭ ॥

• এবং দেনেভোগ লব্ধ বরস্য রূপৌ দার্যাদি মতো দমরন্তী লাভজং স্থ-মুক্ত্বা ভাস্যেব সংপ্রতি ত্ব্যসনজা মাপদং বক্ত্ মুপক্তমতে রভেড় নুমুব্ধে ইভ্যাদিনা—॥১॥২॥৩॥ নিরুক্তিঃ সমাপ্তঃ॥৪॥৫॥৩॥ এবমুক্তে ভু কলিনা প্রভুচু তে দিবৌকসঃ। ''অসাভিঃ সমমুজ্ঞাতে দময়ন্ত্যা নলো বৃতঃ ॥ ৭ । কাচ সর্বাপ্তণোপেতং নাপ্রায়েত নলং নুপম্?—। যো বেদ ধর্মানখিলান যথা বচ্চরিতত্রতঃ ॥ ৮॥ যেহিধীতে চতুরো বেদান সর্বানাখ্যান পঞ্মান্। নিত্যং ভৃপ্তা গৃহে যদ্য দেবা যজেষু ধর্মতঃ। অহিংসানিরতো যশ্চ সত্যবাদী দৃতব্রতঃ ॥ ৯ ॥ যন্মিন সত্যং ধৃতি জ্ঞানং তপঃ শোচৎ দমঃ শমঃ। ধ্বাণি পুরুষব্যাছে লোকপালসমে নূপে.॥ ১০॥ এবং ৰূপণ নলং যো বৈ কাময়েচ্ছপিতৃং কলে।। আত্মানং স শপের চো হ্ন্যাদাত্মান মাত্মনা ॥ ১১ ॥ এবংগুণং নলং যো বৈ কাময়েচ্ছপিভূং কলে ! । कुर्व्ह म नत्रक मर्ब्ह्ह मशास विश्वल इसा । এবমুক্ত্বা কলিং দেবা দ্বাপরঞ্চ দিবং যযুঃ॥ ১২ ॥ ততো গতেষু দেবেষু কলিৰ পির মত্রবীং। "সংহর্ত্তং নোৎসহে কোপন নলে বৎস্যামি দ্বাপর।॥ ১৩॥

॥ ৭॥ ৮॥৯॥ যদ্মিরিতি—দাক্ষ্য নিজ্যোৎসাহঃ, সত্যমিতি পাঠে—যথার্থ ভাষণং, প্রতিঃ বাঙ্মনঃ কাথানা মবসাদ প্রান্তো তত্ত্তভনার্থে যত্তবিশেষো-মনোধর্মঃ, জ্ঞানং শব্দতোহর্থতক, তপঃ অধর্মনিষ্ঠা, শৌচং বাহুঃ মুজ্জনাদিক্ষং, আভ্যন্তরং ভাবশুদ্ধিঃ, দমো বাহ্যোক্তিয় নিগ্রহঃ, শমো মনো নিগ্রহঃ, ধ্ববাণি বিহৈরপ্য বাধ্যানি ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১০ ॥

ভ্ৰ-শয়িষ্যামি তং রাজ্যান্ন ভৈম্যা সহ রংস্যতে।
ত্ব মপ্যক্ষান্ সমাবিশ্য সাহায্যং কর্জু মর্হসি"—॥ ১৪॥
ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নলোপাখ্যান পর্কাণ কলি দেবস্বাদে
অফপঞ্চাশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৮॥

त्रक्ष डेवाह।

এবং স সময়ং কৃত্বা ভাপরে। কলিং সহ।

আজগাম ভতন্তর যত রাজা স নৈষধং ॥ ১॥

স নিত্য মন্তরং প্রেপ্স্ র্নিষধেষবসচিরম্।

আথাস্য ভাদশে বর্ষে দদশ কলিরন্তরম্ ॥ ২॥

কৃত্বা মূত্র মুপস্পুশ্য সন্ধ্যা মরান্ত নৈষধং।

আকৃত্বা পাদরোঃ শৌচং তত্রৈনং কলি রাবিশং॥ ৩॥

স সমাবিশ্য চ নলং সমীপা পুষ্ণরস্য চ।

গত্বা পুষ্ণর মাহেদ মেহি দীব্য নলেন বৈ ॥ ৪॥

আক্ষ্যুতে নলং জেতা ভবান হি সহিতো ময়া।

নিষধান্ প্রতিপদ্যন্ত জিত্বা রাজ্যং নলং নৃপম্॥ ৫॥

এবমুক্তন্ত কলিনা পুষ্ণরো নলমভারাং।

কলিশ্চৈব ব্যো ভূত্বা গবাং পুষ্ণর মভ্যগাৎ॥ ৬॥

1 38 1

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে অফপঞ্চশত্ত-ভমোহধ্যায়েঃ ॥ ৫৮ ॥

এবিম্যুত্ত—সময়ং দক্ষেত্তঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ অস্বান্ত উপাদিতবান্, সোভেমেতি পাঠে—স উপাত্তে সাইত্যৰ্থঃ আৰ্থঃ সদ্ধিঃ ॥ ৩ ॥ সঃ কলিঃ নলং সমাবিশ্য-কপান্তরেণ পুক্রথ চাব্রবীৎ দীব্য দ্যুত্তৎ কুক ॥ ৪॥ ৫ ॥ সাহায্যমেবাহ কলি কেতি—গবাৎ রুষঃ অত্ত গোশকো লক্ষিত লক্ষণয়াহক শক্ষবাচ্যেয়ু পালেন্

व्यामामा जू नल भ वीतः श्रुक्षतः श्रववीत हा। দীব্যাবেভ্যব্রবীষ্ট্রাতা রুষেণেতি মুহুর্মান্তঃ ॥ ৭ ॥ ন চক্ষমে ততো রাজা সমাহ্বনেং মহামনাঃ। देवमङ्गाः প्राक्रमानामाः भगकान मगन उ ॥ ৮॥ हित्रामा खूर्वाख यानयूनाख वाममाग्। আবিষ্টঃ কলিনা দ্যুতে জীয়তে স্ম নলস্তদা॥ ৯॥ ত মক্ষ মদ-স**ন্মত্ত^ সুহৃদ** । ন ত্ কন্দন। নিবারণেহভবচ্ছকো দীব্যমান মরিনদমন্॥ ১০॥ ততঃ পৌরজনাঃ সর্কে মন্ত্রিভিঃ সহ ভারত !। রাজানং দ্রফুমাগচ্ছনিবারয়িতু মাতুরম্॥ ১১ ॥ ততঃ স্থত উপাগ ম্য দমরক্ত্যে ন্যবেদয়ৎ। "এষ পৌরজনো দেবি ! দারি তিষ্ঠতি কার্য্যবানু । ১২ ॥ নিবেদ্যতাং নৈষ্ধায় সর্বাঃ প্রকৃতয়ঃ স্থিতাঃ। অমুষ্যমাণা ব্যসন্ৎ রাজ্ঞো ধর্মার্থদর্শিনঃ" ॥ ১৩ ॥ ততঃ সা বাস্প্রকারা বাচা ছুঃখেন কর্ষিতা। উবাচ নৈষধং ভৈমী শোকে।প্ৰতচেতনা ॥ ১৪॥ 'রোজন্। পৌরজনো দ্বারি ত্বাং দিদৃকু রবস্থিতঃ। মন্ত্রিভি: সহিতঃ সবৈর্ব রাজভক্তিপুরস্কৃতঃ॥ ১৫॥ তং দ্রফ মর্হসীত্যেব পুনঃ পুন রভাষত। তাত্তথা রুচিরাপাঙ্গীং বিলপত্তীং তথাবিধামু॥ ১৬॥ আবিষ্টঃ কলিনা রাজা না ভ্যভাষত কিঞ্চন। ততত্তে মন্ত্রিণঃ সর্ব্বে তে চৈব পুরবাসিনঃ॥ ১৭॥

বর্ততে, রুষঃ শ্রেষ্ঠঃ, পাশ্রেষ্ঠেভূতা ইতার্ধঃ ॥ ৬॥ রুষেণ অক্ষমুখোন ॥ ৭॥ প্রান্তিকালং দ্যুতকালম্ ॥ ৮ ॥ যানের যুগাং যুগবহং রথানি তদ্য ॥ ১॥ ১০॥ ১১ ॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ নায়মন্ত্রীতি ছুঃখার্তা ব্রীডিতা জগ্মুরালয়ান্।
তথা তদভবদ্যুতং পুষ্করম্ভ নলস্য চ।
যুথিন্তির! বহুন্ মাসান্ পুণ্যশ্লোকস্থ জীয়ত ॥ ১৮॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যান পর্বাণি নলদূতে
একোন্যন্তিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৯॥

त्रक्ष छेगा । " দময়ন্তী ততো দৃষ্ট্বা পুণ্যশ্লোকং নরাধিপম্। উন্মন্তবদনুত্রতা দেবনে গতচেতসম্॥ ১॥ ভয়শোক-সমাবিষ্টা রাজন্ ! ভীমস্থতা ততঃ। চিন্তয়ামাস তৎ কাৰ্যাং স্থমহৎ পাৰ্থিবং প্ৰতি॥ ২॥ সা শঙ্কমানা তৎ পাপ । চিকীৰ্যস্তী চ তৎপ্ৰিয়ম্। नमक्ष ऋडमर्याय मुशन(खाम म ख्वी । ।। বৃহৎসেনা মতিয়শাং তাং ধাত্রীং পরিচারিকাম। হিতাং সৰ্বাৰ্থকুশলা মনুরক্তাং স্থভাষিতাম ॥১॥ "রুহ্ৎসেনে! ব্রজামাত্যা নানায্য নলশাসনাৎ। আচক্ষু যৰুত ত দ্ৰব্য মবশিষ্টঞ্ব যৰস্থ —। ৫॥ ততত্তে মক্তিণঃ সর্কো বিজ্ঞায় নলশাসনম। অপি নো ভাগধেয় স্যাদিত্যক্তা নল মাত্রজন্। ৬। তাম্ব সর্বাঃ প্রকৃতয়ো দিতীয়৽ সমুপস্থিতাঃ। ন্যবেদয়ম্ভীমস্থতা ন চ তৎপ্রত্যনন্দত 🐐 ॥ १ ॥ নায়মস্তি নকৌ হয়মিত্যর্থঃ, পুণ্যঃ পাবনঃ স্লোকো রশোষস্যা, অজীয়ত জিত रे जियावर ॥ ১৮॥

ইভাবেণ্যকে পর্কাণ নৈলকগ্রীয়ে ভারত ভাবদীপে একোনষ্ঠি-তমোহধ্যার: ॥ ৫১ ॥ দমরন্তীতি---॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ বিতীয়ং বিতীয় বার্য্॥ ৭ ॥

* "ন চ স প্রভা নন্দত" ইতি ক-- বপুত্তকো ।

বাক্যমপ্রতিনন্দত্ত^ ভর্তার মভিবীক্ষ্য সা। দসয়ন্তী পুনর্বেশ্ম জীডিত। প্রবিবেশ হ ॥ ৮ ॥ নিশমা সভতঞ্জান পুণ্যশ্লোকপরাত্মধান্। নলঞ্চ হ্নতস্থাস্থ ধাত্ৰীং পুনরুবাচ হ।। ৯।। ''त्र्र्रिताः भूनर्ज्ञ वार्ष्क्ष्य ननभामनार। স্থুত মানর কল্যাণি। মহৎ কার্যা প্রপান্থতম্"—॥ > ॥ রুহং সেনা তু সা অভয়া দময়ন্ত্যা প্রভাবিতম্॥ বাফের্ মানরামাস পুরুষৈ রাপ্তকারিভিঃ॥ ১১॥ বাফে রম্ভ ততো ভৈমী * সাস্ত্রমন্ত্র ক্লয়া পিরা। উবাচ দেশকালজ্ঞা প্রাপ্তকাল মনিন্দিতা॥ ১২ ॥ ''क्रानीरव दश यथा ताका नमार्श्वः नमा दशि। তস্য বং বিষমস্থস্য সাহাষ্যং কর্তু মর্ছসি ॥ ১৩ ॥ ষথা ষথা ছি নুপতিঃ পুষ্করেণৈৰ জীয়তে। তথা তথাক্ত বৈ দ্যুতে রাগো ভূয়োহভিবর্দ্ধতে ॥ ১৪ ॥ যথা চ পুষ্করস্যাক্ষাঃ পতন্তি বশবর্তিনঃ। তথা বিপর্যয় । পি নলসাকেষু দুখাতে । ১৫॥ স্ক্রছংস্বজন-বাক্যানি যথাবন্ন শূণোতি চ। মমাপি চ তথা বাক্যং নাভিনন্দতি মোহিতঃ ॥ ১৬ ৮ कृतः यत्ना न (ए। स्वाक्षि देनवश्य यहाञ्चनः। ষত্ত্ব মে বচনং রাজা নাভিনন্দতি মোহিতঃ॥ ১৭॥ শর্ণ ত্রাণ প্রপন্নান্মি সার্থে! কুরু মন্বচঃ। ন হি মে শুধ্যতে ভাবঃ কদাচিদ্বিনশেদপি ॥ ১৮॥

॥৮॥ >॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥বিন্দেত বিন্দ্যেত-মল ইতিশেষঃ॥ ১৮॥

1-2

^{* &}quot;সান্তবৎ" ইত্যেবং ক—সমীচীন মেতৎ!

নলসা দয়িত।নখান যোজয়িত্বা মনোজবান । हेम मारतां पा मिथून कु खिन १ यां जू महिन ॥ ১৯॥ মম জাতিষু নিক্ষিপ্য দারকৌ স্যালনন্তথা। অস্বাংশ্চেমানু যথাকামং বস চান্যত্ৰ গছ বা?'--॥ ২০ ॥ नगरुखा ह उद्दाका नारक द्या ननगरिशः। नार्वमग्रम् भारत्वे ननार्या जायू यूथा मेः ॥ २०॥ কৈঃ সমেতঃ বিনিশ্চিন্ত সোহসুজ্ঞাতো মহীপতে। । यत्यो मिथुन मार्राका विमर्छ। रखन वाहिना ॥ २२ ॥ হয়াংস্তত্র বিনিক্ষিপ্য সূতো রথবরঞ্চ তম । ইক্রসেনাঞ্চ তাং কন্যা মিক্রসেনঞ্চ বালকম্॥ ২৩॥ व्यामका जीमः ब्राक्तांन मार्जः (माठब्रलः नृपम्। ष्यहेमान उटाइरयाध्याः क्याम नगतीयुना ॥ २८॥ ঋতুপূর্ণ স রাজান মুপতত্তে স্তর্হাথিতঃ। कृष्टिक्शं भगत्यों जख मात्र थान महोभरकः ॥ २० ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলেপাখ্যান পর্বাণি নলদুতে * यक्षि उत्मार्थगतः॥ ७०॥

মিথুনং—কুমারীং কুমারঞ, কুগুনং ভীমস্য নগর্ম ॥ ১৯॥ ২০॥ মুখাশঃ
মুখ্যের মুখ্যের ॥ ২১॥ বাছিনা অশ্বর্থেন ॥ ২২॥ ২৩॥ অটমানঃ বেতনাখী
পর্যটন্ ॥ ২৪॥ ভৃতিং বেতন্ম ॥ ২৫॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগীরে ভারত ভাবদীপে বন্ধিতমোং-ধ্যায়ঃ॥ ৬০॥

^{*} অত্র—" কৃতিনং প্রতি কুমার-কুমারী প্রস্থাপনে" ইত্যেবং ধ পুস্তকে-২ধিক পাঠঃ।

त्रक्षचं खेता । ৫ ততন্ত্ৰ যাতে বাফে য়ে পুণাঞ্লোকসা দীব্যতঃ। পুষ্করেণ হৃতং রাজাং যক্তান্যম্বস্থ কিঞ্চন ॥ ১॥ হৃতরা চাং নলং রাজন্! প্রহুসন্ পুষ্ণরোহ এবীং ; এদ্যুতং প্ৰবৰ্ষ্বতাং ভূয়ঃ প্ৰতিপাণোহস্কি কন্তব?—॥২॥ শিক্ষা তে দময়ন্ত্যেকা সর্বব মন্যাজ্জতং ময়া। দমরস্ত্যাঃ পণঃ সাধু বর্ত্ততাং যদি মন্যমে''—। ৩। পুন্ধরেণৈর মুক্তব্য পুণ্যশ্লোকস্থ মন্ত্রানা। बामीधार्ट्य ऋमग्नः न रेहनः কিঞ্চিদত্রবীং॥ ৪॥ ততঃ পুদ্ধর মালোক্য নলঃ পরম-মন্ত্রামান । উৎস্ক্রা স্বাগতেভাে ভূষণানি মহায়শাঃ ॥ ৫ ॥ একবাসা হাস্বীতঃ স্থৃক্চে কবিবর্দ্ধনঃ। নিশকাম ততো রাজা ত্যক্ত্ব। স্থবিপুলাং ভিয়ম্॥ ৬॥ দময়স্ত্রেকবস্ত্রাথ গচ্ছন্তং পৃষ্ঠতোহযুগাৎ। সূত্রা বাছতঃ সার্দ্ধ তিরাতং নৈষধোহবসং॥ १॥ পুষ্করস্ত মহারাজ! ঘোষয়ামাস রৈ পুরে। নলে যঃ সমাগাতিষ্ঠেৎ স গড়েছৎ বধ্যভাং মম।। 🖟 📭 পুষ্করস্থা তু বাকোন তম্ম বিদ্বেষণেন চ। পৌরা ন তদ্য সংকারং ক্লভবস্তো যুধিষ্ঠির ! ॥ ৯ ॥ म उथा नगराजाएम मध्काराहा न् मध्काः। ত্রিরাত মুষিতো রাজা জলমাতেণ বর্তমন্॥ ১০॥ পীজ্যমানঃ কুধা তত্ৰ ফলমূলানি কৰ্মন্। প্রাতিষ্ঠত ততো রাজা দমরন্তী ত মন্থগাৎ। ১৯

তত ইতি—॥ ১॥ প্রতিপাণঃ পণনীয় জ্বাম্॥ ২॥ ৩ ॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ তথাসাধিং বাহাতঃ বহিঃ নগ্রাদিতার্থঃ॥ १॥ ৮॥ তস্য নদস্য॥ ১॥ নগ্-রাহভাবে নগ্রস্মীপে॥ ১০॥ ২১॥

কুধয়া পীড্যমানস্ত নলো বছতিথে২হনি। অপশ্যচ্চুকুনান্ কাংশি জিরণ্যসদৃশচ্চ্নান্ ॥ ১২ ॥ স চিন্তয়ামাস তদা নিষধাধিপতি ব্ৰলী। 🛰 স্তি ভক্ষ্যো মমাদ্যাহয়^ বস্থু চেদং ভবিষ্যতি ॥ ১৩ ॥ ততন্তানু পরিধানেন বাসসা স সমারণোৎ। তদ্য তদ্ত্র মাদায় সর্বে জগ্ম বিহারসা। ১৪॥ উৎপতন্তঃ থগা বাক্য মেতদান্ত স্ততো নলম। कृष्णे। निश्वाममः ভূমৌ चिजः नीन मरक्षामुश्रम् ॥ ১৫ ॥ 'বয় সক্ষাঃ স্থত্তব্দ্ধে! তব বাসো জিহীর্ষবঃ। আগতা ন হি নঃ প্রীতিঃ সবাসসি গতে বৃদ্ধি"—। ১৬ ॥ তান্ সমীক্ষ্য গতানকানাস্থানঞ্চ বিবাসসম্। পুণ্যশ্লোক ন্তদা রাজন্। দময়ন্তীমধাহত্রবীং ॥ ১৭ ॥ "यवार প্রকোপাদৈশ্বর্যাৎ প্রচ্যুতোহ্ছ মনিন্দিতে!। প্রাণ্যাত্রাং ন বিন্দেরং ছুঃখিতঃ কুধরান্বিতঃ ॥ ১৮॥ যেষাং ক্লতে ন সংকার মকুরবন্ময়ি নৈবধাঃ। ইমে তে শকুনা ভূত্বা বাদো ভীরু। হরন্তি মে॥ ১৯॥ বৈষম্যং পরমং প্রাপ্তো তুংখিতো গতচেতনঃ। ভর্তা তেইহং নিবোধেদং বচন ছিত্তমাল্মনঃ ॥ ২০॥ এতে গচ্ছন্তি বহবঃ পন্থানো দক্ষিণাপথম। অবন্তী মৃক্ষবন্তঞ্চ সমতিক্রম্য পর্বতম্ ॥২১॥ **এ**ष विस्त्रा। महारेननः भरत्राको ह ममुज्ञा।। আশ্ৰমাশ্চ মহৰ্ষীণাং বছমূলফলান্বিভাঃ ॥ ২২ ॥ এব পদ্ম বিদর্জাণ। মদৌ গচ্ছতি কোশলাম্। অতঃ পরঞ্চ দেশোংয়ং দক্ষিণে দক্ষিণাপথঃ"—॥ ২৩॥

|| 25 || 20 || 28 || 20 || 20 || 12 || 12 || 12 || 12 || 12 || 12 || 12 || 12 || 12 || 13 || 13 || 13 || 13 || 14 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 || 15 |

এতধাকাং নলো রাজা দময়ন্তীং সমাহিতঃ।
উবাচাংসকলার্ত্তো হি ভৈমী মুদ্দিশ্য ভারত !॥ ২৪॥
ততঃ সা বাস্পাকলয়া বাচা ছংখেন কর্ষিতা।
উবাচ দময়ন্তী তং নৈষধ করুনং বচঃ—া ২৫॥
'উদ্বেজতে শ মে হৃদয় সীদন্তাঙ্গানি সর্বশং।
তব পার্থিব! সঙ্কপেশ চিন্তয়ন্ত্যাঃ পুনঃ পুনঃ॥ ২৬॥
হৃতরাজ্যং হৃতদ্রবাং বিবস্ত্রশ কুজুমান্বিতম্।
কথ মুংসজা গচ্ছেয়ং আমহশ নির্দ্ধনে বনে?—॥ ২৭॥
আন্তম্ম তে কুবার্ত্তম চিন্তয়ানম্ম তৎ স্থেম্।
বনে ঘোরে মহারাজ! নাশয়িষ্যাম্যহং ক্লম্ম্॥ ১৮॥
ন চ ভার্যাসমং কিঞ্চিদ্বিদাতে ভিষ্কাং মতম্।
উব্ধং সর্বাত্তখেষু সত্যমেতধুবীমি তে"—॥ ২৯॥
নল উবাচ।

' এবমেতদ্যথাথ বং দময়ন্তি। স্থমধ্যমে।।
নান্তি ভার্যাসমৎ মিত্রৎ নরস্যার্ভন্থ ভেষজম্॥ ৩০॥
ন চাহং ত্যক্তামস্থাৎ কিমলং ভীরু শঙ্কসে?—।
ত্যজের মহ মাক্সানং ন চৈব স্থা মনিন্দিতে।"॥ ৩১॥

দময়স্তাব্চ।

"যদি মাং ত্বং মহারাজ। ন বিহাতু মিহেচ্ছিদি। তৎ কিমৰ্থং বিদৰ্ভাণাং পদ্ধাঃ সমুপদিশ্যতে?—॥ ৩২॥ অবৈমি চাহং নৃপতে। ন তু মাৎ ত্যক্তমুমৰ্ছিদ। চেক্তমা ত্বপক্লফৌন মাং ত্যক্তেথা মহাপতে।॥ ৩৬॥

॥২৩॥২৪॥২৫॥২৬॥২৭॥২৮॥২৯॥৩०॥ অলং অত্যৰ্থং॥৩১॥৩২॥ অপকৃষ্ণেন কলি-ক্ষিতেন ॥৩৩॥

^{*} উদ্বেপতে ইতি ক—

পদ্ধানং হি মমাজীকু মাখ্যাসি চ নরোন্তম!।
আতা নিমিন্তং শোকন মে বর্দ্ধরস্যমরোপম!॥ ৩৪ ॥

যদি চার মন্তিপ্রায় স্তব জ্ঞাতীন ব্রজেদিতি।

* সহিতাবের গভাবো বিদর্ভান্ যদি মন্যদে ॥ ৩৫ ॥

বিদর্ভরাজস্তক স্বাং পুজ্যিষ্যতি মানদ!।
তেন স্বন পুজিতো রাজন্! স্বখং বংস্তাসি নো গৃহে"—। ৩৬ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যানপর্বাণি নলস্য বন্যাক্রায়ং

এক্ষ্টিত্রেসাইধ্যায়ঃ ॥ ৬১ ॥

नल डेगा ।

েষ্থা রাজ্য ওব পিতু স্থা মম ন সংশয়: ।

ন তু তত্র গমিষ্যামি বিষমস্থঃ কথঞ্চন ॥ ১ ॥

কথ্য সমূদ্ধো গ্রাহ্হ ওব হর্ষবিবর্দ্ধন: ।
পরিচ্যুতো গমিষ্যামি তব শোকবিবর্দ্ধন: ?" ॥ ২ ॥

কুহদশ উব্চ।

'ইতি ক্রুবন্ধলো রাজা দমন্ত্রীং পুনং পুনঃ।
সাজ্মামাস কল্যাণী বাসমোহর্দ্ধেন সম্বৃত্তাম্ ॥ ৩ ॥
তা বেকবন্ত্রসংবীতা বটমানাবিতন্ততঃ।

কুংপিপাসাপরিশ্রাম্যে সভাত কাঞ্চিত্রপেয়তুঃ ॥ ৪ ॥
॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ যদ্যপিপুজনিষ্যতি তথাপিত্বং স্থাং বংস্যাম অহন্ত ন বাসং
করিষ্যামি শশুর গৃহবাস্যানীচতা বহুরাং ॥ ৩৬ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকতীয়ে ভারতভাবদীপে একষঠিতমো-

इश्राजः ॥ ७३ ॥

এত দেব সমর্থয়লল উবাচ যথেতি— ॥ ১ ॥ ২ ॥ ও ॥ সভাং অটমানানাং অমাপনয়ন বোগ্যস্থান বিশেষং, পাঠাপ্তরে—উপোষতুঃ

তাং সভা মুপসংপ্রাপ্য তদা স নিষ্ধাধিপঃ। रेवर्ष्डा महित्जा बाका नियमाप महीजला । ৫ । म रेव विवरक्का # विकरिंग मिलनः भार खुर्खार्क छः। দময়ন্ত্যা সহ আন্তঃ সুম্বাপ ধরণীতলে ॥ ৬ ॥ দময়ন্তাপি কল্যাণী নিদ্রয়াপহ্নতা তত:। সহসা তুঃখ মাসাদ্য স্থকুমারী তপস্থিনী । ৭ । স্থায়া দময়ন্ত্রান্ত নলো রাজা বিশাস্পতে!। - শেকোন্মথিতচিত্তাত্মা ন স্ম শেতে যথা পুরা ॥ ৮ ॥ স্তভ্রাজ্যপহরণ্ সুহ্রত্যাগঞ্চ সর্বশঃ। বনে চ তং পরিষংস প্রেক্ষ্য চিন্তা মুপেয়িবান্ ॥ ఏ॥ "किং बु स्य गानिमः कृषा किः बु स्य गानिकृष्य ।। কিং মু মে মরণং শ্রেয়ঃ পরিত্যাগো জনস্য বা । । ১ ।। মা মিয়ং হামুরকৈবং দুঃখ^ প্রাপ্নোতি মৎক্তে। মদিহীনা স্থিয়ং গচ্ছেৎ কদাচিৎ স্বন্ধন প্রতি॥ >>॥ ময়ি নিঃসংশরং ছুখ মিয়ং প্রাপ্সাতামুব্রতা। উৎসর্গে স্পায়ঃ স্যাভু বিন্দেতাপি স্থাং কচিৎ" – ১২ ॥ স বিনিশ্চিত্য বছধা বিচার্য্য চ পুনঃ পুনঃ। উৎসর্গং মন্যতে শ্রেয়ো দময়ন্ত্যা নরাধিপ। ॥ ১৩॥ নচৈষা তেজহা শকা। কৈ শিচন্ধয়িত্ৎ পথি। যশবিনী মহাভাগা মন্তক্তেয়ং পতিব্ৰতা ॥ ১৪॥ এব॰ তদা তদা বৃদ্ধি দ্যয়ন্ত্যাৎ নাবৰ্তত। किमा कुके जारवन मगन्न हो। विमर्कात ॥ ३०॥

উপেত্য বাসং চক্রতু: ॥৪॥৫॥ বিকট: কট স্থাসনং ভদ্রছিত: অভএব পাংস্গুটিত:॥৬॥৭॥৮॥ পরিঃসং কলিনা বন্ত্রাপহরণাদি ফ্লেশ্॥৯॥ জনস্য পরিশেষাভার্ষ্যায়া এব॥১১॥১২॥১৩॥,৪॥ দময়স্তাং বিষয়ে

^{* &}quot;সচৈকবন্ত্রে। মলিনো বিকটঃ পাংশুগুণিতত" ইতি ক পুস্তুকে পঠ্যতে ধ-পুস্তুকে চ।

সোহ্বস্ত্রতামাত্মশুচ তদ্যাশ্চ প্যেকবস্ত্রতাম্। চিন্তয়িত্বাহধ্যগান্তাজা বস্ত্রাদ্ধস্যাবকর্ত্তনম্ ॥ ১৬॥ কথ^ বাসো বিকর্ত্তেরং ন চ বুধ্যেত মে প্রিয়া। বিচিক্ত্যৈবং নলো রাজা সভাং পর্য্যচরক্তদা। ১৭। পরিধাবর্থ নল ইতদেত্ত ভারত।। আসসাদ সভোদেশে বিকোষং খড়গমুক্তমম্। ১৮॥ তেনার্দ্ধং বাসসন্দিছত্ত্ব। নিবস্য চ পরস্তুপঃ। স্থপ্য মুৎস্ক্তঃ বৈদ্ভীৎ প্রাদ্রবদগতচেতনাম্। ১৯॥ ততো নিরুত্তহৃদয়ঃ পুনরাগম্য তাং সভায়। দময়ন্তীং তদা দৃষ্টা রুরোদ নিষধাধিপঃ॥ ২০॥ এযাং ন বাযুর্ন চাদিত্যঃ পুরা পশ্যতি মে প্রিয়াম্। সেয়মদ্য সভামধ্যে শেতে ভূমা বনাথবং॥ ২১॥ ইয়ং বস্ত্রাবকর্ত্তেন সংবীতা চারুহাসিনী। উন্মন্তেব বরারোহা কথং বুদ্ধু । ভবিষ্যতি !—; ২২॥ কথ্মেক। সতী ভৈমী ময়া বিরহিতা শুভা। চরিষ্যতি বনে ঘোরে সুগব্যালনিষোবতে ॥ ২৩॥ আদিত্যা বসবো ৰুদ্রা অশ্বিনৌ সমৰুকাণে।। রক্ষম্ভ ত্বাং মহাভাগে ! ধর্মেণাসি সমারতা''॥ ২৪॥ এবমুক্তা প্রিয়াং ভার্য্যাং রূপেণাপ্রতিমাৎ ভুবি। কলিনপেহ্নতজ্ঞানো নলঃ প্রাতিষ্ঠতুদ্যতঃ॥২৫॥ গত্বা গত্বা নলো রাজা পুনরেতি সভাং মুছ:। আক্লয়সাণঃ কলিনা গৈীহ্লদেনাবক্লয়তে॥ ২৬॥

ন্ব্তিত নির্দ্তাসতি, বিসর্জনেই ভূদিতি শেষঃ ॥১৫॥১৬॥১৭॥১৮॥ নিবস্য পরিধায়॥ ১৯॥২০॥২১॥২২॥২৩॥২৪॥২৫॥২৬॥ দিবেব হৃদয়ং তস্য ছুঃথিতস্যাহ্ভবন্তদা।
দোলেব মুছ রায়াতি যাতি চৈব সভাং প্রতি॥ ২३॥
সোহবক্ষস্ত কলিনা মোহিতঃ প্রাদ্রবলাঃ।
মুপ্তা মুংস্কা তাশ ভার্যাং বিলাগ করুণণ বছ॥ ২৮॥
নন্টাল্মা কলিনা স্পৃষ্টস্তভদিগণয়নূপঃ।
জ্বগানৈকাং বনে শুন্যে ভার্যামুৎস্ক্র ছুঃথিতঃ"—॥ ২৯॥
ইত্যারণাকে পর্মণি নলোপাধ্যানপর্কিনি নলস্য দময়ন্তীত্যাগে
দি-ষ্টিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৬২॥

বৃহদধ উনাত।
অপক্রান্তে নলে রাজন্। দময়ন্ত্রী গতক্লমা।
অবুধ্যত বরারোহা সন্ত্রন্তা বিজনে বনে ॥ ১ ॥
অপশ্যমানা ভর্তারং শোকছুঃখসমন্ত্রিতা।
আক্রোশছুকৈঃ সন্তন্তা '্মহারাজেতি নৈষধম্ ॥ ২ ॥
হা নাথ। হা মহারাজ। হা স্থামিন্। কিং জহাসি মাম্—
হা হতান্মি বিন্টান্মি ভীতান্মি বিজনে বনে ॥ ৩ ॥
নন্তু নাম মহারাজ। ধর্মজ্ঞঃ সত্যবাগসি।

11 39 11 44 11 59 11

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধনি নৈলকগুরে ভারত ভাবদীপে দ্বি-যক্তিতমো-২ধ্যয়ঃ ॥ ৬২ ॥

কথমুক্তা তথা সভাং স্থামুৎস্জ্য কাননে ?**—॥ ৪॥

e(

অপেতি—॥ ১। ২॥ ৩॥ তথাসতাং যৎ স্বরন্ধরে উক্তং বাং নতা কা মীতি।। ৪॥

139

^{* &}quot;কাননে" ইত্যত্ত—" মা গাতঃ" ইতি ক-পুস্তকপা১ঃ ১

কথ মুৎস্ক্য গভাগি দক্ষা ভাগ্য মনুত্রতাস্। বিশেষতোহনপক্কতে পরেণাপক্কতে সতি॥ ৫ ॥ শক্যদে তা গিরঃ সম্যক্ কর্ত্ত্রণ ময়ি নরেশ্বর !। यां एउवा - लांकशालानाः मित्रां कथिजाः श्रुता । ७॥ নাকালে বিহিতো মৃত্যু শ্বত্যানাং পুরুষর্যভ।। যত্ৰ কান্তা বুয়োৎস্ফা মুহূৰ্ত্ব মপি জীবতি॥ १॥ পর্যাপ্তঃ পরিহাসোহয় মেতাবাৰ পুরুষর্যভ!। ভীতাহহ মতিত্বর্দ্ধর্ব ! দর্শরাত্মান মীশর ! 🛭 🗠 🛭 पृশारम पृभारम तोजराय पृरखे। श्री देनस्थ ! l আবার্য্য গুলৈ রাস্থান কিং মাং ন প্রতিভাষ্যে ?—॥ ৯॥ নৃশংসং বত রাজেঞা। মনামেবংগতামিহ। বিলপত্তীং সমাগ্রম্য নাশ্বাসয়সি পার্থিব !॥ ১০॥ ন শোচামাহমান্তানং ন চান্যদপি কিঞ্চন। কথ শু ভবিতাদ্যেক ইতি ত্বাৎ নূপ! শোচিমি—॥ ১১॥ कथः जू ताज्ञ स्वितः कृषितः खमकर्षितः। সায়াহে বৃক্ষমূলেযু মা মপশ্যন্ ভবিষ্যি ?"-॥ ১২ ॥ ততঃ সা তীব্রশোকার্ত্তা প্রদীপ্তেব চ মন্ত্রানা। ইতশ্চেত্ৰণ্ড ৰুদতী পৰ্য্যধাবত ছঃখিতা॥ ১৩॥ মুহু ৰুৎপততে ৰালা মুহু: পততি বিহ্বলা। মুছ রালীয়তে ভীতা মুছ: ত্রোশতি রোদিতি!॥ ১৪॥ *(অতীবশোকসম্ভপ্তা মুহ্ছ র্নিশ্বস্য বিহ্বলা। উবাচ ভৈমী নিশ্বস্য রুদত্যথ পতিব্রতা)॥ ১৫।

অনপ্রতুত্ অপকারাহভাবে ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ শৌ্চিমি শৌ্চামি ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ মহ্লানা শৌ্কেন ॥ ১৩ ॥,১৪ ॥ ১৫॥

^{* &#}x27;' সা তীব্ৰ শোকসন্তথা মুহুৱাখনা ছংখিতা। উবাচ ভৈমী নিষ্কান্ত। রোদমানাপতিব্রতা" ইতিক পুস্তকীয় পাঠ পরিপাটী।

' যস্যাভিশাপাদ্বঃখার্ত্তো ছুঃখং বিন্দৃতি নৈষধঃ। তস্য ভূতস্য নো ছুঃখাৎ ছুঃখমভাধিকং ভবেৎ॥ ১৬॥ অপাপচেত্রস্প পাপে। য এবং কুত্রবান্ত্রন্ম। ভন্মাদঃখতরং প্রাপ্য জীবত্বস্থখজীবিকাম্"—॥ ১৭॥ এবস্ত বিলপন্তী সা রাজ্ঞো ভার্যাা মহাত্মনঃ। অন্বেষমানা ভর্তারং বনে শ্বাপদদেবিতে॥ ১৮॥ উন্মন্তবন্ধীমস্থতা বিলপন্তী ততম্বভঃ। হা হা রাজন্নিতি মুহ্ রিতশ্চেতশ্চ ধাবতি॥ ১৯॥ 🟶 তাংক্রন্দমানা মতার্থ৲ কুররী মিৰ বাশতীম্। কব্ৰুণণ বহু শোচন্ত্ৰীণ বিলপন্ত্ৰীণ মুক্তমু হৃঃ†॥২०॥ সহসাভ্যাগতাং ভৈমী মভ্যাসপরিবর্ত্তিনীম্। জ্ঞাহাইজগরো আহো মহাকার: কুধান্নিতঃ 🛭 ২১ 🛭 শা অস্যমানা আহেণ শোকেন চ পরিপ্ল তা। নাক্সানং শোচতি তথা দ্বা শোচতি নৈব্ৰম্ ॥ ২২ ॥ ''হা নাথ! মা সিহ বনে গ্রস্যমানা মনাথবৎ। প্রাহেণানেন বিজনে কিমর্থং নানুধাবসি ?—॥ ২৩॥ কথ~ ভবিষাসি পুনর্শ্বা মনুশৃত্য নৈষধ !। কথং ভবান্ জগামাহ্দ্য মা মুৎস্ক্য বনে প্রভো?—॥ ২৫॥

কলিং শপতি যসোতি—অভিশাপাৎ রশাদ্বোৎ, নো হঃখাৎ অন্মৎ সম্বন্ধিহঃখাৎ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ বা শতীং ক্রোণন্তীং ॥ ২০ ॥ প্রাহঃ সর্পঃ,
অজগরঃ তদ্বৎ স্কুলঃ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ বু দ্বাভাদ্ধিং সাং বিনা কথং
ভবিষাসি কথং জীবিষাসি ? ॥ ২৪ ॥

 ^{* &}quot; সংশুষ্য মানা মতার্থম্ " ইতি ক—
 † " পুনঃ পুন রিডি" ক-গ-পুশুকৌ।

🤻 পাপান্ম ক্রঃ পুন র্লক্ষ্য বুদ্ধিঞ্চেতো ধনানি চ। অন্তেম্ভ তে কুধার্ত্তস্য পরিষ্কানস্য নৈষধ ! । কঃ শ্রমং রাজশানেূল। নাশয়িষাতি তেহনছ।"॥ ২৫॥ ততঃ কশ্চিন্ম্গব্যাধে। বিচরন্ গছনে বনে। ' আক্রন্দমানাং সংশ্রুত্য জবেনাহভিসসার হ॥ ২৬॥ তাং ভু দৃষ্ট্যা তথা গ্রন্তা মুরগেণায়তেক্ষণাম্। ত্বরমাণো মৃগব্যাধঃ সমভিক্রম্য বেগতঃ ॥ ২৭ ॥ মুখতঃ পাটয়ামাস শস্ত্রেণ নিশিতেন চ। নির্বিচেফং ভুজঙ্গং তং বিশস্ত মৃগজীবনঃ ॥ ২৮ ॥ মোক্ষয়িত্বা স তা ব্যাধঃ প্রকাল্য সলিলেন হ। সম। শ্বাস্থা কুতাহারা মথ পপ্রছ ভারত। ॥ ২৯॥ 'কেন্দ্র ত্বন্দ্র মুগশাবাকি। কথঞাভ্যাগত। বনম। কথঞ্জেদং মহৎ রুদ্ধু প্রাপ্তবত্যসি ভাবিনি ?'—॥ ৩०॥ দময়ন্তী তথা তেন পৃচ্চ্যমানা বিশাম্পতে !। সর্বামেতদ্বধার্ত্ত মাচচক্ষেহ্স্ত ভারত।॥ ৩১॥ তা মর্দ্ধবস্ত্রসংবীতা প্রীনশ্রোণিপয়োধরাম্। স্থকুমারাহনবদ্যাঙ্গীণ পূর্বচক্রনিভাননাম্॥ ৩২॥ অরাল পক্ষনয়নাও তথা মধুরভাষিণীয়। লক্ষ্যিত্ব। মূগবাধিং কামস্তা বলা মীযিবান্॥ ৩৩॥

॥२৫॥ ২৬॥ ২৭ ॥ বিশস্য বিদার্য্য ॥ ২৮॥ ২১ ॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ অরাআনি কুটিলানি শোভমানানি বা পক্ষাণি নয়ন প্রান্তকেশাঃ যয়োস্তাদৃশে
নয়নে যস্তাইতি তথা॥ ৩৩॥

^{*} শাপামুক্ত ইতি ক—

তামেবং শ্লক্ষা বাচা লুককো মৃত্বপূর্বয়।

সাস্থ্যামাস কামার্ত্ত স্থাত ভাবিনী॥ ৩৪॥

দময়ন্তাপি ত৲ তুই মুপলভা পতিব্রতা।
তীব্ররোষসমাবিষ্ঠা প্রজন্ধালেব মন্ত্যুনা॥ ৩৫॥

স তু পাপমতিঃ কুকঃ প্রধর্ষয়িতু মাতুরঃ।
তুর্ক্ষরাস্ত্রকরামাস দীপ্তা মগ্লিদিখামিব॥ ৩৬॥

দময়ন্ত্রী তু তুংখার্তা পা তরাজ্যবিনাক্ষতা।
অতীতবাক্ পথে কালে শশাপৈনং রুষান্ত্রিতা॥ ৩৭॥

ক্রমান্ত্রেই পততা৲ কুদ্রং পরাস্থ র্স্যুগজীবনঃ"—॥ ৩৮॥
উক্তমাত্রে তু বচনে তথাণ স মৃগজীবনঃ।
ব্যস্থং পপাত মেদিন্যা মগ্লিদক্ষ ইব দ্রমঃ—॥ ৩৯॥

ইত্যারণ্যকে পর্কানি নলোপাখ্যানপর্কানি দময়ন্ত্রীব্যাধশাপে।

বি-ষ্টিতমোহধায়ঃ॥ ৬৩॥

॥ ৩৪ ॥ মহানা ক্রোধেন ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ পতি রাজ্যবিনাক্তা—পত্যা রাজ্যে নচ রহিতা, অতীত বাক্পথে বাচাপ্যনিবার্য্যে সতি, কালে ধূম বর্ণে-ব্যাধে॥ ৩৭ ॥ পরাস্থঃ গাতপ্রাণঃ॥ ৩৮ ॥ বাস্থ বিগাত প্রাণঃ॥ ৩৯

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগ'য়ে ভারত ভাবদীপে ত্রি-য**টি** তমোহধ্যায়ঃ॥৬৩॥

> * ২থাছ মিতি ক— † ভয়া ই,ত ক— ‡ '' অসরগ্রস্ত দময়ন্তী মোচনে' ইভি ঘ—

इश्मयं देगांठ।

সা নিহত্য মূগবাধং প্রতম্ভে কমলেকণা। বনং প্রতিভয় শূন্যং ঝিল্লিকাগণ নাদিতম্ ॥ ১ ॥ मि~र-बीপि-क्क-बााघ-महियक मृता यू जम्। নানাপক্ষিপণাকীর্ণ্ স্লেচ্ছতক্ষরসেবিতম্ ॥২ ॥ म्मानरवनुधवाश्वयः जिन्द्युरकत्रृप-किश्खरेकः। व्यर्क्त्राविष्ठभञ्चन मान्द्रिक मनाव्यत्यः॥ ७॥ জয়ুান্তলোধ খদির শালবেক্ত সমাকুলম্। পদ্মকামলক্ষ্ণক কদ্যোত্যুরার্তম্ ॥ ৪ ॥ वहतीविवमञ्चन नातारिक गमाकूलम्। পিয়াল-ডাল-খর্চ্ছুর-হরীতক-বিভীতকৈঃ 🛚 ৫ 🕦 নানাধাতুশতৈ ৰ্কান্ বিবিধানপি চাহ্চলান্। নিকুঞ্জান্ পক্ষিসজ্জ্ উন্ই দ্রীক্ষান্ত দর্শনাঃ ॥ ৬ ॥ নদীঃ সরাৎসি বাপীশ্চ বিবিধাংশ্চ মুগছিজানু। †সা ৰহুন্ ভীমৰূপা~ক পিশাচে।রগ-রাক্ষসান্ ॥ ৭ ॥ পৰ্লানি ভড়াগানি গিরিকুটানি সর্বশং। मतिर्जा नियातां राष्ट्रिक प्रमाश्कुष्ठपर्मानाम् ॥ ৮॥ यूथरमा प्रमुदम उज विष्काधिय निस्ती। (মহিষাংশ্চ বরাহাংশ্চ ঋক্ষাংশ্চ বনপল্লগানু : ॥ ৯॥ তেজ্বসা যশস! লক্ষ্যা স্থিত্যা চ পর্য়া যুতা। বৈদৰ্ভী বিচরত্যেকা নল মন্বেষতী তদা। ১০॥ সেতি—প্রতিভয়ং ভীষাং, ঝিলিকা তীক্ষণকঃপতঙ্গ বিশেষঃ । ১॥২॥ 101810101011011011011011

^{* &}quot; পরি সং ঘুষ্টান্" ইতি ঘ—

† " স্বত্ নি তি" ক—

‡ " মহিংবান্ বরাহান্ গোমা ূ নৃক্ষ বানর পল্লগান্" ইতি ক—

ন,বিভাৎ সা নুপস্থতা ভৈমী তত্ৰাথ ক্যাচিৎ। দারুণা মটবীং প্রাপ্য ভর্কুবাদনপীডিতা ॥ ১১ ॥ বিদর্ভনয়া রাজন্ ! বিললাপ স্বত্বঃথিতা। ভর্তুশোকপরীতাকী শিলাতল মথাশ্রেতা ॥ ১২ ॥ मब्द्रकावार। प्राचात्रकः । प्रकारकाः । देनस्थानाः कनासितः । । क न ताजन ! भरा १ माना विस्का विजय वरन !--॥ >०॥ অশ্বমেধাদিভি বীর ! ক্রতুভি র্ভারদিক্ষিণে:। কথ মিষ্ট্র। নরবাছে ! ময়ি মিথ্যা প্রবর্ত্তমে ?॥ ১৪॥ यञ्जराञ्जः नतत्वर्षः । मश्ममकः महाक्राटः ।। স্মৰ্ভ্ৰমহ সি কল্যাণ বচনং পাৰ্থিবৰ্ষভ ! ॥ ১৫॥ यक्काञ्च विद्रेश इं रेमः मभीत्य उव कृमिय!। মৎসমক্ষং যত্নকঞ্চ ভদবেকিত মহ সি—॥ ১৬॥ চত্মার একতো বেদাঃ সাক্ষোপাঙ্গাঃ সবিস্তর।:। স্বধীত। মনুজব্যাঘ্র ! সত্যমেকং কিলৈকতঃ—॥ ১৭ ॥ তন্মাদহ' দি শত্রুত্ব ! সত্যুণ কর্ত্তুং নরেশ্বর !। উক্তবানসি যদ্বীর। মৎসকাশে পুরা বচঃ ॥ ১৮॥ হা বীর। নল। নামাহং নষ্টা কিল তবানঘ।। অস্যা মটব্যাং ঘোরায়াং কিং মাং ন প্রতিভাষ্ঠে ?—॥ ১৯॥ कर्षत्र एका मार्क द्रोटिया वर्ग खारमा। माझनाक किः। অর্ণারাট , কুধাবিকঃ কিং মাং ন আছু মহ সি ? —। ২০ ।

॥ ১১ ॥ ১२ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ अवनावि भी मूर्णः, मार ममाहिनः, कर्षव्राक्त राष्ट्राकि ॥ २० ॥

^{*} ভক্ষত্যেষ্মা মিডি ক-খ-গ-পুস্তকা:--

ন মে বুদন্যা কাচিদ্ধি প্রিয়াহস্তীত্যব্রবীঃ মৃদা। তা মৃতাং কুরু কল্যান। পুরোক্তাং ভারতী নুপ।। ২১॥ উন্তা^ বিলপন্তী^ মাং ভার্যামিফীং নরাধিপ !। ঈপ্সিতামীপ্সিতোহসি ত্ব- কিং মাং ন প্রাক্তভায়সে ?—॥ ২২॥ কুশাং দীনাপ বিবর্ণাঞ্চ মলিনাপ বস্তুধাধিপ।। বস্ত্র র্দ্ধপ্রার্ভামেকাং বিলপন্তী মনাথবং ॥ ২৩॥ যুথভ্রফীমিবৈকাপ মাপ হরিনীং পৃথুলোচন!। ন মানয়দি মামার্যা ! রুদতীমরিকর্ষণ ! ॥ ২৪ ॥ মহারাজ! মহারণ্যে অহ মেকাকিনী দতী। দময়ন্তাভিভাষে ত্বা^ কিং মাং ন প্রতিভাষসে ?—॥ ২৫॥ কুলশীলোপসম্পন্নং চারুসর্কাঙ্গশোভনমু। নাদ্য স্বামনুপশ্যামি গিরাবিন্মিলরে। ত্র । । ২৫॥ বনে চাস্মিমহাঘোরে সিংহ্ব্যাভ্রনিষেবিতে। শরান মুপবিষ্টং বা স্থিতং বা নিষধাধিপ।॥ ২৭॥ প্রস্থিত বা নরপ্রেষ্ঠ ! মম শোকবিবর্দ্ধন !। কন্নপুচ্ছামি ছুঃথাৰ্তা স্বদর্থে শোককর্ষিত। ? ॥ ২৮॥ ক্ষিদ্ ইস্কু য়ারণ্যে সঙ্গত্যেহ নলো নূপঃ। *কো নুমে বাথ প্রফীব্যো বনেহিন্মিন্ প্রস্থিতং নলম্ ?—॥ ২৯॥ অভিৰূপং মহাত্মান প্ৰব্যুহ্বিনাশনম্। য মন্বেষসি রাজানং নলং পদ্মনিভেক্ষণম্।। ৩০ ॥ অরং স ইতি কম্যাদ্য শ্রোব্যামি মধুরাং গিরম্ !—। অরণ্যরাডয়ং শ্রীমাং শচতুর্দ্দ্ণষ্ট্রো মহাহনুঃ॥ ৩১॥ ॥२५॥ ३२॥२७॥ २८॥२०॥ २७॥२०॥ २৮॥२०॥ भेत्रतृहिः भेट সৈন্যান, পরবাসনে ভিপাচে—পরেষাং ছঃখস্য নাশন্॥ ৩০॥

^{* &#}x27;' মানাई। কদতী মরিকর্ষণ !" ইতি ক— * '' কোন্ত মে কথ্যেদদা বনেহ সিন্ বিষ্ঠিতংনলণ্ ?" ইতি চ ক—

শ দি লোহভিমুখোহভ্যেতি ব্রজাম্যেন মশক্কিতা 👫। ভবান মৃগাণা মধিপ স্তুমিমিন্ কাননে প্রভুঃ ॥ ৩২ ॥ বিদর্ভরাজতনরাং দময়ন্তীতি বিদ্ধি মান্। নিষধাধিপতে ভার্মাণ নলস্যামিত্রখাতিনঃ॥ ৩০॥ পতি মন্বেধতীমেকাং ক্লপণাং শোককর্ষিতাম। আশ্বাসয় মূগেন্দ্রেছ যদি দুক্তস্থা নলঃ ॥ ৩৪॥ অথ বা ত্বং বনপতে ! নলং যদি ন শৎস্সি। मा । यो पर मृश्टार्क । द्वः था पत्रा विस्मा हर ॥ ००॥ 'শ্রুত্বারণ্যে বিলপিতং মামেষ মুগরাট্ স্বয়ম্ 🕇 । इयोगियाः अंक्रिमिना मार्राशः माग्रज्ञाम्॥ ७०॥ ইম৲ শিলোচ্চয়ং পুণ্যৎ শৃক্তৈ র্বান্থভিক্তিট্র তৈঃ। विवाकि खिवियातिक देवंकवरेर्नियाति देवः ** ॥ ७१ ॥ নানাধাতুসমাকীৰ্ণ বিবিধোপলভূষিত্যু ৷ অস্যারণাস্য মহতঃ কেতুভূত মিবে প্রিত্য ॥ ১৮ ॥ मि॰ इ-मार्फ ल-मा छक्र-वत्ता इक मृगायू छम्। পতক্রিভ ব্রন্থ সমন্তাদনুনাদিতম্। ৩৯। কিংশুকাশোকবকুল পুনাগৈরুপশোভিতম। কর্নিকার-ধবপ্লকৈঃ স্থপুপৈরুপশোভিতম্। ৪০॥ मितिष्ठिः मिरिक्साजिः मिश्रदेवक ममाकूनम्। নিরিরাজমিমণ তাবৎ পৃচ্চামি 🕆 নৃপতিং প্রতি । ৪১॥ 11 05 11 08 11 00 11 08 11 06 11 00 11 06 11 105 11 80 11 85 11

^{* &}quot; প্রকাশমোন মশাক্ত।" ইতি কঃ।

† " মামেষ মৃগরাড স্থান্"—ইতাত্র " নম। মাশ্বাসয়তায়ং" ইতি ঘ—

‡ " যাত্যেতাং মৃষ্টসলিলান্" ইতি ক—" স্থান্তাতাং মৃষ্টসলিলান্" ইতি ক—

** " বিরাজন্তি নিশ্পাগিত রৈ কবলৈ মনোহরৈঃ" ইতি ক—

†† " প্রকামি" ইতি ক—

ভগবন্নচলশ্রেষ্ঠ ! দিব্যদর্শন ! বিশ্রুত ! । শ্রণ্য! वङ्कला। । नमर्छर्छ महीधतः। ॥ ४२ ॥ প্রণমে ত্বাভিগম্যাহং রাজপু**জ্ঞী**ৎ নিবোধ মাম্। রাজ্ঞঃ সুষাং রাজভার্যাৎ দময়ন্তীতি বিশ্রুতাম্॥ ৪৩ । রাজা কির্ভাধিপতিঃ পিতা মম মহারথঃ। ভীমো নাম ক্ষিতিপতিক্ষাতুর্বর্ণ্যমা রক্ষিতা। ৪৪॥ রাজ হয়।খমেধানাং * জতুনাং দক্ষিণাবতাম। আহত্তা পার্থিবশ্রেষ্ঠ: পৃথুচার্ব্বঞ্চিতেক্ষণ: ॥ ৪৫ । ব্ৰহ্মণ্যঃ সাধুর্ত্তশ্চ সতাৰাগনস্থাকঃ। শীলবান্ বীৰ্য্যসম্পন্ন: পৃথু শীৰ্দ্ধৰ্যিক চুচিঃ ॥ ৪৬॥ সম্যুগ গোপ্তা বিদর্ভাগাং নিজি তারিগণঃ প্রভুঃ। তস্ত্র, মাং বিদ্ধি তনয়াং ভগৰ প্রামুপস্থিতান্ ॥ ৪৭ ॥ নিষ্ধেষু মহারাজঃ শ্বশুরো মে নরে। ত্রমঃ। গুহীতনামা বিখ্যাতো বীরসেন ইতি স্ম হ॥ ৪৮। তস্থ রাজ্ঞঃ স্থতো বীরঃ শ্রীমান্ সত্যপরাক্রমঃ। ক্রম প্রাপ্ত^ পিতৃঃ বং যোরাজ্যং সমনুশান্তি হ। ৪৯ । নলো নামারিহা শ্যামঃ পুণালোক ইতি শ্রুতঃ। ব্ৰহ্মণ্যে বেদৰিদ্বাগমী পুণাকুৎ সোমপোহগ্নিমান্॥ ৫০॥ যন্তা দাতা চ যোদ্ধা চ সমাকৃ চৈব প্রশাসিতা। তম্ম মা মবলাং শ্ৰেষ্ঠাং বিদ্ধি ভাৰ্য্যামিহাগতাম্। ৫১। ত্যক্তপ্রিয়ং ভতু হীনা মনাথাং ব্যসনান্বিতাম্। অবেষমাণাং ভর্তারং ত্ব॰ মাং পর্বতসন্তম !। ৫২ ।। ॥ ४२ ॥ ४० ॥ ४८ ॥ ३४ ॥ उत्ताराः — उत्ति वात्रा कार्टी त्रम रेविनक কর্মণি পরমান্তনি বা সাধু: ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ অঘিমান্ " নিজ্ঞা-(यारशमञ्जू मर्क रेमवाधि विरुक्त मूना इंडार्थः ॥ ८० ॥ ८० ॥ ८२ ॥ * ' বাজপেয়াশ মেধানা মিতি" কঃ।

*থ মুল্লিখন্ডি রেতৈর্ছি ত্বয়া শৃঙ্গশতৈনৃপিঃ। কচিদ, ফৌহচলভোষ্ঠ। বনেহিমান্ বা নলে। নুপঃ ?--॥ ৫৩ ॥† शक्कित्विकित्मा क्षीमान् नीर्घवाङ तमर्वनः। বিক্রান্তঃ সন্ত্রান্ বীরো ভর্তা মম মহাযশাঃ॥ ৫৪॥ নিষধান। মধিপতিঃ কচ্চিদ্দু উন্তুরা নলঃ ?—। কিৎ মাৎ বিলপতী মেকাং পর্বতভোঠ। বিহ্বলাম। ৫৫॥ রিরা নাখাসয়স্যদ্য স্বাং স্থতামিব ছুঃখিতাম্ !—। বীর ! বিক্রান্ত ! ধর্মাজ্ঞ ! সতাসন্ধা ! মহীণতে ! ॥ ৫৬ ॥ যদ্যস্থিন বনে রাজন ! দশ্যাত্মান মাত্মনা। কদা স্থাসিগ্ধগন্তীরাৎ জীমৃতস্বনসন্নিভাগ্ ॥ ৫৭ ॥ শোষ্যামি নৈষ্ধস্যাহ্ং বাচং তা মমুতোপমাম। বৈদৰ্ভীত্যেব বিষ্পান্তীং শুভাং রাজ্ঞো মহাক্সনঃ॥৫৮॥ আসারসারিণীমূদ্ধাং মম শোকবিনাশিনীম। ভীতঃ মাশ্বাসয়ত ! মান নুপতে ! ধর্মবৎসল !"—॥ ৫৯॥ ইতি সা তং গিরিত্রেষ্ঠ মুক্ত্রা পার্থিবনন্দিনী। দমরতী ততো ভূরো জগাম দিশমুন্তরামু॥ ৬০॥ সাগরা ত্রীনহোরাতানু দদর্শ পর্মাঞ্চনা। তাপদারণ্যমত্লং দিব্যকাননশেভিতম ॥ ৬১॥ বশিষ্ঠভূষতিদমৈ স্তাপনৈরুপশোভিতম।

নিয়তৈঃ সংয়তাহারৈ দ্মশোচস্ম ন্তিওঃ ॥ ৬২ ॥ ।।
॥ ৫৩ ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥ ৫৬ ॥ ৫৭ ॥ ৫৮ ॥ আমার সারিণীং বেদাহুগাং
সভ্যামিতার্থঃ, ঋদামদানাং, আখাসরতেতি বহুত্বং বক্তুবৈক্লব্যান্তান্ত্র মানহম্ দোষভীত্যঃ '' আখাসর চ'' ইতি পঠিত কেচিং তর সাঞ্জ্য অসপ্তাদায়িত্বং ॥ ৫৯ ॥ ৬০ ॥ ৬১ ॥ ৬২ ॥

^{* &}quot; সমুদ্রিখান্তঃ " ইতি পুশুকান্তর পাঠঃ।

† দাৰণেনল ইতি ক ঘ পুশুকো।

Î আশ্বাসয় চ ইতি ক—

অব্তক্ষোয়ুভকৈশ্চ পর্ণাহারৈস্তবৈষ চ। # (জিতেন্দ্রিয়াহাভাগৈঃ স্থর্গমার্গদিদৃক্ষ্ভিঃ) ॥ ৬৩॥ বল্কলাজিনস্থীতৈমু নিভিঃ সংযতেন্দ্রিঃ। তাপসাধ্যুষিতং রুমাং দদশীআমমগুলম্॥ ৬৪ ॥ নানামূগগণৈজু কি শাখামূগগণাযুত্য। তাপসৈঃ সমুপেতঞ্চ সা দৃষ্টে ব সমাশ্বসং॥ ৬৫॥ স্বজ্ঞঃ স্থকেশী সুশ্রোণী স্থকুচা স্থলিজাননা। বৰ্চস্থিনী সুপ্ৰতিষ্ঠা স্থানতায়তলোচনা। ৬৬। সা বিবেশা শ্রমপদং বীরদেনস্কৃতপ্রিয়া। যোষিদ্ৰত্নং মহাভাপা দময়ন্তী তপশ্বিনী॥ ৬३॥ সাভিবাদ্য তপোর্জান্ বিনয়াবনতা স্থিতা। স্থাগত ন্ত ইতি প্রোক্তা তৈঃ সর্কৈ স্তাপদোন্তগৈঃ 🦥 🛚 ৬৮ ॥ পূজাঞ্চাদ্যা যথান্যায়ং কৃত্বা তত্র তপোধনাঃ। আস্যতামিত্যথোচু স্তে বুহি কিং করবামহে॥ ৬৯॥ তানুবাচ বরারোহা ' কচ্চিন্তগবতামিহ— তপক্তগ্নিষু ধর্শ্বেষু মৃগপক্ষিষু চানঘাঃ "৭০ ॥ কুশল " বো মহাভাগাঃ স্বধর্মাচরণেযু চ ?"—। তৈরুক্তা ' কুশলং ভচ্চে! সর্বত্রেতি যশস্থিনি!॥ ৭১॥ त्हि गर्न्वानेयमान्नि ! का च्र किश्व िक विधिन ?। দুফৌুব তে পরং ৰূপং ছ্যাতিঞ্চ পরমামিহ॥ ৭২॥ অৱক্তিরিতি সর্বং ব্যক্তাং সাবধারণ মিতি ন্যায়েন অস্ব মাত ভক্তে বিভাগঃ ॥ ৬৩॥ ৬৪॥ ৬৫॥ স্থানিকান। শোভন কর যুক্ত মুখা, বচাস্থনাধ্যজেন তেরসামুক্তা, মুপ্রতিষ্ঠা মুদ্ধনা প্রতিতিষ্ঠতামিরিতি প্রতিষ্ঠণ দে। জঘন বাসী॥ ৬৬ ॥ বীরদেন স্তুত্স্য নলস্য প্রিয়।॥ ৬৭ ॥ ৬৮ ॥ ৬৯ ॥ ৭০॥ ৭১ ॥ 11 92 1

শ নান্ত্যেষ্য শ্লোক ভাগো ঘ পুস্তকে।
 শ ভাপ দেশ্চনা ইতি ক ঘ পুস্তকদ্বর পাতে।

বিস্মরোনঃ সমুৎপন্নঃ সমাশ্বসিহি মা শুচ:। व्यक्षार्थायः (प्रवी व मुठारहार्या महीकृतः ॥ १०॥ অস্ত্র-চ নদ্যাঃ কল্যানি ! বদ সত্যমনিন্দিতে !"। সাহব্রবীস্তার্ষীরাই মরণাস্যাস্য দেবতা ॥ ৭৪॥ न हालामा शिदतर्विक्षा देनव नुमान्ह (मव्छा । . মারুষীং মাং বিজানীত যুবৎ সর্বেত তপোৰনাঃ ॥ ৭৫ ॥ বিস্তরেণাভিধান্যামি তমে শুণুত সর্বাশঃ— विद्धं महिलाला जीरमानाम महीलिङि ॥ १७॥ ত্রা মাং তর্য়াশ সর্ফো জানীত দিজস্তুমাঃ।। নিষ্ধাধিপতি ধীনাললো নাম সহায়শাং॥ ৭৭ ॥ বারঃ সম্প্রামজিদিদান মম ভর্তা বিশাম্পতিঃ। (मय डा छा छन भरता विका डिजन वर्ग नः १ ५৮ ॥ গোপ্তা নিষ্ধবংশতা মহাতেজা মহাবলঃ। * সভাবান্ ধর্মা বিৎপ্রাজ্ঞঃ সভাসক্ষোহরিমর্দ্দনঃ ॥ ৭৯ ॥ ত্রন্দারে দৈবতপরং শ্রীমান্ পরপুরঞ্জরঃ। নলো নাম নুপত্রেষ্ঠো দেবরাজসমত্রুতিঃ ॥ ৮০॥ म (म छर्छ। विभागाकः श्रुर्वन्छ् रहताश्तिशा । আহর্ত্তা ক্রতুমুখ্যানাং বেদবেদাঙ্গপারগঃ॥৮১॥ সপত্নানাং মূধে হন্তা রবিসোম প্রভঃ 🕆 । স কৈন্টিলিক্তিপ্রতৈজ্ঞ রনার্থ্যে রক্কতাত্মভিঃ॥ ৮২॥ আছুর পৃথিবীপালঃ সত্যধর্মপরায়ণঃ। দেবনে কুশলৈ জি'লৈ জিতো রাজাং বস্থনি চ॥৮৩॥ 93 11 95 11 99 11 97 11 93 11 50 11 55 11 50 11

প্রাধংশ্বলিতি ক—।
 প্রাধিঃ ইতি কঃ।

তস্যু মা মবগচ্চধং ভার্য্যাৎ রাজর্ষভস্য বৈ। দময়ন্ত্ৰীতি বিধ্যাতাং ভতু দৰ্শনলালসাম্॥ ৮৪:॥ সা বনানি গিরীং শৈচব সরাশসি সরিতস্থপা। পল্পলানি চ সর্বাণি তথারণ্যানি সর্বশং॥ ৮৫॥ অবেষমাণা ভর্তার েনল > রণবিশারদম্। মহাত্মানং ক্লতাস্ত্রঞ্গ বিচরামীহ তুঃথিতা॥ ৮৬॥ কচ্ছিদ্তগবতা ব্ন্যাং তপোবনমিদং নৃপঃ। ভবেৎ প্রাপ্তো নলো নাম নিষ্ধানাং জনাধিপং ॥ ৮৭ ॥ यংকুতে ২হমিদং ব্ৰহ্মন্ ! প্ৰপন্না ভূশদাক্র বৃদ্ বনং প্রতিভয়ং ঘোরেং শার্দ্দুলমূগদেবিত্র ॥ ৮৮॥ यि किन्छिम्दरातारेख नं कक्षापि नलः नुश्य। আত্মান- শ্রেরদা যোকো দেহন্যান্য রিমেচনাৎ ॥ ৮৯॥ কো तू भ कोविष्ठनार्थ उप्रुट्ड शूक्रवर्षण्य। কথ্য ভবিষ্যাম্যদাহ্য ভতু শোক্তিপীডিতা ?"—॥ ৯০॥ তথা বিলপতী মেকা মরণো ভীমনন্দিনীয়। দময়ন্তীমথোচুন্তে তাপদাং সত্যদর্শিনঃ # ॥ ৯১ ॥ " উদর্কস্তব কল্যাণি। কল্যাণো ভবিতা শুভে।। ্বয় পশ্যাম তপদা ক্ষিপ্রং দ্রক্ষাদি নৈষধম্॥ ৯২॥ নিষ্ধানা মধিপতিং নলং রিপুনিপাভিনম্। ভৈমি ! ধর্মভূতা শশ্রেষ্ঠং দ্রক্ষ্যাসে বিগতজ্বমু ॥ ৯৩॥

াচি৪। ৮৫। ৮৬। ৮৭ । ৮৮। শ্রেনা মোকেণ যোকে। যোজিরিখ্যে

যোগবদ্দে দেহংতাজ্বামোকং প্রাজ্যে ইত্যথঃ, অন্যথা আত্মহত্যা
দোষাৎ শ্রেরো যোগো ন সংভবেৎ ইত্যর্থঃ। ৮৯। ৯০। ৯১। উন্কঃ
উত্তর কালঃ। ৯২॥ ৯১॥

^{*} সত্য থাদিনঃ ই, ত কঃ।

বিমুক্তং সর্বাপাপেভাঃ সর্বারত্মসন্মিত্য। তদেব নগরশ্রেভ: প্রশাসত সরিন্দমস্॥ ১৪॥ দ্বিষতা ওয়কর্তার প্রহ্লনাং শোকনাশনম্। পতি জক্ষাসি কল্লাণি ! কল্যাণাভিজনং নুপম্"—॥ ৯৫॥ এবনুক্তা নলদ্যেষ্টাং মহিষীং পার্থিবাত্মজান্। তাপসাত্তহিতাঃ সর্বে # সাগ্নিহোত্রাশ্রমান্তথা । ৯৬॥ সা দুষ্টা মহদাশ্চর্যাং বিশ্মিতা ছভবত্তদা। प्रमास्त्रा नवनाको वीतरमन-नृशन्न्या ॥ ৯१ ॥ " কিন্নু স্বপ্নে। ময়। দৃষ্টঃ কোহয়ং বিধিরিহাভবং। ক নুতে তাপসঃ সর্কে ক তদাশ্রমমণ্ডলম্। ৯৮। क मा श्रुगुक्रला त्रगा नानाषिक्रनिरयिका १। (নদী তে চ নগা ! হৃদ্যা ফলপুষ্পোপশোভিতাঃ)"। ১৯॥ ধ্যাত্ম চিরং ভীমস্থতা দময়ন্তী শুচিম্মিতা। ভতু শোকপরা দীনা বিবর্ণবদনাহভবৎ।। ১০০।। मा अञ्चार्था शत्राः ज्ञानः वाष्ट्रा मा अञ्चार्था शत्रा । বিললপোঞ্চপূর্ণাক্ষী দৃষ্ট্ হশোকতরুম্বতঃ ॥ ১০১॥ উপগম্য তরুশ্রেষ্ঠ মশোক পুষ্পিতং বনে। পল্লবাপীডিতং হৃদ্যং বিহকৈ রমুনাদিতম্॥ ১০২ । " অহো বতাইরমগমঃ শ্রীমানস্মিন বনাস্তরে। ষাপীতৈ বৃহত্তি ভাতি শ্রীমান পর্বতরাডিব ॥ ১০৩ ॥ প্রশাসতং জক্ষি ত্যাদয়ঃ যাডিভিত্নমভাবঃ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥, তাপসা ইতিছেদঃ, সন্ধি রার্য: ॥৯৬ ॥ ৯৭ ॥৯৮ ॥ ॥ ৯৯ ॥ ১০০ ॥ বাস্পো বাস্পবভুষ্ণ উচ্ছাস বায়ু ত্তেন সন্দিশ্বরা অক্ষুটাইকরয়া। ১০১। পল্লবৈঃ আপীডিতং ভূষিভয ॥ ১०२ ॥ जामः त्रकः — जाभीटेफ ; श्रूक्लकला निक्रटेश तनका देवः १००० ॥ * "অন্তৰ্হিতা স্থাপসান্তে" ই ত ক- ণ " নদীৰিজ নিষে বিতা" ইতি ঘ-1 " পুনাঃ" ইতি ক-পুস্তকে পঠাতে, যু পুস্তকেতু – নদীতাৰ্দ্ধ শ্লোক এব ৰ্ডাবন্নান্তি।

বিশোকাং কুরু মাং ক্ষিপ্র মশোক। প্রিয়দর্শন।। বীতশোকভয়াবাধণ কচ্ছিত্ত্বং দৃষ্টবান্নপম্ ?—॥ ১•৪॥ নলং নামাহরিদমনং দমরন্ত্যাঃ প্রিয়ং প্রিম। নিষধানামধি পতিং দৃষ্টবানদি মে প্রিয়য্, ?—॥ ১০৫॥ একবস্ত্রার্দ্ধদংবীত প্রস্কুমারত মুত্র চম্। वागतना फिल्ट वीत मत्नामिक मान्यम् -॥ ১०७॥ যথা বিশোকা গচ্ছেয়মশোক নগ! তৎ কুরু। সত্যনামা ভবাহশোক ! অশোকঃ শোকনাশনঃ' ॥ ১০৭ ॥ এবং সাহশোকরক্ষন্ত মার্ত্ত। ত্রিঃ পরিগম্য হ। জগাম দারুণ্তরং দেশং ভৈমী বরাঙ্গনা॥ ১০৮॥ সা দদর্শ নগারৈকালৈকাশ্চ সরিতস্তথা। নৈকাংশ্চ পর্বভান রম্যান্ নৈকাংশ্চ মূগপ ক্ষিণঃ ॥ ১০৯ ॥ कन्द्रतांश्यः निष्याःश्या नहीयाः । দদশ সা ভীমস্থতা পতিমন্বেবতী তদা 🚜 ॥ ১১০ ॥ शद्वा अक्रुकेमधानः नमग्रदी छातियाजा । मनर्भाश सङ्गिर्थः इक्षाश्वत्यमञ्जलम् ॥ ১১১ ॥ উত্তরম্ভণ নদীণ রম্যাথ প্রসন্নদলিলাং শুভাম। † স্থশীততোষাৰ বিস্তীৰ্ণাং ক্লিনীং বেড্ৰাস্ব ক্তাস্ ॥ ১১২॥ প্রোদ্দ্ উাং কৌঞ্চুররৈ শ্চক্রবাকোপকুজিতাম্। কুৰ্মগ্ৰাহ্ঝধাকীৰ্নাং বিপুল্ঘীপশোভিতাম্॥ ১১৩॥

॥ ১০৪॥ ১০৫॥ সুকুমারা ত্রংখাছ সহা, যত স্তান্ত সুদ্বীত্বক যস্যাতং ॥ ১০৬॥ অশোক নগ! ছে বীতশোক রক্ষ! ॥ ১০৭॥ ১০৮॥ ১০৯॥ ১১০॥ মহা-সার্থং মহান্তং জনসমূহন্॥ ১১১॥ ১১২॥ ১১৬॥

^{*} দতীতি কঃ। † সুশান্ত তোয়াং ইতি ঘ—

মা দুকৈট্ৰ মহাসাৰ্থ নলপত্নী যশস্থিনী। উপসর্প্যবরারোহা জনমধ্যং বিবেশ হ॥ ১১৪॥ উন্মন্তৰূপা শোকাৰ্ত্তা তথা বস্ত্ৰাৰ্দ্ধসংহতা। कुमा विवर्ग मिलना भार स्थ अलिता कुरा ॥ ১১৫॥ তা পুন্ট। তর মনুজাঃ কেচিদ্রীতাঃ প্রত্নুদ্রের । কেচিচ্চিত্তাং পরাং জগ্ম: কেচিত্তত্ত বিচুকুশুঃ॥ ১১৬॥ প্রহদন্তি স্ম তাপ কেচিদভ্যস্থান্তি চাপরে। অকুর্ব্বত দয়াং কেচিৎু পপ্রজুশ্চাপি ভারত!॥ ১১৭॥ कामि क्यामि कनाः वि ! किः वा मृशयरम वरन । ত্বাং দৃষ্ট্ব। ব্যথিতাঃ স্মেহ কচিত্ত্বমসি মানুষী ?—। ১১৮॥ বদ সতাং বনস্থান্ত পর্বাতম্ভান্ত বা দিশঃ। দেবতা ত্বন হি কল্যানি ! ত্বাং বয়ং শরণং পতাঃ ॥ ১১৯ ॥ মক্ষী বা রাক্ষদী বাপি উতাহোশ্বিৎ স্থরাঙ্গনা। मक्द्या कुक़ नः श्रष्ठि तक्षश्रानिनिक्रि ।॥ >२०॥ যথায়ং সর্বাথা সার্থঃ ক্ষেমী শীঘ্রমিতো ত্রজেৎ। তথা বিধৎস্ব কল্যাণি ! যথা শ্রেমো হি নো ভবেৎ ॥ ১২১ ॥ তথে।ক্তা তেন সার্থেন দময়ন্তী নৃপাত্মজা। প্রভাবাচ ততঃসাধী ভর্তাসন্পীডিতা॥ ১২২॥ সার্থবাহঞ্চ সার্থঞ্জনা যে চাত্র কেচন 🐕। যুব-ছবির-বালা क সার্থস্ত চ পুরোগমাঃ॥ ১২০॥

উপদপ উপদদর্প "অ ভ্যাদলোপ আর্ষঃ"বরারোহা বিস্তীর্গজ্বনা ॥ ১১৪ ॥ পাংস্থ- ্যুক্তাঃ ধস্তাঃ মুক্তবন্ধাশ্চ শিরোকহাঃ কেশাঃ যদ্যাঃ ॥ ১১৫ ॥ ১১৬ ॥ ॥ ১১৭ ॥ ১১৮ ॥ ১১৯ ॥ ১২০ ॥ ১২১ ॥ ১২২ ॥ ১২৩ ॥

* " তত্ৰ কেচন " ইতি ক—

' মানুষীং মাং বিজানীত মনুজাধিপতে: স্থতাম্। नृश्य या । तांक गर्याः छद्धिमाँ नना नगाम् ॥ ১२८॥ বিদর্ভরাজ্যম পিতা ভর্তা রাজা চ নৈষধঃ। নলো নাম মহাভাগ তং মার্গামাপরাজিতম্॥ ১২৫ ॥ যদি জানীত নুপতিং ক্ষিপ্রং শ্প্সত মে প্রিয়ম্। নল^ পুরুষশাদিল মমিতগণস্থদনম্"—: ১২৬ 🛚 তা মুবাচানবদ্যাঞ্চীং সার্থক্ত মহতঃ প্রভুঃ। সার্থবাহঃ শুচিনাম " শৃণু কল্যাণি ! মদ্বচঃ ॥ ১২৭ ॥ অহং সাথঁত নেতা বৈ সাথবাহঃ শুটিশ্বিতে!। মনুষ্য নলনামানং ন পশ্চামি যশস্থিনি ! ॥ ১২৮॥ कुञ्जतकी भिष्माहिशान् भाष्मृ लक्क भूगानि । পশ্যাম্যাম্মন বনে কুৎস্নে ছমমুষ্যনিষেবিতে ॥ ১২৯ ॥ ঋতে ত্বাপ মানুষীপ মর্ত্তাং ন পশ্যামি মহাবনে। তথা নো यक्षतां जमा मिल्डा: व्यमीमञ्"—॥ ১৩०॥ সাহব্রবীদ্বনিজঃ স্বান্সার্থবাহঞ্চ তং ততঃ। " কু নু যাস্থতি সার্থে হ্য মেতদাখ্যাতুমর্হি " ॥ ১৩১ ॥ সার্থবাহ উবাচ। শার্থোইয়ং'(চিদিরাজস্য স্থবাছোঃ সত্যদর্শিনঃ । * ক্ষিপ্রণ জনপদং গন্তা লাভায় নুবরাত্মজে"॥ ১৩২॥ 🕇 इंड्याद्रगुटक পर्वान नत्नाभार्यानभर्वान प्रमञ्जीविनारभ চতঃ-ষ্ঠিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৬৪ ॥

॥ ১২৪॥ সার্গমি অবেষ্রামি॥ ১২৫ ॥ ১২৬॥ ১২৭॥ ১২৮ ॥ ১২৯॥ ॥ ১৩০॥ ১৩১॥ ১৩২॥

ইত্যাপণ্যকে পর্বাণ নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুঃমৃত্তি তমোহধাশয়ঃ॥ ৬৪॥

 ^{* &#}x27;সত্য বাদিন " ইতি গা পুস্তকঃ।
 † মহজাত্বজে ইতি খ পুস্তকঃ।

तुश्मधं छेत्।

मा उष्ट दानवनाकी मार्थवाहवह उन।। জগাম সহ তেনৈব সার্থেন পতিলালসা ॥ ১ ॥ অথ কালে বছতিথে বনে মহতি দারুণে। তড়াগং সর্বতেভিদ্রং পদ্মসৌগন্ধিকং মহৎ IL ২ II. দদুশু ব্রণিজো রুমাং প্রভূত্যবদেক্ষরম্। বছপুপ্রফলোপেতং নানাপক্ষিরিবেবিতম্ ॥ ৩॥ निर्मालयाष्ट्रगेलिनः मरनाश्वि यूगीजनम्। স্থপরিপ্রান্তবাহান্তে নিবেশায় মনো দধঃ ॥ ৪॥ সম্মতে দার্থবাহ্ন্য বিবিশু ব্যনমুত্তমম্। উবাস সার্থঃ স্থমহান বেলামাসাদ্য পশ্চিমাম্। ৫॥ অথার্দ্ধরাত্র সময়ে নিঃশব্দ ন্তিমিতে তদা। স্থপ্তে সার্থে পরিশ্রান্তে হস্তিযুথ মুপাগমৎ॥ ৬ 🛭 পানীয়ার্থং গিরিনদীং মদপ্রস্রবণাবিলাম্ । অ্থাপ্তত সার্থন্তং সার্থজান স্থবছুন গজান ॥ ৭ ॥ তে তানু গ্রাম্যগ্রান্ দৃষ্ট্র। সর্বে বনগর্জান্তদা। मनो जवल (वर्शन जिद्यार मरमा यस रके है। ॥ ६ ॥ তেষামাপতভাং বেগঃ করিণাং ছুঃসহোহভবং। নগাঞাদিব শীর্ণানাণ শৃঙ্গাণাণ পততাণ ক্ষিতৌ ॥ ৯ ॥ স্পূলতামপি নাগান। মাগা নন্ধা বনোদ্ভবা:। মার্গং সংক্রধ্য সংস্থাং পদ্মিন্যাঃ সার্থ মুক্তমম্ ॥ ১০ ॥.

সেতি—॥ ১॥ পদ্মিঃ সোগিন্ধিকৈল প্রবিশ্বে ব্জুহাৎ প্রস্তে গ ব্ধিকং নামসরঃ॥ ২॥ যবসং স্থাসঃ॥ ৩॥ আন্তবাহাঃ আন্তবাহনাঃ, নিবেশায় বাসায়॥ ৪॥ পশ্চিমাং বেলাং সন্ধ্যাৎ সরস্তীরভূবং বা॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥॥ ১॥ প্রিন্যাঃ প্রবিত্যাঃ সরস্যাঃ॥ ১০॥

তে তং মমদ্দঃ সহসা চেফীমানং মহীতলে ! হাহাকারং প্রমুঞ্জঃ সার্থিকাঃ শরণার্থিনঃ ॥ ১১ ॥ বনগুলা ৭ শ ধাবন্ত নিদ্রাস্থা বছবে । * কেচিদ্দবৈত্য করৈঃ কেচিৎ কেচিৎ পদ্যা > হতা গজৈঃ 🕇 ॥ ১২ ॥ (নিহতে। ট্রাশ্বহুলাঃ পদাতিজনসঙ্কুলাঃ। ভয়া দাধাবমানাশ্চ পরস্পারহতান্তদা) ! ॥ ১৩ ॥ ছোরালাদান ** বিমুঞ্জো নিপেতু ধরণীতলে। বৃক্ষমারুহ্ স্বর্কাঃ পতিতা বিষ্মেষু চ। ১৪। এবস্প্রকারে ব্রহুভি দ্বৈবেনাক্রম্য হস্তিভিঃ। রাজন্। বিনিহ্ত৭ সর্বে৭ সমূদ্ধ সার্থম ওলম্॥ ১৫॥ (আরাবঃ সুমহাৎ শ্চাসীৎ তৈলোক্যভয় কারকঃ। এষোহগ্নি রুপ্তিতঃ কফ স্ত্রায়ধ্বং ধাবত।হধুনা॥ ১৬॥ রত্ন রাশি বিশীর্ণেহেয়ং গুহ্লীধ্বং কিং প্রধাবত ?—। সামান্য মেতদ বিবং ন মিথ্যা বচনং মম। ১৭॥ এব মেবাভি ভাষম্যে বিদ্রবন্তি ভয়ান্তদা। পুনরেবাভিধাস্থামি চিন্তয়ধ্ব সকাতরাঃ ॥ ১৮॥ তি সংস্থা বর্ত্তমানে দারুণে জনসংক্ষয়ে। দময়ন্তীচ বুবুধে ভরসন্তস্তমানসা ॥ ১৯ ॥ অপশ্য দ্বৈশস্ত তত্র সর্বলোক ভয়ক্কর্ত। অদুষ্ঠপূর্বাং তদ হল বালা প্রনিভেক্ষণা। ২০॥

‡ " গোখরোষ্ট্রাশ্ব বহুলাঃ পদাতিনর সঙ্গুলাঃ। ভয়ার্তাঃ প্রাদ্রবন্ সর্বে পরস্পর হতান্তদা " ইতি ক পুশুকে পঠাতে। ** কঠাং বাচ মিতি ক—

^{* &}quot;মৃহতোভয়াং—ইতি কঃ" "ধাবন্ত "ইতাত্ত্র "ধাবন্তি "ইত্যাপ।

† নরা ইতি কঃ।

† ' গোখবোমীশ বুজনাঃ পদাতিন্তু সঙ্কলাঃ। ভ্রার্ডাঃ প্রান্তব

স**্সক্ত বদন¦ক্ষাসা উত্তস্থোভয় বিহ্বলা।** যে চ তত্র বিনিমুক্তাঃ সার্থাৎ কেচি দবিক্ষতাঃ॥২১॥ তেহক্রবন্ সহিতাঃ সর্বেক কেন্সেদং কর্মনঃ ফলম্ ?— মূনং ন পূজিতোধস্মাভি মণিভদ্যো মহা যশাঃ॥ ২২॥। তথা যক্ষাধিশঃ শ্রীমা নৈবৈ বৈশ্রবণঃ প্রভুঃ। ন পূজা বিদ্ন কর্তৃনা মথবা প্রথমং ক্লতা॥ ২০॥ 🕟 শকুনানাৎ ফলং বাথ বিপরীত মিদং ধ্রুবন্। গ্রহা ন বিপারী তাস্ত কিমন্য দিদ মাগতম্ ? ॥ ২৪ ॥ অপরে স্ব কেবন্ দীনা জ্ঞাতিদ্রব্য বিনাক্কতা। या मा वना महामार्थ नाती श्रूमाख नर्भना ॥ २०॥ প্রবিষ্টা বিক্লভা কারা ক্লত্বাৰূপ মমানুষ্ম। তয়েয় বিহিতা পূর্ববং মায়া পরম দারুবা । ২৬॥ রাক্ষদী বাজ্ঞবং যক্ষী পিশাচী বা ভয়ক্ষরী। তক্সাঃ মর্ব্বমিদং পাপং নাত্র কার্য্যা বিচারণা॥ ২৭॥ यि अभाग उत्थाना नार्यद्वीर देनक द्वार्यनाय । লোকভিঃ পা-শুভিশৈষ্ব ভূবৈঃ কাঠেঞ্চ মুফিভিঃ॥ ২৮॥ অবশ্যমের হন্যামঃ দার্থদ্য কিল কুত্যকাম্"—। দময়ন্তী তু তচ্ছ্ত্বা বা্কাং তেষাং স্থদারুণম্॥ ২৯॥ ত্রীতা ভীতাচ সমিগ্না প্রাদ্র বদ্যর কানন্ম। আশক্ষমানা তৎপাপ মাত্মানৎ পর্যাদেবয়ৎ। ৩০॥ ष्यदश ! मरमाश्रति विरधः मः तस्त्रा माक्रां मान्या महान्। নারু বধাতি কুশল কভেদং কর্মাণঃ ফলম্।॥ ৩১॥

॥ ২১॥২২॥ ২৩॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ গেফিভি ব্লিডি প্রানোদেব লোফশব্দো নকারান্তোপ্যস্তীতি জায়তে ॥ ২৮॥ ক্টতাব কৃত্যকা কুৎসিতা কৃত্যা কৃত্যকেতিবা তাম্॥ ২৯॥ ৩০॥॥ ৩১॥

নশ্মরাম্য শুভং কিঞ্চিৎ ক্বতং কদ্য চিদ্যুপি। কর্ম্মণা মনসা বাচা কন্যেদং কর্মণঃ ফলম্ ?— ॥ ৩২ ॥ মূনং জন্মান্তর কুতং পাপ মাপতিতং মহৎ। অপশ্চিমা মিমাং কন্টা মাপদং প্রাপ্তবত্যইম ॥ ৩৩ ॥ ভর্ত্রাজ্যাহপহরণম্য জনাচ্চ পরাজয়ঃ। ভত্রণ সহ বিয়োগশ্চ তনয়াভ্যাঞ্চ বিচ্যুতিঃ । ৩৪ ॥ নিৰ্মাণতা বনে বাসে। বছব্যাল নিষেবিতে)"—*। অথাপরেল্যঃ সম্প্রাপ্তে হতশিক্টা জনান্তদান ৩৫ ॥ एक्साख्यावितम् या स्माहत्य रेवनमः कृष्य ए। ভ্রতির**৲ পিতর^ পুত্র**ং সখায়ঞ্চ নরাধিপ !। ৩৬ । অশোচন্তত্র বৈদর্ভী " কি মু মে ছুদ্ত মহতম !। यार्भित्म निक्रत्मर्ति म॰ शास्त्रार्थार्थार्थः कनार्गतः ॥ ७१॥ স হতো হস্তিযুথেন মন্দভাগ্যান্মীমব তৎ। প্রাপ্তব্যং স্কুচির্প জুঃখ্প ভূন মদ্যাপিতে ময়া 🛊 ॥ ৩৮॥ নাপ্রাপ্তকালো ভিয়তে শ্রুতং বৃদ্ধানুশাসনম্ ৷ যানাহমদ্য মৃদিতা হস্তিযুথেন ছুঃখিতা।। ৩৯।। ন ছাদৈবফুত । কিঞ্চিন্নরাণা মিছ বিদাতে। ন চ মে বালভাবেংপি কিঞ্চিৎ পাপক্ষতং ক্লতম্ ॥ ৪০॥ কর্ম্মণা মনসা বাচা যদিদ তুঃখ্যাগতম। মন্যে স্বয়রক্তে লোকপালাঃ সমাগতাঃ॥ ৪১॥ ७२॥ जनम्बन्धाः जनदावर्तिनीम्॥७०॥७४॥७०॥७५॥७५॥ ॥ ৩৯॥ পাপকৃতং পাপং কর্ম ॥ ৪০॥ ৪১॥

^{* &#}x27;', আরাবঃ স্থমছাং শ্চাদীং"—ইত্যারভ্য '' বছব্যাল নিষে বিতে"— ইত্যাদন্তঃ সার্দ্ধোনবিংশ স্নোক পরিমিত গ্রন্থঃ ক পুস্তকে নাস্তি, মন্যে তদ্ভমজ্ঞীঃ।

[†] ছাপোচন্ বৈশসং ক্তমিতি ক খ পুস্তকে। ‡ ময়া নূনমণং সয়ং ইতি ক—

প্রত্যাখ্যাতা ময়া তত্ত নলস্যার্থায় দেবতাঃ। নুনং তেষাং প্রভাবেন বিয়োগং প্র,প্তবত্যহম্''॥ ৪২॥ এব মাদীনি ছু:श्रंडी मा विलशा वताक्रना। (প্রলাপানি তদা ভানি দময়ন্তী পতিব্রতা) * ॥ ৪৩॥ † হত শেষৈঃ সহ তদা ব্রাহ্মণৈবেদপারগৈঃ। অগচ্চ্দাজশার্দ্ ল! চক্রলেখেব শারদী॥ ৪৪॥ शक्त को मा हिताबाला श्रुत माना प्रामश्रम् । সায়াহে চেদিরাজস্য স্থবাহোঃ সত্যদর্শিনঃ ॥ ৪৫ ॥ অথ বস্তার্দ্ধসং বীতা প্রবিবেশ পুরে। ত্তমম্। তাং বিহ্বলা কুশাং দীনাং মুক্তকেশী মমাৰ্জিতামু॥ ৪৬॥ উন্মন্তামিব গচ্ছন্তীৎ দদুশুঃ পুরবাদিনঃ। প্রবিশন্তীস্ত তাণ দৃষ্ট্বা চেদিরাজপুরীণ তদা ॥ ৪৭ ॥ অনুজগাস্ত্র বালা প্রামিপুক্রাঃ কুতৃহলাৎ। সা তৈঃ পরিবৃত্তাগচ্ছৎ সমীপং রাজবেশ্মনঃ ॥ ৪৮॥ তাং প্রাসাদগত। হপশ্যদ্রাজ্মাত। জনৈ বৃতাম্। ‡ ধাত্রীমুবাচ গচ্ছৈনা মানয়েতি মমান্তিকম্ ॥ ৪৯ ॥ জনেন ক্লিশ্সতেহনাথ। ** তুংখিত। শরণার্থনী। যাদুগুপাঞ্চ পশুনি বিদ্যোতয়তি মে গৃহম্। ৫০।।

॥ ৪২॥ ৪৩॥ ৪৪॥ ৪৫॥ অমার্কিতাং ধুসরবেণীম্॥ ৪৬॥ ৪৭॥ ৪৮॥ ৪৯॥ ॥ ৫०॥

^{*} এষঃ শ্লোকাং শোনান্তি ক পুস্তকে, অপিচ, পূৰ্ব্বাৰ্দ্ধগত ছঃখাৰ্তা ইত্যত্ৰ '' হুঃখানি" ইতি কঃ পুস্তক-পঠতি।

^{† &}quot; হত শিষ্টেঃ" রিতিক—

‡ ধাত্রীমুবাচ চৈ বৈনা মান যেহ মমান্তিক মিতি ঘ—

** অনাথা ইত্যত্র " বাবনা" ইতি ক ঘ—

 उन्नाद्धातभा कलागी श्रीतिवासकत्नामां—। সা জনং বার্রিয়া তং প্রাসাদতল মুক্তমম্। ৫১। আরোপ্য বিশ্বিতা রাজন্। দময়ন্তীমপৃচ্ছত। ে এবমপ্যস্থথাবিষ্টা বিভর্ষি পরম্প বপুঃ । ৫২ ॥ ভাগি বিদ্যাদিবাক্তে যু শংগ মে কাসি কম্ম বা ?—। ন হি তে মানুষং ৰূপ ভূষনৈরপি বর্জিতম্॥ ৫০॥ অসহায়া নরেভ্যশ্চ নোদ্বিজম্মরপ্রভে ?"—। তচ্ছ ত্বা বচনং তঠ্যা ভৈমী বচন মন্ত্ৰবীৎ। ৫৪॥ " মারুষী~ মাং বিজানীহি ভর্তারং সমনুত্রতায়। † দৈরক্ষীং জাতিসম্পন্নাং ভুজিষ্যাং কামবাদিনীমু॥ ৫৫॥ ফলমূলাশনা মেকাং যুত্রসায়স্তাতিশ্রয়াম। অস্প্রেয়গুণো ভর্ত। মাঞ্চ নিত্য মনুত্রতঃ ॥ ৫৬॥ ভক্তাহমপি ত৲ বীরং ছায়েবানুগতাপথি ! **ত**श्च रेनवाद প্রসঙ্গে। र ভূদতি মাত্র^ স্ম দেবনে ॥ ৫৭ ॥ দ্যুতে স নিশ্বিতকৈব বনমেক উপোয়বান্। ত মেকবসনং বীর মুন্মন্তমিব বিহ্বলম্। ৫৮॥ আশ্বাসয়ন্তী ভর্তার মহমন্বগমং বনম্ **। म कमाहिष्टान वीतः किमार्निष्ट कात्नाचरते॥ ६०॥

প্রাসাদত লং প্রাসাদে।পরি ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ৫০ ॥ ৫৪ ॥ সৈরদ্ধী সীরাঃ প্রতি সীরাস্তাসাংসন্থং দৈরং ধার্রিত্রীং নেপথাধারিনীং অভঃপুরচর মিত্যর্থঃ ভূজিষ্যাং দাসীং, কামবাসিনীং যত্ত কাম ইচ্ছা তত্তিব বসভীন্ ॥ ৫৫ ॥ যত্তসায়ং কালস্তত্ত্বের প্রতিপ্রত্যাগৃহং যদাস্তাং ॥ ৫৬ ॥ ৫৮ ॥ ৫৮ ॥ ৫১ ॥

^{*} উন্তেবেশ পুচ্ছন্না ইতি ক পুস্তকঃ।

† সৈরিন্ধী মিতি কঃ।

‡ ছায়েবানপ গামিনী ইতি ক—

** অহমপ্যামং বনমিতি ঘ-গ—

কুৎপরীতস্ত্র বিমনা স্তদপ্যেকং ব্যসর্জ্ঞয়ৎ। ত মেকবদনা নগ্ন মুনাত্তবদচেত্ৰম্ ॥ ৬০ । অনুত্রজন্তী বছলা ন স্বাসামি নিশান্তদা। ততো বছতিথে কালে স্থা মুৎস্ক্র মাংক্লচিং ॥ ৬১ ৷ ৰাসসোহৰ্দ্ধ পরিচ্ছিদ্য ত্যক্তবালামনাগসম। ত মার্সমাণা ভর্তারং দহামানা দিবানিশ্য ॥ ৬২ ॥ সাহং কমলপ্রভাভ মপশান্তী হৃদি প্রিষয়। ন বিন্দা মমরপ্রথাং প্রিয়ং প্রাণেশ্বং প্রভুষ্ !"—॥ ৬৩ তা মশ্রুপরিপূর্ণাক্ষীং বিলপন্তীং তথা বহু। রাজমাতাহত্রবীদার্তা^ ভৈমী মার্তস্বরং স্থাম্॥ ৬৪॥ ' বসস্থ ময়ি কল্যাণি ! প্রীতির্ম্মে পরমা ছবি। মুপরিষ্যন্তি তে ভক্তে ! ভর্তারং পুরুষা মম। ৬৫। অপি বা স্বয়মাগচ্ছেৎ পরিধাবনিতস্ততঃ। ইহৈব বসতী ভদ্রে। ভর্ত্তার মুপলপ্যাসে"—। ৬৬॥ রাজমাতু বাচ: এত্রা দময়ন্তী বচোহত্রবীৎ। " সময়েনোৎসহে বস্তুং ত্রায় বীরপ্রজায়িনি ! ॥ ৬৭ ॥ উচ্ছিষ্ট নৈব ভুঞ্জীয়া ন কুৰ্য্যাং পাদধাৰনম্। न हार् श्रुक्षाननान् अजारमञ्ज कथक्षन ॥ २৮॥ व्यार्थदत्रत्वित मां किन्द्रका एक म भूमान् जतवः। বধ্যশ্চ তেহসক্লমনদ ইতি মেব্রতমাহিতমু ৷ ৬৯ ৷ ভর্তু রবেষণার্থন্ত পশ্যেয়ং ত্রাহ্মণান্যহম্।

॥ ৬০॥ ৬১॥ ৬২॥ ৬০॥ ৬৪॥ ৬৫॥ ৬৬॥ হেবীর প্রজায়িনি ! বীরানেব প্রজায়তে স্থতে সাবীর প্রজায়িনী॥ ৬৭॥ ৬৮॥ ৬৯॥ গশ্যেয়ং, দৃষ্ট্বাচ তান্পুচ্ছেষমপি॥ ৭০॥ যদ্যেবমিহ বংগ্যামি ত্বংসকাশে ন শংশয়ঃ॥ ৭০॥
আতাহনাথা ন মে বাসো বর্ততে হৃদয়ে ক্চিং"—।
তাৎ প্রহুষ্টেন মনসা রাজমাতেদমন্ত্রবীং॥ ৭১॥
"সর্বিমেতং করিষ্যামি দিট্যা তে ব্রতমীদৃশম্"।
এব্যক্ত্রা ততো ভৈমীং রাজমাতা বিশাম্পতে।॥ ৭২॥
উবাচেদৎ চুহ্তিরৎ স্থনন্দাং নাম ভারত।।
"সৈরস্থ্রী মভিজানীয় স্থনন্দে। দেবর্বাপিণীম্॥ ৭৩॥
বর্ষা তুল্যতাং প্রাপ্তা মথী তব ভবির্ম্ম।
এতয়া সহ মোদস্থ নির্ক্ষিম্মনাঃ সদা"—॥ ৭১॥
ততঃ পর্মসৎ হৃষ্টা স্থনন্দা গৃহ মাগমং।
দময়ন্তীমুপাদায় স্থীভিঃ পারবারিতা॥ ৭৫॥
সা তত্র পূজ্যমানা বৈ দময়ন্ত্রী বানন্দত।
মর্বাণ্টামে স্বিহিতৈ নির্ক্ষ্বেগাহ্বসন্ত্রদা॥ ৭৬॥
ইত্যারণ্যকে প্রাণি নলোপাখ্যানপ্রাণি দময়ন্ত্রাম্দেদ্রাজগৃহবাসে প্র্যুষ্টিতমোহ্ধ্যায়ঃ॥ ৬৫॥

উৎস্কা দমরন্তীন্ত নলো রাজা বিশালপতে!।

দদর্শ দাবং দহন্তং মহান্তং গহনে বনে॥ ১॥

তত্র শুলাবে শব্দং বৈ মধ্যে ভূতদা কদ্যাচিৎ।

অভিধাব নলেত্যাকৈঃ পুণ্যশ্লোকেতি চাদক্ষং॥ ২॥

৭১॥ ৭২॥ ৭০॥ ৭৪॥ ৭৫॥ ৭৬॥

ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলক্তীয়ে ভারত ভ্রদীপে পঞ্যকি

তমেহিধ্যায়ঃ॥ ৬৫॥

বৃহদ্ধ উবাচ।

छे**९मृ**टबार्डि—॥ ३॥ २॥

মা ভৈরিতি নলক্ষোক্ত্যা মধ্যময়েঃ প্রবিশ্য তম্। দদর্শ নাগরাজানং শয়:নং কুগুলীকৃতম্ ॥ **৩**।॥ স নাগঃ প্রাঞ্জলি উূত্বা বেপমানো নলম্ভদা। # উবাচ এ বিদ্ধি মাং নামা নাগং কর্কেটিকং নূপ ! ॥ ।।। ময়া প্রলকো: মহর্ষি নারদঃ স্থুমহাতপাঃ। তেন মন্যুপরীতেন শপ্তে হন্মি মনুজাধিপ। ॥ ৫॥ তিষ্ঠ ত্রং স্থাবর ইব যাবদেব নলঃ ক্লচিৎ। ইতো নেতা হি তত্ৰ স্বং শাপান্মোক্ষ্যদি মৎকৃতাৎ॥৬॥ তস্য শাপান্ন শৈক্তোহস্মি পদান্বিচলিতুং পদম্। উপদেক্ষ্যামি তে শ্রেয় স্তাতুমईতি মাণ্ড ভবান্॥ १॥ স্থা চ তে ভবিষ্যামি মৎসমো নান্তি পন্নগঃ। লযুক্ত তে ভবিষ্যামি শীভ্রমাদায় গচ্ছ মাম্"—॥ ৮॥ এবমুক্ত্বা স নাগেক্রো বভুবাস্থ্ঠমাত্রকঃ ৷ তং গৃহীত্ম নলঃ প্রায়াদেশং দাববিবজিভিম্। क ॥ আকাশদেশ মাসাদ্য বিষুক্ত^ ক্ঞবল্প'না। উৎস্রুকাম তং নাগঃ পুনঃ কর্কেটকোহত্ররীং। ১০॥ अमानि अनुष्ठित्र शास्त्र शासि देनस्य ! कानि विष्य ! ।. তত্ত্তহহং মহাবাহো। শ্রেয়ো ধাস্যামি ষং পরম্"॥ ১১॥ ততঃ সন্ধ্যাতু মারক্ষ মদশব্দশ্যে পদে। ত্য্য দ্ফস্য তদ্ধপৎ ক্ষিপ্স মন্তরধীয়ত॥ ১২॥

॥ ৩॥ ৪॥ ময়,প্রলকো এক্সিনির্দ ইতি পাঠান্তর্য প্রলক্ষঃ প্রতারিত ইতার্থঃ। ॥ ৫॥ তত্র কালে ॥ ৬॥ ৭॥ লঘুঃ গুক্তরহিতঃ ॥ ৮॥ দাব-বিবর্জিতং বঙ্গিনিং॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ দেশেত্যুক্তেইদশং আজ্জাং ব্নানাগো নদশতীতিভাবঃ॥ ১২॥

^{* &}quot; উঠাচ মাং বিদ্ধি বাজন্! " ইতি ঘ— কু " ন শক্ষোমি" ইত্যেবং পাঠঃ ক পুস্তকেনভাতে।

স দৃষ্টা বিশ্বিত ক্সন্থাবাত্মানং বিক্তবং নলঃ। স্বৰপ্ৰাৱিলং নাগৎ দদৰ্শ স মহীপতিঃ ॥ ১৩॥ ততঃ কর্কোটকো নাগঃ সাস্থ্যন্ নলমত্রবীং। " ময়া তেহন্তৰ্ভিৎ ৰূপং ন স্বাং বিদ্যু জনী ইতি ॥ ১৪॥ যংক্তে চাসি নিকুতো তুঃখেন মহতা নল !। विरयन म मनीरसन कुः ४० प्रशि निवरमाछि ॥ ১৫॥ বিষেণ সংবৃতৈ গাঁতে যাঁতভাপ ন বিমাক্ষ্যতি। তাবজ্বায় মহারাজ ! ছ:খ > বৈ স নিবৎস্যতি ॥ ১৬॥ অনাগা যেন নিক্ত স্তুমনর্হো জনাধিপ।। ক্রোধাদস্থয়য়িত্বা তং রক্ষা মে ভবতঃ ক্লতা॥ ১৭॥ ন তে ভয়ং নরব্যান্ত ৷ দংষ্টি ভ্যঃ শক্রতোহপি বা ! ব্রহ্মবিদ্যাশ্চ ভবিতা মৎপ্রসাদাররাধিপ ! ॥ ১৮॥ রাজন্'! বিধনিমিক্তা চন তে পীড়া ভবিষ্যতি। সংগ্রামেষু চ রাজেন্দ্র! শশক্তায় মবাপ্যাদি॥ ১৯॥ গচ্ছ রাজন্নিতঃ স্থতো ৰাছকো২হমিতি ক্রবন্। সমীপ মৃত্পর্ণা স হি চৈবাক্ষনৈপুণঃ ॥ ২০ ॥ অযোধ্যাং নগরী রম্যা মদ্য বৈ নিষ্ধেশ্বর ।। ज Co२कक्तरू नाजा ताकाशक्तरसन देव ॥ २ > ॥

॥ ১৩॥ ১৪॥ যৎকতে ইতি সঃ কলিঃ, এতেন যোযক্ষীরে প্রবিশতি স তেন শরীরেণ অথং হঃখং বাশাতীতি স্চতং দৃষ্ট ঞেড দ্র্যাহাবেশাদেন, ইদং দমরন্তাদেন্তন্য শাপস্যক্ষনং কলিভূডিক ইতিভাবঃ॥ ১৫॥ ১৬॥ আনাপাঃ নিরপরাধঃ, নিক্তঃ বঞ্চিতঃ, মে ময়।॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ আকস্ক্দয়ং দ্যুতে জয়াবহং অশ্বহ্দয়েন বিদ্যুষ্য বিদ্যুৎ পরিবত্ত্রেদিত্যুর্থঃ॥ ২১॥

ইক্লাকু-কুলজঃ শ্রীমান্ মিত্রঞ্চিব ভবিষ্যতি।
ভবিষাসি যদাইক্ষজ্ঞঃ শ্রেমনা যোক্ষ্যসে তদা॥ ২২ ॥

* সমমেষ্যসি দারৈস্ত্র মা স্ম শোকে মনঃ রুথাঃ।
রাজ্যেন তনয়াভ্যাঞ্চ সত্যমেতদ্ব বীমি তে॥ ২৩॥

স্বং রূপঞ্চ যদা দ্রুকু মিছেপাস্থং নরাধিপ!।

সংশার্ত্রব্যস্তদা তেংহং বাসশেচদং নিবাসয়েঃ॥ ২৪॥

আনেন বাসসাচ্চন্নঃ স্বং রূপং প্রতিপৎস্যসেওওও।

ইত্যুক্ত্রা প্রদদৌ তক্মৈ দিব্যংবাসোযুগং তদা॥ ২৫॥

এবং নলং সমাদিশ্যা বাসো দল্লা চ কৌরব!!

নাগরাজস্ততো রাজংস্ত তৈবান্তর্বীয়ত॥ ২৬॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যান পর্বাণি নলকর্কোটকয়োঃ

সংবাদে ঘট্যফিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৬৬॥

বৃহদশ উবাচ।
তিন্মিন্নন্ত হিতে নাগে প্রথমৌ নৈমধা নলঃ।
শ্বভূপর্ণস্য নগরং প্রাবিশদ্দশমেই হনি॥ ১ ॥
স রাজান মুপাতিষ্ঠি বাছকোই হমিতি ক্রবন।
আশ্বানাং বাইনে যুক্তঃ পৃথিব্যাং নাস্তি মৎসমঃ॥ ২
অর্থক্ত ছে মু চৈবাইং প্রফীব্যো নৈপুণেয়ু চ।
অন্নপ্রমেপি চ জানাম্যন্য বিশেষতঃ॥ ৩ ॥
॥২২॥২০॥ নিবাশয়ে পরিধেছি॥২৪॥২৫॥২৬॥
ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ষট্যক্তি
তমাহধায়ঃ॥৬৬॥

তশিরিতি—। ১। ২। ৩।

^{* &}quot;সমেষ্যাস চ " ইতি ক—

† " এবং নলঞ্চ সন্দিশ্য" ইতি ঘ—

यानि भिल्लानि लारिकश्चिन् यटेक्टवानाव स्रूप्रकृतम्। সর্বাপ যতিষ্যে তৎ কর্ত্ত মৃত্পর্ণ। ভরস্ব মাম্"—॥ ৪:॥ ঋতুপৰ উবাচ। " বদ বাস্থক! ভদ্রস্তে সর্ব্বমেতৎ করিষাহি। শীঘ্রয়ানে সদা বৃদ্ধি ধ্রিতে মে বিশেষতঃ ॥ ৫ ॥ म प्रमाजिके रयागः ७० रयन मौखा इशा मम। ভবেয়ু রশ্বাধ্যকোহসি বেতন~ তে শতং শতাঃ ॥ ৬ ॥ श्वामुलकामाउदेन्ध्व निजाः वारक्षं य-कीवत्नो । এতাভ্যাং রংসাসে সার্দ্ধ বস বৈ ময়ি বাছক !'॥ १॥ त्रकाश छेगा। এবমুক্তো নলস্তেন ন্যবস্ত্ত্ত পূজিতঃ। ঋতৃপর্ণ স্থারে সহবাফে য়জীবলঃ ॥ ৮॥ 🚜 স বৈ তত্রাহ্বমন্তাজা বৈদভী মনুচিন্তয়ন্। मायर मायर मना (हम क्यांकरमकर क्यांन र । र ।। "ক্ক নুদাকুৎপিপাসার্ভা আন্তা শেতে তপস্বিনী। স্মরন্তী তম্ম মন্দ্রস্য ক^ বা সাদ্যোপতিষ্ঠতি।"॥ ১৫॥ এবৎ ক্রবন্তং রাজানং নিশায়াং জীবলোহ ব্রবীৎ। 'কা মেনাং শোচদে নিতাং শ্রোত্মিছামি বাছক ! ॥ ১১॥ আয়ুশ্বন্! কন্ত সা নারী যামেব মনুশোচসি ?"—। ত মুবাচ নলো রাজা " মন্দপ্রজ্ঞত্ত কন্সচিৎ॥ ১২॥ আসাদ্ধ্যতা নারী তস্যাহদুত তরং বচঃ। স বৈ কেনচিদর্থেন তয়া মন্দো ব্যযুজ্যত । ১৩॥ ॥। ॥ । । । শতং শতা শতানি মাসিকং বেতনং দশসহত্রং স্বর্ণট্রতার্থঃ॥

সন্ধায়েরমুক্তিঃ, ব্যযুজ্যত বিযুক্তঃ॥ ১৩॥

॥ ৬॥ ४॥ ৮॥ ৯॥ তস্যমন্দ্র্যা তংমন্দ্র্যা উপত্ত জাবনার্থ মিতি শেষঃ ॥ ১০॥ ১১ ॥ ১২॥ অদৃততরং দময়ন্ত্যাং মিথ্যাঞ্জিজাবং অস্যান্

^{* &}quot; সতত্রনি বস জাজা" ইতি ক—

বিপ্রযুক্তঃস মন্দান্তা ভ্রমত্যস্থপীডিতঃ।
দহ্মানঃ স শেকেন দিবারাত্ত মতক্রিতঃ॥ ১৪॥
নিশাকালে শ্বরংস্তন্তাঃ শ্লোকমেব স গায়তি।
স বিভ্রমন্থীং সর্বাং ক্রচিদাসাদ্য কিঞ্চন॥ ১৫॥
বসত্যনই স্তন্দুংখং ভূয় এবানুসংশ্বরন্।
সা তু ত পুরুষং নারী ক্রছেইপানুসতা বনে॥ ১৬॥
তাক্তা তেনাম্পেপুণ্যেন ভূজরং যদি জীবতি!।
একা বালানভিজ্ঞা চ মার্গাণা মতথোচিতা॥ ১৭॥
ক্রংপিপাসাপরীতাক্ষী ভূজরং যদি জীবতি!।
শ্বাপেদাচরিতে নিতাং বনে মহতি দারুণে॥ ১৮॥
তাক্তা তেনাম্পেভাগ্যেন মন্দপ্রজ্ঞেন মারিষ!"—।
ইত্যেব নৈষধাে রাজা দমন্তীমনুশ্বরন্।
অজ্ঞান্তবাসং ন্যবস্ত্রাক্তস্তম্ভ নিবেশনে—॥ ১৯॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যানপর্বাণি নলবিলাপে
সপ্তযুক্তিত্যোহ্ধ্যায়ঃ॥ ৬৭॥

त्रमध देवात।

হতরাজ্যে নলে ভীমঃ সভার্য্যে প্রেষ্যতাশ গতে। দ্বিজ্ঞান্ প্রস্থামাস নলদ্ধনিকাক্ষয়া ॥ ১ ॥ সন্দিদেশ চ তান্ ভীমো বস্থ দত্ত্বা স্থপুদ্ধলম্। 'মুগ্রপ্তং নলং মূরং দময়ন্ত্রীঞ্চ মে স্থতাম্ ॥ ২ ॥ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ মারিষ ! আর্যা ! ॥ ১৯ ॥ ইত্যারণাকে পর্কাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তর্কি-ত্যোহণাক্ষঃ ॥ ৬৭ ॥

ছতেতি—প্রেষ্ডাণ্ দাসতাশ্ ॥ ১॥ ২॥

অস্মিন কর্মাণ সম্পন্নে বিজ্ঞাতে নিষধাধিপে। গবাৎ সহত্রং দাক্তামি যো ব স্তাবানয়িষ্যতি॥ ৩॥ অগ্রহার। শুক্ত দাক্তামি গ্রামণ নগরস্মিত্য। न চেচ্ছका। विहास्तवुर प्रमञ्जी नत्नाइशिता। 8॥ জ্ঞাতমাত্রেহপি দাস্তামি গবাং দশশত ধনম্"—। ইত্যক্তান্তে যযু হ্ল'ফা ব্ৰাহ্মণাঃ সৰ্বতো দিশম্। ৫॥ পুর-রাষ্ট্রাণি চিম্বন্তো নৈষধণ সহ ভার্যায়া। रैनव क्वां अ व्यथमान्ति नलः वा जीमशुक्तिकाम् ॥ ७ ॥ ততক্ষেদিপুর রুম্যাং স্থুদেবো নাম বৈ দ্বিজঃ। বিচিন্থানোহথ বৈদৰ্ভ্তী মপশুক্ত। জবেশানি । ৭। পুণ্যাহ্বাচনে রাজ্ঞ; স্থনন্দাসহিতাং স্থিতাম্। মন্দং প্রথায়মানেন ৰূপেণাপ্রতিমেন তামু॥ ৮॥ নিবদ্ধাং ধুমজালেন প্রভামিব বিভাবদোঃ। তা भगेका विभानांको मधिकः मनिना कुनाम्। তর্কয়ামাস ভৈমীতি কার বৈরুপপাদয়ন—॥ ৯॥ श्रुतम्य छे बाह्र।

' যথের প্রে দৃষ্টা তথাৰপের মঞ্চনা।
ক্কতার্থোই স্মান্য দৃষ্টে মাং লোককান্তানিব প্রিয়ম্॥ > ॥
পূর্বচন্দ্রনিভাং স্থানাং চাক্তরন্তপয়োধরাম্।
কুর্বনিভীং প্রভয়া দেবীং সর্বা বিতিমিরা দিশঃ॥ > > ॥
চাক্রপত্ম বিশালাক্ষী শম্মথস্থা রতীমিব।
ইন্টাং সমন্তলোকন্তা পূর্বচন্দ্রপ্রভামিব॥ > ২॥

॥ ৩॥ অগ্রবাদ্ধণতোজনং তদর্থং ব্রিয়ন্তে রাজধনাৎ পৃথক ক্রিয়ন্তে তেহপ্রদারাঃ ক্লেবাদরঃ ॥ ৪॥ ৫॥ ৩॥॥ १॥ ৮॥ কারণৈ লি কৈঃ উপ-পাদরন্ ইরমেব দময়ন্তীতি নিশ্বিদ্ধন্॥ ১॥॥ ১০॥ শ্যামাং সদাবোডশ বার্ষিকীং "শীতে চৈবোখলানিতাং গ্রীমেচাতীব শীতলা। মধ্যঃ দ্বীপঞ্জ যস্যান্ত সাশ্যামে তাভিধারত" ইত্যানো—॥ ১১॥১২॥

বিদর্ভসরস কলাকৈবদোষাদিবোক তাম। মলপদামুলিপ্তাঙ্গীং মূণালী মিব চোদ্ধ ভাম । ১৩ । পৌর্নাসীমিব নিশাং রাছগ্রন্তনিশাকরাম্ ॥ পতিশোকাকুলাং দীনাং শুষ্কস্রোতাং নদীমিব 🛭 ১৪ বিধন্তপর্কমলাং বিত্রাদিতবিহঙ্গমাসু। হস্তিহস্তপরামৃষ্টাং ব্যাকুলামিব প**ল্পনী**ম্ ॥ ১৫ ॥ স্থুকুমারীং স্থজাতাঙ্গীং রত্মগর্নগৃহোচিতাম্। দছ্মানা মিবাৰ্কেন মূণালীমিৰ চোদ্ধতাম্॥ ১৬ ॥ ৰপৌদাৰ্য্যগুণোপেতাং মগুনাধা মমপ্তিতাম। हल्दलशामिव नवार त्यामि नीलाई मंरवृष्म् ॥ ১१ ॥ कामरकारेनः अरेत श्रीनाः श्रीनाः वक्कुकरनन ह। (मर् शातविश नीनाः खर्जुनर्मनकाक्कशा ॥ २४ ॥ ভर्डा नाम शत्रः नार्या पृष्यः पृष्टेनिर्वा। এষা হি রহিতা তেন শোভনাপি ন শোভতে॥ ১৯॥ प्रकार कुक्र उर्जा हर * हीता बनना ननः। थात्रयुकाञ्चादना (महर न श्लाटकनावनीपिक ॥ २० ॥ ইমা মসিতকেশাস্তা শতপত্তায়তেকণাম্। স্থাৰ্হা~ ছুঃখিতাং দৃষ্টা মমাপি ব্যথতে মনঃ॥ ২১॥ কদা মু খলু ছু:খন্ড পার> মান্ডতি বৈ শুভা। ভর্ত্তঃ সমাগমাৎ সাধী রোহিনী শশিনো যথা ৷ ২২ ৷

॥ ५०॥ ७६८ व्याजाः ७६ ध्याहार ' इष्टिमः होवस्त्रः'॥ ५८॥ श्रीमिनीः जन्नीम्॥ ५०॥ स्काजानीः व्यानानधिकानीम्—॥ ५७॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ॥ २०॥ २५॥ २२॥

^{* &}quot; क्काउरडार्थः * हेडि क-

অন্তা নূনং পুনহাভারেষধঃ শ্রীতিমেষাতি।
রাজা রাজাপরিজ্ঞাইঃ পুনর্বন্ধের মেদিনীম্ ॥ ২৩॥
তুল্যালিবয়োযুক্তা তুল্যাভিজন সংর্তাম্।
বৈষধাহ ইতি বৈদর্ত্তীং তক্তের মানতেক্ষণা ॥ ২৪॥
যুক্ত তক্তাপ্রমেরক্ত বীর্য়সজ্বতো ময়া।
সমাখাস্যিত্থ ভার্যাং পতিদর্শনলালসাম্। ২৫॥
অহমাখাস্যামোনা পূর্ণচক্তনিভাননাম্।
অদ্কপুরিত তুংখন্ত তুংখার্ভাং ধ্যানতৎপরাম্"—॥ ২৬॥
রহদর্শ উন্যান।
তবে বিম্পা বিবিধা কারণৈ লক্ষণৈক্ত তাম্।
উপ্যাম্য ততো ভৈমী স্থাদেবো ব্রাক্ষণোহ্রবীৎ॥ ২৭॥
স্থাদর উন্যান।

প অহং স্থানেবা বৈদর্ত্তি ! ভাতুত্তে দরিতঃ সংখা ।
ভীমস্ত বচনাদ্রাজ্ঞ স্থা মন্থেক মিহাগতঃ ॥ ২৮ ॥
কুশলী তে পিতা রাজ্ঞি ! জননী ভাতরশ্চ তে ।
আযুম্মন্ত্রৌ কুশলিনো তত্রস্থো দারকো চ তৌ ॥ ২৯ ॥
ছৎক্তে বন্ধুবর্গাশ্চ গতসন্ত্রা ইবাসতে ।
আয়েকীরে। ত্রান্ধাশ্চ ভ্রমন্তি শতশো মহীম্ ''॥ ৩০ ॥
রদদশ্ব উবাচ।

জভিজ্ঞায় স্থাদৰং ত দময়ন্তী যুধিষ্ঠির !।

† পথ্যপুক্ত তান্ সৰ্কান্ ক্রমেণ স্কুদঃ স্বকান্॥ ৩১॥

লক্ষা চইতি পাঠে—চ ইবার্থে, লক্ষ্যাচ লক্ষ্যে ২৩॥২৪॥২৫॥২৬॥

॥২৭॥ ২৮॥ ২১॥ ৩০॥ ৩১॥

^{*} পূন্ল ক্বাচ মেদিনী মি ত খ—

† " সংযুতাগ্" ইতি ক—

‡ " পৰ্যা পৃক্ততঃ সৰ্বান্" ইতি ক—

ৰুরোদ চ ভূশং রাজন্। বৈদৰ্ত্তী শোককর্ষিতা। पृक्ती स्टूरप्तर~ महरा खाञ्जिकिः विकालसम्। ७२ ॥ ততো রুদন্তী~ তাং দৃষ্টা স্থনন্দা শোককর্ষিতা। স্থুদেবেন সহৈকান্তে কথয়ন্তীঞ্চ ভারত।॥ ৩৩॥ জনিত্র্যাঃ কথয়ামাস দৈরক্ষ্মী রুদতী ভূশম্। ত্রাহ্মণেন সমাগম্য তাপ কেন যদি মন্যসে।। ৩৪॥ অথ চেদিপতে শ্মাতা রাজকান্তঃপুরাতদা। জগাম যত্ৰ সা বালা ব্ৰাহ্মণেন সহাভবৎ ৷ ৩৫ ॥ ডতঃ স্থাদৰ মানায়া রাজমাতা বিশাম্পতে!। পপ্রচ্ছ "ভার্যা কন্মেয়> স্কুতা বা কস্য ভাবিনী॥ ৩৬॥ কথঞ্চ নন্টা জ্ঞাতিভ্যো ভর্তুর্বা বামলোচনা। স্বয়া চ বিদিতা বিপ্র ! কথমেবঙ্গত। সতী ? ॥ ৩৭:॥ এতদিছামাহং শ্রেভং মুক্ত মনেবতঃ। তত্ত্বেন হি মমাচক্ষ্ পুচ্নুন্তা। দেবৰূপিণীম্"—॥ ৩৮॥ এব মুক্তন্তরা রাজন্। স্থদেবো দ্বিজসভ্যঃ। সুখোপবিষ্ট আচেষ্ট দময়ন্ত্যা যথাতথম্ ॥ ৩৯ ॥ इंज्यात्रनाटक भक्कान नत्नाभाश्यानभक्ति। प्रमञ्जी स्टाप्तरमः वास অফব্টিতমে হ্যায়ঃ ॥ ৬৮॥

॥৩২ ॥ স্থনন্দা কথয়ামাসেডি সম্বন্ধঃ । ৩৩ ॥বেদ বিচার্য় বেদ-রাত রিদং রূপা ্—িনিজ্ফভাব আর্থিঃ ॥৩৪॥ ৩৫॥৩৬॥৩৭॥৩৮॥ ॥৩৯॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ২ ফবর্ষিত মোহধ্যায়ঃ ॥ ২৮॥ इट्रंपिय डेवाह।

ে বিদৰ্ব্বাজে। ধর্মাত্মা ভীমো নাম মহাত্মাতিং। স্থতেয়ং তম্ভ কল্যাণী দময়ন্তীতি বিশ্রুতা॥ ১॥ রাজা তু নৈষধো নাম বীরদেনস্থতো নলঃ। ভার্যোয়ন তম্য কল্যাণী পুণাশ্লোকম্য ধীমতলা ২ ॥ স দ্যুতেন জিতো ভাতা হুতরাজ্যে মহীপতিঃ। দমরন্ত্যা গতঃ সার্দ্ধং ন প্রাজ্ঞায়ত কম্মটিৎ ॥ ৩॥ তে वसः पमञ्चार्थ * हतामः शृथिवी मिमाम्। দেয় মাসাদিতা বালা তব পুক্রনিবেশনে॥ ৪ 🛭 অস্থা ৰূপেণ সদৃশী মানুষী ন ছি বিদ্যতে। অস্যা ছেব ভূবোর্মধ্যে সহজঃ পিপ্লুরুত্তমঃ॥ ৫ ॥ স্ঠামায়ঃ প্রথাকাশো লক্ষিতোহস্তর্ভিতো ময়া। মলেন সংর্তো ফ্ল্যাম্ছ্রোহ্রেণেব চক্রমাঃ॥ ৬॥ চিহ্ন ভূতো বিভূত্যর্থ ময়^ ধাত্রা বিনির্মিতঃ। প্রতিপৎকলুষস্যেন্দে। র্বেখা নাতিবিরাজতে ॥ ৭ ॥ ন চাক্তা নশ্যতে ৰূপং বপু ৰ্মালসমাচিত্যু। অসংস্কৃতমপি ব্যক্তং ভাতি কাঞ্চনসন্নিভম্॥ ৮॥ অনেন বপুষা বালা পিপ্লুনানেন স্থচিতা। লক্ষিতেরং ময়া দেবী পিহিতোংগ্নিরিবোরণা "—। ৯॥ 🕇 তচ্চুত্রা বচন তম্ম স্থদেবস্থ বিশাস্পতে!। স্থনন্দা শোধরামাদ পিপ্ল প্রজ্ঞাদনং মলম্। ১০॥

বিদর্গান্ত ইতি—॥১॥२॥৩॥৪॥ পিপ্লু: রক্তাতিলকা কৃতিলাঞ্নৎ মহারাক্রাণাৎ 'মদ্" ইতি প্রাসন্ধান্ত॥৬॥৭॥৮॥১॥১०॥

^{*} দময়স্তার্থ মিতি ক-ব-গা পুস্তকাঃ— * অন্মা দনভরং '' রুহদশ উবাচ' ইতাধিক পাঠঃ ক-পুস্তকে লভ্যতে

স মলেনাপ**ক্ষেটন পিপ্লুস্তম্খা** ব্যৱেচিত। দমরস্ত্যা * যথা ব্যয়ের নভসীব নিশাকরঃ॥ ১১॥ পিশ্লু দৃষ্টা স্থনন্দা চ রাজমাতা চ ভারত!। রুদক্ষ্যৌ তাং পরিষদ্য মুহূর্ত্তমিব তস্থতু:॥ ১২ ॥ উৎস্ক্তা বাস্পাৎ শনকৈ রাজমাতেদ মত্রবীৎ। " ভরিন্যা ছুহিতা মেংসি পিপ্লুনানেন স্থচিতা॥ ১৩॥ অহঞ্চ তব মাতা চ রাজ্ঞস্তম্য মহাত্মনঃ। স্থতে দশাৰ্ণীধিপতেঃ স্থুদাসশ্চাৰুদৰ্শনে। ॥ ১৪॥ ভীমস্তা রাজ্ঞ: সা দ্তা বীরবাহোর হং পুন:। ত্বস্তু জাতা ময়া দৃষ্টা দশার্ণেষু পিতুর্হে॥ ১৫॥ ষথৈব তে পিতুর্গেহ্ তথৈব মম ভাবিনি !। यरेथव চ मरेमश्रर्याः नमप्तश्चि ! उथा उव "—॥ ১७॥ তাং প্রহৃষ্টেন মনদা দময়ম্বী বিশাম্পতে!। প্রণম্য মাতুর্জনিনী মিদং বচন মত্রবীং ॥ ১৭ ॥ " অজ্ঞায়মানাপি সতী সুখ্মস্যুদিতা ওুয়ি। সর্বকাটনঃ স্থবিহিতা রক্ষ্যমাণা সদা স্বয়া॥ ১৮ ॥ স্কুখাৎ স্কুখতরং বাসো ভবিষ্যতি ন সংশন্ধঃ। . চিরবিপ্রোষিতা মাত শ্বামমুজ্ঞাতু মর্ধনি॥ ১৯॥ দারকৌ চ হি মে নীতৌ বসতস্তত্ত বালকৌ। পিতা বিহানৌ শোকার্তো ময়া চৈব কথ তু তৌ ॥ ২০ ॥ যদি চাপি প্রিয়ং কিঞ্জিরার কভুমিহেচ্ছসি। विष्र्जीः योजूनिकामि नीखः स्य यान मापिनं"—॥ २) ॥

অপক্ষেন দুরীক্তেন॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ॥ ১৯॥ দারকো স্থতঃ স্থতাচ, বালকো অস্প্রয়ন্ত্রে ॥ ২০॥ ২১॥

^{*} जमा देखिक, युक्तरमण्डा

বাচমিত্যেব তামুক্তা ক্ষণী মাতৃষ্পা নূপ!।
গুপ্তাং বলেন মহতা পূক্তন্যানুমতে ততঃ ॥ ২২ ॥
প্রান্থাপয়দ্রাজমাতা শ্রীমতার্গ নরবাহিনা।
যানেন ভরতশ্রেষ্ঠ ! স্বরপানপরিচ্ছদাম্ ॥ ২০ ॥
ততঃ সা নচিরাদেব বিদর্ত্তানগমৎ পুনঃ।
তাপ্ত বন্ধুজনং সর্বাঃ প্রক্র্যান্য সমপূক্ষরৎ ॥ ২৪ ॥
সর্বান্ কুশলিনো দৃষ্ট্রা বান্ধান্য দারকৌ চ তৌ ॥
মাতর পিতরঞ্গেভৌ সক্ষপ্তেব স্থীজনম্ ॥ ২৫ ॥
দেবতাঃ পূক্রমাস ব্রান্ধাংশক ষশস্থিনী।
পরেন বিধিনা দেবী † দময়ন্তী বিশালপতে ! ॥ ২৬ ॥
অতর্পরৎ স্কুদেবঞ্চ গোসহজ্রেন পার্থিবঃ।
প্রীতো দৃষ্ট্রেব তনরাং গ্রামেন দ্রবিনেন চ ॥ ২৭ ॥
সা বুফ্টা রজনীন্তর পিতুর্বোশ্যনিভাবিনী ।
বিশ্রান্তা মাতর র রাজনিদং বচনমন্ত্রবীং ॥ ২৮ ॥
দময়ন্ত্রান্তা

"মাঞ্চেদিছেসি জীবন্তীং মাতঃ ! সত্যং ব্রবীমি তে।
নরবীরস্থা বৈ তেস্য নলস্যানয়নে যত "—॥ ২৯॥
দময়ন্ত্যা তথোক্তা তু সা দেবী ভূশছু: খিতা।
বাস্পেনাপিহিতা রাজ্ঞী নোন্তরং কিঞ্চিদব্রবীং॥ ৩০॥
তদবস্থান্ত তাং দৃষ্ট্য সর্ব্যমন্তঃপুরং তদা।
হা হা ভূত মতীবাসী ভূশঞ্চ প্রক্রোদ হ॥ ৩১॥

॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ব্যুষ্টা বাসং কৃতবতী ॥ ২৮ ॥ যত যতুংকৃৰু

' অহ্নাকুত্তবলক্ষণস্যাত্মনপদস্য চক্ষিঙো ডিৎকরণেনা,নত ও জ্ঞাপন।ৎ"
॥ ২১ ॥ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥

^{* &#}x27;' এমতী মিডি" ঘ-পাঠঃ। * '' ভাত !" ইডি ক—

ততো ভীমং মহারাজং ভার্য্যা বচনমত্রবীৎ। " দময়ন্তী তব স্থতা ভর্তার মনুশোচতি ॥ ৩২॥ অপক্ষাচ লজ্জাং সা স্বয়মুক্তবতী নূপ !। প্রয়তন্তাং তব প্রেষ্যাঃ পুণ্রালেক মার্গনে "🐾 ॥ ৩৩ ॥ তয়া প্রদেশিতো † রাজা ব্রাক্ষণান বশবর্তিন:। প্রাস্থাপর দ্বিশঃ নর্কা ২তধং নলম:র্গণে" 🛊 ॥ ৩৪ ॥ তত্যে বিদৰ্ভাধিপতে নিযোগাছ ক্ষণান্তন। **দময়ন্তীমথো স্ত্রা প্রস্থিতান্তে তথাক্রবন্ ॥ ৩৫ ॥** অথ তানব্রবীদ্ধেমী " সর্বরাষ্ট্রেম্বিদ্ বচঃ। ব্রয়ান্তজ্জনসংসংস্কু তত্ত তত্ত্ব পুনঃ পুনঃ ॥ ৩৬॥ " ক মু ত্ব॰ কিতব ! চ্ছিত্ত্ব। বস্ত্রার্দ্ধং প্রস্থিতে। মম। উৎস্কা বিপিনে স্থা মনুরক্তাং প্রিয়াং প্রিয় ! ॥ ৩৭ ॥ সা বৈ যথা স্বয়াদিষ্টা তথান্তে ত্বংপ্রতীক্ষিণী। দহ্যমানা ভূশং বালা বস্ত্রার্দ্ধেনাভি সংবৃতা। ৩৮॥ তম্ভা রুদন্ত্যাঃ সততং তেন শোকেন পার্থিব।। প্রসাদং কুরু বৈ বীর! প্রতিবাক্যং বদস্ব চ''**—॥ ৩৯॥

॥ ৩২॥ ৩৩॥ প্রদেশিতঃ প্রকর্ষেণ প্রে রতঃ॥ ৩৪॥ সৃহা গরা, তে তথাপ্রস্থিতাঃ সন্ত অক্রবন্ 'নলাবেষণায় প্রস্থিতাঃ মা, ইতিশেষঃ॥ ৩৫॥
ক্রোন্ত বদত ক্রবঃ মিতিপাঠে হার্যস্তঙ্॥ ৩৬॥ ৩৭॥ ৩৮॥ বদম্য
'ভাসনো সম্ভাবেত্যা দিনা' বদেশুঙ্॥ ৩৯॥ বায়ুনেতি শোকায়িঃ কাল-

 ^{*} দর্শনে ইতি ক পাঠঃ।
 † প্রচোদিত ইতি ক পুস্তকঃ।

[‡] অতাপি, নল দর্শনে ইতি ক পৃস্তকঃ, ঘপুস্তকেজু—এমরোকোন পঠতে।

^{**} ममयह डेडिक-

এ হচ্চান্যচ্চ বক্তব্যং * ক্লপাং কুর্য্যাদ্বথা ময়ি। বায়ুনা ধূয়মানো হি বনং দহতি পাবকঃ॥ ৪০॥ ভর্ত্তবা রক্ষণীয়া চ পত্নী হি পতিনা সদা তন্নউমুভরং কৃষ্ম কর্মজন্ত সভস্তব ?—॥ ৪১॥ খ্যাতঃ প্রাজ্ঞঃ কুলীনশ্চ সামুক্রোশে। ভবান্ সদা। সংবৃত্তো নিরমুক্তোশঃ শঙ্কে মদ্ভাগ্যসক্ষয়াৎ॥ ৪২॥ তৎ কুরুষ নরব্যান্ত ! দয়াং ময়ি নরর্ষভ !। আনৃশ-স্থান পরো ধর্মান্তুত্ত এব হি মে ক্রাতঃ—। ৪৩॥ ध्वरः द्वानान् यमि वः अिव्याकि कण्डन । স নরঃ স্ব্রেথা জ্ঞেয়ঃ কশ্চাসৌ ক্ মু বর্ত্তে ?—। ৪৪। यरेन्डव॰ वहनः अन्या तुतार প্রতিবচো नतः। जनानात्र विष्ठक मगार्वनाः विष्कृतिकाः ।॥ ८०॥ यथा ह त्या न कानीयां ९ व्हवत्ना मम भामना । পুনরাগমনক্ষৈব তথা কার্য্যমতক্সিতৈঃ ॥ ৪৬ ॥ यि वास्त्री मञ्चः माम्बिन वालाधता ज्या । यि वानाममर्थः खाद उद्धार मख हिकीर्षिष्ठम् "---। ४१॥ এবমুক্তান্তুগচ্ছংন্তে ব্রাহ্মণাঃ সর্বতো দিশ:। নল মুগরিতু বাজংস্তদা ব্যসনিন তথা ॥ ৪৮॥

বায়ুনা দিনে দিনে বর্দ্ধানঃ দময়ন্তী শরীরবনং ধক্ষাতীতিরপকেণোক্তং, দহতীতি লট্প্রয়োগন্ত বর্তমান সামীপ্যে ॥ ৪০ ॥ ভর্তব্যা অন্নাদিনা, রক্ষণীয়া দম্য প্রভৃতিভাঃ, পতিনেতি পাত্যুর অসমাদেশি ছি-সজাকাগ্য মাষহ, উভরং রক্ষণভরণাত্মকম্ ॥ ৪১ ॥ সাহ্যকোশঃ সদরঃ ॥ ৪২ ॥ ৪০ ॥ ৪৪ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ মমশাশানাহ ক্রবতো ব যুম্মান্, যথাবচ ইতি পাঠে—ক্রবতে ভবৎসমুদারসা বচো ন জানীয়া দিতি যোজান্ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥

^{*} এবমনাচ্চ বক্তব্যামতি পাঠঃ ঘ—

তে পুরাণি সরাষ্ট্রাণি গ্রামান ঘোষা শ্রুথা শ্রুমান।
অবেষত্যে নলং রাজন্নাধিক গ্রুছিকাত য়: । ৪৯ ॥
তচ্চ বাক্যং তথা সর্বেতি তত্ত বিশাম্পতে!।
শ্রোবয়াঞ্চ ক্রিরে বিশা দময়স্ত্রা যথেরিত ম্॥ ৫০ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যানপর্বিণি নলাম্বেষণে
একোনসপ্ততিত মোধ্যায়: ॥ ৬৯ ॥

ব্ৰহদশ্ব উবাত।

অধ দীর্ঘন্ত কালস্ত পর্ণাদো নাম বৈ দিজঃ।
প্রত্যেত্য নগরং ভৈমী মিদ্দ বচন মন্ত্রবীং॥ >॥
"নৈষধং মৃগয়াণেন দময়ন্তি! ময়া নলম।
অবোধ্যাং নগরীং গত্বা ভাঙ্গামুরি রুপস্থিতঃ॥২॥
আবিতক্ষ ময়া বাক্যং ত্বনীয়৸ স মহাজনে।
ঋতুপর্ণো মহাভাগো যথোক্তণ বরবর্ণিনি!॥ ৩॥
তক্ত্রা নাহব্রবীং কিঞ্চিচ্তুপর্ণো নরাধিপঃ।
নচ পারিষদঃ কল্চিন্তায়মাণো ময়াহসক্রং॥ ৪॥
অনুজ্ঞাতস্কু মান রাজ্ঞা বিজনে কল্চিদ্ত্রবীং।
ঋতুপর্ণস্ত পুরুষো বাছকো নাম নামতঃ॥ ৫॥
স্থৃতস্তম্ভ নরেক্রম্ভ বিরূপো ব্রস্থবাছকঃ।
শীঘ্রষানেষু কুশলো মিফীকর্তা চ ভোজনে॥ ৬॥

11 85 11 CO 1

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে একোন্-সপ্ততিত্যোহধ্যায়ঃ॥ ৬৯॥

অংখ,তি—॥ ১॥ ভালাম্বিং ঋতুপর্ব ॥ ১॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥

স বিনিশ্বস্থা বহুশো রুদিত্বা চ পুনঃ পুনঃ। কুশলক্ষৈব মাং পৃষ্টু। পশ্চাদিদ মভাষত—॥ १ । । বৈষম্যমপি সম্প্রাপ্তা গোপায়ন্তি কুলব্রিয়ং। অল্লান মাল্লনা সত্যো জিতস্বর্মো ন সংশয়:।। ৮॥ রহিতা ভতু ভিশ্চৈব ন কুপ্যস্তি কদাচন। প্রাণা>শ্চারিত্রকবচান্ ধারমন্তি কুলব্রিয়: # । ১ । বিষমস্থেন মূঢেন পরিভ্রম্বর্থেন তু। যৎ সা তেন পরিত্যক্তা তত্র ন কে। দুমর্থতি ॥ ১০ ॥ প্রাণযাত্রাং পরিপ্রেপ্সোঃ শকুনৈ হু তবাসমঃ। আধিভি দহমানস্ত শ্তামান ক্রেছ,মইতি॥ ১১॥ সংক্রতাসংক্রতা বালি পতিন দৃষ্টা তথাগতম। ভ্রম্টরাজ্যং প্রিয়া হীনং কুধিতং ব্যসনাপ্লুত্র '†॥ ১২॥ তক্ত তদ্বচনং শ্রুত্বা ত্রিতোইহমিহাগতঃ। প্রদত্ত্বা প্রমাণং ভবতী রাজ্ঞ কৈব নিবেদ্য় "—॥ ১৩॥ এতজুত্বাশ্রুপূর্ণাক্ষী পর্ণাদম্ভ বিশাস্পতে।। দময়ন্তী রহোহভাতা মাতর পপ্রত্যভাষত॥ ১৪॥ 'অয়মর্থে। ন.সুশ্বেদ্যো ভীমে মাতঃ কদাচন। जुरमित्यो निरगारकाश्रः स्ट्राप्तर विक्रमख्यम् ॥ ১৫॥ যথা ন নুপতিভীমঃ প্রতিপদ্যেত যে মতম্। তথা তুয়া প্রকর্তব্যং মম চেৎ প্রিয়মিচ্ছসি ॥ ১৬ ॥

॥ ৭॥ গোপায়ন্তি, রকাং কুর্বন্তি জিড: স্বর্গ স্তাভিরিতি শেষ: ॥ ৮॥ ৯॥ ॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥

^{*} বর্ত্তির ইতি পাঠান্তর্য্। া শামান ক্রোদ্ধু মইভি—ইতি ক—

ৰথা চাহং সমানীতা স্থদেবেনাশু বান্ধবান। তেনৈব মঙ্গলেনাশু স্থদেবে। যাতু মা চিরম্॥ ১৭॥ সমানেতৃং নলং মাত রযোধ্যাৎ নগরীমিতঃ"—। বিশ্রাস্তম্ভ ততঃ পশ্চাৎ পর্ণাদ্রু দ্বিজসন্তম্ম ॥ ১৮ ॥ অৰ্চয়ামাস বৈদৰ্ত্তী ধনেনাতীৰ ভাবিনী। ' নলে চেহাগতে বিপ্র। ভুয়ো দাস্তামি তে বস্থু॥ ১০॥ ত্বয়া হি মে বহু কুত যদন্যো ন করিষ্যতি। মন্তর্কাহং সমেধ্যামি শীঘ্রমেব দ্বিজোক্তম ! "॥ २०॥ म এবমুক্তোহ্থাশ্বান্ত আশীকাদৈঃ সুমঙ্গলৈ:। গৃহানুপ্যযৌ চাপি ক্লতার্থঃ সুমহামনাঃ ।। ২১॥ ততঃ স্থদেব মাভাষা দময়ন্তী যুধিষ্ঠির !। অব্রবীৎ সন্নিধৌ মাতুদ্ঃখশোকসমন্বিতা॥ ২২ ॥ " भञ्चा स्ट्राप्त ! नभती भर्याध्यावानिन न नुभन्। ঋতুপূৰ্ণ বচে। বুছি সংপতন্নিৰ কামগঃ । ২৩॥ আস্থান্ডতি পুনর্ভেমী দময়ন্তী স্বয়ন্বরম্। তত্র গচ্ছন্তি রাজানো রাজপুত্রাশ্চ সর্ব্বশঃ ॥ ২৪॥ # যথা চ গণিতঃ কালঃ খোড়তে স ভবিষ্যতি ! यि मञ्जाविनीय उ गष्ट्र भी घ मित्रक्म ।॥ २०॥ স্থর্যোদয়ে দিতীয়ং সা ভর্তার বর্যায়য়তি। न हि म ड्वांग्रट वीदा नत्ना जीवि वा न वा "-॥ २७

॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ २०॥ २১ ॥ २२ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ সন্তাবিনী সন্তাবিতাই⊉ৎ গাতি রিভিশেষঃ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥

^{*} তথাচ ইতি বা পাঠঃ।

এবং তয়া যথোক্তো বৈ গত্বা রাজান মত্রবীং।
ঋতুপর্ণং মহারাজ! স্থাদেবো ত্রাহ্মণগুদা॥ ২৭॥
ইত্যারণাকে পর্বানি নলোপাখ্যানপর্বানি দময়ন্তীপুনঃশ্বয়য়রকথনে সপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৭৬॥

ব্রহদশ উবাচ।
শ্রুবন বচঃ স্থাদেবতা শাতুপর্বো নরাধিপঃ।
সান্ত্র্যন শ্লক্ষয়া বাচা বাছকং প্রতাভাষত ॥ ১ ॥
'বিদর্ত্তাং যাতুমিছামি দময়ন্ত্যাঃ স্থায়রম্ব।
একাক্লা হয়তন্ত্রজ্ঞ ! মন্যাদে যদি বাছক ! " ॥ ২ ॥
এবমুক্তন্ত কোন্তেয় ! তেন রাজ্ঞা নলন্তা হ !
ব্যদীর্যাত মনো ছঃখাং প্রদধ্যো চ মহামনাঃ॥ ৩ ॥
'দময়ন্ত্রী বদেদেতং ॥ কুর্য্যাদ্দুংখেন মোহিতা।
অস্মদর্থে ভবেদ্বায় মুপায়ন্চিন্তিতো মহান্॥ ৪ ॥
দৃশংসাং বত বৈদর্ত্তী কর্তুকামা † তপস্থিনী।
মন্ত্রা ক্ষুদ্রেণ নিক্তা পাপেনাক্তবৃদ্ধিনা॥ ৫ ॥
স্ত্রীস্বভাবশ্চলো লোকে মম দোষশ্চ দাক্লণঃ।
ভাদেবমপি কুর্যাৎ সা বিবাসাদাতসৌহৃদা। ॥ ৬ ॥
মম শোকেন সংবিগ্রা নৈরাশ্যান্তন্ত্রমধ্যমা।
বৈবং সা কর্হিচিং কুর্যাৎ সাপত্যা চ বিশেষতঃ॥ ৭ ॥

॥ ২৭ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপো সপ্ততি-তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭০ ॥

আন্ত্ৰেভি—॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ সাপত্যা অপভাসহিতা॥ ৭॥

* ভবেদেত দিতি ক—ঘ—পুস্তকৌ। ক ভক্তকামা ইতি ঘ— ় বিৰশাগত সৌহ্বদা ইতি ক—

যদত্র সত্যং বাসত্যং গত্বা বেৎস্যামি নিশ্চয়ম। ঋতুপর্ণস্য বৈ কাম মাত্মার্থঞ্চ করে।মাহ্ম্"—॥ ৮ ॥ ইতি নিশ্ভিত্য মনসা বাছকো দীনযানসং! ক্তাঞ্চলি ক্রবাচেন মৃত্পর্ণং নরাধিপম্। ১॥ ু প্রতিজ্ঞানামি তে বাক্যং গমিষ্যামি নরাধিপ !। একাত্রা পুরুষব্যান্ত। বিদর্গ্তনগরী নুপ।" ॥ > ।॥ ততঃ পরীকা মশ্বানাং চক্রে রাজন ! স বাছকঃ। অখশালামুপাগম্য ভাঙ্গাস্থরিনৃপাজ্য়। ॥ ১১। म वर्शमारना वद्यम अञ्भर्नन वाह्यः। व्यथान किकाममारना रेव विठाश ह भूनः भूनः। অধ্যগছৎ क्रुभानश्चान् मगर्थानश्चनि क्रमान्॥ >२॥ তেক্সোবলসমাযুক্তান্ কুলশীলসমন্বিতান্। বৰ্জিতান লক্ষণৈহীনৈঃ পুথুপ্ৰোধান মহাহতুন ॥ ১৩॥ শুদ্ধানু দশভি রাবর্তিঃ সিদ্ধুকানু বাতরংহসঃ। দৃষ্টা তানত্ত্রীক্রাক্সা কিঞ্ছিৎকোপসমন্বিতঃ ॥ ১৪॥ " কিমিদ্দ প্রাথিতং কর্তুং ?—প্রলক্ষ্যা ন তেবয়ম। क्षत्रक्षत्रवानां वकाखीरम रहा मम। महम्यानमान ह शबुवार कथ मीनुरेमः ?—" ॥ ১৫ ॥

॥৮॥৯॥১০॥১১॥১২॥ ডেজ: কান্তিবিশেষা, বলং শক্তি:, কুলং জাতি বিশেষা, শীলং সাধু চিত্তামুসারিতা, হীনৈ লক্ষণৈঃ শতপদী প্রভৃতিন্তি বর্জিতান, প্রোধং নাসিকাহমঃ অধরং মুধফলকম্॥১৩॥ হুদাবর্তাদি মুফাবর্ত হীনান, সিমুজান্ সিমুদেশজান্॥১৪॥ ডে হুমান বি প্রলক্ষ্যাঃ ন বঞ্চনীয়াঃ, বলং ভার সহিষ্কৃতা, প্রাণে বেগবন্তা, বক্ষান্তি বহনং করিষ্যন্তি, অধানং, নিঃ শব্দং, মহং অতিদ্বে দমরত্যাঃ থন্ত ভাব ত্রমতে মহতীলজা, তয়াচ অরতে মহতরা লজা ইতি প্রচ্ছন তবৈব তরগতম্পা বেগবশা দগত মিব যথা ভবতি তথা গত্তব্যিত্তাবঃ, ॥১৫॥

বাহুক উবাচ।

" একোললাটেছো মূর্দ্ধি ছো ছো পাশ্বেপ পাশ্ব রো:।
ছো ছো বক্ষসি বিজ্ঞেয়ো প্রয়াণে চৈক এবভু"॥ ১৬॥ *
' এতে হয়া গমিষ্যন্তি বিদর্গন্নাত্র সংশয় ।
যানন্যান্মন্যসে রাজন্! বুহি ভানু যোজয়ামি তে"—॥ ১৭॥
ৼতুপর্ব উবাচ।

' ব্যেব হয়ত বুজ্ঞঃ কুশলো ফ্লিনি বাছক!।

যালনাসে সমর্থাংস্ত্বং ক্লিপ্রং তানেব যোজয়"—॥ ১৮॥

ততঃ সদ্ধাংশ্চতুরঃ কুলশীলসমন্তিনন্।

যোজয়ামাস কুশলে জিবযুক্তানুথে নলঃ॥ ১৯॥

ততো যুক্ত্০ রথ০ রাজা সমারোহস্করান্বিতঃ।

অথ পর্যাপতন্ ভূয়ৌ জানুভিন্তে হয়োভ্রমাঃ॥ ২০॥

ততো নরবরঃ শ্রীমানলো রাজা বিশাম্পতে!।

সাস্ক্রামাস তানশ্বাংস্তেজোবলসমন্বিতান্॥ ২০॥

রশ্মিভিশ্চ সমুদ্যম্য নলো যাতুমিয়েষ সঃ।

স্তুতমারোপ্য বাফের্মং জবমাস্থায় বৈ পরম্॥ ২২॥

তত চোদ্যমান্। বিধিবদ্বান্থকেন হয়োভ্রমাঃ।

সমুৎপেতুর্থাকাশং রথিনং মোহয়নিব॥ ২০॥

তথা তু দৃষ্ট্বা তানশ্বনে বহতো বাতরংহসঃ।

অযোধ্যাধিপতিঃ শ্রীমান বিশ্বয় পরমং যথৌ॥ ২৪॥

" একো ললাটেরো মুর্দ্ধি, বৌৰো পার্শ্বেপিপার্শ্বরোঃ। বৌরে বক্ষািন বিজ্ঞেরো প্ররাণে চৈকএবতু।" ইতিশ্লোকঃ কচিচ্চ নদৃশ্যতে, তদর্পস্ত, বক্ষামরৌ পরস্তাংরো পশ্চাদিতি প্রয়াণে পৃষ্ঠভাগে, এবং বাদশ, • আবর্ত্তপদুহ অভ্যুজ্যবোজ্যন্ ॥ ১৬ ॥ এত ইতি—এতেমু স্থলেমু আবর্ত্বস্ত ইতি শেষঃ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১১ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ স্তমিতি—আবোপ্য স্তস্থানা তুপমুগেবিশা স্বয়মেব স্তর্হ চকার ইত্যর্থঃ ॥ ২২ ॥ ২৬ ॥ ২৪ ॥

^{*} একেতি শ্লোকঃ ক পুস্তকে ন পচাতে।

রথঘোষত্ত তৎ প্রত্থা হয়সংগ্রহণঞ্চ তৎ। वारक श्रिक्ष सामान वाह्रकचा इस छ जोग् ॥ २०॥ " কিন মু স্থানাতলিরয়ং দেবরাজন্য সার্থিঃ। তথা তল্লক্ষণং বীরৈ বাছকে দৃশ্রতে মহৎ॥ ২৬॥ শালিহোতোহথ কিং মু স্থাদ্যানা কুলতত্ত্ববিৎ। মানুষ্যং সমনুপ্রাপ্তো বপুঃ পরমশোভনম্॥ ২৭॥ উতাহোস্বিদ্ধবেদ্রাজা নলঃ পরপুরঞ্জয়ঃ। সোহয় নুপতি রায়াত ! ইত্যেবং সমচিন্তয়ৎ ॥ ২৮॥ ष्यथं वा यां भटला दब्ह विहान जारमव बाह्रकः। তুলা হি লক্ষয়ে জ্ঞান বাস্তক্ত নলক্ত চু॥ ২৯॥ অপি চেদং বয়স্তল্যং বাছক্ষ্য নলম্য চ। न। त्रः नत्ना महावीदा खिषाण खिषाण खिवाजि॥ ००॥ প্রচ্ছনা হি মহাত্মানকরন্তি পূর্বিবীমিমাম্। দৈবেন বিধিনা যুক্তাঃ শাস্ত্রোইক্তন্স নিৰূপবৈঃ॥ ৩১॥ ভবেন্ন মতিভেদো মে গাত্ৰবৈৰূপ্যভাং প্ৰতি। প্রমাণাৎ পরিহীনস্ত ভবেদিতি মতির্মম। ৩২। वज्ञः श्रमागः उजुनाः बारान जू विश्वरायः। নলং সর্বগুণৈযুক্তিং মন্যে বাস্ত্রক মন্ততঃ''—॥ ৩০॥ এবং বিচার্য্য বস্তশো বাক্ষেরঃ পর্যাচন্তরৎ। হৃদরেন মহারাজ! পুণাশ্লোকস্য সার্থিঃ। ৩৪ ॥ ঋতুপর্ণ রাজেন্দে। বাছকস্য হয়জ্ঞতাম । ठिख्रान् युमुरन ताजा मह्वारक समाविष्टः !॥ ७० ।

া ২৫॥ ২৬॥ শালিছোত্রঃ অশ্বশাস্ত্র প্রণেতা আচার্যাঃ॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ ॥ ৩০॥ ৩১॥ ২২॥ অস্ততঃ নির্ণয়েন ॥ ৩৩॥ ২৪॥ ৩৫॥ ঐকাগ্রাঞ্চ তথাৎসাহ হয়-সংগ্রহণঞ্চ তং।
পরং যতুঞ্চ সংপ্রেক্ষ্য পরাং মুদ মবাপ হ। ৩৬॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যান পর্বাণি ঋতুপর্ণস্য
বিদর্গদেশগমনে একসপ্ততিভ্রমোহধায়ঃ॥৭১॥

রহদশ উবাচ।

স নদীঃ পর্বতাংশৈব বনানি চ সরাংসি চ।

অচিরেণাতিচকাম খেচরঃ খে চরন্নিব॥ ১॥
তথা প্ররাতে তুরথে তদা ভাঙ্গাস্থরির্পঃ।
উত্তরীয়মধাহপশাদ্র ক্রীন্দ পরপুরঞ্জয়ঃ॥ ২॥
ততঃ স বরমাণস্ত পটে নিপতিতে তদা।
গ্রহীয়ামীতি তং রাজা নলমাহ মহামনাঃ॥ ৩॥
"নিগৃহ্দীয় মহাবুদ্ধে! হয়ানেভানু মহাজবান্।
বাফে'য়ো যাবদেতং মে পটমানয়তা মিহ"—॥ ৪॥
নলস্তং প্রত্যাবাচাথ " দুরে ভ্রন্টঃ পটস্তব।
যোজন সমতিকান্তো নাহর্তুং শক্যতে পুনঃ''—॥ ৫॥
গ্রমুক্তো নলেনাথ তদা ভাঙ্গাস্থরির্নৃগঃ।
আসসাদ বনে রাজন্! ফলবস্তুৎ বিভীতকম্॥ ৬॥
তৎ দৃষ্ট্বা বাহ্তক রাজা ব্রমাণোহভাভাষত।
"মমাপি স্তত! পশ্ব ব্রুৎ সঞ্চানে পরম্ব বলম্॥ ৭॥
শিক্ষাপি স্তত! পশ্ব ব্রুৎ সঞ্চানে পরম্ব বলম্॥ ৭॥

1 00 1

ইত্যারণ্য: রু পর্বানি নেলকখীয়ে ভারত ভাবদীপে একসগুতি তমোহধ্যায়ঃ॥ ৭১॥

रेजि-॥ ऽ॥ २॥ ०॥ ८॥ ०॥ ५॥ १॥

मर्ताः मर्दा । न न न न निष्ठि मर्दा छ। न छ कण्ड । নৈকত্র পরিনিষ্ঠান্তি জ্ঞানস্য পুরুষে ক্রচিৎ। ৮। वृत्कश्चिन् यानि भनानि कलानाभि ह वाहक !। পতিতান্যপি যান্ত ততৈক মধিকং শতমু ॥ ৯ ॥ একপত্রাধিক । हाज * ফলমেকঞ্চ বাছক! পঞ্কেট্যোহ্ধ পত্রাণাৎ ছয়োরপি চ শাখুযো: ॥ ১০॥ প্রচিনুহাস্য শাথে ছে যাশ্চাপ্যন্যাঃ প্রশাধিকাঃ। षां छा १ कल महत्व (ब श्राक्षां नः भंडरम्ब ह "-॥ >>॥ ততো রথমবস্থাপ্য রাজান বাচ্চকোহত্রবীৎ। পরোক্ষমিব মে রাজন ! কথেসে শক্রকর্ণ ! ॥ ১২ । প্রত্যক্ষমেতৎ কর্ত্তান্মি শাত্য়িত্বা বিভীতকম্। অথাত্র গণিতে রাজনু! বিদাতে ন পরোক্ষতা॥ ১৩॥ প্রত্যক্ষং তে মহারাজ! শাতরিষ্ট্রে বিভীতকম। थर् कि नांखिकानांमि खरवरमव न विकि वा ॥ ১९ ॥ স্খ্যাস্যামি ফলান্যস্থ পশ্যতন্তে জনাধিপ।। मुहुर्डमिन वारक रहा त्रभीन यक् वृ वाकिनाम्'-॥ >०॥ ত মত্রবীন্ধ: স্তং "নায়~ কালো বিলয়িত্য ।"---বাছকস্তুত্রবীদেন পরং ষত্রং সমাস্থিত: । ১৬ । " প্রতীক্ষর মুহূর্ত্তং ত্ব মধ বা ত্বতে ভবানু। এষ যাতি শিবঃ পন্থা যাহি বাফে রসারথিঃ"॥ ১৭ ॥ অত্রবীদুভূপর্স্ত সাস্ত্রমন্ কুরুনন্দন!। ' ত্রমের যন্তা নান্যোহন্তি পৃথিব্যামপি বাছক !॥ ১৮॥ ত্বংক্ততে যাতুমিচ্ছামি বিদর্গা হয়কোবিদ!। শ্রণং ত্রাং প্রপন্নোহিশ্মিন বিস্থং কর্ত্ত মর্হসি॥ ১৯॥ 2 || 3 0 || 1 3 1 || 3 2 || 3 2 || 3 4 || 3 5 1 1 3 5 || 3 5 1 1 3 5 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 || 3 6 ||

^{* &}quot; এক মত্ৰাধিকং পত্ৰ" মিতি ক পাঠ:-- ম পাঠ---

কামঞ্চ তে করিষ্যামি যক্ষাং বক্ষ্যানি বাছক ! । বিদর্ত্তাং যদি যাত্মাদ্য সূর্য্যং দর্শায়িতাসি মে'—」 ২০॥ অথাত্ৰবীদাছকন্তং " সন্ধ্যায় চ বিভীতক্ষ। ততে! বিদর্ত্তাং যাস্যামি কুরুদ্বৈত্ত বলে মুন্?'—॥ ২১ # অকাম ইব তং রাজা গণয়স্থেত্যুবাচ হ। * (একদেশঞ্চ শাখায়াঃ সমাদিষ্টং ময়াঽনঘ ! ॥ ২২ ॥ গণয়স্বাহশ্বতত্বজ্ঞ ! ততন্ত্ৰং প্ৰীতি মাৰহ—)"। লোহৰতীৰ্য্য রথাজুৰ্ণং শাত্রামাদ তং ক্রমম্ ॥ ২৩॥ ততঃ স বিশায়াবিটো রাজান মিদমত্রবীৎ। গণয়িত্বা যথোক্তানি তাবস্তোব ফলানি চ ৷ ২৪ ৷ " অত্যন্ত্তমিদং রাজন্ ! দুষ্ট্রানিমি তে বলম্। ভ্যোতৃমিক্।মি তে বিদ্যাং যয়ৈতজ্জায়তে নূপ।"॥ ২৫॥ ত মুবাচ ততো রজা ত্রিতো গমনে নুপ:। বিদ্যাক্ষরত মাং সম্বানে চ বিশারদম্"। ২৬। বান্তক স্তমুবাচাথ " দেহি বিদ্যামিমাং সম। মত্তোপি চাশ্বহৃদয়ং গৃহাণ পুরুষর্যভ !" ৷ ২৭ ৷ अञ्चल छ । ताका वास्क - कार्या (को दवार । रशस्त्रानमा (लाज्यक उ९ जर्पजाबवीकः ॥ २৮॥

॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥ অক্ছদরত্তং অক্লাকি অক্লাভিমানী দেবতারা হৃদরবদ্ধী করণার্থোমন্ত্রঃ অক্ছদরং, যেন জাতেন দ্যুতে অক্ষা অমুকূলা ভবন্তি, সংখ্যানে রাশীকৃতানাং পত্র পুশাফল ধানাাদিনাং রাশ্যামান বিস্তারোজ্যারা দ্যালোচনেন পাটাগণিত রীত্যা বাটিতি তংসংখ্যাবথনে॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥

^{*} নাস্ত্রোহং শঃ ক-পৃত্তকে। **ৼ-পৃত্তকেতু কেবনং "গণরস্বাহশ্বত্তঃ!** ইত্যক—" গণয়দ্যাহস্য তবজ !" ইতি পাচান্তরং।

ধ্যাক্তং বং গৃহাণেদ সক্ষাণাই হৃদয়ং পরম।
নিক্ষেপা মেহখহদয়ং বৃদ্ধি তিন্ঠ তুশ বাছক।"।
এবমুক্ত্রা দদৌ বিদ্যামৃত্যুপর্নো নলায় বৈ ॥ ২৯ ॥
তল্যাক্ষ্কদয়জ্জন্য শরীরামিঃস্তিঃ কলিঃ।
কর্বেটকবিষং তীক্ষং মুখাৎ সততমুধ্বনন্ ॥ ৩০ ॥
কলেস্তন্য তদার্ত্তন্য শাপায়িঃ স বিনিঃস্তঃ।
ম তেন কর্ষিতো রাজা দীর্ঘকাল মনাবানা ॥ ৩০ ॥
ততো বিষ্বিমুক্তালা স্বং রূপমকরোৎ কলিঃ।
ত> শপ্ত মৈছেৎ কৃপিতো নিষ্ধাধিপতির্নাঃ ॥ ৩২ ॥
তমুবাচ কলিভীতো বেপমানঃ কৃতাঞ্জলিঃ।
«কোপ্ সংঘত্ত নূপতে! বীর্ভিং দাস্যামি তে পরাম্॥ ৩০ ॥
ইক্রসেনস্য জননী কৃপিতা মাংশপ্ত পুরাণ।
যদা বৃদ্ধা পরিত্যক্তা ততোহহং ভূশপীডিতঃ ॥ ৩৪ ॥
অবসং বৃদ্ধি রাজেন্দ্র ! স্বৃদ্ধাংথ মপরাজিত !।
বিষ্ণে নাগরাজন্য দহ্মমানো দিবানিশম্ ॥ ৩৫ ॥

অন্যো মধ্যে কাণাং অনুষং প্রং শ্রেচং, ইতরতু জ্য়াপি জায়ত ইতি ভাবঃ, শুতু:কালঃ ভছজী এগামি পর্ণং প্রিয়তে ব্যাপিছতে ব্যাবছতে দেশভির মনে নেতি পর্ণংবাহনং যদ্যেতি শুতুপর্ব নাম নিকজিঃ, অন্যেতু শতানি স্ত্যানি গণিতানি পর্ণানি যদ্যেতি পাচাররং বিপ্রকশ্যা ব্যাক্ কতে দু ২৯ দ তুস্যাক অনুষ্ঠতে—সর্কোষ্ঠ মন্ত্রাণাং তত্বং মনোময় কোশাধ্যঃ স্ত্রাদ্ধা অভএব তং প্রকৃত্য জায়তে "তস্য যজুরেব শিরঃ শক্ষাণাধ্যঃ স্ত্রাদ্ধা অভএব তং প্রকৃত্য জায়তে "তস্য যজুরেব শিরঃ শক্ষ দক্ষিণং পক্ষঃ সামোত্তরঃ পক্ষঃ—"ইত্যাদি, ত মজানতং ছি অভ্যন্তং ধর্ষিষ্ঠ মপি কলি বাধতে, নতু মন্ত্রজ মিতি ভাবঃ ॥ ৩০ ॥ শাপাম্মি দ্ময়ন্ত্রী নিস্কা, স বিষরপঃ, অনাম্বান্ ভদম শুন্যা মৃচ্ ইত্যর্থঃ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ॥ ৩০ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥

^{*} তিওতীত য, বৈতৎ সমীচীনন্।
ক মাহলপথ ইতি ক্ৰ--

भत्रनः ज्ञार अभारतारिय मृत् ८०४२ वरहा मम । যে চ ত্বাং মনুজা লৈাকে কীর্ডায়বান্তাতক্রিতাঃ। মৎপ্রস্থৃতং ভয়^ তেষাং ন কদাচিন্তবিয়াতি ॥ ৩৬ ॥ ভয়ার্ত্ত^ শরণং যাতং যদি মাং ত্বং ন শপ্যাসে"—৷ এবসুক্তো নলো রাজা ন্যযক্ত্ৎ কোপমাত্মনঃ ॥ ৩३ ॥ ততো ভীতঃ কলিঃ ক্ষিপ্রং প্রবিবেশ বিভীতকম্। किल्युरेना खना शृन्भाः कथत्र देव ४५० । ०৮ । ততো গতজ্বরো রাজা নৈষধঃ পরবীরহা। সংপ্রনটে কলৌ রাজা # সম্বায়াস্য ফলান্যুত ॥ ৩৯ ॥ • সুদা পরময়া যুক্তন্তেজ্সাথ পরেণ বৈ। तथमाञ्च्य टिक्की अवरयो क्वरेनईरेसः । 80 W বিভীতকশাপ্রশন্তঃ সংরুত্তঃ কলিসপ অয়াৎ। হয়েত্তমান্ত্ৰ পততো দ্বিদানিব পুনঃ পুনঃ ॥ ৪১ ॥ नलः मत्त्राम्यामामा शक्रिकेनाख्राञ्चना । विमुद्धा बियुत्था बाजा व्यवस्यो म महायभाः ॥ ४२ ॥ নলে ভু সমতিক্রান্তে কলিরপাগমলা হ্য। ততো গতত্বরো রাজা নলোহভূৎ পৃথিবীপতিঃ। বিমুক্তঃ কলিনা রাজনু ! ৰূপমাত্রবিযোজিতঃ ॥ ৪০ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যান পর্বাণি নলম্য কলিত্যাগে দ্বিপপ্ততিতমোহধায়িঃ ॥ ৭২॥

॥ ৩৬॥ ৩৭॥ অদৃশ্য ইতিচ্ছেদঃ, কথ্যন্ কথাং কুর্বন্ ॥ ৩৮॥ ফলানি
১ সংখ্যার অক্ষবিদ্যা সংমধ্যেৎ রাশে রায়ামাদিক মনানোটোবেডি ভাবঃ
॥ ৩৯॥ ৪০॥ দিজানিব পক্ষিণইব ॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪০॥
ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দি-সপ্ততি
তমেহধারঃ॥ ৭২॥

^{*} त्रांजन् !" देि मरवाधन शांठेः क-च-- 🕇 मरकामग्र। माम देि क-च--

त्रक्ष खेवाह ।

ততো বিদর্গ্রাং সংপ্রাপ্তং সারাছে সত্যবিক্রমম্। ঋতুপর্ব- জনা রাজ্ঞে ভীমার প্রত্যবেদয়ন্র ॥ ১॥ স ভীমবচনাক্রাজা কুপ্তিনং প্রাবিশৎ পুরম। नामय्युथरचारयन मर्काः म विमिरमा मिमः॥ २ ॥ ততন্ত্ৰ রথনির্ঘোষং নলাশান্তত্ত শুশ্রুর। 'প্রছত্ব। তুসমঙ্গহান্ত পুরেব নলসন্নিধৌ॥ ৩॥ प्रमम्बी जु खळाव तथरचावः नलमा जम्। यथा (मद्यमा नम्राज्य अञ्चोतः क्लमांगरम ॥ ८ ॥ পর্ বিশায়মাপন্না শ্রুত্বা নাদং মহাস্থনম্ ৷ नत्नन म-शृशिष्ठमु भूरत्रव नलवाकिंमू। সদৃশং রথনির্বোষং মেনে ভৈমী তথা হয়াঃ ॥ ৫ ॥ প্রাসাদস্থাক শিখিনः শালাস্থালৈর বারণাং। হয়। শ্চ শু কু বু স্থস্য রথ ছোবং মহীপতে: ॥ ৬ ॥ **७९क्ष्मज्ञा**† त्रथनिर्धायः वात्रगाः भिश्चिनख्या । প্রবেগ্ন ক্রমুখা রাজনু ! মেখনাদ ইবোৎস্কাঃ ॥ ৭ ॥ দমরম্ভ ।বাচ।

" যথাসৌ রথনির্ঘোষঃ পুরয়ন্ত্রিব মেদিনীস্।
সমাহ্লাদয়তে চেতো নল এব মহীপতিঃ ॥ ৮ ॥

া অথ চন্দ্রাভবক্তুং তং ন পশ্যামি নলং যদি।
অসম্খ্যেয়গুণ্ বীরং বিনক্ষ্যামি ন সংশয়ঃ ॥ ৯ ॥

ততইতি—॥ ১ ॥ ২ ॥ নদাখাঃ বিদর্ভনারে বে দমরন্তা অপত্যাভাংসহ প্রেরিডাঃ তে ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ শিখিনো মহুরাঃ মেবধনিত-জমাং চুকুশুঃ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ > ॥

^{*} প্রত্যপাদয় বিভি ক-ঘ— † তে শ্রুতা ইভি ক-ঘ— 1 যদা ইভি ক—

যদি চৈত্য্য বীর্ষ্য বাস্থোর্ন দ্যাহ মন্তর্ম। প্রবিশামি সুখলপর্শ ন ভবিষ্যাম্যসংশর্ম ॥ ১০ 🛊 यमि मान (मधनिटर्शका (नार्शकां टेनवरः। অন্য চামীকরপ্রধ্যৎ প্রবেক্ষ্যামি হতাশন্ম ॥ ১১ ॥ यमि गां त्रिः हिवकार्स यख्यात्रविक्यः। নাভিগচ্ছতি রাজেক্রো বিনক্ষ্যামি ন সংশয়ঃ ॥ ১২॥ ন স্মরামানৃতং কিঞ্চিন্ন স্মরাম্যপকারভাম। न ह পर्याविष्ठ वाकार देखदब्दिन क्राहन ॥ ১'३॥ श्रञ्जः क्रमावान वीत्रक माठा ठाखाधित्वा नृतेशः। त्रदश्रनीहास्त्रवर्खी ह क्रीववन्त्रय रेनवरः ॥ > ॥ গুণাংস্তদ্য স্মরস্ক্রা মে তৎপরায়া দিবানিশম। क्रमप्तर मीर्या हेमर मांकार धिय्वविनाकुष्य"—॥ ১৫॥ এবং বিলপমানা সা নফসংজ্ঞেব ভারত!। व्यक्तिक महत्वमा भूनात्माकिष्कृकशा । ১७ ॥ ততো মধ্যম-কক্ষায়াং দদর্শ রথমান্থিতম্। ঋতুপর্ণ মহীপালং সহবাফে রবাছকম্ ॥ ১৭ ॥ ততোহ্বতীর্য্য বাঞ্চেরো বাছকশ্চ রধোন্তমাৎ। ইয়া-স্তানবমূচ্যাথ স্থাপয়ামাস বৈ রথমু। ১৮॥ সোহবভীষ্য রখে।পস্থা দুভুপর্ণো নরাধিপ:। উপতত্তে মহারাজং ভীমং ভীমপরাক্রমম্ ॥ ১৯॥ ত্র ভীমঃ প্রতিজ্ঞাহ পুজয়া পর্য়া ততঃ। পে তেন পুজিতো রাজা ঋতুপর্ণো নরাধিপ:। ২০।

॥ ১০ ॥ ১২। পর্যাবিতং প্রতিজ্ঞাত কালাতি লজ্জি॥ ১৩॥ জিতে-ব্রিস্থ্যেবাছ রছ ইভি—রছসি কর্তব্যে স্থাত বিষয়ে, নীচ কর্ম পার দার্যাদি, ওদন্ বর্ত্ত ইতি তদনাঃ অনীচাম্বতী পরস্তীর ক্লীব ইতার্থ: ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ১১॥ ২০॥

#(স তত্র কুণ্ডিনে রম্যে বসমানো মহীপতিঃ। নচ কিঞ্জিদাহপশ্বৎ প্রেক্ষমানো মুন্তু মু'ছ:। সত্রাজা সমাগম্য বিদর্ভ পতিনা তদা) ॥ ২ 🖍 ॥ অকন্মাৎ সহস। প্রাপ্তপ স্ত্রীমন্ত্রণ ন স্ম বিন্দতি †। কিং কার্যাং স্থাগতং তেইস্ত রাজ্ঞা পৃষ্টশ্চ 🛊 ভারত। । ২২ ॥ নাভিজজ্ঞে দ নৃপতি দৃহিত্তর্থ সমাগতম্। ঋত্পর্বোহপি রাজা স ধীমান সত্যপরাক্রম: । ২৩ । রাজানং রাজপুত্রং বা ন শ্ম পশ্যতি কঞ্চন। নৈব স্বয়ম্বর-কথাং ন চ বিপ্রসমাপমম্ ॥ ২৪॥ ততো বিগণয়ন্জা মনসা কোসলাধিপঃ##। ' আগতোহস্মীভ্যবাচৈনং ভবস্ত মভিবাদক:"—॥ ২৫॥ রাজাপি চ স্বয়ন ভীমো মনসা সমচিন্তয়ৎ। " অধিকং যে।জনশতং তস্যাগমনকারণমা† ॥ ২৬॥ গ্রামান বহুনতিক্রম্য নাধ্যগচ্চদ্রথাতথ্য। ष्यण्यकार्याः विनिक्षिकेः जमाभ्यमकात्रवम् ॥ २०॥ পশ্চাত্রদর্কে জ্ঞাস্যামি কারণং যন্তবিষাতি'—। निज्राप्तवः म नुপजिस्त मश्कूजा वामक्ष्य ॥ २৮॥ বিজ্ঞান্যতামিত্যুবাচ ক্লান্ডে।২মীতি পুনঃ পুনঃ। স সংক্তঃ প্রহুটাত্মা প্রীতঃ প্রীতেন পার্থিবঃ ॥ ২৯ ॥

॥২১॥২২॥২৩॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥২৭॥ নৈতদেবং—এতৎ এতন্মিন্
কালে এবং বিচার্য ন ব্যসর্জয়ৎ কিন্তু '' কিশ্রাম্যতান্" ইত্যে বোবাচ ইত্যুত্তবেণান্তঃ॥২৮॥২৯॥

^{**} কোশলে ত ভালব্য পাঠঃ কচিল্লভাতে।

^{††} জাত্র—" রাজ্যকান্যানতি ক্রম্য প্রাপ্তে, হর মভিবাদকঃ"—ইত্যর্জ্ব শ্লোক মধিকং বর্ততে ক-ম পুস্তক দ্বরে।

রাজপ্রেষ্যৈ রন্ত্রগতে। দিউৎ বেশ্ম সমাবিশং। ঋতুপর্ণে গতে রাজন্ ! রাফে রসহিতে নূপে ॥ ৩০ ॥ বান্তকো রথমাদ্যি রথশালামুপাগমৎ। স মোচয়িত্বা* তানশ্বান পরিচর্য্য চ শাস্ত্রভঃ । ৩১ ॥ স্থাকৈতান্ সমাস্থাস্য রথোপস্থ উপাবিশৎ। দময়ন্ত্রহপি †শোকার্ত্তা দৃষ্ট্রা ভাঙ্গাস্থরিং নূপম্ ॥ ৩২ ॥ স্থতপুত্রঞ্চ বাফে য়ে বাছকঞ্চ তথাবিধম্। **চিন্তু**श्रामाम रेक्सब्बेर्ड करेमाय त्रथनिश्वनः—॥ ७०॥ নলস্যেব মহানাসীয় চ পশ্যামি নৈষধম্। বাকে ব্য়েন ভবেমুন্ বিদ্যা সৈবোপশিক্ষিতা। ॥ ৩৪ ॥ া তেনাদ্য রথনির্যোধো নলগোব মহাত্মন:। আহোহিদুভূপর্বোহপি যথা রাজা নলন্তথা। ততোহয়ং ** রথনির্গোষো নৈষধস্যেব লক্ষ্যতে"—॥ ৩৫॥ এবং সা তর্কয়িত্বা তু দময়ন্তী বিশাম্পতে !। দূতীং প্রস্থাসাস নৈৰধাষ্টেষণে শুভা††। ৩৬॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নলেপোখ্যানপর্বাণ ঋতুপর্ণস্য ভীমপুর-, প্রবেশে ত্রিসপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ ॥৭৩॥

দিষ্টাপ নিৰ্দ্দিষ্টাৰ্য ৷ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ আহেংক্সি দিত্যাশ্চৰ্যাত্ৰ অভ এব সমানাৰ্থকং বাক, মাৰ্বিভিন্ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্কণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রি-সপ্ততি-তমেহধ্যারঃ ॥ ৭৩ ॥

^{*} মোক্ষায়া ইতি পাঠঃ ক- পুস্তকে।

† দময়ন্তীতি ইতি ক—ঘ—

‡ তেনাস্য ইতি ক—

** তথায়মিতি প শ্চাত্য পাঠঃ ঘ-পাঠণ্ট।

†† অৱ—" শুভান্" ইতি দৃতী বেশেণতয়। পঠাতে ক-পুস্তকে।

मभ्रस्या विष्

'গছ কেশিনি! জানীহি ক এষ রথবাহকঃ।
উপবিটো রথোপস্থে বিক্তো ব্রস্বান্তকঃ॥ ১॥.
অভ্যেত্য কুশলং উদ্রে! মৃত্বপূর্বাং সমাহিতা।
পৃচ্ছেথাঃ পুরুষং হেনং যথা তত্ত্ব মনিন্দিতে।॥ ২॥
অত্র মে মহতী শঙ্কা ভবেদেষ নলো নূপঃ।
যথা চ মনসন্তুটি হুর্দয়স্য চ নির্ম্বৃতিঃ॥ ৩॥
ত্রুয়াশৈচনং কথান্তে ত্বং পর্নাদবচনং যথা।
প্রতিবাক্যক্ষ স্থেত্রানি! বুধ্যেথা স্তু মনিন্দিতে!"—॥ ৪॥
ততঃ সমাহিতা গত্বা দূতী বাছক মন্ত্রবীং।
দময়স্ত্যপি কল্যানী প্রাসাদস্থা হুপৈক্ষত—॥ ৫॥
কেশিহ্যবাচ।

" স্বাগতত্তে মনুষ্যেক্স! কুশলন্তে ব্রবীমাহম।
দময়ন্তা৷ বচঃ সাধু নিবােধ পুরুষর্যভ ! ॥ ৬ ॥
কদা বৈ প্রস্থিত৷ যুয়ৎ কিমর্থমিহ চাগতাঃ ?—
তত্ত্বং ক্রুহি যথান্যায়ং বৈদর্ত্তী শ্রোভূমিছতি"—॥ ৭ ॥
বাহুক উবাচ।

" প্রুতঃ স্বয়মরো রাজ্ঞা কৌশলেন মহাত্মনা। দিতীয়ো দময়স্ত্যা বৈ ভবিতা শ্ব ইতি দিকাং ॥ ৮॥ ক্রুব্রেডং প্রস্থিতো রাজা শতযোজন যায়িভিঃ। হয়ে ক্রাতজ্পবৈ শ্মূথো রহ মস্য চ সার্থিঃ"—॥ ৯॥*

গচ্ছেতি—॥১॥২॥ ০॥ পর্যাদব্যনং "করু বং কিতব ! চছেত। বস্ত্রা-র্বাহুতে মন"—ইত্যাদি জ্ঞার, বিরূপে। ব্রুবাহুকঃ কন্চিত্ উচ্ছো-ত্রং দন্তবান্ তল্পকণ মেবার মিতি ভাবঃ॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ১॥

^{*} অহমপাস্য সার্থি রিতি ক—

কেশিহ্যুবাচ ৷

ে অথ যোহসৌত্তীয়ো বং স কুতঃ কদ্যবা পুনং।
ত্বঞ্চ কদ্য কথ- প্লেদং ত্বন্ধি কর্ম্ম সমাহিতম্ ?"—॥ ১০॥
বাহুকউগচ।

'পুণাশ্লোকস্য বৈ স্থতো বাষ্টেয়ে ইতি বিশ্রুতঃ। স নলে বিদ্রুতে ভদ্রে! ভাঙ্গাস্থ্রি মুপস্থিতঃ॥ >>॥ · অহমপ্যশ্ব- কুশলঃ স্থতত্বে চ প্রতিষ্ঠিতঃ। ঋতুপর্বেন সার্থ্যে ভোজনে চ রতঃ স্থয়স্''--॥ >২॥

কেশিহাবাচ।

"অথ জানাতি বাফেয়িঃ ক্ক ন্মু রাজা নলো গতঃ। কথঞ্চ ত্বয়ি চৈতেন কথিত স্যান্ত্ বাহুক ?''—॥ ১৩॥ বাহুক উবচে।

'ইহৈব পুজৌ নিক্ষিপ্য নলস্য শুভকর্মণঃ।
গতস্ততো যথাকাম নিষ জানাতি নৈষধন্। ১৪॥
ন চান্যঃ পুরুষঃ কশ্চি নলং বেতি যশস্থিনি!।
গৃতশ্চরতি লোকেহিন্মিন্ নফীরপো মহীপতিঃ॥ ১৫॥
আইয়ব হি নল নিকেশনি নলঃ শংসতি কহি চিৎ''—॥ ১৬॥
ন হি বৈ স্থানি লিক্সানি নলঃ শংসতি কহি চিৎ''—॥ ১৬॥

কেশিহ্যাবার।

" যে ২ সাবযোধ্যাং প্রথমং পতবান্ ব্রাক্ষণস্তদা। ইমানি নারীবাক্যানি কথয়ানঃ পুনঃ পুনঃ—॥ ১৭ ॥ 'শ্রু মু ত্ব^ কিতব! ছিত্ত্বা বস্ত্রার্ক্ত্র প্রস্থিতো মম। উৎস্জ্য বিপিনে স্থা মনুরক্তাৎ প্রিয়াং প্রিয়!॥ ১৮॥

11 70 11 72 11 75 11 70 11 78 11 70 11 79 11 79 11 79 11

সা বৈ যথা সমাদিনী তথান্তে ত্বং প্রতীক্ষিণী।
দহ্যমানা দিবারাত্রং বন্ত্রার্ক্ষেনাভিস্পৃত্তা ॥ ১৯ ॥
তস্যা রুদন্ত্যাঃ সভতং তেন দুঃথেন পার্থিব!।
প্রসাদ্প কুরু মে বীর! প্রতিবাক্যং বদস্ব চ ॥ ২০ ॥
তদ্যান্তৎ প্রিয়মাখ্যানং প্রবদস্ব মহামতে!।
তদেব বাক্যপ বৈদর্গ্রী প্রোতুমিচ্ছত্যানিদ্দিতা ॥ ২১ ॥
এতচ্চুত্রা প্রতিবচ স্তস্য দক্তং ত্বয়া কিল।
যৎ পুরা তৎ পুনস্ত তো বৈদর্গ্রী প্রোত্যমন্ত্রি"—॥ ২২ ॥
রহদশ্ব উবার।

এব মুক্তস্য কেশিন্যা নলস্য কুলনন্দন!
স্কুদয় ব্যথিতঞ্চাসীদহশ্রুপূর্ণে চ লোচনে॥ ২০॥
স নিগৃষ্থাত্মনো ছুঃখং দহ্যমানো মহীপতিঃ।
বাস্প্রসন্দিশ্ধয়া বাচা পুনরেবেদ মত্রবীৎ॥ ২৪॥
বাহুক উবাচ।

' বৈষম্মপি সম্প্রাপ্তা গোপায়ন্তি কুলস্ত্রিয়ঃ।
আত্মান মাত্মনা সত্যো জিতস্বর্গা ন সংশয়ঃ॥২৫॥
রহিতা ভত্ ভিশ্চাপি ন কুধান্তি কদাচন।
প্রাণাংশ্চারিত্রকবসান্ ধারম্বন্তি বরস্ত্রিয়ঃ॥২৬॥
বিষমস্থেন মূচেন পরিভ্রুফ্রপ্রেন চ।
যথ সা তেন পরিত্যক্তা তত্র ন ক্রোক্ম্মর্থতি॥২৭॥
প্রাণ্যাত্রাং পরিপ্রেপ্সোঃ শকুনৈহ্রত্বাসসঃ।
আধিভি দ্যুমানস্ত শ্রামা ন ক্রোক্ম্মর্থতি॥২৮॥
সৎক্তাহসৎক্তা বাপি পতিং দৃষ্ট্রা তথাবিধম্।
বাজ্যজ্রষ্ঠং গ্রেয়া হীনং কুর্বিতং ব্যসনাপ্ল্ডম্ "—॥২৯॥

॥ ७७ ॥ ४० ॥ ४२ ॥ ४२ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४० ॥ ४७ ॥ ४५ ॥ ४७ ॥

এবং ক্রবাণস্তদ্বাক্যং নলঃ পরমন্ত্র্মনাঃ।
ন বাস্পমশকৎ সোচ্ং প্রক্রেরাদ স ভারত।। ৩০॥
ভতঃ সা কেশিনী গত্বা দময়ন্ত্রৈ ন্যবেদয়ৎ।
ভৎ সর্বাৎ কথিতঞ্চৈব বিকারং কন্ত চৈব তাম॥ ৩১॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যানপর্বাণি কেশিনীনলসংবাদে
চত্যুঃ-সপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৭৪॥

त्रहमश्च छेवाह।

मप्रश्रिक्ति—॥ ১॥ २॥ भिष्ठिख्दि—मश्लकार लक्कगीशर (७ वशा ॥ ०॥ ॥ ८॥ ८॥

^{*} যদাচোতলোকে—'' কারণামতাত্ত্র ' কৌশল মিতি ''—তত্ত্র" ইত্যত্ত্র তদ্যোতি—লক্ষয়ন্তীতাসাস্থানে '' সংলক্ষেথা" ইত্যেবমাদিঃ পাচ বিপ-রিণামঃ ক-ঘ পুশুক্ষয়েহপি দৃশাতে। কুনা-শ্রেতদর্শ্ধং ক-পুশুকে, গা-পুশুকে চ।

যজানাদপি পশোণা শুচাখোরং ত্রা মম "—।
দমর স্থৈত মুক্তা সা জগামাথ চ # কেশিনী ॥ ৬ ॥
নিশম্যাথ হয়জ্ঞস্য † লিঙ্গানি পুনরাগমং।
সা তৎ সর্বং যথাইছং দমর স্থৈয় নাবেদরং।
নিমিত্ত যন্তরা দৃষ্টং বাছকে দৈবমানুষম্॥ ৭॥
কেশিহাবাচ।

" দৃতং শুচুপেচারোহসৌ ন ময়া মানুষঃ কচিৎ।

দৃষ্টপূর্বঃ শ্রুতো বাপি দময়ন্তি! তথাবিধঃ॥ ৮॥

হর্মাসাল্য সঞ্চারং নাসৌ বিনমতে কচিৎ।

তস্ত দৃষ্ণা যথাসঙ্গ মুৎসর্পতি যথাস্থ্যম্॥ ৯॥

সঙ্কটেহপ্যস্য স্থমহদ্বিরং জায়তেহধিকম্!।

খাতুপর্ণস্য চার্থায় ভোজনীয়ম্বনেকশঃ॥ ১০॥

প্রেরিতং তত্র রাজ্ঞা তু মাম্সং বছ চ পাশবম্।

তস্তা প্রক্ষালনার্থায় কুন্তান্তত্তোপকল্পিতাঃ॥ ১১॥

তে তেনাবেক্ষিতাঃ কুন্তাঃ পূর্ণা এবাহভবমন্ততঃ।

ততঃ প্রক্ষালনং কুন্তা সমধিশ্রিত্য বাছকঃ॥ ১২॥

**তৃণমুক্তি মুপাদায় সমিধে তাং সমাদধৎ।

অথ প্রন্থলিতন্ত্র সহসা হব্যবাহনঃ॥ ১৩॥

॥ ৬ ॥ १ ॥ শুচুপেচারঃ জনস্থল শুদ্ধানিপরঃ ॥ ৮ ॥ সঞ্চারং দাবং, ব্রুম্বাপি উৎসপতি দীর্ঘ্য ওবতি ॥ ৯ ॥ সমটে সমুচিতে, এতেন ভূমিজরো দার্শিতঃ ॥ ১০ ॥ পাশবং পশুসম্বন্ধি ॥ ১১ ॥ কন্থাঃ পূর্ণা অতএব জল ধাতু জয় উক্তঃ ॥ ১২॥ বহুজিয় মাহ ভূণেতি ত্রিভিঃ—পাচান্তরে—সবিত্যুঃ সকালাৎ সমাদধৎ উদীপিতবান ॥ ১৩ ॥

^{* &}quot; জগামাথাশু" ইতি ক—

† " নিশম্য চ যথান্যারং" ইপ্পাঠিঃ ক—

‡ " সমটে প্যস্য স্থাহান্ বিবরো জায়তে ধিকঃ" ইতি ঘ-পন্তকে পঠাতে।

** " সমাদায় ইতি কচিৎ, কচিচ্চ পুন্তকে " তৃণমুক্তি মুপাদায় স্বিত্তাং
সমাদ্ধৎ" ইতি পাঠঃ কম্পাতে।

তদদুততমং দৃষ্ট্বা বিশ্বিতাহহমিহাগতা।
অন্যক্ত তশ্বিদ্ স্থমহদাশ্চর্যাং লক্ষিতং ময়া॥ ১৪॥
যদপ্লিমপি সংস্পৃশা নৈবাসৌ দক্ষতে শুভে।।
ছন্দেন চোদক তস্য বহত্যাবজিতি জ্রতিম্ ॥ ১৫॥
অতীব চান্যৎ স্থমহদাশ্চর্যাং দৃষ্টবত্যহম্।
যৎ স পুস্পাণ্যপাদায় হস্তাভ্যা মহদে শনৈঃ॥ ১৬॥
স্দ্যমানানি পাণিভ্যাং তেন পুস্পাণি নান্যথা।
ভূম এব স্থগন্ধীনি ক্ষিতানি ভবন্তি হি।
এতান্যদুতলিঙ্গানি দৃষ্ট্বাহহং ক্রতমাগতা"—॥ ১৭॥
বহদশ্ব উবাচ।

দমরন্তী তু তচ্চুত্বা পুণালোকন্ত চেউত্র ।

অমন্যত নল প্রাপ্তং কর্মচেউ। বিস্কৃচিত্র ॥ ১৮ ॥

সা শক্ষমানা ভর্তার শক্তি পুনরব্রবীং ॥ ১৯ ॥

কেশিনী শক্ষরা বাচা রুদতী পুনরব্রবীং ॥ ১৯ ॥

পুনর্গছ প্রমন্তন্ত বাছকদ্যোপসংক্তর ।

মহানসাং শৃত মাংস মানরস্বেহ ভাবিনি !"—॥ ২০ ॥

সা গত্বা বাছক স্থাগ্রে তন্মাংস মপর্ষ্য চ ।

অত্যুক্তমেব ত্বরিতা তৎক্ষণাংশ প্রিয়কারিণী ॥ ২১ ॥

দমরস্তৈয় ততঃ প্রাদাং কেশিনী কুরুনন্দন ! ।

সোচিতা নলসিদ্ধস্য মাংসস্য বন্ধশঃ পুরা ॥ ২২ ॥

॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ বালুজয় মাছ অতীবেতি ঘাভ্যাং—পুলেয় ক্ষীণোহংশো ঝটিতি বার্না আপূর্যাত ইতার্থঃ ॥ ১৬ ॥ ॥ ১৭ ॥ কর্মপাকাদিচেফা ভূত জন্মাদিঃ ॥ ১৮ ॥ বাত্কং বাত্ক ক্রাপিণ মিতি ক্রপভেদাং সংশ্যোহস্তি ন তু ক্রিয়াত ইতার্থঃ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ মাংসস্য মাংসং, বত্শঃ বত্-বারম্ ॥ ২২ ॥

[&]quot; " বাহুকে ব্যথ্যে" ইতি ক— † " তৎক্ষণ মিতি" ক—

003

প্রাশ্য মত্তা নলং স্থত প্রক্রোশন্ত্ শতুং থিতা।
বৈক্রব্যং পরম পরা প্রক্রাল্য চ মুখং ততঃ ॥ ২৩ ॥
মিথুনং প্রেষয়ামাস কেশিন্যা সহ ভারত! ।
ইন্দ্রদেনাং সহ ভারা সমভিজ্ঞায় বান্তকঃ ॥ ২৪ ॥
অভিক্রত্য ততো রাজা পরিষ্ক্র্যাহক্ষমানয়ৎ।
বান্তকন্ত সমাদান্য স্থতো স্থরস্থতোপমৌ ॥ ২৫ ॥
ভূশং তুঃখপরীতাত্মা স্থন্তরং প্রক্রেরেদ হ ।
বৈষ্ণো দর্শয়িত্বা তু বিকার মসক্রন্তনা।
উৎস্ক্র্য সহস্যা পুল্রৌ কেশিনী মিদ মন্ত্রবীৎ ॥ ২৬ ॥
"ইদঞ্চ সদৃশংশ ভদ্রে! মিথুন মম পুল্রয়োঃ।
অতো দৃষ্ট্রব সহস্যা বাস্পামুৎস্ট্রবানহম্ ॥ ২৭ ॥
বন্তশং সম্পত্তী তাং জনঃ শক্ষেত্ত দোষতঃ।
ব্যঞ্জ দেশাতিথয়ো পচ্ছ ভদ্রে! যথাস্থখন্"—॥ ২৮ ॥
ইত্যারণাকে পর্বনি নলোপাখ্যানপর্বনি নলস্য কন্যাপুল্রদর্শনে পঞ্চাপ্রতিত্রমাহ্য্যায়ঃ ॥ ৭৫ ॥

त्रमश्च छेन्।

সর্বাৎ বিকারং দৃষ্ট্। তু পুণাশ্লোকস্য ধীমতঃ । আগত্য কেশিনী সর্বাং† দময়তৈয় ন্যবেদয়ং॥ ১॥ ॥ ২৩ ॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭ ॥ সম্পতভীং আয়ন্তীম্, দোষতঃ ভাষদোবেণ ॥ ২৮॥

ইত্যারণ্যকে পুর্ব্ধণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চসপ্ততি-, তমেহিধ্যায়ঃ॥ ৭৫॥

সর্কমিতি—॥ ১॥

* '' ইদং স্থাদৃশং" ইতি ক—

† " সৰ্বং" ইতাত্ৰ " ক্ষিএং" ইতি পাঠঃ ক-পুস্তকে।

দময়ন্তী ততো ভূয়ঃ প্রেষয়ামাদ কেশিনীম। মাতৃঃ সকাশং ছুঃখাত্তা নলদর্শনকাঞ্জয়া ॥ ২॥ "পরীক্ষিতো মে বছশো বাছকো নলশঙ্কয়া। ৰূপে মে সংশয়ন্ত্ৰেকঃ স্বয়মিচ্ছামি বেদিভূণ্॥ ৩ ॥ স বা প্রবেশ্যতাং মাত শ্বাং বারুজ্ঞাতুমইসি। বিদিতং বাথ বাহজ্ঞাত পিতৃর্ঘে স্ববিধীয়তাম্"—॥ ৪॥ এবমুক্তা তু বৈদৰ্ক্তা সা দেবী ভীম মত্ৰবীৎ। ছুহিতু স্ত মভিপ্রায় মন্ত্রজানাৎ স পার্থিবঃ ॥ ৫ ॥ সা বৈ পিত্রাভ্যনুজ্ঞাত। মাত্রা চ ভরতর্বভ!। নলং প্রবেশয়ামাদ্যক তদ্যাঃ প্রতিশ্রঃ॥ ৬॥ #তारम पृथ्येत मश्मा प्रमाखीर नत्ना नृभः। আবিষ্টঃ শোকছু:খাভ্যাং বভূবাক্রণরিপ্লতঃ। ৭। · তস্ত-দৃষ্ট্য তথাযুক্ত^ দময়ন্তী নলং তদা। তীব্রশোক সমাবিষ্টা বন্থুব বরবর্ণিনী॥৮॥ ততঃ কাষায়বসনা জটিলা মলপক্ষিনী। দময়ন্তী মধারাজ। বাহুক্ বাক্য মত্রবীৎ। ১॥ " পুর্বং দৃষ্টস্তুয়া কশ্চিদ্ধশ্মজ্ঞো নাম বাছক !! স্থা মুৎস্জ্য বিপিনে গতে। যং পুরুষঃ স্ত্রিয়ন্ ?—॥ ১০॥ অনাগস> প্রিয়াং ভার্যাং বিজনে শ্রমমোহিতাম । অপহায় তু কো গচ্ছেৎ পুণাল্লোক মৃতে নলম্ ?—॥ ১১॥ কিমু ভস্য ময়া বাল্যাদপরাদ্ধং মহীপতে:। যো মা মুৎস্ক্য বিপিনে গতবামিদ্রাদিতাম্ ?— ॥ ১২ ॥ ২ । ৩ । ৪ । প্তিলয়: গৃহ্যু। ৬ । ৭ । ৮ । ৯ । ১০ । খতে বিনা ॥ ১১॥ ज्ञानार्ड्ड्राभमर्गद्रशः॥ ১२॥

* তান্ত ইত্যেবং পাঠঃ ক-পুস্তকে।

শাক্ষাদেবানপাহায় রতো यः স পুরা ময়া। অনুব্রতাং সাভিকামান পুজিণীং ত্যক্তবান্ কথম্ ?—॥ ১৩ ॥ অমৌ পাণিং গৃহীত্বা তু দেব।না মগ্রভম্তথা। ভবিষামীতি সভাগ্ধ প্রতিশ্রুতা ক তালাতম্ ? "-॥ ১৪॥ प्रमाशका। क्वरका¦ख मर्कायकपतिन्प्र !। শোকজং বারি নেত্রাভ্যা মস্তবং প্রাস্তবদ্ধ ॥ ১৫॥ অতীব কুঞ্মারাভ্যাং রক্তান্তাভ্যাং জলম্ভ তৎ। পরিস্রবন্ধনা দৃষ্ট্র শোক।র্তা মিদ মত্রবীং ॥ ১৬ ॥ " মম রাজাৎ প্রনষ্টৎ যন্নাহং তৎ কুত্বানু স্বয়ম। কলিনা তৎ ক্লত^ ভীৰু ! যচ স্বা মহ মতাজুম্॥ ১৭॥ যন্ত্রমা ধর্মকুচ্ছেষ্ঠে! * শাপেনাভিহ্তঃ পুরা। বনস্থা ছুঃখিতয়া শোচন্তা মাণ দিবানিশন্ † ॥ ১৮॥ म मक्ति त यका शाक्षणा पार्यमार नार्यम कि । স্বচ্ছাপদগ্ধঃ সতত্ সোহগ্নাবগ্নি রিবাহিতঃ ॥ ১৯॥ মম চ ব্যব্দায়েন তপ্সা চৈব নিৰ্জ্জিতঃ। তুঃখন্যান্তেন চানেন ভবিতব্য^ হি নৌ শুভে!॥ ২০॥ বিমুচ্য মাং গতঃ পাপ স্তভোহ্হমিহ চাগতঃ। ত্বদর্যং বিপুলজোণি। ন হি মেহন্যৎ প্রয়োজনম্॥ ২১॥ কথং তুনারী ভর্তার মনুরক্ত মনুব্রতম্। উৎস্ক্র বর্য়েদন্যং যথা স্বং ভীরু ! কর্হিচিৎ ?—॥ २२ ॥ দূতাশ্চরন্তি পৃথিবী কংস্নাং নূপতিশাসনাৎ। ভৈমী কিল স্ম ভর্তার পদিতীয়ং বর্য়িষাতি। ॥ ২৩॥

^{* &}quot; ছয়া ধর্ম ভূতাং শ্রেষ্টে !" ই ভ ক—

য়ো ধমভিতাং শ্রেছে !" হ'ত ক-া '' বিবাসস" মিতি ক—

বৈরবৃত্তা যথাকাম মনুরপমিবাল্পনঃ!
ক্রুবৈর চৈব পরিতো ভাঙ্গান্থরি রুপস্থিতঃ—" । ২৪ ।
দময়ন্তী তু তচ্চুত্বা নলস্থ পরিদেবিতম্।
প্রাঞ্জলি ব্রেপমানা চভীতা বচন মন্ত্রবীৎ——। ২৫ ॥
দময়ন্তাবাচ।

" न मा मईिंग कलाां । Cपारवंग शतिभक्ति वृत्य । মযা হি দেবানুৎস্ক্য রুভস্তুং নিষ্ধাধিপ ! ॥ ২৬ ॥ তবাভিগমনার্থন্ত সর্বাতো ব্রাহ্মণা গতাঃ। ৰাক্যানি মম গাথাভি গ্ৰেমানা দিশো দশ। ২৭।। ততন্ত্রাং ব্রান্ধনো বিদ্বান্ পর্বাদ্যে নাম পার্থিব ! অভ্যগচ্ছং কোশলায়। মৃত্পর্ণনিবেশনে । ২৮॥ তেন বাক্যেন সম্যকৃতে প্রতিবাক্যে তথা ক্লুতে *। উপায়ে।ইয় সয়া দুটো নৈষধানয়নে তব ॥ ২৯॥ ত্বামৃত্তে ন হি লোকেহন্য একাক্সা পৃথিবীপতে !। সমর্থে। যোজনশতং গন্ত মথৈ র্রাধিপ !। ৩০॥ স্পৃশেয়ন্তেন সত্যেন পাদাবেতৌ মহীপতে ! । यथा नामु कुछः किक्षियनमानि हतामारम् ॥ ७३ ॥ অয়ঞ্চরতি লোকেহন্মিন ভূতসাক্ষী সদাগতিঃ। এব মে মুঞ্জু প্রাণান বদি পাপঞ্চরামাহম্। ৩২॥ তথা চরতি তিগ্নাংশুঃ পরেণ ভুবন সদা। म मुक्ष इ सम প्राणान् यनि পा भः हत्रामाङ्स् ॥ ०० ॥

॥ २८ ॥ २৫ ॥ २७ ॥ २५ ॥ २৯ ॥ ७० ॥ ७১ ॥ मृत्तितिः বায়ুঃ ॥ ७२ ॥ ॥ ৩উ ॥

^{* &}quot; তেন বাক্যে ক্তেদ্মাক্ প্ৰতিৰক্যে তথাক্তে" ইতি পাশ্চাড্যাঃ— য শ্চ—

চন্দ্রমাঃ সর্বভূতানা মন্তব্দরতি সাক্ষিবং। म मुक्क मम आनान यनि भाभक्षतामाह्य ॥ ०४ ॥ **এতে দেব জ্বয়: कुल्यर देवला**कार श्रांत्रास्त्र देव। # তে ব্ৰুবস্ত যথাতথ্য মেতে বাদ্য ত্যজন্ত মাম্"—॥ ৩৫॥ †এব মুক্তন্তথা বায়ু রস্তরীক্ষাদভাষত। " নৈষা ক্লুত্বতী পাপং নল। সত্য ব্ৰবীমি তে॥ ৩৬॥ রাজন ! শীলনিধিঃ স্ফীতো দময়ন্ত্যা সুরক্ষিতঃ। সাক্ষিণো রক্ষিণশাস্যা বয়ং ত্রীনু পরিবৎসরান্॥ ৩৭॥ উপায়ে। বিহিতশ্চায়ং ত্বদর্থমতুলোহনয়া। ন ছেকাক্সা শতং গন্তা ত্বামৃতেহন্যঃ পুশানিহ। ৩৮॥ উপপন্না ত্বয়া ভৈমী ত্বঞ্চ ভৈম্যা মহীপতে !। নাত্র শক্ষা ত্রয়া কার্য্যা সঙ্গচ্ছ সহ ভার্য্যয়া"—॥ ৩৯ ॥ ততো ক্ৰবতি বাষৌ ভু পুষ্পবৃষ্টিঃ পপাত হ। দেবছুক্সভয়ে। নেছু ব্ববৌ চ প্রবনঃ শিবঃ ॥ ৪০ ॥ তদদুততম^ দৃষ্ট্বা নলো রান্ধাথ ভারত!। प्रमञ्जार वि**भक्षा जार वालाकर्यमद्भिन्म मः ॥ ४**२ ॥ ততন্তবন্ত্র মজরং ! প্রারুণোদস্বধাধিপঃ। স**্মৃ**ত্য নাগরাজ্প তং ততো লেভে স্বকং বপু: ॥ ৪২ ॥ স্বৰপিণম্ভ ভৰ্তারং দৃষ্টা ভীমস্থতা তদা। প্রাক্তোশছুচৈ রালিক্ষ্য পুণ্যশ্লোক মনিন্দিত।॥ ৪৩॥

চন্দ্রমাঃ চিক্তাভি মানিনী দেবতা ॥ ৩৪॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯। ॥ ৪০ ॥ ৪১॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥

^{* &}quot; বিক্রবন্ধ যথা সভা মেতদ্দেবাস্তা জন্ধ মান্" ইতি য
† এবমুক্তেভভো বায়ু রিতি ক-ম পৃস্তকৌ।

‡ অজর মিত্যত্র " অরজঃ" ইতি পাঠঃ ক-ম পৃস্তকগ্রে।

ভৈমীমপি নলো রাজা ভজমানাং যথা পুরা। সম্বজে স্বস্থুতৌ চাপি যথাবৎ প্রত্যনন্দত॥ ৪৪॥ তভঃ সোরসি বিনাম্য বক্তং তস্য শুভাননা। পরীতা তেন তুঃখেন নিশশ্বাসাযতেক্ষণা। ৪৫॥ তথৈব মলদিগ্ধাঙ্গীং পরিম্বজ্য শুচিস্মিতাম। স্কুচিরং পুরুষব্যাঘ্র স্তস্থৌ শোকপরিপ্লুতঃ ॥ ৪৬ ॥ ততঃ সর্বাং যথারুত্তং দময়ন্ত্যা নলস্য চ। ভীমায়াহকথয়ৎ প্রীত্যা বৈদর্ত্ত্যা জননী নূপ। ॥ ৪৭ ॥ ততোহ্ববীলহারাজঃ ক্তশৌচমহ**্ নলম্।** দময়ন্ত্যা সহোপেতং কল্যৎ ক্রম্টা স্কুখোষিতম্ ॥ ৪৮॥ ততন্তো সহিতো রাত্রিং কথরন্তো পুরাতনম্। বনে বিচরিতং সর্বব মুষতু মুর্ণিতৌ নূপ ! ॥ ৪৯॥ গৃহে ভীমদ্য নৃপতেঃ পরস্পরস্কবৈধিণৌ। বদেতাং হৃষ্টসঙ্কল্পৌ বৈদন্তী চ নলশ্চ হ।। ৫০।। স চতুর্থে ততো বর্ষে সঙ্গম্য সহ ভার্যায়া। नर्क्तकारेमः स्रुनिकार्या नक्तवान् भवमा भूमम्॥ ८०॥ দময়ন্ত্যপি ভর্তার মাসাদ্যাপ্যায়িতা ভূশম। অর্দ্ধাতশদ্যের তোয়ং প্রাণ্য বস্থারা॥ ৫২॥

॥ 88 ॥ 80 ॥ 85 ॥ 89 ॥ কলো প্রভাতে ॥ 8৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫०॥ ৫১ ॥ ॥ ৫२ ॥ দৈব সমেত্য ব্যপনীয় তক্রাং শান্তজ্বা হর্ষবির্দ্ধসন্ত্র। বরাজ ভৈমী সমবাপ্তকামান

শীতাংশুনা রাত্রিরিবোদিতেন। ৫৩। ইত্যারণ্যকে পর্ব্বলি নলোপাখ্যান পর্ব্বণি নলদময়ন্তীসমাগমে ষট্সপ্রতিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৭৬॥

বৃহদশ্ব উবাচ।

† অথ তা বু যিতো রাতিং নলো রাজা স্বলঙ্ক ।
বৈদর্গা সহিতঃ কালে । দদর্শ বস্থাধিপম্ ॥ ১॥
ততোহ ভিবাদয়ামাস প্রয়তঃ শৃশুরং নলং।
ততোহ কু দময়তী চ ববনেদ পিতরং শুভা ॥ ২॥
তং ভীমঃ প্রতিজ্ঞাই পুক্রবং পরয়া মুদা।
যথা ইং পূজয়িত্বা চ সমাধাসয়ত প্রভঃ ॥ ৩॥
নলেন সহিতান্তর দময়তীং পতিব্রতাম্।
তাম ইণাং নলো রাজা প্রতিগৃহ্ব যথাবিধি ॥ ৪॥
পরিচর্য্যাং স্বকাং তু সৈ যথাবং প্রতাবেদয়ং।
ততো বভূব নগরে স্থমহান্ হর্ষজঃ স্বনঃ ॥ ৫॥

u co u

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈসকণ্ঠ :য়ে ভারত ভাবদীপে ঘট্সপ্ততি-তমোহধ্যায়ঃ॥ ৭৬॥

जारवांज- K 2 II 2 II 9 II 8 II a II

* "তন্ত্রান্" ইতি ক পাঠঃ।
 † অথ তামুধিত ইত্যেবং ক—
 া কালে ইত্যত্র কল্য মিতি ক—

জনস্ত সংপ্রহুষ্টন্থ নল্ দৃষ্টা তথাগতম। অশোভয়চ্চ নগর্প পতাকাধ্য মালিনম্ ॥ ৬ ॥ সিক্তাঃ স্বয়উপুপ্পাত্যা রাজমার্গঃ স্বলঙ্ক তাঃ। ছ।রি ছারি চ পৌরাণাং পুষ্পভঙ্গং প্রকম্পিতঃ । ৭ ॥ অর্চ্চিতানি তু পুল্পৈশ্চ দেবতায়তনানি চ। अञ्चलत्रिश खळाव वाह्कहिबनः ननम् ॥ ৮॥ দময়ন্ত্যা সমাযুক্তং জহ্নবে চ নরাধিপঃ। ত মানায্য নলং রাজা ক্ষময়ামাস পার্থিবমু ॥ ৯ 📭 স চ তং ক্ষময়ামাস হেতুভি ব্রুদ্ধিদিয়তঃ । म महकूरजा महीभारता रेनवंधः विश्विजाननः ॥ ১०॥ উবাচ বাক্য^ তন্ত্রজো নৈষধং বদতাংবরঃ। " দিষ্ট্যা সমেতো দারৈঃ ধৈ র্ডবানিত্যভ্যনন্ত । ১১॥ কচ্চিত্র নাপরাধং তে ক্তবার্নান্ম নৈষধ!। जब्हाजवान∾ वनर्जा मलाृ्ट् वस्थाधिल! । ১২ ॥ যদি বা বুদ্ধিপূর্বাণি যদ্যবুদ্যাপি কানিচিৎ। ময়া কুতান্যকাৰ্য্যাণি তানি ত্বং ক্ষম্ভমৰ্থন "—॥ ১৩ ॥ बन छेवाह।

"ন মেহপরাধং কৃতবাশ্ত্বণ স্বন্পমণি পার্থিব!। কৃতিহপি চন মে কোপঃ ক্ষন্তবাশ হি ময়া তব॥ ১৪॥ পূর্বাং ছপি সথা মেহসি সম্বন্ধী চ জনাধিপ!। অত উর্দ্ধন্ত ভূয়ন্ত্বং প্রীতি মাহর্জু মর্হসি। সর্বাকামৈঃ স্থাবিহিতৈঃ স্থা মন্মাধিতন্ত্বয়ি॥ ১৫॥

॥ ७ ॥ भूष्णां छनः भूष्णमगर्भः ॥ १ ॥ ৮ ॥ २ ॥ २० ॥ २२ ॥ २२ ॥ २० ॥ ॥ २८ ॥ २० ॥

^{* &}quot; সমত '' ইতি ক পাঠঃ।

ন তথা স্থাহে রাজন ! যথা তব গ্রে সদা।

ইদক্ষৈব হয়জ্ঞান জনীয়ং মিয়ি তিঠিতি ॥ ১৬ ॥

ততুপাকর্ত্ব # মিজামি মন্যাদে যদি পার্থিব !"।

এবমুক্ত্বা দদৌ বিদ্যা মৃতুপর্ণায় নৈষধং ॥ ১৭ ॥

স চ তাং প্রতি জগ্রাহ বিধিদ্ফেন কর্মনা।

গৃহীত্বা চাশক্ষদয় রাজন ! ভাঙ্গাম্পরিন্পং ॥ ১৮ ॥

নিষধাধিপতেশ্চাপি দত্ত্বাক্ষক্ষদয়ং নৃপা!।

স্থত মন্য মুপাদায় যথৌ স্পুর্মেব তথ ॥ ১৯ ॥

ঋতুপর্ণে গতে রাজন ! নলো রাজা বিশাম্পতে!

নগরে কুণ্ডিনে কালং নাতিদীর্ঘ মিবাহ্বস্থ ॥ ২০ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্কণি নলোপাখ্যানপর্কণি ঋতুপর্ণক্ত স্থদেশ
গমনে সপ্ত-সপ্ততিত্বেমাহধ্যায়ঃ ॥ ৭৭ ॥

রহদশ উবাচ।

স মাস মুব্য কৌন্তের ! ভীম মামস্ত্র্য নৈষধঃ ।
পুরাদম্পারীবারো জগাম নিষধান প্রতি ॥ > ॥
রথেনৈকেন শুভোন দন্তিভিঃ পরিষোডশৈঃ । · পঞ্চাশন্তি ইযৈশ্চৈর ষট্শতৈশ্চ পদাতিভিঃ ॥ ২ ॥
স কম্পারনির মহীং ত্বরমানো মহীপতিঃ ।
প্রবিবেশ স্থাশংরক স্তর্সৈর মহামনাঃ ॥ ৩ ॥
॥ ১৬ ॥ উপাকর্ত্থ দাতুর্ ॥ ১৭ ॥ ॥ ১৮ ॥ ১১ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥
ইত্যারণাকে পর্কাণ নৈলকভীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্ত-সপ্ততিত্বোহধ্যায়ঃ ॥ ৭৭ ॥

সে:ডি—উষ্য বাসংক্রা॥১॥২ ॥৩॥

^{*} তহুপা হতু মিতি ক--

ততঃ পুষ্করমাসাদ্য বীরদে**নস্থ**তো বলী। উবাচ " দিব্যাব পুন ব্বহু বিত্তং ময়ার্জিভম্'॥ ৪॥ দময়ন্ত্রী চ যজানাত্মম কিঞ্চন বিদাতে। এব বৈ মম সন্যাস স্তব রাজ্যন্ত পুন্ধর ! ॥ ৫ ॥ পুনঃ প্রবর্ত্তাং দ্যুতমিতি মে নিশ্চিতা মতিঃ। # এकপार्वन उत्पर्ध श्रीनरहां क भविष्ट्॥ ७॥ জিত্বা পরস্ব মাহ্নত্য রাজ্যৎ বা যদি বা বস্থ। প্রতিপ্রাণ- প্রদা তব্যঃ পরমো ধর্মা উচ্যতে। ৭ । ন চেদ্বাঞ্জিসি দ্যুত্ত স্বং যুদ্ধদূয়তং প্ৰবৰ্ত্তাৰ। বৈরপেনাস্ত বৈ শান্তি স্তব বা মম বা নূপ !॥ ৮॥ বংশভোজ্যমিদ রাজ্য মর্থিতবাৎ ষথা তথা। ষেন কেনাপ্যপায়েন বৃদ্ধানামিতি শাসনম্॥ ৯॥ ছয়েরেকতরে বুদ্ধিং ক্রিয়তা মদ্য পুষ্কর!। কৈতবেনাক্ষৰত্যাপ তু যুদ্ধে বা নাম্যতাং ধনুঃ "—॥ ১০॥ रेनषरथरेनव मुक्कञ्च श्रुष्ठदः श्रहमन्निव । ধুব মাত্মজয়ং মত্বা প্রত্যাহ পৃথিবীপতিম্ ॥ ১১ ॥ ' দিষ্ট্যা স্বর:জিভিং বিস্তং প্রতিপাণার নৈষধ ! ॥ দিষ্টা চ তুষ্কুতং কর্মা দময়ন্তাঃ ক্ষয়ং গতম্॥ ১২॥ पिछा। **ह थित्रत्य ताजन् ! मनोद्धिमा मरा**जुज् ! । ধনেনানেন বৈ ভৈমা জিতেন সমলক্ষ্তা। ১৩। মা মুপস্থাস্থাতি ব্যক্ত^ দিবি শক্রমিবাপারা: । নিত্যশো হি স্মরামি স্বাং প্রতীক্ষেহপি চ নৈষধ! ॥ ১৪॥

॥ ८ ॥ ৫ ॥ রাজ্যং একপারে নৈব, মুমুড় দমরন্ত্যাদি চ, প্রাণরোশ্চ পণাবছে যুদ্ধ মূপি বর্ত্তামিত্যর্থ: ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪॥

^{*} পণেনৈকেন ই তি ক ঘ পুশুকৌ।

দেবনেন মম প্রীতি র্ন ভবতাস্থক্লাণৈঃ। জিত্বা ত্বদ্য বরারোহাণ দময়ন্তী মনিন্দিতাম্॥ ১৫॥ ক্লতক্তো ভবিষ্যামি সাহি মে নিত্যশো হৃদি "—। শ্ৰুত্বা তম্ভ তু তা বাচো বহুবদ্ধপ্ৰলাপিনঃ। ১৬॥ ইয়েষ স শ্লিরশেছতুং খড়েগন কুপিতো নলঃ ! স্ময় পস্ত রোষতা শ্রাক্ষ স্তমুবাচ নলো নৃপঃ ॥ ১৭ ॥ ' পণ্বঃ কিং বাছেরসে জিত্বা বৈ * ব্যাহরিষাসি "-। ততঃ প্রাবর্ত্ত দূয়তং পুষ্করম্ম নলম্ম চ॥ ১৮॥ একপাণেন ভদ্রত্তে † নলেন স পরাজিতঃ। স-রত্নকেশ্বনিচয়ঃ প্রাণেন পণিতোহপি চু॥ ১৯॥ জিত্বা চ পুষ্করং রাজা প্রহসন্নিদমত্রবীৎ। " মম সর্বমিদং রাজ্য মব্যপ্তং হতক্টকম্॥ २०॥ বৈদৰ্ত্তী ন স্বয়া শক্যা রাজাপসদ! বীকিতৃম্। তস্যান্ত্রপ স্পরীবারো মূঢ় ! দাসত্বমাগতঃ ॥ ২১ ॥ ন ত্বয়া তৎ কৃতং কর্ম্ম যেনাহং বিজিতঃ পুরা। কলিনা তৎ ক্বত্ত কর্ম্ম ত্বঞ্চ মূঢ় ! ন বুধ্যমে ॥ ২২ ॥ नाइर পরক্বত দোষ प्रगाधाए कथका। যথাস্থ্ৰপ বৈ জীব ত্বণ প্ৰাণান বস্তজামি তে ॥ ২৩ ॥ তথৈব সর্বসম্ভারং স্বমৎশং বিতরাসি তে। তথৈব চমম প্রীতি স্তুয়ি বীর! ন সংশয়ঃ॥ ২৪॥ সৌভাত্রঞাপি মে ব্রন্তো ন কদাচিৎ প্রহাস্যতি। পুষ্কর স্ব্ হি মে ভাতা সংজীব শরদঃ শতম্ "। ২৫॥

 ^{* &}quot; জিতো বৈ " ইতি পাঠান্তরম্ পুস্তকান্তর সম্বত্য ।
 † " ভদ্রত্তে " ইত্যত্ত " বীরেণ " ইতি পাঠঃ ক-পুস্তকীয়ঃ।

এবং নলঃ সান্ত্রয়িত্বা ভাতরং সত্যবিক্রমঃ। স্বপুর্ব প্রেষয়ামাস পরিম্বজ্য পুনঃ পুনঃ ॥ ২৬ ॥ সান্তি, তে। নৈষধেনৈবং পুক্ষরঃ প্রভ্যুবাচ তম্। পুণালোকং তদা রাজন্তিবাদ্য ক্লতাঞ্চলিঃ ॥ ২৭ ॥ " কীর্ত্তিরস্ত তবাক্ষয়া জীব বর্ষাযুত্তং স্থুখী। যো মে বিভর্সি প্রাণান্ধিষ্ঠানঞ্চ পার্থিব!"॥ ২৮॥ স তথা সংক্রতো র**:জ্ঞা মাসমুষ্য ততো নৃপ**ো প্রযযৌ স্বপুরং হৃষ্টঃ পুষ্করঃ স্বন্ধনার তঃ ॥ ২৯ ॥ মহত্যা সেনয়া সার্দ্ধং বিনীতৈঃ পরিচারকৈঃ। ভাজমান ইবাদিতো বপুষা পুরুষর্যভ।॥ ৩০॥ প্রস্থাপ্য পুষ্কর বাজা বিত্তবন্তমনাময়ম্। প্রবিবেশ পুরীং শ্রীমানত্যর্গর্পশোভিতাম্ ॥ ৬১ ! ॥ প্রবিশ্য সান্ত্রামাস পৌরা শ্চ নিষ্ধার্থিঃ। পৌরজানপদাশ্চাপি স্প প্রস্কৃত তনুরুহাঃ ॥ ৩২ ॥ উচুঃ প্রাঞ্জলয়ঃ মর্কে সামাত্যপ্রমুখা জনাঃ। ' অদ্য স্ম নির্বাতা রাজন্ ! পুরে জনপদেহপি চ। উপাসিভুং পুনঃ প্রাপ্তা দেশ ইব শতক্রভুম্"॥ ৩৩॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ ন েশপাখ্যান পর্বাণি পুষ্কর পরাভব পূর্বকং রাজ্য প্রত্যানয়নে * অফসপ্রতিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৭৮॥

॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ জনপদে রাষ্ট্রে ॥ ৩৩ ॥ ইতঃশ্রণকে পর্বাণি গৈলকণ্ঠীয়ে ভারতভাব দীপেই ট-সপ্ততির্ধ্যায়ঃ ॥ ৭৮ ॥

^{*} ক খ পুস্তেকেচ কেনলং " পুক্ষরা স্বাদনে" ইতি পঠাতে।

त्रश्म छेगा ।

প্রশান্তে তু পুরে হুটে সম্প্রবৃত্তে মহোৎসবে। মহত্যা দেনয়া রাজা দময়ন্তীমুপানয়ৎ॥ ১॥ দময়ন্তীমপি পিতা সংক্রত্য পরবীরহা। প্রাস্থাপরদমেরাক্সা ভীমো ভীমপরাক্রমঃ 🛚 ২ 🗓 আগতায়ান্ত বৈদৰ্জ্যাং সপুত্রায়াং নলো সুপঃ। বর্ত্তরামাস মুদিতো দেবরাডিব নন্দনে ॥ ৩॥ ততঃ প্রকাশতাং যাতো জমুদ্বীপে স রাজস্থ। পুনঃ শুশাস তদ্রাজ্যং * প্রত্যাহ্নত্য মহাযশা। ॥ ৪ ॥ क्रिक है विविदेश रेख विश्वका श्वमिक रेगः। তথা ত্বমপি রাজেন্দ্র! সম্প্রক্রজাসেইচিরাৎ । ৫ ।: তুঃখমেতাদৃশং প্রাপ্তো নলঃ পরপুরঞ্জয়:। (मयरनन नवरव्यके ! मर्छार्या। **७ ॥** ७ ॥ একাকিনৈব স্থুমহন্নলেন পৃথিবীপতে!। ছু:খমাসাদিতং ছোরং প্রাপ্তক্রেদয়ঃ পুন: ॥ ৭॥ ত্বং পুনজা ভূসহিতঃ কুফয়া চৈব পাণ্ডব!। রমদেহ সিমাহারণ্যে ধর্মমেবামুচিন্তয়ন্ ॥ ৮ ॥ ক্রাক্ষণৈক্ত মহাভাগৈ কেনিবেদাঙ্গ পারগৈঃ। নিত্যমন্বাস্যমে রাজ্বত্ত কা পরিদেবনা ? ॥ ৯ II †কর্কেটিক অ নাগত দময়ন্ত্যা নলস্য চ। ঋতুপর্ণভা রাজধেঃ কীর্ত্তনং কলিন।শনম্''॥ ১০॥ †

প্রশাস্তে বীতশেকে॥১॥২॥৩॥৪॥বক্ষ্যদে দীবাদে 'বশ ক্লান্ডো 'শ ইত্যস্যরপৃষ্য ৫॥७॥৭॥৮॥৯॥১०॥

 ^{*} বৈরাজ্যং ইতি ক –
 † কর্কোট কেতি শ্লোকঃ ক পুশুকে নান্তি।

ইতিহাসমিমঞাপি কলিনাশনমচ্যত।। শক্যম:শ্বসিভুপ গ্রুড্রা ত্রন্ধিধেন বিশাম্পতে ! ৮ ১১ দ অস্থিরত্বঞ্চ সঞ্চিন্ত্য পুরুষার্থন্ড নিত্যদা। তক্তোদয়ে ব্যয়ে চাপি ন চিন্তয়িতুমईসি॥ ১২ ॥ শ্রুতেহাসং নুপতে। সমাশ্রসিহি মা শুচঃ। *ব্যসনে ত্রং মহারাজ! নবিষীদিতু মর্হসি॥ ১৩ x বিষমাবস্থিতে দৈবে পৌরুষেহফলতাঙ্গতে। বিষাদয়ন্তি নাত্মানং সন্ত্রাপাত্রায়ণো নরাঃ॥ ১৪॥ যে চেদং কথয়িষাত্তি নলস্য চরিতং মহৎ া শোষ্যন্তি চাপ্যভীক্ষং বৈ নালক্ষীস্তান্ ভজিষ্যতি॥ অর্থান্তস্যোপপৎস্যন্তে ধন্যতাঞ্চ গমিষ্যতি। ইতিহাসমিমং শ্রুত্বা পুরাণং শশ্বতুত্তমম্॥ ১৬॥ পুজান পৌজান পশু শাপি লভতে নুষু চাঞাতাম । সারোগ্যঃ প্রীতিমাণকৈর ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ ॥ ১৭॥ ভয়াজস্যাদি † যচ্চ ত্ব মাহ্বয়িষ্টিত মাংপুনঃ। অক্ষজ্ঞ ইতি তত্তেহহৎ নাশয়িষ্যামি পার্থিব !! ॥ ১৮॥ (विमाकक्रमध्रेश कुश्य महर मठार्शक्रम !। উপপদ্যস্থ কৌন্তেয় ! প্রসন্মোহহু ব্রবীমি তে''॥ ১৯॥ বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততো ক্ষমনা রাজা র্হদশ্মুবাচ হ।

'ভগবন্ধক্ষদ্দরং জ্ঞাতুমিচ্ছামি তত্ত্বতং"॥২০॥

॥১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥১৫॥১৬॥১৭॥১৮॥ প্নদ্রতং করিষাসীতি
রাজানং প্রতি পূর্বং ভীমসেনেনোক্তং তত্ত্ব পরিষ্ঠার মাহ বেদেতি—
বেদ বেদ্মি, উপপদ্যাস গৃহাণ ॥১৯॥২০॥

^{*} ব্যসনেত্যৰ্জং নান্তি ক পুন্তকে— ক্ষ ভয়ংপশ্যসি ইতি ক—

‡ পাৰ্থিব ইতাত্ৰ ভাৱত ইতি ক—

ততোহক্ষদায়ং প্রাদাৎ পাপ্তবায় মহাত্মনে। দত্ত্ব। চাশ্বশিরোহগচ্ছত্বপস্পাই ~ মহাতপাঃ ॥ ২১ ॥ ব্রহদখে গতে পার্থ মশ্রৌষীৎ সব্যসাচিনম্। বৰ্ত্তমান তপস্থাগ্ৰে বাযুভক্ষ্যং মনীষিণম্ ॥ ২২ ॥ ব্রান্ধণেভ্যস্তপস্থিভ্যঃ সৎপত্ত্যস্তত্ততঃ। जीर्थरेनवरत्ने **कार्याक स्वार्थ कार्या कार्य** ॥ २०॥ ইতি পার্থো মহাবান্ত জুরাপং তপ আন্থিতঃ। ন তথা দৃষ্টপূৰ্বোহন্যঃ কশ্চিছ্পত্ৰতপা ইতি॥ ২৪॥ যথা ধনঞ্জয়ঃ পার্থ স্তপস্বী নিয়তব্রতঃ। মুনিরেকচরঃ औयान् धर्मा विश्वहवानिव ॥ २०॥ তং প্রত্যা পাওবো রাজংস্তপ্যমানং মহাবনে। অন্বশোচত কৌন্তেয়ং প্রিয়ং বৈ ভাতর জয়ম ॥ ২৬॥ मञ्जातन जुरुमा भवगार्थी परावत्न। ব্রাহ্মণান্ বিবিধজ্ঞানান্ পর্যাপৃচ্ছদ্যুধিষ্ঠিরঃ॥ ২৭॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নলোপাখ্যান পর্বাণি বৃহদশ্বসমনে একোনাশীতিতমোহধ্যায়ः সমাপ্তঃ॥ ৭৯॥

সমাপ্তঞ্চ নলোপখ্যান পর্ব।

অশ্বশিরোহশ বিদ্যাৎ যরাব্রহদশ ইতি মুনে নাম, উপস্থান্ত সানাদিকং কর্তুম্ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৫ ॥ জরং জরভাজ মর্জনম্ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলকগীরে ভারত ভাবদীপে উনাশীতি-তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭৯ ॥

সমাপ্তঞ্চ নলোপাখ্যান পর্ব।

जनरमज्ज्ञ छेन्।

"ভগবন্! কামাকাৎ পার্থে গতে মে প্রপিতামছে।
পাগুবাঃ কিমকুর্বাংস্তে তমৃতে সব্যসাচিনম্ ?—॥ ১॥
স হিতেবা^ মহেছাসো গতিরাসীদনীকজিৎ।
আদিত্যানা^ যথা বিষ্ণুস্তথৈব প্রতিভাতিমে॥ ২॥
তেনেক্রসমবীর্য্যেণ সংগ্রামেছনিবর্ত্তিনা।
বিনাভুতা বনে বীরাঃ কথ্যাসন্ পিতামহাঃ ?"॥ ৩॥

বৈশক্ষায়ন উনাচ।

গতে তু পাণ্ডবে তাত! কাম্যকাৎ সভ্যবিক্রমে।
বভূবুঃ পণ্ডবেয়ান্তে ছুঃখশোকপরায়ণাঃ॥৪॥
আক্ষিপ্তস্থা মণয় শিছনপক্ষ ইব দ্বিজাঃ।
অপ্রীতমনসঃ সর্বে বভূবুর্থ পাণ্ডবাঃ॥৫॥
বনম্ভ তদভূত্তেন হীনমক্লিককর্মণা।
কুবেরেণ যথা হীনং বনং চৈত্ররথৎ তথা॥৬॥

"ভগবন! কাম্যকাৎপার্থে গতে মে প্রণিভামহে"—ইত্যানি রধ্যারঃ তীর্থ যাত্তা প্রভাবার্থঃ, যজদানাদ্যহসমর্থস্য ছি তীর্থ যাত্তাবাশ্যকী, যথোজং " ধাবিমৌ এসতে ভূমিঃ সর্পো বিল শয়ানিব ঃ রাজানং চাহবিরোজারং দরিজং চাহপ্রবাসিন্য্।" ইতি, তত্তাপিবল্পু বিরোগঃ সর্কেষাং ছঃখদঃ, তেনচ চিন্তস্য অনবন্ধিতন্তং ভবতীত্যবান্তর তাৎপর্য্যয় ॥ ১॥ ২॥ ॥ ৩॥ ৪॥ আক্ষিপ্তস্তাঃ দিছর সূত্রাঃ দ্বিজাঃ পক্ষিণঃ॥ ৫॥ ৬॥

তমুতে তে নরব্যাঘ্রাঃ পাগুবা জনমেজয় !। मूनम्याञ्च वरना देव कामारक नावमः खना ॥ १॥ बाक्रवार्थ পরাক্রান্তাঃ শুকৈর্বাবৈশ্বহারথাঃ। নিম্বন্তা ভরতশ্রেষ্ঠ ! মেধ্যান্ বছবিধান্ মৃগান্ । ৮॥ নিত্য^ হি পুরুষব্যাত্রা বন্যাহারমরিন্দুমা:। উপাক্কতা সমাহ্নতা ব্রাক্ষণেভ্যো ন্যবেদয়ন্॥ ৯॥ এবত্তে ন্যবদংস্তত্ত শোকার্তাঃ পুরুষর্বভাঃ। অক্ষমনসং দৰ্পে গতে রাজন্ ! ধনঞ্জার । ১ ।। বিশেষতম্ভ পাঞালী স্মরম্ভী মধ্যম পতিম। উদ্বিশ্বং পাগুৰশ্ৰেষ্ঠমিদং বচনমত্ৰবীৎ। ১১॥ " যে। হৰ্জুনেনাৰ্জ্জুনস্তল্যো দ্বিবাছৰ্বছবাছনা। ভয়তে পাণ্ডবশ্রেষ্ঠণ বনণ ন প্রতিভাতি মে॥ ১২॥ শূন্যামিব চ পশ্যামি তত্ত তত্ত মহীমিমাম। বহ্বাশ্চর্যামিদঞাপি বন্ কুসুমিতক্রমম্॥ ১৩॥ ন তথা রমণীয়ং বৈ তমূতে সব্যসাচিনম্। নীলায়ুদসমপ্রথাৎ * মন্তমাতক্ষবিক্রমম্॥ ১৪॥ ভমুতে পুঞ্জীকাক্ষং কামাক্র নাতিভাতি মে। --যক্ত স্ম ধনুষে। ছে। ষঃ প্রায়তেচাইশনিস্বনঃ 🕆 । न लट्ड मर्च देव दाखन् ! स्वदक्षी प्रवामानिष्य " ! ॥ ১৫ ॥ তথা লালপামনোন্তাং নিশমা প্রবারহা। ভীমদেনো মহারাজ! দ্রৌপদীমিদমত্রবীং ॥ ১৬॥ ॥ १ ॥ (स्थान् यकार्शन् ॥ ৮ ॥ छेभाक्का दिश्मिषा, छेभाक्का यक्कार्सर

^{*} নীলামুদচয় প্রধাং ইতি ক— ক জ্রাতেংশনি নিম্মন ইতি ক-খ—

डीमरमन छेगा । *

"মনঃপ্রীতিকরং ছাজে ! যদু বীষি স্থমধ্যমে । ।
তার প্রীণাতি হৃদয় মমৃতপ্রাশনোপময় ॥ ২৭ ॥
যক্ত দীর্ঘৌ সমৌ পীনৌ ভুজৌ পরিঘদরিভৌ ।
নেমর্বিরুতিকিনো রজৌ খড় গাযুধ-ধর্মুর্ধরৌ ॥ ১৮ ॥
নিম্কাঙ্গদরুতাপীডৌ পঞ্চশীর্ঘাবিবোরগৌ ।
তমৃতে পুরুষব্যাত্রক নফস্র্যামিবায়য়য় ॥ ১৯ ॥
যমাজিত্য মহাবাছক পঞ্চোলাঃ কুরবস্তথা ।
স্থরাণামপি যস্তানাং পৃতনাস্থ ন বিভ্যতি ॥ ২০ ॥
যস্য বাছ্ সমাজিত্য বয়ং সর্বের মহান্মনঃ ।
মন্যামহে জিতানাজৌ পরান্ প্রাপ্তাঞ্চ মেদিনীয় ॥ ২১ ॥
তমৃতে কাল্কনং বীরং ন লভে কাম্যকে ধৃতিয় ।
† পঞ্চামি চ দিশঃ শূন্যা স্তিমিরেণারতা ইব"—॥ ২২ ॥
তত্যেহারবীৎ সাজ্ঞকর্কো নকুলঃ পাভুনন্দনঃ ।
নকুল উবাচ।

" যক্ত দিব্যানি কর্মানি কথয়ন্তি রণাজিরে।
দেবা অপি যুধাং শ্রেষ্ঠং তমৃতে কা রতির্বনে ?—; ২৩॥
উদীচীং যো দিশং গত্তা জিত্বা যুধি মহাবলান্।
গন্ধবযুখ্যানৃশতশো হয়ান্ লেভে মহাত্যুতিঃ॥ ২৪॥

॥ ১৭॥ মৌকী কৃত কিশো—কিণং আগত চিহ্নম্॥ ১৮॥ নিকাপদ কৃতা-পীড়ৌ সাঞ্চণতং স্বৰ্গৎ নিকঃ তৎকৃতেনাগদ কৃত ভূষণো ॥ ১৯॥ ২০॥ ॥ ২১॥ ২২॥ ২৩॥ ২৪॥

^{*} ভীমসেন উবাচ ইতি ঘ-ক---

[†] পশামীত্যসাৎ প্রাক্ " শূরামিব চ পশামি তত্ত তত্ত্র মহীমিমান্" ইতার্মপর মধিকং বর্ততে ক পুস্তকে।

রাজ্ঞে তিভিরিকনাধানু ত্রীমতোহনিলরংহসঃ। প্রাদান্ত াত্রে প্রিয়ঃ প্রৈয়া রাজস্থায়ে মহাক্রতৌ ॥ ২৫ ॥ छ ग्रुटा जीय-ध्यान जीमा प्रवेशकः वरन। কাম্যকে কাময়ে ধানং নেদানী মমরোপময় "—। ২৬। महत्मव छेन्। ে যো ধনানি চ কন্যাশ্চ যুধি জিত্বা মহারথান। আজহার পুরা রাজ্ঞে রাজস্থরে মহাক্রতৌ ॥ ২৭ ॥ যঃ সমেতানু মৃধে জিত্বা ষাদবানমিতছাতিঃ। মুভদ্রা মাজহারৈকো বামুদেবস্য সম্পতে 🕸 ॥ ২৮॥ (যেন রাজ্যং সমাচ্ছিদ্য ক্রপদন্ত মহাত্মনঃ। আচার্য্যদক্ষিণা দত্তা গুরোফো ণস্থ ভারত १ ।। ত্যা-জিঞা বুলিং। দৃষ্ট্য শ্নামিব নিবেশনে। হৃদয়ং মে মহারাজ ! ন শাস্যতি কদাচন । ২৯ ॥ वनामभाविवामस द्वांहरत्र्र मतिन्म !। ন হি ন স্তমূতে বীরং রমণীয়মিদং বনম্"—॥ ৩০॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ তীর্থয় ত্রাপর্বাণ অর্জুনারুশেচনে অশীতিতমোহধাায়: ॥ ৮০ ॥

॥ २०॥ २७ ॥ २१ ॥ २৮ ॥ त्रमीर (तृतीर) जामनम् " यञीन। भामनरहिषी" रेजि रक्षा १३ ॥ २० ॥

ইতাবিণাকে পর্বাণি নৈশকণীয়ে ভারতভাবদীপেহণীভিত্যেশ-২ংগ্রাহঃ ॥ ৮০॥

* ' সমান' ইতি পাঁচান্তরং ক পুন্তকীয়ং।

† মেনেতি লোকঃ থ ব পুন্তকে নোপালভাতে, পরন্তনাৎ পাকাতা
পুন্তকে সহাৎ সালবেগিতোহয়ং মূলমধ্যে লোকঃ।

[র্ষী মাত মূজনাযুক্ পাচোপি ভবতি। অপিচান্মিন্ লোকে শূনামিব
ইতাল ' শূনাাং মম' ইতি ক পুন্তকৈ পচাতে।

বৈষ্পায়ন উপ্র

ধনপ্রবাৎ স্থকানান্ত ভাত্ণাৎ কুফয়া সহী প্রত্যা বাক্যানি বিমনা ধর্মর জোহপাজায়ত। ১। অথাপশ্যেক্ত্রানং দেবর্ষিত্ত নারদম্। দীপ্রমানং শ্রেয়া ব্রাহ্ম্যা ছতার্চিষ মিবানলম্। २। ত মাগত মভিপ্রেক্য ভাতৃতিঃ সহ ধর্মরাট। প্রত্যুপার যথান্যায় পুজাঞ্চকে মহাত্মনে ॥৩॥ স তৈঃ পরিরুতঃ শ্রীমান্ ভ্রাতৃভিঃ কুরুস্ত্রমঃ। বিবভা বতিদীপ্টোজা দেবৈরিব শতক্রতুঃ ॥ 🞖 ॥ যথা চ বেদান সাবিত্রী যাজ্ঞসেনী তথা পতীন ! ন জহৌ ধর্মতঃ পার্থানু মেরু মর্কপ্রভা যথা ৷ ৫॥ প্রতিগৃহ চ তাং পূজা নারদোভগবান্যিঃ। আশাসরদ্ধস্থতং যুক্তরূপ মিবান্য! ৷ ৬ 🖠 উবাচ চ মহাত্মানং ধর্মারাজং যুধিষ্ঠিরম্। '' ব্র হিধর্মাভূতাং শ্রেষ ! কেন। খাঁঃ কিং দদানি তে ? "—॥ १ ॥ অথ ধর্মস্থতো রাজা প্রণম্য ভ্রাতৃতিঃ সহ। উবাচ প্রাঞ্জলিভূত্বা নারদং দেবসমাতম্। ৮ ॥ 'ত্বয়ি তুঠে মহাভাগ! সর্বলোকাভিপূজিতে। ক্লতমিত্যেব মন্যেখ্হ~ প্রসাদান্তব স্থব্রত! ॥ ৯॥ যদি বৃহ মনুগ্রাছো ভাতৃভিঃ সহিতোহনঘ ।। সংক্রং মে মুনিশ্রেষ্ঠ ! তত্ত *শেছতুমর্হাস ॥ ১০॥ প্রদক্ষিণাৎ ষঃ কুরুতে পৃথিবীং তীর্থতৎ পরঃ। কিং ফল∿ ভদ্য কাৎস্কে । বন্ধবান বক্ত মাইভি"—। ১১ । ধনঞ্জরে তি

^{*} হদিস্মিতি ক-

নারদ উবাচ।

'শৃণু রাজন্নবহিতো যথা ভীয়েল ধীমতা। পুলস্তাস্য সকাস্থারৈ সর্বায়েত্রপঞ্চয়॥ ১২ ॥ পুরা ভাগারথী গ্রামে ভীমে। ধর্ম ভূত, য়য়ঃ। পিত্রাং ব্রতং সমাস্থায় ন্যবসন্মানিভিঃ ধহ। ১৩। **শুতে দেশে তথা রাজন্! পুণ্যে দেবর্ষিসেবিতে।** शक्षादात्र महाजाता ! * (मवशक्षर्वतमावटल ॥ ১৪ ॥ স পিতৃংস্তর্পরামান দেবাংশ্চ পরমন্ত্রাতঃ। अधी न उर्भशामाम विधिनृत्येन वर्मान्।। २०॥ ক্সাচিত্ত্বথ কালস্য জপন্নেব মহাযশঃ । দদশাদ্ভিতসঙ্কাশং পুলস্তাম্বিসভ্যয় ॥ ১৬ ॥ স তং দুষ্ট্োগ্রতপস্প দাপ্যমান মিব শ্রিয়া। প্রহর্ষ মতুলং লেভে বিস্ময়ঞ্চ পর মযো 🕆 ॥ ১৭ ॥ উপস্থিতং মহাভাগে পূজ্যামাস ভারত।। ভাষে। ধর্মজ্তাং শ্রেষ্ঠে। বিধিদৃষ্টেন কর্মনা ॥ ১৮॥ শির্পা চার্য্য মাদায় শুচিঃ প্রয়ত্মানসঃ। নাম সংকীর্ত্তয়ামাস তিমানু ব্রক্ষি সম্ভবে॥ ১১॥ ভীমে,২হমিত ভদ্ৰভে দাসোহন্মি তব স্কব্ৰত।। তব मनमर्भनारम् ब्रुट्छ। २३१ मक्कि विविधः''—॥ २०॥ এব মুক্তা মহারাজ ! ভীয়ো ধর্মাভ্তায়াঃ। বাগ্যেতঃ প্রাঞ্জিলভূজি। ভূফাসাসাদ্যুধিষ্ঠির ! ॥ ২১ ॥

1 75 11 20 11 28 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11

 ^{*} মহাতেজা ইতি ক—
 ↑ বিশ্বরং পরমং যথৌ ইতি প। চতরম্।

ত পদ্ধী নিয়মেনাথ স্বাধ্যায়েন চ কর্ষিতম্। ভাসং কুরুকুলশ্রেষ্ঠং মুনিং প্রীতমনাভবৎ ॥ ২২ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থয়,তাপকাণি পার্থনারদসংবাদে একাশীভিতমোৎধ্যায়ঃ ॥ ৮১ ॥

পুলন্ত্য উবাচ।

" অনেন্ তব ধর্মকে! প্রশ্রমণ দমেন চ।
সত্যেন চ মহাভাগ ! ভুষ্টে: হিন্ম তব স্কব্রত ! ॥ ১ ॥
যস্যেদৃশন্তে ধর্মোহয়ং পিতৃভক্ত্যান্তিতোহনম ! ।
তেন পশাসি মাং পুক্ত ! প্রীভিশ্চাপি মম মুয়ি ॥ ২ ॥
অমোঘদশী ভীগাহহং বুহি কিৎ করবানি তে ?—
যদক্ষ্যানি কুরুশ্রেষ্ঠ ৷ তায় দাতান্মি তেহনম !"—। ৩ ॥
ভীম্ম উবাচ ।

" প্রীতে স্থান মহাভাগ! সর্বলোকাভি পুজিতে।
কৃত মেতাবতা মন্যে যদহং দৃষ্টবান্ প্রভুষ্॥ ৪॥
যদি স্থমন্ত্রান্থ স্তব ধর্মাভূতাং বর!!
সন্দেহত্তে প্রক্যামি তলে স্ব^ ছেডুমইসি॥ ৫॥
অস্তি মে ভগবন্! কশ্চিৎ তীর্থেভায়ে ধর্মসংসায়ঃ।
ত মহ^ প্রোভুচ্ছিয়মি পৃথক্ স্ক্নীর্ত্তিক স্থাা ॥ ৬॥
প্রদক্ষিণাং যঃ পৃথিবীং করোতাহ্মরসন্ধিভ!।
কিং কলং তন্তা বিপ্রর্থে! তন্মবৃহি স্থনিশ্চিতম্''॥ ৭॥
১১॥

্ ইন্যারগ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারতভাবদীপে একাশীতিতমো-২ধ্যায়ঃ ॥ ৮১ ॥

्रित्नि 🗀 🗦 ॥ २॥ ७॥ ८॥ ४॥ ७॥ १॥

^{*} তদ্তবাৰ বজুমহদীতি ঘ

श्रम्खा हेताह।

" इन्ह তে কথু রিঘামি যদুষীণাং পরায়ণম্। তদেকাগ্রমনাঃ পুক্র ! শৃণু তীর্থেষু যৎ ফলম্ ॥ ৮॥ যস্য হস্তো চ পার্দে চ মনশ্চৈব স্থস শত্ম। বিদ্যা তপশ্চ কীর্ত্তিশ্চ স তীর্থফলমশ্ব তে ॥ ৯ ॥ প্রতিগ্রহাদপারন্তঃ সম্ভক্টো যেন কেনচিৎ। অহঙ্কারনির্ভেশ্য স তীর্থফলমশ্রতে॥ ১০॥ অকল্ককো নিরারস্তো লঘু াছারে! জিতেন্দ্রিয়ঃ। বিমুক্তঃ সর্বাপাপেভাঃ স তীর্থফল মশ্লুতে ॥ ১১ ॥ অক্রোধনক রাজেক্স! সতাশীলো দুগুরতঃ 1 আত্মোপমশ্চ ভূতেযু স তীর্থফল মন্মতে॥ ১২॥ श्विषिञ्चः क्र डवः প্রোক্তা বেদেছপি यथाक्र मण् *। कलटेक्टर यथा उथार 🕆 (अंडा (इस्ट न सर्वायः ॥)०॥ ন তে শক্যা দরিদ্রেণ যজ্ঞাঃ প্রাপ্ত ় মহীপতে!। वहु भक्तना पछा नानामञ्जातविश्वताः ॥ ১৪ ॥ প্রাপ্যক্তে পার্থিবৈ রেটতঃ সমূদ্ধৈর্মা নরেঃ ক্লচিৎ। नार्थकारेन नावगरेन दिकाञ्चा त्रमाधिनः ॥ २० ॥

॥৮॥ যতা হক্তো চেভি—ছুম্পরিপ্রহ পর পীজ দিভাগ নির্ভি ইন্তসংযম; দৃষ্টিপুতে দেশে পাদন্যাসঃ পাদ সং যমঃ, পরানিষ্ট চিন্তনাভাবো মনঃসং-যমঃ, বিদ্যাসংযমঃ অভিচার রাহিত্যং, তপঃসংযমঃ দশুরাহিত্যং, কীর্ত্তি সংযমঃ পাপ কীর্ত্তিরাহিত্যন্॥৯॥ অসৈত্যব শোকস্য ব্যখ্যানং প্রতিপ্রছাদি জিন্তরং, অপারুত্তে। নির্ভঃ, সন্তোবোহলং বুদ্ধিঃ ॥১০॥ অকল্ককঃ দম্বাদি হীনঃ "কল্কঃ শাঠো চ দস্তেচ" ইতি বিশ্বঃ॥১১॥ আজেপিমঃ দর্যাবান্॥১২॥১৩॥১৪॥ অবৈগাণেঃ অসহাত্তি নীচসহার্থে একাড্ডিঃ, অস-১ হারৈঃ অসাধ্বিঃ পত্নাদি রহিতিঃ॥১৫॥

দেবেছপি যথাক্রম মিতি ছ—
 † যথাতথ্মিতি ক পাঠঃ।

যো দরিদৈ রপি বিধিঃ শক্যঃ প্রাপ্ত্র নরেশ্বর !। जुरला राख्यकरेलः भूरेना खिन्रराध युधाः वतः।॥ ১৯॥ ঋষীণাং পরমু গুহুমিদং ভরতস্তুম !। তীর্থাভিগমনং পুণ্যৎ যজ্ঞৈরপি বিশিষ্যতে॥ ১৭॥ অনুপোষ্য ত্রিরাত্রাণি তীর্থানানভিগম্য চ। অদত্তা কাঞ্চনং গাশ্চ দরিদ্রো নাম জায়তে॥ ১৮॥ অগ্নিটোমাদিভিধক্তৈ রিষ্ট্রা বিপুলদক্ষিলৈ:। ন তৎফল মবাপ্লোতি তীর্থাভিগমনেন যথ॥ ১৯॥ नुरलारक (प्रवापनमा जीर्थ- रेजलाकाविक्रज्य । পুষ্কর্ম নামবিখ্যাতং মহাভাগঃ সমাবিশেৎ* ॥ ২০॥ দশ কোটিসহস্রাণি তীর্থানাং বৈ মহামতে!। সালিধ্যং পুদ্ধরে যেষাং তিসন্ধ্যং কুরুনন্দন ! ॥ ২১॥ व्यानिकः। वमरवा क्रमः माधाम्ह ममक्कानाः। গন্ধর্মপেরসলৈব নিত্যং সন্নিহিতা বিভো। ॥ ২২ ॥ যত্র দেবাস্তপস্তপ্তা দৈত্যা ব্রহ্মর্যয়পা। দিব্যযোগা মহারাজ! পুণ্যেন মহতান্বিতাঃ॥২৩॥ यनमान्या विकासमा श्रुक्तत्रां भनित्रनः। পুরন্তো সর্বাপাদানি নাকপুঠে চ পূজ্যতে । ২৪॥ অস্মিংস্তীর্থে মহারাজ ! নিতামেব পিতামহঃ। উবাস পরমপ্রীতো ভগবানু কমলাসনঃ॥ ২৫॥

^{11 26 11 26 11 26 11 26 11 30 11 42 11 45 11 46 11}

^{*} নূলোক ইতি শোক সোত্তরার্দ্ধং ভিন্নরীত্যা ক-পুস্তকে পঠ,তে, ব্যা,
''পুক্রং ভন্নর্থ মাসাদ্য মহাভাগ সমোভবেদিতি'।
্ব দুয়ত ইতি ক খ পুস্তকৌ।

পুষ্করেষু মহাভাগ ! দেবাঃ সর্যিগণাঃ পুরা। সিদ্ধিং সমতিসংখ্যাপ্তাঃ পুণোন মহতাশ্বিতাঃ॥ ২৬॥ তত্রাভিষেকং यः কুর্য্যাৎ পিতৃদেবার্চ্চনে রতঃ। অশ্রমেধাদ্দশ গুণং ফল প্রান্থ মু'নীষিণঃ†॥২৭॥ অপ্যেক ভোজয়েদ্বিপ্রং পুষ্করারণ্যমাশ্রিত:। তেনাসৌ কর্ম্মণা ভীম্ম! প্রেভ্য চেহ্ চ মোদতে ॥ ২৮ ॥ भारिकम् रेलः करेल स्वाशि (यन वर्छग्रटक स्वयम् । তবৈ দলাদ।ক্ষণায় অদ্ধাবাননসূয়কঃ॥ ২৯॥ ८७८ेनव প्राश्चेशा था, एक्वा इस्रामधकन नतः। ব্রাহ্মণাঃ ক্ষত্রিয়া বৈশ্বাঃ শূদ্রা বা রাজসম্ভম !॥ ৩০॥ ন বৈ যোনৌ প্রজায়দ্তে স্নতোস্তীর্থে মহাত্মনঃ। কার্ত্তিকীন্ত বিশেষেণ যোহভিগচ্ছতি পুদ্ধরম্ ॥ ৩১॥ প্রাপ্রাৎ স নরো লোকান্ ব্রহ্মণঃ সদনেই ক্য়ান্। সায়ং প্রতেঃ স্মরেদ্যস্ত পুষ্করাণি ক্রতাঞ্চলিঃ॥ ৩২॥ উপস্পৃত্য~ ভবেত্তেন সব্বতীর্থেষু ভারত।। জন্মপ্রভৃতি যৎ পাপণ স্ত্রিয়া বা পুরুষদ্য বা ॥ ৩৩॥ পুষ্করে স্নাতমাত্রম্ভ সর্ব্যমেব প্রণশ্যতি। यथा खूतावार ऋर्ववा मानिस मधूर्मनः॥ ७८ ॥ তথৈব পুষ্কর সরালং স্তীর্থানা মাদি রুচ্যতে। উফ্টা দ্বাদশবর্যাণি পুষ্করে নিয়তঃ শুচিঃ॥ ৩৫॥ াঋতুন সৰ্বানবাপ্পোতি ভ্ৰহ্মলোকে স গছতি। যস্তু বৰ্ষশতং পূৰ্ণ মগ্নিহোত্ৰ মুপাসতে॥ ৩৬॥

॥२७॥ २१॥ २৮॥२२॥७०॥ ৩১॥७२॥ উপক্ষাইং স্থাতিং ভাবেং ॥५७॥७৪॥উফ্বাবাস ক্যা॥৩৫॥ঋভূন্ সর্কান্ প্রাপ্রোভি সম্বং সর্চ-

^{* &}quot;সিদ্ধিং পরমিকাং প্রাপ্ত।" ইতি ক ঘপুস্তকৌ পঠতঃ।

† সোহশ্বমেধ মন্প্রোতি একলেকে চ পুজ্যত ইতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

া ক্রুনিতি পাঠান্তরম্।

কার্ত্রিকীং বা বদেদেকাং পুদ্ধরে সমমেব তৎ। ৩৭।
ত্রীনি শৃঙ্গানি শুভানি ত্রীনি প্রভ্রবণানি চ।
পুদ্ধরাণ্যাদিসিদ্ধানি ন বিল্পুত্র কারণম্। ৩৮।
ছন্ধরং পুদ্ধরে গন্ধ-* ছন্ধরং পুদ্ধরে তপঃ!
ছন্ধরং পুদ্ধরে দানং বস্তুম চৈব স্বভ্রদ্ধরম্। ৩৯।
উন্দী দাদশরাক্রন্ত নিয়তো নিয়তাশনঃ।
প্রদাসন মুপার্ভো জমুমার্গং সমাবিশেৎ। ৪০।
জমুমার্গম সমাবিশ্য দেবর্ষিপিত্দোবিতম্।
জম্মার্গম সমাবিশ্য দেবর্ষিপিত্দোবিতম্।
জম্মার্গম সমাবিশ্য দেবর্ষিপিত্দোবিতম্।
ত্রোষ্য রজনীঃ পঞ্চ পূভাল্প। জায়তে নরঃ।
ন ছুর্গতি মবাপ্রোতি সিদ্ধিং প্রাপ্লোতি চোন্তমান্। ৪২।

অক প্রকাপতি সায়ুজ ২ প্রাপ্তোতীতার্থঃ " ঋতু র্জু । সম্বংসর মূপ্যেতি সম্বংসরঃ প্রজাপতিঃ প্রজাপতিগা বৈষ্ণঃ " ইতি আছে, জভু নিতাপি পাঠঃ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ আত্রপুক্ষর প্রস্তাবে বিষম শ্লোক ব্যাখা। রাং मुझानि खन्नानि जीनि ध्ययनग्नितः। श्रुकत्नानामिनिकानि न विद्याखन কারণ মিতি লোকঃ পঠিতো ব্যাখাতত , ইলানীং মন্দ বুদ্ধিতি ছব্যাখ্যের তয়া পরিত,ক্ত ইতি ন পুত্তকান্তরের দুখতে, অত্ত প্রাচাং ব্যাখ্যা--জয়তে শূণাতে বা শৃদ্ধণি মুমুকুতি রাগয়ণীয়ানি পাপছিংসকাণি বা শুক্রাণি জাজিমুনি ত্রীণ পুশুরাণি তেয়াং মধ্যে সংস্কৃতী প্রপ্রবৃতি ইতি তান্যের ত্রীণি প্রস্রবন্ধি আনুদ সিদ্ধাশ তীথান্তর বহুৎপত্তি রহিতানি অতএৰ তত্ৰ ভীৰ্মসাদকৰ ক্ষেণ্ড ন বিৰঃ ইতি, বস্তুভস্তু " বেদারণাং পঞ্চ নদং গৌরী মাধুর মার্কুনং। জৌল্ফুং কুন্ত কোলগু কলী ক্ষেত্র সমানি যট," ইত্যাদিবদিহ কাণী সাম্মোন পুঞ্চরং সুরতে, তথাগ্রমারঃ, প্রাণান্তবেষু ব্যবাশক্ষা প্রিকোণ্ড স্মরণাৎ এবঃ কে ণা এব প্রজ্ঞবন্ত্রি এয়ঃ व्यवाद्याः अमीवक्वारा मंद्रशाम्म, अथवात्वन दिव्यत्वाव व्याद्यां, उथा दीवि পুক্রাণি এতানি তীণি কাণাপ্রাণ পুক্রাণি আদি সিদ্ধানীত।[দি প্রায়ই, তেন কাশ্রা কাশী প্রয়ায়াভাং হা সমান মিদং পুড়াৎ তিই সাম্যাদিতি পুক্তরস্ত্রতিঃ র্তা ভবতি॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ৪১॥ ৪১॥ ৪২॥

^{*} পুরুরংগন্ত মিতি ক—

জয়ু মার্গাত্বতো গচ্ছেত্ত ুলিক। শ্রম্। ন ছুৰ্গতি মবাপ্লে।তি ব্ৰহ্মলোকঞ্চ গচ্ছতি ॥ ৪৩ । আগস্তাং সর আসাদ্য পিতৃদেবার্চনে রতঃ। ত্রিরাত্রোপোষিতো রাজনগ্নিটোমফল লভে ॥ ৪৪॥ শাকরজিঃ ফলৈ ব্রাপি কৌমার বিন্দতে পরমৃ । কণ্যভাষং ততো গচ্ছেৎ জ্রীজুটাং লোকপূজিতন্॥ ৪৫॥ ধর্মারণাৎ হি তৎ পুণ্য মাদ্যক্ষ ভরতর্যভা।। ষত্র প্রবিষ্টমাত্রো বৈ সর্কাগালৈঃ প্রযুচ্যতে । ৪৬ । অৰ্চমিত্বা পিতৃন দেবান নিয়তো নিয়ত।শনঃ । সর্কাম সমৃদ্ধস্য ধজাস্য ফলমশুতে ॥ ৪३॥ প্রদক্ষিণং ততঃ কুত্রা যযাতিপতনং ব্রজেৎ। হয়মেধন্য যজ্ঞন্য ফল প্রপ্রাতি তত্র বৈ॥ ৪৮ ॥ মহাকালং ততো গচ্ছেৎ নিয়তো নিয়ত শনঃ। কোটিতীর্থ মুপস্পুশ্য হয়মেধফলং লভেং॥ ৪৯॥ ততো গচ্ছেত ধর্মজ্ঞ স্থাণেত্তীর্থ মুমাপতেঃ#। নামা ভক্রবটং নাম ত্রিয়ু লোকেয়ু বিশ্রুত্যু। ৫০॥ তত্রাভিগম্য চেশানং গোসহস্রকলৎ লভেৎ। মহাদেবপ্রসাদাচ্চ গাণপত্যঞ্ বিন্দৃতি॥ ৫১॥ সমৃদ্ধ মসপত্মঞ্চ ভ্ৰিয়া যুক্তং নৱে। ত্তমঃ। नर्जाषास्त्र ममामामा निषे देवत्नाकारिकाराम् ॥ ५२ । তপ্রিত্বা পিত্ন দেবানগ্নিফৌমফলং লভেৎ। দক্ষিণ~ সিন্ধু মাসন্দ্য ব্রহ্মচারী ক্সিতেন্দ্রিয়ঃ ॥ ৫৩॥

| 80 || 88 || 80 || 80 || 89 || 89 || 80 || 60 || 62 || 62 || 60 ||

 ^{*} পর (মত্যত্ব—পদ মিতি ক—
 * স্থানং পুণ্যুমাপতে রিতি কঃ।

অগ্নিফোম মবাপ্নোতি বিমানঞ্চাধিরোহতি। চর্মাণ্ডী সমাসাদ্য নিয়তো নিয়তাশনঃ। রন্তিদেবভারুজ্ঞাত । মগ্লিফৌমফলং লভেৎ। ৫৪॥ ততো গচ্ছেত ধর্মজ্ঞ ! হিমবৎস্থত মর্কাদ্য। পুথিব্যাণ যত্র বৈ চ্ছিত্রং পূর্ববিশাসীক্ষ্ ধিষ্ঠির ! । ৫৫ । তত্রাশ্রমো বশিষ্ঠস্য ত্রিষু লোকেষু বিশ্রুতঃ। তত্রেষ্য রক্ষনীমেকাৎ গে, সহস্রফলৎ লভেং॥ ৫৬॥ পিক্সাতীর্থ উপস্পা ব্রন্ধচারী নরাধিপ।। কপিলানাং নরব্যান্ত! শতস্য ফলমশ্ব তে ॥ ৫৭॥ ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র। প্রভাসং তীর্থ মুক্তমম্। তত্র সন্নিহিতো নিত্যং স্বয়মেব ছতাশনঃ॥ ৫৮॥ দেবতানা শুখং বীর! জ্বনোহনিলসার্থিঃ। তিসাং স্তীর্থে নরঃ স্নাস্থা শুচিঃ প্রয়তমানদঃ ॥ ৫৯ ॥ অগ্নিফোমাতিরাত্রাভ্যাং ফলং প্রাপ্নেটিত মানব:। ততো গত্বা সরস্বতাঃ সাগরসা চ সঙ্গমম্। ৬০॥ গোসহস্রফলং তস্য স্বর্গলোকঞ্চ বিন্দতি।। প্রভয়াদীপাতে নিতা মগ্লিবৎ ভরতর্বভ। ॥ ७) ॥ তীর্থে দলিলরাজন্য স্নাত্ব। প্রয়তমানদঃ। ত্রিরাত্র মুষিত স্তত্ত তর্পয়েৎ পিতৃদেবতাঃ॥ ৬২॥ প্রভাসতে যথা সোমো সোহশ্বমেধঞ্চ বিন্দৃতি!। বরদানং ততো গচ্ছেৎ তীর্থণ ভরতসন্তম ! ॥ ৬৩॥

1 08 11 00 1 00 1 00 11 00 11 00 11 00 11 00 11 00 11

^{*} জ্ঞাত ইতি কর্ত্ বশেষণতয়া পাচাতে ক-পুস্তকে।

া প্রাপ্য স্বর্গনোকে মহীয়তে ইতি ক—প্রভাগেরার্দ্ধে—" দীপ্য
মানোহামি বল্লিত ং প্রভাগ ভরতর্মভ।" ইতি পাচশ্চ ক—

া " বিরাজতি হথা সোমোধাজি মেধঞ্চবিদ্দ ত।" ইতি ক—

বিষ্ণেদ্রবাসনা যত্র বরো দভো যুবিষ্ঠির!। व्यवासि नतः आद्या शामहञ्यकनः लाखः ॥ ७८ ॥ ভতো দারবতীং গচ্ছেৎ নিয়তো নিয়তাশনঃ। পিপ্তারকে নর: সাত্বা লভেছছমূবর্ণকম্ ॥ ৬৫ n তিমাং স্তীর্থে মহ,ভাগ! পদ্মলক্ষণলক্ষিতাঃ। অদ্যাপি মুদ্রা দৃশ্যন্তে তদদ্ভ মরিন্দম।॥ ৬৬॥ जिथ्लाकानि अवानि मुगार कुक्नम्न !। মহাদেবস্য সালিধান তত্র বৈ পুরুষর্যভ !॥ ৬৭ ॥ সাগরসা চ সিস্কোশ্চ সঙ্গমং প্রাপ্য ভারত।। তীর্থে সলিলরাজস্য স্নাত্বা প্রয়ত মানসুঃ॥ ৬৮॥ তর্পষিত্বা পিত্ন দেবানৃষীংশ্চ ভরতর্বভ!। প্রাপ্তে বারুণ লোকং দীপ্যমানঃ স্বতেজ্যা ৷ ৬৯ ৷ শক্ষুকর্ণেশ্বরং দেব মর্চ্চায়ত্বা যুধিষ্ঠির!। অশ্বমেধাদশগুণ্ প্রবদন্তি মনীষিণঃ ॥ ৭০॥ প্রদক্ষিণ মুপার্ত্য গচ্ছেত ভরতর্ষভ!। তীর্থণ কুরুবরশ্রেষ্ঠ। তিযু লোকেযু বিশ্রুতম্ ॥ ৭১ ॥ দুমীতি # নামা বিখ্যাতং সর্ব্বপাপপ্রমোচনম্ ৷-যত্র ব্রহ্মাদয়ো দেবা উপাসন্তে মহেশ্বর্য । ৭২॥ তত্ত্র স্বাম্বার্চয়িত্বা চ রুদ্রং দেবগণৈ ব্ভিম্। জন্মপ্রভৃতি যং পাপং তৎ স্নাত্স্য প্রণশ্যতি॥ ৭৩ ॥ দমীচাত্র নরেশ্রেষ্ঠ ! সর্বাদেবৈ রভিষ্ট্ তা । তত্ত্ব স্বাস্থা নরশ্রেষ্ঠ ! হরমেধ মবাপ্লুয়াৎ ॥ ৭৪ । পত্বা যত্র মহাপ্রাজ্ঞ! বিষ্ণুনা প্রভবিষ্ণুনা। পুরা শৌচ কৃতং রাজন । হত্বা দৈতেয় দানবান । ৭৫। 1 48 1 40 1 44 1 49 1 44 1 45 1 40 1 4. 1 47 1 40 1 48 1 40 * जिमोषि भाष्ठः कः -- मर्सभाभ धना ननः देखि यः --

ততো গচ্ছেত ধর্মজ্ঞ ! বস্কুধারা মভিফুতাম্। গমনাদেব ভদ্যাংহি হয়মেধ মবাপ্লায়াৎ ॥ ৭৬ ॥ স্নাত্বা কুরুবরভোষ্ঠ। প্রয়তাত্মা সমাহিতঃ। তপ্য দেবানু পিভংকৈর বিফুলোকে মহীয়তে। ৭৭। তীর্থে চাত্র সরঃ পুণ্যং বস্থনাংভরতর্বভ!। তত্র স্পাত্বা চ পিত্বা চ বস্থনাং সম্মতো ভবেৎ॥ ৭৮॥ সিক্ষুত্তম মিতি খ্যাতং সর্বাপাপপ্রনাশনম্। তত্র স্বাস্থা নরশ্রেষ্ঠ। লভেদ্বন্থ্র বর্ণকম্ । ৭৯ । ভজতুঙ্গং সমাসাদ্য শুচিঃ শীলসমন্বিতঃ। ব্রদ্মলোক মবাপ্লোতি গতিঞ্চ পরমান ব্রজেং॥৮०॥ কুমারিকাণাৎ শক্রস্য তীর্থং সিদ্ধনিষেবিতম্। তত্র স্বাত্বা নরভোষ্ঠ। শক্রলোক মবাপ্সুয়াৎ। ৮১। রেণুক্ণয়াশ্চ ততৈর তীর্থং সিদ্ধনিষেবিতম্। তত্র স্বাত্বা ভবেছিপ্রো নির্মালকক্রমা যথা।।। ৮২।। অথ পঞ্চনদং গত্বা নিয়তো নিয়তাশনঃ। পঞ্চযজ্ঞানবাপ্লোতি ক্রমশো যেহনুকীর্ত্তিতাঃ॥৮৩॥ ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র ! ভীমায়াঃ স্থান মুত্তমম্। তত্র স্বাত্বা তু যোন্যাং বৈ নরে। ভরতসত্তম । ॥ ৮৪ ॥ (पर्याः পুरत्या ज्वा ज्वा ज्वा । त्र कु छ निविध हः। গবাং শতসহস্রস্য ফলং প্রাপ্তেমাতি মানবঃ॥৮৫॥ শ্রীকুণ্ডন্ত সমাসাদ্য ত্রিয়ু লোকেয়ু বিশ্রুতম্। পিঅসহং নমস্কৃতা গোসহস্রফল্প লভেৎ ॥ ৮৬ ॥ ততি। পচ্ছেত ধর্মজ্ঞ ! বিমলং তীর্থমুক্তমম্। অদ্যাপি যত্র দৃশ্যন্তে মৎস্যাঃ সৌবর্ণরাজভাঃ ॥ ৮৭ ॥

তত্র স্বাবারঃ ক্ষিপ্রণ বাসবং লোক মাপ্রয়াও। সর্ববিপাপবিশুকারা গচ্ছেত পরমাণ গতিম্। ৮৮॥ বিভন্তাঞ্চ সমাসাদ্য সন্তর্প্য পিতৃদেবতাঃ। নর: ফল মবাপ্লোতি বাজপেয়দ্য ভারত। ॥ ৮৯॥ কাশ্মীরেছেব নাগস্য ভবন্ন তক্ষকস্য চ। বিতস্তাধ্যমিতি খ্যাত্ত সর্বাপাপপ্রমোচনম্ ॥ ৯০ ॥ তত্র স্থানরো ভূনং বাজপোয় মবাপ্লয়াৎ। সর্ববিপাপবিশুদ্ধাত্মা গচ্ছেচ্চ প্রমান গতিম। ৯১। ততো গচ্ছেত বডবাং তিষু কোকেষু বিশ্রুতাম। পশ্চিমায়। स मक्कामा मूलम्म, मा यथाविधि ॥ ৯২॥ हरू नश्चार्कि य ताकन् ! यथामकि निर्वासि । পিতৃণামক্ষয়ং দানং প্রবদন্তি মনীষিণঃ ॥ ৯৩ ॥ श्चषयः পিতরো দেবা গন্ধার্কাঞ্দরসা**ৎ গণাः।** গুস্থকাঃ কিন্নরা যক্ষাঃ দিদ্ধা বিদ্যাধরা নরাঃ ॥ ৯৪॥ রাক্ষমা দিভিজা রুক্তা ব্রহ্মা চ মনুজাধিপ !। নিয়তঃ পরমাণ দীক্ষা মাস্থায়াক্দ্সহস্রকীন্ ॥ ৯৫॥ विस्थाः थानामनः कूर्या ऋत्रक खानाः खर्या । সপ্তভিঃ মপ্তভিশৈচৰ ঋগি ভ স্তুষ্টাৰ কেশবম্ । ৯৬। দদা বন্ধগুলৈশ্বৰ্য্যৎ তেষাৎ ভূটাস্ত কেশবঃ। যথাভিল্যিতানন্যান্ কামানু দল্পা মহীপতে ! । ৯৭॥ তত্তৈবান্তর্দ্ধধে দেবো বিছ্যাদর্ক্তে মু বৈ যথা। নামা সপ্তচরুত্তেন খ্যাতং লোকেয়ু ভারত।॥ ৯৮॥ গবাৎ শতসহত্রেণ রাজস্থরশতেন চ। অশ্বমেধসহত্রেণ শ্রেয়ান্ সপ্তার্চিষ শর্কঃ ॥ ৯৯ ॥

1 2.9 1 270 1

ততো নিরুত্তো রাজেক্স ! রৌদ্র- পদ মধাবিশেৎ। #অভিগম্য মহাদেবমশ্বমেধফলং লভে**ং ॥ ১**০০ ॥ মণিম্ন্তং সমাসাদ্য ব্রহ্মচারী সমাহিত:। একরাতোবিতো রাজন্মিফৌমকল পভেং ॥ ১০১॥ অথ গছেত রাজেন্দ্র! দেবিকাৎ লোকবিঞ্চতাম। প্রস্থৃতির্যন্ত বিপ্রাণাং ক্ষয়তে ভরতর্বভ। ॥ ১০২ ॥ ত্রিপুলপাণেঃ স্থানঞ্চ যত্ত লোকেষু বিশ্রুতম্। দেবিকারাৎ নরঃ স্থাতা সমভাচ্চ মহেশ্বর্ম ॥ ১০৩॥ যথ।শক্তি চৰুৎ তত্ৰ নিবেদ্য ভরতর্বভ!। সর্বকামসমূদ্দ্য যজ্ঞস্য লভতে কলম্ ॥ ১০৪ ॥ কামাখ্যং তত্ত্ৰ ক্লফ্ৰদ্য তীৰ্থণ দেবনিষেবিভয়। তত্ত্ব স্থাত্বা নরঃ ক্ষিপ্রং সিদ্ধিং প্রাপ্নোতি মানবং u ১০৫ ॥ यक्रमः याक्रनरेकृव उरेथव उक्रवानुक्य। পুজান্তেদ্ধ উপস্পৃদ্ধ ন শে(চেন্মরণং গতঃ । ১০৬। অর্দ্ধযোজনবিস্তারাং পঞ্চযোজন মায়তামু। এতাবদেবিকামান্তঃ পুণ্যাং দেবধিসেবিতাম্॥ >० ॥ ততো গভেত †রাজেন্দ্র ! দীর্ঘসত্রং যথাক্র মন্ !। তত্র ব্রহ্মাদয়ে। দেবাঃ সিদ্ধাশ্য পরমর্ষয়ঃ ॥ ১০৮॥ দীর্ঘসত্রমুপাসন্তে দীক্ষিতা নিয়তত্ত্রতাঃ। ১০৯। भगनात्मव द्वारकताः । मीर्घमवसदिनम् म ।। রাজসুয়াশ্বমেধাভ্যাং কলং প্রাপেনাতি ভারত !i ॥ ১১০ ॥ # 200 # 202 # 202 # 200 # 200 # 200 # 200 # 200 #

^{*} ভৰ্কয়িত্বা ইতি যঃ। † ধৰ্মজ্ঞ ইতি য পাঠঃ। াু মানৰ ইতি ক—।

ভতে। বিনশন পচ্ছেল্লিয়তো নিয়তাশনঃ। গচ্ছত্যন্ত হিতা যত্র মেরুপুষ্ঠে সরস্বতী। ১১১॥ চমসে চ শিবোদ্ভেদে নাগোদ্ভেদে চ দুশ্যতে। স্ত্রাত্বা ত চমসোম্ভেদে অগ্নিষ্টোমফল পভেং॥ ১১২ ॥ শিবোদ্ভেদে নরঃ স্বাত্বা গোসহস্রফলং লভেৎ। नार्गारहरम नदः अ.षा नागरलाक यदाश्रुवाए । ১১৩। मन्यानक तारककः ! डीर्थमामान्। कुर्वचम्। শশৰপপ্ৰতিভ্না: পুছুরা যত্ৰ ভারত ! I ১১৪ II সরস্বত্যা । মহাভাগ । অনুসৎবৎসরং হি তে। ন্নায়ন্তে ভারতশ্রেষ্ঠ। রুক্তাণ বৈ কার্ত্তিকীং সদা ॥ ১১৫ ॥ তত্র স্বাত্থা নরব্যান্ত! দ্যোততে শশিবৎ সদা। গোসহস্রফলপ্রৈব প্রাপ্তমান্তরভর্মভ ৷ ॥ ১১৬ ॥ কুমারকোটী মাসাদ্য নিয়তঃ কুরুনন্দন!। তত্রাভিষেকং কুর্বীত পিতৃদেবার্চ্চনে রতঃ॥ ১১৭॥ গৰা মযুত্ৰমাপেনাতি কুলক্ষৈব সমুদ্ধরেৎ। ততো গচ্ছেত ধর্মাজ্ঞ। রুদ্রকোটী সমাহিতঃ ॥ ১১৮॥ পুরা যত্র মহারাজ। মুনিকোটিঃ সমাগতা। रर्सन महजाविकी क्राप्तमर्भनकाक्कशा। ১১৯॥ " षर् প्रार्श भूवर प्रार्थ जन्मामि वृष जम्म म्। এবং সংপ্রস্থিতা রাজন্বয়ঃ কিল ভারত !॥ ১২•॥ ততো যে:গেশ্বরেণাপি যোগমাস্থায় ভূপতে !। তেবাং মন্ত্রপ্রণাশার্থ মৃধীণাং ভাবিতাত্মনাম্॥ ১২১॥ হন্টা কোটাতি রুদ্রাণা মুধীণামগ্রতঃ স্থিতা। ময়া পূর্ববিতরং দৃষ্ট ইতি তে মেনিরে পৃথক্ ॥ ১২২ ॥ # 225 # 220 # 228 # 22¢ # 250 #224 22M # 229 # 250 # তেষাং তুটো মহাদেবো মুনীনাং ভাবিতাপ্সনাম্।
ভক্ত্যা পরময়া রাজন্! বরং তেষা প্রদিষ্টবান্॥ ১২০॥
'অন্প্রভৃতি যুমানং ধর্মার্কির্ডবিষাতি"—।
তক্র স্লাত্মা নরব্যান্ত! রুদ্ধকোটাাং নরং শুচিঃ॥ ১২৪॥
অশ্বমেধমবাপেনাতি কুলক্ষৈব সমুক্তরেং।
ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র! সঙ্গমং লোকবিশ্রুতন্। ১২৫॥
সরস্বত্যা মহাপুনাং কেশব সমুপাসতে।
যত্র ব্রহ্মাদয়ো দেবা ঋষয়ল্চ তপোধনাঃ॥ ১২৬॥
অভিগচ্ছি রাজেন্দ্র! কৈন্দ্রেছস্কুর্ফলীম্।
তক্র স্লাত্মা নরব্যান্ত্র! বিন্দের্ছস্কুর্ফলীম্।
তক্র স্লাত্মা নরব্যান্ত্র! বিন্দের্ছস্কুর্ফলীম্।
সর্বপাপবিশুদ্ধান্ত্রা ব্রহ্মলোকঞ্চ গছ্তি॥ ১২৭॥
ঋষীনাং যত্র স্ক্রাণি সমাপ্তানি নরাধিপ!।
স্ক্রাবদান মাসাদ্য গোসহত্রফলং লভেং॥ ১২৮॥
ইত্যারণাকে পর্বানি তীর্থ্যাত্রাপর্বানি নানাতীর্থকথনে
দ্বাণীতিত্রমোহধ্যায়ঃ॥ ৮২॥

পুদস্তা উবাচ।
ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র ! কুরুক্ষেত্রমভিষ্ট তুম্।
পাপেভ্যো যত্র মুচাস্তে দর্শনাৎ সর্বজন্তবং ॥ ১ ॥
কুরুক্ষেত্রং গমিষ্যামি কুরুক্ষেত্রে বসাম্যহম্।
য এবং সভতং ব্রুয়াৎ সর্বা পাপেঃ প্রমুচ্যতেই ॥ ২ ॥
১২০ ॥ ১২৪ ॥ ১২৫ ॥ ১২৬ ॥ ১২৭ ॥ ১২৮ ॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈশক্ষীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বাণীতি
তমোহধ্যারঃ ॥ ৮২ ॥

उड इंडि—॥ २॥ २॥

^{*} দোহপিপাপৈ হিমুচ্যতে ইতি কঃ।

পা^নশবোহপি কুরুক্তেতে বায়ুনা সমুদীরিতাঃ। অপিত্রষ্কৃতকর্মান নয়ন্তি পরমাণ গতিম্।। ৩॥ দক্ষিণেন সরস্বতা। দ্বন্ধ ত্যুত্তরেণ চ। যে বসন্তি কুরুক্ষেত্রে তে বসন্তি ত্রিপিইটপে 👍 🥞 🛚 তত্র মাসং বদেশ্বীর ! সরস্বত্যাং যুধিষ্ঠির !। यक बन्नानरः । दिना श्रीयः निकारः तिनाः ॥ ६॥ গন্ধবাপ্দরসে। যক্ষাঃ পন্নগাল্চ মহীপতে !। ব্রহ্মকেত্রং মহাপুণ্য মভিগচ্ছতি ভারত।॥ ৬ :। মনদাপাভিকামসা কুরুক্ষেত্রং যুধিষ্ঠির !। পাপানি বিপ্রণ্যন্তি ব্রন্ধলোকঞ্চ গচ্ছতি ॥ 🖣 ॥ পত্না হি শ্ৰদ্ধয়া যুক্তঃ কুৰুফেত্ৰং কুৰুছহ!। ফলং প্রাপ্তোতি চ তদা রাজস্থাখমেধয়োঃ॥৮॥ ততো মঙ্কণক॰ নাম ছারপালং মহাবলম্। যক্ষং সমভিবাদৈবে গোসহস্রফলং লভেং॥৯॥ ততো গচ্ছেত ধর্মজ ! বিফোঃ স্থান মনুত্মম্। সততং নাম রাজেন্দ্র ! যত্র সনিহিতো হরিঃ॥ ১০॥ তত্র স্নাত্মা চ নত্মা চ ত্রিলোক প্রভবং হরিম। অশ্বমেধ মবাপেনাতি বিষ্ণুলোকঞ্চ গছতি। ১১।

॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ "ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র! কুফক্ষেত্র" মিতি—কুফক্ষেত্র-প্রস্তাবেশ ব্রহম্পতিকবাচ যাজ্ঞবন্দ্যং যদন্ত কুফক্ষেত্রং দেবানাং দেবযজনং সর্ক্ষেক্ষেওং ভূতানাং রক্ষ সদন্ত্য শৈতি প্রাবাদোপ নিবংস্থ প্রসিদ্ধ মন্ত্র্কুক্ষেত্রং প্রেণিত রক্ষক্ষেত্র মিতি—॥ ৬ ॥ কুংসিতং রোতীতি কুফ্পাপং, তমা ক্ষেপণা আয়ত ইতি কুফক্ষেত্রং পাপ নিবর্ত্তকং রক্ষোপার্কি, তমা ক্ষেপণা আয়ত ইতি কুফক্ষেত্রং পাপ নিবর্ত্তকং রক্ষোপারি ক্ষান্তাৎ রক্ষ সদন মিতি প্রেণিত পদ দ্বার্থাইং সংগ্রহাতি আর্দ্ধন্য পাপানি বিপ্রধানাতি রক্ষলোকঞ্চ গাছতি।" রক্ষিবলোক স্তং, রক্ষবিদ্ধনা রক্ষৈব ভবতীতার্থাঃ॥ ৭ ॥ প্রোতস্ত্র দেবয়জন পদসার্থিং সংগ্রহাতি রাজ স্ব্যেতি—॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ১ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥

ততঃ পারিপ্লবং গচ্ছেত্তীর্থং তৈলোক্যবিশ্রুতম । অগ্নিষ্টোমাতির তাভ্যাং ফল- প্রাপেনাতি ভারত।। ১২॥ পূর্থিবীতীর্থ মাসাদা গোসহস্রফলং লভেৎ। ততঃ শালুকিনীং গত্বা তীর্থদেবী নরাধিপ !'। ১০। पर्याचित्राथ क्राञ्चा **ठ उ**रम्य कन्नगांश्रेत्रा १। সর্পদেবী সমাসাদ্য নাগানাং তীর্যযুক্তমম্ ॥ ১৪ ॥ ज्ञित्छ। य यवास्त्राजि नागत्नाकक्ष विक्वि। ততো গড়েত ধর্মজ্ঞ। ছারপালন্তরস্ক্রকম্ ॥ ১৫॥ ততোষ্য রজনীমেক। পরে। সহস্রফল পলভেৎ॥ ততঃ পঞ্নদং গন্ধা নিয়তো নিয়তাশনঃ ॥ ১৬॥ कार्षिजीर्थ मुलम्ल्या इय्रामध्यमः न एवर । অখিনোস্থীর্থমাসাদ্য রূপবান ভিজায়তে ॥ ১৭ ॥ তত্যে গচ্ছেত ধর্মজ্ঞ । বারাহ্ তীর্থমুম্ভমম্। বিষ্ণ ব্ৰৱাহৰপেণ পূৰ্বিং যত্ৰ স্থিতোহভবৎ । ১৮ ॥ তত্র স্নাত্রা নরশ্রেষ্ঠ ! অগ্নিফৌমফলং লভেৎ। ততো জয়ন্ত্যাং রাজেন্দ্র ! সোমতীর্থং সমাবিশে**ং । ১৯** ॥ স্ন,ত্বা ফল মুবাপেনাতি রাজস্মুম্য মানবঃ। এতহংসে নরঃ স্নাত্তা গোসহত্রফল প্রভেৎ॥ ২०॥ क्रज्रामीहः ममामामा जीर्थरमयौ नताथित !। পু গুরীক মবাপেনাতি ক্বতশৌচো ভবেচ্চ সঃ ॥ ২১ ॥ ততে মুঞ্জব দৈ নাং স্থা গৈ। স্থানং মহাজানঃ#। উপোষ্য রজনীমেকাং গাণ্পতা মবাপনুয়াৎ॥ ২২॥ . তইত্রব চ মহারাজ! যাক্ষণীং লোক্বিঞ্চতাম। স্বাত্মাভিগমা রাজেন্দ্র ! সর্বান্ কামানবাপ্রয়াৎ॥ ২৩॥ # 25 | 20 | 28 | 20 | 120 | 12 | 20 | 30 | 40 | 42 | 42 | 40 | * " द्वारवा हो व भूभाषर ७: " देखि शूर क, हत्रमा।

কুরুক্তেক্ত তদ্বারং বিশ্রুত ওরতর্বভ!।
প্রদক্ষিণ মুপারত্য তীর্থদেবী সমাহিতঃ ॥ ২৪ ॥
সন্মিতং পুদ্ধরাণাঞ্চ স্বাহার্চ্চ্য পিতৃদেবতাঃ।
জামদয়েন রামেণ কুতত্ত সুমহাত্মনা ॥ ২৫ ॥
কুতক্কত্যো ভবেদ্রা নরশ্বমেধক্ষ বিন্দৃতি।
তত্তো রামহ্রদান গচ্ছেং তীর্থদেবী সমাহিতঃ ॥ ২৬ ॥
তত্তরামেণ রাজেক্র ! তরসা দীপ্ততেজসা।
ক্ষান্ত মুৎসাদ্য বীরেণ হ্রদাং পঞ্চ নিবেশিতাঃ ॥ ২৭ ॥
পুরম্বিত্বা নরব্যান্ত ! রুবিরেণেতি বিশ্রুতম্প ।
পিতরস্তর্পিতাঃ সর্বো তথৈব প্রপিতামহাঃ ॥ ২৮ ॥
ততত্তে পিতরঃ প্রীতা রাম মুচু র্নরাধিপ ! ।
পিতর উচ্চঃ ।

"রাম রাম মহাভাগ। প্রীতাং স্ম তব ভার্গব।॥ ২৯.॥

অনয়া পিতৃ হক্তা চ বিক্রমেণ চ তে প্রভা।।

বর্ম র্ণীয় ভদ্রং তে কিমিচ্ছদি মহান্ত্যুতে ?"—॥ ৩০॥

এব মুক্তঃ স রাজেক্র। রামঃ প্রহরতাং বরঃ।

অব্রবীৎ প্রাঞ্জলিব্যাকাং পিতৃন স গগণে স্থিতান্॥ ৩১॥

"ভবস্তো যদিমে প্রীতা যদানুগ্রাহ্নতা ময়ি।

পিতৃপ্রসাদমিচ্ছের্ম তপ আপ্যায়ন পুনঃ॥ ৩২॥

যচ্চ রোষাভিতৃতেন ক্ষত্র মুৎসাদিতং ময়।।

তত্ত পাপানুচ্যার মুম্বাকং তেল্পাপ্যহ্ম্॥ ৩৩॥

কুৰক্তেত্ৰত, প্ৰস্তুত্স্য, তৎ যক্ষাভিবন্দনাদিকং, দ্বারং প্রাপ্তিক্ত্য্ কুৰুক্তেত্র মবি মুক্তাধ্যং "অবিমুক্তংবৈ কুৰুক্তেত্ৰন্" ইতি আচতেঃ, স্মৃতিক্তি "ইমানিজ্ব পাবিত্রাণি কাশীপ্রাপ্তি করাণি চ।" ইতি, অতএবাস্থ কুৰুক্তিত্ব মিতি আচত্যা নির্দিষ্টন্, কুৰুক্তোদিসেবন প্রাপ্তির্দ্ধ ॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩১॥ ৩১॥ ৩১॥

* " नः व्यञ्जू" हे जिता शाष्ट्रः।

ব্রদাক্ষ তীথাঁভূতা মে ভবেয়ু র্ড বি বিশ্রুতাঃ"—। এতচ্ছ ত্রা শুভং বাক্যং রামস্য পিতরন্তদা ॥ ৩৪॥ প্রভূচ্য পরমপ্রীতা রামং হর্ষসমন্বিতাः। **''তপস্তে বৰ্দ্ধতাং ভূয়ঃ পিতৃত্বক্তাা বিশেষতঃ ॥ ৩৫॥** যচ্চ রোধাভিভূতেন ক্ষত্রমুৎসাদিতং স্বয়া। ততশ্চ পাপান্ম ক্রন্তং পতিভান্তে, স্বকর্মভিঃ॥ ৩১॥ ব্রদাশ্চ তব তীর্থত্বং গমিষ্যন্তি ন সংশয়ঃ। হ্রদেম্বেতেষু যঃ স্নাত্মা পিত,ূন্ সন্তর্পয়িষ্যতি ॥ ৩৭ ॥ পিতরস্তস্য বৈ প্রীতা দাস্যন্তি ভূবি হুর্বভম্। ঈম্পিতঞ্চ মনঃকামং স্বৰ্গলোকঞ্চ শাশ্বতম্''—॥ ৩৮॥ এব দল্পা বরানাজন ! রামস্য পিতরস্তদা। আমস্ত্র্য ভার্গবন প্রীভ্যা ভরৈবান্তর্হিভান্তভঃ ॥ ৩৯॥ এবং রামহ্রদাঃ পুণ্যা ভার্মস্য মহাত্মনঃ। সাত্বা হ্রদেষু রামস্য একাচারী শুভরত:॥৪০॥ রাম মভার্চ্চা রাজেন্দ্র ! লভেম্বন্থ যুবর্ণক্য। বংশমূলক মাসাদ্য তীর্থদেবী কুরুদ্ধ। ৪১॥ স্বংশ মুন্ধরৈডাজন ! স্বাস্থা বৈ বংশমূলকে। কায়শোধন মাদাদ্য তীর্থং ভরতসম্ভম ! ॥ ৪২ ॥ শ্রীরশুদ্ধিঃ স্নাত্স্য তিমাং স্তীর্থে ন সংশয়ঃ। শুহ্মদেহক সংযাতি শুভালোঁকানমুন্তমানু ॥ ৪৬ ॥ ততো গচ্ছেত ধর্মজ্ঞ ! তীর্থং ত্রৈলোক্য বিশ্রুতম্ । লোকা যত্ত্ৰেছিতাঃ পূৰ্বং বিষ্ণুনা প্ৰভবিষ্ণুনা॥ ৪৪॥ লোকোদার সমাসাদ্য তীর্থং ত্রৈলোক্যপূজিতম্। স্বাত্বা তীর্থবরে রাজন্। লোকানুদ্ধরতে স্বকান্ ॥ ৪৫**শ** 1 08 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 || 00 |

* '' পতিতা" ইত্যৱ—'' নিহতা"ইতি ক—

এতীর্থক সমাসাদ্য স্বাদ্ধা নিয়তমানসং। অর্চয়িত্ব পিতৃন্দেবান্ বিশ্তে প্রিয় মুক্তমান্॥ ৪৬॥ কপিলাতীর্থমাসাদ্য ব্রহ্মচারী সমাহিতঃ। তত্র স্নাত্মার্চয়িত্ব। চ পিত,ন স্থান দৈবতান্যপি ॥ ৪৭ ॥ কপিলানা সহস্রস্য ফল বিন্দৃতি মানবং। সূৰ্য্যতীৰ্থং সমাসাদ্য স্নাত্মা নিয়তমানসং ॥ ৪৮॥ অর্চয়িত্বা পিতৃন্ দেবারুপবাসপরায়ণঃ। অগ্নিফোম মবাপ্লোতি সূর্যালোকঞ্চ গছতি । ৪৯ ॥ গবাং ভবন মাসাদ্য তীর্থদেবী ষ্থাক্রমম। **ত**्রाভিষেকং কুর্বাণো গোসহস্রফলং লভেং ॥ ०० ॥ শश्चिनी जीर्थ मात्रामा जीर्थ दिन्दी कुन बहर !। দেব্যাস্তীর্থে নরঃ স্নাত্মা লভতে বীর্যামুক্তমম্ । ৫১ ॥ ততো গচ্ছেত রাজেন । দ্বারপালং তরগুকম্। छक्त जीर्थ॰ मतुत्रजाः याकक्तमा महाज्ञनः ॥ ৫२ ॥ তত্র স্নাত্মা নরো রাজন্মগ্রিষ্টোমফলং লভেৎ। ততো গচ্ছেত ধর্মজ্ঞ। ব্রহ্মাবর্ত্ত নরাধিপ। ॥ ৫৩॥ ব্রহ্মাবর্ত্তে নর: স্বাত্মা ব্রহ্মলোক মবাপ্লার । ততো গচ্ছেত রাঙেন্দ্র ! স্থতীর্থক মনুত্তমম্ ॥ ৫৪ ॥ তত্র সন্নিহিতা নিতাং পিতরে। দৈবতৈঃ সহ তত্রাভিষেকং কুর্নীত পিতৃদেবার্চনে রত: ॥ ৫৫ ॥ অশ্বমেধ মবাপ্নোতি পিতৃলোকঞ্ গচ্ছতি। ততোংখুমত্যাং ধর্মজ্ঞ। স্থতীর্থক মন্ত্রতমম্। ৫৬।

^{189 189 186 188 188 100 103 102 100 108 100 100 1}

^{*} বিছতা ইতি কঃ।

কাশীশ্বস্য তীর্থে চ স্কাত্তা ভরতসন্তম !। সর্বব্যাধিবিনিশ্মকো ব্রহ্মলোকে মহীয়তে। ৫৭ ॥ মাতৃতীর্থঞ্চ ততৈবে যত্র স্নাত্স্য ভারত।। প্রজা বিবর্দ্ধতে রাজনতন্ত্রী শর্মেন তে॥ ৫৮॥ ততঃ শীতবন পচ্ছেলিয়তো নিয়তাশনঃ। তীর্থং তত্র মহারাজ ! মহদন্যত্র তুর্লভম্ ॥ ৫৯ ॥ পুনাতি গমনাদেব দুষ্টমেবং নরাধিপ!। কেশানভ্যক্ষ্য বৈ তব্মিনু পূড়ো ভবতি ভাইত 💵 ৬ 💵 তীর্থং তত্র মহারাজ। স্বাবিলোমাপহং স্মৃত্যু। যত্র বিপ্রা নরব্যান্ত ! বিদ্বাং সম্ভীর্যতৎপরাঃ । ৬১ ॥ প্রীতিং গছটি পরমাণ স্বাত্ম ভরতসভ্তম !। শ্বাবিল্লোমাপনয়নে তীর্থে ভরতসম্ভম। ৫২২॥ প্রাণ্যামে বিধ্রন্তি স্থলোমানি ছিজোভমাঃ। পুতাত্মানক রাজেন্দ্র ! প্রয়ান্তি পরমান গতিম ॥ ৬০ ॥ দশাশ্বমেধিককৈব তশ্মিং স্তার্থে মহীপতে।। তত্র স্বাস্থা নরব্যান্ত। গচ্ছেত পরমাৎ গতিম ॥ ৬৪॥ ওতো গভ্তে রাজেন্দ্র। মানুষ্ লোকবিঞ্চত্য। যত্র কৃষ্ণমূগা রাজন্। বাধেন শরপীডিতাঃ ॥ ৬৫ ॥ বিগাছ তন্মিন সরসি মানুষত্ব মুপাগতাঃ। তাশ্বং স্তার্থে নর: স্বাত্ব। ব্রহ্মচারী সমাহিত: ॥ ৬৬॥ मक्तिशार्विकाचा सर्गताक महीश्र । यात्रुषमा जु शृर्त्वन क्लाममार्क महीलर्ज ! ॥ ७२ ।

কাশীখরত তীর্ধের্মনি কর্ণিকাদির স্থান মাত্রাৎ ব্রন্ধলোকে ক্রম্মুক্তি স্থানে মহীয়তে পূজ্যতে ইত্যর্থ: ॥ ৫৭ ॥ ৫৮ ॥ ৫৯ ॥ ৬০ ॥ ৬১ ॥ ৬২ ॥৬৩ ॥ ॥ ৬৪ ॥ ৬৫ ॥ ৬৬ ॥ ৬৭ ॥

অপিগা নাম বিখালো নদী সিদ্ধনিষেবিতা। শ্যামাক ভাজনং তত্র যঃ প্রয়ন্ত তি মানবঃ । ৬৮॥ দেবানু পিত্নু সমুদ্দিশ্য তন্য ধর্মফলং মহৎ। একব্মিন ভোজিতে বিপ্রে কোটির্ভবতি ভোজিতা: ॥ ৬৯ ॥ তত্ত্র স্বাস্থা চিপিতৃন্ বৈ দৈবভানি চ। উবিদ্বা রজনীমেক। মগ্লিফৌমফলং লভেং॥ १०॥ ততো গছেত রাজেকু! ব্রহ্মণ: স্থান মুক্তমন্। ব্রক্ষোডুম্বরমিত্যেব প্রকাশং ভূবি ভারত। । ৭১ ॥ তত্র সপ্তর্ধিকুণ্ডেমু স্মাতম্ভ নরপুঙ্গব!। टिक्नाटत टेठव ताटकक्क ! किंशिनक महाजांनः ॥ १२ ॥ ব্রন্ধাণমধিগন্ধাচ শুচিঃ প্রয়তমানসঃ। সর্বাপাবিশুদ্ধান্মা ত্রন্ধলোকং প্রপদ্যতে । ৭৩॥ কপিষ্ঠলম্ভ কেদার শমাসাদ্য মুদুর্বভন্। অন্তর্জান মবাপ্নে,তি তপসা দগ্ধকিল্বিষঃ । ৭৪॥ ততো গছেত রাজেন । সরকং লোকবিশাতম। क्षिभरक हर्ज्यमा यधिशमा व्यवस्थ्य ॥ १०॥ লভেত সর্বকামান হি স্বর্গলোকঞ্চ গছতি। তিঅঃ কোটাস্ত তীর্থানাৎ সরকে কুরুনন্দন। । ৭৬॥ क्रज्यकिशिः उथा कृत्य इत्मयू ह महीयाउ!। ইলাস্পদঞ্চ তত্তৈব তীর্থং ভরতসম্ভম ! ॥ ৭৭ ॥ তত্র স্বাত্বার্চরিত্বাচ দৈবতানি পিত্নথ। ন ছুর্গতি মবাপ্লোতি বাজপেরঞ্চ বিন্দৃতি ॥ ৭৮॥ किन्दात ह नद्भः स्वा किः करि ह महीभरत !। অপ্রমের মবাপ্রোতি দানং জপ্যঞ্জারত।॥ ৭৯॥

1 45 1 49 1 90 1 92 1 93 1 90 1 98 11 96 11 95 11 99 11 99 11

· কলশ্যাং ব, যুৱিপস্পূশ্য শ্রদ্ধধানো জিতেক্সিয়া । অগ্নিষ্টে যক্ত যজ্ঞ ফলং প্রাপ্রোতি মানবঃ ॥ ৮০ ॥ সরকম্ম তু পূর্বেণ নারদম্ম মহাত্মনঃ। কুরুশ্রেষ্ঠ ! শুভং তীর্থ মনাজন্মেতি বিশ্রুতম্ ॥ ৮১॥ তত্র তীর্থে নরঃ স্নাত্বা প্রাণানুৎস্ক্য ভারত ! ! ৰারদেনা ভারুজ্ঞাতো লোকান্ প্রাপ্নোতারুত্তমান ॥ ৮২ ॥ শুक्र निष्माक्ष भू खत्रीकः नमाविरमं । তত্র স্কাত্ম নরো রাজন্। পুগুরীকফল্প লভেৎ। ৮৩। ততব্রিপিউপং গচ্ছেজিষু লোকেষু বিশ্রুতম্। তত্র বৈতরণী পুণ্যা মদী পাপপ্রণাশিনী। ৮৪॥ তত্ৰ স্বস্বাৰ্চয়িত্বা চ শূলপাণিং ব্ৰধ্বজন্। সর্ব্বপাপবিশুদ্ধান্তা গচ্ছেত প্রমাং গতিম্॥৮৫॥ ততে। গচ্ছেত রাজেন্দ্র। ফলকীবন মুক্তমম্। তত্র দেবাঃ সদা রাজন্। ফলকীবন মাঞ্জিতাঃ ॥ ৮৬॥ তপশ্চরস্থি বি পুলং বহুবর্ষসহস্রকম্। দৃষদ্ব্যাং নরঃ স্নাত্মা তর্পয়িত্বা চ দেবতাঃ । ৮৭॥ অথিফৌমাতিরাতাভ্যা> ফলং বিন্দৃতি ভারত।। তীর্থে চ সর্ব্ব দেবানাং স্পাত্ত্বা ভরতসম্ভম ! ॥ ৮৮॥ গোদহঅশ্য রাজেন্দ্র। ফলং বিন্দৃতি মানব:। পাণিখাতে নরঃ স্নাত্বা তর্পায়ত্বা চ দেবতাঃ ॥ ৮৯ , অগ্নিফৌমাতিরাত্রভাং ফলন বিন্দতি ভারত।। রাজস্থ্য মবাপ্লোতি ঋষিলোকঞ্চাবন্দভিল। ৯০।

11 po 11 pz 11 pc 11

^{* &}quot; গহ্নতে" ই ত পাচান্তর্য্।

ততো গচ্ছেত ধৰ্মজ্ঞ! মিশ্রকং তীর্থমুক্তমমৃ *। তত্র তীর্থানি রাজেন্দ । মিশ্রি তানি মহাত্মনা ॥ ৯১॥ वारिमन नृश्माकृत ! विकार्थ मिकि नः अञ्ज्य । সর্বাতীর্থেমু স স্নাতি মিশ্রকে স্নাতি যে। নরঃ ॥ ৯২ ॥ ততো ব্যাসবনং গচ্ছে নিয়তো নিয়তাশনঃ। মনোজবে নরঃ স্বাত্বা গোসহস্রফল্প লভেৎ॥ ৯৩॥ গত্ব। মধুবটীপৈব দেব্যাস্তীর্থে নরঃ শুচিঃ। তত্র স্বাত্বার্চরিত্বা চ পিত ন্ দেবাংশ্চ পূরুষঃ॥ ৯৪॥ স দেবাঃ সমমুক্তাতো গোসহস্রফলং লভেৎ। কৌশিব্যাঃ সঙ্গমে যস্তু দুষদ্বত্যাশ্চ ভারত। । ৯৫॥ স্নাতি বৈ নিয়তাহারঃ সর্বাপাপেঃ প্রমৃচ্যতে। ততো ব্যাসস্থলী নাম যত্ৰ ব্যাসেন ধীমতা॥ ৯৬॥ পুল্রশোকাভিতপ্তেন দেহত্যাগে কুতা মতি:। ততো দেবৈস্ত রাজেন্দ্র ! পুনরুত্থাপিওস্তদা ॥ ৯৭ ॥ অভিগম্য স্থলীং তৃদ্য গোসহস্রফলং লভেৎ। কিন্দত্ত কুপ মাসাদ্য তিলপ্রস্থং প্রদায় চ॥ ৯৮॥ গচ্ছেত পরমাৎ সিদ্ধি মূণৈমুক্তঃ কুৰ্ম্বহ!। বেদীতীর্থে নরঃ স্বাত্বা গোসহস্রফলং লভেৎ । ১১ ৷ **षर्क स्मिनदेशव (इंडीर्थ लाकविकारक।** তয়োঃ স্বাস্থা নাব্যান্ত ! সূর্যালোক মবাপ্রযাৎ ॥ ১০০ ॥ মৃগধূমং ততাে গচ্ছেৎ তিষু লােকেষু বিশ্রুতম্। তত্রাভিষেক কুর্বাত গঙ্গায়া নুপসত্তম । ॥ ১০১ ॥

7 1 2 5 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1 2 6 1

^{*} লোক বিচ্ছত মিতি ক পুৰুক:।

অর্চ্চয়িত্বা মহাদেব মশ্বমেধফলং লভেৎ। দেবাান্তীর্থে নর: স্নাত্মা গোসহস্রফলং লভেৎ॥ ১০২॥ ততো বামনকণ গচ্ছেৎ ত্রিষু লোকেষু বিশ্রুতম্। তত্র বিষ্ণুপদে স্নাত্মা অর্চায়িত্বা চ বামনম্ ॥ ५००॥ সর্ববপাপবিশুদ্ধাত্মা বিষ্ণুলোকং স গছতি। কুলম্পান নরঃ স্থাপুনাতি স্কুল্প ভতঃ॥ ১০৪॥ প্রনস্য *হ্রদং গত্বা মক্ত্রা**৲ তীর্থমুত্তম**ম্। তত্ত স্নাত্বা নরব্যান্ত । বাযুলোকে মহীয়তে ॥ ১০৫ ॥ অমরাণাং হ্রদে স্নাত্মা সমভ্যচ্যামরাধিপম্। অমরাণা প্রভাবেণ স্থর্গলোকে মহীয়তে ।। ১০৬॥ শালিহোত্রস্য তীর্থঞ্চ শালিস্থর্য্যে যথাবিধি। त्र दा नत्रत्यकं । (गामस्यक्न° नख्ड ॥)०२ ॥ 🛍 কুঞ্জঞ্চ সরস্বত্যাৎ তীর্থং ভরতসন্তম!। তত্র স্নাত্মা নরশ্রেষ্ঠ ! অগ্নিকৌমফলং লভেৎ। ১০৮। ততো নৈমিষকুঞ্জঞ্চ সমাসাদ্য কুৰুদ্বহ!। ঋষয়ঃ কিল রাজেন্দ্র । নৈমিষেরাস্তপস্থিনঃ ॥ ১০৯॥ তীর্থযাত্রাং পুরস্কৃত্য কুরুক্ষেত্রং গতাঃ পুরা। তত্র কুঞ্জঃ সরস্বত্যাং কুতো ভরতসত্তম ! ॥ ১১० ॥ श्ववीन्। भवकानाः मुग्राष्ट्र यथा जुक्तिकदता महान्। তিমিন্ কুঞ্জে নরঃ স্কাত্ত্বা অগ্নিফৌ।মফলং লভেৎ॥ ১১১॥ ততো গচ্ছৈত ধৰ্ম্মজ্ঞ ! কন্যাতীর্থমনুত্তমম্। कन्यानीर्थ नदः स्राप्ता (शामहव्यकन् न एड ॥ ১১२॥ ا و رود ا مود ۱۱ مود ۱۱

ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র ! ত্রন্ধান্তীর্থমুত্তমম্। তত্র বর্ণবিরঃ স্নাত্তা ব্রাহ্মণ্যৎ লভতে নরঃ ॥ ১১০॥ ব্রাহ্মণশ্চ বিশুদ্ধারা গচ্ছেত পরমাং গতিম। ততো গচ্ছেন্নরশ্রেষ্ঠ ! সোমতীর্থমনুত্তমম্ ॥ ১১৪॥ তত্ত ৰাত্বা নরো রাজন্! সোমলোক মবাপ্ন রাৎ। সপ্তদারস্বত্র তীর্থং ততো গচ্ছেন্নরাধিপ ! ॥ ১১৫॥ যত্র মঙ্কণকঃ সিদ্ধো মহর্ষি র্ব্লোকবিশ্রুতঃ। পুরা মঙ্কণকো রাজন্ ! কুশাগ্রেণেতি নঃ প্রুতম্ ॥ ১১৬॥ ক্ষতঃ কিল করে রাজংস্তদ্য শাকরসোহস্রবৎ। म रेव भाकतमः दृष्ट्रे। ह्वाविकः अनुख्वान् ॥ ১১३॥ ততন্তমিন প্রনৃত্তে তু স্থাবরং জঙ্গমঞ্ যৎ। প্রবৃত্ত মুভয়ং বীর! তেজদা তদ্য মোহিতম্॥ ১১৮॥ ব্রহ্মাদিভিঃ স্থারে রাজনুষিভিশ্চ তপোধনৈঃ। विख्ड (श्रा देव महारम्य श्रारमदार्थ नहाधित ! ॥ ১১৯ ॥ ' नाय़ः नृट्याम्वथा (मव! छथा चः कर्जू मर्हि।'' তং প্রবৃত্তং সমাসাদ্য হর্ষাবিষ্টেন চেত্রসা। স্থরাণাং হিতকামার্থ মূধিং দেবোহভাভাষত ॥ ২২০ ॥ "ভো ভো মহর্ষে ! ধর্মজ ! কিমর্থং নৃত্যতে ভবান্। হর্মস্থান কিমর্থং বা তবাদ্য মুনিপুঙ্গব ? ''—॥ ১২১॥ ঋষিক্বাচ।

'তপস্থিনো ধর্মপথে স্থিতন্য দ্বিজসন্তম!। কিন্ন পশ্যান মে ত্রহ্মন্! করাচ্ছাক-রুদং স্রতম্ ?—; ১২২॥

ا ١٩٤٨ ا ١٩٤٥ ا ١٩٤٥ ا ١٩٥٥ ا ١٩٥٥ ا ١٩٥٥ ا ١٩٥٥ ا ١٩٥٥ ا

^{*} ক পুস্তকে—প্রদৃত্যবান্ ইত্যত্র " মহাতপাঃ" ইতি পাঠঃ, অনন্তরঞ্চ "প্রানৃত্তৎ কিল বিপ্রধি বিন্ময়োৎ কুল্ললোচনঃ।" ইত্যধিকং পুঠাতে।

যং দৃষ্টা সংপ্রনৃত্তে ২হং হর্ষেণ মহতান্বিতঃ''—। তং প্রহ্ন্যাত্রবীদেবো ঋষিং রাগেণ মোহিতম্ ॥ ১২৩ । 'অহস্ত বিস্ময়ং বিপ্র! ন গছামীতি পশা মাম্''। এবমুক্তা নরভোষ্ঠ ! মহাদেবেন বৈ তদা ॥ ১২৪॥ অঙ্গুল্যগ্রেণ রাজেন্দ্র ! স্বাঙ্গুষ্ঠস্তাডিতোহনঘ !। ততো ভন্ম ক্ষতাদাজনির্গতং হিম্সনিভ্যু॥ ১২৫॥ তদ্দুষ্টা ত্রীডিতো রাজনু-! স মুনিঃ পাদয়োর্গতঃ। নান্যদ্বোৎ পর্ব মেনে রুক্রাৎ পরতরং মহৎ॥ ১২৬॥ "স্বাস্থরস্য জগতো গতিস্তৃমসি শ্লধৃক্। ত্বয়া সর্বামদ প্রতং ত্রৈলোক্যং সচরাচরম্॥ ১২৭॥ ত্বমেব সর্বান্ গ্রসসি পুনরের যুগক্ষয়ে। দেবৈরপি ন শকাস্তব্ধ পরিজ্ঞাতুং কুতো ময়া ?—॥ ১২৮॥ वृशि मर्क्त व्यक्रभारत ख्रुता बन्नामरगार्ने ।। সর্বস্তু মদি লোকানাং কর্ত্তা কারয়িতা চ হ ॥ ১২৯॥ ত্বংপ্রসাদাৎ স্থরাঃ দর্কে মোদন্তীহাকুতোভরাঃ"—। এবং স্তত্ত্বা মহাদেব মূঘি ব্ৰচন মত্ৰবীৎ॥ ১৩০॥ ''ত্বৎপ্রসাদ। অহাদেব ! তপো মে ন ক্ষরেত বৈ "। ততো দেবঃ প্রহৃষ্টাত্মা বন্ধর্ষি মিনমব্রবীৎ । ১৩১॥ ' তপত্তে বৰ্দ্ধতাং বিপ্ৰ ! মৎপ্ৰসাদাৎ সহস্ৰধা। আশ্রমে চেহ বৎস্যামি ব্য়া সহ মহামুনে ! ॥ ১৩২॥ সপ্তসারস্বতে স্নাত্মা অর্চয়েষ্যন্তি যে তু মার্য। • ন তেষাং ছুর্নভং কিঞ্চিদিছ লোকে পরত্র চ। ১৩৩। পারস্বতঞ্তে লোকং গমিষান্তি ন সৎশয়:"। এবমুক্তা মহাদেবস্তবৈবান্তরধীয়ত। ১৩৪। ১২৩॥ ১২৪ ॥ হিম্মলিভং অভিখেত মিকু বিকার খণ্ডশর্করাখ্যায্ ॥ ७५८ ॥ ७५७ ॥ ७६७ ॥ ७४७ ॥ ७४० ॥ ७७० ॥ ७७२ ॥ ७७८ ॥ ७७८ ॥

ততন্ত্রৌশনসং গচ্ছেৎ ত্রিষু লোকেষু বিঞ্চতম্। यक उक्तां मरत्रा (मरा अवत्र क्ष उर्शांधनाः ॥ ১৩৫ ॥ কার্ত্তিকেয়ক্ষ ভগবান্ ত্রিসন্ধাং কিল ভারত!। সালিধ্যমকরোন্নিতাং ভার্গবপ্রিয়কামায়া ॥ ১৩৬॥ কপালমোচনং তীর্থ~ সর্ব্বপাপপ্রমোচনম্। তত্ত্র স্পাত্মা নরব্যান্ত । সর্ববিশাবৈশঃ প্রমুচ্যতে ॥ ১৩৭ ॥ অগ্নিতীর্থং ততো গচ্ছে ত্তত্ত স্নাত্মা নরর্ষভ।। অগ্নিলোক মবাপ্নোতি কুলক্ষৈব সমুদ্ধরেৎ। ১৩৮॥ বিশ্বামিত্রস্য তাত্রেব তীর্থং ভরত সম্ভম!। তত্র স্নাত্মা নরশ্রেষ্ঠ ! ত্রাক্ষণ্যমধিগচ্ছতি ॥ ১৩৯॥ ব্রহ্মযোনিং সমাসাদ্য শুচিঃ প্রয়তমানসঃ। তত্র স্বাত্বা নরব্যান্ত ! ব্রহ্মলোক প্রপদ্যতে ॥ ১৪০ ॥ পুনাত্যাসপ্তমঞ্চৈব কুলং নাস্তাত্ত সংশয়ঃ। ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র ! তীর্থং ত্রৈলোক্যবিশ্রুতম্ ॥ ১৪১॥ পুথুদকমিতি খ্যাতং কার্ত্তিকেয়সা বৈ নৃপ!। তত্রাভিষেকং ক্রমীত পিতৃদেবার্চ্চনে রতঃ॥ ১৪২॥ অজ্ঞানাৎ জ্ঞানতো বাপি ক্রিয়া বা পুরুষেণ বা। যৎ কিঞ্চিদশুভং কর্মা কুতং মানুষবুদ্ধিনা॥ ১৪'০॥ তৎ স্বাং নশ্যতে তত্র স্থানমাত্রস্য ভারত!। - অশ্বমেধক লঞ্চাপি লভতে স্বৰ্গমেব চ ॥ ১৪৪ ॥ পুণামছেঃ ক্রুক্তেতং ক্রুক্তেতাৎ সরস্বতী। সরস্বত্যাশ্চ তার্থানি ভার্থেভ্যশ্চ পৃথ্দকম্॥ ১৪৫॥ উত্তমং স্বাতীর্থানাং যন্ত্যজেদাত্মনন্তনুম্। পুথুদকে জপ্যপরো ন তং শ্বো মরণং তপেৎ*। ১৪৬॥ 1 300 1 300 1 309 1 300 1 300 1 380 1 383 1 388 1 380 1 388 1

॥ ১৪৫॥ পৃথ্দকে জপ্য পরে। যন্তম্থ তাজেৎ তথ খে। মরণং পুনম্রণং ন

* " ন তসা মরণং ভবেৎ " ইতি ক পাঠঃ।

গীত সনৎকুমারেণ ব্যাসেন চ মহাত্মনা। বেদে চ নিয়তং রাজন্ধিগচ্ছেৎ পৃথূদকম্॥ ১৪৭॥ পৃথূদকাৎ তীৰ্থতমং নান্যন্তীৰ্থং কুৰুদ্ধহ!। ত্রেধ্যং তৎ পবিত্রঞ্চ পাবনঞ্চ ন স্প্রাঃ ॥ ১৪৮॥ তত্র স্বাত্বা দিবং যান্তি যেহপি পাপক্লতো নরাঃ। পুথুদকে নরভ্রেষ্ঠ। এবমান্তর্মনীষিণঃ ॥ ১৪৯॥ মধুস্রবঞ্চ তাত্রৈব তীর্থং ভরতসম্ভম।। তত্র স্বাস্থা নরো রাজন্! গোসহস্রফল প লভেৎ ॥ ১৫০॥ ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র! তীর্থং মেধ্যং যথ ক্রমম। সরস্বত্যারুণায় শু সঙ্গমং লোকবিশ্রুতম্ ॥ ১৫১॥ ত্রিরাত্রোপোষিতঃ স্নাত্বা মূচ্যতে ব্রহ্মহতায়া। অগ্নিষ্টোমাতিরাত্রাভ্যাপ ফলং বিন্দতি মানবঃ॥ ১৫২॥ আসপ্তমৎ কুলক্ষৈব পুনাতি ভরতর্ষভ।। অৰ্দ্ধকীলঞ্চ ভবৈত্ৰৰ তীৰ্থং কুৰুকুলোদ্বহ!॥ ১৫৩॥ বিপ্রাণামনুকম্পার্থং দর্ভিণা নির্ম্মিত পুরা। ব্রতোপনয়নাভ্যাঞ্চাপ্যাপবাদেন চাপ্যাত। ১৫৪॥ ক্রিয়ামক্তৈশ্চ সংযুক্তো ব্রাহ্মণঃ স্যাহ্ম সংশ্রঃ। ক্রিয়ামস্ত্রবিহীনোহপি তত্ত্র স্বাস্থা নরর্ষত !। চীর্ণব্রতো ভবেদ্বিধান্ দৃষ্টমেতৎ পুরাতনৈঃ॥ ১৫৫॥ সমুদ্রাশ্চাপি চত্তারঃ সমানীতাশ্চ দর্ভিণা। তেষু স্নাতো নরশ্রেষ্ঠ ! ন তুর্গতিমবাপ্রয়াৎ ॥ ১৫৬ ॥ ফলানি গোসহস্রাণাং চতুর্ণাং বিন্দতে তু সং। ততো গচ্ছেত ধর্ম্মজ্ঞ ! তীর্থণ শতসংস্রকম্॥ ১৫৭॥ তপেৎ, যদ্বা, পূর্ব্বেদ্বারের ক্বতজ্বপং শ্বোপি জীবিতান্তং মরণং ন তপেৎ এক রাত্ত্রেণৈব সর্ব্বপাপ বিমোকো ভবতীত্যর্থ: ॥১৪৬॥১৪৭॥১৪৮॥ | 789 | 700 | 747 | 765 | 760 | 768 | 766 | 766 | 769 |

1 772

সাহস্রকঞ্চ তত্ত্বৈব দ্বে তীর্থে লোকবিশ্রুতে। উভয়ে 🗲 নরঃ স্নাত্তা গোসহস্রফলং লভেৎ ॥ ১৫৮॥ দানঞ্গপুল্পবাসে। বা সহস্রগুণিতো ভবেং। ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র ! রেপুকাতীর্থমুক্তমম্॥ ১৫৯॥ তত্রাভিষেকং কুর্ম্বাত পিতৃদেবার্চনে রতঃ। সর্ববাপবিশুদ্ধা আগ্লিকোমফলং লভেৎ॥ ১৬০॥ বিমোচনমুপস্পৃত্ত জিতমমুার্জি তেন্দ্রিঃ। প্রতিগ্রহক্রতৈর্কে। বৈঃ সর্বৈঃ স পরিমুচ্যতে । ১৬১। ভতঃ পঞ্বটীং গত্ব। ব্রহ্মচারী জিতেক্সিয়ঃ। পুণোন মহতা যুক্তঃ সতাপ লোকে মহীয়তে। ১৬২। यळ त्यार्भश्वः स्वापः श्वः स्वरंभव व्यक्षः। তমৰ্চয়িত্ব। দেবেশং গমনাদেব সিদ্ধ্যতি। ১৬৩। তৈজসং বাৰুণং তীৰ্থং দীপ্যমান স্বতেজসা। যত্র ব্রহ্মাদিভির্দেবৈখা যিভিশ্চ তপোধনৈঃ ॥ ১৬৪॥ দৈনাপত্যেন দেবানা মভিষিক্তো গুহস্তদা। তৈজসম্ম তু পূৰ্বেণ কুৰুতীৰ্থং কুৰুদ্বহ!॥ ১৬৫॥ ক্রুতীর্থে নরঃ স্বাত্বা ব্রহ্মাচারী জিতেন্দ্রিয়:। সর্ববাপবিশুদ্ধাত্মা ব্রহ্মলোক প্রপদ্যতে ॥ ১৬৬ ॥ স্বর্গদার ততো গচ্ছেলিয়তো নিয়তাশনঃ। 🚜 অগ্নিষ্টোম মবাপ্লোতি ব্রহ্মলোকঞ্চ গচ্ছতি ॥ ১৬৭ ॥ ততো গচ্ছেদনরক তীর্থদেবী নরাধিপ !। তত্ত্ব স্বাত্মা নরো রাজন্! ন তুর্গতিমবাপ্রয়াৎ॥ ১৬৮॥ | 20 | 1 20 x | 20 0 | 20 2 | 20 4 1 20 0 | 20 8 | 20 4 | 20 4 | 20 4 1.

* স্বৰ্গ লোক মিতি স্ব পুস্তকঃ।

তত্র ব্রহ্মা স্বয়ং নিত্যৎ দেবৈঃ সহ মহীপতে!। অস্বান্তে পুরুষব্যান্ন! নারায়ণ পুরোগমৈঃ ॥ ১৬৯ ॥ সানিধ্য তত্ত্ব রাজেন্দ্র। রুদ্রপত্নাঃ কুমবহ!। অভিগম্য চ তাং দেবীং ন জুর্গতিমবাপ্লয়াৎ॥ ১৭০॥ তত্ত্বৈ চ মহারাজ ! বিশ্বেশ্বর মুমাপতিম্। . অভিগম্য মহাদেবং মুচ্যতে সর্ব্বকিল্বিবৈঃ॥ ১৭১॥ নারায়ণঞ্চাভিগম্য পদ্মনাভ মরিন্দম।। রোচমানো মহারাজ। বিষ্ণুলোকঞ্চ গচ্ছতি॥ ১৭২॥ তীর্থেষু সর্বদেবানাং স্নাতঃ স পুরুষর্যভ!। সর্ব্বজুং থৈঃ পরিভ্যক্তো দ্যে।ভতে শশিবন্নর: ॥ ১৭৩॥ ততঃ স্বস্থিপুরং গচ্ছে তীর্থসেবী নরাধিপ।। প্রদক্ষিণমুপার্ত্য গোসহস্রফলং লভেৎ॥ ১৭৪ ॥ পারনং জীর্থমাসাদ্য তর্পয়েৎ পিতৃদেবতাঃ। অগ্নিফৌমস্য যজ্ঞস্য ফলং প্রাপ্নোতি ভারত। ॥ ১৭৫ ॥ গঙ্গাহ্রদশ্চ তবৈব কুপশ্চ ভরতর্বভ! ১ তিভ্রঃ কোট্যস্তু তীর্থানাং তন্মিন্ কুপে মহীপতে! ॥ ১৭৬ ॥ তত্র স্বাত্বা নরো রাজন্ ! স্বর্গলোকং প্রপদ্যতে । আপগায়াং নরঃ স্বাত্তা অর্চয়িত্রা মহেশ্বরম্ ॥ ১৭৭ ॥ গাণপত্য মবাপ্লোতি কুলঞ্চৈব সমুদ্ধরেৎ। ততঃ স্থাপুবটপ গচ্ছে জিষু লোকেষু বিশ্রুতম্ ॥ ১৭৮॥ তত্র স্বাস্থা স্থিতো রাতিং রুদ্রলোক মবাপ্রয়াৎ। বদরীপাচনৎ গচ্ছেৎ বাশস্তস্যাঞ্জ্যেং ভতঃ ॥ ১৭৯॥ বদরাং ভক্ষয়েত্তত্ত্র তেরাত্যোপ্যোধিতো নরঃ। ममाग्रहान्यवर्धाि वत्रानु छक्तरमञ्च यः॥ २४०॥ 11 7-7 11 745 11 740 11 748 11 740

ত্রিরাত্রোপোষিতত্তেন ভবেতুল্যো নরাধিপ !। रेक्ट्रमार्गः ममामाना जीर्थामवी नताथिल ! ॥ ১৮১ ॥ অংশেরাতোপ্রাদেন শক্রলোকে মহীয়তে। একরাত্রং সমাসাদ্য একরাত্রোবিতো নরঃ ॥ ১৮২ ॥ নিয়তঃ সত্যবাদী চ ব্রহ্মলোকে মহীয়তে। ততো গচ্ছেত রাজেন । তীর্থং তৈলোকাবিশ্রুতম্ ॥ ১৮০॥ আদিত্যসা, শ্রমো যত্র তেজোরাশে স্মহাত্মনঃ। তি সিংস্তীর্থে নরঃ স্নাত্বা পুলয়িত্বা বিভাবসুম্॥ ১৮৪॥ আদিত্যলোক[্] ব্রজ্জি কুলঞ্চৈৰ সমুদ্ধরেৎ। मामजीर्य नदः आष्। जार्यमती नतासित्! ॥ : be । সোমলোক মবাপ্নোতি নরো নাস্তাত্র সংশয়ঃ। ততো গচ্ছেত ধৰ্ম্মজ্ঞ। দধীচম্ম মহাত্মনঃ। ১৮৬ । তীর্থং পুণ্যতমং রাজন্! পাবনং লোকবিশ্রুতম্। যত্র নারস্বতো জাতঃ সোহক্ষিরাস্তপদো নিধিং॥ ১৮৭॥ তিমাংস্তীর্থে নরঃ স্নাত্মা বাজিমেধফলং লভেৎ। সারেশ্বতীং গতিঞ্বৈ লভতে নাত্র সংশয়: । ১৮৮॥ ততঃ কন্যাশ্রমং গছেরিয়তো ব্রহ্মচর্য্যবান । * ত্রিরাত্রমুষিতে। রাজলিয়তো নিয়ত।শনঃ ॥ ১৮৯॥ লভেৎ কন্যাশতং দিবাৎ ব্রহ্মলোকঞ্চ গাছতি। ততো গচ্ছেত ধর্মাজ্ঞ! তীর্থং সনিহতী মপি। ১৯০॥

^{*} ব্ৰদ্ধ চৰ্য্যবান্ ইত্যত্ৰ " ব্ৰদ্ধচ্যায়া" ইতি ক—" নিয়তো নিয়তাশনঃ" ইত্যত্ৰ " উপাৰ্যাস পৰায়ণ" ইতি চ পাঠ ভেদঃ ক-পুস্তকীয়ঃ।

তত্র ব্রহ্ম দয়ো দেবা ঋষয়শ্চ তপোধনাঃ। মাসি যাসি ন্যায়ান্তি পুণ্যেন মহতা, হিতাঃ ॥ ১৯১ ॥ সনিহত্যামুপস্পৃণ্য রাছগ্রস্তে দিবাকরে। অশ্বমেধশতং তেন তত্তেষ্টং শাশ্বত ভবেং॥ ১৯১॥ পূর্যিব্যাপ যানি তীর্থানি অন্তর্গাক্চরাণি চ। নদো হ্রদা স্ততাগাশ্চ সর্ব্বপ্রত্রবর্ণান চ। ১৯৩॥ উদপানানি বাপ্যশ্চ তীর্থান্যায়তনানি চ। নিঃসংশয় মমাবাস্যাৎ সমেষান্তি নরাধিপ। ॥ ১৯৪॥ মাসি মাসি নরব্যান্ত। সলিহত্যাং ন সংশ্রঃ। তীর্থসনিহনাদেব সনিহতেরতি বিশ্রহতা ॥ ১৯৫॥ তত্র স্কারা চ পীত্রা চ স্বর্গলে।কে সহীয়তে। অমাবস্থান্ত তত্ত্বৈব র,ছগ্রস্তে দিবাকরে। ১৯৬॥ यः का. कः कुक्रा वर्ग अरा श्री । অশ্বেষ্ণহস্রতা সম্মানিউতা যং ফলম্। ১৯৭। স্নাত এব সমাপ্লোতি কুত্বা আ দ্বঞ্চ মানবং। যং কিনিদ্দুত্ত কর্মা স্তিরা বা পুরুষেণ বা ॥ ১৯৮॥ স্বাত্মাত্রম্ম তৎ সর্বাং নশ্যতে নাত্রসংশয়ঃ। পদাবর্ণেন যানেন ব্রন্ধলোকং প্রপদ্যতে॥ ১৯৯॥

॥ ১৯১॥ সরিহত্যাং কুকক্ষেত্রে, অসৈবে নামাত্রং সরিহতীতি ॥ ১৯২॥ তরিবল্তি পৃথিবা মিতা দিনা—অর উপক্ষোপ সংহারয়েঃ কুকক্ষেরমার পরহাং তদেব অন্ধি, তীথান্তরানিতু "ফলবং সরিধা বফলং তদক্ষ্"—ইতি ন্যায়েন তং প্রান্থে অন্ধৃতানি, তেষামাপি পুণক্ ফলপ্রনান্ত গুণফল নামেন জেরন্, যথা যোগান্ধানামাপ যমনিয়মাদীনাং অহিংসা প্রতিঠাদীনাং তৎসরিধাে বৈরত্যাগ ইত্যাদিনা পৃথক্ ফলং স্থাতে, তদ্বদিতি ভাতঃ॥ ১৯৩॥ ১৯৪॥ ১৯৫॥ ১৯৬॥ ১৯১॥ ১৯৯॥

অভিবাদা ততা যক্ষং দ্বারপালং মচকুকম।
কোটিতীর্থ মুপস্পৃষ্ঠা লভেদ্বন্ত্সবর্ণকম্॥ ২০০॥
গঙ্গাহ্রদশ্চ তত্ত্বৈ তীর্থং ভরতসন্তম!।
তত্র স্বায়ীত ধর্মজ্ঞ! ব্রহ্মচারী সমাহিতঃ॥ ২০১॥
রাজস্থ্যাশ্বনেধাভ্যাৎ ফলং বিন্দত্তি মানবঃ।
পৃথিব্যাং নৈমিবং তীর্থ মন্তরীক্ষেচ পুদ্ধরম্॥ ২০২॥

॥ ২০০ ॥ ২০১॥ পুঞ্জিরা মিতি—নৈমিষং নিমিষারণো ক্তংগুলং পৃথিবা মেব দত্ত-দপতি দার্কভৌমাদি পদ প্রাপ্তি হেতুরি তার্থঃ, অন্তরীক্ষে ভ্রাচন্দ্রাদি মাগো নক্ষ্যাদ চক্রে প্রকরং প্রাপয়তীতার্থঃ ॥২০২॥ ত্রালাং ইন্ডাদি লেংকেন সহ ত্রাণা মুপারি প্রশাদেক কুক-ক্ষেত্র দেবী ক্রম ক্রিস্থানং প্রাপ্তোভাগেঃ, নয়ন্তি পরমাং গতিমিতি — মুক্তিফল প্রদর্শক বাক শেষাং, অত কুক্তেক্ত পদেন কাণে ব,' কা ী-শ্বরস্য তীর্থে। স্থার ভারত সত্তম !। সর্ববর্ণাধি বিনির্মুক্তে ব্রন্ধা লোকে মহ রতে।" ইতানেন সমানাথ্যাৎ, তথ্য পাঠ ক্রমাদর্শক্রম জ বলবভাৎ ''পুথিবাহে নৈমিবং পুনা মভ্রীকে চ প্রহন্।" ইতাতঃ প্রহ ''বে বসভি কুকক্ষেত্রে তে বসন্তি ত্রিপিফাপে⊹" ইত্যয়ং প্রস্থে দক্ষয়ঃ, অনাথ। তৃতীয় লোকসাগায়কে স্ত্রয়াগা মিতাসমতংস্যাৎ, ত্রিবিষ্টপে (ি পিষ্টপে) ইতাগাহারেণ বাকাপুরণংসাাং তচ্চাহযুক্তঃ—লোভার্থ সম্ভবে, দর্শিতাগবিমুক্তেই প কুরুক্তের প্রদা শ্রেতী রুটি " আবি মুক্তংবৈ কুক্ষেত্্" ইতিজাবালোপনিষ্দি, ন গোপক্ষোপ সংহা-রৈকরপেণে প্রাদদ্ধ কুকক্ষেত্রসা প্রাকরণিকরে। তীর্থান্তর বদারাণ্সণ खब्धकर्न পठिज्ञाजनम्भाषिज नाजाः, धकरनान्निभमा ननोप्रसुद তথাহি, ''তে বদন্তি তিবিভাপে" " অর্গে লোকে মহীয়তে"—ইত্যাদি বাকাশেষ্থ স্বৰ্গপ্তিরের কৃষ্ণ কর ফল মনগম,তে, ন চারত্যং ত্রিবি स्रोत्राप्त विभागिकशवर कर्जुरशकार, " विभागिक कूकाक्क वर्"—केजि বাক্তশেষ বিধোধাৎ, তত্ৰ চ বেদী শব্দেন তদ্য কথাভূমিতা বগমাৎ, ·· তেষ্থ কুক্সেত্ৰং• বেদিরাদীং" ইতি তৈত্তিগীয়ক ব্রাক্ষণাৎ '· তেষ্যং ' কুৰক্ষত্ৰং দেব্যঙাৰ মাদ"—: তিশতপথভাতেক, না কৰ্মভূমে বিনা-ফলত্বং যুজাতে, "কর্মণা পিত্লোকো বিদ্যালা দেবলোকঃ"—ইতি ত্রেরি ফলভেদ এবণাৎ, পি ত্রোকঃ স্বর্গলোকঃ, দেবলোকো একলোকঃ, ব্রেণ্ন্যাস্ত জ্ঞান ভূমানং সর্বাঞ্চি খ্রাতপ্রাসন্ধন্, এতদেবাংক ওপাং

ত্রাণামপি লোকানাপ কুরুক্ষেত্রপ বিশিষাতে।
পাংসবোহপি কুরুক্ষেত্রাদ্বায়ুনা সমুদীরি গ্রাঃ ॥ ২০৩॥
অপি ছক্ষ্টকর্মাণপ নয়ন্তি পরমাং গতিমৃ।
উত্তরেণ দৃষদ্বতা দক্ষিণেন সরস্বতীম্ ॥ ২০৪॥
যে বসন্তি কুরুক্ষেত্রে তেবসন্তি ত্রিসিফ্টপো ॥
কুরুক্ষেত্রং গমিষ্যামি কুরুক্ষেত্রে বসাম্যহম্॥ ২০৫॥

সবোপি কুৰুক্ষেত্ৰ। দ্বায়ুনা সমুদীরিতাঃ। অপিহস্ক ত কর্মাণং নয়ন্তি পরমাং গতিন্"—ইতি প্রদর্শ্য " দ'ক্ষণেন সরস্বত্যা উত্তরেণ দৃষদ্বতীন্। যে বসন্তি কুৰুক্ষেত্রে তে বসন্তি ত্রিবিষ্টপে।" ইতান্তরশ্লোকেন প্রাসিদ্ধ কুৰুক্ষেত্ৰ ফলং প্ৰদৰ্শ্যতে, ন চৈতদেৰ পূৰ্ব্বশ্লোকেন স্তুয়ত ইতি বাচ্যং, জ্ঞতিস্তি প্ৰদিদ্ধিবলাত্ৰ সূত্ৰিখি বাদত্বে স্ভৰতাহভূতাৰ্থ বাদ্যোপ গমসাহ যাগ্যেশ্য বালীকীয়ে মোকোপায়েছ ছাম্সুটী-তাপস্টী মুখা স্চীতিচ ত্রিকং "ত্রিকোণং তপসাপুতং ব্রোণসাঃ সমং কৃত্য। গতা-স্তেন ত্রিকোণেন যে কেচিদিহ জক্তবঃ। বায়তঃ পাং দবোবাপি তেপিমুক্তিং পরাংগতা"—ইতি ভদান্তরেণ পূর্ক শ্লোকার্থসা প্রতাভিজ্ঞানাং, তথাচ যদ্যপি ক্ৰাণঃ কুৰুক্তেত্ৰ সভুং প্ৰকরণাৎ প্ৰসক্তং, তথাপি যোগ্য ভয় ফল-তার্তমা লিন্ধান্তৎসম্বতি, সানিধ্যাতু পরক্পরাকাজকাদিক মুখাপ্য ভীর্থান্তরশেষী ভূতস্যাপি কুকক্ষেত্রস্য কাশীশেষত্ব জ্বেরং, তথাত নাকাণ্--ত্ৰৰ্বলোপি সান্ধঃ " জানথকা প্ৰতিহতানাং বিপ্ৰীতং বলা বলন্" ইতি ন্যারেন বলবত্তর। "স্বর্গ লোকে মহীরতে" ইতি বাক্যাবগত মপি কুরুকেত ফলং তিরোগায় '' প্রতিতিষ্ঠন্তীহ বৈ য এতারাত্রীৰূপযজন্তি" ইত্যাদে। রাত্রি সত্তস্য প্রতিষ্ঠা শেষিতামির " পাংসবোপি কুরুক্ষেত্র" —ইত্যর্থবানেন মুক্তি ফল শেষিতাং অবিমুক্ত সংজ্ঞ কুককেবদা ব্ৰেক্তিগ্যৰ সহৈক বাকাতাং গ্ৰা প্ৰাসন্ধ কুৰু ক্ষেত্ৰসাবিমুক্ত শেষিতাং গ্ৰময়তি, তথাচায়ং পাংস্বোপীতাাদি শ্লোক দ্যার্থঃ—যে পরম গতি, প্রদাং কানীং গস্তু মিন্ছন্তি তে কুরক্ষেত্রে বদেয়ুরিতি, "তে বদান্তি ত্রিবিফ্টপে" ইতিভূ যোগাস ফলবং ওণ ফল মিতি প্রাপ্তক্তং ন বিমর্তব্যুম্, তং সিদ্ধং সর্কেষাং তীর্থানাং কুরুক্ষেত্র প্রাপকত্বং কুরুক্ষেত্রস্তত্ত্বাদী প্রাপককত্ত্ इंजि॥२०७॥२०८॥२०৫॥

অপ্যেকাৎ বাচ মুৎস্কুজ্য সর্বাপাপেঃ প্রমূচ্যতে।
ব্রহ্মবেদী কুরুক্ষেত্র পুণাংব্রহ্মবিতিম্ন ২০৬॥
তিম্মিন্ বসন্তি যে মত্যা ন তে শোচ্যাঃ কথঞ্চন ॥ ২০৯॥
তরুদ্ধকারন্তক্ষেত্র বিদ্যুরং রামহ্রদানাঞ্চ ম চকুক্স্য চ।
এতং কুরুক্ষেত্রসমন্তপঞ্চক,
পিতামহস্যোন্তরবেদি রুচ্যতে॥ ২০৮॥
ইত্যারন্যকে পর্বানি তীর্থমাত্র। পর্বানি নানাতীর্থকথনে
ত্রুশীতিত্বমাহ্র্যারঃ॥ ৮০॥

পুলস্তা উনাচ।

তেতা গচ্ছেম্ছারাজ ! ধর্ম চীর্থমনুত্তমন্।
 তের ধর্মো মহাভাগস্থাবারুত্তমং তপঃ॥ ১॥
 তেন তীর্থ- কুতং পুনা শ্বেন নামা চ বিভাতন।
 তের স্কার্থা নরো রাজন্! ধর্মাণালঃ সমাহিতঃ॥ ২॥
 আাসপ্তান কুলপ্তাব পুনাতে নাত্র সম্পায়ঃ।
 ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র ! জ্ঞানপাবন মুন্তমন্॥ ৩॥
 অমিটোম মবাপ্রোতি মুনিলোকঞ্চ গচ্ছেতি।
 সোগি স্কিকবনং রাজংস্ততো গচ্ছেত মানবঃ॥ ৪॥
 তত্র ব্রন্ধারো দ্বো ঋষরশ্চ তপোধনাঃ।
 সিজ্কচারণগন্ধারো কিল্লরাশ্চ মহোরগাঃ॥ ৫॥

॥ २०७ ॥ २०१ ॥ २०४ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্বনি নৈলকণ্ঠায়ে ভারত ভাবনীপে এ,শীতি তমেংধ্যায়ঃ ॥ ৮৩ ॥

उउ≷जि—∥ ७॥२॥७॥8॥α॥

তত্ত্বন প্রবিশন্নেব সর্বাপাপেঃ প্রমুচ্যতে। তত 📧 পি সরি স্কো নদীনা মুক্তমা নদী॥ ७ ॥ क्षकारम्वी सृ ठा बाजन्। श्रृवारम्वी मबस्र छी। তত্রাভিষেকং কুর্ন্বীত বল্মীকান্নিঃস্থতে জলে॥ ৭॥ অর্চরিত্ব পিতৃন্দেবানশ্বমেধফল পলভে । ঈশানাধ্যবিত্ৰ নাম তত তীৰ্থ স্বতুৰ্ল হয়। ৮॥ ষট্সু শ্ম্যানিপাতেষু * বল্মীকাদিতি নিশ্চয়ঃ। কপিলানাং সহস্রন্ত বাজিমেধঞ্চ বিন্দৃতি ॥ ৯॥ তত্র স্বাস্থা নরব্যান্ত্র। দৃষ্টমেতৎ পুরাতনৈঃ। সুগন্ধাং শতকুস্ত্রাঞ্চ পঞ্চযক্ষাঞ্চ ভারত।॥ ১০॥ অভিগম্য নরশ্রেষ্ঠ। স্বর্গলোকে মহীয়তে। তিশুল্থাতং তত্তিব তার্থ মাসাদ্য ভারত।॥ ১১॥ তক্রাভিষেকং কুঝীত পিতৃদেবার্চ্চনে রতঃ। গাণপত্যঞ্চ লভতে দেহং ত্যক্ত্রা ন সংশয়ঃ॥ ১২॥ ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র। দেব্যাঃ স্থান মনুত্তমম্। শাকস্তরীতি বিখ্যাতা ত্রিয়ু লোকেষু বিশ্রুতা ॥ ১৩॥ দিব্যং বর্ষসত্রহংহি শাবেন বিল স্কুত্রতা। আহারং সা ক্তবতী মাসি মাসি নরাধিশ।॥১৪॥ ঋষয়োহভাগেতাস্কত্র দেব্যা ভক্তা তপে।ধনঃ। আভিথ্যঞ্চ কুতং তেষাণ শাকেন কিল ভারত।॥১৫॥ ততঃ শাক্ষরীত্যের নাম ত্য্যাঃ প্রতিষ্ঠিত্য । শাক্তরীৎ সমাসাদ্য ব্রহ্মচারী সমাহিতঃ ॥ ১৬ ॥ ,

॥ ৬॥ १॥ ৮॥ শম্যা মুদ্ধারা হ্লতি যজ্ঞোপকরণ বিশেষঃ, স বলবত। কি-স্তো যাবন্দ্রং পতেং তাবান্ দেশঃ শম্যা নিপাতঃ. তেরু ষট্সু, সম্পোতি পাঠে—সম্পততানয়েতি যক্তিঃ সম্পা॥ ১॥ পুরাতনৈ ভবিষ্য পুরাণাবো ॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥

^{*} শ্বা ইতাত্র " সম্পা" ইতি পাঠঃ কচিৎ।

ত্রির,ত্রমুধিতঃ শাক- ভক্ষয়িত্বা নরঃ শুচিঃ। শাকাহারসা যথ কিঞ্জিৎ বর্ষৈ দ্বাদশভিঃ ক্লতম্॥ ১৭॥ তৎ ফলৎ তসা ভবতি দেব্যাশ্ছন্দেন ভারত।। ততো গচ্ছেৎ স্থবৰ্ণখিং ত্ৰিষু লেকেষু বিশ্ৰু হয়॥ ১৮॥ তত্র বিষ্ণুঃ প্রদাদার্থং রুদ্র মারাধয়ৎ পুরা। বর)ংশ্চ স্থুবছুন্ লেভে দৈবতেষু স্কুতুল ভি1ন্॥ ১৯॥ উক্তশ্চ ত্রিপুরত্বেন পরিভুফৌন ভারত।। " অপি চ ত্বং প্রিয়ন্তরো লোকে কুষ্ণ। ভবিষ্যাসি॥ ২০॥ ত্বনাথ্য জগৎ সর্বান ভবিষ্যতি ন সংশ্যঃ''—। তত্রাভিগমা রাজেন্দ্র। পূজয়িত্বা রুষধ্বজম্ ॥ ২১॥ অশ্বমেধ মবাপ্লোতি গণেপতাঞ বিন্দতি। ধুমাবতী^ ততো গচ্ছেজিরাজোপোষিতো নরঃ ॥ ২২ ॥ মনসা প্রার্থিতান কামান লভতে নাত্র সংশয়ঃ। দেব্যাস্ত দক্ষিণার্দ্ধেন রথাবর্ত্তো নরাধিপ !॥১৩॥ তত্রারোহেত ধর্ম্মজ্ঞ। শ্রহ্মধানো জিতেন্দ্রিয়ং। মহাদেবপ্রসাদাদ্ধি গচ্ছেত পরমাঙ্গতিম্॥ ২৪॥ প্রদক্ষিণ্মুপারত্য গচ্ছেত ভরতর্ষভ!। ধারাং নাম মহাপ্রাজ্ঞ। সর্বাপাপপ্রমোচনীম্। ২৫॥ তত্র স্কাত্বা নরব্যান্ত্র! ন শোচতি নরাধিপ!। ততো গছেত ধর্মজ্ঞ। নমস্কৃত্য মহাগিরিম্॥ ২৬॥ স্বর্গছারেণ যতুল্যং গঙ্গাদারণ ন সংশয়ঃ। তত্র।ভিষেকং কুবরীত কোটিতীর্থে সমাহিতঃ ॥ ২৭ ॥ পুগুরীকমবাপ্রোভ কুলঞ্চৈব সমুদ্ধরেৎ। উবৈষ্ক্রে রজনীং তত্র গোসহস্রফল্প লভেৎ॥ ২৮॥ ॥ ১१ ॥ इटन्यन देळ्डा ॥ ५५ ॥ ५० ॥ २० ॥ दश्रु थर दर्वानम् ॥ २० ॥ २२ ॥ 11 2 3 11 28 11 26 11 29 11 29 11 25 11

সপ্রগঙ্গে ত্রিগঙ্গে চ শক্রাবর্ত্তে চ তর্পয়ন। प्तितान् পि**जुः क विधिव**९ भूगात्नारक महीय्राख । २৯ ॥ ততঃ কনথলে স্নাত্মা ত্রিরাত্রোপোষিতো নরঃ। অশ্বমেধ মবাপ্লোতি স্বৰ্গলোকঞ্চ^{ঞ্চ} পচ্ছতি । ৩০॥ কপিলাবটং ভত্তো গচ্ছেৎ তীর্থসেবী নরাধিপ।। উপোষ্য রজনীং তত্র গোসহস্রফলং লভেৎ॥ ৩১॥ নাগরাজন্য রাজেন্দ্র কপিলস্য মহাত্মনঃ । তীর্থ- কুরুবরশ্রেষ্ঠ। সর্বলোকেষু বিশ্রুতম্ ॥ ৩২ ॥ তত্রাভিষেকং কুর্ক্ষীত নাগতীর্থে নরা ধা।। কপিলানাং সহস্রস্য ফলং বিন্দতি মানবং॥ ৩৩॥ ততো লগিতিকাং গচ্ছেচ্ছান্তনোন্ত থিমুক্তমম্। তত্র স্বাস্থানরো রাজনু ! ন তুর্গতি মবাপ্রয়াৎ॥ ৩৪॥ शुक्रायमूनरमार्थार्था अविष्यः मक्राम नवः। দশাখ্যেধান†প্লোতি কুলক্ষৈব সমুদ্ধরেৎ ৩৫ ॥ ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র! সুগদ্ধং লে।কবিশ্রুতম্। সর্ববিপাপবিশুদ্ধাত্মা ব্রহ্মলোকে মহীয়তে ॥ ৩৬॥ রুদাবর্ত্ত ততা গচ্ছেৎ তীর্থদেবী নরাধিপ !। তত্র স্বাস্থা নরো রাজন ! স্বর্গলোকে চ গচ্ছতি ॥ ৩৭ ॥ शक्रीश्रां मह नद्रत्थार्थ ! मत्रश्र छा मह मक्रदम । স্নাত্বাশ্বমেধং প্রপ্লোতি স্বর্গলোকঞ্চ গছতি॥ ৩৮॥ ভদকর্পেশ্বরং গত্বা দেব মর্চ্চ্য যথা বিধি। ন ছুৰ্গতি মৰাপ্লোতি নাকপুষ্ঠে চ পূজ্যতে॥ ৩৯॥ 1.22 11 0 11 25 11 05 11 00 11 08 11 06 11 09 11 09 11 09 11

^{*} বিন্দতীতি খঃ। † '' গদাযমুনয়ো*চাপি" ইতি ক-পুস্তকঃ।

ততঃ কুব্জাত্রকে গচ্ছেত্তীর্থদেনী নরাধিপ!। পোসহত্র মবাধোতি স্বর্গলোকক্ষ গছতি। ৪০॥ অরুক্ষতীবটং গচ্ছেৎ তীর্থদেবী নরাধিপ!। সামুদ্রক মুপস্পা ব্রহ্নারী সমাহিত: ॥ ৪১॥ অশ্বমেধ মবাপ্লোতি ত্রিরাত্তোপোষিতো নরঃ। গোসহস্রফলং বিন্দেৎ কুলক্ষৈব সমুদ্ধরেৎ। ৪২। ব্ৰহ্মাবৰ্ত্ত্ৰ ততো গচ্ছেমুক্ষচারী সমাহিতঃ। অশ্বেধ মবাপ্লোতি সোমলোকঞ্চ গছতি ॥ ৪৩॥ যমুনাঞ্জভবং গড়া সমুপস্পৃশ্য যামুনম্। অশ্বমেধফলং লক্ষ্যা হ্বৰ্গ লাকে মহীয়তে ৷ ৪৪ ॥ দৰ্ক্ষাসপক্ৰমণং প্ৰাপ্য তীৰ্থন তৈলেক্যেপুজিতম্। অশ্বঃমধ মবাপ্লোতি স্বৰ্গলোকঞ্চ গচ্ছতি। ১৫॥ সিন্ধোশ্চ প্রভবং গত্বা সিদ্ধগন্ধর্বসেবিতম্। তত্ত্বোষ্য রজনীঃ পঞ্চ বিন্দে বছত্ত্বর্ণ কম্ ॥ ৪৬ ॥ व्यथ (वर्षाः नमानांष्ठां नवः প्रमञ्जर्भाग् । অশ্বমেধ মবাপ্লোতি স্বৰ্গলোকঞ্ গচ্ছতি॥ ৪२॥ ঋষিকুল্যাপ সমাসাদ্য বাশিষ্ঠঞ্বে ভারত !। বাশিষ্ঠং সমতিক্রম্য সর্বেব বর্ণা ছিজাতয়ঃ॥ ৪৮॥ श्रीवकूलाः नमानामा नदः ऋषा विकल्पयः। দেবান্ পিতৃংশ্চার্চায়ত্বা ঋষিলোক প্রপদাতে। ৪৯॥ যদি তত্ত বসেত্মাসং শাকাহারে। নরাধিপ !। **ভৃগুতুঞ্গং সমাসান্য বাজিমেধফলং লভেৎ । ৫० ।** গতা বীর প্রমোকঞ্চ দর্বপাপেঃ প্রমুচ্যতে। ক্লান্তকা-মঘয়োলৈক তীর্থমাসাদ্য ভারত। ॥ ৫১ ॥ 180 187 185 180 188 180 180 1 80 1 80 1 80 10 co

অগ্নিফোমাতিরাত্রাভ্যাং ফলমাপ্রোতি মানবঃ ৷ তত্র স্বস্তাং সমাদাদ্য বিদ্যাতীর্থমনুত্তমম্। ৫২ ॥ উপস্পা সবৈ বিদ্যাং যত্র ভত্তোপপদাতে 🛊 । মহাশ্রমে বদেন্তাতিং সর্বাপাপপ্রমোচনে ॥ ৫৩॥ এককলেং নিরাহারো লোকান বিসতে শুভান। দশাপরান্দশ পূর্বান্নরালুকরতে কুলম্"॥ ৫৪ ॥ † ষ্ঠকালোপবাদেন মাস মুষ্য মহালয়ে। ! म्द्रिशाशिविष्णकाञ्चा विन्त्राव्यक्ष्यवर्गकम् ॥ ५६ ॥ অথ বেতসিকা পর। পিতামহনিষেবিতাম। अश्वत्यथ मदारक्षां जि शत्करमो मनमी गाँउम् ॥ ৫७॥ অথ সুন্রকাতীর্থং প্রাপ্য দিদ্ধনিষেবিতম। ৰপন্য ভাগী ভবতি দুষ্টমেতৎ পুরাতনৈঃ। ৫৭। ততো বৈ ব্ৰাহ্মনীং গত্মা ব্ৰহ্মচারী দ্রিতেন্দ্রিয়ঃ। পদ্ম বর্ণেন যানেন ত্রহ্মলোকং প্রপদ্যতে । ৫৮। ততস্ত নৈমিষণ গচ্ছেৎ পুণাং সিদ্ধনিষেবিতম্। কত্র নিত্যং নিবস তি বন্ধা দেবগগৈঃ সহ॥ ৫৯॥ নৈমিষং মুগর। ৭ সা পাপসার্দ্ধি প্রণশাতি। প্রবিষ্টমাত্রস্ত নরঃ নর্বপোপেঃ প্রমুচ্যতে ॥ ৬০ ॥

॥ ৫২ ॥ ৫৩ ॥ ৫৪॥ ৫৫॥ ও শ্নসীং গতিং শুক্তরম্ ॥ ৫৬॥ ৫৭॥ ৫৮॥ ॥ ৫৯॥ ৬০॥

^{*} অসামোক ভাগস্য কু-পুন্তকে ভিন্না পরিপাটী, হথা, "উপস্প্রেশ্যংস বিদ্যানাং সর্বাসাংপারগো ভবেং।" ইভি।

† এচ্চতুঃ-পঞ্চাশছে লাকানন্তরং "তীণন্তারয়তে জন্তোর্দ শপুর্বান দশাপরান দৃষ্ট্য মাহেশ্বরং পুণাং পদং স্থানমন্ত্র কিতার্থঃ সর্বাক্রতায়্
ন শোচেম্বরাং কচিং।" এতং শ্লোকদ্বর মধিকন্ বর্ততে ক-পুন্তকে।

বিভাবোহশাং ক-পুন্তকে।

তত্র মাদং বদেদ্ধীরো নৈমিষে তীর্থকংপরঃ। পৃথিব্যাং যানি তীর্থানি নৈমিষে তানি ভারত। ॥ ৬১ ॥ কুতাভিষেকস্তবৈৰ নিয়তে। নিয়তাশনঃ। গবাংমেধন্য যজ্ঞন্য ফলং প্রাপ্রোতি ভারত।॥ ৬২॥ পুনাত্যাসপ্তমঞ্চৈব কুলং ভরতসন্তম ! ৷ যন্তাজেরৈমিষে প্রাণানুপ্রাসপরায়ণঃ॥ ৬৩॥ म त्यादम् सूर्गलात्क्यू अवयाङ् स्मनीविवः। নিতাং মেধ্যঞ্ পুনাঞ্ নৈমিষং নূপসন্তম !॥ ৬৪॥ গঙ্গেডেদং সমাসাদ্য ত্রিরাত্রোপোষিতো নরঃ! বাজপেয় মবাপ্লোতি ব্ৰন্নভূতো ভবেৎ সূদা ॥ ৬৫ ॥ সরস্বতীং সমাসাদ্য তর্পয়েৎ পিতৃদেবতাঃ। সারস্বতেষু লোকেষু মোদতে নাত্র সংশয়ঃ ॥ ৬৬ ॥ ততশ্চ বাহুদাং গচ্ছেদ্র চারী সম।হিতঃ। **उद्या**चा तकनीरमकां श्रव्यातक महीयाउ ॥ ७३ ॥ দেবসত্রস্য যজ্জস্য ফলং প্রাপ্তোতি কৌরব !। ততঃ ক্ষীরবতীং গচ্ছেৎ পুণ্যাং পুণ্যতরৈ ব্যৃতাম্॥ ৬৮॥ পিতৃদেব।র্চনপরো বাজপেয় মবাপ্রয়াৎ। বিমলাশেক মামাদ্য বন্ধচারী সমাহিতঃ॥ ৬৯॥ তত্তোষ্য রজনীমেকাং স্বর্গলোকে মহীয়তে। পোপ্রতারং ততো গচ্ছেৎ সরযান্তীর্থমুক্তমম্॥ ৭০॥ যত্র রামো গতঃ স্বর্গ সভ্ত্যবলব।হনঃ। দেহং তাক্তা মহারাজ। তদ্য তীর্থদ্য তেজদা॥ ৭১॥ রামস্য চ প্রসাদেন ব্যবসায়। চ ভারত।। তিমা-স্তীর্থে নরঃ স্নাত্ত্ব। গোপ্র ভারে নরাধিপ। ॥ ৭২॥ ા ઝરા ઝરા ઝગા ઝ8ા ઝ૦ા ઝળા ઝગા ઝ૧ા ઝમા ઝરા ૧૦૫ ૧૬૫ ব্যবসায়াৎ নিশ্চয়াৎ॥ ৭২॥

সর্ব্বপাপবিশু**দ্ধাত্মা স্বর্গ**লোকে মহীয়তে। রামতীর্থে নরঃ স্নাত্মা গোমত্যা । কুক্কনন্দন ! ৭ ৩ ॥ অশ্বমেধ মবাপ্লোভি পুনাতি চ কুলং নরঃ। শতসাহস্রিকং তীর্থং তত্ত্বৈব ভরতর্বভ ।॥ ৭৪॥ তত্তোপস্পর্শনং কুত্বা নিয়তো নিয়তাশনঃ। গোসহস্রফলৎ পুণ্যৎ প্রাপ্নোতি ভরতর্বভ ! ॥ ৭৫ 🛙 ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র ! ভর্তৃস্থান মনুত্তমন্ । ু অশ্বমেধন্য যজ্ঞন্য ফলং প্রাপ্নোতি মানবং । ৭৬॥ কোটিতীর্থে নরঃ স্নাত্বা অর্চ্চয়িত্বা গুহুৎ নূপ !। গোসহঅফলং বিন্যাত্তেজস্বী চ ভবেররঃ॥ ৭৭ ॥ ততো বারাণদী পাত্বা অর্চায়ত্বা রুষধজম্। কপিল। হ্রদে নরঃ স্নাত্তা রাজস্থুর মবাপ্ল রাৎ ॥ ৭৮॥ অবিমুক্তং সমাসাদ্য তীর্থসেবী কুৰদ্বহ!। দর্শনাদেবদেবস্য মুচ্যতে ব্রহ্মহত্যয়া॥ ৭৯॥ প্রাণানুৎস্কা তত্ত্বৈ মোক্ষং প্রাধ্যেতি মানবঃ। মার্কণ্ডেরস্য রাজেন্দ্র। তীর্থমাসাদ্য তুর্ল ভ্রম। ৮০॥ গোমতীগঙ্গয়ে।কৈব সঙ্গমে লোকবিঞ্চতে। অগ্নিটোম মবাধোতি কুলঞ্চিব সমুদ্ধরে । ৮১॥ ততো গয়াং সমাসাদ্য বক্ষচারী সমাহিতঃ। व्यथ्यामध्य प्रवारिश क्लरेक्षव ममुक्तात्व 📲 🕨 💵 ভত্তাক্ষয়বটো নাম ত্রিষ্ব কোকেষু বিশ্রুতঃ। ত্ত্র দত্তং পিতৃভাস্ত ভবতাক্ষয় মুচাতে। ৮२।

^{* &}quot; গমনাদেবভারত !" ইতি ক-খ-পু**ভ**কৌ |

মহানদ্যামুপস্পৃশ্য তর্পয়েৎ পিতৃদ্দবভাঃ। অক্ষান্ প্রাপ্নোকান্-কুলক্ষৈব সমুদ্ধরেৎ ॥ ৮৪ ॥ ততো একসরো গত্ব। ধর্মারণ্যোপশোভিত্য। ব্রহ্মলোক মবাপ্লোতি প্রভাতামেব শর্কারীয় । ৮৫॥ ব্রদান তত্র সরসি যুপঃ শ্রেষ্ঠঃ সমুক্তিতঃ। যূপ প্রদক্ষি। কুত্বা বাজপেরফল লভে । ৮৬॥ ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র । ধেনুক্ৎ লোকবিশ্রুতম্। একর তে। বিতো রাজনু! প্রক্তে তিলধেনুক ম্। ৮৭॥ সর্বাপবিশুদ্ধাত্মা সোমলোকং ব্রজেদ্ধ ব্য । (তত্র চিহ্রং মহদ্রাজন্নদাপি স্থমহদ্র শন্ ॥ ৮৮॥ * কপিলায়াঃ সৰ্বংসায়া শ্চরত্যাঃ পর্বতে ক্লুত্যু। সবৎসায়াঃ পদানি আ দৃশ্যন্তেহ্দ্যাপি ভারত!) ৷ ৮৯ 🖫 তেষুপস্পার জেন্দ ! পদেষু রূপদন্তম !। যং কিঞ্চিদশুভং পাপং তৎ প্রণশাতি ভারত।। ৯০॥ ততো গুধবট> গচ্ছেৎ স্থানিং দেবদা শূলিনঃ। স্থাতি ভন্মনা তত্ৰ সক্ষমা রুষভধ্বসম্।। ৯১ ॥ ব্ৰহ্মণেন ভবেচ্চাৰ্ণ ব্ৰত্ত দাদশবাৰ্ষিক্য। ইতরেষান্ত বর্ণানাম সর্ব্বপাপং প্রণশাতি ॥ ৯২ ॥ উদান্তঞ্চ ততে। পচ্ছেৎ পর্ববিতং গীতনাদিতম্। সাবিত্রাপ্ত পদ্প তত্র দুশ্যতে ভরতর্ষভ।॥৯৩॥ তত্ত্ব সন্ধ্যামুপাসীত ব্রাহ্মণঃ সংশিত্রতঃ। তেন হ্পান্তা ভবতি সন্ধ্যা দাদশবার্ষিকী॥ ৯৪॥ 1 48 1 44 1 44 1 44 1 44 1 44 1 96 1 97 1 95 1 95 1 98 1

^{*} তত্ত্তে সার্দ্ধ শ্লোকস্য মহান্ ব্যতি ক্রমঃ ক-পুস্তকে দৃশাতে যথা,—
"তত্ত্তিসুং মহারাজ! অদ্যাপিছিন সংশয়ঃ। কপিলা সহবৎসা বৈ
পর্বতে বিচরত্ত্ত। সবৎসায়াঃ পদান্যস্যা দৃশ্যতেই ্যাপি ভারত!" ইতি।

যোনিদারঞ্ তত্ত্বৈব বিশাতং ভরতর্বভ!। তত্রাভিপমা মুচ্যেত পুরুষো যোনিসঙ্কটাৎ ॥ ৯৫ ॥ कुष्णकावुट्यो शक्तो भ्राह्मा हार त्या वरमञ्जः। পুনাত্যাসপ্তম বাজন্। কুলং নাস্ত্যত সংশয়: ॥ ৯৬ ॥ এফবা বছবঃ পুত্রা যদাপোকো গয়াং ব্রজেৎ। যজেত বাশ্বমেধেন নীলং বা রুষ মুংস্তজেং॥ ৯৭॥ ততঃ ফল্পু ত্রজেক্রাজংস্তার্থদেবা নরাধিপ !। অশ্বমেধ মবাপুেতি সিদ্ধিঞ্চ মহতী এজেৎ। ৯৮॥ ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র। ধর্মপৃষ্ঠ সমাহিতঃ। যত্র ধর্মো মহারাজ ! নিত্যম।তে যুধিষ্ঠির ! ॥ ১১ ॥ তত্র কুপোদকৎ পীত্বা ততঃ স্বাতঃ শুচিত্তথা। পিতৃন্দেবা শ্স্ত সন্তুপা মুক্তপাপো দিবং ব্ৰেছে। ২০০ ॥ মভঙ্গাাশ্রম ন্তত্ত মহর্ষে ভাবিত।অনঃ। তং প্রবিশ্যাশ্রমং জীমছ মশোকবিনাশনম্॥ ১০১॥ গবাময়ন যজ্ঞগ্য ফলং প্রাপ্তেমানবঃ ! ধর্ম্ম ক্রবাভিদ~স্পুশ্য বাজিমেধ মবাপ্লায় ছে॥ ১২২॥ ততা গচ্ছেত রাজেন্দ্র। বন্ধান মনুত্রমৃ। তত্রাভিগম্য রাজেন্দ্র ! জ্বাণং পুরুষর্ষভম্। ॥ ১০০॥ রাজস্থরাখ্যেধভ্যাৎ ফলং বিন্দতি মানবঃ। ততো রাজগৃহং গচ্ছেৎ তীর্থসেবী নরাধিপ।॥ ১০৪॥ উপস্পুশ্য ভতন্তত্ৰ কাক্ষীবানিব মোদতে। যক্ষিণ্যা নৈত্যকং তত্র প্রান্থাত পুরুষঃ শুচি:। ১০৫॥ ষ্ঠিকণ্যাস্ত প্রসাদেন মুচ্যতে ব্রহ্মহতায়া। মণ্নাগং ততে। গত্বা গোসহস্রফলংলভেৎ॥ ১০৬॥ ॥ अ८ ॥ अ७ ॥ अ१ ॥ अ४ ॥ अ४ ॥ २०० ॥ २०० ॥ २०४ ॥ २०४ ॥ विजाकश বৈবেদ্যং নৈত্যকং তদেব ॥ ১০৫ ॥ ১০৬ ॥

তৈর্থিকৎ ভুঞ্জতে যস্তু মনিনাগস্য ভারত!। দফস্যাশীবিষেণাপি ন তস্য ক্রমতে বিষয় ॥ ১০৭ ॥ তত্তেষ্যে রজনীমেকাং সর্বাপাপেঃ প্রমুচাতে।* ততো গচ্ছেত ব্রহ্মর্থে গৌতমস্য বন্দ প্রিয়ম্॥ ১০৮॥ অহলায়ো হ্রদে স্বাত্বা ব্রজেত পরমাণ গতিম। অভিগম্য শ্রিয়ণ রাজনু ! বিন্দতে শ্রিয়মুক্তমাযু ॥ ১০৯॥ তত্যোদপানো ধর্মজ্ঞ। তিষু লোকেষু বিশ্রুতঃ। তত্রাভিষেকং কুত্রা তু বাজিমেধ মবাপ্লুরাং। ১১০। জনকস্য তু রাজর্ষেঃ কৃপাস্ত্রদশপূজিতঃ। তত্রভিষেকং কুত্রা তু বিষ্ণুলোক মবাপ্লয়াম। ১১১॥ ততো বিনশনং গচ্ছেৎ সর্ব্বপাপপ্রমোচনম্। বাজপেয় মবাপ্নোতি সোমলোকঞ্চ গচ্ছতি ॥ ১১২ ॥ গগুকীন্ত সমাসাদ্য সর্বাতীর্থজলোদ্ভবাম্। বাজপেয় মবাপ্রেতি স্থালোকঞ্চ গছতি ॥ ১১৩ ॥ ততো বিশালাম। সাদ্য নদী ও তৈলোক্যবিশ্রুতাম্। আগ্লেষ্টোম মবাপুশতি স্বৰ্গলোকঞ্চ গচ্ছতি॥ ১১৪॥ ততোহধিবঙ্গং ধর্মজ্ঞ ! সমাবিশ্য তপোবনম্। গুছাবেষু মহারাজ ! মোদতে নাত সংশয়ঃ ॥ >>৫॥ कम्भनास मभामामा नमीर मिक्रिनियविजाम्। পুগুরীক মবাপ্লে:তি স্বর্গলোকঞ্চ গচ্ছতি। ১১৬। অথ মাহেশ্বরীং ধারাং সমাসাদ্য ধরাধিপ।। অশ্বমেধ মবাপ্লোতি কুলক্ষৈব সমুদ্ধরেৎ ॥ ১১৭ ॥

|| 724 || || 704 || 7°A || 709 || 780 || || 777 || 775 || 770 || 778 || **7**20 || 770||

 ^{*} গোসহঅফলং লভেদিতি খ-পুস্তকঃ।

मिर्टियोक्सार शुक्कतिनीर समामाना नर्वाधित!। ন চুৰ্গতি মবাপেুতি বাজিমেধঞ্বিন্দতি॥ ১১৮॥ অথ সোমপাদ**ং গচ্ছে**ং ব্র**ন্ধ**চারী সমাহিতঃ। মাহেশ্রপদে স্বাস্থা বাজিমেধফলং লভেং॥ ১১৯॥ তত্র কোটী ভু তীর্থানাৎ বিশ্রু গ্র ভরতর্বন্ত !। ক্র্মন্ত্রেণ রাজে ক । হামুরেণ ছুরাল্লনা ॥ ১২০॥ ক্রিয়মাণা হৃতা রাজন্। বিষ্ণুনা প্রভবিষ্ণুনা। তত্র,ভিবেক৲ কুন্ধতি তীর্থকোটা।^ যুধিষ্ঠির ! 📽 ॥ ১২১ ॥ পুগুরীক মবাপোতি বিষ্ণুলোকঞ্চ গছতি। ততো গক্তে রাজেন্দ্র ! স্থানৎ নারায়ণ্স্য চ ॥ ১২২ ॥ সদা সন্নিহিতো যত্র বিষ্ণু ব্রস্তি ভারত!। যত্র ব্রহাদয়ো দেবা ঋষয়শ্চ তপোধনাঃ॥ ১২৩॥ व्यापिका वमत्वा क्रमा क्रमा क्रमा मुनामत्व। শালগ্রাম ইতি খাতো বিষ্ণু রদ্ভকর্মকঃ॥ ১২৪॥ অগিভম্য ত্রিলোকেশ > বরদ > বিষ্ণু মব্যয়ম্। অশ্বমেধ মবাপোতি বিষ্ণুলোকঞ্চ গচ্ছতি॥ ১২৫॥ তত্তে। দপানং ধর্মাজ্ঞ। সর্বপাপপ্রমোচনম্। সমুদ্রান্তত্ত চত্তারঃ কূপে সনিহিতাঃ সদা॥ ১২৬॥ তত্রোপস্পু শ্য রাজেন্দ্র । ন তুর্গতি মবাপু য়াৎ। 'अভिशमा मङ्गारानवः वहनः क्रा मवाह्म ॥ ১২१ ॥ বিরাজতে যথা সোমো মেঘৈর্ম্মকো নরাধিপ।। জাতিমার মুপস্পা শুচিঃ প্রয়তমানসঃ॥ ১২৮॥ w || 552 || 520 || 525 || 522 || 520 || 528 || 520 || 520 || 529 ||

^{* &}quot; নরাধিপ !" ইতি ঘ—

জাতিশারত্ব মাপোতি স্বাত্বা তত্র ন সংশয়ঃ। মাহেশ্বরপুর্ব পত্না অর্চ্চয়িত্বা বৃষধ্বজন্। ১২৯॥ ঈ পৈতাল্লভতে কামানুপবাসান্ন সংশয়ঃ। ততস্তু বামনং গত্ব। সর্বাপাপপ্রমোচনম্॥ ১৩০॥ অভিগম্য ছরিপ দেবপ ন তুর্গতি মবাপুরাৎ। কুশিকস্যাত্রমং গচ্ছেৎ সর্বাপপ্রমোচনম্॥ ১৩১॥ কৌশিকীং তত্ত্ব গচ্ছেত মহাপাপপ্রণাশিনীম্। রাজস্থান্য যজ্ঞন্য ফলৎ প্রাপ্রেভি মানবঃ ॥ ১৩২॥ ততো গচ্ছেত রাজন্দ । চম্পকারণামুক্তমম্। তবোষ্য রজনী মেকাং গোসহত্রফলং লভেৎ॥ ১৩৩॥ অথ জ্যেষ্ঠিল মাসাদ্য তীর্থং পরমতুর্ভ খ্ । তত্যোষ্য রজনী মেকাং গোসহস্রফলং লভেৎ॥ ১৩৪॥ তত্র বিশ্বেশ্বরং দৃষ্ট্বা দেব্যা সহ মহাছ্যাতিষ্। মিত্রবিরুণয়ো লোকানাপুেতি পুরুষর্যভ !॥ ১৩৫॥ ত্রিরাত্রোপোষিতস্তত্র আগ্নষ্টোমফলং লভেৎ। কন্যাসম্বেদ্য মাসাদা নিয়তে। নিয়তাশনঃ॥ ১৩৬॥. মনোঃ প্রজাপতের্বোকানাপ্রেতি পুরুষর্বভ!। কন্যায়া^ যে প্রয়চ্চন্তি দান মন্নঞ্চ ভারত। * । ১৩৭ ॥ তদক্ষয়ামতি প্রান্থ ঋষয়ঃ সংশিতব্রতাঃ। † নিশ্টীরাঞ্চ সমাসাদ্য তিষু লোকেষু বিশ্রুতাম্॥ ১৩৮॥ অশ্বমেধ মবাপোতি বিষ্ণুলোকঞ্চ গল্ছাত ! যে তুদানং প্রয়দ্ধতি নিশ্চীরাসঙ্গমে নরাঃ॥ ১৩৯॥

^{|| 709 ||} || 749 || 700 || 707 || 706 || 708 || 706 || 709 || 708 ||

^{*} দান অৰপি চারত। ইতি ঘঃ।

ণ নিঝীর। মতি খঃ।

তে যান্তি নরশার্ক ল! বন্ধানেক মনাময়ম্ *। তক অনো বশিষ্ঠদ্য তিষু লোকেষু বিঞ্চতঃ ॥ ১৪০॥ (परकृष्ठे॰ ममामाना (पर्विर्धिश्वरामिक्य)। অশ্বনেধ মবাপোতি কুলব্রেণ সমুদ্ধরেৎ । ১৪১। ততো গচ্ছেত রাজেক্র ! কৌশিকস্য মুনেই দিয়। যত্র সিদ্ধিং পরাং প্রাপ্তো বিশ্বামিত্রোহ্থ কৌশিকঃ ॥ ১৪২॥ তত্রাভিষেকং কুর্বাণে। বাজপেয় মবাধুযাৎ। তত্র মাস্ত্র ব্যেদ্ধীর ! কৌ শকাং ভরতর্যভ ! ॥ ১৪৩॥ অশ্বনেধস্য ষৎপুণ্যৎ তক্সাদেনাধিগচ্ছতি। সর্বাহীর্থবরে টেব যো বনেত মহাত্রদে ॥ ১৪৪॥ ন তুর্গতি মবাপ্রোতি বিন্দ্যাদ্বছস্থবর্ণকম্। কুমার মভিগমাথে বীরাশ্রমনিবাসিনম্ ॥ ১৪৫॥ অশ্বমেধ মবাপ্রোতি নরো নাস্ত্যত্র সংশয়ঃ। অগ্নিধারাং সমাসাদ্য তিষু লোকেষুবিঞ্তাম্॥ ১৪৬॥ তত্তাভিষেকং কুর্বাণো অগ্নিষ্টোম মবাপুরাৎ। অভিগম্য মহাদেবং বরদ্প বিষ্ণু মবায়ম্॥ ১৪৭ ॥ পিতামহদরো গ্রা শৈলরাজ্সমীপতঃ। তত্রাভিষেকং কুর্বানো অগ্নিষ্টোম মবাপুরাং। ১৪৮॥ পিতামহ্স্ত সরসঃ প্রস্তা লোকপাবনী। কুমারধারা তত্তৈব তিষু লোকেষু বিঞাতা ॥ ১৪৯॥ যত্র স্বাস্থা কৃতার্থে হেশ্মীত্যাত্মান মবগচ্ছতি। ষষ্ঠকালোপৰাদেন মুচ্যতে ব্ৰহ্মহত্যয়া। ১৫০॥

11 73°0 || 787 || 784 || 789 || 788 || 784 || 789 || 789 || 785 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 || 788 |

^{*} শক্রলোক মনাময় মিতি খ-পুশুক পাঠঃ।

ততো গচ্ছেত ধর্মাঞ্জ । তীর্থসেবন তৎপরঃ। শিখরং বৈ মহাদেব্যা গৌর্য্যা স্ত্রেলোক্যবিক্রতম্ ॥ ১৫১ ॥ गमाक्रश्च नदाख्यके ! खनकृर ७ मू म॰ विरम् । खनकु अ मूल म्लू अ वाकर ला सक्त ला उर १ তত্রাভিষেকং কুর্বাণঃ পিতৃদেবার্চ্চনে রতঃ। হয়মেধ মবাপোতি শক্তলোকঞ্চ গচ্চতি॥ ১৫৩॥ তাম্রারুণ সমাসাদ্য কূপং দেবনিষেবিতম্। नत्राधिष यश्युनाः जनात्याजि नत्राधिय ! । ১৫৪॥ কালিকাসঙ্গমে স্বাস্থা কৌশিক্যারুণয়ে গভঃ। ত্রিরাত্রোপোষিতো বিদ্বান্ দর্বপোপেঃ প্রমুচ্যতে ॥ ১৫৫॥ উর্বাশীতীর্থ মাসাদ্য তথা সোমশ্রমং বুধঃ। কুন্তকর্ণাশ্রমে স্নাত্মা পূজিতে ভুবি মানবং ॥ ১৫৬॥ কোকামুথ মুপস্পৃশ্য ব্রহ্মচারী যত্রতঃ। জাতিমারত্ব মাপোতি দৃষ্টমেতৎ পুরাতনৈঃ॥ ১৫৭॥ প্রাপ্তনদীঞ্ব সমাসাদ্য * ক্লতাত্মা ভবতি দিজঃ। স্ক্পাপবিশুদ্ধাত্মা শক্রলোকঞ্চ গছতি ॥ ১৫৮॥ ঋষভদ্বাপ মাসাদ্য সব্যং ক্রোঞ্জ.নমুদনম্। সরস্বত্যাসুপস্পৃত্য বিমানস্থো বিরাজতে ॥ ১৫৯ ॥ अकालकः महाताक । **ठौर्थ~ मुनिनि**र्घाविठम् । তত্রাভিষেকং কৃত্বা বৈ সক্ষপাপেঃ প্রযুচ্যতে ॥ ১৬০॥ धर्म जीर्थ - गमामामा श्रुगाः जन्मिर्माव जम्। বাজপের মবাপোতি বিমানস্থশ্চ পূজ্যতে॥ ১৬১॥

ዘንማን ዘ ዘንወን ዘንወን ዘንወን ዘንወ8 ዘንወወ ዘንውን ዘንወዓ ዘንቱን ዘንወን ዘንወን ዘ

^{*} সক্রন্দাং সমাসাদ্য ইতি ক-ঘ পুস্তকৌ।

অথ চম্পাৎ সমাসাদ্য ভাগীরথ্যং ক্লভোদকঃ।

* দণ্ডার্পন্থ সমাসাদ্য গোহসত্রকলং লভেৎ॥ ১৬২॥

(ললীতিকাং ততো গচ্ছেৎ পুন্যাং পুন্যোপশোভিতাম।
রাজস্থ্য মবাপ্নেতি বিমানস্থশ্চ পুজাতে) †॥ ১৬৩॥

ইত্যারন্যকে পর্বনি তার্থযাত্রাপর্বনি নানাতার্থকথনে
চতুরশীতিত্যোহ্যায়ঃ॥ ৮৪॥

পুলব্দ্য উরাচ।

অথ সন্ধ্যাৎ সমাসাদ্য সংবেদাং তীর্থমুপ্তমম্।
উপস্পূদ্য নরো বিদ্যাং লভতে নাত্র সংশয়ঃ॥ ১॥
রামস্য চ প্রভাবেন তীর্থং রাজন্! ক্বতং পুরা।
তলৌহিত্যং সমাসাদ্য বিন্দ্যাদ্যমুবর্ণকম্॥ ২॥
করতোয়াং সমাসাদ্য ত্রিরাত্রোপোষিতো নরঃ।
অশ্বমেধ মবাপোতি প্রজাপতিক্তো বিধিঃ॥ ৩॥
গঙ্গায়াস্ত্রথ রাজেন্দ্র! সাগরস্য চ সঙ্গমে।
অশ্বমেধং দশগুন্ৎ প্রবদন্তি মনীষিণঃ॥ ৪॥
গঙ্গায়াস্ত্রপরং পারং প্রাপ্য যঃ স্নাতি মানবঃ।
ত্রেরাত্র মুষিতো রাজন্! সর্ব্বপাপেঃ প্রমুচ্যতে॥ ৫॥

1 502 1 500 1

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে চতু দুশীতি তমোহধায়ঃ॥ ৮৪॥

व्यर्थाउ—॥ ३॥ २॥ ०॥ ८॥

* দণ্ডার্ডমভি গড়াডু ইতি ঘ ক পুস্তকো।

† এবঃ শ্লোকঃ ক পুস্তকেহধিকঃ, ঘ পুস্তকেচ।

ততো বৈতরণীং গচ্ছেৎ সর্ববিপাপপ্রমোচনীয়। বিরন্ধ তীর্থ মাসাদ্য বিরাজতি যথা শ্লী॥ ७॥ প্রতরেচ্চ কুলং পুণ্যং সর্ব্বপাপং বাপে।ছতি। গোসহত্রফলৎ লক্ষা পুনাতি স্বকুলং নরঃ॥ ৭॥ শোণস্জ্যাতীর্থ্যাশ্চ সঙ্গমে নিব্সন্শুচিং। তর্পরিত্বা পিতৃন্ দেবানগ্নিষ্টোমফলং লভেং॥৮॥ (भाष्त्रा नर्मावाशान्त প्रचरि कुक्रनन्तन !। বংশগুলা উপস্পূশ্য বাজিমেধফলং লভেৎ । ১॥ ঝাষভ তীর্থ মাসান্য কোশলারাং নরাধিপ !। বাজপেয় মবাপ্নোতি ত্রিরাত্রোপোষিতো নরঃ॥ ১০॥ (ता मह्य कनः विन्ता ९ कून क्षिव म्यूक्ट तर्) * । কোশলান্ত সমাসাদা কালতীর্থনুপস্পৃশেৎ॥ ১১॥ রুষ্টেকাদশফল প্লভতে নাত্র সংশ্রঃ। পুষ্পবত্যা মুপস্পৃশ্য ত্রিরাত্রোপোষিতো নরঃ॥ ১২॥ গোসহস্রফল শক্ষ্যা পুন।তি স্বকুল নৃপ !। ততো বদরিকাতীর্থে স্কাত্বা ভরতসন্তম । ॥ ১৩॥ দীর্ঘমায়ু রবান্নোতি স্বর্গলোকঞ্চ গচ্ছতি। তথা চম্পাং সমাসাদ্য ভাগীরখ্যাং ক্লতোদকঃ ॥ ১৪॥ দণ্ডাখ্য মভিগমৈাব গোদহস্রফলং লভেৎ। লপেটিকা~ ততো গচ্ছেৎ পুণ্যাং পুণ্যোপশোভিতাম্। ১৫॥ বাজপেয় মবাপ্নোতি দেবৈঃ সর্বৈশ্চ পূজ্যতে। ততো মহেকু মাসাদ্য জামদগ্য-নিষেবিতম্॥ ১৬ ॥

^{*} নান্ত্যেতদৰ্ধং ক-পুস্তকে।

রামতীর্থে নরঃ স্নাত্মে অশ্বমেধফলং লভেং। মতঙ্গদা তু কেদারস্ত তৈব কুরুনন্দন। ॥ ১৭॥ তত্র স্বাকুরুশ্রেষ্ঠ। গোসহস্রফল পলভেৎ। শ্রীপঝতং সমাসাদ্য নদীতীর উপস্পু:শৎ ॥ ১৮॥ অশ্যেধ মবালোতি পূজয়িত্বা বৃষধজন্। শ্রীপর্বতে মহাদেবো দেব্যা সহ মহাত্রুতিঃ॥ ১৯॥ ন্যবসন্ পরম প্রীতো ব্রহ্মা চ ত্রিদলৈঃ সহ। তত্র দেবহুদে স্বাস্থা শুচিঃ প্রয়তমানসঃ॥ ২০॥ অশ্বনেধ মবাপ্রোতি পরাৎ সিদ্ধিঞ্চ গচ্ছতি। ঋষভং পর্বতে গত্ব। পাত্তে যু স্কুরপূজিতম্। বাজপেয় মবাপুেতি নাকপৃষ্ঠে চ মোদতে॥ ২১॥ ততো গচ্ছেত কাবেরীং রতামপারসাপ গণৈঃ তত্র স্বাস্থ্যে নরো রাজন্। গোসহস্রফলং লভেৎ॥২২॥ ততন্ত্রীরে সমুদ্রস্য কন্যাতীর্থ মুপম্পুন্শেং। তত্ত্রে।পস্পৃশ্য রাজেক্র ! সর্বাপাপেঃ প্রমুচাতে ॥ ২৩ ॥ অথ গোকর্ মাসাদ্য তিষু লোকেষু বিশ্রুতম্। সমুদ্রমধ্যে রাজেন্দ্র। সকলেকেনমস্কৃত্যু। ২৪ ॥ যত্র ব্রহ্মদেয়ো দেবা ঋষয়শ্চ তপেধিনঃ। ভূত্যক্রপিশাচাশ্চ কিল্বাঃ সমহেরেগাঃ ॥ ২৫॥ সিদ্ধচারণগন্ধবা মানুষাঃ পরগাস্তথা। সারিতঃ সাগরাঃ শৈলা উপাসন্ত উমাপতিম্॥ ২৬॥ তত্তেশান সমভার্চ্চ। ত্রেরাত্রোপোষিতো নরঃ। 'অশ্বমেধ মবাপুে।তি গাণপত্যঞ্চ বিক্ষতি ॥ ২৭ ॥

11 24 11 24 11 29 11 40 11 42 11 42 11 48 11 44 11 49 11 49 11

উষা দ্বাদ**শ**াত্রস্ত পুতা**ত্মা চ ভবেন্ন**রঃ। তত এব চ গায়ত্র্যাঃ স্থানং তৈলোক্যপূজিতম্ ॥ ২৮॥ ত্রিবাত মুবিতস্তত্র গোসহস্রফলং লভেৎ। নিদর্শনঞ্চ প্রত্যক্ষণ ব্রাক্ষানাং নরাধিপ !॥ ২৯ ॥ গায়ত্রীং পঠতে যস্ত যোনিসঙ্করজস্তথা। গাথা চ গীতিকা চাপি তস্য সম্পদ্যতে নূপ।॥ ৩০॥ ষ্মবান্ধণস্য সাবিত্রাং পঠ হস্ত প্রণশ্যাত। সম্বৰ্ত্তিস্থা তু বিপ্ৰৱে বিশিষ্টা সামাদ্য তুল ভাষ্ ॥ ৩১॥ ৰূপদ্য ভাগী ভবতি স্থ ভগশ্চ প্ৰজায়তে। ততো বেল্লাং সমাসাদ্য তর্পয়েৎ পিতৃদেবতৃাঃ ॥ ৩২॥ ময়ূর হংস-সংযুক্তং বিমানং লভতে নরঃ। ততো গোদাররীং প্রাপ্য নিত্যুৎ সিদ্ধনিষেবিতামু । ৩৩। গবাপ্নেধ মকাপুোতি বাস্থকে লেকি মুক্তমম্ *। বেপ্লায়। সঙ্গমে স্বাস্থা বাজপেয়কলং লভেৎ॥ ৩৪॥ ব্রদাসঙ্গমে স্বাত্বা গোসহস্রফলং লভেৎ। া ব্রহ্মস্থানং সমাসাদ্য তিরাত্রমুবিতো নরঃ॥ ৩৫॥ গোসহত্রফলং বিন্দ্যাৎ স্বর্গলোকঞ্চ গঙ্ঘতি! কুশপ্লবন মাসাদ্য ত্রন্ধাচারী সমাহিত। । ৩৬॥ ॥ ২৮ ॥ নিদর্শনং উদাহরণমূ ॥ ২৯ ॥ তদেবাহ—গায়তা মিতি । যো যোন महत्रकः म एउँ व गात्रवीर পচত তमा ममाक् পচতোপি তীর্থ মাহা-জা। পা গায়তা গাথ। সর নিয়ম হীন। গণাবনুখা নিঃসরতি, গাথিকা আমা গীতবং স্বরবর্ণ বিক্তা, গীতি কেতি পাঠে—স এবার্থঃ। ৩০॥ অব্ৰান্ধনস্তু প্ৰাক্ সিদ্ধাপে তত্ৰ নম্ফুরতীতি ভাবঃ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ 1 08 1 00 1 00 1

 ^{* &#}x27;' গ্রাময় ম্বাপ্রোতি বায়ুলোক গু গছতি " ইত্যেবং ক—য় পুশুকে
চ '' গ্রাময় ম্বাপ্রোতি বায়কে লে কি মুক্ত বৃ" ইতিপঠ্যতে।

† বৃধস্থামি তি ক-শুপুকঃ।

ত্রির ত্রমূষিতঃ স্নাত্মা অশ্বমেধফলং লভেৎ। **उटैं । (मिर्वे क्रिक्ट विश्व क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक** জ।তিম্মরহ্রদে * ক্লাত্বা ভবেজ্জাতিম্মরো নরঃ। যত্র ক্রন্সটত রিষ্ট্রা দেবরাজো দিবং গভঃ॥ ৩৮॥ অগ্নিষ্টোমশতং বিন্দ্যাৎ গমনাদেব ভারত। । সর্বদেবহুদে স্বাত্বা গোসহস্রফলং লভেং 🕆 ॥ ১৯ ॥ ততো বাগী~ মহাপুণ্যাং পয়েষ্টোং সরিতাম্বরাম্। পিতৃদেবার্চ্চনরতে। গোসহ স্রফলং লভেৎ ॥ ৪০ ॥ দপুকারণ্য মাসাদ্য পুণাং রাজন্যস্পাদেও। গোসহস্কলং তদ্য স্নাত্মাত্রদ্য ভারত।॥ ৪১ ॥ শরভঙ্গ শ্রেমং গত্না শুক্স্য চ মহাত্মনঃ। ন তুর্গতি মবাপুোতি পুনাতি চ কুল । বরঃ॥ ৪২॥ ততঃ শূর্পারকং গচ্ছেজ্জামদ্ম্যানিষেবিতম্। রামতীর্থে নরঃ স্নাত্ম বিন্যাৎ বছস্থবর্ণকম্ ॥ ৪৩॥ সপ্তগোদ।বরে স্থাত্বা নিয়তে । নিয়ত।শনঃ। মহৎ পুণ্য মবাপ্লোতি দেবলোকঞ্চ গচ্ছতি॥ ৪৪॥ ততো দেবপদ্শ গত্বা নিয়তো নিয়তাশনঃ। দেবসত্রস্য যৎ পুনাং ভদবাপোতি মানবঃ ॥ ৪৫॥ তুঙ্গকারণ্য মাসাদ্য ব্রহ্মচারী জিতেক্রিয়ঃ। বেদানধ্যাপয়ক্তক মুনীন্ সারস্বতঃ পুরা ॥ ৪৬ ॥

^{* &}quot;জ্যোতির্মাত্র হ্রদে " হতি ক—"জ্যাতিম্মরহ্রদে চৈব তথা কন্যা-অ্মে নৃপ ! " ইতঃপি ঘঃ—

[🕈] লভেদিতানন্তরং পূর্ব্বোক্তজাতিশরেতার্দ্ধ শ্লোকঃ ক-পুস্তকে দৃশ্যতে।

তত্র বেদেষু নফেষু মুনে রাঞ্চরসঃ স্থতঃ। श्ववीना बुख ही दश्यू स्वितिको यथा स्था । 81 I ওঁ কারেণ যথান্যায় সম্যগুচ্চারিতেন হ। ষেন যং পূর্বে মভ্যন্ত তৎ সর্বাং সমুপন্থিতম্ ॥ ১৮॥ খবয়ন্তত্ত দেবাশ্চ বরুণোহয়িঃ প্রজাপতিঃ। হরি নারায়ণ স্তত্ত মহাদেবস্ত থৈব চ ॥ ৪৯ ॥ পিতামহশ্চ ভগবান দেবৈঃ সহ মহাত্রাতিঃ। ভৃগুং নিষোজয়ামাস যাজনার্থং মহাত্যুতিঃ । ৫০ ॥ ততঃ স চক্রে ভগব নৃষীণাং বিধিবস্তদা। সর্বেষাং পুনরাধ্যানং বিধিদ্ধটেন কর্মা। । ৫১। আজ্যভাগেন ততাগ্নি, তপ্রিদ্বা যথাবিধি। (मर्वाः श्रुख्यनः योजा श्रावश्रम्ह यथा क्रिम् ॥ ৫२ ॥ তদরণ্যং প্রবিষ্টস্য তৃঙ্গকং রাজ্বসন্তম !। পাপং প্রণশ্যত্যখিলং স্ত্রিয়ো বা পুরুষস্য বা 🖞 ৫০ 🛭 তত্র মাসং বদেদ্ধীরো নিয়তো নিয়ত।শনঃ। उक्तरलोकः उष्डिकाजन् ! कुलरेक्षव मयूक्तदः ॥ ৫৪ ॥ (मधाविकः ममामान्य शिक्न (नवा ** कर्लरहर । অগ্নিষ্টোম সবাপোতি স্মৃতি মধাঞ্চ বিলতি। ৫৫। অত্র কালপ্রয়ো নাম পর্বতো লোকবিশ্রুতঃ; তত্র দেবত্রদে স্কান্থা গোসহস্রফ নং লভেৎ। ৫৬। যঃ স্নাত ন্তর্পয়েক্তর গিরে) কালঞ্চরে নূপ।। স্বৰ্গলোকে মহীয়েত নরো নাস্ত্যত্র সংশয়ঃ॥ ৫৭ ॥ ততো গিরিবরশ্রেষ্ঠে চিত্রকৃটে বিশাম্পতে!। मन्तिनीः नमानामा नर्वभाभयनामिनीम् ॥ ए७ ॥

¢8

189 187 183 1 40 1 43 11 43 11 43 11 48 11 44 11

তত্রভিষেকং কুর্বানঃ পিতৃদেবার্চনে রতঃ। অশ্বমেধ মবাপ্নোতি গতিঞ্চ পরমাণ ব্রজেৎ। ৫৯॥ ততো গচ্ছেত ধর্মজ্ঞ। ভত্'স্থান মনুত্তমম্। যত্র নিত্যং মহাসেনো গুহঃ সরিহিতো ৰূপ !॥ ৬॰॥ তত্র গত্বা নৃপশ্রেষ্ঠ। গমনাদেব দিধাতি। কোটিতীর্থে নরঃ স্কাত্তা গোসহস্রফলং লভেৎ। ৬১॥ প্রদক্ষিণ মুপার্ত্য জ্যেষ্ঠস্থ নং ব্রজেন্নরঃ। অভিগম্য মহাদেবং বিরাজতি যথা শশী॥ ৬২॥ তত কুপো মহারাজ। বিশ্রুতো ভরতর্ষভ।। সমুদ্রা যত্র চত্বারো নিবসন্তি যুর্বিষ্ঠির । ॥ ৬০॥ তত্ত্রোপস্পারাজেন্দ্র। পিতৃদেবার্চ্চনে রভঃ। নিয়ত। আমানরঃ পূতো গচ্ছেত পরমান গতিম্॥ ৬৪॥ ততো গচ্ছেত রাজেন্দ্র ! শৃঙ্গবেরপুর্ং মহং। যত্র তীর্ণো মহারাজ। রামো দাশর্থিঃ পুরা॥ ৬৫। তিমিংস্তার্থে মহাবাহো। স্নাস্থা পাবৈঃ প্রমুদ্যতে। পঙ্গায়।ন্ত নরঃ স্নাত্মা ব্রহ্মচারী সমাহিতঃ ॥ ৬৬॥ বিধূতপাপ্যা ভবতি বাজপেয়ঞ্ বিন্দতি। ততো মুঞ্জবটং গচ্ছেৎ স্থানং দেবদা ধীমতঃ ; ৬৭॥ অভিগম্য মহাদেব মভিবাদ্য চ ভারত!। প্রদক্ষিণ মুপার্ত্য গাণপত্য মবাপ্নুয়াৎ॥ ৬৮॥ তশ্মি স্টীর্থেতু জাহুব্যাং স্কান্থা পাপেঃ প্রমূচ্যতে। ততো গচ্ছেত রাজেক্র। প্রয়াগ মৃষিদংস্কুতম্॥ ৬৯। .যত্র ব্রহ্মাদয়ো দেবা দিশশ্চ সদিগীশ্বরাঃ। লোকপালাশ্চ সাধ্যাশ্চ পিতরো লোকসম্মতাঃ॥ ৭०॥

] ७० | ७२ | ७२ | ७० | ७८ | ७८ **| ७७ |** ७१ | ७४ | ७७ | १०

সনৎকুমারপ্রমুখ। স্তথৈব পরম্ধাঃ। ष्यक्रितः श्रमुश्राटेन्ट्य उथा उक्कर्षरहार्श्वरत ॥ १३ ॥ তথা নাগাঃ স্থপর্নাশ্চ সিদ্ধাশ্চক্রচরাস্তথা*। সরিতঃ সাগরাকৈত গন্ধর্ম।প্রসেহিপি চ। ৭২। হরিশ্চ ভগবানান্তে প্রজাপতিপুরস্কৃতঃ। তত্ৰ ত্ৰীণাগ্নিকুণ্ডানি ভেষাং মধ্যেন জাহুবী ॥ ৭ ৩ ॥ বেগেন সমতিক্রান্তা সর্বাতীর্যপুরস্কৃতা। তপনস্য স্থতা দেবী ত্রিষু লোকেষু বিশ্রুতা॥ ৭৪॥ যমুনা গঙ্গয়া সার্দ্ধি সঞ্চতা লোকপাবনী। গঙ্গাযমুনয়ে। র্মধ্যে পৃথিব্যা জঘনং স্মৃত্যু। ৭৫॥ প্রয়াগং জঘনস্থান মুপস্থ মৃষয়ো বিছঃ। প্রয়াগণ সপ্রতিষ্ঠানং কম্বলাম্বতরৌ তথা : ৭৬ ৷ তীর্থং ভোগবর্তী চৈব বেদিরেষা প্রজাপতেঃ। তত্র বেদাশ্চ যজ্ঞাশ্চ মূর্ত্তিনন্তো যুধিষ্ঠির ! ॥ ৭৭ ॥ প্রজাপতি মুপাসন্তে ঋষয়শ্চ তপোধনাঃ। যজন্তে ক্রেভির্দেবা স্তথা চক্রধরা নূপাং॥ ৭৮॥ ততঃ পুণ্যতমং নাম ত্রিষু লোকেষু ভারত!। প্রায়াগং সর্বার্ডার্থে ভাঃ প্রবদন্তাধিকং প্রভো 📲 ৭৯ ॥

॥ ৭১॥ চক্রচরাঃ স্থাদ্যঃ ॥ ৭২॥ ৭৩॥ ৭৪॥ পদাস্বরা রিতি—জী রূপায়ঃ পৃথিবা। মেৰুপৃষ্ঠ শীর্ষায়া হরি দারা দারভা জঘনং নাতে রধো-ভাগঃ॥ ৭৫॥ জঘনসা স্থান মবস্থান সমাপ্তি রম্ম ইতি যাবৎ, তদেবো শস্থং, ভথাত পৃথিবা। অপত্যভূতানি তার্থানি তংফল ভূতাঃ স্থানত ভানে সর্বাণিঃ প্রয়াগাদ্ধ প্রানীতি প্রয়াগস্য তীর্থ রাজ্য মুক্তা। ৭৬॥ ৭৭॥ ॥ ৭৮॥ ৭৯॥

^{*} চক্ষরা ইতি কঃ-

শ গমনান্তন্য তীর্থন্য নামসংকীর্ত্তন্দি।
মূলুকালভয়াচ্চাপি সর্বাপাপৈঃ প্রমূচ্যতে । ৮০॥
ভক্তাভিষেকং যঃ কুর্যাৎ সঙ্গমে লোকবি ক্রতে।
পুণ্যং সকল মাগোভি রাজস্থ্যাস্থ্যেধয়োঃ॥৮১॥
এযা যজনভূমি (দিবানামপি সংক্রতা।
দত্তং তত্র স্থপম্পি মহন্তবিভ ভারত।॥৮২॥

॥ ४०॥ ४३॥ ४२॥ न (तम तहना मिन्डि— लिएटक (तम तिक्षामा एठ मतना-স্যাপ বাদেশ্যয়ং অছিংসা বিধেরিক পথালস্ত বিধি রিডি প্রাঞ্চঃ, বস্তুতস্ত বারাণসী মরণবৎ যাদুচ্ছিক মরণ বিষয় এবাহয়ং প্রাস্থে ন হঠ মরণ প্রতি-পাদকঃ, " সিতা সিতে সারিতে যক্ত সংগতে তত্রাপ্লতা সৌ দিবমুৎ-পতন্তি যে বৈ তমুঁ বিসুজন্তি ধীরান্তে জনাদো অমৃতত্বং ভজন্তে ব্ৰশ্বজ্ঞানেন মুচ্যন্তে প্রয়াগ মরণেন বা"—ইত্যাদি প্রত্য়ঃ স্ত্রণ তাদৃশাএব হঠ মরণে "জলে বাপি ছলে বাপি শক্তেণোদ্বগ্য বা পুনঃ। নরকংতে প্রয়ান্ত্রান্ত আত্মানং খাতরন্তি যে ।" ইতি দোষ শরণাং, নচালোগ বাদঃ প্রয়াগ মরণ বিধি রিভি বাচাই তদা হঠ মরণতা দিছেঃ; দিছে বা অচিকিৎস্য রোগাদি দেখিতে ছগু পতনাদিনাপি মরণে প্রাপ্তেপি প্রাগমরণ নিয়ম বিধি র্যং ভ ব্যাতি, নচ কাম্যেইয়ং মরণ বিধি নিতাস্য মরণ নিষেধবিধে বাধকঃ, কামাজ্বাল নায় মুল্লজ্জনে প্রত্যবায়া বহ ইতি বাচ,ং উক্তেইর্থে বাধকাভাৱেইপি বাক্যম্য হঠ মরণ পরত্ব মপু-ক্রিধার্থ ক্ষ কপারতো গৌরবা পত্তেঃ, অভাপগ্রেম বানেন ত্রান্দ্রবাত-রিক্ত বিষয় এনাহং বিধিঃ, "ভ্যাদিপতন মরণ মন্যত্ত বাদাণাৎ" ইতি স্মৃতেঃ, যুক্তন্ত শুদ্ধ শৰল বন্ধ জ্ঞানহোৱেৰ কাশীপ্ৰহাগ মুরণয়েঃ সন্যোঃ মুক্তিক্ৰম মুক্তি পরত্বং, তথাছি তীর্থ মহাত্মোপসংহারে "যত্ত গঞ্চা মহারাজ। সদেশন্তভপোৰমন্। সিন্ধি কেত্ৰঞ্বিজ্ঞাং গ্ৰাভীর সমাজিত। । ইতি গদায়ান্ত দাঞ্জিতস্য সিদ্ধি ক্ষেত্ৰসাচ বিজেয়ভোক্তা ভয়োৱেব মহন্তরভুং দৰ্শিত্য, তত্ত্ব যুষ্কা সংগতারাএর গ্রানা অত গ্রহাং প্রাণ প্রশংসা-ধিক্রাং, " প্রতিষ্ঠানে প্রতিষ্ঠিত। তীর্থগাতা"—ইন্থাপসংহারাক্ত, প্রতি-ষ্ঠানে প্রয়াগে, নিক্সিক্ষেত্র পদেন বারাণস্যেত, সিক্ষিশক্ষ্যা নিকপপদস্য মুক্তি বাচিত্বাং কাশ্যাশ্চ মুক্তিক্ষেত্র প্রাসিকেঃ, তদেবং অধ্যার চতুষ্ট-

^{*} অব্ধাদিতি কঃ—
" হ ত্তিকালভনা দ্বাপি সর্ব্বপাধিশ প্রমুচ্যতে" ইতি ক—দ্বপুস্তকৌ।

ন বেদ্বচনাত্ত। ন লে।ক-বচনাদপি। মতি রুৎক্রমণীয়া তে প্রয়াগমরণ প্রতি॥৮৩॥ দশ তীর্থসহস্রাণি ষ্টিকোট্যস্তথা পরাঃ। সেষা সালিধ্য মত্রৈব কীর্ত্তিত কুরুনন্দন ! । ৮৪॥ চাভুর্বিদ্যে চ যং পুণ্যং সত্যবাদিষু চৈব যং। স্নাত এব তদাপোতি গঙ্গাযযুন ক্ষমে ॥ ৮৫॥ তত্র ভোগবতী নাম বাস্থকে স্তীর্থমুক্তমম্ । ততा ভिरেषकः यः कूर्या । (मार्यत्मथकनः नटा । ৮७ ॥ তত্ত্ব হ**্স প্র**পতনং তীর্থং তৈলোক্যবিশ্রুতম্। দশাশ্বমধিক প্রৈব গঙ্গ রাং কুরু নন্দ ন ! ॥ ৮१ ॥ কুরুক্তেত্রসমা গঙ্গা যত্র তত্রাবগাহিতা। বিশেষো বৈ কনথলে প্রয়াগে পরম সহং॥ ৮৮॥ যদ্যকার্য:শতং কুত্বা কুতং গঙ্গাবদেচনম। সর্বং তত্ত্রসা গঙ্গায়ো দহত্যাগ্রিবেক্সনম্॥ ৮৯॥ সর্বাং কুত্রুরে পুণা তেতায়া পুষ্ণুরং স্থৃত্য । দাপরে তু কুরুক্ষেত্রং গঙ্গা কলিযুগে স্মৃতা। ৯০। পুষ্ণরে তু তপস্তপ্যেদানং দদ্যান্মহালয়ে। मलरत विधिमारतार्ह्सु ७ जुरक्रवनामनम् ॥ ৯১॥ পুষ্ণরে তু কুরুকেত্তে গঙ্গারা । মধামেষু চ। স্বাত্বা তার্য়তে জন্তঃ মপ্তাবরাংস্তথা। ৯২।

রেপি ভদ্যত্রেণ সাক্ষারা কাশীক র্তনাণ উক্ত বিধোপ সংহারাচ্চ প্রক্ষর গদ্ধাপ্রাগাদীনাং সেবনং কাশী প্লাপ্তি কর মিতি, "অন্যানিচ পবিজ্ঞাণি কাশী প্রাপ্তি করাণিছি। কাশীং প্রাপ্য বিমৃচ্যত্তে নান্যথা কম্প কৌটিভিঃ।"—ইত্যাদি পূর্ব্বোদাক্ষত প্রাণান্তর সম্বাদেন সিদ্ধন্ ॥ ৮৩ ॥ ৮৪ ॥ চতুবি দ্যে—চতুপ্রো বিদ্যা বেদত্তরং আত্ম বিদ্যাচেতি বিদ্যাহেহ স্মিন্ সচতুবি দ্য শুমিন্॥ ৮৫ ॥ ৮৬ ॥ ৮৮ ॥ ৮৯ ॥ ৯০ ॥ ৯১ ॥ ৯২ ॥

পুন:তি কীর্ত্তিতা পাপং দৃষ্টা ভদ্রং প্রয়ছতি। অবগাঢ়া চ পীতা চ পুনাত্যাদসগুমং কুলম্॥ ৯৩॥ যাবদস্থি ম সুষ্যস্য গঙ্গায়াঃ স্পৃশতে জলমু । তাবং স পুরুষো রাজন্। স্বর্গলোকে মহীয়তে ॥ ১৪॥ যথা পুণ্যানি ভীর্থানি পুণ্যান্যায়তনানি চ। উপাস্য পুণ্যং লক্ষা চ ভবতামরলোকভাক্। ৯৫। ন গঙ্গাসদৃশং তীর্থং ন দেবঃ কেশবাৎ পরঃ। ব্রাহ্মণেভ্যঃ পর্ণ নাস্তি এবমাছ পিতামহঃ ॥ ৯৬ ॥ যত্র গঙ্গা মহারজে ! স দেশস্তত্তপোবনম্। দিভিক্ষেত্রপ্ত ভজভেরং গঙ্গাতীরসমাঞ্ছিতম। ৯৭॥ ইদ্ সভাং দ্বিজাতীনা সাধুনামাত্মজন্য চ। স্থহদাঞ্চ জপেৎ কর্ণে শিব্যস্যান্ত্রগতস্য চ ॥ ৯৮ ॥ ইদং ধন্য মিদং মেধ্য মিদং স্থৰ্গ্য মন্ত্ৰমম। ইদ্রুপুণ্য মিদ্র রম্যুক্ত পাবনং ধর্ম্ম যুক্তমম । ১৯ ॥ । মহর্ষীণ। মিদ শুহুং সর্বপাপপ্রমোচনমু। অধীত্য দ্বিজনধাে চ নির্মালঃ শ্বর্গ মাপুরাং॥ ১০০॥ এমিৎ স্বর্গাং তথা পুরাণ সপত্রশমন শিবম্। মেধাজনন মগ্রাং বৈ তীর্থবিশানুকীর্জনম্॥ ১০১॥ অপুজো লভতে পুত্র মধনো ধনমাপ্রয়াৎ। মহী প বিজয়তে রাজা বৈশ্যোধনমবাপুরাৎ। ১০২। শ্বে। যথেপ্দিতান কামান্ ব্রাহ্মণঃ পরেগঃ পঠন্। য়ন্দেদং শৃণুয়ান্নিতা তীর্থপুণ্য নরঃ শুচিঃ ॥ ১০৩॥ জাতীঃ স স্মরতে বহুবী নাকপৃষ্ঠে চ মোদতে। গম্যান্যপি চ তীর্থাণি কীর্ত্তিতীন্যগমানি চ ॥ ১০৪ ॥ 11 00 C 11 50 C 11 00 C 11, GG || VG || PG || VG || DG || BG || VG || অগমানি অগম্যানি॥ ১০৪॥

be वश

মনসা তানি গচ্ছেত সৰ্ববিতীৰ্থসমীক্ষয়া। এতানি বস্তুভিঃ সাধ্যৈ রাদিতৈয় শ্মরুদশ্বিভিঃ। ১০৫॥ ঋষিভি দেবকলৈপশ্চ স্নাতানি স্বক্নতৈষিভিঃ। এবং ত্বমপি কৌরবা ! বিধিনানেন স্থত্ত । ॥ ১০৩॥ ব্ৰজ তীৰ্থানি নিয়তঃ পুণাং পুণ্যেন বৰ্দ্ধয়ন্। ভাবিতৈঃ করণৈঃ পূর্বে মাস্তিক্যাচ্ছুতিদর্শনাৎ ॥ ২০৭॥ প্রাপ্যন্তে তানি ভীর্থানি সন্তিঃ শাস্ত্রামুদর্শিভিঃ। নাব্রতী নাকুভাত্মা চনাশুচি র্ন চতক্ষরঃ॥ ১০৮॥ স্নাতি তীর্থেষু কৌরব্য । ন চ বক্রমতি র্বরঃ। ত্বয়া তু সম্যুগরুত্তেন নিত্যং ধর্মার্থদর্শিনা ॥ ১০৯॥ পিতা পিতামহশৈচৰ দৰ্বেচ প্ৰপিতামহাঃ। পিতামহপুরোগাশ্চ দেবাঃ সর্ধিগণা নূপ।॥ ১১०॥ ত্র ধর্ম্মেণ ধর্মজ্ঞ ! নিত্যমেবাভিত্যেষিতাঃ। অবাপ্দাদি বৃৎ লোকান্ বৈ বস্থনাং বাসবোপম!। কীৰ্ত্তিঞ্চ মহতী তীয় । প্রাপ্সাদে ভূবি শাশ্বতীম্ ''—॥ ১১১॥ नात्रम छेनाह।

্এব মুক্তাভ্যনুজ্ঞায় পুলস্ত্যো ভগবানৃষিঃ। প্রীতঃ প্রাতেন মনদা তাত্রেবান্তরধীয়ত ॥ ১১২ ॥ ভীয়াশ্চ কুরুশাদিল। শাস্ত্রতত্ত্বার্থদর্শিবান্। পুলস্ত্যবচনাটেজব পৃথিবীং পরিচক্রমে॥ ১১৩॥ এবমেষা মহাভাগ। প্রতিষ্ঠানে প্রতিষ্ঠিতা। তীর্থযাত্রা মহাপুণ্যা সর্ববিপাপপ্রমোচনী॥ ১১৪॥

मधीकश मर्गातन्ह्या । ১०৫ ॥ ১०७ ॥ जानि जिः शक्तः, कर्राः हेस्तितः ॥ ১০৭॥ অকৃতাত্মা অবশীকৃত চিত্তঃ॥ ১০৮ ॥ ১০৯ ॥ ১১০॥ ১১১॥ ১১২॥ ॥ ১১৩॥ প্রতিষ্ঠানে প্রয়াগে, প্রতিষ্ঠিত। সমাপ্তা॥ ১১৪॥

অনেন বিধিনা যস্তু পৃথিবীং পর্যাটিষ্যতি। অপুনেধশতস্যা∕প্রা∾ ফল∾ প্রেত্য স ভে†ক্যাতে ॥ ১১৫ ॥ ত তশ্চ ফিগুৰং পাৰ্থ! প্ৰাণ্দ্যদে ধৰ্মমুভ্ৰমম্। ভীয়াঃ কুৰাণাং প্ৰবরো যথা পূৰ্বে মবাপ্তবান্ ॥ ১১৬॥ নেতাচ অ মৃধীন ৰশাত্তেন তেইউগুৰং কলম্। রক্ষোগণবিকীর্ণানি তীর্থান্যেতানি ভারত।। ন গতি বিষয়তেহনাসা ত্বা মৃতে কুরুনন্দন।। ১১৭॥ इतश्टामवर्षि-हतिखंश मर्वाखीर्थ। जिमश्रुखम्। ষঃ পঠেৎ কল্য মুপ্ত।য় সর্ব্বপাপেঃ প্রমুচাতে ॥ ১১৮॥ ঋষিমুখ্যাঃ সদা যত্ৰ ব নীকিন্তুথ ক শ্যপঃ। আত্রেয়ং কুগুদ্ধস্ঠারো বিশ্বামিত্রোহ্থ গৌতমং॥ ১১৯॥ অসিতো দেবলকৈব মার্কণ্ডেয়োহখ গালবঃ। ভরম্বাজো বশিষ্ঠশ্চ মুনিরুদ্ধালকস্তথা ॥ ২২০ ॥ শৌনকঃ সহ পুজেণ ব্যাসশ্চ তপতাম্বরঃ ! তুর্ব্বাসাশ্চ মুনিশ্রেঠো জাবালিশ্চ মহাতপাঃ॥ ১২১॥ এতে ঋষিবরাঃ সর্বের স্বৎপ্রতীক্ষাস্তপোধনাঃ। এভিঃ সহ মহারাজ। তীর্থান্যেতান্যনুত্রজ। ১২২॥ এষ তে লোমশো নাম মহর্ষি রমিতছাতিঃ। সমেধাতি মহারাজ ! তেন সার্দ্ধ মনুব্রজ—॥ ১২৩॥

অখ্যেধেতি—অগ্রাং ফলং ক্রমমুক্তিস্থানন, " উষা বা অখ্সা শিবঃ"—
ইত্যাদিভাতেঃ সোপাসনসাথে মেধনা তৎপ্রাপকতার নমাৎ, নামানা ফলন্ত
ঐক্তুপদ প্রাপ্তি রিতি প্রসিদ্ধন্ ॥ ১১৫॥ অন্তঞ্গং অণিমাদান্ত র্ত্তীণ
ইক্তন্, ধর্মং ধর্মফলন্॥ ১১৬॥ হেতুমাহ—নেতাচেতি। গুণফলেন তুলা
ফলতাৎ েতু রনত্ফল মিতার্থঃ ॥ ১১৭ ॥ ১১৮॥ ১১৯॥ ১২০॥ ১২১॥
॥ ১২২॥ ১২৩॥

ময়াপি সহ ধর্মজ্ঞ। তীর্থান্যেতানানুক্রমাৎ। थाश्नारम मङ्जोर कीर्जिर यथा ताका मङ्ख्या :28 n यथा यगाजि भंगाञा यथा ताजा श्वतवाः। ज्था दः ताकनार्फृतः । त्यन धर्म्यन (भाजरमः ॥ ১২৫ ॥ यथा ज्रशीतरथा ताका यथा तामक विकाउः। তথা ত্ব~ সর্বরাজেভ্যো জ্রাজনে রশ্মিবানিব॥ ১২৬॥ यथा मञ्च र्याथकाकु र्यथा शूक र्याशयभाः। যথা বৈণ্যে মহারাজ ! তথা স্বমপি বিশ্রুতঃ ॥ ১২৭ ॥ যথা চ বৃত্তহা সর্বান্ সপত্মানির্দ্দহন পুরা। বৈলোক্যং পালয়ামাস দেবরাডি গভজ্বঃ॥ ১২৮॥ তথা শত্ৰুক্ষয়ং কুত্ৰা ত্বং প্ৰজাঃ পাণয়িষাসি। স্বধর্মবিজিতা মুর্বী প্রাপ্য রাজীবলোচন!॥ ১২৯॥ थ्याजिः यागामि धर्मान कार्डवीयार्ड्याना यथां'। ১৩०॥ এব মাশ্বাস্য রাজানং নারদো ভগবানুষি:— বৈশস্থায়ন উবাচ। অনুজ্ঞাপ্য মহারাজ। তত্তৈবান্তরধীয়ত। ১৩১॥

শারুজ্ঞাপ্য মহারাজ! তত্তেবাস্তরধাষত। ১৩১॥
যুধিচিরোহপি ধর্মাত্মা ত মেবার্থণ বিচিন্তরন্।
তার্থযাত্রাজ্ঞিতং পুণা মুখীণাণ প্রত্যবেদরং॥ ১৩২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি নারদপ্রস্থানে
পঞ্জাশীতিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৮৫॥

মহাভিষঃ শান্তমূ রূপেণাবতীর্ণঃ ॥ ১২৪ ॥ ১২৫ ॥ রশ্বিবান্ স্থ্যঃ ॥ ১২৬ ॥ ॥ ১২৭ ॥ ১২৮ ॥ ১২৯ ॥ ১৩০ ॥ ১৩১ ॥ ১৩২ ॥ তেও ॥ ১৬২ ॥ ইড,ারণ্যকে পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে পঞানীতি

বেশন্দারন উবাচ।

ভাত গাং মত মাজ্ঞায় নারদস্য চ ধীমতঃ।
পিতামহদম ধৌমাং প্রাহ রাজা যুধিন্তিরঃ॥ ১॥

ময়া স পুরুষব্যাছো জিফুং সত্যপরাক্রমঃ .

অস্তাহেতো র্মহাবাছ রমিতালা বিবাদিতঃ॥ ২॥

স হি বীরোহনুরক্ত সমর্থক তপোধন'।

কুতী চ ভূশমপ্যস্তে বাস্থদেব ইব প্রভুং॥ ৩॥

অহং ছেতাবুভৌ ব্রহ্মন্ ! কুফা বরি িঘাতিনো।

অভিজানামি বিক্রান্থী তথা ব্যাসঃ প্রতাপবান্॥ ৪॥

কিবুনৌ পুঞ্জীকাক্ষো বাস্থদেব-ধনপ্রয়ো।

নারদোহপি তথা বেদ যোহপাশংসং সদা মম॥ ৫॥

তথাহ মপি জানামি নর-নারারগার্ষী।

শক্তোংহরমিতাতো মত্বা ময়া স প্রেষিতোহর্জুনঃ॥ ৬॥

ইন্দানবরঃ শক্তঃ স্করস্থন্থ স্থ্যাধিপম্।

ফেন্ট্ মন্ত্রাণি চাদা তু মিন্দ্রাদিতি বিবাদিতঃ॥ ৭॥

ভাতৃণ মিতি—॥ ১॥ অমিতাত্মা অমিত ধৈর্যঃ " আতার্দ্ধৌ প্রতৌ দেহে" ইতি কোষাং ॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ তিনু বালা—ধর্মসা ভার্যায়াং মুর্ভি সংজ্ঞায়াং কৃত মুগেই বতীংণা নর-নারায়ণৌ, তাবের দাপরান্তে কেশবার্ত্মনা বিভি পুরাণ পুরুষা বেতৌ নাম্দাদি বন্ধান্ত্মা বিভি ভাবঃ, পুগুরীকাক্ষো সাক্ষা দিল্ল, যদা ত্রী নি মুগানি মুগানানি মডেম্বর্যানি ভগসংজ্ঞানি বা মডকানি বা মানে ত্রৌ ত্রিমুগো, ভানিচ পুরাণান্তরে স্মর্যান্তে "ঐম্বর্যাস্য সমগ্রস্য জ্ঞানস্য মণসঃ ক্রিয়ং। বৈরাগাস্য চ ধর্মস্য মন্নাং ভগ ইতীক্ষনা" ইক্ষনা সংজ্ঞা, "সর্বজ্ঞতাভৃত্তি রনাদি বোধঃ স্মতন্ত্রতা নিতা মলুপ্ত শক্তিং। অনন্ত শক্তিশ্ব বিভো বিভ্জাঃ মডাই রক্ষানি মহেশ্বরস্য" ইতিচ, অন্যেত্ জ্ঞানৈর্যার্যায় বলে ভেজঃ পরাক্রমৌ চেভি ত্রীনি মুগানানীভ্যাহ্যভক্তনাং অনপ্রোধ্য কাম্মন্ত্র শক্তিং, ঐর্থাং ইক্ছান ভবাক্তঃ, বল মুপকোন্ত নির্বাহ্য, বীর্যাং কাম্মন্ত্র শক্তিং, তেজঃ পরাভিষাতঃ, পরাক্রমো যথাকান মুখান মিভি তদ্যাচন্ধতেচ ভিন্নমূলং পুনক্তি দোষাদমুক্তঞ্চ ॥ ৫॥ ৬॥ অনবরঃ অনুনঃ॥ ৭॥

ভীয়দ্রোণা বভিরথৌ রূপো দ্রৌণিশ্চ ছুর্জ্জরঃ। ধুতরাষ্ট্রদ্য পুজেণ রুতা যুধি মহারথাঃ॥ ৮॥ সর্বে বেদবিদঃ শুরাঃ সর্বাস্ত্রবিত্রষম্ভথা। যোদ্কামাশ্চ পার্থেন সততং তে মহাবলাঃ। স চ দিব্যাস্ত্রবিৎ কর্নঃ স্থতপুত্রো মহারথঃ ॥ ৯ ॥ সোহস্ত্রবেগানিলবলঃ শরার্চ্চি স্তলনিস্থনঃ। রজোধুমোইস্থানতা ধর্ত্রেষ্ট্রানিলেদ্ধেত:॥ ১০॥ निश्षे हेव कारलन युगास्ड जनरना महान्। মম সৈন্যময় কক্ষং প্রধক্ষাতি ন সংশয়ঃ ॥ ১১॥ তং স রুঞানিলোদ্ধ তো দিব্যান্ত্রত্বলনে। মহান্। শ্বেতবাজিবলাকাভূদা তীবেক্সায়ুধোল, ৭ঃ ॥ ১২ ॥ স বর্কা শরধারাভিঃ স্থদীপ্তং কর্ণপাবকম। অর্জুনোদীরিতে। মেঘঃ শময়িষাতি স্থ্রে। ১৩॥ म माक्कारनव मर्त्वाणि मङ्गाद প्रश्नुत्रश्चरः। দিব্যান্যস্ত্রাণি বীভৎস্বস্তম্ভুতঃ প্রতিপৎস্যতে ॥ ১৪ ॥ অল স তেষাং সর্বেষা মিতি মে ধীয়তে মতিঃ। নাস্তি ত্বতিক্কভার্থানাং রণেহরীণাং প্রতিক্রিয়া ॥ ১৫॥ ত । वशः পা खतः मर्स्त गृशे जाञ्च मतिकामः *। ক্রফারো ন হি বীভংস্থ তার মুদ্যম্য সীদতি ॥ ১৬ ॥ বয়স্ত তমৃতে বীরং বনেহস্মিন দ্বিপদায়র!।

॥৮॥ অন্ত্রবিদ্বঃ অন্তরিদ্বাংসঃ॥৯॥ রজ ইতি রজঃ কার্যাং ক্রোধঃ সএব ধ্মোষস্যা, ধার্তরাফ্রে রনিলৈ রিব উদ্ধৃত উদীপিতঃ॥১০॥ককং তৃণ বনং॥১১॥ উল্লেঃ স্ক্রসহঃ॥১২॥ অর্জনেদী রিতোহর্জুন নাম।॥১৩॥ ॥১৪॥ অলং জেতৃং প্রাপ্তঃ, তুগদঃ শক্ষান্তরে,প্রতিক্রিয়া জরোপায়ঃ, অর্জনং বিনাহরয়ে। মুর্জয়া ইত্যবং॥১৫॥১৬॥

^{*} ধনঞ্জমিতি ক-

অবধানং ন গছামঃ কাম্যকে সহ ক্লফ্যা ; ১৭ ॥ ভবানন্যধন পাধু বহুর পক্তবক্তি। আখ্যাতু রমণীয়ঞ্চ সেবিত্তৎ পুণ্যকর্ম্মভি: ॥ ১৮ ॥ যত্ৰ কঞ্চিৰয়ে কাল বসন্তঃ সত্যবিক্ৰমম্। প্রতীক্ষামোহজুনং বীরং রুফিকামা ইব, স্কুদম্॥ ১৯॥ বিবিধানাশ্রমান্ কাংশির্কাতিভ্যঃ প্রতিশ্রুতানু ॥ ২০॥ আচক্ষ্বন হি মে ব্রহ্মন্! রোচতে ভ মৃতেংর্জুনম্। বনেহন্দিন্ কাম্যকে বাসে। গচ্ছামোহন্যান দিশংপ্রতি'—॥২১॥ ইত্যারণ্যকে পর্বনি ভীর্যযাত্রাপর্বনি ধৌম্যযুধিষ্ঠিরসং वादम वज्नोजिजस्यार्था सः॥ ५७॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

তান সকানুৎস্থকান দৃষ্ট্। পাগুবান দীনচেতসঃ। আশ্বাসয়ংস্তথা ধৌম্যো রুহস্পতিসমোহত্তবীৎ। ১॥ " বান্ধণানুমতান্ পুণ্যানাশ্রমান্ ভরতর্বভ।। দিশস্তীর্থানি শৈলা শ্রু পুর্মে বদতো হনছ। ॥ ২ ॥ যান শ্রুত্বা গদতে। রাজনু ! বিশোকো ভবিতাসি হ। দ্রৌপদ্যা চানয়া সার্দ্ধং ভ্রাতৃভিক্ষ নরেশ্বর ! ॥ ৩ ॥ অবণালৈব তেষাং ত্বং পুণ্যমান্দ্যদি পাগুব!। গত্বা শতগুণঞ্চৈব তেওঁ্য এব নরোক্তম। ॥ ৪॥ भूतिः था ही । निभः तांकन् । तांकि विनाति । রন্যাং তে কথরিষ্যামি যুধিষ্ঠির যথ। সুতি ॥ ৫॥ षयधून १ मनः रेक्काम् ॥ ১**२॥ ১৮॥ ১৯॥ २०॥ २**১॥ .

ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে বড় শীতি তম্বো-

তানিভি—॥১॥ ২॥৩॥ ৪॥৫॥

তস্যাপ দেব্যজ্ঞীয়াং নৈমিষ্প নাম ভারত।। যত্র তীর্থানি দেবানাং পুণানি চ পৃথক্ পৃথক্। ও। যত্র সা গোমতী পুণা রম্যা দেবর্ষিদেবিত।। ষজ্ঞভূমিশ্চ দেবানাং শামিত্রঞ্জ বিবস্বতঃ ॥ ৭॥ তস্যা> গিরিবর: পুণ্যো গয়ে। রাজর্ষিদৎক্ষত:। শিবং ত্রহ্মসরো ফল সেবিতং ত্রিদশ্রিভিঃ। ৮॥ যদর্থং পুরুষব্যাঘ্র ! কীর্ত্তয়ন্তি পুরাতনাঃ। এইব্যা বহবঃ পুলা যদ্যপেকো গ্যায় জেৎ ॥ ৯॥ यरके वाचरमर्थन नीलः वा वृष मूर्ट्र व উত্তারয়তি সম্ভত্যা দশ পূর্বান্ দশাপরান্॥ ১০॥ মহানদা চ তত্ত্বৈব তথা গঃশিরো নুপ!। यकारमो कीर्जाटक विदेश तक्कयाकत्राभा वहः॥ >> ॥ যত্ৰ দন্ত পিতৃভ্যোহন মক্ষযাম্ত্ৰতি প্ৰভো!। সাচ পুণ্ডলা তত্ৰ ফল্পনামা মহানদী॥ ১২॥ বছমূলফলা চাপি কৌশিকী ভরতর্বভ!। रिश्वामित्वार्धाशाम्बज जाक्वन्यः ज्राभागः॥ ১७॥ গঙ্গা যত্র নদী পুন্যা যক্তাস্তীরে ভগীরথঃ। অয়জন্তত্র# বছভিঃ ক্র হুভি র্ভ রিদক্ষিণৈঃ॥ ১৪॥ शिक्षात्नम् ह दोत्रवा ! कथ्वस्त ९ श्रमावनम् । বিশ্বামিত্রোহ্যজনতে পুজেণ সহ কৌশিকঃ ॥ ১৫॥ यकान्त्र वर्भः जगवान् जाममग्राख्या जाती। বিশ্বামিত্রস্থ তা পৃষ্টা বিভূতি মতিমামুষীম্। ১৬। । ৬। শামিত্রং শমিতুঃ কর্ম বজ্ঞে পশুমারণং, বিবস্থতঃ পুত্রস্য যমসেটিত শেষঃ । ৭। তীর্থান্তরমাহ—তদ্যামিতি। তদ্যাৎ প্রাচ্যাৎ দিশি রাজধি-ब्रिनियं मरख्दः ॥ ৮ ॥ २ ॥ २० ॥ २२ ॥ २० ॥ २४ ॥ ३० ॥ ३४ ॥ १० ॥ * '' তর " ইত্যস্য স্থানে '' ভাত ! " ইভি পাঠঃ কণুস্তকে।

কান্যকুজেহপিবৎ দোম মিল্ফেণ সহ কৌশিকঃ। ততঃ ক্জাদপাকাম দ্বান্নণোহন্মীতি চাব্রবীং॥ ১৭ ॥ পবিত্র মৃষিভি জুফিং পুণ্যৎ পাবনমুক্তমম। গঙ্গাযমুনয়ো বীর ! সঙ্গম শ্লোকবিক্রতম ॥ ১৮ ॥ যত্রায়জ ভ ভূতাত্মা পূর্ব্বমেব পিতামহঃ। প্রয়াগমিতি বিখ্যাত্র তক্ষান্তারতসভ্তম 🗐 ১৯ 🗈 অগন্ত্যক্ত বু রাজেন্দ্র। তত্তাশ্রমবরো নূপ ।। তত্ত্বা তাপসারণ্য তাপসৈ রুপশোভিতম্ ॥ ২০॥ হিরণাবিন্দুঃ কথিতো গিরৌ কালঞ্জরে মহানু *। † অগেস্তা পর্বভো রম্যঃ পুণ্যো গিরিবরঃ শিবঃ ॥ ২১॥ মহেন্দ্র। নাম কৌরব্য। ভার্গবস্থ মহাত্মনঃ। অষজন্তত্র কৌন্তেয় ! পূর্বেমেব পিত।মহঃ ॥ ২২ ॥ যত্র ভাগীরথী পুণ্যা সরস্তাগীকা ধিষ্ঠির ! । যত্র সা ব্রহ্মশালেতি পুণ্যা খ্যাতা বিশাম্পতে ! ॥ ২৩॥ ধৃতপাপ্যভি রাকীণা পুণ্যৎ তম্যাক্ষ দর্শনম্। পবিতাে মঙ্গলীয় কঃখ্যাতো লোকে মহাত্মনঃ॥ ২৯॥ কেদারশ্চ মতঙ্গদ্য মহানাশ্রম উত্তমঃ। कृत्शामः शर्कारा तरमा वस्यानकत्नामकः ॥ २०॥

॥ ১৭॥ পবিত্র মিতি—পবি ব জিং ততুলাৎ জন্ম মরণাদি ছংখং তন্মাজায়ত ইতি পবিত্রং অতএব ঋষিভি জুঞং সেবিতং, পুনাং ধর্মার ছেডুঃ, পাবনং পাপনাশনন্ ॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ যত্রভাগীরথীতি—সরসি মিনিকর্নিখ্যে প্রবিষ্ঠা আসীৎ, ত্রন্ধালা ত্রেকাপ লব্ধি সদৃশং বারাণ-লাখেং " অন্মুক্তং বৈ কুক্লেত্রং দেবনো দেংযত্রনং সুর্বেষাং ভূতান ছ ত্রন্ধি সদন" মিতিশ্রুতি প্রসিদ্ধন্॥ ২৩॥ আকীণা ব্যাপ্তা, মন্দ্রীয়ঃ মন্দ্রা-বছঃ॥ ২৪॥ কেদারোপি কাশ্যামেব॥ ২৫॥

^{*} মহানিতত্ত্ত্য " নৃপ !"ইতি ক—

† " অখান্যঃপর্বত্তো রাজন্ !" ইতে ক—

নৈষ্যস্থিতো যত্ৰ জলং শর্মা চ লক্ষ্যান্য ।

যত্ৰ দেববনং রম্যাপ তাপদৈ ক্লুপশোভিতম্ । ২৬ ॥
বাছদা চ নদী যত্ৰ নন্দা চ গিরিমুর্দ্ধনি ।
তীর্থানি সরিতঃ শৈলাঃ পুণ্যান্যায়তনানি চ ॥ ২৭ ॥
প্রাচ্যাং দিশি মহারাজ ! কীর্ত্তিতানি ময়া তব ।
তিহম্বন্যানি শুণ্যানি দিক্ষ্ তীর্থানি মে শূণু ।
সরিতঃ পর্বতাপ্টেচ্ব পুণ্যান্যায়তনানি চ"—॥ ২৮ ॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি তীর্থ্যাত্রাপর্বাণি ধৌম্যতীর্থকথনে
সপ্তাশীতিত্বমাহধ্যায়ঃ ॥ ৮৭ ॥

ধৌম্য উন্চ।

"দক্ষিণসাস্থ পুণানি শৃণু তীর্থানি ভারত!।
বিস্তরেণ যথাবুদ্ধি কার্ত্যমানানি তানি বৈ॥ >॥
যস্যা মাখ্যায়তে পুণা দিশি গোদাবরী নদা।
বহ্বারামা বছজলা তাপসাচরিতা শিবা॥ ২॥
বেলা ভীমরথা চোভে নদ্যো পাপভয়াপহে।
মৃগদ্বিজসমাকীর্ণে তাপসালয়ভূদিতে॥ ৩॥
রাজর্ষেত্রত চ সরিল্গস্য ভরতর্ষভ!।
রুম্যতীর্থা বছন্ত্রণ প্রোম্খী দ্বিজসেবিতা॥ ৪॥

নৈংখো নলং, তাত্ত্বেব লোলার্ক দক্ষিণে নল আমস্য দর্শনাৎ, তীর্থান্তরমাছ

— যত্ত্বেব বন মিতি—॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈল কথারে ভারত ভাবদীপে সপ্তাশীতি তমো
হধ্যারঃ॥ ৮৭ ॥

म क्निनि विजि—॥ ३॥ २॥ ७॥ ४॥

* " অন্যাস্থ" ইতি ক—ছ-পুস্তকে, 1

অপি চাত্র মহাযোগী মার্কণ্ডেয়ো মহাযশাং। অনুবংশ্যাপ জন্মে গাখাং নৃগদ্য ধর্ণীপতেঃ॥ ৫-॥ • নৃগদ্য যজমানদা প্রত্যক্ষমিতি নং প্রুতম্। অমাদাদিক্রঃ সোমেন দক্ষিণাভিদ্বিজাতয়ঃ॥ ৬॥ পয়েক্ষ্যাং যজমানস্য বারাহে তীর্থ উত্তমে। উচ্চুতং ভূতলম্খং বা বায়ুনা সমুদীরিতম্।. পয়েফ্যা হরতে তোয়ং পাপ মা ম,াণান্তিকম্ । १ ।। चर्गी हु कुक ममलः विधान पत भू निनः। স্ব মার্জাবহিত্র দৃষ্ট্র। মত্যঃ শিবপুর্গ রজেৎ॥ ৮। একতঃ সরিতঃ সর্বা গঙ্গাদ্যাঃ সলিলে।চ্চয়াঃ। পয়েको हिक्छः পুना जीर्थि । हि मठा मम ॥ २ ॥ মাঠরস্য বন পুণ্যং বছ্মুলফল পিবম। যূপশ ভরতশ্রেষ্ঠ ় বরুণস্বে†তদে গিরৌ । ১০ ॥ প্রবেণুত্তরমার্গে তু পুণ্যে কণু । অমে তথা। তাপসানা মরণ্যানি কীর্ত্তিতানি যথাঞ্চতি॥ ১১॥ বেদী শূর্পারকে তাত। জমদগ্রে শ্মহাত্মনঃ। রম্যা পাষাণতীর্থা চ পুনশ্চক্রা চ ভারত।॥ ১২ ॥ অশোকতীর্থণ তবৈব কৌন্তেয়। বছল। অসম্। অগন্ত্যতীর্থং পাঞ্জেষু বারুণঞ্চ যুধিষ্ঠির। ॥ ১০॥ कुमार्गः कथिजाः भूगाः भारकारश्व नत्रवं !। ত। ত্রপণীস্ত কৌন্তেয় ! কীর্ত্তগ্রিষ্যামি ত। শুণু 🗱 ॥ ১৪॥

অভ্বংশ্যাং বংশাস্ত্রপাং নতু নৃগ মাত্রাস্ত্রপায়। ৫॥ ৬॥ १॥ ৮॥ ১॥
॥१०॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ কুমারাঃ কুমারীর আচরভঃ বাল্যান্তাগাদিছীন
অপি পরমেব পাতিং প্রার্থরে। ভগবন্তকা ইত্যর্থঃ, অতএব জাভাগবতে
ফ্রিডেম্বে ভগবন্তক ভূরন্থ মাংতে, পাত্রেয়ু ক্রাব্ড বিশেষেয়ু॥ ১৪॥

^{*} ভচ্ছু ইতি ক—

যত্র দেবৈ স্তপস্তপ্তং মহদিচ্ছন্তি রাশ্রমে। গোকৰ্ণ ইতি বিখ্যাত স্ত্ৰিষু লোকেষু বিশ্ৰুতঃ ॥ ১৫ ॥ শীততোয়ো বহুজনঃ পুন্য স্তাত ! শিবঃ শুভঃ।* ব্রদঃ পরমত্বজাপো মানুষৈ রক্তাত্মভিঃ ॥ ১৬ ॥ ভত্তবুক্ষভূণিলৈ । । राज्यक्षः कलमूलवान् । আশ্রমোহগন্ত্যশিষ্যম্য পুণ্যো দেবসমো গিরিঃ 🕻 ॥ ১৭ ॥ বৈদুর্যাপর্বে হস্তত্র শ্রীমানু মণিময়ঃ শিবং। व्यवस्थाना व्यवस्थान वस्त्र न प्रमानकः ॥ २৮॥ স্থুরাষ্ট্রেছপি বক্ষ্যামি পুণ্যান্যায়তনানি চ। আশ্রমান সরিতদৈহব সরাংসি চ নরাধিপা। ১৯॥ চমসোদ্ভেদনং বিপ্রা স্তব্যাপি কথয়স্কাত। প্রভাসপ্ষোদধে তীর্থং ত্রিদশানাং যুধিষ্টির ! ॥ ২०॥ তত্র পিগুরিকং নাম তাপসাচরিতং শিবমু। উক্তরন্তর্শ্চ শিথরী ক্ষিপ্রং সিদ্ধিকরো মহান্॥ ২১॥ তত্র দেবর্ষি-ধীরেণ নারদেনামুকীর্জিতঃ। পুরাণঃ শ্রুয়তে শ্লোক স্তন্মিবোধ যুবিষ্ঠির! ॥ ২২ ॥ পুণ্যে পিরৌ স্থরাষ্ট্রেমু মৃগপক্ষিনিষেবিতে। উজ্জাত্তে সা তপ্তাঙ্গো নাকপুঠে মহীয়তে ॥ ২৩॥ পুণ্যা দারবতী তত্ত যতাত্তে মধুসূদনঃ। माकारकरः भूतालाश्मो म हि धर्मः मनाजनः॥ २४॥

मह्द भाक्तकम् ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३१ ॥ ३৮ ॥ ३० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २२ ॥ छश्चाकः कृष्ठ अण्यः ॥ २० ॥ मनां उत्ना ४ माः हे जान् नां द्वान मार्थ हिंदमानां ने व्याप्त कर्मानां के भावामां प्रति व्याप्त विकार विकार कर्मानां के कार्य प्रति व्याप्त विकार विकार विकार कर्मानां कि कार्य मनीवादाना स्मीनां प्रति विकार विकार

^{* &}quot;পুণান্তত্ত শিবক সঃ" ইতি ক-পাঠঃ।

† "তত্ত্বিব তুণ দোমাত্ত ইতি ক। ! "পুণোৱেবদভেনিরৌ" ক।

যে চ বেদ বিদো বিপ্রা যে চাধ্যাত্ম-বিদো জনাঃ।
তে বদান্ত মহাত্মানং কুষ্ণং ধর্মাং সনাতনম্॥ ২৫॥
পবিত্রাণাক হি গোবিনদঃ পবিত্রক পর মুচাতে।
পুনানামপি পুনাোহনৌ মঙ্গলানাঞ্চ মঙ্গলম্॥ ২৬॥
ত্রৈলোক্যে পুন্তরীকাক্ষো দেবদেবঃ সনাতনঃ।
অব্যাত্মা ব্যযাত্মা চ ক্ষেত্রজ্ঞঃ পরমেশ্বরঃ।
আন্তে হরি রচিন্ত্যাত্মা তত্রৈব মধুস্থদনঃ॥ ২৭॥
ইত্যারণ্যকে পর্ববি তীর্থম ত্রাপর্ববি ধৌম্যভীর্থকখনে
অফাশীতিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৮৮॥

ধেমি উবাচ।

' আনর্ত্তমু প্রতীচ্যাৎ বৈ কার্ত্তয়িষ্যামি তে দিশি ।

যানি তত্ত্ব পবিত্তানি পুণ্যান্যায়তনানি চ ॥ ১ ॥

প্রিয়ঙ্গ্রান্তবনোপেতা বানীর-বন্মালিনী।

প্রত্যক্ত্রোতা নদী পুণ্যা নর্মদা তত্ত্ব ভারত!॥ ২ ॥

বৈলে।ক্যে যানি তীর্থানি পুণ্যান্যায়তনানি চ। সরিদ্বনানি শৈলেক্সা দেবাশ্চ সপিতামহাঃ॥৩॥

এতদেব স্পঞ্জতি যেচেন্ডাদিনা—॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ অব্যরাত্মা অক্ষর স্বরপো ব্যরাত্মা ক্ষর স্বরপঃ ক্ষেত্রজ্ঞঃ জাবঃ দএব পর মধ্বঃ "ক্ষেত্রজ্ঞাপিমাং বিদ্ধি"—ইতি ভাগবদ্ধচনাৎ, ক্ষেত্রং জীব ঈশশ্চ ত্রয় মপ্যা ব্যরাধ্যং ত্রীন-বেত্যর্থঃ "ভোক্তা ভোগাং প্রেরিতারক্ষ মহা সর্বাং প্রোক্তং ত্রিবিধং ত্রন্থিত"-দিতি ভাতেঃ ॥ ২৭ ॥

ইত, রে ্যকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে অফাশীতি-ভূমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮৮ ॥

আনর্ত্তে—আনর্তের পশ্চিমাজিতের, অবস্তিমিত পাঠে—অবস্তির প্রতীন্যাঞ্চিত বৈ-শব্দ কার্থ: ॥১॥ প্রত্যক্ত্রোতাঃ পশ্চিম বাহিনী॥ ২॥৩॥

^{*} অবস্তিয়ু ইতি ক---

: নর্শ্বদায়াৎ কুরুভোষ্ঠ। সহ সিদ্ধবিচারশৈঃ। ক্লাভুমায়ান্তি পুণ্যৌঘেঃ সদা বারিষু ভারত। ॥ ৪॥ নিকেতঃ শ্রমতে পুণ্যো যত্র বিশ্রবসো মুনে:। জজে ধনপতির্ঘত কুবেরো নরবাহনঃ॥ ৫॥ रेवमूर्वाभिश्वदता नाम श्रूराम नितिवतः भिरः। নিত্যপুষ্পফলাস্তত্ত্ব পাদপা হরিতক্ষ্দাঃ ॥ ৬ ॥ তদ্য শৈলদা শিখরে সরঃ পুণাং মহীপতে ! ৷: ফুল্ল পদ্মং মহারাজ ! দেবগন্ধর্বসেবিতম্ ॥ 🕆 ॥ বহ্বাশ্চর্যাং মহারাজ ! দৃশাতে তত্র পর্বতে। भूत्वा ऋर्ताश्राम देवव दाविश्वन्यविद्ध ॥ ৮॥ হ্রদিনী পুণাতীর্থা চ রাজর্ষে স্তত্র বৈ সরিৎ। বিশ্বামিত্রনদী রাজনু । পুণ্যা পরপুরঞ্জয় । ॥ ৯ ॥ যুদ্যান্তীরে সভা > মধ্যে যুষাতি র্মন্থ জ্বাজঃ। পপাত স পুনর্কোকালেঁভে ধর্ম্যান্ সনাতনান্॥ ১০॥ তত্র পুণ্যো হ্রদঃ খ্যাতো মৈনাককৈব পর্বাতঃ। বছমূলফলোপেত স্তুদিতো নাম পর্বতঃ। ১১॥ আশ্রমঃ কক্ষদেনস্য পুণাস্তত্র যুধিষ্ঠির !। চ্যবনস্যাজ্রমকৈর খ্যাতঃ সর্ব্বত্র পাপ্তর ।॥ ১২॥ ভত্রাপেনৈব সিধ্যন্তি মানবাস্তপদা বিভো।। জমুমার্গো মহারজে ! ঋষীণা তাবিতাল্লনাম ॥ ১৩ ॥ আশ্রমঃ শাম্যতাং শ্রেষ্ঠ। মৃগদ্বিজনিবেবিতঃ। ততঃ পুণ্ডম। রাজন্ ! সতত্ত তাপসৈযু তা ॥ ১৪॥ (कड्याला **ट (येथा ट शक्याबातक स्थापता !**। थााजक रेमकावातगार भूगार विकासिकाम् । ১৫॥

॥ ৪॥ ৫ ৬॥ ৭॥ বহ্বাশচর্ষ্য বেদ । হলিতাবণাদি ॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১ ॥ ॥ ১২॥ ১৩॥ শামা তাং সম বতান্॥ ১৪॥ ১৫॥ পিতামহনর: পুণ্যং পুক্ষর নাম নামতঃ।
বৈধানসানাং সিদ্ধানা মৃষীণামাজ্ঞমঃ প্রিয়ঃ॥ ১৬॥
অপ্যত্ত সংজ্ঞার্থায় প্রজাপতি রথো জগৌ।
পুক্ষরেষু কুরু শ্রেষ্ঠ! গাথাং স্কর্মতিনাম্বর!॥ ১৭॥
মনসাপ্যভিকামস্য পুক্ষরাণি মনস্থিনঃ।
বিপ্রণশান্তি পাপানি নাকপৃষ্ঠে চ মোদতে''—॥ ১৮॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থ্যাত্রাপর্বাণি ধৌম্যতীর্থকথনে

একোন-ন্বতিত্বমোহধ্যায়ঃ॥ ৮৯॥

ধেমি উবাচ।

"উদীচ্যাং রাজশার্ক । দিশি পুণ্যানি যানি বৈ।
তানি তে কীর্ত্তরিষ্যামি তীর্থান্যায়তনানি চ। ১॥
শৃণুদ্বাবহিতো ভূত্বা মম মন্ত্রয়তঃ প্রভোঃ।
কথাপ্রতিপ্রহো বীর! শ্রাকাশ জনয়তে শুভাম্ ॥ ২॥
সরস্বতী মহাপুণ্যা হাদনী তীর্থশালিনী।
সমুদ্রগা মহাবেগা যমুনা যত্র পা গুব।॥ ৩॥
যত্র পুণ্যতমং তীর্থং প্লক্ষাবতরণং শিবম্।
যত্র সারস্বতৈরিফ্বা গচ্ছন্য * ২বভূথশ দ্বিজাঃ॥ ৪॥
বৈধানসানাং হৈরণ্য গার্ভাগ্ কর্ম মার্গভাক্ত্বা ধ্যান প্রাণামিতর্থঃ॥ ১৬॥ সংশ্রমার্গার বাসার্থম্॥ ১৭॥ অভিকামস্য গান্ধমিক্তেঃঃ॥ ১৮॥
ইত্যারণ্যকে প্রবিণি নৈলক্ষান্যে ভারত ভাবদীপে উন্নব্তি
ত্রেধ্যায়ঃ॥ ৮৯॥

টুলীচামিতি—॥ ১॥ মন্ত্ররতঃ কথরতঃ, কথা প্রতিগ্রহঃ কথারা মনসি ধারণ্য ॥ ২॥ ৩॥ সারস্বতিঃ সরস্বত্যাং প্রাক্তিঃ॥ ৪॥ সহদেশঃ স্ঞ্রর পুত্রঃ শম্যা ক্ষেপেণ—বলবতাক্ষিপ্তা শমাালগুড বিশেষো যাবদূরং পতে_ জাবান্যজ্ঞমণ্ডপো যদ্মিন্যজ্ঞে স শম্যা ক্ষেপ স্তেন॥ ৫॥

^{*} অবভূথৈরিতি চপাঠান্তরম্।

পুন্যঞ্চাখ্যায়তে দিবাং শিব মগ্নিশিরোহনঘ!। महरम्(विश्वष्ठम्बज मगारिकार्यण ভाর छ।॥ ৫ ॥ এতিমনের চার্থেংসাবিন্দ্রগীতা যুধিষ্ঠির !। গাথা চরতি লে।কেহম্মিন গীয়মানা দ্বিজাতিভিঃ। ও॥ অপ্নয়ঃ সহদেবেন সেবিতা যমুনামন্ত্র। তে তৃস্য কুরুণার্দ্দূল ! সহস্রণতদক্ষিণাঃ॥ १॥ তত্ত্বৈৰ ভরতো রাজা চক্রবর্ত্তী মহাযশাঃ : বিশ্বতিঃ সপ্তচাটে) চ হয়মেধারু পাহরং ॥ ৮ ॥ কামক্রং যো দ্বিজাতীনাং প্রতন্তাত। যথা পুরা। অভ্যন্তম শ্রেমঃ পুণ্যঃ শরভঙ্গদ্য বিশ্রুতঃ ॥ ৯॥ সরস্থতী নদী সন্তিঃ সভতং পার্থ ! পুজিতা। ব লিখিল্যৈ শ্বহারাজ ! যতেট মুষিভিঃ পুরা । ১০ ॥ দুশদ্বতী মহাপুণ্যা যত্ৰ খাতা যুধিষ্ঠির !। नाट्यायाश्र * भाष्णात्ना भुगात्था हिलनावृत ! 1 >> ॥ माल् ভाषायक माल् ভाक्त ध्रतीरह। महाज्ञनः। কৌত্তের।নন্দ্রশানঃ স্থবতস্যামিতৌজসঃ॥ ১২॥ আশ্রমঃ খ্যায়তে পুণ্য স্ত্রিষু লোকেষু বিশ্রুতঃ। এতাবর্ণাববণৌ চ বিশ্রুতৌ মনুজাধিপ ।॥ ১৩॥ र्यम्हा दंमिविषाः दन्ति दम्बिमांविमावूरको। ঈজাতে ক্রতুভি শ্মৃথৈঃ পুলৈর্ডরতসন্তম।॥ ১৪॥

॥ ৬॥ ৭॥ বিংশতিঃ বিংশতিবার মাবর্তিতাঃ, সপ্ত অফৌ চেভি অফ্রা-চহারিং শদধিকং শতং ত্রয়ব্রিং শচ্ছতং রাজেত তুক্তাতেঃ, বিংশতি বিংশতি মিতি পাঠে—অতান্ত হীন সংখাত্বাং পঞ্চতিংশং॥৮॥৯॥১৯॥ ॥ ১১॥ ১২॥ এতা কৃষ্ণ মুগী ভদ্দিত ক্রাহিতো॥ ১৩॥ ১৪॥

^{*} পूर्वार्था भाक्षाना इंडि क-भार्ठः।

সমেত্য বছুশো দেবাং সেন্দ্রাং সবর্জাং পুরা। বিশাখযুপেহতপান্ত তেন পুণ্যতমক্ষ সং 🖫 ১৫ 🛭 ঋষিত্রহান মহাভাগে। জমদগ্রিত্রহায়শাঃ। পলাশকেষু পুণ্যেষু রম্যেষ্ঠ্যজত প্রভুঃ ॥ ১৬॥ যত্র সর্বাঃ সরিচ্ছে ্ষ্ঠাঃ সাক্ষাত্ত মৃষিসভ্যম্। স্বং তার মুপাদার পরিবার্য্যোপতস্থিরে । ১৭॥ অপিচাত মহারাজ! স্বয়ং বিশ্বাবস্থ জ গৌ। ইমং শ্লোকং তদা বীর! প্রেক্ষ্য দ ক্ষাৎ মহাত্মনঃ : ১৮॥ যজমানস্য বৈ দেবানু জমদগ্রে শ্রহাত্মনঃ। আগম্য সরিতো বিপ্রান্ মধুন। সমতর্পরন্ ॥ ১৯॥ গন্ধবি যক্ষরকোভি রপ্সরোভিশ্ব সেবিতম্। কিরাতকিন্নরাবাস~ শৈলং শিখরিণাম্বর্ম । ২০॥ বিভেদ তরসা গঙ্গা গঙ্গাদারং যুধিষ্ঠির !! পুণ্যং ভদ্যায়তে " রাজনু! ব্রহ্মধিগণসেবিতম্ ॥ ২১ ॥ সনৎকুমারঃ কৌরবা ! পুণাপ কনথলং তথা। পৰ্ববতক পুৰু নাম যত্ৰ জাতঃ পুৰুৱবাঃ॥ ২২॥ ভূগুৰ্যত্ৰ তপস্তেপে মহৰ্ষিগণদৈবিতে। রাজন্। স আশ্রমঃ খাতো ভৃগুতুসো মহাগিরিঃ ॥ ২৩॥ য়ঃ স্ভুত্ত ভবিষ্ঠে ভবচ্চ ভরতর্ষভ!। নারায়ণঃ প্রভুবিষ্ণু: শাশ্বতঃ প্রুষোত্তমঃ॥ ২৪॥ তস্যাতিয়শসঃ পুণ্যাং বিশালাং বদরীমনু। আঅমঃ খ্যায়তে পুণাস্তিষু লোকেষু বিশ্রুতঃ ॥ ২৫ ॥

নামতঃ, বদরী মহ-তদরী সমীপে ইতার্থঃ॥ ২৫॥

13011 2011 2011 20 11 20 11 20 11 22 11 20 11 28 11 विमालिर

^{*} তংখ্যায়তে ইতি পাঠঃ কচিৎ।

উফতে য়বহা গঙ্গা শীততোয়বহা পুরা। স্কুবর্ণসিকতা রাজন্। বিশালাং বদ ীমন্তু॥ ২৬॥ ঋষয়ো যত্ৰ দেবাশ্চ মহাভাগা মহৌজসঃ। প্রাপ্য নিতাং নমস্যন্তি দেব নারায়ণং প্রভুম্॥ ২৭॥ যত্র নার রেণো দেবঃ পরমাত্মা সনাতনঃ। তত্র কুৎস্কু জগৎ সর্বাং তীর্থান্যায়তনানি চ ॥ ২৮॥ তৎ পুণ্যং পরমং ব্রহ্ম তত্তীর্থং তত্তপোবনম্। তৎপরং পরমং দেব । ভুতানাং পরমীশ্বরম্। ২৯॥ শাশ্বত পরমক্ষৈব ধাতারং পরমং পদস্। যং বিদিত্বা ন শোচস্তি বিদ্বাৎসঃ শাস্ত্রদৃষ্টয়ঃ॥ ৩০॥ তত্র দেবর্ষয়ঃ সিদ্ধাঃ সর্বের চৈব তপে।ধনাঃ। আদিদেবো মহাযোগী যতাত্তে মধুস্থদনঃ ॥ ৩১ ॥ পুণ্যানামপি তৎ পুণ্য মত্র তে সংশয়োহস্ত মা। এতানি রাজন্ ! পুণ্যানি পৃথিব্যাং পৃথিবীপতে ! ॥ ৩২ ॥ কার্ত্তিলে নরশ্রেষ্ঠ। তীর্থান্যায়তনানি চ। এতানি বস্থুভিঃ সাধ্যে রাদিতো শ্বরুদশ্বিভিঃ॥ ৩৩॥ ঋষিভিদ্দেবকলৈপশ্চ সেবিতানি মহাত্মভিঃ। চরপ্রেতানি কৌন্তেয়। সৃহিতো ব্রাহ্মণুর্য ভৈঃ। ভাতৃভিশ্চ মহাভাগৈ রুৎকণ্ঠাং বিহরিষ্যাদি"*—॥ ৩৪॥ ইত্যারণ্যকে পর্বানি তীর্থযাত্রাপর্বানি ধৌমাতীর্থকথনে নবতিতমোহধ্যায়: ॥ ৯০ ॥

॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮ ॥ ২৯,॥ ৬০ ॥ ৩১॥ ৩২ ৩৩॥ বিছরিষ্যাসি—পরিছুরি-ষ্যাস ॥ ৩৪॥

ইত্যার নকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারও ভাবদীপে নবতি তমো-২ধ্যায়ঃ॥ ৯০॥

^{* &}quot; বিজহিষা, স" ইতি ক—

दिबाल्यायम छेवाह।

এবং मञ्जासामार्ग ज (शीरमा को इतनमन !। লোমশঃ স্থমহাতেজা ঋ্বিস্ততাজগাম হ॥ ১॥ তৎ পাণ্ডবাঞ্জো রাজা সগণো ব্রাহ্মণাশ্চ তে। উপাতিষ্ঠন্মহাভাগে দিবি শক্ত মিবামরাঃ ॥ ২ ॥ সমভ্যক্ষ্য যথান্যায়ং ধর্মপুজো যুধিষ্ঠিরঃ। পপ্রচ্ছাগমনে হেতু মটনে চ প্রয়োজনম্॥৩॥ দ পৃষ্টঃ পাণুপুজেণ প্রীয়মাণো মহামনাঃ। উবাচ শ্লক্ষ্যা বাচা হর্ষয়ন্নিব পাগুবান্। ৪॥ দঞ্চরন্নিম কৌন্তেয়! সর্বান্ লোকান্ যদুছয়য়া । গতঃ শক্রা ভবন ত্র হপশ্য স্থরেশ্বর্ম ॥ ৫॥ তব চ ভ্রাতরংবীর ! মপশাং সব্যসাচিনম্। পোক্রস্যার্দ্ধাসনগতং তত্ত্র মে বিশ্বয়ে। মহানু ॥ ৬ । ष्यामी श्रक्षमार्फ्ना । पृष्ट्री भार्थः उथा १७३। আহে মাং তত্ত্র দেবেশো গচ্ছ পাণ্ডুস্কুতানু প্রতি॥ ৭॥ সোহহমভ্যাগতঃ ক্ষিপ্রং দিদৃক্স্তাং সহাত্ত্রজম্। বচনাৎ পুরুষ্কতস্য পার্থস্য চ মহাত্মনঃ ॥ ৮ ॥ আখ্যাস্যে তে প্রিয়ং তাত ! স্থমহৎ পাণ্ডুনন্দন !। 🚜 ঋষিভিঃ সাহতো রাজন্। ক্লঞ্রা চৈব তচ্চুণু ॥ ৯ ॥ যত্ত্বয়ে তেকা মহাবাছ রস্ত্র।র্থণ ভরতর্বভ !। তদস্ত্রমাপ্তং পার্থেন রুদ্রাদপ্রতিম বিভো!॥ ১০॥ যত্তৰ ক্ষশিরো নাম তপসা রুদ্র মাগমৎ। কুমৃতাত্বথিত পরীয়াং তল্লক সব্যস্যাচিনা॥ ১১॥

^{*} ভাতৃভিরিতি ক-পাঠঃ।

তৎ সমন্ত্রণ সসৎহারং সপ্রায় শিক্তমঙ্গলগু। বজ্ঞ মন্ত্রাণি চান্যানি দণ্ডাদীনি যুধিষ্ঠির ।॥ ১২ ॥ ষমাৎ কুবেরাদ্বরুণাদিক্রাচ্চ কুরুনন্দন।। অস্ত্রাণ্যধীতবান্ * পার্থো দিব্যান্যমিতবিক্রমঃ॥১৩॥ বিশ্ববিদাস্ত ভনরাক্ষীতং নৃত্যঞ্চ সাম চ। বাদিত্রঞ্বথান্যায় প্রভাবিন্দদ্বথাবিধি। ১৪॥ এবং ক্লতাস্ত্রঃ কৌন্তেয়ো গান্ধর্বাং বেদ মাগুবান্। স্থাং বসতি বীভৎস্থ রমুজস্যানুজস্তব । ১৫॥ यमर्थः मा॰ स्नुतत्थकं इमः वहन मञ्जीः। ভচ্চ তে কথরিষ্যামি যুধিষ্ঠির! নিশেধ মে ॥ ১৬॥ ভবান মনুব্যলোকেহপি গমিঘ্যতি ন সংশয়ং। বুয়াদ্ব ধিষ্ঠিরং তত্র বচনান্মে দিজে।তুম! ১৭ ॥ অাগমিয়তি তে ভাতা কুতাস্ত্রঃ কিপ্রমর্জুনঃ। স্থ্রকার্য্যং মহং কুত্বা যদশক্যং † দিকৌকদৈঃ ॥ ১৮॥ তপসাপি ত্ব মাত্মানং যোজয় ভ্রাভৃভিঃ সহ। তপদো হি পরং নাস্তি তপদা বিন্দতে মহৎ । ১৯ ॥ অহঞ্চ কর্ণ- জানামি যথাবদ্ভরতর্বভ ! । সত্যসন্ধ্ৰণ মহেশ্ৎসাহং মহাবীৰ্য্যং মহাবলমূ॥ ২০॥

সমন্ত্রং প্রাণানে মন্ত্র সাইতং, সংহার স্তাক্তন্যা কর্ষণং, প্রাণিচন্ত্রং অস্ত্রান্ত্রিনা নিরপরাধাণাং (দাছে বিধে যোদে। য স্তন্য শোধনং, মজলং দন্ধানা মে বারামাদীনাং পুনাকিসনং, বজ্ঞং বজ্ঞবদ প্রতীকার্যাং রৌজমেব ॥ ১২ ॥ ॥ ১৩ ॥ গীতং লৌকিকং গানং, সাম শক্ষু গান্য ॥ ১৪ ॥ অভ্জুদ্য ভীম্স্যাভূজঃ ॥ ১৫ ॥ -৬ ॥ ১৭ ॥ ক্রেকার্যাং নিবাভ কবচাদীনাং বধঃ, বস্তুলং ভূক্সীং
তৈরস্ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ সত্যসন্ধং সত্য প্রতিজ্ঞ যু॥ ২০ ॥

শ অবাপ্ত গানি তি ক-পুস্তকঃ।
 † " দিবৌকসাম্" ইতি ষষ্ঠান্ত পাঠঃ কপুন্তকীয়ঃ।

মহাহবেদ্ব প্রতিমং মহাযুদ্ধ বিশারদম্।
মহাধনুর্ধারণ বীরণ মহাস্ত্রং বরবর্দ্মিণম্। ২০ ॥
মহেশ্বরস্কতপ্রথা মাদিত্যতনয়৸ প্রভুম্।
তথার্জ্জুন মতিক্ষন্ধং সহজোরণপৌরুষম্॥ ২২ ॥
ন স পার্থস্য সংগ্রামে কলা মইতি বোড শীন্।
যচ্চাপি তে ভয়ং কর্ণান্সনসিস্থ মরিন্দম!॥ ২৩ ॥
তচ্ছাপ্যপহরিষ্যামি সব্যুসাচিন্যুপাগতে।
যচ্চ তে মানসং বীর! তীর্থযাত্রা মিমাং প্রতি।
স মহর্ষিলে মিশস্তে কথ্মিষ্যত্যসংশয়ম্॥ ২৪ ॥
যচ্চ কিঞ্জিত্তপোযুক্তণ ফলণ তীর্থেমু ভারত!।
ব্রহ্মর্বি রেষ বুয়াজে ন তচ্ছুদ্ধেয় মন্যথা"—॥২৫ ॥
ইত্যারণ্যকৈ পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি লোমন্যুধিষ্ঠির
সংবাদে একনব্তিত্মোহ্ব্যায়ঃ ॥ ৯১ ॥

লোমশ উবাচ।

''ধনঞ্জয়েন চাপ্যক্তং যত্তভূণু যুধিষ্ঠির !। যুধিষ্ঠির^ ভাতরং মে যোজয়েদ্ধর্মায়া শ্রিয়া * ॥ ১॥

বরবর্ণিনং অতি স্থান্দরম্ ॥ ২১ ॥ মহেশ্বর স্তপ্রধ্যং ক্ষান্তলাং, অতিক্ষাং উন্নতাংসংজ্ঞান গতিক্ষা মিতি পাঠে—যোগি শ্রেষ্ঠম ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ অপ-ছরিব্যামি ক্বচকুগুলাপ হরণে ইন্দ্রেন ক্তে সতি তদি ইন্দ্রসান্তঃ প্রবিশ্য সম্পাদ্যিয়ামি আর্থণ অভেদন্দনেন " অহংমন্ত্রভবম্" ইতাদি বদ্ধমেবেক্তরপী ভূষা করিষ্যামীতি ভাগঃ ॥ ২৪ ॥ তৎ শ্রেষ্যেনহন্তথা গৃহীতব্যমিত্যর্থঃ ॥ ২৫ ॥

ইত্যারন্যকে পর্বানি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে এক নবতি ভ্যোহধ্যারঃ ॥ ৯০ ॥

ধনঞ্জনেতি—যোজায়েঃ যোজায়, ধর্মায়া ধর্মাদন পেতরা। ১।

* ব্রিয়েতাত্র—ধিয়েতি পাঠঃ ক-পুন্তকে।

ত্ব^ হি ধর্মানু পরানু বেশ্ব তপাংসি চ তপোধন!। শ্রীমতাঞ্চাপি জানাসি ধর্মাং রাজ্জাং সনাতনম্॥ ২॥ স ভবান পরমং বেদ পাবন পুরুষ প্রতি। Cजन সংযোজয়েথাসু তীর্থপুণ্যেন পাগুবান্॥ ৩॥ যথা তীর্থানি গচ্ছেত গাশ্চ দদ্যাৎ স পার্থিবঃ। তথা সর্বান্মনা কার্য্যমিতি মা মর্জ্জুনোহত্রবীৎ॥ ৪॥ ভবতা চামুগুপ্তোহসৌ চরেক্তীর্থানি সর্বাশঃ। রক্ষোভ্যো রক্ষিতবাল ছুর্গেষু বিষমেষু চ।। ৫।। मधीह हैव (मरवन्त्र- यथा हाल्यां ऋता त्रिम् । তথা রক্ষয় কৌতের।নাক্ষসেভ্যো দিজোত্তম !। ৬। যাতৃধানা হি বহুবো রাক্ষসাঃ পর্ব্বতোপমাঃ। ত্বয়াভিগুপ্তান্ কৌন্তেয়ান্ নাভিবর্তেয়ুরন্তিকাৎ ॥ १॥ সোহহমিক্রতা বচনালিয়োগদের্জ্জুনতা চ। রক্ষমাণো ভয়েভ্যস্তাং চরিষ্যামি স্বয়া সহ॥ ৮॥ षिञ्जीर्थानि ময়। পূর্বে পৃষ্টানি কুরুনন্দন!। ইনং তৃতীয় জক্যামি তানোৰ ভবতা সহ ॥ ৯॥ ইয়ং রাজর্ষিভি র্যাতা পুণ্যক্ষদ্ভি র্যুধিষ্ঠির !। মন্বাদিভিশাহারাজ ! তার্থবাতা ভরাপহা॥ ১০॥ नानुकू निक्र ठाका ह नार्विता न ह नानुक्र । স্নাতি তীর্থেষু কৌরব্য। ন চ বক্রমতি র্নরঃ ॥ ১১ ॥ ্ত্বস্তু ধর্ম্মাতি।নিত্যং ধর্মজ্ঞঃ সত্যসঙ্গরঃ। বিখুক্তঃ সর্বাসম্ভাগ ভুয় এব ভবিষাসি ॥ ১২ ॥

॥ ২ ॥ পুৰুষং প্ৰতি পুৰুষদ্যেতাৰ্থঃ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ७॥ ৭ ৮ ॥ দ্বিঃ দ্বিবারং, তৃতীয়ব তৃতীয়বারম্ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ সত্য সন্ধরঃ সত্য বজ্ঞঃ " যান্যেব সংগ্রামনামানি তান্যেব যক্ত নামানি" ইতি যাক্ষবচনাং ॥ ১২ ॥

यथा ज्ञीतर्था ताजा ताजानक गरामयः। যথা যয় তিঃ কৌন্তেয় ! তথা স্বমপি পাণ্ডব !"-॥ ১৩॥ যুগিন্তির উবাচ। "ন হর্ষাৎ সংপ্রপশ্যামি বাক্যস্যাম্যোত্তরং ক্রচিৎ। স্মরেদ্ধি দেবরাজো য় কো নাম হ ভাধিকস্ততঃ! ॥ ১৪॥ ভবতা সঙ্গমো যদ্য ভ্রাতা চৈব ধনপ্রয়ঃ। বাসবঃ শ্বরতে য্স্য কো নামাহভ্যধিকস্ততঃ ! ॥ ১৫॥ যচ্চ মাং ভগবানাহ তীর্থানাং দর্শনং প্রতি। ধৌম্যস্থ বচনাদেষা বুদ্ধিঃ পূর্ববং কুতৈব মে। ১৬। **তদ্বদা মন্যাদে ব্ৰহ্মন্! গমন স্তীৰ্থদৰ্শনে। उरेनव श**ेखां को श्रीताच (म निक्त अतः अतः अतः भारित ॥ বৈশস্থায়ন উবার। গমনে ক্লতবুদ্ধিন্তং পাগুৰং লোমশোহত্ৰবীৎ। " লঘুর্ভব মহারাজ ! লঘুঃ স্বৈরং গ্যিষ্যদি"—॥ ১৮॥ যুদিষ্ঠির উবাচ। ' ভিক্ষাভুজো নিবর্ত্তবাপ ব্রাহ্মণা যতয়ক্ষ যে। কুকুফাধশ্রমায়াস শীতার্ত্তি মসহিষ্ণবং ॥ ১৯॥ তে সর্বে বিনিবর্ত্তরাং যে চ মিফ ভুজা দ্বিজাঃ। পকান্নলেছপানানাং মাংসানাঞ্চ বিক্পেকাঃ ॥ ২০॥ তেহপি সর্বে নিবর্ত্তরাং যেহপি স্থদানুষারিনঃ। ময়া যথোচিতা জাবৈয়ঃ সংবিভক্তাশ্চ রুক্তিভিঃ ॥ ২১ ॥

শ্বতরা খ্রণ মহারাজ মভিগচ্ছ তে চ বৈ ॥ ২২ ॥
॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ লঘুঃ অম্পাধারবারঃ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ বিকশাকাঃ খুক্তা খুক্তা বিভাজকাঃ ॥ ২০ ॥ আজীবৈরঃ ভূত্যাদিভিঃ, ব্রক্তিজি বিন হেতুভি বনাদিভিঃ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥

যে চাপানুগতাঃ পৌরা রাজভক্তি পুরংসরাঃ 1

স দাক্ততি যথাকাল মুচিতা যস্য যা ভৃতিঃ।
স চেদ্ধথোচিতাং বৃদ্ধি ন দদ্যান্মমুজেশ্বরঃ॥২৩॥
অন্মং গ্রিয়হিতার্থায় পাঞ্চালো! বং প্রদাক্ততি"—॥২৪॥
বৈশন্দ্রনান উবাচ।
উত্তো ভূয়িষ্ঠশং পৌরা গুরুভারপ্রপীডিতাঃ।
বিপ্রাশ্চ যতয়ো মুখ্যা জগ্মুর্নাগপুর্ব প্রতি॥২৫॥
তান সর্বান্ম ধর্মর জক্ত প্রেমা রাজাম্বিকাম্পতঃ।
প্রতিজ্ঞাহ বিধিবদ্ধনৈশ্চ সমতপ্রৎ॥২৬॥
ততঃ কুন্তীস্থতো রাজা লঘুভিত্রাহ্মাণেঃ সহ।
লোমশেন চ স্প্রীত জ্রিরাত্রং কাম্যকেহবস্থ॥২৭॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থ্যাত্রা পর্বাণি যুখিষ্ঠিনতীর্থ্যতামন্ত্রণ

বৈশস্পায়ন উগাচ।

ততঃ প্রান্তং কৌন্তের ত্রাহ্মণা বনবাসিনঃ।
আভিগম্য তদা রাজনিদং বচনমক্রবন্ ॥ ১ ॥
"রাজং স্তার্থানি গন্তাসি পুণ্যানি ভাতৃভিঃ সহ।
খাষণা চৈব সহিতো লোমশেন মহাহ্মনা ॥ ২ ॥
আন্মানপি মহারাজ! নেতুমইসি পাগুব!।
আন্মাভিদ্ধিন শক্যানি অদূতে তানি কৌরব!॥ ৩ ॥
॥২৩ ॥ পাঞ্চালো ক্রপদঃ, বঃ মুম্বভাম্ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥
ইত্যারশ্যকে পর্কানি নৈলকগীরে ভারত ভাব দীপে দিনবতি
তমোহধায়ঃ॥ ৯২ ॥

তত ইতি—॥১॥২॥৩॥

শ্বাপদৈ রুপস্টানি তুর্গানি বিষমানি চা অগম্যানি নরৈ রপৈস্তীর্থানি মনুজেশ্র!। । ।।। ভবতো ভাতরঃ শুরা ধরুর্দ্ধর বরাঃ সদা। ভবন্তিঃ পালিত। শূরৈ গচ্ছেম বয়মপ্রাত। ৫॥ ভবৎ প্রসাদাদ্ধি বয় - প্রাপ্নামঃ স্থ - ফলম্ *। जीर्थानाः शृथिवीशाल ! वनानाकः विशालाटा ! ॥ ७॥ তব বীর্যাপরিকাতাঃ শুক্ষার্থপরিপ্লুতাঃ। ভবেম ধূতপাণান স্তীর্থদন্দর্শনান্ধ! ॥ ৭॥ ভবানপি নরেন্দ্রস্য কার্ত্তবীর্ঘ্যস্য ভারত।। अक्रिका ह ताक्र द्यं त्वामभाषमा देव इ ॥ ৮॥ ভরতস্য চ বীর্দ্য সাধ্বভৌমস্য পার্থিব!। ধবং প্রাপ্যাতি তুষ্পাপান লোকাংস্তীর্থপরিপ্লভঃ॥ ৯॥ প্রভাসাদীনি তীর্থানি মহেক্রাদীংশ্চ পর্বতান্। शक्रामाः महिल्लेक सकामीः क वनम्भजीन् ॥ >०॥ ত্বয়া সহ মহীপাল! দ্রক্ মিচ্ছামহে বয়ম্। যদি তে ব্ৰাহ্মণেম্বস্তি কাচিৎ প্ৰীতি জনাধিপ ! ॥ ১১ ॥ কুরুক্ষিপ্রন বচোহস্মাকন ততঃ প্রেয়োহভিপৎস্যসে। তীর্থানি হি মহাবাহো। তপোবিশ্বকরৈঃ সদা॥ ১২ ॥ অনুকীর্ণানি রক্ষোভিত্তেভ্যোন স্ত্রাতুমর্হাস। তীর্থ।ক্যুক্তানি ধৌম্যেন নারদেন চ ধীমতা ॥ ১৩॥

হুৰ্গণি ক টকাদ্যাক্রান্তথাৎ, বিষমাণি হিংজ্ঞ ব্যাহ্রাদ্যাহ্বতথাক্ত ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ অনুকীর্ণানি, ব্যান্তিনি, নঃ জন্মান্
ভাতৃং অর্থান সমর্থোভনসীতাবলঃ ॥ ১৩ ॥

^{*} শুভং ফলমিতি ছ-চ-পুস্তকে।

যানুবোচ চ দেবর্ষি র্লোমশঃ স্থমহাত্যাঃ।
বিধিবজ্ঞানি সর্বাণি পর্যাটস্থ নরাধিপ।॥ >৪॥
ধূতপাপ্যা সহাম্মাভি র্লোমশেনাভিপালিতঃ"—।
স রাজা পূজামানস্থৈ ইর্ষাদ গুপরিপ্লারতঃ।
ভীমসেনাদিভি ববির্জ্ঞাতৃভিঃ পরিবারিতঃ।
বাচ মত্যত্রবীৎ সর্বাং স্তানুষীন পাগুবর্ষভঃ॥ >৬॥
লোমশং সমনুজ্ঞাপ্য ধৌমাক্ষৈব পুরোহিত্য।
ততঃ স পাগুবশ্রেষ্ঠো ভাতৃভিঃ সহিতো বশী॥ >৭॥
ডৌপদ্যা চানবদ্যাঙ্গা। গমনায় মনো দধে।
অথ ব্যাদো নহাভাগস্তথা পর্বতনারদৌ , ১৮॥
কাম্যকে পাগুবং দুফু স্মাজগ্র্মনীষিণঃ।
তেবাং যুধিন্ঠিরো রাজা পূজাঞ্চক্রে যথাবিধি।
সংক্রান্তে মহাভাগা যুধিন্ঠির মথ হক্রবন—, ১৯॥
খবর উচুঃ।

' যুধিন্তির ' যমো ! ভীম ! মনসা কুরুতার্জ্রবন্ ।
মনসা কুতশোচা বৈ শুদ্ধান্তীর্থানি যাসথে ॥ ২০ ॥
শরীরনিয়মং প্রাক্তব্যক্ষণা মানুষং ব্রতম্ ।
মনোবিশুদ্ধাং বুদ্ধিঞ্চ দৈব মান্তব্য তং দিজাং ॥ ২১ ॥
মনো হুজুই শুদ্ধানার পর্য্যাপ্তং বৈ নরাধিপ ! ।
মৈত্রাশ বুদ্ধিশ সমাস্থায় শুদ্ধান্তীর্থানি ক্ষ্যুথ ॥ ২২ ॥
তে যুয়ং মানসৈং শুদ্ধাং শরীরনিয়মব্রতৈং ।
দৈবং ব্রতং সমাস্থায় যথোক্তশ ক্লমাপ্যাথ' — ॥ ২০ ॥

॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ আ্জ বিং ঋজু বুদ্ধি আৰু শিক্তাৰ্থঃ॥ ২০॥ ॥ २১ ॥ २२ ॥ २७ ॥

^{*} ইত: পরং '' বৈশম্পায়ন উবাচ" ইত্যধিক পাঠ: ক-পুত্তকে।

তে তথেতি প্রতিজ্ঞায় ক্লফয়া সহ পাপ্তবাং।

- দ্বতম্বস্তারনাং সর্বে মুনিভি দিব্যমানু বৈ: ॥ ২৪॥
 লোমশস্যোপসংগৃহ পাদৌ দ্বৈপারন্য্য চ।
 নারদ্যা চ রাজেন্র দেবর্বেঃ পর্বত্য্য চ॥ ২৫॥
 ধৌম্যেন সহিতা বীরা স্তথা তৈ ব্রন্থানিভি:।
 মার্গণীর্ব্যমতীতারা শুষ্টেন প্রযুস্ত তঃ॥ ২৬॥
 ক্রিন্নি সমাদার নীরাজিনজটাধরাঃ।
- অভেল্যাঃ কব চৈযুক্তান্তীর্থান্যন্থচরংস্ক তঃ ॥ ২৭ ॥
 ইক্রসেনাদিভি ভূ তৈয় রথৈঃ পরিচতুর্দ্দিশাঃ !
 মহানস-ব্যাপৃতৈক্ষ তথাহন্যাঃ পরিচারকৈঃ ॥ ২৮ ॥
 সায়ুবা বদ্ধনিস্তিংশাস্তূণবন্তঃ সমার্পণাঃ ।
 প্রাপ্ত মুখাঃ প্রযযু বীরাঃ পাগুবা জনমেজর ! ॥ ২৯ ॥
 ইত্যারণ্যকে পর্বাণ তীর্থমাত্রাপর্বাণ যুবিষ্ঠিরতীর্থমাত্রায়াং
 ত্রিনবভিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩ ॥

যুগিষ্ঠির উব্চ।

" ন বৈ নিগুলমাত্মান মন্যে দেবর্ঘিসন্তম!। তথান্মি ছঃখসন্তপ্তো যথা নান্যো মহীপতিঃ ॥ ১॥

॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ কঠিনানি যকীঃ কাঠাতি মহারাক্ত প্রাসদ্ধানি, অন্যেতু শিকানি করণ্ডানিবেতি ব্যান্ধ্রঃ, পরিচতুর শৈং পঞ্চদশভিঃ চতুর্দশভাঃ পরি উপরি ইতে ব্যুৎপত্তেঃ, সংখ্যা ব্যয়াস নতি সমাসঃ, বহুবীহো সং-খ্যের ডজিভিড্ছ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥

ইত্যারন্যকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিনবতি তমোধ্যায়ঃ॥ ১৩॥

নবা ইতি-নিগুণং উত্তমগুণ হীন্ম তথাপীত্যধাহিত যোজনীয়ন্ ॥ ১ ॥

পরাংক্ষ নিগু বালান্যে ন চ ধর্ম্মগতানণি। তে চ লোমশ ! লোকেংশিন্ন_্ধ্যন্তে কেন হেতুনা ?"—॥ ২<u>ঁ</u>॥ (मायन छवाइ। ' नाजकृश्येः ज्ञा द्वाञ्जन् ! कार्याः भार्थः । कथकन । यनधर्मा वर्षायु व्रधर्मक्रिक्टा कनाः॥ ०॥ বৰ্দ্ধতাধৰ্মেণ নর স্ততো ভক্রাণি পশ্যতি। ততঃ সপত্ন ন জয়তি সমূলস্ত বিনশ্যতি॥ ৪ ॥ ময়া হি দৃষ্টা দৈতেয়া দানব। শ মহীপতে !। . বর্দ্ধমান। হাধর্মেণ ক্ষয়ঞোপগতাঃ পুনঃ ॥৫॥ পুর। দেবযুগে চৈব দৃষ্টং সর্বাং ময়া বিভো।। অরোচয়ন্ সুরা ধর্মং ধর্ম > তত্যজিরেহসুরাঃ॥ ৬॥ তীর্থানি দেবা বিবিশু নাবিশনু ভারতাহস্থরাঃ। তানধর্মকতো দর্পঃ পুর্বমের সমারিশং ॥ १ ॥ দর্পানানঃ সমভবন্মানাৎ ক্রেংধা ব্যক্ষায়ত। ক্রোধাদক্রা স্ততোহলজ্ঞা রুত্তণ তেবাং ততোহনশং। ৮॥ তানলজ্জানু গতক্লীকানু হানরুত্তানু রুপবেতানু। क्रमा लक्क्यों क धर्मा क निवाद अड ए उड़ा । ठ ॥ लक्षील (प्रवानश्य प्रवक्षी इसूहान्य।। তানলক্ষীসমাবিষ্টানু দর্পেপিহতচেত্রসঃ॥ > ॥ দৈতেয়ানু দানবাং কৈব কলি রপ্যাবিশৎ ততঃ। তানলক্ষীসমাবিফানু দানবান্ কলিনা ২তান্॥ ১১॥ পরান্ শকুন্ ॥ २ ॥ ७ ॥ मधुनः পুত্রপৌরাদি বংশর্বন র্প- তৎসহিতঃ ॥ ८ ॥ ॥ «॥ ७ ॥ विविधः स्नार्थ भाउरमञ्डः अथय खोर्यनावार श्रादनेक खर কত প্ৰধৰ্মকতঃ, অধ্যেণ কৃত উপপাদিতে। বা দৰ্পঃ গৰ্মন্ততে। ম নঃ পুজোহশীতি বুৰিঃ ৭ ৷ ততঃ পুৰুষো অদাতে প্ৰতিবাতে বা ক্লোধঃ, **७७ वडीः वकार्ता वहात-७७ वनका नका-निमाण ताराख्यः** वा जमा मानः॥ ० ॥ बाज्यार भी बट्यव ॥ ३ ॥ ३० ॥ ३० ॥

দর্পাভিভূতান্ কৌন্তেয়! ক্রিয়াহীনানচেতসঃ। মানাভিভূতানচিরাদ্বিনাশঃ সমপদ্যত ৷ ১২ ৷ নিৰ্যশক্ষান্তথা দৈত্যাঃ কুৎস্কশো বিলয়ৎ গতাঃ। দেবাস্ত সাগরা ১ শৈচব সরিভশ্চ সরাংসি চ ॥ ১৩ ॥ অভ্যগচ্ছন্ ধর্মশীলাঃ পুণ্যান্যায়তনানি চ। তপে।ভিঃ ক্রভুভি দানৈ রাশীকাদৈশ্চ পাগুব! । ১৪॥ প্রজন্থঃ সর্বাপানি ভায়শ্চ প্রতিপেদিরে। এব মাদানবন্তুশ্চ নিরাদানাশ্চ সর্বকশঃ ॥ ২৫ ॥ তীর্থ,ন্যপচ্ছন্ বিবুধা স্তেনাপু ভূতি মুন্তমান্। তথা স্বমপি রাজেন্দ্র ! স্বাস্থা তীর্থেষু সামুজ: ॥ ১৬ ॥ পুন ৰ্বেৎসাসি তাং লক্ষ্মী মেষ পন্থাঃ স্নাতনঃ। यरेथव हि नुरना बाका मिविरबोभीनरबो यथा ॥ ১৭ ॥ ভনীরথো বস্থমনা গয়ঃ পুরুঃ পুরুরবা:। চরমাণা স্তপো নিতাং স্পর্শনাদস্তদক্ষ তে। ১৮॥ তীর্থাভিগমনাৎ পূতা দর্শনাচ্চ মহাত্মনাম। অলভন্ত যশঃ পুণ্যং ধনানি চ বিশাম্পতে !॥ ১৯॥ তথা ত্বমপি রাজেন্দ্র ! লকু। স্থবিপুলা । ভারম্। यथा (ठका कू तज्व मशूख कनवा स्वतः ॥ २०॥ মৃচুকুন্দে হথ মান্ধাতা মরুভক্ষ মহীপতিঃ। कीर्तिः भूगा मिनम्ख यथा (प्रवा खर्भावनार ॥ २)॥

॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ আদিনবন্তঃ আর্জবাদি-নিয়ম গ্রহণবন্ধঃ, নিরাদানাঃ অপ্রতিবন্ধাঃ, সর্ববণঃ দেবাদিতি রপি ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ বেৎদ্যাস উপলপ্দ্যদেইতার্থঃ ॥ ১ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

^{* &#}x27;' সপুত্ৰধন বান্ধ ?ঃ।" ইতি প্ল-পাঠঃ।

দেবর্ষয়ক কাংস্ক্রোন তথা ত্বমপি বেৎস্যসি।
ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ত্রধর্মেণ মোহেন চ বশীক্ষতাং।
নচিরাকৈ বিনক্ষ্যান্তি দৈত্যা ইব ন সংশয়ং"॥ ২২ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি যুধিন্ঠিরতীর্থগমনে
চতুর্নবভিত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৯৪॥

বেশপায়ন উবাচ।
তে তথা সহিতা বীরা বসন্তস্ত্র তত্র হ।
ক্রমেণ পৃথিবীপাল ! নৈমিষারণ্য মাগতাঃ ॥ ১॥
ততন্তীর্থেষু পুণ্যেষু গোমত্যাঃ পাগুবা রূপ! ।
ক্রতাভিষেকাঃ প্রদত্ন গাঁশ্চ বিজ্ঞ ভারত !॥ ২॥
তত্র দেবান পিতৃন বিপ্রাংস্তর্পয়িত্বা পুনঃ পুনঃ ।
কন্যাতীর্থেইশ্বতীর্থে চ গবাং তীর্থে চ ভারত !।
কালকোট্যাং বিষপ্রস্থে গিরাবুষ্য চ কৌরবাঃ ॥ ৩॥
বাহুদায়াং মহীপাল ! চকুঃ সর্বেহভিষেচনম্ ।
প্রমাণে দেব্যজনে দেবানাং পৃথিবীপতে ! ॥ ৪॥
ভিষু রাপ্লাত্য গাত্রানি তপশ্চাতস্কু ক্রন্তমন্ ।
গঙ্গায়মুনয়োশ্চিব সঙ্গমে সত্যসঙ্গরাঃ ॥ ৫॥
বিপাপ্যানো মহাত্মানো বিপ্রেভ্যঃ প্রদত্ন বিস্ন ।
তপন্ধ-জনজুষ্টাঞ্চ ততো বেদীৎ প্রজাপতেঃ ॥ ৬॥
॥ ২২॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে • চতুর্নবভিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৯৪ ॥

তে তথেতি—॥ ১ ॥ কৃতাভিষেকাঃ বিধিনাশ্বাতাঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ "্বস নি-বাসে" অক্তরপন্॥ ও ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥

জগাঃ পাওুমুভা রাজন ! ব্রাহ্মণেঃ সহ ভারত।। তত্ত তে ন্যবসন্ বীরাস্তপশাতস্কুজমম্॥ ৭॥ সন্তর্পয়ন্তঃ সততং বন্যেন হবিষা ছিজান। ততো মহীধরং জগুমুর্শ জেনাভিদ স্ভুতম্ ॥ ৮ n রাজর্ষিণা পুণাক্কতা গয়েনানুপমত্যুতে।। নগো গয়শিরে। যত্র পুণ্যা চৈব মহানদী॥ ৯॥ বানীরমালিনী রম্যা নদী পুলিনশোভিতা। দিবা পবিত্র কুটঞ্চ পবিত্রং ধরনীধরম্ ॥ >• ॥ * श्रविक्षे रे स्था अखीर्थः बक्त महा खिम् । অগস্ত্যে ভগবান যত্ৰ গতো বৈবন্ধতং প্ৰতি ॥ ১১॥ উবাস চ স্বয়ং তত্র ধর্মারাজঃ সনাতনঃ। সর্বাসাং সরিতাঞৈব সমুদ্রেদে। বিশাল্পতে! ॥ ১২ ॥ তত্র সন্নিহিতো নিত্য মহাদেবঃ পিনাকধ্ব । তত্র তে পাগুবা বীরাশ্চাতুর্ম্মাস্যৈ স্তদেজিরে॥১৩। ঋষিযজ্ঞেন মহতা যতাক্ষরবটো মহানু। व्यक्तरत्र (प्रवेषक्रांत व्यक्तरः यद्य देव कलम् ॥ ১৪ ॥ তে তু তত্তোপবাসা স্ত চকুর্নিন্টিতমানসাঃ। ব্ৰাক্ষণান্তৰ শতশঃ সমাজগান্তপোধনাঃ॥ ১৫॥ চাতুর্মাস্যেন্যকন্ত আর্ষেণ বিধিনা তদা। তত্র বিদ্যাতপোরন্ধা ত্রাক্ষণা বেদপারগাঃ। কথা প্রচক্রিরে পুণ্যা পদিস্থা মহাত্মনাম্॥ ১৬॥ তত্র বিদ্যারভন্মতেঃ কৌমারং ব্রভ মান্থিতঃ। শনঠেহেকথয়জাজনামূর্ত্ররস্ণ গর্ম্"—॥ ১৭॥

॥ १॥ ৮ ॥ ৯ ॥ বানীর মালিনী বেত্র পঙ্কিয়ুকা ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ শমঠ উবাচ।

" অমূর্ত্ত-রয়সঃ পুজো গয়ো রাজর্ষিসভ্তমঃ। পুণ্যানি যস্য কর্মাণি তানি মে শৃণু ভারত। ॥ ১৮ ॥ যস্য যজ্যে বভূবেহ বহুরে। বছদক্ষিণঃ। যতালপ্রবৃতা রাজনু ! শতশোহ্থ সহস্রশঃ ॥ ১৯॥ মৃতকুলাশ্চ দধুশ্চ নদ্যো বছশতান্তথা। ব্যঞ্জনানান প্রবাহান্দ মহাহাণান সহস্রদঃ। ২০॥ অহনাহনি চাপ্যেবং যাচতাং সম্প্রদীয়তে। অন্যে চ ব্রাহ্মণা রাজন্ । ভুঞ্জতেইনং স্থানংক্তম্ ॥ ২১ । তত্র বৈ দক্ষিণাক।লে ব্রন্ধঘোষো দিবং গভঃ। ন চ প্রজ্ঞায়তে কিঞ্চিদ্র ক্ষশব্দেন ভারত !॥ ২২ ॥ পুণ্যেন চরতা রাজনু ! ভূদিশঃ খণ নভস্তথা। আপূর্ণমাসীচ্ছকেন তদপ্যাসীমহাদ্রতম্ ॥ ২৩ ॥ তত্র স্ম গাথা গায়ন্তি মনুষ্যা ভরতর্বভ!। অনপানৈ: শুভৈ স্তৃপ্তা দেশে দেশে স্বর্চসঃ॥ ২৪॥ ' গয়স্য যজ্ঞে কে স্থদ্য প্রাণিনো ভোক্ত মীপ্সবঃ! তত্র ভোজনশিষ্টস্য পর্বতাঃ পঞ্চবিংশাতঃ ॥ ২৫॥ न ७९ शूर्त्व कनाम्छकु नं कित्रवाश्वि हार्शित । গয়ে। যদকরোদ্রজ্ঞে রাজর্ষি রমিডছ্যুতিঃ। ২৬। কথম্ভ দেবা হবিষা গয়েন পরিভর্পিতাঃ। পুनः मकाखापानाजू मरेना मंखानि कानिहिर !-। २१॥ সিকতা বা যথা লোকে যথা বা দিবি তারকাঃ। যথা বা বর্ষতো ধারা অসম্বোয়াঃ স্ম কেন।চৎ। তথা গণয়িতুং শক্যা গয়যজ্ঞে ন দক্ষিণাঃ॥ ২৮॥

এব বিধাঃ সূবহব স্তম্ভ যজ্ঞা মহীপতেঃ।
বভূবু রস্তা সরসঃ সমীপে কুরুনন্দন। "—॥ ২৯॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি গ্রয়স্তক্ষণনে
পঞ্চনবভিত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৯৫॥

বৈশাপায়ন উবাচ।
তিঃ সংপ্রস্থিতো রাজা কৌস্তেয়ো ভূরিদক্ষিণঃ।
অগস্ত্যাপ্তম মাসাদা ভূজ্মায়া মুবাস হ ॥১॥
তত্তিব লোমশন রাজা পপ্রচ্ছ বদত মুরঃ।
' অগস্তোনেহ বাতাপিঃ কিমর্থ মুপশামিতঃ ?॥২॥
আসীষা কিন প্রভাবশ্চ স দৈত্যো মানবাস্তকঃ।
কিমর্থপোদিতো মন্যু রগস্তান্ত মহাত্মনঃ ?"—॥৩॥

लामन छेवाह।

' ইললো নাম দৈতের আসীৎ কৌরবনন্দন!।
মণিমত্যান পুরি পুরা বাতাপিস্তস্থ চামুজঃ॥৪॥
স ব্রাধ্বণন তপোযুক্ত মুবাচ দিতিনন্দনঃ।
'পুত্রন মে ভগবানেক মিক্রভুল্যন প্রযক্ততু"॥৫॥
তন্মিন স ব্রাধ্বণো নাদাৎ পুত্রন বাসবসন্মিতম্।
চুক্রোধ সোহস্বস্তস্থ ব্রাধ্বণস্থ ততো ভূশম্॥৬॥
তদাপ্রভৃতি রাজেক্র! ইল্লো ব্রহ্মহাস্করঃ।
মন্ত্রমান ভাতরং ছাগং মায়াবী স্করোক্তভঃ॥৭॥
॥২১॥

ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলকণ্ঠীরে ভারত ভাবদীপে পঞ্চনবভিতমোহধার: ॥ ১৫ ॥

তত ইতি— হুৰ্কারাং বাতাপি পুর্যাষ্ মণিমতী সংজ্ঞারান্॥ ১॥ ২॥
॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ নাদাং ন দতবান্॥ ৩॥ ৭॥

মেষৰাপী চ বাতাপিঃ কামৰপাত্তবৎ ক্ষণাৎ। সম্স্কৃত্য চ ভোজয়তি ততো বিপ্রাম জিঘাংসতি । ৮॥ স চাহ্বয়তি ষ^ বাচা গতং বৈবস্বতক্ষয়ম্। স পুনর্দেহ মাস্থায় জীবন্ সংপ্রত্যদুশাত ॥ ৯ ॥ ততো বাতাপি মন্থর ছাগং ক্রত্বা স্থানংক্তম। তং ব্রাহ্মণং ভোজয়িত্ব। পুনরের সমাহ্বয়ৎ॥ ১০॥ তা মিল্পলেন মহতা স্বরেণ বাচ মীরিতাম্। জ্বাতিমায়ো বলবান্ ক্ষিপ্রং ব্রাহ্মণকন্টকঃ ॥ ১১ ॥ তম্ভ পাশ্বং বিনির্ভিদ্য ব্রাহ্মণস্থ মহাস্কুরঃ। বাতাপিঃ প্রহসন্ রাজন্। নিশ্চক্রাম বিশাম্পতে। ॥ ১২ ॥ এবং স ব্রাহ্মণানু রাজন্ ! ভোজয়িত্বা পুনঃ পুনঃ। हिंश्त्रयामात्र टेनट्डब इंबटना प्रुक्टेट्डनः ॥ ১৩॥ অগন্ত্যশ্চাপি ভগবানেতিশান্ কাল এব তু। পিতৃন্ দদর্শ গর্ভে বৈ লম্মানানধামুখান্ ॥ ১৪ ॥ নোহপুছলম্বানাশ্স্তান্ ভবন্ত ইব কম্পিতাঃ #। সন্তানহেতো রিতি তে প্রত্যুত্ত ক্ষবাদিন: ॥ ১৫ ॥ তে তক্ষৈ কথয়।মাস্তু র্বায়ন্তে পিতরঃ স্বকাঃ। গৰ্ভ মেত মনুপ্ৰাপ্তা লয়।মঃ প্ৰস্বাৰ্থিন: ॥ ১৬॥ যদি নো জনয়েথাস্ত্র মগস্তাপতা মুক্তমম্। -স্যানোহস্মারি ময়ানোক্ষ স্তুক্ত পুত্রাপুরা গভিম্। ১৭॥

কামরপী মথাকামংরপাণি কর্কুংসমর্থঃ, সংস্কৃত্যঃ, পক্ত্রা ॥৮॥ সচ ইন্ত্র ক্ষা ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১০॥ ১৪॥ সোপুর্জ্ব দিতি—তান্তবং লম্বমা নেন রপেণ তেষামুদ্ধবং অপুদ্ধং পুদ্ধতি দিক্ষা, কিমর্থং যুরং লম্বর্ধ মিতাহপুদ্দিতার্থঃ, তেঁ এবঃঃ কম্পিতাইন সন্তঃ, তে তন সন্তান হেতো রয় মন্মাকংতন ইতি প্রসূচুরি ত সম্বন্ধঃ॥ ১৫॥ এত স্যৈব বিবরণং তে তন্মা ইতি—॥ ১৬॥ ১৭॥

^{* &}quot; ভবস্ত ইহ |কংপারাঃ !" ইতি ক-ম পুস্তকে।।

স তামুবাচ তেজস্বী সত্যধর্মপরায়ণঃ। করিষ্যে পিতরঃ কামং ব্যেত্ বো মানসো জ্বঃ। ততঃ প্রদাবসন্তানং চিন্তয়ন্ ভগবান্ষি;। আত্মনঃ প্রসবস্যার্থে নাপশ্যৎ সদৃশীং ব্রিয়মূ॥ ১৯॥ স তম্ভ তস্য সভুস্ত তত্তদক্ষ মনুত্মম্। স পৃষ্ তৎদমৈ রকৈ নিশ্মমে স্তিয় মৃত্তমাম্ ॥ ২০॥ স তাং বিদৰ্বরাজম্ম পু<u>ক্রার্থং ত</u>পাত স্তপ**্**। নিশ্মিতামাত্মনোহ্থায় মুনিঃ প্রাদান্মহাতপাঃ॥ ২১॥ সা তত্ত্ৰ জড়ে স্থভগা বিছুৎে সৌদামিনী যথা। বিজ্ঞানমানা বপুষা ব্যবন্ধত শুভাননা॥ ২২॥ জাতমাত্রাঞ্চ তা পুষ্টা বৈদৰ্ভ্য পৃথিবীপতিঃ। প্রহর্ষেণ দ্বিজাতিভ্যো ন্যবেদয়ত ভারত ।॥ ২৩॥ অভ্যনন্দত তাৎ সর্ব্বে ব্রাহ্মণা বসুধাধিণ।। লোপাযুদ্রেতি তস্যাশ্চ চক্রিরে নাম তে দ্বিজাঃ ॥ ২৪॥ বরুধে সা মহারাজ ! বিভ্রতী ৰূপ মুভ্রম্। यां श्रादश्मितनी भीख मर्यात्रव भिथा खडा ॥ २०॥

বঃ যুমাকং কামং দিলেতং করিবো ॥ ১৮॥ প্রসব সন্তানং সন্ততে রবিচ্ছেদ্য ॥ ১৯॥ তস্য তস্য সিংছ ম্বাদেঃ, অলং কটি-দৃষ্টাদি, সর্বপ্রথানি তার্থঃ ॥ ২০॥ ২১॥ জজে জাতা, সোদামনীতি বিশেষায়—বিহ্যাদিতি
বিশেষায়—ছাতি বিশেষাে পপাদনার্থা, " কুর্যাং ছরুসাালি পিনাক
পাণে ধৈর্য চাতিং কে মম ধ ৰনোহনাে ?"—ইত্যাদি পিনাক পাণিপদং
উর্জিত-চাপবত্ত্ব দ্যোতনার্থ মুপক্ষীনংসন্ ন বিশেষণ সমর্পণায়ালং ইতি
ছরস্যেতি পৃথা প্রযুক্তং তদ্দিহাপি বোধায়॥ ২২ ॥ ২৩॥ মুজানাং
তত্তম্ বাদি জাতি বাতানা মসাধারণানাং চিহ্লানাং কমনীর চকুষ্টাদ নাং
লোপইব লােণ্ ত্যিক্সারেং যয়। সা লােপা মুজা। তা ছতাংগাদিবং পূর্বানিপাতঃ, 'অনােমপিদৃশ্যত ইতি দীর্ঘঃ, প্রকারাত্বেদ যোগেছ—বেদে
পদপ্রি লাপ আমুদ্রেতাবগ্রহঃ স্যাংসচ ন দৃশাতে অত উক্ত বিধৈব মুংপর্ত্তি মুক্তা॥ ২৪॥ ২৫॥

তাং যৌবনস্থান রাজেন্দ্র ! শতং কন্যাঃ স্থলক্ষ্তাঃ ।

দাস্তঃ শতঞ্চ কল্যানী মুপতস্থ্রশানুগাঃ ॥ ২৬ ॥

দা সা দাসীশতর্কা মধ্যে কন্যা শতস্য চ ।

আত্তে তেজস্বিনী কন্যা রোহিনীব দিবি প্রভা ॥ ২৭ ॥

যৌবনস্থামপি চ তাং শীলাচার সমস্থিকাম্ ।

ন বব্রে পুরুষঃ কশ্চিন্তয়ান্তক্ত মহাত্মনঃ ॥ ২৮ ॥

দা তু সত্যবতী কন্যা রূপেণাপ্সরসোহপ্যতি ।

তোষরামাস পিতরন শীলেন স্থজন তথা ॥ ২৯ ॥

বৈদ্বীন্তি তথা যুক্তাং যুবতীং প্রেক্ষ্য বৈ পিতা ।

মনসা চিন্তয়ামাস কল্মৈ দদ্যা মিমান স্কৃতাম্'—॥ ৩০ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বনি তীর্থমাত্রাপ্রবিনি স্থানস্থোবেন

যগ্রতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৯৬ ॥

त्नामन छेगा ।

'ষদা অ্মন্যতাগস্থো গাৰ্স্যে তাং ক্ষমামিতি।
তদাভিগমা প্রোবাচ বৈদর্জং পৃথিবীপতিম্॥ >॥

"রাজনিবেশে বৃদ্ধির্মে বর্জ ত পুত্রকারণাং।
বরয়ে আং মহীপাল। লোপামুদ্ধাং প্রমৃদ্ধ মে "॥ ২॥
এবমুক্তং স মুনিনা মহীপালো বিচেতনঃ।
প্রত্যাধ্যানায় চাশক্তঃ প্রদাভুঞ্বে নৈচ্ছত ॥ ৩॥
বশাহ্গা ইচ্ছাহ্রপাঃ "বশ মিচ্ছা প্রভ্রাং" ইতিকোষঃ॥ ২৬॥
॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০॥

ইত্যার গাকে পর্বাণি নৈলগীয়ে ভারত ভাবদীপে ধর্ণতিত্বশাহধারেঃ॥ ১৬॥

यत्म जि-जामनाज देजित्वमः ॥ ३ ॥ नित्रतम विरोद्ध ॥ २ ॥ ७ ॥

ততঃ স ভার্য্যা মভ্যেত্য প্রোবাচ পৃথিবীপতি:। ও মহর্ষি বীর্যাবানেষ কুদ্ধঃ শাপাগ্নিনা দহেৎ ॥ ৪ ॥ (তৎ কিমিচ্ছিসি কল্যাণি। তত্ত্ব্ ক্রছি শুভাননে।"। তস্য তদ্বচন প্রাক্তবা রাজ্ঞী নোবাচ কিঞ্চন) *। তং তথা ছুঃখিতং দুষ্টা সভার্য্যং পৃথিবীপতিমু। लाशामुकां जिंगरमाम कारल वहन मद्यवी । e ॥ ওন মৎক্ততে মহীপাল। পীড়া মভ্যেত্ব মইসি। প্রযক্ত মা মগস্ত্যায় তাহ্যাত্মানং ময়। পিতঃ !"—॥ ৬॥ ত্রহিত ব্রচনান্তাজা সোহগস্ত্যায় মহাত্মনে। লোপামুক্তাং ততঃ প্রাদাদ্বিধিপুর্বাং বিশাম্পতে।॥ १॥ প্রাপ্য ভার্যা মগস্তাস্ত লোপামুদ্রা মভাষত। েমহাহাণ্যৎস্কৈতানি বাসাৎস্যাভরণানি চ "-॥ ৮॥ ততঃসা দশনীয়ানি মহাহাণি তহুনি চ। সমুৎসমর্জ্জ রস্তোরু কাসনান্যায়তেক্ষণা ॥ ১॥ তত শ্চীরাণি জ্ঞাহ বন্দলান্যজিনানি চ। সমান্ত্রতচ্ব্যা চ বছবায়তলোচনা॥ ১০॥ গঙ্গাদ্বার মথাগম্য ভগবানুষিসন্তম:। উত্র মাতিষ্ঠত তপঃ সহ পত্নানুকুলয়। ॥ ১১॥ সা প্রীতা বহুমানাচ্চ পতি পর্যাচরন্তদা। অগস্তাশ্চ পরাং প্রীতিং ভার্যাায়া মাচরৎ প্রভু: । ১২ ॥ ততো বছতিথে কালে লোপামুদ্রাং বিশাম্পতে!। তপসা দ্যোতিতাং স্নাতাৎ দদর্শ ভগবানুষিঃ ॥ ১৩॥ ৫॥ ৬॥ १॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ স্বাতাং ঋতা বিভিশেষ:

^{*} নান্তে ব পাঠঃ ক-পুস্তকে, কিন্তু ্যং পাশ্চাত্য পুস্তকে সন্তাৎ গৃহীতো-হয়ং ক্লাকো বুলস্থানে। অরং ক পুঞ্ক পাঠঃ।

শ ত্যাঃ পরিচারেণ শৌচেন চ দমেন চ।

শ্রিয়া রূপেণ চ প্রীতো মৈপুনায়াজুহাব তাম্॥ ১৪ ॥
ততঃ সা প্রাঞ্জলিভূ বা লক্জমানেব ভাবিনী।
তদা মপ্রণয়়ণ বাকাং ভগবন্ত মথা ব্রবীৎ॥ ১৫॥
• 'শ্রেসংশয়ং প্রজাহেতা,র্জার্যাং পতি রবিন্দৃত।
যা তু ত্বয়ি মম প্রীতি স্তামুষে! কর্তু মইসি॥ ১৬॥
যথা পিতুগু হৈ বিপ্র! প্রাসাদে শয়নং মম।
তথাবিধে বাং শয়নে মা মুপৈতু মিহাইসি॥ ১৭॥
ইচ্ছামি ত্বাং প্রানামং দ্বাভারণ ভূষতা॥ ১৮॥
তপাপ্ত যথাকামং দিবাভারণ ভূষতা॥ ১৮॥
তমাথা নোপতিষ্ঠেয়ং চীরকাষায়্বাসিনী।
নৈবাপবিত্রো বিপ্রর্ষে! ভূষণোহয়ণ কথাঞ্বন"—॥ ১৯॥
ত্বান্তা উবাচ।

েন তে ধনানি বিদ্যন্তে লোপামুক্তে ! তথা মম।
যধাবিধানি কল্যানি ! পিতৃস্তব স্থমধামে !" । ২০॥
লোপা মুজোবাচ।

"ঈশোহসি তপদা দৰ্বং দমাহর্জুং তপোধন।। ক্ষণেন জাবলোকে যদ্বস্থ কিঞ্চন বিদ্যতে"—॥ ২১॥

অগস্তা উবাচ।

'এবমেতদ্যথাপ দ্ব- তপোব্যয়করন্ত তং। যথা তুমে ন নশ্যেত তপস্তনাং প্রচেদিয়'—। ২২ ।

চারেণ দেবরা ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ভূষণোছরং চীর কাষা-য়াদি স্তপম্বিনাং শাংঘ্যাছরং সামগ্রী ক্লাপো ভোগ সপর্কেনাইপবিথে নৈব ভবত্বিভি শেষঃ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥

লোপামুদ্রোনাচ।

"জপোবশিষ্টঃ কালোহয় মৃতোর্ম্ম তপোধন!।
ন চান্যথাই মিচ্ছামি স্বামুপৈতু কথঞ্চন ॥ ২৩॥
ন চাপি ধর্ম মিচ্ছামি বিলোপ্তান্ত কথঞ্চন ।
এবস্তু মে যথাকামং সম্পাদয়িতু মইসি"—। ২৪॥
অগস্তা উগ্চ।

'যদ্যেষ কামঃ স্থভগে ! তব বুদ্ধা বিনিশ্চিত: । হর্তুং গচ্ছাম্যহং ভদ্রে ! চর কাম মিহ স্থিতা''—॥২৫॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি অগস্ত্যোপাখ্যানে সপ্তনবজিতমোহধ্যায়:॥৯৭॥

লোমশ উবাচ।

'ততো জগাম কৌরব্য! সোহগস্ত্যো ভিক্ষিতুং বস্তু।
ক্রতব্যাণ মহীপাল মং বেদাভাধিক নৃপৈ: । ১ ॥
স বিদিয়া তু নৃপতিঃ কুস্তবোনি মুপাগতম্।
বিষয়াত্তে সহামাত্যঃ প্রতাগৃহ্ছাৎ স্থমৎকৃতম্ ॥ ২ ॥
তথ্যৈ চার্যাং যথান্যায় মানীয় পৃথিবীপতিঃ।
প্রাঞ্জলিঃ প্রয়তো ভূত্বা প্রপ্রছাগমনেহর্থিতাম্'' ॥ ৩ ॥
স্বাস্তা উবাচ।

' বিস্তার্থিন মনুপ্রাপ্তং বিদ্ধি মাং পৃথিবীপতে!।

যথাশস্ত্যাহবিহিৎস্যানান্ সম্বিভাগং প্রযক্ষ মে"—॥ ৪॥

খতোঃ কালঃ বোড়শ দিনানি, তেরু অপ্পোহবর্ণিষ্টাঃ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তনবভি

তমেহধ্যায়ঃ ॥ ১৭॥

'

তত ইতি—যংবেদ বৈতি ॥ ১ ॥ বিষয়ান্তে দেশসীমান্তে ॥ ২ ॥ আগগমনে নিমিত্ত ভূতাং অথিতাং কিমিক্ছমাগতোহসীতি পপ্তক্ষ ইত্যথ: ॥ ০ ॥ ৪ ॥ লোমশ উনাচ।

"তত আয়ব্যযৌ পূনোঁ তক্মৈ রাজা নাবেদরং।
আতো বিদ্ধমপাদংস্থ যদত্র বস্থ মন্যসে॥ ৫॥
তত আয়ব্যয়ৌ দৃষ্ট্বা সমৌ সমমতিদ্ধিজঃ।
সর্বাথা প্রাণিনাং পীড়া মুপাদানাদমন্যত॥ ৬॥
স ক্রতবাণ মাদায় ত্রধুশ্ব মগমন্ততঃ।
স চ তৌ বিষয়স্যান্তে প্রত্যুক্তাদ্যথাবিধি॥ ৭॥
তয়োর্ষাঞ্চ পাদ্যক্ষ ত্রধুশ্বঃ প্রতাবেদয়ং।
অনুজ্ঞাপ্য চ পপ্রচ্ছ প্রয়োজন মুপক্রনে"॥ ৮॥

অগস্তা উ চে।

" বিস্তকামাৰিছ প্ৰাপ্তৌ বিদ্যাবাং পৃথিবীপতে!।

যথাশক্তাহবিহিংস্যান্যান্ সম্ভিত্তাগং প্ৰযক্ত নৌ"—. ৯॥

লোমণ উকাচ।

'তেত আয়বান্যো পূনে তাভ্যান রাজা ন্যবেদয়ং।
'অতা জ্ঞা তু গৃহ্ছাতং যদত ব্যতিরিচ্যতে' ॥ >०॥
তত আয়বায়ে দৃষ্ট্বা সমৌ সমমতিছিজঃ।
সর্বিধা প্রাণিনাং পীড়া মুপাদানাদমন্যত ॥ >>॥
পৌরুকুংসন ততো জগ্মু স্তাসদস্যং মহাধনম।
আগস্তাশ্চ প্রতর্বা চ ত্রধুশ্বশ্চ মহাপতিঃ ॥ >২॥
ত্রসদস্যান্ত তান্ দৃষ্ট্বা প্রত্যগৃহ্ছাদ্যথাবিধি।
অভিগম্য মহারাজ! বিষয়ান্তে মহামনাঃ॥ >০॥
অর্চয়েত্বা যথান্যায় মিক্ষাকু-রাজসন্তমঃ।
সমস্তাংশ্চ ততোহপৃদ্ধং প্রয়োজন মুপক্রমে॥ >৪॥

॥ ৫॥ উপাদানাৎ ধনগ্ৰহণাৎ॥ ৬॥ ৭॥ উপক্রমে আগমনে । ৮॥ নে । আবাভসম্॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১০॥ ১৪॥ ' বিস্তকামানিহ প্রাপ্তান্ বিদ্ধি নঃ পৃথিবীপতে!।

যথাশক্ত্যবিহিংস্যান্যান্ সম্বিভাগং প্রয়চ্ছ নঃ "—; ১৫॥
লোমশ উলাচ।
তত আয়ব্যয়ৌ পুণৌ তেষাং রাজ। ন্যবেদয়ং।

তত অয়িবায়ৌ পুলোঁ তেমাং রাজা নাবেদয়ং।

' এতজ্জাত্বাছ্ পাদধং যদক ব্যতিরিচ্যতে "॥ ১৬॥

তত আয়ব্যয়ৌ দৃষ্টা সমৌ সমমতি দিজঃ।

সর্বিথা প্রাণিনাপ পীড়া মুপাদানাদমন্তে॥ ১৭॥

ততঃ সর্বেব সমেত্যাথ তে নৃপান্তং মহামুনিম।

ইদমূচু র্মহারাজ! সমবেক্ষ্য পরস্পরমা। ১৮॥

' অয়৸ বৈ দানবাে ব্রক্ষরিল্লাে বস্থমান্ ভূবি।

ত মভিক্রম্য সর্বেহ্দ্য বয়ঞ্চার্থামহে বস্থু "—॥ ১৯॥

লোমশ উ গ্রা

" তেষ্ং তদাসীতুচিত মিল্লনসৈব ভিক্ষণম।
ততন্তে সহিতা রাজনিল্পলং সমুপাদ্ধবন্"—॥ ২০॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি অগস্ত্যোপাঝানে
অফীনবভিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৯৮॥

लामन छेताह।

" ইল্লন্তান্ বিদিয়া তু মহর্ষিসহিতান্ নৃপান্। উপস্থিতান্ সহামাত্যো বিষয়ান্তে হৃপুজয়ৎ ॥ ১॥

॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ বসুমান্ধনবান্॥ ১৯॥ অধ্যায় তাৰপ্ৰতি। বাল্পোনাপি ছিংসা পূৰ্বকং ভিক্ষা ন কৰ্ত্ৰণে ইতি॥ ২০॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্যণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাংদীপে অফনবতি তমোহধ্যায়ঃ ৯৮॥

इंत्रुल इं िज—॥ ১ ॥

তেষা~ ততোহস্থরশ্রেষ্ঠস্থাতিথ্য মকরোত্তনা। স্থসংস্কৃতেন কৌরব্য ! ভাতা বাতাপিনা ভদা॥ ২॥ ততো রাজর্ষয়ঃ সর্বের বিষয়া গতচেতসঃ। বাতাপিং সংস্কৃতং দৃষ্টা মেবভূতং মহাস্থরম্। ৩॥ व्यथावित्रीमगञ्ज छान्। अर्थीन्यिमखमः। " বিষাদে। বোন কর্ত্তব্যা ছহং ভোক্ষ্যে মহাস্থরম্ '॥ ৪॥ ধুর্য্যাসন মথাসাদ্য নিষ্সাদ মহানৃষিং। ত্র পর্যাবেশকৈতোক্ত ইল্পলঃ প্রহসন্নিব॥ ৫॥ অগন্তা এব কুংস্কন্ত বাতাপিশ বুভুদে ততঃ। ভুক্তবত্যহস্করে। স্থান মকরে।স্তম্ম চেল্পলঃ॥ ৬॥ ততো বাযুঃ প্রাতুরভূ দধস্তস্ত মহাত্মনঃ। শব্দেন মহতা তাত ! গৰ্জনিব যথা ঘনঃ 🗱 ॥ १॥ বাতাপে ! নিষ্কুমন্বেতি পুনঃ পুন রুবাচ হ। তং প্রহন্তাহ্রবীক্রাজনগন্তো মুনিসন্তমঃ॥ ৮॥ ' কুতো নিষ্ক্ মিতৃং শক্তো ময়। জীর্ণস্ত সোংস্কর: ''—। ইল্লস্ত বিষয়ে। হভূদ্ফী জীর্ণং মহাস্তরম্ ॥ ৯॥ প্রাঞ্জলিশ্চ সহামাতৈয় রিদং বচন মত্রবীৎ। " কিমর্থ মুপয়াতাঃ স্থ বৃত কিং করবাণি বঃ "॥ >• ॥ প্রভাবাচ ততোহগন্তাঃ প্রহুসন্নিল্লং তদা। ' ঈশং হৃস্র ! বিল্ফুাং বয়ং সর্কে ধনেশ্রম্॥ ১১॥ এতে চ নাতিধনিনো ধনার্থক মহান্মম। यथा मक्याविहिश्मानान् मिश्रं जात्र अयक् नः "-॥ >२॥

॥२॥७॥8॥०॥७॥ स्तानः व्यास्तिनम्॥१॥४॥५॥५॥८०॥८५॥

 ^{* &#}x27; গজ রব মহাঘন:"—ইতি ক-পাঠঃ।

ততোংভিবাদ্য ত মৃষি মিল্ললো বাক্য মন্ত্রবীৎ।
" দিৎসিতং যদি বেৎদি ত্ব ততো দাস্তামি তে বস্থু "—॥ ১৩॥
অগস্ত্য উবাচ।

"গবাং দশ সহস্রাণি রাজ্ঞা মেকৈকশোহস্বর!।
ভাবদেব স্থবর্ণন্ড দিৎসিতং তে মহাস্থর!॥ ১৪॥
মহাং ততো বৈ দিগুলং রথশৈচব হিরণায়ঃ।
মনোজবৌ বাজিনৌ চ দিৎসিতং তে মহাস্থর!॥ ১৫॥
জিজ্ঞাস্ততাং রথং সদ্যো ব্যক্ত এব হিরণায়ঃ"—#।
ততঃ প্রবাথতো দৈত্যো দদাবভাধিক বস্থ ॥ ১৬॥
বিরাবশ্চ স্থরাবশ্চ তিমান যুক্তৌ রথে হয়ৌ।
উহতুঃ সবস্থনাশু তা বগস্ত্যাশ্রমং প্রতি †॥ ১৭॥
স্বানাজ্ঞঃ সহাগস্তালিমেবাদিব ভারত!!
স্বানাজ্ঞঃ সহাগস্তালিমেবাদিব ভারত!!
স্বানাজ্ঞঃ সহাগস্তালিমেবাদিব ভারত!!
ক্রবাংশ্চ মুনিঃ স্বাক্ লোপামুক্রাচিকীর্ষিত্রন্"॥ ১৮॥
লোপামুদ্রোবাচ।

' কুতবানসি তৎ সব্ব ভগবন্মম কাজিক্তম্। উৎপাদয় সক্ষয়ত্ব মপত্যং বীর্ষ্যবন্তরম্ ''—॥ ১১॥ অগন্তঃ উল্লাচ

" তুষ্টোহ্হমিম কল্যাণি । তব রুদ্তেন শোন্তনে ।।
বিচারণা মপত্যে তু তব বক্ষামি তাৎ শূগু —॥২০॥
দিংসিতং ময়া মুম্মভাং দাড় মিয়্রং, এতেন পরচিত্তাভিজ্ঞ মগন্তাস্য পরীক্ষিত্য ॥২০॥২৪॥২৫॥২৬॥২৭॥২৮॥২৯॥২০॥

^{*} হিরণাুয়েতানন্তরং—''জিজাসামানঃ সরথঃ কোন্তেয়াসীদ্ধিরণাুয়ঃ" ইত্যাধিক-পাঠঃ প্রদৃশাতে ক প্রস্তুকে।

ተ " তান গ্ৰন্তা অমং প্ৰতি" ইতি ক—

সহস্রতেখ্য পুজাণাং শতং বা দশস্থাতিম।
দশ বা শততুল্যাঃ স্থা রেকো বাপি সহস্রজিৎ ?"—;২১॥
দশ বাশস্তাবেচ।

" নহস্রদন্মিতঃ পুজ্র একোহপ্যস্ত তপোধন!। একো হি বছভিঃ শ্রেরান্ বিদ্বান্ সাধু রসাধুভিঃ "। ২২।। 🐅 স তথেতি প্রতিজ্ঞার তরা সমভবন্মুনিঃ। সময়ে সমশীলিন্যা অদ্ধাব্যন্ আদ্ধানয়। ॥২৩॥ তত আধায় গৰ্মন্ত মগমৎ বনমেব সং। তিমান বনগতে গর্ভো বরুধে সপ্ত শারদান্॥ ২৪॥ সপ্তমেংকে গতে চাপি প্রাহ্চাবৎ স মহাক্রিঃ। জ্বলন্নিব প্রভাবেন দৃচস্ক্য র্নাম ভারত।॥২৫॥ সাঙ্গেপিনিষ্দান্ বেদান্ জপল্লিব মহাতপাঃ। তম্ম পুজোহভবদুষেঃ স তেজস্বী মহাৰিজঃ ॥ ২৬॥ স বাল এব তেজস্বী পিতৃস্তম্ভ নিবেশনে। ইধুনোং ভার মাজহ্রে ইধুবাহ স্ততোহভবৎ। ২৭ ॥ তথ। युक्त वृ जः मृत्या भूभूति म भूनि छना। এবং স জনয়ামাস ভারতাহপতা মুক্তমম্॥ ২৮॥ লেভিরে পিতরশ্য লোক। নাজন ! যথেপি তান্। তত উদ্ধুময় পথাত স্থুগস্তাক্তাশ্ৰমো ভূবি ॥২৯॥ প্রাহ্রাদি রেবং বাতাপি রগস্তে নোপশামিতঃ। তদ্যায় মার্শ্রমো রাজনুমণারৈ গু/ণৈ যুঁতঃ ॥ ৩০ ॥

শতংবা দশদ মিতং দশ শত সমিত। ॥২১॥ ২২॥ সমভবৎ সংগমং চকার ॥২৩॥ শারদান শরদা ঋতুনা যুক্তান্ সংবৎসর নিতার্থঃ ॥২৪॥ প্রাচার্থ-উদরান্ত্রিকভেব দতার্থঃ॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ যুক্তং অধ্যান্ত্রিশ্ব-বাহনাদো ॥২৮॥ ২৯॥ প্রাক্রাদিঃ প্রাদ্রাদ্রবাদ্রবাহ বিঃ॥ ৩০॥

^{*} সতথেত্যবাৎ প্রাকৃ ' লোমণউ গ্রু ইতাধিক পাঠঃ ক-পুস্তকেলভ্যাত।

এষা ভাগীরথী পুণ্যা দেবগন্ধর্কিসেবিতা।
বাতেরিতা পতাকেব বিরাজতি নভস্তলে ॥ ৩১ ॥
প্রতার্যামাণা কুটেরু যথা নিম্নেরু নিত্যশং।
শিলাতলেরু সন্ত্রন্তা পরগেক্তবধূরিব ॥ ৩২ ॥
দক্ষিণাং বৈ দিশং সর্কাং প্লাবয়ন্তী চ মাতৃবং।
পূর্বাৎ শন্ত্যোজ টাভ্রন্তা সমুদ্রমহিষী প্রিয়া।
অন্তাং নদ্যাং স্থাব্যায়াং যথেষ্ট মবগান্থতাম্''— ॥ ৩৩ ॥

*(नामन छेत्राह ।

" যুধিষ্ঠির! নিবোধেদং ত্রিষু লোকেষু বিশ্রুতম্।
ভূগোন্তীর্থং মহারাজ! মহর্ষিগণ সেবিতম্। ৩৪॥
যত্রোপস্পৃষ্টবানামো হৃতি তেজস্তদাপ্তবান্।
অত্র স্ব ভাতৃভিঃ সার্দ্ধং কৃষ্ণয়া চৈব পাগুব!॥ ৩৫॥
ছুর্যোধনহৃতং তেজঃ পুনরাদাতৃম
হিবরেণ রামেণ যথা চোপহৃত্ব পুনঃ"॥ ৩৬॥

বৈশন্পায়ন উাত।

স তত্ত্ব ভাতৃতি শৈচৰ ক্ষণ্ণা চৈৰ পাণ্ডৰ:।
স্পাত্বা দেবানু পিতৃংশৈচৰ তপ্যামাস ভাৰত।। ৩৭ ॥
তদ্য তীৰ্থস্য ৰূপং বৈ দীপ্তাদ্দীপ্তত্ত্বং বভৌ।
অপ্ৰধ্নযুত্তবৃশ্চাসীচ্ছাত্ৰবাণাং নৱৰ্ষত !॥ ১৮॥

॥ ৩১॥ শিলানাং তলের অধাে ভাগের সম্ভ্রা লীনা, এতেন পাতাল গাম্মর মুক্তং, শেষেণ স্থাভূ-গতত্ মিতিত্রিপথগাড় মুক্তং গলার:॥ ৩২॥ ॥ ৩৩॥ ৩৪॥ রাম: জামদগ্ন:, হতং দাশরধি-রামেণ॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩৭॥ ॥ তদ্য যুধিষ্ঠিরদ্য, তীর্থসা তীর্থ স্বাভ্যা॥ ৩৮॥

^{*} অত্যায়ং পাঠোন পঠাতে ক-পুস্তকে।

অপৃচ্ছ চৈত্র রাজেন্দ্র ! লোমশৎ পাণ্ডুনন্দনঃ। 'ভগবন্ ! কিমর্থন রামস্য হৃতম্যসীদ্বপুঃ প্রভো ! । কথং প্রভ্যাহ্ন চক্ষ্ণের এতদাচক্ষ্ণ পূচ্ন্তঃ''—॥ ৩৯॥ লোমণ উন্ধ্য ।

" শৃণু রামস্য রাজেন্দ্র। ভার্মবদ্য চ ধীমতঃ। জাতো দশর্থস্যাসীৎ পুজো রামো মহাত্মনঃ॥ ৪০॥ विकुः (श्वन भंजीदत्र तावनमा वधाय देव। পশ্যাম স্ত মধ্যোষা জাতং দাশর্থি ততঃ ॥ ৪১ ॥ **अहीकनन्मरनाक्ष द्रारमा जार्भरवा रत्नुकाञ्च डः।** তস্য দাশরথেঃ শ্রুত্বা রামস্যাক্লিফকর্ম্মণঃ ॥ ৪২॥ কৌতুহলান্বিতো রামস্ত্রোধ্যা মগমৎ পুনঃ। ধনুরাদায় তদিব্যং ক্ষজিয়াণাং নিবর্ণ্য ॥ ৪৩॥ জिজ्डानमारना तामना वीर्याः नामत्रविष्ठना। তং বৈ দশরথঃ শ্রুত্বা বিষয়ান্ত মুপাগতম্॥ ৪৪.॥ প্রেষয়ামাস রামদ্য রামং পুত্রং পুরস্কৃতম্। স ত মভ্যাগতং দৃষ্টা উদ্যতান্ত্ৰ মৰস্থিতমু॥ ৪৫॥ প্রহুসন্মিব কৌন্তেয় ! রামো বচনমত্রবীৎ। ' ক্তকালং হি রাজেন্দ্র। ধনুরেতন্মরা বিভো ! ॥ ৪৬ ॥ मभारताश्रेय गर्जन यनि भरकानि शार्थित !"। ইত্যুক্তস্তুাহ " ভগবংস্কুন্নাধিক্ষেপ্ত,ুমর্হাদ 🖟 ৪৭ 🖫

বপুঃ তেজঃ ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ দাশরখেঃ আচ্হা ধন্তঞ্জনাদি পরাক্রম মিতি শেষঃ "কর্মনিষ্ঠা"॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪০ ॥ ৪৫ ॥ কৃতকালং কৃতা হিংসিতাঃ কালতুল্যাঃ ক্তিয়া যেন তদ্ধত্বঃ 'কৃহিংসায়াং'—স্থানে কিদং ক্রপন্'॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥

^{* &}quot; আচ্চী ক নন্দনে তি"—ক-পুন্তকঃ, নৈযঃ সাধু পাতঃ।

নাহমপাধমো ধর্মে ক্ষজিয়াণাং দ্বিজাতিয়ু।

ইক্ষ্বাকৃণাং বিশেষেণ বাছবীর্যোন কথানম্"—। ৪৮॥
তমেবং বাদিনং তত্র রামো বচনমন্ত্রীং।
'' অলং বৈ বাপদেশেন ধনু রাষছ রাঘব।"। ৪৯॥
তকো জ্ঞাহ রোঘেণ ক্ষজিয়র্যভ স্থানম্য কার্মাক্ষ্ম। ৫০॥
রামো দাশর্থিদিব্যং হস্তাজামস্য কার্মাক্ষ্ম। ৫০॥
ধনু রারোপয়ামাস সলীল ইব ভারত।।
জ্যাশন্দ মকরে। জৈব ক্ষয়মানঃ স বীয়্বান্। ৫১॥
তস্য শন্দেন ভূতানি বিত্রসন্তাশনেরিব।
অথাব্রবীস্তদা রামো রামং দাশর্থিস্থদা। ৫২॥
গাইদ মারোপিতং ব্রহ্মা । কিমন্যং করবাণি তে ?"—।
তদ্য রামো দদৌ দিব্যং জামদ্য্যো মহায়্মনঃ।
শার মাকর্ণদেশান্ত ময়্ম মাক্ষ্মাত্যামিতি॥ ৫৩॥
লোমণ উব্যাত্য

" এতচ্ছ ব্ৰহিববীক্তামঃ প্ৰদীপ্ত ইব মনুনা।
ক্রয়তে ক্রমাতে চৈব দর্পপূর্ণাহিদি ভার্গব । ॥ ৫৪ ॥
ত্বয়া হাধ্যতং তেজঃ ক্ষান্তিয়েভোগ বিশেষতঃ।
পিতামহ প্রধাদেন তেন মাণ ক্রিপদি ধুন্॥ ৫৫ ॥
পশ্য মাণ স্বেন ক্রপেণ চক্ষুত্তে বিতরাম্যহম্"।
ততো রামশরীরে বৈ রামঃ পশাতি ভার্গবঃ ॥ ৫৬ ॥
আদিত্যান্ স্বস্থন্ ক্রন্থান্ সাধ্যাংশ্চ সমক্রদাণান্।
পিতরো হুতাশনশৈচব নক্ষ্রানি গ্রহান্তথা॥ ৫৭ ॥

शक्तकी त्र^{५८} । यका # नग छीर्थानि यानि ह। খাষয়ো বা লিখিল্যাশ্চ ব্ৰহ্মভুতা: সনাতনা: "৫৮॥ দেবর্ষয়ক্ত কাৎস্কের্ন সমুদ্রাঃ পর্বতান্তথা। বেদাশ্চ সোপনিষদে। ব্যট্কারেঃ সহাধ্রৈঃ ॥ ৫৯ ॥ চেতোমন্তি চ সামানি ধরুর্বেদশ্চ ভার্ত।। মেঘরন্দানি বর্ষ। বি বিত্তাভশ্চ যুধিষ্ঠির ! ॥ ৬ ।। ততঃ স ভগবান বিষ্ণুস্ত বৈ বাণং সুমোচ হ। শুস্কার্শান সমাকীর্ণ মহোল্কাভিন্চ ভারত !॥ ৬১ ॥ প। ~ শুবর্ষেণ মহতা মেঘবর্ষিশ্চ ভূতলম্ব। कृष्मिकरेन्श्रम् निर्घाटे ज ने दिनम्ह विश्रदेन तृशि । ७२ ॥ স রামং বিহ্বল কুত্বা তেজস।ক্ষিপ্য কেবলম্। আগচ্চজুলিতো বাণো রামবান্থ ঐচে।দিতঃ 🖁 ৬৩ 🛭 স তু বিহ্বলতাং গত্বা প্রতিলভ্য চ চেত্রণাম্। রামঃ প্রত্যাগতপ্রাণঃ প্রাণ্মদ্বিফুতেজসম্। ৬৪ ॥ বিষ্ণুনা সেইভানুজ্ঞাতো মহেন্দ্র মগমৎ পুনঃ ৷ ভীতস্তু তত্ৰ ন্যবসৎ ব্ৰডিতস্তু মহাতপাঃ । ৬৫॥ ততঃ সমুৎসরেহতাতে হৃতৌজস মর্বাস্থত্য। নির্মানং ছঃখিত্র দৃষ্ট্য পিতরো রাম মক্রবন্ । ৬৬॥ পিতর উচুঃ।

"ন বৈ সমাগিদং পুত্র। বিষ্ণুমাসাদ্য বৈ কৃত্যু। স হি পূজ্যশ্চ মান্যশ্চ ত্রিয়ু লোকেয়ু সকাদা॥ ৬৭॥

॥ ৫৮॥ ৫৯॥ চেতোমন্তি চেতনাবন্তি 'আর্থি পদত্ব প্রযুক্তংকতং চেত-স্বন্ধীত্যপেক্ষিত্য ॥ ৬১॥ ৬২॥ ৬১॥ ৬৪॥ ৬৫॥ ৬৫॥ ৬৭॥ ः

^{* &}quot; ভূত।" ইতি গ—† ভূতল মিত্য ও " কেবলম্" ইতি ক—

গছ পুত্র! নদীং পুণাং বধুসর কৃতাছ্রয়াম।
ত্রোপস্পৃশা তীর্থেষু পুনর্বপু রবাস্গাসি॥ ৬৮॥
দীপ্রোদং নাম তত্তীর্থং যত্র তে প্রপিতাম্ছং।
ভ্তু ক্লেব্যুগে রাম! তপ্তবামুত্তমং তপং"—॥ ৬৯॥
তত্তথা কৃতবানামঃ কৌন্তেয়! বচনাং পিতৃঃ।
প্রাপ্তবাশ্চ পুনস্তেজ স্তীর্থেহ্মিন্ পাতৃনন্দন!॥ ৭০॥
এতদীদৃশকং তাত! রামেণাক্লিফকর্মণা।
প্রাপ্তমাসীমহারাজ! বিফুমাসাদ্য বৈ পুরা"॥ ৭১॥
ই ত্যারণ্যকে পর্বণি তীর্থযাত্রাপর্বণি জামদগ্যতেজোহানি-কথনে একোনশত-তমোহ্যায়ঃ॥ ৯৯॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

' ভূয় এবাহ মিচ্ছামি মহর্ষেস্ত স্থীমতঃ। কর্ম্মণাং বিস্তর্গ শ্রোতু মগস্তাস্য দিজোক্তম !''॥ ১ ॥ লোমশ উবাচ।

শূণু রাজন্ ! কথা দিব্যামন্ত্রা মতিমানুষীম্ ।

 অগস্তাস্য মহারাজ ! প্রভাব মমিতৌজসঃ ॥ ২ ॥

 আসন্ কুরুমুগে ঘোরা দানবা যুদ্ধ মুর্মাদাঃ ।

 কালকেয়া ইতি খ্যাতা গণাঃ প্রমদার্কণাঃ ॥ ৩॥

 তে তু রুত্রং সমাশ্রিত্য নানাপ্রাহরণোদ্যতাঃ ।

 সমস্তাৎ পর্যাধাবন্ত মহেন্দ্রপ্রান্ স্কুরান্ ॥ ৪॥

হতারন্যকে পর্বাণ নৈলক্ষীকে ভারতভাবদীপে একোন-শত তমেহধারঃ॥ ৯৯॥

जृब देखि—॥ ১॥ २॥ ०॥ 8 **॥**

96 11 06 11 de 11 de

ততো রুত্রবধে যত্ন মকুর্ব্বণ ক্রিদশাঃ পুরা। পুরন্দর্র পুরস্কৃত্য ব্রহ্মাণ মুপতস্থিরে ॥ ৫। ক্কৃতাঞ্জলী স্তু তানু দৰ্কান প্রমেষ্ঠীভ্যুবাচ হ। " বিদিত্ত মে স্থরাঃ সর্বাং যদ্ধঃ কার্য্যং চিকীর্ষিত্য । ৬ । ত মুপায়ং প্রবক্ষামি যথা রুত্র বিধিষাথ। দধীচ ইতি বিখ্যাতো মহানুষি রুদারধীঃ॥ ৭॥ তং গত্বা সহিতাঃ সর্ফো বর \ বৈ সম্প্রযাচত। স বো দাস্যতি ধর্মাত্মা স্থ্রীতেনান্তরাত্মনা । ৮ ॥ স বাচ্যঃ সহিতৈঃ সবৈধ ভ্ৰতিজ্ঞায়কাজিফ ভিঃ। শ্বান্যন্থীনি প্রযজ্ঞেতি ত্রৈলোক্যাস্য হিতায় বৈ ॥ ৯॥ স শরীর সমুৎস্ক্র স্থান্যস্থীনি প্রদাস্যতি। তস্যান্থিভি শ্মহাঘোরং বজু শংক্রিয়তাশ দুচম্॥ ১০॥ মহচ্ছকুহনং ঘোরং ষডব্রি ভীমনিস্বনম্। তেন বজেুণ বৈ বৃত্তং বধিষ্যতি শতকে হুঃ ॥ ১১॥ এতদ্বঃ সর্বা মাখা ত৲ তম্মাচ্ছীঘ্র৲ বিধীয়তাম্"। এব মুক্তান্ততো দেবা অনুজ্ঞাপ্য পিতামহম্। ১২॥ नाताय्रन् श्रुतकृष्ठा पशीष्ठगाव्यमः ययुः। সরস্বত্যাঃ পরে পারে নানাক্রমলতার্তম্॥ ১৩॥ यहेशरमामाीजनिनरेम स्विष्ट्रेष्टेश मामरेगतिव। পুংক্ষোকিলম্বনোন্মিশ্রণ জীবঞ্জীবকনাদিতম ॥ ১৪॥

॥ ৫॥ ৬॥ १॥ স বে। যুশ্বাকং দাস্যতি ঈপ্সিত মিতিশেষ: ॥ ৮॥ ৯॥ ১०॥ বড় অবট্কোণন্ ॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ জীবং জীববদিবেতি লুপ্তোপমা যতো জীবকৈ: কুমে জীবে: পশাদিতি নাদিতমতশ্চেতনমিবে তাৰ্থ: ॥ ১৪॥

মহিবৈশ্চ বর देश्य स्मारेत्र में प्रदेशिय তত্ত্ব তত্ত্বানুচরিতং শার্দ্দ লভয়ব জ্বিটেঃ। ১৫। করেণুভি ব্রার গৈশ প্রভিন্নকরটামুখেঃ। गतावशादेषः कीष्ठाः ममन्त्रामस्नामिष्य् ॥ ১৬ ॥ নিং হৈ কাটে প্ৰ প্ৰহানাদান নদভি রন্তনাদিতম। অপরৈ শ্চাপি সংলীনৈ গুরিকন্দরশায়িভিঃ ॥ ১৭ ॥ তেষু তেম্বকাশেষু শোভিতং স্থমনোরমম্। তিপিউশ-সমপ্রথাং দ্ধীচাশ্রম মাগমন্। ১৮। তত্রাপশ্যন্দধীচন্তে দিবাকর্যমন্ত্র্যভিষ্। জাজ্ল্যমানং বপুষা যথা লক্ষ্যা পিত।মহ্মু॥ ১৯॥ তদ্য পাদৌ সুরা রাজনভিবাদ্য প্রণম্য চ। অযাচন্ত বরং দর্কো যথোক্ত॰ পরমেষ্ঠিনা। ২০॥ ছতে দধীচঃ প্রমপ্রতীতঃ, সুরোত্ত মাংস্তানিদ মন্তাবাচ। করোমি যদো হিতমদ্য দেবাং, खकालि (नर्~ खत मुर्द्धाम ॥ २১॥ म এব মুক্ত। विপদাং ব্যাষ্ঠঃ, প্রাণান বশী স্থান সহসোৎসম্জ । ততঃ সুরাজে জগুছঃ পরাসো, ব্ৰহানি ত্ৰ্যাথ যথোপদেশম ॥ ২২॥

॥ ১৫ ॥ করেণুভি ই শুনীভিঃ, প্রভিন্নং মদপ্রাবি, কবটা ম্দোডেদস্থানং গও স্থানকদেশ শুস্য মুখং উপরি ভাগো যেবংতৈঃ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ জিব-ফুপ-সমপ্রখ্যং স্থা প্রাশেশ্ ॥ ১৮ ॥ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ পরাসোঃ গভ প্রাশ্যা ॥ ২২ ॥ প্রকার সাগমা তমর্থ মূচুঃ।
ত্বা তু তেষাং বদনং নিশম্য,
প্রকা তু তেষাং বদনং নিশম্য,
প্রকার বজ্ঞ প্রান্ধ প্রবাদ ॥ ২৩ ॥
চকার বজ্ঞ ভূশ মুপ্রকপং,
কৃত্বা চ শক্রং স উবাচ কৃষ্টঃ।
তবেন বজ্ঞপ্রবরেণ দেবা,
ভ্রমীকুরুষাদ্য স্থরারি মুপ্রম্॥ ২৪ ॥
ততো হতারিঃ সগণঃ স্থাং বৈ,
প্রশাধি কৃৎস্কং ত্রিদিবং দিবিষ্ঠ! * । ।
ত্ত্বী তথোক্তম্ত পুরন্দরন্তংবজ্ঞ প্রক্টঃ প্রমতো হ্যগৃক্ছাৎ'—॥ ২৫ ॥
ইত্যারণ্যকৈ পর্বনি তীর্থযাত্রাপর্বাণ বজ্ঞনির্মাণকধনে
শত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০০ ॥

লোমশ উবাচ।

তেওঃ স বজ্ঞী বলিভি দৈবতৈ রভিরক্ষিতঃ।
আসসদে ততো রুত্রং স্থিত মার্ত্য রোদসী॥ >॥
কালকেরৈ র্মাহাকারেঃ সমস্তাদভিরক্ষিত্র
সমুদ্যতপ্রহরণৈঃ সশৃক্ষেরিব পর্বতেঃ॥ ২॥
॥২৩॥ ২৪॥ ২৫॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে শততমোহধানয়ঃ ॥ ১০০॥

ত इंडि—। (द्राममी मार्गि शृथित्यो ॥ ১ ॥ २ ॥

* " मिर्विष्ठेः " हेट्जावर वा म-विमर्श भार्तेः।

ততে। যুদ্ধং সমভবদ্দেবানাং দানবৈঃ সহ। মুহূর্ত্তং ভরতশ্রেষ্ঠ!লোকতাসকরং মহৎ॥ э॥ উদ্যতপ্রতিপিফীনাং খড় গানাণ বীরবাছভিঃ। আদীৎ সুত্যুলঃ শব্দঃ শরীরেম্বভিপাত্যতাম্ ॥ ৪॥ শিরোভিঃ প্রপতদ্রিশাপ্যন্তরীক্ষামহাতলম্। তালৈ রিব মহারাজ। রন্তাদ্ভূটেট রদৃশ্যত॥ ৫॥ তে হেমকবচা ভূষা কালেয়াঃ পরিঘাযুধাঃ। ত্রিদশানভাবর্ত্ত দাবদগ্ধা ইবাদ্রয়ঃ॥ ৬॥ তেষাং বেগবতাং বেগং সাভিমানং প্রধাবতাম। ন শেকুজ্রিদ াঃ লোট ্ তে ভগ্না প্রাদ্ধবন্ ভয়াৎ। ৭॥ তান্ দৃষ্টা দ্রবতো ভীতান্ সহস্রাক্ষঃ পুরন্দরঃ। व्राक्त विश्क्षिमात्म ह कश्याल भक्ताविश्व ॥ ৮॥ বালেয়ভয়সন্ত্রতো দেব: সাক্ষাৎ পুরন্দরঃ। জগাম শরণং শীঘ্রং তন্ত নারায়ণ্ প্রভুষ্। ১। ত্র শক্রথ কশালাবিষ্টং দৃষ্টা বিষ্ণুঃ সনতেনঃ। স্বতেজে। বাদধচ্ছতে বলমস্থ বিবর্দ্ধরন্। ১০ । বিষ্ণুনা গোপিত শত্রুং দৃষ্ট্য দেবগণাস্ততঃ i সর্বে তেজঃ সমাদ্ধ্য তথা বৃদ্ধয়োহমলাঃ ॥ ১১ ॥ স সমাপ্যায়িতঃ শক্তো বিষ্ণুনা দৈবতৈঃ সহ। ঋৰিভিশ মহাভাগৈ ধালবান্ সমপদাত । ১২।

॥ ৩॥ বীর বাক্তিঃ সার্দ্ধং আদে উদ্যতাঃ পশ্চাদনোঃ প্রতিপিঠাও তেষাম্ ॥ ৪॥ তালে স্থাল কলৈঃ॥ ৫॥ লক্ষ্ট্রিক বস্ত ইত্যর্ধঃ॥ ৬॥ ৭॥ ॥ ৮,॥ ৯॥ ব্যাদধং নিহিত্বান্॥১০॥॥ ১১॥ ১২॥

জ্ঞাত্বা বলস্থং ত্রিদশাধিপস্ত, ননাদ রুত্রো মহতো নিনাদান্। তম্ভ প্রগাদেন ধরা ক্রিশক, थः (मा) र्नशान्हािश हहाल मद्भग्र ॥ > २ ए ততো মহেন্দ্র: পর্মাভিতপ্তঃ, শ্ৰুত্বা বৰ্ব ছোৱৰপং মহান্তম। ভয়ে নিমগ্ন স্থারিতে। মুমোচ, বজ্রং মহন্তব্য বধায় রাজনু। ॥ ১৪॥ স শক্রবজাভিহতঃ পপাত, মহাস্থরঃ কাঞ্চনমাল্যধারী। যথা মহাবৈশলবরঃ পুরস্তাৎ, म मन्द्रा विकुरुत्राधिमुक्तः । ১৫॥ তিমানু হতে দৈত্যবরে ভয়ার্ভঃ, শক্রঃ প্রদুদ্রাব সরঃ প্রবেষ্ট্রয়। বজ্ঞং স মেনে ন করাদ্বিমুক্তং, বুত্রণ ভয়াচ্চাপি হতং ন মেনে। ১৬॥ সর্বেচ দেবা মুদিতাঃ প্রহৃষ্টাঃ, মহর্ষয়শ্চেন্দ্র মভিউবন্তঃ। সর্বাংশ্চ দৈত্যাৎ স্তুরিতাঃ সমেত্য জন্ন: সুরা রুত্রবধাভিতপ্ত।ন্ ॥ ১৭॥ তৈ ব্রাম্থমানা ব্রিদর্শৈঃ সমেতেঃ, সমুদ্রমেবা বিবিশু র্ডয়ার্তাঃ। প্রবিশ্য চৈবে।দর্যি মপ্রমের ১, यसाकुलः नक्तरमाकुलकः ॥ ১৮॥

বলস্থ বলবন্ত্র ॥১০॥১৪॥ মাল্যধারী মালাধারী॥১৫॥ হতমপি বৃত্তং ভরাৎ ন হতমিব মে ন॥১৬॥১৭॥ ঝ্যে মৎস্যঃ, নক্রঃ কুঞ্রঃ। এতো হিংফা জল জন্তু প্লক্ষাাযো জের্থোঁ।॥১৮॥ ভদা স্ম মন্ত্রং সহিতাং প্রচক্র-স্ত্রৈলোক্যনাশার্থ মভিষ্ময়ন্তঃ। তত্র স্ম কেচিন্মতিনিশ্চয়জ্ঞা-স্তাৎস্তানুপায়ানুপবর্ণয়ন্তি ॥ ১৯ ॥ তেষ স্ক তত্ত ক্রমকাল্যোগাৎ, ঘোরা মতিশ্চিম্বয়তাং বভুব। যে সন্তি বিদ্যাতপ্ৰেগপপনা-স্বোং বিনাশঃ প্রথমন্ত কার্যাঃ॥ ২০॥ ধোকা হি মর্বে তপদা ধ্রন্তে, তস্মান্ত্রেধং তপুসঃ ক্ষয়ায়। যে সভিকেচিচ্চ বস্থারারাৎ, তপস্থিনো ধর্মবিদশ্চ তজ্জাঃ॥ ২১॥ তেষাং বধঃ ক্রিয়তাং ক্ষিপ্রমেব, তেষু প্রনষ্টেযু জগৎ প্রনষ্টম্। এবং হি সর্বে গতবুদ্ধিভাবা, জগদ্বিনাশে পর্মএকটাঃ ॥ ২২ ॥ তুর্গং সমাজিত্য মহোর্মিমন্তং র্ভাকরং ব্রুণ্স্যালয়ংস্ম"—॥ ২৩॥ ইভ্যারণ্যকে পর্বাণি ভীর্থয় ত্রাপর্বাণ রুত্রবধোপাখ্যানে একাধিক-শতভমোহধায়েঃ॥ ১০১॥

। ১৯॥ ২০॥ খ্রীরন্তে জীবন্তি॥ ২১॥ গত বুদ্ধিভাবাঃ প্রাপ্তধীনিশ্চরাঃ॥ ২২॥ বৰুণস্য আলয়ং সমুদ্রম্॥ ২৩॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে এক।ধিক

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০১॥

লোমশ উশ্চ।

" সমুদ্রং তে সমাম্রিত্য বারুণ্ নিধিমন্ত্রসং l কালেয়;: সম্প্রবর্ত্তন্ত ত্রৈলোক্যস্য বিনাশনে । ১॥ তে রাত্রো সমভিক্রদা ভক্ষয়ন্তি সদা মুনীন্। আশ্রমেষু চ যে সন্তি পুন্যেষায়তনেষু চ॥ ২॥ বশিষ্ঠস্যাশ্রমে বিপ্রা ভক্ষিতাক্তৈ তুরাত্মভিঃ। অশাতিঃ শতমফৌ চ নব চান্যে তপস্থিনঃ ॥ ৩॥ চ্যবনস্যাশ্রমং গত্বা পুণ্যং দ্বিজনিষেবিতম্। ফলমুল।শনানা । হি মুনীনা । ভক্ষিতং শতম ॥ ৪ ॥ এবং রাত্রৌ স্ম কুর্ব্বন্তি বিবিশুশ্চ, প্র- দিবা। ভরদ্বাজাশ্রমে চৈব নিয়তা ব্রহ্মচারিণঃ বাষু:হারাষুভক্ষাশ্চ বিংশাতঃ সংনিস্কালতাঃ। এব জ্মেণ লকাংস্তানাশ্রমান্দানব।স্তদা ॥ ৬॥ নিশায়াং পরিধাবন্তি মত্তা ভুক্তবলাশ্রয়াৎ। * কালেপেস্ফাঃ কালেয়া স্বন্তো দ্বিজগণানু বছুনু ॥ ৭ ॥ ন চৈনানস্বুধান্ত মনুজ। মনুজে। ত্তম !। এবং প্রবৃত্তান্ দৈত্যাংস্তাংস্তাপদেষু তপষিষু ॥ ৮॥ প্রভাতে সমদৃশ্যন্ত নিয়মাহারক্ষিত।: †। মহাতলস্থা মুনয়ঃ শর'রৈ গ্রুজীবেতেঃ॥ ৯॥

সমুদ্র মিতি—। কালেয়াঃ কালায়াঃ কণাপভার্ষা বাঃ প্রাঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ কালোপস্কাঃ মৃত্যুনা প্রস্তাঃ ॥ ৭ ॥ তাপদেসমু প্রস্তান্ দৈতাং স্তাপসা এব তপসা কুতো ন বারয়ান্ত ?—ইত্যাশকাছ তপিষ্মুইতি, তথাস্যেব ধনবংকু দেহনাশেপি তপোনাশো মাজু দিতি তেয়াং ভাবঃ॥ ৮ ॥ শরীবৈ মাংসাদি রহিত্যা দাক্ষাতৈ বিত্যথঃ ॥ ৯ ॥

কালোপ কৃষ্টা ইতি কচিৎ পাঠঃ।
 † নিয়তাছার ইতি পাঠান্তরন্।

की । भारति विक्रिक्षिति विभक्ति दिवासि । আকীর্ণে রাবভৌ ভুমিঃ শস্থানামিব রাশিভিঃ ॥ ১০॥ कलरेम विवधविदेषक उक्रेव करेश स्थिव ह। বিকীর্ণৈ রগ্নিচোত্রৈশ্চ ভূ ব্রভূব সমার্তা॥ ১১॥ নিঃস্বাধ্যায়বষট্কারং নম্ব্যক্তেংসব্ক্রিয়ম। জগদাসাৎ নিরুৎসাহং কালেয়ভয়পীভিতম ॥ ১২ ॥ এবৎ সৎকীয়মানাশ মানবা মনুজেশ্র!। আত্মত্রাণপরা ভীতাঃ প্রাদ্রবন্ত দিশো ভয়াৎ। ১৩। কেচিদ্যা হাঃপ্রবিশু নিঝ রাংশ্চাপরে তথা। অপরে মরণোদিয়া ভয়াৎ প্রানান্ সমুৎস্জন্॥ ১৪ 🛭 কেচিদত্র মহেম্বাসাঃ শ্রাঃ পরমহর্ষিতাঃ। মার্গমাণাঃ পরংযত্ত্বদানবানাংপ্রচক্রিরে । ১৫॥ ন চৈতানধিজগাতে সমুদ্রং সমুপাশ্রিতান্। আনংজগ্রাক পর্ম মাজগ্রঃ ক্ষয়মেব চ॥ ১৬॥ জগভাপ মং যাতে নক্ষজ্ঞে। প্রবক্তিয়ে। আজগ্মঃ পরমা মার্ত্তি তিদশা মনুজেশ্বর ! ॥ ১৭॥ সমেত্য সমহেন্দ্র ভয়ান্মন্ত্রং প্রচাক্ররে। শরণ্য শরণং দ্বেং নারায়ণমজ । বিভূম্। ১৮। তেহভিগম্য নমকৃত্য বৈকুণ্ঠ মপরাজিতম্। ততো দেবাঃ সমস্তান্তে তদোচু র্যাধূস্থদনম্॥ ১৯॥ ত্বং নঃ স্রক্টা চ কন্তা চ হর্তা চ জগতঃ প্রভাে!। ্ত্রয়া স্ফরিদং বিশ্বং যচেক্সং যক্ত নেক্সভি ॥ ২০॥

অতএব শগ্রাশিতুলৈ: ॥ ১০ ॥ কলপে: (কলসৈ: শিরোঘটে: ॥ ১১ ॥ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ দানবানাং বধায়েতিশে ঃ ॥ ১৫ ॥ ক্ষাং গৃহৎ নাশং বা॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ইঞ্জতি চলতীতি ইঞ্ছং পঢ়াদ্যুদ্ধ, জ্ঞম-শ্মত্যুৰ্থঃ' নেজতি স্থান্ত্ৰ মিতি যাবং ॥ ২০ ॥ ব্যা ভূমিঃ পুরা নকী সমুদ্রাৎ পুস্করেক্ষণ!।
বারাহং বপুরাপ্রিত্য জগদর্থে সমুদ্ধ তা। ২১॥
আদিদৈত্যো মহাবির্যো হিরণ্যকশিপুঃপুরা *।
নারসিংহং বপুঃ ক্বরা স্থানতঃ পুরুষোন্তম!॥ ২২॥
অবধ্যঃ সর্বভূতানা বলিশ্চাপি মহাস্বরঃ।
বামন বপুরাপ্রিত্য ত্রৈলোক্যান্ত্রংশতন্ত্রয়া॥ ২০॥
অস্ত্রশ্চ মহেম্বাসো জন্ত ইত্যভিবিক্রতঃ।
যজ্ঞকোভক রং ক্রুর স্থুইয়ব বিনিপাতিতঃ ॥ ২৪॥
এবমাদীনি কর্ম্মাণ যেষাং সংখ্যা ন বিদ্যতে।
অস্মাকং ভয়ভীতানা হং গতির্ম্মুস্থদন!॥ ২৫॥
তন্মান্ত্রাং দেবদেবেশ! লোকার্থং জ্ঞাপয়ামহে।
রক্ষ লোকাংশ্চ দেবা শক্রঞ্জ মহতো ভয়াং"—॥ ২৬॥
ইত্যারণ্যকে প্রবিণি তীর্থ্য ত্রাপর্বানি
দ্যধিকশতত্রেমাহ্ধ্যায়ঃ॥ ১০২॥

দেবাউচুঃ।

েত্ব প্রসাদাদর্দ্ধন্তে প্রজাঃ সর্বাশ্চ কুর্বিধাঃ।
ত। ভাবিতা ভাবয়ন্তি হ্বাকবৈর দিবৌকসঃ॥ ১॥
লোকা হোবং বিবর্দ্ধন্তে হ্নোরান্তং সমুপাশ্রিতাঃ।
ত্বং এসাদানিরুদ্ধিন স্ত্বুরৈব পারর্গক্ষতাঃ॥ ২॥
॥ ২১॥ ২২॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥

ইত্যারণাকে পর্বংগ নেলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বাধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০২ ॥

তবেতি—। চতুর্বিধাঃ স্থর-নর-তির্যক্ স্থাবরাঃ, জরা যুজাগুজ স্থে দজোতিজ্ঞ রপাবা, দিবৌকসঃ দেবান্॥ ১॥ ২॥

* ' বয়া" ই ত ক-পুস্তকঃ ৷

ইদঞ্চ সমনুপ্রাপ্ত^ লোকানা তয় মুন্তমম্।
ন চ জানীম কেনেমে রাত্রৌ বধান্তি ব্রাহ্মণা ॥ ৩॥
কীণেমু চ ব্রাহ্মণেমু পৃথিবী ক্ষরমেষাতি,।
ততঃ পৃথিবাাং ক্ষীণায়া তিনিব ক্ষরমেষাতি ॥ ৪॥
ত্বংপ্রাদান্মহাবাহো । লোকাঃ সর্বে জগপংতে ।।
বিনাশ নাধিগচ্ছেয়ু স্ত্রা বৈ পরিরক্ষিতাঃ"— ॥ ৫॥
বিক্ষকাচ।

"বিদিতং মে স্থরাঃ! সর্বাং প্রজানাং ক্ষয়কারণম্। ভবতাঞ্চাপি বক্ষামি শৃণুধং বিগতজ্বা: ॥ ৬ ॥ কালেয় ইতি বিখ্যাতো গণঃ পরমদারুণঃ। তৈশ্চ রুত্রং সমাজিত্য জগৎ সব্বং প্রমাগিতম্ ॥ ৭ ॥ তে বৃত্তং নিহত পুষ্টু। সহস্রাক্ষেণ ধীমতা। জীবিতং পরিরক্ষন্তঃ প্রবিষ্টা বরুণালয়মু॥ ৮॥ (७ श्रवित्भागिष् धात्र नक-श्राइ-मयाकृलम् । উৎসাদনার্থং লোকানাং রাত্রৌ স্বন্থি মুনীনিহ॥ ৯॥ ন তু শক্যাঃ ক্ষরং নেতৃং সমুদ্রাশ্রয়গা হি তে। সমুদ্রস্য ক্ষয়ে বুদ্ধি উবস্তিঃ সম্প্রধার্যাতাম্॥ ১০॥ অগত্ত্যন বনা কোহি শক্তোহন্যোহর্ণবশোষণে। अनाथा हि न भकारिक विना माध्य स्थापन्य"— ॥ >> ॥ এতচ্ছ ত্বা তদা দেবা বিষ্ণুনা সমুদাহতম্। পরমেন্তিন মাজ্ঞাপ্য অগন্তাস্যাত্রম্ যযু: । ১২ ॥ তত্তাপশ্যন্থাত্তানং বারু। বং দীপ্ততে এসম্। 'উপাসামান মৃাষভি দেঁবৈরিব পিতামহম্॥'১৩॥

॥७॥८॥७॥१॥४ २॥०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ वाक्निर रेमजावकन श्रुवम्

তেহভিগম্য মহাত্মান শৈতাবৰুণি মচ্যুত্য।
আশ্রমস্থ তপোরাশিং কর্মাভিঃ স্বৈ রভিষ্ট্বন্ ॥ ১৪॥
দেবা উচুঃ।

নেক্ষেণাভিতপ্তানাং বং লোকানাং গতিঃ পুরা।

আংশিতশ্ব সুরৈশ্বর্যাৎ স্বলোকালোককন্টকঃ ॥ ১৫ ॥

কোধাৎ প্রবৃদ্ধঃ সহসা ভাস্করসা নগোন্তমঃ ।

বচ স্তবানতিক্রামন্ বিষ্ণাঃ শৈলো ন বর্দ্ধতে ॥ ১৬ ॥

তমসা চার্তে লোকে মন্থানাভার্দ্ধিতাং প্রসাং গতাঃ ॥ ১৭ ॥

তামাকং ভরভীতানাং নির্কৃতিং প্রসাং গতাঃ ॥ ১৭ ॥

তামাকং ভরভীতানাং নিত্যশো ভগবান্ গতিঃ ।

ততন্ত্রাঃ প্রবাচামো বরং ব্যাপ বরদো হ্যাসি"—॥ ১৮ ॥

ইত্যারণাকে পর্কানি তীর্ষাত্রাপর্কানি লোমশ তীর্ষাত্রায়াপ্ত ভ্রান্তারাক্রপনে ত্রাধিকশততমোহ্যাায়ঃ ॥ ১০৩ ॥

মুধিন্তির উবাচ।

"কিমর্থ" সহসা বিক্সাঃ প্রায়ক্ত ক্রোধমুচ্ছি তঃ ?। এতদিছে।মাহং শ্রোতুং বিস্তরেণ মহামুনে ! ''—॥ >॥

অভিষ্কৃত্ব অন্তবন্ 'অড়ভাব অর্ব:,॥১৪॥১৫॥ নগোত্তমঃ পর্বতের্ ভেষ্ঠঃ, বিদ্ধোন্তামা॥১৬॥ তম্পা বিদ্ধা হৃদ্যা আরতে প্রভাগোকে জগতি স্তি॥১৭॥১৮॥

ইন্ত্যারগ্যকে পর্বাণি নৈশকণীয়ে ভারত ভাবদীপে জ্ঞাধিক শততমেহধ্য:য়ঃ ॥ ১০৩ ॥

কিম্ধ মিতি--॥ ১॥

^{* &#}x27; লোমণ তীর্থ যাত্রায়াং"—ইতি পাচাংশো ন পচাতে ক-ঘ-পুস্তকদ্ব য়ে।

লোমশ উবাচ'৷

' অদিরাজং মহাদৈলং মেরং কনকপথতম্।
উদয়াস্তমনে ভালুঃ প্রদক্ষিণ মবর্ত্ত॥ । ॥
তন্ত দৃষ্ট্বা তথা বিস্তাঃ শৈলঃ স্থ্য্য মথাত্রবীং।
' যথা হি মেরু রুবতা নিতাশঃ পরিগম্যতে॥ ৩॥
প্রদক্ষিণশ্চ ক্রিয়তে মা মেবং কুরু ভাল্কর !"—।
এবমুক্তস্ততঃ স্থ্যাঃ শৈলেক্তং প্রত্যভাষত॥ ৪॥
' নাহ মাজেছ্য়া শৈল। করোম্যেনং প্রদক্ষিণ্ম।
এব মার্গঃ প্রদিষ্টো মে যৈরিদং নির্মিতং জগং"—॥ ৫॥
এব মুক্ত স্থতঃ ক্রোধাং প্রবৃদ্ধং সহসাহচলঃ।
স্থ্যাচক্রমদোর্মার্গং রোজ্মিক্ত্ন্ পরস্তপ।॥ ৬॥
ততো দেবাঃ সহিতাঃ সর্ব্ব এবং

বিজ্ঞান সমাগম্য মহাজিরাজম্। নিবারয়ামাস্থ রুপায়ত স্তং,

ন চ স্ম ভেষাং বচনং চকার॥ ৭॥ অথাভিজগ্মুসুনি মাশ্রমস্থ^, তপস্থিনং ধর্মাভূতাম্বরিষ্ঠম্। অগস্তা মতাদ্ভবীয়াবস্তং,

তঞ্গর্মচু: সহিতা: সুরাক্তে—॥ ৮॥

(मवा छेट्टा

' সূর্যাচন্দ্রমসোর্দ্মার্গং নক্ষত্রাণাশ পতিস্তর্থা।
শৈলরাজাে রুণােত্যেষ বিক্ষাঃ কোপবশানুগঃ॥ ৯॥
ভং নিবারয়িতুং শক্তো নানাঃ কশ্চিৎ দ্বিজান্তম!।
ৠতে ত্বাং হি মহাভাগ! তত্মাদেনং নিবারয়"—॥ ১০॥

ভচ্ছ ত্বা বচনং বিপ্রঃ স্থরাণাং শৈল মভ্যগাৎ। সোহভিগম্যাত্রবী বিশ্বাপ সদার: সমুপস্থিতম্ ॥ ১১ ॥ " মার্গমিচ্ছাম্যই**্ষুদ্ধতং** ভবতা প**র্বতোত্তম**়। দক্ষিণমভিগন্তাক্মি দিশং কার্য্যেণ কেনচিৎ॥ ১২॥ যাবদা গমন মহু তাবত্ত্বং প্রতিপালয়। নিরুত্তে ময়ি শৈলেক্র ! ততো বর্দ্ধস্ব কামতঃ "--॥ ১৩॥ खवर न नगरा कृष्या विरक्तान। मिळकर्षन ! I अमािश मिक्नारक्षभाषाकृषि में निवर्ष्ट । ১৪॥ এতত্তে मर्स माथाां ७० यथा विस्त्रा। न वर्षा । অগন্ত্যস্য প্রভাবেন যুক্তা পুরু পূর্ত্ত পূর্ব পূচ্চাসু ॥ ১৫॥ কালেয়াস্ত যথা রাজন্। সুরৈঃ সর্বৈ নিস্থদিতাঃ। অগন্ত্যাদ্বনাসাদ্য তথে নিগদতঃ শৃণু —॥ ১৬॥ जिम्मानाः वहः अन्या रेमजावस्ति तज्वीर। " কিমর্থ মভিযাতাঃ স্থ বর্ত মন্তঃ কিমিচ্ছণ ?"— এবমুক্তান্তত ন্তেন দেবতা মূনি মক্রবনু । ১৭ । " এব॰ স্বয়েচ্ছাম ক্লতণ হি কার্যাণ, यहार्गद- शीय्रमान- प्रइक्ति !। ততো विषिधा**म महासूबिकान्**, कारलयम्बान् युविविषयान् "-॥ ১৮॥ ত্রিদশানাং বচঃ শ্রুত্বা তথেতি মুনিরব্রবীং। ' করিষ্যে ভবতাং কাম লোকানাঞ্চ মহৎ সুখ্যু "॥ ১৯॥ এবমুক্তা ততেহিগচ্ছৎ সমুদ্রং সরিতাম্পতিম। ক্ষিভিশ্চ তপঃসিকৈ: সার্দ্ধ- দেবৈশ্চ স্থত্ত । ॥ ২০॥ यनु रवा । तर्शन शक्ति न क्वा उपा षत्कग्राद्यश्यानः प्रकृतामी उपस्कृष्य ॥ २১ ॥ > < 11 > 0 11 28 11 3 0 11 2 0 11 2 11 2 11 2 2 11 4 0 11 4 2 11

ততোহভাগচ্ছন সহিতাঃ সমুদ্রং ভীমনিশ্বনম্।
নৃত্যন্তমিব চোপাঁভি ব্লেল্ডমিব বাযুনা ॥ ২২ ॥
হসন্তমিব কেনৌছেঃ শ্বলস্তং কন্দরেষু চ।, ১
নানাগ্রাহসমাকীর্ণং নানাদ্বিজগণাশ্বতম্ ॥ ২৩ ॥
অগন্তাসহিতা দেবাঃ সগন্ধবিমহোরগাঃ।
শ্বর্শন মহভোগাঃ সমাসেত্র শ্বহোদধিম্'—॥ ২৪ ॥
ইত্যারন্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি লোমশতীর্থযাত্রায়ামাগস্ত্যে
চতুরধিকশততমোহধায়েঃ॥ ১০৪ ॥

শোমশ উবাচ !

"সমুদ্রং স সমাসাদ্য বারুণির্জগবান্ষিঃ।
উবাচ সহিতান দেবান্ষীং শৈচব সমাগতান্॥ > ॥
" অহু লোকহিতার্থ বৈ পিবামি বরুণালয়ম্।
ভবন্তি র্যদন্তেরং তচ্ছীঘ্রং সম্বিধীয়তাম্"—॥ ২ ॥
এতাবছুক্ত্বা বচন মৈত্রাবরুণি রচ্যতঃ।
সমুদ্র মপিবৎ কুদ্ধঃ সর্বলোকস্য পশ্যতঃ॥ ৩ ॥
পায়মানং সমুদ্রন্ত দৃষ্ট্বা সেক্তান্তেদামরাঃ।
বিক্ষাং পরম জ্যাঃ স্তুতিভিশ্চাপ্যপুজয়ন্॥ ৪ ॥
"ত্বং নস্ত্রাতা বিধাতা চ লোকানাং লোকভাবন!।
ত্বংপ্রসাদাৎ সমুচ্ছেদং ন গচ্ছেৎ সামরংজগণ"—॥ ৫ ॥

॥ २२ ॥ थाहा जनकच्चः ॥ २०॥ २८॥

্ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদ্রীপে চতুরধিক-শততমোহধ্যায়ঃ॥ ১০৪॥

সমুক্ত শিতি—11: 11 ২ 11 ৩ 18 11 ৫ 1

স্পুল্যানিস্তিদলৈ শ্বহাঝা, গন্ধবিতুর্যোষু নদৎস্থ দর্বেশঃ। मिरेवाण्ड शुरेष्ट्रा तवकीवामार्गा, মহাৰ্বং নিঃসলিল ঞ্কার। ৬। দৃষ্ট্র। ক্লতং নিঃসলিলং মহার্থিপ সুরাঃ সমস্তাঃ পরমপ্রকটাঃ। প্রগৃষ্থ দিব্যানি বরাযুধানি, তান্ দানবান্ জন্মবদানসভা । । । তে বধ্যমানা স্ত্রিদশৈ শ্মহাত্মভি, শ্মহাবলৈ বেগিভি রুনদন্তি:। ন সেহিরে বেগবতাংমহাত্মনাং, বেগ্রু তদা ধার্য়িতু দিবৌকসাম্ ॥ ৮ ॥ তে বধ্যমানাজিদশৈ দিনিবা ভীমনিশ্বনাঃ। চক্রঃ স্থৃতুমুলং যুদ্ধং হৃহুর্তমিব ভারত।॥ ৯॥ তে পূর্বং তপদা দগ্ধ। * মুনিভি ভাবিতাস্থভিঃ। যতমানাঃ পরং শক্ত্যা ত্রিদশৈ বিবিন্তুদিতাঃ॥ ১০॥ তে (इमनिष्ठाखद्याः कुखनाक्रमधादियः। নিহতা বহ্বশোভস্ত পুষ্পিতা ইব কিংশুকা:॥ ১১॥ হতশেষান্ততঃ কেচিৎ কালেয়া মনুজোত্তম !। বিদার্য্য বস্তুধাং দেবী~ পাতাল তলমাস্থিতাঃ ॥ ১২ ॥ নিহতান দানবান দৃষ্ট্ব। তিদশা মুনিপুঞ্চবম্। जुक्तु स्विविदेध स्विदिका त्रिषः वहन मञ्जवन् ॥ ১०॥

^{* &}quot;जानमामधा" देखि क-6-नार्वः। "जानरेम मंबा" देखि व-नार्वः-

'ব্ৰৎপ্ৰসাদান্নহাবাহো! লোকৈঃ প্ৰাপ্ত• মহৎ সূথ্য। অভেজসা চ নিহতাঃ কালেয়াঃ কুরবিক্রমাঃ । ১৪॥ পুরয়ন্ত্র মহাবাহো। সমুদ্রং লোকভাবন।। যত্ত্বয়া সলিলং পীতং তদন্মিন্ পুনরুৎস্জ"—॥ ১৫ ॥ এবমুক্তঃ প্রভাবাচ ভগবান মুনিপুঞ্চবঃ। ' জৌর্ণ তিন্ধি ময়া তোর মুপান্নোহ্ন্যঃ প্রচিন্ত্যতাম্।। ১৬॥ পূরণার্থং সমুদ্রস্য ভবন্ধির্যত্ন মান্থিতৈঃ"—। এতচ্চত্বা তু বচনং মহর্ষে জাবিতাত্মনঃ॥ ১৭॥ বিন্মিতাশ্চ বিষগ্নাশ্চ বভূবুঃ সহিতাঃ স্থরাঃ। পরস্পর মনুজ্ঞাপা প্রণম্য মুনিপুঙ্গবম্ । ১৮ ॥ প্রজাঃ সর্বা মহারজে ! বিপ্রজগ্মর্যথাগতম্। ত্রিদশা বিষ্ণুনা সান্ধি মুপজগ্মুঃ পিতামহম্॥ ১৯॥ পূরণার্থং সমুদ্রস্য মন্ত্রগ্নিত্বা পুনঃ পুনঃ। উচু: প্রাঞ্জলয়ঃ সর্বেব সাগরস্যাভিপুরণম্শ— ॥ ২ • ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বণি তীর্থযাত্রাপর্বণে সমুদ্রপুরণমন্ত্রণে পঞ্চাধিকশতভমোহধ্যায়ঃ॥ >•৫॥

লোমশ উবাচ।

" তানুবাচ সমেডাশস্ত ব্রহ্মা লোকপিতামহঃ।

"গচ্ছধশ বিবুধাঃ! সর্কো যথাকোমং যথেপিতম্॥ ১॥

। ১৪॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥

ইত্যারণ্যকৈ পর্কানি নৈনকগীয়ে জারত ভাবদীপে পঞ্চাধিক—
শততমোহধ্যারঃ ॥ ১০৫ ॥

তানিতি—॥ ১॥

মহতা কালযোগেন প্রকৃতি । বাদ্যতেৎর্বঃ।
জাতীন বৈ কারণং কৃত্বা মহারাজ্যে ভগীরথাৎ "॥ ২ ॥
পিতামহবচঃ প্রত্বা দুর্বে বিৰুধসন্তমাঃ।
কালযোগং প্রতীক্ষন্তো জগ্মুশ্চাপি ষ্থাগতম্॥ ৩ ॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

'' কথ ^ বৈ জ্ঞাতয়ো এক্ষন্ ! কারণঞ্চাত্র কি ^ মুনে !।
কথ ^ সমুদ্রঃ পূর্ণ চ ভগীরথ প্রতিশ্রমাৎ ?— ॥ ৪॥
এত দিচ্ছামাহ ^ শ্রোভুং বিস্তরেণ তপোধন !।
কথ সানং ত্বমাবিপ্র ! রাজ্ঞাঞ্চরিত মুক্তমম্ "॥ ৫॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

এবমুক্তস্ত বিপ্রেক্তো ধর্মরজ্ঞো মহাত্মনা। কথয়ামাস মাহাত্মাং সগরস্য মহাত্মনঃ॥ ৬॥

লোমশ উবাচ।

"ইক্ষাকুনাং কুলে জাতঃ সগরো নাম পার্থিবঃ।
কাপসভ্বলোপেতঃ স চাহপুক্রঃ প্রতাপবান্॥ ৭ ॥
স হৈহয়ান্ সমুৎসাদা তালজজ্বাংশ ভারত!।
বশে চ কৃত্ব। রাজন্যান্ স্বরাজ্য মস্থশাসত ॥ ৮ ॥
তস্য ভার্যে ত্বতাং ক্রপযৌবনদর্পিতে।
বৈদরী ভরতশ্রেষ্ঠ ! শৈব্যা চ ভরতর্বত! ॥ ৯ ॥
স পুক্রকামো নূপতিস্তপ্যতে স্ম মহন্তপঃ *!।
পত্রীভ্যাং সহ রাজেন্ত্র ! কৈলাসং গিরিমাশ্রিতঃ ॥ ১০ ॥

^{* &}quot; ততাপ স্মহত্তপ: " ইতি ক-পাঠঃ। ধ-পাঠশ্চান্যথা " পুত্র কামঃ সন্পতি শুপজাতিষ্ঠ হত্তমন্ " ইতি।

স তপ্যমানঃ সুমহৎ তপোষোগসমন্থিতঃ। আসসাদ মহাত্মান- ত্যক্ষং ত্রিপুরমন্দিন্য ॥ ১১॥ শঙ্কর ভব মীশান পোনাকি খুলপানিন্য। ত্যস্বক শিব মুগ্ৰেশং বছৰপ মুমাপতিম্। ১২॥ স ত^ দৃষ্ট্রৈব বরদং পত্নীত্যা^ সহিতো নৃপঃ। প্রণিপত্য মহাবাছঃ পুক্রার্থং সম্বাচ্ত ॥ ১৩ ॥ ত^ প্রীতিমান্ হরঃ প্রাহ্ সভার্যাং নূপসভ্রম্। " যন্মিন্ রতো মুহ্বর্জেহ্ হং ত্বয়েহ্ নূপতে ! বরম্॥ ১৪॥ यिष्टैः পুত্রসহস্রাণি শুরা: পরমদর্পিতা:। একস্যাং সংভবিষ্যন্তি পত্নাং নরবরোক্তম ! ॥ ১৫ ॥ **८७ रे**हद मर्स्य महिजाः ऋग्न० यामाखि পार्थित !। একো বংশধরঃ শূর একস্যাৎ সংভবিষ্যতি "—। ১৬। এবমুক্ত্বা ভু তং রুদ্র স্তবৈবান্তরধীয়ত। म हालि मनदा तोका क्रनाम चर निर्वामनम् ॥ ১१ ॥ পত্নীভ্যাং সহিতন্তত্ত সোহতি**হুই**মনান্তদা। তস্য তে মনুকশ্ৰেষ্ঠ ! ভাৰ্য্যে কমললোচনে ॥ ১৮॥ বৈদৰ্ক্ত চৈৰ শৈব্যা চ পৰ্ক্তিণ্যো সম্বভূবভূঃ। ততঃ কালেন বৈদর্গ্ত গর্জাবং ব্যক্ষায়ত। ১৯। रेमवा ह स्रवृत्व शूल क्यात्र एक्विशिवम् । ভচ্চালাবুং সমুৎস্রফুং মনশ্চক্রে স পার্থিবঃ ॥ ২०॥ व्यथास्त्रत्रोकाकृष्याय-वाह्य शसीत्रनिवनाम् । ''রাজনু ! মা সাহসং কার্মী: পুজান ত্যক্ত মইসি ॥ ২১। 'অলাবুমধ্যান্নিষ্কৃষ্য বীজ^ যত্নেন গোপ্যতাম্। সোপত্বদেষু পাত্তেষু ছতপূর্ণেষু ভাগশঃ॥ ২২॥ 11 22 11 25 11 20 11 28 11 24 11 29 11 30 11 30 11 35 11 35 11

11 05 11

ততঃ পুত্রসহস্রাণি ষ্টি প্রাপ্যাসি ভারত! ।

অনেন ক্রুমধোগেন মা তে বুদ্ধি রতোহন্যথা"—॥ ২২॥
ইত্যারগাকে পর্বায়ি তীর্যাত্রাপর্বাণ লোমশ তীর্য যাত্রায়াং
সগরোপাখ্যানে ষ্ডধিক-শতত্রমোহধ্যায়ঃ॥ ১০৬॥

লোমশ উবাচ।

ত এত জুত্বাস্ত রীক্ষাক্ত স রাজা রাজসন্তমঃ #।

যথোক্ত শ তচ্চকারথ শ্রদ্ধস্ত রতর্ষভ ।॥ >॥

' একৈকশ স্ততঃ ক্রত্বা বীজং বীজং নরাধিপাঃ।

স্থানু কুন্তেমু তান ভাগান বিদধে ততঃ ॥ ২॥

ধানীকৈটে কলাঃ প্রাদাং পুত্র ক্ষণতংপরঃ।

ত তঃ কালেন মহ তা সমৃত্ত র্ম্বাহাবলাঃ॥ ০॥

যথিঃ পুত্র সহস্রাণি তস্যাপ্রতিমতে জনঃ।

কুদ্রপ্রাণা জর্মেঃ সমজায়ন্ত পার্থিব !॥ ৪॥

তে ঘোরাঃ কুরকর্মণি আকোশপরিস্পিণঃ।

বছত্বাচ্চাহ্বজানন্তঃ সর্বান্ ক্লোকানু সহামরান্॥ ৫॥

বিদশা শ্রাণ্ডা বিল ভূতানি শ্রাং সমরশালিনঃ॥ ৬॥

বাধ্যমানান্ত তোলোকাঃ সাগরৈ ক্ষেক্ব্রিভিঃ।

বক্ষাণং শরণং জগ্মঃ সহিত্যঃ স্বিট্রাইটা বিত্তা ॥ ৭॥

বিদ্যাণং শরণং জগ্মঃ সহিত্যঃ স্বিট্রাইটা বিত্রাইটা ।

বক্ষাণং শরণং জগ্মঃ সহিত্যঃ স্বিট্রাইটা বিত্রাইটা ।

বিদ্যাণ শ্রণং জগ্মঃ সহিত্যঃ স্বিট্রাইটা বিত্রাইটা ।

বিদ্যাণ শ্রণং জগ্মঃ সহিত্যঃ স্বিট্রাইটা যা বিত্রাইটা ।

বিদ্যাণ শ্রণং জগ্মঃ সহিত্যঃ স্বিট্রাইটা যা বিত্রাইটা ।

বিদ্যাণ শ্রণং জগ্মঃ সহিত্যঃ স্বিট্রাইটা ।

বিদ্যাণ শ্রণং জগ্মঃ সহিত্যঃ স্বিট্রাইটা যা বিত্রাইটা ।

ব্যাধ্যমানান্ত বিদ্যালয় স্বিট্রাইটা স্বিট্রাইটা ।

ব্যাধ্যমানান্ত বিশ্বাইটা স্বিট্রাইটা স্বিট্রাইটা ।

ব্যাধ্যমানান্ত বিশ্বাইটা স্বিট্রাইটা স্বিট্রাইটা ।

ব্যাধ্যমানার্ট্যালয় স্বাইটা স্বিট্রাইটা ।

ব্যাধ্যমানার্ট্যালয় স্বাইটা স্বিট্রাইটা স্বাইটার বিশ্বাইটা ।

ব্যাধ্যমান্ত বিশ্বাইটা স্বাইটার স্বাইটার স্বাইটার ।

ব্যাধ্যমান্ত বিশ্বাইটার স্বাইটার স্বাইটার

ইত্যারণ্যক্তে পর্ব্বণি নৈদকণ্ঠীয়ে ভারত ভারদীপেষড়ধিক শততমোহধ্যারঃ॥১১৬॥

এডচ্ছ বেডি—। ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ সাগারৈ: সাগারা পর্বৈর: ॥ ৭ ॥

* " রাজসন্তম !" ইত্যেবং সম্বোধন পাঠ: ক-গ-পুশুক্রো: ।

† " অধাবন্ত" ইতি ক-পাঠ: ।

ভানুবাচ মহাভাগঃ শর্বালাকপিতামহঃ। ' शक्कशः जिम्माः मटर्क लाटेकः मार्कः स्थाभाउम्॥ ৮ ॥ নাতিদীর্ষেণ্ কা**লেন সাগ**্রাণা**ৎ ক্ষরো মহান্।** ভবিষ্যতি মহা**ঘোরঃ স্বকৃতিঃ কর্মাভিঃ স্থরাঃ ! "--**৷ ৯ ॥ এবমুক্তাস্ত তে দেবা লোকাশ্চ মনুজেশ্ব।। পিতামহ মনুজ্ঞাপ্য বিপ্ৰজন্ম ৰ্যথ গতম্॥ ১০॥ ভতঃ কালে বছতিথে বাতীতে ভরতর্ষত !। मीकि छ: मभरता ताका इस्रायासन वीर्यावान्। >> ॥ তস্যাশ্বো ব্যচরন্থুমিং পুজৈঃ সম্পরির ক্ষতঃ। সমুদ্রং স সমাসাদ্য নিস্তোয়ণ ভীমদর্শনম্ । ১২ ॥ রক্ষ্যমাণঃ প্রমত্ত্বেন তত্ত্বৈ স্তর্ধীয়ত। ততত্তে দাগরাস্তাত। হ্ব ১ং মত্বা হয়েত্বিমম্॥ ১৩॥ আগমা পিতুরাচখু। "রদৃশাং তুরগং হৃতম্"—। তেনোক্তা ও দিকু সর্ব্বাস্থ সর্বে মার্গত বাজিনম্ "—। ১৪॥ ততত্তে পিতৃর।জ্ঞায় দিকু দর্ক।স্থ ত^ হয়ম্। ক্ষমার্গ ন্ত মহারাজ ! সর্বব্য পৃথিবীতলম্ ॥ ১৫॥ ততন্তে দাগরাঃ দর্বে সমুপেতা পরস্পরম। নাধ্যগক্তন্ত তুরগ মশ্বংর্তার মেব চ। ১৬। আগম্য পিতরপোচু স্ততঃ প্রাঞ্জলয়ে ২গ্রতঃ। " मक्रमुख वनदीया मनमी-नमकमा ॥ ১१॥ म्रश्रक्ष उर्वादिस्या निर्वितन मही नृष्य ।। অসাতি বিচিতা রাজন্। শাসনাক্তর পার্থিব '॥ ১৮॥

1 P 1 9 1 20122 125 125 1120 1138 1124 1 20 11 24 11 24 11

(ন চাশ্ব মধি গজামৌ নাশ্ব হর্তার মেব ह)।"---শ্রুত্ব বচনং ভেষাংস রাজা কোধসুন্ত্'ইঃ॥ ১৯॥ **छेबाठ वठनः मक्षाक्षका टेनववंभ श्रृ**यः। 'অনাগমায় গচ্ছধ∼ ভূয়ো মার্গত বাজিনম্॥ ২০॥ যজ্জিরং তশ বিনা শৃশ্বং নাগস্তব্যুশ হি পুত্রকাঃ !''— প্রতিমূহ্য তু সন্দেশং পিতৃত্তে সগরাত্ম াঃ॥২১॥ ভূয় এব মহাং রুৎস্নাৎ বিচেতু মুপচক্রমুঃ। অথাপশ্যন্ত তে বীরাঃ পূথিবা মবদারিতাম্। ২২। সমাসাদ্য বিলং ভচ্চাপ্যথনন্ সগ্রাপ্স ।। কুদালৈছে যুকৈশেচৰ সন্ধং যত্ন মান্তিভাগে ২৩ গ স খন্যমান: সাহতৈ: সাগরে কারুণালয়:। অগচ্ছৎ পরমাম। বিং দীর্ঘামাণঃ সমস্ততঃ । ২৪॥ অস্তুরোরগরকা॰ সি সম্ভানি বিবিধানি চ। আর্ত্তনাদ মকুকান্ত বধ্যম।নংনি সাগেরৈ:॥ ২৫॥। ছিলশীর্ষা বিদেহাক ভিলত্বগন্থিসকারঃ। প্রাণিনঃ সম্মূদ্যও শতশোহ্থ সংক্রমঃ॥ ২৬॥, এবং হি খনতাং তেষাং সমুদ্রং বরুণালয়ম্। ব্যতীতঃ স্থমহান্ক।লোন চাখঃ সমদৃশ্যত ॥ ২৭॥ ততঃ পুর্বোন্তরে দেশে মুদ্রস্য মহাপতে!। বিদার্য্য পাতাল মথ সশকুষাঃ সগর। স্বজাঃ । ২৮॥

॥১৯॥২০॥২১॥২২॥ ত্রেরকৈঃ ত্রেষরতি প্রসপরতে,তি রিতি মৃতিকেংথ কেপণ যত্ত্বৈ, সদত্তে পোহপত্তিঃ ত্রেষপ্রসপণে, অসরেপন্॥২০॥ স্না গারেঃ সগর পত্ত সধ্কৈঃ॥২৪॥২৫॥২৬॥২৭॥ পুর্বোত্তরে ঐ শান্যান্ ॥২৮॥

^{*} मारखारगर्शनः क-श्खरक।

অপশান্ত হয়ং তত্র বিচরন্তং মহীতলে। কপিলঞ্চ মহাত্মান তেজোরাশি মনুত্তমম্। তেজসা দীপামানস্ত ত্মালাভিরিব পাবকম্''—॥ ২৯॥

* লোমশ উবাচ। •' তে তং দৃষ্ট্র। হয়~ রাজন্ : সংপ্রহৃষ্টতমূরুহাঃ। অনাদৃত্য মহাত্মানং কপিলং কালচোদিতাঃ॥ ৩০॥ সংক্রুদ্ধাঃ সমধাবন্ত অশ্বগ্রহণকাঞ্জিণঃ। ততঃ কুন্ধো মহারাজ! কপিলো মুনিসন্তমঃ ॥ ৩১ ॥ বাস্থদেবেতি যং প্রাহুঃ কপিল্ মুনিপুঞ্চবম্। স চক্ষিকৃতং কৃত্বা তেজস্তেষু সমুৎস্জন্॥ ৩২ ॥ ममार समराटिका मन्द्रकोन् म मानदान्। তান্ দৃষ্ট্র। ভস্মসাদ্ ভূতান্নারদঃ স্থমহাতপা: ॥ ৩৩॥ मध्याञ्चिक माध्य उक्त उट्टेम् नार्यमञ्ज । স ভচ্ছুত্বা বচো ছোর রাজা মুনিমুখোলাতম্ ॥ এ৪ ॥ সুহূর্ত্ং বিমনা ভূত্বা স্থাণো ব্যাক্য মচিন্তয়ৎ 🕇 । অংশুমন্তঃ সমাহুয় অসমপ্তঃস্কৃতং তদা ॥ ৩৫॥ পৌত্রং ভরতশার্দ্দূল ! ইদং বচন মত্রবীৎ। " ষটিস্তানি সহস্র।ণি পুজাণা মমিতৌজসাম্।। ৩৬॥ ্কাপিল্ণ তেজ আসাদ্য মৎক্কতে নিধনং গতাঃ। তব চাপি পিতা তাত ! পরিতাক্তো ময়ানঘ!। ধর্দ্যং স্বং রক্ষমাণেন পৌরাণাং হিতমিচ্ছতা''—॥ ৩৭॥

* নান্ত্যেষ পাঠঃ ক-পুশুকে।
 † অচিন্তর দিত্যনন্তরং—'' আত্মনাত্মান মাঝাস্য হয় মেধ মচিন্তরংগ
ইত্যোধিকঃ পাঠঃ ক-পুশুকে লতাতে।

। १०॥ ७०॥ ७०॥ ८०॥ ७०॥ ८०॥ ००॥ ७०॥ १००॥

যুগিন্তির উনাচ।

" কিমর্থং রাজশার্দ্দুলঃ সগরঃ পুত্রমাত্মজন।
ত্যক্তবান্ তুন্তাজং বীরং তত্মে বুহি তপোধন!" । ৩৮॥
লেমেশ উবার।

🕶 অসমঞ্জ ইতি খ্যাতঃ সগরদা স্থাতা হাভূৎ। यः टेनवा अन्यामाम (भोतानाः म हि मातकान्। ७०। গলেষু ক্রেশতো গৃহ্ছ নদ্যাঞ্চিকেপ তুর্বলান । ততঃ পৌরা: সমজেগার্ডয়শোকপরিপ্রতাঃ॥ ৪০॥ সগরক্ষাভাভাষন্ত 🚓 সর্বে প্রাঞ্জলয়: স্থিতাঃ। ত্বণ নস্ত্রাতা মহারাজ। পরচক্রাদিভি র্ভরাৎ॥ ৪১॥ অসমঞ্জো ভয়াদেবারান্ততো ন স্তাতু মইসি। পৌরাণাং বচনং শ্রুত্বা ছোরং নূপতিসক্তমঃ ॥৪২ ॥ মুহূর্ত্ত^ বিমনা ভূত্বা সচিবানিদ মত্রবীৎ। ' অসমঞ্জাঃ পুরাদদ্য স্থতো মে বিপ্রবাস্যতামু॥ ৪৩॥ যদি বো মৎপ্রিয়^ কার্যামেডচ্চীড্রং বিধীয়তামৃ"—! এবসুক্তা নরেন্দ্রেণ সচিবা স্তে নরাধিপ ! ॥ ৪৪ ॥ যথোক্তং ত্বরিতাশ্চকু র্যথাজ্ঞাপিতবান্নপঃ। এতত্তে সর্বাশ্যাতং যথা পুজো মহাত্মনা ॥ ৪৫ ॥ পৌরাণাং হিতকামেন সগরেণ বিবাসিত:। **ष्यः ७ मा - छ मट्यारमा यह कः मनरत्र हि।** তত্তে সর্বাণ প্রবক্ষ্যামি কীর্ত্তামানং নিবোধ মে''— ৪৬॥ मगद छेग्ह ।

' পিতুশ্চ তেহহ> ত্যাগেন পুজ্ঞাণাং নিধনেন চ। অলাভেন তথাশ্বস্য পরিতপ্যামি পুক্তক।॥ ৪৭॥ ॥ ৩৮॥ ৩২.॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ९०॥ ৪৪॥ ৪৫॥ ৪৬॥ ৪৭॥

^{*} অভাষাচন্ত ইতি ক-পুন্তক:।

তক্মান্দ:খাভিসন্তপ্তং যজ্জবিদ্বাচ্চ মোহিতম্। হ্যস্যানয়নাৎ পৌতা! নরকাশাং সমুদ্ধর"—। ৪৮॥ অংশুমানেব মুক্তস্তু সগরেণ মহাত্মনা। জগাম ছুঃখাত্তং দেশং যত্র বৈ দারিতা মহী॥ ৯ ॥-স তু তেইনৰ মার্গেণ সমুদ্র- প্রবিবেশ হ। অপশ্যাচ মহাত্মানং কপিলং ভুরগঞ তম্ ॥ ৫ • ॥ স দৃষ্ট্য তেজসো রাশিং পুরাণ মৃধিসম্ভয়য়। প্রাপম্য শিরসা ভূমৌ কার্য্য মলৈ ন্যবেদয়ৎ ॥ ৫১ ॥ ততঃ প্রীতো মহারাজ ! কপিলোহংশুমতোৎভবৎ। উবাচ চৈনং ধর্মাত্ম। বরদোহস্মীতি ভারত। ॥ ৫২ ॥ স বত্তে ভুরগং তত্র প্রথমং যক্তকারণাৎ। দ্বিতীয়ং বরকং বত্ত্রে পিতৃগান পাবনেচ্ছরা।। ৫৩॥ তমুষচে মহাতেজাঃ কপিলো মুনিপুঙ্গবঃ। · क्रानि उर ७ छः (७ यन्यन् श्रार्थत्र(त्रश्नच । । 08 l ত্বয়ি ক্ষমা চ ধর্মান্চ সভ্যঞ্চাপি প্রতিষ্ঠিতম্। ত্বয়া কুতার্থঃ সগরঃ পুক্তবাংশ্চ ত্বয়া পিতা। ৫৫॥ তব দৈব প্রভাবেন স্বর্গণ যাস্যন্তি সাগরাঃ। পৌক্রণ তে ত্রিবথগাং ত্রিদিবাদানরিষ্যতি। ৫৬॥ পাবনার্থং সাগ্রাণাশ তোষ্যিত্বা মহেশ্বরম্। হয় ১ নয়স্ব ভদ্র তে যক্তিয় ১ নরপুঙ্গব। ॥ ৫৭ ॥ যজ্ঞঃ সমপ্যেতাং তাত! সগরস্য মহাত্মনঃ"—1 অংশুমানেব মুক্তস্ত কপিলেন মহালা। ৫৮॥ व्याक्तिम इत्र भृष्ट्र यक्कत्रि भहाज्ञनः। সেহিভিবাদ্য ততঃ পাদো সগরস্য মহাত্মনঃ ॥ ৫৯॥.

8 × 11 8 × 11 0

মূদ্ধি তেনাপ্যপাত্রাত স্তব্মৈ মর্কং নাবেদয়ৎ। यथानुकेर अन् उक्षानि मानवाना - ऋत्र - उदा । ७० ॥ ज्ञाश्रेण इस माहके यद्धवाहे मुनान उम्। তচ্চুত্রা সগরো রাজা পুত্রজ্ঞ চুংখ মত্যজ্ঞ। ৬১॥ অংশুমন্তঞ্ব সংগৃত্ব সমাপ্রত তং কেতুম্। সমাপ্তযক্তঃ সগরো দেৰৈঃ সইকাঃ সভাজিতঃ ॥ ৬২ ॥ পুত্ৰৰে কম্পায়ামান কমুদ্ৰ ৰক্ষণালয়ম্। প্রশাস্য স্থৃচিরণ কালং ব্লাজ্যণ রাজীবলোচনঃ॥ ৬৩॥ পৌল্রে ভারং সমাবেশ্য জগাম তিদিবং তথা। অংশুমানপি ধর্মাত্রা মহীক সাগরমেশ্বলাম্ ১৬৪॥ প্রশাস মহারাজ। ষ্টেথবাস্য পিতামইঃ ত্যা পুত্ৰ: সমভবং দিলীপো নাম ধৰ্মবিং॥ ৬৫॥ তবৈম রাজ্যং সমাধায় অংশুমানপি সংস্কৃতঃ। দিলীপস্ত ততঃ প্রত্থা পিতৃণাং নিধনং মহং॥ ৬৬॥ পৰ্য্যতপ্যত দুঃখেন তেষা মাত্ৰমচিন্তয়ৎ। গঙ্গবৈতরণে ষত্র স্থাইচ্চাকরে।মৃশঃ । ৬৭॥ ন চাবতারয়াম। স চেফ্মানো বথাবলম্। তদ্য পুক্রঃ সমভবৎ জীমান্ ধর্মপরায়শঃ॥ ৬৮॥ ভগীরথ ইতি খাতিঃ সত্যবাননমূরকঃ ৷ অভি।ষচ্য তু তং রাজ্যো দলীপো বনমাঞ্চিতঃ ॥ ৬৯॥ তপঃ সিদ্ধিসমাযোগাৎ স রাজা ভরতর্বভ!। वनाडक्शांम जिल्द कालायार्शन छात्र । "-॥ १०॥ इंडारिनारक अवस्थि डीर्थम जा अवस्थि जगीर थरा जगा जिस्स्टरक मर्खाधिक मर्रङ्गार्थः ॥ २०१ ॥

॥ ৬০॥ ৬১॥ ৬২॥ ৬৩॥ ৬৪॥ ৬৫ ৬৬॥ ৬৭॥ ৬৮॥ ৬১॥ ৭০॥ ইঙারেককে পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে নগু। ধক-শভতমেহধ্যায়ঃ ॥১০৭॥ लायम छेताह।

" স তুরাজা মহেশ্বাসশ্চক্রবর্ত্তী মহারথঃ। वज्र नर्वालाकमा महनानयन-नन्नः । ३ ॥ স শুপ্রাব মাহাব ছঃ কপিলেন মহাত্মনা। পিতৃণাং নিধনং ছোর মঞাপ্তিং তিদিবস্য চ॥ ২॥ म রাজ্য< সচিবে ন্যা ऋদয়েন বিদুয়তা। জগাম ছিমবৎপাশ্বং তপস্তপ্ত নরেশ্বর:॥ ৩। আরিরাধয়িষু গঙ্গাং তপসা দগ্ধকিল্বিষঃ। সোহপশ্যত নরশ্রেষ্ঠ ! হিমবন্তং নগোত্তমমু॥ ৪॥ শুকৈর্বান্তবিধাকারে ধ।তুমন্তি রলক্তম। প্রবালম্বিভি শ্বেহৈঃ পরিষিক্তং সমস্ততঃ ॥ ৫ ॥ নদীকুঞ্জনিতধৈশ্চ প্রাসাদৈ রূপশোভিত্য । গুছাকন্দরসংলীনৈঃ সিংহব্যাছৈ নিষেবিতম্ ॥ ৬॥ भक्रेनम विविवादेशः कृष्वस्तिविविधा शितः। ज्यतारेक्छथा इ॰ रेम का ज़ारेक क निकृक रेवेः ॥ १ ॥ ময়ুরৈ: শতপত্রৈক জীবঞ্জীবক-ক্যোকিলৈ:। চনোরে রসিতাপাকৈতথা পুত্রপ্রিয়ে রপি ॥ ৮॥ জলস্থানেষু রম্যেষু পদ্মিনীভিশ্চ সঙ্কৃলম্। সারসানাঞ্চ মধুরৈ ব্যাহ্নতৈ: সমলক্তম্॥ ১॥ কিন্নবৈ রক্ষরোভি চ নিষেবিত শিলাতলম। দিপ্তারণবিষাণাথোঃ সমস্তাদ্দ্ উপাদপম্। ১০॥ विषाधितासूठविष्ठः नानात्रज्ञमभाकृतम्। 'वियालगण्डकरेक्ट मीखिकरेख निरंपिवज्य ॥ >> ॥

স্থিতি— ৷ ১ ৷ ২ ৷ ৩ ৷ ৪ ৷ ৫ ৷ ৬ ৷ শকুনে: প্ৰতি: ৷ ৭ ৷ ৮ ৷ ৯ ৷

20 H 22

@ o. C

ক্রচিৎ কনকসকাশং ক্রচিত্রজতসন্নিভম্।
ক্রচিদঞ্জনপুঞ্জাভি হিমবন্ত মুপাগমৎ । ১২ ॥
স তু তত্র নরশ্রেষ্ঠ ন্তপৌ ঘোরং সমাজিতঃ।
ফলমুলামুসংভক্ষঃ সহস্রক পরিবৎসরান্ । ১৩॥
সম্বংসরসহত্রে তু গতে দিব্যে মহানদী।
দর্শরামাস তি গঙ্গা তদা মূর্ত্তিমতী স্বরম্॥ ১৪॥
গলোবাচ।

"কিমিচ্ছিসি মহারাজ! মন্তঃ কিঞ্চ দদানি তে।
তদ্ধ্রীহি নরশ্রেষ্ঠ! করিষামি বচন্তব"—॥ ১৫॥
এবমুক্তঃ প্রভাবাচ রাজা হৈমবতীং তদা।
"পিতামহা মে বরদে। কপিলেন মহানদি!॥ ১৬॥
অন্বেমাণাস্তরগং নীতা বৈবস্বতক্ষয়ম্।
যফিস্থানি সহস্রাণি সাগরাণাং মহাস্থনাম্॥ ১৭॥
কপিল্প দেব মাসাদ্য ক্ষণেন নিধনং গতাঃ।
তেবামেবং বিনফানাং স্থগে বাসোন বিদ্যুতে॥ ১৮॥
যাবজ্ঞানি শরীরাশি স্থং জলৈ নাভিষ্ণ্ণসে।
তাবজেষাং গতি নাস্তি সাগরাণাং মহানদি!॥ ১৯॥
স্থগং নয় মহাভাগে। মৎপিত্ন সগরাস্থাকান্।
তেবামর্থেন যাচামি স্থামহং বৈ মহানদি।"—॥ ২০॥
লোমশ উবাচ।

ে এতচ্চুত্রা বচো রাজ্ঞো গঙ্গা লোকনমস্কৃতা।
ভাগীরথমিদং বাক্য মুবাচ প্রতিমানসা॥ ২১॥

করিবামি মহারাজ। বচন্তে নাত্র সংশয়:।
বেগস্ক মম তুর্দ্ধার্যাং পতন্ত্যা গগণান্ত্রম্॥ ২২॥

11 25 11 20 11 28 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11 25 11 25 11

ন শক্ত স্থিয় লোকেয়ু কশ্চিকার য়িতু নৃপ !।

অন্যত্ত বিবৃধশ্রেষ্ঠালালক ঠালহেশ্বরাং ॥ ২৩ ॥
ত শতাব্য মহাবাহো ! তপদা বরদ হর্ম ।

স তু মা প্রাচ্চাতাং দেবং শিরদা ধার য়িষ্যতি ॥ ২৪ ॥
স করিষাতি তে কামং পিতৃণা শহিতকাম্যা ।
এতচ্ছু আ ততো রাজন্ ! মহারাজো জগীরধং ॥ ২৫ ॥
কৈলাসং প্রত গ্রা ভোষয় মাস শঙ্করম্ ।
তপন্তীর মুপাগম্য কালযোগেন কেন্চিং ॥ ২৬ ॥
অগৃক্ত বরং তন্মাদাকায়া ধারণে নৃপ !।
অগ্ক চে বরং তন্মাদাকায়া ধারণে নৃপ !।
অগ্ক চে বরং তন্মাদাকায়া ধারণে নৃপ !।

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ ভার্থয়াত্তাপর্বাণ গঙ্গাবতরণকথনে অউাধিকশততমে ২ধ্যায়ঃ ॥ ১০৮ ॥

লোমশ উবাচ।

" ভরীরথবচঃ শ্রুত্বা প্রিয়ার্থঞ্চ দিবৌকসাম।
এবমস্থিতি রাজান ভর্মবান্ প্রস্তাভাষত । ১ ॥
ধার্যিষো মহভোগ। * গ্রুণাৎ প্রচ্যুতাং শিবাম।
দিব্যাৎ দেবনদাং পুর্বাৎ স্থক্ক,ত রূপসন্তম।। ২ ॥

1 20 1 28 1 20 1 29 1 29 1

ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপেহউাধিক শততমোহধারঃ॥ ১০৮॥

ज्मीत्रावि ॥ ।। २

^{* &}quot; মহাবাহো !" ই.৩ ক পাঠঃ-

এবমুক্তা মহাবাছো। হিমক্ত মুপাগমৎ। রুতঃ পারিষদৈ র্যোটের নানাপ্রছরপোদ্যটেতঃ ॥ ৩ ॥ তত্র স্থিতা নরশ্রেষ্ঠি ভগীরথ মুবাচ হ। " প্রযাচস্ব মহাবাছো! শৈলর। জমুতাং নদীমু॥ ৪॥ পতমানাং সরিচ্ছেষ্ঠাং ধারয়িধো ত্রিপিউপাৎ"। এ ভদ্মা বচো রাজা শর্বেণ সমুদা হতম্ । ৫ । প্রয়তঃ প্রণতো ভূত্বা গঙ্গাং সমমুচিন্তরং। ততঃ পুণাজলা রন্যা রাজ্ঞা সমসুটেন্তিতা॥ ৬॥ ঈশ।নঞ্ছিতং দৃষ্ট্ব। গগণাৎ সহসা চ্যুতা। তা প্রচুতোমথো দৃষ্ট্বা দেবাঃ সার্দ্ধং মহর্মিডিঃ ॥ १ ॥ शक्तादिवात्रशयकाण्ड ममाक्ष्मा किन्कवः। ততঃ পণাত গগণাকাক। হিমবতঃ স্থতা॥৮। সমুদ্ধতমহাবর্ত্তা মীনপ্রাহসমাকুলা। णा॰ मधात करता त्राकन् ! शकार शशनरमथेलान् ॥ अ। ললাটদেশে পতিতাং মালাং মুক্তাময়ীমিব। সা বভূব বিসর্পন্তী তিধা রাজন্ ! সমুদ্রগা ॥ ১० ॥ কেনপুঞ্জাকুলজনা হংসানামিব পঞ্জ ক্রয়:। क्रिना (जात्र क्रिना अञ्चल ही क्रिन क्रिन ॥ >> ॥ সা কেনপটসংবীতা মত্তেৰ প্ৰমদাহত্ৰজৎ। क्रिंट मा ट्याय्रनिनरेत संबक्षी नाम्युख्यम् ॥ ১२ ॥ **এবং প্রকারান্ স্থ**বছুন কুর্বেস্তা পগনাচ্চাতা। পृथिवीजन मामामा जग तथ मथा वनी सा ১७॥ " দর্শয়ন্ত্র মহারাজ। মার্গং কেন ব্রজামান্য। चनर्थ मरजोनीन्मि शृथिवोश शृथिवाश ए !" । ১৪ ॥

এতচ্চত্ত্বা বচো রাজা প্রাতিষ্ঠত ভগীরথঃ। যত তানি শরীরাণি সাগরাণাং মহাত্মনাম্॥ ১৫॥ क्षावनार्थः नत्रत्वकं ! श्रुत्नान मिललन ह । গঙ্গায়া ধারণ্ কুত্বা হরো লোকনমস্কৃতঃ ॥ ১৬ ॥ কৈলাসং পর্বান্তশ্রেষ্ঠং জগাম ত্রিদশৈঃ সহ। সমাসাদ্য সমুদ্রঞ্চ গঙ্গুয়া সহিতো নুপ:॥ ১৭॥ পুরয়ামাস বেগেন সমুদ্র বরুণালয়ম। তুহিতৃত্বে চ নৃপতি গঞ্চাং সমনুকল্পয়ং॥ ১৮॥ পিত गारका नकः छव माने शृन्यत्ना तथः। এতত্তে সৰ্বামাখ্যাতং গঙ্গা ত্রিপথগা যথা॥ ১৯॥ পূরণার্থং সমুদ্রস্য পূথিবী মবতারিতা। সমুদ্রুশ্চ যথা পীতঃ কারণার্থ- মহাত্মনা॥ ২০॥ বাতাপিশ্চ যথা নীতঃ ক্ষয়ং স ব্রহ্মহা প্রভো!। অগস্ত্যেন মহারাজ ! যুবাং ত্ব~ পরিপৃচ্ছসি"—॥ ২১॥ ইত্যারণাকে পর্বাণ তীর্থযাত্রাপর্বাণ গঙ্গাবতরণকথনে নবাধিকশততমোধ্যায়ঃ ॥ ১০৯॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততঃ প্রয়াতঃ কৌন্তেরঃ ক্রমেণ ভরতর্যত !।
নন্দা মপরনন্দঞ্জিনদো) পাপভিয়াপহে॥ ১॥
॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ১১॥ ২৫॥ ২১॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগায়ে ভারত ভাবদীপে নবাধিক-শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০৯॥

তত ইতি—॥ ১ ॥

পর্বতি সন্মানাদ্য হেমকুট মনাময়ম্।
অভিন্তান দুতান ভাবান্দদর্শ স্বহ্রপঃ ॥ ২ ॥
বাতা বদ্ধা * ভবক্ষেঘা উপলাশ্চ সহস্রশঃ।
নাশক্রংস্তমারোচ্ছ বিষয়মনসাে জনাঃ॥ ৩ ॥
বায়ুর্নিতা ববৌ তত্র নিতা দেশ্চ বর্ষতি।
স্বাধানেঘােঘশ্চ তথা ক্রানতে ন চ দৃশ্যতে ॥ ৪ ॥
সায় প্রতেশ্চ ভগবান্দৃশ্যতে হব্যবাহনঃ।
মক্ষিকাশ্চ দশ্স্ত ভপসঃ প্রতিঘাতকাঃ॥ ৫ ॥
নির্বেদাে জায়তে তত্র গৃহাণি স্মরতে জনঃ।
এব বহুবিধান্ ভাবানদুতান্ বীক্ষা পাশুবঃ।
লোমশ্য পুনরেবাথ প্রাপৃক্তক্তদ্ভুত্ম্॥ ৬ ॥
লোমশ্য উবাচ।

" যথা শ্রুতমিদং পূর্বি মন্মাভি ররিকর্ষণ !।
তদেকাগ্রমনা রাজন ! নিবোধ গদতো মম ॥ ৭ ॥
অন্মিন্বভকুটেংভূদ্যভো নাম তাপসঃ।
অনেকশতবর্ষায়ু স্তপন্থী কোপনো ভূশম্॥ ৮॥
স বৈ সম্ভাষ্যমাণোহন্যঃ কোপাদিগর মুবাচ হ।
' য ইহ ব্যাহ্রেং কশ্চিত্রপলামুংহজেন্তথা॥ ৯॥

ভাবান পদার্থান্ ॥ ২ ॥ বাতান্দাঃ বাতেন আবদ্ধা মেঘা উপলাক বভন্
অভবন্ বাতং বিনা সহসা মেঘাঃ শিলাক প্রযুক্তান্ত ইতার্থঃ, ভবন্ ইতাড়
ভাব আর্মঃ, বাচা যত্র ভবলিতি পাঠে—শক্ষোজারণেনৈব যত্র মেঘা
উপলাক, হে ভবন্ ! ভাসমান!, আবির্ভবন্তীতিশেঃ ॥ ৩ ॥ নচ দৃণ্যতে২ ধ্যেতা ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ নির্কেলে বিরি দর্শনে বৈরাগ্যং, গৃহাণি জ্ঞাদীনি
॥ ৬ ॥ পৃক্টশ্চলোমণ উবাচ যথা শুভত মিতি—॥ ৭ ॥ ঋবভকুটে খন্ডাশ্রিতে শেল শ্রে॥ ৮ ॥ ৯ ॥

^{* &#}x27;' বাতাথত্তাভবশ্যেষা"—ইতি ক পাঠ এত চ্চিন্ত্যং কেবলবায়ে। মেৰ্ভ বনাযোগ্যন্থাং।

বাতঞ্ছের মা শব্দমিত্যুবাচ স ভাপসঃ। ব্যাহর ৭ শ্রেহ পুরুষো মেঘশব্দেন বার্যান্ত। ১০॥ এবমেতানি কর্মাণি রাজংস্তেন মহর্ষিণা। ক্লভানি কানিচিৎ ক্লোধাৎ প্ৰতিষিদ্ধানি কানিচিৎ॥ ১১॥ নন্দা প্রভিগতা দেব।: পুরা রাজন্নিতি আচতিঃ। অম্বপদান্ত সহসা পুরুষা দেবদর্শিনঃ ৫ ১২ ॥ তে দর্শন পর্নিচ্ছন্তো দেবাঃ শত্রপুরোগমাঃ। ছুৰ্গঞ্চকু রিমং দেশং গিরিপ্রভুট্টেরপফ্র ॥ ১৩॥ ভদা এভৃতি কৌন্তের। নরা গিরিমিম^ সদা। নাশক্ষ, স্বভিদ্র উণ্ণ কুত এবাধিরে। হিতৃম্ । ১৪॥ নাতপ্ততপদা শক্যো জ্ব ইমেৰ মহাগিরিঃ। আবে:তুষ:পি কৌন্তের ! তন্মান্নিয়তবাগ্ভব॥ ১৫॥ हें एपवाल्यमा मर्दर वळानाकक् क्रुक्त ज्ञान्। তেষা মেডানি লিকানি দৃশ্যন্তেইদ্যাপে ভারত।॥ ১৬॥ কুশাকারেব দূর্বেয় সুস্থার্ণেব চ ভূরিয়ম্। যুপপ্রকারা বহবো রুক্ষান্ডেমে বিশাম্পতে ! ॥ ১৭ ॥ দেবাশ্চ ঋষয়শৈচব বসন্তাদ্যাপি ভারত।। তেষা শায়ং তথা প্রাত্ত দুশাতে হ্বাবাহনঃ॥ ১৮॥ ইহাপ্লু তানাং কৌন্তেয় ! সদাঃ পাপ্মাভিহন্যতে। কুরুশ্রেষ্ঠ:ভিষেক বৈ ভন্মাৎ কুরু সহামুক্ত: । ১৯ । ততো নন্দাপ্ত। করু > কৌশিকী মভিষাস্যাস। ্বিশামিত্রেণ যত্তোগ্রং তপন্তপ্তমমুভমুম্ 🛚 ২০ 🗷

মা শব্দ কুক ইতিশেষ: ॥ ১০ ॥ ১১॥ অশ্বপদান্ত অভ্যাপত্ৰতঃ, দেব দৰ্শিনঃ
দেবদশ্লাথিনঃ ॥ ১২ ॥ প্ৰভ্যুত্ত্ৰপকং দৰ্শনে বিশ্বস্থা ১৩॥ ১৪॥
নিত্ৰতাক্ মোনবান্॥ ১৫॥ ১৬। ১৭॥ ১৮॥ তে কুঞ্চেঠ ! ॥ ১১॥ ২০॥

ত ত স্তত্ত সমাপ্র তা গাত্তাণি স্গণো নূপঃ। জগাম কৌশিকীং পুণ্যাশ রুমাশে শীত্ত জলাং শুভাম্"—॥ ২১॥ লোমশ উবাচ।

" এষা দেবনদী পুণা কৌশিকী ভরতর্ষত!।
বিশ্বামিত্রাশ্রমো রম্য এষ চাত্র প্রকাশতে। ২২॥
আশ্রমকৈব পুণাখাঃ কাশ্যপদ্য মহাত্মনঃ।
ঋশ শৃক্ষ স্কৃতো যদ্য তপস্বী সংঘতে ক্রিয়ং॥ ২৩॥
তপদো যঃ প্রভাবেন বর্ষয়ামাদ বাদবম্।
আনার্ফাং ভয়াদ্বদ্য ববর্ষ বলর্ত্রদা। ২৪ ॥
মুগাং জভেঃ দ তেজন্বী কাশ্যপদ্য স্কৃতঃ প্রভুঃ।
বৈষয়ে লোমপাদ্যা যশ্চকারাছুত মহৎ॥ ২৫॥
প্রাত্তিত্র শুশ্রেয়ে যুবনা শান্তাং দদৌ নূপঃ।
লোমপাদ্যে তুহিতরং সাবিত্রী সবিতা যথা"—॥ ২৬॥
মুধিছের উবাচ।

अশাশৃক্ষঃ কথং মৃগ্যা মুংপন্নঃ কাশ্যপাত্মদ্ধঃ ।

কিন্ধিক কোনিসম্সর্কে কথক তপদা মুডঃ ॥ ২৭ ॥

কিন্ধিক ভয়াচ্চক্র স্তদ্য বালিদ্য ধীনতঃ ।

অনার্ক্ট্যাম প্রস্তায়াম ববর্ষ বলর্ত্রহা ॥ ২৮ ॥

কথং ৰূপা চ দা শান্তা রাজপুক্রা যতপ্রতা ।

লোভয়ান্যাদ্য যা চেতো মৃগভূতদ্য তদ্য বৈ ॥ ২৯ ॥

লোমপাদশ্চ রাজার্য র্যাক্রয়ত ধাশ্মিকঃ ।

কথম বৈ বিষয়ে তদ্য নাব্র্যথ পাক্শাদ্যনঃ ?—॥ ৩০ ॥

॥ २० ॥ २२ ॥ का नाभमा विख्यकमा, क्ष्मािक जानवावान्, मूक्नाभाष्ठः व्यामानिकः, क्षात्ना इशः जमािव मृष्ट्रमााखीज क्षमः मृष्टः " व्याना ङ्यान्"—रेजािन मञ्जर्भार्था २०॥ २८॥ २८॥ २०॥ २०॥ २०॥ এতন্মে ভগবন্। সর্বাং বিস্তারেণ যথাতথ্য।
বক্তু মর্হান শুক্রাষো ঋশাশৃঙ্গা টেফিতম্"—॥ ৩১ ॥
লোমশ উবাচ।

" বিভাগুক্স বিপ্রধে স্তপদা ভাবিতাত্মনঃ। অমোঘবার্যাস্থ্য সঙঃ প্রজাপতিসমত্যুতেঃ॥ ৩২ ॥ সৃণু পুলো যথা জাত ঋদ্যসৃত্তঃ প্রকাপবান্। মহা**হস্ত মহাতেজা বালঃ স্থ**বিরস**িম্মত** ৷ ৩০ 🛭 মহ ব্ৰদ্প সমাসাদ্য কাশ্যপস্তপসি স্থিতঃ। দীর্ঘকালং পরিশ্রান্ত ঋষিঃ স দেবসন্মিতঃ ॥ ৩৪ ॥ **७७ (तटः अठकक मृष्ट्राध्म**ाम पूर्वभीम् । অপ্পস্পতো রাজন্! মূগী তচ্চ, পিবত্তদা॥ ৩৫॥ সহ তোয়েন তৃষিতা গরিণী চাভবত্ততঃ। সা পুরে ভারত ভারত বা ব্রহ্মণ। লেকেক তুরি।। ৩৬॥ ' (प्रवक्ता मृती जुड़ा मृतिः स्वत विस्माकारम' । অমে ঘত্তাদ্বিধেকৈব ভাবিত্ব দৈবনিৰ্মাত, ৫॥ ৩৭॥ তন্তাং সুগ্যাং সমভবত্তন্তা পুজে। মহানৃষি:। ঋশাশৃঙ্গ স্তপোনিজ্যো বন এবাভাবর্ত্ত॥ ৮॥ তদার্বেঃ শৃঙ্গ শির্দা রাজন্নাদীনহাত্মনঃ। তেনৰ্শ শৃঙ্গ ইত্যেবং তদা স প্ৰথিতোহভবৎ॥ ৩৯॥ ন তেন দৃষ্টপূর্বেহিনাঃ পিতৃ রন্যত্র মানুষঃ। তক্ষাক্তম্য মনো নিত্যং ব্রহ্মচর্যেহ্ভবন্নুস ! ॥ ৪০ ॥

এতিমিন্নৈব কালে তু সখা দশর্থস্য বৈ। লোমপাদ ইতি খ্যাতো অঞ্চানামীশ্বরোহভবং ॥ ৪১ ॥ তেন কামাৎ ক্বতং নিখ্যা ব্ৰাহ্মণস্যেতি নং প্ৰুতি: 1 স ব্রাহ্মনেঃ পরিতাক্ত স্তদা বৈ জগতঃ পতি: ॥ ৪২ ॥ পুরোহিতাহপচারাচ্চ তস্য রাজ্ঞো যদুচ্ছয়া। ন বৰ্ষৰ সহস্ৰাক্ষ স্ততোহপীডান্ত বৈ প্ৰজাঃ॥ ৪৩॥ স বান্ধনান পর্যাপৃচ্তুপোযুক্তান্মনীষিণ:। প্রবর্ষণে স্থরেক্রস্য সমর্থান্ পৃথিবীপতে ! ॥ ৪৪ ॥ " কথন প্রবর্ষেৎ পর্কন্য উপায়ঃ পরিদৃশ্যতাম্"। ত মুচুম্চে দিতান্তেন স্বমতানি মনীবিণ:॥ ৪৫॥ তত্র ত্বেকো মুনিবর স্তং রাজান মুবাচ হ। " কুপিতান্তব রাজেন্দ্র। আহ্বাণা নিষ্কৃতিং চর । ৪৬ । ঋশ্যশৃঙ্গং মুনিস্কৃত মানম্ব চ পার্থিব ! । বানের মনভিজ্ঞফ নারীণামার্জবে রভম্॥ ১৭॥ স চেদ্বতরে দ্রাজন্ ! বিষয়ং তে মহাতপাঃ। সদ্যঃ প্রবর্ষেৎ পর্কন্য ইতি মে নাত্র সংশয়ঃ"-- । ৪৮ ॥ এতচ্ছ ত্বা বচে: রাজনু ! কুত্বা নিষ্কৃতি মাত্মনঃ। স গত্বা পুনরাগচ্ছং প্রসঙ্গেষু দিজাতিবু॥ ৪৯॥ রাজান মাগতং শ্রুত্বা প্রতিবংজহ্বযু: প্রজা:। ততোহঙ্গপতিরাহুয় সচিবান্মন্ত্রকোবিদান্। ৫০॥

আন্ধানাং দেশানান্ ॥ ৪১॥ তেন কামাৎ বুদ্ধি পূর্বাং বাদ্ধানা প্রতি আচতোতিশেষঃ, মিধানেতং "মরা তুতাংদাতুং কি মিপিন প্রতি আচতং" ইতাপ: পেংকৃতবানিতার্থঃ ॥ ৪২॥ তত্ত্ব হেতুঃ পুরোহিত স্যাপতারো দোষঃ, সোপি যদুক্রা বাদ্ধাহপরাধাতাবিশি স্ক্রাকৃত ইতার্থঃ ॥ ৪৩॥ ৪৪॥ ৪৫॥ নিক্তিঃ প্রায়শ্তির্ণ॥ ৪৬॥ বানেরং বনতবম্॥ ৪৭॥ ॥ ৪৮॥ ৪৯॥ প্রতি সংক্রয়ঃ রাজানং প্রতি হ্রংচকুঃ॥ ৫০॥

अभाश्कांशय यञ्ज सकरतात्रञ्जनिकरस्य । সোহধাগচ্ছপুপায়ম্ভ তৈ রমাত্যো: সহাচ্যুত:# u ৫১ n শাস্ত্রজ্ঞৈ রলমর্থকৈ নীত্যাং চ পরিনিষ্ঠিতঃ। তত আনায়য়ামাদ বারমুখা। মহীপতিঃ ॥ ৫২ ॥ বেশ্যাঃ সর্বাত্র নিফাতা স্তা উবাচ স পার্থিবঃ। ' ঋশ্যশুঙ্গম্বেঃ পুত্র মানয়ধ্ব মুপায়তঃ॥ ৫৩॥ লোভয়িত্বাভিবিশ্বাসা বিষয়ং মম শোভনাঃ !"—। তা রাজভয়ভীতাশ্চ শাপভীতাশ্চ যোষিতঃ ॥ ৫৪ ॥ অশক্যমূচু স্তৎ কাৰ্য্যং বিৰণ্। গতচেতসঃ। তত্র ত্বেকা জরদে্যাষা রাজান মিদমত্রবীৎ॥ ৫৫॥ " প্রয়তিষ্যে মহারাজ! তমানেতু তপোধনম্। অভিপ্রেতা শ্বরু মে কামা শত্তুমনুজ্ঞাতু মর্ছসি ॥ ৫৬ ॥ ততঃ শক্ষ্যান্যানিয়িতু মৃশ্যশৃঙ্গমৃষেঃ স্থতম্"—। ত্য্যাঃ সর্ব্ব মভিপ্রেত মন্বজানাৎ স পার্থিবঃ । ৫৭ । धनक श्रमती जुति तज्ञानि विविधानि छ। ততো ৰূপেণ সম্পন্না বয়সা চ মহীপতে!। স্ত্রিয় আদায় কাশ্চিৎ সা জগাম বনমঞ্জ্য।"—॥ ৫৮॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি ঋশ্যশৃঙ্গোপাখ্যানে मनाधिकनट्यार्थायः॥ ১১०॥

। ৫১ । ৫২ । সর্বত্ত পরবঞ্চনাদো নিষ্ণাতাঃ কুশলাঃ । ৫৩ । ৫৪ । জরদে-যানা হদান্ত্রী । ৫৫ ॥ ৫৬ ॥ অবজানাং অনুজ্ঞাতবান্,। ৫৭ ॥ ৫৮ ॥ ইত্যারণাকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে দশাধিক শততমোহধায়িঃ ॥ ১১০ ॥

^{* &}quot; অচ্যত !" ইতি সম্বোধন পাঠঃ ক-পুস্তকে।

লোমশ উবাচ।

" কা তু নাব্যাশ্রমং চক্রে রাজকার্যার্থসিদ্ধয়ে। সন্দেশালৈত নুপত্তঃ স্ববুদ্ধা। চৈব ভারত ।॥ ১। नानाभुष्पकरेनर्स् रेकः कृतिरेम अन्नर्भाविरेजः। নানগুলালতোপেতৈঃ স্বাতুকামফলপ্রদৈঃ ॥ ২ ॥ অতীব রমণীয়ং তদতীব চ মনোহরম্। চক্রে নাব্যাপ্রমৎ রম্য মন্ত্রোপমদর্শনম্॥ ৩॥ ততো নিবধ্য তাং নাব মদুরে কাশ্যপাঞ্চমাৎ। চারয়ামাস পুরুবৈধিহারং তদ্য বৈ মুনেঃ॥॥॥ ততো ছহিতরং বেশ্যাপ সমাধায়েতিকার্য্যতাম। দৃষ্ট্বান্তরং কাশ্যপশু প্রাহিণোদুদ্দিসম্মতাম্। ৫। সা তত্ৰ গত্বা কুশলা তপোনিত্যস্য সন্নিধৌ। আত্মন ত সমাসাদ্য দদর্শ তমুষেঃ স্কুত্র"—॥ ৬॥

विद्यागिता ।

" কচ্চিম্নে! কুশলং তাপসানাং, কচিচ বো মূলফল প্পভূতম্। কচ্চিদ্ধবানুমতে চাশ্রমেহিশ্মিণ-

স্থাং বৈ দ্রুষ্টাই সাক্ষাত মাগতোহিন্দা ?—॥ ৭ ॥ কচ্চিত্তপো বৰ্দ্ধতে তাপসানাং,

পিতা চ তে কচ্চিদহীনতেজাঃ। কচিত্রয়া প্রীয়তে চৈব বিপ্র! কচিচং স্বাধ্যায়ঃ ক্রিয়তে চশ্যশৃঙ্গ ?''—॥ ৮॥

কাজিতি—। নাব্যাজ্মং নাবাবতার্য সাজ্মস্॥ ১॥ ২॥ ৩॥ মুনে বিভাওকদা বিহারং বাহর্গমনং চারয়ামাদ চারে রধিগতবভী ॥৪॥ সমাধার বোধরিবা, ইতি কাষ্যতাং হাত কর্ত্তব্যতামৃ, অন্তর্থ অসালিধান

ঋশ্বাশৃক উবাচ।

" ঋদ্ধা ভবান্ জ্যোতিরিব প্রকাশতে,
মন্যে চাহ্ পা মভিবাদনীয়ম।
পাদ্যং বৈ তে সংপ্রদাস্যামি কামাৎ
যথাধর্ম মূলফলানি চৈব ॥ ৯ ॥
কৌশ্যাং র্য্যামাস্থ যথোপযোষ
কৃষ্ণাজনেনার্তায়াং স্থায়াম।
ক্ চাশ্রমন্তব কি নাম চেদং,
ব্রত্ ব্রহ্মংশ্রেসি হি দেববজুম্?"—॥ ১০ ॥

(वटमान्वाह।

"মমাশ্রম: কাশ্যপ-পূজ ! রম্যজ্বিয়েজনং শৈলমিমং পরেণ ।
তত্ত্ব স্বধর্মোহনভিবাদনং মে,
ন চোদক পাদ্য মুপস্পামি ॥ ১১ ॥
ভবতা নাভিবাদ্যোহ্য মভিবাদ্যো ভবান্ ময়া ।
ত্রতমেতাদৃশ বৃদ্ধন্ ! পরিষ্ক্যো ভবান্ ময়া"—॥ ১২ ॥

ঋশাশৃত উবাচ।

"ফলানি পকানি দদানি তেইহ",
ভল্লাতকান্যামলকানি চৈব।
কর্ষকাণীসুদধস্থনানি,
পিপ্পলানা কামকার কুরুষ"—॥ ১৩॥

লোমণ উবাচ। " সা তানি স্বাণি বিস্ক্রিয়ত্বা, खका। गुनर्शि महाने उठाइख। তান্যখাশুক্ষ মহারসানি, ভূশং স্থৰপাণি ৰুচিং দতু হি'॥ ১৪॥ मरनो ह यानग्रानि स्वास्त्रविख, চিত্রাণি বাদাং সি চ ভারুমন্তি। পেয়ানি চাত্রাণি ততো মুমোদ, চিক্রীড চৈব প্রজহাস চৈব ॥ ১৫ ॥ সা কল্পুকেনারমতাস্য মুলে, বিভদ্যমানা ফলিতা লতেব। গাতৈশ্চ গাতাণি নিষেবমাণা. সমালিষ্ডাসক্রদাশৃক্ষ্ম ॥ ১৬॥ मर्द्धानरभाकार खिलकार क त्रकान्, ত্বিতানবনাম্যাবভজ্য। বিলজ্জমানেব মদাভিভূতা, প্রলোভয়ামাদ স্কুতং মহর্ষেঃ ॥ ১৭ ॥ অথশ্যশৃঙ্গং বিকৃত্ সমীক্ষ্য, পুনঃ পুনঃ পীড্য চ কায় মস্ত। অবেক্যমাণা শনকৈ জ'গাম, ্রুত্বাগ্নিহোত্রভা তদাপদেশম্॥ ১৮॥

অনহাণি অত্যুত্তমতা দুম্ল্যানি ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ মূলে সমীপে, বিভজ্ঞানা অলমোউনালীনি কুর্বাণা, নিষেবমান। স্চীবদভ্যস্তরং প্রবিশস্তী " বিরু তন্তু সস্তা ন" ইতি ধাতুঃ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ কারং দেহং পীডা আলিঙ্গনেন নিপীডা, অপদেশং ছলম্॥ ১৮ ॥

ভদ্যাং গভায়াং মদনেন মন্তো বিচেতনশ্চাভবদুশ্যশৃঙ্গঃ। তামেৰ ভাবেন গতেন খূন্যে, বিনিশ্বসন্নাৰ্ত্ৰপো বভূব ॥ ১৯ ॥ ততো মুহুর্ভাদ্ধরিপিঞ্চলাক্ষঃ, প্রবেটিতো রোমভি রানখাগ্রাৎ। স্বাধ্যায়বানু রুত্তসমাধিযুক্তো, বিভাওকঃ কাশ্যপঃ প্রাত্নরাসীৎ ॥ ২০ ॥ দোহপশাদাসীন মুপেত্য পুত্ৰং, ধ্যায়ন্ত্রমেকং বিপরীতচিত্তম্। বিনিশ্বসন্তং মুহুরুর্জ দৃষ্টিং বিভাওকঃ পুত্র মুবাচ দীনম্॥ ২১॥ " ন কম্প্যন্তে সমিধঃ কিন্ন ভাত! কচ্চিদ্ধ ত শ্বাহিছোত্রং স্বয়াদ্য ?—। স্থানিৰ্বিক্তং ব্ৰুক্ত্ৰুব হোমধেনুঃ, কচ্চিৎ দবৎসাদ্য ক্বতা ত্বয়া চ ?—। ২২॥ ন বৈ যথা পূর্বমিবাসি পুত্র! চিন্তাপরশ্চাসি বিচেতনশ্চ। দীনোহতিমাত্রং স্থামহাদ্য কিং মু, পৃচ্ছামি ত্বাং ক ইহাদ্যাগতোহভূৎ?"—॥ ২৩॥ ইত্যারণাকে পর্বাণ তীর্থযাতাপবাণি ঋশ্যশৃঙ্গোপাখ্যানে একাদশাধিকশততমোহধ্যায়ः। ১১১॥

ভাবেন অভিপ্রায়েণ ॥ ১৯ ॥ প্রবৈষ্টিতঃ ব্যাপ্তঃ ॥ ২০ ॥ ২০ ॥ কপ্যান্তে সিদ্ধাঃ ক্রিয়ন্তে, (সজ্জীক্রিয়ন্তে) নির্বিক্তং প্রকালিতং, সবৎসা কৃতা দোহনায়েতিশেষঃ ॥ ২২ ॥ ২০ ॥

> ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে একাদশাধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১১॥

ঋশাশুজ উবাচ।

'' ইহাগতো জটিলো ব্রহ্মচারী, ন বৈ হ্ৰস্থো নাতিদীৰ্ঘে। মনস্বী। সুবর্ণবর্ণঃ কমলায় তার্কঃ, *স্তঃ সুরাণামিব শোভমানঃ॥ ১॥ সমৃদ্ধৰূপঃ স্বিত্তেব দীপ্তঃ, - স্থশ্নক্ষরাকি রতীবগৌরঃ। नोलाः श्रमन्त्रान्त करेाः सूनका, হিরণ্যরজ্জ্ প্রথিতাঃ স্থদীর্ঘাঃ ॥ ২ ॥ অধিরেরপা পুনরস্য করে, বিভাজতে বিত্যাদবান্তরীকে। ছৌ চাস্য পিণ্ডাবধরেণ কণ্ঠা-দজাতরোধো স্থমনোহরো চ। ৩। বিলগ্নমধ্যক স নাভিদেশে, কটিশ্চ তস্যাতিক্বতপ্রমাণা। তথাস্য চীরান্তরতঃ প্রভাতি. হিরণাুয়ী মেথলা মে যথেয়ম্। ৪।। অন্যক্ষ ত্যাদ্ভিদর্শনীয়ম্, বিকুজিত্ত পাদয়োঃ সংপ্রভাতি।

পাব্যোশ্চ ভদ্বৎ স্থনবল্লিবছো, কলাপকা বক্ষমালা যথেয়ম্ ॥ ৫॥

ইহাগত ইতি,—স্বত এব নালস্কারাদিনা॥ ১॥ ২॥ আধাররপা আল-বাল সদৃশঃ কণাভরণবিশেষঃ, তথাহি "আধার শ্চাধিকরণে হপাল-বালেহস্বধারণে।" ইতি বিশ্বঃ॥ ৩॥ বিলয় মধ্য ইত্যানেন কৃশ ২ং লক্ষাতে, অতিকৃত প্রমাণা অতিকৃশা ইত্যর্থঃ॥ ৪॥ কলাপকে। ভূষনা বলেনে। 'স্বার্থে কঃ" 'কলাপঃ সংহতে বর্হে, ভূণীরে ভূষণেপিচ।" ("ভূনে হরে" ইতি

^{* &#}x27; পুত্রঃ স্থরাণা মতি পুস্তকান্তর পাচঃ।

বিচেক্টমানস্য চ তৃস্য কানি, কুজন্তি হংসাঃ সরসীব মন্তাঃ। চীরাণি ত্স্যান্ত্তদর্শনানি, নেমানি তদ্বম ৰূপবন্তি॥ ৬॥ বক্তুঞ্চ ভদানীয়ম্, প্রব্যাহ্বতং হলাদয়তীব চেতঃ। পু~ক্ষোকিলসোব চ তস্য বাণী, তাং শৃণুতো মে বাথিতোহস্তরাত্মা ॥ ৭ ॥ যথা বনং মাধবমাসি মধ্যে, সমীরিতং শ্বসনেবৈব ভাতি। তথা স ভাত্যুত্ত মপুণ্যগন্ধী, নিষেব্যমাণঃ প্রনেন তাত। ॥ ৮॥ স্থাং যতাশ্চাপি জটা বিষক্তা#-দ্বৈধীক্বতা নাতিসমা ললাটে। কলৌ চ চিত্রৈ রিব চক্রবাকৈঃ, সমারতৌ তদ্য স্থৰপ্ৰস্তি: ॥ ৯ ॥ তথা ফলং রুত্তমথো বিচিত্রং, সমাহরৎ পাণিনা দক্ষিণেন। তদ্ধমি মাসাদ্য পুনঃ পুনন্দ, সমুৎপতত্যদুভৰপমুকৈ: । ১০ ।

বা পাঠঃ) ইতি বিশ্বঃ, করণা বিতার্থঃ । ৫ । ৬ । ৭ । মাধ্যমাসি বৈশাধ মাসি তম্ম প্রেটি বসন্তবাং॥ ৮ ॥ ১ ॥ তথা ফলং ফলসদৃশং কন্থকম্ ॥ ১০ ॥

^{* &}quot; বিবিক্তা"—ই,ত পাঠাভরম্ I

তচ্চাভিহত্বা পরিবর্ত্ততেহসৌ, ব তেরিতো রক্ষ ইবাবযূর্ণন। ত^ প্রেক্ষতঃ পুলুমিবামরাণাং, প্রীতিঃ পরা তাত। রতিশ্চ জাতা ॥ ১১॥ म (म ममाश्लिषा श्रनः भंतीतः, জটাত গৃহাভ্যবনাম্য বক্ত ম। বক্তেণ বক্ত প্রতিধায় শব্দং, চকার তারেহজনয়ৎ প্রহর্ম ॥ ১২॥ न চাপি পাদ্য বছ মনাতে হসৌ, ফলানি চেমানি ময়াহ্বতানি। এবং ব্রতোহস্মীতি চ মা মবোচৎ, ফলানি চান্যানি স চাদদ্যে॥ ১৩॥ ময়ে।পযুক্তানি ফলানি যানি, নেমানি তুল্যানি রসেন তেষাম্। ন চাপি তেষাং ত্রপিয়ং যথৈষা .. সারাণি নৈয়ামিব সন্তি তেষাম্॥ ১৪॥ তোয়ানি চৈবাতিরসানি মছং, आहार म रेव পाजु मुनात्रक्राः। পীবৈৰ যান্যভাধিকঃ প্ৰহৰ্ষা, সমাভবদ্ত*চলিতেব চাদীৎ॥ ১৫॥ ইমানি চিত্রাণি চ গস্কাবন্তি, মাল্যানি তদ্যোদাথিতানি পটেটা। যানি প্রকীর্যোহ গতঃ স্বমেব, স আশ্রেমং তপ্সা দ্যোত্মানঃ॥ ১৬॥ প্রীতিঃ আহ্লাদঃ, রতিঃ আসক্তিঃ ১১॥১২॥১৩॥১৪॥ভৃশ্চলিতে-বাসীদিতি মধুপানজা আতিঃ স্চিতা ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥

গতেন তেনান্দি কুড়ো বিচেতা গাত্রঞ্গ মে সংপরিদছতীব। ইচ্ছামি ত্যান্তিক মাশু গস্তুং,

তঞ্চে নিত্যং পরিবর্তমানমু॥ ১৭॥ .

গচ্ছামি ত্যান্তিক মেব তাত!

কা নাম সা ব্ৰহ্মচৰ্য্যা 🛊 চ তক্ত ?—।

ইচ্ছ,ম্যাহং চরিতু তেন দার্দ্ধং,

ম্থা ভপঃ স চরত্যার্যাধর্মা ॥ ১৮ ॥

ठडुं टरथका ऋनता मनान्छ,

তুনোতি চিত্তং যদি ত^ ন পশ্যে॥ ১৯॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি ঋশাশৃক্ষোপার্থানে দ্বাদশাধিকশত ঠমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১২ ॥

বিভাতক উবাচ।

" রক্ষাংসি চৈতানি চরন্তি পুত্র ! >

ৰপেণ তেনাদুতদৰ্শনেন।

অতুল্যবাঁহ্যাণ্যতিৰূপৰন্তি, বিশ্বত সদা তপ্সশিচন্তন্ত্ৰীয় ॥ ১॥

সুৰপৰপাণি চ তানি তাত!,

প্রলোভয়ত্তে বি<িধৈ রুপারেঃ।

সুখাচ লোকাচ নিপাতয়ন্তি,

তারুত্ররপাণি মুনীন বনেষু। ২।

11 59 11 50 11 50 11

ইতাব্রণ,কে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীরে ভারত ভাবদীপে ছাদশাধিক শততমেহিধ্যারঃ॥ ১১২॥

রক্ৎসীতি-॥১॥

^{* &}quot; इंड हर्गा" इंडि क य-श्रुट्टो।

ন তানি সেবেত মুনি ৰ্যতাত্মা, সত্ৰ লোকান প্ৰাৰ্থ্যানঃ কথঞ্চিৎ। ক্লবা বিশ্বং তাপনানাশ রমস্তে, পাপাচারা স্তাপসস্তান্ন পশ্যেৎ। ৩॥ অসজ্জনেন চরিতঃনি পুত্র।, পানান্যপেয়ানি মধুনি তানি! মাল্যানি চৈতানি ন বৈ মুনীনা , স্থানি চিত্রেজ্বাগস্ববন্তি "—: 8 ॥ 🚜 রক্ষাংসি তানীতি নিবার্যা পুক্রং, বিভাণ্ডক স্তাং মূগর, স্বভূব। নাসাদ্যামাস যদা আহেগ, তদা স পর্যাবরুতে শ্রমায় I ৫ II यना भूनः कामार्भा देव जनाम, ফলান্যাহর্তু॰ বিধিনাহশ্রাবণেন। তদা পুনর্কোভয়িতুং জগাম, না বেশযোষা মুনি মৃশ্যশৃঙ্গম্। ৬॥ দৃফ্টৈব তা মৃশ্যশৃঙ্গঃ প্রহৃষ্টঃ, সমূ | স্তৰূপোহ ভাপতত্তদ।নীম্ । প্রোবাচ চৈনাং ভবতোভামায়, গচ্চাব যাবন্ন পিতা মমৈতি॥ ৭॥

॥২॥৩॥৪॥ আমার আআমার॥৫॥ অআবিশেন অপাষ্টেন বৈদিকে-নেতার্থঃ " আবিণো নাদি পাষ্টে" ইতি বিশ্বঃ। আআবিণেনেতি প্রান্ত্রেশ পাঠেতু—ইফ্ট্যাদ্যর্থং তত্ত্ব আতাব্যেং ইত্যাদি শব্দ প্রয়োগাং, বেশ্যোষা বেশ্যা॥৬॥৭॥

^{*} রক্ষাংসীত্যমাৎ প্রাক্ " সোমণ উগা,"—ইভি ক-পুস্তুকে পঠাতে।

ততো রাজনু! কাশ্যপলৈয়কপুত্রং, প্রবেশ্য যোগেন বিমুচ্য নাব্য। थ्रान्यरगा विविदेश क्लारेय, রাজগারঙ্গাধিপতেঃ সমীপায়। ৮।। সংস্থাপ্য তা মাশ্রমদর্শনে তু, সন্তারিতাং নাবমথাতি শুভাম। क्षनीताष्ट्रभाषात्र उरेथव हरका, নাব্যাশ্রমং নাম বনং বিচিত্রস্থা ৯॥ অন্তঃপুরে তং তু নিবেশ্য রাজা, বিভাওকস্যাত্মজনমেকপুত্রম্। **प्रमा** (प्रवर महमा श्रव्यो, মাপূর্য্যমানঞ্চ জগজ্জলেন ॥ ১০॥ স লোমপাদঃ পরিপূর্ণকামঃ, স্তাং দদা রুশাশৃঙ্গার শান্তাম। ক্রোধপ্রতীকারকরঞ্চকে, গালৈচৰ মাৰ্গেষু চ কৰ্ষণানি॥ ১১॥ বিভাগুকস্যাব্রজতঃ স রাজা, পশূন্ প্রভূতানু পশুপাংক বীরান্। সমাদিশৎ পুত্রগৃদ্ধী মহর্ষি, বিভাওকঃ পারপুচ্ছেদ্যদা ব:॥ ১২॥ স বক্তব্যঃ প্রাঞ্জলিভির্ভবন্তিঃ, পুত্রদ্য তে পশ<ঃ কর্ষণঞ্চ। কিং তে প্রিয়ং বৈ ক্রিয়তাং মহর্ষে!, দাসাঃ স্ম সর্কো তব বাচি বন্ধাঃ॥ ১৩॥ ॰ া ৮॥ আশ্ৰমে যত্তিস্থ দুশ্যতে তাবতি দেশে আশ্ৰম দৰ্শনে॥ ৯॥ ১০॥ 11 22 11 25 11 20 11

* '' ভীরাৎ" হ'তি ক-খ-পুস্তকৌ।

.তাথোপায়াৎ স মুনিশ্ভকোপঃ, अगः ख्रमः मूलकल गृशेषा । অন্বেষমানশ্চ ন তত্ৰ,পুত্ৰং, দদৰ্শ চুকোধ ততো ভূশং সং॥ ১৪॥ ততঃ স কোপেন বিদীর্ঘ্যাণ, আশঙ্কমানো নৃপতের্বিধানম্। জগাম চল্পাং প্রদিধক্ষ্যমাণ-छ प्रक्रतोज्द प्रश्नुत्र प्रतः द्वेष् ॥ ১৫ ॥ স বৈ শ্রীন্তঃ ক্ষতিঃ কাশ্যপন্তান্ ছোষান সমাসাদিতবান সমুদ্ধান্। (शारेशक रेज किशिव शृकामाता, রাজেব তাং রাত্রি মুবাস তত্র॥ ১৬॥ অবাপ্য সংকার মতীব তেভ্যঃ, প্রোবাচ কস্য প্রথিতা: স্থ গোপাঃ ?— উচু স্তত স্তেহভাূপগমা সর্বে, ধন্ তবেদং বিহ্নত্ত স্কুত্ত্য। ১৭। এবং স দেশেষভিপূজ্যমান, স্তাংকৈর শৃণ্ব মধুরান্ প্রলাপান্। প্রশান্তভূমিষ্ঠরজাঃ প্রহৃষ্টঃ, সমাসদাদাঙ্গপতিং পুরস্থ্য। ১৮॥ স পুজিত স্তেন নরর্ষভেণ, मनर्भ श्रुलः मिवि (मवः यरथन्म् म्। भागाः स्वारिक्षव प्रमर्भ ठळ, तोनामनी मुळत्रखी॰ यरेथव#॥ >> ॥ 1 28 1 1 20 1 20 11 29 11 25 11 25 11

^{* &#}x27;' সে\দামিনীয্"—ইতি পুস্তকান্তরস্য।

গ্রামাংশ্চ ছোবাংশ্চ সুতত্ত দৃষ্ট্রা, শ স্থাঞ্চ শ স্থোহন্দ পরঃ স কোপঃ।. চকার তব্ৈেষ্ঠ পরং প্রসাদং, বিভাগুকো ভূমিপতে র্নরেন্দ্র । । ২০॥ স তত্ত্ৰ নিক্ষিপ্য স্থত্ত মহৰ্ষি, ৰুবাচ সূৰ্য্যাগ্ৰিসমপ্ৰভাবঃ। ' জাতে তু পুত্রে বনমেবারজেথা, রাজ্ঞঃ প্রিযাণ্যস্ত সর্বাণি কুত্বা "-॥ ২১॥ স তঘচঃ কুত্রানুশ্যশৃঙ্গে; ষ্যৌ চ য্ত্ৰাক্ষ পিতা বভুব। भाखा रेहनः পर्याहत्रवादतसः ! থে রোহিণী সোমমিবারুকুলা।। ২২।। অঁরুক্বতী বা শুভগা বশিষ্ঠং, লোপামুদ্রা বাপি যথা হৃগস্ত্যম্। नलखा वा प्रमम्बी यथा जूप-যথা শচী বজ্ঞধরম্ভ চৈব॥২৩॥ नाताञ्चनी (हक्दमना यदेशन, বশ্যা নিত্য^ মুদ্দালস্থাজমীট ! 1 তথা শাস্তাপু,শাশৃক্ষণ বনস্থণ, প্রীত্যা যুক্তা পর্যাচরন্নরেক্র !॥ ২৪॥ তম্ভাজ্মঃ পুণ্য এষোহ্বভাতি, মহাত্রদ^ শোভয়ন্ পুণ্যকীর্ত্তি:।

অত্র স্নাতঃ কৃত কৃত্যো বিশুদ্ধ,
স্থীর্থানান্যান্দ সংখাহি রাজন্ ! ''—। ২৫॥
ইত্যারণাকে পর্বাণ্ডি তীর্থযাত্রাপর্বাণি ঋশ,শৃঙ্গেপাখ্যানে
ত্রয়োদশাধিকশততমোধ্যায়ঃ॥ ১১৩॥

रियमण्यात्रम डेश्ह।

ততঃ প্রয়তঃ কৌশিক্যাঃ পাশুবো জনমেজয়!।
তানু পূর্বোণ স্বাণি ভ গামায়তনান্যথ॥ >॥
স্ লাগর সমাসাদা গঙ্গায়াঃ সঙ্গমে নূপ!।
নদীশতানাং পঞ্চানা মধ্যে চক্রে সমাপ্রবন্॥ ২॥
ভতঃ সমুদ্রতীরেণ জগাম বস্থাধিপঃ।
ভাতৃভিঃ সহিতো বীরঃ কলিঙ্গান্ প্রতি ভারত!॥ ॥॥
ভোমণ উবাচ।

" এতে কলিক্সাঃ কৌন্তের ! যত্র বৈতরণী নদী।

যত্রায়জত ধর্মোহপি দেবাঞ্জ্বনমেত্র বৈ ॥ ৪ ॥

ঋষিতিঃ সমুপাযুক্তন যজ্জিয়ং নিরিশোভিতম ।

উত্তরং তীরমেতদ্ধি সতত্তন দ্বিজসেবিতম ॥ ৫ ॥

সমানং দেবহানেন পথা স্বর্গমুপেযুষঃ ।

অত্র বৈ ঋষয়োহনো চ পুরা ক্রতৃতি রীজিরে ॥ ৬ ॥

অবৈত্রব রুজো রাজেক্স ! পশুমাদত্তবাম্বে ।

পশুমাদার রাজেক্স ! ভাগোহয়মিতি চাব্রবীং ॥ ৭ ॥

পূন ঃ পবিত্রঃ পূন্যজনকোবা ॥ ২৫ ॥ ইত্যার্শাকে পর্কাশি নৈলকগীয়ে ভারত ভারদ্যাপে ব্যাদশাধিক শত্তমেহিধাসিঃ ॥ ১১৩ ॥

তত ইতি—॥১॥२॥७॥৪॥উত্তরংতীরং বৈতরন্যঃ॥৫॥७॥१।

হ্যতে পশৌ তদা দেবা স্ত মূচুর্ভরতর্ষভ!। ও মা পরস্ব মভিছে। স্কামাধর্মান্সকলান্বশীঃ"। ৮। ততঃ কল্যাণ্ৰপাতি বাগিতিতে ৰুদ্ৰমন্তবন্। ইফ্যা চৈনং তর্পয়িত্বা মানরাঞ্চক্রেরে তদা ॥ ৯॥ ততঃ দপশু মুৎস্ক্র্য দেবয়ানেন জ্বাগ্রিন। ভতান্ব~শো রুদ্রস্থ তলিবোধ যুধিষ্ঠির !॥ >०॥ অযাত্যামং সর্বেভাা ভাগেভ্যো ভাগ মুক্তমম্। দেবঃ সুকল্পরামাস্ক উ্যাদ্রুদ্র শাশ্বতম্॥ ১১॥ ইমাৎ গাথামত গাত্রয়ন্ত্রপস্পূর্শতি যোনরঃ ৷ দেবয়ানোহ্দ্য পন্তু। শুচ চকুষাভিপ্ৰকাশতে "—॥ ১২॥ रेनमन्भाश्रम छेना । ততো বৈতরণীং সর্ব্বে পাগুবা দ্রোপদা তথা। অরতীর্য্য মহ: ভাগান্তপ্রাঞ্জিরে পিতৃন্॥ ১৩॥ যুধিষ্ঠির উবাচ। " উপস্পূশোহ বিধিবদস্যাং নদ্যাং তপোবলাৎ। মানুষাদাস্ম বিষয়াদপেতঃ পশা লোমশ।॥ ১৪॥ স্বালে কোন্ প্রপশ্যামি প্রসাদান্তব স্বত ।। বৈখানসানাং জপতামেষ শব্দো মহাত্মনাম্ ''—। ১৫॥ লোমশ উবাচ। " ত্রিংশতণ বৈ সহস্রাণি যোজনানাণ যুধিষ্ঠির !।

মা পরস্ব মভিজোগা—পর ভাগদা নাশং মা কুর্বিত্তর্থঃ, ধর্মান্মা বলীঃ—
ধর্ম দাগনান্ এজ ভাগান্ দর্বান্ মাকাময়েশাঃ 'বশ কান্তো' অদা লুভিরূপম্
॥৮॥৯॥১০॥ অথাত্যামং ভাৎকালিকম্॥১১॥১২॥১০॥১৫॥
॥১৯॥

যত্ৰ ধ্বানং শৃণোধ্যোনণ ভুফামাস্স্ব বিশাস্পতে !॥ ১৬॥

এতৎ স্বয়সুবো রাজন্! বন^ দিব্যং প্রকাশতে। যত্রাবজত রাজেন্দ্র ! বিশ্বকর্ম্মা প্রতাপবান্॥ ১৭ ॥ যিন্মিন্ ষজ্ঞে হি ভূদ্ধিতা কশ্যপায় মহাত্মনে। সপর্বতবনোদেশা দক্ষিণার্থে স্বয়য় বা॥ ১৮॥ ञ्चात्रीमक कोटल्यः । म्ल्यां वा यही लगा। উবাচ চাপি কুপিতা লোকেশ্বর মিদং প্রভূম্। ১৯। " ন মা∾মভাায় ভগবন্ কৈ কৈছি চকাতুম≨সি। প্রদানং মে ছমেতত্তে যাস্তাম্যেষা রসাতলম্ "—॥ ২০॥ বিধীদন্তীস্ত তা॰ দৃষ্ট্বা কশ্যপো ভগবান্ধিং। প্রসাদয়।স্বভূবাথ ততো ভূমিং বিশাম্পতে!॥২১॥ ততঃ প্রদন্ম পৃথিবী তপসা তস্য পণ্ডেব !। পুনৰুশ্বজ্য দলিলাদ্বেদীৰূপা স্থিতা বভৌ ॥ ২২ ॥ হৈষা প্রকাশতে বাজন্। বেদী সংস্থানলকণা। আরুহ্যাত্র মহারাজ ! বীর্যাবান্ বৈ ভবিষ্যাসি ॥ ২৩॥ দৈষা সাগরমাসাদ্য রাজনু ! বেদী সমাশ্রিতা। এতামারুহা ভদ্রং তে স্থামক স্তর সাগরম্॥ ২৪॥ অহং চ তে স্বস্তায়নং প্রযোক্ষ্যে, यथा पुरमना मधिरताहरमञ्जा। স্পৃষ্টা হি মত্যেন ততঃ সমুদ্র, মেষা বেদী প্রবিশত্যাজমীত ।। ২৫॥

" ভূমি ই জগা বিজ্বান্তরতি ন মা মতাঃ কশ্চন দাছু মইতি বিশ্বকর্ম্ ভোবন মাংদিদান্তি নিমংকোছং সালিলসা মধ্যে মোল শু এব কণা পারা স গলব"—ইতি আনতে রর্থং সংগ্রাতি "বলা বজত রাজেন্তা!" ইত্যাদিনা—॥ ১৭॥১৮॥১৯॥২০॥২১॥২১॥২১॥২০॥২৪॥২৫॥ তঁনমো বিশ্বপ্রপ্তায় নমো বিশ্বপরায় তে।
সালিধাং কুরুদেবেশ। সাগরে অবণাস্তাসি ঈ॥২৬॥
অগ্নির্দ্মিরো যোনিরাপোশ্ব দেব্যো,
বিফো রেভস্তু মমৃভস্যাসা নাভিঃ।
এবঁণ ক্রবন্ পাগুব! সতাবাকাং,
বেদীমিমাং ত্বং তর্সাভিরোহ॥২৭॥
অগ্নিশ্চ তে যোনিরিডা চ দেহো,
রেভোগা বিফো রমৃভস্য নাভিঃ।
এবং জপন্ পাগুব! সত্যবাকাণ,
ভভোহবগাহেত পতিং নদীনাম্॥২৮॥
অন্যথা হি কুরুশ্রেষ্ঠ। † দেবযোনি রপাম্পতিঃ।
কুশাগ্রেণাপি কৌন্তেয়!ন স্পুইব্যো মহোদধিঃ"—॥২৯॥

স্থানাদ, প: সমুদ্র প্রাথিনা মন্ত্র মাই ওঁনম ইতি—বিশ্বংগুপ্তংলীন মন্দিন্
ইতিবিশ্বগুপ্তঃ, বিশ্বনাৎ পরায় শ্রেষ্ঠার বিষ্ণবে ইতার্থঃ, লবণায় দি ক্ষারোদকে ॥ ২৬ ॥ অ মি মি ক্রন্ঠ তেজস্বা দিয়িবৎ স্থাগাপি অপাংথানিঃ, অপামিতিশেষঃ, বিষ্ণো গাপকস্য আত্মনো রেতঃ শরী রাকার পরিগতং অভি
ব্যক্তি স্থানং, ত্বং, হে সমুদ্র ! অমৃত্স্য নাভিঃ স্থায়া গর্ভস্থান্য ॥ ২৭ ॥
ইড়া যজ্ঞঃ, বিষ্ণোঃ রেতোধা বিষ্ণোরেতো জী ঃ স্থী গতেহিন্দিন্ দেহে,
আমৃত্যা নাভিঃ মোক্ষ্যা সাধন্য ॥ ২৮ ॥ দেব্যো্নিঃ দেব স্থান্য ॥ ২৯ ॥

^{*} এযমন্ত্রাত্মকঃ শ্লোকঃ ক,—পুস্তকে নান্তি।

† " নরপ্রেষ্ঠ !" ইতি পুস্তকাধ্রদা।

रिवनम्याश्चन छेना ।.

ততঃ ক্রতস্বস্থারনো মহাত্মা, যুধিন্তিরঃ সাগর মভাগচ্ছৎ। ক্ষমা চ তৎ শাসনি মস্যাসর্বং, মহেন্দ্র মাসাদ্য নিশামুবাস॥ ৩০॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি মহেন্দ্রাচলগমনে

চতুর্দ্দশাধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১১৪॥

বৈশস্পায়ন উবচ।

স তত্র তা মুনিবৈদাং রজনী পৃথিবীপতি:।
তাপসানা পরং চক্রে সংকারং আতৃভি: সহ॥ ১॥
লোমশস্ত্রস্য তান্ স্বানাচথাৌ তত্র তাপসান ।
ভূগু নঙ্গিরসকৈর বাশিষ্ঠানথ কাশপোন্॥ ২॥
তান্ সমেতা স রাজর্ষি রভিবাদ্য ক্তাঞ্জলি: ।
রামসান্তের বীর মপুচ্চদক্তত্রণম্॥ ৩॥
কেদা কু রামো ভগবাংস্তাপসান্ দর্শয়িষাতি ?—
তেনৈবাহং প্রসঙ্গেন ক্রেট্ মিচ্চামি ভাগবম্"॥ ৪॥
ক্রেত্রণ উন্চ।

"আয়ানেবাসি বিদিতো রামস্য বিদিতাত্মনঃ। শ্রীতিস্থায়ি চারামস্য ক্ষিপ্রশ স্থাং দর্শায়িষ্যতি॥ ৫॥

ইত্যারণ্যকে প্র্রেণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুর্দণাধিক , শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৪॥

স ইতি--॥ ১॥ ২॥ ৩ ॥ ৪॥ আর.ন্ আ কছেন্॥ ৫॥

চতুর্দ্দশীমক্টমীঞ্চ রামপ্রপশ্যন্তি তাপসা:। অস্যাং রাজ্যাং ব্যতীতারং ভবিত্তী শ্বশ্চতুর্দ্দশী শ্ব । ৬॥ যুগজির উবাচ।

"ভবাননুগতো রামং জামদগ্নাং মহাবলম্। প্রত্যক্ষদর্শী সর্বাস্থ্য পূর্ববৃত্তন্য কর্ম্মণঃ। ॥ স ভবান কথয়স্বদ্য † যথা রামেণ নির্জ্জিতাঃ। আহ্বে ক্ষব্রিয়াঃ সর্বে কথং কেন চ হেতুনা"—॥৮॥ অক্তরণ উগাচ।

'হস্ত তে | কথযিষ্যামি মহদাখ্যান মুক্তমম্।
ছগুণান রাজশার্দ্দল। বংশে জাতস্য ভারত।॥ ৯॥
রামস্য জামদগ্যস্য চরিতং দেবসন্মিতম্।
হৈহয়াধিপতেশৈচব কার্ত্বীর্য্যস্য ভারত।॥ ১০॥
রামেণ চার্জুনো নাম হৈহয়াধিপতি ইতঃ।
তস্য বাছশতান্যাসংস্ত্রীণি সপ্ত চ পাগুব।॥ ১১॥
দন্তাত্রেয়প্রসাদেন বিমানন কাঞ্চনং তথা।
ঐশ্বর্যাৎ স্বাভূতেমু পৃথিব্যাং পৃথিবীপতে।॥ ১২॥
অব্যাহতগতিশৈচব রথস্তম্য মহাজ্বনঃ।
র্থেন তেন তু সদা বরদানেন বীর্যবান্॥ ১০॥
মমর্দ্দ দেবান্ যক্ষাংশ্চ শ্ব্যান্শিচব সমস্ততঃ।

ভূতাংকৈত স সর্কাংস্ত পীড়য়ামাস সর্বতঃ ॥ ১৪॥

‡ " অহন্তে" ইতি ক—

^{*} ইতঃ পরং "তত্তক্রেদাসি রামং ত্রংক্কাজিন জটাধরন্" ইত্য-র্কলোকোইতিরেকঃ ক-প্রতকে, অন্যয়ন্ত্রীর পুস্তকেচ। † "কথর ত্বেতং" ইত্যেবং পাঠঃ ক পুস্তকে,—

ততো দেবাঃ সমেত্যান্ত ঋষয়শ্চ মহাব্রতাং। (एवरएवर श्रुत्रातिश्वर विकुर में डार्शताक मम् ॥ ১৫ ॥ ভগবন্! ভূতরক্ষার্থ মর্জুন∿ জহি বৈ প্রভো!! বিমানেন চ দিবোন হৈহয়।ধিপতিঃ প্রভুঃ ॥ ১৬ ॥ শচীসহার ে ক্রভিন্তং ধর্ষরামাস বাসবম্"—। ততস্তু ভগবান্ দেবঃ শক্তেণ সহিতন্তদা। কার্ত্তবীর্য্যবিনাশার্থং মস্ত্রয়ামাস ভারত।॥ ১৭॥ যন্তদুত হিত পকার্যাপ স্থারেন্দ্রেণ নিবেদিতম্। স প্রতিশ্রুতা তৎ সর্বাং ভগবালোঁ কপুজিতঃ ॥ ১৮॥ क्रशांम वनतीर त्रगार चरमवाव्यमम अनम्। এতন্মিনেব কালে তু পৃথিব্যাং পৃথিবীপতিঃ॥ ১৯॥ কান্যকৃব্জে মহানাসীৎ পার্থিবঃ স্থমহাবলঃ। গাধীতি বিশ্রুতো লোকে বনবাসণ জগামহ॥ ২ ॥। বনে তু তস্য বসতঃ কন্যা জজ্ঞেই পারঃসমা। ঋচীকো ভার্গবস্তাঞ্চ ব্রয়ামাস ভারত।॥২১॥ ত মুবাচ ততো গাধিত্র ক্ষণ সংশিতত্রতম। ' উচিতং নঃ কুলে কিঞ্চিৎ পূর্বৈর্ব র্যৎ সম্প্রবর্ত্তিতম্ ॥ ২২ ॥ একতঃ শামকর্ণনাং পাগুরাণাং তরস্বিনাম। সহস্রৎ বাজিনাৎ শুল্কমিতি বিদ্ধি দিজোক্তম !॥ ২৩॥ ন চাপি ভগবানু বাচ্যো দীয়তামিতি ভার্গৰ!। দেয়া মে ছুহিতা চৈব অভিধায় মহাত্মনে''— ॥ ২৪॥ ঋচীক উবাচ। "একতঃ শ্যামকণানাং পাগুরাণাৎ তরস্বিনাম। দাস্যামাশ্বস্ত্র তে মম ভাষ্যা স্থতাস্ত তে''—॥ ২৫ ॥

॥ २७ ॥ २१ ॥ २४ ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २४ ॥ २० ॥ २८ ॥ अकछ हेजि

শক্তবণ উপাচ।

'সে তথেতি প্রতিজ্ঞায় রাজন্! বরুণ্মব্রবীৎ।

একতঃ শ্যামকর্ণানাং পাগুরাণাং তরন্ধিনাম্॥ ২৬॥

সহস্রুৎ বাজিনামেকং শুল্কার্থং মে প্রদীয়তাম্"—।

তব্যৈ প্রাদাৎ সহস্রং বৈ বাজিনাং বরুণস্তদা॥ ২৭॥

তদশ্বতীর্থং বিখ্যাত মুম্পিতা যত্র তে হয়ঃ।

গঙ্গায়াং কান্যকুব্জে বৈ দদৌ সত্যবতীংতদা॥ ২৮॥

ততো গাধিঃ স্কুতাং চাস্মৈ জন্যাম্চাসন্ সুরাস্তদা।

লক্ষ্ম হ্মহন্সম্ভ তাংশ্চ দৃষ্ট্মা দিবৌকসঃ॥ ২৯॥

ধর্মেণ লক্ষ্মা তাৎ ভার্যামুচীকো দ্বিজসন্তমঃ।

যথাকামৎ যথাজোষং তয়া রেমে সুমধ্যয়া॥ ০০॥

তৎ বিবাহে কুতে রাজন্। সভার্যা মবলোককঃ।

আজগাম ভ্ঞঃ শ্রেষ্ঠং পুত্রং দৃষ্ট্বা ননন্দ হ। ৩১॥ ভার্যাপতী তমাসীনং গুরুং সুরগণাচিতিম্। অচিত্বা পর্যুপাসীনৌ প্রাঞ্জলী তস্থতুন্তদা। ৩২॥ ততঃ স্মুষাংস ভগবান্ প্রস্থায়ে ভ্ঞারব্রবীং। "বরং রণীম্ব স্থাগে । ৩০॥

সা বৈ প্রসাদয়ামাস তং গুরুৎ পুত্রকারণাৎ। আবারনদৈচৰ মাতৃশ্চ প্রসাদঞ্চ চকার সং"—॥ ৩৪॥

ভূগুৰু বাচ।

' ঋতৌ ত্বং চৈব মাতা চ স্নাতে পুশ্সবনায় বৈ।
্আলিক্ষেতা পৃথগ্রকৌ সাশ্বং ত্ব মৃতুমুরম্। ৩৫॥
বিহঃ শাসমা অন্তর্গরকাঃ কর্ণা যেবাং তে একতঃশাসমকর্ণান্তবাম্ । ২৫॥
। ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ জনাঃ বরপকীয়া ॥ ২৯॥ যথেচ্ছং যথাস্থঞ্জ ॥ ৩০॥
আবলোককঃ অবলোক নার্ধা। ৩১॥ ৩২॥ ৩৩ ৩৪॥ ৩৫॥

চরুষয়মিদ ও ভদ্রে । জননা শ্চ তবৈব চ। বিশ্বমাবর্ত্তয়িত্বা তু ময়া ষত্নেন সাধিতম। ৩৬। প্রাশিতব্যং প্রয়ব্তেন চেত্রাক্ত্রাদর্শনং গতঃ। আলিঙ্গনে চরৌ চৈব চক্রতুন্তে বিপর্যায়ম্ ॥ ৩৭ ॥ ততঃ পুনঃ স ভগবান কালে বছতিথে গতে। দিব্যজ্ঞানাদ্বিদিত্বা তু * ভগবানাগতঃ পুনঃ—॥ ৩৮॥ অথোবাট মহাতেজা ভৃঞঃ সভাবতী সুষাম্। ে উপযুক্তশর্ভে দে ! রক্ষে চালিঙ্গনং রুতম্ ॥ ৩১॥ বিপরীতেন তে স্থভূ! মাত্রা চৈবাসি বঞ্চিতা ৷ ব্রাহ্মণঃ ক্ষত্রহান্তিবৈ তব পুজো গবিষ্যতি॥ ৪০॥ ক্ষাজ্ঞারে জাকাণাচারো মাতুত্তব স্থতো মহান্। ভবিষ্যতি মহাবীর্যাঃ সাধুনাং মার্গমান্থিত: ॥ ৪১ ॥ ততঃ প্রসাদরামাস শ্বশুর সা পুনঃ পুনঃ। "ন মে পুল্রো ভবেদীদৃক্ কামং পৌল্রো ভবেদিতি"—,।৪২ ॥ এবমস্তি সা তেন পাগুব। প্রতিনন্দিতা। জমদগ্নিং ততঃ পুত্রং জজ্ঞে সা কাল আগতে॥ ৪৩॥ रित्रक्षां वर्षमा देवत युक्ति चार्श्वन स्वत्र । স বর্দ্ধমান স্তেজস্বী ক্ষ বেদস্যাধায়নেন চ ॥ ৪৪॥ বহুনুষীন্মহাতেজাঃ পাগুবেয়াত্যবৰ্তত ॥ ৪৫।

বিশ্বং বিরাট্পুক্ষং , আবর্ত্তরিয়া মুক্স্তি রন্সন্ধার, এতয়ে শ্চর্কো উক্লে বিশ্বঅফট্ তুর্বোটা পুরেটি ভবিষাত ইতি ভাবিঃ ॥৩৬॥তে উত্তে প্রতি ইত্যুক্ত্বা ইতী কারলোপঃ সন্ধি বা আর্যঃ, আলিঙ্গনে অর্থাচ্ন্তরয়োঃ ॥৩৭॥৩৮॥৩৯॥৪০।৪১॥৪২॥৪৩॥৪৪॥৪৫॥

^{*} ছু, ইন্ডাত্র "চ, ইতি ক-পুন্তকঃ, ইর্জমানঃ স তেজস্বীতোবং বাপাঠঃ।

1891

তন্ত কৃৎস্নো ধনুর্বেদঃ প্রতাভান্তরতর্যভ!।
চতুর্বিধানি চাস্ত্রাণি ভাক্ষরোপমবর্চসম্ ''— ৪৬ ।
ইতা,রংয়কে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি জনদম্যংপত্তী
পঞ্চদশাধিকশততমোহ্য্যায়ঃ ॥ ১১৫॥

শক্তরণ উবার।

'বে বেদাধারনে যুক্তো কমদ্মির্মাহতপাঃ।
তপত্তেপে ততো দেবালিরমাদশমানরৎ ঃ ১॥
ল প্রদেনজিত নাজল্পিরমাদশমানরৎ ঃ ১॥
ল প্রদেনজিত নাজল্পিরমাদশমানরৎ ঃ ১॥
ল প্রদেনজিত নাজল্পিরমাদশমানরৎ ঃ ১॥
বরণুকাং ত্বর্থ সম্প্রাপ্য ভার্যাং ভার্যবনন্দনঃ।
আশ্রেমন্থ ত্বরা সান্ধিং তপত্তেপেহমুকূলরা॥ ৩॥
তদ্যাঃ কুমারাল্ডরারো জ্জিরে রামপ্রমাঃ।
সর্বেষা মঞ্জ্যনান্তরারো জ্জিরে রামপ্রমাঃ।
সর্বেষা মঞ্জ্যনান্তরারো জ্জিরে রামপ্রমাঃ।
সর্বেষা মঞ্জ্যনান্তরারো জ্জিরে রামপ্রমাঃ।
সর্বেষা মঞ্জ্যনান্তরারা জ্জিরে রামপ্রমাঃ।
স্বাহ্বা মঞ্জ্যানাত্রারা মঞ্জ্যনাজঃ॥ ৪॥
কলাহারেমু সর্বেষ্ রাম্যার্ডিরাবতকং নূপম্।
দেশে রেণুকা রাজলাগজ্তী যদৃক্রা॥ ৬॥
ক্রীডন্তং সলিলে দৃষ্টা সভার্যাং প্রমানালনম্।
ঋ্বিমন্তং ততন্ত্রা স্পৃহয়ামাস রেণুকা॥ ৭॥

ইত;গরণাকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীরে ভারত ভাবদীপে পঞ্চদশ্যাধক-শততমেহধ্যারঃ । ১১৫ ॥

সবেদেতি—॥ ১ । ২ ।। ৩ ॥ ৪ । কলাছারেরু কলাছরণকর্মস্থ । ৫ ॥ ৬ ॥ ভত শুস্প্হরামাস ত মৈচ্ছদিতার্থঃ ॥ ৭ ॥

* " জনাধিপদ্" হাত ক-পাঠঃ।

ব্যভিচারাচ্চ সা তত্মাৎ ক্লিনান্ত্রনি বিচেতনা। প্রবিবেশা শ্রমং ব্রস্তা তা ১ বৈ ভর্তাহ প্রবুধ্যক 🕯 ॥ ৮॥ म जार दृष्ट्री हालां हे देवर्या बाक्या विकास विकास । ধিকৃশকেন মহাতেজা গর্হমামাস বীর্যাবান্ ॥ ৯॥ ততো জ্যেষ্ঠা সামদ্যো রুমণারাম নামতঃ। আজগাম সুষেণশ্চ বসু বিশ্বোবস্থ তথা ॥ ১০ ॥ जानाजुशृक्षाम् जगवान् † वस्य माजू तरहामग्रे । ন চ তে জাভসংক্ষেহাঃ ‡ কিঞ্ছিতু বিবিচৈতসং ॥ ১১ ॥ ততঃ শৃশাপ তান্ ক্রে,ধাত্তে শপ্তাশ্চেতনাং জহু:। मुश्राकित्रभगानः किथामान् जए। श्रमाः॥ ১२॥ ততো রামোহভায়াৎ পশ্চাদার্শ্রমং পরবীরহা। ত মুবাচ মহাবান্ত জমিদাগ্ন শ্মহাতপাঃ॥ ১৩॥ "জহামাং মাত্রক পাপাক মা চ পুঞ্জ! ব্যথাং কৃথা: "-। তত আদায়ে পরশুশ রামো সাতুঃ শিরোহহরৎ॥ ১৪॥ ততস্বদ্য মহারাজ। জমদথে শ্বহাল্সনঃ। কোপোই ভাগছৎ সহসা প্রসন্তারবীদিদ্য ॥ ১৫॥ "মমেনং বচনাজাত! ক্তং তে কর্ম চুষ্ট্রম্। व्रशिष्ठ कामान् अर्थीखं ! गांवरं ठा वाक्षरम स्वा '-॥ ১৬। म বত্তে মাতৃ कृष्यान सम्बृध्धिः वधना देव।

পাপেন তেন চাম্পর্শং ভাত্ণাৎ প্রকৃতিং তথা। ১৭। অন্তাস দ্বাসের ক্লিয়া জন্তা, তথালেকং " প্রন্দরং প্রকৃষ্ণ দুট্য ভাতরং পিতরং স্কৃষ্ণ যোদি ক্রিত নারীন্থ সতাং সতাং জনাদ্দন।" ইতি
। ৮। ৯। ১০। ১১। ১২ । ১০। ১৪। ১১ । ১৬। ১৭।

 [&]quot;ভভাগবুধাত" হাঁত ক—
 " তানানু পুৰ্বাচ" হাঁত তৃতীয়ান্ত পাঠো বা।
 মুখ্যোহা"—হাঁত ক ব পুন্তকো।

অপ্রতিদ্বন্তাং যুদ্ধে দীর্ঘাযুক্ষ ভারত।। मरमो ह मक्तान कामाश्खान जमशि र्महाछ्याः ॥ ১৮॥ কদাচিত্র তথৈবাস্য **বিনিদ্ধ**াস্তাঃ স্থতা। । অথামূপ পতিবীর: কার্ত্তবীর্য্যোহভাবর্ত্ত 🛭 ১৯ 🗷 जमाध्यम श्रेष- श्रांश मुख र्डाधा ममार्कत्र । স যুদ্ধমদসম্মত্তো নাভ্যনন্দত্তথার্চ্চনম্॥ ২০॥ প্রমধ্য চাশ্রমান্তেশানোমধেনোস্ততো বলাৎ। জহার বৎসং কোশস্ত্যা বভঞ্জ চ মহাক্রমান ॥ ২১॥ আগতায় চ রামায় তদাচফ পিতা শ্বয়্। গাঞ্চ রোরুদতীং দুষ্টা কোপো রামং সমাবিশৎ ॥ ২২ ॥ স মৃত্যুবশমাপনং কার্ত্তবীর্য্য মুপাদ্রবং। তস্যাথ যুধি বিক্রম্য ভার্সবঃ পরবীরহা ॥ ২৩ ॥ চিচ্ছেদ নিশিতৈউল্লৈ বাছুন পরিঘদলিভান্। সহস্রদাতানু রাজন্। প্রগৃহ্ছ রুচিরং ধন্তুঃ॥২৪॥ অভিভূতঃ স রামেণ সংযুক্তঃ কালধর্মণা। व्यर्क्तनग्राथ न'शाना तारमन क्रुक्रमन्।वः । २०॥ আশ্রমস্থং বিনা রামং জমদ্মি মুপাদ্রবন্। তে তং জন্মহাৰীয়্য মযুধ্যন্তং তপদ্বিনম্॥ ২৬॥ অস্কুদ্রাম রামেতি বিক্রোশন্ত মনাথবং। কার্ত্তবীর্যাস্য পুজ্রাস্ত জমদমিং যুধিষ্ঠির ! ॥ ২৭ ॥ পীড়য়িত্বা শরৈ জ'গ্মর্যথাগত মরিন্দমাঃ। अभकारत्रम् केटलम् जमम्यो उथाभाज ॥ २५ ॥

॥ अभा । ३० ॥ २० ॥ २० ॥ २२ ॥ २० ॥ २४ ॥ अन्यर्थना प्र्याना, नाहानाः श्रृज्ञानाः ॥ २० ॥ २७ ॥ २० ॥ २৮ ॥

मिरिशाविक्षानाक्ष्राध्याः पृथ्वनन्तः। স দৃষ্ট্য পিতরং বীরস্তথা মৃত্যুবশং গতম । অন≨স্ত< তথাভূত্ত্ বিল্লাপ স্বত্বঃথিতঃ"— । ২৯ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাশি তীর্থবাক্রাপর্বাশি জমদগ্রিবধে যোড়শার্থিক শততমোহধা। ३३७ ॥

রাম উনাচ।

'মমাপরাধাজ্যৈ কুদ্রৈ ছতন্ত্রণ তাত। বালিশৈঃ। ক। র্ভবীর্য্যস্য দায়াদৈ ব্যন্তে মৃগ ইবেমুভিঃ! ॥ ১॥ ধর্মাজ্ঞস্য কথং তাত! বর্ত্তমানস্য সৎপথে। মৃত্যুরেবংবিধো যুক্তঃ সর্বভুতেম্বনাগসঃ !॥ ২॥ কিন্তু তৈ ৰ্ম কুতং পাপং যৈ উবাংস্তপদি স্থিত:। অযুধ্যমানো রহ্ম সনু হতঃ শর্শতৈঃ শিতৈঃ !॥ ৩॥ কিন্তু তে তত্ৰ বক্ষা**ন্তি সচিবেষু স্থহংস্থ** চ। অযুধামানং ধর্মজ্ঞ মেক হত্বাহনপত্রপাঃ ?"— ॥ ৪॥ লালপোৰং সকরুণ্ বছ নানাবিধং নুপ!। প্রেতকার্যাণি সর্বাণি পিতৃশ্বকে মহাতপা:।। ৫ । দদাহ পিতরং চাগ্নৌ রামঃ পরপুরঞ্জয়ঃ। প্রতিজ্ঞে বধঞ্চাপি সর্বাক্ষল্রস্য ভারত !॥ ৬॥ ভার্ষ্যাবধ দোষাৎ স্বয়মপি তাদৃশ মেব মরণং প্রাপেত্যাশয়ঃ ॥ ২৯ ॥ ইত্যারণাকে পর্শান নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে যোড়ণাধিক-,

শততমোহধাৰ্য়ঃ ॥ ১১৬ ॥

মমেতি—বালিটেশ মু হৈখঃ, কুটকে স্তুলৈছঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥

সংকুদ্ধোহতিবলঃ সম্বো শস্ত্রমাদায় বীৰ্য্যৰ।ন্। জ্মিবান্ কার্ত্তবীর্যাস্য স্কুতানেকোৎস্তকেপেমন ॥ ৭॥ তেৰাঞ্চানুগতা যে চ ক্ষত্রিয়াং ক্ষত্রিয়র্যভণ । তাৎশ সর্বানবামূদ্বাদ্রামঃ প্রহরতাম্বঃ॥৮॥ ত্রিংসপ্তরুত্বঃ পৃথিবীং কৃত্বা নিংক্ষত্রিয়াণ প্রভুঃ। সমন্তপঞ্চে পঞ্চকার রৌধিরান্ ব্রদান্॥ ৯॥ স তেষু তর্পরমোস পিত্র ভৃগুকুলে। ছহঃ। माकाफनम ठकींकः म ठ तामः नावातसः॥ >०॥ ততো যজেন মহতা জামদগ্নঃ প্রতাপবান্। তর্পরামাস দেবেক্ত মৃত্তিগ্ভাঃ প্রদদৌ মহীম্॥ ১১॥ विमीक्षां भाषतिक्र भी १ कमा भाग महास्रात । দশব্যামায়তা<u>^ কৃত্</u>বা নবোৎদেধ[া]ং বিশাম্পতে !॥ ১২ ॥ তাং কশ্যপদ্যানুমতে ব্ৰাহ্মণাঃ খণ্ডশস্তদা। ব্যভজংস্তেন তে রাজন্ ! প্রথ্যাতাঃ খাপ্তবায়নাঃ :। ১৩ ॥ স প্রদার মহীং তদ্মৈ কশাপার মহাত্মনে। (তপঃ স্থমহদাস্থায় ক্ষত্রিয়ান্তকরো নূপ ! । 🎏 অস্মিন্নহেন্দ্রে বিশ্বনিক্রে বসত্যমিত্রিক্রমঃ॥ ১৪॥ এবং বৈর মভূত্তসা ক্ষজ্রিয়ৈ লে কিবাসিভি:। পৃথিবী চাপি বিজিতা রামেণামিততেজ্না''—॥ ২৫ ॥ বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততশতুর্দশীং রামঃ সময়েন মহামনাঃ। দশ্রামাদ তান্বিপ্রান্ধর্মরাজ্ঞ দামুজম্॥ ১৬॥

॥ ৭'॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ দশব্য সায়তাং—ব্যামো হস্ত চতুষ্ঠায়ং তেন চত্বাবিং শক্ষস্তায়াম বিস্তাবাং, নবোংগেধাং ষ্ট তিংশক্ষস্তোচ্ছামিতার্থঃ, ব্যায়ামেতি প্রমাদ পাঠঃ ॥ ১২ ॥ খণ্ডগঃ খণ্ডানি খণ্ডানি কৃত্ব। ব্যভজন্ বিস্তাবাংকৃত বস্তঃ ॥ ১৩ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥

* ৰাভোমে হংশঃ পাক্ষাতা প্ৰক্ৰে কচিৎ বদীয় প্ৰকে চ।

স ত মানর্চ্চ রাজেক : ভাতৃ জি: সহিতঃ প্রভু:।

দ্বিজানাঞ্চ পরাং পুজাং চকে নৃপতিসন্তম:॥ ১৭ ॥

ভার্চিত্রা জামদগ্রাং কু পুজিতত্তেন চোদিতঃ।

মহেক উষ্য তাম রাত্রিম প্রথমো দক্ষিণামুখঃ"—॥ ১৮॥

ইত্যারণ্যকে প্রবাণ তীর্থযাত্রাপর্বাণ জামদ্যোপাখ্যানে

সপ্তদশাধিকশতত্যোহধ্যায়ঃ॥ ১১৭॥

বৈশক্ষায়ন উবাচ।

গচ্ছন্ স তীর্থানি মহামুভাবঃ, পুণ্যানি রম্যাণি দদর্শ রাজা। সর্বাণি বিহৈপ্ রুপশোভিত্যান,

कृष्टि कृष्टिकात् मार्गरमा ॥ > ॥

স রন্তবাংন্তেমু ক্লতাভিষেকঃ,

সহারুজঃ পার্থিবপুত্রপৌত্রঃ \

সমুদ্রগাণ পুণাতমাং প্রশস্তাং,

জগাম পারিকিত ! পাওুপুত্রঃ ॥ ২॥

তত্রাপি চাপ্লুডা মহানুভাবঃ,

সন্তর্পরাম স পিত্র স্বর 🐃।

দিজাতিমুখোষু ধনং বিস্ঞা,

গোদবেরীং সাগরগা মগচ্ছং॥ ও॥

আন্নর্চ অর্কি এবংশ্ ॥ ১৭ ॥ তেন ১ উদিত ইতিছেদঃ, উষ্য উষিয়া ॥ ১৮ ॥ ইত্যারণাকে পর্ব্বণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদাপো সপ্তদশাধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৭ ॥

গছরিতি—॥ ১ ॥ রতবান্ সন্তঃ; পার্থিরঃ পৃশ্বী প্রতিঃ কশ্যপ শুসা পুত্রঃ সুর্ধ্য শুসা পৌরো যুাধার্টর শুংপিতু র্ধর্মনা স্থাপুত্রহাৎ, প্রশৃশুরু নাম নদীন্॥ ২॥ ৩॥

ততো বিপাপ্যা দ্রবিড়েষু রাজন ! ১ সমুদ্র মাসাদ্য চ লোকপুণ্যম্। অগস্তাতীর্থঞ্চ মহাপবিত্র~, नात्री जीर्था नाथ वीद्रा मनर्भ ॥ ८ ॥ তত্রার্জুনস্যাগ্র্যধনুর্দ্ধরস্য, নিশম্য তৎকর্ম নরৈ রশকায়। সংপূজামানঃ প্রম্ধিসজৈঃ, পরাং মুদ্দ পাগুস্তঃ স লেভে ৷ ৫ ৷ স তেমু তীর্থেম্বভিষিক্তগাত্রঃ, কুষ্ণানহায়ঃ সহিতোহনুজৈশ্চ। সম্পূজয়ন্ বিক্রম মর্জ্রনস্য রেমে মহীপাল। পতিঃ পৃথিব্যাঃ॥ ৬.॥ ততঃ সহস্রাণি গবাং প্রদায় তীর্থেষু তেম্বস্থরে জমস্য। হুষ্টঃ সহ ভ্রাতৃতি রক্জ্নস্য, म-की उंशामाम भवा- ध्रमानम् ॥ १॥ স তানি তীর্থানি চ সাগরস্য भूगानि हानानि वहूनि तकन् !। ক্রমেণ গচ্চ্ পরিপূর্ণক।মঃ, স্থর্পারকং পুণ্যতম্বং দদর্শ ॥ ৮॥

নারী তীর্থানি—গ্রাহরপাঃ পঞ্চাপ্সরসো মুনিশাপবশাং যত্ত স্থিত। অন্ধূ-নেন চ শাপাখোচিত। স্তানি নারী তীর্থানি ॥ ৪ ॥ ৫॥ ৬ ॥ অসুধ্রোত্রসম্য সম্ভ্রম্য ॥ ৭ ॥ স্থারকং নাম তীর্থন্ ॥ ৮ ॥

তত্রোদধেঃ কিঞ্চিদতীত্য দেশং, थाां उर शृथियां ~ दन मामना । তপ্তং স্থারৈ রক্ত তপঃ পুরস্তা, षिष्ठेश ज्था भूगाभरेत र्वत्तरेखः # 1 3 म দ তত্র তা মগ্রাধনুর্দ্ধরসা, বেদীং দদশায়তপীনবাছঃ। ঋচীকপুত্রস্য তপস্থি-সল্ভৈঃ, সমারতাৎ পুণ্যক্লদ্চ নীয়ামু॥ ১০॥ ততো বস্থুনাৎ বস্থাধিপঃ স্ মরুদ্গণানাঞ্ তথাশ্বিনাশ্চ। देववञ्चला किलायदायाः भिक्तमा विरक्षाः मवि जु र्विट्णाम्ह ॥ >> ॥ खनमा हत्समा मिनोकतमा, পতে রপাং সাধ্যগণস্য চৈব। ধাতুঃ পিত্ৰাঞ্চ তথা মহাত্মা, क्रफ्र) ताजन्। मनतमा टेव्य । >२ ॥ मद्रश्रुखाः मिद्रश्रीभाग देव्य, পৃষণ্ড যে চাপ্যমরা স্তথান্যে। পুণ্যানি চাপ্যায়তনানি তেষাং, पमर्भ ताका स्मारनाइतानि॥ > ७॥

॥৯॥১০॥ অপাং পতের্কণসা। ১১॥১২॥ খচীক প্রস্ত রাম্ভ । ১৩॥

 ^{*} তপ্তেভিলোকার্দ্ধে "অত্ব" ইতত্র "তর" ইতি—"পুণা পরি" রিত্যত্র
 "পুণাতবৈং" ইতি পাঠঃ ক—পুস্তকে।

তেষ্পবাসান বিবুধানুপোষ্য, দত্ত্বাচরত্ন:নি মহান্তির্রাজা। তীর্থেষু সর্কেষু পরিপ্ল তাক্ত:, পুনঃ স স্থারিক মাজগাম। ১৪। স তেন তীর্থেন তু সাগরস্যা পুনঃ প্রয়াতঃ সহ সোদরীয়েঃ। দিজৈঃ পৃথিব্যাং প্রথিতং মহন্ত্র, ন্তীর্থ- প্রভাসৎ সমুপার্জগাম॥ ১৫ ॥ তত্ৰাভিষিক্তঃ পৃথুলোহিতাক্ষঃ, সহানুজৈ দেবগণান পিতৃ 🗝 । मञ्जीशामाम उरेशव क्रूक्श, তে চাপি বিপ্রাঃ সহ লোমশেন।। ১৬॥ স-দাদশাহং জলবাযুভক্যঃ, কুৰ্বন্ ক্ষপাহঃস্থ তদাভিষেক্ষ্। সমন্ততোহগীনুপদীপয়িত্বা, তেপে তপো ধর্মভূতাম্বরিষ্ঠঃ ॥ ১৭ ॥ ত মুগ্র মাস্থায় তপশ্চরন্তং, खुखाव तामक जनाक्तका। (छो नस्तवस्थियवरतो मरेमरनो। यूधिछितः कथा वृ ताकभीष्य । ১৮॥

তের তীর্থের উপবাসান্ সমীপ্রাসিনঃ, বির্ধান্ পণ্ডিতান্, বিবিধানিতাপ পাঠঃ উপোয়া বল্লৈ রাবাস্য রত্নানি চ তেন্তা, এব দলা ॥ ১৪॥ তেন তীর্থেন সিন্ধৃতীরম বেণি ॥ ১২॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮॥

তে র্ঞয়ঃ পাণ্ডুস্তান্ সমীক্ষা, कृत्मो नश्चानान् मन्दिकाळान् । वनई शैर (फोलनीर हालि मुख्)। স্তৃঃখিত।শ্রুশু রার্তনাদ্য । ১৯ ॥ **७७: म तामकं कनामनक,** कां िक का अश्व भारतक शिक्य। चनाः क द्रको तुष्रामा भूकाः, **চ**ক্রে যথাবর্ম মদীনস্তু;॥२०॥ তে চাপি স্কান্ প্রতিপুদ্য পার্থাং,-ক্তিঃ সৎক্ষতাঃ পাড়ুম্বতৈ স্তথৈব। যুধিষ্ঠিরং সংপ্রিবার্য্য রাজন ! উপाविभाष्मिवश्वा यः थक्त्रम् ॥ २०॥ তেষাং স সর্বাং চরিত্তং পরেষাং, বনে চ বাসং পরমপ্রতীতঃ। অস্ত্রার্থমিক্রস্য গতঞ্চ পার্থং, निर्वणनः ऋषेत्रनाः मन्दर । २२ । শ্রুত্ব: তু তে ত্রু বচঃ প্রতীত্ত खाः महाशि मुखे। स्कूमानडीव। (नर्जाष्ठवर चः मुमूह र्म्मश्री, ছু:থার্ডিজ্প বারি মহামুভাবা:"—॥২৩॥ ইত্যারণ্যকে পর্কণি ভার্থযাত্র,পর্কণি বার্ফেয়-যুধিষ্ঠিরসমাগ্রমে অক্টাদশাধিকশততমোহধ্যার: । ১১৮ ঃ

। ১৯। কাজিং প্রজাবন, শিলেঃ পৌরং সাত্যাকিম্ ॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ ৩৩॥
ইতারণাকে পর্কাণ নৈংকগারে ভারত ভারদীপেইফ্রাদ্রাধিক-শতভ্যে। ২বারিঃ ॥ ১১৮॥ क्रमाञ्चर हे ११६।

"প্রভাগতীর্থ মারাদ্য পাপ্তবা রুফয়ন্তথা।
কিমকুর্বান কথালৈচয়াং কান্তবাসংস্তপোধন! ॥ ১ ॥
তে হি সর্বের মহাত্মানঃ সর্বাশাস্ত্রবিশারদিঃ।
রুফয়ঃ পাপ্তবালৈব স্কুদ্দদ্য প্রস্পারম্"—॥ ২ ॥
বিশম্পায়ন উবাচ।
প্রভাগতীর্থ- সম্প্রাপ্য পুণ্যতীর্থং মহোদধেঃ।
রুফয়ঃ পাপ্তবান্ বীরাঃ পরিবার্যোপতস্থিরে॥ ৩ ॥

ততো গোক্ষীরকুন্দেন্দ্রমূণালরজ্বতপ্রভ:। বনমালী হলী রামো বভাষে পুদ্ধরেক্ষণমূ॥ ৪॥ 'নে ক্লফা ধর্মান্দরিতো ভবারা,

জ্বন্তো রধর্মান্ড পরাভবার। যুধিষ্ঠিরো যত্র জটী মহাত্মা,

ৰনাশ্ৰয়ঃ ক্লিশ্যতি চীরবাসাঃ ॥ ৫ ॥

कूर्यााधनकाणि मही- थनांखि,

নচাস্য ভূমি বিবরং দদাতি।

ধর্মাদধর্মান্ডরিতো পরীযা-

নিতীব মন্যেত নরোহ**পর্কিঃ ॥ ৬ ॥** ছর্যোধনে চাপি বিবর্দ্ধমানে,

যুধিকিরে চাসুথ মান্তরাজো। কিন্তুত কর্ত্তবামিতি প্রজাভিঃ, শক্ষা মিখঃ সঞ্জনিতা নরাণাম্ । ৭ ।

প্রভাবেতি— সংগমন্ ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ হলীতি হদধর হাছর্মস্থাপি নিজাং করিবাতীতি ধনিত্ব । ৪ ॥ ভবার অভ্যানসায় ॥ ৫ ॥ বিবরং শরীর শৃহন্ত্র ন কলাভীতার্জ্য । ৬ ॥ বিবরং শরীর শৃহন্ত্র ন কলাভীতার্জ্য । ৬ ॥ বিবরং শরীর শৃহন্ত্র নিজার্জ্য বিশ্বন্ত্র । ৬ । বিবরং শরীর শৃহন্ত্র বিশ্বন্ত্র । ৬ । বিশ্বন্ত্র । বিশ্বন্ত্র । ৬ । বিশ্বন্ত্র । বিশ্বন্ত্র । বিশ্বন্ত্র । বিশ্বন্ত্র । বিশ্বন্ত্র । বিশ্বন্ত্র । ৬ । বিশ্বন্ত্র । বি

খন্ত্র সুধর্ম প্রত্যানরে কেন্দ্র নি ধর্ম্মে ধূতঃ সভ্যধৃতিঃ প্রদান্তা। চলে विवास के देशक भार्थी, ধর্মানেপেতস্তু কথং বিবর্দ্ধেং ?—॥ ৮॥ কথ~ নু ভীশ্বন্দ ক্লপন্দ বিপ্লো र्खानम्ह तोका ह कूलना **दकः**। প্রবাজ্য পার্থান্ সুধ মার্গ্রন্তি, ধিকু পাপবুদ্ধীন্ ভরতপ্রধানান !--. ৯ । কিন্নাম বক্ষ্যত্যবানপ্রধানঃ, পিত,ন সমাগ্যা পরত পাপঃ। পুত্রেষু সমাক্ চরিতং ময়েতি, পুত্রানপাপান্ বাপরোপ্য রাজ্যাৎ!-॥ ১০ ॥ নাসৌ ধিয়া সংপ্রতি পশ্যতি ক্ষ, কিলাম কুত্বাহ্ছ মচকু রেবম্। জাতঃ পৃথিবার্মািত পার্থিবেষু, প্রবাদ্য কৌন্তেরমিতি * শ্বরাজ্যাৎ !— ৷ ১১ u নুন~ সমৃদান্ পিতৃলোকভূমৌ, চ।মীকরাভানু কিতিজানু প্রফুলানু। বিচিত্ৰবীৰ্য্যদ্য স্থৃতঃ সপুত্ৰঃ,

कृषा नृमः मः वड शमां जिमा। । २२॥

রাজ্যাচ্চ স্থাচ্চ চলেৎ নতু ধর্মানিতিশেবঃ, তত্র ছেছুঃ ধর্মা কতি—কংমিভূপেছাসাথন্ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ অবনি প্রধানা রাজ্যান্ত ॥ ১০ ॥ নাসাবিত্ত—
কিংনাম পাপং ক্রমাংহ মচকু জাতঃ কোন্তেরং প্রবাজ্যা কীনৃশো জবিব্যামি, ইতি ধিয়া নাসো পশাতি ?—ইতাধ্যান্ত্য যোজান্ ॥ ১১ ॥
চামাকরাভান্ কনক প্রভান্, "এতগ্রন চিছুং" নুশংসং নিশাং কর ॥ ১২ ॥

^{* &}quot;म ताजावार" रेडि भाकाजाः - उत्र " म" रेडि (क्षा:

ব্যভেভিরাংশান্ পৃথুলোছিতাক্ষা-नियान या शृक्त म मृत्या कि सूनम् । প্রাস্থাব্য স বন হাশকো, যুধিষ্ঠির শানুক মাত্তশক্তম !--॥ ১০॥ যে, হয় পরেষা পুতনাং সমৃদ্ধা । नितायूर्या मीर्चज्रका निह्नां । শ্রুটার শব্দ হি রুকোররস্যা, ্যুঞ্জি দৈন্যানি শক্তৎ সমূত্রম্ ॥ ১৪ ॥ म कुर्मिमामास्त्रन खत्रकी, সমে তা নানাযুধবাণপাণিঃ। বনে স্মরন্ বাসমিমং স্থোরং, শেষং ন কুৰ্য্যাদিতি নিশ্চিত্ৰ মে ॥ ১৫ ॥ न इस्मा दीर्याण वरतन कन्डिश সমঃ পৃথিব্যামপি বিদ্যুতেহ্ন্যঃ ৷ স শীতবাতাতপকর্ষিতাঙ্গো, ন শেষ মাজা বস্থুক্তংস কুৰ্য্যাই ; ১৬॥ প্রাচ্যাল্পগনেকরথেন জিত্বা, त्रकाषतः मासूहत्रान्द्रम् । স্ত্যাগমদ্যে:২ ভিরপন্তরস্থা,

সেহ্রণ বনে ক্লিশাতি চীরবাসাঃ !— । ৭ ॥
ইমান ভীষাদীন শ্বাতি হিনস্তি 'প্লোডি" ইতি দেখক প্রমানঃ, ন শ্বোভীতি গৌড় পাচেতু—''অয় মুলি বিশানরো ঘোহয় মন্তঃ পুরুষে যেনে ল মন্ত্রণতে যদিদমদ্যতে ভগোষো ঘোষো ভবভি য মেভংকবা বিপিধার শ্বোতি স্বদোৎক্রম্বান্ ভবতি নৈনংঘোষং শ্বোভি"—ইতি আভা-বেছিনু সন্ধেঃ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ শেষং ন কুর্যাং নিঃপেষ মেব নাশ্য়েনিভার্থঃ
॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ অভি ক্রেমণ জাবামং আবাতঃ ॥ ১৭ ॥

^{*} শৃণাতি ইতি বা পাঠঃ।

यः शिक्षु कृत्न वाकश्रम्भापवान्। সমাগতান দাকিণাত্যামহীপান। **७० अभारकमः मङ्ग्लियमा**, তর্স্থিন তাপদবেশৰপম্—: ১৮ । यः পार्थिवादनकत्रत्थन किर्गा. मिनः अ**डी**हौः अडि युक्रानी **ः**। সোহয়ৎ বনে মূলফলেন জীবন্, জটী চরত্যদ্য মলাচিতাঙ্গঃ !-- ; ১৯ ॥ সত্রে সমুদ্ধেহ তির্থস্য রাডেলা, বেদীতলাতুৎপতিতা সুতা যা। (সয়ং বনে বাসমিম সুত্ঃখ-, কথং সহত্যদ্য সতী সুখার্ছা ?— ॥ २०॥ ত্রিবর্গমুখাস্য সমীরণস্য, (मद्वश्वद्रमाभाश हाश्विद्वाण्ड। এষাং সুরাণাং তনরাঃ কথ্ নু, বনেহ চরন্হস্তমুখাঃ সুখার্থাঃ !-॥ ২১॥ জিতে হি ধর্মান স্থতে সভার্যো, সভ্রত্তকে সামুচরে নিরস্তে। कुर्यााथत हालि विवक्तमादन तथः न मान्डावनिः मरेणना !" — ॥ २२ ॥ ইতারেণাকে পর্কণি তীর্থযাত্রাপর্কণি বলরামবাক্যে একোনবিশভাধিকশততমোহধ্যায়: ॥ ১১৯ ॥

भजाविक भट्डार्भा, तः ॥ ১১३।

সাত্যকি কল্চ।

" ন রাম কালঃ পরিদেবনার, যতুত্তরং ত্বত্র তদেব সর্কো। সমাচরামো হানতীতকালং, যুধিষ্ঠিরো যদ্যপি নাহ কিঞ্চিৎ ॥ ১ ॥ (य नाथवरसा हि * उवस्तिताका, তে নাত্মনা কর্ম্ম সমারভদ্তে। তেষাম্ভ কার্যোষু ভবস্তিনাথাঃ, मिवामित्या ताम ! यथा य्याटणः ॥ २ **॥** (ययः ७थ! त्राम । ममात्र छर्छ, কার্য্যাণি নাথাঃ স্বমতেন লোকে। ্তে নাথবন্তঃ পুরুষপ্রবীরা নামাথবং ক্লছুমবাপ্রবিত্ত।। ৩॥ कत्रापित्रो तामजनार्यतो ह, প্রত্যারশাষৌ চ ময়া সমেতৌ। वमसात्रावा मह मामतौरेश, द्विद्वाकानाथानिध्यमा श्राचीः ?—॥ ॥ নিৰ্যাত্ত সাধদ্য দশাৰ্কেনা, প্রভুতনানাযুধচিত্রবর্মা। गमकायः शक् वृ शार्खद्राद्धः, স্বাস্থাবো বৃষ্ণিবলাভিভূতঃ—॥ ৫ ॥

'ৰাবাৰেডি—। ১॥ নাখবন্তঃ ঐপাৰ্য্যবন্তঃ ' ভাবে বঞ্ছ' নাজানা ন স্বরং নাসাঃ কার্যা নাজসাঃ, শিব্যাসকং ইভ্যের পাঠঃ, শৈব্যাসর ইভি পাঠেছু— আর্থেয়াঞ, ৪২॥৩॥৪॥৫॥

শ নাথ নভোহলা " ইতি পাচাত্রৰ্ পাক্ষাভাব।

ত্বং ছেব কোপাৎ পৃথিবীমপীমাং, मः বেষ্টয়েষ্ঠিত শা**ঙ্গ** ধয়। স ধার্ত্তরাষ্ট্র জহি সানুবন্ধ ১, বুত্রং ষথা দেবপতির্মাহেন্দ্র:॥ ৩॥ ভাতাচমেয় সম্বা গুরুশ, कनार्फनमाञ्चममण शार्थः। यमर्थरेमक्न मनुकाः स्र्रुखः, শিষ্যং গুরুশ্চাপ্রতি কুলবাদম্ ॥ ৭ ॥ यमर्थमञ्चामाञ मुखमः ७९, করোতি কর্মাগ্রা মপারণীয়ম। তদ্যান্ত্ৰধাণাহ মুক্তমান্ত্ৰে, বিহত্য সর্বাণি রণেহভিভূয় ॥ ৮ ॥ কোপাজির: দর্পবিষায়িকলৈপ:. শ্রেভিমৈ ক্রথিতামি রাম!! খড়গেন বাছং নিশিতেন সংখ্য, काशान्त्रितसुमा बलार क्षमशा । ३ ॥ ততোহস্য সর্বানমুগানু হনিষ্যে, ष्ट्रर्शाधनकाति कृतं क नदीम्। আন্তাযুধং মামিহ রৌহিণেয! পশ্যন্ত ভৈমা যুখি জাতহ্যাঃ---, ১০ ।

॥ ৬॥ স পার্পোপি ডিঠ ডি ডি পূর্বে । বরঃ । যদর্বং পক্ত বরার্ব্য । ৭॥ ডং স্থানে বিশ্ব স্থাতি পেনঃ । ৮॥ ১॥ ভৈনাঃ ভীমকর্ম কর্তারঃ, ভীমবংশক্তা বা॥ ১০॥

নিরন্থমেকং কুরুযেবিষুধাা,-निधः महाकक्षिराष्ट्रकारल । প্রসুদ্ধ মৃক্ত নিশিতান শক্তাং, (माहः क्रुयरमाविकर्वकवाः-॥ >>॥ कानामि वीर्याक क्रमाञ्चकमा, काशि उंदर डाय यथा त्रवहः। मायःमञ्बर मतथः जुजालार, कु: भामन- भाख वनां ध्याषा ॥ ३२ ॥ ন বিদ্যুতে জাষ্বভীস্থত্যা, द्र (दिषहा । हि त्र (१) ६ के हिमा। এতেন বালেন হি শম্বসা, দৈতাস্য সৌভং সহসা প্রবৃত্তম্ । ১৩ ॥ বুজোরু রত্যায়তপীনবাছ,-রেতেন সংখ্যে নিহতে। হুখচকঃ। (का नाम भाष्यमा महात्रथमा, त्रान ममकर द्रथमञ्जामीयां १ ?- । ३८ । यथा প্রবিশাষ্ট্র মন্তক্ষা, কালে মনুষো ন বিনিষ্মেত। তথা প্রবিশ্যান্তরমস্য সংখো, কো নাম জীবন্ পুনরাত্তজেচ্চ ? —: ১৫ 🕽 ट्यांनक जीवक महाबद्धी (जी, সুতৈ ব্ৰুভং চাপ্যথ সোমদত্তম। र स्वानि रेमनानि ह वास्ट्राप्तरः প্রধক্ষাতে সায়কবছুিজালৈ: ॥ ১৬ ॥

॥ 55 ॥ जग्रास्त्रज्ञाः व्यक्तिप्रदेशाः १ ३२ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५० ॥ ५० ॥

কিন্নাম লোকেম্ববিষয়মন্তি রুঞ্স্য সর্বেষু সদেবকেষু । আন্তাযুধস্যোক্তমবাণপাণে শুক্রাযুধস্যাপ্রতিমস্য যুক্তে। ১৭। ততোহনিরুদ্ধোহপ্যনিচর্ম্মপাণি,

শাঁহীমিমাং ধার্ত্তরাষ্ট্রেকিসংক্তৈঃ। ক্লন্তে।ন্তমাকৈনিহিকৈঃ করোতু,

কীর্ণাং কুলৈ কেনিমিবাধ্বরেষু । ১৮॥

शरमाना को वाहक छात्र नीथाः,

শূরক সংখ্যে নিশঠঃ কুমারঃ।

त्रां १ करही मात्र नहां कर पर खोन

কুলোচিতং বিপ্রথয়ন্ত কর্ম্ম-। ১৯॥

সর্ঞিভোজান্ধকযোধমুখ্যা সমাগতা সাত্বতশ্রসেনা।

হত্বা রণে তান ধৃতরাষ্ট্রপুজালোঁকে যশঃ ক্ষাতমুপাকরোতু॥২০।

ততোহভিমনুঃ পৃথিবীং প্রশাস্ত্র, যাব্দুত্র ধর্মাভূতা বারিষ্ঠঃ।

যুধিষ্ঠিরঃ পারয়তে মহাত্মা,
দূতে যথোক্তং কুরুসন্তমেন॥ ২১॥

অস্মৎপ্রযুক্তৈ বিশিধৈ জি তারি,

স্ততো মহীণ ভোক্ষাতি ধর্মরাজঃ।

নির্দ্ধার্ত্তরাষ্ট্রাং হতন্তপুত্রা,

মেতদ্ধি নঃ কুত্যতমং যশগ্যম্'—॥ ২২॥

वाञ्चरमव छेवाह।

' অস্ত্রত্ম মাধ্ব! সত্যমেতদ্,

গৃহ্নাম তে বাক্যমদীনসত্ত্ব !।

স্বাভ্যা• ভুজাভ্যামঞ্চিতান্ত ভূমিং,

নেচ্ছেৎ কুৰাণামূষভঃ কথঞ্চিৎ॥ ২৩॥

॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ २८ ॥ । ২২ ॥ মাধব । মধুদেশো মধুরা প্রদেশ শুক্রেলাত । ॥ ২০ ॥

ন ছেষ কামান্ন ভয়ান লেভিছে, यू विकित्ता जा जू जहाा र स्वर्धा । ভीমार्ब्युती ठालियरथी यत्भी ठ, তথৈব ক্লফা ক্রপদাল্পকেয়ম্॥ ২৪॥ উভৌ হি যুদ্ধেহপ্রতিমৌ পৃথিব্যাং, ब्रुटका पत्र रेन्डन धन् क्ष्य रहा। ক্যান কুৎসাং পৃথিবীং প্রশাসে-মাদ্রীস্কৃতাভ্যাঞ্চ পুরস্কৃতোহয়ন্ ?—॥ ২৫ ॥ যদা তু পাঞ্চালপতিশাহালা, সকেকয় শেদিপতি ব্যয়ঞ্। যুধ্যেম বিক্রম্য রণে সমেতা, স্তদৈব সর্বে রিপবে। হি ন স্থ্যঃ—''॥ ২৬॥ যুধিষ্ঠির উনাচ। " (नमः हिन्द भाषत । यमु वीयि, সত্যন্ত মে রক্ষ্যতমং ন রাজান্। क्रुक्छ मां (वन यथावानकः কুষ্ণঞ্চ বেদাছমথে। যথাবং ॥ ২৭ ॥ यरेनव काल श्रुक्ष श्रवीरता, বেৎস্যত্যয়ং-মাধ্ব। বিক্রম্সা। তদা রণে ত্বঞ্চ শিনি প্রবীর! সুযোধনং জেষ্যসি কেশবশ্চ॥ ২৮॥ প্রতিপ্রয়ান্ত্রদা মশাহ বীরা, मृत्कार्थाय नारेथर्नत्रत्नाकनारेथः। धर्मार्थमान कूक्क ठाव्यरमशाः, দ্রকাশ্ম ভূয়ঃ স্থানিঃ সমেতান্ "—॥২৯॥ ॥ २८ ॥ २० ॥ २७ ॥ २० ॥ २७ ॥ २० ॥

তেহন্যান্যমামন্ত্র্য তথা ভিবাদ্য,
বৃদ্ধনি পরিষদ্য শিগুংশ্চ সর্বান্।
যত্নপ্রীরাঃ স্বগৃহদিন জগ্ম,
স্তেচাপি তীর্থান্যমুগংবিচেরাঃ ॥৩০॥
বিস্তা্য ক্ষণ স্বথ ধর্মারাজ্যে,
বিদর্ভরাজোপিচিতাং স্কৃতীর্থান্।
জগাম পুণ্যাং সরিতং পয়োক্ষীণ,
স্ত্রাত্ভ্তাঃ সহলোমশেন ॥৩১॥
স্কৃত্তন সোমেন বিমিশ্রতারাং,
ততঃ পয়োক্ষীং প্রতি সোহধুবোস।
কংজুরমানঃ স্ত্রতিভিক্রাভিঃ"—॥৩২॥
ইত্যারণ্ডে পর্বাণি তীর্থ্যাত্রাপর্বাণি যাদ্ব গমনে
বিংশত্যধিকশত্তমোহ্ধ্যায়ঃ ॥১২০॥

লোমশ উবাত।

' নৃগেণ যজমানেন সোমেনেহ পুরন্দরঃ।
তর্পিতঃ ক্রায়তে রাজন্। স তৃপ্তো মুদ্মভাগাৎ॥ ১॥
ইহ দেবৈঃ সহেদৈশ্চ প্রজাপতিভিরেব চ।
ইউৎ বছবিধৈইজ্ঞৈ শ্মহদ্ভিভূরিদক্ষিণেঃ॥ ২॥

॥৩০॥৩১॥ স্থাতেন অভিযুতেন যজে সোমপান তুল্যং তজ্জন পান মিত্যর্থঃ, পায়োফীং প্রতি পায়োফ্যাং পায়োমাত্রং অধ্যুকাস ভক্ষিতবান্ ॥৩২॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলক । য় ভারত ভাবদীপে বিংশত্যধিক শত তমোহন্যায়ঃ ॥ ১২০ ॥

न्तर्गर्गाज—॥ ।॥ २॥

আমুর্তরয়দশেচহ রাজা বজ্ঞধরং প্রভুম্। তর্পরামাস সোমেন হরমেধেষু সপ্তস্থ ॥ ৩ ॥ তস্য সপ্তস্থ যজেষু সর্বিমাসীদ্ধিরণায়ম। বানস্পত্যং চ ভৌমঞ্চ যদ্দুবাং নিয়তং মথে॥ ৪॥ চষাল-যূপ চমসাঃ স্থাল্যঃ পাত্রাঃ ব্রুচঃ ব্রুবাঃ। তেন্বে চাস্য যজেষু প্রয়োগাঃ সপ্ত বিশ্রুতাঃ॥ ৫॥ সংস্তিকৈকস্য যুপসা চষালাশ্চোপরি স্থিতা:। ত্যা সা যুপান্ যজেষু ভাজমানান হিরণাুয়ান্॥ ७॥ স্বয়মুত্থাপয়।মাস্থ র্দেবাঃ সেন্দ্রা বুধিষ্ঠির!। তেষু তদ্য মথাত্যোষু গয়দ্য পৃথিবীপতে: ॥৭॥ অমাদ্যদিন্দ্রঃ সোমেন দক্ষিণাভিদ্বিজাতয়ঃ। প্রস্ংখ্যানানসংখ্যোরান্ প্রত্যগৃহ্ন্ দ্বিজাতয়ঃ ॥ ৮ ॥ সিকতা বা যথা লোকে যথা বা দিবিতারকাঃ। যথা বা বর্ষতো ধারা অসংখ্যোয়াঃ স্ম কেনচিৎ ॥ ১॥ **उरिथव उनमः त्था अः धनः यः अन्ति शक्षः ।** সদসোভ্যো মহারাজ ! তেমু যজেরু সপ্তস্থ ॥ ১০ ॥ ভবেৎ সৎখ্যেশ্বমেতদ্ধি যদেতৎ পরিকীর্ত্তিতম্। ন তস্য শক্যাঃ সংখ্যাতুং দক্ষিণা দক্ষিণাবতঃ ॥ ১১ ॥ হিরণাঝীভিগে।ভিশ্ব ক্তাভিবিশ্বকর্মণা। ব্ৰাহ্মণাং স্কর্পয়ামাস নানাদিগ্ভা: সমাগতান্ ॥ ১২ ॥

আনুর্ত্ররসঃ গার নামা॥ ৩ । বান স্পত্যংরক্ষজং চ্বালাদি, ভৌমং মুখ্রং স্থাল্যাদি ॥ ৪ ॥ চ্বালো যুপকটকঃ, যুপঃ যজ ভাজঃ, চ্মসাঃ সোমপান পাত্রানি, পাত্রাঃ হবিঃ স্থাপনার্থানি মুম্মরানি, ক্রচঃ হবিঃ প্রদানার্থাঃ, ক্রবাঃ হবিরবদানার্থাঃ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ প্রসংখ্যানান্ এক যজেন ভূয়ঃ-স্বর্ণ মুদ্রোদে ম্পিকান্ থারী দ্রোণাদীন্ ॥ ৮ ॥ ॥ ১ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ অপোবশেষা পৃথিবী চৈতোরাসীয়হালন:।
গ্রন্য যজনান্দা তত্র তত্র বিশাম্পতে!॥ ১৩॥
স লোকান্ প্রাপ্তবালৈন্দান্ কর্মণা তেন ভারত!।
সলোকতাং তদ্য গচ্ছেৎ প্রোফ্যাং য উপস্পৃশেৎ॥ ১৪॥
তক্ষাজ্বত্র রাজেন্দ্র। ভাত্তিঃ সহিতোহচুতে!।
উপস্পৃশ্য মহীপাল! ধৃতপাপ্রা ভবিষাদি "—॥ ১৫॥

বৈশক্ষায়ন উগাচ।

স পয়োক্ষ্যান নরশ্রেষ্ঠঃ স্নাত্মা বৈ ভ্রাতৃভিঃ সহ।
বৈদূর্য্যপর্বতিক্ষেব নর্মাদাঞ্চ মহানদীস্॥ ১৬॥
সমাজগাম তেজস্বী ভ্রাতৃভিঃ সহিতোহনঘু!।
তত্তাস্য সর্বাণ্যাচথ্যে লোমশো ভগবান্ধিঃ॥ ১৭॥
তীর্থানি রমণীয়ানি পুণ্যান্যায়তনানি চ।
যথাযোগং যথাপ্রতি প্রয়মা ভ্রাতৃভিঃ সহ।
তত্ত্র তত্ত্রাদদ্দিত্তং ব্রাক্ষণেভ্যঃ সহস্রশঃ॥ ১৮॥

लामन छेता ।

'দেবানামেতি কৌন্তেয় ! তথা রাজ্ঞান সলোকতাম ।

বৈদুর্ঘ্যপর্বতন দৃষ্ট্য নর্ম্মনামব তীর্য্য চ ॥ ১৯ ॥

সন্ধিরেষ নরশ্রেষ্ঠ ! ত্রেতায়া দ্বাপরস্য চ,।

এতমাসাদ্য কৌন্তেয় ! সর্ব্বপাপেঃ প্রমূচ্যতে ॥ ২০ ॥

এষ শর্মাতিযজ্ঞান দেশস্তাত ! প্রকাশতে ।

সাক্ষাদ্রেলাপিবৎ সোমমশ্রিভ্যাং সহ কৌশিকঃ ॥ ২১ ॥

চুকোপ ভার্মবন্দ্যেপি মহেন্দ্রম্য মহাতপাঃ ।

সংস্কল্যাঞ্চাপি ভার্যান স রাজপুত্রীমবাপ্তবান্ '—॥ ২২ ॥

১॥০ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ২৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

ে কথং বিষ্টান্তিতস্তেন ভগবান্ পাকশাসনঃ। কিমৰ্থণ ভাৰ্গবন্দাপি কোপং চক্ৰে মংচ্চপাঃ॥ ২৩॥ নাসত্যৌ চ কথং ব্ৰহ্মন্! ক্লুবান্ সোমপীথিনৌ ?—। এতৎ সৰ্বাং যথাবৃত্তমাখ্যাতু ভগবান্মম "—॥ ২৪॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি স্থকন্যোপাখ্যানে একবিংশতাধিকশততমোহধায়ি: ॥ ১২১ ॥

লোম্শ উবাচ।

"ভ্গোর্মহর্ষেঃ পুজোহভূ চ্চাবনো নাম ভারত!।

সমীপে সরসঃ সোহস্য দ তপস্তেপে মহাত্যুতিঃ॥ ১॥

স্থাণুভূতো মহাতেজা বীরস্থানেন পাগুব!।

অতিষ্ঠৎ স্কুচিরং কাল মেকদেশে বিশাম্পতে!॥ ২॥

স বল্লীকোহভবদুষি ল'তাভি রভিসংরতঃ।

কালেন মহতা রাজন্! সমাকীর্ণঃ পিপীলিকৈঃ॥ ৩॥

তথা স সংরতো বীমান্ মূৎপিগু ইব সর্বাশঃ।

তপ্যতে স্ম তপো ঘোরং বল্লীকেন সমার্তঃ॥ ৪॥

অথ দীর্ষস্য কালস্য শর্যাতির্নাম পার্থিবঃ।

আজগাম সরো রম্যং বিহর্তুমিদ্মুক্তমম্॥ ৫॥

॥ ২৩ ॥ সোমস্য পীথঃ পানং তম্বন্তো সোম পীথিনো ॥ ২৪ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে একবিংশাধিক শত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১২১ ॥

ভূগোরিতি—॥ ১॥ বীরস্থানেন বীরাসনেন॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥

^{*} তদ্য" ইতি ক্তিৎ পঠাতে।

তস্য স্ত্রীণাং সহস্রাণি চত্বার্যাসন্ পরিগ্রহঃ। একৈব চ সুতা সুক্রঃ সুকন্যা নাম ভারত।॥ ৬॥ সা স্থীভিঃ পরিবৃত্য দিব্যাভরণভূষিতা। हरक्रमामाना वल्मोकर ভार्तवमा समासम्बर्ग १ ॥ সা বৈ বস্থমতীন্তত্র পশ্যন্তী স্থমনোরমাম্। বনস্পতীন বিচিম্বন্তী বিজহার স্থারত। ॥৮॥ बाट्यन वर्मा देवव मनरान मरमन ह। বভঞ্জ বনরুক্ষাণাং শাখাঃ পরমপুঞ্জিতাঃ ॥ ৯॥ তাং স্থীরহিতামেকা মেক্বস্তামলঙ্কুতাম্। দদর্শ ভার্গবো ধীমাংশ্চর স্তীমিব বিস্কাত্য্য ১০॥ তাৎ পশ্যমানে। বিজনে স রেমে পর্মত্যুতিঃ। कामकर्भक विश्विषि उपि विषय मित्र मित्र । ।)। তামাবভাষে কল্যাণীং সা চাস্য ন শূণোতি বৈ। ততঃ সুকন্যা বল্মীকে দৃষ্টা ভার্সবচক্ষী॥ ১২॥ को जूरना ९ कले रकत वृक्ति साह्यना ९ क्रा কিন্ন খলিদমিত্যকু। নির্বিভেদাস্য লোচনে ॥ ১৩॥ অক্রধাৎ স তয়া বিদ্ধে নেত্রে পরমমন্ত্রামান্। ততঃ শ্র্যাতিসৈন্যস্য শক্ষুতে সমার্ণোৎ॥ ১৪॥ ততো ৰুকে শক্ষাতে সৈন্যানাহছুংখিতম্। তথাগতমভিপ্রেক্ষা পর্যাপৃচ্ছৎ স পার্থিবঃ ॥ ১৫॥ " তপোনিতাদ্য বৃদ্ধশ্য রোষণ্দ্য বিশেষতঃ। কেনাপক্তমদোহ ভার্গবদ্য মহাত্মনঃ ?—॥ ১৬॥

॥ ৬॥ १॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ক্ষাম কণ্ড ক্ষীণধনিঃ॥ ১১॥ অতএব সা তদ্বচনং ন শ্ৰোতি॥ ১২॥ ১৬॥ ১৪॥ আনিছো মলবিষ্টপ্তঃ॥ ১৫॥ ১৬॥।

জ্ঞাতং বা যদি বাজ্ঞাতং তদ্দুং 👸 ব্ৰুত মাচিরম্''— তমূচ: দৈনিকাঃ দৰ্বে " ন বিছোহপক্ত বয়স্॥ ১৭॥ সর্কোপায়ৈ র্যথাকাম ভবাং স্তদ্ধিগচ্ছতু'—। ততঃ স পৃথিবীপালঃ সামা চোত্রেণ চ স্থম্ ॥ ১৮॥ পর্য্যপুক্তৎ সুক্রদ্বর্গৎ পর্য্যজানন্ন চৈব তে। আনাহার্ত্তং ততো দৃষ্টা তৎ দৈন্যমস্থার্দ্দিতম্ ॥ ১৯॥ পিতরং ছু: খিতং দৃষ্ট্। স্থকন্যেদমথাব্রবীৎ। '' ময়াটন্ড্যেছ বল্মীকে দৃন্টং সন্তুমভিজ্বলং॥ ২০॥ খদ্যোত্তবদভিজ্ঞাতং তথায়া বিদ্ধ মস্তিকাৎ"—। এতচ্চুত্বা তু বলীক শর্যাতিস্তৃর্মভাগাং॥ ২১॥ তত্রপেশান্তপোরুদ্ধং বয়োরুদ্ধঞ্চ ভার্যবম্। অযাচদথ দৈন্যার্থ- প্রাঞ্জলিঃ পৃথিবীপতিঃ ॥ ২২ ॥ '''অজ্ঞান।দ্বালয়া যত্তে ক্বতং তৎ কন্তুমईসি''। ততোহত্তবীন্মহীপালং চাবনো ভার্গবস্তদা ॥ ২৩॥ " অপমানাদহং † বিদ্ধো হানয়া দর্পপূর্ণয়া। ৰপৌদাৰ্যাসমাযুক্তাং লোভমোহবলাৎ কৃতাম্॥ ২৪॥ তামেব প্রতিগৃহাহং রাজনু! ছুহিতরং তব। ক্ষণসামীতি মহীপাল! সত্যমেতদ বীমি তে'—॥ ২৫॥

লোমশ উবাচ।

 ^{*} তদৃত্য ইতি ক পুস্তক পাঠঃ।
 † " অবমানাৎ" ইতি ক পুস্তকঃ।

প্রতিগৃহ চ তাং কন্যাং ভগবান প্রসাদ হ।
প্রাপ্তপ্রসাদো রাজা বৈ সসৈন্যঃ পুরমাত্রছং॥ ২৭ ॥
স্থাকন্যাপি পতি॰ লক্ষ্যা তপদ্ধিন মনিন্দিতা।
নিতাৎ পর্যাচরং প্রতিয়া তপদা নির্মেন চ॥ ২৮॥
স্থানা মতিথীনাঞ্চ শুক্রায়ু রনস্থাকা।
সমারাধ্য়ত ক্ষিপ্রং চ্যবনং সা শুভাননা"—॥ ২৯॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি তীর্থাতা পর্বাণি স্থকন্যোপাখ্যানে
স্থাবিশ্বতাধিকশ্ততমোহধ্যায়ঃ॥ ১২২॥

লোমশ উবাচ।

কেন্যচিত্ত্থ কালস্য ত্রিদশাবশ্বিনো নূপ।

 ক্রিভাব্বিনাং বির্তাৎ স্ক্রনাৎ তা মপশাতাম্॥ ১॥

 ভাৎ দৃষ্ট্রা দশনীয়াঙ্গাং দেবরাজস্ত্রামিব।

 উচতুঃ সমভিক্রতা নাসত্যাবশ্বিনাবিদম্॥ ২॥

 ক্রিয়া ত্রমিন বামোর । বনেহন্মিন কিৎ করোষি চ।

 ইচ্ছাব ভক্রে। জ্ঞাতুৎ ত্বাং তত্ত্বমাখ্যাহি শোভনে !''॥ ৩॥

 ততঃ স্ক্রন্যা সত্রাভা তারুবাচ স্ব্রোভ্রমো।

 শর্মাতিত্রমাং বিত্তং ভার্যাং মাং চ্যবন্স্য চ''॥ ৪॥

 অথাশ্বিনো প্রহ্মাতা মত্র্তাৎ পুনরেব তু।

 কথং ত্বমান কল্যাণি। পিতা দ্বা গ্রাহ্বেন ?॥ ৫॥

11 29 11 25 11 23 11

ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলকণ্ঠীরে ভারত ভাবদীপে দাবিংশাধিক
শততমেহিধ্যারঃ ॥ ১২২ ॥

কস্যচিদিতি—। বিহ্তাং অনাজ্যদিতান্॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ গতাধ্নে জত ত বয়সে ইতাৰ্থঃ॥ ৫॥

ভ্রাজসেহন্মিন্ বনে ভীব্ল ! বিচ্যুৎসৌদাসিরী যথা। ন দেবেছপি তুলা। হি ত্বয়া পশ্যাব ভাবিনি !॥ ৩॥ অনাভরণসম্পন্না পরমায়রবর্জিতা। শোভয়সাধিক ওদে। বনমপ্যনলক তা ॥ ৭ ॥ সর্ব্বাভরণসম্পন্ন। পরমামরধারি ী। শোভনে ব্নবদ্যাঙ্গি। ন ব্লেব॰ মলপক্ষিনী ॥ ৮॥ কন্মাদেব পথি। ভূত্বা জরাজর্জ্জরিতং পতিম। ত্ব মুপাস্সেহ কলাণি ! কামভোগৰহিছ,তম্ । ১ া অসমর্থ~ পরিত্রাণে পোষণে চ শুচিন্মিতে!। मा बः हार्यन ग्रुब्स्का व्ययदेश्वक मार्यस्याः॥ ১० ॥ পতাৰ্থং দেবগৰ্ভাতে ! মা রুথা যৌবনং ক্লুথাঃ"—। এবমুক্ত। স্থকন্যাপি স্থরৌ তাবিদ্ মত্রবীৎ॥ ১১॥ । রতাহং চাবনে পতো। মৈবং মাণ পর্যাশক্ষতন্*। ভাবেত্র্তাৎ পুনস্ত্রেনা মাবাং দেবভিষধরৌ ॥ ১২ ॥ যুবানং রূপসম্পন্নং করিষ্যাবঃ পতিং তব। ততন্ত্ৰস্যাবয়োকৈ বুণীশ্বান্যতমং পতিম্। ১৩। এতেন সময়েনৈন মামন্ত্র পতি প্তভে! "-সা তয়োকচনাদ্রাজ নুপসঙ্গম্য ভার্গবম্ ॥১৪॥ উবাচ বাক্যু যক্তাভ্যা মুক্ত ভৃগুস্থতং প্ৰতি। তচ্চুত্রা চ্যবনো ভার্য্যা মুবাচ ক্রিয়তামিতি॥ ১৫॥ † (ভর্ত্রা সা সমনুজ্ঞাতা ক্রিয়তামিত্যথাত্রবীৎ। প্রুত্ত্বা তদাশ্বিনৌ বাক্যং তন্ত্তব্যাঃ ক্রিয়তামিতি)॥ ১৯॥ 1 4 1 9 1 4 1 4 1 4 1 5 1 1 5 2 1 5 2 1 4 1 4 1 4 1 1 4 1 1

^{* &}quot; প্র্যা,শৃষ্কিখ ঃ" ইতি ক।

্রণ ভর্তেতি শ্লোকঃ খ-পুত্তকে নান্তি, কিন্তু কাদি-পুত্তকে বর্ত্ততে, সংপ্রাদ্দেন বুল মধ্যে নিক্ষিপ্তঃ।

উচতু রাজপুত্তীৎ তাৎ পতিস্তব বিশব্ধ:। ততোহস্তুশ্যবনঃ শীত্ৰং ৰূপাৰ্থা প্ৰবিবেশ হয় ১৭ ॥ ৷ অশ্বিনাবপি তদ্রাজনু ! সরঃ প্রাবিশতাং তদা। ততো মুহূর্ত্তাত্বর্তীর্ণাঃ সর্বেব তে সরসপ্তদা । ১৮॥। দিব্যৰূপধরাঃ **সর্ব্বে** যুব†নো মৃষ্টকুগুল†ঃ। তুল্যবেশধরা ৈত্ব মনসঃ প্রীতিবর্দ্ধনাঃ॥ ১৯॥। তেইক্রেবন্ সহিতাঃ সর্বের র্ণীম্বান্যতমণ শুভে ! ৷ অম্মাকমীপ্যিতং ভদ্রে। পতিত্বে বর্ণ্নি।। ২০॥। যত্র বাপ্যভিকামাসি ত॰ রুণীম্ব স্থশোভনে !। সা সমীক্ষ্য তৃ তানু সর্বাৎস্তল্যৰপধ্যানু স্থিতানু ॥ ২১॥ নিশ্চিত্য মনসা বুৰুণা দেবী বত্তে স্বক^ পতিমু । লক্ষু তু চ্যবনো ভাৰ্যাং বয়ো ৰূপঞ্চ বাঞ্ছিতম্ ॥ ২২॥ হৃষ্টোহব্রবীরহাতেজা স্থৌনাসত্যাবিদংবচঃ (যথ,হ^ ৰূপসম্পন্নো বয়সাচ সমস্বিতঃ ॥ ২৩॥.. ক্তো ভবভাগি বৃদ্ধঃ সনু ভাষ্যাঞ্চ প্রাপ্তবানিমাম্॥ ২৪ ॥ তন্মাদ্যুরাণ করিষ্যামি প্রীত্যাহং সোমপীথিনৌ। মিষতো দেবরাজস্য সত্যমেত্রদ্বীমি বাম্॥ ২৫॥ তচ্চুত্ব। হৃষ্টমনসৌ দিবং তৌ প্রতি জগ্মতুঃ। চ্যবনশ্চ স্থকন্যা চ স্থ্রাবিব বিজয়ত্র:"—॥ ২৬ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণ স্কুকন্যোপাখ্যানে ত্রয়োবিংশত্যধিকশতভ্যোহ্ধ্যায়ঃ॥ ১২৩॥

॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ २८ ॥ १२ ॥ १४ ॥ " অশিনৌ বৈ দেবানামসোমপা বাস্তাম্"—ইতি শুড সৈতে ত্বপরং হণ্ড, তন্মাদ্ ধুবা মিতি যুবলো রসো-মপতং মিষতঃ পশ্যতঃ ত্রী করিষ্যামীতার্থঃ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ৫ ॥ ইত্যারশ্যকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে এয়োবিং শাধিকশত তমেহিধ্যায়ঃ ॥ ১২৩ ॥ লোমশ উবাচ।

েততঃ শুশ্রাব শর্যাতি ব্রয়ঃস্থং চ্যবনং ক্রতম। সংক্রটঃ সেনয়া সার্দ্ধ মুপায়ান্তার্গবাত্রমম্ ॥ ১॥ রেমে সভার্য্যঃ শর্যাতিঃ রুৎস্নাং প্রাপ্য মহীমিব ॥ ২ ॥ ঋষিণা সৎকৃতন্তেন সভার্যাঃ পৃথিবীপতিঃ। উপোপবিষ্টঃ কল্যাণীঃ কথাশ্চক্রে মনোরমাঃ॥ ৩॥ অথৈনং ভার্গবো রাজ ম্বাচ পরিদান্তুয়ন্। ' যাজরিষ্যামি রাজ শু । সম্ভারানবক পায়''—॥ ৪ ॥ ততঃ পরমসংক্রটঃ শর্যাতি রবনীপতিঃ। চ্যবনগ্য মহারজ ! তদ্বাক্যং প্রত্যপূজ্যং ॥ ৫॥ প্রশস্তেহ্হনি যজ্ঞীয়ে সর্ব্যকামসমূদ্ধিমৎ। কারয়ামাস শর্যাতি র্যজ্ঞায়তন মুক্তমন্। ৬॥ তত্রৈন্ চ্যবনো রাজনু! যাজয়ামাস ভার্গবঃ। অন্ততানি চ ততাসন্ যানি তানি নিবোধ মে॥ १॥ च गुरू का वनः तमा म मिस्तार्कित्या छन। তমিক্রো বারয়ামাস গুরাণ্ডস তয়োগ্রহম্॥ ৮॥ इक्ट छेग्ह।

'উভাবেতৌ ন সোমার্হে নাসত্যাবিতি মে মতিঃ। ভিষজৌ দিবি দেবানাৎ কর্ম্মণা তেন নার্হঃ''—। ৯॥
চাবন উপচ।

'মহোৎসাহৌ মহাত্মানৌ ৰূপদ্ৰবিণ্যন্তরৌ। যৌ চক্রভূর্মাং মহাবন্! রুন্দারকমিবাঞ্চরম্॥ ১০॥

তত ইতি—বয়স্থং যুবানন্, " যুবং চ্যবান মাখনা জরভং পুন যুবানং-চরখায় চক্রপুঃ"—ইতি মন্ত্র লিন্ধাং, চ্যবানং চ্যবনং, চরখায় ধর্মাচরলার্থন্ ॥ ১॥ ২॥ উপ সমীপে॥ ৩॥ সম্ভারান্ যজ্ঞোপকরণানি॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ ॥ ৭॥ গ্রহং সোমস্যা, গৃহ্লং ত্যোর্থে॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ঋতে স্বাং বিৰুধাং শচান্যান্ কথং বৈ নাহ তঃ সবম্ ?— অশ্বিনাৰপি দেবেন্দ্ৰ! দেবৌ বিদ্ধি পুৱনদর !''—॥ ১১॥

ই জ্ঞ উবাচ।

"চিকিৎসকৌ কশ্মকরো কামৰপসমন্বিভী। লোকে চরভৌ মত্যানাং কথ∾ সোম মিহাহ ভঃ ?"—॥ ১২ ॥ লোমশ উবাচ।

এতদেব যদা বাক্য মান্ত্রেডরতি দেবরাট। অনাদৃত্য ততঃ শক্রং গ্রহং জ্ঞাহ ভার্গবঃ॥ ১৩॥ গ্রহীয়ান্তন্ত ত^ সোম মশ্বিনো রুত্তমং তদা। সমীক্ষ্য বলভিদ্দেব ইদং বচনম ব্রবীং । ১৩॥ ' অভা মর্থায় দোমং ত্বং গ্রহীয়াসি যদি স্বরম্। বজ্রং তে প্রহরিষ্যামি ঘোরন্ত্রপ মন্তুত্ত মম্'--॥ ১৫॥ এবমুক্ত: স্ময়লিন্দ্র মভিবীক্ষ্য সভার্গবং। জ্ঞাহ বিধিবৎ সোম মশ্বিভা। মুক্তমং গ্রহম্॥ ১৬॥ ততোহসৈ প্রাহরদ্বজ্ঞং ঘোরন্ধপং শচীপতিঃ। অস্য প্রহরতো বাস্ত্র স্তন্ত্রয়ামাস ভার্সবঃ॥ ১৭॥ তং স্তম্ভারিত্বা চাবনো জুহুবে মন্ত্রতোইনলম্। ক্লত্যার্থী স্থমহাতেজা দেবৎ হিংসিতু মুদ্যতঃ ॥ ১৮॥ ততঃ কুত্যাথ সৎজ্ঞে মুনেস্তম্য তপোবলাৎ। मान ज्ञाम महावीर्द्या बुह्दकारमा महास्वतः ॥ ३৯॥ শরীর पग निर्देष मनका खु स्वास्टेबः। তস্যাস্য মভবদেঘারং তীক্ষাগ্রদশনং মহৎ॥ २०॥

সবং সোমন্॥ ১১॥ ১২॥ আত্মেড়রতি পূনঃ পুনরাবর্তরতি ॥ ১৩॥ ১৪॥
॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ক্রা। নাম অভিচারোৎপরা হিংস্স দেবতা॥ ১৯॥
॥ ২০॥

হনুরেকা স্থিতা তস্য ভূমাবেকা দিব পতা।

চতত্রশ্চায়তা দ খ্রী যোজনানা শত শতম্ ॥ ২০॥

ইতরে তস্য দশনা বভূবু দশযোজনাঃ।
প্রাসাদশিখরাকারাঃ শূলাগ্রদমদর্শনাঃ॥ ২২॥

বাহু পর্বতসঙ্কাশা বায়তাবযুতং সমৌ।
নেত্রে রবিশশিপ্রথো বক্তু শকালাগ্রিসন্নিভম্॥ ২০॥
লোলহন্ জিহ্বায় বক্তং বিহ্যুচ্চপললোলয়া।

ব্যান্তাননো ঘোরদৃষ্টি প্রসন্নিব জগদলা। ২৪॥
স ভক্ষরিষান্ সংকুষ্ণ শতক্রতুমুপাদ্রবং।
মহতা ঘোরনপেণ্ লোকান্ শব্দেন নাদ্যন্'—॥ ২৫॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থ্যাত্রাপর্বাণি স্ক্রন্যাপাখ্যানে
তত্রিবংশত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১২৪॥

লোমণ ভবাচ।

'তেং দৃষ্ট্বা ঘোরবদনং মদ দেবঃ শতক্র ।।
আরান্তং ভক্ষরিষান্তং ব্যান্তানন মিবান্তকম্ ॥ ১ ॥
ভরাৎ দ ন্তন্তিভ্জাঃ স্কানী লেলিহল্ম ছং।
ততোহব্রীদ্দেবরাজ শ্চাবন ভরদী ডিতঃ ॥ ২ ॥
' সোমা হাবশিনাবেতা বদ্যপ্রভৃতি ভার্গব ।।
ভবিষ্তঃ সত্যমেতছটো বিপ্রা ! প্রসীদ মে ॥ ৩ ॥
॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥
হতারণ্যকে পর্কান নৈলক গীরে ভারত ভাবদী পে চতুর্বিংশত্যধিক
শতভাহধারঃ ॥ ১২৪ ॥

তংদৃষ্টেতি—॥ ১ ॥ সৃষ্টিশী গলগ্যক্তী, সৃষ্ণীতি ব। পাঠঃ ॥ ২ ॥ ৩ ॥

ন তে মিথ্যা সমারস্তো ভবত্বেষ পরে। বিধিং। জানামি চাহং বিপ্রর্ষে। ন মিখা। ত্বং করিষাসি॥ ৪॥ भामाश्चितिश्वनारवर्को यरेथवामा कूर**ो उ**न्ना। ভূয় এব তু তে বীর্যাৎ প্রকাশেদিতি ভার্গব ! ॥ ৫ ॥ স্থকন্যায়াঃ পিতৃশ্চাস্য লোকে কীর্ত্তি: প্রথেদিতি। অতো মরৈতিদিহিতং তব বীর্যাপ্রকাশনম্ । ৬॥ তত্মাৎ প্রসাদং কুরু মে ভবত্বেবং যথেচ্ছ,সি'—। এবমুক্তন্য শক্তেন ভার্মবদ্য মহাত্মনঃ ॥ १ ॥ म मनुष्कागमक्षेष्ठः भूत्माह ह शूतन्त्तम् । মদঞ্ব্যভজক্রাজন্! পানে স্ত্রাষু চ বীর্যাবান্॥ ৮॥ অক্ষেমু মৃগরায়াঞ্চ পূর্বাস্থ ইং পুনঃ পুনঃ। তথা মদং বিনিক্ষিপ্য শত্রুং সন্তর্প্য চেন্দুনা॥ ৯॥ অশ্বিভ্যাৎ সহিতান দেবান্ যাজয়িত্বা চতং নূপম্ ৷ বিখ্যাপ্য বীর্যাণ লোকেষু সর্কেষু বদতাম্বরঃ ॥ ১০ ॥ স্ক্রায়া সহারণ্যে বিজহারালুকুলয়া। তগৈ্যতদ্দ্ধিকংঘুষ্টং সরে। রাজন্ ! প্রকাশতে ॥ ১১ ॥ অত্র সং সে। দর্থ্যঃ পিতৃন্দেবাং শ্চ তর্পয়। এতদুষ্টা মহীপাল। সিকতাক্ষণ ভারত।॥ ১২॥ ' रेमकावावनामामामा कूला।ना कूक मर्भनग्। পুষ্করেষুমহার জে। সর্কেষুচ জলং স্পূর্ন। ১৩ ॥ স্থাণোর্মন্ত্রাণি চ জপন্ সি।দ্ধ যাস্যসি ভারত!। সন্ধি দ্বো ন্বভাষ। তেতায়া দ্বাপ্রস্য চ ॥ ১৪॥

॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ মদ তেতি— সুরাপান-জ্রা-দ্যত-মুগরা-ব্যসনানি মদক-র্ম ও ত্যাজ্যানীতি ভাবঃ॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১০॥ সন্ধি দ্বালি—সম্প্রতি—সম্প্রতি কলি দ্বাপর সন্ধাবপি, অত্র তীর্থে ত্রেতাদ্বাপর সান্ধ্রত্নাঃ কালেছিন্তি, অত্র স্থাতানাং কলিম্পর্যোগ নাস্ত্রতিভাবঃ॥ ১৪॥

অয়ং হি দুশাতে পার্থ। সর্বাপাপ প্রণ, শনঃ। অত্রোপস্পুশ চৈব ত্বং সর্ববিপাপপ্রাণাশনে । ১৫।। আর্চীক-পর্বতেশ্চেব নিবাদো বৈ মনীষিণাম। मनाकनः मना त्यार्डा मङ्ग्डार द्वान मुख्यम् ॥ ३७॥ চৈত্যাশৈচতে বহুবিধা স্ত্রিদশানা মুধিষ্ঠির !। এতচন্দ্রমস স্তীর্থ মূষয়ঃ পর্যুপ বিতে। বৈখানসা বালিখিল্যাঃ পাবকা বাযুভোজনাঃ॥ ১৭॥। শৃঙ্গাণি ত্রীণি পুণানি ত্রীণি প্রস্রবণানি চ। সর্বাণানুপরিক্রম্য যথাকাম মুপস্পৃশ। ১৮॥ শান্তরুশ্চাত্র রাজেন্দ্র! শুনকশ্চ নরাধিপ।। নরনারায়ণৌ চোভৌ স্থানং প্রাপ্তাঃ সনাতনমু॥ ১৯॥ ইহ নিতাশ্রা দেবাঃ পিতর চ মহর্ষিভিঃ। আর্চীকপর্বাতেতেপুস্তান্ যজস্ব যুধিষ্ঠির ! ॥ ২০॥ ইহ তে বৈ চলনু প্রাশন্ত্বয়শ্চ বিশাম্পতে!। যমুনা চাক্ষয়স্থোতাঃ কুষ্ণ শ্চেছ তপোরতঃ॥ ২১॥ यसो ह जीमरमनण्ड कुर्या हामिबक्र्य !। দৰ্বে চাত্ৰ গমিষ্যামস্ত্ৰু য়ৈৰ সহ পাণ্ডৰ!॥ ২২॥

॥ ১৫॥ সদালোভঃ সদাপ্রবাহ হুক্তম্॥ ১৬॥ পাবকাইব পাংকাঃ দীপ্য-মানাঃ॥ ১৭॥ ত্রীণে শৃন্ধাণিতি—প্রাগ্ ব্যাথাণত রীত্যা ত্রিকোণং ব্রাগদী ক্ষেত্রং, ত্রীণে প্রস্রবানীতি চ প্রয়াগং, এতানি দর্কাণি অন্থ পরিক্রমা প্রদালনী ক্বত, ইথা কাম মিছ স্লাহি, ইথাকাম মিতাস্য কালী প্রয়াগ সেবিনাপ্র চন্দ্র তীর্থ সেবন মৈছিকং ইতরেষা মত্যাবল্যক মিতি ভাবঃ, গোড়াস্ত্র—
'ত্রীণি শৃন্ধাণি শুদ্রাণি ত্রীণি প্রস্রবাণানি চ। পুক্ররা গ্যাদি সিন্ধানি ন বিদ্যান্ত কারণম্শ ইতি লোক মত্রাপি পঠন্তি, মত প্রাবেষ ব্যাখ্যাতঃ অত্র পাঠন্ত কারণাদি স্ত্রত্যা পুর্বোক্তার্থম্য দৃদ্যকারার্থঃ॥ ১৮॥ ১৯॥ নিত্য শরা নিত্যং শ্রানাঃ সন্মিহতা ইত্যর্থঃ, তেপুঃ তপশ্চকুঃ॥ ২০॥ ॥ ২১॥ ২২॥

এতৎ প্রস্ত্রবণং পুণা মিন্দ্রসা মনুজেশর!।

যত্র ধাতা বিধাতা চ বরুণশেচার্দ্ধ্রমাগতাঃ॥২০॥

ইহ তেহপাবসনাজন ! কান্তাঃ পরমধর্মিণঃ।

মৈত্রাণা মৃজুবুন্ধীনা মর্ম গিরিবরঃ শুভঃ॥২৪॥

এবা সা যমুনা রাজন্মহর্ষিগণসেবিতা!

নানা শক্তচিতা রাজন ! পুণা পাপভয়াপহা॥২৫॥

অত্র রাজা মহেছাসো মাস্কাতাহ্যজত স্বয়ম্।

সাহদেবিশ্চ কৌন্ডেয়! সোমকো দদতাং বরঃ"—॥২৬॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি স্কুকন্যোপাথানে

পঞ্বিংশত্যধিকশতত্যোহধ্যায়ঃ॥১২৫॥

যুধিষ্ঠির উণ্চ।

"মান্ধাতা রাজশার্দ্ লব্রিষু লোকেষু বিশ্রুতঃ।
কথ্ জাতো মহাব্রহ্মন্! যৌবনাথো নৃপোন্তমঃ ॥ ১॥
কথ্ং চৈনাং পরাং কাষ্ঠাং প্রাপ্তবানমিতত্যুতিঃ।
যস্য লোকান্ত্রেয়ো বশ্যা বিষ্ণোরিব মহাত্মনঃ॥ ২॥
এতদিছ্নামহং প্রোতুং চরিতং তস্য ধীমতঃ।
যথা মান্ধাতৃশব্দ তস্য শক্রসমত্যুতেঃ।
জন্ম চাপ্রতিবীর্যাস্য কুশলো হাস ভাষি হুন্"—॥ ৩॥

॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ সাহদেবিঃ সৃঞ্জয় পুত্রস্য পুত্রঃ ॥ ২৬ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলক ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চবিংশত্য ধিক শত তমো২ধ্যায়ঃ ॥ ১২৫ ॥

মাস্ত্রতি—॥ যৌবনাশঃ যুবনাশপুতঃ॥ ১॥ পরাং কাঠাং স্বর্গীছের শ্রেষ্ঠং স্থানম্॥ ২॥ ৩॥ লোমশ উবাচ।

" শৃণুদ্বাবহিজো রাজনাজ্ঞস্তম্য মহাত্মন:। যথা মান্ধাতৃশকো বৈ লোকেষু পরিগীয়তে । ৪॥ ইক্বক্ৰ প্ৰভবো যুবন;শ্বো মহীপতিং। সোধ্যত্তৎ পৃথিবীপাল ! ক্র বৃভিভূরিদক্ষিণৈঃ ॥ ৫ ॥ অশ্বমেধসহস্রপ্ত প্রাণ্য ধর্মজুতাম্বরং। অন্যৈশ্চ ক্রতুভির্মাথের রয়জৎ স্বাপ্তদক্ষিণেঃ ॥ ৬॥ জনপতাস্ত রাজ্যিং স মহাত্মা মহাব্রতং। মন্ত্রিম্বাধায় তদ্রাজ্যং বননিতাে বভূব হ । ৭ ॥ শাস্ত্রদৃষ্টেন বিধিনা সংযোজ্যাত্মান মাত্মবান্। স কদাচিল পো রাজন্পবাসেন ছুঃখিতঃ ॥ ৮ ॥ পিপাসাশুষ্কজনয়ঃ প্রবিবেশাশ্রমং ভূগোঃ। তামেব রাত্রি" রাজেন্দ্র! মহাত্মা ভৃগুনন্দনঃ॥ ৯ ॥ ইক্টি চকার সৌত্বামে শ্বহর্ষিং পুক্রকারণাৎ। স্সুতো মন্ত্রপূতেন বারিণা কলসো মহান্।। ১০।। তত্রাতিষ্ঠত রাজেন্দ্র ! পূর্বেমেব সমাহিতঃ। ষ্ং প্রাশ্য প্রসবেত্তস্য পত্নী শক্রসমৎ স্কৃতম্ ॥ ১১ ॥ ত । नामा (वाताः कलमः ऋषूपूट्य मर्श्वः। রাত্রিজাগরণাচ্ছাস্তাঃ সৌহাস্নিঃ মনতীত্য তান্॥ ১২ ॥ শুষ্ককণ্ঠঃ পিপাসার্ত্তঃ পানীরার্থী ভূশণ রূপ!। ত্ত প্রবিশ্যাশ্রমং শ্রান্তঃ পানীয়ণ সোহভাষাচত ॥ ১৩॥

॥ ৪ ॥ ৫॥ ৬ ॥ ৭॥ আত্মানং চিত্তং, আত্মবান্ জিভচিত্তঃ, সংযোজ্য ইফ দেবিভয়া ঐক্যং ন'ত্ম ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ সে:ভ্রেষঃ মুবনাধান্য ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ॥ ১৩ ॥

^{* &}quot; পाने शार्थम्" रें िक-

তস্য শ্রান্তস্য শুদ্ধেণ কণ্ঠেন ক্রোশভস্তদা। নাশ্রৌষীৎ কশ্চন তদা শকুনেরিব বাশতঃ॥ ১৪॥ ততম্বং কলসৎ দুষ্ট্ৰ জলপূৰ্ণ স পাৰ্থিবঃ। অভ্যদ্ৰত বেগেন পীহা চাস্ত্রো ব্যবাস্কং॥ ১৫॥ স পীত্বা শাতলং তোয়ং পিপাসার্ত্তে। মহীপতিঃ। নিকাণমগমদ্ধীমান স্বস্থুখী চাভবত্তদা ॥ ১৬ ॥ ততত্তে প্রতাবুধ্যন্ত মুনয়ঃ সত্রপোধনাঃ। নিস্কোয়ং তঞ্চ কলসং দদুশুঃ সংব এব তে॥ ১৭॥ ক্ষ্যা কর্ম্মেদমিতি তে পর্যাপুচ্ছন্ স্মাগতাঃ। যুবনাখো মমেত্যেব সভ্যং সম্ভিপদ্যক্।। ১৮।। ন যুক্তমিতি তং প্ৰাহ্ ভগবান্ ভার্গ⊲স্তরা। স্তার্থ- স্থাপিতা হাপস্তপদা চৈব সংভূতঃ ॥ ১৯ ॥ ময়া হতাহিতং ব্ৰহ্ম তপ আস্থায় দারুণ্ম। পুত্র।র্থ তব রাজর্ষে! মহাবল পরাক্রম। 🐾 ॥ ২০॥ মহাবলো মহাবীর্যা স্তপোবল্সমন্থিতঃ। यः শক्रमि वीर्यान् अमरम्बममानग् ॥ २১॥ অনেন বিধিনা রাজন্। ময়ৈতত্বপ্রাদিত্য। ভার্ত্তকণাৎ স্বয়া রাজন যুক্তং ক্লুতসদা বৈ । ২২॥ ন স্বদ্য শক্যমস্মাভি রেতৎ কর্ত্তুমতে।২ন্যথা। নুন্দ দৈবক্লতং ছেতালাদেব ক্লতবানসি । ২৩॥ পিপাদিতেন যাঃ পী গা বিধিমন্ত্রপুরস্কৃতাঃ। ় অপেস্তুরা মহারাজ। মন্তপোবীর্যাসংভূতাঃ ॥ ২৪॥। বাশতঃ শব্দং কুর্বাতঃ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ নির্বাণং তপঃ ফলম্ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ 11 72 11 72 11 50 11 57 11 55 11 50 11 58 11

^{* &}quot; পরাক্রম্" ই তি—ক প. b: :

তাভ্যস্ত্রমাত্মনা পুত্র মীদৃশং জনয়িষ্যসি। বিধাস্যামো বয়ং তত্ত তবেফিং পরমান্ত্তাম্ ॥ ২৫ ॥ यश अक्तमप्र शूक्ष जनशिषामि वीर्यावीन । গর্ত্তধারণজঞ্চাপি ন খেদং সমবাপ্স্যাসি"—॥ ২৬॥ ততো বর্ষশতে পূর্ণে তস্য রাজ্ঞো মহাত্মনঃ। বামপাশ্বং বিনির্ভিদ্য স্কুতঃ সূর্য্য ইব স্থিতঃ ॥ ২৭ ॥ নিশ্চক্রাম মহাতেজা ন চ ত॰ মৃত্যুরাবিশং। যুবনাশ্ব^ নরপতিং তদদ্ভুতমিবাভবৎ॥ ২৮॥ ততঃ শক্রে। মহাতেজা স্ত্র দিদুক্রপাগমৎ। ততো দেবা মহেল্রং ত মপৃচ্ছন্ ধাস্যতীতি কিম্ 🕯 ॥ ২৯ ॥ প্রদেশিনী~ ততোহস্যাস্যে শক্তঃ সমভিসন্দধে। মাসয়ৎ ধাস্যতীত্যেবৎ ভাষিতে চৈব বক্সিণা ॥৩০ ॥ মান্ধাতেতি চ নামাস্য চকুঃ সেন্দ্রা দিবৌকসঃ॥ ৩১॥ প্রদেশিনী শক্রদন্তামাস্থাদ্য স শিশুন্তদা। অবৰ্দ্ধত মহাতেজাঃ কিন্ধু নু।জ-স্ত্ৰয়োদশ॥ ৩২॥ বেদান্তং সধনুর্বেদা দিব্যান্যস্ত্রাণি চেশ্বরম্। উপতস্থাহারাজ! ধ্যাতমাত্রাণি সর্বশঃ। ৩৩। আজগবং নাম ধনুঃ শরাঃ শৃঙ্গোদ্ভবাশ্চ যে ১

অভেদ্যং কবচ পৈৰ সদ্য স্ত মুপ শিল্পিয়ুঃ ॥ ৩৪ ॥
ইন্তিং ইন্দ্তিন্ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৮ ॥ কিং ধাস্যতি পাস্যতি
শু স্থান্তাবাদিত্যৰ্থঃ ॥ ২৯ ॥ মাংধাস্যতি ইতি মান্ধাতা, ধাতেতি লুড়স্ত্য্য বাধ্যানং ধাস্যতীতি, প্রদেশিনীং তর্জ্জনীন্ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ কিন্ধূন্
হস্তান্ বিজ্জীন্ বা " কিন্ধু হিস্তে বিততো চ"—ইত্যমরঃ ॥ ৩২ ॥ ধাতে
মাত্রস্য ইন্দ্রেন 'জর মেবং বিধো ভবতু" ইতি সঙ্গাশ্তিস্য ॥ ৩০ ॥
শূলোদ্ভবাঃ স্বর্গজাঃ " শৃঙ্গং প্রভুত্বে শিশ্বে ইত্যাদি—স্বর্গ মীনাবিশেষ্
সোঃ।" ইতি বিশ্বঃ, দিব্যাইত্যর্থঃ ॥ ৩৪ ॥

^{* &}quot; কন্[»] ইতি পাঠান্তরন্।

সোহভিষিক্তো মঘৰতা স্বয়ং শক্তেণ ভারত।। ধর্ম্মেণ ব্যজয়লোকাংস্ত্রীনু বিষ্ণুরিব বিক্রাটমঃ॥ ৩৫॥ ত্যাপ্রতিহত ১ চকু প্রাবর্ত্ত মহাত্মনঃ। রত্নানি চৈব রাজর্ষিং স্বয়সেবে পত্রিরে ॥ ৩৬ ॥ তদ্যের বস্থনস্পূর্ণা বস্থধা বস্থধাধিপ !। राज्य विविदेश गेरेक र्यक्षिः श्राश्चनिकरेनः ॥ ०२ ॥ চিতচৈত্যো মহাতেজা ধর্মান্ প্রাপ্যচ পুদ্ধলান্। শক্রন্যার্দ্ধাদনং রাজনু ! লক্কবানমিতত্যুতিঃ ॥ ৩৮॥ একাহাৎ পৃথিবী তেন ধর্মনিত্যেন ধীমতা। বিজিতা শাসনাদেব সরত্নাকরপত্তনা॥ ১৯॥ ত্রস্য চৈত্রৈর্মহারাজ ! ক্রতুনাপ দক্ষিণাবতাম। চতুরন্তা মহী ব্যাপ্তা নাদীৎ কিঞ্চিদনারতম্ ॥ ৪০॥ তেন পদাসহস্রাণি গবাৎ দশ মহাত্মনা। ব্রান্ধণানাং মহারাজ! দন্তানীতি প্রতক্ষতে ॥৪১॥ তেন দ্বাদশবার্ষিক্যা মনার্ষ্ট্যাৎ মহাত্মনা। বুষ্টং শস্যবিবৃদ্ধার্থ মিষতো বজ্ঞপাণিনঃ ॥ ৪২ ॥ তেন সোমকুলোৎপারা গান্ধারাধিপতি র্মহান্। গজ নিব মহামেঘঃ প্রমথ্য নিহতঃ শরৈঃ ॥ ৪৩॥ প্রজাশ্চত্রবিধা স্তেন তাতা রাজনু ! কুতাত্মনা। তেনাত্মতপুসা লোকাঃ স্থাপিতাশ্চাতিতেজসা॥ ৪৪॥ ত্ত সতদ্বেষজনং স্থান মাদিত্যবর্চনঃ। পশ্য পুণ্যতমে দেশে কুরুক্ষেত্রদ্য মধ্যত: । ৪৫॥

॥ ৩৫॥ চক্রং আজা॥ ৩৬॥ ৩৭॥ চিত চৈত্যঃ ক্তচয়নকজু:॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ॥ ৪০॥ পদাং শত কোটয়ঃ, তেষামশি সহস্রানি দশ ॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪৩॥ চতুর্বিধাঃ স্থান্ত্র-ম্বান্ত্রাধাক্-স্থাব্যাঃ॥ ৪৪॥ এতত্তে সর্ব্য মাখ্যাতং মাস্ত্রাতুশ্চরিতং মহৎ।
জন্ম চাগ্রাং মহীপাল। যন্নাং স্ত্রং পরিপৃক্ষসি"—: ৪৬॥
বৈশম্পান্ন উবাচ।
এবমুক্তঃ সকৌতেয়ো লোমশেন মহর্ষিণা।
পপ্রচ্ছানন্তর> ভূয়ঃ সোমকং প্রতি ভারত!॥ ৪৭॥
ইত্যারণ্যকে পর্বণি তীর্যাত্রাপর্কণি মান্ধাত্রপাখ্যানে
ষড়িংশত্যধিকশতত্যোহ্ধ্যায়ঃ॥ ১২৬॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

"বুধিনির নির্পতিঃ সোমকো নাম ধার্মিকঃ।
তস্যভার্য্যাশতং রাজন্! সদৃশীনামভূত্তদা ॥ ২ ॥
স বৈ যত্ত্বেন মহতা তাস্থ পূত্রং মহীপতিঃ।
কঞ্চিলাসাদয়ামাস কালেন মহতা ছপি ॥ ৩ ॥
কদাচিত্তস্য রুদ্ধস্য ঘটমানস্য যত্ত্বতঃ।
জন্তুর্নাম স্থৃত্তপ্তমিন্ স্ত্রীশত্বে সমজায়ত ॥ ৪ ॥
তং জাত্র মাতরঃ সর্বাঃ পরিবার্য্য সমাসতে।
সততং পৃষ্ঠতঃ কৃত্বা কামভোগান্ বিশাসতে! ॥ ৫ ॥

180 185 189 1

, ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকতীয়ে ভারতভাব দীপে ষড়্বিংশত্যধিক-শত তমোহধ্যায়ঃ॥ ১২৬॥

কথমিতি—॥১॥২॥৩॥৪॥৫॥

ততঃ পিপীলিকা জন্ত্র কদাচিদদশং ক্ষিচি।
স দফৌ ব্যনদন্নাদ তেন তুংখেন বালকঃ ॥ ৬ ॥
ততপ্তা মাতরং সর্বাঃ প্রাক্রোশন্ ভূশত্বংথিতাঃ।
প্রবার্য জন্ত্রং সহিতাং স শব্দ স্তমুলোহভবং ॥ ৭ ॥
ত মার্ত্রনাদ সহসা শুলাব স মহীপতিঃ।
তমাত্যপর্বদো মধ্যে উপবিষ্টং সহত্রিজা ॥ ৮ ॥
ততঃ প্রস্থাপরামাস কিমেতদিতি পার্থিবঃ।
তিমা ক্ষন্তা যথারত্ত মাচচক্ষে স্ত্রত্ব প্রতি॥ ৯ ॥
ত্রনালং স চোপার সোমকং সহ মন্ত্রিভিং।
প্রবিশ্যান্তঃপুরং পুক্র মাশ্যাস্যাদরিক্ষমঃ ॥ ১০ ॥
সান্ত্রিত্রা তু তা পুক্রা ক্ষিন্ত্রান্তঃ পুরান্ন পাং।
খাত্রজা সহিতো রাজন্! সহ্যান্তা উপাবিশং॥ ১ ॥
সোমক উবাচ।

"বিগান্ধ হৈকপুত্র মপুত্র পরং ভবেং।
নিত্যানুর রাদ্ তানাং শোক এবৈকপুত্রতা॥ ১২॥
ইনং ভার্যাশত পরকান ! পরাক্ষ্য সদৃশং প্রভাে।।
পুত্রার্থিনা ময়া বাঢ়ং † ন তাসাং বিদ্যুতে প্রজা॥ ১৩॥
একঃ কণফিত্রংপান্ধ পুত্রো জন্ত রয়ং মম।
যত্যানাস্থ স্বাস্থে কিন্তু তুংখমতঃ পরম্।॥ ১৪॥
বয়শ্চ সমতীত মে সভার্যাস্য দিজোত্তম!।
আসাং প্রাণাঃ সময়ন্তা মম চাবৈকপুত্রকে॥ ১৫॥

ক্ষিতি কটাব্য ৬॥ ৭॥ অন্তাপবলো মধ্যে মন্ত্রি সভাতঃ ॥ ৮॥ ক্রা দ্বোবারকঃ । ১॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥

^{* &}quot;পুত্রং তং" ইত্যে বংপাঠঃ ক পুস্তকে।

† "চোচুং" ইতি ক পাঠঃ।

সাভু কর্ম তথাযুক্তং যেন পুত্রশতং ভবেৎ ! মহতা লঘুনা বাপি কশ্মনা ছম্ববেণ বা" ?—॥ ১৬॥ ঋত্বিগুবাচ। '' অস্তি চৈতাদৃশং কর্দ্ম যেন পুক্সশতৎ ভবেৎ। যদি শক্রে,ষি তৎ কর্ত্তু মথ বক্ষ্যামি দোমক !" ॥ ১৭ ॥ সোমক উনাচ। ''কাৰ্য্যং বা যদি বাকাৰ্য্যণ যেন পুজ্ৰশতণ ভবেৎ। ক্তমেবেতি তদ্ধিদ্ধি ভগবন্ ! প্রব্রবীতু মে''—॥ ১৮॥ ঋত্বিগুবাচ। "যজস্ব জন্তনা রাজ্∼স্তঃ ময়া বিততে ক্রতৌ। ততঃ পুত্রশতং শ্রীমন্তবিষ্যত্যচিরেণ তে॥ ১৯॥ বপায়াং হুরমানায়াং ধুমমাভায় মাতরঃ। ততন্তাঃ স্বমহাবীর্যানু জনয়িষ্যন্তি তে স্কুতানু॥ ২০॥ তস্যামেব তু তে জন্তুর্জবিতা পুনরাত্মজঃ। উত্তরে চাস্য সৌবর্ণং লক্ষ্ম পাশ্বে ভবিষ্যতি"—॥২১॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণ জন্ত, পাখ্যানে সপ্তবিংশত্যধিকশততমোহ্ধ্যায়ঃ॥ ১২৭॥

॥ ১৬ ॥ ১৭॥ ১৮॥ জন্তনা পশুভূতেন, ''স বৰুণং রাজান মুপসসার প্রোমে জায়তাং তেন ড। যজাইতি"—ইতি পুত্রস্যাপি পশুকরণং বহন্চ বান্ধণে পরায়ুক্তং ত্তোন শাস্ত্র বিরোধঃ॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥

·ইত্যারণাকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তবিংশত্যধিক শত তমোহধারঃ॥ ১২৭॥ সোমক উবাচ।

' ব্রহ্মন ! যানানেথা কার্যাং তং কুরুম তথা তথা। পুক্রকামতয়। সর্বাং ক্রেষ্যামি বচস্তব ''—॥ ১॥ লোমশ উবাচ।

" ততঃ স যাজয়ামাস সোমকং তেন জন্তুনা। মাতরস্ত বলাৎ পুত্র মপাকার্যুঃ রূপান্বিতাঃ॥ ২॥ হা হতাঃ স্বেতি বাশন্ত্যন্তীব্ৰশোকসমাহতাঃ। क्रम जाः कक्र नक्षात्रि गृशेषा मिक्करन करत ॥ ७॥ সব্যে পাণো গৃহীত্বা তু যাজকোহপি স্ম কর্ষতি। কুররীণামিবার্জনাং সমাক্ষ্য তু ত স্পত্র্॥ ৪ । বিশস্য চৈনণ বিধিনা বপা মস্য জুহাব সঃ। বপায়া । হুয়মানায়া । গন্ধ মান্তায় মাতরঃ ॥ ৫॥ আৰ্ত্তা নিপেতুঃ সহসা পৃথিব্যাপ কুরুনন্দন !। স্বাশ্চ গর্ভানলভং স্ততন্তাঃ পর্মাঞ্চনাঃ॥ ৬॥ ততো দশস্থ মাসেষু সোমকদা বিশাম্পতে!। জড়ের পুত্রশতং পূর্ণ তাস্থ সর্বাস্থ ভারত।॥ १॥ জন্ত জ্যেষ্ঠঃ সমভবৎ জনিত্র্যামেব পার্থিব! । স তাসামিষ্ট এবাসীন্ন তথা তে নিজাঃ স্থতাঃ ॥ ৮॥ তচ্চ লক্ষণ মস্যাসীৎ সৌবর্ণং পাশ্ব উত্তরে। তিমিন্ পুত্রশতে চাগ্রাঃ স বভূব গুণৈরপি॥ ১॥ ততঃ স লোক মগমৎ দোমকদ্য গুৰুঃ পরম্। অথ কালে ব্যতীতে তু সোমকোহপ্যশ্বমৎ পরমু॥ ১০॥

ব্রন্মতি—॥১॥২॥বাশন্তঃ ক্রোশন্তঃ ॥৩॥৪॥বপাং দেহান্তর্গতং অপুপাকারং মাংসম্॥৫॥৬॥৭॥৮॥লক্ষণং চিহ্নম্॥৯॥সোমকস্য ঋষিতিশেংঃ॥১০॥ অথ ত ~ নরকে ঘোরে পিচ্যমানং দদর্শ দ:।
ত মপুক্তং কিমর্থং ত্ব ~ নরকে পচ্যদে দ্বিজ ?—। >> ॥
ত মত্রবীদ্ধারুঃ সোহথ পচ্যমানোহগ্রিনা ভূশন্।
" ত্বং মরা ষাজিতো রাজংস্তদ্যেদং কর্ম্মনঃ ফলন্"॥ >২॥
এচচ্ছুত্রা দ রাজর্ষি ধর্মারাজান মত্রবীং।
" অহমত্র প্রবেক্ষ্যামি মুচ্যতাং মম যাজকঃ॥ >৩॥
মংকৃতে হি মহাভাগঃ পচ্যতে নরকাগ্রিনা।"—
ধর্মরাজ উবাচ।

"নানাঃ কর্জুঃ ফলং রাজনুপভুঙ্ ক্ত কদাচন। ইমানি তব দৃশাল্পে ফলানি বদতামর।"—॥ ১৪ ॥ দোমক উবাচ।

'পুণ্যাল্ল কাময়ে লোকান্তেই হং ব্রহ্মবাদিনম্।
ইচ্ছাম্যহ্মনেনৈব সহ বস্তু সুরালয়ে ॥ ১৫ ॥
নরকে বা ধর্মাজ ! কর্মাণাস্য সমো ছাহম্।
পুণ্যাপুণ্যকল ১ দেব ! সম মস্থাবয়োরিদম্ "—॥ ১৬ ॥
ধর্মাজ উবাচ।

" যদ্যেবমীপ্সিতং রাজন! ভুজ্জ্বাস্য সহিতঃ ফলম্। ভুল্যকালংসহানেন পশ্চাৎ প্রাপ্যাসি সক্ষাতিমূ"—॥ ১৭ ॥ লোমণ উবাচ।

'' স চকার তথা সর্বাং রাজা রাজীবলোচনঃ।
কীনপাপশ্চ তথাৎ স বিমুক্তো গুরুনা সহ॥ ১৮॥
লেভে লোকান্ শুভান্ রাজন্ ! কর্মানা নিজিভান্ স্বয়ম্।
সহ তেনৈব বিপ্রেণ গুরুনা স গুরুপ্রিয়ঃ॥ ১৯॥

١١ هـ ١١ عر ١١ هـ ١١ هـ ١ ١ ع ١١ ع. ١١ ع ١١ ع ١٠ الم عمل الم

এব তদ্যাশ্রমঃ পুণো য এবে। হত্তে বিরাজতে।
কান্ত উব্যাত বজু তিং প্রাতি স্থাতিং নরঃ ॥ ২০ ॥
এতিমানপি রাজেন্দ্র ! বংসামো বিগতজ্বাঃ ।
বজু তে নিয়তাজানঃ সজ্জীতব কুরুদ্বহ .''—॥ ২১ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্য্যাত্রাপর্বাণি জন্তুপার্যানে
অফাবিশ্শত্যাধিকশত্তমে। হ্যায়ঃ ॥ ২২৮ ॥

লোমণ উবাচ।

" অস্মিন্ কিল স্বয়ৎ রাজনিউবান্ বৈ প্রজাপতিঃ।

সত্রমিষ্টীকৃতং নাম পুরা বর্ষসহক্রিকম্॥ > ॥

অস্ববীবশ্চ নাভাগ ইউবান্ যুনা ময়ু।

যত্রেষ্টা দশ পদ্মানি সদন্যেভো বিস্কবিবান্॥ ২ ॥

যভৈগ্রুত তপসা চৈব পরাৎ সিদ্ধি মবাপ সঃ।

দেশশ্চ নাছ্য্স্যায়ং যজ্বরঃ পুণ্যকর্মানঃ॥ ৩ ॥

সাক্রিভৌমস্য কৌস্কেয়! য্যাতে রমিতৌজসঃ।

স্পর্ক্মানস্য শক্রেন্ যুন্যেদং যজ্ঞবান্তিই॥ ৪ ॥

ক্ষান্তঃ ক্ষাবান, উষ্য উষিষ্য ॥ ২০ ॥ অভিচার পাপং কুমার্গোপদেষ্ট্র যাজকেষের, যাজ্যস্য নিপাভস্ত গুরের কক্ণাপ্রযুক্তঃ স্বয়ং কৃতো নতুন্যায্য ইত্যধ্যায় তাৎপর্যায় ॥ ২১ ॥

ইত্যারন্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে জফাবিংশা ধিক শতভমেশিংধ্যায়ঃ॥ ১২৮॥

অশিরিতি—॥ ১॥ দশপদানি গণ মিতি শেষঃ, 'তেসা দাদশ শতংদক্ষিণা"—ইতি যাগীয় দক্ষিণাদৌ সর্বতি গো-পদ্দোগ্ধাগ্ছার দর্শনাং, অভিস্ফাবান্ দত্তবান্। ২॥ ৩॥ যজ্ঞ বাস্তুর্যক্ত ভূগিঃ: ইছ অশিন্ বাস্তুনি, ইদং উত্তরাধ্য়ে॥ ৪॥ অধিতিঃ অগ্রিস্থাপনাথৈ রিফকারচিতঃ পশ্য নানাবিধাকারৈ রগ্নিভি নিচিতাং মহীম্।
মক্জন্তীমিব চাকান্তাং ধ্যাতে র্যক্তকর্মভিঃ। ৫।
এবা শন্যেকপত্রা যা সরকং চৈছুন্তমম্।
পশ্য রামহ্রদানেতান পশ্য নারায়ণা শ্রমম্ ।
এতচ্চনিকপুদ্রস্য যোগে কিচরতো মহীম্।
প্রস্পণং মহীপাল। রৌপ্যায়া মমিতৌজসঃ। ৭॥
অত্যানুবংশং পঠতঃ শৃণু মে কুরুনন্দন!।

উলুথলৈ রাভরণেঃ পিশাচী যদভাষত॥ ৮॥ चृिंदिः ॥ १ ॥ मभी वाभिकार्थः मधुः श्रामनार्थ मानीजा मभीमाथा, এक পত্রা শাতিত পত্রা, ''অন্তর্বেদিশাখারা: পলাশান্য সর্ব্বাণি প্রশাত্য মূলতঃ শাখাং পরিবাসোপবেশং করোতি"—ইতি স্তাং যা পূর্বাং এক পত্র শাখাভূৎ দৈয়া উপৰেশ রূপেণাবশিষ্টা দৃশ্যতে অগ্রভাগদ্য বহু প্রস্তার্থ, পরিবাদ্য ছিড়া, দরকৎ স্থরা গ্রহণ পাত্রং, " দরকোইস্ত্রী সুরাপাতে" ইতি মেদিনী॥৬॥ প্রদর্পত্থ সঞ্চার ভূমিঃ, রূপ্যবৎ শ্বেতবর্ণায়াংস্থল্যাৎ নদ্যাংবা, 'সামীপ্যে সপ্তমী, "প্রসর্পনং তীর্থং" ইত্যনো । ৭॥ অভ্বংশং পরস্পরাগত মাধ্যান লোকং, উনুধলৈরিতি— উলুখল সদৃশানি স্ত্রীণাং কর্ণাভরণানি ভবন্তীতি স্বয় মুল্খলৈ রেব আভরণৈ ৰুক্তা সভীতিশেষঃ, এতেন বিকৃতবেশহং পিশাল্যা ভক্তম্॥ ৮॥ উক্তং ভাষণ মেবাছ দ্বাভাং যুগন্ধর ইতি—অব্প্রঞ্চঃ—অনিংস্তীর্থে দপুতা ৰাক্ষণী স্নাতু মাগতা ভাংপ্ৰতি পিশাচী বদতি "হয়া যুগদ্ধরে পর্বতে দেশে বা দধিপ্রাশনংকৃতং ? তত্ত উট্রীকীরং গদিভাদি কীরঞ্চ দধী ক্রিয়তে, তথা অচ্যতস্থলাখ্যে সঙ্কর জানাং প্রামে বা বাসক কৃতঃ ?—তথা, ভূতিলয়াখ্যে দস্ম্য প্রামে অগ্রিদ্যানাং মৃতানাং কেপণং যস্যাং নদ্যাং কিয়তে ত্র্যাং স্নাতাসি ?—অতো দোষ তার বতীত্বং, এতৎ করণেছি প্রার্শিষ্ঠ বং ধর্ম শান্তে প্রাসদ্ধং "ঔষ্ট মেক শকং ক্ষীরং সুরাতুল্য মিতি স্মৃত্যু। সংস্ক্র্য সঙ্করৈঃ সার্দ্ধং প্রাজাপতাং বতঞ্জেং।" ইতি। "প্রোদ্য ভূতিনরে বিজঃ প্রাজাপতাং ব্রতঞ্রেং।" ইতি চ।ু তচ্চ তঁরা ন কৃতং, অতঃ কৰং অত বস্তু মিক্ষসি ?"—দেখি বতা মিছ তীৰ্থে বাসে। ত্বৰ ভ ইতাৰ্থঃ, এবং পিশাচী ব্যক্ত অভবাপি সা প্রাক্ষণী তত্ত স্থানাদিকং কৃতবভী তত শুরা রাক্ষ্যা তদ্যাঃ ঘটপিচরাদিক। নাশিতম্ উক্তঞ্চ "এভত্তব দেব।

রভং রাত্রে রক্তন্ত দ্রকাসি ইতি,—রক্তং জাতং, রাত্রে তু তব পুত্র মপি নাণরিষ্যামীতি ভাব:, অধাপি দিতীয়াং রাতিং বস্তু মিচ্ছ স চেৎ তব ভূয়াংস মপকারং ক্রিয়ামীতি য়ুগন্ধরাদি দেশতয় নিন্দাপরত্বন বাচিখুঃ, অর্কাঞ্জ্ঞ — যুগন্ধরাদে দিধিপ্রাশনা দিকং ত্রাং অধিকার কারণং কুরা একরাত্রং ইছ যদি বস্তু মিচ্ছদি চেৎ বস, অত্র পিশাচীবচন বাজেন একরাত্র বাসো নিয়মাতে, যদিতু দ্বিতীয়ং দিবা রাতং বংসাসি তর্হি এতং তব দিবা কালে রক্তং, ভবিষ্যতি তু অন্যং, এতদিতি বস্ত পাত্রাহার তাড়না দিক মভিনীয় দর্শয়তি, রাত্রে তু ইত্তোহনাথা প্রাণাপ হারান্ত মিত্যর্থ ইতি, ব্রন্মজ্ঞানি বংশাব্তংস লক্ষণা নুচরাস্ত ''দার মেত্তু कोरबत | कुक्रक्तामा"-इज्राभमश्चादा जमा क्विमा दिनिध कुक्रक व প্রাপকত্ব মনগাত্র্য, কুক্লেত্র দ্বাঞ্চ একং শতপ্রে প্রনর্গ্য কাণ্ডে ' তেষাই কুৰুক্তেত্ৰং দেব্যজন মাস ক্ৰমাদাতঃ কুৰুক্তেত্ৰং দেবানাং দেব্যজ্নম" ইতি কর্মান্তং কুক্দেশান্তর্গতং প্রসিদ্ধং, অপরঞ্চ " অবিমুক্তং বৈ কুক-ক্ষেত্রমূপ ইত্যাদিনা জ্ঞানান্ধ মনিমুক্তাখ্যং জাবাল রামতাপনীয়োপ নিষ্দোঃ প্রসিদ্ধন, ততশ্চাসা ক্ষেত্রসা ক্রম মুক্তৌ সদ্যোগুক্তৌ পর-ম্পরয়া হেতুহা দত্ত বাদে দেবা বিল্ন মাচরন্তি মুক্তো হি " দেব পশুহা ন্নিবৰ্ত্ত"—ইতি, তথা বহদারনাকে 'আত্মেতো বোপাদীতে তোকাত্মাৎ জ্ঞেরং"—ইত্যক্ত্য "অথ যোহনাং দেবতামুপাল্ডেহন্যোসা বন্যোহ্ছ মিতি ন স বেদ यथा পশুরেব স দেবানাগ্"— हे ত ভেদদর্শিনো দেব পশুৰ মুক্ত্ৰ। " তক্ষাদেষাংতন্ত্ৰ প্ৰিয়ং যদেতশন্যা। বিহুঃ"—ইত্যৈকাত্ম জ্ঞানং দেবানা মাপ্রিয়ং পশুনাণ ইব পশুপতে বিত্যুক্তং, জ্ঞাতৈকাত্মস্য তু দেবা অপ্রিরং কর্তু মসমর্থা তথাত তাত্তিব প্রায়তে "তস্য হ ন দেবাশ্চ না ভূতাা ঈণত আত্মাহোষাং সভবতি" ইতি. দেবাশ্চন দেবা অপি. অভূতো অনৈশ্বণায়, এবং সতি 'যদি ব্রণিষ্ঠাসি তইাত চিরকালং বস্তু মহাদি' ইতি পিশাচী কা ঞং সপুত্রাং স্ত্রিয়ং ইছ বস্তু মিক্দীং প্রতি প্রবীতি, যুগন্ধর ইতি—যুগানি কৃত-ত্তেতা-দাপর-কলি-সংজ্ঞানি ধার্য-তীতি যুগদ্ধরঃ স্থূলশরীরাভি মানী জীবঃ তথাছি চ্ছাতিঃ "কলিঃ শয়ানো ভবতি সংজীহানস্ত দাপর:। উত্তিষ্ঠং স্ত্রেতা ভবতি কৃতংসম্পদ্যতে চরন।" ইতি, শরানো ধর্ম মাচার্যাদি মুখাদজানন্ প্রুষঃ কলিঃ, স এব সংক্রিহান শুংজানন দ্বাপরো ভবতি, উত্তিষ্ঠন্ ধর্মানুষ্ঠানার্থং যত্মীন জ্রেতা ভবতি, ধর্মং চরন্ অনুতিষ্ঠন্ ডু ক্তৎ ভবতীতি প্রদ্য এব यूरोबादव मारु, मधि ध्यागन गटकने धर्मश्रका मन्भाकार्रथा मात्र मश्रयारा উচ্যতে, তথাহি গৃহ্য স্থতে "সমং জান্ত বিষেদেবা ইতি দল্লঃ প্রাশ্য যুগন্ধরে দধি প্রাশ্য উষিত্বা চাচ্যুতস্থলে। তথ্যুতলয়ে স্বাত্বা সপুত্রা বস্তুমর্হসি। ৯॥

প্রতি প্রতেত্ৎ"—ইতি বিবাহাত্তে দম্পত্যে কর্দর সন্ধানার্থং দ্ধি প্রাশনং বিধীরতে, তত্ত ''সমাপো ছদয়ানি নৌ সংমাতরিখা সন্ধাতা সমুদেষ্ট্রী দধাতু নে¹"-ইতি মন্ত্রশেষঃ, মন্ত্রার্থস্ত বিশ্বেদেবাঃ নে আবিলো ক্দিয়ানি বেত্তি বহুৱাছত্বচন্দ্, সমংজ্ঞ স্থিধানি কুৰ্বস্থ 'সংশব্দা বৃত্ত্যা সমংজক ইতাস্যাপা বৃত্তি জে রা, আপো নৌ হৃদয়ানি সমংজন্ত ইতার্থঃ, মিরুরো হি ধরোঃ সন্ধানং ভবতীতি মাত্রিশা প্রাণ বায়ুঃ নো হৃদয়;নি সন্দধাতু এবং উ নিশ্চিতং দেক্ত্ৰী অন্তৰ্গামনী দেবতা চ সন্দধাতু ' অব্যবহিতাশেচতি ছন্দসি ব্যবহিতোপসগোণাপি ক্রিয়ায়াঃ সম্বন্ধ: -- পূর্ব্বত্বপু সর্গার্ত্ত্যা ক্রিয়া পদস্যা বৃত্তি রিতি, তথাচ, "কৌমে বসানৌ জারা পতী সহোভৌ চরতাং ধর্মং প্রজাং প্রজনয়৷ বহা ইতি আ্চতিলিন্ধাভ্যাং ধর্ম প্রজোৎ পাদনে সহাধিকারাৎ, ''জায়মানো বৈ বাক্ষণ ব্রিভি খাবা জায়তে ব্রহ্ম হোণ খবিভো। যজেন দেবেভাঃ প্রভায়া পিতৃভাঃ" ইতি চ জ্ঞানা মূণানা মূপাকরণং দারসংযোগংবিনা ন ভবতীতি দ্বি প্রাণন শব্দেন লক্ষিত লক্ষণয়া আনুণাং প্রাহাং, তেন অধ্যনিষ্ঠঃ প্রজাবান্ এতভীর্থং সেবিতু মইতি ইতি পূর্বে পাদার্থঃ, অচ্তে স্থলে চুণতিযোগা স্থল শরীরাপেকর। তচাতং স্থলং লিক শরীরং তত্র উষিত্বা স্থাতানং উপাদা ইতার্থঃ, ভূতানি বিয়দাদীন লীয়তেছ-শ্বিন্ ইতি কারণং এক ভূতলয়ঃ, ভূতিলয় ইতি পাঠে—ভূতি রৈশ্বর্গং তুস্পাপি চ লয়ে। যদ্মিন্ ইতি শুদ্ধং বন্ধ, তয়ে। রনাতরত স্বাড়া মনং তাক্ত্র বিথমিকা তুল মগ্রে প্রোতং প্রদূরেতৈ বংছাদ্য সর্কে পাপানঃ প্ৰদূষত্ত"—ইতি তজ্জান ফল প্ৰবণাৎ, তদ্বদিতি ভচ্ছদেন পূর্বার্দ্ধ্যাক্তে কর্মোপান্তী উচেতে, তাভ্যাং যুক্তং বথাস্যাত্তথা ভূতলয়ে স্থানং, তেন দৈনন্দি ন স্থুপ্তে নির্ভিঃ, তত্রাপি প্রতাহং বন্ধ প্রাভিঃ জ্ঞায়তে " ৰব্ৰৈতং পুৰুষঃ স্থপি তি নাম সতা দোমা ! তদা সম্পানে। ভণতি" —ইতি, সতা এমণা, তথাচ কর্মোপান্তি পূর্বকং যো এম জানাতি সোহত্ত বস্তু মৰ্হতিইতি তদ্য পিশাচানি বাধা নাস্তীত্যৰ্থ: ॥ ৯॥ তন্ত অৱশ্বিৎ একরাত্র মেবাত্র বস্তুং যোগা দিক দ্বিতায়াং বস্তু মিন্দুনি তর্ছি তেন, তব এতং মদীয়ং রভং ভবিষাতি মদং পিশাটী ভূরাছ এমানং ন লপ্সানে এতদিতি অর্ভদ্যভিনীয় প্রদর্শনং, দ্বিতীয় দিন বাসদৈয়বৈতং ফলং দ্বিতীর রাত্রিবাদেতু ইতোহনাথা অহলাদিবৎ মোহ প্রাপ্তা। শিলা

একরাত্র মুষিত্বেছ দ্বিতীয়ং যদি বংসাসি। এতদৈ তে দিবা বৃত্ত~ রাজৌ বৃত্ত মিভোহনাথা 🐅 । ১০ ॥ অদ্য চাত্র নিবৎস্যামঃ ক্ষপাং ভরতসম্ভম !। ছারমেতভু কৌন্তেয়। কুরুক্তেএন্য ভারত।॥ ১১॥ অত্রৈব নান্ত্যো রাজা রাজনু ! ক্র তুভিরিষ্টবান্ । যযাতি কছেরত্নৌদৈ র্যত্তেনো মুদমভাগাৎ ॥ ১২ ॥ এতৎ প্লকাবতরণ্ যমুনাতীর্থ মুন্তমম্। এতকৈ নাকপৃষ্ঠস্য দারমাছ শ্মনীবিণ: ॥ ১৩ ॥ অত্যা সারস্থতৈ হজৈ রাজানাঃ প্রমর্ধয়ঃ। যুপোলুখলিকাস্তাত ! গচ্ছন্তাবভূথাপ্লবম্ ॥ ১৪ ॥ অত্রৈব ভরতো রাজা রাজনু! ক্র ভুভি রিষ্টবানু। इत्रायासन याञ्चन त्यस्यम्य मवाञ्चल ॥ २०॥ অসকুৎ কুষ্ণসারঙ্গং ধর্মেণাবাপ্য মেদিনীমু। অতৈব পুরুষব্যান্ত ! মরুত্তঃ সত্র মৃত্তমম্ ॥ ১৬ ॥ প্রাপ চৈবর্ষিমুখ্যেন সম্বর্জনাভিপালিত:। অত্যোপস্পা রাজেন্দ্র ! সর্বালে কোন্ প্রণশ্যতি। পুরতে হুদ্ভাচৈত অত্রাপি সমুপস্থশ "—॥ ১৭॥

ভাবো ভবিষ্যতি তেন তীর্থ দর্শন মপি ন লগা দে ইত্যর্থঃ ॥ ১০॥ অতো হত্র ক্ষপাং রাত্তিমেব একাং বৎস্যামঃ প্রাতরের প্রস্থাস্থাম ইতি ভাবঃ, দার মিত্যদ্ধন্ত উক্তার্থ মন্তি ॥ ১১ ॥ অত্তিব কুরুক্ষেত্র দারে ॥ ১২ ॥ ১৬ ॥ সারস্বতৈ ত্রাদ্দিঃ ঋদিগিত ইজে রীজানাঃ, মূপোলু খলিকাঃ মূপান্ উল্পলানিচ যজ্ঞসাধনান্যদদতে মূপোলুখলিকাঃ, পশুভিঃ পুরোডাশৈশ ইক্টবন্ত ইত্যর্থঃ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ কৃষ্ণ সারদং কৃষ্ণ হরিণ সনৃশং এক দেশে কৃষ্ণবৰ্ণং শ্যামবর্ণ মিত্যর্থঃ ॥ ১৬ ॥ কৃষ্কভাৎ পাপাৎ মূচ্যতে ইত্যর্থঃ ॥ ১৭ ॥

^{* &}quot; षा वा र नाथा " रे विक-

বৈশন্পায়ন উবাচ।
তত্র সভাতৃকঃ স্নাত্মা স্থ্যমানো মহর্ষিভিঃ।
লোমশং পাগুবশ্রেষ্ঠ ইদং বচনমত্রবীং॥,১৮॥
"স্কালোঁ কোন্ প্রপশ্যামি তপসা সত্যবিক্রম!।
ইহস্থ: পাগুবশ্রেষ্ঠং পশ্যামি শ্বেতবাহনম্ "—॥ ১৯॥

লোমশ উনাচ।

ে এবমেতন্মহাবাহো! পশ্যন্তি পরমর্ধয়ঃ।
সরস্থতীমিমাং পুণ্যাং পশ্যৈকশরণার্তাম্॥ २० ॥
যত্র শস্ত্রা নরশ্রেষ্ঠ! ধৃতপাপা ভবিষাসি।
ইহ সারস্থতৈ ইচ্জে রিউবন্তঃ স্তর্বয়ঃ।
ঋষয়শৈচব কৌন্তেয়! তথা রাজর্বয়েছেপি চ॥ ২০॥
বেদী প্রজাপতে রেষা সমন্তাৎ পঞ্চযোজনা।
কুরো বৈবি যজ্ঞ গীলস্য ক্ষেত্রমেতন্মহাত্মনঃ "—॥২২॥
ইত্যারণ্যকে পর্কাণ তীর্থযাত্রাপর্কাণ প্রকানতরণগমনে
একোনত্রিশদ্ধিকশতত্রমোহধ্যায়ঃ॥ ১২৯॥

॥ ১৮॥ ইছন্থ: যমুন ত্রের্গত প্লক্ষাবভরণন্থ: ॥ ১৯॥ ভীর্থান্তর মাছ সর-অতীমিতি—॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥

ইত্যারথাকে পর্কাণ নৈলকণ্ঠীয়ে তারত ভাবদীপে একোনতিংশ দ্বিক শততমোধ্যায়ঃ ॥ ১২৯ ॥

* " অত্ৰ " ইতি ক—

त्नामन छेता । " ইহ মত্যা স্তন্ত্যক্ত্রা স্বর্গং গচ্ছত্তি ভারত ! ! মর্তুকামা নরা রাজিরিহায়ান্তি সহস্রশং ॥ ১॥ এবমাশীঃ প্রযুক্তা হি দক্ষেণ যজতা পুরা। ইহ যে বৈ মরিব্যক্তি তে বৈ স্বর্গজ্ঞতা নরাঃ ॥ ২ ॥ এষা সরস্বতী রম্যা দিব্যা চৌঘবতী নদী। এত্ত্বিন্দ্ৰ নাম সুৱস্বত্যা বিশাস্পতে । । ৩॥ खात्र नियामताष्ट्रमा राषार (ष्यार मत्रच्छी। প্রবিষ্টা পৃথিবী বীর! মা নিষাদা হি সাং বিছু: ॥ ৪ ॥ এষ বৈ চমসোভেদো যত্র দৃশ্যা সরস্বতী। . যতৈনা মভ্যবৰ্ত্তন্ত সৰ্ববাং পুণা । সমুদ্রগাঃ ॥ ৫ ॥ এতৎ সিন্ধো ম হন্তীর্থং যত্তাগন্ত্যমরিন্দম !। লোপামুদ্রা সমাগম্য ভর্তার মর্ণীত বৈ ॥ ৬॥ এতৎ প্রকাশতে তীর্থৎ প্রভাসং ভাস্করত্ব্যতে !। ইন্দ্রস্য দয়িতং পুণাৎ পবিত্রং পাপনাশনম্॥ ৭॥ এতদ্বিষ্ণুপদং নাম দুশতে তীর্থমুক্তমম্। **এয়া রম্যা বিপাশা চনদী পরমপাবনী ॥ ৮ ॥** অত্র বৈ পুত্রশোকেন বদিষ্ঠো ভপবানুষিঃ। বদ্ধাত্মান নিপ্তিতো বিপাশঃ পুনরুপিতঃ ॥ ১॥ काभारितमञ्जनः देहिं नर्स्तिश्रुना महिन्सम !। মহর্ষিভিশ্চাধ্যুষিত্র পশ্যেদং ভাতৃভিঃ সহ॥ ১०॥ অত্রৌত্তরাণা সর্বেষা মৃষীণাং নাছ্ষ্ম্য চ। অগ্লেটেশ্চবাত সংবাদঃ কাশ্যপস্য চ ভারত।॥ ১১॥ हेट्डि । ।। २० ॥ ८॥ ८॥ ७॥ १ ॥ ४ ॥ तका भी लेकि उ (भर: বিপাশ: পাশহীন:, অতু এব বিপাশা নাম॥১॥১০॥ উত্তরাণাং উদি कानिष् ॥ ३३ ॥

অতদ্বারং মহারাজ! মানসদ্য প্রকাশতে।
বর্ষমদ্য গিরেম থ্যে রামেণ শ্রীমতা ক্রতম্॥ ১২॥
এব বাতিকবণ্ডো বৈ প্রথাতঃ সত্যবিক্রমঃ।।
ক্ষনাতাবর্ত্ত যদ্বারং বিদেহাত্ত্তরে চ য়ঃ ক্ষা ১৩॥
ইদমাশর্ঘ্য মপরং দেশেহন্মিন্ পুরুষর্যত।।
ক্ষীণে যুগে তু কৌন্তেয়! শর্বস্য সহ পাষ্টেরঃ॥ ১৪॥
সহোময়া চ ভবতি দর্শনং কামরূপেণঃ।
অন্মিন্ সরসি সত্রৈবি হৈত্রে মাসি পিনাকিনম্ ॥ ১৫॥
যন্ত্রে যাজকাঃ সম্যক্ পরিবারশুভার্থিনঃ।
অত্রোপস্পাশ্য সরসি শুদ্ধানো জিতেন্দ্রিঃ॥ ১৬॥
ক্ষীণপাপঃ শুভালে কোনাপ্রতে নাত্র সংশায়ঃ।
এয উজ্জানকো নাম † পাবকির্যত্র শান্তবান্।
অক্ষন্তীসহায়শ্য বসিষ্ঠো ভগবান্থিঃ॥ ১৭॥

বর্ষং বসতি স্থানম্ ॥ ১২ ॥ এব ইতি যোরামঃ প্রথাতঃ সন্তা বিক্রমক, বিদেহাত্তরঞ্জ যদারং যদ্ধন্য দারং, এয়ে হত্ত্ব মানো বাতিক-মণো বাতানীতঃ পদাদি সমূহো নাতা বর্তত তেন রামেণ কৃত মিতি পুর্বেণারয়ঃ, অনেন বারোরপাশিন্ বর্ষে প্রেশো নান্তি কি মুভেতরসাইতি পদাদে বাতা নীতসালোহপ্রবেশাদামসামর্থাং প্রতাক মাকর্যা মিতার্থঃ ॥ ১৩ ॥ যুগাং পঞ্চ বংশরাত্তকং তিমন্ কীণে সমাপ্তে সতি যদা সৌর-সাবন-বার্হস্পত্য-নাক্ষর-চাজ্রাঃ সংবংসরা একক্লং সমাপ্তেমে মুগাক্ষর কাল ন্তম্মিরিতার্থঃ, যুগো কীণে ইতান্য সংবংসরান্ত ইতিবার্থঃ, তৈর প্রতি পং মুগানি রিভি ব্যবহারাং ॥ ১৪ ॥ অত্রব পূর্বে দিনে শিবং দুফা। প্রতিপদ মারতা মাস মাত্রং পিনাকিনং যক্ত ইতি সংগক্ততে ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ পাবকিঃ ক্ষনঃ, শান্তবান্ শমং প্রাপ, বসিঠোপি শান্তবান্ শমং প্রাপ ইতি চকারঃ সমুচ্চিনোতি ॥ ১৭ ॥

^{* &#}x27;'নভা কর্তত" ইতি ক " উত্তরং জয়ং" ইত্যপি ক—

কু 'পোৰকিং"—ইত্যসাস্থানৈ ''যবক্লী" ইতি ক—

इन्क कुभवाद्यस यज शबर कुर्णभव्य । আশ্রমকৈত্ব রুক্তিবা যত্তাশাম্যদকোপনা॥ ১৮॥ সমাধীনা সমাসন্ত পাগুবেয় ৷ প্রতন্ত যা ৷ তং ক্রকাসি মহারাজ ! ভৃগুতুঙ্গং মহাগিরিয় ॥ ১৯ ॥ বিত্তত্তাং পশা রাজেন্দ্র। সর্বপাপপ্রমোচনীম । মহর্ষিভিশ্বাধ্যবিতাং শীততোয়াং স্থনির্মালাম ॥ ২০॥ कलारकाशकला रेक्षव यमुनामिक्रिका नहीम् । উশীনরো বৈ যতেষ্ট্র বাসবাদত্যরিচ্যত ॥ ২১॥ তাং দেবসমিতিং তস্য বাসবশ্চ বিশাম্পতে!। অভ্যগচ্চর প্রর্থ জ্ঞাতুমগ্নিশ্চ ভারত।॥ ২২॥ किञ्जानमात्नी वत्रामी भश्रामान मूनीनत्रम्। ইন্দ্র: শোন: কপোতোহগ্নি ভূঁত্বা যজেহভিজগাুতু: ॥ ২৩ ॥ উরুং রাজ্ঞঃ সমাসাদ্য কপোতঃ শ্যেনজান্তরাৎ। শরণার্থী তদা রাজনু! নিলিল্যে ভয়পী,উতঃ"— ৷ ২৪ ৷৷ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি ভীর্থযাত্রাপর্বাণি শ্যেনকপোতায়ে ত্রিৎশদ্ধিকশক্তমোহধ্যায়ঃ॥ ১৩০॥

কুশবান্ জলবান্ "শরং বনং কুশং নীরন্" ইতি ধনঞ্যঃ, তাকো-পনা জিত কোরা॥ ১৮॥ সমাসঃ সংক্ষেপঃ, যশ্মন্ দৃটে সমাধি ফলং ভবতীতার্থঃ ॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ দেব সমিতিং রাজ সভান্॥ ২২॥ ২৩॥ নিলিশ্যে লীনঃ॥ ২৪॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে তিৎশ দধিক শততমোহধায়েঃ ॥ ১৩০

শ্যেন উবাচ।

ধের্মাত্মান তাছ রেক সর্বেরজন্সীক্ষিতঃ।
স বৈধর্মবিরুদ্ধ ত্বং কক্ষাৎ কর্ম চিকীর্যসি ?—॥ ১॥
বিহিতং ভক্ষণং রাজন্। পীডামানস্য মে কুধা।
মারকীর্ধর্মলোভেন ধর্ম মুৎস্ফবানসি"—॥ ২॥
রাজোবাচ।

" সম্ভন্তৰপ স্ত্রাণার্থী বৃজ্ঞো ভীতো মহাদিজ!।
মংসকাশ মনুপ্রাপ্তঃ প্রাণপুধুরয়ং দ্বিজঃ॥ ৩॥
এব মভ্যাগতস্যেহ কপোতস্য ভয়ার্থিনঃ।
অপ্রদানে পরং ধর্মান কথং শ্যেন! ন পশ্যাসি?—॥ ৪॥
প্রস্পাদমানঃ সংভ্রান্তঃ কপোতঃ শ্যেন! লক্ষ্যতে।
মৎসকাশে জীবিতার্থী তস্য ত্যাগো বিগার্হতঃ॥ ৫॥
থো হি কশ্চিদ্বিজান্ হন্যাক্ষাং বা লোকস্য মাতরম্।
শরণাগতঞ্চ তাজতে তুলাং তেষান হি পাতকম্'—॥ ৬॥
শ্যেনভবাচ।

" আহারাৎ সর্বভূতানি সম্ভবন্তি মহীপতে!।
আহারেণ বিবর্দ্ধন্তে তেন জীবন্তি জন্তবং॥ ৭॥
শক্যতে তুন্তাকেহপ্যথে চিররাত্রায় জীবিতুম।
ন তু ভোজন মুৎস্জ্য শক্যং বর্ত্তরিতু চিরম্॥ ৮॥
ভক্ষাাদিযোজিতস্যাদ্য মম প্রাণা বিশাস্পতে!।
বিস্জ্য কায়মেষ্যতি পস্থান মকুজোভয়ম্॥ ৯॥
প্রমুতে ময়ি ধর্মাাম্বন্! পুজ্ঞদারং বিনক্ষ্যতি।
রক্ষমাণঃ কপোতেং স্থং বহুন্ প্রাণান্ন রক্ষদি॥ ১০॥

ধর্মাত্রান মিতি—স্পেইন্॥১॥২॥৩॥৪॥৫॥৬॥৭॥৮॥৯॥১০॥

ধর্মং যে। বাধতে ধর্মোন স ধর্মা কুবল্প তৎ । আবিরোধান্তু যো ধর্মা সধর্মা দত্যবিক্রম ! ॥ ১১ ॥ বিরোধিষু মহীপালু ! নিশ্চিতা গুরুলাঘবম্। ন বাধা বিদ্যতে যত ত ধর্মাং সমুপাচরেৎ ॥ ১২ ॥ গুরুলাঘব মালায় ধর্মাধের্মবিনিশ্চয়ে।
যতো ভূয়াংস্ততো রাজন্ ! বুরুষ ধর্মানিশ্চয়ম্''—॥ ১০ ॥ বাজোবাচ।

" বছ কল্যাণসংযুক্তং ভাষসে বিহুগোন্তম!।
স্থানিঃ পক্ষিরাট্ কিং ত্বং ধর্দ্যক্তক্ষাসাহসংশ্যম্ ॥ ১৪ ॥
তথা হি ধর্মাসংযুক্তং বছ চিত্রঞ্চ ভাষসে।
ন তেহস্তাবিদিতং কিঞ্জিদিতি ত্বাং লক্ষ্যামাহম্ ॥ ১৫ ॥
শরণৈষিপরিত্যাগ্যুক্তং সাধিতি মন্যসে।
আহারার্থ্য সমারস্ত স্তব চায়্যু বিহুল্পম!॥ ১৬ ॥
শক্ষাক্যাপ্যনাথা কর্তু মাহারোহ প্যাধিকস্তুয়া।
গোর্ষো বা বরাহো বা মুগো বা মহিষোহপি বা!
ত্বদর্থমদ্য ক্রিয়তাং যদ্ধান্যদিহ ক্রেক্ষ্যি''—-॥ ১৭ ॥
শেয়ন উবাচ।

"ন বরাহং ন চোক্ষাণং ন মৃগান্ বিবিধাংস্তথা।
ভক্ষয়ামি মহারাজ! কিং মমান্যেন কেনচিং॥ ৮॥
যস্ত মে নৈববিহিতো ভক্ষঃ ক্ষজিয়পুক্ষব!।
ত মুৎস্ত মহীপাল! কপোত্মিম মেব মে॥ ১৯॥
শ্যেনঃ কপোতানস্তীতি স্থিতিরেষা সনাতনী।
মা রাজন্! সার মজ্জাত্বা কদলীক্ষমাসজঃ"—॥ ২০॥
১১॥ ১২॥ ১৬॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ "

^{* &}quot;कूपर्याज्" हे ज क-य-श्रुखरको।

রাজোবার 1

"রাষ্ট্রং শিবীনামূদ্ধং বৈ দদানি তব খেচর!।

যে বা কাময়সে কামং শোন! সর্বাশ দদানি তে॥ ২১॥

বিনেমং পক্ষিণ্ স্যোন! শরণার্থিন মাগতম্।

যেনেমং বজারেথান্তঃং কর্মণা পক্ষিসন্তম!।

তদাচক্ষ্ব করিষ্যামি ন হি দাস্যে কপোতকম্"—॥ ২২॥

শ্যেন উবাচ।

'উদীনর! কপোতে তে যদি স্নেহো নরাধিপ!। আত্মনো মাংস মুৎকৃত্য কপোত-তুলয়। ধৃতম্॥২৩॥ যদা সমং কপোতেন তব মাৎসং তৃপোত্তম!। তদা দেয়ন্ত তন্মহং সা মে তুক্তি উবিষ্যতি"—॥২৪॥

ब्राटकार्गाठ।

"অমুগ্রহমিমং মন্যে শ্যেন। যন্মাভিযাচদে। তক্ষাত্তেহদ্য প্রদান্যমি স্বমাৎসং তুলয়া ধ্রতম্"—॥২৫॥

লোমণ উবাচ ৷

" উৎকৃত্য স স্বয়ং মাৎসং রাজা পরমধর্মবিধ।
তুলয়ামাস কৌন্তেয় ! কপোতেন সমং বিভো! ॥ ২৬ ॥
ধ্রিমাণঃ কপোতস্ত মাংসেনাভাতিরিচাতে।
পুনশ্চেথেকৃত্য মাৎসানি রাজা প্রাদাদ্দশীনরঃ ॥ ২৭ ॥
ন বিদাতে যদা মাৎসৎ কপোতেন সমং ধৃতম্।
তত্ত উৎকৃত্তমাৎসোহসাবাক্তরোহ স্বয়ং তুলাম্"—॥ ২৮ ॥

मामक"—रेजिकमनीकम जूरना निःमारतरियन् धर्यमा मञ्जी छर्द-जुर्यः॥२०४२:॥२२॥२०॥२४॥२०॥१७॥२ ॥२৮॥

(नाम छेनाह।

"ইন্দ্রোইইমন্মি ধর্মজ্ঞ । কপোতো হব্যবাডয়য় ।

জিজ্ঞাসমানৌ ধর্মে বাশ যজবাট মুপাগতৌ ॥ ২৯ ॥

যতে মাশ্যানি গাত্রেভ্য উৎক্তানি বিশাম্পতে ! ।

এষা তে ভাষতী শ কীর্জি লোকানভিভবিষ্যতি ॥ ৩০ ॥

যাবলোকে মনুষ্যান্ত্রাং কথয়য়য়ন্তি পার্ষিব ! ।
তাবং কীর্জিশ্চ লোকাশ্চ স্থাসান্তি তব শাশ্বতাং"—॥ ৩০ ॥

ইত্যেবমুক্ত্রা রাজান মারুরোই দিবশ পুনং ।
উশীনরোইপি ধর্মাল্লা ধর্মেণার্ত্য রোদসী ॥ ৩২ ॥

বিভাজমানো বপুষা প্রারুদ্ধেরাই ত্রিপিউপম্ ।

তদেতং সদনং রাজনুষ্তিস্তস্য মহাত্মনং ॥ ৩৩ ॥
পশাস্থৈতয়য়া সার্জং পুণাং পাপপ্রমোচনম্ ।

ভারে বৈ সভতং দেবা মুনয়শ্চ সনাতনাং ।

দৃশ্যন্তে ব্রাহ্মণৈ রাজন্ । পুণ্যবিদ্বর্মহাত্মভিং"—॥ ৩৪ ॥

ইত্যারণাকে পর্কাণি তীর্থযাত্রাপর্কাণি শ্যোনকপোতীয়ে

একত্রিশ্বাধিকশভতমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩১ ॥

॥॥ ২৯॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ ৩৩॥ অদেহত্যাগোনাপি শরণাগতো রক্ষণীয় ইত্যোতদধ্যায় তাৎপর্যা, ৩৪॥

ইভারে নেকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীরে ভারতভাবদীপে এক ত্রিংশদ্ধিক শতভমোহধ্যায়: ॥ ১৩১ ॥

^{* &#}x27;ভাষ্মী" ইতি ক প্তক:। ''শাষ্ডী" ইতি গা প্তক:।

লোমশ উংচ।

'যেঃ কথ্যতে মন্ত্রবিদধারু জ " রৌদালকিঃ খেতকেতৃঃ পৃথিব্যাম। • ভস্যাপ্রমণ পশ্য নরেন্দ্র ! পুর্বাণ, जमाकरेल क्रिश्नश महीरेकः॥ ३॥ সাক্ষাদত্র শ্বেভকেভু দিদর্শ, गत्रवार भारत्वराव्यक्ताम्। বেৎস্যামি বাণীমিতি সংপ্রবৃত্তাং, সরস্থতীং স্থেতকেতু র্বভাষে ॥ ২ ॥ षित्रन् † यूर्ण बक्कविषार वित्रिष्ठी-বাস্তাং মুনী মাতৃলভাগিনেয়ৌ। অফাবক্রন্ডের কছোডস্থনু-রৌদালকিঃ শ্বেতকেতুঃ পৃথিব্যাম্॥ ৩॥ विद्यालमा महीलट उलो, বিপ্রাবুভৌ মাতুলভাগিনেয়ৌ। প্রবিশ্য যজ্ঞায়তনং বিবাদে, বন্দি নিজ্ঞাহতু রপ্রমেয়ে। । ।। উপাস্স কৌন্তেয় ! সহানুজস্তু ১, তস্যাভ্রমং পুণ্যতমং প্রবিশ্য। षके विकः यमा मोहिकमाछ-र्याश्रमो वन्ति जनकमार्थ यर छ ॥ १ ॥

মঃ কথ্যত ইতি— স্থামন্ ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥

 [&]quot;মন্ত্র বিদ্ঞাবুদ্ধিং" ইতি ক—
 † তশ্মিরিতি ক—

वाको विश्राद्या वाम ध्वां जिन्नमाः वाटम छङ्कृ। मञ्जूषामान नमाम् ॥ ७ ॥ युधिकित छेवार।

কথং প্রভাবর স বভূব বিপ্রতথাভূত থা নিজ্ঞাহ বন্দিম।
অফীবক্র: কেন চাসৌ বভূব,
তথ সর্বাপ মে লোমশ। শংস তত্ত্ব্যু" — 1 ।
দোমশ উবাচ।

ৰিন্ধিং বিশ্বং নিজ্ঞাহতু: নিজগৃহতু:, সংপ্রনার পা ভাবাদি শার্থং, নিজয়াং আছবং আচরতু রিভি বা অর্থ: ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥

ইহৈব গৰ্ব্বে তেন পিতত্ৰ বীমি, (नन पुढः ममानित्वाभवर्द्धरः) छेलालकः भिषामत्था महर्षिः, স তং কোপাতুদরত্বং শ্রাপা যত্মাৎ কুকো বর্তমানো ব্রবীষি, তত্মাৰকো ভবিভাগাইকুর: ॥ ১১॥ স বৈ তথা বক্র এবাভাজায়-দক্ষাবক্তঃ প্রথিকে বৈ মহর্ষিঃ। তদ্যাদীৰৈ মাতৃল: শেতকেতু: স তেন তুলাো বয়সা বভুব॥ ১২ ॥ সংপীডামানা তু তদা সুজাতা, मा वर्ष्वमार्यन स्टूटन क्रको। উবাচ ভর্তার মিদ্ রহোগতা, প্রসাদ্য হীনং বস্থনা ধনার্থিনী ॥ ১৩ ॥ **েকণ** করিষ্যাম্যধনা মহর্ষে ! মাসশ্চায় । দশমো বর্ত্ততে মে। নৈবাস্থি তে বস্থু কিঞ্চিৎ প্রজাতা, मिनाइरमे जा भारति निष्ठ ति से निष्ठ ते से निष्ठ के सिंह क উক্তত্তের ভার্য্যয়া বৈ কহেডে। विख्नार्थ जनकमथा जानक्र म देव जला वान विना निश्च, নিমজ্জিতো বন্দিনেহাপাৰিপ্ৰ: ॥ ১৫ ॥ অউকুত্বঃ অঞ্চবারুং, অক্স স্থানেষিতার্বঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ প্রজ্ঞাতা खर्डा ॥ 38 ॥ 3¢ ॥

* নাজ্যের শ্লোকঃ থ-পুত্তকে, কিন্তুনাৎ পাঞ্চাত্য পুত্তকে ক-পুত্তকে চ

বৰ্ত্তত এবাতো মূলমধ্যে নিক্ষিপ্ত:।

উদ্দালক স্তম্ভ ভদা নিশ্মা, স্থতেন বাদেহপদ্য নিমক্তিতং তদা। উবাচ তা॰ তত্ৰ ততঃ স্থজাতা, মন্টাবক্রে গুছিতন্যোহয়মর্থঃ॥১৬॥ ররক সাচাপিত মস্য মন্ত্র-, জাতোহপাদৌ নৈব শুশ্রাব বিপ্রঃ। উদ্দালকং পিতৃবচ্চাপি মেনে, उथाकीवरका बाज्यक्ष्ठरक्ष्म । ১१॥ ভত্তো বর্ষে দ্বাদশে শ্বেভকেতৃ-রফ্রীতক্র পিতুরক্ষে নিষয়য়। ***वर्गाकर्षः गृश् भार्गो क्रम्**छः, নায়ং তবাকঃ পিতৃরিতাক্তবাশ্স ॥ ১৮॥ यरखरनाक्र॰ छूक्कः उखनानीः, হৃদি স্থিতং তদ্য স্বৃত্বুংখ মাসীৎ। গুহ্ গত্বা মাতরং সোহভিগম্য, পপ্রছেদং ক নু তাতো সমেতি—11 ১৯.॥ ততঃ সুজাতা পরমার্ত্রপা, भाशासीला मस्तरमया करका। তবৈ তত্ত্ব সর্বব মাজ্ঞায় রাত্রা-বিতাত্রবীচ্ছেতকেতৃং স বিপ্রাঃ ॥ ২০ ॥ গজ্ঞাব যজ্ঞং জনকস্য রাজ্ঞো, বহ্বাশ্চর্যাঃ জায়তে তসা যক্তঃ। ▶ শোষ্যাবে৷হত ত্রাহ্মণানাং বিবাদ-মর্পাত্রাণ তত্ত্র ভোক্ষ্যাবহে চ ি ২১ ৮ 11 50 11 50 11 50 11 40 11 40 11 45 11

डेलाकरंट-हे जि क-

বিচক্ষণত্বঞ্চ ভবিষাতে নৌ,
শিবশ্চ সৌমাশ্চ হি ব্রহ্মঘোষ: ॥ ২২ ॥
তৌ জগ্ম রু মাতুলভানিনেয়ৌ,
যজ্ঞৎ সমৃদ্ধং জনকস্য রাজ্ঞ: ।
অফীবক্র: পথি রাজ্ঞা সমেত্য,
প্রোৎসার্য্যমাণে বাক্য মিদ্যৎ জগাদ "--॥ ২৩ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থ্যাত্রাপর্বাণি অফীবক্রনীয়ে দাবিংশদধিকশতে হিধ্যায়: ॥ ১৩২ ॥

অফাবক উবাচ।

' অন্ধন্য পশ্ব। বধিরদ্য পশ্ব:,

স্ত্রিয়াশ্চ পত্রা ভারবাহস্য পত্রাঃ।

রাজ্ঞঃ পশ্ব। ব্রাহ্মণেনাসমেত্য,

সমেত্য তু ব্রাহ্মণসৈয়ব পন্থাঃ

बाटकावाहां में

" পস্থা অষং তে২দ্য ময়াতিদিকৌ, *
বিনেচ্ছসি তেন কাম ওজস্ব।

ন পাৰকো বিদ্যতে বৈ লঘীয়া-

নিন্দ্রোহপি নিত্যং নমতে ব্রাহ্মণানাম "-#২#

॥ २२ ॥ २० ॥

ইত্যারণাকে পর্কাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদ পে দাত্রিং শদ্ধিক শততমোহধ্যায়ং ॥ ১৬২॥

অন্ধন্যতি—অন্ধাদীনা চম্বা স্বার্গো দের ইত্যর্থঃ, অসমেত্য সমীপং অপ্রাপ্য ॥ ১॥ ২২ন্ত্রে

* नेयं असे हें ज क-

অষ্টাৰক উনাচ।

' প্রাপ্তো স্ব যজ্ঞ নূপ । স্পদিদৃষ্, কৌতৃহল নৌ বল্বনরেন্দ্র !। প্রাপ্তা বিহাবা মতিথী প্রবেশ , কাক্ষাবহে দ্বারপতে স্তবাজ্ঞাম ॥ ৩॥

अञ्जल्कारमः ! यञ्जन्माविश्वाताः, विवक्षृति कनत्वज्ञनः निमृक्षृ।

তৌ বৈ ক্রোধব্যাধিনা দহ্মানা,

বয়ঞ্চ নৌ দ্বারপালো রুণদ্ধি "—॥ 🗣 🗈

'বলেঃ সমাদেশকরা বরু মা,

निर्दाव वाकाक भटेशश्रामानम्।

ন বৈ বালা: প্রবিশন্তাত্র বিপ্রা, বুদ্ধা বিদক্ষাঃ প্রবিশন্তাত্র বিপ্রাঃ ''—ঃ ৫॥

व्यक्षीतक डेनाइ।

ে যদ্যত রুদ্ধেষু ক্লতঃ প্রবেশো, যুক্তং প্রবেষ্ট্^ মম দারপাল ! !

বয়ং হি বৃদ্ধাশ্চারতব্রতাশ্চ,

(विषया । विषया निर्माण । १ ।

শুক্রম্বশ্চাপি জিতেক্সিয়াশ্চ,

জ্ঞানাগমে চাপি গতাঃ স্ম নিঠাম্।

ন বাল ইত্যবমন্তব্যমাছ,

ু বালো২প্যায় দৃহতি স্পুশ্যমানঃ ''—। ৭॥

॥ ও॥ এই ক্রেছে । হে জনক ! ॥ ৪॥ ৫॥ ও॥ জ্ঞানাগমে জানশাক্তে বেদাভেমিভার্থঃ, নিষ্ঠাং নিশ্চয়ম্॥ ৭॥ দ্বারপাল উবাচ।

' সরস্বতীমীরয় বেদ জুফা-স্মেক্তেক্তঃ বছকপাং বিবাহন

মেকাক্ষরাং বছরপাং বিরাজম্। •

অঙ্গাত্মানং সমবেক্ষস্ব বালং,

কিং শ্লাঘদে ছুল ভো বৈ মনীষী "—॥৮॥

वाकीतक डेगाइ।

"ন জ্ঞায়তে কায়র্ক্যা বিরুদ্<u>ধি</u>-

र्थाकीना भानातः म॰ श्रामा ।

হ্রস্বোহপ্পকায়ঃ ফলিতো বিবৃদ্ধো-

য=6াফলস্ত্রসা ন বৃদ্ধভাবং"—॥ ৯ ॥

দারপাল উবার।

বৃদ্ধেত্য এবেহ মতিং স্ম বালা,

গৃহুন্তি কালেন ভবন্তি বৃদ্ধাঃ।

न हि छान मन्त्रकातन मनार,

কক্ষাদ্বালঃ স্থবির ইব প্রভাষসে ?''—॥ ১০॥

অফ্টাবক উনা;।

ন তেন স্থবিরো ভবতি,

(यन)मा পलिङः भितः।

বালোহপি যঃ প্রজানাতি,

11 22 11

जः (मवाः ऋवितः विकः॥ >>॥

বেদ জানীতে, যদি তর্হি ঈরয়, জুফীং মুনি সেবিতাম, একমেব অকরং ব্রদ্ধ প্রতিপাদাং যস্যাং তাং একাক্ষরাং, বহুরপাং মন্ত্রার্থ বাদাদিরপাং, বিরাজং বিশেষেণ কর্ম কাণ্ডাদাধিকোন রাজ মানাং, অব্দেতি সংখাধনে ॥৮॥ শালালে রকীনা শালানী ফলান্তর্গত প্রস্থিং, সহি কেবল তূন-ময়হানিঃ সারঃ, অতে৷ দেহ রুদ্ধি বার্থা, অপাকারঃ কুণঃ॥৯॥১০॥ ন হারনৈ র্ন পলিতৈ র্ন বিজৈ র চ বন্ধুভি:।

ঋষয়শ্চক্রিরে ধর্ন্দ্রংহাহ নুচানঃ স নো মহান্॥ ১২॥

দিদৃজুরিম সংপ্রাপ্তো বিশ্বনং রাজসংসদি।

নিবেদয়শ্ব মাং দাঃশ্ব! রাজে পুদ্ধরমালিনে॥ ১৩॥

দেষ্টাস্যায় বদতোহ স্মান্ দারপাল! মনীমিভি:।

সহ বাদে বিরুদ্ধে তু বন্দিনঞ্চাপি নিজি তিম্॥ ১৪॥

পশাস্ত বিপ্রাঃ পারপূর্নবিদ্যাঃ,

সাহৈব রাজ্ঞা সপুরোধমুখ্যাঃ।

উতাহো বাপ্যাচত তাং নীচতাং বা,

তুফীছুতেদ্বেব সর্বেম্বখাদ্য'—॥ ১৫॥

দারপাল উবাচ।

"কথা যজ্ঞান দশবর্ষা বিশেন্তরং ?— বিনীতানাং বিছুষাং সংপ্রবেশ্যম্ *। উপায়কঃ প্রযাতিষ্যে তবাহং, প্রবেশনে কুরু যত্ত্বং নথাবং''—॥ ১৬॥

আঞ্চাবক্র উবাচ।

"ভো ভো রাজনু ! জনকানাপ বরিষ্ঠ !,

ত্বপ বৈ সমাট্ ত্বয়ি সর্বাপ সমূদ্ধনু ।

ত্বং বা কর্তা কর্মাণাপ যজ্জিয়ানাং,

য্যাতিরেকো নূপতির্বা পুরস্তাৎ ॥ ১৭ ॥

অনুসনঃ সাজ বেদাধায়ী ॥ ১২॥ পুকর মালিনে অর্থ মালা ধারিণে ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ উপারতঃ প্রয়তিষো ইত্যক্ত্বী যজ্ঞ বাটা দন্যত্র ভদ্যা রাজদর্শনং কার্যারিও। আছ প্রবেশনে কুক যতু মিভি—রাজ্ঞঃ পুরস্তাৎ কিঞ্জিজ্জানং প্রকাশয়েত্যর্থঃ ॥ ১৬ ॥ স্ত্রাট্ সার্বভৌমঃ ॥ ১৭ ॥

^{* &}quot; मर প्रत्वणम्" देखि शाही छत्रम् ।

বুজান্ * বন্দী বাদবিদো নিগৃহ্য,
বাদে ভগ্না-প্রতিশঙ্কমানঃ ।
ত্বয়াভিস্টেই: পুরুষৈ রাপ্তরুদ্ধি- †
জ লে সর্বান্ মজ্জয়তীতি নঃ প্রাত্তম্ । ১৮॥
স ত^ প্রাত্তা রাজ্যানাৎ সকাশে,
ব্রহ্মাইছতং কথমিতু মাগতোহিসা।
কাসো বন্দী যাবদেনং সমেতা,
নক্ষব্রাণীব পবিতা নাশ্য়ামি—"॥১৯॥
রাজোবাচ।

"আশংগদে বন্দিনং বৈ বিজেতৃ,
মবিজ্ঞার ত্বং বাক্যবল্প প্রস্য।
বিজ্ঞাতবীর্ব্যাঃ শকামেবং প্রবক্তৃং,
দৃষ্টক্ষাসৌ ব্রাক্ষণৈ ব্যাদশীলৈঃ ॥ ২০॥
আশংসদে ত্বং বন্দিনং বৈ বিজেতু,
মবিজ্ঞাতা তু বলং বন্দিনোহস্য।
সমাগতা ব্রাক্ষণান্তেন পূর্বাণ,
ন শোভত্তে ভাস্করেণেব তারাঃ ॥ ২১॥
আশংসভো বন্দিনং জেতুকামা,
স্তমান্তিকং প্রাপ্য বিল্প্রশোভাঃ।
বিজ্ঞানমন্তা নিঃস্কতাক্ষ্ত তাত।

কথ্ সদলৈ ক্তিনং বিস্তরেয়ু: ?—''॥ ২২॥
॥ ১৮॥ সঃ অহং অদৈতং এক কথ্রিতুং আগতোশি এতেন কংস্যাস্য
প্রবন্ধন্য তাৎপর্ব্য মুপনাস্তম্॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ কিছান মতা অপি পরাজয়ং প্রাপ্য সভাতঃ নিঃ সূতা ইত্যময়ঃ॥ ২২॥

^{* &#}x27;'বেছান্" ইতি বল্পীবিশেষণ পাঠঃ ক-পুস্তকে।
† ''আশু কৃদ্ধিঃ" ইতি ক-ৰ পাঠঃ।

वासीतक छेरा।।

শ্বিবাদিতোই সৌ ন হি মাদৃলৈ হি,
 সিংহীকৃত স্থেন বদত্যভীতঃ।
 সমেত্য মাশ নিহতঃ শেষাতেইদা,
 মার্গে ভগ্নশ্বটমিবাচলাক্ষ্ণ্'—॥ ২০॥

রাজেবাচ।

" ত্রিংশকদ্বাদশংশস্য চভুর্নিং শতিপর্বিণঃ। য ব্রিষ্ঠিশতারস্য বেদার্থং স পরঃ কবিঃ"—॥ ২৪ ॥ অস্টাবক্র উবচে।

' চতুরিংশতিপর্বাত্রতি ষাটি স্বাদশপ্রধি। তাত্ত্বিষ্টিশতারং বৈ চক্রং পাতু সদাগতি'—॥২৫॥

নিছতঃ নিজিতঃ, শেষাতে প্রস্থ পুক্ষ বজজড়ো ভবিষাতী তার্থঃ ॥ ২৩ ॥ ব্রুট্রতং কথয়িতু মাগতোৎ শীতে প্রতি জানান মন্টারক্রং প্রতি পুদ্ধি স্থানা ত্রিং।কেতি—উভয়ত স্তীক্ষাথা ভিঃ বডি,ভঃ শলাকাভি রে ক্মিন্ শক্ষে প্রোত মধ্যভিঃ পৃথগতাভি দ্বিশারং বর্গভি চক্র-জাবতে, দ্বাদশ রাশয় অরাঃ, বাশিদ্যাত্মানঃ ষ্ট ঋতথো নাভয়ঃ. একৈকিশ্বিল বাৰো ত্ৰিংশ ভিংশনং গাঃ, তদেওভচক্ৰং ৰফাৰ ৰা ডিভিঃ পার-বর্ততে, অন্য যঞ্জিক শত্রুর প্রিবট্তঃ স্বনঃ স্থবৎ স্রো ভব্ি অবিংশ্চকে কুলাল চক্রবং প্রদক্ষিণ মাবর্তমানে পিপীলিকা পাঙ্জেবং প্রতীপং স্থ্যাদরঃ পরিভ্রম্বি, তত্ত্ব চক্তম্য মপ্ত বিংশতাছো রাজৈ— ভাগণ ভোগঃ, স্থাদা দ পাদ পঞ্চকটিখিকেনাছাং শতত্রয়েণ দ এব সেরঃ সংবংসরঃ, অনিষ্ চক্রে স্থ্যাত প্রতিজ্ঞা ৰ্যদাতাতং বিপ্ৰকৰ্ম ন্তদা পে\ৰ্যাসী, যদাতাত্তং সন্নিকৰ্ম ন্তদা দৰ্শঃ, তে দ্বে-পর্বণী, এবং চতুবিংশত্যা পর্বভি শ্চতুঃ পঞ্চাশদধিকেনাত্লাং শতত্তরেন চাত্রঃ দংবংসরঃ, তত্ররং পৃচ্ছতি; ত্ররাণামপি পৃথকর্মস্থ বিনিযোগাৎ তথালেজিংমাধ্বে "অনঃ পঞ্চবি। শ্চান্তে। বতাদো তিলকাদিকে। चूक्रमा निवर्ण मोर्द्रो (शामजानियु मान्न"—रेणि. विश्वक्रवानियाः— ত্তিংশতোগণঃ ত্তিংশকঃ তে এব দাদশ সংখ্যাকা অংশা যস্যেতি সৌর সংবৎসরপ্রশঃ, চতুহিংশতিপর্ঝা ইতি—চাক্রস্য ত্রীণি ষঞ্চা সহিতানি শতানাহর। यत्मा ज मार्यनमा जिविधमानमा कालहक्रमा वाहर्थः श्राह्मनः বেদ স পরঃ কবিঃ উৎকৃষ্টঃ ক্রান্তদর্শী ॥ ২৪ ॥ ইতি পৃষ্টোইপর আছ উত্তরং

রাজোবাচ।

'' বডবে ইব সংযুক্তে শ্যেনপাতে দিবৌকসাম্। ক স্তয়োর্গর্ড মাধত্তে গর্ভং সুষুবতুশ্চ কমৃ ?''—॥ ২৬॥

অফাবক্র উবাচ।

'মাক্ষাতে তে গৃহে রাজন্। শাত্রবাণামপি ধুব্য । বাতসারথি রাগন্তা গর্ভং স্কুষুবতুক্ষ তম্"—॥ ২৭॥

ষ্ধাভীতি—বিশেষার্গোক্তা বিদ্বতা প্রকাশঃ শেষোত্ত্বাদঃ, প্রধ্যো মাসাঃ রাশয়ো বা তেয়ুহি ত্রিংশদহোরাত্রা অংশা বং প্রত্যকং প্রত্যেকং প্রধীয়ন্তে, চক্রং পাতু – অস্মিন্ কালে খ্থাকালং বিছিতো ধর্ম স্তুৰ্ণীৱিতাৰ্থঃ, এতেন ধর্মসা জ্বেলঃ সাধনরং বিধীয়তে কেবল কালজানস্যা পুক্ষার্থবাং, মানান্তরা নবগতং প্রব্যোজন বদর্থং প্রতিপাদ্যাদ্ধি শাস্ত্রনতি অনাথ। শাস্ত-ত্ব্যাঘাতঃ, এনমনাত্রাপি বিধানংক্রইবাং, "রাশিক্রিংশন্ত্র স্তান্দ্বিডনু পততার্কেন সৌরোক ইঞঃ, সোমেধিফৌ তু চান্দ্রী শরদপিচ চতু বিংশকার্ পর্ববিশংস্যাহ। গোদতে দাবনে হকো গগণ রসগুণৈ রাত্রাইছ রাশি যুগা দুরাখাকরের বাজাং স্বদময় বিছিতাঃ জেরদে হা ম্বাগাং"॥ ২৫॥ রথসংযুক্তে অশ্বে ইব সহচারিলাৌ, শ্যেনপাতে শ্যেনবদকমাংপতন भीता (य छेट्ड वर्त्छट्ड निर्योकमार (मरामार भर्धा जरहा: मर्श्वासनर গর্ভং কে। ধত্তে কসা গর্ভে তে উৎপদ্যেতে কঞ্চ জনয়ত ইত্যর্থঃ ॥ ২৬ ॥ উত্তরং—তয়ো নামাপ্য মঙ্গল মিতি মত্বা পরোক্ষেণ নির্দিশতি—তে উভে অধিদৈবং বিদ্যাদশনী অধ্যাত্মং হুঃখমুত্য বিদ্যাদতিরশনি রদারা ইতি পঞ্চা-গ্নি বিদ্যায়াং তয়োভেঁদেন বাপদেশাং ক্রমাদাকাশেন দেহেনচ রখেন বড়বে ইব নিতা সংগুক্তে শোন পাতে চ তে তব গুংহ মাম স্যাতাং রাজন্! তব শাত্রবানা মপি গৃছে মামা স্যাতা মিতাতান্তা মন্সলহংতরোদ শিতং, বাত সার্থি মেঁছো মনশ্চ আগন্তা আকাশাদৃষ্টার্থৎ সুযুগ্ত্যাখাত কারণাৎ কর্মকল ভোগার্থং উদেষ্যন্ তে উত্তে পূর্মোক্তে বিছাদশনী ছঃখ মৃত্যু চ গার্ডে ধত্ত ইত্যোক মুক্তরং, তে চ তমেব বাত সার্থিং বৈহ্যত মঞ্ছি মনত স্বুবতু রিতপেরং, যথা ধুম জোতিরাদি সন্নিপাত রূপখাদিয়ি রাপ্রেমির মেব বিছালাদিছারা স্তে এবং মনঃ প্রভবৌ হঃখ মৃত্যু ষ্ববাসনা রূপেণ মনসঃ কারণে ভবতঃ, তথাচ বীজাঙ্কুর বন্ধনসো হঃখাদেক ছেতু হেতুমন্তাৰামনদো লয়ো ছঃখাই ভাৰাৰ্থ মত্যসনীয় ইতাথঃ, এতেন " অশা পিনদ্ধং মধুপর্যাপ গালংনাং ন্রীন উদনিক্ষিত্ত"—মিতি মন্ত্র বর্ণ

রাজোবার 1

" কি॰ স্বিংস্থপ্ন গু * ন নিমিষতি কিং স্বিজ্ঞাতং ন চোপতি। কদ্য স্বিদ্দর্শ নাস্তি কি॰ স্বি দ্বেগেন বর্দ্ধতে ?'—, ২৮॥ অঞ্চাবক উবাচ।

মেৎস্যঃ স্থােন নিমিষতাগুণ জাতং ন চােপতি। অশ্বানা হৃদয়ং নান্তি নদা বেগেন বৰ্দ্ধতে'—। ২৯ ।

উপর্ংহিতঃ, অশা অশনৰতা জলং শোষরতা মেয়েন বিবয়াৰ্ ভুঞানেন মনসং বা মরু সলিলং ভরকেকর বং এ র ব। বিশ্বর মান্তাকি তং, মনসে। ছঃখ হেতু গংলৃষ্টান্ত মুখেনাৰ মৎদা মিতি—নেতা পমাৰ্থো নিপাতঃ, দীনেহংশে উদ্নি উনুকে ক্ষিয়ভং নিবসভং মৎস্যাং ন মীন মিবাকুল মিতাৰ্থঃ, ক্ষিয়ন্ত মিত্টোৰ বা ক্লিগমান মিতাৰঃ,—'' ক্লেছে৷ ছঃখ মৃত্যু তড়িদশনি সমে শ্যেন বচ্ছী অপাতে, নিত্যোদ্ধে রথেখে ইবু করণ সুরাধীখরঃ প্রাত্ত খোপাই। দ্বে গতে ধত এনং ক্ষুবভুরিতরে বাসনা তন্তজন্যাং চেতঃ শাটীং নিকন্ধাদস্তপংনবশাষিধ্বিভাং মুমুদ্ধুঃ" ॥২৭॥ স্বপ্ন ভিত্তি—'স্বপিতৃষো--জিঙিতি জকারতিসা সপ্পজ্পক্ষা স্বপ্পাবস্থাবদ্ধতিকং, স্মুপ্তাবস্থাং প্রাপ্তা কিং ন নিমিষ ত লুপ্তদূত্ন ভৰতী তিপ্ৰানাৰ্থঃ ॥ ২৮ ॥ '' তদুৰ্থ। মছানাৎসা উত্তে কুলে অসুসঞ্জাতি"—ইত্যাদিতাত।। মংদ্যোপমিতন্চিদ্ৰপঃ পুৰু বো জাতাৎ অগ্নরো রিছ পরলোকরোশ্চ সঞ্চরণেন আতঃ মংসা ইব কুলদ্বর সঞ্জারণ স্থাপ্তি প্রলার কার্যা কারণ সঞ্জাতিস্য নিখিল প্রাণ নাদি শক্ত্যুপরহে হয়পরতদৃক্ শক্তি রেক এবাত্তে ''নছি জন্তু দূৰ্বেট িপ'র লোপে: বিদ্যাতেষ্বিনাশিক্ষিটি"—জ্ঞাতেঃ, তত্ত্পর্মাস্থাপীমে ক্তহা-নাদি দৌষ প্রাপ্তিঃ স্থমহ মেতাবতং কাল মস্বাপ্ন মিতি পরামর্শানুপ পত্তিশ্চ, অস্য অনিনাশিখাৰজাতখং, যকু জাত মণ্ডং ব্ৰদাণ্ডং ভূতভৌতি কাত্মকং তৎ নচোপতি 'চুপ মন্দায়াং গতৌ'ন চেষ্টতে কিন্তু য়মেৰ ত-চেষ্ট্রতে ইতার্থঃ, অন্মনোহশরীরসা হৃদ্যংশোকায়তনংনান্তি, শাশরীর মিতি যাক্ষঃ, ''অশরীরংবাবসভং নু প্রিরাপ্রের স্পূশতঃ"—''তীর্ণোহি তদা স্বান্ শোকান্ হ্লয়সা ভবতীতি"—গ্রুতাে স্তদ্কে দে হাদাসং যোগী নির্মনক্ষে জীবনাকে। ভবতীতার্থঃ, নদী চিত্ত নদী, যোগিনো বুংপি-তमा (वर्तान मनाः कुल्य ध्वेभक्षक्रत्भन वर्ष्कर्त्त, योगि मुख्या याध्यक्रीव ছারিকোপি প্রপঞ্চে দৃষ্টি সম সময়োৎ পত্তিক ইতার্থঃ, এবং দৃগলোপো দুশ্যস্য জাত্যং দেহাসন্ধিনো মুক্তিঃ সংসারস্য মনোমাত্রং চাত্র দর্শিতং, 🖟 পুংমীনো নির্নিমেষঃ স্বপিতি ভবনদী চার খিল্লঃ স্বরূপে, জাতং ব্রকাণ্ড * " यूर्छ। " इ.जावः क-भूखक शां हः।

রাজেশব্যচ ।

"ন ত্বাপ মন্যে মানুষং দেবসত্ত্ব!

ন ত্বং বালঃ স্থবিরস্তবং মতো মে। '
ন তে তুল্যো বিদ্যতে বাক্প্রলাপে,
তক্ষাদ্ধারং বিতরামোষ বন্দী''—॥ ৩০॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি অফাবক্রীয়ে ত্রয়স্ত্রিং
শদ্ধিকশতোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩৩॥

অত্যেপ্তিমেন! সমিতেয়ুরাজন্!

সমাগতেয় প্রতিমেয়ুরাজয়।

নাবৈমি বন্দি বরমত্র বাদিনাক,

মহাজলে হংসমিবাদদামি॥ ১॥

ন মেহদ্য বক্ষাস্যাতিবাদিমানিন্!,

গ্লহং প্রপান্ধ সরিতামিবাগমঃ।

হুতাশনস্যেব সমিদ্ধতেজসঃ,

হুরো ভবস্থেই ম্যাদ্য বন্দিন্!॥ ২॥

পিণ্ডং জডমপি জবতে যেন লোহাশ নীতা। যস্যা কাংস্য নাস্তি কচিদপি-হৃদয়ং শোকনীডং সমাধৌ, যংস্থা মায়ানদীয়ং জ্ঞৃত মহামদ মালাল্মনো-দেতি সোন্দ্রি" ॥ ২৯॥ বাক্ প্রলাপে বাচাং প্রক্রেট সংলাপে, এর বন্দী-দৃশ্যতা মিতি শেষঃ॥ ৩০॥

ইত্যারণাকে পর্ব্বণি নৈলকণ্ঠায়ে ভারত ভাবদীপে ত্রযন্ত্রিংশদ্ধিক । শততমেহিগ্রায়ঃ ॥ ১৩৩ ॥

অত্তিত—॥ ১॥ শ্লহং পরাজিত্সা জলে নিপতিনরপং পণং, প্রপন্নঃ স্বীকৃত্থান্, মে মম পুরতঃ নদক্যনি প্রত্যুত্তর মিতিশেষঃ, সমিজতেজসঃ প্রলয় কান্টেহতাত্তং প্রদীপ্তসাম্থান দীবেগঃ শুষ্যতি তথা শুকো ভবিষ্যীত্যর্থঃ॥ ২॥

ব্যান্তং শ্রান প্রতি মা প্রবেধ,

আশীবিষ স্কিনী সংলিগানম্ †।
পদাহতসাহ শিরোহ ভিহতা,
নাদটো বৈ মোকাসে তরিবে,ধ॥৩॥
যো বৈ দর্পাৎ সংহননোপপরং,
স্কুর্মলং পর্মত মাবিহন্তি।
তাস্যেব পানিং সনখো বিশীর্যাতে,
ন চৈব শৈলস্য হি দৃশ্যতে ব্রণং॥৪॥
সর্মের রাজ্যে মৈথিলস্য নৈনাকস্যেব পর্মতাং।
নির্মীভূতা রাজানো বৎসা ছনভূহো যথা॥৫॥
যথা মহেন্দং প্রবরং স্কুরানাং,
নদীযু গঙ্গা প্রবরা যথৈব।
তথা নূপাণাং প্রবরস্কুমেকো,
বিদং সমভানেয় মৎসক্ষাশ্"—॥৬॥

' এবমন্টাবক্রঃ সমিতৌ হি গর্জন্। জাতকোধো বন্দিন মাহ রাজন্!। উক্তে বাক্যে চোত্তরুৎ মে ব্রবীহি, বাক্যস্য চাপ্যুক্তরং তে ব্রবীমি'—॥ ৭॥

মা মাং প্রবাগ জানীহি "ভৌবাদিক সা বুধে লে ডি্রপং অসন্ধি রার্যং" পদাহত সা মংপিতুর্নি গ্রহণ হং পূর্বিমেব জ্বা পদাহত স্তস্য মে শিরোভি হত্য জং ন মুচ্যানে অদ্ভঃ সন্॥ ৩॥ সংহননেন দেহেন দৃঢ করিছেন । উপপারঃ॥ ৪॥ ৫॥ বনিশং বন্দিনং, বিভক্তা ২লোপে ন কারলোপ আছাইঃ ॥ ৩॥ ৭॥

লোমণ উনাত।

^{* &#}x27;' বিৰোধ " ইতি ক-খ-পুত্তকো।
† '' সৃক্ষণী লেলিহানং "—ইত্যেবং কচিৎ পঠ্যতে।

ৰক্ষাৰ†চ চ

'দ্বাবিক্রাগ্রী চরতো বৈ স্থায়োন দ্বো দ্বেষী নারদপর্কতো চ। দ্বাবশ্বিনো দ্বে রথস্যাপি চক্রেন, ভার্য্যাপতা দ্বো বিহিতৌ বিধাত্রা''—: ৯॥

পুর্বং প্রতিজ্ঞাতং ত্রদাদ্ধিত মেব বাদব্যামুখেন প্রপঞ্যান্ মুখেন বেলৈ পক্ষ মুখাপয়তি এক এবেতি— যথ। একে গ্লিঃ স্বর্থে। বা इंडर्जार श्रकारनार्थना श्रकानकम् अवर रमनानार देखिशानार প্রধান ভূতো ধী-ধাতু রহমিদমাদ্যকোরেণ প্রকাশমানো বীরোহরিছ-ংস্তুতি প্রাভিমত তত্ত্বাস্তরাভিভাবকো রমঃ মর্ক্রেঞ্লাগাং নির্ভা পিত্ৰাং বিষয়োপহার দারা পালয়িত্ব। মি জিলাবাং ঈশ্রো ভোকা ক ভাচ প্রধানভূতঃ এক এব নানাত্তর্থ পৃথগন্তি, স্বাধ্যে সর্কেষ্যং ক্রিরাকারকালীনাং বুদ্ধিমাত্রোপলভাদিতার্থঃ, " थी एर्नरव्याधिन८ ব্যক্তনানাস্বরূপা, স্বঞ্চাঞ্চ স্বয়ংসা সা তদিদমহ মিতি ভি রবিবৎ সা রিশ্রঃ সাট মৃতুঃ। সা শ্রোত্রাদেঃ প্ররোক্ত্রী সকল মিদমিছ অপ্রাক্ষীময়ং স্যা দিতোবং তার্কিকেণ প্রথম মুপগতো বনিদ্না বৌদ্ধ পক্ষঃ" (১) 🖟 ৮॥ অফাবকো দ্বা স্থপর্ণেতিমন্ত্রে—তয়ে পিঞালং আদ্বতীতি—সমুমনশ্রন্যোভিপশ্যতিজ ইতি পৈদিরহন্য ব্যাখ্যাতেন প্রকারেণ বুদ্ধি চৈতন।য়ে।ঃ স্থায়া বিভূত্তে বিভাগ্গাদিবত্তো সহৈব চরতঃ নহি দৃশ্যায়া বুদ্ধে দ্রষ্ট্রং সম্ভবতি প্রকাণকলৈ,ব প্রকাশকর মিতি পরি হরতি দাবিক্রাথা ইতি—স্বপ্রেপি বাধিতাদোদ্ধবা-দ্বাধিতো বে.দাংনােই ন্তীতি ভাবঃ, "স্তিন্তাদিন্দ্ৰ আত্মানলবদিহ প্রাধীনসিদ্ধি শ্রুদ্ধি দুলি,শ্যেতে জ্ঞ সত্তে ইতি খলুনিরুতে পৈজিলা দেতি মত্ত্রে। ভিনে দেবরি দম্র প্রভৃতিবদৃশি তে স্থ্যচিত্রাংশুকাতে অন্যোন্যাপেক্ষয়া চ ব্যবহৃতি পৃথগে চক্র বদ্বপাতীবং" (২) ॥ ৯ ॥

বন্ধাবাচ।

'বিঃ স্থাতে কর্মনা বৈ প্রজের ন,

ত্রো বুক্তা বাজ প্রেয়ং বছন্তি।

অধ্বাব ক্রিসবন নি তপ্ততে,

তরো লোকাস্ত্রীণি জো।তী নিষ চাহুঃ''—॥ > ০॥

অস্টাবক উবাচ।

'চতুকীরং ব্রাহ্মণানাং নিকেতং,

চত্রারো বর্ণা যজ্জমিম নহন্তি।

দিশশ্চ হস্তো বর্ণচ হুকীরঞ্চ,

চ হুস্পানা গৌরপি শশ্ব ক্রা''—॥ >>॥

বন্দী োদ্ধ্যঃ কর্ম্বীনৰ মিতি মীমাংসক মত মাছ জিবিভি—পুণ্যেন দেব স্থাবং মান্যরূপং এলা ত্রাং স্কৃতে নৰ লভতে, পাপেন নারক স্থাবর তির্যা জাপং, অগানরকারাতাতদোষ্ণেভাব পূর্ককমেব বেভোদ্বাে নু-প শু-তিষাধো যানি সম্ভবনা শ্রেত প্রসিদ্ধেঃ, অতএব ত্রেয়াবেদ। যুক্তা স্তাৎ-পর্যোগ সরদ্ধা ইব বাজপেয়েপে লক্ষিতং আত্রম ত্রয়োচিতং কুৎস্বং কর্মলাতং বছত্তি বেদস্যাপি কথা মাত্র পর্ব মিতার্থঃ, অধ্ব্যবোরজ্ঞসা योकात रेश्ववर्तिका खीर्वाव थाएं मननामीन उचरक, रूजन यथा कानर ক্তৃত্যা কর্মণঃ ফলং কালানুরোধোৰ অভ্রত্তবন্তীভার্থঃ ত্রেম লোকাঃ স্বর্গে নরকে। ভূশ্তেতি ভোগ ভূময়ঃ, ত্রীণ্যেব বেদে জ্যোতিখতাং জোতীংখি অ্থমার্গ প্রকাণকানি জাগ্রদাদীনি, "ত্রা ত্র আবন্ধ। জ্ঞাস্বলা" ইতিশ্রুতেঃ, নান্তি ততে।২নাত্ত্র মিতার্থঃ, '' দেবঃস্থাণ্ নরঃ স্যাৎ স্কৃতকাদতরো নারক স্থাণুতিধাগ্রামা তৈবর্ণিকঃ স্যাচ্ছাত মুগাধি ক্লতো বাজদোলাদি যজে। কালে কালে যজন্তে কল মাপি চ তয়া ভুঞ্তে যজ্ঞ ভাজত সহালৈ বাজি লোকান্ সরবনি-নরকান্ সপ্প জাগ্রহ অযুপ্ত ঃ" তে) ॥ ১০॥ অফাবক এত দ্যরতি চতুঞ্র মিতি—বাশাণ নাং বসা বিদাং নিকেওং জ্ঞানোপলিরি স্থানং চতুঞ্যং চতুঃ সংখ্যাবয়বে।পেতং আঅমত্রাদনোগতি মোকা এমো" যদহরের বিরটেত্তদহরের প্রতিদে-ভি" আতি সিদ্ধ ইতার্থঃ, যজং জানযজং শুক্রস্যাপান্তাতা্হধিকারে।ই কর্ম রূপত্রনিতার্থঃ, দি ঃ দিশাত ই ত দিশঃ উপদিষ্টাঃ, সন্তি চতভোষ বছাঃ বিরাট স্ত্রাভ্রামি তুর্বা দাক্ষাৎ কাররপাঃ বিশ্ব তৈজদ প্রাজ্ঞেতাঃ मर्खशानिश्रीमाहारना देवार्थः, अवभव वामार वाज्यः हकुक्रेत्र रक्तराई।

প্রপঞ্চার পঞ্চপদা চ পঙ্জিক। ইজ্ঞাং পঞ্চিবাপ্যথ পঞ্চেন্দ্রাণি।

দুক্তা বেদে পঞ্চ ডাপ্সর, শ্চ,

লোকে খ্যাতি পঞ্চনদগ্য পুণাম্"—॥ ১২ ॥

অকারোকার মকারার্দ্মাত্র। রূপ মুপনিষ্ণ প্রসিদ্ধং, নচার্দ্ধ মাতারা অপ্রসিদ্ধত্বং বাচ্যং যক্ষাং চতুস্পদা পরা পশান্তী মধামা বৈখরীতি পাদ চতুষ্টারবতী গোঁ বাণী শর্থৎ সদৈব উক্তা "চত্বারি বাক্ পরিমিতা পদানি" ইতি মন্ত্রে ইভিশেষঃ "জিজ্ঞাসাং ব্রহ্ম সদ্মি ব্রতি বনি যতিতি জ্ঞান যাজেই-ধিকারি চাতুর্বে, চতুঞ্চাতত্বপদিশতি বাগগুসুত্রেশ শুদ্ধং। বাচি বর্ণা অ উ মনদলকলাবৈধরীমধামাথোঁ পশান্তাখাঃ পরাখাঃ স চতুরবয়বঃ প্রত্যয়ে ২ স্যাঃ প্রতিদ্ধঃ ১৪) ॥১১॥ তুরীয় মপলপন্ বন্ধী উবাচ —প্রভাগ্রত্ত পাইপতা দ'ক্লাগ্রাহ্বনীয় সভ্যাবস্থাত্তি—পঞ্চপদাইটাক্ বৈঃ প্রাদেঃ পাঙ্কুচ্ছনঃ, যজ্ঞাঃ পঞ্চ "অধিহোত্রং দর্শপূর্ণমান্সে চাতুর্মা-স্যানি পশুঃ দোমঃ" ইতি আত্তঃ, এতে ত্রঃ পঞ্কা যথা এবং পঞ্চ বেক্সিয়াণি শব্দাদি পঞ্চক আহকাণি ন ষ্ঠো বিষয় ইন্দ্রিয়ং বাহস্তীত্যর্থঃ, দৃষ্টা বেদে, অপ্সরঃ:—''আপঃ পুরুষ বচসো ভবন্তি" ইতি শ্রুতঃ শরীরা কার পরিণতেম্ব জন প্রধানেয় ভৃতেয়ু সরতি অনুগচ্ছতীতাপ্সরা শিচতিঃ, পঞ্চড়। পঞ্চৈব তত্তবিষয়াবারতয়া প্রমাণ বিপর্যায় বিকম্প নিজা স্মৃতি রূপ রুত্তি পঞ্চক সারপ্যেন শিখা পঞ্চকরত্যের দৃষ্টা, হৃত্তি নিরোধস্য সমাধে রপি নিজারামেবাত ভাব ইতিভাবঃ, লৌকি কেইপি পঞ্চানাং বিষয় জোতসাংস মাছারঃ পঞ্চনদ মুপেরং, এবমেব চিতি শক্তেরেব, কর্তৃ ''অনিজ্ফ কুত্ন। মিৰখলুমনসঃ খানি ভোক্ত হৈ ইত্যুত্তরাদ্বার্থঃ, পথিওব ভাগা, ভান্তি নিজা বিকপাঃ সৃতি রমল মতি হ ত্রাঃ পঞ্চ তসা। তাভিঃ শাখাবতীবস্বরিহ জল পরীণাম কারাত্ম কত্রী, গুদ্ধাশুদ্ধ প্রবাহা ভবতি চিতি নদী ভজ্জ সৌখ্যাদি ভোক্ত্ৰী" (৫) ॥ ১২ ॥ কভূ ছাদি ধৰ্মক মন্তি ষষ্ঠ মিজিয়ংমনঃ স্মুপ্তা বিভূতর বল্লয়দা পাতৃভূয় মানতাৎ কতৃ তাদে স্ত'সহ ভাব নিয়ত্ত্ব দৃক্তেশ্চ চিত্রাভাব সাক্ষীতান্ত। ততঃ পৃথক কর্তানি রপঃ দপ্তমোহস্তীত্যাহাটা বকঃ বড়াধানে ইতি—ষট্গা ইতিশেষঃ, দক্ষিণাদয়ো মনসক্ষুৱাদি সাজাতো দৃষ্টান্তা, সাদ্যস্কাঃ বিশেষাঃ '' গোনক্ষ ত্রৰ্ভু যজ্ঞ। ইব সমবপুষঃ ষট্ ছেবং স চিজ্ঞাঃ, জ্রোজাল্য

অফ্টাৰক্ৰ উবা্চ।

'ষডাধানে দক্ষিণা মান্ত রেকে,

যতৈ চেমে ঋতবঃ কালচক্রন।

যডিক্রিয়াণুতে ষট ক্তিকাশ্চন

যট সাদ্যক্ষাঃ সর্বাবেদেয়ু দৃষ্টাঃ"—॥ ১৩॥

বভাবাচ।

পেপ্ত প্রামাণ পশবং সপ্ত বনাণ,
সপ্ত চ্চন্দাংসি ক্রছুমেকং বছন্তি।
সপ্তর্ধরং সপ্ত চাপার্হণানি,
সপ্ততন্ত্রী প্রথিতা চৈব বীণা'—॥ ১৪॥

ছুঃখ শব্দান্ত্ভবিন ইতোহনাক্তৃতিঃ ম মাক্ষী। ধীযোগাৎ সপ্ততি জৈ রমুভব কবলৈ রত্র সপ্তরি সংজৈ ন ভুংক্তেছন্দোভিগানপরিখিত বপু শ্চাদকা নক্ষমোহৰ্থান্ (৬)॥১৩॥ অথ তৰ্ক মতেন বন্দী প্ৰত্যব তিঠতে —সপ্তপ্রামনঃ—মনঃ যতে রিন্দ্রিয়ে বুদ্ধাচালগুণ ভূতরা সম্পিত:: মন্তবা-বোদ্ধবা-প্রাদিয়ে। বিষয়। তেমেইক কমিন্ আমক্ত একৈকঃ পুক্ষ-পু ৬ঃ, তেচ প্রাম্যা ঐহিকাঃ বন্যা আমুষ্যিকা বিষয়া ভেষাসক্তভয়া প্রত্যেকংমপ্ত মপ্ত পুৰুষপশ্বঃ, মপ্তছেকাংমি ছাদয়ন্তি স্বস্থারপার্পা জাত স্থলেশেন প্রমাত্মানং গৃহয়ন্তীতি তান্ সপ্ত বিষয়ান্ একং ক্রতুং কর্তার মাত্মানং বছন্তি, প্রাপায়তি, কৈ ?—সপ্তর্যায়ঃ "প্রাণা বা শ্বহঃ" ইতি আচতেঃ সপ্তেৰোক্ত মন আদয়স্তত্পনীতানি সপ্তচৈৰাইণানি অইণীয়া-নি সুখানি যথা দগুভি স্তঞ্জীভি বাদ্যমানা একা বীণা শব্দং নিক্ষেত্যুতি এবমেতেঃ সপ্তভি রাত্মা হ্রখ মত্ন ভবতি অন্পাহ করণহাৎহ্যপ্তের্গ জড় এব ন্যস্ত বাস্য তক্ষ্বৎ অবাদিত বীণাবৎ তিষ্ঠতি ন তাবতাহস্য কহু ধাব-গম ইতাर्थः, ''ভৌমেষথেয়ু দিব্যেষপি নরপশনঃ সপ্ত সপ্তৈব नेकां, ভোক্তারং প্রাপয়ত্তি ক্রতুপদ বিহিতং স্প্রতান্ সপ্ত খানি। সপ্তেবৈষাং সুখানি প্রতি বিষয় ভগানোকবীণেব দেহী, ভোগংতন্ত্রী ক্রিয়াটো খমিব কুৰুতে যোহত্ত কৰ্ত্তা স ভোক্তা (৭)।১৪॥ উক্তানেৰ সপ্ত কন্ত্ৰি ধৰ্ম ৰতা-২হঙ্কারেণ দার্দ্ধি অফৌ বিবক্ষন্ন টাবক্রঃ "অফৌ গ্রহা অফীবতিগ্রহাঃ" ইতি অংতেব্দিয় বিষয় রূপ গ্রহাতিগ্রহরূপং বন্ধনং উপন্যস্য তদন্য মাত্মানং পৃথক্ করোতি অফৌশানা ইতি—শানাঃ শন স্থতেণ নির্ভঃ

অফাবক উপ্চ।

'অফৌ শানাঃ শতমানং বছন্তি, তথাউপাদঃ শরভঃ সিপ্হঘাতী। অফৌ বস্থুন শুক্রম দেবতাস্ত্র, যুপশ্চাইতি বিহিতঃ সর্বায়ঞ্জে''—॥২৫॥

গোণা আবর্পন বিশেষান্তা ইব ইন্দ্রিয় প্রবেশযোগ্যা বিষয়াঃ অফৌতে শত মানং অনভংপ্রমানং পার্য়তি সংক্ষেপে পাফাবপান তা বিষয়া ইত্যর্থঃ, यके পानः— जरको भानाः दिस्तर्मन स्थां । गांव मानामि हे स्वितानि यमा সঃ শরভ :-- শংলভতেই মাধে ''এতদৈঃ বানন্দ দান্দানি ভূতানি মাত্রানুপ ভীণভি" ইতিশ্রুতেঃ প্রমানন্দরপঃ প্রমাত্মা, সোহয়ং জ্ঞাতঃ সন্ সিংহ ঘাতী, ছিনন্তি ডুঃখং দদাতি ইতি সিংহো দ্বৈতং 'দ্বিতীয়াদ্বৈভয়ং ভাতি" ইতি আতেঃ, তদা দ্বৈতদা ঘতিকঃ, স্বুপ্তেণি জড়বে 'স্থ মহমস্পিন্, ইতি ব্ৰাথিত্যা অৱপ' অ্থপ্ৰান্ীলুপপতিঃ, নচ ছঃখাংগ্ৰীনাষ প্রামর্শ স্তঃপ্রকাশক্ষা সাক্ষিণঃ সত্ত্বে তদা তদানীং জড়বোক্ত। ২যোগাৎ, অতএবাটেটা বস্থন্ বাসনাঃ দেবতাস্থেব তত্তদিন্দ্রিয়। ধিষ্ঠাতীয়ু লিদাল্লনীতি যাবং, শুল্লচম বেদে নহাল্লনীতার্থঃ, পশ্চ—যোপয়তি মোহয়-তীতি মুপো ন-পণো ৰ্বন্ধন স্থানং অজ্ঞানং তদেব অক্টাব্ৰি রম্ভাকোণং অঊধারংসং সর্বব যজ্জে ব্রহাতি এছ সংজ্ঞক বিষয়েক্তিয় সংযোগেয়ু বর্ত্ত ইতি শেষঃ, ''শাগা গোণোষ্ট তেষ্ণাঃ শত মথ শরভঃ প্রত্য-গানন্দ এতঃ, পূর্বোক্তঃ সাহমর্থে ব্রভিস বিষয়ান্ খানি তানা জ্যোহসা। সিংহয়ে। হিংঅভেন দিড়িতি বস্থপদং ভেদ সংস্কার জাতং লিঙ্গন্তে দেনতোহে বসতি নৃ-পশো র্বন্ধনে মোহগুপে।"(৮) ।১৫॥ তত্ত দ্বৈত-ঘাতিবং শরভন্যাত্রপপারং সরেষাং যুগপং সংসারোক্তেদাপতে রিত্যা শঙ্কতে বন্দী নবৈবৈতি—যথ। পিতৃণ। মিটো এক এব উণস্তস্তা নিরীমহি ইতি ঋকৃ ত্রি রভান্তা প্রত্যেকং ত্রি সমিৎকা নবসামিধনোাহ্যিসমিল্প-নার্থা এচঃ সম্পদাত্তে—তথা একা প্রকৃতি রেব ওয়োগুণাঃ স্বস্থেতর প্রধান গুল ভাবেন প্রত্যেকংত্রিবিধাঃ সম্ভোনবৈব সংযুজ্যশানা অংশা নাং বছত্বাপ্পত্ব তারতমোন বিবিধং সর্গং কুর্বান্তি, যথা নবাক্ষরৈ শতুর্ভিঃ পাট্রদঃ বৃহতীসংজ্ঞকং ছন্দো ভরতি, মথা বা নবৈবালাঃ क्रमा जिल्ला यरथकेश मध्या वाहिता ख्वलि, धवर क्षमा नरिताल বিধয়া দন্তোহনেকধাভাবং ভজন্তে, তশাং প্রধান নিত্যতায়া অবশ্যা-

অক্টানক্রউনার।

'নবৈবোক্তাঃ সামিধেনাঃ পিতৃণাং,
তথা প্রান্ত র্নবোগং বিসর্গন্।
নবাক্ষরা রুহতী সংপ্রদিষ্টা,
নবৈব যোগো ও গণনামেতি শশ্বং"—॥ ১৬॥

रन्द्रा ५५।

"দিশো দশোক্তাঃ পুরুষস্য লোকে, ত্রস্থান্থ দশপূর্ণং শতানি। দশৈব মাসান্ধিজ্ঞতি গর্ভবত্তান, দশৈরকা দশ দাসা * দশাহাঃ''—; ১৭॥

ভু,পগন্তব্যবাং দ্বৈতং সভামেৰেতি ভাষঃ, 'িঃপাঠেনাত্ৰপাঠং ত্ৰি-স সামিধেন্যক্ নবরং, প্রাপ্রোবেতাবং প্রধানং তিওণ মিদিতি যথা মন্ত্রণং ত্রিপ্রবেশারবর্ষ। প্রান্তং ন্রান্ধী প্রতি মিব মহলুখামেতং প্রস্তুত, তক্ষারৈতং প্রধানাধিক মিছ রুষ্টী ক্ষারেছেল নবভাঃ " (৯) ॥১৬॥ তদেতৎ—''ইক্রো মায়াভিঃ পূর্বপ ইয়তে যুক্তাহ্সাহরয় শতা দশ্র ইতি শ্রুতাত্মগারাৎ দৈত্যাহ নিক্তিনীয় মাহা সহায়ের ন্থাবে ভানো প্রপত্ত্তী ন মত্যা প্রকৃতি রভাপেয়া ইত্যাশয়শ্নটাণকঃ পরিহর্নীয় দিশইতি—"তাৰা এতা দলৈৰ ভূতমাত্ৰা অবিহাজং দশ অধিভূতং—ইতি তমা বাচা সুফৌ পুথিবী চাগ্লিক্ত" ইতি চ কোষিত-की रेश इ देशकर शार्म निवाद मरेगाव वाशामा। अच्छा भावा जाशामीनार जूछ মাজানাং স্রষ্টাঃ, দিশন্তি বিষয় স্বরূপং অতি সৃজন্তি তাঃ দিশঃ বাগাদ্যা-मरेनव शूक्यमा प्रवाश शुर्व वमरा श्रीवमा शूर्वः श्रवः बरेनव मन-শত্নি সহএঞ বিভূতি ভেদেন ম্যয়া বহুরপং ভূরান্তী তাক্-কোনাঃ, এতেন ''অংংবৈ ছরয়ো যংবেদ শত সহস্রাণি প্রয়ুতান্যক্তিন্। নীতি গুক্তাহাসা হরয়ঃ শতাদগ"—ইতোৰ মন্তাপাদসা প্রোতী ব্যাখান দশিতা,তথাচ রজ্বা লোকা বুদ্দা বাধিত শি ইতরদান্তীতি বক্তংশকাং, পরমতে তু—বিভৌ রনুপ্তদৃশঃ প্রক্রন্য যুক্তো তদদর্শনো কে বন্পপন্ন দৃষ্টান্তা ভাবাদিতি ভাবঃ, "পরা পূর্বেষাং সখ্যা রণক্তি বিভর্ত্তরাণো

* "নব্ধে,গ' ইতি ক— * "দাশ" ইতি তালবঃপাটঃ ক চিং। অপরেভি রেতি—অনাচ্ভৃতি রবধ্যানঃ পুর্বারিক্রঃ শরদ স্তর্তরীতি— রপংরপং প্রতিরপো বভূব তদসারপং প্রবিক্ষণায়—ইন্দ্রোমায়াভিঃ পুরুরপঈয়তে যুক্তাহাস্য হরয়ঃ শতাদশ ইতি দাশৃতস্যাং (দাশতযাাং।" ৪, ৭, অফকাধ্যায়বর্গে খটো ঐন্দ্রো আমারেতে, অনয়োর্থীঃ—''দ্বা হ প্রাজাপত্যা দেবাশ্চাস্করাশ্চ তত্ত্র কানীয়সা এব দেবা জ্যায়াংসোইস্করাঃ" ইতি ভাতি প্রদিদ্ধাঃ পূর্বদেশঃ স্বাভাবিকা সন্দর্পাপারপাঃ কামকো-ধাদয়ঃ তেষাং স্থ্যা স্থ্যানি পরা রুণক্তি দৃরাদ্বর্জাত, বিভর্জ্ঞাণঃ ততারেতি তর্ত্তরাণঃ তীর্ণবানিতার্থঃ 'তরতে নিজাদেশঃ কানচ্ছিরং বহুলং ছন্দদীতাকারাভোইভাদেশো র পরঃ ভীত্র বৈরাগ্যাভ্যাদাদিমান্ অপরেভিঃ অপরে দেবিঃ শাস্ত্রীয়েঃ শমদমাদিভিঃ এতি প্রাপ্তে, সংখ্যতঃনুষজ্যতে, কামাদীন্ জিত্বাহত্যাদরেন শমাদি পরে। ভবতীত্যগঃ এবং ভূতঃ অনামূভূতীঃ অঃমূভবাব্ ভাত্তি জ্ঞানানি শুক্তিরজত জান তুল্যানি দেহাদ্যাত্ম জানানি অবধুস্বানোহপান্ত্দন্ আত্মন স্ততন্ত্রপাধ্যাক্রি-তাং নিষেধন্ ইন্দ্রঃ পরমেশ্বোপাই বিদারা জীবভাব মাপরঃ সন্ লক্ষাত্ম-তত্বো বিদ্বান্ পূর্ববিঃ শরদঃ অনাদিকালপ্রবৃত্ত কর্ম বাসন: শুর্তর্রাতি অতি শয়েন তরতি বীতবদ্ধে৷ ভবতীতার্থঃ, অত্র অননুভূতিপদেন শুক্তো রজতং পশান্ রজতং বা শুক্তিংবা নান্তবতীতি লৌকিক প্রযন্ত্রেন দেহাদ্যাত্মজানদ্যানত্ব ভূতিরং বদস্তী আচতি দেহাদে মিগ্যারং স্ক্রতি, তদুং পাদনার মন্তো রূপ মিত্যাদিঃ, তত্র মাররেতি—অনুতে নাজ্ঞানেনেত্যর্থঃ, সতাজে তৎকার্যা পদার্থ দর্শনিশ্যানন্ভূতিহাই যোগা-দিতি, শেষং স্পাষ্টার্থ্য, অনানুভূতীরিতাত আবরাদীন্ প্রকৃতা ''আদা-ক্ষরং প্লাতং তেয়া মনবিতাসা মধ্য মিত্যনে নানন্ন ইতি বর্ণ ত্রুসা মধ্যং প্ল তং, দীৰ্ঘং ভবতীতি" প্ৰাতি শাখ্যে দীঘন্ন বিধানাৎ, অনন্ভূতী বিভাৰ্থঃ, প্রপাঠ শৈচনমেনেতিদিক, দশৈব মাসানি ত—যথা জ্রিয়ে। গভেণাত্ত-রালিকঃ সহস্কো বীজ কুস্থল নাারে নৈব মসলস্য চিদাছনোহ হঙ্গারেবে তার্থঃ, দশৈরকাঃ—অ। সমস্তা দীরয়ন্তি উপদিশন্তি তত্বং ইত্যোরকান্তত্ত্ব-দর্শিন উপদেক্তারঃ, দশমাসাঃ তহস্য ক্ষেপকাঃ, দশ অহা শুহ বিদ্যাধি কারিলঃ, এব মুক্ত বিধং একাটেছতং বুধানা মনুভব সিদ্ধং বিদ্বেষ্ণ চিত্ত শুদ্ধমতাং প্রদেষ্মতার্থঃ, 'ক্ষেত্র প্রজা দিশোক্সিন্ দশ পুরি বগতঃ পূরবিদ্যাফকাত্মা, তাঃ পুর্ণং বর্ত্ত্বনন্তা অগৃহি সম পুরাং वालनार भूर्वजामा। प्र-प्राया र्जन्मात्वा दिव भूषश भूषक्रक मजान-তে স্তঃ, কেপ্যার্কাঃ পদংতৎ কতিচন বিমুখাঃ কেপিতৎ প্রাপ্তিযোগ্যঃ (20) 11 29 11

অফাবক উবাচ।

একাদ্শৈকাদশিনঃ পশ্না,
সেকাদশৈবাত্ত ভবস্তি যুপাঃ।
একাদশ প্রাণভূতাং বিকারা,
একাদশোক্তা দিবি দেবেষু রুদ্রাঃ"--॥ ১৮॥
অফাবক উবাগ।

' স্থংসর্প দাদশ সাসসাত্ত-জ'গত্যাঃ পাদো দাদশৈব করাণি। দাদশাহঃ প্রাক্তযজ্ঞ উজো- ¦॥ দাদশাদিত্যান্ কথয়ন্ত\হ ধীরাঃ''—॥ ১৯॥

পাশ্নাং জীবপশূনাং একদিশিনঃ একাদশোতি—প্রাণ মৃতাং একাদশেন্দ্রিয়ানি প্রকাশকানি যেয়ুতে বিষয়ঃ শব্দায় স্তে একাদশৈব সংখ্যাতাঃ, তএব দর্কেপি প্রত্যেকং মূপাঃ বন্ধকাঃ রাগাদ্যঃ, নৈয়াং কশ্চিদপাহ্বন্ধকোস্তীতি বক্তৰুং পুনরেকাদশ গ্রহণ্য, অতোহত্র অবিষ্ণষ্ট বিধেয়াংশতা দোযো নাস্তীতি জেয়ন, বিকারাঃ শব্দাদি এছজাঃ হর্ম বিষালাঃ ত এতে দিবি স্বর্গেপি কজাঃ রোদরিভারো দেবান। মপি সন্তি কিমুত মহুয়ানাং, তথাচ সত্যাত্নো২সঙ্গরং কথংস্যাৎ প্রতাক্ষেণ হঃখানু-ভবাদিতাক্ষেপঃ, ''কজা একাদশোকাঃ স্বর্গি স্বপশূন বোদয়ন্তীক্রি-রানি, তেষা মেকাদশাথা নৃপশুনিগড়নে মূপভূতা ভবত্তি। রাগছেবদ্ধানি প্রতি বিষয়মমী তদ্বজাংস্থা বিকারা স্তদন্ত স্তেপিটেকা দশ যদিহ সিনো-তে।ক একৈক মেষ্য্।" (১১)।১৮॥ দৃষ্ঠান্ত মুখেনৈৰ দাষ্ট্ৰ ডিকং নিদিশিন্ পরি হরতাটাবক্রং—যদ্যপি অত্ত সম্বংসরজ্বপত্তী মাসাক্ষরেভ্যোই নতিরিক্তে এবং সজ্যাতাদন্যে শুদ্ধকেতকো মূড়ানা মথসিদ্ধ শুথাপি 'আ-নকা দ্বোৰ খলিমানি ভূতানি জায়ত্ত" ইতি আচতে ইথা অহর্গনাংদা-দশাহ এবং সঞ্জাতিদ্য কুংস্কৃদ্য শুদ্ধং ত্রামাব প্রকৃতিঃ, এতদেব কু ত?—ইত্য-পেক্ষায়াং চিত্ত শুদ্দৈকগ্মোইয় মূর্থে। ন শুক্ষ তর্কগমা ইত্যাহ—দ্বাদ শাদিতা নিতি-ধীরাঃ ধানবন্ধা যোগিনঃ আদিত্যান্ আদদতে ইন্দ্রিয়ানি স্ব স্ববিষ্ঠা বাবের্ন্তরিন্তি ওদারা প্রতাক্ তত্ত্ব মধিগময়ন্তি তাৰ্ দ্বাদশ সংখ্যাকান্ আতঃ সনংস্থাতানাঃ উন্যোগানে "ধর্মত সভাঞ্চমন্ত পুশ্চ অমাৎস্ব্যংগ্রী স্তিতিকাইনস্যা । মৃত্যুক্ত দানঞ্চ প্রতি ব্যা মহান্ बन्द्राद्य ।

ত্রেদেশী তিথিকক্তা প্রশস্তা,
 ত্রেদেশদীপবতী মহী চ"---।

লোমণ উবাচ ৷

" এতাবছুজ্ব। বিররাম বন্দী, শ্লোকস্যার্দ্ধং ব্যাজহার।ফবক্রঃ"---।

णक्षीतक छेन्।

' ত্রোদশাহ!নি সসার কেশী,
 ত্রোদশাদীন্যতিছন্দা

ব্রতানি বৈ দ্বাশ বাহ্মণ্যাইতি" — "বন্ধপ্রতাক্ষ মেতদ, চমথ জগতী বর্ষ বদ্বৰ্ণ মাসাং, সংঘাতাং প্ৰত গাড়া নাধক ইতি দদপান্তি লোকে তথাপি। বাগারভো বিকারঃ প্রকৃতি রণিকৃতি দ্বাদশাহাদিবৎ কো, প্যস্তোনাং ভান আলা শমিভি রধিগতে। বৈকৃত। নৈন মীঃ।" (১২)॥১৯॥ ব্রন্ধান গ্রানামের জ্ঞানং ভবতীতি কেবাঞ্জিরিক্সঃ—কৃত্যুগাদাবের জ্ঞানং ভবতি ন কলা বিতাপি কেচিং—ত,ন নিরাসফৌ তায়োদশীতি— দেশ কালাপেক্ষা চিত্ত শুদ্ধি ম পুর্ব্যতু সাধ্যা ইত্যাকেপো কন্দি প্রোক্ত-প্রবার্দ্ধেন, 'ন ত্রেতাদে সধর্মঃ সকল্পর সময়েনাপি ভুরাদিখটকে, নোপা-তালের সপ্তম্পিত কুত্রুগে সভালেকেচ সোভি! তথাদ্যা স্ক্সিদ্ধা তিথিরিয় মপি ন স্বাপ্তরেই তীব শস্তা, নোবা লোকা স্তপোড়া ইতি মুখত-পদী শ্রেরদে নাল্লচ্চা," উত্তরার্দ্ধেতু—"কেণী অনিবাল্লঃ সূর্যাশ্চ কেশিন" इिं दिनिक व्यागाम त्यापि वनमाया, ब्रामिन मध्यानि मर्गिलियानि বৃদ্ধি-মনো-হন্ধার্থানি, অহঃ শব্দেহত ক্রতুগ্রাসি লক্ষ্ণা বিষয়ে-ক্রিয় সম্বন্ধপভোগাখ্যে যজে বর্ততে. অসদস্যাপাস্থলে বুদ্যাদি সংগাৎ 'ধাায়তীৰ লেলায়তীৰ" ইত্যাদি আততেঃ সঞ্জিত্ব মিৰ ভাতি, অতোবুদ্ধাদয়ঃ শোধনীয়া এব নতু উদাদীত "ন তদা প্রাণা উৎক্রাম-ন্ত্য ত্রৈব সমবলীয়ত তদিদমপ্যেত্হি যএবং বেদাহৎ ব্রশ্বান্মি" হতি শ্রাতা-বস্তালের ইহৈব দেশে কালে চমুক্তি রম্ভীতি ভাবঃ, যতঃ অতি ছন্দাং দি ছাদক মজ্ঞানং অতি ক্রান্তানি ধর্মা দীনি দ্বাদশ, ত্রোদশাদীনি এয়ে দ-मार्गर तुकामीनार जामीन जमनभीनानि, भर्यामितना इर्श्व छत्न বুদ্ধাদেয়ে নিণ্ঠত ইতাৰ্গঃ, তেমু বুদ্ধাণিয়ু নির্ত্তেয় 'অদ্বৈতং

ততো সহাসুদ্ভিষ্ঠনিনাদস্থানী ছুতং সূতপুত্ত নিশমা।
অধানুধং ধ্যানপরং তদানীমন্তাবক্রঞ্গপুদীর্যান্তমেব—। ২১॥
তিসা স্থা সঙ্কুলে বর্তমানে,
ক্ষীতে যজে জনকস্যোত রাজ্ঞঃ।
অন্তাবক্রং পূজয়ন্তোহভূয়পেয়ুকিবিপ্রাঃ সর্বে প্রাঞ্জলয়ঃ প্রতীতাঃ—॥ ২২॥
ভক্ষাবক্র উধাত।

'অনেনৈব ব্রাহ্মণাঃ শুক্রবাংসো, বাদে জিন্না সলিলে মজ্জিতাঃ প্রাক্। তানেব ধর্মানয় মদ্য বন্দী, প্রাপ্রোতু গৃহাংগু নিমজ্জবৈয়নম্''—॥ ২৩॥

কথারতু মাগতোশি ইতি প্রাক্ প্রতিজ্ঞাতং, তদিহ স্বর্থমেব প্রকাশত ইতুক্তে মিতি ভাণঃ, "এতহাত্রেব দেব ইব মুনিমন্ত্রণ যান্তি সার্কারণ মিতাগ হাক্তেঃ সাহংমনো ধী খ দশক মন্ত্রন্ধানায় কঁছুলাঃ। সদ্যাধা সদ্যাপিসাগ ত্রিদশগণ মদন্তোব ধর্মাদেরপ্তে যেতি ছন্দোভিধানা তিমির মতি গতা এব মদ্বৈত সিদ্ধিঃ।" তদরং সংগ্রহঃ—"তবংধীঃ সাক্ষিলা ক্রতির করিপারো স্তাত্র কর্তাপি সোত্রা, পঞ্চানাং বর্চ মেতংখ মুখ সমতিকৈ তেঃ করোভাষ্টমোহনাঃ। সোহহং সাক্ষী ততোনো গুণমর মাখলং চিনারা স্তে সমুখ্যা চিৎসাদি গুণীতরা সাশমর্থাছিচিদ দ্বৈভাগ্রাকার।" (১০) প্রাক্তিরভার ছদাহ্যতোপক্রমানন্ত গুণাগং ক্রিষ্টবাৎ প্রোজন বদর্থাহ পর্যাব্যাহ্রাচ্চ টাকান্তরোক্তা অর্থা নেছ প্রদর্শিতাঃ॥ ২০॥ স্তুত্ব প্রিং—শোভন উতঃ পট স্তম্বংপুকৃতি বিক্রতাািত্রক স্তম্ভিতি রোজুভিন্ট প্রোত্রাহ উতঃ ক্রতুরপি স্তঃ শোভন যজ্যে বরণ স্তম্যপুত্রং, "স ইত্ত্বং সাক্রানাত্যোতুন্"—ইতি মন্ত্রনাহ ত্র্যাদ্যান্ত্রকায় ক্রতো রত শব্দ বাচান্তং, উদীর্যান্তং উদীর্যানাং স্থ্যানা মিতার্থঃ॥ ২১॥ ২১॥ ২২॥ শুক্রবাংসঃ পণ্ডিভাঃ॥ ২০॥

नकात्र।

"তহু<u>» পুলো বরু</u>ংস্যোত রাজ্ঞ-স্ত্রাস সত্রং দ্বাদশবার্ষিক ? বৈ। मता (ज अनका जुलाकालः, তদৰ্থং তে প্ৰহিতা মে দ্বিজাগ্ৰাাঃ॥২৪॥ তে তু সর্বের বরুণস্যোত যজ্ঞং, দ্রন্থ গতা ইম আয়ান্তি ভূয়ঃ। অক্টাবক্র পূজ্যে পূজনীয়, ষ্যা হেতে। জ নিতার শ্বেমষ্যে "—; ২৫॥ অ ফাবক্র উবাচ। 'বিপ্রাঃ সমুদ্রান্তিসি মজ্জিতা যে, বাচা জিতা মেধ্য়া বা বিদানাঃ। তাং মেধ্যা বাচ মথোজনগর, যথা বাচ মবচিন্থতি সন্তঃ॥ ২৬॥ অগ্নিৰ্দহন জাতবেদাঃ সভাং গৃহান্, वित्रक्षेत्र एउकिमा न या शाकी । বালেষু পুলেষু রূপণং বদৎস্ক,

তথা বাচ মবচিন্বন্তি সন্তঃ॥ ২৭॥

২৪। জনিতারং বক্ণন্ ॥২৫॥ বিপ্রা ইতি—বাচা উল্লৈঃ পার্চেনিব উত মেধ্যা উহাপোছ কোশলেন বিপ্রা বিদানাঃ প'ততা অপি জিতা মজ্জিতাশ্চ, তাং প্রসিদ্ধাং বাচং বেদমনীং মেধ্যা সহিতাং বন্দিনা কুতকার্ণবে মজ্জিতাং অহং যথা উজ্জহার উদ্ধৃতবান্মি তথা সন্তঃ সদসর্বন বিবেক কুশলাঃ অবিবিশ্বন্তি পরীক্ষয়ন্তি 'লোড়র্থে লট্, পরীক্ষয়ন্ত ইত্যর্থঃ ॥ ২৬ ॥ নম্ব বন্দিনোদ্ধ্তাং বাচং জ্মেব কুত্র্কার্ণবৈ মজ্জিত বানসি তত্ত্ব কিং সন্তিঃ পরীক্ষণীয়ং ?—ইত্যাশঙ্ক্ষাহ অগ্নির্দহ ন্নিতি—অগ্নিঃ দহন্ স্বভাবেন দাহকোপি জাত বেদাঃ জাতানি সতা মসতাঞ্চ রভানি বদ জানাতীতি জাত বেদাঃ, সভাং সত্যাভি সন্ধীনাং গৃহান্ শ্রীরাণি

শ্লেষাতকী ক্ষীণ্বর্চাঃ শৃণোধি,
উতাহো ত্বাং স্তত্তাে মোদয়ন্তি।
হস্তীব ত্ব^ জনক। ঘিতুদ্যমানো,
ন মামিকাং বাচমিমাং শৃণোধি"—॥ ২৮॥
জনক উবাচ।

শেশেমি বাচং তব দিব্যৰপামনানুষী দিব্যৰপোহসি সাক্ষাৎ।
অজৈয়ী ৰ্যন্দিনং স্থা বিবাদে,
নিস্ফ এষ তব কামেহদ্য বন্দী''—॥ ২৯॥
অফাবক্র উবাচ।

''নানেন জীবতা কশ্চিদর্থো মে বন্দিনা নূপ!। পিতা যদ্যস্য বরুণো সজ্জধৈনং জলাশয়ে''—॥ ৩०॥

বন্ধাবাচ। বন্ধাবাত বাজের

শেষহং পুজো বরুণস্যোত রাজ্ঞো,
ন মে ভয়ং বিদাতে মজ্জিতস্য ।
ইমং মুহুর্ত্তং পিতরং দ্রক্ষ্যতেহয়মন্টাবক্রন্দিরনক শক্ষাত্ত্য্য কাষ্যাবক্রনিক শক্ষাত্ত্য লামশ উবাচ

'তেতত্ত্বে পূজিতা বিপ্রা বরুণেন মহাত্মনা। উদ্যতিষ্ঠংস্তথা সর্বের জনকস্য সমীপতঃ''॥ ৩২॥

বিসর্জারন্ বর্জারন্ তেজসা যথা অধাক্ষীৎ স্ম অর্থাদন্তাভি সন্ধি গৃহান্,
ন শব্দ উপমার্থে, অপোন নাবা ছ্রিতাতরেমেত্যাদিবৎ, যথা তপ্তপরশু
গ্রহণে বহিঃ সত্যাভিসন্ধিংন দ হতি সত্য পক্ষ পাতী, এবং সন্তোপি
বালাদিয়ু, অতো বাল বচন মিতি মদাক্যং নাব মন্তব্য মিতি ভাবঃ॥ ২৭॥
কোষ্মাতকী শব্দিত শুক্ষবিশেষ শুস্য প্রেয়ু ভোজনং তৎফল ভক্ষণঞ্চ
বুদ্ধিংথ দোষকরঞ্জেতি প্রসিদ্ধন্॥ ২৮॥ অদ্য তব কামে নিস্ফঃ, এষ
বন্দী দৃশ্যতা মিতি শেষঃ॥ ২৯॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥

কহোড় উগচ।

"ই কার্থমিছন্তি স্থতান্ জনা জনক। কর্মাণা।

যদহৎ নাশকং কর্ত্বং তং পুজঃ ক্রবান্ম। ৩৩॥
উতাবলস্য বলবানুত বালস্য পণ্ডিতঃ।
উত বাবিত্বো বিদ্বান্ পুজো জনক। জায়তে"—॥ ৩৪॥

বন্ধানাত।

শিতেন তে পরশুনা স্বয়মেবান্তকো নৃপ ।।
 শিরাংস্যপাহরন্নাজৌ # রিপূনাং ভদ্র মস্ত তে॥ ৩৫॥
 মহদৌকৃথ্যং গীয়তে সাম চাগ্র্যাৎ,

সম্যক্ সোমঃ পীয়তে চাত্ত মতে।
শুড়ীন্ ভাগান্ প্রতিজ্গৃহদ হৃষ্টাঃ,
সাক্ষাদেবা জনকস্যোত রাজ্ঞঃ"—॥ ৩৬॥

লোমশ উবাচ।

"সমুখিতে ছথ সর্কেরু রাজন্! , বিপ্রেয়ু তেম্বধিক প্রপ্রভেয়ু। অনুজ্ঞাতো জনকেনাথ রাজ্ঞা,

বিবেশ ভোয়^ সাগরস্যোত বন্দী—॥ ৩৭ ॥

অফাবক্রঃ পিতর্ পূজয়িত্বা,

স পূজিতো ব্রাক্ষণৈ স্তৈ র্যথাবং।

প্রভ্যাজগামাশ্রম মেব চাগ্র্যং,

জিত্বা সৌতিং সহিতে। মাতুলেন। ৩৮॥

ইত্যর্থং এতদর্যন্ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ শিতেন তীমেন, তেতব রিপুণা মিতানাঃ, যমাদপি তব শক্তসংহরণ শক্তি র্ধিকেতি ভাবং ॥ ৩৫ ॥ উক্থাং
উক্থাখা ক্রতু বিশেষং, সাক্ষাদিভাপরোক্ষং দেবতা সামিধ্য মুচাতে
॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ৫৭ । সৌতিং স্থতসা বক্ষাসা পুত্রম্ ॥ ৩৮ ॥

^{* &}quot; অপহরত্বাজৌ" ইতি ক পাঠঃ।

ততোহকীবক্রং মাতুরথান্তিকে পিতান নদীং সমঙ্গা শীঘ্রমিমাং বিশস্থা। প্রোবাচ চৈন্দ সভিথা বিবেশ, সমৈ রক্তৈশ্যাপি বভূব সদ্যা ৩৯॥ নদী সমঙ্গা চ তথৈব পুণ্যান ব্যাশ স্নাতো মুচ্যতে কিল্লিয়ান্তি। ন্ত্রমপ্যেনাং স্নানপানাবগাইহঃ, সভ্রাতৃকঃ সহভার্য্যো বিশস্থ—॥ ৪০ ॥। অত্র কৌন্তের! সহিতো ভ্রাতৃভিস্তৃক্ত, স্থোষিতঃ সহ বিপ্রৈঃ প্রতীতঃ। পুণ্যান্যন্যানি শুচিকদৈর্মকভক্তিন র্ম্যা সার্দ্ধপ্রতাস্যাজমীয়।"—॥ ৪১ ॥। ইত্যারণ্যকে পর্বানি তীর্থ্যাত্রাপর্বানি অফাবক্রীয়ে চতুক্তিঃ। শদ্ধিকশত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ১৩৪॥

লোমণ উবাচ।

েএয়া মধুবিলা রাজন্। সমস্তা সংপ্রকাশতে। এতৎ কর্দমিলং নাম ভরতস্যাভিষেচনম্॥ ১॥

সমানি অন্ধানি করোতীতি সমঙ্গেতি যোগো দর্শিতঃ, শকর্মানিত্বাৎ পররূপম্॥৩৯॥॥৪১॥ প্রতীতো বিশ্বরঃ॥৪১॥.

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুন্ত্রিংশ নধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩৪ ॥

এবেতি—। মধু বিলেতি অফাবকাক সমীবরগাৎ পূর্বং সমস্পায়া এব নাম ॥১॥

অলক্ষ্যা কিল সৎযুক্তো রত্রং হত্বা শচীপতিঃ। আপ্লতঃ দৰ্বপাপেভ্যঃ দমঙ্গায়াপ ব্যমুচ্যত ॥ ২ ॥ এত দ্বনশনং কুক্ষৌ মৈনাকস্য নরর্ষভ।। অদিতির্যত্র পুল্রার্থ তদর মণচৎ পুরা। ৩॥ এনং পর্বতরাজান মারুছ পুরুষর্বভাঃ। व्ययमग्रा मनः नक्ता मनको र राज्य । ८ ॥ এতে কনখলা রাজনুষীণাৎ দয়িতা নগাঃ ৷ এষা প্রকাশতে গঙ্গা যুধিষ্ঠির ! মহানদী॥ ৫॥ সনৎকুমারো ভগবানত্র সিদ্ধি মগাৎ পুরা। আজমীতাবগাহৈহনা শ্বেপাপেঃ প্রমোক্যাসে॥ ৬॥ অপাং ক্রদঞ্চ পুন্যাথ্য ভৃগুতুক্সঞ্চ পর্বতম। তুষ্টীগঙ্গে চ কৌন্তেয়। সামত্যিঃ সমুপস্পৃশ ॥৭॥ আশ্রমঃ স্থলশিরসোরসণীয়ঃ প্রকাশতে। অত্র মানঞ্চ কৌন্তেয়। ক্রোধক্ষৈর বিবর্জ্জয় ॥ ৮ ॥ এষ রৈভ্যাশ্রমঃ শ্রীমান্ পা গুরের। প্রকাশতে। ভারদ্বাজো যত্র কবি র্যবক্রীতো ব্যনশ্যত"—॥৯॥ যুধিষ্ঠির উবাচ।

'কেথন বুক্তোহভবদ্ধি ভারদ্ধা প্রতাপবান্। কিমর্থঞ্চ যবক্রীতঃ পুল্রোহনশ্যত বৈ মুনেঃ—॥ ১০॥ এতৎ সর্বাং যথাবৃত্তং শ্রোতৃমিচ্ছামি তত্ত্বতঃ। কর্ম্মভির্দেবকপ্পানাং কীর্ত্ত্যানৈ ভূশন্বমে''—॥ ১১॥

লোমণ উনাচ।

শ্বেরদ্বাজন্দ রৈভ্যন্দ স্থায়ৌ সংবভ্বতুঃ।
তাবুবতু রিহাত্যন্তং-প্রীয়মানাবনন্তরম্॥ ১২॥
বৈভাষ্য তু স্কৃতাবাস্তা মর্কাবস্থ-পরাবস্থ।
আনীদ্বেরজীঃ পূজ্রস্ত ভরদ্বাজন্য ভারত।॥ ১৩॥
বৈভ্যো বিদ্বান্ সহাপত্য স্তপস্থী চেতরোহভবৎ।
তয়োল্চাপাতুলা প্রীতি ব্র্বাল্যাৎ প্রভৃতি ভারত।॥ ১৪॥
যবক্রীঃ পিতরং দৃষ্ট্য তপস্থিন মসৎক্রতম্।
দৃষ্ট্য চ সংক্রতং বিপ্রৈ রৈভাৎ পুজৈঃ সহান্য।॥ ১৫॥
পর্যাতপ্যত তেজন্মী মনুয়নাভিপরিপ্রাক্তঃ।
ততস্থেপে তপো ঘোরং বেদজ্ঞানায় পাপ্তব!॥ ১৬॥
স সমিদ্বে মহত্যমৌ শরীর মুপতাপয়ন্।
জনয়ামান সন্তাপ মিল্রন্য স্কুমহাতপাঃ॥ ১৭॥
তত ইন্দো যবক্রীত মুপগম্য যুধিষ্ঠির।।
ভারবীৎ কন্য হেতোন্তু মান্থিত স্তপ উত্তমম্ই "—॥ ১৮॥
ভারবীৎ কন্য হেতোন্তু মান্থিত স্তপ উত্তমম্ই "—॥ ১৮॥

যবক্রীত উবাচ।

ে দিজানা মনধীতা বৈ বেদাঃ স্থারগণার্চিত!।
প্রতিভান্তি তিপ্যাংহ মিদ্দ পরমকং তপঃ॥১৯॥
স্বাধ্যায়ার্থন সমারস্থো মমায়ন পাকশাসন!।
তপসা জ্ঞাতুমিচ্ছামি সর্বজ্ঞানানি কৌশিক!॥২০॥
কালেন মহতা বেদাঃ শক্যা গুরুত্বাদিভো!।
প্রাপ্তঃ তত্মাদয়ং যুত্রঃ পরমো মে সমাস্থিতঃ'—॥২১॥

॥ ১২॥ ১৩॥ ইতরো ভরদার স্তপন্থোব নতু শিষ্যাদি সম্পন্ন । ১৪॥ ॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ সর্বজ্ঞানানি সর্বশিস্থাণি॥ ২০॥ ২১॥ इक छेन्।

"অমার্গ এব বিপ্রর্ষেণ যেন জুং যাতুমিচ্ছিদি।' কিং বিঘাতেন তে প্রিণ গছাধীছি গুরোর্ম্ম খুড়ে'—॥ ২২॥ লোমশ উবাচ।

'এব মুক্ত্রা গতঃ শক্রো যবক্রীরপি ভারত!।
ভূয় এবাকরোদ্ধত্রং তপদ্যমিতবিক্রমঃ॥২৩॥
ঘোরেন তপদা রাজ্ঞ স্তপ্যমানো মহন্তপঃ।
দন্তাপরামাদ ভূশৎ দেবেক্র মিতি নং প্রতম্॥২৪॥
তং তথা তপ্যমানস্ত তপস্তীব্রৎ মহামুনিম্।
উপেত্য বলভিদ্দেবো বারয়ামাদ্র বৈ পুনং॥২৫॥
অশক্যোহ র্থঃ দমারক্রো নৈতদু দ্বিত্বতং তব।
প্রতিভাদ্যন্তি বৈ বেদাস্তব চৈব পিতৃশ্ধ তে"—॥২৬
যবক্রীও উবার।

হোষ্যামি বা মঘ্বংশুলিবোধ।

যদ্যেতদেবং ন করোষি কামং

মমেপ্সিতং দেবরাজেহ সর্বাম্'—॥২৮॥

লোমশ উবাচ।

'নিশ্চরং ত মভিজ্ঞার মুনেস্তস্য মহাত্মনঃ। প্রতিবারণহেত্বর্থং বুদ্ধা সঞ্চিন্ত্য বুদ্ধিমান্॥ ২৯॥ তত ইক্রোহকরোজ্রনং ব্রাহ্মণ্য্য তপল্পিন্ত। অনেকশতবর্ষস্য তুর্বলিস্য সমক্ষনণঃ॥ ৩০॥

বিষাতেন আত্মাণনেন॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ন প্রতি ভাদ্য স্তীতি ন কারারক্তাথোজ্যম্ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ যবক্রীতস্য যন্ত্রীর্থ মুচিত্র শোচকর্মনে।
ভাগীরথ্যাং তত্র সেতুং ব,লুকাভিশ্চকার সং॥ ৩১॥
যদাস্য বদতো বাক্যান ন স চক্রে ছিজোন্তমং।
বালুকাভিন্ততং শক্রো গঙ্গাং সমভিপূর্রন্॥ ৩২॥
বালুকামুটি মনিশং ভাগীরথ্যাং ব্যসর্জয়ং।
সেতুমভ্যারভচ্চক্রো যবক্রীতং নিদর্শয়ন্॥ ৩০॥
ত্রুমভ্যারভচ্চক্রো যবক্রীতং নিদর্শয়ন্॥ ৩০॥
ত্রুমভ্যারভিচ্কক্রো যন্ত্রস্ত্র নিবন্ধনে।
প্রহুমংশ্চাব্রবীদ্বাক্য মিদং স মুনিপুঙ্গবং॥ ৩৪॥
'কিমিদং বর্ততে ব্রহ্মন্! কিঞ্চ তে হ চিকীর্ষিত্র্ ?—।
অতীব হি মহান্ যত্নঃ ক্রিয়তেইয়্র নির্থকঃ!"—॥ ৩৫॥
ইক্র উবাচ।

"বিষ্ধিষ্যে সেতুনা গঙ্গা স্থাং পন্থা ভবিষ্যতি। ক্লিশ্যতে হি জনস্তাত! চরমাণঃ পুনঃ পুনঃ"—॥ ৩৬॥ যবক্রীত উন্দ্রান

নোয়ং শক্যস্ত য়া বদ্ধং মহানোঘশ্তপোধন!। আশক্যাদ্বিনিবর্ত্তস্থ শক্যমর্থং সমারভ"—॥ ৩৭॥ ইন্দ্র উবাচ।

্ষেথিব ভবতা চেদং তপো বেদার্থ মুদ্যতম্। অশক্যুৎ তদ্বদম্মাভি রয়ং ভারং সমাহিতঃ"—॥ ৩৮॥ যবক্রীত উবাচ।

'যথা তব নিরর্থোহর মারম্ভব্রিদশেশ্বর !।
তথা যদি মমাপীদ^ মন্যদে পাকশাসন !॥ ৩৯॥
ক্রিয়তাং যদ্ভবেচ্ছক্য^ ত্বয়া স্ক্রগণেশ্বর !।
বরাংশ্চ মে প্রযন্থান্যান্ যৈ রন্যান্ ভবিতাম্যাতি''—॥ ৪০॥

1 03 1 02 11 00 11 08 11 00 11 00 11 09 11 07 11 02 11 80 11

লোম শ উবাচ।

তিশ্ব প্রানাদর।নিক্র উক্তবান্ যান্ মহাতপাঃ।

'প্রতিভাস্যন্তি তে বেদাঃ পিত্রা সহ যথেপ্সিতাঃ॥ ৪১॥

যজান্যৎ কাক্ষ্মে কামং যবক্রী র্ম্যতামিতি"—।

স লক্ষ্মাঃ পিত্র মভ্যেত্যাথেদ মত্রবীৎ॥ ৪২॥

যবক্রীত উবাচ।

"প্রতিভাগ্যন্তি তে বেদা মম তাত্স্য চোভয়োঃ। অতীবান্যানু ভবিষ্যাবো বরা লক্কাস্তথা ময়া"—॥ ৪৩॥

ভরদ্বাজ উনাচ

"দর্পন্তে ভবিতা তাত! বরাল্ল ক্বা যথেশিতান্।
স দর্পপূর্ন: ক্রপণা ক্ষিপ্রমেব বিনক্ষ্যসি ॥ ৪৪ ॥
অত্রাপ্যদাহরন্তীমা গাথা দেবৈ রুদাহ্নতাঃ।
মুনিরামীৎ পুরা পুত্র! বালধি র্নাম বীর্য্যবান্ ॥ ৮৫ ॥
স পুত্রশোকাত্ত্বিপ্প স্তপন্তেপে স্বত্ত্বরম্।
ভবেল্লম স্কতোহ্মত্য ইতি তং লক্ষবাৎশ্চ সঃ ॥ ৪৬ ॥
ত স্য প্রসাদো দেবৈশ্চ ক্তোন স্বম্বৈঃ সমঃ।
নামত্যো বিদ্যতে মত্যো নিমিন্তাযুর্ভবিষ্যতি "—॥ ৪৭ ॥

বালধিক্তবাচ ৷

"যথেমে পর্বাত†ং শশ্বভিষ্ঠন্তি স্করসন্তমাং। অক্ষয়ান্তনিমিত্তং মে স্কৃতস্যায়ু র্ভবিন্যতি "—॥ ৪৮॥

ভরদ্বাজ উবাচ।

'তেস্য পুত্রস্তদা জজ্ঞে মেধাবী ক্রোধন্ং সদা। স তচ্ছ স্ত্রাকরোদ্দর্প মৃষীংশৈচবাবমন্যত ॥ ৪৯ ॥

॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪১ ॥ ৪৪ ॥ অম্ভ্রি হৈ চেছেদঃ, অমর ইত্র্যঃ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥

বিকুর্বাণো মুনীনাঞ্চ ব্যচরৎ স মহীমিমাম্। जामनाम महावीर्याः श्रुवाकः मनीविनम् ॥ ৫०॥ তম্যাপচক্তে মেধাবী তং শশাপ স বীৰ্ঘ্যবান। ভব ভন্তেতি চোক্তঃ স ন ভন্ম সমপদাত। ৫১॥ ধনুৰাক্ষস্ত তং দৃষ্টা মেধাবিন মনাময়ম। নিমিত্ত মস্য মহিধৈ ভেদিয়া মাস বীৰ্ষ্যবান্। ৫২ ॥] স নিমিত্তে বিনষ্টে তু মমার সহসা শিশুঃ। তং মৃতং পুত্র মাদায় বিললাপ ততঃ পিন্তা। ৫৩। लालभाग्रानः उर पृष्ठी पूनमः भवगार्खन्। উচু বেদিবিদঃ সর্বের গাঞ্চাৎ যাৎ তাং নিবোধ মে ॥ ৫৪ ॥ " ন দিষ্ট মর্থ মত্যেত্মীশো মত্যঃ কথঞ্চন। মহিবৈতে দয়ামাস ধনুষাকো মহীধরান "-॥ ৫৫॥ এবং लक्ष्म वज्ञान् बाला पर्रभूनी छपत्रिनः। किथाय विनमान्ति यथा न मान्या जवान्॥ ०७॥ এষ রৈভ্যো মহাবীর্যাঃ পুক্রো চান্য তথাবিধৌ। তং যথা পুত্র নাভোষি তথা কুর্য্যাস্তৃতক্রিতঃ ॥ ৫৭ ॥ স হি কুদ্ধং সমর্থশ্চ পুত্র। পীডায়তুণ রুষা। -রৈভ্যশ্ভাপি তপস্থী চ কোপনশ্চ মহানুষিঃ ''—॥ ৫৮॥

যবক্রীত উবাচ।

"এবন করিষ্যে মা তাপন তাত। কার্ষীঃ কথঞ্চন। যথা হি মে ভবাঝান্য স্তথা রৈভ্যঃ পিতা মম "—॥ ৫৯॥

॥ ৫০॥ নিমিত্তং পর্বতান্ ভেদ্যামাস খণ্ডয়ামাস ॥ ৫১॥ ৫২॥ ৫৩॥ বিষ্টং দৈববিহিত্যু॥ ৫৪॥ ৫৫॥ ৫৬॥ ৫৬॥ ৫৮॥ লোমশ উবাচ 1

"উক্তা স পিতর শ্লেষ্ণং যবক্রী রকুতোভয়:। বিপ্রকৃক্ শ্লুষীনন্যানভুষ্যং পর্য়া মুদা " , ॥ ৬০॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণ যবক্রীতোপাখ্যানে পঞ্জিংশদ্ধিকশততমোহ্ধ্যায়:॥ ১৩৫॥

লোমশ উবাচ।

"চংক্রমামানঃ স তদা যবকী রকুতোভয়ঃ।
জগাম মাধবে মাসি রৈভাগ্রমপদ প্রতি॥ ১॥
স দদশাপ্রমে রম্যে পুষ্পাতক্রমভূষিতে।
বিচরতীং সুষাং তদ্য বিলরী মিব ভারত।॥ ২॥
যবকী স্থা মুবাচেদ মুপতিষ্ঠস্ব মামিতি।
নিল জ্বো লজ্জ্রা যুক্তাং কামেন হৃতচেত্র:॥ ৩॥
সা তদ্য শীলমাজ্ঞায় তম্মাজ্ঞাপাচ্চ বিভাতী।
তেজস্বিতাঞ্চ রৈভাদ্য তথেতুক্ত্রা জগাম হ॥ ৪॥
তত একান্ত মুনীয় মজ্জ্রামাদশ ভারত।।
আজগাম তদ্য রৈভাঃ স্ব মাশ্রম মরিন্দম।॥ ৫॥

11 00 11 00 11

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকংীরে ভারত ভাবদীপে পঞ্চত্রিংশদধিক শততমোহধারঃ ॥ ১৩৫ ॥

চংক্রমোতি—চংক্রমামাণঃ ভূশংপর্য টন্, মাধ্বে বৈশাংখে। ১। ২। হাত চেত্রঃ বলীকৃত চিত্তঃ। ৩॥ ৪॥ একাতং উনীর একাত্তে কার্য্যর কর্তিং নতং সমাপ্যা, মজ্জরামান সমুদ্র ইতিশেষঃ, সজ্জরা মানোতি পাঠে—অণক্র মপকর্ত্তং বৈভাং সন্নত্তং চকার,—তদেবাছ আজগামেতাাদিনা—॥ ৫॥

^{*} मक्त्राभाग हे जिन्य-पुछ को।

রুদতীঞ্চ সুষাং দৃষ্টা ভার্যানার্ডাং পরাবসো:। সান্তুয়ন্ শ্লক্ষা বাচা পর্যাপৃচ্ছদে ধিন্তির ! ॥ ৬ ॥ म। তব্দৈ मर्दा म। एसे यवकी वाधिकः एव।। প্রভাক্তর মবকীতং প্রেক্ষাপূর্নিং তথাত্মনা ॥ १॥ **मृ**ण्यानदेमाव देवजामा यवदक खिविकिके । দহলিব তদা চেতঃ ক্রোধঃ সমভবন্মহান্। ৮ ॥ য তদা মন্ত্রানাবিক স্থপস্বী কোপনো ভূশন্। অবলুঞ্য জটামেকা॰ জুহাবাগ্ণৌ স্থসং স্কৃতে। ৯ 🛭 ভতঃ সমভবন্ধারী তদ্যা ৰূপেণ সন্মিতা। অবলুক্যাপরাঞ্চাথ জুহাবামৌ জটাং পুনঃ ১০॥ ততঃ সমভবদ্রকো ঘোরাকং ভীমদর্শনম। অবুতাং তৌ তদা রৈভা- "কিং কার্যাং করবাবহে ?"—॥ ১১॥ তাবব্ৰবীদৃষিঃ কুদ্ধো ''যবক্ৰী ৰ্বাধ্যতামিতি "—। জগ্যুতুস্তৌ তথেত্যুক্তা যবক্রী হজিঘাণসয়া॥ ১২॥ ততত্তং সম্পন্থায় কুত্যা স্ফৌ মহাত্মনা। কমগুলু^ জহারাস্য মৌহয়িত্বেব ভারত !॥ ১৩ _॥ উচ্ছিউন্ত यवकी उ मलक्रि के म खनूम। তত উদাতশূলঃ স রাক্ষসঃ সমুপ। দ্বৰ । ১৪॥ **७ माज्यस्य मश्याका म्लर्स्ट किया भागा** यदकीः महरमाथाय श्राफ्रवरन्यन देव मतः ॥ ১৫॥ জলহীনং সরো দৃষ্টা ববকীস্থারতঃ পুনঃ 🕆 জগাম সরিতঃ সর্বাস্তাশ্চপ্যাসন্ বিশোষ্তাঃ॥ ১৬॥

॥ ৬ ॥ প্রস্কৃতিং প্রত্যাধ্যাতং, মহপরি বলাংকারং ক্তবানিস্থাক বভীতার্থ:॥ ৭ ॥ ৮ ॥ স্থান্ক্তৈঃ স্ববর্ণাদি সংস্থার মূক্তিঃ॥ ৯॥ নারী কৃত্যা ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৬ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ স কালামানো ঘোরেণ শ্লহন্তেন রক্ষনা।
অগ্নিহোত্রে * পিতৃতীতঃ সহদা প্রবিবেশ হ ॥ ১৭ ॥
স বৈ প্রবিশমানস্ত শ্দেণাক্ষেন রক্ষিণা।
নিগৃহীতো বলাজারি সোহবাতিষ্ঠত পার্থিব! ॥ ১৮ ॥
নিগৃহীতস্ত শ্দেণ যবক্রীতঃ স রাক্ষনঃ।
তাডয়াদ শ্লেন দ ভিন্নহৃদয়োহপতৎ ॥ ১৯ ॥
যবক্রীতঃ দ হত্বা তু রাক্ষদো রৈভ্য মাগমৎ।
অনুজ্ঞাতস্ত রৈভ্যেণ তয়া নার্যা সহাবসং"—॥ ২০ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্কণি তীর্থবাত্রাপর্কণি যবক্রীতোপাঝানে
যট্তিঃশদ্ধিকশততমোহ্ধায়ঃ॥ ১৩৬॥

লোমণ উবাচ।

েভরদ্বাজস্ত কৌন্তের ! কুত্বা স্থাধ্যার মাহ্লিকম্।
সমিৎকলাপ মাদার প্রবিবেশ স্থমাশ্রমম্ ॥ ১ ॥
তং স্ম দৃষ্ট্বা পুরা সর্বে প্রস্থান্তিষ্ঠন্তি পাবকাঃ।
ন ত্বেন মুপতিষ্ঠন্তি হতপুত্রং তদাগ্রয়ঃ॥ ২ ॥
বৈক্তেং ত্রমিহোত্রে স লক্ষরিত্বা মহাতপাঃ।
তমস্বাং শুদ্রমাদীনং গৃহপাল মথাব্রবীৎ॥ ৩॥

কাল্যমানঃ সর্বতে। নিবিধ্যমানঃ, অনিহোত্তে অনিছোত্ত শালায়াম্ ॥ ১৭-অব্যতিষ্ঠত বহিরেবেত্যর্থঃ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ষট্তিংশদ্ধিক শততমোহধায়ঃ ৷ ১৩৬ ৷

ভরম্বাজ ইতি—আফ্লিকং স্বাধ্যায়ং প্রতাহং কর্ত্তব্যং ব্রহ্মযজ্ঞন্॥১॥ ছতপ্রবেদন অশেষ্চ যুক্তবাৎ॥২॥৩॥৪॥

^{*} অগ্নিছোত্রং" "ইতি ক—

'কিল মে নাগ্নয়ঃ শূক্র ! প্রতিনন্দন্তি দর্শনম্।
স্বঞ্চাপি ন যথা পূকাং কচিৎ ক্ষেম মিহাশ্রমে ?—॥ ৪॥
কচিল রৈভ্য^ পুজ্রো মে গতবানপ্পচেতনঃ ?—
এতদাচক্ষ্ব মে শীঘ্রং ন হি শুধ্যতি মে মনঃ''—॥ ৫॥
শূক্ত উবার।

'বৈভাং য'তো নুনময়ং পুক্তস্তে মন্দচেতনঃ।
তথা হি নিহতঃ শেতে রাক্ষসেন বলীয়সা॥ ৬॥
প্রকাল্যমানস্তেনায়ং শূলহস্তেন রক্ষসা।
অগ্নাগারং* প্রতি দ্বারি ময়া দোর্ড্যাং নিবারিতঃ॥ ৭॥
ততঃ স বিহতাশোহত্ত জলকামোহশুচিধ্বম্।
নিহতঃ সোহতিবেগেন শূলহস্তেন রক্ষসা''—। ৮॥
ভরদ্বাজস্ত তচ্চুত্বা শূদ্রস্য বিপ্রিয়ণ মহৎ।
গতাস্থণ পুক্রমাদায় বিল্লাপ স্বৃত্থেতঃ॥ ৯॥

লোমশ উবাচ।

শুধ্যতি নিঃসন্দেহং উবতি ॥৬॥ অধ্যাগারং প্রবিষ্টস্য রক্ষে ভরং ন ভবেদিতি ভাবঃ ॥৭॥৮॥ শুদ্স্য শুদ্ধতং বিপ্রিয়ং পুত্র নিরোধেন কৃত্যু॥৯॥১০॥১১॥১২॥১৩॥

^{*} जग्नाभावः इंडि क- श्र श्रुटको।

পুত্রশোক মনুপ্রাপ্ত এব রৈ ভাস্য কর্মণা।
তাক্ষ্যামি স্বামৃতে পুত্র। প্রাণানিইতমান্ ভুবি॥ ১৪॥
বথাইং পুত্রশোকেন দেহং ত্যক্ষ্যামি কিল্বিধী।
তথা ক্ষ্যেষ্ঠ: স্প্রতো রৈভ্যা হিংস্যাক্ষীম্র মনাগসম্॥ ১৫॥
স্থানা বৈ নরা বেষাৎ জাত্যা পুত্রো ন বিদ্যাতে।
বে পুত্রশোক মপ্রাপ্য বিচর্ তি যথ স্থাম্॥ ১৬॥
বে পুত্রক্তাক্ষোকান্ত্রশং ব্যাকুলচেতসং।
শপন্তীষ্টান্ সধীনার্ত্রন্তেভ্যঃ পাপতরো মু কঃ ?—॥ ১৭॥
পরাস্কৃদ্ধ স্বতো দৃষ্টঃ শপ্তশেষ্টঃ সধা মরা।
স্কৃদ্শীমাপদং কোহত দ্বিতীয়ে হিন্তুভ্বিষ্যতি ?"—॥ ১৮॥
বিলপ্যেবং বছবিধৎ ভরদ্বাজোহ্দহৎ স্কৃত্য্য।
স্কৃদ্মিমাপদং কোহত দ্বিতীয়ে হিন্তুভ্বিষ্যাতি ?"—॥ ১৯॥
হিত্যারণ্যকৈ পর্বাণি তীর্থ্যাত্রাপর্বাণি যবক্রীতোপাখ্যানে
সপ্তরিংশদ্ধিকশতত্রোহ্ব্যারঃ॥ ১৩৭॥

ভরম্বাজ উপাচ ৷

'এতস্মিনের কালে তুর্হজ্বাসে মহীপতিঃ। সত্রং তেনে মহাভাগো রৈভাষাজ্যঃ প্রতাসবান্॥ ১॥ তেন রৈভাস্য বৈ পুজা বর্ঝাবস্থপরাবস্থ। রুতৌ সহায়ৌ সত্রার্থি রুহজ্বাসেন ধীমতা॥ ২॥

॥ ১৪ ॥ কিলিমী শোকাক্রান্ত: ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯

• ইত্যারণাকে পর্কাণ নৈসকতীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্ততিংশদধিক
শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩৭ ॥

এতিশিরিতি—॥ ১॥ ২॥

ভত্ত তৌ সমমুজ্ঞাতৌ পিত্রা কৌন্তের ' জগ্নাতুঃ।
আশ্রমে ব্রবদৈরের ভার্যা টেব পরাবসেঃ ॥ ৩॥
অথাবলোককোহগচ্চদ গৃহানেকঃ পরাবস্থঃ।
ক্ষণাজ্ঞানেন সম্বীতং দদর্শ পিতরং বনে ॥ ৪॥
জঘনারাত্রে নিজাঙ্কঃ সাবশেষে তমস্যপি।
চরস্তং গহনেহরণ্যে মেনে স পিতরং মৃগম্॥ ৫॥
মৃগস্তু মন্যমানেন পিতা বৈ তেন হিশ্সিতঃ।
অকাম্যানেন তদা শ্রীরত্রাণমিচ্ছতা ॥ ৬॥
তস্য স প্রেতকার্যাণি কৃত্বা সর্বাণি ভারত!।
পুনরাগম্য তৎ সত্র মত্রবীদ্ধৃতিরং বচঃ॥ ৭,॥
'ইদং কর্ম্ম ন শক্তস্তুশ্ধ বোচুমেকঃ কথঞ্চন।
ময়া চ হিংসিত স্তাতো মন্যমানেন তং মৃগম্॥ ৮॥
সোহস্মদর্থে ব্রতং তাত! চর বং ব্রন্ধহিংসনম্।
সমর্থেহিপ্যহ্মেকাকী কর্ম্ম কর্ডুমিদ্শ মুনে!"—॥ ১॥

অর্ধাবস্ক্রাচ।

"করোতু বৈ ভবান্ সত্রং বৃহত্যুম্বস্য ধীমতঃ। ব্রহ্মবধ্যাপ চরিষ্থেইহণ স্বদর্থণ নিয়তেক্সিয়ঃ"—॥ ১০॥

লোমশ উবাচ।

" স তস্য ব্রহ্মবধায়োঃ পারং গন্ধা যুধিষ্ঠির !।
অব্বাবস্থান সত্র মাজগাম পুনর্ম্মানঃ ॥ ১১॥
ভতঃ পরাবস্কৃষ্ট্। ভাতর সমুপান্থতম্।
বৃহত্যুম মুবাচেদ ,বচনং হর্ষাদাদম্॥ ১২॥

॥ ७॥ जरत्नाककः जरत्नाकनाथी, शृष्टान् ভार्यतम् ॥ ८॥ ८॥ ७॥ १॥

''এষ তে ব্রহ্মহা যজ্ঞং মা দ্রফুং প্রবিশেদিতি।
ব্রহ্মহা প্রেক্সিতেনাপি পীডয়েত্বামসংশয়ম্॥ ১৩॥
তচ্চ ত্বৈব তদা রাজা প্রেষ্যানাহ স বিট্পতে।*।
প্রেষ্যৈ কৃৎসার্যামাণস্ত রাজন্মর্বাবস্থলদা॥ ১৪॥
ন ময়া ব্রহ্মহত্যোং ক্তেত্যাহ পুনঃ পুনঃ।
উচ্যমানেহসক্রৎ প্রেষ্যিব্রহ্মহিন্তি ভারত।॥১৫॥
তিব স্ম প্রতিজ্ঞানাতি ব্রহ্মবিধাং স্বয়ংক্তাম্।
সম ভাত্রা কৃতিমিদং ময়া স পরিমোক্ষিতঃ॥ ১৬॥
স তথা প্রবদন ক্রোধাত্তৈক প্রেষ্যঃ প্রভাষিতঃ।
তৃষ্টী জগাম বিপ্রার্ষ র্বনমেব মহাতপাঃ॥ ১৭॥
উত্তা তপঃ সমাস্থায় দিবাকরমথাজ্ঞিতঃ।
রহস্যবেদং কৃত্রবান স্র্যাস্য দ্বিজ্যভ্রমঃ॥ ১৮॥
মৃত্তিমাণস্তং দদশাথ স্বয় মগ্রভ্র্গবায়ঃ—।
লোমশ উবাচ।

"প্রীতান্তস্যাত্তবদেবাঃ কর্মাণার্কাবসো নৃপি!॥ ১৯॥ তং তে প্রবরমামাস্থ নিরাস্ত্রশ্চ পরাবস্থ্য।
ততো দেবা বরং তদ্মৈ দতু র্গ্নিপুরোগমাঃ॥ ২০॥
স চাপি বর্মামাস পিতৃরুপানমান্তনঃ।
অনাগস্তং ততো ভাতৃঃ পিতৃশ্চাম্মরণ বধে॥ ২১॥

॥ ১৩॥ বিট্পতে হে প্রজাধীশ! ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ প্রভাষিতঃ মিখ্যা-বাদা হলীতি অধিক্ষিপ্তঃ ॥ ১৭॥ রহসা বেদং স্থাম স্ত্র প্রকাশকং বেদম্, " দ্বনি রিতি দ্বে অক্ষরে স্থা ইতি ত্রীনি, আদিতা ইতি ত্রীনি, এতদ্ব সা-বিত্রাস্যাফ্টাক্ষরং পদং শ্রিয়া ভিষিক্তম্" ইতি কাঠক ত্রাক্ষনং, কৃতবান্দর্দশা ১৮॥ মুর্তিমান্ স্থা স্তংদিজং দদশ আত্মান্ দর্শরামাস।॥ ১১॥ তং দেবাঃ প্রক্ষেন ব্রয়ামাস্থা, নিরাক্ষা নিরাচকু র্যজাদিতি শেষঃ॥ ২০॥ ২১॥

^{* &}quot; বিট্ পতে!" ইতাসাস্থান—"বিসূজাতান্" ইতি ক-পুস্তকঃ প্ ঠতি।

ভর্ষাজন্য চোঝান ব্যক্তীভন্য চোভরো:।
প্রতিষ্ঠাঞাপি বেবন্য সৌরন্য বিজনভন্ত ॥ ২২ ॥
এবমন্তি তি তং দেবাঃ প্রোচুশ্চাপি বরান দতু:।
ভতঃ প্রান্তর্বভূব তে নর্ব এব বুধিন্তির!।
অথাত্রবীদ্দবক্রীভো দেবানশ্বিপুরোগমান ॥ ২৩ ॥
সমধীতং ময়া ভ্রন্ম ভ্রতানি চরিভানি চ।
কথক রৈভ্যঃ শক্তো মা মধীয়ানং তপশ্বিনম্ ॥ ২৪ ॥
তথাবুক্তেন বিধিনা নিহন্ত মমরোভ্রমাঃ ?"—।
দেবা উচুঃ।

''দৈবং কুথা ববক্রীত। যথা বদসি বৈ মুনে!। খতে গুকুমধীতা হি মুখং বেদান্ত্রা পুরা॥ ২৫॥ অনেন তু গুকুন ছুঃখাত্তোবন্ধিতান্ধকর্মণা। কালেন মহতা ক্লেশান্ত্রাধিপতমূক্তমম্''—॥ ২৬॥ শোষ্ণ উবাচ।

শেষবক্রীত মথোজৈবং দেরাঃ সেন্ত্রপুরোগমাঃ।
সঞ্জীবন্ধিতা তান সর্বান পুনর্বগা ব্রিপিউপস্॥ ২৭॥
আত্মন্তরা পুন্যোহর সদাপুস্পানসক্রমঃ।
আত্মন্তরা রাজপার্ক্ লা সর্বাং পাপং প্ররোজ্যনি "—॥ ২৮॥
ইত্যারণাকে পর্বানি তীর্থযাত্রাপর্বানি ব্রক্রীতোপাখ্যানে
অউত্তি শাস্থিকগততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৩৮॥

প্রতিষ্ঠাং সম্প্রদারপ্রর্ভিং, সৌরে। বেদঃ পূর্ব্যোক্তঃ ॥ ২২ ॥ ২৩॥ সম্বীতং সমাকৃ প্রান্তন, ত্রম বেদঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৩ ॥ ২৩ ॥ ২৬ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীরে ভারত ভাবদীপেছফাব্রংশদ্ধিক শক্তমোহধ্যারঃ,॥ ১৩৮ ॥

लामम छेराह। েউশীরবীজং সৈনাক গিরি শেতঞ্চ ভারত।। সমতীতোহদি কৌতের। কালশৈলঞ্চ পার্ছিব।॥১॥ এয়া গঙ্গা সপ্তবিধা রাজতে ভরতর্বভ!। স্থান বিরুজনং পুনাং যত্রাগ্নি রিতামিধাতে ॥ ২ ॥ এতবৈ মানুষেণাদ্য ন শক্যং দ্রুফ্রেড্ড্র। সমাধিত কুরুতাব্যগ্রা স্তীর্থান্যেতানি দ্রক্ষ্যথ ॥ ৩॥ এতদক্ষাসি * দেবানা মাজীডং চরণাঙ্কিত্য। অতিক্রান্থেসি কৌন্তের! কালশৈলঞ্চ পর্বভিদ্॥ ৪॥ শ্বেতং গিরিং প্রকেক্যামো মন্দরকৈব পর্বতম। অত মাণিবরো যক্ষঃ কুবেরদৈচব যক্ষরাট্॥ ৫॥ অষ্টাশীতিসহত্রাণি গন্ধবাং শীঘ্রগামিনং। তথা কিম্পুরুষা রাজন্। যক্ষাকৈব চতুগুলাং ॥ ৬॥ অনেকৰপদংস্থানা নানাপ্ৰহরণাশ্চ তে। যক্ষেত্রং মনুজ্ঞেষ্ঠ। মাণিভক্ত মুপাসতে ॥ ৭ ॥ তেষামৃদ্ধি রভীবাত্র গতৌ বাযুসমাশ্চ তে। স্থানাৎ প্রচ্যাবয়েয় র্যে দেবরাজমপি ধ্রুবম্ ॥ ৮॥ তৈ স্তাত! বলিভিগুপ্তা যাতুধানৈশ্চ রক্ষিতাঃ। তুর্গদাঃ পর্বতাঃ পার্ধ। সমাধি পরমং কুরু॥ ৯॥ কুবেরসচিবাশ্চানো রৌদ্রা মৈত্রাশ্চ রাক্ষসাঃ। তৈঃ সমেষ্যাম কৌন্তেয়। সংযতো বিক্রমে ৭ চ 🕆 ॥ 🎏 ॥

উনীরেভি—॥১॥ যতায়ি নিভামিধাত ইতি ত্রিফোগি নারায়ণাখং হরি দারাং পরতঃ স্থান মস্তি॥২॥৩॥৪॥৫॥৩॥৭॥৮॥৯॥১০॥

^{* &#}x27;' একদ্খতি["] ইতি ক-। †সংবত্তে, বিক্রমে ভব ^শ ইতি-ক-পুস্তকঃ।

কৈলাসঃ পর্বতো রাজন্ ! ষড্যোজনশতোচ্ছি তঃ। যত্র দেবাঃ সমায়ান্তি বিশালা যত্র ভারত। ॥ ১১॥ অসংখ্যোস্ত কৌত্তেয় ! ষক্ষরাক্ষদকির্বা:। নাগাঃ স্থপর্ণা গন্ধবাঃ কুবেরসদনং প্রতি॥ ১২॥ তানু বিগাহস্ব পার্থান্য তপদা চ দমেন চ। রক্ষ্যালো ময়া রাজনু! ভীমদেনবলেন চ ॥ ১৩ ॥ স্বস্তি তে বরুণো রাজা যমক সমিতিঞ্জয়ঃ। গঙ্গা চ যমুনা চৈব পর্বভেশ্চ দথাতু তে॥ ১৪॥ মুকুতৃশ্চ সহাশ্বিভ্যাৎ সরিতৃশ্চ সরাংসি চ। দ্বন্তি দেবাস্থরেভ্যান্চ বস্থভ্যান্চ মহাত্যুতে । ॥ ১৫॥ रेक्नगु कायुनम्पर्वाठारेषः শৃণোমি ঘোষং তব দেবি! গঙ্গে!। গোপায়য়েম~ স্কুভাগে চিরিভাঃ, স্ক্রাজমীতাপ্রিতং নরেন্দ্রমূ। ১৬॥ দদস্ব শর্মা প্রবিক্ষিতে হিস্যু, देशनानिमारेक्षनसूर्छ । जुशमा। উক্তা তথ্য সাগরগাণ স বিপ্রো, যত্তো ভবস্বেতি শশাস পার্থন্ "—॥ ১৭॥ যুধিষ্ঠির উবাচ। ণ অপুর্বেহিয়ং সংভ্রমো লেমেশস্য, কুঞ্ সর্কে রক্ষত মা প্রমাদম্।

বিশালা বদরী ॥ ১১, ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ইব্রুদা ইব্রু স্থারি, নঃ,
জাষু নদং স্বর্ণ হ ত্রারাৎ পর্ব্বভাৎ মেরোঃ, গোপার্য়েডি নিজন্ত্র্যা রূপং,
দেবৈ রিভিশেষঃ, স্থার্থে বা নিচ্, আজমীডবংশে অপচিতং পুঞ্জিতং
ভোঠ মিতার্থঃ ॥ ১৬ ॥ দদপ দেহি ॥ ১৭ ॥ শৌচং বাড্যুনঃ কার শুদ্রিদ্

দেশো হয়ং তুর্গতমো মতোহসা,
তথাৎ পর্ব শৌচমিহাচরধ্বন্ "—॥ ১৮॥

বৈশশারন উবাচ।

'ততোহব্রনীন্তীম মুদারবীর্যাং,
ক্রফাং যন্তঃ পালয় ভীমদেন ।।

শুনোহর্জ্বনে সন্নিহিতে চ ভাত ।

তামের ক্রফা ভজতে ভয়েষু "—॥ ১৯॥

ততো মহাল্পা ন যমৌ সমেত্যা,

মূর্দ্ধরুপোড্রার বিমৃদ্ধ্য গাতে।

উবাচ ভৌ বাস্প্রকলং স রাজা,
মাভৈন্ট মাগক্তমপ্রমন্তো "—॥ ২০॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থ্যাত্রাপর্বাণি যুধিন্টিরবাক্যে একোনচত্বারিংশদ্ধিকশতভ্যমোহ্যারঃ ॥ ১৩৯॥

যুগতির উবাচ।

'' অস্তর্হিতানি ভূতানি বলবন্তি মহান্তি চ।

অমিনা তপসা চৈব শক্যং গল্পং বুকোদর । ॥ ১ ॥

সন্নিবর্ত্তর কৌন্ডের । ক্লুপেপানে বলাঞ্চরাৎ।

ততো বলঞ্চ দাক্ষ্যঞ্চ সংগ্রন্থের বুকোদর । ॥ ২ ॥

খবেন্তুরা ফ্রন্ডং বাক্যং কৈলাসন পর্বতন প্রতি।

বুদ্ধ্যাপ্রপণ্য কৌন্তের । কথন ক্লুফা গমিষ্যতি ॥ ৩ ॥

॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ভৈফ্ট মিভি চ্ছেদঃ ॥ ২০ ॥ ইত্যারণাকে পর্কাণ নৈলকগীরে ভারত ভাবদীপে উনচনারিংশদ্যিক শততমেহিধ্যায়ঃ ॥ ১৩৯ ॥

चर्डार्ट नीष्ट—च्यामग् ॥:॥२॥७॥॥

অথবা সহদেবেন ধৌমোন চ সমং বিভো!।
স্থতিঃ পৌরোগবৈশ্চব সর্বৈশ্চ পরিচারকৈঃ ॥ ৪ ॥
রথৈ রখৈশ্চ যে চান্যে বিপ্রাঃ ক্রেশাসহাঃ পথি ॥ ।
সর্বৈত্ত্বং সহিতো ভীম! নিবর্ত্তবায়তেক্ষণ!॥ ৫॥
ত্রেয়া বয়ং গমিষামো লঘু।হারা যতন্ত্রাঃ।
অহঞ্চ নকুলশ্চেব লোমশশ্চ মহাত্তপাং॥ ৬॥
মমাগমন মাকাজ্কন্ গঙ্গাছারে সমাহিতঃ
বসেহ দ্রৌপদী নক্ষন্ যাবদাগমন মম "—॥ ৭॥
ভীম উবাচ।

বাজপুলী শ্রমেণার্ভা জুঃখার্ভা চৈব ভারত । ।

 বজতার হি কল্যাণী শ্বেতবাহদিদৃক্ষয়া ॥ ৮ ॥

 তব চাপ্যরতিন্তীব্রা বর্ততে ত মপশ্যতঃ ।

 গুডাকেশং মহাস্থানং সপ্রামেশ্বং পলায়িনম্ ॥ ৯ ॥

কিং পুনঃ সহদেবক্ষ মাঞ্চ ক্রফাঞ্চ ভারত । ।

 ছিজাঃ কামপ নিবর্তন্তাং সর্বেচ পরিচারকাঃ ॥ ১০ ॥

 স্তাঃ পৌরোগবাশ্চেব ষঞ্চ মন্যেত নো ভবান্ ।

 ন হাতুমিচ্ছামি ভবন্তমিহ কিঃচিং ॥ ১১ ॥

 শৈলেহন্মিনাক্ষসাকীর্ণে ত্রেম্ব বিষমেশু চ ।

 ইযঞ্চাপি মহাভাগা বাজপুলী পতিব্রতা ॥ ১২ ॥

 বামৃতে পুরুষব্যান্ত ! নোৎসংহ্ছিনিবর্তিভুম্ ।

 তথৈব সহদেবোহরং সততং স্বামন্তব্রতঃ ॥ ১০ ॥

 তথৈব সহদেবোহরং সততং স্বামন্তব্রতঃ ॥ ১০ ॥

1811 61 91 411 41,911 70 1172 1175 1170 1

^{* &}quot; ক্লেশ সহ। " ইতি ক-পাঠঃ, তন্ন সাধু।

* যচ্চ ইতি ক পুৰুক্স্য!

ন জাতু বিনিবর্ত্তে মনোজ্ঞো হ্রছ মস্য বৈ।
অপি চাত্র মহারাজ! সব্যসাচিদিদৃক্ষয়া॥ ১৪॥
সর্বে লালসভূতাঃ স্ম তন্মাদ্যাস্যামহে পহ।
যদ্যশক্যো রথৈর্গন্তং শৈলোহয়ং বছকন্দরঃ॥ ১৫॥
পদ্ভিরেব গমিষ্যামো মা রাজনু! বিমনা ভব।
অহং বহিষ্যে পাঞ্চালী মত্র যত্র ন শক্ষ্যতি॥ ১৬॥
ইতি মে বর্ত্তে বুদ্ধির্মা রাজনু! বিমনা ভব।
স্থুকুমারৌ তথা বীরৌ মাজীনন্দিকরাবুভৌ।
তুর্গে সন্তারয়িন্যামি যত্রাশক্ষো ভবিষ্যতঃ''—॥ ১৭॥
যুদ্ধিষ্ঠর উবাচ।

"এবং তে ভাষমাণ্দ্য বলং ভীমাভিবৰ্দ্ধতাম।

যন্ত্ৰমুৎসহদে বোচুং পাঞ্চালীঞ্চ যশস্থিনীম্॥ ১৮॥

যমজৌ চাপি ভদ্ৰং তে নৈতদন্যত্ৰ বিদ্যতে।
বলং তব যশকৈচব ধৰ্মাঃ কীৰ্ত্তিশ্চ বৰ্দ্ধতাম্॥ ১৯॥

যন্ত্ৰমুৎসহদে নেতুং ভাতেরৌ সহ কৃষ্ণয়া।

মা তে প্লানিশ্বহাবাহো! মা চ তেহস্ত পরাভবঃ"—॥ ২০॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

ততঃ কুষ্ণাত্রবীদ্বাক্যৎ প্রহসন্তী মনোরমা। "গমিষ্যামি ন সন্তাপঃ কার্য্যো মাৎ প্রতি ভারত।"॥২১॥ লোমশ উবাচ।

'তপসা শক্যতে গন্তু পৰ্বতং গল্পমাদনম্। তপসা চৈব কৌন্তেয় ! সৰ্বে যোক্যামহে বয়ম্॥ ২২॥ ন ুলঃ সহদেবশ্চ ভীমসেনশ্চ পাৰ্থিব!। অহঞ্চ ত্ৰম্ব কৌন্তেয়! দ্ৰক্ষ্যামঃ শ্বেতবাহনম্"॥ ২৩॥

11 38 11 30 11 39 11 39 11 35 11 35 11 30 11 30 11 30 11

अवर मञ्जासमानाटल स्वताक् विस्तर गहर। দদুশুর্ম দিতা রাজন। প্রভৃতগত্তবাজিমৎ॥ ২৪॥ কিরাত তঙ্গণাকীর্ণ পুলি**ন্দণত**সস্কুলম্। হিমবত্যমরৈ জুফিং বহ্বাশ্চর্যাসমাকুলম। স্থবাছশ্চাপি তান্ দৃষ্ট্বা পুজয়া প্রতাগৃহত ॥ ২৫॥ বিষয়ান্তে পুলিন্দানা মীশ্বরঃ প্রীতিপূর্মকম্ ততত্ত্বপূজিতাত্ত্বন সর্ব্ব এব স্কুখোষিতাঃ॥২৬॥ প্রতম্ব বিষমলে স্থায়ে হিমবন্তং গিরিৎ প্রতি। हे<u>न्म</u>रमनपुर्या**९८ऋव ज्**ठान् लोट्यानवारख्या ॥ २०॥ स्मार अधितर्भारक (क्वीलिमा) र स्वरमा नूल !। রাজঃ পুলিন্দাধিপতেঃ পরিদায় মহারথাঃ ॥ ২৮॥ পদ্ভিরেব মহাবীর্য্যা যযুঃ কৌরবনন্দনাঃ। Co मंदेनः व्याज्यत् मर्स्य कृष्ण्या मह श्राख्याः। তস্মাদ্দেশাৎ স্থাপ কৃষ্টা দ্রন্ট কামা ধনঞ্জান্''—॥ ২৯॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি গন্ধমাদন প্রবেশে চত্বারিংশদ্ধিকশততমোহধ্যায়ং॥ ১৪०॥

যুগঠের উবাচ।

"ভীমদেন! যমৌ ় চোভৌ পাঞ্চালি! চ নিবোধত।
নান্তি ভূতস্য নাশো বৈ পশ্যতাম্মান্ বনেচরান্॥ ১॥
জুর্বলাঃ ক্লেশিকাঃ স্মেতি যদ্ধান্তরেতরম্।
ভশক্যেংশি ব্রজামেতি ধনঞ্জর-দিদৃক্ষয়।॥ ২॥
॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ প্রিদায় রক্ষার্থং সম্প্রা ॥ ২৮॥ ২৯॥
ইত্যারণ্যক প্রেণি নেলকটারে ভারতভাবদীশে চরারিং
শদ্ধিক শ্তব্যেহ্গ্যুহঃ॥ ১৪০॥

ভীমদেনেতি—ভূতস্য প্রাক্তনকর্মণঃ, নাশো ভোগব্যতিরেকেণ॥ ১॥ ২॥

তরে দহতি গাতাণি তুলরাশিমিকানলঃ। यक्र वीतः न भगामि धनक्षत्र मुनान्त्रिकार ॥ ७॥ তস্য দর্শনতৃষ্ণ^ মাং সানুজং বনমান্থিতম্। যাজ্ঞসেন্যা: পরামর্থ: স চ বীর । দহ্ভুতে ॥ ৪ ॥ নকুলাৎ পুর্বজৎ পার্থৎ ন পশ্যাম্যমিতৌ জসম্। অজের মুগ্রধন্বানং তেন তপ্যে রুকোদর <u>।</u> ॥ ৫ ॥ ভীর্থানি চৈব রম্যাণি বনানি চ সরাংসি চ। চরামি সহ যুমাভিন্তস্য দর্শনকাক্ষয়া। ৬॥ পঞ্চ বর্ষাণ্যহং বীর্ণ সত্যসন্ধ্রণ ধনঞ্জম্ম। ষন্ন পশ্যামি বীভৎস্থং ভেন তপ্যে রুকোদর।॥ १॥ তং বৈ শ্যামং গুডাকেশং সি-হবিক্রান্তগামিনম্। ন পশ্যামি মহাবাচ্ছং তেন তপ্যে রুকোদর ।। ৮।। কুতান্ত্রণ নিপুণ্ণ যুদ্ধেহ প্রতিমানং ধনুমতাম্। ন পশ্যামি কুরুশ্রেষ্ঠং তেন তপ্যে হুকে।দর 🕫 🕽 ॥ চরন্ত মরিসভেষু কালে ক্রন্ধমিষান্তকম্। প্রভিন্নমিব মাতঞ্চ কিংহকদ্বং ধনঞ্জম্॥ ১০॥ यः त्र मक्नामनवरता वौर्द्यान क्रविरान ह। যময়োঃ পুর্বজঃ পার্থ: খেতাখোহমিতবিক্রম: ॥ ১১ ॥ ছুঃখেন মহতাবিষ্টস্তন্ন পশ্যামি ফাল্কনম্। অজের মুগ্রধন্বানং তেন তপ্যে রুকোদর ! ॥ >২ ॥ मञ्ज यः कमाभीनः किनामात्वार नानीयमा। ঋজুমার্গপ্রপরস্য শর্মদাতা হভরস্য চ ॥ ১৩ ॥

॥ ৩॥ পরামর্থঃ (প্রাম্শঃ) কেশেষু গ্রহণম্ ॥ ৪॥ ৫॥ ७॥ १॥ ৮॥ জ্ঞ-ডিমানং নাজি প্রডিমানং সাদৃশ্যং যস্ত সোহ প্রতিমান ভ্যা। ৯॥ প্রেরষ্ স্বায়দম্। ১০॥ জনবরঃ জহীন॥ ১১॥ ১২॥ ১২॥

স তু জিন্ধপ্রব্রুস্য সায়রাভিজিঘাংসত:। অপি বজ্ঞধরুস্যাপি ভবেৎ কালবিষোপমঃ ॥ ১৪ ॥ শতোরপি প্রপন্নসা সোহনুশ শ: প্রতাপবান্। দাতাহভয়দ্য বীভৎস্থ রমিতাত্মা মহাবলঃ ॥ ১৫॥ मर्द्भवामाध्यस्य स्थापकः तर्पश्तीना ध्रमिका। আহর্তা সর্ব্বরত্থানাৎ সর্ব্বেষাৎ নঃ সুখাবহঃ । ১৬ ॥ त्रज्ञानि यगा वीर्र्यान निवानगामन् श्रुता सम । वर्ह्ना वहका होनि यानि श्रीश्वः सूर्याधनः ॥ ১१ ॥ যদ্য বাছবলাদ্ধীর ! সভাং চাদীৎ পুরা মম। সর্ব্বরত্বময়ী খ্যাতা তিষু লোকেষু পাণ্ডব 🖽 ১৮। বাস্থদেৰসমং বীৰ্য্যে কাৰ্ত্তবীৰ্য্যসমং যুধি ৷ অজেয়মমিতং যুদ্ধে তন্ন পশ্যামি ফাল্কনম্॥ ১৯॥ সক্ষর্থাৎ মহাবীর্য্যং ত্বাঞ্চ ভীমাপরাজিতম্। অনুষাতঃ স্ববীর্য্যেণ বাস্কুদেবঞ্চ শত্র হা ॥ ২০॥ যদ্য বাছবলে ভ্লাঃ প্রভাবে চ পুরন্দর:। জবে বাযুর্দ্ম খে সোমঃ কোধে মৃত্যু: সনাতন: ॥ ২১ ॥ তে বয়ং তং নরব্যাত্রণ সর্বের বীরণ দিদুক্ষর:। व्यादक्रारिया महावाद्शाः श्रविष्ठः शक्कमापनम् ॥ २२ ॥ বিশালা বদরী যত্ত নরনারায়ণাভামঃ। তং সদাধ্যুষিত । যকৈ জক্যামো গিরিমুক্তমম ॥ ২৩॥ কুবেরনলিনী রম্যা রাক্ষসৈ রভিষেবিতাম। পদ্ধিরেব গমিষ্যাম স্তপ্যমানা মহন্তপঃ । ২৪॥

ন চ যানবতা শক্যো গস্তু দেশো রকোদর !।
ন নৃশংদেন লুকোন নাপ্রশান্তেন ভারত !॥ ২৫ ॥
তত্র সর্বে গমিষ্যামো ভীমার্ক্ত্র্নপ্রবিষ্ঠি ।
সাযুধা বন্ধনিস্তিংশাঃ সার্ধা বিপ্রের্মহাত্রতৈঃ॥ ২৬ ॥
মাক্ষকাদংশমশকান ব্যাঘান্ সিংহান্ সরীস্থপান্ ।
প্রাপ্রোত্যানিয়তঃ পার্থ ! নিয়ত স্তান্ধ পশ্যতি॥ ২৭ ॥
তে বয় দিয়তাহারাঃ শ পর্বতং গন্ধমাদনম্ ।
প্রবেক্ষ্যামো মিতাহারা ধনপ্রয়দিদৃক্ষবঃ "—॥ ২৮ ॥
ইত্যারণাকে পর্বাণ তীর্থা,ত্রাপর্বাণ গন্ধমাদনপ্রবেশে
একচত্মারিংশদ্ধিকশতত্রমোহ্ধ্যায়ঃ ॥ ১৪১ ॥

লোমণ উবাচ।

' দ্রুষ্টারঃ পর্বতাঃ সর্বেন্দ্র নদ্যঃ সপুরকাননাঃ।
তীর্থানি চৈব শ্রীমন্তি স্পৃষ্টঞ্চ সলিলং করৈঃ॥ >
পর্বতং মন্দরং দিব্য মেষ পন্থাঃ প্রযাস্যতি।
সমাহিতা নিরুদ্বিগ্রাঃ সর্বেহ্ন ভবত পাগুবাঃ!॥ ২॥
ভায়ং দেবনিবাসো বৈ গন্তব্যো বো ভবিষ্যতি।
ঋষীণাঞ্চৈব দিব্যানাং নিবাসঃ পুণ্যকর্ম্মণামু॥ ৩॥

॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ অনিয়তঃ অশুচিঃ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥
ইত্যার্ণাকে পর্বাণি নৈলকণীয়ে ভারত ভাবদীপে একচহারিংশদধিক
শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪১ ॥

' अरकेष्ठि—(ङो अकोतः ! मर्ट्स मन्दर्गमद्भा शर्मा है जि स्मरः ॥ ১॥ २॥ ७॥

^{*} নিয়তাত্মানঃ ইতি ক ঘ প্রস্তকৌ।

*" দ্রস্কাবঃ * ইতি কঃ।

এवा निवजना श्रुगा योजि सोमा महामने। বদরীপ্রভবা রাজন ! দেবর্ষিগণসেবিতা ॥ ৪॥ थवा देवहायरेन निजार वा निथितेनामं होजा जिः। অর্চিতা চোপযাতা চ গন্ধবৈশ্চ মহাত্মভিঃ ॥ ৫॥ অত্র সাম স্ম গায়ন্তি সামগাঃ পুণ্যনিস্থনাঃ। মরীচিঃ পুলহদৈচব ভৃগুদৈচবাঙ্গিরান্তথা। ৬। অত্রাহ্রিক পুরত্রেষ্ঠো জপতে সমরুদ্যানঃ। माधारिकवाश्वित्नो देवव शांत्रश्वाविख ७० छम 🚜 ॥ १ ॥ চক্রমাঃ সহ সূর্যোণ জ্যোতী প্রিচ গ্রাইঃ সহ। অহোরাত্রবিভাগেন নদী মেতামনুত্রজন ॥ ৮॥ এত ন্যাঃ সলিল । মুর্দ্ধ্য রুষাক্ষঃ পর্য্যধারয় । গঙ্গাদ্বারে মহাভাগ। যেন লোকস্থিতির্ভবেৎ ॥ ১॥ এতা ও ভগবতীং দেবীং ভবন্তঃ সর্ব্ব এব হি। প্রতেনাত্মনা তাতা! অভিগম্যাভিবাদত''—। ১০॥ তস্য তদ্বচনং শ্ৰুত্বা লোমশ্স্য মহাত্ম্যঃ। আকাশগঙ্গা প্রাত্যঃ পাওবান্তেইভাবাদয়ন ॥ ১১॥ অভিবাদ্য চ তে সর্বে পাগুবা ধর্মচারিণঃ। পুনঃ প্রয়াতাঃ সংক্ষটাঃ সর্বে ঋষিগণৈঃ সহ। ১২।

মহানদী গন্ধা অলকনন্দা বা ॥ ৪ ॥ উপযাতা ইক্ট সিদ্ধার্থং প্রাথিতা ॥ ৫ ॥ সামগাঃ—তৈতিরীয়কে ত্রন্ধ বিলোয়ং সাম প্রায়তে 'এতং সামগায়রান্তে হা '৩, বুহা '৩, বুহা 'হা, বু অহমরন্'—ইত্যাদি, মরী চ্যাদরোহত্র সার্কান্তাং অস্য পশ্যতে। গায়ন্তীত্যর্থঃ ॥ ৬ ॥ আহ্লিকং নৈর্মিকং জপং, পরিধাবতি পরিচরতি, তং ইন্দ্রেম্ । ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ বাদত বাদয়ত 'অক্ষর লোগা আর্থঃ, ॥ ১ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ পাতুরং (পাতুরং)

^{*} সদা ইতি ক—পাঠঃ।

^{*} মূর্দ্ধি ইতি পাঠান্তরং।

ততো দুরাৎ প্রকাশন্ত পাগুরং মেরুসনিভয়। ममुखर अन्तर खर्का विकीर्ग नर्स्तर छ। मिनम् ॥ ১৩ ॥ তান্ প্রফুকামান্ বিজ্ঞায় পাগুবান্ স তু লোমশঃ। উবচে বাক্য× বাক্যজ্ঞঃ শৃণুধ্বং পাগু নন্দনাঃ ॥ ১৪॥ এত দ্বিকীর্ণ সুত্রীমৎ কৈলাস শিখরোপমম্। যৎ পশাসি নরশ্রেষ্ঠ ! পর্বত প্রতিমণ স্থিত । ১৫ ॥ এতান্য হস্থীনি দৈত্যস্য নরক্স্য মহাত্মনঃ। পর্বতপ্রতিমং ভাতি পর্বত প্রস্তরাশ্রিতম্ ॥ ১৬ ॥ পুরাতনেন দেবেন বিষ্ণুনা পরমান্মনা। দৈত্যে। বিনিহত 🤻 স্তেন স্কুররাঞ্ছিইত্যিণা ॥ ১৭ ॥ দশবর্ষদহস্রাণি তপস্তপ্য মহামনাः। ঐন্তং প্রার্থয়তে স্থান তপঃস্বাধ্যায়বিক্রমাৎ ॥ ১৮॥ তপোবলেন মহতা বাহুবেগৰলেন চ। নিত্যমেব ছুরাধর্ষো ধর্ষয়নু স দিতেঃ স্কুতঃ ॥ ১৯॥ স তু তদা বলং জ্ঞাত্বা ধর্ম্মে চ চরিতং ব্রতম্। ভয়াভিভূত: সংবিগ্ন: শক্ত আসীন্তদানঘ ! ॥ ২০॥ তেন সঞ্চিস্তিতো দেবো মনসা বিষ্ণু রব্যয়ঃ। সর্ব্যব্রগঃ প্রভুঃ শ্রীমানাগতশ্চ স্থিতো বভৌ ॥ ২১॥ ঋষয়শ্চাপি তং সৰ্বে ভৃষ্ট্ বুশ্চ দিবে কস:। ত पृष्ठी ज्लमान की र्जनान ह्याराहनः॥ २२॥ নফ্টতেজাঃ সমভবন্তস্য তেকোহভিভৎ'সিতঃ। তং দৃষ্ট্বা বরদন দেবং বিষ্ণুং দেবগণেশ্বরম্ ॥ ২৩ ॥ খেতিমৃ, অন্মূৰ্ণ রাশি মিতি শেষঃ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ নরকস্য ভৌমাহরস্য

^{*} তাত ! ইতি ক-

প্রাঞ্জলিঃ প্রণতো ভূত্বা নমস্কৃত্য চ বক্সভূৎ।
প্রাহ বাক্স, ততস্তূর্ণং শ্বতস্ত্র ভয়ং ভবেৎ॥ ২৪॥
বিষ্ণুক্বাচ।

'জানামি তে ভরং শক্র ! দৈত্যেক্রান্নরকান্ততঃ।

জব্রুং প্রার্থয়তে স্থানং তপঃসিদ্ধেন কর্ম্মণা ॥ ২৫ ॥

সোহহমেনং তব প্রীত্যা তপঃসিদ্ধ মপি ধুবমু।
বিযুনজ্যি দেহাৎ দেবেক্র ! মুহুর্ত্তং প্রতিপালয় ॥ ২৬ ॥
তস্য বিষ্ণু শ্বহাতেজাঃ পাণিনা চেতনাং হরং।
স পপাত ততো ভূমৌ গিরিরাজ ইবাহতঃ ॥ ২৭ ॥
তস্যৈতদন্তি সজ্ঞাত মায়াবিনিহতস্য বৈ ।
ইদং দ্বিতীয়মপরং বিষ্ণোঃ কর্ম প্রকাশতে ॥ ২৮ ॥
নন্টা বস্তুমতী কুৎস্মা পাতালে চৈব মজ্জিতা।
পুনরুদ্ধরিতা তেন বরাহেণেকশৃঙ্গিণা"—॥ ২৯ ॥
য়ুধিষ্ঠির উবাচ।

"ভগবন্! বিস্তরেণেমাং কথাং কথয় তত্ত্বতঃ।
কথ^ তেন স্থরেশেন নটা বস্থমতী তদা—।
যোজনানা শতং ব্রহ্মনৃ! পুনক্ষদ্ধরতা তদা॥ ৩০॥
কেন চৈব প্রকারেণ জগতো ধারণী ধরা॥ ৩১॥
শিবা দেবী মহাভাগা সর্বাশস্থ্যরোহিণী।
কস্য চৈব প্রভাবাদ্ধি যোজনানাং শত্র গতা॥ ৩২॥
কেনৈত্ত্বীর্য্য-সর্বব্রং দর্শিতং পরমান্মনঃ ?—।

২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ পাণিনা চপেটাঘাতেন, চেতনাং ছরদ্ প্রাণান্ জহার ॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ ॥ ৩১॥ কেন চ প্রকারেণ উদ্ধারতা পুনক্ষ তেতি যাবং॥ ৩১॥ গতা অধস্তাদিতি শেষঃ॥ ৩২॥ ৩৩॥

^{*} তত্ব মিতি পাঠান্তরং * ''ধারিণী' ইতি পাঠান্তর্ম।

এতৎ সর্বাণ বথাতত্ত্বমিচ্ছামি দ্বিজসম্ভম !। শ্রোতুং বিস্তর্শঃ সর্বাং স্বং হি তস্য প্রতিশ্রাঃ''—॥ ৩৩॥ লোমশ উনাচ।

"যন্তেহ্ন পরিপৃটোহন্মি কথামেতাং যুধিষ্ঠির!।
তৎ সর্বা মথিলেনেহ ক্রান্তাং মম ভাষতঃ॥ ৩৪॥
পুরা ক্রতম্বুগে ভাত! বর্ত্তমানে ভয়স্করে।
যমত্বং করিয়ামাস আদিদেবঃ পুরাতনঃ ॥ ৩৫॥
যমত্বং ক্রেতস্তম্য দেবদেবস্য ধীমতঃ।
তত্র ন মিয়তে কশ্চিজ্জায়তে বা তথাচ্যুত!॥ ৩৬
বর্জন্তে পিক্ষিমজ্ঞাশ্চ তথা পশুগবেডকম্।
গবাশ্বঞ্চ মৃগাশৈচব সর্বের তে পিশিতাশনাঃ॥ ৩৭॥
তথা পুরুষশার্দ্দ্ল । মারুষাশ্চ পরন্তপ!।
সহস্রশো হযুতশো বর্জন্তে সলিলং যথা॥ ৩৮॥
এতন্মিন্ সংকুলে তাত! বর্ত্তমানে ভয়স্করে।
অতিভারাদস্কমতী যোজনানাং শত্রু গতা॥ ৩৯॥
সা বৈ ব্যথিতসর্বাক্ষী ভারেণাক্রান্তচেতনা।
নারায়ণং বরু দেবং প্রপন্না শরণং গতা" শ্ব্রুবার।

"ভগৰং স্তৃৎপ্রসাদান্তি তিষ্ঠেয়ং স্কুচিরং ত্বিহ।
ভারেগাস্মি সমাক্রান্তা ন শক্রোমি স্ম বর্ভিতৃম্॥ ৪১॥
মমেমং ভগবন্! ভারং ব্যপনেতুং ত্ব মর্হান।
শর্ণাগতাস্মি তে দেব! প্রসাদং কুরুমে বিভো!"॥ ৪২॥
॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬॥ পশবশ্চ গাবশ্চ এড়কা মেষান্চ ইতি পশুগবেডক ম্
॥ ৩৭॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ৪৫॥ ৪১॥ ৪২॥

^{*} সনাতন ইতি ক—

* তদা ইতি ক—

তস্যাস্তদ্বচনং প্রদ্বা ভগবানক্ষরঃ প্রভুঃ। প্রোবাচ বচনং **হৃষ্টঃ প্রব্যাক্ষরস**মীরিতম্ ॥ ৪৩॥ নক্ষকবাচ।

' ন তে মহি! ভয়ং কার্যাং ভারার্ত্তে! বস্থধারিণি !। অহমেব তথা কুর্ম্মি যথা লঘ্বী ভবিষ্যাদি ''॥ ৪৪॥ লোমশ উবাচ।

'দ তাং বিদৰ্জ্যিত্বা তু বস্থধাং শৈলকুগুলাম। ততো বরাহঃ সংরম্ভ একশুঙ্গো মহান্ত্যুতিঃ ॥ ৪৫॥ রক্তাভ্যাং নয়নাভ্যান্ত ভয় সুৎপাদয়ন্নিব। ধূমঞ্চ জ্বলযল্ল ক্ষ্মা। তত্র দেশে ব্যবর্দ্ধত ॥ ৪৬॥ স গৃহীত্বা বস্থুমতীং শৃঙ্গেণৈকেন ভাস্বতা। যোজনানা৲ শতং বীর! সমুদ্ধরতি সোহক্ষরঃ॥ ৪৭॥ ত্যাং চোদ্ধায়াশাশায়াশ সজ্জোভঃ সমজায়ত। দেবাঃ সঙ্ক্ষ ভিতাঃ সর্বে ঋষয়শ্চ তপোধনাঃ ॥ ৪৮॥ হাহাতুত মভুৎ সর্বং ত্রিদিবং ব্যোম ভুস্তথা। ন পর্যাবস্থিতঃ কশ্চিদ্দেবে বা মানুষোহপি বা ॥ ৪৯॥ ততো ব্রহ্মাণুমাসীনং জ্বন্যান্মিব শ্রিয়া। দেবাঃ সর্ষিগণাকৈর উপতস্থ রনেকশঃ॥ ৫০॥ উপসর্প্য চ দেবেশ ব্রহ্মাণ লোকসাক্ষিণম। **ज्ञा शाक्ष**नग्रः मर्द्य वोकामुक्तांतग्रः छन्। ॥ ७ । লোকাঃ সম্কৃতিতাঃ সর্বে ব্যাকুলঞ্চ চরাচরম। সমুদ্রগ্রিপ্ত সক্ষোভিত্রিদশেশ। প্রকাশতে॥ ৫২॥

। ৪৩॥ ন তে ত্রা, হে মহি ! কুর্মি করে:মি॥ ৪৪॥ ৪৫॥ ধূমং ধূপং জ্বলর লিতি হৈতে শতৃ প্রতায়ঃ, যথা যথা ধুমো জ্বলতি তথা তথাছ বর্দ্ধত ইত। ধঃ॥ ৪৬॥ অক্ষরঃ বেদাআ।॥ ৪৭॥ ৪৮॥ ৪৯॥ ৫০॥ বাকাং উচ্চারয়ন্ উচ্চারত্বয়ঃ। ৫১॥ ৫১॥ ৫২॥

দৈষা বস্থমতী ক্বংস্না যোজনানা শতং গতা। কিমেত্ত কি প্রভাবেন যেনেদং ব্যাকুলং জগং। আখ্যাতু নো ভবান শীঘ্র বিসম্জ্ঞাঃ স্মেহ সর্ব্বশঃ ''॥ ৫০॥

बक्तावाड।

"অস্বেভা। ভয়ং নাস্তি যুমাক কুত্র চিৎ ক্লচিৎ।
ক্রয়তাং যৎক্তে ত্বেষ সঙ্গোভো জায়ভেইমরাঃ!॥ ৫৪॥
যোহসৌ সর্ব্বিগঃ শ্রীমানক্ষরাত্মা ব্যবস্থিতঃ।
তদ্য প্রভাবাৎ সঙ্কোভান্তিদিবস্য প্রকাশতে॥ ৫৫॥
দৈষা বস্থমতী ক্লংসা যোজনানাং শতং গতা।
সমুজ্তা পুনস্তেন বিষ্ণুনা প্রমাত্মনা॥ ৫৬॥
তদ্যা মুজার্য্যমাণায়া সঙ্জোভঃ সমজায়ত।
এবং ভবত্তো জানস্ত ছিদ্যতাং সংশয়ক্ষ বঃ "—॥ ৫৭॥

দেবা উচুঃ।

" ক তদ্ভুত বস্থু মতীং সমুদ্ধরতি হৃষ্টবং। তং দেব ভগবন্! বুহি তত্ত্ব ধাদ্যাসহে বন্নম্ "॥ ৫৮॥

बद्यांग्ह।

'' হন্ত গচ্ছত ভদ্রং বো নন্দনে পশ্যত স্থিতমু ।
এবোহত্ত ভগবান শ্রীমান স্থপর্গ: সং প্রকাশতে ॥ ৫৯॥
বারাহেণৈব ৰূপেণ ভগবালে কভাবনঃ।
কালানল ইবাভাতি পৃথিবীতলমুদ্ধরন্ ॥ ৬•॥
এতদ্যোরদি স্থবাক্তং শ্রীবৎদ মভিরাক্তে।
পশ্যধ্য বিবুধাঃ দর্বে ভূত মেতদ না ময়মু॥ ৬১॥

৫०॥ ६८॥ ६८॥ ६७॥ ६७॥ ६৮॥ नम्दन इस्वर्तन, पात अङ्मभीर्यः

লোমণ উবাচ।

"ততো দৃষ্টা মহাত্মানং শ্রুত্বা চামন্ত্রা চামরাঃ।
পিতামহং পুরস্কৃত্য জগ্ম দেনো যথাগতম্ "॥ ৬২॥

বৈশস্পারন উবাচ।

শুজ্বা তু তাং কথা সর্বে পাগুবা জনমেজয়!।
লোমশাদেশিতেনাশু পথা জগ্মঃ প্রস্কুটবং॥ ৬০॥ য়॥
ইত্যারণ্যকে পর্বানি তীর্থ্যাত্রাপর্বানি গন্ধমাদন প্রবেশে
দ্বি-চত্মারি শদ্ধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥১৪২॥

বৈশন্দারন উবাচ।
তে শ্রান্তভধবান স্থূনবন্তঃ সমার্গণাঃ।
বন্ধগোধাঙ্গ লিজাণাঃ খজাবন্তোহ মিতৌজসঃ॥ ১॥
পরিগৃহ দিজভোঠান জ্যেষ্ঠাঃ † সর্বধনুষ্মতাম্।
পাঞ্চালীসহিতা রাজন্! প্রযযু র্গক্ষমাদনম্॥ ২॥
সরাংসি সরিভিশ্চেব পর্ব্বভাংশ্চ বনানি চ।
র্ক্ষাণশ্চ বছলচ্ছায়ান্ দদৃশু র্গিরিমুর্কনি॥ ৩॥
নিত্যপুপ্রকলান্ দেশান্ দেবর্ষিগণসেবিতান্।
আজ্মনাজ্মান মাধায় বীরা মূলফলাশ্নিঃ॥ ৪॥
চেরু রুচ্চাবচাকারান্ দেশান্ বিষমসঙ্কটান্।
পশ্যন্তো মুগজাতানি বহুনি বিবিধানি চ॥ ৫॥

৬২॥ ৬৩॥ ইত্যারন্যকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বিচন্বারিংশদ্ধিক শততমো২ধ্যায়ঃ॥ ১৪২॥

তে শূরা ইতি—মার্গণিঃ শরাঃ॥১॥२॥৩॥৪॥৫॥

^{*} পথা ইত্যত্ৰ " যথা " ইতি ঘ-পুস্তকঃ, মন্যে ২ রং ভ্রম-পাঠঃ।
া শ্রেষ্ঠা ইতি ক-পুস্তকঃ প্রঠতি।

ঋ্যিসিকামরযুতং গন্ধবা প্রবসাং প্রিয়ন্। বিবিশুন্তে মহাত্মানঃ কিন্নরাচরিতং গিরিম্॥৬॥ প্রবিশৎস্বথ বীরেষু পর্বতে পদ্ধমাদনম্। চপুৰাতং মহৰ্ষং প্ৰাছুৱাসীদ্বিশাস্পতে।॥৭॥ ততো রেণুঃ সমুদ্ধৃতঃ সপত্রবছলো মহান্। পৃথিবীঞ্চান্তরীক্ষঞ্দ্যাইঞ্ব সহসার্ণোৎ ॥ ৮॥ ন স্ম প্রজ্ঞায়তে কিঞ্চিদার্তে ব্যোমি রেণুনা। ন চাপি শেকু ত্তে কর্ত্তুমন্যোন্যদ্যাভিভাষণম্॥ ৯॥ ন চাপশ্যংস্ততোহন্যোন্যং তমসার্ভচক্ষুয়ঃ। আকুষ্যমাণা বাতেন সাশাচর্ণেন ভারত !॥ >०॥ দ্ৰুমাণাং বাতভগ্নানাৎ পততাং ভূতলেহনিশন্। অন্যেষ্প্র মহীজানাং শব্দঃ সমভবন্মহান্॥ ১১॥ দ্যৌঃ স্বিৎ পততি কিং ভূমি দীৰ্ঘান্তে পৰ্যতা নু কিম্। ইতি তে মেনিরে সর্কে প্রনেনাতিমোহিতাঃ॥ ১২॥ তে পথানন্তরান্ কৃক্ষান্ বল্যীকান্ বিষমাণি চ। গাণিভিঃ পরিমার্গন্তো ভীতা বায়ো র্মিলিল্যিরে॥ ১৩॥ ততঃ কাৰ্ম্মুক মাদায় ভীমসেনো মহাবলঃ। কুঞামাদায় সঙ্গমা তস্থাবাজিত্য পাদপম্॥ ১৪॥ ধর্মরাজশ্চ ধৌম্যশ্চ নিলিল্যাতে মহাবনে। অগ্নিহোত্রাণ্যুপাদায় সহদেবস্ত পর্বতে॥ ১৫॥ নকুলে। ব্ৰাহ্মণাশ্চান্যে লোমশশ্চ মহাতপাঃ। ় রুক্ষানাসাদ্য সংত্রস্তা স্তত্র তত্র নিলিল্যিরে॥ ১৬॥

॥ ৬॥ १॥ ৮ ॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ পথা মার্কোন, অনস্তরান্ সন্নিহিতান্, নিলিলিটেরে নিলীমাঃ॥ ১৩॥ সংগম্য আদারেতাবয়ঃ, গড়া গৃহীজে ত্যর্থঃ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥

মন্দীভূতে তু প্রনে ত্স্মিন্জ্সি শাম্যতি। মহন্তিৰ্জলধারৌ হৈ বৰ্ষ মভ্যাজগাম হ। ১৭। ভূশৎ চটচটাশব্দে। বজ্ঞাণাৎ ক্ষিপ্যতামিব। তত স্তা শ্চঞ্চলাভাসা শ্চেক্স রব্রেষু বিছ্যুতঃ॥ ১৮॥ ততেহিশাসহিতা ধারাঃ সংরুণ্ত্যঃ সমস্ততঃ। প্রপেতু রনিশং তত্র শীঘ্রবাতসমীরিতাঃ॥ ১৯॥ তত্র সাগরগা হাপঃ কীর্য্যমাণাঃ সমন্ততঃ। প্রাত্মরাসন্ স্কুকলুষাঃ ফেনবত্যো বিশাম্পতে ! ॥ ২০॥ বহুভ্যো বারি বছলং ফেনে।ছুপ-পরিপে তম্। পরিসদ শহাশবাঃ প্রকর্ষন্তো মহীরুহান্॥ ২১॥ তিমান পরতে শব্দে বাতে চ সমতাং গতে। গতেহ্স্তুসি চ নিশ্লানি প্রাত্নভূতি দিবাকরে॥ ২২॥ নিজগ্ম স্তে শনৈঃ দর্বে সমাজগ্ম শ্চ ভারত।। প্রতন্থিরে পুনবীরাঃ পর্বতি গন্ধমাদনম্ "—। ২৩॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণ গন্ধমাদন প্রবেশে ত্রিচস্বারিৎশদ্ধিকশততমোহ ধ্যায়ঃ॥ ১৪৩॥

বৈশন্দারন উবাচ। ক্রোশমাত্রণ প্রয়াতেয়ু পাণ্ডবেষু মহাত্মস্থ। পদ্ভ্যামমুচিতা গন্তং ফ্রোপদী সমুপাবিশং ॥ ১॥

॥ ১৭॥ ১৮॥ অশ্বসহিতাঃ করকাদি সহিতাঃ॥ ১৯॥ ২০॥ বারিবছত্ত্যে নদ্যঃ॥ ২১॥ ২২॥ ২৩॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি,নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিচন্ধারিংশদ্ধিক । শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪৩॥

কোশমাত মিতি—11 > K

ভীমসেন উপাচ।

'বাং রাজনু জপু জীঞ্চ যমো চ পুরুষর্যভৌ।

স্থান নেব্যামি রাজেন্দ্র! মা বিবাদে মনঃ রুথাঃ॥২৩॥

হৈডিয়ান্চ মহাবীর্যো বিহুগো মন্ধলোপমঃ।

বহেদনঘ! সকালো বচনান্তে ঘটোৎকচঃ!"—॥২৪॥

বৈশালামন উবাচ।

* অনুজ্ঞাতো ধর্মারা পুজং সন্মার রাক্ষসম্।

ঘটোৎকচন্ত ধর্মান্মা শৃতমাতঃ পিতৃত্তদা॥২৫॥

কুতাঞ্জলি রুপাতিষ্ঠদভিবাদ্যাথ পাঞ্চবান্।

উবাচ ভীমসেনং দ পিতরং ভীমবিক্রমম্। ''স্তোহস্মি ভবতা শীঘ্রং শুক্রম্ব রহমাগতঃ॥২৭॥ আজ্ঞাপায় মহাবাহো ! দর্কাং কর্তাম্মসংশয়ম্ ''। তচ্চ্ত্রা ভীমসেনস্ত রাক্ষমং পরিষম্বজে॥২৮॥

ব্রাহ্মণাংশ্চ মহাবাহুঃ স চ তৈ রভিনন্দিতঃ ॥ ২৬॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ তীর্থযাত্রাপর্বাণ গল্পমাদনপ্রবেশে চতুশ্বস্থারিংশদ্ধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৪৪॥

(সর্বাণি স্পটারি)বিহণ ইব বিহণঃ খেচরঃ॥২৪॥২৫॥২৫॥২৬॥২৭॥ পরিষ্মতে আলিকনং চকার॥২৮॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুশ্চহারিং শদ্ধিক শততমোৎধ্যায়ঃ ॥ ৪৪৪ ॥

^{*} অস্মাৎ প্রাকৃ '' এতং জ্রুছা তু বচন ও ভীমদেনস্য ধর্মরাটু। ভীমং সংপূদ্ধরংস্তুক এবমস্থিতাভাষত।"—ইত্যধিক পাঠঃ ক-পুস্তুকে লভ্যতে।

যুধিষ্ঠির উবাচ।

" ধর্মজ্ঞো বলবাঞ্জুরঃ সত্যো রাক্ষসপুষ্পবঃ। ভক্তোহস্মানৌরসঃ পুজো ভীম ! গৃহ্ণাতু মা চিরদ্ *॥ >॥ তব বাছবলেনাহ মতিভীমপরাক্রম!। অক্ষতঃ সহ পাঞ্চাল্যা গচ্ছেয় প্রস্কুমাদনম্—"॥ ২॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ভ্রাতুর্ব্বচন মাজ্ঞায় ভীমদেনো ঘটোৎকচ্য। আদিদেশ নরব্যাঘ্র স্তনরং শক্তুকর্ষণম্ ॥ ৩॥ " হৈডিষেয়! † পরিশ্রান্তা তব মাতা২পরাজিত।। ত্বঞ্চ কামগম স্তাত। বলবান্ ৰহ তাৎখগ।॥৪॥ ক্ষন্ত্র মারোপ্য ভদ্রস্থে মধ্যেহস্মাকৎ বিহায়দা। গচ্ছ নীচিকয়া গত্যা যথা চৈনাংন পীডয়েঃ "—॥ ৫॥

घटिं। कि छेवाह।

৫ ধর্মরাজঞ্চ ধৌম্যঞ্চ কৃষ্ণাঞ্চ যমজৌ তথা। একোহপ্যহমলং বোঢ়ং কিমুতাদ্য সহায়বান্।। ৬।। অন্যে চ শতশঃ শূরা বিহ্গাঃ কামৰূপিণঃ। সৰ্বান বো ব্ৰাহ্মণৈঃ সাৰ্দ্ধং বক্ষ্যন্তি সহিতানঘ ! "—॥ १ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

এবমুক্ত্রা ততঃ কুষণ মুবাহ স ঘটোৎকচঃ। পাণ্ডুনান মধ্যগো বীরঃ পাগুরানপি চাপরে। ৮। লোমশঃ সিদ্ধমার্গেণ জগামানুপমত্যুতিঃ। স্বেনৈব স প্রভাবেন দ্বিতীয় ইব ভাস্কর:॥ ৯॥ ধর্মজ ইতি—(সুণ¶নু)॥১॥২॥৩॥৪॥৫॥৬॥বক্ষাতি বছনং

করিবান্তি॥৭॥৮॥৯॥

^{*} মাতর্ম্ ইতিক-পুস্তকে লভ্যতে ተ " হৈড়িষেয়ন্ " ইতি ক —

ব্রাহ্মণাং শ্চাপি তান্ সর্বান্ সমুপাদায় রাক্ষ্মাঃ। নিয়োগাদ্রাক্ষদেক্রন্য জগ্যু ভীম পরাক্রমা:॥ ১০॥ এবং স্থুরমণীয়ানি বনান্ত্যপ্রনানি চ। আলোকরন্তত্তে জগ্মুর্বিশালাং বদরীং প্রতি॥ ১১॥ তে ত্বাশুগতিভি বীরা রাক্ষসৈত্তৈ র্মাহাজবৈঃ। উञ्चाना ययुः भौखर महत्रश्रन मण्यत्य ॥ ১२ ॥ দেশানু স্লেচ্জনাকীর্ণানু নানার্ড্রার দদুশুর্গিরিপাদাং শ নানাধাতুসমাচিত:ু ্ব ৩ ব বিদ্যাধরগণাকীর্ণান্ যুতান বানরকিন্নরৈঃ। তথা কিম্প রুষৈশ্চেব গন্ধার্কিশ্চ সমন্ততঃ । ১৪॥ ময়ুরৈ † শুমরৈশৈত বানরৈ রুরুভিন্তথা। বরাইহ র্গবইয়ৈলৈত্ব মহিবৈশ্চ সমারতান্॥ ১৫ ॥ নদীজালসমাকীণান্ নানাপকিযুতান্ * বহুন। নানাবিধৈৰ্ম্য গৈজু ফীন বারলৈন্চোপশোভিতান্ ॥ ১৬॥ সমদৈশ্চাপি বিহগৈঃ পাদপৈরন্বিতা শতথা। তেহবতীৰ্য্য বহুন দেশালুজরাংশ্চ কুৰনপি॥ ১৭॥ मनुक्षिविधार्क्याः रेक्लामे अर्वराज्यस्य । তস্যাভ্যাসে তু দদৃশু র্বরনারায়ণাশ্রমম্। ১৮॥ উপেত পाদপৈ दिंदैयाः मना भूष्णकत्नाभरेगः। प्रमुख्य अप्रति वृद्धक्का परनात्रमाम् ॥ ১৯ ॥

॥১০॥১১॥১২॥রত্বাকরেঃ আসমস্তাৎ যুতান্॥১৩॥১৪॥১৫॥১৬॥ ॥১৭॥অভ্যাসে (অভ্যাশে) সমীপে॥১৮

 ^{* &}quot; সৃমরেः" ইতি ক-পুস্তকস্য।
 † "কতান্"— ইত্যাপি কচিৎ, তর সাধু।

ক্রিন্ধা মবিরলচ্ছায়াং শ্রিয়া পরময়; যুতাম। পত্রৈঃ স্নিথ্যে রবিরলৈ রুপেতা > মৃত্রভিঃ শুভাম॥ ২০॥ বিশালশাখাং বিস্তীণামভিদ্যাতি-সমন্বিভাম। ফলৈ ৰুপচিতৈর্দ্ধিয়ে রাচিতাং স্বাদ্ধুভি ভূ'শম্॥ ২১॥ मधुय्यदेवः मना निवार महर्षिशनरमविजाम्। মদপ্রমুদিতৈ নিতাং নানাদ্বিজগণৈ র্য তাম ॥ ২২ ॥ जनः भ-मभारक (मर्भ वस्त्रुवकरवानरक। নীলশাদ্বলসংছন্নে দেবগন্ধর্কিদেবিতে। ২৩॥ স্বসমীকুতভূভাগে স্বভাববিহিতে শুভে। জাতাং হিম-মৃত্যুস্পর্শে দেশেহপহতকণ্টকে॥ ২৪॥ তানুপেত্য মহাত্মানঃ মহ তৈ ত্রাহ্মণ্রভঃ। অবতের স্ততঃ সর্বে রাক্ষ্য-স্বন্ধতঃ শনৈঃ॥ ২৫॥ ভতত্তমাশ্রমৎ রমাৎ নরনারায়ণাশ্রিতম। দদশুঃ পাত্তবা রাজন ! সহিতা দ্বিজপুঞ্চ বৈঃ॥ ২৬॥ তমসা রহিতং পুণ্য মনামৃষ্ট - রবেঃ করৈঃ। कुछ्मीराक्षरमार्टवक विक्र टमाकनामनम्॥ २१॥ মহর্ষিগণ্সয়াধৎ তাখ্যা লক্ষ্যা সমস্বিত্য। ছুষ্প বেশং মহারাজ ! নরৈ ধর্ম্মবহিষ্ক তৈঃ ॥ ২৮॥ বলিহোমাচিতিং পুণাং স্থসংমৃষ্টানুলেপনম। দিব্যপু**ষ্পোপহা**রৈশ্চ সর্বতোহভিবিরাজিতম্ ॥ ২৯ ॥

॥২১॥২১॥২০॥ অভাবত এব বিশেষেণ হিতে অভাববিহিতে, জ্বাতাং, বদরীম্॥২৪॥২৫॥ ৡ৬॥২৭॥ মহর্ষিণ দম্বাধং ঋষিণণ ব্যক্তং, ব্রাক্ষা লক্ষ্যা ঋণাজুঃ দামাজিকয়া ''ঋচঃ দামানি বজুংখি দাছি জ্রী রম্বা দতাম্"—ইতি ভাতেঃ॥২৮॥ সুষ্ঠ্ দম্কুং দমাজ নং অভ্লেপনংচ যত্ত ৩৫॥২৯॥

বিশালৈ রগ্নিশরণৈঃ সগভাতেও রাচিত ~ শুভিঃ । মহন্তি স্থে। রকলসৈং কঠিলৈ শ্চোপশোভিত্য ॥ ৩০॥ শরণ্যং সর্বভূতানাং ব্রহ্মঘোষনিনাদিত্য। দিব্য মাশ্রয়ণীয়ন্ত মাশ্রমং শ্রমনাশনম্। ৩১॥ শ্রিয়া যুত মনির্দেশ্যং দেবচর্য্যোপশোভিতম। কলমূলাশনৈ দান্তৈ * শ্চাৰুক্ষণাজিনামূরেঃ॥ ৩২ ॥ সূর্যাবৈশ্বানরসমৈ স্থপদা ভাবিতাল্পভিঃ। মহর্ষিভিদ্যোক্ষপরৈ র্যতিভি রিয়তেন্দ্রিয়ে ॥ ৩৩ ॥ ব্ৰন্মভূতৈ শ্মহাভাগৈ ৰূপেতং ব্ৰহ্মবাদিভিঃ। সোহভ্যগচ্চনহাতেঁজাস্তানৃধীন্ প্রয়তঃ শুচিঃ॥ ৩৪॥ ভাত্তিঃ সহিতো ধীমান ধর্মপুলো যুধিষ্ঠিরঃ। দিব্যজ্ঞানোপপনাস্তে দৃষ্ট্য প্রাপ্তং যুধিষ্ঠিরম্। ৩৫। অভ্যগচ্ছ স্থ প্রতিঃ সর্বর এব মহর্ষয়ঃ। আশীর্কাদান প্রযুঞ্জানাঃ স্বাধ্যায়নিরতা ভূশন্॥ ৩৬॥ প্রীতাত্তে তদ্য সৎকারং বিধিনা পাবকোপমাঃ। উপাজহ 掩 সলিলং পুষ্পামূলফলং শুচি ॥ ৩৭ ॥ স তৈঃ প্রীত্যাথ সৎকার মুপনীতং মহর্ষিভিং। প্রয়তঃ প্রতিগৃহাথ ধর্মরাজো যুধিষ্ঠিরঃ। ৩৮॥

অগ্নিশরণৈঃ অগ্নাগারৈঃ, আচিতেং ব্যাপ্তম্, কঠিনৈঃ শিকাঃ করতৈ র্বা ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ বেদচর্যা সভ্যসঙ্ক পাহাদিক। তয়া উপশোভিতম্ ॥ ৩২ ॥ ৩০ ॥ ব্রহ্মভূতিঃ ব্রহ্মবিত্ত্বেন ব্রহ্মভাবং গতৈঃ তথাচ শুছতিঃ "ব্রহ্মবিদ্ ব্রহম্মব ভবতি"—ইতি ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩১ ॥ সৎকারং চকু রিভি শেহঃ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥

^{* &}quot; চীর কৃষ্ণা জিনাম্বরেঃ"--ইতি ক-পাঠঃ 1

তং শক্রসদনপ্রধ্যং দিব্যগন্ধমনোরময়। প্রীতঃ স্বর্গেপমং পুণ্যং পাপ্তবঃ সহ রুষ্ণয়া॥ ৩৯॥ বিবেশ শোভয়া যুক্তং ভ্রাতৃভিশ্চ সহানঘ!। ব্রাক্ষরৈ র্কেদেবেদাঙ্গপারগৈশ্চ সহস্রশঃ ॥ ৪৯॥ তত্রাপশ্যত ধর্মাত্মা দেবদেবর্ষিপূদ্ধিতম্। নরনরোয়ণ্স্বান্স ভাগীরখ্যোপশোভিত্রমু॥ ৪১॥ পশ্যন্তত্তে নুরব্যান্ত্রা রেমিরে তত্ত্র পাওবাং। মধুস্রবহল দিবা বৃদ্ধিগণ্মেবিত্য ॥ ৪২ ॥ তত্বপেত্য মহাত্মান স্তেহ্বদন্ ব্ৰাক্ষণৈঃ সহ। মূদা যুক্তা মহাত্মানো রেমিরে তত্র তে তদা ॥ ৪৩॥ আলোকয়তো মৈনাকং নানাদ্বিজগণাযুত্তম্। * হিরণশিখরপ্রৈ তচ্চ বিন্তুসরঃ শিব্য ॥ ৪৪ ॥ তিখিন বিহরমাণাশ্চ পাতিবাঃ সহ রুফায়া। মনোজ্ঞে কাননবরে সর্বর্তুকুস্কমোজ্জুলে॥ ৪৫॥ পাদপ্রৈঃ পুষ্পবিকচৈঃ ফলভারাবনামিভিঃ। শোভিতে সর্বতো রম্যৈঃ পু^স্কোকিলকুলাযুকৈঃ ॥৪৬॥ স্পিশ্বপত্র রবিরলৈঃ শীতচ্ছারৈ র্মনোরমৈঃ। সরাংসি চ বিচিত্রাণি প্রসল্ললানি চ॥ ১৭॥ क्योतः (मार्पेलिस्व जाक्यानानि मर्दनः। পশ্যস্তাৰুৰপাণি ৱেমিরে তত্র পাগুবাং ॥ ৪৮॥ পুণ্যগন্ধঃ স্থাম্পর্শো ববৌ তত্র সমীরণঃ। হ্লাদয়ন্ পাণ্ডবান্ দুৰ্ব্বান্ দ্ৰৌপদ্যা সহিতান্ প্ৰভো!॥ ৪৯॥ ॥৩৯॥৪০॥৪১॥৪২॥ ভর্পেতা তৎস্থানং প্রাপা। ৪৩॥৪৪॥৪৫॥ পুষ্পাবিকচৈঃ বিক্ষিত কুমুমৈঃ॥ ৪৬॥ ৪৭॥ ৪৮॥ ৪৯॥ দীভাং নামভঃ,

* " গগৈ গু তম্"—ইতি ঘ-পুস্তকঃ ।

ভাগীরথী সুহার্থাঞ্চ শীতাং বিমলপক্ষজাম্।
মণিপ্রবালপ্রস্থারা পাদপৈ রুপশোভিতাম্॥ ৫০॥
দিবাপুষ্পাসমাকীর্ণাং মনসঃ প্রীতিবর্দ্ধিনীম্।
বীক্ষ্যমাণা মহাত্মানো বিশালাং বদরীমন্ত্ম॥ ৫১॥
তিস্মিন্ দেবর্ষিচরিতে দেশে পরমতুর্গমে।
ভাগীরথীপুণাজলে তর্পয়াঞ্চ ক্রিরে পিতৃন্॥ ৫২॥
দেবান্বী শেচ কৌন্তেয়াঃ পরম শৌচমান্তিহাঃ।
তত্র তে তর্পয়ন্তশভ জপতাশ্চ কুরুদ্ধহাঃ॥ ৫০॥
ব্যাস্থানিঃ সহিতা বীরা হ্রমন্ পুরুষ্ধহাঃ।
কুষ্ণায়ান্তর পশ্যুঃ ক্রীডিতান্মের প্রভাঃ।
বিচিত্রাণি নরব্যান্তা রেমিরে তত্র পা গুবাঃশান্ত প্রবেশে
পঞ্চজ্যারিংশদ্ধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৪৫॥

বেশন্সায়ন উবাচ।
তত্র তে পুরুষব্যান্তাঃ পর্মন শৌচমান্থিতাঃ।
ষড়াত্র মবসন্ বীরা ধনপ্তয়নিদৃক্ষবঃ॥ >॥
ততঃ পূর্ব্বোন্তরো বাযুঃ প্রমানো যদৃচ্ছয়া।
সহস্রপত্র মর্কাভ্ন দিব্যং পদ্ম মুপাহরৎ॥ ২॥

শীতা মিতি তালব্য পাঠে—শীতগুণ যুক্তাং, প্রস্তারঃ সোপান পাদগণাদিরপঃ, ঘট্টইত্যর্থঃ॥ ৫০॥ ৫১॥ ৫২॥ ৫২॥ ৫৪॥ ভিত্যারণ্যকে পর্য্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদ্বীপে পঞ্চমারিং
শাদধিক শততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৪৪॥

তত্ত্বেতি—॥ : ॥ পুর্ব্বোত্তরে ঐশানকোণে॥ ২॥

जन्दिक्व श्रीक्षांनी क्रियुशक्यः मरनातम्। অনিলেনাহ্নতং ভূমৌ পতিতং জলজং শুটি॥ ৩॥ তচ্ছতা শুত মাসাদা সৌগলিক মনুত্তমম্। অতাব মুদিতা রাজন। ভামদেন মথাব্রবাৎ॥ ৪॥ পশা দিবাৎ স্কৃতিরং ভীম ! পুষ্পমনুত্তমম্ । গন্ধান্ত।ন্দপানং মনসোমম নন্দনম্॥ ৫॥ ইদ্ঞ ধর্মরাজায় প্রদাস্যামি পরন্তপ।। इरत्रम् मन कामाग्न कामारक श्वनताव्यस्म ॥ ७ ॥ यमि (७२३५ खित्रा शार्थ ! दहुनीयासूराशास्त्र ! তান্যহং নেতুমিজামি কাম্যবং পুনরাশ্রময় ''—॥ १॥ এবমুক্তা শুভাপাঙ্গী ভাঁমদেন মনিদিতা। জগাম পুষ্পমাদার ধর্মরাজায় তত্তদা ॥ ৮॥ অভিপ্রায়ন্ত বিজ্ঞায় মহিষ্যাঃ পুরুষষভঃ ! প্রিয়ায়াঃ প্রিয়কামঃ স প্রায়াদ্ভীমো মহাবলঃ॥৯॥ বাতংত মেবাভিমুথো যতন্ত্ৰ পুষ্পামাগতম্। আজিহীযুজিগামাশু স পুষ্পাণ্যপরাণ্যপি॥ ১०॥ क्कार्ष्ट्रके धनुर्भ इ नतार कानीवित्याप्रमान्। মৃগারাডিব সংক্রুক্ট প্রভিন্ন ইব কুঞ্জরঃ॥ ১১॥ দদুশুঃ সর্বাভূতানি মহাবাণধরুর্ধরুষ। ন গ্লানি র্ম চ বৈক্লব্য ন ভয়ং ন চ সম্ভ মঃ ॥ ১২ ॥

॥ ৩॥ শুভা কলাণী, শুভং শোভাগুতং, সৌগদ্ধিকং পদ্ম জাতিভেদঃ
॥ ৪॥ গদ্ধেতি—সংস্থানং আকারঃ॥ ৫॥ হর আহর, ইদং এডজ্ঞাতীয়ম্
॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ প্রভিন্নঃ মতঃ॥ ১১॥ প্রানি-বৈক্রবাে দেইচিত্রো রবসাদৌ, ভয়ং তৎকারণং স্বোফ্ছেদ বুদ্ধিঃ, ভয়াভাবাদেব ময়া যত্নেন গত্তবা মিত্যাদরঃ সন্তুমঃ সোপি তং ন জুখতে সেবতে, তত্ত্ব হেতু রাত্মজ মিতি,—মাতরিশ্বনঃ বারোঃ সাদ্ধিলোকো বা বাক্যম॥ ১২॥

কদাচিজ্ঞাবতে পার্থ মাত্মজং মাতরিশ্বনঃ দ্রৌপদ্যাঃ প্রিয়মন্বিচ্চন্ স বাস্ত্রক মান্সিতঃ ॥১৩॥ ব্যপেতভয়সংমোহঃ শৈল মভ্যপতদ্বলী। স ত - ক্রমলতাগুলা ছ্র - নীলশিলাতলম্। ১৪॥ গিরিঞ্চারারিহরঃ কিন্নরাচরিত শুভম। নানাবর্ণধরৈশিচত্র~ ধাত্দ্রনমুগাগুজৈঃ॥ ১৫॥ मर्वव्रवनम्भूनं जृरमञ्जिमिरवाकि ज्य । সর্ববর্ত্তরমণীরেষু গন্ধমাদনসামুষু ॥ ১৬ ॥ সক্তচক্রভিপ্রায়ান্ হৃদরেনানুচিত্যন্। পুংকোকিলনিনাদেষু ষট্পদাচরিতেষু চ ॥ ১৭ ॥ বন্ধশ্রেমনশ্যমু জ্গামামিতবিক্রমঃ। আজিঘন স মহাতেজাঃ সর্বর্কুসুমোদ্বম্॥ ১৮॥ গন্ধ সুদ্ধত সুদ্ধামো বনে মন্ত ইব দ্বিপঃ। বীজ্যমানঃ স্থপুণোন নানাকুস্থমগ্রিনা। ১৯॥ পিতৃঃ সংস্পর্শশীতেন গন্ধমাদনবাযুনা। ব্রিয়মাণ্ডামঃ পিত্রা স্প্রহৃষ্টতনুরুহঃ॥ ২०॥ স্যক্ষণক্ষর্য স্থর ব্রহ্মর্ষিগণসেবিভয় ! বিলোকয়ামাস তদা পুষ্পাহেতো ররিন্দমঃ॥২১॥ 🜞 वियमष्ठ्रेष ब्रांघरें उ ब्रन्स् वियमष्ट्रेतः । विभरेलर्थाज्विराष्ट्ररिकः काक्षनाञ्जनताजरेजः।

॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ অভিপ্রারান্দে বিশ্ববি-গন্ধর্বাদি লীলোররন হেতুন্পুদ্দা কুশাদি সংস্তরান্॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥/১৯ ॥ পি ভূর্যথা পুত্র স্পর্শাঃ শীত স্তাদৃক্ স্পর্শবিতা বায়ুনেতার্থঃ, পিতা বায়ুনা॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ধাতু

^{* &}quot; বিষমক্ষেদ রচিতৈঃ " ইতি পাঠান্তরং বর্ততে।

সপক্ষমিব নৃত্যন্ত পাশ্বলিগৈঃ পয়োধরৈঃ॥ ২২॥

মুক্তাহারৈরিব চিতং চ্যুতেঃ প্রস্রুবনাদকৈঃ।

অভিরাম-দরীকুঞ্জনিকরোদক-কন্দরম্॥ ২৩॥

অপ্সরোকুপুর-রবৈঃ ৺ প্রন্ত বরবির্ধি গম্।

দিগারণবিষাণাত্য শ র্ফোপলশিলাতলম্॥ ২৪॥

অস্তাংশুকমিবাক্ষোভা নিম্নগা-নিঃস্টত জলৈঃ।

সশস্পকবলৈঃ স্বস্থৈ রদুরপরিবর্তিভিঃ॥ ২৫॥

ভয়ানভিক্তৈ ইরিণৈঃ কৌতুহলনিরীক্ষিতঃ।

চালয়ানন্দ বেগেন লভাজালান্যনেকশঃ॥ ২৬॥

আকীডমানো ক্টালা শ্রীমান্ বাযুস্থতো যথৌ।

প্রিয়ামনোরথ কর্তু মুদাতন্ত ক্লোচনঃ॥ ২৭॥

প্রাংশ্রং কনকবর্ণভিঃ সিংহস হননো যুবা।

মন্তবারণবিক্রান্তো মন্তবারণবোরণঃ।

প্রিয়পাশ্বেপিবিক্টাভি ব্যারন্ত্রাভি ব্যিচেটিতৈঃ॥ ২৯॥

প্রিয়পাশ্বেপিবিক্টাভি ব্যারন্ত্রাভি ব্যিচেটিতৈঃ॥ ২৯॥

বিচ্ছেদেঃ ধাতুভেদেঃ, অঙ্কুলৈরিব বিষমক্ষ্টিদঃ সপ্ত পর্ণাদিভি নার্নাধাতু রাজ্ঞতপত্তিঃ রচিটেঃ বলিভিঃ ত্রিপণ্ড কাকারৈ রহু-লিগুল বেতার্থঃ, অঞ্জনেতি কৃষ্ণধাতু গ্রহণ্য, পীত-কৃষ্ণ খেত ধাতৃভি রিত্যর্থঃ, পায়াধরৈ মে হৈঃ ॥ ২২ ॥ দরী বিলগৃহং কন্দরং মহাপ্রপাতঃ অভি রামাদরী প্রভৃত্যো যন্মিন্॥ ২০ ॥ বিষাণাগ্রে দন্তাত্তিঃ "বিষাণং কুষ্ঠকে ক্লীবং ত্রিষ্ শৃক্ষেভ-দন্তয়োঃ।" ইতি মেদিনী, শিলাঃ সম পাষাণাঃ শ্রনা-সন্যোগাঃ, উপলা স্তদ্নো ॥ ২৪ ॥ শব্দাং বালত্ণ্য কবলো প্রাম সদ্যুক্তঃ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ বনকবর্ণভিঃ পীত দীপ্তিঃ সিংছ সংহননঃ সিংছ বন্দ্ ঢাল্লঃ ॥ ২৮ ॥ বারণানা মিপ বারণঃ নিবারকঃ সংগ্রামাদে।, বিচেঞিতৈঃ বার্ত্তাভি নিশ্চেঞাভিঃ একা প্রাভি রিতার্থঃ ॥ ২৯ ॥ রূপসা

^{* &}quot;প্রস্তাৎ" ইতিবাপার্চঃ।

^{* &}quot; पृक्वे ३८७।तः " क-श्खकमा।

যক্ষগন্ধবয়েবাভি রদশ্যাভি র্নিরীক্ষতঃ। নবাবভারং ৰূপস্য বিক্রীডল্লিব পাগুবঃ ॥ ৩০ ॥ চচার রমণীয়েষু গন্ধমাদন-সামুষু। সৎস্মরন বিবিধান ফ্রেশান্ ছুর্যোধনকুতান বহুন্॥ ৩১॥ দ্রৌপদ্যা বনবাসিনা। প্রিয়ণ কর্ত্তপুনুদাতঃ। সোহচিত্তরকাতে স্বর্গ মর্জ্জুনে মরি চাগতে। ৩২॥ পুষ্পহেতোঃ কথং ত্বার্য্যঃ করিষ্যতি যুবিষ্ঠিরঃ।। স্থেহান্নরবরো নুন মবিশ্বাসাদলস্য চ ॥ ৩৩ ॥ নকল সহদেবঞ্চন মোক্ষ্যতি যুধিষ্ঠিরঃ। কথং সু কুসুমাপাপ্তিঃ স্যাচ্ছীঘ্রমিতি চিত্তরন্॥ ১৪। প্রতন্তে নরশার্দ্ধলঃ পক্ষিরাভিব বেগিতঃ। স্তজ্মানমনোদৃষ্টিঃ কুল্লেষু গিরিসানুষু ॥ ৩৫॥ क्तिशनीवाकाशास्त्रका जीमः नीखन्तः यस्यो। কম্পয়ন্মেদিনীং পদ্যাং নিৰ্ঘাত ইব পৰ্বাস্ত। ৩৮॥ ত্রাসয়ন্ গজযুথানি বাতরংহা রুকোদরঃ। मि॰ इ वाञ्च मृता॰ रेम्हव मक्सारना महावनः ॥ ७२ ॥ जेबा नयन् महावृक्षान् (পाथसः खत्म। वनी। লতাবল্লীশ্চ বেগেন বিকর্ষন্ পাণ্ডুনন্দনঃ। উপর্যাপরিশৈলাগ্র মারুরুকু রিব দ্বিপঃ॥ ১৮॥ বিশদমানোহতিভূশ শবিদ্যাদিব ভৌরদঃ। তেন শব্দেন মহতা ভীমস্য প্রতিবোধিতাঃ॥ ৩৯॥

শোন্দর্যাস্য "রূপং অভাবে সৌন্দর্যে" ইতি মেদিনী ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ নির্ঘাত উৎপাতঃ, পর্বাস্থ উৎসবেরু ॥ ৩৯ ॥ ৩৭ ॥ পোথয়ন্, মর্দরন্, লতা ভূচরা, বল্লী হৃক্ষ চরা ইতি ভেদঃ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥

গুহাং সন্থভাজু ব্যাঘ্রা নিলিল্যু ব্যনবাসিন:। সমুৎপেতৃ: খগান্ত্রস্তা মৃগযূথানি তুদ্রবৃঃ॥৪০॥ পাক্ষান্টোৎসম্ভ ক্ৰিফাপ্সত্যজু ইরয়ো গুহাম্। वाक् खु उ महामि॰ हा महिषा क वाटलां करान् ॥ ४১॥ তেন বিজ্ঞাসিত। নাগাঃ করেণুপরিবারিতাঃ। তদ্বং সপ্পরিতাজ্য জগারন্যমহাবন্য ॥ ৪২ ॥ বরাহ্মুগণিশহাশ্চ মহিষাশ্চ বনেচরাঃ। ব্যাদ্রা গোমাবুসংঘাশ্চ প্রণেতু র্গবব্নৈঃ সহ॥ ৪৩॥ রথাঞ্জনাহর-দাতাহ হংসকার ওব-ধবাঃ । শুকাঃ পুংস্কোকিলাঃ ক্রৌঞ্চাবিসংজ্ঞা ভেজিরে দিশঃ ॥ ৪৪ ॥ ভথানো দর্পিতা নাগাঃ করেণুশরপীডিতাঃ। 🛊 সিংহব্যান্তাশ্চ সংকুদ্ধা ভীমসেন মথাদ্ৰবন্ ॥ ৬৫ ॥ শকুনা ত্রগ মুক্ষান। ভয়বিজ্ঞানসাঃ। ব্যাদিতাস্যা মহরৌদ্রা ব্যনদন্ ভীষণানুবান্॥ ৪৬॥ ততো বাযুস্কুতঃ ক্রোধাৎ স্ববাহুবল মাশ্রিতঃ। গজেনান্যান্ গজান্ শ্ৰীমান্ সি॰ছং গিছেন বা বিভুঃ॥ ৪৭॥ खन अहारेत तना। क वाहन था खरवा वनी। তে বধ্যমানা ভীমেন সিংহ্ব্যাঘ্রতরক্ষবঃ ॥ ৪৮ ॥ ভয়াদ্বিসহজুভীমং শক্কনাত্রঞ্জ স্থানুঃ। প্রবিবেশ ভতঃ ক্ষিপ্রং তানপাস্য মহাবলঃ॥ ৪৯॥

॥ ৪০ ॥ বালোকরন্ অবলোকরন্॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥ রথাঞ্চ সাইাঃ চক্র সমান-নামানঃ চক্রবাকা ইতি যাবং, দাভূটেঃ ময়ুর শচাতকো বা নতু কাকঃ ''দাভূটেঃ কাল কণ্ডকে ইতি মেদিনী॥ ৪৪ ॥ করেণু শরেণ হস্তিনী রুতেন উত্তেজনেন ''শরস্তুত্তেজনে বাণে" ইতি মেদিনী ॥ ৪৫ ॥ ৪৩ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ॥ ৪৯ ॥

^{* &#}x27;'শত পীড়িতা" ইতি ক পুশুকঃ।

বনং পাণ্ডুস্কুতঃ শ্রীমান্ শব্দেনাপূরয়ন্দিশঃ! অথাপশ্যমহাবাহু গ্রমাদনসানুষু ॥ ৫০ ॥ ञ्चतमाः कमनीय ७ वहरमा कनिव कु उम् । ত মভাগচ্ছদ্বেগেন ক্ষোভয়িষ্যন্ মহ্বিলঃ॥ ৫১॥ মহাগজ ইবাস্রাবী প্রভঞ্জন্ বিবিধান ক্রমান্। উৎপাট্য কদলীস্তন্তানু বহুতালসমুচ্ছ য়ান্॥ ৫২॥ চিক্ষেপ তর্সা ভীমঃ সমন্তাম্বলিনায়রঃ। বিনদন্ স্থমহাতেজা নুসিণ্হ ইব দৰ্পিতঃ॥ ৫৩॥ ততঃ সত্ত্বাসুপোকামন্ স্বব্ছুনি মহান্তি চ। রুরু-বানর সিংহাংশচ মহিষাংশচ জলাশয়ানু॥ ৫৪॥ তেন শব্দেন চৈবাথ ভীমদেন-রবেণ চ। বনান্তরগতাশ্চাপি বিত্তেম্ব র্মাগপক্ষিণঃ॥ ৫৫॥ তং শব্দ সহসা শ্রুত্বা মুগপক্ষিস্মারিতম। জলার্দ্রপক্ষা বিহ্গাঃ সমুৎপেতৃঃ 🚜 সহস্রশঃ ॥ ৫ ७ ॥ তানৌদকান পক্ষিগণালিরীক্ষ্য ভরতর্যভঃ। তানেবারুদরন্ম্য দদর্শ স্থমহৎ সরঃ॥ ৫৭ । काक्षरेनः कमनीषरेख र्यानमाङ्गठकाष्ट्रिरेटः। বীজ্যমান মিবাক্ষোভ্যং তীরান্তরবিদর্পিভিঃ॥ ৫৮॥

॥৫০॥৫১॥ আব্রান মত্তগজ ইবেতার্থঃ, কদলীস্তম্বান্ মৃগ বিশেষ পাদান্
"রস্তা রক্ষেথ কদলী পতাকা মৃগতেদয়োঃ"—ইতি মেদিনী। উত্তরক্ষোকাং 'বলিনাং, ইতাপাক্ষা বলিনাং যক্ষাদীনাঃ পতাকা স্তম্ভান্ বা
॥৫২॥৫০॥৫৪॥৫৫॥৫৬॥ উদকান্ উদক প্লুতান্॥৫৭॥৫৮॥

^{*} খ মুৎপেতুরিতি পুস্তকাতরসা।

তৎ সরোহ্থাবতীর্য্যাশু প্রভূত-নলিনোৎপলম্। মহাগজ ইবোদামশ্চিক্রীড বলবদ্বলী। ৫৯। বিক্রীড্য তিমান্ স্কুচির মুক্ততারামিতছ্যতিঃ। ততোহধ্যগস্তুবেগেন * তম্বনং বহুপাদপম্॥ ৬०॥ দধ্যৌ চ শঙ্খং স্থনবং সর্ব্বপ্রাণেন পাওবঃ। আক্ষেট্য়চ্চ বলবান্ ভীমঃ সন্নাদয়ন্দিশঃ॥ ৬১॥ তস্য শশুস্য শব্দেন ভীমদেন রবেণ চ। বাছশব্দেন চোত্রেণ নর্দ্ধন্তীব গিরে গুর্হঃ॥ ৬২॥ তং বজনিজোষসম মাক্ষোটিত মহারবম্। শ্রুরাশৈলগুহাসুথ্যে সিংহৈর্জ্য মহাস্থনঃ॥ ৬৩॥ সিংহনাদভয়ত্রস্তৈঃ কুঞ্জরৈরপি ভারত!। মুক্তো বিরাবঃ স্থমহান্ পর্বতো যেন পূরিতঃ॥ ৬৪॥ তন্তু নাদং ততঃ প্রুত্বা মুক্তং বারণপুষ্পবৈ:। ভাতরং ভীমদেনন্ত বিজ্ঞায় হরুমান্ কপিঃ॥ ৬৫॥ দিবঙ্গমণ রুরোধাথ মার্গং ভীমস্য কারণাৎ। অনেন হি পথা মা বৈ গচ্ছেদিতি বিচাৰ্য্য সঃ॥ ৬৬॥ 🚜 আন্ত একায়নে মার্গে কদলীয়গুমণ্ডিতে। ভাতুভীমস্য রক্ষার্থং তং মার্গ মবরুধা বৈ॥ ৬৭॥

নলিনোৎপলং পদ্মপুষ্পং, "উৎপলী তুবপপট্যাই ক্লীবংকুঠ-প্রস্করোঃ" ইতি মেদিনী, উদ্দামঃ বন্ধন্যঃ॥৫৯॥ অধ্যন্ধন্ পর্বতোপরি বনংগন্ত মুদ্যতঃ সন্নিতিশেষঃ॥৬০॥৬১॥৬২॥ আকোটিতঃ উদ্ধাবিতঃ বাহু যাতে। বা॥৬৩॥৬৪॥৬৫॥ দিবংগ্মংমার্গং স্বর্গ মার্গন্ ॥৬৬॥
একায়নে অতি সংকুটতে॥৬৭॥

^{* &#}x27;' অবাগাছং" ইতি ক-পাঠঃ। * '' অনেনৈব" ইতি ক-ঘ পুস্তকৌ পঠতঃ।

মাহত্র প্রাপ্যাতি শাপং বা ধর্ষণাম্বেতি পাণ্ডবঃ। কদলীষ্প্রমধ্যস্থ এবং স্পিন্তা বানরং॥ ৬৮॥ প্রাজ্যুত মহাকায়ো হতুমান্নমি বানরং কদলীয় গুমধ্যত্থে। নিদ্রাবশগতস্তদা ॥ ৬৯॥ জুন্তমাণঃ স্কুবিপুলং শক্রহ্মজমিবে চ্ছিত্য। আক্ষেটিয়চ্চ লাঙ্গুলমিন্দ্রশিনি-সমস্বনম্ ॥ ৭০ ॥ তস্য লাঙ্গলনিনদ্প পর্বতঃ সগুহামুথৈঃ। উদ্যারমিব গৌ র্নদন্ত্র সমন্ততঃ॥ ৭১॥ লাঙ্গলাক্ষোটশকাচ্চ চলিতঃ স মহাগিরিঃ। বিঘূর্ণমানশিখরঃ মমন্তাৎ পর্যাশীর্যাত ॥ ৭২ ॥ স লাজালরবস্তম্য মন্তবরেণনিস্বন্। অন্তর্ধা**র বিচিত্রেষু** চচার গিরি**দানুযু** ॥ ৭৩ ॥ স **ভীমসেন স্তচ্ছ ত্বা সম্প্রকৃষ্টত নূ**রুহ**ে।** শক্ষপ্রভব-মথিচ্ছংশ্চচার কদলীবন্য ॥ ৭৪॥ কদলীবনসধাস্থ সথ পীনে শিলাতলে। দদর্শ স্থমহাবান্থ ব্রানরাধিপতি তদা ॥ ৭৫॥ বিছ্যুৎ **দম্পাতছুম্পে ুক্ষ্যং বিছ্যুৎদম্প**াতপিঙ্গলম্ : বিদ্যাৎসম্পাতনিনদং বিদ্যাৎসম্পাতচঞ্চলম্ ॥ ৭৬॥ ব'ভ্স্বস্থিকবিন্যস্ত পানক্রস্থলিরোধরম্। স্বন্ধভূয়িষ্ঠ কায়ত্বান্তনুমধ্যকটী তটম্ ॥ ৭৭ ॥

বানরঃ কপিঃ, বানানি শুক্ককলানি রাতি আদত্তে ইতি বানরঃ, অহিংল ইত্যর্থঃ ॥ ৬৮ ॥ ৬৯ ॥ ৭০ ॥ উন্পারং প্রতি শব্দু পৌ রিব উৎসসজ ॥ ৭১ ॥ ৭২ ॥ ৭০ ॥ ৭৪ ॥ ৭৫ ॥ ৭৬ ॥ বাছোঃ স্বস্তিকং চতুরস্রং মূলং অংস ইতি যাবত্, তত্ত্ব নাস্ত কন্দর মিতার্থঃ, তত্ত্ব হেডুঃ স্কন্দেতি—বিপুলাং সন্ধা দিতার্থঃ ॥ ৭৭ ॥ অভূগ্নং দ্বিন্তিনীকৃতম্ আভূগ্নং সমদ্বকংবা শীর যস।

কিঞ্চিচাভুগ্নশীর্ষেণ দীর্ঘরোমাঞ্চিতেন চ। লাঙ্গলেনোর্গতিনা প্রজেনের বিরাজিত্য্ 🐇 ॥ ৭৮ ॥ अस्त्रीष्ठे जाअ जिस्त्रीयाः तक्क वर्षः हलम् क्वयम् । বিব্ৰন্তদ্ৰকীদশনৰ শুক্ল নীক্ষাগ্ৰদোভিত্য ॥ ৭৯ ॥ অপশ্যদ্দন তথ্য রশ্মিবন্ত মিবৌডুপম্। বদনভোত্ত,গতৈঃ শুকুদেঁতে রলক্ষ্তন্। ৮০ ॥ কেশ্রোৎকরস্পমিশ্র মশোকানামিবেছ ক্রম্ ! হিরণারীনা শ্মধান্তং কদলীনাং মহাত্যুতিখু ॥ ৮১ ॥ দীপাম।বেন বপুষা স্বচিয়ান্ত মিবানলগু। নিরীকত মমিত্রণ লোচনৈ র্মধুপিঙ্গলৈঃ। ৮২॥ তং বানর-বরং ধীমানতিকারং মহাবলম। স্বৰ্গপন্থানমাৰত। হিম্বন্ত্মিৰ স্থিত্যু ॥ ৮৩ ॥ দুক্ত চৈনং মহাবাছ রেকং তামিন্ মহাবনে। অথোপস্তা তর্মা বিভী ভীম স্তত্যে বলী॥ ৮৪॥ নিপ্হনাদং চকারোগ্রং বজ্রাশনিসমং বলী। তেন শক্তেন ভীমস্য বিত্তেস্কু র্মাৃগপক্ষিণ ॥ ৮৫॥ इतुमाং 🕶 महामञ्ज नेवजूबीना (लाहरन। দুকী তমথ সাবজ্ঞং লোচনৈ শ্মধুপিঙ্গলৈঃ। ব্যিতেন চৈনমাসাদ্য * হতুমানিদ মন্ত্ৰীং॥ ৮৬॥

॥ ৭৮॥ ৭৯॥ উড়পশ্চন্দ্রঃ ॥ ৮০॥ অশোকানাং অশোক প্রসানায্

 ^{*} বিরাজতা ইতি ক-প্রাঠঃ।
 * আভাষা ইতাপি ক—

হনুম। লুবাচ।

''কিমর্থং সরুজন্তেইছ**~ স্থথসূপ্তঃ প্র**বোধিতঃ ?— নকু নাম ত্বয়া কার্য্যা দয়া ভূতেমু জানতা ॥ ৮৭ ॥ বয়ং ধর্ম্মং ন জানীম স্তির্যাগেয়ানি মুপাশ্রিতাঃ। নরাস্ত বুদ্ধিসম্পন্না দয়াং কুর্ববন্তি জন্তমু ॥ ৮৮॥ ক্রুরেম্ব কর্মস্থ কথৎ দেহবাক্চিত্তদূষিমু। ধর্মঘাতিষু সজ্জন্তে বুদ্ধিমন্তে। ভবদিধাঃ !—॥ ৮৯॥ ন ত্বং ধর্মাং বিজানাসি বুধা নোপাসিতান্ত্রা। অপেবুদ্ধিতয়া বাঁল্যাছৎসাদয়সি যন্ত্রান্॥৯১॥ জহি কন্তু প কিমর্থণ বা বনণ ত্বমিদ মাগতঃ। বার্জ তং মানুষৈর্ভাবৈ স্তথৈব পুরুষেরপি ॥ ৯১ ॥ क বা ত্রাদা গন্তবাং প্রকাই পুরুষর্ঘত !। অতঃ পর মগম্যোহয়ং পর্কতঃ স্বদ্ধরারুহঃ । ৯২ ॥ १ বিনা সিদ্ধিগতি বীর! গতিরত ন বিদ্যতে। দেবলোকস্য মার্গোহ্য মগম্যে। মানুহৈঃ দদা॥ ৯৩॥ কারুণ্যাত্ত্বামহ্ বীর! বার্যামি নিবোধ মে। নাতঃ পরং ত্বয়া শক্যং গম্ভ মাশ্বসিহি প্রভো!॥ ৯৪॥ স্বাগত শর্মাথেবেহ তবাদ্য মনুজর্মভ !। ইমান্যস্তকম্পানি সুলানি চ ফলানি চ। pe।

॥ ৮৭॥ ৮৮॥ ৮৯॥ ৯০॥ ৯১॥ ৯২॥ ৯০॥ আশিসিহি বিশাসংকুক॥ ৯৪॥ ॥ ৯৫॥ মহাযুম্ম। ভক্ষয়িত্বা নিবর্ত্তস্ব মা র্থা প্রাপ্স্যাসে বধম।

থাছে যদি বচো মহাং হিতং মনুজপুঙ্গব!"—॥ ৯৬॥
ইত্যারণ্যকে পর্বানি তীর্থযাত্রাপর্বানি ভীমস্য কদলীষপ্ত প্রবেশে

যট্চত্বারি শদ্ধিকশতত মোহধ্যায়ঃ॥ ১৪৬॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

এতচ্চুত্র। বচস্তম্য বানরেন্দ্রম্য ধামতঃ। ভীমদেনস্তদা বীরঃ প্রোবাচামিত্রকর্ষণঃ 🚜 ॥ ১ ॥

ভীম উনাচ।

' কো ভবান্ কিৎ নিমিন্তং বা বানরৎ বপুরাস্থিতঃ ?—
ব্রাহ্মণানস্তরো বর্ণঃ ক্ষজ্রিয় স্থান্ত পৃচ্ছতি ॥২ ॥
কৌরবঃ সোমবংশীয়ঃ কুস্ত্যা গর্ভেণ ধারিতঃ।
পাপ্তবো বাযুতনয়ো ভীমসেন ইতি শ্রুতঃ "—॥ ৩॥
স বাক্যং কুরুবীরস্য স্মিতেন প্রতিগৃহ্য তং।
হনুমান্ বাযু তনয়ো বাযুপজ্র মভাষত॥ ৪॥

হনুমানুবাচ।

" বানরোহহং ন তে মার্গং প্রদাস্যামি যথেপ্সিতম্। সাধুগচ্ছ নিবর্ত্তস্থ মা স্বং প্রাপ্সাসি বৈশসম্ "—॥ ৫॥ ভীমসেন্ট্রাচ।

1 20 1

ইত্যাবন্যকে পর্বানি নৈলকণ্ডীয়ে ভারতভাবদীপে ষট্চহারিংশদ্ধিক শৃততমে:২ধ্যায়ঃ ॥ ১৪৬ ॥

এতদিতি—। ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ বৈশসং বিরোধন্॥ ৫॥

 ^{* &}quot; অমিত্র কর্ষণ!" ইতি সম্বোধন পাঠঃ ক—পুস্তকে।

শে বৈশসং বাহয় য়দানার ত্বা প্রছামি বানর !।
 প্রযক্ত মার্গর্ভিষ্ঠ মা মন্তঃ প্রাপ্স্যাসি ব্যথাম্ ''—॥ ৬॥
 ছনুমানুবাচ।

" নান্তি শক্তির্দ্মমোপাতুং ব্যাধিনা ক্লেশিতো হাহ্ন।
যদ্যবশ্যৎ প্রথাতব্যং লঙ্ময়িত্বা প্রযাহি মাম্ ''—ঃ ৭ ॥
ভীম উণ্চ।

" নিশুনিঃ পরমান্ধা তু দেহং ব্যাপ্যাবতিষ্ঠতে।
ত মহং জ্ঞানবিজ্ঞেরং নাবমন্যে ন লঞ্জ্যার ॥ ৮ ॥
যদ্যাগমৈ ন বিদ্যাঞ্চ তমহং ভূতভাবনম্।
ক্রমেরং স্বাং গি্রিঞ্বৈ হনুমানিব দাগরম্ ''—॥ ৯ ॥
হনুমানুবাচ।

' ক এষ হনুমান্নাম সাগরো যেন লজ্বিতঃ। পৃচ্চামি ত্বাং নরশ্রেষ্ঠ! কথ্যতাং শক্যতে যদি "॥ ১০॥ ভীম উলচ।

"ভাতা মম গুণশ্লাঘো বুদ্ধিসত্ত্বলান্বিতঃ। রামায়ণেহতিবিখ্যাতঃ শ্রীমান্ বানরপুঙ্গবঃ॥ ১১॥

॥ ৬॥ ৭॥ নিগুল ইতি—গুণাঃ সরাদ্যো রূপাদয়শ্চ তৈ বর্জিতঃ, অতএব পরমঃ, কোষপঞ্চকহি অনাত্মনাত্মণ্ড অমুখ্যং আধানিকথাত্তদা ততোহনাস্ত নিরুপাধিচিমারো মুখা আত্মা প্রত্যানূত আকাশো ঘটমিব দেহং ব্যাপা স্থিতঃ—এতেন শুদ্ধ স্থংপদার্থ উক্তঃ, অসা নিগুলিই ভূভবং প্রমাণয়তি জ্ঞান বিজ্ঞের মিতি। জ্ঞানং শাস্ত্রার্থগানজ প্রমা, তেন জ্ঞেরং, জ্ঞাত বিজ্ঞের মিতি। জ্ঞানং শাস্ত্রার্থগানজ প্রমা, তেন জ্ঞেরং, জ্ঞাত বিজ্ঞের মিতি। জ্ঞানং শাস্ত্রার্থগানজ প্রমা, তেন জ্ঞেরং, জ্ঞাত বিজ্ঞের মিতি গাচে—সক্ষপ্রকাশকং অহঙ্কারাদি সান্দিণ মিতার্থঃ, ত্ম্যাব্মাননা শালপ্রামাদিব ক্রপাধিভূত্সা শরীরসা লক্ষ্যনেন ভবতি গতেন্ত্রহং ন কুর্কেইতার্থঃ ॥ ৮॥ ভূতভাবনং ভূতানাং বিরুদাদীনাং জ্বরাগ্র্জাদীনাং চ ভাবনং ভবনং রচনং যন্মাৎ তং, "আত্মন আকাশঃ সন্তর্তঃ—সর্ক্ এত আত্মনে। ব্যাচ্চরন্তী "—ত্যাদি প্রাতিজ্ঞাং, এতেন তৎপদার্থ উক্তঃ, ত্রোঃ সামান্যাধিকরণ্যাদভেদে ব্র্জাদ্বৈতঞ্চ দশিতিম্॥ ৯॥ ১০॥ ১১ ॥ ক্রমেণ

রামপত্নীক্তে যেন শতযোজনবিস্তৃতঃ।
সাগরঃ প্লবগেন্দ্রেণ ক্রমেণৈকৈন লজ্জিতঃ॥ ১২॥
স মে জাতা মহাবীর্যাস্তল্যোহহ^ তদ্য তেজসা।
বলে পরাক্রমে যুদ্ধে শক্তোহহ^ তব নিগ্রহে॥ ১৩॥
উত্তিষ্ঠ দেহি মে মার্গং পশ্য মে বাদ্য পৌরুষম্।
মচ্ছাদন মকুর্বাণং ত্বাং বা নেষ্যে যুমক্ষয়ম্"—॥ ১৪॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

বিজ্ঞায় তং ৰলোৱাত্তং বাছ বীর্য্যেণ দর্পিতম্। হৃদয়েনাবহুলৈয়ানং হনুমান্ বাক্যমত্রবীৎ ॥ ১৫॥

হন্মান্ত্ৰাচ।

' প্রাসীন নাস্তি মে শক্তি রুত্থাতুং জরয়ানঘ!। মমানু ফম্পয়া ত্বেতৎ পুচ্ছ মুৎসার্যা গম্যতাম্ ''—॥ ১৬॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

এবমুক্তো হনুমতা হীনবীর্যাপরাক্রমন্।
মনসাচিন্তয়ন্তীমঃ স্থবাছবলদর্পিতঃ ॥ ১৭ ॥
পুছে প্রগৃষ্থ তরসা হীনবীর্যাপরাক্রমন্।
সালোক্যমন্তকলৈয়নং নয়াম্যদেয়হ বানরম্॥ ১৮ ॥
সাবজ্ঞ মথ বামেন স্ময়ন্ জগ্রাহ পানিনা।
ন চাশকচালয়িতু ভীমঃ পুচ্ছং মহাকপেঃ॥ ১৯॥
উচ্চিক্ষেপ পুনর্দোর্ড্যা মিক্রাযুধমিবোচ্ছ্রিতম্।
নোজ্পু মশকদ্বীমো দোর্ড্যামপি মহাবলঃ॥ ২০॥

পাদবিক্ষেপেণ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ এবং উক্তে সতি তং ইত্য-ধ্যাহারঃ, তং হীন বীর্ব্য পরাক্রমং মনসা হচিন্তয়ৎ মেনে ॥১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ॥ ২০ ॥ উৎক্ষিপ্তভূ বিবৃত্তাক্ষঃ সংহতভুকুটীমুখঃ।

স্বিলগাত্তোহতবন্তীমো ন চোজর্জুং শশাক তম্ ॥ ২০লা

যত্ত্ববানপি তু শ্রীমালাক্ষ্ লোদ্ধরণান্ধতঃ।

কপেঃ পার্শ্ব গতে। ভীম স্তস্থে ব্রীডানতাননঃ॥ ২২॥

প্রাণপত্য চ কৌন্তেরঃ প্রাঞ্জলিবাক্য মন্ত্রবীৎ।

'প্রসীদ কপিশার্দ্ধলা। তুরুক্তে ক্ষম্যতাং মম॥ ২৩॥

সিন্ধো বা যদি বা দেবো গন্ধবো বাথ গুহুকঃ।

পৃষ্টঃ সন্ কাম্যয়া জহি কস্তৃ বানর্বপপুক্॥ ২৪॥

ন চেক্ষা্হাং মহাবাহো। শ্রোতব্যং চেন্দ্রের্ম।

শিষ্যবজ্বান্ত পৃচ্ছাব্রি উপপল্লোহ্মি তেহ নঘ।"—॥ ২৫॥

হন্মান্ত্রাচ।

' যতে মম পরিজ্ঞানে কোতৃহল মরিন্দম!।
তৎ সক্ষমথিলেন তং শৃণু পাত্তবনন্দন!॥২৬॥
অহং কেশরিণঃ ক্ষেত্রে বাষুনা জগদাযুনা।
জাতঃ কমলপত্রাক্ষ! হনুমারাম বানরঃ॥২৭ ॥
স্থ্যপুত্রঞ্চ স্থ্রীবং শক্রপুত্রঞ্চ বালিনম।
সর্ব্বে বানররাজানস্তথা বানরযুথপাঃ॥২৮॥
উপতস্থুর্মহাবীর্যা মম চামিত্রকর্ষণ!।
স্থ্রীবেণাভবৎ প্রীতি রনিলস্যাগ্রিনা যথা॥২৯॥
নিক্কতঃ সততো ভাতা কন্মিৎশ্চিৎ কারণান্তরে।
ঝাষামুকে ময়া সার্দ্ধৎ স্থ্রীবো ন্যবসচিরম্॥ ৩০॥
তথ দাশরথিবীরো রামো নাম মহাবলঃ।
মিবকুর্মানুষ্বরপেণ চচার বস্থ্যাতলম্॥ ৩০॥

॥ ২১ ॥-২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৮ ॥ উপতস্থু বিলিনং, সমচ স্ত্রীবেণ প্রীভি রভবৎ ॥ ২৯ ॥ নিক্তঃ নিরস্তঃ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ সংপিতৃঃ প্রিয়মন্তিজন্ সহভার্যাঃ সহানুজঃ।
সধনু ধনিনাপ প্রেচো দণ্ডকারণ্য মাগ্রিতঃ ॥ ৩২॥
তদ্য ভার্যা জনস্থানাজ্বলেনাপক্ষ্তা বলাং।
রাক্ষসেন্দ্রেণ বলিনা রাবণেন জুরাজ্বনা॥ ৩৩॥
স্থবর্ণর জুচিত্রেণ মৃগর্বপেণ রক্ষ্যা।
বঞ্চয়িত্বা নরব্যাঘ্রং মারীচেন তদানঘ। "—॥ ৩৪॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণ হনুমন্তীমস্বাদে
সপ্তচন্ত্রারিশ্দধিকশতত্মোহধ্যায়ঃ॥ ১৪৭॥

হনুমান্ত্ৰাচ।

ে হ্নতদারঃ সহ ভাতা পত্নীং মার্গন স রাঘবঃ।

দৃষ্টবান নৈলশিখরে স্থাতিক বানরর্ঘতম্য ১ ॥

তেন তমাভিবৎ সংগ্রুক রাঘবস্য মহাত্মনঃ।

স হত্ম বালিনং রাজ্যে স্থাতীব মভিষক্তবান্ ॥ ২ ॥
স রাজ্যং প্রাপ্য স্থাতীবঃ সীতায়াঃ পরিমার্গণে।
বানরান্ প্রেষয়ামাস শতশোহ্থ সহস্রশাঃ ॥ ৩ ॥
ততো বানরকোটীভিঃ সহিতোহহং নরর্ঘত!।
সীতাক মার্গনহাবাহো! প্রয়াতো দক্ষিনাং দিশম্ ॥ ৪ ॥

1 95 1 00 1 08 1

ইত্যারন্যকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারতভাবদীপে সপ্তচন্ধারিং শৃদ্ধিক শততমোহধন্যয়ঃ ॥ ১৪৭ ॥

হতদার ইতি—। ১॥२॥৩॥ ४॥

^{*} প্রস্থিতো দক্ষিণাং দিশমিতি ইতি ক-পুস্তকঃ।

ততঃ প্রবৃত্তিঃ দীতায়া গৃধেণ স্কুমহাত্মনা। সম্পাতিনা সমাখ্যাতা রাবণ্স্য নিবেশনে॥ ৫ ॥ ততোহহং কার্যাসভার্যং রামস্যাক্লিফকর্মণঃ। শতযোজনবিস্তার মর্গবং সহসা প্লভঃ 🛚 🕓 🕨 অহং স্থবীর্যাত্বতীর্য্য সাধরণ মকরালয়ম্। স্কুতাং জনকরাজন্য সীতাং সুরস্কুতোপমায্॥ ৭॥ দুষ্টবানু ভরতশ্রেষ্ঠ ! রাবণস্য নিবেশনে। সমেত্য তামহং দেবীং বৈদেহী বাদবপ্রিয়াম ॥ ৮॥ দম্বা লক্ষা মশেষেণ দাউপ্রাকারতোরণাম। প্রত্যাগতশ্চাস্মি পুনর্নাম তত্র প্রকাশ্য বৈ॥ ৯॥ महाकाक्षावधार्याणः त्राधा त्राकीवरलाहनः। স বুদ্ধিপুর্বাং দৈন্যস্য বদ্ধা সেতু মহোদধৌ ॥ ১০ ॥ রতো বানরকোটীভিঃ সমুক্তীর্ণে: মহার্ণবম্। ওতো রামেণ বীর্য্যেণ 🗱 হত্তা তানেব রাক্ষসান্ ॥ ১১ ॥ त्रत्व मत्राक्रमन् त्रायगः लाकत्रायगम्। নিশাচরেন্দ্রণ হত্বা তু সভ্রাতৃত্বতবাশ্ববস্ ॥ ১২॥ রাজ্যেহভিষিচ্য লঙ্কায়াং রাক্ষদেন্দ্রং বিভীষণম। ধার্ম্মিকং ভক্তিমন্তঞ্চ ভক্তানুগতবৎসলম। ১৩। ততঃ প্রত্যাহ্নতা ভার্যা নক্টা বেদশ্রুতির্যথা। তব্যৈব সহিতঃ সাধ্বা। পত্না রামো মহাযশাः॥ ১৪॥

॥ ৫॥ ৬॥ १॥ সমেত্য বিদিছা সম্ভাষণাদিনা নিশ্চিত্তত্ত্যর্থ:॥ ৮॥ অস্য রামস্য, তত্ত্ব লক্ষায়াম্॥ ৯॥ অবধার্য্য নিশ্চিত্য॥ ১০;॥ ১১॥ লোক রাবণং লোক পীড়া করম্॥ ১২॥ ১৩॥

^{*} बीदबन केंड क-मार्रेक ।

গত্বা ভতেত্বভিত্তবিত স্থাং পুরীং রঘুনন্দন: । অধ্যাবসত্ততো হযোধ্যা মযোধ্যাং দিবতাং প্রভঃ ॥ ১৫॥ ততঃ প্রতিষ্ঠিতো রাজ্যে রামো নুপতিসন্তমঃ। বর ময়া যাচিতোহকৌ রামে। রাজীবলোচনঃ । ১৬। ষাবদ্রাম কথেয়ং তে ভবেলোকেষু শত্হন !। তাৰজ্জীবেয়মিত্যেৰং তথাস্থিতি চ সোহত্ৰবীৎ ॥ ১৭ ॥ मीठा श्रमानाक मना मामिइ महिन्म्य !। উপতিষ্ঠত্তি দিব্যা হি ভোগা ভীম ! যথেপিতাঃ ॥ ১৮॥ দশবর্ষসহস্রাণি দশবর্ষশতানি চ। রাজ্যং কারিতবানামস্ততঃ স্বভ্বন্ গতঃ ৷ ১৯ ৷ তদিহাস্পরসন্ততে ! গন্ধবাস্ট সদান্য !। তস্য বীরুষ্য চরিতং গায়দ্যে রময়ন্তি মাম ॥২০॥ অয়ঞ্চ মার্গো মত্যানা মগ্ম্যঃ কুরুনন্দন!। ততোহহং ৰুদ্ধবান্মাৰ্গ^ ত বেম^ দেবদেবিতম্॥ ২১॥ ধর্ষয়েক্তাং শপেদাপি মা কশ্চিদিতি ভারত।। দিব্যো দেবপথো ছেষ নাত্র গছন্তি মানুষাঃ। যদর্থ মাগতশ্চাসি অতএব সরশ্চ তৎ "-॥ ২২॥ ইত্যারণ্যকে পর্কাণি তীর্থযাত্রাপর্কাণ হতুমন্তীমসংবাদে অফ্টচত্মারিংশন্ধিকশততমোহ্ধ্যায়ঃ॥ ১৪৮॥

॥ ১৪॥ অযোধ্যাং যোদ্ধানক্যাম্॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ কারিতবান্
কৃতবান্ 'স্বার্থে নিচ্', স্বভবনং বৈকুওম্॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপেইফট হারিংশ
শদ্ধিক শততমে হিধায়িঃ॥ ১৪৮॥

বৈশস্পায়ন উবাচ। এবসুক্তো মহাবাছভীমদেনঃ প্রতাপবান্। প্রণিপত্য ততঃ প্রীত্যা ভাতরং হৃষ্টমানসঃ 🗈 ১ 🗈 উবাচ শ্লক্ষয়া বাচা হতুমন্তং কপীশ্বরম্। ' ময়া ধন্যতরো নাস্তি যদার্যাং দৃষ্টবানহম্। ২ ॥ অনুগ্রহো মে স্থমহাংস্তৃপ্তিশ্চ তব দর্শনাৎ। একন্ত কুতমিচ্ছামি স্বয়াদ্য প্রিয়মাল্পনঃ। ৩॥ যত্তে তদাসীৎ প্লবতঃ সাগরং মকরালয়ম্। ৰূপ মপ্ৰতিমং বীর! তদিছামি নিরীক্ষিতৃম্॥ ৪ ॥ এব তুষ্টো ভবিষ্যামি শ্রদ্ধাস্যামি চ তে বচং"--। এবমুক্তঃ স তেজস্বী প্রহস্য হরি রত্তবীৎ॥ ৫॥ "ন তচ্চ্ক্যু স্বয়া দ্রফ্ট ্রপং নান্যেন কেন চিৎ। কালাবস্থা তদা হ্যন্যা ন সা বর্ত্তি সাম্প্রতম্॥ ৬॥ অন্যঃ কৃত্যুগে কালস্ত্রেতায়াং দ্বাপরেহপরঃ। আয়ং প্রশ্বং কালো নাদ্য তদ্ধপমন্তি মে॥ १॥ ভূমি নদ্যো নগাঃ শৈলাঃ সিদ্ধা দেবা মহর্ষয়ঃ। কালং সমনুবর্ত্তে যথাভাবা যুগে যুগে ॥ ৮॥ বলবন্ধ প্রভাবা হি প্রহীয়স্ক্যন্তবন্তি চ। তদলৎ বত * তদ্ৰূপৎ দ্ৰফা্ৎ কুৰুকুলোছহ!॥৯॥ যুগং সমন্ত্রবর্তামি কালে৷ ছি ছুরতিক্রমঃ''—

ভীমদেন উবাচ।

্ এবমিতি—॥১॥২॥৩॥৪॥ছরিঃ বানরঃ॥৫,॥ ৬॥৭॥ ৮॥বর্ষ শরীরম্॥৯॥

^{* &}quot;২ত" ইতাত্র 'ভব " ইতি ক-পুস্তকঃ প্ঠতি।

" যুগস্থাং সমাচক্ষ্ব আচারঞ্জ যুগে যুগে। ধর্ম্মকা মার্থভাবাৎশ্চ কর্ম্ম বীর্যাং ভবাভবৌ "—॥ ১০॥ ভনুমান্তবাচ।

েকৃতং নাম যুগৎ তাত! যত্ৰ ধৰ্ম্মঃ সনাতনঃ।
কৃতমেব ন কৰ্ত্বাৎ তিম্মিন্ কালে যুগোন্তমে॥ ১১॥
ন তত্ৰ ধৰ্মাঃ সীদন্তি ক্ষীয়ন্তে ন চ বৈ প্ৰজাঃ।
ততঃ কৃতযুগং নাম কালেন গুণ্তাং গত্ম॥ ১২॥
দেব দানব গন্ধাবি যক্ষ-রাক্ষম-পন্নগাঃ।
নাসন্ কৃত-যুগে তাত! তদা ন ক্ৰয়বিক্ৰয়ঃ॥ ১৩॥
ন সামঋগ যুজুৰ্বাণাঃ ক্ৰিয়া নাসীচ্চ মানবী।
অভিধ্যায়কলৎ তত্ৰ ধৰ্মাঃ সন্ন্যাস এব চ॥ ১৪॥
ন তিম্মিন্ যুগসংসর্গে ব্যাধ্যো নেক্সিয়ক্ষয়ঃ।
নাস্থা নাপি ৰুদত্ৎ ন দর্পো নাপি বৈকৃত্ম্॥ ১৫॥
(ন বিগ্ৰহঃ কৃতস্তক্ৰী ন দ্বেষা নচ পৈশুনম্।
ন ভয়ং নাপি সন্তাপো ন চেষ্যা ন চ মৎসরঃ)॥ ১৬॥
**

ভাবান্ তথানি, কর্ম শুভাশুভং, বীর্যাং ফলোদয় পর্যাতং শক্তিঃ, ভবাভবৌ উৎপত্তি-বিনাশৌ, ঐশ্বর্যানিশ্বর্যে বা ॥ ১০ ॥ কৃতমেব সর্কে কৃতকৃত্য এবেত্যর্থঃ, তত এব হেতোঃ কৃত্যযুগংনাম ॥ ১১ ॥ গুণতাং মুখ্যতাংগতম্ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ন সামেতি—এরীধর্মস্য চিত্ত শুদ্ধার্তার স্বাদ্যার স্কলাব সিদ্ধাং ন তদানীং সীমাদী ন্যাসন্, মানবী ক্রিয়া ক্র্যাদ্যার স্কর্পা, অভিধ্যায়কলং সঙ্কপ্যাদের সর্কং সম্পদ্যত ইত্যর্থঃ ॥ ১৪ ॥ বৈকৃতং ক্রপট্য ॥ ১৫ ॥ বিপ্রহাে বৈরং, তন্ত্রী আলস্যং, দ্বেষঃ পরানিষ্ট চিন্তনং, বিপশু নং তন্তাবণং, কর্যা। অক্ষমা, মৎসরঃ পরোৎকর্ষাসহিষ্ণুত্বম্ ॥ ১৬ ॥ তত.

পুর্বাদ্ধিগত 'নচ পৈশুনম্ " ইত্যত্ত "নাপি মৎসর" ইতি—উত্তরা
দ্বিগত 'নচ মৎসর 'ইত্যত্ত 'নচ বৈ কলিঃ " ইত্যেরং ক-পুস্তকে পঠাতে।

ততঃ
পরমকং ব্রহ্ম সা গতি র্যোগিনাং পরা।
আত্মা চ সর্বাভূতানা প্রাক্ষা নারায়ণন্তদা ॥ ১৭ ॥
ব্রাহ্মণাঃ ক্ষজিয়া বৈশ্যাঃ শুদ্রাশ্চ ক্ষতলক্ষণাঃ ।
ক্রতে যুগে সমতবন স্বকর্মনিরতাঃ প্রজাঃ ॥ ১৮ ॥
সমাশ্রহং সমাচার সমজ্জানঞ্চ কেবলম্।
তদা হি সমকর্মাণো বর্ণা ধর্মানবাপ্পুবন্ ॥ ১৯ ॥
একদেবসমাযুক্তা
একমন্ত্রবিধিজিয়াঃ ।
পৃথপ্ধর্মান্তে ক্রেদা ধর্মমেকমনুব্রতাঃ ॥ ২০ ॥
চাতুরাশ্রম্যুক্তেন কর্মণা কাল্যোগিনা।
অকামকলসং যোগাৎ প্রাপ্পুবন্তি পরাং গতিম্॥ ২১ ॥

অস্যাদিত্যাগাৎ পরমকং পরমানন্দাত্মকং ত্রন্ধ প্রাপ্যত ইতি শেবং, গাতিঃ প্রাপ্যং, আত্মতি—শ্বেত-রক্ত-পীত-ক্ষরপাণি ক্রমেণ রতাদির ভব স্তীতি রুতে নারারণঃ শুরু ইত্যুক্তম্॥ ১৭॥ রুতনক্ষণাঃ রুতানি স্বতঃ সিদ্ধানি লক্ষণানি শমোদমন্তপ ইত্যাদীনি যেযাংতে॥ ১৮॥ সমং ত্রন্ধ ত দেব আ্রান্থাদির্যয় তত্তথা, ত্রন্ধৈর ফল প্রাপ্তয়ে প্রয়েং, তংপ্রাপ্ত্যর্থ এব আ্রার্থা যায় তদ্যেব চ জ্ঞানং কেবলং নিরুপাধিবিষয়ঃ ত্রন্ধের কর্মাণি গত্যাগ্রাদীনি যেযাংতে ''অহম্যার রহংত্তং "—ইত্যাদি বচনাং॥ ১৯॥ একো দেবঃ প্রত্যাগ্রা তত্ত্বিব সদা স্কুলা যোগ্যবহঃ, একো মন্ত্রপ্রনার, একো বিধি র্বেদান্ত প্রবাদিন, একা ক্রিয়াধ্যানাদি; এক এব তত্ত্বিতি পাদকো বেনে যেযাং, সর্কেপি জ্ঞান নিষ্ঠাএব নতু কেবল কর্ম্যাব্যসনিনো বা॥ ২০॥ কালো দর্শাদি শুদ্ যুক্তেন কর্ম্যণা, কামফদেন ইছিত ফলেন ক্র্যাদিমা স্বর্গা দিনা বা সংযোগ শুদভাবাং॥ ২১॥ আ্রাম্নি

^{* &#}x27;তত ' ইতাসাস্থানে 'তপঃ ' ইতি ক খ-পুস্তকে।

^{* &}quot; এক বেদ " ইতি ক গুন্তকঃ, নৈখা সমীচীন পাঠ উত্তরার্ছেপি তথা পাঠাং।

আত্মধানসমাযুক্তো ধর্ম্মোহয়ং ক্তলক্ষণঃ।
ক্তে যুগে চতুপান শ্চাতুর্বর্নাস্য শাশ্বতঃ॥ ২২॥
এতৎ কৃত্যুগং নাম ত্রৈপ্তণাপরিবর্জ্জিতন।
ত্রেতামপি নিবাধ ত্বং যশ্মিন্ সত্রং প্রবর্ততে॥ ২৩॥
পাদেন ক্রমতে ধর্ম্মো রক্ততাৎ যাতি চাচ্যুতঃ।
সত্যপ্রবৃত্তাশ্চ নরাঃ ক্রিয়াধর্মপরায়ণাঃ॥ ২৪॥
ততো যজ্ঞাঃ প্রবর্তত্বে ধর্মাশ্চ শ বিবিধাঃ ক্রিয়াঃ।
তৈরায়াং ভাবসৎক্পাঃ ক্রিয়াদানফলোপগাঃ শ॥ ২৫॥
প্রচলন্তি ন বৈ ধর্ম্মান্তপোদান পরায়ণাঃ।
স্বধর্মস্থাঃ ক্রিয়াবন্ধো নরাস্ত্রেতাযুগেহভবন্॥ ২৬॥
দ্বাপরে চ যুগে ধর্ম্মো দ্বিভাগোনঃ প্রবর্ততে।
বিষ্কুর্বে পীততাং যাতি চতুর্বা বেদ এব চ ॥ ২৭॥
ততোহন্যে চ চতুর্বেদাস্ত্রিবেদাশ্চ তথাপরে।
দ্বিবেদাকৈক্বেদা শ্চাপানুচশ্চ তথাপরে॥ ২৮॥

ব্ৰহ্মণি যোগ ঐক্যং তেন সমায়ুক্তো ২য়ং ধর্মো যোগাখাঃ কৃত লক্ষণঃ কুভযুগভূচকঃ, যদৈৰ মত্ৰৈৰ পুংগি ঈদুগ্ধৰ্মে। বৰ্ধতে তদৈৰ কুভ সুগ মিতার্থ:, চতুম্পাদ: অবিকল:॥ ২২ ॥ তৈওণ্যং প্রবৃত্তি-প্রকাণ-মোহাত্মক-রজঃ-সত্তমসাং সমাহার তেন বর্জিতং, সত্রং যজক্রিয়া রজোমিশ্রতাং। ২০। সত্যেনৈব প্রব্রাঃ। ২৪। ভাবসংখ্যাঃ ভাবে। ভাবনাক্রিয়া 'অহমনেন কর্মণা ইদংফলং অনেন প্রকারেণ সম্পাদয়িষায়িত্ ইত্যেবংরপা তদ্বিষয় এব সঙ্কপে। যেষাং অতএব ক্রিয়াদিভিঃ ফলোপ-গা: ফলভুজো নতু কৃতবং সঙ্কপাসিদা: ॥২৫॥২৬॥ দ্বিভাগোনঃ পাদ-দ্বহীনঃ, চতুর্ধা বেদঃ কৃতঃ কৃৎস্বদ্যৈকেন ধার্য্যিতু মশক্ষেণ্ ॥ ২৭॥ অনুচঃ ঋঙ মাত্রেণাপি হীন। অতিমান্দ্যাৎ, यद्या চতুর্বেদা ইতি বেদত্রহোক্তং কর্ম জ্যোতিষ্টোমাদিকং অথব্যণোপ নিবহুক্তং ধ্যানঞ্চ সহৈব বাহুতিষ্ঠতীতি কর্মোপান্তী সমুচ্চয় উক্তঃ, ত্রিবেদাইতি কেবলকর্মচাঃ, দ্বিবেদা ইতি স্ব-শা रथाकः मद्भारमनामि कर्म धानिकाइ जिवेख, अकरवमा धारिनकनिकाः, অনুচঃ ক্বত কৃতাাঃ "বিপুর্যান্তো নিদিধাানেৎ কিং ধ্যান মবিপর্যয়ে"—ইজু-ক্তে ধ্যানাদপি বিরক্তাইতি তাৎপর্যার্থঃ ॥ ২৮ ॥

^{* &#}x27;' ধর্মা ° ইতি ক-ঘ-গা-পুস্তকাঃ। * '' ফলো দয়া " ইতান্যান্যন্ পুস্তকে পাচঃ।

এবং শাস্ত্রেষু ভিন্নেষু ব্ছধা নীয়তে ক্রিয়া। তপোদানপ্রব্রতা চ রাজসী ভবতি প্রজা॥২৯॥ একবেদস্য চাজ্জানাদ্বেদাস্তে বহবঃ কুতাঃ। সন্তুম্য চেহ বিভংশাৎ সত্যে কিচনবস্থিতঃ ৯৫০॥ সত্ত্ৰাৎ প্ৰচ্যবমানানাং ব্যাধয়ো বহুবে হভবন্। कामारम्ह, शक्तवारम्हव छमा देव देववकात्रिजाः ॥ ७১ ॥ বৈ রন্ধামানাঃ স্বভূশং তপস্তপ্যন্তি মানবাঃ। কাম-কামা: স্বৰ্গকামা যজ্ঞাং তত্ত্বত্তি চাপরে॥ ৩২ ॥ এবং দ্বাপর মাসাদ্য প্রজাঃ ক্ষীয়ন্তাধর্ম্মতঃ। পাদেনৈকেন কৌন্তেয় ! ধর্মঃ কলিযুগে স্থিতঃ ॥ ৩৩ ॥ ভামসং যুগ মাসাদা ক্লফো ভবতি কেশবং। বেদাচারাः প্রশাম্যন্তি ধর্মযক্তক্রিয়াস্তথা ॥ ৩৪ ॥ ने रंदा वाध्यक्की (मायाः (काधामग्रस्थ।। উপদ্রবাশ্চ বর্তন্তে আধয়ঃ ক্ষুদ্রয়ৎ তথা ॥ ৩৫ ॥ যুগেদ্বাবর্ত্তমানেষু ধর্মো। ব্যাবর্ত্ততে পুনঃ। ধর্মে ব্যাবর্ত্তমানে তু লোকো ব্যাবর্ত্ততে পুনঃ॥ ৩৬॥ लारक कीरा क्रा यांचि छ। या लाक धवर्डकाः। যুগক্ষরক্কতা ধর্মাঃ প্রার্থনানি বিকুর্বতে। ৩৭ । এতৎ কলিযুগ্ন নাম অচিরাদ্যং প্রবর্তত। যুগ। মুবর্ত্তনন্তে, তৎ কুর্ব্বন্তি চিরজীবিনঃ ॥ ৩৮॥

॥ ২৯॥ সত্তস্য বুদ্ধে বিভংসাৎ ক্ষরাৎ॥ ৩০॥॥ ৩১॥ বৈঃ ব্যাধিতিঃ
কারৈশ্চ॥ ৩২॥ ৩৩॥ তামসং তমোগুল প্রধানং কলিম্ ॥ ৩৪॥ ঈতরঃ
তাতির্স্ত্যাদরঃ॥ ৩৫॥ ব্যাবর্ততে নশ্যতি॥ ৩৬॥ ভাবাঃ ধর্মজানাদরঃ,
প্রার্থনানি ক্রিবতে জন্য প্রার্থতে অন্যজ্জায়তে ইতার্থঃ, পৌষ্টিক
মপি কর্ম বিধিলোপারাশকং ভবতীতি ভাঃ॥ ৩৭॥ চিরজীবিনো
মানৃশা অপি যুগাল্বর্তিনঃ কালাল্সারিণো ভবতীত্যর্থঃ॥ ৩৮॥

যক্ত তে মংপরিজ্ঞানে কৌতুহল মরিন্দম!।
আনর্থকেষু কো ভাবঃ পুরুষস্য বিজানতঃ ?—" ৩৯ ॥
এতত্তে সর্বমাখ্যাতং যন্মাং ত্বং পরিপৃক্ষ্ নি!
যুগসংখ্যাপ মহাবাহো! স্বস্তি প্রাপ্তাহি গম্যতাম্ "--॥ ৪০ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি তীর্থযাত্রাপর্বাণি হন্নুমন্তীমসংবাদে
একোনপঞ্চাশদ্ধিকশতত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬৯ ॥

ভীমদেন উবাচ।

"পূর্বারূপ মদৃন্ট্র তেন যাস্যামি কথঞ্চন।

যদি তেহহ মনুগ্রাহ্যো দর্শরাক্সান মান্সনা । ১॥

বৈশল্পায়ন উবাচ।

এবমুক্তস্ত ভীমেন স্মিতং কৃত্রা প্রবঙ্গমঃ।

তদ্রেপণদর্শরামাস যদৈ সাগরলজ্ঞনে॥ ২॥

আতুঃ প্রিয়মভীপান বৈ চকার স্কমহন্বপুঃ।

দেহস্তম্য তত্তেহিভীব বর্জভায়োমবিস্তবৈঃ॥ ৩॥

সদ্রুদ্ধ কদলীয়ঞ্জ ছাদ্য়ন্নমিত্রাভিঃ।

গিরেশেচাচ্ছ্র মাক্রম্য তন্থেই তক্র স্বানরঃ॥ ৪॥

সমুচ্ছ্রিত-মহাকায়ো বিতীয় ইব প্রবিভঃ।
ভাস্কেণস্তীক্ষদংক্টো ক্রকুটী কুটিলাননঃ॥ ৫॥

অনর্থকের নিষ্পারোজনের ভাবেছিভিনিবেশঃ ॥ ৩৯ ॥ অন্তি কল্পান্ ॥ ৪০ ॥ ইত্যারনাকে প্রকৃথি বিলক্ষীয়ে ভারত জার্দীপে উন্পঞ্জা ক্রিক

ইত্যারণ্যকে পর্ব্যণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে ঊনপঞ্চা শাদ্ধিক • শাততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪৯ ॥

পূর্ব্বরপমিতি—॥১॥২॥৩॥ গিরেশ্চ বিদ্ধাগিরেরির ইতি। বার্থে চঃ
॥৪॥ তাত্রেক । আরক্ত নেত্রঃ॥৫॥

দীর্ঘলাঙ্গুলমাবিধ্য দিশো ব্যাপ্য স্থিতঃ কপিঃ।
তদ্রপং মহদালক্ষা ভ্রাতুঃ কৌরবনন্দনঃ॥ ৬॥
বিসিন্মিয়ে তদা ভীমো জহ্মষে চ পুনঃ পুনঃ।
ত মর্কমিব তেজোভিঃ দৌবর্ণমিব পর্বতম্॥ ৭॥
প্রদীপ্তমিব চাকাশং দৃত্যু ভীমো ন্যমীলয়ং।
আবভাষে চ হ্নুমান্ ভীমদেনং ক্ষয়নিব॥৮॥
"এতাবদিহ শক্তস্ত্বং কপে দেউ্ মমানঘ!।
বর্দ্ধেহপ্রাপ্যতো ভূয়ো ফাবন্মে মনসি স্থিতম্।
ভীম! শতুষু চাত্যর্থং বর্দ্ধতে মুর্ভি রোজসা"—॥ ৯॥
তিম! শতুষু চাত্যর্থং বর্দ্ধতে মুর্ভি রোজসা"—॥ ৯॥
তিম! শতুষু চাত্যর্থং বর্দ্ধতে মুর্ভি রোজসা"—॥ ৯॥
তিমাণ্ডারন উবাচ।

তদত্ত মহারৌদং বিদ্যাপর্বত-সন্ধিত্য।

চুফা হনুমতো ব্যা সংজ্ঞান্তঃ প্রনাত্মজঃ॥ ১০॥
প্রত্যাচ ততো ভীমঃ স্পপ্রকৃতিনুক্ষইঃ।
কৃতাপ্রলি রদীনাত্মা হনুমন্ত মবস্থিতন্॥ ১১॥
গেদুফং প্রমাণ বিপুলং শরীরস্যাস্য তে বিভো!।
সংহরস্থ মহাবীর্যা! স্থরমাত্মান মাত্মনা॥ ১২॥
ন হি শক্ষোমি ত্বাং দেউ পিবাকর মিবোদিতম্।
অপ্রমেয় মনাপ্রাং মৈনাক্ষিব পর্বতিন্॥ ১০॥
বিস্মাইন্চব মে বীর! স্থমহান্ মনসোহদা বৈ।
ফ্রামন্ত্রি পার্খন্তে স্বরং রাবণমভাগাৎ॥ ১৪॥
ত্বমেব শক্তস্তাং লক্ষাং স্বোধা সহ্বাহ্নাম্।
স্বাহ্নবল মাজ্যিতা বিনাশ্য়িতু মঞ্জ্যা॥ ১৫॥
ন হি তে কিঞ্জিপ্রাপ্যং মাক্ষতাত্মজ! বিদ্যতে।
তব নৈক্ষ্য প্র্যাপ্রো রাবণঃ স্গ্রেণা যুধি"—॥ ১৬॥

। ৬॥ १ ॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ পর্যাপ্তঃ সমর্থঃ॥ ১৬॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

এবমুক্তস্ত ভীমেন হ্নুমান্ প্লবগর্ষভঃ। প্রভাবাচ তভো বাক্যং স্নিগ্ধগন্তীরয়া গিরা ॥ ১৭॥ ছনুমান্ন্র্বাচ।

" এবমেতন্মহাবাহো। যথা বদসি ভারত।। जीयत्मन ! न পर्यारिश यमात्मी ताक्मांथमः ॥ २৮ ॥ ময়া তু নিহতে তিমানু রাবণে লোককণীকে। কীৰ্ত্তি ৰ্মােড ঘ্ৰমা তত এতছপেক্ষিত্ম॥ ১৯॥ ত্তেন বীরেণ তং হত্বা সগণ্শ রাক্ষসাধিপুম। আনীতা স্বপুরং দীতা কীর্ত্তিশ্চ স্থাপিতা নৃধু ॥ ২০॥ তদাচ্ছ বিপুলপ্রজ্ঞ! ভাতৃঃ প্রিয়হিতে রত:। অবিষ্ঠং কেম মধানং বাযুনা পরিরক্ষি তঃ ॥ ২১॥ এষ পন্তঃ কুরুশ্রেষ্ঠ। সৌগল্পিকবনায় তে। দ্রুল্যে ধনদোদ্যানং রক্ষিতং যক্ষরাক্ষরৈঃ॥ ২২॥ ন চ তে তর্সা কার্য্যঃ কুসুমাব্চয়ঃ স্বয়্ম । रेनवजानि हि भानग्रानि शूक्ररम् विरम्य कः । २०॥ বলি-হোম নমকারৈ স্থান্ত্রেশ্চ ভরতর্যভ!। দৈৰতানি প্ৰসাৰৎ হি ভক্তা কুৰ্বান্ত ভাৰত। ॥ ২৪॥ মা তাত। সাহসং কার্ষীঃ স্বধর্ম পরিপালয়। স্বধর্মস্থঃ পরং ধর্মং বুধ্যস্ব গময়স্ব চ ॥ ২৫ ॥ ন হি ধর্ম মবিজ্ঞায় রূদ্ধাননুপদেব্য চ। ধর্ম্মাথো বেদি বুং শক্যো বৃহস্পতিসমে রপি ॥ ২৬ ॥

॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ অরিষ্টং নির্বিরং॥ ২১॥ ২২॥ পুরুষেণ মর্ক্তোন ॥ ২৩॥ ২৪॥ গ্রাহ্ম ব্যোধপুর্বক মহাতিষ্ঠ 'স্বার্থিণিছ'॥ ২৫॥॥ ২৬॥

অধর্ম্মো যত্র ধর্মাখ্যো ধর্মান্চাধর্মানং জ্ঞিতঃ। স বিজেয়ে। বিভাগেন যত্র মুহান্তাবুদ্ধয়ঃ॥ ২৭॥ আচারসম্ভবে। ধর্মো ধর্ম্মে বেদাঃ প্রতিষ্ঠিতাঃ। বেদৈ র্যজ্ঞাঃ সমুৎপন্না যজ্ঞৈ দেবাঃ প্রতিষ্ঠিতাঃ ॥ ২৮ ॥ विमानात्रविधारनाटेक घरेक धार्याचि एनवजाः। রহস্পত্যশনোটক্তশ্চ নয়ে ধার্যান্তি মানবাং॥ ২৯॥ পণ্যাকরবণিজ্যাভিঃ ক্লুষ্যা গোহজাবিপোষণে:। বাৰ্ত্তরা ধার্যাতে সর্বাৎ ধর্মৈ রেতৈ দ্বিজাতিভিঃ। ৩০। ত্রয়ী বার্তা দগুনীতিস্তিত্রো বিদ্যা বিজ্ঞানতাম্। তাভিঃ সমাক্ প্রযুক্তাভি লে কিযাতা বিধীয়তে॥ ৩১॥ সা চেছৰ্মাক্তা ন স্যাত্ৰয়ীধৰ্মমূতে ভূবি। . দগুনীতি মৃতে চাপি নিৰ্ম্মৰ্য্যাদ মিদং ভবেৎ। ৩২। বার্ত্তাধর্মে হবর্তম্যো বিনশ্যেয়ুরিমাঃ প্রজাঃ। সুপ্রবৈত্তিভিছে তৈ ধর্মং সুয়ন্তি বৈ প্রজাঃ ॥ ৩০ ॥ দ্বিজাতীন।মৃত্য ধর্মো ছেক্সেট্র কর্বার্ণকঃ। যজ্ঞ।ধ্যয়নদানানি ত্রয়ং সংধারণাং সমৃত েঃ ॥ ৩৪ ॥ যাজানাখ্যাপন বিপ্রে ধর্মান্ডের প্রতিগ্রহঃ। পालन क जियाना रेव रेव ना धर्म क (भाषनम् ॥ ७०॥

ভূজনবধাহধর্মোপি ধর্ম এব, পরোপঘাতকং সতাং ধর্মোপি অধর্ম এব ॥ ২৭॥ আচারঃ পৌচাদি ন্তেন ধর্মঃ প্রাপাতে ততো বেদাধিগম স্ততো যজান্ত্রানং ততো দেবতা প্রসাদ ইতার্থঃ ॥ ২৮॥ বেদেতি— যজৈ দেবানাং নীত্রা মন্ত্রানাঞ্চ ছিতি রিতার্থঃ ॥ ২৯॥ পণো ভৃতি স্তাম্ইতীতি পণ্যা সেবা "পণো বয়াট মানে স্যাৎ"—ইত্যাপ ক্রম্য "ব্যব হারে ভৃত্তো ধনে"—ইতি মেদিনী, বার্তা জীবিফার্থা রক্তিঃ ॥ ৩০॥ সাচ ক্রমেণ বাহ্মণায় ক্র্যীযাজনাধ্যাপনাদিঃ, বৈশ্যম্য বার্তা পণ্যাদিঃ, ক্রিয়্ম্য দণ্ডাদিঃ॥ ৩১॥ সা লোক যাত্রা॥ ৩২॥ ৩৩॥ শ্বতং সত্যং আত্মজানাখ্যং, একো বর্গঃ শুকুঃ কেবল সাহিকঃ, ধর্মো বোগাখ্যঃ॥ ৩৪॥ ৩৫॥ উত্তেক্যাত

৬৮৭

শুক্রাবা তু দ্বিজাতীনাং শুদ্রাণাশ ধর্ম্ম উচ্যতে। ভৈক্ষাহোমত্রতৈহীনাস্তবৈধ গুরুবাসিতাঃ 🕏 ॥ ৩৬ ॥ ক্ষত্রধর্ম্মোইত্র কৌস্তেয়! তব ধর্ম্মোই ভিরক্ষণম্। স্বধৰ্ম্মং প্ৰতিপদ্যস্থ বিনীতো নিয়তেন্দ্ৰিয়ঃ॥ ৩৭॥ वृरेकः म∾प्रजा मिख्ण वृक्षिपिकः अञ्जाविरेजः। আস্থিতঃ শাস্তি দণ্ডেন ব্যসনী পরি ভূয়তে॥ ৩৮॥ নিগ্রহানুগ্রহঃ সম্যগ্যদা রাজা প্রবর্ততে। তদা ভবন্তি লোকস্য মর্যাদাঃ সুব্যবস্থিতাঃ॥ ৩৯॥ তক্মান্দেশে চ ছুর্গে চ শত্র্মিত্রবলেষু চ। নিত্য॰ চারেণ বোদ্ধব্যং স্থানং রুদ্ধিঃ ক্ষয়স্তথা।। ৪০॥ রাজ্ঞামুপায়শ্চারশ্চ বুদ্ধিমন্ত্র পরাক্রমাঃ। নিগ্রহপ্রহো চৈব দাক্ষ্যংবৈ * কার্য্যসাধনম্॥ ৪১॥ সামা দানেন ভেদেন দভেনোপেক্ষণেন চ। সাধনীয়ানি কর্মাণি সমাসব্যাস্যোগতঃ ॥ ৪২ ॥ মন্ত্রমূলা নয়াঃ দর্কো চারাশ্চ ভরতর্বভ!। সুমল্তিতে নয়ে সিদ্ধি স্তাং দিকৈঃ সহ মন্ত্রেৎ। ৪০। স্তিয়া মূচেন বালেন লুকেন লঘুনাপি বা। ন মন্ত্রীত গুহানি যেষু চোঝাদলকণম্॥ ৪৪॥

—গুরে, ত্রিন্থে বাসিতং বাসে। যেষাংতে শূজাঃ ভৈক্ষাদিভি ছাঁনা ভবন্তি শূজস্য ভৈক্ষ্যবা নাস্তী ত্যর্থঃ ॥ ৩৬ ॥ ক্ষত্তধ্যোহত্র প্রকরণে উগতে সচ তব ধর্মঃ, অক্র লোকে ॥ ৩৭ ॥ আস্থিতঃ অনুগৃহীতঃ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ স্থানং সিদ্ধসংরক্ষণন্ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ সমাসঃ সামাদিপঞ্চকে একেন দ্বিত্রৈবা কার্য্য সাধনং, ব্যাসঃ সর্কৈ শুং সিদ্ধিঃ ॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥

^{*} বাদিন ইতি ক-ঘ প্রস্তকৌ। * " বৈ ' ইভাত্ত " চেং ' ইতি ক-পুস্তকঃ।

মন্ত্রেৎ সহ বিছন্তিঃ শক্তৈঃ কর্মানি কাররেৎ। न्निरेक्षण्ड नीजिनिगानान् मूर्थान् नर्यका वर्जराय ॥ ४८ ॥ ধার্ম্মিকান্ ধর্ম্মকার্য্যেষ্থ অর্থকার্য্যেষ্থ পঞ্জিন। ক্রীযু ক্লীবান নিযুঞ্জীত ক্রুরান ক্রুরেষু কর্দ্মস্থ ॥ ৪৬ ॥ শ্বেভালৈর পরেভাশ্চ কার্য্যাকার্য্যসমুদ্ধবা। বৃদ্ধিঃ কর্মামু বিভেরো রিপুণাঞ্চ বলাবলম্॥ ৪৭ ॥ বুদ্ধা স্থপতিপন্নেষু কুৰ্য্যাৎ সাধুষু প্ৰগ্ৰহ্ম। নিগ্রহঞ্চাপ্যশিষ্টেষ নির্ম্মগ্যাদেষ কারয়েৎ ॥ ৪৮ ॥ নিগ্রহে প্রগ্রহে সম্প্রদা রাজা প্রবর্ততে। তদা ভব্তি লোকস্য মর্যাদা স্থব্যবস্থিতা ॥ ৪৯ ॥ এষ তেহভিহিতঃ পার্থ! ঘোরো ধর্ম্মো তুরন্বয়ঃ। তং স্বধর্মবিভাগেন বিনয়স্থোহনু পালয়-॥ ৫ ।॥ उंत्राधर्मात्रका जि किथा गाँखि यथा निवम । দানাভিথ্যক্রিয়াধর্ম্মে র্যান্ডি বৈশ্যান্ট সদাভিম। ক্ষত্রং যাতি তথা স্বর্গ- ভূবি নিগ্রহপালনৈ: । ৫১ ॥ সম্যক প্রণীতদণ্ডা হি কামদেষবিব্জি তাঃ। অলুকা বিগতক্রোধাঃ সতা যান্তি সলোকতাম "- ॥ ৫২ ॥ इंजातनारक পर्वान जीर्थगाजाभवनि इसुमहीसमःवारम পঞ্চাশদ্ধিকশভতমোহধ্যায়ঃ ॥ >c•॥

বিধিঃ হিতেপস্তি: নীতে: প্রজাপারপত্যাদে বিনাসা: ছাপনানি ॥ ৪৫॥ ৪৬॥ ব্যেতা শ্চারেডা: পরেডা: উৎকোচাদিনা লোভিভেডা: ॥ ৪৭॥ বৃদ্ধ্যা জীবনাশরা প্রতি পরের শরণাগতের ॥ ৪৮॥ ৪৯॥ ঘোরোধর্ম: ব্রব্য: হুজের: ॥ ৫০॥ ৫১॥ ৫২॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চাশদ্ধিক শততমোহধায়ঃ ॥ ১৫০ ॥ रिसम्भातन डेवाह।

ততঃ সংস্কৃত্য বিপুলং তদ্বপুঃ কামতঃ কুত্ম। ভীমসেন> পুনর্দোর্ভ্যাং পর্য্যম্বজত বানরঃ॥১॥ পরিম্বক্তম্য তম্যাশু ভাত্রা ভীম্ম্য ভারত। । অমো নাশ মুপাগচ্ছৎ সর্বাঞ্চাদীৎ প্রদক্ষিণমূ॥ ২॥ বলঞ্চতিবলো মেনে ন মেহস্তি সদৃশো মহান্। ততঃ পুনরখোবাচ পর্যাক্রনয়নো হরিঃ ॥ ৩॥ ভীম মাভাষ্য সৌহার্দাদ্বাস্প্রনদ্যাদ্যা গিরা। "গচ্ছ বীর! স্বমাবাসৎ স্মর্ভব্যোহস্মি কথান্তরে॥৪॥ ইহস্তৃশ্চ কুরুশ্রেষ্ঠ! ন নিবেদ্যোহিত্ম ক্যা-চিৎ। ধনদস্যালয়াচ্চাপি বিস্ফীনাং সহাবল ! ॥ ৫॥ (मनकाल ইहाয়ाञ्च (मनकार्यायाविकाम् । মমাপি সফল ১ কুঃস্মারিত শ্চাম্মি র ঘবস্ ॥ ৬॥ রামাভিধানং বিফুং हि জक्षृतसनम्तग्। সীতাবক্তারবিন্দার্কং দশাস্যধান্তভাকরম্॥ ৭॥ মানুষং গাত্রসংস্পর্শং গত্বা ভীম ! ত্বয়া সহ । তদক্ষদর্শন বীর! কৌতেয়ামোঘ মস্ত তে ॥ ৮॥ ভূতৃত্বং ত্বং পুরস্কৃত্য বরং বরয় ভারত!। যদি তাবন্ধয়া কুদ্রা গত্বা বারণসাহবয়স্ । ১॥ ধার্ত্তরাষ্ট্র। নিহন্তব্যা যাবদেতৎ করোম্যহমু। मिलया नगतः वानि मिक्छवा महा यि ॥ ३०॥ বদ্ধা ছুৰ্যোধন বাদ্য আনয়ামি তবান্তিকম্। যাবদেতৎ করোম্যদ্য কাম > তব মহাবল ! "- ॥ >> ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ।

তত ইতি স্পম্—॥১।২॥৩॥৪॥৫॥७॥५॥৮॥৯॥১०॥১১॥

ভীমসেনস্ত তত্বাক্য অহলা তসা মহাত্মনঃ। প্রভাবাচ হরুমন্ত্র প্রক্ষেনান্তরাত্মনা ॥ ১২ ॥ 'কুডমেব ত্বা সর্কং মম বানরপুঞ্চব।। স্থান্তি তেইস্ত মহাবাহো। কাময়ে ত্বাং প্রসীদ মে॥ ১৩॥ मनाथाः পाश्वाः मर्स्य प्रशा नारथन वीर्यावन् ।। তবৈব তেজদা সর্বান্ বিজেষ্যামো বরং পরান্"—॥ ১৪॥ এব মুক্তস্ত হস্তুমান্ ভীমদেন সভাষত। "ভ্ৰাতৃত্বাৎ সৌহৃদালৈ করিষ্যামি প্রিয়ংতব। ১৫। চমুং বিকাহ শত্বাৎ শরশক্তিসমাকুলাম। यमा जि॰ इत्ररः वीत! कतियानि महायन!॥ ১७॥ जमारु दूरश्चिष्ठांभि खतरवन तवर **उ**व । विकश्ना अकदण नामारकाकाशिम माक्नान् ॥ ১৭॥ শত্তাং তে প্রাণহরান স্থুপ যেন হনিষ্যুখ "---अवंत्राक्षा # इच्च्रांश्यमा शाख्यनन्त्रम् ॥ ३৮॥ মার্গমাখ্যায় ভীমায় তত্তৈবান্তরধীষত "॥ ১৯॥ ইত্যারণ্যকে পর্কাণ তীর্থযাত্রাপর্কাণ হনুসম্ভীমদ বাদে **धक्रिकानम्** । १६० ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। গতে ত্মিন্ হরিবরে ভীমোহপি বলিনাং ৰরঃ। তেন মার্কো- বিপুলং ব্যুচ্নকান্ধমাননম্ । ১॥

॥ १२ ॥ १७ ॥ ३८ ॥ १७ ॥ १९ ॥ भागीर व्यक्तिर कार्यात

ইত্যারগ্রকে পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে এ**ত্ত পঞ্চাশ**দধিক শততমেহিধ্যারঃ ॥ ১৫১ ॥

গতে ইতি-॥১॥

^{*} इञ्चक् भारकाङ्क्रकीर्वाकत्रवान्।

অনুশারন বপুস্তনা আয়ঞাপ্রতিমান ভূবি। माहाजा मञ्जावक नात्रम् मागत्रय र्यायो ॥ २॥ স তানি রমণীয়ানি বনাল্যপ্রবানি চ। বিলোকয়ামাস তদা সৌগন্ধিকবনেপায়া॥ ৩॥ कृतक्रमिविष्ठिं। मन्नारित मित्रज्यथा। নানা কুস্থম চিক্রাণি পুষ্পিতানি বনানি চ *॥ ৪॥ মন্তবারণমূখানি পঙ্কক্রিগানি ভারত!। বর্ষতামিব মেফানাং রন্দানি দদুশে তদা ॥ ৫॥ হরিশৈকপলাপাকৈ ইরিণীসহিতে ধানম। मन्म्यकवरेलः श्रीमान् श्रीक कृष्णे। कुछः गर्यो ॥ ७ ॥ महिरेयक व्यादेशक नाम्हरेलक निरंविष्ण्य। বাপেতভী পিরিং শৌর্যান্টীমদেনো ব্যগাহত ॥ ৭॥ कुत्रमामस गरेकान्य ठाअभद्धत-रकोमरेनः। याहामान इंदात्रा क्रियांक्रिकाल्योदेः *॥৮॥ ক্রপদাঞ্জিপুটা মন্তবট্পদদেবিতাঃ। প্রিয়তীর্থবনা মার্মে পশ্মিনীঃ সমতিক্রমন্ ॥৯॥ म मक्क्यानमत्नामृष्ठिः कृत्लयु शितिमानुषु । कोलनीवाकाशायादा कीमः मीख्छत्र यायो ॥ >०॥ পরিরত্তেহ্ছনি ভতঃ প্রকীর্ণছরিণে বনে। काक्ट्रेनिक्त्रिटेवः भरेषा पंतर्भ विभूताः नतीम् ॥ >> ॥

^{1 5 1 2 1 8 1 6 1 2 1 3 1 4 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1}

^{* &}quot; কুল জম বিচিত্রানি প্রিপাতানি বনানিচ। কুল পদ্ম বিচিত্রানি সরাং-দি স্বারতভ্রধা " ইত্যেবং ক-পুস্তকঃ পঠতি।

[†] অস্য এখন পাদে " কুইমানত শাগাতো "ইতি, তৃতীয় পাদ গত যাচ,মান ইত্যত্ত "বীজ্য মান " ইতি ক-পুন্তকে পাঠঃ। া সক্ষ্ণান ইতি ক-ব পুন্তকো পঠতঃ।

হং সকার গুবযুতা । চক্রবাকোপশোভিতাম।
রচিতামিব তস্যান্দে র্মালাং বিমলপক্ষজাম ॥ ১২ ॥
তস্যাং নদ্যাং মহাসন্তঃ সৌগন্ধিকবন মহং।
অপশ্যং প্রীতিজননং বালার্কসদৃশত্যুতি ॥ ১০॥
তদ্দী লক্ষকামঃ স মনসা পাণ্ডুনন্দনঃ।
বনবাসপরিক্লিটাং জগাম মনসা প্রিয়াম্ ॥ ১৪ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্মাণি তীর্থযাত্রাপর্মাণি সৌগন্ধিকাহরণে
দ্বিপঞ্চাশদ্ধিকশতত্মোহ্ধ্যায়ঃ॥ ১৫২ ॥

িবেশপায়ন উবাচ।

স পত্মা নলিনীং রম্যাৎ রাক্ষণৈ রভিরক্ষি তাম।

কৈলাসশিখরাভ্যাদে দদর্শ শুভকাননাম॥ ১॥

কুবেরভবনাভ্যাদে # জাতাং পর্বাতনিক রে।

স্থরম্যাং বিপুলজ্ঞায়াং নানাক্রমলতাকুলাম॥ ২॥

হরিতামুজসংছ্লাং বিব্যাং কনকপুষ্করাম।

নানাপক্ষিগণাকীর্ণাং স্থপতার্থা মকর্দ্দমাম॥ ৩॥

অতীবরম্যাং স্কলাৎ জাতাৎ পর্বত্সান্মু।

বিচিত্র ভূতাং লোকস্য শুভা মন্ত্তদর্শনাম॥ ৪॥

॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ মনসা জগাম নতু দেছেন ॥ ১৪ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকণ্ডীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বি-পঞ্চাণদধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫২ ॥

সগত্তে—॥১॥২॥ স্পতীর্থাং শোভনানি উপতীর্থানি ভীরানি যস্যাং সা॥ ৩॥৪॥

^{*} जाडाम नक सनग्रामिश।

তত্রামৃতরসং শীতং লঘু কুন্তীস্থতঃ শুভ্য । দদর্শ বিমলং তোয়ং # পিবংশ্চ বন্থ পাণ্ডবঃ ॥ ৫॥ ভাস্ক পুন্ধরিণীং দিব্যাৎ দিব্যসৌগন্ধিকারতাম্। জাতৰপময়ৈঃ পবৈ শ্ছরা পর্যগন্ধিভিঃ॥ ৬॥ विष्र्यावतनारेलक वर्ष्टाहित्व र्यातातरेमः। হংসকারগুবোদ্ধৃতৈঃ হজদ্ভি রমল ন রজঃ॥ ৭ n আক্রীডং রাজরাজস্য কুবেরস্য মহান্ত্রনঃ। গন্ধবৈর রক্ষরোভিশ্চ দেবৈশ্চ পরমার্চিভাগ ॥ ৮ ॥ সেবিতামূষিভি দ্দিব্যৈ ইক্ষঃ কিম্পুরুষৈস্তথা। রাক্ষসৈঃ কিন্নহৈশ্চাপি গুপ্তাং বৈপ্রবণেন চ। ১॥ ত ঞ দৃটেষ্ট্রব কৌত্তেয়ো ভীমদেনো মহাবলঃ। ব্রুব পরমগ্রীতো দিবাং সংগ্রেকা তৎসর:॥ ১०॥ ভচ্চ ক্রোধবশা নাম রাক্ষ্যা রাজশাসনাৎ। রুক্তি শতদাহত্র,শ্চিতাযুধ পরিচ্ছদাঃ॥ ১১॥ তে ভু দৃষ্টেব কৌস্তেয় মঞ্জিনঃ প্রতিবাদিতন্। क्रक्तां अप्तरंतर वीतः भीमर जीमर्गताक्रमम् ॥ >२॥ সাযুধ্ব বন্ধনিস্ত্রিশ্ল নশস্কিত মরিন্দমন্। পুষ্করেক্স্মুপায়ান্ত মন্যোন্য মভিচুকুশুঃ ॥ ১৩ ॥ ও অয় পুরুষশার্দ লঃ সায়ুধোহজিনসংরতঃ। যচ্চিকীর্ষ রিহ্প্রপ্তি স্তৎ সংপ্রফী মিহার্হথ ''—॥ ১৪॥

লঘু আবোগ্য করম্ ॥ ৫ ॥ জাত রূপং স্বর্ণ ৬ ॥ ছংসাদিপোটতঃ ছংসাদ্যুদ্ধত ক্র্মাণ । আক্রীড়ং ক্রীড়া স্থানশ্ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥

^{* &}quot;পিংংশ্চ" ইত্যত্র "শিবঞ্চ" ই'ত ক-পাচঃ।

ততঃ সর্বে মহাবাহ্ সমাস। লা রুকোদরম্।
তেজযুক্ত মপৃক্ত "কল্পমাঝাত মহসি॥ ১৫॥
মুনিবেশধরশৈব সায়ুধশৈবে লক্ষ্যে।
যদর্থমপি সংপ্রাপ্ত নাচক্ষ্ মহামতে।"—॥ ১৬॥
ইত্যারণ্যকে প্রবি তীর্থমাতাপ্রবি মৌগন্ধিকাহরণে
ত্রিপঞ্চাদ্ধিকশততমোহ্ধ্যায়ঃ॥ ১৫৩॥

ভীম উনাচ।

'পোপ্তবো ভীমসেনোংহং ধর্মারাজাদনন্তরঃ। বিশালাং বদরীং প্রাপ্তো জাত্তিঃ সহ রাক্ষসাঃ!॥ ১॥ অপশ্যন্তত্ত্ব পাঞ্চালী সৌগস্থিক মনুত্তমম্।

— অনিলোচ মিতো কুনং সা বহুনি পরীপাতি ॥ ২ ॥
তস্যা মামনবদ্যাস্থ্যা ধর্মপল্পাঃ প্রিয়ে স্থিতম্ ।
পুষ্পাহার মিহ প্রাপ্তঃ নিবোধত নিশাচরাঃ !"—॥ ৩॥
রাক্ষ্যা উচুঃ।

" আক্রীডোহর কুবের স্যুদ্ধিতঃ পুরুষর্ধত । ।
নেহ শক্যং মনুষ্যেণ বিহুর্জুং মত্যধর্মিণা ॥ ৪ ॥
দেবর্ধরস্তথা যক্ষা দেবাশ্চাত রুকোদর ! ।
আমস্ত্র্য যক্ষপ্রবরং পিবস্তি চ রমন্তি চ ।
গক্ষবাশ্বরশ্বস্বশহর বিহরস্তাত্র পাশুব ! ॥ ৫ ॥

॥ ১৫ ॥ আৰু সমাক্ কথর ইতাবরঃ ॥ ১৬ ॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রি-পঞ্চা পঞ্চাশদধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ३৫০ ॥

পাতৰ ইতি—॥ ১॥ অনিলে। চুং বাযুনা আনিতি যু॥ ২॥ পুজাহারং পুজাহারকম্। ॥ ৬॥ ৪॥ ৫॥ অন্যায়েনেই য়ং কশ্চিদ্বমন্য ধনেশ্রম।
বিহর্তুমিচ্ছেদ্র্কি, তঃ স বিনশ্যের সংশয়ং॥ ৬॥
ত মনাদৃত্য পদ্মানি জিহীর্ষসি বলাদিতঃ।
ধর্মরাজস্য চাত্মান ব্রবীষি ভাতরং কথম্?—। ৭॥
আমস্ত্রা যক্ষরাজং বৈ ততঃ পিব হরস্ব চ।
নাতোহ্ন্যথা ত্বয়া শক্য কিঞ্ছিৎ পুষ্কর্মীকি তুম্ "—। ৮॥

डिभरमन डेका ।

দেশাকি সার্ব্যক্তি ন পশ্যামি ধনেশ্র মিহান্তিকে।

দৃশ্যাপি চ মহারাজং নাহে যাচিতু মুৎসহে । ৯ ॥

ন হি যাচন্তি রাজান এব ধর্মঃ সনাতনঃ।

ন চাহং হাতুমিচ্ছামি ক্ষাজ্রং ধর্মঃ কথঞ্চন ॥ ১০ ॥

ইয়ঞ্চ নলিনী রম্যা জাতা পর্বতনিম্বরে।

নেয়ং ভবনমাসাদ্য কুবেরসা মহাজ্মনঃ॥ ১১ ॥

তুল্যা হি সর্বাভূতানামিয়ং বৈশ্রবণসা চ।

এবং গতেষু দ্বোষু কঃ কং যাচিতুমইন্তি ?"—॥ ১২ ॥

देवनन्त्राज्ञन खेवाह।

ইত্যক্ত, রাক্ষসান্ সর্বান্ ভীমসেনোহত্যমর্ধণং।
ব্যগাহত মহাবাছ নিলিনী তাং মহাবলঃ॥ ১৩॥
ততঃ স রাক্ষসৈর্বাচা প্রতিষদ্ধঃ প্রতাপবান্।
মা মৈব মিতি সজোধৈ ওৎ সয়ন্তিঃ সমস্ততঃ॥ ১৪॥
কদথাক্বতা তু স তান রাক্ষসান্ ভীমবিক্রমাঃ।
প্রাগাহত মহাতেজাঁত্তে তং সর্বে ন্যবার্য়ন্॥ ১৫॥

1 2 1 4 1 4 1 4 1 5 1 50 1 55 1 50 1 58 1 50 1

' গৃহ্ছীত বধ্নীত বিকর্ততেম•, পচাম খাদাম চ ভীমদেনগু"। কুদ্ধা ব্রুবন্ডোহভিষয়ু দ্রুতি জে, শস্ত্রাণি চোদাম্য বিরুত্তনেত্রাং —॥ ১৬॥ ততঃ স গুর্কীং যমদপ্তকম্পাং, মহাগদাং কাঞ্চনপট্টনদাম। গ্রগৃহ ভানভ্যপতত্তরস্বী, ততোহত্রবীন্তিষ্ঠত তিষ্ঠতেতি --। ১৭॥ তে ত^ তদা তোমরণট্রিশাদ্যৈ, ব্যাবিদ্ধশক্তিঃ गহুসা নিপেতৃঃ। জিঘাংসবঃ ক্রোধবশাঃ স্থভীমাঃ, ভীমং সমস্তাৎ পরিবক্ত রুগ্রাঃ--॥ ১৮॥ বাতেন কুন্ত্যাৎ বলবান্ সুজাতঃ, * শূরস্তরস্বী দ্বিষতাং নিহন্তা। সত্যে চ ধর্মে চরতঃ সদৈব, পরাক্রমে শত্রভি রপ্রধ্যাঃ॥ ১৯॥ তেষাং স মার্গানু বিবিধানু মহাত্মা, বিহন্য * শস্ত্রাণি চ শাত্রবাণাম। যথা প্রবীরান্নিজন্মন ভীমঃ, পরং শতং পুষ্করিণীসমীপে । ২০।

॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ বিছন্য বিনাশ্য ''বা লাপি"—ইত্যনুন্-সিকালোপ পক্ষে ইদংরূপম্ পুরংশতং শতাধিক মিত্যথঃ ॥ ২০ ॥

^{*} সজাত ইতি ক— † "বিহত্য" ইতিফ্চিং।

তে তস্য বীৰ্য্যঞ্চ বলঞ্চ দৃষ্ট্ৰা, विम्यायल वाष्ट्रयल उरेथव। অশক্রন্তঃ সহিতং সমন্তা,-দ্বতপ্রবীরাঃ সহসা নির্ভাঃ—॥ ২১॥ বিদীৰ্ঘ্যমাণাস্তত এব তুৰ্ণ, মাকাশমাস্থায় বিমৃতসংজ্ঞাঃ। কৈলাসশৃঙ্গাণ্যভিত্বক্রবুস্তে, ভীমাৰ্দ্ধিতাঃ ক্রোধবশাঃ প্রভগ্নাঃ॥ ২২॥ म শক্রবদানবদৈত্যসংঘান, বিক্রম্য জিত্বা চ রণেহরিস্ঘান্। বিনাম তাং পুষ্করিণীং জিতারিং, কামায় জগ্ৰাহ ততোহয় জানি। ২০। ভতঃ স পীত্বামৃতকম্পমন্ত্রো, ভূয়ে বভূবে। ত্তমবীর্য্যতেজাঃ। উৎপাট্য জগ্ৰাহ চ সোহযুজানি, সৌগক্ষিকান্ত্যন্তম গন্ধবস্তি॥ ২৪॥ ততম্ভ তে ক্লোধবশাঃ সমেত্য. ধনেশ্বরং ভীমবল প্রণুরাঃ। ভীমস্য বীর্ঘাঞ্চ বলঞ্চ সম্ব্যে, যথাবদাচখ্যুরতীব ভীতাঃ॥ ২৫॥

সহিতং একীভূর।পি অশক বস্তঃ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ বিক্রমা জিলা অভিভূর বশীকৃদা চেতার্থ: ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ কামাৎ কামার স্কেট তেষাং বচস্তন্তু নিশমা দেবং,
প্রহ্মা রক্ষা শি ততোহ ভাবাচ।

'গ্ স্থাত্ব ভীমো জলজানি কামাং,
কৃষণানিমিন্তং বিদিতং মহৈতৎ "—॥ ২৬ ॥
ততোহভানুজ্ঞাপ্য ধনেশ্বং তে
জগ্মঃ কুরুণা প্রবাহ বিরোধাং।
ভীমঞ্চ তদ্যাং দদৃশুর্নলিন্যাং,
যথোপযোষ বিহরন্তমেক মৃ ''—॥ ২৭ ॥
ইত্যারণাকে পর্কাণ তীর্থাত্রাপর্কাণ দৌগন্ধিকাহরণে
চতুঃপঞ্চাশ্দধিকশততমোহধ্যায়ং॥ ১৫৪ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

ততন্তানি মহাহাণি দিব্যানি ভরতর্ষত। ।
বহুনি বছরপাণি বিরজাংসি সমাদদে॥ ১॥
ততো বাযুর্মহান্ শীঘ্রো নীচৈঃ শর্করকর্ষণঃ।
প্রাক্রাসীৎ থরস্পর্শঃ সংগ্রাম মভিচোদয়ন্॥ ২॥
পপাত মহতী চোক্রা সনির্ঘাতা মহাভয়া।
নিপ্পু ভশ্চাভবৎ সূর্যা শ্ছরাবিশান্তমোর্তঃ। ৩॥

সিদ্ধ্যর্থ । ২৬ ॥ ২৭ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুঃ-পঞ্চাশদ্ধিক
শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫৪ ॥

छउ रेडि । । । २ । ७ ॥

নির্ঘাতশাভবদ্ধীমে। # ভীমে বিক্রম মান্থিতে। চচাল পৃথিবী চাপি পা শ্রুবর্ষ পপাত চ। ৪। সলোহিতা দিশশ্চাসন্ খরবাচো মুগ্ছিজাঃ। তমোরতমভূৎ দর্কাং ন প্রাক্তায়ত কিঞ্চন ॥ ৫॥ অন্যে চ বহবো ভীমা উৎপাতান্তত্র জব্জিরে। তদন্ততমভিপ্রেক্য ধর্মপুত্রে। যুধিষ্ঠিরঃ॥ ৬॥ উবাচ বদতাং শ্রেষ্ঠঃ ও কোহস্মানভিভবিষ্যতি—। সজ্জীভবত ভদ্রং বঃ পাগুবা! মুদ্ধতুর্মাদাঃ ॥ ৭ ॥ যথাৰপাৰি পশ্যামি স্বভাগ্যোনঃ পরাক্রমঃ "-। এবমুক্তা ততো রাজা বীকাঞ্চক্রে সমন্ততঃ ॥ ৮॥ অপশ্যমানো ভীমস্ক ধর্মপুত্রো যুধিষ্ঠিরঃ। ততঃ কুষ্ণাং যমৌ চাপি সমীপস্থাবরিন্দমঃ । ৯॥ পপ্রচ্ছ ভ্রাতরং ভীমণ ভীমকর্মাণমাহবে। " কচ্চিন্ন ভীমঃ পাঞ্চালি ! কিঞ্চিৎ ক্বত্য^ চিকীৰ্ষতি ॥ ১০॥ কুতবানপি বা বীরঃ সাহদং সাহদপ্রিয়ঃ। ইমে ছকস্মাতুৎ পাতা মহাসমরদর্শনাঃ॥ >> ॥ দর্শরন্তো ভরং তীব্রং প্রাত্নভূতিয়ে সমস্ততঃ ''। ত ज्था वाषिनः क्र श्राचा मनित्री। প্রিয়া প্রিয় তিকীর্ষস্তী মহ্ষী চারুহাসিনী ॥ ১২ ॥ জৌপছাবাচ।

॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ স্বভ্যাঃ স্তর। (মাসরঃ) পরাক্রমঃ পরাক্রম কালঃ ॥ ৮॥ ১॥ ১০॥ ১১॥ ৩২॥

^{*} অভ্য দিত্যৰ "অপতং " ইতি ক-ঘ-পুস্ত:ক।

' যন্তৎ সৌগন্ধিকং রাজন্ন!হৃত্ মাত্রিশ্বনা। তন্মরা ভীমদেনস্য প্রীতয়াদ্যোপপাদিতম্ ॥ ১৩ ॥ অপি চোক্তো ময়া বীরো যদি পশ্যে ব্যন্থন্যপি। তানি সর্বাণাপাদায় শীঘ্র মাগম্যতামিতি॥ ১৪॥ স তু ভূনং মহাবাহুঃ প্রিয়ার্থং মম পাণ্ডব!। প্রাগুদীচীং দিশণ রাজংস্তান্যাহর্তুমিতো গতঃ "—॥ ১৫ ॥ উক্তত্তেব তয়া রাজা যমাবিদমথাত্তবীৎ। " গচ্ছাম সহিতান্তর্ণং যেন যাতো রুকোদরঃ ॥ ১৬ ॥ বহন্ত রাক্ষমা বিপ্রান্ যথাপ্রান্তান্ যথ কুশান্। ত্বমপ্যমরসক্ষাশ। বহ কুষ্ণাং ঘটোৎকচ !॥ ১৭॥ ব্যক্তং দুরমিতো ভীমঃ প্রবিষ্ট ইতি মে মতিঃ। টির্ঞ তদ্য কালোহ্য়ং স চ বাযুসমো জবে।। ১৮ 🕸 তরস্বী বৈনতেয়স্য সদুশো ভুবি লংঘনে। উৎপতেদপি চাকাশং নিপতেচ্চ যথেচ্চুক্য ॥ ১৯॥ ত মন্বিয়াম ভবতাং প্রভাবাত্তজনীচরাঃ !। পুরা স নাপরাগ্নোতি সিদ্ধানাং ব্রহ্মবাদিনাম্ "---। ২০ ম তথে হ্যুক্তা তু তে সর্বে হৈডিয়থ মুখান্তদা। উদ্দেশজ্ঞাঃ কুবেরস্য নলিন্যা ভরতর্বভ! ॥ ২১॥ चामाय পाखवारटेम्हव जारमह विश्वानत्नकमः। লোমশেনৈব সহিতাঃ প্রযয়ুঃ প্রীতমানসাঃ ॥ ২২ ॥ তে সর্বের ত্বরিতা গত্বা দদুশুঃ শুভকাননাম্ প্রসাগিষ্কিকবতীণ নলিনীণ স্থমনোরমায্। ২৩ 🛭

॥३७॥३८॥३৫॥३७॥३०॥ ४०॥ ७८क वळा: ऋग्नळा: ॥२०॥ ॥२८॥२०॥ তঞ্চ ভীম^ মহাত্মানং তস্যাস্তীরে তরস্বিনয়। দদৃশুর্নিহতাংকৈতব যক্ষা শ্চ বিপুলেক্ষণান্ ॥ ২৪ ॥ ভিন্নকায়।ক্ষিবাহুরূন সংচুর্বিতশিরোধরান্। তঞ্চ ভীমং মহাত্মানং তদ্যাস্তীরে ব্যবস্থিতম্ । ২৫॥ मक्तिषिः स्वतायनः मन्तर्घेननमञ्जूषम् । উদ্যম্য চ গদাং দোর্ভ্যাৎ নদীতীরে ব্যবস্থিতম্। ২৬ । প্রজাসক্তেমপসময়ে দগুহস্তমিবান্তকম্। তং দৃষ্ট্ব। ধর্মারাজস্তু পরিষজা পুনঃ পুনঃ ॥ ২৭॥ উবাচ শ্লক্ষয়া বাচা কৌন্তেয় ! কিমিদ । কৃত্যু ?। সাহসং বত ভত্ত^ তে দেবানামথ চাপ্রিয়ম্ ং২৮ ॥ পুনরেবং ন কর্ত্তবাং মন চে, দিচ্ছসি প্রিয়ম্। অনুশিষ্য স কৌন্তেয়ং পল্পানি পরিগৃষ্ঠ চ ॥ ২৯ ॥ তস্যামেব নলিন্যাং তে বিজহুরমরোপমাঃ। এতন্মিরেব কালে তু প্রগৃহীতশিলাযুধাঃ॥ ৩০॥ প্রাতুরাসন্মহাকায়া স্তস্যোদ্যানস্য রক্ষিণঃ। তে দৃষ্ট্বা ধর্মারাজান শমহর্ষিঞাপি লোমশম্॥ ৩১॥ নকুল৲ সহদেবঞ তথান্যান্ ব্ৰাহ্মণ্ৰভান্। বিনয়েন নতাঃ দর্বে প্রণিপেতুশ্চ ভারত!॥ ৩২॥ সান্ত্রিতা ধর্মারাজেন প্রদেছ: ক্ষণদাচরাঃ। বিদিতাশ্চ কুবেরস্য তত্ত তে কুরুপুঞ্চবাঃ॥ ৩৩।

11 48 11 40 11 40 11 49 4 47 11 49 11 90 11 90 11 90 11

উষুর্নাতিচর কাল করমমান্ঃ কুরছহাঃ।
প্রতীক্ষমান্ বীভৎস্থং গন্ধমাদন সামুষু"—॥ ৩৪॥
ইত্যারণ্যকে পর্বানি তীর্থযাত্রাপর্বানি সৌগন্ধিকাহরণে
পঞ্চপঞ্চাদদ্যিকশততমোহ্য্যায়ঃ॥ ১৫৫॥

বিশাল্পায়ন উবাচ।
তিন্দ্রিরসমানোহধ ধর্মারাজাে যুথিন্ঠির:।
কৃষ্ণা সহিতান ভাতুনিত্যুবাচ সহদ্বিদ্যান চ।
গদৃষ্টানি তীর্থান্যমাভিঃ পুণাানি চ শিবানি চ।
মনসাে জ্বাদনীয়ানি বনানি চ পৃথক্ পৃথক্॥ ২॥
দেবৈঃ পূর্বং বিকার্ণানি মুনিভিশ্চ মহান্সভিঃ।
"বিধাক্রমং বিশেষের দিজৈঃ স্প্রিতানি চ॥ ৩॥
ঋষীবাং পূর্বচরিত্র তথা কর্মা বিচেটিত্যু।
রাজ্বীনাঞ্চ চরিত্র কথাশ্চ বিবিধাঃ শুভাঃ॥ ৪॥
শৃণানাস্ত্র ত্র মা আশ্রমেষু শিবেষু চ।
অভিষেকং দিজৈঃ সার্ধং ক্তবস্তাে বিশেষতঃ॥ ৫॥
অর্চিতাঃ সততং দেবাঃ পুল্পারন্তিঃ সদা চ বঃ।
যথালকৈ মূলফলৈঃ পিতরশ্চাপি তর্পিতাঃ॥ ৬॥
পর্বতেষু চ র্গ্যেষু সর্বেষু চ স্বঃস্ক চ।
উদ্ধাে চ মহাপুণ্যে স্থপস্পৃষ্টিশ মহান্সভিঃ॥ ৭॥

1 80 H

ইত্যার গাকে পর্বাণ নৈল কণ্ঠীয়ে ভারত ভাব দীপে পঞ্চপঞ্চাশদধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫৫॥

তৃশ্মিল্লিতি—॥১॥२॥७॥৪॥৫॥७॥१॥

ইলা সরস্থতী সিন্ধুর্যমুনা নশ্মদা তথা।
নানাতীর্থেষু রম্যেষু স্থপস্থাই সহ দিজৈ: । ৮॥
গঙ্গাদারমতিক্রম্য বহবঃ পর্বাতাঃ শুভাঃ।
হিমবান্ পর্বাতশৈচব নানাদ্বিজ্ঞগণাযুতঃ ॥ ৯॥
বিশালা বদরী দৃষ্টা নরনারায়ণাশ্রমঃ।
দিব্যা পুষ্করিনী দৃষ্টা সিদ্ধদেবর্ষিপুজিতা । ১০॥
যথাক্রমং বিশেষেণ সর্বাণ্যায়তনানি চ।
দর্শিতানি দ্বিজ্ঞান্তা লোমশেন মহাত্মনা ॥ ১১॥
ইমং বৈশ্রবণাবাসং পুণাং সিদ্ধনিষেবিত্রম্।
কথং ভীম! গমিষ্যামো গতিরস্করধীয়তাম্"॥ ১২॥
বৈশ্ল্পায়ন উবাচ।

এবং ক্রেবতি রাজেন্দ্রে বাগুবাচাশরীরিণী।

''ন শক্যো তুর্গমো গল্জ মিতো বৈশ্রবণাশ্রমাৎ॥ ১৩॥

অনেনৈব পথা রাজন্। প্রতিগচ্ছ যথাগতম্।

নরনারারণস্থানং বদরীত্যভিবিশ্রুতম্॥ ১৪॥

তত্মাদ্যাস্যাসি কৌন্তের! সিদ্ধচারণসেবিতম্।

বহুপুপ্রাফলং রম্যমাশ্রমাশ র্ষপ্রবণঃ॥ ১৫॥

অতিক্রম্য চ তং পার্থ! স্বাফিবেণাশ্রমে বসেঃ।

ততো দ্রুক্যসি কৌন্তের! নিবেশণ ধনদস্য তম্"—॥ ১৬॥

এতস্মিন্তরে বাযুদিব্যগন্ধবহুং শুচিঃ।

সুপ্রাহ্লাদনঃ শীতঃ পুষ্পাবর্ষণ ববর্ষ চ॥ ১৭॥

॥ ৮॥ ১॥ ১০॥ ১১॥ পাতি রন্তরধীয়তাং অন্তর্গতিঃ কুবের ভবনে প্রবেশ: "কথংভবেং ?—ইত্যধীয়তাং বিচার্যাতা মিত্যর্থ:॥ ১২॥ ইত্যোহেতোঃ, (স্থানা দ্বা) বৈশ্রবাশ্রমাৎ প্রতিগক্ত পর্যবর্ত্তর ॥ ১৬॥ ১৫॥ ॥ ১৬॥ ১৭॥

প্রান্ত্র দিব্যামাকাশাদ্বাচন সর্ব্বে বিসিন্দিয়ু:।
খাধীণান ব্রাহ্মণানাঞ্চ পার্থিবানাং বিশেষতঃ॥ ১৮॥
প্রাত্ত্বা তত্মহদাশ্চর্যাং দিজো ধৌম্যোহব্রবীন্তদা।
ন শক্যমুক্তরং বক্তুমেবং ভবতু ভারত।"—॥ ১৯॥
ভব্যে যুধিষ্ঠিরো রাজা প্রতিজ্ঞাহ তদ্বচঃ।
প্রত্যাগম্য পুনস্তেন নরনারায়ণাশ্রমম্॥ ২০॥
ভীমদেনাদিভিঃ সর্বৈর্জ্বাভ্তিঃ পরিবারিতঃ।
পাঞ্চাল্যা ব্রাহ্মণৈশ্চবে ন্যবসন্তু স্থাই তদা॥ ২১॥
ইত্যারণ্যকৈ পর্বাণি তীর্থমাত্রাপর্বাণি পুনর্বরনারায়ণাশ্রমাগমনে
ঘট্পঞ্চাশদধিকশতভ্যমোহধ্যায়ঃ॥ ১৫৬॥

35 11 32 11 30 11 32 11

ইত্যারণাকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে মটুপঞ্চাশদধিক শততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৫৬॥

সমাপ্ত ঞেদং তীর্থযাত্রা পর্ব।*

^{*} ক-পুস্তকে ভীর্থবাত্রা পর্ব্ব সমাপ্তি নাত্র কৃতা।

অথ জটাস্থর বধ পর্ব॥ ৮॥

ñrararararararara

সপ্রপঞ্চাশদধিক শত অধ্যায় প্রারম্ভ। বৈশস্পায়ন উবাচ। ততন্তানু পরিবিশ্বস্তানু বসন্ত ন্তত পাওবানু। পর্বতেক্তে ভিজঃ সার্দ্ধং পার্থাগমনকাক্ষয়া॥ ১॥ গতেষু তেষু রক্ষাস্থ ভীমদেন। মুজেহ পি চ। রহিতান ভীমদেনেন কলাচিত্তান্ যদুচ্ছয়া। ২॥ জহার ধর্মরাজানং যমৌ কুষ্ণাঞ্চ রাক্ষসঃ। ব্রান্সণো মন্ত্রকুশলঃ দর্মণাত্রবিত্নতমঃ॥ ৩॥ ইতি ক্রবনু পাগুবেয়ান্ পর্যুপান্তে স্ম নিত্যদা। পরীক্ষমানঃ পার্থনা কলাপানি ধনুংষি চ॥ 8 ॥ অন্তরং সমপরিপ্রেপ্স দৌ পদ্যা হরণং প্রতি। ছুফীত্মা পাপবুদ্ধি স নামা খ্যাতো জটাস্থরঃ॥ ৫॥ পোষণং তদ্য রাজেন্দ্র । চক্রে পাগুবনন্দন:। বুবুধে ন চ ত^ পাপ^ ভস্মচ্ছন্ন মিবনেলম্॥ ৬॥ न जीमत्मत्न निष्ठ्रात्त्व मृशशोर्थ महिन्मत्म । ঘটে। ৭ কচং সানুচর দুই। বিপ্রক্রতং দিশঃ ॥ १ ॥ লোমশপ্রভূতীংস্তা শ্রু মহ্ধী শ্রু সমাহিতান্। স্ত্রাতৃং বিনির্গতান্ দুফা পুষ্পার্থঞ্চ তপোধনান্॥ ৮॥ ৰূপমন্যৎ সমাস্থায় বিক্বতং টভরবং মহৎ। পুহীছা সর্বশস্ত্রাণি দ্রৌপদীং পরিগৃহ চ॥ ৯॥

শ্মীতি ক্ৰবন্ ॥ ৩॥ কলাপানি নিষ্পাদীনি ॥ ৪॥ ৫॥ ७॥ १॥ ৮

তত खानिতि—॥ ১॥ २॥ জहात धर्मामीनाः मत्ना क्रज्यान् छेत्रामा

প্রাতিষ্ঠত স দুফারা তীন গৃহীত্বা চ পাগুবান । সহদেবস্তু যত্ত্বেন ততোহপক্রমা পাপ্তব: ॥ ১০ n বিভাষ্য কৌশিকং খজাৎ মোক্ষয়িত্বা গ্রহং রিপোঃ। व्यक्तिमस्त्रीमरम्बर देव (यन यहाँ जा महावनः ॥ ১১॥ ত মত্রবীদ্ধর্মাজো ক্রিয়মাণো যুধিষ্ঠিরঃ। 'ধর্মান্তে হীয়তে মূঢ়া ন তত্ত্বং সমবেক্ষদে ?—॥ ১২ ॥ यिश्रत्य कृष्टिश्रसूरियासू विर्यार्श्यानिशंखा विष् ধর্মান্তে সমবেক্ষন্তে রক্ষাৎসি চ বিশেষতঃ n ১৩ n ধর্মস্য রাক্ষসা মূল পর্মাং তে বিতু রুত্তমম্। এতৎ পরীক্ষ্য সর্বাং ত্বং সমীপে # স্থাতুমইসি । ১৪।। দেব। শুচ পিতরঃ সিদ্ধা ঋষয় শুচাপি রাক্ষস !। शुक्राद्वां दशदकाशंत्र वश्राशंत्र श्रभवख्या ॥ ১৫॥ তিষ্যগেষানিগত। শৈব অপি কীটপিপীলিকাঃ। মনুষ্যানুপজীবন্তি ততন্ত্র্মপি জীব্দি। ১৬॥ সমৃদ্ধা হৃদ্য লোকদা লোকো যুগ্গাকমুধ্যতি। ইমঞ্চ লোকং শোচন্ত মনুশোচন্তি দেবতাঃ॥ ১৭॥ शृकामानाक वर्क्तत्स इवा करेवा यथाविधि। বয়ং রাষ্ট্রস্য গোপ্তারো রক্ষিতারশ্চ রাক্ষস !॥ ১৮॥ রাষ্ট্রদ্যারক্ষ্যমাণস্য কুতো ভূতিঃ কুতঃ স্থপন্ ?— । ন চ ব্রাজাবমস্থব্যো ব্রক্ষ্যা জাত্মনাগ্সি॥ ১৯॥

কেশিকং কোশা দাগতং, গ্রহং গ্রহণম্ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ মুখাকং দেবাহ্রাদীনাং ঝধাতি, ঋদ্ভতি ইতিপাঠে রুদ্ধিং গদ্ভতি ॥ ॥১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯॥ বিষসাশান্ দেবাহ্ররাদ্ধাদি শেষারং

^{*} সমীপে ইডার 'সময়ে' ইতি ক-পৃস্তক:1

অণুরপাপচারশ্চ নাস্ত্যাস্মাকং নরাশন !। বিঘসাশান্ যথাশক্ত্যা কুর্ম্মছে দেবতাদিযু ॥ ২০ ॥ গুৰংশ্চ ত্রাহ্মণাং শৈচৰ প্রণামপ্রবণাঃ সদা। फ़िक्षगु॰ न ह भिरत्वयु न विश्वर**ख्यू क**ईहिए॥ २১ ॥: যেষাঞ্চানানি ভুঞ্জাত যত চ স্যাৎ প্রতিশ্রয়:। দ ত্বং প্রতিশ্রহেক্সাক পুজামানঃ স্থাধিতঃ ॥ ২২ ॥ ভুকু। চালানি ছুষ্পুজ্ঞ ! कथ मत्रान जिहीर्यति ?—। এবমেব রুথাচারো রুথারুদ্ধো রুথামতিঃ॥ ২৩॥ व्रथामवन्मई क क व्रथाना न ভবিষাসি। অথ চেদ্দ ফবুদ্ধিশুং সবৈধে শৈৰ্ম বিবৰ্জি তং ॥ ২৪ ॥ थानात्र भञ्जागान्याकः यूटकन क्वोभनीः इत —। व्यथं ८ हज्जू मविख्वानो निषदः कर्या कतियागि ॥ २० ॥ व्यथमांका भाकी दिक त्वारक व्याभामि (करवाम्। এতামদ্য পরামৃষ্য স্ত্রিয়^ রাক্ষস! মানুষীম্॥২৬॥ বিষমেতৎ সমালোডা কুন্তেন প্রাশিত^ ত্বয়া "—। ততো যুধিন্ঠিরস্তদ্য গুরুকঃ সমপদ্যত ॥ ২৭ ॥ স তু ভারাভিভূতাত্মা ন তথা শীঘ্রগোহভবং। व्यथा ज्वौत्मा निमा नकूलक यू विक्रितः ॥ २৮॥ "মা ভৈষ্টং রাক্ষসাঝু ঢাকাতি রস্য ময়া হৃতা। নাতিদুরে মহাবাহ ওবিতা প্রনাত্মজঃ। ২৯॥

বিষসং তস্য আনো ভোজনং যেষাং তান্ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ প্রতিশ্রো গ্রহণ্ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ নভবিষাস মরিধ্যসী ভার্যঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥

^{* &#}x27; व्यक्षर ' इंट्डादर क-शार्ठः।

অস্মিন্ মুহুর্ব্বে সংপ্রাপ্তে ন ভবিষ্যতি রাক্ষসং"—।
সহদেবস্ত তং দৃষ্ট্বা রাক্ষসং মুদ্চেতনম্ ॥ ৩০ ॥
উবাচ বচনং রাজন্ ! কুস্তীপুক্তাং যুধিষ্ঠিরম্ ।
" রাজন্ ! কিংনাম সংক্ষত্যং

ক্রিরস্যাস্ত্যতোহধিকম্॥ ৩১॥

যাল্ছেহভিমুখঃ প্রাণাশস্তাজেছ্তুন্ জয়েত বা।

এব বাশান্ বরণ বৈনং যুধমানাঃ পরস্তপ !॥ ৩২॥

স্থান্যেম মহাবাহো! দেশকালো হারং নূপ !।

ক্রেপ্রম্মানা বা প্রাপ্ত মহানাক্রম !॥ ৩০॥

ক্রেপ্রমানা বা প্রাপ্ত মহামানাক্রম ॥ ৩৪॥

নাহণ জীবমানেহদ্য রবি রস্তমিয়ান্দ্রদি॥ ৩৪॥

নাহণ ব্রাং পুনজাতু ক্রিরোহশ্মীতি ভারত!।

ভো ভো রাক্ষ্ম ! তিষ্ঠম্ব সহদেবোহ্মি পাশুবং॥ ৩৫॥

হত্মা বা মাং নরবৈনাং হতো বাদ্যেহ স্বস্পাদি ''।—

তথা ক্রবতি মাজেয়ে ভীমসেনো যদুছ্রা॥ ৩৬॥

প্রাদৃশ্যত গদাহস্তঃ # সবজ্ঞ ইব বাসবং।

সোহপশাস্ত্রাতরৌ তত্র জৌপদীঞ্চ যশন্থিনীম্॥ ৩৭॥

ক্রিভিস্থং সহদেবঞ্চ ক্ষিপস্তং রাক্ষ্মং তদা।

মার্গান্ত রাক্ষ্মং মূদং † কালোপ্রভ্তেস্ম্॥ ৩৮॥

॥ ৩০ ॥ সংকৃত্যং সাধু কাৰ্য্যন্ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ রাক্ষ্যেইতি— সূৰ্যা স্তাৎ প্ৰাকৃ অরং মরিষাসীত্যর্থ: ॥ ৩৪ ॥ তিঠম স্থিরোভব ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥

^{* &}quot; ইত্যত্ত্ব " " তথা তদা ইতি—" প্রাদৃশ্যত " ইত্যত্ত্ব " অদৃশ্যত " ইত্যেবং ক-য প্রেকৌ পঠতঃ।

^{🕇 &}quot;রক্ষঃ সশ্বুঢ়ং" ইতি পাঠান্তরং ক-পুন্তকস্য ।

ভ্ৰমন্তং তত্ৰ ভৱৈৰ দৈবেন বিনিবারিতম্। ভাতৃ শ্স্তান ব্রিয়তো দৃষ্ট্য জৌপদীঞ্চ মহাবলঃ॥ ৩৯॥ क्किथ महित्रस्किरमा त्राक्रमरश्रम मज्री । " বিজ্ঞাতোহদি ময়া পূর্বা পাপ: * শস্ত্রপরীক্ষণে ॥ ৪০॥ আন্তা তু ত্বয়ি যে নান্তি যতোহসি ন হতন্তনা। ব্ৰহ্মৰপপ্ৰতিচ্ছয়োন নোৰদিস চাপ্ৰিয়ম্॥ ৪১। প্রিয়েষু রমমানং ত্বাং ন চৈবাপ্রিয়কারিণম্। অতিথিং ব্ৰহ্মৰপঞ্চ কৰং হন্যা মনাগদম ?—॥ ১২॥ রাক্ষনং জানমানোহপি যো হন্যান্নরক ব্জেৎ। অপক্ষস্য চ কালেন বধস্তব ন বিদ্যুতে **৷** ৪৩**°৷** নুন মদ্যাসি সম্পক্ষো যথা তে মতি রীদৃশী। দত্তা কৃষ্ণাপহরণে কালেনাদুতকর্ম্মণা।। 🛙 ८।। বডিশোহয়ং ত্বয়া গ্রস্তঃ কালস্থুত্রেণ লম্বিতঃ। মৎস্যোহস্ত্রসীৰ স্থাতাস্যঃ কথমদ্য ভবিষ্যাসি ? ॥ ৪৫॥ যঞ্চাসি প্রস্থিতো দেশং মনঃপূর্ব্বং গতঞ্চ তে। † ন তং গন্তাদি গন্তাদি মার্গ> বকহিডিম্বয়োঃ ''—। ৪৬॥ এবমুক্তস্তু ভীমেন রাক্ষদঃ কালচোদিতঃ। ভীত উৎস্জ্য তান্ সর্বান্ যুদ্ধায় সম্পস্থিতঃ॥ ৪३॥ অব্রবীচ্চ পুনর্ভীমং রোষাৎ প্রক্রুরিত।ধরঃ। ওন মে মুচা দিশঃ পাপ। স্বদর্থং মে বিলয়িত্যু॥ ৪৮॥

ক্রিয়তঃ ক্রিয়মানবি ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥ আস্থা জ্বারেণে আদরঃ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ॥ ২৩ ॥ ৪৪ ॥ বড়িশো মংস্য বেধনম্, ভবিষাসি জীবিষাসি ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ॥ ৪৮ ॥

^{*} ক-পুস্তকে " পাপ !" ই ত সম্বোধন পাচঃ। † "পুর্ব্বাওঞ্জ " ইত্যোবং সমস্ত পাচঃ ক-পুস্তকে।

প্রতামে রাক্ষসা যে যে জ্যা বিনিহতা রণে। তেষামদ্য করিষ্যামি তবাত্রেণে।দকক্রিরাম্ "—॥ ৪৯ 🛊 এবমুক্ত স্ততো ভীমঃ স্বরুনী পরিস-লিহন্। প্রয়মান ইব ক্রোধাৎ সাক্ষাৎ কালান্তকোপন:।। ৫০ ॥ বাহুসংরম্ভ মেবৈক্ষনভিত্ন প্রাক্ষনম্। রাক্ষসোহপি তদা ভীমং যুদ্ধার্থিন মবস্থিতম্। ৫১॥ मूह्रम् इ स्तापनानः एक्नी পরিসংলহন। ष्य ভिष्कु छ। व সংরক্ষো বলি ব্রজ্ঞ ধর ॰ यथा। ৫২। বর্ত্তমানে তদা ত।ভ্যাং বাছযুদ্ধে স্থদ,রুণে। মাজীপুত্রাবতিকুছা বুভাবপ্যভাধাবতাম্। ৫৩॥ ন্যবারয়ত্তৌ প্রহুসন্ কুন্তীপুজো রুকোদরঃ। -শক্তোহ্যং রাক্ষদস্যেতি প্রেক্ষধমিতি চাত্রবীৎ॥ ৫৪ ॥ আত্মনা ভ্রাতৃভিশৈষ্ট ধর্মেণ স্কুতেন চ। ইটেন চ শপে রাজন্। স্থদিয়েষ্যামি রাক্ষস্থ "-॥ ৫৫॥ ইভ্যেবমুক্ত্বা ভৌ বীরৌ স্পর্ক্ষমানৌ পরস্পরয়। বাছভাং সমসজ্জেতামুভৌ রক্ষোর্কোদরৌ ॥ ৫৬॥ তয়োরাসীৎ সংপ্রহারঃ ক্রন্ধয়েভীমরক্ষসোঃ। व्यमृत्रामान्ताः मः त्था (प्रमानवत्या विव ॥ ६१ ॥ याक्रकाक्रका को वृक्षान्ताना मिक्कप्रवृः। জীমুতাবিব গর্জ্ঞৌ বিনদন্তৌ মহাবলৌ ॥ ৫৮ ॥

অত্তেশ লোছিতেন। ৪৯ । ৫০ ।। বাছ্ সংরভোতে আংক্রেটোতে বস্যাং ক্রিরারাং যথাসাতিখা বাছ্ সংরভম্ ।। ৫১ ।। ৫২ ।। ৫৬ ।। ৫৪ ।। ৫৫ ।। ।। ৫৬ ।। ৫৭ ।। ৫৮ ।।

^{* &#}x27; ঐকন্ " ইতাত্ত '' ঐচ্ছন্ " ইতি ক-খ-পুস্তকৌ পঠতঃ।

বভঞ্জতুর্শ্বহ:বৃক্ষানূর্ক্তি ব্যলিনায়রৌ। षात्तारताना जिम्बद्धा शत्रण्यत्वरेशवर्गा ॥ ८० ॥ তদ্বস্থুদ্ধ মভবন্দ্রীরুহবিনাশনম্। বালিস্থ ত্রীবয়ে ভাতোঃ পুরা ঞ্রীকাঞ্জিণোর্যথা ঃ ৬০ । আবিধাবিধা তৌ রুক্ষারাছুর্ত্তমিতরেতরম্। তাডয়ামাসতু রুভৌ বিনদত্তৌ মুহুর্মাছ:॥ ৬১॥ তিমান্ দেশে যদা বুক্ষাঃ সর্ব্ব এব নিপাতিতাঃ। মুঞ্জীরু লাশ্চ # শভশঃ পরস্পরববেপ্সরা ॥ ৬২ ॥ ততঃ শিলাঃ সমাদার মুহুর্তমিব ভারত ।। মহাবৈজির শৈলেক্রো যুরুধাতে মহাবলো 🖫 ৬৩ ॥ শিলাভি ৰুগ্ৰৰপাভি ব্ৰুহতীভিঃ পরস্পারম। বকৈরিব মহাবেগৈ রাজমত রমর্বণী ॥ ৬৪॥ অভিক্রত্য চ ভুয়স্তাবন্যোন্যবলদর্পিতৌ। ভুকাভাং পরিপৃহাথ চকর্ষাতে গজাবিব ॥ ১৫॥ মুফীভিশ্চ মহাঘোরৈ রন্যোন্য মভিজন্মতঃ। ততঃ কটকটাশব্দো বভূব স্থুমহাত্মনো:॥ ৬৬॥ ততঃ সংহৃত্য মুটিন্ত পঞ্চশীর্ষ মিবোরগম্। বেগেন। ভাইনন্তীমো রাক্ষসন্য শিরোধরাম্॥ ৬৭ ॥ তত:শ্ৰু ন্তন্ত ভাৰতে ভীমপেন ভুজাহতমু। স্পরিশান্তমালক্ষ্য ভীমদেনোইভাবর্ত্ত। ৬৮॥

॥ ৫৯॥ ৬০॥ আবিধা ভাষরিরা ॥ ৬১॥ মুপ্রীকৃতাঃ রজ্ধং মুঞ্জ বজ্জ র্জরীকৃতাঃ ॥ ৬২॥ মহাতৈ রিবেতা 'ভূতোপমা' ॥ ৬০॥ ৬৪॥ ৬৫॥ শিরোধরাং গ্রীবাষ্ ॥ ৬৩॥ অভ্যবর্তত এধিকোৎসাহবানভূৎ॥ ৬৮ ॥

^{* &}quot; পঞ্জীকৃতাশ্চ " ইতি ক পুশুকঃ।

তত্ত এনং মহাবাছ র্বাছত্যা মমরোপমঃ।

সমুৎক্ষিপ্য বলান্তীমো বিনিষ্পিয় * মহীতলে ॥ ৬৯ ॥

তস্য গাত্রাণি সর্বাণি চূর্ণয়ামাস পাপুবঃ।

অরত্রিনা চাভিহত্য শিরং কায়াদপাহরৎ ॥ ৭০ ॥

সন্দটোষ্ঠং বির্ত্তাক্ষণ কলং রুস্তাদিব চ্যুত্ম।

জটাস্থরস্য তু শিরো ভীমসেনবলাক্ষত্ম ॥ ৭০ ॥

পপাত রুধিরাদিশ্বং সন্দট্তদশনছ্দম।

তং নিহত্য মহেঘাসো যুধিষ্ঠির মুপাগমৎ।

তুরমানো দিজাগ্রৈয়ন্ত মরুদ্ধিরিব বাসবঃ "— ॥ ৭২ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি জটাস্থর বধ পর্বাণ সপ্তপঞ্চাশদধিকশত
তমোহধ্যায়ঃ স্মাপ্তঃ ॥ ১৫৭ ॥

ममाश्रक किंग्यूत वर्ष भई। †

॥ ৬৯॥ অরত্বিনা তল প্রছারেণেতার্থ:॥ ৭০॥ ৭১॥ ৭২॥
ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাব দীপে সপ্তপঞ্চাশদধিক শততমোহধ্যায়:॥ ১৫৭॥

* " নিম্পিপেষ " ইতি পাঠান্তরম্।

† অত্তৈব ক-পুন্তকে ভীৰ্ষাত্ৰা পৰ্ক সমান্তি:।

অফপঞ্চাশদ্ধিক শত অধ্যায় প্রারম্ভ। বৈশম্পায়ন উবাচ।

*ਜ਼ੑਖ਼ਫ਼ੑਖ਼ਫ਼ੑਖ਼ਫ਼ੑਖ਼ਫ਼ੑਖ਼ਫ਼ੑਖ਼ਫ਼ੑਖ਼*ਫ਼ੑਖ਼

নিহতে রাক্ষসে তিমিন্ পুনর্নরায়ণাশ্রমন্।
আভ্যত্য রাজা ফোতেয়ো নিবাস মকরোৎ প্রভুঃ ॥ ১ ॥
স সমানীয় তান্ সর্বান্ লাত নিতাত্রবীষদ্য।
টোপদ্যা সহিতান্ কালে সংম্মরন্ লাতরণ জয়ম্ ॥ ২ ॥
'সেমাশ্চতত্রোহভিগতাঃ শিবেন চরতাং বনে।
ক্তোদ্দেশস্ত বীভৎস্থঃ পঞ্চমীমভিতঃ সমান্ ॥ ৩
প্রাপ্য পর্বতরাজানং শেত্রণ শিখরিণায়রন্।
পুল্পিতৈক্র মবতেশ্চ মন্তকোকিলয়ট্পদেঃ ॥ ৪ ॥
ময্টরশ্চাতকৈশ্চাপি নিত্যোৎসববিভ্বিতম্।
ব্যান্তে র্বরাহের্মহিষৈ র্পবয়র্হরিবিত্তথা ॥ ৫ ॥
শ্বাপদে র্ব্যালকশৈশ্চ ক্রেভিশ্চ নিষেবিত্ত্ব।
ক্লোঃ সক্রপত্রশ্চ শতপত্রেস্তথাৎপলৈঃ ॥ ৬ ॥
প্রকৃলোং কমলৈশ্চের তথা নীলোৎপলৈরপি।
মহাপুণ্যং পবিত্তক্ষ স্বরাস্থ্রনিষ্টেরত্ত্ব। ৭ ॥

নিহত ইতি—॥ ১ ॥ জনং অর্জনন্। ২ ॥ কতোদেশ: 'পঞ্চম বর্ষে মনা ১ শামাগন্তব্যং " ইতি কৃতসঙ্কেত: ॥ ৩ ॥ শেতং কৈলাসমূ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ তত্তাপি দেশে, উদ্দেশ: কৃতঃ অসাভিনিতি শেষঃ, 'সন্ধিনাৰ:"

^{*} क-প্রস্তকে জ্ঞাইর ব্রপ্রবরণ: পার্থক্যথ নান্তি।

ভত্তাপি চ ক্লভোক্ষেশঃ সমাগম দিদুক্ভিঃ। ক্লতক্ষ সময়স্তেন পার্থেনামিততেজনা। ৮॥ পঞ্চবর্ষাণি বৎস্যামি বিদ্যার্থীতি পুরা ময়ি। 🕯 ভাত্র গাণ্ডীবধন্থান মবাপ্তান্ত মরিন্দমম্ ॥ ৯ ॥ দেবলোকাদিম~ লোকং ক্রক্ষ্যামঃ পুনরাগতম্ "--। ইত্যুক্তা ত্রাহ্মণান্ সর্কানামন্ত্রয়ত পাগুবঃ॥ ১০॥ কারণকৈব ভত্তেধামাচচকে তপস্থিনাম। তারুগ্রতপদ: প্রীতান্ রুত্বা পার্থা: প্রদক্ষিণমু ॥ ১১॥ ব্রাহ্মণান্তে শিবেন কুশলেন চ। " স্বথোদক্ষিমং ক্লেশ মচিরান্তর্তর্যভ! ॥ ১২ ॥ ক্ষত্রধর্মেণ ধর্মজ্ঞ। তীর্ত্বা গাং পালয়িষাদি "—। ভ্ত রাজা বচন্তেষাং প্রতিগৃহ তপন্থিনাম্ । ১৩॥ প্রতম্বে মহ বিশৈষ্টের জাতুভিশ্চ পরন্তপঃ। রাক্ষদৈরমুয়াতো বৈ লোমশেনাভির্ক্ষিতঃ । ১৪ ॥ ক্ল চিৎ পদ্যাং ততোহগচ্চদ্রাক্ষ সৈরুহাতে ক্ল চিৎ। তত্র তত্র মহাতেজা ভাতুভিঃ সহ স্তবতঃ ॥ ১৫ ॥ ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা বছুন ক্লেশান বিচিন্তরন্। मि॰इवाध्वनकाकीर्वाभूमीही॰ श्रयसो मिनम् ॥ >७॥ व्यादक्रमानः देवनाम् देमनाकरेक्षव भव्याज्य । গন্ধমাদন পাদা শ্বেডঞাপি শিলোচয়মু ॥ ১৭ ॥

^{* &#}x27; অত্ৰ ' ইভাত্ৰ " তত্ৰ " ইতি ক-পাঠ: 1

উপর্যুপরি শৈলস্য বহুবীশ্চ সরিডঃ শিবাঃ। शृष्ठेश हिमवजः भूगार यायो मखनाभव्हि ॥ ১৮ ॥ प्रमुखः शाख्वा तांकन्। शक्त्रमापन मस्त्रिकार । পৃষ্ঠে হিমবতঃ পুণ্যে নানাক্রমলভারতে ॥ ১৯ ॥ मिनावर्जमञ्जादेजः भूष्णिदेजन महीस्ट्रेस्ः। সমার্ত্ত পুণ্যতম মাআমং র্ষপর্বাণঃ ॥ ২০॥ ত মুপাগম্য রাজধিং ধর্ম্মাত্মান মরিন্দমাঃ। পাপ্তবা বৃষপৰ্বাণ মবন্দন্ত গতক্লমাং । ২১॥ व्यक्तमन्द्र म ताक्षिः शुक्तवस्तत्रवर्षकान्।। পুজিতাশ্বসংস্তত সপ্তরতে মরিন্দমাং॥ ২২॥ অফ্রমে২্ছনি সংপ্রাপ্তে তমৃষিং লোকবিঞ্চত্য। আমন্ত্রা বৃষপর্বাণং প্রস্থানং প্রত্যাবোচয়ন্॥ ২ ও ॥ একৈকশক তান বিপ্রান নিবেদ্য রুষপর্বাণ। * ন্যাসভূতান্ যথাকালে বন্ধানিব স্থুসংকৃতান ॥ ২৪ ॥ পারিবর্হঞ ত~শেষং পরিদায় মহাত্মনে। ততত্তে যজ্ঞপাত্রাণি স্থভান্যাভরণানি চ ॥ ২৫ ৮ नामध्ः পাश्वरा ताजनाव्यस्य त्यपर्वाः। ষতীতানাগতে বিদ্বান কুশলঃ সর্ব্বধর্মবিং॥ ২৬ 🕸 অম্বশাসৎ স ধর্মজ্ঞঃ পুত্রবদ্ধরতর্মতান্। তেহমুজ্ঞাতা মহাত্মানঃ প্রযযুদ্দিশ মুক্তরাম্ ॥ ২৭ ॥

^{* &#}x27;'त्रम्भर्करन " केंजि इजूर्या छ भाष्ठः किहिर।

তান্ প্রস্থিতানভাগচ্ছ্যপ্রা মহামতিঃ। উপন্যায় মহাতেজা বিপ্রেভাঃ পাগুবাৎস্কলা। ২৮। অনুসংসার্য্য * কৌন্তেয়ানাশীর্ভি রভিনন্দ্য চ। বৃষপকা নিববৃতে পন্তান মুপদিশ্য চ॥ ১৯॥ নানামৃগগণৈজু কি কৌন্তেয়ঃ সতাবিক্রমঃ। পদাতি ভ্ৰ'ত্তি সাৰ্দ্ধিং প্ৰাতিষ্ঠত বুধিষ্ঠিরঃ॥ ৩०॥ नानाक्रमनिद्वादश्यू वमलः रेमनमात्रुयु । পর্বতে বিবিশুঃ শ্বেতং চতুর্থেহ্ছনি পাপ্তবাঃ ॥ ৩১ ॥ মহার্ঘনসংকাশং, সলিলোপহিতং শুভষ্। মণিকাঞ্চনৰপ্ৰসা শিলানাঞ্চ সমুচ্চয়ম্॥ ৩২॥ তে সমাসাদ্য পন্থানং যথোক্তণ বৃষপৰ্ব্বণা। অমুসস্ র্যথোদেশং পশ্যন্তো বিবিধান নগান ॥ ৩৩॥ উপযুগেরি শৈল্সা গুহাঃ পর্মতুর্গমাঃ। সুতুর্গমাংস্তেষু বহুন সুথেনৈবাভিচক্রমুঃ॥ ৩৪॥ ধৌম্যঃ কৃষ্ণা চ পার্থাশ্চ লোমশশ্চ মহানৃষিঃ। অগচ্ছন সহিতান্তত্ত্ব ন কশ্চিদবহীয়তে। ৩৫॥ তে মৃগৰিজনজ্ঞ ই নানাক্ৰমলতাযুত্ৰ । শাখামৃগগণৈ শৈচব দেবিত - স্থমনোরমন্। ৩ ।। পूगुर পদ्म महायुक्त म भव्यवभक्ष वनम्। উপতন্ত্রিভাগা সাল্যবন্তং মহাগিরিম্॥ ৩৭॥

উপন্যস্য নিবেদ্য ॥ ২৮ ॥ অনুসংস্থিত অনুগম্য ॥ ২৯ ॥ ৩৫ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥

^{* &}quot; ज्यमश्माधा " हेज् क-श्लुकः পेठ्रा

ভতঃ কিম্পুরুষাবাসং সিদ্ধচারণসেবিতম্। प्तृष्ण क् किर्तामांगः **পर्वाउ**ः शक्तमाप्तनम्॥ ७৮॥ বিদাধরামুচরিতং কিন্নরীভিস্তবৈধব চ। গজসংঘসমাবাসং সিংহব্যাত্রগণাবুত্য ॥ ৩৯ ॥ শরভোল। দগজ্ব উং নাবামুগনিষেবিভয়। তেগञ्चमापनवनः उर नन्तनवत्नाश्रमम् ॥ ४०॥ মুদিতাঃ পাওুতনয়া মনোক্রদয়নন্দনম। বিবিশুঃ ক্রমশো বীরাঃ শ্রণ্য শুভকাননম্। ৪১॥ দ্রৌপদীসহিতা বীরাজৈশ্চ বিপ্রৈমহাজ্বভিঃ। मृगु छ: श्रीडिं कननाम् रक्ष्म् यप्तक्षाम् रु होन् ॥ ४२ ॥ শ্রেরম্যান্ স্থমধুরান্ শর্কান্ থগ-মুখেরিতান। স্বাৰ্ফলভারোত্যান্ স্বাৰ্কুকুস্মে।জ্জুলান্ ॥ ৪০॥ পাশান্তঃ পাদপাং শ্চাপি ফলভারাবনামিতান। আম্রানাম্রাতকান্ ভব্যানু নারিকেলানু সতিম্পুকান্ ॥ ৪৪ ॥ মুঞ্জাতকাণ-স্তথা জীবান দ।ডিমান বীলপুরকান। প্রশাল কুচান্ মোচান্ থজ্রানলবেভসান্ ॥ ৪৫ ॥ 📽 পারবেতাংত্তথা ক্ষোদ্রান্ নীপাৎশ্চাপি মনোরমান্। বিল্পান ক্ষংক কাশ্মরীর্বদরীস্তথা ॥ ৪৬ ॥ প্রকানুভয়রবটানশ্বপান ক্ষীরিকাণ্ডথা। ভলাতকান।মলকীর্হরীতকবিভীতকান্ ॥ ৪৭ ॥

॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪৩॥ ৪৪ ॥ ৪৫॥ কাশ্মরী । গন্ধারী॥ ৪৬॥ কীরিকা রাজাদনা ॥ ৪৭॥

 [&]quot; য়য়ৢ৻বতদান্ " ইত ক-য়-গ-পুশুকাঃ।

इक्षान कत्रमकारण जिन्द्रकारण महोकनान। এতানন্যাংশ বিবিধান গলামাদনসামুমু॥ ৪৮। ফলৈ রমূতকণ্পৈস্তানা চতানু স্বাত্তভিস্তৰন্। তথৈব চম্পক:শোকান্ কেতকান্ বকুলাংস্তথা ॥ ৪৯:॥ পুনাগান্ সপ্তপর্ণাংশ্চ কর্নিরোন্ সকেতকান্। পार्वेनाः कृष्ठेकान्यात्रमाद्यमीवताः खर्गा । ८०॥ পারিজাতান্ কোবিদারান্ দেবদারুক্রমাংস্তথা। मालारखाला उमालार मह शिक्षला निकृपर खरा ॥ ७ ३ ॥ भावातीः किः क्षकारभाकान भिरम्पाः मत्नार खर्या। চকোরেঃ শতপত্রৈশ্চ ভুঙ্গর।জৈত্তথা শুকৈঃ॥ ৫২ ॥ काकिटेनः कनविटेक्क इतिरेख कीवर्जीवटेकः। श्चित्रदेक म्हां उदेकटेम्हव खशारेना विविदेशः श्रेतः ॥ ৫৩ ॥ শ্রোত্ররম্যং স্থমধুর কৃজদ্ভিশ্চাপ্যধিষ্ঠিতান্। সরাৎসি চ মনোজ্ঞানি সমস্তাক্ষলচারিভিঃ॥ ৫৪॥ कुमूरिनः शुख्तीरिकम् उथा काकनरमार्भरेनः। কহলারে: কমলৈশ্চেব আচিতানি সময়ত: ॥ ৫৫ । कामरेश महक्रवारिकमह कुत्रदेत क लकुक्क रेहेः। कात्र खरेवः झरेवर्रश्येत्र र्याका चिरत्र क ॥ ७७ ॥ अति कार्या का क्रिकेच्या जामतम-तमामव-महाल्टिमः॥ ८१ ॥ পদ্মোদরচ্যতরজঃকিঞ্জকারণরঞ্জিতৈঃ। ্মঞ্সুরৈ শাধুকরৈ বিরুত।নুক্মলাকরান্। ৫৮॥

॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ৫৩ ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥ ৫৬ ॥ তামরসানাং ব্রেজাৎপানাং রস এব আঃস্বো মকাং ভজ্জন্ম দেন আলসাঃ ॥ ৫৭॥ বিভ্তান্বিশিক্ষণক যুতান্, কমলাকরান্বাপ ঃ ॥ ৫৮॥

व्यश्नाः एक नववाद्या शक्तमाननमासूत्रु । তথৈব পাত্মবাপ্তেশ্চ মান্তিত। শচ সমন্ততঃ ॥ १৯॥ শিখা গুনীভিঃ দহিতাল তামগুণকৈ যুচ। মেঘত্র্যরবোদ।ম-মদনাকুলিতান্ ভূশম্॥ ৬ ।।। কুত্রৈব কেকামধুরং সঙ্গীতং মধুরস্বরস্। চিত্রানু কলাপান্ বিস্তীয়া স্বিলাসান্ মদাল্যান্ । ৬১॥ মযুরান্দদুশুক্ ফান্নুত্যতো বনলালসান্। কাংশিচং প্রিয়াভিঃ সহিতান্মমাণান্ কলাপিনঃ॥ ৬২ ॥ বলীলভাসন্ধটেষু কুটজেষু স্থিতাংস্তথা ৷ কাংশ্চিচ কুটজানাস্ত * বিটপেষূৎকটানিব ১৬৩॥ কলাপরুচিরাটোপনিচিতান্ মুকুটানিব। বিবরেষু তৰ্নণাঞ্চ ৰুচিরং দদুশুশ্চ তে॥ ৬৪॥ সিন্ধুবারা×স্তথোদারান্মন্থস্যেব ভোমরান্। স্থবৰ্ণবৰ্ণ কুস্থমান্ গিরীণাং শিখরেষু চ ॥ ৬৫ ॥ কর্ণিকারান্ বিক্ষিতান্ কর্ণপুরানিবোভ্যান্। তথাপশ্যন্ কুরুবকান্ বনরাজিষু পুষ্পিতান্॥ ৬৬॥ কামবশ্যোৎস্থকরান্ কামস্যের শ্রোৎকরান্। তথৈব বনরাজীনা মুদারান্চিতানিব। ৬৭। বিরাজমানাংস্তেহ্পশাংস্থিলকাংস্থিলকানিব। তথানক্ষরাকারান্ সহকারান্ মনোরমান্ ॥ ৬৮ ॥

॥ ৫৯॥ ৬০॥ ৬১॥ ৬২॥ কৃটজের রক্ষবিশেষের বল্লীনাং লভানাঞ (লভা প্রভানবভঃ) সহটের কৃঞ্জীকতের॥ ৬০॥ ৬৪॥ সিদ্ধুবারান্ পদ্ধ-বিশেষান্॥ ৬৫॥ ৬৬ ॥ কামবশ্যানাং নরানাং উৎস্কা করান্॥ ৬৭॥ ॥ ৬৮॥

^{* &#}x27; कृष्टेजानाएस "— केएडाउर क-श्रुकः शर्षे छ ।

অপশান্ ভ্রমরারাবারঞ্জরীভি বিবরাজিতান । হিরণাসদুশৈঃ পুল্পৈর্গারায় সদুশৈরপি॥ ৬৯॥ त्नाहिरे **ब अन्। रेडम्ड रेवपूर्वामपुरे**भविश । অতীব বুক্ষা রাজতে পুঞ্পিতাঃ শৈলসামুষু ॥ ৭০॥ তथा मालाः स्थाला भारती भारती वक्तानि । মালা ইব সমাসক্তাঃ শৈলানাং শিখরেষু চ॥ ৭১॥ বিমলক্ষটিকাভানি পাওরচ্ছদনৈ দি হৈ:। কলহং সৈ ক্রুপেতানি সারসাভিক্তানি চ॥ ৭২॥ সরাংসি বহুশঃ পার্থাঃ পশ্যন্তঃ শৈলসামুষু। পদ্মেংপলবিমিত্রাণি **সুথস্পর্শ**জলানি চ ॥ ৭৩ ॥ এবং ক্রমেণ তে বীরা বীক্ষ্যমাণাঃ সমস্ততঃ। -র্জ্ববস্থ্যথ মাল্যানি রসবন্তি কলানি চ॥ ৭৪ ॥ সরাংসি চ মনোজ্ঞানি রুক্ষাৎশ্চাতিমনোরমান্। বিবিশুঃ পাগুবাঃ সর্বে বিশ্বয়োৎফুল্ললোচনাঃ॥ ৭৫॥ क्रमाला ९ शलक स्वात्र शु खती क सूर्श शिना। সেব্যমানা বনে ভিস্মিন্ স্থাস্পার্শেন বাযুনা॥ ৭৬॥ ততো যুধিষ্ঠিরে। ভীম মাহেদং প্রীতিমন্বচঃ। * " অহো এমিদিদং ভীম! গন্ধমাদনকাননম ॥ ११॥ বনে ছিম্ন মনোরম্যে দিব্যাঃ কাননজ। দ্রুমাঃ। লভাশ্চ বিবিধাকারাঃ পত্রপুষ্পকলোপগাঃ॥ ৭৮॥

॥৬৯॥ ৭০॥ ৭১॥ সফাটিকাভানি নির্মালনি সারসানাং অভিকতঞ্চ যেষু তোনি সরাংসীজুবেরণাশ্বয়ঃ॥ ৭২॥ ৭৩॥ ৭৪॥ ৭৫॥ ৭৬॥ ছে ভীম। ইতি কোমন সম্বোধ্য,॥ ৭৭॥ ৭৮॥

^{*} অসাদনন্তরং " যুধিছির উবাচ " ইত্যধিকঃ ক-পুশুকে লভাতে।

ভান্ত্যেতে পুষ্পবিকচাঃ পুৎস্কোকিলকুলাকুলাঃ। নাত্র কণ্টকিনঃ কেচিন্নচ বিদান্ত্যপুষ্পিতাং ॥ ৭৯॥ স্থিপতিফলা বৃক্ষা গন্ধমাদনসামুষু। ভ্রমরার ব্যধ্রা নলিনীঃ ফুল্লপক্ষাঃ॥৮০॥ विल्वाकामानाः शरभामाः कर्तिकः मकरत्वुिकः। পশ্যেমাংনলিনীঞ্চান্যাংকমলোৎপলমালিনীমু॥ ৮১॥ অপ্ধরাং বিগ্রহ্বতীং সাক্ষাচ্ছিয় মিবাপরান্। नानाकुष्ठुमशकाणाखरमामाः * कानरनाखरम ॥ ४२ ॥ উপগীয়খানা ভ্রমরৈ রাজন্তে বনরাজয়ঃ। পশ্য ভীম। শুভানু দেশানু দেবাকীডানু সমস্তঃ ॥ ৮৩॥ অমানুষগতিং প্রাপ্তাঃ সংসিদ্ধাঃ স্ম রকোদর!। লতাভিঃ পুলিতাগ্রাভিঃ পুলিতাঃ পাদপোত্তমাঃ॥ ৮৪। সংশ্লিকীঃ পার্থ। শোভত্তে গল্পমাদন-সামুষ্ শিখ্ঞিনীভিশ্চরতাৎ সহিতানাং শিখ্ঞিনাম ॥ ৮৫॥ নদতা শৃণু নিৰ্যোৰং ভীম ! পৰ্বতসানুষু। চকোরাঃ শতপত্রাশ্চ মন্তকোকিলসারিকাঃ॥ ৮৬॥ পত্রিণঃ পুষ্পিতানেতানু সংপত্তি মহাক্রমান্। রক্তপীতারুণাঃ পার্থ। পাদপাত্রগতাঃ খগাঃ॥ ৮৭॥ পরস্পর মুদীক্ষন্তে বহুৰো জীবজীবকাঃ। হরিতারুণবর্ণানাৎ শাঘলানাৎ সমীপতঃ ॥ ৮৮॥

॥ ৭৯॥ ৮০॥ মলিনীং সরসীং, কমলোৎ পলরো রবান্তর জাতি ভেদ: ॥ ৮১॥ বিপ্রছবতীং শরীরবতীং তস্য শৈলম্য॥ ৮২॥ ৮৩॥ ৮৪॥ ৮৫॥ ॥ ৮৬॥ ৮৭॥ ৮৮॥

^{*} তথেমা ইতি পাঠ ভেদঃ।

मात्रमाः প্রতিদৃশান্তে * শৈলপ্রস্রবণেষ্ঠি । বদক্তি মধুরা বাচঃ সর্বভূত্মনোরমঃ: ॥ ৮৯॥ ভূঙ্গরাজে।পচক্রাশ্চ লোহপৃষ্ঠাঃ পতত্ত্রিণঃ। চতুर्किमानाः পদাভাঃ কুঞ্জরাः मकरत्ववः॥ २०॥ এতে বৈদুর্যাবর্ণাভ্ন ক্ষোভয়ন্তি মহৎসরঃ। বছতালসমুৎসেধাঃ শৈলশৃঙ্গপরিচ্যতাঃ ॥ ৯১ ॥ নালাপ্রস্রবণেভাস্চ বারিধারাঃ পতন্তি চ। ভান্ধরাভপ্রভা ভীমাঃ শারদার ্ঘনোপমাঃ ॥ ৯২ ॥ শোভয়ত্তি মহাশৈলং নানারজতবাতবং। ক্রচিদপ্রনবর্ণভোগেকচিৎ কাঞ্চনসন্মিভাগ। ১৩॥ ধাতবো হরিতালস্য ক্চিদ্ধিদ্লক্ষ্য চ। মনঃশিলাগুহাদৈৰ সন্ধ্যান্ত্ৰানকরোপ্যাঃ॥৯৪॥ শশলোহিতবর্ণাভাঃ ক্লচি দোরিকধাতবঃ। সিতাসিতার প্রতিমা বালস্থ্যসম প্রভাঃ॥ ৯৫॥ এতে বছবিধা: শৈলং শোভয়ন্তি মহাপ্রভাঃ। গন্ধবাঃ সহ কান্তাভির্যথোক্তং রুষপর্ববা॥ ৯৬॥ पृभारत्त रेमलमृष्ट्रम् शार्थ ! कि॰ शूक़रेयः मह। গীতানাং সমতালানাং তথা সামাঞ নিম্বন:॥ ৯৭॥

॥৮৯॥ ভৃদ্যাজাদয়ঃ পশ্চিবিশেষাঃ চতুর্বিধাণা শ্চতুর্দন্তাঃ, পদ্মাভাঃ খেতাঃ॥৯০॥৯১॥৯২॥৯০॥৯৪॥৯৫॥ যথোক্তং স্বধ্ববিধা নিমিত্ত্তন উক্তং ময়াস্থ্রেণ, তথাছি, সভাপর্বাণি মরেন র্ধ পর্ব্ব কথা যুছিন্তিরং প্রতি সভাকরণ প্রসদা হক্তা ইত্যক্তং "স পূর্ব্ব দেব চরিতং ক্রি। তত্ত্ব বিশাল্পতে !। কথ্যামাস দৈতেরঃ পাতুপুত্রেষ্ক্ ভারত !" ইতি, স ময়ঃ, পূর্ব্ব দেবোহস্করঃ র্ধ পর্বা। ৯৬॥৯৭॥

^{*} প্রত্যদৃশ্যন্ত ইতি ক পুস্তকঃ পঠতি।

শ্রুরতে বছধা ভীম! সর্ববভূতমনোহরঃ।* মহাগঙ্গামূদীক্ষর পুণাং দেবনদীং শুভাম্॥ ৯৮॥ কলহ~সগণৈজ্ঞা মৃষিকিররসেবিতাম। ধাত্তিশ্চ সরিদ্ধিশ্চ কিন্নরৈশাগপিকিতিঃ॥ ১৯॥ शक्षरेक्वत्रश्रदां जिल्ह कानरेनल मरन तरेगः। বালৈশ্চ বিবিধাকারেঃ শতশীর্ষিঃ সমন্ততঃ ॥ ১০০॥ উপেতং পশ্য কৌন্তেয়। শৈলরাজমরিন্দম।''—।

বৈশন্ধায়ন উবাচ।

তে প্রীতমনসঃ শ্রাঃ প্রাপ্তা গতিমনুত্রমায্॥ ১০১॥ নাত্রপান্ পর্বতেন্দ্রসা দর্শনেন পরস্থপাং। (দ্রৌপদীসহিতা বীর স্তৈশ্চ বিলৈর্মহান্সভিঃ) #। উপেতমথ মালৈসে ফলবন্ধিক পাদপৈঃ॥ ১০২॥ वाकि (यनमा ताकर्ष ताव्यमः मन् अपना ততত্তে তিগাতপদং কুশং ধমনিসন্ততম। পারগ্রু সর্ব্বধর্মান মান্তি যেনমপাগমন ॥ ১০৩॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ্ যক্ষযুদ্ধপর্বাণ গন্ধমাদন প্রবেশে অউপঞাশদ্ধিকশতভ্ৰমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫৮॥

11 20 11 20 11 200 11 200 11 200 11 200 11 ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপেইফ পঞ্চাশদ্ধিক শত তমে, ২পারিঃ।। ১৫৮॥

^{*} মনোরমা ইতি গৌড়ীয়া:।

^{*} নাস্তোতদর্দ্ধং পাশ্চাতা পুস্তকে। বহুতর বদীয় পুস্তকে সহা যাল মধ্যে গৃহী ত্যু।

বৈশস্পায়ন উবাচ। যু বিষ্ঠিরস্তমাদাদ্য তপসা দগ্ধকিল্বিষ্য। অভ্যবাদয়ত প্রতিঃ শিরসা নাম কীর্ত্তয়নু॥ ১॥ ভতঃ কৃষ্ণা চ ভীমশ্দ যমৌ চ স্থতপস্থিনৌ। শিরোভিঃ প্রাপ্য রাজ্যিং পরিবার্য্যোপতস্থিরে॥২॥ তথৈব ধৌমেন ধর্মজ্ঞঃ পা গুবানা - পুরোহিতঃ। যথান্যায়মুপাক্রান্ত স্তম্বিণ শংসিত্রতম্॥ ৩ ॥ অত্মজানাৎ স ধর্মাজ্যে মুনিদিব্যেন চক্ষ্মা। পাজোঃ পুজান কুরুজেষ্ঠা নাস্যভামিতি চাব্রবীং॥৪॥ কুৰাণামূৰভং পাৰ্থং * পূজ্য়িত্বা মহাতপাঃ। সহ ভাতৃভির:দীনং পর্যাপৃচ্ছদনাময়ম্॥ ৫॥ নানুতে কুরুয়ে ভাবং কচ্চিদ্ধর্মো প্রবর্ত্তমে। মাতাপিত্রোশ্চ তে রুক্তিঃ কচ্চিৎ পার্থ! ন সাদতি ?-- ॥ ৬ ॥ কচ্চিত্তে গুরুবঃ সর্বে রুদ্ধা বৈদ্যাশ্চ পূজিতাঃ। কচিচন কুরুষে ভাবং পার্থ ! পাপেষু কর্মান্ত ?— ॥ ৭ ॥ স্থক্ত প্ৰতিকৰ্ত্বঞ্চ কচিছাত্ৰপ ছন্ধ,তথ্। यथानाप्ति कुकृत्ख्येष्ठं। जानामि न विकथरम ? —॥ ৮॥ यथोहर भानिजाः किछ खुशा नन्मन्ति मायवः। বনেম্বপি বসনু কচ্চি দ্ধর্মবোমুবর্ত্তদে ?—॥৯॥

গৃধিন্তির ইতি—নামকীর্ত্রন্ যুধিন্তিরে ছং জা মভিবাদরে ইতি বদন্
॥ ১॥ ২॥ ৩॥ মুনিঃ আফি বিদাঃ ॥ ৪॥ ৫॥ বুতি বঁপাযোগাং আজ্ঞাপালন
আদ্ধ করণাদি রূপা॥ ৬॥ বৈদাঃ বিদায়া বিদিতাঃ ॥ ৭॥ অঠু কৃত্মদা
তঃ উপকারিণং, ভ্রক্তং অপকারিণং, ছাতুংতাজুং, ন বিক্থদে জাতো২ন্দীতি ন লাঘ্যে॥ ৮॥ ১॥

^{*} পার্থ মিত্যত্র " প্রাপ্ত " মিতি কঃ-।

কচ্চিন্ধৌমাসুদাচারৈ র্ম পার্থ! পরিতপাতে ?—। দানধর্মতপংশেটিত রাজাবেন তিতিক্ষা। ১০॥ পিতৃপৈতামহং রুত্ত^ কচিং পার্গানুবর্তমে ?---ক্ষিদ্রাজর্ষিয়াতেন পথা গজ্ঞিপাণ্ডৰ ২—॥ ১১॥ স্বে স্বে কিল কলে জাতে পুত্রে নগুরি বা পুনঃ। পিতরঃ পিতৃলোকস্থাঃ শোচন্তি চ হসন্তি চ ॥ ১২॥ কিম্বদ্য তুদ্ধুতেইস্মাভিঃ সংপ্রাপ্তব্যং ভবিষ্যতি। কিং বাস্য সুক্তেহস্মাভিঃ প্রাপ্তব্যমিতি শে।ভন্ম। ১৩॥ মাতা পিতা তথৈবাগি গুরুরালা চ পঞ্চনঃ। ষ্দ্রৈতে পুঞ্জিতাঃ পার্থ। ত্যা লোকারুডৌ জিতৌ ''—। ১৪॥ মুধিষ্ঠির উপচে। ও ভগরর র্যামাইহতদ্বধাবদ্ধর্মানিশ্চরণ। যথাশক্তি যথান্যায় ক্রিয়তে বিধিবন্নয়। "-। ২৫॥ ত্মাকি বেন উপাচ। অব্ৰহ্মা বাযুভকাশ্চ প্লবমানা বিহায়দা। জুষত্তে পর্বতশ্রেষ্ঠ মূবরঃ পর্বাসন্ধিযু॥ ১৬॥ কামিনঃ ধহ কান্তাভিঃ পরস্পর্মনুত্র হাং ৷ प्रभारत रेमलमुङ्गदा खथा क किश्तुक्या नृथ ! h ১৭ n खात जांशीं ह वामांशि वमानाः दको निकानि ह। प्रभारत वहवः পार्थः शक्तकाश्मतभारभगाः॥ >৮॥ विषायत्रभगारे कव अधिनः श्रियमर्भनाः। মহোরগ-গণাদৈচব স্থপণিশেচারগাদয়ঃ॥ ১৯॥

॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ যথাবিৎ মাছ যথা মামহি॥ ১৫॥ পর্বাসন্ধিন্তু প্রতিপ্র পঞ্চদেশ্যারন্ত্রীলে॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥

क उथा देउ। व ' यथा ' देखि कि कि मुनाएउ।

অস্য চোপরি শৈল্স্য জ্রায়ত্তে পর্বাসন্ধির। ভেরীপণ্বশ্রথানা∾ মৃদ্সানাঞ্জ নিস্থনাঃ ॥ ২∙ ॥ ইংস্থৈরেব তৎসর্কাং শ্রোভব্যং ভরতর্ষভাঃ। ন কাৰ্য্যা বঃ কথঞিৎ স্যান্তত্তাভিগমনে মতিঃ॥২১॥ ম চাপ্যতঃ পরং শক্যং গস্তুং ভরতসন্ত্রমাঃ। বিহারো শ্বত্ত দেবানা মমানুষগতিস্ত সা॥ ২২॥ ঈবচ্চপলকর্মাণং মনুষ্যমিছ ভারত !। ছিষন্তি সর্বাসূতানি তাজয়ন্তি চ রাক্ষসাঃ॥২৩॥ অস্যাতিক্রম্য শিখরং কৈলামস্য যুধিষ্ঠির!। গতিঃ প্রম্যিক্ষানাং দেবধীণাং প্রকাশতে ॥ ২৪ ॥ চাপল্যাদিহ গচ্ছন্ত পার্য! যান মতঃ পরম্। ভায়ঃশুল।দিভিম্বতি রাক্ষসাঃ শতু স্থদন!॥২৫॥ অপ্সেরেভিঃ পরিরুতঃ সমৃদ্ধ্য নর্বাহনঃ। ইহ বৈশ্রবণস্তাত। পর্বদলিষু দৃশ্যতে॥ ২৬॥ শিখরে ত~ সমাসীন মধিপং সর্বরক্ষসাম্। প্রেক্ষত্তে সর্বভূতানি ভারুমন্ত্রমিবোদিতম্॥ ২৭॥ দেবদানবসিদ্ধানাৎ তথা বৈশ্রবণ্স্য চ। গিরেঃ শিশ্বরমুদ্যান মিদ্র ভরতসন্তম ! ॥ ২৮॥ উপাসীনস্য ধনদং তুষ্বোঃ পর্বসন্ধিষু। গীতগামস্বনস্তাত। জ্ঞাতে গন্ধমাদনে। ২৯। এতদেবং বিধং চিত্র মিহ ভাত। যুধিষ্ঠির !। প্রেক্ষতে দর্বভূতানি বহুশঃ পর্ববসন্ধিষু। ৩০।

॥२०॥॥२১॥२२॥२०॥२८॥ यांनः भार्तस्॥२०॥२७॥२०॥ उन्हानः कीषुरिनश्चम् ॥२৮॥२०॥ २०॥ ভুঞ্জানা মুনিতে,জ্যানি রসবন্তি ফলানি চ।
বসস্থং পাণ্ডণজেন্ঠা যাবদজ্জুনদর্শনন্ ॥ ৩১ ॥
ন ভাত ! চপলৈভাবা মিছ প্রাক্তিঃ কথকন ।
উয়িত্বেহ যথাকামং যথাশ্রদ্ধং বিহ্নতা চ।
ভতঃ শস্ত্রজিতাং তাত ! পৃথিবীং পালয়িবাসি ''—॥ ৩২ ॥
ইত্যারনাকে পর্মনি যগমুদ্ধ পর্মনি আফি যেণ যুগিষ্ঠিরসংবাদে
একেন্য্নট্যিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫৯॥

জন্মজন উবাচ।
তাটি দৈণ শ্রেম তাজন্ম মসপূর্বপিতাম হাঃ।
পাজে: পুল্রা মহাল্লানঃ সকা দিবাপরাক্রমাঃ। ১॥
কিন্তুত্ব কাল্মনসন্ প্রকাতে গ্রুমাদনে।
কিন্তুত্ব হিবীবাাঃ সন্বেহতিবলপৌরুষাঃ --। ২॥
কানি চাভাবহাঘানি তত্র তেষাং মহাল্লনাম্।
বসভাং লোকবারাণা মাসংস্তদ্ধ হি সন্তম!॥ ৩॥
বিস্তব্রেণ চ মে শংস ভীমসেনপরাক্রমন্।
যদ্যক্তকে মহাবাহুত্বিন্ হৈনবতে গিরৌ॥ ৪॥
ন প্রাসীং পুন্যুদ্ধং তস্য যকৈছি জোভ্রম!।
ক্তিং স্মাগ্যস্থোনাসীকৈ শ্রন্ত্য চ জ ২—॥ ৫॥
ক

11 cs 11 cs 11

২৩। রনাকে পর্কান নৈলকণ্ঠায়ে ভারত ভারদীপে উন্যক্তাধিক শত তমে ২ধ্যাসঃ॥ ১৫৯॥

आकि (यरनिष्- अभूमन्॥ ५॥ २॥ २॥ ०॥ ४॥ ०॥

^{*} আর্ফি ধেশেতিলে;কার্দ্ধং ক পুস্তকে ন;স্তি।

* বৈশ্রবদেনচ ইত্যেবং তৃতীয়ান্তং পঠতি ক-পুস্তকঃ।

তত্ৰ হাজাতি ধনদ আটি যেণো যথাত্ৰবীৎ। এত্দিজ্ঞান্তং শ্রেভিং বিস্তরেণ তপে।ধন।। ন हि মে শৃণুত স্ঞান্ত বৈষ্টে তেবাং বিচেটিতম্ "—॥ ৬॥ এতদার্হিতং জাহা ন্যাপ্রতিমতেজসং। শাসনং সভতং চকুস্থরৈব ভরতর্যভাঃ । ৭ ॥ ভুঞ্জানা মুনিভোজ্যানি রসবন্তি ফল,নি চ। শুদ্ধবাণ্হত।ৰাঞ্চ মুগাণা<u>শ পিশিতাৰপি । ৮ ॥</u> মেধ্যানি ভিমৰৎপ্ৰয়েঠ মধূনি বিবিধানি চ। এবন তে ন্যবসংস্কৃত পাপ্তবা ভরতর্ষভাগে। ১॥ তথা নিবসভাং হত্যাং পঞ্চমং বর্ষ মভাগাৎ। শুণ্তাং লোমশোক্তরনি বাক্রনি বিবিধান্ত্রতে॥ ১০॥ ক্লত্যকাল উপস্থাস্য ইতি চোক্রা ঘটোৎকচঃ। রাক্ষাসৈঃ মহ সর্কৈশ্চ পূক্ষেব গতঃ প্রভাে!॥ ১১॥ আফি যেণাশ্রমে তেষাং বসতাং বৈ মহাজ্যাম্। অগচ্চন বহুবো মাসাঃ পশ্যতা মহদত্ত্যু॥ ১২॥ তৈস্তত্র বিহরদ্ভিশ্চ রমমাণেশ্চ পাণ্ডবৈঃ। প্রতিমন্তো মহাভাগা মুনয়শ্চারণান্তথা।। ১৩।। আজগাঃ পাওবান্ দ্রুক্ত শুদ্ধারানে। বত্রতাঃ। তে তৈঃ সহ কথাং চক্রু দিব্যাং ভরতসন্তমাঃ॥ ১৪॥ ততঃ কতিপয়াহ্স্য মহাহ্রদনিবাসিন্ম। ঋদিমন্তং মহানাগং স্থপর্ণঃ সহসাহর । ১৫॥ প্রাকম্পত মহাশৈলঃ প্রান্তদান্ত মহাক্রমাঃ। দদৃশুঃ সর্বভূতানি পাগুবাশ্চ তদ্ভূত্যু ॥ ১৬ ॥ रिनमण्यात्रन छेनाह 🕈

9 11 5 11 5 2 11 5 2 11 5 2 11 5 2 11 5 2 11 5 2 11 5 2 11

ততঃ শৈলে। তুমস্যাগ্রাৎ পাগুৱান প্রতি মারুতঃ। অবহৎ সর্ববিমাল্যানি গন্ধবন্তি শুভানি চ॥ ১৭॥ তত্ত্ব পুষ্পাণি দিব্যানি মুহ্নদ্ভিঃ সহ পা গুৱাং। पनुरुः शक्षवर्गान (फोशमी b यमत्रिनी ॥ ১৮॥ ভীমদেন ততঃ কুফা কালে বচনমত্রবীৎ। ৰিবিক্তে পৰ্বতোদেশে সুখাসীনং মহাভুজম ৷ ১৯ ॥ ' সুপ্রানিল্বেগেন শ্বসনেন মহাবলাৎ। পঞ্চবর্ণানি পাতাত্তে পুষ্পাণি ভরতর্যভ!॥ ২०॥ প্রত্যক্ষৎ সর্বাড়তানাং নদীমশ্বরথাং প্রতি। থাপ্তবে সত্যসন্ধেন ভ্ৰাত্ৰ মহান্ত্ৰনা ॥ ২১॥ গন্ধবৈধিরপরকাৎসি বাসবশ্চ নিবারিতঃ। হতা মাধাবিনশ্চোগ্রা ধনুঃ প্রাপ্তঞ্চ গাত্তিবম ॥ ২২ ॥ তবাপি স্থমহত্তেজে। মহদাছবলঞ্জে। অবিষ্থামনাধুষ্ং # শক্তব্ল্য পরাক্রম!॥২৩॥ ত্বদান্তবলবেগেন ত্রাসিতাঃ সর্বার্গক্ষ্যাঃ। **रिया रेगलः अनाखाः जीयरान पिर्मा प्रा ॥ २**८ ॥ ততঃ শৈলোক্তমসাঞেং চিত্তমাল্যধরং শিবম্। ব্যপেতভয়সৎমোহাঃ পশ্যন্ত স্কুদন্তব ॥ ২৫॥ এবন প্রণিহিতং ভীম ! চিরাৎ প্রভৃতি মে মনঃ। দ্রম্ভামি শৈলাগ্রং স্বদান্তবলপালিতা'—॥ ২৬ ॥ ততঃ ক্ষিপ্তমিবাত্মানং দ্রৌপদ্যা স পরন্তপঃ। নামুষ্যত মহবোছঃ প্রহারমিব সক্ষাবঃ॥ ২৭॥

२० ॥ २० ॥ २० ॥ ६० ॥ ६२ ॥ ६२ ॥ २० ॥ ५० ॥ ५० ॥ १० ॥

শক্তপুল্য বলোপমন্ * ইতি পাঠঃ ক-পুশুকে।

সিংহর্ষভগতিঃ শ্রীমান্ন দারকনকপ্রভঃ। মনসীবলবান্দুপ্তোমানী শূরশ্চপাওকঃ ॥ ২৮ ॥ লোহিতাকঃ পৃথুবা শেসা মন্তবারণবিক্রমঃ। সিংহদ প্ট্রো রহৎক্ষাঃ সালপোত ইবোদাতঃ॥২৯। মহাত্মা চারুদর্বাঙ্গঃ কয় গ্রীবো মহাভুজঃ। রুক্মপৃষ্ঠং ধনুঃ খুজাং তুণাংশ্চাপি পরামূষ**ং ॥ ৩**০ ॥ স কেশরীব চোৎসিক্তঃ প্রভিন্ন ইব বার্ণঃ। ব্যুপেতভয়স্ক্রোই: শৈলমভ্যুপতদ্বলী ॥ ৩১ ॥ ত^ মূগেল্রমিবায়ান্তং প্রভিন্নমিব বারণ্ম। দদুশুঃ সর্বভূতানি বাণ্কার্ম্মক্ষারিণম্॥ ৩২ । Cक्रोशना वर्क्तसन् इर्धः शनामानास श्राख्यः। ব্যপেতভয়সংমোহঃ শৈলরাজং সমাশ্রিতঃ॥ ৩৩॥ ন প্লানি ন চ কাত্র্যাৎ ন বৈক্লব্যং ন মৎসরঃ। কদাচিজ্জ্যতে পার্থ মাত্মজং মাত্রিশ্বনঃ॥ ৩৪ ।। স্তদেকায়নমাসাদ্য বিষমৎ ভীমদর্শনম্। বস্ততালোচ্চ য়ং শুক্স মারুরোহ মহাবলঃ। ৩৫। স কিলরমহানাগ মুনিগল্পরাক্ষরাক্ষসান্। হর্ষয়ন্ প্রবৃত্যাগ্র মারুছ সুমহাবলঃ ॥ ৩৬ ॥ ততো বৈশ্রবণাবাসং দদর্শ ভরতর্যভঃ। काक्षरेनः कार्टिकरेन्टव (रश्माजिः ममलक्षृत्रम् ॥ ७१ ॥ প্রাকারেণ পরিক্ষিপ্ত সৌবর্গেন সমত ।। সর্বারভুত্ন্যতিমতা সর্বোদ্যানবতা তথা।। ৩৮॥ ॥२৮॥ भृथु विभिक्ति जाश्तो यमा म भृथुवाश्मः ॥ २৯॥ ७०॥ ७১॥ ७२ ॥ ॥ ৩৩ ন মানিংশ্রম:, কাতর্যাৎ ভরং, বৈক্লব্যং অভ্নথে মংসরঃ পরেবং करीरमहिक्षप्। ७४॥ अकाग्रनः वाम मिकन मक्षात्रम्नाम्॥ ७४॥ ७७॥

॥ ৩৭॥ পরিক্ষিপ্তং পরিত আরুত্য ॥ ৩৮॥

শৈলাদ্ভাচ্ছ য়বতা চয়াট্টালকশোভিনা। দারতোরণনির্বাচ ধ্রুসংবাহশোভিনা। ৩৯। বিলাসিনীভিরভার্থং নৃত্যন্তীভিঃ সমন্ততঃ। বাযুনা ধুয়মানাভিঃ পতাকাভিরলক্ষুত্ম ॥ ৪০॥ ধনুদ্বোটামবফভ্য বক্রভাবেন বাছনা। পশ্যমানঃ স খেদেন দ্রবিণাধিপতেঃ পুরুষ্। ৪১॥ (माप्तान् नर्वाञ्जानि शक्तमाप्तनमञ्जवः। সর্বাগন্ধবহস্তত্র মারুতঃ স্কুস্থে। ববৌ ॥ ৪২॥ চিত্রা বিবিধবর্ণাভা শ্চিত্রমঞ্জরিধারিণঃ *। অচিন্ত্যা বিবিধান্তত্ত ক্রমাঃ প্রমশোভিনঃ । ৪০॥ রভুজালপরিক্ষিপ্তং চিত্রমাল্যবিভূষিত্য। র।ক্ষসাধিপতেঃ স্থান্ত দদুশে ভরতর্ষভঃ ॥ ৪৪ ॥ গদাখ্যসাধনুস্পাণিঃ সমভিত্যক্তজীবিতঃ। ভীমদেনে। মহাবাহ্ন স্তম্থে গিরিরিবাচলঃ ॥ ৪৫॥ ততঃ শঙ্খমুপাধ্যাদী দ্বিষতাং লোমহর্ষণম। জ্যাঘোষং তলশক্ষ কৃত্বা ভূতান্যমোহয়ৎ ॥ ৪৬॥

চয়াউলিক শোভিনা—চয়ঃ প্রাকারস্য মূল বন্ধঃ, অউগুলক উপরিগৃহং "চয়ঃ
সমূহে প্রাকারে মূলবন্ধে সমাহিতে" ইতি মেদিনী, তোরণং বহিদ্বিং,
নির্গহঃ নাগদন্তাখ্যং গৃহান্নির্গতং দাক "নির্গহো নাগদন্তস্যাৎ"—ইতি
বিশ্বঃ ॥৩৯॥ ৪০॥ বক্রভাবেন বক্রেণ বাহুনা উপলক্ষিতঃ, এতেইশান্ন
প্রত্যুদ্গাক্তন্তি ইতি বা বক্রবৃদ্ধাা, খেদেন ভদ্দনাং শ্বসম্পৎ শ্বরণং তেন,
দ্রবিণাধি পতেঃ ধনাধিপতেঃ॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪৩॥দদৃশে দদ্শ ॥ ৪৪॥ ৪৫॥
॥ ৪৬॥

^{*} চিত্র মঞ্জরিধারণঃ, ইতি ক পাঠঃ।

ডতঃ প্রকৃষ্টরোমাণ স্তং শব্দমভিতুক্তবুঃ। যক্ষরাক্ষসগন্ধবাঃ পাণ্ডবদ্য সমীপতঃ॥ ৪৭॥ গদাপরিঘনিজ্ঞিশ শুলশক্তিপরশ্বধাং। প্রগৃহীতা ব্যরোচন্ত যক্ষরাক্ষসবাছভিঃ ॥ ৪৮ ॥ ততঃ প্রবরূতে যুদ্ধং তেষ†ং তস্য চ ভারত।। তৈঃ প্রযুক্তান মহামায়েঃ শূলশক্তিপরশ্বধান্॥ ৪৯॥ ভলৈভীমঃ প্রচিচ্ছেদ ভীমবেগতরৈস্ততঃ। অন্তরীক্ষণতানাঞ্চ ভূমিষ্ঠানাঞ্চ গৰ্জভাম্। ৫০॥ শরৈবিবিবাধ গাতাণি রাক্ষসানাৎ মহাবল:। সা লোহিতমহার্টি রভাবর্ষমহাবলম্ ॥ ৫১ ॥ গদাপরিঘপাণীনাং রক্ষসাৎ কায়সম্ভবা। কায়েভাঃ প্রচ্যুতা ধারা রাক্ষ্যানাং সমন্ততঃ ॥ ৫২ ॥ जीमवाद्यवार्यस्य त्रायुरेध्यंकतक्रमाम्। বিনিক্তানি দৃশ্যন্তে শরীরাণি শিরংসি চ। ৫৩॥ প্রচ্ছাদ্যমান রক্ষোভিঃ পাত্তব প্রিয়দর্শনম্। দদৃশুঃ সর্বভৃতানি স্থ্যামন্ত্রগৈরিব ॥ ৫৪॥ স রশ্মিভিরিবাদিত্যঃ শরৈ ররিনিঘাতিভিঃ। मक्तानाक वाशावाङ किनान मजुविक्तमः॥ १०॥ অভিতর্জানাশ্চ রুবস্তুশ্চ মহারবান। ন মোহং ভীমদেনদা দদুশুঃ সর্বরাক্ষদাঃ। ৫৬॥ যক্ষা বিক্লত সৰ্ব্বাঙ্গা ভীমসেন ভয়াৰ্দিতাঃ। ভীমমার্ক্তস্বরং চকুর্ব্বিপ্রকীর্ণমহাযুধা: ॥ ৫৭ ॥ উৎস্জ্য তে গদাখূলা নসিশক্তিপরশ্বধান্। দক্ষিণাৎ দিশমাজগ্মস্তাসিতা দৃতধন্বনা । ৫৮॥

|| 8 × || 8 × || α • ||

তত্র শ্লগদাপাণি ব্যাচোরকো মহাভুজঃ। স্থা বৈশ্রবণস্যাসী অণিমানাম রাক্ষদঃ। ৫৯ ॥ व्यमभीकातः (भोक्षयक महावनः। স তান্ দৃষ্টা পরার্ত্তান্ স্ময়মান ইবাত্রবীৎ॥ ৬০॥ একেন বহবঃ সংখ্যে মানুষেণ পরাজিতাঃ। প্রাপ্য বৈশ্ববাবাসং কি বক্ষ্যথ ধনেশ্বর ? "— ৷ ৬১ ॥ এবমাভাষ্য তানু দৰ্কা নভাবৰ্ত্তৎ স রাক্ষসং। শক্তিশূলগদাপাণি রভ্যধাবত স পাওবমু ॥ ৬২ ॥ * তমাপতত্তং বেগেন প্রভিন্নিব বারণম্। বৎসদক্তৈস্ত্রিভিঃ পাশ্বেভীমসেনঃ সমার্দরং॥ ৬৩॥ মণিমানপি সংকুদ্ধং প্রগৃহ্ মহতীং গদাস। প্রাহিণোদ্ভীমদেনায় পরিগৃহ্থ মহাবলঃ॥ ৬৪॥ বিত্যুদ্ধপাং মহাঘোৱা মাকাশে মহতী^ গদাম্। শরৈরস্কভিরভ্যাক্ত দ্তীমসেনঃ শিলাশিতৈঃ॥ ৬৫॥ প্রত্যহ্নান্ত তে সর্বে গদামাসাদ্য সায়কাঃ। ন বেগং ধারয়ামাস্থ গদাবেগদ্য বেগিতাঃ॥ ৬৬॥ शनायुक्तमभागात पुराभानः म वीधावान्। ব্যংসয়ামাস তং তস্য প্রহারং ভীমবিক্রমঃ॥ ১৭ ॥

। ৫৯। অদর্শয়ৎ অধীকারং স্বামাং প্রাণদর্শিতবান্ যঃ সমনিমান্ ইতি
যতদে;রধ্যাছারেন বোজান্। ৬০। সংখ্যা সংগ্রামে। ৬১। ৬২। ৬০।
॥ ৬৪। ৬৫। প্রতাহনাস্ত প্রতিহতাঃ, বোগতাঃ বেগরস্তোপি,
নালাবেগদা নালায়াংবেগোহভাগদো যদা তদা। ৬৬। দঃ ভীমঃ, ব্যংদয়া
মাদ বার্থাচকার। ৬৭। অয়শয়ীং ছান্দসংভরং, অয়োময়ী মিতি যাবং

^{* &#}x27;' অভ্যধাৰত পাওবং " ইত্যেবং ক পুস্তকে।

ততঃ শক্তিং মহাঘোরাং রুকাদণ্ডামধন্মগ্রীম। তিস্মিরেবান্তরে ধীমান্ প্রজহারাথ রাক্ষসঃ ৷ ৬৮ ৷৷ সা ভুজং ভীমনিক্রাদা ভিত্তা ভীমস্য দক্ষিণ্ম। সাগ্নিজালা মহারৌদ্রা পপাত সহসা ভুবি॥ ৬৯॥ সোহতিবিদ্ধো মহেম্বাসঃ শক্ত্যামিতপরাক্রমঃ। গদাপ জগ্রাহ কৌন্তেমঃ ক্রোধপর্য্যাকুলেক্ষণঃ॥ ৭০॥ ৰুক্সপট্ৰপিনদ্ধাং তাৎ শত্ৰণাং ভয়বৰ্দ্ধিনীম। প্রসূত্যাথ নদন ভীমঃ শৈক্যাৎ সর্ব্বায়মীও গদাম ॥ ৭১॥ তরদা চাভিতুদাব মণিমন্তং মহাবলম্। দীপ্যমানং মহাশূলং প্রগৃষ্থ মণিমানপি॥ ৭২॥ প্রাহিণোদ্ভীমসেনায় বেগেন মহতা নদন্। ভঙ্কু পূলং গদাতোণ গদাযুদ্ধবিশারদঃ॥ ৭৩॥ অভিহ্নতাব তং হন্তং * গরুত্মানিব পন্নগম্। সোহ ন্তরীক্ষমবপ্পত্য বিধুয় সহসা গদাম । ৭৪॥ প্রচিক্ষেপ মহাবাছর্কিনদ্য রণমুর্জনি। সেন্দ্রাশনিরিবেন্দ্রেণ বিস্ফী বাত রণ্ছসা॥ ৭৫॥ হত্বা রক্ষঃ ক্ষিতিং প্রাপ্য ক্লত্যেব নিপপাত হ। তংরাক্ষস ভীমবলং ভীমসেনেন পাতিত্য। ৭৬॥ দদুশুঃ দক্ষভুতানি সিংহেনেব গবাংপতিম।

॥ ৬৮ ॥ ৬৯ ॥ ৭০ ॥ শৈক্যাৎ শীকয়তি শক্রুন্ পরাভবতি ইতি শৈক্যা ''শীকয়তে ঋহলোন্যংগ ততঃ স্বার্থে কণ ॥ ৭১ ॥ ৭২ ॥ ৭৩ ॥ ৭৪ ॥ ॥ ৭৫ ॥ ৭৬ ॥

^{*} হন্তমিত্যত্ত "ভূর্ণ্ ইতিক-

ত প্রেক্ষ্য নিহতং ভূমৌ হতশেষা নিশা চরাঃ।
ভীমমার্থ্যরংকুত্বা জগ্মঃ প্রাচীং দিশং প্রতি''॥ ৭৭॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি যক্ষ্মুদ্ধপর্বাণি মণিমন্বধে ষ্ট্যাধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৬০॥

কৈশলায়ন উপাচ।
ক্রেত্বা বছবিধৈঃ শব্দৈ নাদ্যমানা গিরেন্ত্র্হান্।
অজাতশত্রঃ কৌন্ডেয়া মাদ্রীপুজাবুভাবপি॥ ১॥
ধৌম্যঃ ক্রফা চ বিপ্রাশ্চ সর্বেচ স্ক্রেদস্তথা।
ভীমদেনমপশান্তঃ দর্বেব বিমনসোহভবন্॥ ২॥
ডৌপদীমান্তিবিলায় সম্প্রধার্যা মহারথাঃ।
সহিতাঃ সাযুধাঃ শুরাঃ শৈলমারুরুভস্তদা॥ ৩॥
ততঃ সংপ্রাপ্য শৈলাগ্রং বীক্ষমাণা মহারথাঃ।
দদৃশুন্তে মহেদ্বাসা ভীমদেনমরিন্দমাঃ॥ ৪॥
স্কুরতশ্চ মহাকায়ান্ গতসন্ত্রাংশ্চ রাক্ষসান্।
মহাবলাগ্রাসন্ত্রান্ ভীমদেনেন পাতিতান্॥ ৫॥
ক্রেতে স মহাবাছ গদাথজ্যধনুর্দ্রঃ।
নিহত্য সমরে সর্বান্ দানবান্ মহাবানিব॥ ৬॥
ততন্তে ভাতরং দৃষ্ট্বা পরিম্বজ্য মহারথাঃ।
তত্রোপবিবিশ্তঃ পার্থাঃ প্রাপ্তা গতিমনুত্রমান্॥ ৭॥

ইত্যার্ণাকে পর্ঝাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে ষষ্ট্যাধিক শততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৬০॥

শ্রুতি—॥১॥২॥সম্প্রধার্ম রক্ষার্থৎ সম্প্রা।৩॥৪॥৫॥৬॥৭॥

তৈশ্চ কুর্জির্দ্রহাষ্ট্র রিরিশৃঙ্গ মশোভত।
লোকপালৈশ্বহাজালৈ দিবং দেববরৈরিব ॥ ৮॥
কুবেরসদনং দৃষ্ট্রা রাক্ষসাংশ্চ নিপাতিতান্।
ভাতা ভাতরমাসীন মত্রবীৎ পৃথিবীপতিং॥ ৯॥
য়ুধিষ্ঠর উবাচ।

" সাহসাদ্বনি বা মোহান্তীম পাপমিদং ক্নতম্।
নৈতত্ত্বে সদৃশং বীর! মুনেরিব মৃষা বধঃ * ॥ ২০॥
রাজদ্বিষ্টং ন কর্ত্তব্য মিতি ধর্ম্মবিদে৷ বিদ্যুঃ।
ক্রিদশানামিদং দ্বিষ্টং ভীমসেন! স্বয়া ক্নতম্॥ ১১॥
অর্থধর্মাবনাদৃত্য যঃ পাপে কুরুতে মনঃ।
কর্ম্মনাং পার্থ! পাপানাং স ফলং বিন্দতে ধ্রম্।
পুনরেবং ন কর্ত্তব্যং মম চেদিচ্ছসি প্রিয়ম্ "—॥ ১২॥
বৈশম্পায়ন উবাচ।

এবমুকু স ধর্মাত্মা ভাতা ভাতরমচ্যতঃ।
অর্থতত্ত্ববিভাগজ্ঞঃ কুন্তীপুলো যুধিষ্ঠিরঃ॥১৩॥
বিররাম মহাতেজাস্তমেবার্থং বিচিন্তরন্।
ততন্তে হতশিষ্টা যে ভীমসেনেন রাক্ষসাঃ॥১৪॥
সহিতাঃ প্রত্যপদান্ত কুবেরসদনং প্রতি।
তে জবেন মহাবেগাঃ প্রাপ্য বৈশ্রবণালয়ম্॥১৫॥
ভীমমার্ভিম্বরং চকু ভীমসেনভয়াদ্দিতাঃ।
ন্যন্তশক্তাযুধাঃ ক্লান্তাঃ শোণিতাক্ততনুচ্চদাঃ॥১৬॥
প্রকীর্ণমুদ্ধানা রাজন্! যক্ষাধিপতিমক্রবন্।
গদাপরিঘ্নিস্ত্রিশ্ব তোমরপ্রাশ যোধিনঃ॥১৭॥

৮॥ ৯॥ মুনেরিব বনবাসিন স্তেতব এতৎ সদৃশং নোচিতং যং মুষা নির্নি-মিত্তং বধো রক্ষসাং হিংসা ॥ ১ - ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ সহিতাঃ মিলিতাঃ ॥ ১৫ ॥ তহুচ্ছদঃ কবচাদিঃ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

^{*} বধ ইত্যাস্য স্থানে " বচঃ " ইতি ক-ঘ-পুশুক ছয়ো পঠাতে।

"রাক্ষনা নিছ্তাঃ মর্কে তব দেব! পুরঃসরাঃ।
প্রামৃদ্য তরসা শৈলং মানুষেণ ধনেশর !॥ ১৮॥
একেন সহিতাঃ * সর্কে রণে ক্রোধবশাগণাঃ।
প্রবরা রাক্ষ্যেন্দ্রাণাং যক্ষাণাঞ্চ ধনাধিপ !॥ ১৯॥
শেরতে নিহতা দেব ! গতসত্ত্বঃ পরাসবঃ।
লক্ষ্যো * বরং মুক্তা মণিমাংস্তে সথা হতঃ॥ ২০॥
মানুষেণ কৃতং কর্ম্ম বিধৎস্ব যদনন্তরম্ "।
স তচ্চুত্বা স্থসংকুদ্ধঃ সর্ক্যক্ষগণাধিপঃ॥ ২১॥
কোপসংরক্তনরনঃ কথ মিতাত্রবীঘচঃ।
দিতীয় মপরাধ্যত্তং ভীমং প্রত্যা ধনেশ্বরঃ॥ ২২॥
চুক্রোধ যক্ষাধিপতি যুজাতামিতি চাত্রণীং।
অথাত্র ঘনসংকাশং গিরিশৃক্ষমিবোচ্ছিত্ব॥ ২৩॥
রথং সংযোজরামাস্থ গ্রাক্ষর ক্রোভ্নাঃ॥ ২৪॥
তস্য সর্বগুণোপতা বিমলাক্ষা হ্রোভ্নাঃ॥ ২৪॥

॥ ১৮ ॥ ১৯॥ নক্কশোষ লক্কপ্রসাদ । 'শোষঃ সংকর্ষণে বধে। জনতে না প্রসাদেচ—" ইতি মেদিনী। লক্ক-শোলা ইতি গৌড় পাচেতু—লক্ষো ভীমেন জিভঃ শোলঃ শৈলস্থ-রাক্ষসগণঃ ॥ ২০ ॥ ২১॥ দিতীর মিব দিতীরং ভরহেতুং 'দিতীরা দে ভরং ভবতি "ইতিশ্রুতঃ ॥ ২২ ॥ যুজ্যতাং রথইতি শোষঃ, জব্র ঘনঃ সজলমেহঃ, ''জালং মেঘেচ গগনে ধাতুভেদেচ কাঞ্চনে " ইতি মেদিনীকোবাৎ, কাঞ্চনমেঘ সঙ্কাশ মিডি বা অর্থঃ ॥ ২০॥ গক্কবির্ধ ইট্যু যোজ্যা মান্তঃ যক্ষা ইতি শেষঃ, বিম্লাক্ষাঃ দশাবর্তশুদ্ধাঃ ॥ ২৪॥

^{*} সহিতেতাত্ত "নিহতা" ইতি ক-ঘ-গ-পুশুকাঃ পঠান্ত। অপিচ ''ক্রোধবশাগনা" ইতাসা স্থানে "ক্রোধ বশাভ্গা" ইতি পাঠঃ ক-পুশুকে, ধনাধিপেতাত্রচ "নরাধিপ" ইতিচানাৎ পুশুকে দৃশাতে।

^{*} नक्षिना हेट्यादश्क-श्रुकमा।

তেজোবলগুণোপেতা নানারত্রবিভূষিতাঃ। শোভমানা রথে যুক্তা স্তরিয়াত ইবাশুগাঃ॥২৫॥ ক্রেষয়ামাস্থ রন্যোন্যং ক্রেষিতে ব্রিজয়।বহৈঃ। স ত সাস্থায় ভগবানাজরাজে । মহারথম্ ॥ ২৬॥ व्ययसो स्वराकाटेर्न खुत्रमारना महाक्रां जिः। তং প্রয়ান্তং মহাত্মানং সর্কো যক্ষা ধনাবিপায় ॥ ২৭॥ রক্তাকা হেমদক্ষাশা মহাকায়। মহাবলাঃ। সাযুধা বন্ধনিস্তিংশা যক্ষা দশশতা বরাঃ : ২৮॥ তে জবেন মহাবেগাঃ প্লবমানা বিহায়সা। গক্ষামাদন মাজগা ও প্রকর্ষন্ত ইব। মূর্য ॥ ২৯॥ তৎ কেসরিমহাজালং # ধনাধিপতিপালিতমু ৷ - কুবেরঞ্জ মহাত্মানং যক্ষরকোগণার্ভয়॥ ৩০॥ দদুশুক্ ফিরোমাণঃ পাগুবাঃ প্রিয়দর্শনম্। কুবেরস্ত মহাসত্ত্ব পাডোঃ পুতান্ মহারথান ॥ ৩১॥ আত্তকার্ম্কনিক্রিংশান্ দৃষ্ট্য প্রীত্যেহভবত্তদা। দেবকাৰ্য্যং চিকীৰ্ষন হৃদয়েন ভুভোষ হ। ৩২। তে পক্ষিণ ইবাপেতু গিরিশৃঙ্গ মহাজবাঃ। তস্থা সমভ্যাদে ধনেশ্বপুরঃ সরাঃ॥ ৩০॥ ততস্তং হৃষ্টমনসং পাঁওবানু প্রতি ভারত!। সমীক্ষ্য যক্ষপন্ধর্বা নির্বিকারমব্যস্তি । ৩৪॥

॥২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ২৮ ॥ ২৯ ॥ কেসরি মহাজালং অশ্বানাং মহ্ৎরুক্স্ ॥৩০ ॥৩১ ॥৩২ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ ,

^{*} কেশরীতি তালব্যবানপি।

পাপুৰাশ্চ মহাত্মানঃ প্ৰণমা ধনদ প্ৰভুষ। নকুলঃ সহদেবশ্চ ধর্ম্মপুক্রশ্চ ধর্ম্মবিৎ॥ ৩৫॥ অপরাদ্ধমিবাজানং মন্যমানা মহারথাঃ। তন্ত্র: প্রাঞ্জলয়ঃ সর্বে পরিবার্যা ধনেশ্বর্ম ॥ ৩৬ ॥ স হাসনবরং এীমান্ পুষ্পাক 📽 বিশ্বকর্মাণা। বিহিতং চিত্রপর্যান্ত মাতিষ্ঠত ধনাবিপঃ॥ ৩৭॥ ত্যাসীনং মহাকায়াঃ শঙ্করণা মহাজবাঃ। উপোপবিবিশু র্যক্ষা রাক্ষসাশ্চ সহস্রশঃ॥ ৩৮॥ শতশশ্চাপি গন্ধর্মান্তবৈধবাপ্সরসাং গণাঃ। পরিবার্যোপতিষ্ঠন্ত * যথা দেবা শতক্রতম্ ॥ ৩৯॥ কাঞ্চনীপ শিরসা বিজ্ঞদ্বীমসেনঃ অন্তর্প শুভাম। পাশ্বজাবনুজ্যাণি রুদৈক্ষত ধনাধিপায়।। ৪০॥ ভীমসেনস্য ন প্লানি বিক্তেক্যাপি রাক্ষ্টেশঃ। আদীক্তস্যামবস্থায়াং কুবেরমপি পশ্যতঃ॥ ৪১॥ আনদানং শিতান্ বাণান্ যোদাকাম মবস্থিতম্ । দৃষ্ট্য ভীমং ধর্মস্কৃত মন্ত্রবীন্নরবাহনঃ॥ ৪২ ॥ 🍟 ''বিতুস্থাং সৰ্ধভূতানি পাৰ্থ! ভূতহিতে রতম্। নির্ভয়কাপি শৈলাতো বস স্বং ভাতৃভিঃ সহ॥ ৪৩॥ ন চ মন্ত্যুস্থা কার্য্যো ভীমদেনদ্য পাগুবঃ!। কালেনৈতে হতাঃ পূর্বং নিমিত্ত মনুজন্তব ॥ ৪৪॥

॥ ७६॥ ७७ ॥ ७१ ॥ ७৮ ॥ ७৯ ॥ ८० ॥ ८४ ॥ ८२ ॥ ८८ ॥ ५ वहः 🖼 🥶

^{*} পুষ্পানং ইতি কর্ম পাঠঃ কঃ পুস্তকে।

* উপতিষ্ঠন্তি ইতি ক
'' কুবের উবাচ " ইতাধিক পাঠঃ ক- পুস্তকে ঘ-পুস্তকে চ লভাতে।

ব্রীড়া চাত্র নকর্ত্তব্যা সাহস• যদিদং কৃতম্। দ্বিক্টাপি স্কুরৈঃ পূর্বাং বিনাশো যক্ষরক্ষসাম্॥ ৪৫॥ ন ভীমসেনে কোপো মে প্রীতোহস্মি ভরতর্ষভ!। কর্ম্মণা ভীমসেনস্য মম তৃষ্টি রভূৎ পরা''—॥ ৪৬॥

বৈশস্থারন উবাচ।

এবমুক্ত্রা তুরাজান জীমসেন মভাষত।

'বৈতন্মনসি মে তাত! বর্ততে কুরুসভম!॥ ৪৭॥

যদিদং সাহসং ভীম! কুঞার্থে কুতবানসি।

মামনাদৃত্য দেবাংশু বিনাশং যক্ষরক্ষসাম্॥ ৪৮॥

স্বাছবল মাশ্রিত্য তেনাহ প্রীতিমাংস্কৃষি।

শাপাদদ্য বিনির্ম্ম ক্রো ঘোরাদিমা রুকোদর!॥ ৪৯॥

অহং পূর্বা মগস্ত্যেন কুদ্দেন পরমর্ষিণা।

শস্তোহপরাধে কম্মিংশি তুস্যো নিস্কৃতিঃ কৃতা॥ ৫০॥

* দৃষ্টো হি মম সংক্রেশঃ পুরা পাপ্তবনন্দন!।

ন তবাত্রাপরাধে। ইন্তি কথ্পিদ্পি পাপ্তব! ''—॥ ৫১॥

যুধিষ্ঠির উনাচ।

কথং শপ্তোহসি ভগবন্নগস্তোন মহাত্মনা।
 শ্রেভুমিচ্ছামাহং দেব! তবৈতচ্ছাপকারণম্॥ ৫২॥
 ইদ্ঞাশ্চর্যাভূতং মে যৎ ক্রোধান্তম্য ধীমতঃ।
 তদৈব ত্ব^ ন নির্দ্ধিঃ স্বলঃ স্পদানুগ্ঃ!"—॥ ৫৩॥

॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ মম মরা, সংক্রেণো ভাবি ছঃখন্॥ ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ৫৩ ॥

^{*} मिछे रेटावर भार्रे कहिए।

ধনেশ্বর উল্জ।

" দেবত।নামভূত্মন্ত্রঃ কুশবত্যাং নরেশ্বর !। বৃতস্ত্রাহ্মগম্ মহাপল্পাই হস্ত্রিভিঃ॥ ৫৪॥ যক্ষাণাশ ঘোরৰূপানাং বিবিধাযুধধারিণায়। অধন্যহ্মথাপশ্য মগস্তামূ্যিসন্তম্ম। ৫৫॥ উত্রং তপস্তপ্যমানং যমুনাতীরমাব্রিত্র । নান পিক্ষিগণাকীণং পুপি ভদ্রমশেভিতম্। ৫৬। তমূর্ন্ন হং দৃথ্যৈ ব স্থ্যাস্যাভিমুখে স্থিতম্। তেজোরাশিৎ দীপামানং ছতাশন মিবৈধিতম্। ৫৭। রাক্ষসাধিপতিঃ শ্রীমাক্ষবিমারাম মে স্থা। নৌর্খ্যাদজ্ঞানভাবাচ্চ দর্পান্মোহাচ্চ পার্থিব। ॥ ৫৮॥ ন্য ঠীবদাকাশগতো মহর্ষেস্তম্য মূর্দ্ধনি। স কোপানামুবাচেদং দিশঃ স্বা দহন্নিব। ৫৯ ॥ ম। মবজ্ঞায় তুটাত্মা যত্মাদেষ স্থা তব। ধর্ষণা ুক্তবানেতা ুপশ্যতত্তে ধনেশ্বর । ॥ ৬০॥ তত্মাৎ সহৈভিঃ সৈন্যেত্তে বধ^ প্রাণ্স্যতি মানুষাৎ। ত্বঞ্চাপ্যেভিইতেঃ সৈন্যৈঃ ক্লেশ্ব প্রাপ্যেহ চুর্ন্মতিঃ। ত মেব মানুষ্ দৃষ্ট্বা কিল্বিৰাদ্বিশেক্যালে॥ ৬১॥

কুশবত্যাৎ কুশস্থলী সংজ্ঞে দেশবিশেষে ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥ ৫৬ ॥ এধিতং সমিদ্ধায় ॥ ৫৭ ॥ মোখাঁ । বৈধার।ক্ষমহাৎ, অতএব অগস্ত্যোহয় মিত্যজ্ঞান ভাবাৎ, মোখা মিপি দপাৎ সম্পত্তি গর্বাৎ সোপি মোহাৎ সম্পত্তে নিশ্বরভাবাৎ॥ ৫৮ ॥ নাজীবৎ খুৎকৃতবান্॥ ৫৯ ॥ ৬০ ॥ ৬১ ॥ সৈন্যানামিতি

দৈন্যানান্ত তবৈত্যাশ পুজ্পোত্র-বলান্তিম্। *
ন শাপণ প্রাপ্সতে ঘোরণ যত্ত্বাজ্ঞাং করিষ্যতি॥ ৬২ ॥
এষ শাপো ময়া প্রাপ্তঃ প্রাকৃ তক্ষা, দৃষিসন্তমাৎ।
স ভীমেন মহারাজ! জাতু ৷ তব বিমোক্ষিতঃ ''—॥ ৬৩॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি যক্ষমুদ্ধাপ্রবিণ কুবের-যুধিষ্ঠিরসংবাদে
এক্ষষ্ট্যধিকশতত্মোহ্ব্যায়ঃ॥ ১৬১॥

ধনদ উবাচ।

ে যুধিষ্ঠির ! ধৃতিদাক্ষাং দেশক,ল পরাক্রমাঃ। লোকভন্তবিধান,না মেষ পঞ্চবিধো বিধিঃ॥ ১॥

তব এতে গৃং সৈন্যানাং মধ্যে যত্তব আজাৎ করিয়তি তব ধারিং শাপিং মানুষাৰ মরণ রূপং ন প্রাপ্তি—ছেরেরে হেছুঃ পুরেতি—পুত্র পৌতাঃ বলানি কৈনানি চ তেয় অবিতং, রাক্ষদাঃ সর্কে পুত্রাদি হুক্তা মানুষ বধ্যা ভবন্ধ ইতোকসাগপরাধে বহুনাং দগুরপ ইতি ধারি হং শাপ্সেয়তার্থঃ॥ ৬২॥ ৬২॥ ৬২॥

ইতাব্রণকে পর্কাণ নৈলকতীয়ে ভারতভাব দীপে একষফা ধিক শততমোহধায়েঃ ॥১৬১॥

যুধিতি—এবং শাপকীর্ত্রন্যাজের মহতা মবজার কর্ত্ত্য ইতি হাতিত মর্থং কণতোপি বজুং প্রাহ যুধিটি রত্যাদিনা—গ্লিড সঙ্গটেষংবিক্লবতা, দাক্ষ্যং যত্ন শীলতা, পরাক্রমঃ শক্লা মভিভাবন হেছুঃ ক্রিয়া দেশা-কালয়ো রাহ্যকুলাঞ্চ ইতি বিধানানাং কার্য্যাণাং বিধি রভ্যাদয় হেছুঃ জনেশে অকালেচ কৃতং প্রত্যাদকং অভিভব হেছু রিত্যর্থঃ॥১॥ প্রতি

^{*} পুত্ৰং পৌত্ৰং বলান্নিত মিতি বিচ্ছিন্ন পাঠঃ ক-পুস্তকীয়ঃ।

ধৃতিমন্তুশ্চ দক্ষাশ্চ স্বে স্বে কর্মনি ভারত !। পরাক্রমবিধানজ্ঞ। নরাঃ কুত্যগেহভবন্ । ২॥ ধ্তিমান্ দেশকালজ্ঞা সক্ষধৰ্মবিধানবিং। ক্ষজিরঃ ক্ষজিরশ্রেষ্ঠ ! প্রশাস্তি পু থিবীঞ্চিরসূ ॥ ৩ ॥ য এবং বর্ত্ততে পার্থ! পুরুষঃ স্কাকর্দ্যস্ত। স লোকে লভতে বীর। যশঃ প্রেক্তাচ স্কাতিয় ॥ ৪ ॥ (प्रभक्त एउर व्यक्त : क्रश भक्तः शत क्रम । সংখ্যাপ্তস্ত্রিদিবে রাজ্যৎ রত্তহা বস্তুভিঃ সহ।। ৫॥ যস্ত্র কেবলসপরস্তাৎ প্রাপাতং ন নিরাক্ষতে। পাপাত্মা পাপবুদ্ধি যাং পাপমেবানুবৰ্ততে ॥ ৬ ॥ কর্মণা মবিভাগজঃ প্রেত্য চেহ বিনশ্যতি। অকালজঃ স্বত্নের্বাঃ কার্য্যাণা মবিশেষবিৎ ॥ ৭ ॥ রুথাচারসমারস্তঃ প্রেত্য চেহু বিনশ্যতি। সাহসে বর্ত্তমানানাৎ নিক্কতীনাং তুরাত্মনাম ॥ ৮ ॥ সর্বসামর্থালিক্ষ্ নাং পাপো ভবতি নিশ্চয়ঃ। অধর্মজ্ঞে। হবলিপ্তশ্চ বালবুদ্ধি রমর্ষণঃ ॥ ৯॥ নিৰ্ভয়ো ভীমদেনোহয়^ ব্বং শাৰ্ষি পুরুষর্ষত।। অাফি বৈণ্দ্য রাজর্যেঃ প্রাপ্য ভূয়স্তুমাজ্ঞমম্॥ ১০॥

মন্ত্রি— কৃত্যুগেছি জ্ঞান প্রাণান্যাৎ জ্ঞানস্যাচ সর্ববিষ্ দেশে কালে চাত্যুদয় হেতুহাৎ ন তত্র দেশ কাল প্রত ক্ষা সীদিতার্থঃ॥ ২॥ ক্ষাত্রিয়া গান্ত সর্ববৈদ্বৈতং পঞ্চক মাবগ্যক মিত্যুংহ প্রতিমানি ত—॥ ৩॥ ৪॥ ব্রত্তহেতি পরাক্রমং নির্দিশতি॥ ৫॥ সংরম্ভাৎ কোপাৎ॥ ৬॥ ৭॥ নিক্তিনাং বঞ্চনা পরাণান্॥ ৮॥ ইদ মুপ্রেশং পুকুতে যোজয়তি অধর্মজইতি— অবলিপ্রো গর্বিতঃ॥ ৯॥ ১০॥ প্রথমংপ্রথমোৎ প্রানি কৃক্ষাংসি তৎসত্ব-

তামিত্রণ প্রথমং পক্ষং বীতশোকভায়া বস।

অলকাঃ সহ গল্পবৈ র্যক্ষান্ত সহ কিলবৈঃ ॥ ১১ ॥

মির্যুক্তা মনুষোন্দ্র! সর্বের চ গিরিবাসিনঃ।
রক্ষিষ্যন্তি মহাবাহো! সহিতং দিজসন্ত্রিঃ॥ ১২ ॥

মাহসাদনুসং প্রাপ্তঃ প্রতিবুধা রকোদরঃ।
বার্যাতাং সাধ্রমং রাজংস্তুরা ধর্ম্মভূতাষর!॥ ১০॥

অতঃ পরপ্ত বো রাজন্! ক্রন্ধান্তি বনগোচরাঃ!
উপস্থাস্যন্তি বং সর্বান্ত্রিক্ষান্তি চ বং সদা॥ ১৪॥
তথৈব চারপানানি স্বাদূনি চ বহুনি চ।

আহরিষ্যন্তি মন্প্রেষ্যাঃ সদা বং পুরুষ্যভাঃ॥ ১৫॥

যথা জিফুর্ম্মহেন্দ্রস্য যথা বায়োর্ক্ কোদরঃ।

ধর্ম্মস্য ত্বং যথা তাত! যোগোৎপারো নিজঃ স্কৃতঃ॥ ১৬॥

আজাজাবাজ্মং পারী যুমাং সর্বের যুধিন্তির!॥ ১৭॥

রক্ষ্যান্তিদ্বাম্পীই যুমাং সর্বের যুধিন্তির!॥ ১৭॥

দ্বিহাৎ পক্ষোহপি প্রথমঃ, রক্ষো হতোবপি তামিত্র পক্ষে বংতর
নির্ভনো বসেতার্থঃ, কেচিতু ইতএব প্রথম শব্দাৎ মাসারত্তে রুঞ্পক্ষা
প্রথমা মিচ্ছতি তদসৎ পূর্বপক্ষাপর পক্ষশক্ষােঃ ক্রমেণ শুকুর্ফ্রোরেব রুচ্ছাৎ, প্রোতেপি পৌর্পমানত এব হস্টারস্তাৎ, ন চ পূর্ণো মাসোহস্যা মিতি যোগাৎ পৌর্পমান্তা মাস ইতি বাচাং তত্র মাস শব্দাচল্ল বাচিতাৎ শহ্রামানা বিচরত্বা দিবি "—ইতি মন্ত্রবর্ণাৎ, স্ব্র্যা মাসা
স্ব্যা চল্লম্মাবিতার্থঃ, নিপ্রতর মুপপাদিত মেতদমাভিঃ কার্শত
পথভাষ্যে একপাদী কাণ্ডে, অলকাঃ অলকা বাসিনঃ ॥ ১১ ॥ মন্ত্রির্জা
রক্ষিরান্তি সহিতংলা মিতি শেষঃ ॥ ১২ ॥ সাহসা দত্র সংপ্রাপ্ত প্রতি
বুদ্ধা বার্যাতাম্ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ যথেতি—ইন্দ্রাদীন। মৌরস প্রত্বাৎ
যথা যুরং রক্ষাে শুথা মমাপীতি শ্লোক দ্বার্থঃ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ অর্থেতি—

অর্থতত্ত্ববিধানজ্ঞঃ সর্ব্বধর্মবিধানবিৎ। ভীমদেন। দবরজঃ কাল্ধনঃ কুশলী দিবি । ১৮॥ যাঃ কাশ্চন মতা লোকে স্বর্গাাঃ প্রমসম্পদঃ। জন্মপ্রভৃতি তাঃ সর্বাঃ স্থিতাস্তাত! ধনপ্লুয়ে ॥ ১৯॥ দমো দানং বলং বুদ্ধি ব্লীব্রতিক্তেজ উত্তমন। এতান্যপি মহাসত্ত্বে স্থিতান্যমিততেজসি॥ ২০॥ ন মোহাৎ কুরুতে জিফুঃ কর্ম্ম পাণ্ডব। গঙিতম্। ন পার্থস্য মূধেক্তানি কৎয়ন্তি নর। নুষু ॥ ২১॥ म দেবপিতৃগন্ধবৈধা কুৰণা প কীৰ্ত্তিবৰ্দ্ধনঃ। মানিতঃ কুরুতেহস্তাণি শক্রসন্মনি ভারত। ॥ ২২ ॥ যে হেসৌ স্কান্হীপালান্ধর্মেণ বশ্বানয়ং। স শান্তরু র্মহাতেজাঃ পিতৃস্তব পিতামহঃ ॥ ২৩ ॥ প্রীয়তে পার্থ। পার্থেন দিবি গাঞ্জীবধন্ধনা। সম্যক্ চাসো মহাবীর্যঃ কুলধূর্যোণ পার্থিবঃ॥ ২৪॥ পিতৃন্ দেবান্ধীনু বিপ্রান্ পূজয়িত্বা মহাতপাঃ। সপ্ত মুখ্যানহামেধান হেরদ্যমুনা - প্রতি॥ ২৫॥ অধিরাজঃ স রাজংস্ত্রাৎ শান্তরুঃ প্রপিতামহঃ। স্বর্গজিচ্ছক্রলোকস্থঃ কুশলৎ পরিপুচ্ছতি"—॥ ২৬॥ বৈশস্পায়ন উবাচ :

এতচ্ছুত্র। তু বচনং ধনদেন প্রভাষিত্য। পাপ্তবাশ্চ ততন্তেন বভুবুঃ সংপ্রহর্ষিতাঃ॥ ২৭॥

তত্বং বাথাত্মাং, বিধানং প্রাপ্ত পোর্য ॥ ১৮ ॥ স্বর্গার স্বর্গার হিতাঃ সম্পদঃ
॥ ১৯ ॥ তাএবাহ দম ইতি—তেজঃ শৌর্যং পরাভিত্তব সামর্থ্য ॥ ২০ ॥
॥ ২১ ॥ কুক্তে অভ্যস্যতি ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ মহামেধান্ অশ্বমেধান্
॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ প্রাধ্বং কৃত্য বদ্ধা উপসংহত্যেত্যর্থঃ, "প্রাধ্বংবদ্ধনে "

ততঃ শক্তি৲ গদাং খজাং ধনুক্ষ ভরতর্ষভঃ। প্রাধ্বং ক্লত্বা নমশ্চকে কুবেরায় রুকোদরঃ ॥ ২৮॥ ততেহিত্রবীদ্ধনাধ্যক্ষঃ শরণ্যঃ শরণাগতম্ ! মানহা ভব শক্তুণাৎ স্কুদাং নন্দিবৰ্দ্ধনঃ ॥ ২৯ ॥ স্বেষু বেশ্বাস্থ রম্যেষু বসতামিত্রভাগনাঃ। **কামান্নপ**রিহাস্যন্তি * যক। বো ভরতর্ষভাঃ ॥ ৩০ ॥ **শীভ্রমেব গুড়াকেশঃ ক্নতান্ত্রঃ** পুনরেষ্যতি। সাক্ষান্মঘৰতা স্বন্ধীঃ স্প্রাপ্স্যাতি ধনঞ্জয়ঃ''— : ৩১ 🛭 এব মুক্তমকর্মাণ মনুশিষ্য যুধিষ্টিরম্। অস্তং গিরিবরশ্রেষ্ঠং প্রযযৌ গুহাক।ধিপঃ॥ ৩২॥ ত পরিস্থোমস কীর্ণৈ মানারত্ববিভূষিকৈ:। যানৈ রমুযযু র্যকা রাক্ষ্যাশ্চ সহস্রশং॥ ৩৩॥ পক্ষিণামিব নির্ঘেষ্ট কুবেরসদনং প্রতি। বভূব প্রমাশ্বানা মৈরাবতপ্রে যথা। ৩৪। তে জগান্ত ৰ্মাকাশং ধনাধিপতিবাজিনঃ। প্রকর্ষন্ত ইবার্যাণি পিবন্ত ইব মারুভ্যু ॥ ৩৫॥

ইতি গাতিসংজ্ঞারাং "কুগতি প্রাদয়" ইতি প্রাপ্তোপি সমাসে। মহাবিভাষরা নানৃতঃ, নমশ্চক্রে অনুদোষান্ অর্জ্নগুলাংশ্চ শ্রুহা লজ্জিতঃ আপরাধং ক্ষমাপার্তু মিতার্থঃ, প্রাজাংক্রেরতাপি পাঠঃ, তত্র প্রকর্ষো অজাং
প্রাজ্ঞাং জ্যারহিত মিতার্থঃ ॥ ২৮ ॥ নন্দিঃ সহৃদ্ধিঃ ॥ ২৯ ॥ স্বেরু বেশ্মসু
অক্ষদিরের বঃ যুগ্ধং সম্বন্ধিনঃ কামান্ কামামানান্ অর্থান্ ন পরিহাস্যান্তি
কিন্তু সাধ্যিষান্তে:বেতার্থঃ ॥ ৩০ ॥ সৃষ্টঃ বিসর্জিতঃ, সংপ্রাপ্তানি
যুগ্ধান্ ॥৩১ ॥ অন্তং গৃহং "অপাঃ সোম মন্ত ক্ষিন্দ্র প্রবাহি ইতি মন্ত্র
বর্ধাৎ ॥ ৩২ ॥ পরি ন্তোমা শিত্রকম্বলাঃ হন্ত্যাদীনাঃ প্রলাণ ভূতাঃ ॥ ৩০ ॥
ধ্রেরবন্ত পথে ইন্দুপুরী প্রদেশে ॥ ২৪ ॥ ৩৫ ॥ অপাক্ষরান্ত অপাক্ষতানি

ক-পুস্তকে তু " কামাত্বপ হরি ষ্যান্তি" ইত্যেবং পাঠঃ।

ততস্থানি শরীরাণি গতসন্থানি রক্ষসাম্।
অপাক্ষান্ত শৈলাঞাদ্ধনাধিপতিশাসনাৎ ॥ ৩৬ ॥
তেষাং হি শাপকালঃ স ক্তোহগস্ত্যেন ধীমতা।
সমরে নিহতান্তমাচ্ছাপস্যান্তোহভবন্তদা ॥ ৩৭ ॥
পাণ্ডবাক্ষ মহাত্মানস্তেমু বেশ্মস্থ তাঃ ক্ষপাঃ।
স্থ মূষুর্গতোদ্বেগাঃ পূজিতাঃ সর্বরাক্ষসৈং "—॥ ৩৮ ॥
ইত্যারণাকে পর্ববি যক্ষযুদ্ধপর্বিণি কুবেরবাক্যে
দ্বিষ্ট্যাধিশততমোহধ্যারঃ ॥ ১৬২ ॥

ততঃ সূর্য্যাদয়ে ধৌম্যঃ ক্সাহ্লিকমরিন্দম!।
আটি যেণেন সহিতঃ পাপ্তবানভ্যবর্ত্ত ॥ ১॥
তেহ্ ভিবাদ্যাফী ষেণ্স্য পাদৌ ধৌম্যস্য চৈব হ।
ততঃ প্রাঞ্জনয়ঃ সফো ব্রাহ্মণাংস্তানপূজয়ন্॥ ২॥
ততো মুধিফিরং ধৌম্যো গৃহীস্বা দক্ষিণে করে।
প্রাচীং দিশ্যভিপ্রেক্য মহার্ষ রিদ্যব্রবীৎ॥ ৩॥

বৈশক্ষায়ন উবাচ।

1 40 11 60 11 60 11

ইত্যারণাকে পর্ব্যণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে দ্বি-ষ্ট্যাধিক শভ তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬২

ে অসৌদাগরপর্যান্তাং ভূমি মারুত্য তিষ্ঠতি।

বৈশলরাজো মহারাজ। মন্দরোইতিবিরাজতে॥ ৪॥

ততইতি। অর্থনের তপোবলাদেবেত্যো হস্তানি লকানি ইতি বিশ্বয়েন কর্ত্তব্য এতদর্থৎ কমাকলো র্জিতিং বিষ্ণুলোক প্রাপ্ত স্তাং বর্গন্ত্য-ধ্যায়েন ধ্যোম্যা মুধিটির গর্বপরিহার।র্থং তত ইত্যাদি না—॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ॥ ৪॥

ইন্দ্রবৈশ্রবণাবেতাং দিশৎ পাণ্ডব। রক্ষতঃ। পব্दरेजम वनारेखम कानरेनरमाश्ररभाष्टिजाम् । ৫॥ এতদান্তর্মহেন্দ্রস্য রাজ্যে বৈশ্রবণ্স্য চ। খাষয়ঃ সর্বাধর্মজ্ঞাঃ সদ্ম তাত। সনীষিণঃ ॥ ৬ ॥ অতশ্চোদ্যন্ত মাদিত্য মুপতিষ্ঠন্তি বৈ প্রজাঃ *। খাষয় 🏲 পি ধর্ম জ্ঞাঃ সিদ্ধাঃ সাধ্যা 🏲 দেবভাঃ ॥ ৭ ॥ যমস্ত রাজা ধর্মজ্ঞ: সর্বাপ্রভাণ প্রভুঃ। প্রেত্তসত্ত্বগতিং হেতা দক্ষণামাশ্রিতো দিশ্য ॥৮॥ এতৎ সংযমন পুণ্য মতীবাদ্ভদর্শনন্। প্রেতরাজ্স্য ভবন মৃদ্ধ্যা প্রময়া যুত্ম ॥ ৯॥ যংপ্রাপ্য * সবিতা রাজন্ ! সত্যেন প্রতিভিন্ততি : অস্তং পর্বভরাজান সেত্যান্থর্মনীযিণঃ॥ ১০॥ এবং প্রব্রোজান সমুদ্রঞ্চ মহোদ্ধিম্। আবসন্ বরুণো রাজা ভূতানি পরিরক্ষতি ॥ ১১॥ উদীচীং দীপয়ন্নেষ দিশং তিষ্ঠতি বীৰ্যাবান্। মহামেরুর্মহাভাগ! শিবো ত্রন্ধবিদাং গভিঃ॥ ১২॥ যিশান্ ব্রহ্মসদকৈর ভূতাত্মা চাবতিষ্ঠতে। প্রজাপতিঃ স্জন্ স্বাপ যংকিঞ্চিজ্ঞসমাগ্রমন্ ॥ ১৩ ॥ যানাছব্লণঃ পুলান্ মানদান্ দক্ষপপ্রমান্। তেষামপি মহামেরুঃ শিবং স্থান মনাময়ম্॥ ১৪॥

॥৫॥७॥৭॥ প্রেতসর্গতিং মৃতানাং প্রাণিনাং গম্যাম্॥৮॥ সংব্যনং নামতঃ ॥৯॥১০॥ আবিদন্ অধিতিটন্ ॥১১॥ ১২॥ ভূতালা সর্কেষাং ভূতানাং আলা সম্পূর্ণ ব্যাতি পিণ্ডাভিমানিকং ॥১০॥১৪॥ অত্তৈব

^{*} দিজা ইতি পাঠান্তরং।

^{*} তংপ্রাপ্য ই ত কচিৎ।

অত্রৈব প্রতিতিষ্ঠন্তি পুনরেবোদয়ন্তি চ। সপ্ত দেবৰ্ষয়ন্তাত ! বশিষ্ঠ প্ৰমুখান্তথা ॥ ১৫॥ দেশং বিরজস্প পশ্য মেরোঃ শিখর মুক্তমম্। যত্রাত্রন্তরেধ্যান্তে দেবেং সহ পিতামহং॥ ১৬॥ যমাছঃ সর্বভূতানা ও প্রকৃতেঃ প্রকৃতিং ধ্রুবাম। অনাদিনিধন সদেব প্রভুং নার রণং পরম্ ॥ ১৭ ॥ ব্রন্ধার সদনান্ত্রস্য পরং স্থানং প্রকাশতে। দেবাপি যন্ন পশ্যন্তি সর্বতেজোময়ং শুভম ॥ ১৮॥ অত্যৰ্কানলনীপ্তন্তৎ স্থানং বিষ্ণোৰ্মাহাত্মনঃ। चरेत्रव প্রভাষ । রাজন্। তুপে কा∾ দেবদানবৈঃ॥ ১৯॥ প্রাচ্যাৎ নারায়-স্থান্ত মেরাবভিবিরাজতে *। যত্র ভূতেশ্বস্তাত! সর্বাপ্রকৃতিরাত্মভূঃ॥ ২০॥ ভাসয়ন সর্বান্ত লানি স্কুশ্রেরাভিবিরাজতে। নাত্ৰ ব্ৰহ্মধ্যস্তাত ! কুত এব মহৰ্ষয়ঃ ॥ ২১ ॥ প্রাপ্ন বন্তি গতিং ছেতাং যতীনাপ কুরুদত্তম।। ন তং জ্যোতীংযি স্বাণি প্রাণ্য ভাষ্তি পাওব!॥ ২২॥ স্বয়ং প্রভু রচিত্যাত্মা তত্র হাতিবিরাজতে। যতরস্তত্র গচ্ছত্তি ভক্ত্যা নারায়ণণ হরিম ॥ ২৩ ॥

প্রজা পতৌ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ যমিতি—প্রকৃতেঃ পঞ্চতাত্মিকারাঃ, প্রকৃতিই উপাদানন্ ॥ ১৭ ॥ ব্রহ্মণঃ চতুর্মা, খসা ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ নতু সর্বাহ সোপাধিকই কার্যাব্রহাণে ইন্তঃ পাতীতি বৈদিক সিদ্ধান্ত ন্তংকইই "বিফোঃ স্থানই ভতঃ পরন্ "—ইত্যাত অভ আহ প্রাচ্যামিতি—মেরাবেবাইরং তারত-মোন দেশবিশেষ বিভাগো নতু সোপাধিক মপি কিঞ্চিনাজাত মন্তিইম মেব স্থানভেদ মাজিতা ব্রহ্মণোকা দাবর্ততে নতু বিঞ্লোকাদিতি পৌরিনিকী ব্রস্থা জেরা ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥

^{*} বিরাজতি" ইতি ক-পাঠঃ।

পরেণ তপসা যুক্তা ভাবিতাঃ কর্মাভিঃ শুকৈঃ।
যোগসিদ্ধা মহাত্মান স্তমোমোহবিব জিতাঃ ॥ ২৪ ॥
তত্র গত্ব। পুনর্নেমং লোক মারান্তি ভারত!।
স্বরস্তুব মহাত্মানং দেবদেবং সনাতনম্ ॥ ২৫ ॥
স্থানমেত আহাভাগ! দ্রুব মক্ষর মব্যরম্।
স্থারস্থা সদা হেতৎ প্রাণমাত্রং যুবিস্থির! ॥ ২৬ ॥
এন মত্বরহর্মে জং স্থাচন্দ্রমসৌ দ্রুবম্ ।
গ্রেমাভি মহারাজ হু কর্মনন্দনঃ ॥ ২৭ ॥
জ্যোতিংমি চাপ্যশেষেণ স্বর্ধাণ্যনম্ ! স্ক্রিঃ।
পরিষান্তি মহারাজ ! গিরিরাজং প্রদক্ষিণম্ ॥ ২৮ ॥
এতং * জ্যোতীংমি স্কাণি প্রকর্ষন্ ভগবানপি।
কুরুতে বিত্যক্র্মা আদিত্যোহভি প্রদাক্ষণ্য ॥ ২৯ ॥
স্বর্ধ প্রাপ্য ততঃ সন্ধ্যামতিক্রম্য দিবাকরঃ।
উদীচীং ভঙ্গতে কাঠাং দিশ্যেষ্ বিভাবম্বঃ॥ ৩০ ॥

॥২৪॥২৫॥ প্রেম্কার মতার মিতি— উৎপতি ব্রাস না। শ্না মিতার্থঃ, এতচ যথা ঘটাকাপলো মিথারাছবিলে বেপি বাবছার মাতিতা ঘটেছনিতা আকাশে নিতা ইতি বিভাগ এবং বক্ষলোকান্ত মনিত,ং বৈকুছং নিতা মিতি, পরমার্গতিন্ত ক্রমন্তি স্থানরা দৌপচারিকং প্রাবৃদ্ধি কেরং, প্রেম নুমস্কুল ॥২৬॥ উপার্তা অপ্রদক্ষিণং ক্রত ক্রাল ডক্রে প্রতীপং ক্রমন্তা পিপীলিকের প্রকৃষ্ধিং ক্রমন্ত ইতার্থঃ, ॥২৭॥২৮॥ প্রকর্ম অভিভাগন, প্রদক্ষিণং কুষ্ঠ ইতার্থঃ, ॥২৭॥২৮॥ প্রকর্ম অভিভাগন, প্রদক্ষিণং কুষ্ঠ ইতার্থানিতা। যত্রে বিশ্বাত ত্রেরার্গার্থঃ, ॥২৯॥ অন্তং অদর্শনিং, অয়মর্থঃ—মেকং প্রদক্ষিণং কুর্কন্ আদিতা। যত্রে নিত্রাত ত্রেরার্গার্তির বিশিং ভারতে অত্র সন্ধোল্রবং উদ্ধার্থঃ॥৩০॥ তত

^{*} এবং ইতি ক-

স মেরু মনুরুত্তঃ সন্পুনর্গজ্জি পাঞ্র।। প্রাত্মখঃ সবিতা দেবং সর্বভূতহিতে রতঃ ॥ ৩১॥ म भामान् * विভवन् कारल रहता शक्षेत्र कियु। তথৈৰ ভগৰান্ সোমো নক্ষত্ৰৈঃ সহ গছাতি॥ ৩২ ॥ 🌞 এবমেতং স্বতিক্রমা মহামের্ম হন্তিতঃ। ভাবয়ন্ সর্বভূতানি পুনর্গক্তি মন্দরম্॥ ৩৩॥ তথা তমিজ্ঞা দেবে। মনুধৈ ভাবনঞ্জাং। * মার্গমেত মসম্বাধ মাদিত্যঃ পার্বর্ততে ॥ ৩৪ ॥ সিস্ফুঃ শিশিরাণেষ * দক্ষিণাং ভলতে দিশম্। ততঃ সর্বাণি ভূতানি কালোহভাক্তি শৈশিরঃ॥ ৩৫॥ স্থাবরাণাঞ্জ ভূতানাং জঙ্গমানাঞ্জেজসা। তেজাপদি সমুপাদত্তে নিরুত্তঃ স বিভাবস্থঃ ॥ ৩৬। ততঃ স্বেদক্লমৌ তন্ত্রী প্লানিশ্চ ভঙ্গতে নরানু। প্রাণিভিঃ সততং স্বপ্নো হৃতীক্ষণ নিষেব্যতে॥ ৩৭॥ এবমেত্র্যনির্দেশ্যৎ মার্গ মার্ত্য ভারুমান্। পুনঃ স্কৃতি ব্যাণি ভগবান্ ভাবয়ন্ প্রজাঃ ॥ ৩৮॥

উদীচাঃ পরাং কাষ্ঠাং প্রাপ্য প্রাঞ্জ্য ইতি বদতা মেরোকতুকোণজং স্থাতি তবতি এতদেব তর মিতাজিতাঃ পাষ্ডিনো দ্বৌ স্বানী ইতি কম্মান্তি বস্তাতে অবলাত বস্থাতি বন্ধানিত কম্মান্তি বস্তাতে আকারে তাৎপ্রাই ভারাদিতি ক্ষেম্ ॥৩১॥ স সোমো মানান্ বিভাগন্ ইতি সংবন্ধঃ, তত্ত্ব মানা বিভাগ প্রকারে ইটা বক্রীয়ে উক্তঃ॥৩২॥৩০॥ শিশিরানি শীতানি॥৩৫॥ তেজাংসি সম্পাদতে প্রীম্মে॥৩৬॥ ৩৭॥ আনির্দেশ্যং মার্গং অন্তরীক্ষ্য ॥৩৮॥ বহ্নি। পরস্পরং বর্দ্ধান্তী—জল মুংক্ষিণ্ড ইতি

 ^{* &}quot; মাসং কালঞ্চ " ইত্যেকন্চন পাঠঃ ক-ঘ পুস্তকে।
 * এব মেষ ইতি ক-ঘ-গ-পুস্তকাঃ।
 * ভাসয়ন্ জগাড়" ইত্যেবং ক পুস্তবঃ।
 * শিশিরাণ্যেব ইতি বা পাঠঃ।

র্টি মারুত-সন্তাপেঃ স্থাবৈ স্থাবের জঙ্গমান্।
বর্দ্ধানন্ স্থমহাতেজাঃ পুনঃ প্রতিনিবর্ত্তে॥ ৩৯॥
এবমেষ চরন্ পার্থ! কালচক্র মতক্রিতঃ।
প্রকর্ষন্ সর্বাভূতানি সবিতা পরিবর্ত্তি ॥ ৪০॥
সন্ততা গতিরেত্রস্য নৈষ তিঠাতি পাণ্ডব!।
আদারের তু ভূতানাং তেজো বিস্কৃত্তি পুনঃ . ৪১॥
বিস্কৃত্র সর্বাভূতানা মাযুঃ কর্ম্ম চ ভারত!।
আহোরাক্রং কলাঃ কাঠাঃ স্কৃত্যেষ সদা বিভূঃ''—॥ ৪২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি যক্ষযুদ্ধপর্বানি মেরুদর্শনে
ক্রিষ্ট্যাধিকশতত্যেহিধ্যায়ঃ॥ ১৬৩॥

বৈশক্ষায়ন উপাচ।

তিশিন্নগৈন্দে বসতান্ত তেষাং,
মহাত্মনাং সন্তুমান্থিতানান্।
রতিঃ প্রমোদশ্চ বভূব তেষা,
মাকাক্ষতাং দর্শন মর্জ্রন্য ॥ ১ ॥

প্রসিদ্ধন্, সজলস্থালাং বায়্দীপিতো বহ্নিঃ বাস্পবাযুং বর্দ্ধাতি বায়ৃশ্চ স্থানী জল মুৎক্ষিপতি ইতি রক্তি মাকত সন্তাপান্ প্রতি স্থা সৈয়ব হেছু হং যুক্ত মিতি ভাবঃ ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥

ইন্ত্যারণ কে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাব দীপে ত্রিসফ্টাধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫৩ ॥

তশিমিতি—॥ ১॥

তান্ বীৰ্ঘ্যুক্তান্ স্থবিশুদ্ধকামা >- * ত্তেজস্বিনঃ সত্যপুতিপ্রধানান্। **সং**প্রীয় মাণা বহবোহভিজগ্ম_় র্গন্ধবৃদ্ধ । শ্রু মহর্ষ্য়শ্চ ॥ ২ ॥ তং পাদপৈঃ পুষ্পধরৈ রুপেতং নগে, তুম প্রাপ্য মহারখানাম। মনঃপ্রসাদঃ পরমো বভুব, যথা দিবং প্রাপ্য মরুদ্যাণানাম্॥ ৩॥ ম্যুরহং সম্বন নাদিতানি, পুজোপকীर्गान महाहलगा। শৃঙ্গাণি সাফুনি চ পশ্যমানা, গিরেঃ পরং হর্ষ মবাপ্য তস্থঃ॥ ৪॥ সাক্ষাৎ কুবেরেণ ক্নতাশ্চ তিম-**লগে:ত্তমে স**শ্বতকূলরে ধনঃ। কাদয় কারগুব হৎস জুফাঃ, পদাকুলাঃ পুষ্করিণী রপশ্যন্॥ ৫॥ জীডাপ্রদেশাংশ্চ সমৃদ্ধৰপান্, স্তিমাল্যার্ডজাতশে।ভান্। মণিপ্রকীর্ণাৎশ্চ মনোরমাংশ্চ, যথা ভবেয়ু র্বনদন্য রাজ্ঞঃ। ৬।

॥ ২॥ ৩॥ মছতী চলা লক্ষ্মীঃ শোভা যদ্য মহাচলদা "চলা লক্ষ্মী পুমান্ কম্পে" ইতি মেদিনী, দানুনোৰ তীক্ষাপ্ৰাণি পুং সঞ্চাৱাই যোগানি, শৃঙ্গাণীতাচাত্তে প্ৰেক্ষাং দ্ভিঃ॥ ৪॥ রোধদঃ রোধসতাঃ নব কৈনিলাদিনা ছাদিত নীরা ইতার্থঃ॥ ৫॥ ৬॥

^{*} কামা নিতাত্র " স্বান্" ইতি ক পুস্তকঃ পঠ্তি।

তথৈব তঞ্জিন্তয়তাং সিতাশ্বমন্ত্রার্থনং বাসব মভ্যুপেতম।
মাসোহথক্চে ল তদা ব্যতীতস্তান্মিনগে ভারত! ভারতানাম্॥ ১৬॥
উষিত্রা পঞ্চ বর্ষানি সহস্রাক্ষনিবেশনে।
অবাপ্য দিব্যান্যস্ত্রানি সর্বানি বিবুধেশরাং॥ ১৭॥
আগ্নেরণ বারুনং সৌমাং বায়ব্যমথ বৈষ্ণবম্।
ঐক্রং পাশুপতং ব্রাহ্মাং পারমেষ্ঠাং প্রজাপতেঃ॥ ১৮॥
মমস্য ধাতুঃ সবিতৃস্বফু বৈশ্রবন্স্য চ।
তানি প্রাপ্য সহস্রাক্ষা দভিবাদ্য শতক্রতুম্॥ ১৯॥
আমুজ্ঞাতস্ততন্ত্রন কৃত্রা চাপি প্রদক্ষিন্য।
আগ্রজ্জাতস্ততন্ত্রন কৃত্রা চাপি প্রদক্ষিন্য।
আগ্রজ্জাতস্ততন্ত্রন কৃত্রা চাপি প্রদক্ষিন্য।
ইত্যারণ্যকে পর্বানি যক্ষযুদ্ধ পর্বানি অর্ক্রাভিগমনে #
চতুঃষ্ট্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৬৪
সমাপ্তঞ্চ যক্ষযুদ্ধপর্বা।

বৈশম্পায়ন উবাচ।

ততঃ কদাচিদ্ধবিসংপ্রযুক্ত^,
মহেন্দ্রবাহং সহসোপযাতম।
বিচ্যুৎপ্রভং প্রেক্ষ্য মহারথানা^,
হর্ষোহর্জুন^ চিন্তুয়তাং বভূব॥ ১॥

11 3 5 11 2 11 3 11 4 0 11

্ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাব দুীপে চতুঃষষ্ট্যধিক শততমোধ্যায়ঃ ॥ ১৬৪ ॥ তত্তইতি—হরিভি রধ্যে সংপ্রযুক্তং মহেন্দ্রস্য বাহং রথ্য ॥ ১ ॥

^{*} মহর্ষিগণ দর্শনে ইতি ক-পুস্তকে পঠাতে।

স দীপ্যোনং সহসান্তরীকং, প্রকাশয়নু মাত্রলিসং গুহীতঃ। বভৌ মহেশকেব ঘনান্তরস্থা, শিখেব চাগ্নেজ্বলিতা বিধুমা॥ ২॥ ত মাস্থিত: সৎদদেশে কিরীটী, স্রম্বী নবান্যাভরণানি বিভ্রং। ধনপ্তয়ো বজ্ঞধরপ্রভাবঃ, শ্রিয়া স্থলন্ পর্বতি মাজগ,ম॥ ৩॥ म रेमल मानामा कितीरेमाली। মহেন্দ্র বাহ। দবরু হা তস্মাৎ। ধৌম্যস্য পাদাবভিবাদ্য ধীমা-. নজাতশতোস্তদনন্তর্ঞ ॥ ৪॥ রকোদরস্যাপি ববন্দ পাদৌ, মাত্রীস্কুতাভ্যামভিবাদিত্র । সমেত্য ক্লফাং পরিসান্ত্য চৈনাং, প্রহ্মে। ইভবদ্ধ বুরুপহ্বরে সং ॥ ৫॥ বভুব তেষাং পর্মঃ প্রহর্ষ-স্থেনাপ্রমেয়েণ সমাগতানাম। স চাপি তানু প্রেক্ষ্য কিরীটমালী, ননন্দ রাজান মভিপ্রশংসন্ ॥ ৬॥ যমান্থিতঃ সপ্ত জঘান পূগান, দিতেঃ স্কুতানাৎ নমুচের্নিহন্তা। ত মিদ্রবাহ~ সমুপেতা পার্থাঃ, अनिकाशकु तनीनमञ्जाः॥ १॥

॥२॥७॥॥॥ প্রাক্তির নাম তার্থান মুখানি ॥৭॥

তে মাতলেশুকুরতীব হৃষ্টাঃ, সৎকার মগ্র্যাং স্থররাজতুলাম্। मर्कान् यथावछ दितोकमत्छ, পপ্রচ্চুরেনং কুরুরাজপুত্রাঃ॥৮॥ তানপাসে মাতলি বভানন্দৎ, পিতেব পুত্রাননুশিষ্য পার্থান্। যয়ে রুখেনাপ্রতিমপ্রভেন, পুনঃ সকাশং ত্রিদিবেশ্বরস্য ॥ ৯ ॥ গতে তু তিমান্নবদেববর্য্যঃ, শক্রাত্মজঃ সর্বারিপুপ্রমার্থী। শক্রেণ দ্রানি দ্রো মহালা, মহাধন। ন্যুত্তমৰূপবন্তি॥ ১০॥ দিবাকরাভাণি বিভূষণানি, প্রিয়ঃ প্রিয়ারৈ স্কৃতসোমমাতে। ততঃ স তেষা কুরুপুঞ্চবানাং, তেষাঞ্চ সূর্য্যাগ্নিসমপ্রভাগাম্॥ ১১॥ বিপ্রধভাণা মুপবিশা মধ্যে, সর্বাং যথাবৎ কথরা সভুব। এবংময়াস্ত্রাপৃশিক্ষিতানি, শক্রাচ্চ বাতাচ্চ শিবাচ্চ সাক্ষাৎ॥ ১২॥ তথৈৰ শীলেন সমাধিনা চ, প্রীতাঃ সুরা মে সহিতাঃ সহেক্রাঃ। সংক্ষেপতে। বৈ স বিশুদ্ধ কর্ম্মা, তেভাঃ সমাখ্যায় দিবি প্রবাসমূ॥ ১৩ ॥ এনং মাতলিম্ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ স্বত সোমঃ ভীমাৎ ক্রেপিদ্যাৎ জাতঃ ॥ ১১ ॥ 11 25 11 70 11

মাদ্রীস্কৃত্যভ্যাৎ সহিতঃ কিরীটা, স্কুম্বাপ তা মাবস্তিং প্রতীতঃ ''—। ১৪॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নিবাতক্বচ-যুদ্ধপর্বাণি অর্জ্জুনাগমনে পঞ্চষ্ট্যধিকশতত্তমোহ্য্যায়ঃ ॥ ১৬৫॥

তে বেশ্পানন উবাচ।
ততো রজন্যা বুষ্ট রা পর্যার জিং যুষ্টিরন্।
ভাতৃভিঃ সহিতৈঃ সর্বৈ রবন্দত ধনপ্রায় ॥ ১ ॥
এতি সিন্দের কালে তু সর্ববাদিত্রনিস্থনঃ।
বভূব তুমুলো ভীমসুন্তরীকে দিবৌকসাম্ ॥ ২ ॥
রথনেমিস্থনশৈচব ঘন্টাশক্ষ ভারত!।
পৃথপ্যালম্গাণাঞ্চ পক্ষিণামিব সর্বশং॥ ৩ ॥
৺ তে সমন্তাদন্যযু র্গন্ধবাপ্সরসাঙ্গণাঃ।
বিমানেঃ স্থ্যসঙ্গাশৈদেবরাজ মরিন্দমন্ ॥ ৪ ॥
ততঃ স হরিভিযুক্ত জাষুনদপ্রিষ্কৃত্ন।
মেঘনাদিন মারুহ্ ভারা পরময় জলন্॥ ৫ ॥
পার্থানভ্যাজগামাথ দেবরাজঃ পুরন্দরঃ।
আগত্য চ সহস্রাক্ষে রথাদ্বরুরোই বৈ ॥ ৬ ॥

আবসতিং রাত্রিং, প্রতীতো হান্টঃ ॥ ১৪ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাব দীপে পঞ্চযট্যাধিক শততমোহধগ্যঃ ॥ ১৬৫ ॥

ততইতি—॥১॥২ য় ৬ ॥৪॥ হ্রি!ভ যুক্তং রথম্ ॥৫ । ৬ ॥ ৭ ॥ অমিতা স্থানং

^{* &}quot;তে" ইতাত্ত "তং " ইতি ক-পুস্তকঃ।

তং দৃষ্টেব মহাস্থান<u> পর্মার≀জো বু</u>ধিষ্ঠিরঃ। ভাতৃতিঃ সহিতঃ শ্রীমান্ দেবরাজ মুপাগমৎ ॥ ৭ ॥ পূজয়ামাস চৈবাথ বিধিবস্তুরিদক্ষিণ:। যথাই মমিতাত্মান বিধিদুষ্টেন কর্ম্মণা॥ ৮॥ ধনঞ্জমশ্চ তেজস্বী প্রণিপত্য পুরন্দরম্। ভূত্যবৎ প্রণতস্তম্থে দেবরাজসমীপতঃ। ১॥ আঘ্রায় ত^ মহাতেজাঃ কুন্তীপুল্রো যুধিষ্ঠিরঃ। ধনপ্রয় মভিপ্রেক্ষ্য বিনীত পছিত মন্তিকে॥ ১০ ॥ জটিলং দেবরাজ্বস্য তপোযুক্তমকল্মষ্য্। হর্ষেণ মহতাবিষ্টঃ ফাল্গুনস্যাথ দর্শনাৎ ॥ ১১॥ বভুব পরমপ্রীতো দেবরাজঞ্চ পূজয়ন্। তত্তথাদীনমনসং রাজানং হর্ষশংপ্ল তম্॥ ১২॥ উবাচ বচনং ধীমান্ দেবরাজঃ পুরন্দরঃ। " জ্বমিমান পৃথিবীং রাজন্। প্রশাসিষ্যসি পাওব।। স্বন্তি প্রাপ্তির কৌন্তের ! কাম্যকং পুনরাশ্রমম্ ॥ ১৩॥ অস্ত্রাণি লকানি চ পাপ্তবেন, স্কাণি মন্তঃ প্রয়তেন রাজনু!। कुडिशिशकात्रि धनक्षरमन,

জেতু ন শক্য স্ত্রিভি রেব লোকৈ: "—॥ ১৪॥ এবস্কু সহস্রাক্ষঃ কুন্তীপুত্রং যুধিষ্ঠিরম্। জগাম তিদিবং হৃষ্টঃ ন্তুয়মানো সহর্ষিভিঃ॥ ১৫॥

জমিত বুদ্ধিঃ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ১১ ॥ অদীনেতিচ্ছেদঃ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ক্তপ্রিয়ঃ শক্তব্যেন ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ধনেশ্রগৃহস্থানাং পাগুবানাং সমাগমন।
শক্রেণ য ইমং বিদ্বানধীয়ীত সমাহিতঃ ॥ ১৬ ॥
সম্বংসর্থ ব্রহ্মচারী নিয়তঃ সংশিতব্রতঃ।
স জীবেদ্ধি নিরাবাধঃ স্কুস্থী শরদাং শত্র্ম "--॥ ১৭ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নিবাতক্বচ-যুদ্ধপর্বাণি ইন্দ্রাণমনে
যট্রন্টাধিকশত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ১৬৬॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

যথাগতং গতে শক্তে ভ্রাতৃতিঃ সহ সঙ্গতঃ।
কৃষ্ণয়' দৈব বীভৎসুধ শ্বপুত্র মপুজয়ৎ॥ ১॥
অভিবাদয়মানতঃ মূর্জু গুপাডায় পাগুবম্।
হর্ষগদাদয়া বাচা প্রহুষ্টেহির্জুনমন্ত্রবাং॥ ২॥
ে কথমর্জুন! কালোহয়ং স্বর্গে ব্যতিগতন্তব।
কথঞ্চাস্ত্রাণ্যবাপ্তানি দেবয়াজশ্চ তোষিতঃ?—॥ ৩॥
সম্যথা তে গৃহীতানি কচিচদ্ত্রাণি পাগুব!।
কচিৎ সুরাধিপঃ প্রীতো রুদ্রো বাহস্তাণাদান্তব?—॥ ৪॥
যথা দৃষ্টশ্চ তে শক্রো ভগবান বা পিনাকপ্রক্।
যথোক্তবাংস্ত্রাণ যথেবায়াধিতশ্চ তে॥ ৫॥
যথোক্তবাংস্ত্রাণ ভগবাঞ্জতক্রতু ররিন্দমঃ।
কৃতপ্রিয়ন্ত্রান্মীতি তস্য তে কিং প্রিয়ং কৃতম্?—॥ ৬॥

11 96 11 96 11

ইত্যারণাকে পর্কানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ষট্যফ্ট্যাধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬৬॥

যথেতি—॥১॥ প্রহাটো ধর্মপুত্র: ॥২॥৩॥৪॥৫॥৬॥

এতদিজ্বাস্থাইং শ্রোভুং বিস্তরেণ মহাচ্যুতে ! ।
যথা তুটোমহাদেবো দেবরাজন্তথানঘ ! ॥ ৭ ॥
যচাপি বজ্রপাণেম্ভ প্রিয়ৎ কৃত মরিনদম ! ।
এতদাখ্যাহি মে সর্ব্ব মথিলেন ধনপ্রয় !"—॥ ৮ ॥
অর্জুন উবাচ।

" শুণু হস্ত মহারাজ ! বিধিনা যেন দৃষ্টবান্। শতক্রুমহং দেবং ভগবস্তঞ্চ শঙ্করম্। ১। বিদ্যামধীত্য তাং রাজংস্তু য়োক্তামরিমর্দন ! । ভবতা চ সমাদিষ্টস্তপদে প্রস্থিতো বনম্ ॥ ১০ ॥ ভুগুভুঙ্গমথে। গল্প কাম্যকাদান্তিতন্ত্রপঃ। একরাত্রোষিতঃ কঞ্চিদপশ্যং ব্রাহ্মণং পথি॥ ১১॥ সুমা মপুচ্ছৎ কৌন্তেয়। কাসি গন্তা এবীহি মে। তত্মা অবিতথ্ সর্ব্ব মক্রব্ কুরুনন্দন।॥ ১২॥ স তথ্যং মম তচ্চ ত্বা ব্রাহ্মণো রাজসন্তম!। অপুজয়ত মাং রাজন! প্রীতিমাংশ্চাভবন্ময়ি ॥ ১৩ ॥ ততো মা মব্রবীৎ প্রীতন্তপ আতিষ্ঠ ভারত।। 🗱 তপন্থী নচিরেণ ত্বং ক্রক্ষ্যে বিবুধাধিপম্ ॥ ১৪ ॥ ততোহং বচনান্ত্রস্য গিরিমারুছ শৈশিরম্। তপেহিতপ্যং মহারাজ। মাসং মূলফল।শনঃ ॥ ১৫॥ দ্বিতীয় দ্বাপি মানো মে জলং ভক্ষয়তো গতঃ। নিরাহারস্তৃতীয়েহ্থ মাসে পা গুবনন্দন। । ১৬॥

্। ৭ । ৮ । হন্তেত্যেরং বাকারেন্তে হর্ষে বা, "হস্ত বাকারিস্ত হর্ষ বিখাদে থেদ সপ্ত,মে" ইতি মেদিনী ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ শৈশিরং হিমময়ম ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥

^{* &}quot; তপদান চিরেণ " ইত্যেবং ক-পাঠঃ।

উৰ্দ্বাহুশ্ভ মাস মন্মি হিতন্তদা। ন চ মে হীয়তে প্রাণস্কদন্ত্তমিবাভবং। ১৭॥ পঞ্চমে ত্বথ সংপ্রাপ্তে প্রথমে দিবসে গতে। বরাহ্সংস্থিতং ভূতং মৎসমীপমুপাগমৎ በ ১৮॥ निम्नन् त्थारथन शृथिवीः विविधः कत्रतेवत्रि । সম্মার্জ ন্ জঠরেণোবর্বীং বিবর্ত্তংশ্চ মুছ্ম্মুছ: ॥ ১৯ ॥ অনু ত্র্যাপরং ভূতং মহৎ কৈরাত্রসংস্থিতম্। ধনুবাণাসিমৎ প্রাপ্তংস্ত্রীগণামুগতং তদা ॥ ২ • ॥ ততোহহং ধনুরাদায় তথাক্ষয়ে মহেষুধী। অত্যন্তরং শরেণাথ তদ্ধত্ত লোমহর্ষণমু ॥ ২১॥ যুগপত্তং কিরাভস্ত বিক্ষা বলবদ্ধনু:। অভ্যাজম্মে দুচতর কম্পরন্নিব মে মনঃ॥ ২২॥ স তুমা মত্রবীদাজন্! মম পূর্ব্বপরিপ্রহ:। মুগরাধর্মা মুৎস্জ্য কিমর্থং তাডিতস্তুরা ? ॥২৩॥ এষ তে নিশিতৈর্বানৈ দর্পণ হল্মি স্থিরো ভব। স ধনুয়ান্ মহাকায়স্ততো মা মভ্যভাষত 🟶 ॥ ২৪॥ ততো গিরিমিবাত্যর্থ মারুণোক্সাং মহাশরৈঃ। তঞ্চাহং শ্রবর্ষেণ মহতা সমবাকির্ম। ২৫॥ ততঃ শরৈদীপ্তমুখৈ র্যন্তিতৈরনুমন্তিতে:। প্রত্যবিধ্যমহৎ তম্ভ বজুৈ রিব শিলোচ্চয়মু ॥ ২৬ ॥

প্রাণো বলম্ ॥ ১৭॥ বরাছবৎ সংস্থিত মাকারো ষস্য ॥ ১৮ ॥ প্রোথেন
মুখাতোন পোরাখোন, বিবর্তন বিষমেন ভাবেন বর্তমানঃ ইতন্ততঃ পর্যাটন্
বা ॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ ২৯॥ ২৪॥ ২৫॥ অন্থ পশ্চাৎ যন্ত্রিতঃ
দৃঢ়াক্বফিঃ ॥ ২৬॥

^{*} অভ্যধাবত ইতি ক-

ত্য্য ভচ্চত্ৰধা ৰূপ মভবচ্চ সহস্ৰধা। তানি চাস্য শরীরাণি শরৈ রহ মতাভয়ম্॥ ২৭॥ পুনস্তানি শরীরাণি একীভূতানি ভারত।। অদৃশ্যন্ত মহারাজ ! তান্যহং ব্যধমং পুনঃ ॥ ২৮ ॥ অণুকা হচ্ছিরা ভূত্বা বৃহচ্চাণুশিরাঃ পুনঃ। একীভূতন্তদা রাজন্। সোহভ্যবর্ত্ত মাং যুধি॥২৯॥ যদাভিভবিতু পবালৈ নৈব শক্ষোমি তং রণে। ততো মহাস্ত্রমাতিষ্ঠ^ বায়ব্য^ ভরতর্ষভ !॥ ৩০ ॥ ন চৈন মশক^ হস্তং তদদ্ভমিবাভবং। তন্মিনু প্রতিহতে চাস্ত্রে বিম্ময়ো মে মহানভূৎ॥ ৩১॥ ভূয় এব মহারাজ! সবিশেষমহং তভঃ। অস্ত্রপূর্ণেণ মহতা রণে ভূত মবাকিরম্॥ ৩২॥ স্থাকর্ণমথো জালৎ শরবর্ষমথোল্নম। শলভাস্তমশাবর্ষং সমাস্থায়াই মভায়াম্।। ৩ :।। জগ্রাদ প্রসভং তানি সর্বাণ্যস্ত্রাণি মে নূপ !। তেষু সর্কেষু জ্ঞােষু ব্রক্ষান্ত মহ মাদিশম্॥ ৩৪॥ ততঃ প্রস্থালিতৈ ব্যাবৈঃ সর্বতঃ সোপচীয়তে। উপচীয়মানশ্চ ময়া মহাস্ত্রেণ ব্যবর্দ্ধত॥ ৩৫ ॥ ততঃ সন্তাপিতা লোকা মৎপ্রস্থতেন তেজসা। ক্ষণেন হি দিশঃ খঞ্চ সৰ্ব্বতে। হি বিদীপিতম্॥ ৩৬॥ তদপাস্ত্র মহাতেজাঃ ক্ষণেনৈব ব্যশাতয়ৎ। ু ব্রহ্মান্ত্রে তু হতে রাজনু! ভয়ং মাং মহদাবিশং॥ ৩৭॥

॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ স্থাকর্ণ ইতি শক্কর্ণাখ্যো কলেবিতার ভেদ স্তাদেবতা মস্ত্রং, জালং জলমরং আন্তর্ম ॥ ৩০ ॥ ৩৪ ॥ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥

ততে ২হং ধনুরাদায় তথাক্ষয়ে মহেষুধী। সহস†ভ্যহনং ভূতং তান্যপ্যস্ত্রাণ্যভক্ষয়ৎ॥ ৩৮॥ হতেম্বস্ত্রেমু সর্ব্বেমু ভক্ষিতেম্ব:যুধেমু চ। মম ভদ্য চ ভূতদ্য বাছযুদ্ধ মবর্তত। ৩৯॥ ব্যায়ামৎ মুফ্টিভিঃ ক্ববা তলৈরপি সমাগতৌ। অপারয়~শ্চ তদ্ভুতং নিশ্চেটমগমং মহীমু॥ ৪০॥ ততঃ প্রহৃদ্য তদ্তুং তবৈবান্তরধীয়ত। সহ স্ত্রীভিশ্মহারাজ। পশ্যতো মেহদুতোপমম্॥ ১১॥ এবং স ক্লবা ভগবা শস্ততে হিন্যক্রপমাস্থিতঃ। দিব্যমেব মহারাজ! বসানোদ্ভ ময়রম্॥ ৪২॥ হিত্বা কিরাতৰূপঞ্চ ভগবাংস্ত্রিদশেশ্বরঃ। স্বৰপং দিব্যমাস্থায় তস্থে তত্ত্ব মহেশ্বরঃ॥ ৪৩॥ অদুশ্যত ভতঃ সাক্ষান্তগবানু গোর্বধ্জঃ। উমাসহায়ো ব্যালধ্ৰগ্ৰন্থৰ পিনাকধৃক্ ॥ ৪৪॥ স মা মভ্যেত্য সমরে তথৈবাভিমুখং স্থিতম্। শূলপানিরখোবাচ ভুষ্টোহস্মীতি পরস্তপ!॥ ৪৫॥ ততস্তদমুরাদায় তুণৌ চাক্ষয্যসায়কৌ। প্রাদান্মনৈর ভগবান্ বরয়স্থেতি চাব্রবীৎ ॥ ৪৬ ॥ তুষ্টোহস্মি তব কৌন্তেয়! বুহি কিৎ করবাণি তে। মনোগতং বীর! যতে তদুহি বিতরামাহম্॥ ৪৭॥ অমরত্ব মপাহায় বুহি যত্তে মনোগতম্ "—। ততঃ প্রাঞ্জলিরেবাহ মস্তেষু গতমানসং॥ ৪৮॥

॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ব্যায়ামং সংঘউনং, অপারয়ন্ অশক বন্ ॥ ৪০॥ ৪১॥ ॥ ৪২॥ ৪৩॥ ৪৬॥ ৪৮॥

প্রথম্য মনসা সর্বাং ততো বচন মাদদে। ভগবন্মে প্রসন্নশ্চেনীম্পিতে। হয়ং বরো মম। ৪৯॥ অञ्चानीका प्राह्य खांज्य यानि (मरवसू कानिहिए। দদানীত্যের ভগবানব্রবীক্রায়কশ্চ মাম্। ৫০॥ রৌদ্রমন্ত্রং মদীয়ৎ ত্বা মুপস্থাস্যতি পাওব!। প্রদদৌ চ সম প্রীতঃ সোহস্ত্রণ পাশুপত্ত মহৎ॥ ৫১॥ উবাচ চ মহাদেবো দত্ত্বা হস্ত্র^ মে সনাতনম্। न প্রয়েজ্যং ভবেদেত্রানুষেষু কর্পান। ৫২॥ জগদ্ধি নিৰ্দ্ধহেদেতদম্পতেজসি পাতিতম্। পীডামানেন বলবৎ প্রযোজ্যৎ স্যান্ধনঞ্জয়।॥ ৫৩॥ অস্ত্রাণাং প্রতিঘাতে চ সর্ববৈধ প্রযোজয়েও। তদপ্রতিহতং দিব্যপ সর্বাস্ত্রপ্রতিষেধনম্॥ ৫৪॥ মুর্তিমন্মে স্থিতং পার্শে প্রসন্নে গোর্ষধজে। উৎসাদন মমিত্রাণাং পরসেনানিকর্ত্তনম্।। ৫৫॥ তুরাসদ^ তুষ্পা্সহং স্কুরদানবরাক্ষসৈঃ। অনুজ্ঞাতস্ত হং তেন তত্তৈব সমুপাবিশম্॥ ৫৬। প্রেক্ষতকৈর মে দেবস্তবৈরান্তরধীয়ত "—॥ ৫৭॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি নিবাতকবচযুদ্ধপর্বাণ অর্জ্জনযুধিষ্ঠির-সংবাদে সপ্তষ্টাধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬৭॥

অৰ্জুন উগা ।

" ততন্তামবসং প্রীতো রজনীং তত্র ভারত।॥ প্রসাদাদ্দেবদেবস্য ত্যাস্থকস্য মহাত্মনঃ॥ >॥ ব্যুষিতো রজনীঞ্চাহং কৃত্বা পৌর্ব্বাহ্রিকীঃ ক্রিয়া:। অপশ্যং তং দ্বিজ্ঞেষ্ঠং দৃষ্টবানিম্ম যং পুরা ॥ ২ ॥ ত স্মৈ চাহং যথারত্তং সর্ব্বমেব ন্যবেদয়ম্। ভগবন্তং মহাদেব~ সমেতে।২ক্ষীতি ভারত।॥ ৩॥ স মা মুবাচ রাজেন্দ্র। প্রীয়মাণো ছিজে তম:। " দুষ্টস্তুয়া মহাদেবো যথা নান্যেন কেনচিৎ॥ ৪॥ मरमञा लाकिभारेलस मरेकरिक्व विश्वासिकः। দ্রফাস্যনঘ ! দেবেন্দ্রং স চ তেন্ত্রাণি দাস্যতি ''॥ ৫॥ এবমুক্তা স মাং রাজন্মালিয় চ পুনঃ পুনঃ। অগচ্ছৎ স যথাকামং ব্রাহ্মণঃ সূর্য্যসন্নিভঃ ॥ ৬ ॥ অথাপরাহে তদ্যাহ: প্রাবাৎ পুণ্য: সমীরণ:। পুনর্মবমিমং লোকং কুর্বান্নিব সপত্রহন ! ॥ १ ॥ षियानि रेहर **माल्यानि स्थ शक्तीनि नदानि** ह। শৈশিরস্য গিরেঃ পাদে প্রাত্তরাসন্ সমীপতঃ ॥ ৮॥ বাদিত্রাণি চ দিব্যানি স্কুঘোষাণি সমন্ততঃ। স্তুতরক্ষেদ্র সংযুক্তা অক্ষয়ন্ত মনোহর।:॥ ১॥ গণাশ্চাপ্দরসাং তত্র গন্ধর্কাণাং তথৈব চ। পুরস্তাক্তেবদেবস্য জগু গীতানি সর্বশং॥ ১০॥ মকুতাঞ্চ গণাস্তত্র দেব্যানৈ রুপাগমন। মহেক্রান্ত্ররা যেতে দেবসত্ম-নিবাসিনঃ ॥ ১১ ॥

ততইতি— ॥১॥२॥৩॥৪॥৫॥७॥৭॥৮॥৯॥১०॥ বেদযানৈ বিমানৈঃ, সদ্মনিবাসিনঃ স্ত্রীবালাদয়ঃ শচীজয়স্তাদয় ইত্যর্থঃ॥১১॥

ততো মরুত্ব न हति यू रेक्क विरुध सनहरिनः। শচীসহায় জ্ঞায়াৎ সহ সর্বৈ স্তদামরৈ: ॥ ১২ ॥ এতিমানেব কালে তু কুবেরে। নরবাছনঃ। দশ্রামাদ মাং রাজনু ! লক্ষ্মা পর্ময়া যুতঃ ॥ ১৩ ॥ দক্ষিণস্যাং দিশি ষমং প্রত্যপশ্যং ব্যবস্থিতম্। ব্রুণ্ং দেবরাজঞ্চ যথাস্থান মবস্থিতম্ ॥ ১৪ n তে মা মুচুর্মহারাজ। সাত্রিত্বা নর্ষভ।। " স্বাসাচিল্লিরীক্ষাস্মালোঁকপালানবস্থিতান্॥ ১৫॥ সুরকার্যার্থ দিদ্ধ্যর্থ দৃষ্টবান্সি শঙ্করম। অস্বস্তোহপি গৃহাণ ত্ব মস্ত্রাণীতি সমন্তরঃ "—॥ ১৬॥ ততোহহং প্রয়তো ভূত্বা প্রণিপত্য সুরর্ষভাব । প্রত্যগৃহ্ণ তদাস্ত্রাণি মহান্তি বিধিবদিভো । ॥ ১৭ ॥ গৃহীতান্ত্রস্ততো দেবৈ রনুজ্ঞা তোৎস্মি ভারত।। অথ দেবা যয়ুঃ সর্কে যথাগতমরিন্দম। ॥ ১৮॥ মঘবানপি দেবেশো রথমারুছ স্থপ্রভায়। উবাচ ভগবানু ' স্বর্গং গন্তব্য^ ফাল্কুন। ত্বয়া॥ ১৯॥ পুরৈবাগমনাদস্মাদ্বেদাহং স্বাং ধনঞ্জয়!। ঋতঃ পরং ত্বহং বৈ ত্বাৎ দর্শয়ে ভরভর্ষভ। ॥ ২০॥ ত্বরা হি তীর্থেষ্ পুরা সমাপ্লাবঃ ক্তোহসকুৎ। তপশ্চেদ্ মহন্তপ্তং স্বৰ্গং গন্তানি পাণ্ডব! ॥ ২১॥ जुशरेक्टव ठ उश्चवार उपक्टता युख्यम्। স্বৰ্গস্থ বৃদ্য প্ৰব্য প্ৰয়া শত্ৰু নিস্থদন ! ২২ ॥

॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ মথাস্থানং প্রাচ্যা মিন্দ্রং প্রক্রীচ্যাং বৰুণং " ইত্যাদি—॥ ১৪ ॥ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

মাতলির্দারিয়োগান্তাং ত্রিদিবং প্রাপয়িষ্যতি। বিদিত্ত ং হি দেব:নাং মুনীনাঞ্ব মহাত্মনাম্ ॥ ২৩ ॥ ততো १ इम्रद्भाव भारतः अमी प्रधान विभवाम । আচার্য্যাপ বরয়েয়ং স্থা মস্তার্থং ত্রিদশেশ্বর । ॥ ২৪॥

৺কুরকর্মান্ত্র,বিক্তাত। ভবিষ্যসি পরম্বপ !। ষদর্মস্ত্রাণীপ্রত্প তং কামণ পাগুবাপ্ল হি"॥২৫॥ ততোহহমক্রবণ নাহণ দিব্যান্যস্ত্রাণি শত্রহন্!। মানুষেষু প্রযোক্যামি বিনাস্ত্র প্রতিঘাতনাৎ ॥ ২৬ ॥ তানি দিব্যানি মেহস্তাণি প্রযক্ষ বিরুধাধিপ !। লে,কা শচান্ত্রজিতান্ পশ্চালভেয়ং স্কুরপুঞ্চব।॥ ২৭॥ इस उवाइ।

" পরীক্ষার্থং মায়েততে বাক্যমুক্ত ধনঞ্জয়!। মমাত্মজন্য বচন > স্থপপর্মিদং তব ॥ ২৮॥ শিক্ষ মে ভবনং গত্মা সর্বাণ্যস্ত্রাণি ভারত!। বায়োরশ্বে ব্রস্থভ্যাহিপি বরুণাৎ সমরুদ্রাণাৎ ॥ ২৯॥ সাধাং পৈতামহঞ্চৈব গন্ধবোরগ-রক্ষমাম। বৈষ্ণবানি চ সৰ্বাণি নৈখা তানি তথৈব চ। ৩ ॥ মলাতানি চ যানীং সৰ্কান্তাণি কুৰুদ্বং!"। এবমুক্তা তু মাং শক্ত স্তবৈবান্তর্ধীয়ত ॥ ৩১॥ অথপেশ্যং হরিযুদ্ধর রথ মৈক্র মুপস্থিতম। দিব্যু মায়।ময়ং পুণা যন্ত মাতলিনা নুপ !। ৩২।

॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ 😨 কুরকর্মা ভবিষ্যমীতি সম্বন্ধঃ ॥ ২৫ ॥ সম্রেটেশ্যব প্রতিষ্তার্থ মন্ত্রৎ মৌক্টতে ন জন্ত্র মান্ত্রে ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ॥ ৩০॥ ৩১॥ মারামর মিবাতাদ্ভেম্। ৩২॥

লোকপালেষু যাতেষু মা মুবাচাথ মাতলিঃ। '' দ্রফীমিচ্ছতি শক্রস্ত্যাং দেবরাজো মহাত্যুতে !॥ ৩০॥ मः मिधास महावादा ! कुक् कार्या मन छ दम् । পশ্য পুণ্যকৃতাল্লোকান্ সশরীরো দিবং ব্রজ ॥ ৩৪॥ দেবরাজঃ সহস্রাক্ষ স্ত্রাং দিদুক্ষতি ভারত !"। ইত্যক্তোহহৎ মাতলিনা গিরি মামন্ত্রা শৈশিরম্ ॥ ৩৫॥ প্রদক্ষিণ মুপারত্য সমারোহং রথোত্তমম্। চোদরামাস স হয়ানু মনোমারুত-রুৎহুসঃ॥ ৩৬॥ মাতলি ইয়তত্ত্বজ্ঞো যথাবদ্ধরিদক্ষিণঃ। অবৈক্ষত চ মে বক্ত্ স্থিতস্যাথ স সার্থিঃ। ৩৭॥ তথা ভ্রান্তে রথে রাজন্! বিশ্বিতশ্চেদমব্রবীৎ। 'ক্ষত্যন্ত্তমিদং স্থদ্য বিচিত্রং প্রতিভাতি মে॥ ৩৮॥ যদাস্থিতো রথং দিবাৎ পদান্ন চলিতঃ পদমু। দেবরাজোহপি হি ময়া নিতামত্রোপলক্ষিতঃ ॥ ৩৯ ॥ বিচলনু প্রথমে ৎপাতে হয়ানাং ভরতর্মভ!। ত্ব॰ পুনঃ স্থিত এবাত রথে ভাত্তে কুর্ম্বহ!॥ ৪•॥ অতিশক্রমিদং সর্বাৎ তবেতি প্রতিভাতি মে।"— ইত্যুক্তাকাশ মাবিশ্য মাতলি ব্বিধুধালয়ান্॥ ৪১॥ দর্শরামাস মে রাজনু! বিমানানি চ ভারত!। স রথো হরিভিযুঁক্তো ছার্দ্ধনাচক্রমে ততঃ॥ ৪২॥ ঋষরো দেবতাশ্চৈব পূজয়ন্তি নরোত্তম।। ্ততঃ কামগমালোঁ কানপশ্যৎ বৈ সুর্ষিণাম ॥ ৪৩॥

॥৩৩॥৩৪॥৩৫॥৩৬॥৩৭॥৩৮॥পদাৎ স্থানাৎ ন চলিতঃ রখস্য ভ্রমণেপি দুঢ়াসন ইত্যথঃ॥৩৯॥৪০॥৪১॥৪২॥ স্থ্যবিণা মিতি দৈর্ঘাভাব আর্থঃ, সমাহার বছহং বা, বহু সমুদায়াভিপ্রায়েগ॥৪৩॥

গন্ধর্বাপ্দরসাপ্তৈব প্রভাব মমিতৌজসাম। নন্দনাদীনি দেবানাং বনাক্সপবনানি চ ॥ ৪৪ ॥ দর্শরামাস মে শীঘ্রং মাতলিঃ শক্রসার্থিঃ। ততঃ শক্র্দ্য ভবন মপ্শ্য মমরাবতীয় ॥ ৪৫ ॥ िक्टियाः कामकटेलर्व्यक्त तरेषु क ममलक जाम्। ন তত্র সূর্য্যস্তপতি ন শীতোফে ন চ ক্লম: ॥ ৪৬ ॥ ন বাধতে তত্র রাজংস্তত্তান্তি ন জরা নূপ!। ন তত্র শোকো দৈনাং বা দৌর্বল্যে বোপলক্ষাতে ॥ ৪৭॥ मिटवोकमा भशाताक ! न आनि ततिसम्बन ! I ন ক্রোধলোভৌ তত্রাস্থাং স্কুরাদীনাং % বিশাম্পতে।॥ ৪৮॥ নিত্য প্রস্কান্ধ তে রাজন্। প্রাণিনঃ স্করবেশ্মনি। নিত্যপুঞ্জফলাস্তত্র পাদপা হরিতচ্ছদা:॥ ৪৯॥ পুষ্করিণ্যশ্চ বিবিধাং পদ্মসৌগন্ধিকাযুতাং। শীতস্তত্র সুখো বাযুঃ সুগস্থো জীবনঃ শুচিঃ। ৫০। সর্বারত্নবিচিত্রা চ ভূমিঃ পুষ্পবিভূষিতা। মুগদ্বিজাশ্চ বহুবো রুটিরা মধুরস্বরাঃ॥ ৫১॥ বিমানগামিনস্তত্ত দৃশ্যন্তে বহবোহয়রে। ততে १२ भगः वस्न क्षान् नाधाः क ममक्कानान् ॥ ৫२ ॥ আদিত্যানশ্বিনৌ চৈব তান্ স্বান্ প্রত্যপূজয়য়। टिक्र मा॰ वीर्द्यान यमना टिक्रमा ह वर्द्यन ह ॥ ६० ॥

॥ ६८ ॥ १८ ॥ १७ ॥ १० ॥ १४ ॥ १० ॥ ४० ॥ ४० ॥ ४० ॥ । व्यक्तिन्य

^{* &}quot;শুভধীনাং" ইতি ক-পুশুকীয়ঃ পাঠঃ।

অস্ত্রৈশ্চাপ্যবৃজানম্ব সংগ্রামে বিজয়েন চ। প্রবিশ্য তাং পুরীং রম্যাং দেবগন্ধরপূজিতাম্ ॥ ৫৪ ॥ দেবরাজ শহস্রাক্ষ মুপাতিষ্ঠং কুতাঞ্জলিঃ। দদাবর্দ্ধাসনং প্রীতঃ শক্তো মে দদতাং বরঃ 🗱 ॥ ৫৫ ॥ বছমানাচ্চ গাত্রাণি পস্পর্শ মম বাসবঃ। তত্রাহং দেবগন্ধবৈঃ সহিতো ভুরিদক্ষিণৈঃ॥ ৫৬॥ অস্ত্রার্থ মবসং স্বর্গে শিক্ষাণোহস্ত্রাণি ভারত।। বিশ্ববিদাশ্চ বৈ পুত্রশিচত্রসেনোইভবৎ স্থা। ৫৭। স চ গ। দ্ধর্মে যিলং প্রা, হয়ামাস মাং রূপ ।। তত্র হহ মবস বাজন ! গৃহীতান্ত্রঃ সূপূজিতঃ ॥ ৫৮॥ সুখ^ শক্রস্য ভবনে সর্বাকামসমন্থিতঃ। শূণ,ন বৈ গীতশকঞ তুর্য্যশকপ্রপুষ্কলম। পশ্যংশ্চাপ্রসঃ শ্রেষ্ঠা মৃত্যন্তীর্ভরতর্যন্ত । ॥ ৫৯॥ তৎ সর্ব্য মনবজ্ঞায় তথ্য প্রবিজ্ঞায় ভারত।। অবার্থং প্রতিগৃহাধ মস্ত্রেদ্বেব বাবস্থিতঃ ॥ ৬০॥ ততোহ তুষাৎ সহস্রাক্ষতের কামেন মে বিভুঃ। এবং মে বদতো রাজন্মেষ কালোহত্যগাদিব ॥ ৬১॥ কুতাস্ত্র মতিবিশ্বস্ত মথ মাং হরিবাহনঃ। मः अभू भा भूकि भाविजािमिष् वहन मखवी । ७२॥

বীর্যালিবান ভব ইতাগশীর্কাদান্ দত্রিত্যর্থঃ॥ ৫৪॥ ৫৫॥ ৫৬॥ ৫৭॥ ৫৮॥ ৫৯॥ তংসর্কমিতি— অনবজার আদৃত্য আদর পূর্বকং তথ্যং বথাবং অত্যর্থং পুরুষার্থ ইতি বিজ্ঞার প্রতিগৃহ্য রাগশ্নোন মনসা অসি ক্রাপাহমন্ত্রেদের ব্যবস্থিতো হতুবং ন গীতাদিয়ু॥ ৬০॥ তেন কামেন অন্ত্রেদ্যা নতু ভোগেছরা॥ ৬১॥ হরিঃ উচ্চৈঃ শ্রবাঃ॥ ৬২॥

^{* &}quot; দদতাংবর ! " ইতি সম্বোধন পাঠঃ কচিৎ।

" ন ত্ব মদ্য যুধা জেতু শক্যঃ স্থারগণৈরপি। কিং পুনর্দানুষে লোকে মানুষৈ রক্কতাত্মভিঃ।॥ ৬৩॥ অপ্রয়ে ২ প্রধাশ যুদ্ধের ঐতিমন্তথা"—। অথাবেবীৎ পুনর্দেবঃ সৎপ্রকৃষ্ট চনুরুহঃ॥ ৬৪॥ ' অস্ত্রযুদ্ধে সমো বীর! ন তে কশ্চিদ্ধবিষ্ঠি। অপ্রমন্তঃ সদা দক্ষঃ সভাবাদী জিতে ক্রিয়ং॥ ৬৫॥ ব্রহ্মগ্রন্থানি শূরশ্য, সি কুরত্বহ !। অস্ত্রাণি সমবাপ্তানি ত্র্যা দৃশ্চ পঞ্চ । ৬৬॥ পঞ্চি বিধিভিঃ পার্থ। বিদ্যুতে ন স্বয়া সমঃ। প্রয়োগ মুপাসংহার মারুত্তিক্ষ ধনপ্তর!। ৬৭॥ প্রায়শ্চিত্রঞ্ব বেপা স্ক্র প্রতীঘাতঞ্চ সর্বাশঃ। # ভতে। গুর্ব্বর্থকালে, হয় মুপপন্নঃ পরন্তপ। ॥ ৬৮॥ প্রতিজানীম্ব তৎকর্ত্তুং ততো বেৎস্যাম্যইং পরম্''--। ততে ২হ মক্রব বাজন্! দেবরাজমিদ বচঃ ॥ ৬৯॥ বিষয়ংক্ষনারা কর্ত্ত ক্লতমেব নিবোধ তৎ। ততো মা মব্রীক্রাজন ! প্রহ্ন্য বলরতহা ॥ ৭০॥ " নাবিষহন্তবান্তীতি ত্রিষু লোকেষু কিঞ্চন। নিবাতকবচা নাম দানবা মমশতবঃ # ॥ ৭১ ॥

॥ ৬৩॥ ৬৪॥ ৬৫॥ ৬৬॥ পঞ্চিতঃ প্রায়োগাদিভিঃ, আরন্তিঃ পুনঃ পুনঃ প্রেক্জীবনং, প্রতীঘাতং পরাস্ত্রেণাভিভূতস্য স্বাস্ত্রেদাদিশিনং, গুর্ব্বেণা দক্ষিণা স্তরেল বেৎসান্তি বেদয়িষ্ণামি পর মিতি শেষঃ॥ ৬৮॥ ৬৯॥ বিষহাংশক্যযু॥ ৭০॥ ৭১॥

^{* &#}x27;'তব" ইতি কঃ। * দেবশত্ৰব ইতি ক ঘ পুস্তকৌ।

সমুদ্রকৃষ্ণি মাঞ্জি চ্য তুর্গে প্রতিবসন্ত্যত : তিস্ৰঃ কোট্যঃ সমাখ্যাতা স্তুল্যৰূপবলপ্ৰভাঃ॥ ৭২॥ তা শ্বত জহি কৌন্তেয়। গুর্বার্থন্তে ভবিষাতি।''— ততো মাতলিসংযুক্ত মযূরসমরোমভিঃ॥ ৭৩॥ इरेंग्र कुरुनेज्य आमारत तथर मिरा महाक्षण्य। ববন্ধ চৈব মে মুর্দ্ধে কিরীট যিদ মুক্তমম্ ॥ ৭৪ ॥ च्यक्ष अन्तर्भे देश व श्री पामक वि ज्या ग्री অভেদ্যৎ কৰচঞ্চেদৎ স্পৰ্শৰপবতুত্তমম্॥ ৭৫॥ অজরা > জ্যা মিমাঞ্চাপি গাণ্ডীবে সমযোজয়ৎ। ততঃ প্রায়ামহং তেন স্যন্দনেন বিরাজতা।। ৭৬॥ (यन) कशरद्भवशिक स्विलिश रेवरवार्वनिश श्रुवा। ততো দেবাঃ সর্ব্ব এব তেন ঘোষেণ বোধিতাঃ॥ ৭৭॥ মন্বানা দেবরাজং মাণ সমাজগ্ম বিশাম্পতে।। দুষ্টা চ মা মপুচ্ছন্ত কিঙ্করিষাসি ফাল্গুন ?—॥ ৭৮॥ তানব্রুবং যথাভূতমিদং কর্ত্তািম্ম সংযুগে। নিবাতকবচানাস্ত প্রস্থিতং মাং বধৈষিণ্য ॥ ৭৯ ॥ নিবোধত মহাভাগাঃ শিবঞাশান্ত মেহনঘাঃ!—। ভৃষ্ট বুর্দ্মাং প্রদন্নান্তে যথা দেবং পুরনদরম্।। ৮০॥ "র্থেনানেন মঘবান্ জিতবান্ শস্ত্রং যুধি। নমুচিং বলর্ত্তো চ প্রহাদ-নরকাবপি॥৮১॥ বহুনি চ সহস্রাণি প্রযুতান্যর্কাদানি চ। র্থেনানেন দৈত্যানাপ জিতবান মঘবান যুধি ॥ ৮২ ॥

॥ ৭২ ॥ ৭০ ॥ ৭৪ ॥ ৭৫ ॥ প্রার্থ প্রার্থ ক্তবান্ ॥ ৭৬ ॥ ৭৭ ॥ ৭৮ ॥ ॥ ৭৯ ॥ আশোস্তি আশোস্থা ৮০ ॥ ৮১ ॥ ৮২ ॥ ত্ব মপ্যনেন কৌন্তের ! নিবাতকবচানুণে।
বিজেতা যুধি বিক্রম্য পুরেব মহাবান বলী ॥৮৩॥
আরঞ্চ শল্পপ্রবরো যেন জেতাসি দানবান।
আনেন বিজিতা লোকাঃ শক্রেণাপি মহাত্মনা ॥৮৪॥
প্রদীয়মান দেবৈস্তং দেবদত্তং জলোক্তবন্।
প্রত্যক্তং জয়ারৈন স্তুয়মানস্তদামরৈঃ ॥৮৫॥
সশল্পঃ কবচী বাণী প্রকৃহীতশরাসনঃ।
দানবালয় মত্যুগ্রং প্রয়াভোহিত্ম যুর্ৎসয়া "—॥৮৬।
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নিবাতকবচযুদ্ধপর্বাণি অর্জুনবাক্যে
অক্টব্ট্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৬৮॥

অৰ্জ্জন উনাত।

' ততোহহং সুয়মানশ্চ তত্ত্ব তত্ত্ব মহর্ষিভিঃ।
অপশ্যমুদ্ধিং ভীম মপাংপতি মথাবায়ন্॥ ১॥॥
ফেনবত্তাঃ প্রকীর্নান্দ সংহতাশ্চ সমুথিতাঃ।
উর্ময়শ্চাত্র দৃশান্তে বল্লন্ত ইব * প্রবৃতাঃ॥ ২॥
নাবঃ সহস্রশ স্তত্ত্ব রতুপূর্বাঃ সমন্ততঃ।
তিমিঞ্চিলাঃ কচ্চপাশ্চ তথা তিমিতিমিঞ্চিলাঃ॥ ০॥

॥ ৮৩॥ ৮৪॥ ৮৫॥ বাণী বাণযুক্তঃ ॥ ৮৬॥
ইত্যারন্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে
ইক্টথফ্যধিক শততমেহিধ্যায়ঃ॥ ১৬৮॥

^{* &#}x27;'চলস্ত" ইতি কঃ।

মকরাশ্চাত্র দুশ্যন্তে জলে মগ্না ইবাদয়:। শস্থানাঞ্সহসাণি মগানাপা সমন্ততঃ 🛚 ৪ 🔻 দৃশ্যতে স্ম যথা রাত্রো তার।স্তম্বন্ত কংরুতাঃ। তথা সহস্রশন্তর রত্নসং ঘাঃ প্রভাত । ৫॥ বাযুশ্চ ঘূৰ্ণতে ভীম স্তদ্দুত্তমিবাভবং। ত মুদীক্ষ্য মহাবেগং সর্ববান্তোনিধিমুক্তমম্।। ৬॥ অপশ্যং দানবাকীর্ণং তক্তৈতাপুরুমন্তিকাৎ। তত্র বৈ মাতলিস্তর্গং নিপত্য পৃথিবীতলে॥ ৭॥ (রথ^ তন্তু সমালক্ষ্য প্রাদ্রবন্তথ যোগবিৎ)। 🎏 नो प्रयम् थरघारयन जर श्रुत्र ममूला क्रवर ॥ ৮॥ রথঘোষম্ভ তং প্রুত্তা স্তন্যিত্রোরিবায়রে। মন্থানা দেবরাজং মা মাবিগ্লা দানবাভবন্ । ১॥ সর্বে সংভ্রান্তমনসং শরচাপধরাঃ স্থিতাঃ। তথাসিশ্লপরশু গদামুযলপাণয়ঃ । ১০॥ ততো দারাণি পিদধু দানবা স্ত্রস্তচেতসঃ। † সংবিধায় পুরে রক্ষাং ন স্ম কিঞ্চন দৃশ্যতে ॥ ১১ ॥

মহামংস্য স্তমপি গিলত তি তিমি তিমিজলঃ, তিমেরপিগিলনীর স্তিমিজিল ইতি বা বিগ্রহঃ ॥৩॥৪॥৫॥ ঘুর্ণতে জমতি ॥৬॥ নিপত্য গর্গা, পৃথিবীতলে পাতালে ॥৭॥ আলক্ষ্য সর্ব্বসম্পত্নপত মিতিশেংঃ আলি-য্যেতি পাঠেতু—ভূমাবব তীর্য্য নিম্নস্থং রথচক্রং দৃঢ় মালিক উল্লিতবান্, প্রাক্রবং প্রকর্ষো বেগাবানভূৎ, রথ যোগবিৎ রথস্পরিচালনে যরৈপ্ণ্য মপেক্ষত্বে ভজ্জা নাতীত্যর্থঃ॥৮॥৯॥১১॥১১॥

^{*} রথেত্যংশঃ ক-পুস্তকে নাস্তি প্রত্যুত ''নাদয় নিত্যত্ত ' বাসয় নিতি পঠাতে।

^{🕇 &}quot;সংপিধায়" ইতি কচিৎ।

ততঃ শস্থ মুপাদায় দেবদত্ত মহাস্বনম্। পরমান মুদ মাঞ্জিত্য # প্রাধমং তং শনৈ রহম্ ॥১২ ॥ মতু শব্দে। † দিবং স্তর্বা প্রতিশব্দ মজীজনৎ। বিত্রেস্ক নিলিল্যুক্ত ভূতানি স্থমহান্তাপি॥১৩॥ ততো নিবাতকবচাঃ সর্ব্ব এব স্বলঙ্ক তাঃ। দংশিতা বিবিধৈ জ্রাণৈ বিবিচিত্র, যুধপাণ্যঃ॥ ১৪ । আর্কৈশ্চ মহাশূলৈর্গদাভি শ্মুবলৈর্পি। পট্টিশঃ করবালৈশ্চ রুথচক্রৈশ্চ ভারত। ॥ ১৫ ॥ শতন্ত্র ভ্রতীভিঃ খালেট্রেঃ স্বলস্থ তৈঃ। প্রগৃহীতে দিতেঃ পুত্রাঃ প্রাত্তরাসন্ সহস্রদাঃ॥ ১৬॥ ভতে। বিচাৰ্য্য বছশো রথমার্গেষু তান্ হয়ান্। প্রাচোদয়ৎ সমে দেশে মাতলিভরতর্যভ । ॥ ১৭॥ তেন তেষাৎ প্রধানা মাশুস্বাচ্ছীন্রগামিনাম্ ৷ নাম্পশ্যং তদা কিঞ্জিজনোহত্তমিবাভবৎ। ১৮। ততত্তে দানবাস্তত্ৰ বাদিত্ৰাণি সহস্ৰশঃ। বিক্লতম্বরূপাণি ভূশৎ সর্বাণ্যাব্যময়ন ॥ ১৯ ॥ তেন শব্দেন সহসা সমুদ্রে পর্বতোপমাঃ। 🖠 আপ্লায়ন্ত গতৈঃ সত্ত্বৰ্দ্দংস্যাঃ শতসহস্ৰদঃ॥২০॥ ততো বেগেন মহতা দানবা মা মুপাদ্রবন্। বিষুঞ্তঃ শিতান্ বাণান্ শতশোহ্থ সহস্ৰশঃ ॥২১॥

১২॥ দিবংশুরা আকাশং ব্যাপা॥১৩॥ দংশিতাঃ সরদ্ধাঃ, ত্রারিরঃ কবটেঃ ॥১৪॥১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ আপ্লায়ভঃ পলারনং ক্ত-নন্তঃ, গতৈঃ সারেঃ বিগতোভি বুদ্ধিভি কপলক্ষিতা আন্তা ইতাথঃ॥ ২০॥ ॥২১॥

^{* &#}x27;'পুরমান্ত্র মালিয়া" ইত্যেবংক— ক শঙ্গশন্দ ইতি ক— ্র আপ্লাবন্ত ইতি কচিৎ নৈতৎসায়ু।

স সংপ্রহার স্তমুলস্থেষাং মম চ ভারত!।

অবর্ত্ত মহাঘোরো নিবাতকবচান্তকঃ ॥ ২২ ॥

ততো দেবর্য়শৈচব দানবর্ষিগণাশ্চ যে।

ব্রহ্মর্যাশ্চ সমাজ্ঞাশ্মহামুধে ॥ ২৩ ॥

তে বৈ মা মনুরপাভির্মধ্রাভি জ' মৈষিণঃ।

অস্তবন্ মুনয়ো বাগিভ র্যথেক্তং ভারকাময়ে"॥ ২৪ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নিবাতকবচযুদ্ধপর্বাণি নিবাতকবচ যুদ্ধারত্তে

একোনসপ্তত্যবিক্শতভ্যোহ্ধায়ঃ ॥ ১৬৯ ॥

অৰ্জ্জন উনাচ।

েততো নিবাতকবচাঃ সর্বের বৈগেন ভারত!।
আভাদের বাপান্থান মুৎক্রোশন্তো মহারথাঃ।
আহ্না স্বতিত্ব মাং শরবর্ষে রবাকিরন্॥ ২ ॥
ততোহ পরে মহাবীর্যাঃ শূলপট্টিশপাণয়ঃ।
শূলানি চ ভূযগুলি শ মুমুচু দানবা ময়ি॥ ৩॥
তচ্ছু লবর্ষং স্কুমহদাদাশক্রিসমাকুলম।
আনিশ্ব স্ত্রামান্ব তিরপতন্মদ্রথোপরি॥ ৪॥
আন্যে মা সত্যধানন্ত নিবাতকবচা যুথি।
শিতশস্তাযুধা রৌদ্রাঃ কাল্রপাঃ প্রহারিণঃ॥ ৫॥

॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ তারকাময়ে তারার্থে সংগ্রামে ॥ ২৪ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্ফাণি নৈলকণ্ঠায়ে ভারত ভাবদীপে উন-সপ্তত্যধিক শততমোহধ্যারঃ ॥ ১৬৯ ॥

उउइ जि—(ऋरत्रां भम्) ॥ ऽ ँ॥ २ ॥ ७ ॥ 8 ॥ α ॥

* "ভুষণ্ডাশ্চ" ইতি কচিৎ।

তানহং বিবিধৈ ব্বাটেণ ব্বেগবন্তি রজিক্ষাগৈঃ। গাণ্ডীবমুক্তৈ রভ্যর্ণ মেকৈকৎ দশভিশ্মপে ॥ ৬॥ তে কুতা বিমুখাঃ সর্বে মৎপ্রযুক্তৈঃ শিলাশিতৈঃ। ততো মাতলিনা ভূর্বং হয়ান্তে সংপ্রচোদিভাঃ॥৭ । মার্গান্ বছবিধাংস্তত্র বিচেরু ব্রাতরং হসঃ। স্থান্ত প্রাত্তিনা প্রামথুন্ত দিতেঃ স্থতান্ ॥ ৮ ॥ শতংশতাত্তে হরর স্তামন্যুক্তা মহারথে। তদা মাতলিনা যত্তা বাচররপেকা ইব॥ ৯॥ তেষাত চরণপাতেন রথনেমিস্বনেন চ। মম বাণনিপাতৈক হতাত্তে শতশোহস্থরাঃ॥ ১০ ॥ গতাসবস্তবৈধান্যে প্রগৃহীতশরাসনাঃ। হতসারথয় স্থতা ব্যক্ষান্ত তুরঙ্গমৈ:॥ ১১॥ তে দিশো বিদিশঃ সর্বে প্রতিরুধ্য প্রহারিণঃ। অভ্যন্ন বিবিধিঃ শক্তৈ স্ততো মে ব্যথিতং মনঃ ॥ ১২ ॥ ততোহহ মাতলেবীগ্য মপশ্য পরমান্ত্তম্। অস্বাংস্তথা বেগবতো যদযত্নাদধার্যৎ॥ ১৩॥ ততোহহং লঘুভিশ্চিতে রক্ত্রৈ স্তানস্থরান গে। চিচ্চেদ সাযুধানাজঞ্জতশোহ্থ সহস্ৰশঃ॥ ১৪ ॥ এবং মে চরতস্তত্র সর্বেষত্রেন শত্রুহন্ !। প্রীতিমানভবদীরো মাতলিঃ শক্রসার্থিঃ॥ ১৫ ॥ বধ্যসানাস্তত স্তে তু হয়ৈ স্তেন রথেন চ। অগমন প্রকায়ং কেচিন্ন্যবর্ত্তত তথাপরে ॥ ১৬ ॥

॥७॥৭॥৮॥ শতাঃ শতানি অনুত মিতার্থঃ, হররোহখাঃ শালা ইতি পাঠে শালাঃ পরাক্ষিতাঃ 'শমে রালোচনার্থানিষ্ঠা"॥৯॥১০॥১১॥১২॥১০॥ চিচ্ছেদ অহমিতিশেষঃ, প্রোক্ষার্থে লিট্প্রোগেণ অজানতৈর ম্য়ং এতৎকৃত মিতি শকুনা মতান্তাপকর্ষঃ স্থাচিতঃ শ॥১৪॥১৫॥১৬॥

স্পর্কিমানা ইবাস্মাভি র্নিবাতকবচারণে। শরবর্টিঃ শরার্তা মাণ মহচ্চিঃ প্রত্যবারয়ন্॥ ১৭॥ কতোহহং লঘুভিশ্চিত্রৈ ব্র'ক্ষান্ত্রপরিমন্ত্রিতঃ। ব্যধমং সায়কৈরাশু শতশোহণ সহস্রশঃ॥১৮॥ ততঃ সংপীডামানাত্তে ক্রোধাবিকা মহাস্থরা:। অপীডয়ন্ত্রাং সহিতাঃ শক্তিশূলাসির্টিভিঃ ॥ ১৯ ॥ ততোহহমন্ত্র মাতিষ্ঠৎ পরমং তিগ্নতেজসম্। দ্য়িতং দেবরাজন্য মাধবং নাম ভারত।॥২০॥ ততঃ খলত্তিপূলেন জোমরাংশ্চ সহস্রশঃ। অস্ত্রবার্যোণ শতধা তৈ শ্রন্তানহ মচ্ছিনম্। ২১॥ ছিন্ত্র। প্রহরণান্যেষাং ততস্তানপি সর্কাশঃ। প্রভাবিধ্য**মহং রোষাদ্দশভিদশভিঃ শরৈঃ** ॥ ২২ ॥ গার্ভাবাদ্ধি তদা সংখ্যে যথা ভ্রমরপঙ্কুর:। নিজাভবি মহাবাণাস্তনাতলি রপুজয়ৎ॥২৩॥ ভেষামপি তু বাণান্তে তন্মতিলি রপূজয়ৎ। * অব্যক্তিরভাং বলবভানহ বাধমং শরৈ: ॥ ২৪ ॥ বধ্যমানাস্কৃতক্তে তু নিবাতকবচাঃ পুনঃ। শারবর্বি শ্রহন্তিশাং সমস্তাৎ পর্য্যবারয়ন্॥ ২৫॥

অন্যতিঃ পূণ্যাং বহু হং— অশ্বাদ্যপেক্ষয়।বা॥ ১৭॥ লঘুডিঃ শীঘ্র পাঃ
॥ ১৮॥ ১৯॥ তীনা তেজসং তীক্ষণ দাহকং, মাধবং নাম মধ্যে দৈতালাবগার্থং নিমি তত্বাণ ॥ ২০॥ ততঃ অধরস্তাণ উৎপানেন খালা সহিতেন
ভিশ্লেন, খালান শুলাং শেচতি পাচে—শরীরে রিভাতের লোকাদপকর্যনিয়া ॥ ২১॥ ২২॥ ২০॥ তেষাংতে বাণাঃ মাং, অবাকিরনিতি সম্বন্ধঃ,
তদপি নাতলিরপুজয়ণ ॥ ২৪॥ ২৫॥

^{*} বহুত্বাচ্ছল ভাইব ইতি ক পাঠঃ!

শরবেগানিহত্যাহ মত্রৈ রক্ত্রবিঘাতিভিঃ।
ত্বলন্তিঃ পরমৈঃ শীঘ্রস্তানবিধ্যং সহস্রশং॥ ২৬॥
তেবাং ছিন্নানি গাল্রাণি বিস্ক্রন্তি স্ম শোণিতম্।
প্রার্থীবাতির্স্টানি শৃঙ্গাণ্যথ ধরভূতাম্॥ ২৭॥
ইন্দ্রাশনিসমস্পর্শৈর্বেগবন্তি রক্তিন্নগৈঃ।
মদ্বাণৈর্বিধ্যমানান্তে সমুদ্বিগ্রাঃ স্ম দানবাঃ॥ ২৮॥
শত্রা ভিন্নদেহান্তে ক্ষণিপ্রহরণৌজসঃ।
তত্যে নিবাতকবচা মামযুধ্যন্ত মার্রা "--॥ ২৯॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নিবাতকবচযুদ্ধপর্বাণি নিবাতকবচব্রে সপ্তত্যিধিকশতত্মোহধ্যায়ঃ॥ ১৭০॥

অৰ্জন উগ্যাচ।

' ততাই শাবর্ষং স্থমহৎ প্রাত্তরাসীং সমস্তঃ।
নগমাতৈঃ শিলাখাওেস্তরাং দৃচ মলীডয়ৼ॥ ১॥
তদহৎ বজ্ঞসংকাশৈর্দ্মস্ত্রে এচোদিতৈঃ।
অচুর্ণয়ং বেগবদ্ধিং শরজালৈর্দ্মহাহ্মবে॥ ২॥
চূর্ণমানেংশ্মবর্ষে তুপাবকং সমজায়ত।
অত্তাশ্মচূর্ণান্যপতন্ পাবকপ্রকরা ইব॥ ৩॥
ততোহশ্মবর্ষে বিহতে জলবর্ষং মহন্তরম্।
ধারাভি রক্ষমাত্রাভিঃ প্রাত্তরাসীন্মমান্তিকে॥ ৪॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তত্যাধিক শত তমেছিধ্যায়ঃ ॥ ১৭০ ॥

ততোহশোতি—নগমাত্তিঃ রক্ষ প্রমাশেরঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ পাবক প্রকরাঃ বহু রাশয়ঃ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥

নভসঃ প্রচ্যুতা ধারা স্থিগ্যবীর্য্যাঃ সহস্রশঃ। আরণুন্ সর্বতো ব্যোম দিশক্ষোপদিশস্তথা।। ৫॥ ধারাণাঞ্চ নিপাতেন বায়োর্ব্বিক্ষ্ জিতেন চ। গজি তেন চ দৈত্যানাং ন প্রাক্তায়ত কিঞ্চন। ৬॥ थाता मिवि ह म**्वका वस्था**साक मर्खनः। ব্যামোহয়ন্ত মাং তত্র নিপতন্ত্যোহনিশং ভূবি॥ १॥ তত্তোপদিউমিন্তেণ দিব্যমন্ত্রণ বিশোষণম। দীপ্তং প্রাহিণব**ং ঘোর মশুষাত্তেন তজ্জলম্॥৮॥** श्वाचित्र क्या क्रम्य कि स्थापित । মুমুচ দানবা মায়াম্মিণ বাযুক্ত ভারত।॥ ৯॥ তত্যেইহুমগ্নিং ব্যধমং সলিলাস্ত্রেণ সর্ব্বশঃ। শৈলেন চ মহাস্ত্রেণ বায়োর্বেগ মধারয়মু॥ ১০ ॥ তস্যাং প্রতিহতায়ান্তে দানবা যুদ্ধতুর্মদাঃ। প্রাকুর্কন্ বিবিধাং মায়াং যৌগপদ্যেন ভারত।॥ ১১॥ ততো वर्षः थाष्ट्रत्रजृष स्मारता महर्षभम्। অস্ত্রাণাং ঘোররপাণা মধ্মেকায়োন্তপাশ্মনাম ॥ ১২॥ সা তু মারাময়ী রুফিঃ পীডয়ামাস মাণ যুধি। অথ ঘোরং তমন্তীত্রং প্রাত্তরাসীৎ সমন্ততঃ ॥ ১৩॥ তমসা সংরুতে লোকে ঘে রেণ পরুষেণ চ। হরয়ো বিমুখা শাসন্ প্রাস্থলচাপি মাতলিঃ॥ ১৪॥ হস্তান্ধিরণাুয়শ্চাস্য প্রতোদঃ প্রাপতদ্ধবি। অসক্ষাহ মাং ভীতঃ কাসীতি ভরতর্বভ। ॥ ১৫॥ মাঞ্চ ভী রাবিশত্তীত্রা তম্মিনু বিগতচেত্রিণ। স চ মাণ বিগতজ্ঞানঃ স্ত্রস্তমিদ মব্রবীৎ ॥ ১৬॥ 9 | 30 | 32 | 32 | 30 | 38 | 30 | 30 |

" সুরাণামসুরাণাঞ্চ সংগ্রামঃ সুমহানভূৎ। অমৃতার্থ^ পুরা পার্থ! স চ দৃক্টো ময়:নঘ। ॥ ১৭॥ শস্ত্রস্য বধে ঘোর: সংগ্রাসঃ স্থুমহানভূৎ। সার্থাং দেবরাজন্য তত্তাপি ক্রতবানহ্যু॥ ১৮॥ তথৈব বৃত্ৰস্য বধে স্পৃহীতা হয়া ময়া। বৈরে।চনের্মাহাযুদ্ধং দৃষ্টঞাপি স্কুদারুগ্য ॥ ১৯ ॥ 🌞 এতে ময়া মহাছোরাঃ সংগ্রামাঃ প্যুর্গাদিত: । ন চাপি বিগতজ্ঞানো ভূতপূর্কোহিম্মি পাপ্তব!॥২০॥ পিতামহেন সংহারঃ প্রজানাং বিহিতো ধ্রম। ন হি যুদ্ধমিদং যুক্ত ম্ন্যত্ত জগতঃ ক্ষয়াৎ "—। ২১॥ তস্য তদ্বচনং প্রভাগ সংস্থা সামানা। মোহয়িষ্যন্ দানবানামহং মায়াবল মহৎ ॥ ২২ ॥ অক্রবং মাতলিং ভীতং পশ্য মে ভুজয়োর্ব্বলম্। জন্ত্রাণাঞ্চ প্রভাবং বৈ ধনুষো গাণ্ডিবস্য চ ॥ ২৩ ॥ অদ্যান্ত্রমায়রৈতেষাং মায়ামেতা স্থান ক্রাম্। বিনিহ্নি তমশ্চোগ্রৎমা ভৈঃ স্তুত ! স্থিরো ভব । ২৪॥ এব মুক্তাই মহজ মস্ত্রমায়াং নরাধিপ। মোহনীং সর্ব্বভূতানাং † হিতায় ত্রিদিবৌকসাম্॥ ২৫॥

॥ ১৭॥ ১৮ ॥ বৈরোচনেঃ বলেঃ ॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ ২৩॥ ২৪॥ ২৫॥ মোহনাস্ত্রেণ পীড়া মানাস্থ নশ্যমানাস্থ

^{*} এত ইত্যশ্মাৎ প্রাক্ " বল প্রস্কাদরোশ্চাপি তথানে, ষাঞ্চ পাশুব !" ইত্যদ্ধ শ্লোকঃ সমধিকঃ ক-পুস্তকে বর্ততে।

কু সর্ব্ধ শক্তুনা মিতি ক-পাঠঃ—

পীডামানাস্থ মারাস্থ তাস্থ তাস্থ বোন্তমাঃ।
পুনর্বহুবিধা মারাঃ
পু প্রাকুর্বরমিতৌজসঃ ॥ ২৬ ॥
পুনঃ প্রকাশ মভবন্তমসা প্রস্তে পুনঃ।
ভবত্যদর্শনো লোকঃ পুনরপ্য নিমজ্জতি ॥ ২৭ ॥
স্থান পৃহীতৈ ইরিভিঃ প্রকাশে সতি মান্তলিঃ।
ব্যচবৎ স্যান্দনাপ্রেণ দংগ্রামে লোমহর্ষণে ॥ ২৮ ॥
ততঃ পর্যাপতর্প্রা নিবাতকবচা ময়।
তানহং বিবরৎ দৃষ্টা প্রাহিণ্ মমসাদনম্॥ ২৯ ॥
বর্ত্তমানে তথা যুদ্ধে নিবাতকবচান্তকে।
নাপশ্যে সহসা সর্বান্ দানবান্মায়য়া র্তান্ "†—॥ ৩০ ।
ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নিবাতকবচযুদ্ধপর্বাণ মায়ায়ুদ্ধে
একসপ্রত্যধিকশতত্মোহ্ধ্যায়ঃ ॥ ১৭১ ॥

व्यक्त्र हेराह।

" অদৃশ্যমানাস্তে দৈত্যা যোধয়ন্তি স্ম মায়য়া।
অদৃশ্যেনাস্ত্রবীর্যোগ তানপ্যক্ মযোধয়য়্॥ ১॥
গাগুবিমুক্তা বিশিখাঃ সম্যগস্ত্রপ্রচোদিতাঃ।
অচ্ছিন্দর্ভমাঙ্গানি যত্ত যত্ত স্ম তেইভবন্॥ ২॥

11 2 9 11 2 9 11 2 11 12 11 19 0 11

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে এক সপ্তত্যধিক শত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭১ ॥

जमृगामाना ३७—॥ ১॥ २॥

* প্রাকুর্বন্ত ইতি ক-খ-গ-পুস্তকাঃ পঠন্তি।

ক " মারার। ছিতান্ " ইতি পাঠভেদঃ।

ততো নিবাতকবচা বধামানা ময়া যুধি। সংহ্রতা মায়ং সহসা প্রাবিশন্ পুরমালান:॥ ৩॥ ব্যপ্য,তেষু দৈত্যেষু প্রাত্ন্ডুতে চ দর্শনে। অপশ্যন্দানবা শস্তত্ত হতাঞ্চতসহস্ৰশঃ ॥ ৪॥ বিনি প্রস্টানি ভবৈষাং শস্ত্রাণ্যাভরণানি চ। শতশঃ স্ম প্রদৃশ্যন্তে গাত্রানি কবচানি চ॥ ৫॥ इशानाः नाखतः शामीः अमाषिविन् लेखः अम्म । উৎপত্য দহসা তস্বস্রীক্ষণমাস্ততঃ॥ ৬॥ ততো নিবাতকবচা ব্যোম সংছাদ্য কেবলম্। অদুশ্যা 📽 হ্যতাবর্ত্তর বিস্থন্তঃ শিলোচ্য়ান্ 🛭 ৭ ॥ षा उर्छ भिश्व कार्माता इसामा र हत्। नाथ। ব্যগৃহ্ন্ দানবা ঘোৱা রথচকে চ ভারত! ॥ ৮ ॥ বিনিগৃহ হ্রীনশ্ব। এথঞ্মম যুধ্যতঃ। স্ক্রতো মামবিধ্যন্ত 🕇 সর্থং ধর্ণীধরৈ: ॥ ৯ ॥ পর্বা হ রুপচীয়দ্ধিঃ পতমানৈস্তথাপরেঃ। ম দেশো যত্র বর্ত্তাম গুহেব সমপদাত। ১০॥ প্রবৈতশ্ছাদ্যমানোখ্যং নিগৃহীতৈশ্চ বাজিভিঃ। অগচ্ছ পরমামার্তি মাতলিস্তদলক্ষয় । ১১॥ লক্ষ্ত্ৰা চমাং ভীত মিদ্প বচনমব্ৰবীৎ। ' অর্জুন।র্জুন! মা ভৈতুং বজ্রমন্ত্র মুদীরয় "—॥ ১২॥

॥ ৩ । ৪ ॥ ৫ ॥ ७ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ হরীন্ অত্যন্তং হরণশীলান্। অবিধ্যন্ত ব্যাপ্ত-বন্তঃ, অচিন্তেতি পাঠে ২ পি স্একার্থঃ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥

^{*} অভ্যবর্তন্ত ইতি ক-পাঠঃ। † অচিয়ন্ত ইতি ক-পুন্তকন্ত পুন্ত কান্তরস্যচ।

ততোহহ তসা তদ্বাকা পশ্ৰাবজ মুদৈরয়ম। * দেবরাজস্য দয়িতং ভীমমন্ত্রং নরাধিপ ! ॥ ১৩ ॥ অচল স্থান মাসাদ্য গাণ্ডীব মনুমন্ত্র্য চ। অমুঞ্চ বজ্ঞ সম্পূর্মা নায়সালি শিতাঞ্রান্। ১৪ ॥ ততো মায়াশ্চ ভাঃ সর্বা নিব;তকবচাংশ্চ তান্। তে বজ্ঞচোদিতা বাণা বজ্ঞভূতাঃ সমাবিশন্॥ ১৫ n তে বজ্ঞবৈগবিহতা দানবাং পর্বতোপমাং। ইতরেতর মাল্লিষ্য ন্যপতন্ পৃথিবীতলে ॥ ১৬ ॥ ष्यस्त्रभू हिंदा है । प्रमुख्य मानवा त्रवाकिनः । অনুপ্রবিশ্য তাব্ বাণাঃ প্রাহিণুন্ যমসাদনম্॥ ১৭॥ হৈটরিবাতকবলৈ রিরক্তৈঃ পর্বতোপনেঃ। সমাজাদাত দেশঃ স বিকীর্ণৈরিব পর্ববৈতঃ ॥ ১৮ ন হয়ানাং ক্ষতিঃ কাচিল্ল রখন্য ন মাতলেঃ। মম চাদৃশ্যত তদা তদদুভমিবাভবং ॥ ১৯॥ ততো মাং প্রহ্মনাজনু । মাতলিঃ প্রত্যভাষত। · নৈতদৰ্জ্ব ! দেবেষু ত্বরি বীর্যাং যদীক্ষাতে "—॥ ২• I হতে प्रसूत्र न (य्यु माता एउ या ख नर्वनः। প্রাক্রোশরগরে তিম্মন যথা শরদি সারসাঃ॥ ২১॥ ততো মাতলিনা সার্দ্ধ মহং তৎ পুরমভায়াম। ত্রাসয়ন্থ্যোষেণ নিবাতকবচল্রিয়ঃ॥ ২২॥ তান্ দুফুা দশসাহআনু মযুরসদুশান্ হয়ান। রথফ রবিসঙ্কাশং প্রাদ্রবনু গণশঃ স্তিয়ঃ ॥২৩॥ মুদা ইতি ক্লেঃ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ সারস **লক্ষ গাইতি পাঠে—সারসাঃ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥**

* উদীরয়ম্ইত্যপিং পাঠঃ।

তাভি রাভরনৈঃ শব্দু প্রাসিতাভিং সমীরিতং।
শিলানামিব শৈলেষু ওপন্তীনামভূজদা ॥ ২৪ ॥
বিত্রস্তা দৈত্যনার্য্যস্তাং স্থানি বেশ্যান্যথাবিশন্।
বহুরত্ববিচিত্রাণি শাভকুস্তময়ানি চ ॥ ২৫ ॥
তদ্ভূতাকার মহৎ দৃষ্ঠা নগর মুক্তমম্।
বিশিষ্টং দেবনগর দপ্তভূৎ মাতলিং ততঃ ॥ ২৬ ॥
ইদমেবংবিধং কন্মান্দেবা নাবাসয়ত্যুত।
পুরন্দরপুরাদ্ধীদং বিশিষ্টমিতি লক্ষয়ে!—॥ ২৭ ॥
মাতলিক্বাচ।

ে আদীদিদং পুরা পার্থ! দেবরাজন্য নঃ পুরম্।
ততাে নিবাতকবচৈ রিতঃ প্রচ্যাবিতাঃ স্থরাঃ ॥ ২৮ ॥
তপস্তপুর্য মহজীব্রং সমাসাদ্য পিতামহম্।
ইদ্দু বৃতং নিবাসায় দেবেভাশ্চাভয়ং যুধি ॥ ২৯ ॥
ততঃ শক্রেণ ভগবান্ স্থয়সূতিি চােদিতঃ।
বিধন্তাং ভগবানত্র চাল্মনাে হিতকামায়া ॥ ৩০ ॥
তত উল্লো ভগবতা দিউমত্রেতি ভারত !।
ভবিতাস্তস্ত্রমপ্যেষাং দেহেনানােন শক্রহন্!॥ ৩১ ॥
তত এমাং বধার্থায় শক্রোহস্তানি দদৌ তব।
ন হি শক্যাঃ স্থরৈ হস্তং য এতে নিহতাস্ত্রয়া ॥ ৩২ ॥
কলেস্য পরিণামেন তত্তস্মহ ভারত !।
এষামন্তকরঃ প্রাপ্তস্তর্রা চ কৃতং তথা ॥ ৩০ ॥
দানবানাং বিনাশায় অস্তাণাদ্য পরম্ব বলম্।
গ্রাহিতস্ত্রু মহেল্রেণ পুরু হেন্দ্র ! ততু ভ্রমন্''—॥ ৩৪ ॥

া ২৪॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ন আবিসয়ন্তি নাধ্যসৈত্তে ॥ ২৯॥ অন্তং– নাশং নিবাত কৰচানা মিতি শেষঃ॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ ৩৩॥ ৩৪॥

1290 वाः

অৰ্জ্বন উনাচ।

ততঃ প্রশাস্য নগরং দানবাংশ্চ নিহত্য তান্। পুনর্মাতলিনা সার্দ্ধ মগচ্ছং দেবসত্ম তৎ "—। ৩৫। ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নিবাতকবচযুদ্ধপর্বাণি নিবাতকবচবধে দ্বিসপ্রত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৭২॥

व्यक्त छेवाह।

"নিবর্ত্তমানেন ময়া মহদ্ ইং ততোহপরম্।
পুরং কামচরং দিবাং পাবকার্কসমপ্রভম্॥ ১॥
রত্তমমটয় শিট্রেঃ স্থারৈশ্চ পতজ্ঞিভিঃ।
পৌলোমৈঃ কলকস্তৈশ্চ নিতাক্ষটে রিধিষ্ঠিতম্॥ ২॥
গোপুরাট্টালকোপেতং চতুর্দারং তুরাসদম্।
সর্বর্ত্তময়ং দিবামদুতোপমদর্শনম্॥ ৩॥
দ্রেমঃ পুষ্পকলোপেতঃ সর্বার্ত্তম্বার্তম্য।
তথা পতজ্ঞিদিব্যৈরুপেতং স্থানেনাইরৈঃ ।
চাপম্লারহস্তৈশ্চ প্রমিভিঃ সর্বাতো রতম্॥ ৫॥
তদহৎ প্রেক্ষ্য দৈত্যানাৎ পুর মদ্ভেদর্শনম্।
অপুক্তং মাতলিৎ রাজন্। কিমিদ্ বর্ততেহদুতম্?"—॥ ৬॥
মাতলিকবাচ।

পুলোমা নাম দৈতেয়ী কালকা চ মহাস্থরী।
 দিবা
 বর্ষসহস্র
 তে চেরতুঃ পরমং তপঃ ॥ १ ॥

প্রশাম্য প্রকর্মেন আলোচ্য ॥ ৩৫ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বি-সপ্তত্যধিক শত তমেহিধ্যায়ঃ ॥ ১৭২ ॥

নিব্রত্মানেনিতি—॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ७ ॥ ৭ ॥

তপদোহতে ততন্তাভাাং স্বয়ন্ত্রদদদ্রম্ । অগৃহ্নীতাং বরং তে তু স্কুলানামপাত্র্বিতাম্॥ ৮॥ অবধ্যতাঞ্চ রাজেন্দ্র! সুররাক্ষ্যপর গৈঃ। পুর্ণ স্থুরমণীয়ঞ্চ খেচরং স্থুমহাপ্রভণ্ 🖟 🔊 ॥ দর্বার ক্রৈঃ সনুদিত শতুর্বার্ষ মমরৈরপি। সর্বকামগুণোপেতং বীতশোক মনাময়ম্। ব্রহ্মণা ভরতভোষ্ঠ। কালকেয়কুতে কুত্রু॥ ১১॥ তদেতৎ খপুর৲ দিব্যং চরত্যমরবঙ্গিতম্। পৌলেমে,ধ্রুষিতে বীর। কালকল্পৈশ্চ দানবৈ: ॥ ১২ ॥ হিরণ্যপুরমিত্যেবং খাায়তে নগরং মহৎ। রক্ষিতং কলেকেরৈশ্চ পৌলেবিমশ্চ মহাস্কুরিঃ॥১৩॥ তত্র তে মুদিতা রাজন্নবধ্যাঃ সর্বাদৈবতৈঃ। নিবসন্ত্যত্র র†জে<u>ল । গতে!দে</u>গা নিরুৎস্কাঃ ॥ ১৪ ॥ মামুষামৃত্যুরেতেষাং নির্দিষ্টো ব্রহ্মণা পুরা। এতানপি রণে পার্থ! কালকঞ্চানু তুরাসদান্। वजारञ्चन नग्नश्चार विनामः स्मर्शवनान् '-n > e n অৰ্জুন উনাচ।

" সুরাস্থরৈ রবধ্যন্তদহং জ্ঞাত্বা বিশাল্পতে!। অব্রুবন মাতলিং ক্রেটা যাছেতৎ পুরমঞ্জনা॥ ১৬॥ ত্রিদশেশদ্বিষা যাবৎ ক্ষয়মন্ত্রৈ র্ময়াম্যহ্ম। ন কথঞ্জি মি পাপোন বধ্যা যে সুরবিষঃ॥ ১৭॥

॥৮॥৯॥১০॥১১॥ খপুরং খচরস্থা ॥১২ ॥১৩॥১৪॥১৫॥১৬॥ ন বিধা ইতি ন, অপিতু বিধা এব ॥১৭॥ উবাহ মাং ততঃ শীঘ্রং হিরণ্যপুর মস্তিকাৎ। রথেন তেন দিব্যেন হরিযুক্তেন মাতলিং॥ ১৮॥ তে মা মালক্ষ্য দৈতেরা বিচিত্রাভরণাম্বরাং। সমুৎপেতৃর্মহাবেগা রথানাস্থায় দ^শিতাঃ॥ ১৯॥ ততো নালাকনারাচৈর্জন্তে: শক্ত্যন্তিতোমরৈ:। প্রত্যন্ত্রন দানবেক্র। মাং কুদ্ধান্তীব্রপরাক্রমাঃ ॥ ২০ । তদহং শরবর্ষেণ মহতা প্রত্যবারয়ম্। শস্ত্রবর্ষণ মহদ্রাজন্। বিদ্যাবল মুপাজ্রিতঃ । ২১ ॥ ব্যামোহয়ঞ্ তান্ সর্বান্থনাগৈশ্রন্ণ। তেহ্ন্যোন্য মভিস-মূচাঃ পাতয়ন্তি সা দানবাং ॥ ২২ ॥ তেষামেব বিষ্টানা মন্যোন্য মভিধাবতাম। শিরাংসি বিশিথৈ দীঁথৈ র্মাহনং শতস্ত্রশ: ॥ ২৩ ॥ তৈ বধ্যমানা দৈতেয়াঃ পুরমান্তায় তৎ পুনঃ। ধ মুৎপেতুঃ সনগরা মায়ামাস্থায় দার্ধবীম্॥ ২৪॥ ততে। ২হং শরবর্ষেণ মহতা কুরুনন্দন!। মার্গমারুত্য দৈত্যানাং পতিঞ্চিষা মবারয়য়। ২৫। তৎ পুর^ খেচরং * দিব্য^ কামগং স্থ্যাসন্নিভম্। দৈতেয়ৈ ব্রুলানেন ধার্যতে স্ম মথাস্থ্রস্ম ২৬॥ অন্তর্থী নিপতিতং পুনন্ধ; প্রতিষ্ঠতে। পুনস্তির্ঘ্যকৃ প্রেয়াত্য শু পুনরক্ষ্য নিমজ্জতি । ২৭ ॥ অমরাবতিসঙ্কাশং তৎ পুরং কামগং মহৎ। অহমত্রৈ বৃহ্বিধৈঃ প্রত্যগৃহ্ণ পরস্তপ ! । ২৮।

॥ ७५ ॥ १० ॥ २० ॥ २० ॥ २२ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २७ ॥ २० ॥ २ ४ ॥ ना ग्रहर

^{*} খচর মিতি বা পাঠ:।

ততো ২হ শরজালেন দিব্যাস্ত্রমুদিতেন চ। वाश्रकः मह रिएउरिय खु भूतः जत्रवर्षत्र । ॥ २৯ । বিক্ষতঞ্চায়দৈ ব্যাধিশ্বৎপ্রযুক্ত রজন্ধগৈঃ। মহী মভাপতদ্রাজন। প্রভাগ্ন পুরমাস্থরমু॥ ৩০ । (७ वधायांना महारेन क्वळ्डावरेन त्रम्यरेमः । পর্যাভ্রমস্থ বৈ রাজন্মসূরাঃ কালচোদিতাঃ ॥ ৩১ ॥ ততো মাতলি রাশ্রুষ্থ পুরাস্থ নিপতনিব। মহীমবাতরৎ ক্ষিপ্রং রথেনাদিত্যবর্চসা। ৩২। ততো রুথসহস্রাণি ষ্টিন্তেষা মুম্রিণাম। যযুৎস্থনাং ময়া সাৰ্দ্ধং পৰ্যাবৰ্ত্তন্ত ভারত ! 4 তानइर निमिटेडवारिन व्यवस्थ नार्क्ष व्यक्ति उः ॥ ७०॥ তে যুদ্ধে দুশ্বর্ত্ত সমুদ্রমা যথে।শ্রয়:। নেমে শক্যা মানুষেণ * যুদ্ধেনেতি প্রচিষ্ক্য তৎ ॥ ৩৪॥ ততোহহ মানুপুর্বোণ দিব্যান্যহস্ত্রাণ্যবোজয়র। ততন্তানি সহস্রাণি রথিনা । চিত্রযোধিনাম্ ॥ ৩৫॥ অস্ত্রাণি মম দিব্যানি প্রত্যক্ষপ্রনকৈরিব। রথমার্গান বিচিত্রাংস্তে বিচরস্তো মহাবলা: ॥ ৩৬ ॥ প্রত্যদুশান্ত সংগ্রামে শতশোহধ সহস্রশ:! বিচিত্ৰমুকুটাপীডা বিচিত্ৰকবচম্বদাঃ ॥ ৩৭ ॥

বিশেষেণ গৃহীতশন্ বাণ রক্টা কদ্বশনিতার্থ: ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ আকৃষ্
গগন মুৎপত্য, অবংতরৎ অবতীর্ণ:, পাঠানুরে—মাতলিং আকৃষ্ আলম্বা
মহীং অবতরম্ অবতীর্ণাইডবম্ ইডি শেষ: ॥ ৩২ ॥ পর্যাবর্ত্তন্ত পরিবার্যা
অবর্ত্তন্ত, গার্ডা বাজিতৈঃ গৃত্ত পত্র শোভিতঃ ॥ ৩৩ ॥ মুদ্দে নিমিতে সভি
সন্যবর্ত্তন্ত ইমে বর্ষাবিত শেষ:, মুদ্দেন জেতু মিতি শেষ: ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥
॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ অন্ত্র প্রচুদিতেঃ অন্ত্রাণাং প্রচুদ্তং যদর্থং তৈঃ "উত্বপ-

^{*} মহুষোণেতি ক-পাঠ:।

বিচিত্রভিরণ, শৈচব নন্দরন্থীব মে মনং। অহন্ত শরবর্ষৈস্তানস্ত্রপ্রচুদিতৈ রণে॥ ৩৮ । ন শক্ল বন্পীডয়িত্থ তে ত্মান প্রতাপীডয়ন। তৈঃ পীড্যমানো বছভিঃ ক্লত স্ত্রৈঃ কুশলৈর্ঘি। ৩৯ ॥ ব্যথিতে। হিন্দা মহাযুদ্ধে ভয়ঞাগা আহ্মাম। ততোহ্চ দেবদেবায় রুদ্রায় প্রয়তো রণে । ৪০॥ স্বস্তি ভূতেভ্য ইত্যুক্তা মহাস্ত্রং সমচোদয়ম্। যন্তক্রিফিফি খ্যাতং সর্বামিত্রবিনাশনমু॥ ৪১॥ ততোহপশ্য ত্রিশিরসং পুরুষ্ণ নবলোচনম্। ত্রিমুখং বড্ভুজং দীপ্ত মর্কজ্বনমূর্কজম্ ॥ ६২ ॥ त्निहारेनचाहानारेगः कुछाशीषु ***** ममित्रहन् !। বিভী স্তুত স্তদস্তম্ভ ছোরং রৌদ্রং সনাত্রম্ ॥ ৪৩॥ দুক্র গাণ্ডীবসংযোগ মানীয় ভরতর্বভ ।। নমস্কৃত্ব। ত্রিনেত্রায় শর্কায়ামিততেজসে॥ ৪১॥ মুক্তবান্দানবেন্দ্রাণাং পরাভাবায় ভারত।। মুক্তমাত্রে ততন্ত্রিন্পাণ্যাসন্ সহস্রশঃ । ৪৫॥ মুগাণামথ সিংহানাং ব্যাত্মাণাঞ্চ বিশাম্পতে !। পাক্ষাণাপ মহিষাণাপ্ত প্রগানাং তথা গ্রাম্॥ ৪৬ ॥ শ্রভাণাং গজানাঞ্চ বান্ধাণাঞ্চ সজ্মশঃ। ঋষভাণাং বরাহাণাং মার্জারাণাং তথৈব চ । ৪৭ ॥

ধান্তাবাদি কর্মণোঃ" ইতি ভাবে নিষ্ঠায়াঃ কিছম ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ १० ॥ ৪১ ॥ ॥ ৪২ ॥ কৃতং আশিড়িতং নিগৃহীতং চীরং বস্ত্রং যেন ॥ ৪৩ ॥ ×৪ ॥ ৪৫ ॥ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥

^{*} কৃত পীড় মিতি ক ঘ পুস্তকো।

শালারকাণাং প্রেতানাৎ ভুরুগুানাঞ্চ # সর্বাশঃ। গুধাণাৎ গরুডানাঞ্চ চমরাণাৎ তথৈব চ ॥ ৪৮ ॥ † (एवानाक अयोगाक शक्कावागाक मर्कनः। পিশাচানাং সযক্ষাণাং তথৈব চ সুরুদ্বিষামু ॥ ৪৯ ॥ গুহুকানাঞ্চ সংগ্রামে নৈশ্ব তানাং তথৈব চ। ঝ্ৰাণাং গজৰকুনা মুলুকানাৎ তথৈব চ। ৫০॥ মীনবাজিসৰপাণাং নানাশস্ত্রাসিপানিনাম। **उटेश्य यांज्यानानार शनाभूका**त्रधातिगाभ्॥ €>॥ **এতৈ कारेनाक वर्क्डर्माना क्रियरें अस्था।** সর্কামানীজ্জগদ্বাপ্তিং তশ্মিন্নস্ত্রে বিদক্তি (তে ॥ ৫২॥ बिभिद्याजिक वृष्टिके क वृद्यारेमाक वृष्ट्र रिकः । অনেকৰপদংযুক্তৈশ্বাংসমেদোবদান্থিভিঃ ॥ ৫০॥ অভীক্ষং বধ্যমানাস্তে দানবা নাশমাগতাঃ। অর্কজ্বনতেজোভি ব্রজ্ঞাশনিসমপ্রতৈ: ॥ ৫৪ ॥ षाक्रिमात्रमटेश्रमाटेना स्वाटेन त्रतिनिव€टेनः। ন্যহন দানবান স্বান মুহুর্ত্তেনৈব ভারত। ॥ ৫৫॥ গা ভীবান্ত্রপুরাংস্তান্ গতাস্থ্রভসশ্যতান্। দৃষ্ট্রাহং প্রাণমং ভূরন্তিপুরস্বায় বেধদে ॥ ৫৬॥ তথা রৌদ্রান্ত্রনিষ্পিষ্টান্ দিব্যাভরণ্ভূষিতান্। নিশম্য পরমং হর্ষ মগমদ্বেকশার্থিঃ॥ ৫৭॥

॥ ৪৮ ॥ ৪৯॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ মাংসমেদোবসাস্থিতিঃ সংযুক্তি রিতি শেষঃ ॥ ৫০ ॥ ৫৪ ॥ নিবইণৈঃ নাশ করৈঃ ॥ ৫৫ ॥ ৫৬ ॥ নিশম্য দৃষ্ট্র ॥ ৫৭ ॥

^{*} মুৰুণ্ডানাং ইতি ক পুস্তকন্ত।

† অত্ত্ৰ " ব্ৰুকাণাং পৰ্বতানাঞ্চ সাতু দ্ৰাণাং তথৈবচ।" ইত্যৰ্দ্ধমধিকং

ক পুস্তকে লভ্যতে।

তদসহৃং ক্লত॰ কর্ম্ম দেবৈরপি ছুরাসদম্। দৃষ্ট্র মাং পুজরামাস মাতলিঃ শক্তসার্থিঃ। ৫৮। উবাচ বচন > চেদং প্রীয়মাণঃ ক্লভাঞ্চলিঃ। " সুরাস্থারে রসছং হি কর্মা যৎ সাধিতং ত্বয়া । ৫৯ । ন হেতৎ সংযুগে কর্ত্তুমপি শক্তঃ স্থারেশ্বরঃ। স্থরাস্থরৈ রবধ্যং হি পুরমেতৎ থগা মহৎ ॥ ৬০ ॥ ত্বরা বিম্থিতঃ বীর । স্ববীর্যাতপ্রাে বলাৎ।''— বিধ্বস্তেহ্থ পুরে তক্মিন্ দানবেষু হতেষু চ ॥ ৬১ ॥ .বিনদস্তাঃ স্ত্রিয়ঃ সর্বা নিষ্পেতৃর্নগরাছহিঃ। প্রকীর্ণকেশ্যো ব্যথিতাঃ কুর্য্য ইব ছুঃথিতাঃ ॥ ৬২ ॥ পেতৃঃ পুজান পিতৃন ভাতৃঞ্চেমানা মহীতলে। রুদত্যো দীনকণ্ঠান্তা বিনদন্ত্যো হতেশ্বরাঃ ॥ ৬৩ ॥ উরাংসি পরিনিম্বন্ত্যো বিজ্ঞস্তজমিভূষণাঃ। ভচ্ছোকযুক্ত মশ্ৰীকং ছুঃখদৈন্যসমাহতম্। ৬৪॥ ন বভৌ দানবপুর > হতত্ত্বিট কং হতেশ্বরম্। গশ্ববিনগরাকারং হতনাগমিব ক্রদম্॥ ৬৫॥ শুষ্করক্ষমিবারণ্য মদৃশ্য মভৰৎ পুরম্। মান্ত সংস্কুটমনস্ ক্ষিপ্রং মাতলি রানয়ৎ। ৬৬। দেবরাজস্য ভবনং ক্লুতকর্মাণমাহবাৎ। হিরণ্যপুর মুৎস্জ্য নিহত্য চ মহাস্থরান্ ॥ ৬৭ ॥ নিবাতকবচাং শৈচৰ ততোহহং শক্তমাগমম্। মম কর্ম্ম চ দেবেন্দ্রং মাতলিবিস্তরেণত । ৬৮॥ স্কা∾ বিশ্রাবয়ামাস যথাভূতং মহাচ্যুতে 🗓 হিরণাপুরপাতঞ মায়ানাঞ্চ নিবারণম্॥ ৬৯॥ নিবাতকবচানাঞ্চ বধং সংখ্যা সহৌজনাম্।
তচ্চু ছা ভগবান প্রীতঃ সহস্রাক্ষঃ পুরন্দরঃ ॥ ৭০ ॥
মরুদ্ধিঃ নৈহিতঃ শ্রীমান নাধু সাধিত্যথাব্রবীং।
ততো মান দেবরাজাে বৈ সমাখাস্য পুনঃ পুনঃ ॥ ৭১ ॥
অরবীদ্বিবুধিঃ সার্দ্ধ মিদং স্কুমধুরণ বচঃ।
' অতিদেবাস্থরং কর্ম ক্রুদেব দ্বা রণে ॥ ৭২ ॥
শুর্বর্থশ্চ ক্রতঃ পার্থ! মহান শস্কুম্ মতা মম।
এবমেব সদা ভাব্যণ স্থিরেণাজাে ধনপ্রয়!॥ ৭০ ॥
অসং মূঢেন চাস্ত্রাণাং কর্ত্ব্যন প্রতিপাদনম।
অবিষ্টো রণে হি ত্বং দেবদানবরাক্ষাসঃ॥ ৭৪ ॥
স্যক্ষাস্থরগক্ষার্থাং সপক্ষিগণপন্নগৈঃ।
বস্থধাঞ্চাপি কৌন্ডেয়! ম্বাছ্বলনিজিতাম্।
পালয়িষ্যতি ধর্মাজা কৃত্তীপুজাে মুধিন্টিরঃ "—॥ ৭৫ ॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি নিবাতকবচযুদ্ধপর্বণি হিরণাপুর দৈত্যবধে ত্রিসপ্তত্যধিকশততমােহধ্যায়ঃ ॥ ১৭০ ॥

জ্জুন উবাচ। ততো মা মতিবিশ্বস্তং স্প্রচশরবিক্ষতম্। দেবরাজো বিগৃহেদং কালে বচনমত্রবীৎ॥ ১॥

॥ ৭০ ॥ ৭১ ॥ ৭২ ॥ ৭০ ॥ ৭৪ ॥ ৭৫ ॥ ।
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্টারে ভারত ভাবদীপোঁ
দ্বিসপ্তত্যধিক শত তমেশ্হধ্যায়ঃ ॥ ১৭৩ ॥

ততইতি—অতি বিশ্বন্তং অতি অত্যন্তং বিশ্বন্তং শাকূন জেষ্যতীতি বিশ্বাদো যশ্মিং শুং, সংরুদাঃ দেছে নিমগ্নাং শরান্তি বিশ্বতং, বিগৃহ বিশেষেণ গৃহীত্বা স্বীয়ত্বেন অঙ্গীহ্নত্যেতার্থঃ॥ ১॥ তা ত্বামূ

" দিব্যান্যস্ত্রাণি সর্ব্বাণি ত্বয়ি তিষ্ঠন্তি ভারত !। ন ত্বাভিভবিতৃ শক্তো মানুষো " ভুবি কশ্চন ॥ ২ ॥ ভীগো দ্রোণঃ রূপঃ কর্ণঃ শকুনিঃ সহ রাজভিঃ। সংগ্রামস্থদ্য তে পুত্র। কলাং নাইন্তি ষোডশীম্ ''—্য ৩॥ ইদঞ্চ মে তরুত্রণেং প্রায়চ্ছন্মঘবান্ প্রভুঃ। অভেদ্যং কবচং দিব্য^ স্রজক্তৈর হিরণাুয়ীষ্ ॥ ৪ ॥ দেবদত্তঞ্চ মে শঙ্খং পুনঃ প্রাদান্মহারবম্। मिनारक्षमः कितीरेश तम अग्नस्यादिन। यूरवाक इ॥ c॥ ততো দিব্যানি বস্ত্রাণি দিব্যান্যাভরণানি চ। প্রাদাচ্চক্রো মর্মৈতানি রুচিরাণি রুহন্তি চ ॥ ৬ ॥ এব~ সংপূজিভন্তক স্থুখমশ্ম্যবিতে। নূপ !। ইন্দ্রস্য ভবনে পুণ্যে গন্ধর্কশিশুভিঃ সহ॥ १॥ ততো মামব্রবীচ্চক্রঃ প্রীতিমানমরৈঃ সহ। " সময়ে।হর্জুন ! গন্ধং তে ভাতরো হি স্মরন্তি তে "—॥ ৮॥ এবমিক্রস্য ভবনে পঞ্চ বর্ষাণি ভারত!। উষিতানি ময়া রাজন্। স্মরতা দ্যুতজং কলিম্॥ ৯॥ ততো ভবন্তমন্ত্রাক্ষং ভ্রাকৃতিঃ পরিবারিতয়। গন্ধমাদনপাদস্য পর্বভেদ্যাস্য সুর্দ্ধনি "-. ১০ ॥ যুধিন্তির উবাচ। ''দিষ্ট্যা ধনঞ্জয়াস্ত্রাণি ত্বয়া প্রাপ্তানি ভারত ! ।

॥२॥०॥৪॥৫॥ ফচিরাণি দীপ্তিমন্তি অতএব রুছন্তি বহু মূলগনি॥৬॥ ॥৭॥৮॥১॥১०॥ দেবানাং রাজা ইন্দ্রঃ ॥১১॥

দিষ্ট্যা চারাধিতো রাজা দেবানা মীশ্বর: প্রভ: u >> u

^{*} মানব ইতি ক-পাঠঃ।

দিন্ট্যা চ ভগবান স্থাপুর্দেব্যা সহ পরন্তপ !।

সাক্ষাদ্দ্ উ: স্বযুক্ষেন তোষিতশ্চ ত্বয়ানঘ ! ॥ ১২ ॥

দিন্ট্যা চ লোকপালৈস্তৃং সমেতো ভরতর্বভ !।

দিন্ট্যা বর্দ্ধামহে পার্থ । দিন্ট্যাসি পুনরাগতঃ ॥ ১৩ ॥

অদ্য কুৎস্নাং মহীং দেবী বিজিতাং পুরমালিনীম্।

মন্যে চ ধুতরান্ট্রস্য পুল্রানপি বশীক্ষতান্ ॥ ১৪ ॥

ইচ্ছামি তানি চাস্তাণি দ্রন্ট্রং দিব্যানি ভারত !।

বৈস্তৃ য়া বীর্যাবন্ত স্থে নিবাতকবচা হতাঃ ''—॥ ১৫ ॥

অর্জুন উবাচ।

"শ্বঃ প্রভাতে ভবান্ ক্রফা দিব্যান্যস্ত্রাণি সর্বাশঃ। নিবাতকবচা ঘোরা যৈ শ্বয়া বিনিপাতিতাঃ "—॥ ১৬॥ বৈশম্পায়ন উবাচ।

এবমাগমনং তত্র কথয়িত্বা ধনঞ্জয়ঃ। ভ্রাতৃভিঃ সহিতঃ সর্কৈ রজনীং তামুবাস হ''॥ ১৭॥ ইত্যারণ্যকৈ পর্বাণি নিবাতকবচযুদ্ধপর্বাণি অস্ত্রপ্রদর্শন সঙ্কেতে * চতুঃসপ্তত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৭৪॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। তস্যাং রাত্যাং ব্যতীতায়াং ধর্মারাজো যুধিষ্ঠিরঃ। উত্থায়াবশ্যকার্যাণি কৃতবান্ ভ্রাতৃভিঃ দহ॥ ১॥

॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ তে জয়া হতাঃ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চড়ুঃসপ্ত ত্যধিক শত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭৪ ॥

তশ্যামিতি—॥ ১ ॥ মাতৃ দন্দনং মাতৃঃ স্থকরমূ

* অন্ত্র দর্শন প্রার্থনায়াং ইতি ক-পুস্তকঃ পঠতি।

ততঃ সঞ্চোদয়ামাস সেহজুনং মাতৃনন্দনম্।

"দর্শয়াত্রানি কৌন্তেয় ! যৈ জি তা দানবাস্ত্রয়া"—॥২॥

ততো ধনঞ্জয়ো রাজন্ ! দেবৈ দিন্তানি পাপ্তবঃ।

অস্ত্রানি তানি দিবানি দর্শয়ামাস ভারত !॥ ৩॥

যথান্যায়ং মহাতেজাঃ শৌচ্প পরম মাস্থিতঃ।

গিরিক্বরপাদ।ক্ষণ শুভবেণু ত্রিবেণুমৎ ॥ ৪॥

পার্থিবং রথমাস্থায় শোভমানো ধনপ্তয়ঃ।

দিব্যেন সংরত্তেন কবচেন স্থবর্চসা॥ ৫॥

ধনুরাদায় গাপ্তীবং দেবদন্তপ স্বারিজম্।

শোশুভ্যমানঃ কৌন্তেয়! আনুপূর্ব্যা মহাভুজঃ॥ ৬॥

অস্ত্রানি তানি দিব্যানি দর্শনায়োপচক্রমে।

অথ প্রযোক্ষ্যমাণেয় দিব্যেমৃত্রেমু তেমু বৈ॥ ৭॥ †

সমাক্রান্তা মহী পদ্যাং সমকল্পত সদ্রমা।

কুভিতাঃ সরিত শৈচব তথৈব চ মহোদধিঃ॥ ৮॥

শৈলাশ্চাপি ব্যদীর্যন্ত ন ব্বৌ চ সমীরণঃ।

॥ ২॥ ৩॥ অন্ত্রাণি দর্শনিত্ব মিছো রজ্জুনসা ভাবনামাছ গিরীতি—গিরর এব ক্বরাদয় শুদ্ভং, কৃবরো যশ্মিন্ যুগং ধি রতে তদ্দাক, পাদৌ চক্তে অক্ষঃ তয়োঃ সন্ধানং দাক, শুভা বেণব এব বেণবো যশ্মিন্ তংশুভবেণু, অক্ষ ক্বররোঃ সন্ধানার্থং ত্রিশিখংদাক তদ্বতং, স্পাং প্রলুগিতি দ্বিতীয়ায়া আর্ষালুক্ রথ পদেবা ক্রীবন্ধং ধোয়ং॥ ৪॥ পৃথিবী মেন পার্শিবং মানসং ভূমি রূপং রথং "রাক্ষস বায়সাদিবং স্বার্থেতিদ্ধিতঃ" আদ্বায় ধ্যানবলেন আক্বহা দিব্যেন ইন্দ্রদত্তন॥ ৫॥ বারিজং শঞ্জং দেবদত্তং নামতঃ॥ ৬॥ দর্শনায় দর্শনিত্বং॥ ৭॥ অর্জুনেন অনেক ব্রহাও গর্ভস্য মহাদেবস্য সামাং ভাবনাবলাং গতেন সমাক্রান্ত্রা পৃথিবী সম কম্পত কৃম্পতি বতী॥ ৮॥

^{*} ত্রিবেণ কং ইতি ক:।

† "অধ প্রযোক্ষ্য মাণেন দিব্যান্যস্ত্রাণি তেন বৈ " ইতি ক-পাঠ:।

ন বভাবে সহস্রাংশু র্ম জজাল চ পাবকঃ ॥ ১॥ ন বেদাঃ প্রতিভান্তি সা দ্বিজাতীনা কথঞ্চন। অন্তর্ভুমিগতা যে চ প্রাণিনো জনমেজয়।॥১০॥ পীডামানাঃ সমুপায় পা গুবং পর্য্যবারয়ন। বেপমানাঃ প্রাঞ্জলয় স্তে সর্কে বিক্বত।ননাঃ॥ ১১॥ मश्मानाञ्चनारञ्जरेख यांठिख या धनक्षत्र। ততো ব্ৰহ্মধ্য় শৈচৰ সিদ্ধা যে চ মহৰ্ষয়ঃ । ১২ ॥ জঙ্গমানি চ ভূতানি সর্ব্বাণ্যেবাবতস্থিরে। দেবর্ষয় **শ্চপ্রান্ত**্রেথব চ দিবৌকসং ॥ ১৩॥ যক্ষরাক্ষদগন্ধর। স্তথৈব চ পতত্রিণঃ। খেচরাণি চ ভূতানি সর্বাণ্যেবাবতস্থিরে॥ ১৪॥ ততঃ পিত।মহশৈচব লোকপালাশ্চ সক্ষশঃ। ভগবা॰ क মহাদেবঃ সগবোহভ্যাযযৌ তদা ॥ ১৫ ॥ ততো বায়ুর্মহারাজ ! দিবৈয়র্মালৈয়ঃ সমন্বিতঃ । অভিতঃ পাণ্ডবং চিত্রৈ রবচক্রে সমন্ততঃ॥ ১৬॥ জগুশ্চ গাথা বিবিধা গন্ধর্বাঃ স্থরচোদিতাঃ। नमुष्: मध्यमिटेन्टव तास्त्रक्षत्रमार शनाः ॥ ১१ ॥ তিমিংশ্চ তাদুশে কালে নারদশ্চোদিতঃ স্থুরৈঃ। আগম্যাহ বচঃ পার্থং অবনীয় মিদং নূপ!॥ ১৮॥ " অর্জুনার্জুন! মা যুক্ষ্যু দিব্যান্যস্ত্রাণি ভারত!। নৈতানি নির্ধিষ্ঠানে প্রযুজ্যন্তে কথঞ্চন ॥ ১৯ ॥ অধিষ্ঠানে ন চানার্ত্তঃ প্রযুঞ্জীত কদাচন। व्यरहार्त्रयू प्रश्ने, प्रांखी श्रञ्जानाः कुक्ननम्न ! ॥ २०॥

॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ নির্ধিষ্ঠানে লক্ষ্যাভাবে সভি ॥ ১৯ ॥ অধিষ্ঠানেপি বা অনার্ভঃ নপ্রযুঞ্জীত ॥ ২০ ॥ এতানি রক্ষামাণানি ধনঞ্জয়! যথাগমন্।
বলবন্তি স্থাহাণি ভবিষ্যন্তি ন স্প্লয়ঃ ॥ ২১ ।
ভবন্তি স্থাহাণি ভবিষ্যন্তি ন স্প্লয়ঃ ॥ ২১ ।
ভবন্তি স্থাবিনাশায় মৈবং ভূয়ঃ ক্লথাঃ ক্লচিৎ ॥ ২২ ।
ভবন্তি স্থাবিনাশায় মৈবং ভূয়ঃ ক্লথাঃ ক্লচিৎ ॥ ২২ ।
ভক্তিশতো! স্বল্পেব ক্লয়াসে তানি সংযুগে।
যোজ্যমানানি পার্থেন দ্বিতা মবমর্দনে"—॥ ২৩ ॥
বিশম্পায়ন উবাচ।
নিবার্যাথ ততঃ পার্থ- সর্ব্বে দেবা যথাগতম্।
ভক্মারনোচ যে তত্র সমাজগ্মার্বর্ষভঃ ॥ ২৪ ॥
ভেমু সর্বেষু কৌরবা! প্রতিযাতেমু পাগুবাঃ।
ভক্মিন্নেব বনে ক্ষা স্ত উষুঃ সহ ক্ষয়া"—॥ ২৫ ॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি নিবাতকবচযুদ্ধপর্বাণি অন্ত্রপ্রদর্শনে
পঞ্চসপ্রত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ ॥ ১৭৫ ॥
সমাপ্তঞ্গ নিবাতকবচযুদ্ধ পর্বা।

সমাপ্তঞ্চ নিবাতকবচ যুদ্ধ পর্ব।

1 22 1 25 1 20 11 28 11 1 20 1

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলগীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চমগুত্যধিক শততমেছিধাৰ্যঃ ॥ ১৭৫ ॥

ত্রিক্তার করে পর্ব ॥ ১১॥ ত্রিক্তার করে করে করে করে বি

জনমেজর উল্বা 'তিশ্বিন্ ক্কুতান্ত্রে রথিনাং প্রবীরে, প্রত্যাগতে ভবনাদ্র্ত্রহন্তঃ। অতঃপরং কিমকুর্বনত্ত পার্থাঃ, সমেত্য শূরেণ ধনঞ্জারেন ?"—। ১॥ বৈশাপায়ন উলাচ।

বনেষু তেম্বের তু তে নরেন্দ্রাঃ, সহার্জ্জনেনেন্দ্রসমানবীরাঃ। তিম্মিংক্ত শৈলপ্রবরে স্করম্যে,

ধনেশ্র জীডগভা বিজ্ঞ । ২ ।

বেশ্মানি ভান্যপ্রতিমানি পশান্,

ক্রীডাশ্চ নানাক্রমগরিবছাঃ।

চচার ধরী বহুধা নরেন্দ্রঃ, 🏶

সোহস্তেষু যক্তঃ সততং কিরীটা । ৩॥

অবাপ্য বাসং নরদেবপুত্রাঃ,

প্রসাদজং বৈশ্রবণস্য রাজ্ঞ:।

ন প্রাণিনা তে স্পৃহয়ন্তিরাজন্।

শিবশ্চ কালঃ স বভূব তেষাম্॥ ৪॥

তিমান্নিতি—। রুত্রহন্ত: ইন্দ্রস্থা ১ ॥ আক্রীড়ং উদ্যানমু ॥ ২ ॥ ৩ ॥ বাসং স্থানং, প্রাণিনাং ভূমিস্থান, মৈশ্বর্য মিতি শেষঃ ॥ ৪ ॥ পুর্বাশ্চ ষট্ সমাঃ

* 'নরেন্দ্র" ।ইতি সম্বোধন পাঠঃ ক পুস্তকে।

সমেত্য পার্থেন যথৈকরাত্র-মুষ্ঃ সমাস্তত্ত তদা চতভ্ৰঃ। श्रुकाण्ड यहे जा प्रभा श्राख्यानार, শিবা বভূবু ৰ্বসতাপ বনেষু ॥ ৫ ॥ ততোহব্ৰবীদ্বাযুস্থতন্তরস্বী, জিফুশ্চ রাজান মুপোপবিশ্য। यरमो ह वीरको स्त्रकाककण्याः-বেকান্ত মাস্কায় হিতং প্রিয়ঞ্চ ॥ ৬ ॥ 'তব প্রতিজ্ঞাং কুরুরাজ ! সত্যাং, हिकीर्घमाना रहम्बू व्यायः। ততো ন গছাম বনান্যপাস্য, . স্থােধনং সানুচরং নিহন্তম্॥ ৭॥ একাদশৎ বর্ষমিদং বসাম, স্থাধনেনাত্তস্থাঃ স্থার্হাঃ। তং বঞ্চয়িত্বাহধমবুদ্ধিশীল-মজ্ঞাতবাসং স্থ্যমাপ্রয়াম:।৮। তবাজ্ঞয়া পার্থিব ! নিবিনশন্ধা বিহায় মান্ বিচরন বনানি। সমীপৰাসেন ৰিলোভিতান্তে, জ্ঞাস্যন্তি নাস্মানপক্ষদৈশান্॥১॥

॥ ৫॥ ৬॥ १॥ ৮॥ বিচরন্ বিচরন্তঃ, অপকৃষ্ট দেশান্ দ্রস্থান্ ন জ্ঞান্ত জিলিছ সমীপন্থানেব, এত ইতি জ্ঞান্ত ভী তার্থঃ, জ্ঞান্ত ভানাধানিতিপাঠে — অনাধা নিতি দেশবিশেষণং অপ্রসিদ্ধান্ দেশান্ তেরু সংবৎসরং গাৃহং বিহৃত্যেতি সম্বন্ধঃ ॥ ১॥ তক্ত যুদ্ধে উদ্ধরেষ কটকবং ছুরীকরবাম, নির্বাত্য

সম্বৎসরং তত্র বিহ্নত্য গৃঢং, নরাধমং তৎ হুখ মুদ্ধরেম। নির্যাত্তা বৈরং সফলং সপুষ্পাং, **७८ेन्य नरत्रक्यायमश्रुक्रवाय ॥ ১० ॥** স্থােধনায়ানুচরৈ রু তায়, ততো মহীমাবস ধর্মারাজ!। স্বর্গোপমং দেশমিমং চরস্তিঃ, भारका। विरुद्धः नतरम्व ! (भाकः॥ ১১ ॥ কীর্ত্তিস্ত তে ভারত। পুণাগন্ধা न (भारिक (नारक मुहदाहरत मु। তৎ প্রাপ্য রাজ্যং কুরুপুঞ্চবানা , শক্যু মহৎ প্রাপ্তমুমথ ক্রিয়াশ্চ ॥ ১২ ॥ ইদস্ত শক্যং সতত্র নরেব্র ! প্রাপ্তার বলভদে কুবেরাৎ। কুরুম্ব বুদ্ধিশ দ্বিষতাং বধায়, ক্লভাগদাপ ভারত। নিপ্রহে চ॥ ১৩॥ তেজস্তবোপ্রাম্ন সংহত রাজনু! সমেত্য সাক্ষাদিপি বজ্রপাণিঃ। ন হি ব্যথাং জাতু করিষ্যতস্তৌ. সমেত্য দেবৈরপি ধর্মরাজ। ॥ ১৪॥

প্রতার্প্য অপকারিণেইপকারই ক্ষেত্যর্থঃ ফলং রাজ্য প্রাপ্তিঃ, পূস্পই শক্রবর্ধঃ নির্যাত্য উদ্ধরেমেতারয়ঃ ॥ ১০ ॥ ততো হোতো মহীং আবসক আধিতিষ্ঠ, নতু ইটেব অথং মহদন্তি কিং মহীবাসেন ?—ইত্যাশক্ষাই অর্গে তি— ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ নিপ্রান্থে চ বন্ধনে বা ভাতৃতাদ্ বধেই প্রান্তালৈতি ভাবঃ ॥ ১০ ॥ সমেতা বৃদ্ধই প্রাপ্তা ॥ ১৪ ॥ স্থাপ্তিক্তুঃ কৃষ্ণঃ, শিনে রপ্তা

ত্বার্থসিদ্ধ্যর্থ মভিপ্রবুত্তৌ, স্থপর্ণকেতৃশ্চ শিনেশ্চ নপ্তা। তথৈব ক্লফে ইপ্রতিমো বলেন, তথৈব চাহং নরদেববর্ষ্য। । ১৫ ॥ তবার্থসিদ্ধার্থ মভিপ্রপন্নে। यरेथव क्रकः मह यापरेवरेखः। ভথৈব চাহং নরদেববর্যা! यत्मो ह वीदहो क्रुडिटनो श्राद्यारा ॥ ১७ ॥ ত্মদর্থযোগ প্রভবপ্রধানাঃ. শমণ করিষ্যাম পরান সমেত্য।"— হৈশক্ষায়ন উবাচ 1 তত্ত্বদাজ্ঞায় মতং মহালা. তেষাঞ্চ ধর্ম্ম্য স্ততো বরিষ্ঠঃ ॥ '১৭ ॥ প্রদক্ষিণং বৈশ্রবণাধিবাসং, চকার ধর্মার্থবিত্বস্তমৌজাঃ। আমন্ত্র্য বেশ্মানি নদীঃ সরাৎসি, मुक्तानि तकारिम ह अन्यताकः ॥ ১৮ ॥ यथागाज भार्ग मरवक्तमानः, श्रूनिर्तितिश्वय नितीक्तमानः। ততো মহাত্মা সবিশুদ্ধ বুদ্ধিঃ,

সম্প্রাথ্যামাস নরেন্দ্র বর্যাম্। ১৯ ॥

সাত্যকিঃ, এত্রোবার্যাং হিতকারিত্বপাহ তথৈবেতি—ক্ষেণ্ছর্নঃ অহং ভীমদেনঃ ॥ ১৫ ॥ প্রোগে অন্ত্রপ্রোগে কৃতিনে কুশলো ॥ ১৬॥ । 'ভদর্থযোগ প্রভব প্রধানাঃ"—তব অর্থযোগে ধনলাভঃ প্রভব প্রধানাং কর্মঃ তদ্বরং প্রধানং যেষাং তে তথা, শমং সাম, শক্র নাশেন ক্ষেমংবা, সমেত্য সামা যুদ্ধেন বা ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ইতি প্রার্থামানেতি পূর্বেণ

তত ইতার্কলোকঃ ক-পুস্তকে নান্তি।

সমাপ্তকর্ম। সহিতঃ স্কৃতি, জিলা স পতান প্রতিলভা রাজ্যম। শৈলেব্ৰ ৷ ভূয়স্তপদে জিতাত্বা, দ্রকী ত্রাম্মাতি মতিং চকার। ২০॥ রুত্রত সর্বৈ রুমুজে দি জৈল, তেনৈৰ মাৰ্গেণ পতিঃ কুৰাণাম। উবাহ চৈতান গণশস্ত থৈক, ঘটে (কচঃ পর্ব্বতনির্বারেষু । ২১॥ তান প্রস্থিতান প্রীতমনা মহর্ষিং, পিতেব পুজানমুশিষ্য সর্বান্। স লোমশঃ প্রীতমনা জগাম, দিবৌকসাং পুণ্যতমং নিবাসম্। ২২ ॥ তেনাফি ষেণেন তথানুশিকান্তীর্থানি রমাণি তপোবনানি। মহান্তি চান্যানি সরাংসি পার্থাঃ, স্প্রামানাঃ প্রয় র্বাগ্রাঃ"—॥২৩॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি আজাগরপর্বাণি লোমশগমনে ষট্-সপ্তত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৭৬॥

সম্বন্ধঃ, মতিং চকার গমনে ইতি শেহঃ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে যটস্পুত্যধিক শত তমোহধ্যয়ঃ ॥ ১৭৬ ॥

বৈশম্পারন উবাচ। নগোত্তম প্রস্রবন্ধেরেতং, দিশাং গজৈঃ কিন্নরপক্ষিভিশ্চ। সুথং নিবাসং জহতাং হি তেষাং, ন প্রীতি রাসীন্তরতর্যভাগাম্॥ ১॥ ততস্তু তেষাং পুনরেব হর্ষ,ঃ কৈলাসমালোক্যে মহান্বভূব। কুবেরকান্তং ভরতর্যভাগাৎ, মহীধরং বারিধরপ্রকাশম্। ২ । সমুচ্ছ য়ান্ পর্বতসনিবোধান্, রে াঠান্ হরীণাং গিরিসেতুমালাः। বছুন প্রপাতা শচ সমীক্ষ্য বীরাঃ, স্থলানি নিমানি চ তত্ৰ তত্ত্ব ॥ ৩ ॥ তথৈৰ চ্যন্যানি মহাবনানি, মুগদ্বিজাঽনেকপদেবিতানি। আলোকয়ন্তোহভিষযুঃ প্রতীতা,-স্তে ধরিনঃ খ্লাধরা নরাগ্রাঃ॥ ৪॥

এবং তীর্থাতাদি প্রভাবেন পুণোন দেবতা প্রানা হত্তম লোক প্রাপ্তির মৃত্ত সামর্থ্য প্রাপ্তি দেবতি দর্শিতং, প্রাপ্তমিপি চৈতদ্বর্প বতা মনর্থ করং ভবতীতি দর্পক্ষার্থং নত্বভীমসেনয়ো হুরবন্থাং বর্ণয়তি নগোত্তম মিতি—প্রস্থাবিকপেত মিত্যাদিনা—নগোত্তমং গদ্ধমাদনং, জহতাং তাজতাম্ ॥ ১॥ কুবেরত্ত কান্তং প্রিয়ণ্ ॥ ২ ॥ স্মৃত্তু,য়ান্ উচ্চৈস্থানি সন্নিরোধান্ সংকীর্ণয়ানি, গোষ্ঠান্ স্থানানি, হরীণাং সিংহানাং, গিরিষ্থ নহাতারণার্থা সেতবে মালাক্ষ মহৎক্ত প্রবাহেষ্থ তত্তিব দেব প্রয়াগাদে সাংগা ইতি প্রস্থাঃ, প্রপাতান্ ভূগুন্॥ ৩॥ অনেক্রপাঃ দ্বিপাঃ ॥ ৪॥ গুহা অপ্র

वनानि त्रमानि नमीः मताः मि, গুছা গিরীণাং গিরিগহ্বর। নি। এতে নিবাসাঃ সতত্ত বভুবু,-রিশানিশং প্রাপ্য নরগভাগাম । ৫ ॥ তে ছুৰ্গবাসং বছধা নিৰুব্য, ব্যতীতা কৈলাস মচিন্তাৰপথ। আসেতু রত্যর্থ মনেরম ১ তে, ত মাশ্রমাগ্র্যাৎ রুষপর্বাণস্তা। ৬॥ সমেত্য রাজ্ঞা রুষপর্বাণা তেঃ প্রভাচি তাজেন চ বাভমোহাঃ। শসং দিরে বিস্তরশঃ প্রবাসং, গিরৌ যথাবদুষপর্বণ তে। १॥ সুখোষিতান্তত্র ত একরাত্রং, পুণ্যাত্রমে দেবমহর্ষিজুটে । ष्यভ्याययूटल यहती विभानाः, क्रूर्थन बीताः श्रनत्त्र वामग् । ৮॥ উষু স্তত্তত্ত মহান্ভাবা নারায়ণস্থানগতাঃ সমগ্রা:। कृत्वत्रकास्त्राः, निनी वित्माकाः, সংশ্যমানাঃ সুরসিদ্ধজুইটাম্ ॥ ৯॥ তাঞ্চাথ দৃষ্ট ৷ নলিনীঃ বিশোকাঃ পাতোঃ সূতা দক্ষনরপ্রধানাঃ। তে রেমিরে নন্দনবাসমেত্য দ্বিজৰ্ষয়ো বীত্মলা যথৈব। ১০।

व्यभागा पत्री, शस्त्रदृश महजी पत्री, निगानिगर त्राजिन्मिनर ॥ १ ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ ৮ ॥ निनीर मदमीर ॥ २ ॥ नस्नर हेळ्वनम् ॥ ५० ॥

ততঃ ক্রমেণোপষয়ু নৃ বীরা ষথাগতেনৈর পথা সমগ্রাঃ। বিহ্নতা মাসপ স্থানো বদ্যাঃ,

কিরাভরাজ্জে বিষয়ং স্থবাহোঃ॥ ১১॥

हीनाः ख्रथातां न्त्रताक मकान्

(पर्भान् कृलिन्त्रग्रात्र कृतित्रञ्ञान्।

অতীত্য তুৰ্গং হিমবৎপ্ৰদেশং,

পুরং স্কুবাছে। দৃদ্ভ নৃবীরাঃ । ১২ ।

শ্ৰুত্বা চ তান্ পার্থিবপুত্রপৌত্রান্,

প্রাপ্তান সুবাছর্মিষয়ে সমগ্রান্।

প্রভ্যান্দ্রযৌ প্রীতিযুত: স রাজা,

ত ঞাভ্যনন্দল্যভাঃ কুৰাণাম্য ১৩ ॥

সমেত্য রাজ্ঞা তু স্থবাহুনা তে.

স্থতি বিশোকপ্রমুখৈশ্চ সবৈঃ।

मरहक्रमितः পরিচারকৈশ,

পৌরোগবৈ র্যে চ মহানসন্থা: ॥ ১৪ ॥

সুখোষি হান্তর ত একরারং,

স্তানুপাদায় রথা শচ সর্বান্।

घটा १ क ह । मातू हत १ विस्का,

ততোহভাগু র্যামুন মক্রিরাজম্॥ ১৫॥

॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ পে রোগবৈ: পুরোগামিভি:, পট গৃহাদি সামগ্রী বাটে হঃ ॥ ১৪ ॥ যামূনং যমুনোদাতং ॥ ১৫ ॥ পুংসি যথা খেত মুত্তরীয়ং শ্বেতাকণ মুফীষঞ্চ তহুৎ গিরৌ প্রস্তুগনি অকণ পাণ্ডু সামূনিচ ভাতীত্যুৎ

তিশ্বন গিরৌ প্রস্রবণ্রেপপন্নে. हिरमाखतीयाक्रन পाधुमारनी। বিশাখযূপং সমুপেতা চকু,-স্তদা নিবাস পুরুষপ্রবীরা: ॥ ১৬ ॥ বরাহনানামুগপক্ষিজ্ফং, মহাবনং চৈত্ররথপ্রকাশম্। শিবেন পার্থা মুগয়াপ্রধানাঃ, সম্বংসরং তত্র বনে বিজহঃ॥ ১৭॥ তত্রাসসাদাতিবলং ভুজঙ্গ^, ক্ষাৰ্দ্দিতং মৃত্যুমিবোগ্ৰৰপথ। রকোদরঃ পর্বতকন্দরায়াৎ, বিষাদমোহব্যথিতান্তরাত্মা ॥ ১৮ ॥ দ্বীপোহভবদ্বত রুকোদরস্য, যুধিষ্ঠিরো ধর্মাভূতাং বরিষ্ঠঃ। অমোক্ষয়দান্তমনন্ততেজা, প্রাহেণ সম্বেফিতসর্বাগাত্রম ॥ ১৯ ॥ তে দাদশৎ বৰ্ষ মুপোপযাত^, বনে বিহর্তু কুরবঃ প্রতীতাঃ। তত্মাদ্বনাচৈত্ররথ প্রকাশা,-চ্ছি রা জ্বন্ত স্তপুদা চ যুক্তা। । ২০॥

প্রেকা, বিশাধ যুপং স্থান বিশেষঃ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ বিষাদঃ তেজঃ প্রতি ঘাতজঃ কোভঃ, মোহো বৈচিত্যম্ ॥ ১৮ ॥ দ্বীপো দ্বিপবদাশ্রঃ, প্রাহেণ সর্পেণ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

তত্ত যাত্বা মক্ষরপাশ্ব্র সদা ধনুর্বেদরতি প্রধানা:। সরস্বতীমেত্য নিবাসকামাঃ, সরস্বতো দৈতবনং প্রতীয়: । ২১ ॥ সমীক্ষ্য তানু দ্বৈতবনে নিবিষ্টান্, নিবাসিনস্তত্ৰ তভোহভিজগ্যঃ। তপোদমাচারসমাধিযুক্তা,-স্বৃণোদপাতা * বরণাশ্মকুটা:॥ ২২ ॥ প্লক্ষ্কে-বোহীতক-বেত্সাক্ষ্ তथा वमर्याः थिनताः भितीय।:। वित्वश्रुमाः शीलुगमीकतीताः, ·সর**স্থতী**কীর**রুহা বভূবুঃ ॥ ২ ৩ ॥** তाং यक्रशक्तर्यमर्श्वकाछा, মগারভূতামিব দেবতানাম। সরস্বতীণ প্রীতিযুতাশ্চরস্তঃ, স্থং বিজহুর্রদেবপুত্রা: "-॥ ২৪॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বন্যাজগরপর্ব্বণি পুনব্বৈ'ত্তবন প্রবেশে সপ্তসপ্তত্যধিকশততমে হিধ্যায়: ॥ ১৭৭ ॥

ত্ণোদ পাত্রাবরণাঃ—আসনার্থং তৃণেন পাদ্যার্থং উদকপাত্তেণ চ আর ৰান্তি, পাঠান্তরে—আহরন্তি প্রত্যেক মানীতেন বরয়ন্তি তে তথাভূতাঃ, অশ্ম কৃটাঃ বান প্রস্থা দন্তোলু খালিকাএব সন্তো জরয়া নফ্টদন্তা অশ্ম কৃটা ভবন্তি॥ ২২॥ বভূবঃ শোভাবত ইতি শেষঃ॥ ২৩॥ ২৪॥ ইত্যারণাকে পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত,ভাবদীপেসপ্ত সপ্তত্যধিক শত ত্যোহধ্যায়ঃ॥ ১৭৭॥

^{* &}quot;পাত্রাহরনা" ইতি ক-পুশুকঃ।

জনমেজর উবাচ।

" কথং নাগাযুতপ্রাণো ভীমো ভীমপরাক্রমঃ।
ভয় মাহারয়ন্তী ত্রপ তত্মাদজগরাঝুনে।। ১॥
পৌলস্তাং ধনদং যুদ্ধে য আহ্বয়তি দর্পিতঃ।
নলিন্যাপ কদনং ক্রন্তা নিহন্তা যক্ষরক্ষসাম্। ২।
তপ শংসসি ভয়াবিউ মাপার মরিস্থাদনম্।
এতদিজ্ঞামাইং শ্রেডিপ পরং কৌতুহলং হি মে '॥ ৩॥

বৈশস্পায়ন উবাত।

বহন। শ্চর্যো বনে তেষাং বসতা মুগ্রধন্থনাম।
প্রাপ্তানামাশ্রমং রাজনাজর্ষে ব্র্যুপর্বণঃ ॥ ৪ ॥
যদৃচ্ছরা ধনুষ্পানি ব্রন্ধর্যা দৃকে দরঃ ।
দদর্শ ভন্তবং রম্যুক্ত দেবগন্ধর্বেদেবিতম্ ॥ ৫ ॥
সাদদর্শ শুভান্ দেশান্ গিরে হিমবতস্তদা ।
দেবর্ষিসিন্ধচরিতানস্পরোগণসেবিতান্ ॥ ৬ ॥
চকোরৈ রুপচকৈশ্চ পক্ষিভির্সীবজীবকৈঃ ।
কোকিলৈভ্ন্মরা জৈশ্চ তত্র তত্র বিনাদিতান্ ॥ ৭ ॥
নিত্যপুপ্রফলর্ক্তির র্মনোনয়ননন্দনৈঃ ॥ ৮ ॥
সাদপশ্যন্ গিরিদরী কৈ দ্ব্যামণিসন্নিভঃ ।
সলিলৈহিনসন্ধানে হং সকারগুবাযুকৈঃ ॥ ৯ ॥
বনানি দেবদান্ধনাং মেঘানামিব বাগুরাঃ ।
হরিচন্দনমিশ্রাণি তুল্পকালীয়কান্যপি ॥ ১ • ॥

কথমিতি—(স্পেফার্গঃ) ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ তুল্ধং কলৌয়কঞ্ কাঠ বিশেষো ॥ ১০ ॥ মৰুধ্বস্থ গিরে নির্দ্ধল প্রদেশেষ্ " মৰু

মুগরাং পরিধাবন স সমেৰু মরুধয়য় । विधान् मृशिक्षरेतः कुरेक क्ष्ठात के स्वमहावनः ॥ ১১ ॥ ভীমসেনস্ত বিখ্যাতো মহান্তং দংটি ুণং বলাৎ। নিম্নন্ নাগশতপ্রাণো বনে তন্মিন মহাবলঃ 🐉 ॥ ১২ ॥ মুগাণাং স বরাহাণাং মহিবাণাং মহাভুজঃ। বিনিম্নংস্তত্র তত্ত্বৈব ভীমো ভীমপরাক্রমঃ ॥ ১৩ ॥ স মাতৃঙ্গাতপ্রাণো মনুষ্যাশতবারণঃ। সি^হশাৰ্দ, লবিক্রান্তো বনে তব্মিন্ মহাবলঃ ॥ ১৪ ॥ বৃক্ষানুৎপাটয়ামাস তর্মা বৈ বভঞ্চ। পৃথিব্যাশ্চ প্রদেশান্ বৈ নাদয়ং স্ত বনানি চ॥॥ ১৫॥ পর্বতাগ্রাণি বৈ মৃদুন্নাদয়ানশ্চ 🏶 বিজ্বর:। প্রক্রিপন্ পাদপাং কাপি নাদেনাপুরয়ন মহীম্॥ ১৬॥ বেগেন ন্যপতন্ত্রীমো নির্ভয়শ্চ পুনঃ পুনঃ। আক্ষেটয়ন্ ক্ষেড্রংশ্চ তলতালাংশ্চ বাদয়ন্ ॥ ১৭ ॥ চিরসম্বদ্ধপস্ত ভীমসেনো বনে তদা। গজেলু শেচ মহাসত্ত্ব। মৃগেলু শেচ মহাবলাঃ॥ ১৮॥ ভীমদেনস্য নাদেন ব্যমুঞ্জ গুহাং ভয়াৎ। কচিৎ প্রধাব স্থিষ্ঠংশ্চ কচিচ্চোপবিশ স্থা॥ ১৯॥ মৃগপ্রেপ্সৃর্পাহ≀রৌদ্রে বনে চরতি নির্ভয়ঃ। স তত্র স্কুব্যাঘ্রো বনে বনচরোপমঃ॥ ২•॥ না গিরিধন্বনোঃ" ইতি মেদিনী॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ 11 22 11 29 11 50 11

^{* &#}x27;' সমহাবলঃ " ইতি ক পুস্তকঃ। * মহাভুজঃ ইতি ক-গ-ঘ পুস্তকাঃ। * গহর মিতি কঃ।

পদ্যামপি সমাপেদে ভীমসেনো মহাবলঃ। স প্রবিষ্টো মহারণ্যে নাদালদতি চাদ্ভান্॥ ২১॥ ত্রাসয়ন স্কাভূতানি মহাস্ত্রপরাজমঃ। ততে! ভীমস্য শব্দেন জীতাঃ সর্পা গুহাশয়াঃ ॥ ২২ ॥ অতিক্রান্তন্ত বেগেন জগামান্সতঃ শনৈঃ। ততোহ্মরবরপ্রধ্যো ভীমদেনো মহাবল:। ২০॥ म प्रम महाकाशः जूककः लामहर्षन्य । গিরিতুর্গে সমাপন্নং কারেনারত্য কন্দরম্ ॥ ২৪॥ পর্বতাভোগবন্ধা। মতিকায়ং মহাবলম্। िकाञ्चमञ्चरेक निरुद्धि श्विकरमुमक्क्विम् ॥ २७ ॥ গুহাকারেণ বক্তেণ চতুর্দং ফৌ্ণ রাজতা। দীপ্তাক্ষেণাতিতামেণ লিহান^ স্বন্ধনী মুহুঃ॥২৬॥ তাসনং সর্বভূতানাং কালান্তক্যমোপমম্। নিশাসকে ডনাদেন ভৎ সয়ন্তমিবোপিতম্॥ ২৭॥ স ভীমং সহসাভ্যেত্য পুদাকুঃ কুপিতো ভূশম। জ্ঞ। हा क्र भरता थारहा चुकरमा क्र चरमा स्वाप्त । २५ । তেন সংস্পৃন্টগাত্রদ্য ভীমসেনদ্য বৈ তদা। সংজ্ঞা মুমোই সহলা বরদানেন তৃস্য হি॥ ২৯॥ দশ নাগসহস্রাণি ধারয়ন্তি হি যদলম্। তদ্বলং ভীমদেনদ্য ভুক্তাে রদম্প পরেঃ ॥ ৩ ॥ স তেজস্বী তথা তেন ভুজগেন বশীক্ষতঃ। বিস্ফুরপ্তনকৈভামে। ন শশাক বিচেষ্টিতুম্॥ ৩১।

॥२১॥२२॥२०॥२৪॥ পর্ব্বত তাতে গিং বিস্তুর্ণ তা. তৎপরিমাণং বর্ম শরীরং যক্ত তম্॥২৫॥২৬॥২৭॥ পূলাকু: সপ:॥২৮॥২৯॥৩০॥৩১॥ নাগাযুত্তসমপ্রাণঃ সিংহককো মহাভুজঃ।
গৃহীতো ব্যজহাৎ সন্তুঃ ব্রদানবিমোহিতঃ ॥ ৩২ ॥
স হি প্রযন্ত্র মকরোজীব্রমান্ত্রবিমোক্ষণে।
ন চৈন মশকদীরঃ কথাঞ্চিৎ প্রতিবাধিতুম্"—॥ ৩৩ ॥
ইত্যার্থাকে পর্বাণি আজগরপর্বাণি ভীমস্যাজগরপ্রহণে
অফসপ্রত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭৮ ॥

বিশিল্যারন উলাচ।

স ভীমসেনস্তেজন্বী তথা সর্পবশাং গতঃ।

চিন্তরামাস সর্পদ্য বীর্যাসভ্যন্ত মহৎ ॥ ১॥

উবাচ চ মহাসর্পং " কামরা বুহি পরগ!।

কপ্তং ভো ভুজগশ্রেষ্ঠ। কিং মরা চ করিষ্যমি॥ ২॥
পাশুবো ভীমসেনোহহং ধর্মরাজাদনন্তরঃ।
নাগাযুতসমপ্রাণস্তর্মা নীতঃ কথং বদাম্।— ॥ ৩॥

সিংহাঃ কেশরিণো ব্যাঘা মহিষা বারণাস্তথা।
সমাগতাক্ষ বছশো নিহতাক্ষ মরা যুধি॥ ৪॥
রাক্ষসাক্ষ পিশাচাক্ষ পরগাক্ষ মহাবলাঃ।
ভুজবেগ মশক্তা মে সোচ্ং পরগস্তুম।॥ ৫॥

কিরু বিদ্যাবলং কিরু বর্দানমথো তব।
উদ্বোগমপি কুর্বিণো বশগোহ্যি কৃতন্ত্রা!॥ ৬॥

সহৎ বুদ্ধিঃ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥

• ইত্যারণ্যকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে

হক্তমপ্তত্যধিক শত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭৮ ॥

স তীমদেন ইতি—॥ ১ ॥ কাম্যাইচ্ছাতঃ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫॥ ৬ ॥

অসতেয়া বিক্রমো নুণ্†মিতি মে ধীয়তে মতিঃ। যথেদ∽ মে ভুয়া নাগ! বলং প্রতিহত∽ মহৎ"–– ॥ ৭ ॥

বৈশস্পায়ন উ 171

ইত্যেবং বাদিনং বীরু ভীম মক্লিফকারিণম। ভোগেন মহতা গৃহা সমন্তাৎ পর্যাবেন্ট্য়ৎ ॥ ৮॥ নিগুহৈনং মহাবাহ্ণ ততঃ স ভুজগন্তদা। বিমুচ্যাস্য ভুজৌ পীনাবিদং বচনমব্রবীৎ ॥ ৯ ॥ "দিষ্টস্তং ক্ষিত্স্যাদ্য দেবৈৰ্ভক্ষ্যো মহাভুজ।। দিষ্ট্যা কালস্য মহতঃ প্রিয়াঃ প্রাণা হি দেহিনাম্॥ ১০॥ যথা বিদ্ব ময়া প্রাপ্ত সর্পর্কপ মরিনদম।। তথাবশ্যং ময়া খ্যাপ্য তবাদা শুণু সন্তম!॥ ১১॥ ইম। মবস্থাং সংপ্রাপ্তো হৃহং কোপান্মহর্ষিণাম। শাপ্যান্তং পরিপেশু: সর্বাং তৎ কথ্যামি তে ॥ ১২ ॥ নছবো নাম রাজ্যি কাক্ততে শ্রোত্রমাগতঃ! তবৈব পূর্বাঃ পূর্বেষা মায়োবাংশধরঃ সূতঃ ॥ ১৩ ॥ সোহহং শাপাদগন্ত্যন্ত ব্ৰাহ্মণানব্যন্য চ। ইমামবস্থা মাপলং পশ্য দৈব্যদং মম ॥ ১৪ ॥ वारक्षित्वधाः नायान मजीविश्रमर्भनम्। অহ্মদ্যোপ্যেক্যামি বিধান্ পশ্য যাদুশম্ ॥ ১৫॥

॥ १॥ ভোগেন দেছেন। ৮॥ বিষুচ্য তদ্য বাস্ত্বলং জিজ্ঞাদিতু মিত্যাশায়ঃ
॥ ১॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১০॥ ১৪॥ দায়াদং স্বংশ্যং পুত্তং অতএবাবধাং
আমেধ্য মিতি পাঠে—বৈশ্বদেবাদ্যনহত্ত্ব। দভক্ষাং নর্মাংদ্য মিত্যর্থঃ,
উপযোক্ষ্যামি ভক্তিতু মিজ্জামি, বিধানং দৈবম্॥ ১৫॥ ২৫ কালে অন্ত-

ন হি মে মুচাতে কশ্চিং কথ ঞিৎ প্রগ্রেহং গতঃ। গজে। বা মহিষো বাপি ষষ্ঠে কালে নরে ত্রম।॥ ১৬॥ নাসি কেবলবীর্যোণ * তির্যাগে,যানিষু বর্ততা। গৃহীতঃ কৌরবশ্রেষ্ঠ ! বরদানমিদ মম ॥ ১৭॥ পততা হি বিমানাগ্রান্থা শক্রাসনচ্যতা। কুরু শাপান্তমিত্যকো ভগবান্ মুনিসন্তম: ॥ ১৮॥ স মামুবাচ তেজস্বী রুপয়াভিপরিপ্ল_তঃ। মোক্ষন্তে ভবিতা রাজন্ ! কমাজিৎ কালপর্যায়াৎ॥ ১৯॥ ততোহিমাণতিতো ভূমৌন চমা মজহাৎ স্মৃতিঃ। স্মার্ত্তমন্তি পুরাণং মে যথৈবাধিগত তথা।। ২০। যস্ত তে ব্যাহ্নতান প্রশান প্রতিব্যাদ্বিশেষবিৎ। স বাং মোক্ষয়িত। শাপাদিতি মামব্রবীদৃষিঃ॥ ২১ । গৃহীতস্য ত্বয়া রাজনু! প্রাণিনোহপি বলীয়সঃ। সত্ত্ৰংশোহধিকস্যাপি সৰ্বাস্যাশু ভবিষ্যতি॥২২॥ ইতি চাপ্যহমশ্রোষং বচস্তেষাৎ দয়বিতাম। ময়ি সংজাতহাদানামথ তেহন্তৰ্হিতা দিজাঃ॥২৩॥ সোহহং পরমতুষ্কর্মা বদামি নিরয়েহশুচৌ। দর্পবোনি মিমাং প্রাপ্য কালাকাঙ্কী মহাত্যুতে !"—। ২৪॥ ত মুবাচ মহাবাহু ভীমদেনো ভুজঙ্গমম্। ন চ কুপ্যে মহাসত্ত্ব ! ন চাত্মানং বিগৰ্হয় ॥ ২৫ ॥

ধাবিভক্তসাফ্লোভাগো ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮॥ ১৯ ॥ সার্ক্তি স্থৃতি বিষয়ং, পুরাণং চিরকালীন মপি স্মর,মীতার্থঃ ॥ ২০ ॥ বিভাগাবিৎ আত্মানাত্ম বিবেক বিৎ ॥ ২১ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ যস্মাল্যস্থ্যঃ পুণ্যপাপ সাম্যেনে।

^{* &}quot; কেবল সর্পেণ " ইতি বা পাঠান্তরম্।

যস্মাদভাবী ভাবী বা মন্ধ্যঃ সুখতুঃখয়ো:। আগমে যদি বাপায়ে ন তত্ত প্লপয়েন্ননঃ ॥ ২৬। দৈবং পুরুষকারেণ কো বঞ্চয়িত মৃ্ছতি। रेनवरमव পর मरना श्रुक्यार्था नित्रर्थकः ॥ २१ ॥ পশ্য দৈবোপঘাতাদ্ধি ভুজবীর্ঘাব্যপাত্র্যম্। ইমামবস্থাং সংপ্রাপ্ত মনিমিন্তমিহাদ্য মামু॥ ২৮॥ কিন্তু নাদ্যানুশোচামি তথাত্মানং বিনাশিতম্। যথা তু বিপিনে ন্যস্তান ভাতিনাজ্যপরিচ্যুতান ॥ ২৯॥ हिमवा भन स्रुप्ता श्रार यक्त ताक नमः कृतः। মাং সমুদ্বীক্ষমাণাত্তে প্রপতিষ্যন্তি বিহ্বলাঃ # ॥ ৩ ।। विनक्षे मथ मा॰ अन्या ভविषात्रि निक्रमामाः। ধর্মালা ময়া তে হি বাধ্যন্তে রাজ্যপৃদ্ধিনা। ৩১॥ অথ বা নাৰ্জ্জুনো ধীমান বিষাদ মুপ্যান্যতি। সর্বাস্ত্রবিদনাপুষো দেবগন্ধবাক্ষাসৈ:॥ ৩২॥ ममर्थः † म महावाछ (इत्कार्शी स्मार्गिवाः। দেবরাজমপি স্থানাৎ প্রচ্যাবয়িতুমঞ্জসা। ৩৩॥

পাত্তজন্ম। স্থেষ্ঠাগমে কলাচিদভাবী সামর্থ্যইনঃ কলাচিন্তাবী সামর্থ্যবান্ অবশ্যং ভবতি এবং স্থে গ্রাপারে ছঃখন্তাপ্যাগমে ছপারে চ, ত মাদবগ্রুং ভাবিতাদন্যতরত্ব স্থাপারে ছঃখাগমে বা মনোন মর্থয়েৎ ন প্লানিং নয়েৎ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ময়। রাজ্য গুদ্ধিনা রাজ্যকামেন, ধর্ম শীলাঃ সভ্য প্রতিজ্ঞাঃ বাধান্তে প্রক্ষাক্তিভি রিভি শেষঃ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥

প্রথতিষান্তীতি পাঠো বা।
 শুসহারাতঃ ইতি ক ঘ গুন্তকোঁ।

কিংপুন ধু তরাষ্ট্রদ্য পুত্রং ছুদু গত দেবিনম্। বিদ্বিষ্ট সর্বালোকস্য দম্ভমোহপরায়ণ্ম ॥ ৩৪॥ মাতরকৈব শোচামি রূপণাং পুত্রগৃদ্ধনীম। যাম্মাক< নিতা মাশান্তে মহন্ত্রমধিক< পরেঃ ॥ ৩৫ n ত্যাাঃ কথ^ স্বনাথায়া মদ্বিনাশাদ্রজঙ্গম!। অফলান্তে ভবিষ্যন্তি ময়ি সর্বে মনোর্থাঃ॥ ৩৬॥ नकुलः महरमवन्ह यरमो ह शुक्रवर्जितो। মদ্বান্ত্বল-সংগুপ্তৌ নিত্যং পুরুষমানিনৌ ॥ ৩৭॥ ভবিষ্যতো নিরুৎসাহৌ ভ্রম্টবীর্য্যপর ক্রমৌ। মদিনা লাৎ পরিদ্যুনাবিতি মে বর্ত্ততে মতিঃ!"—॥ ০৮ ॥ এবিষধং বহু তদা বিললাপ রুকোদরঃ। ভুজক্তভোগস∾রুদো নাশক্ত বিচেটিত্যু॥ ৩৯॥ যুধিষ্ঠিরস্ত কৌত্তেয়ো বভূবাস্থচেতনঃ। অনিষ্টদর্শনান্ ঘোরালুৎপাতান্ পরিচিন্তয়ন্ ॥ ৪০ ॥ দাক্রণ হাশিবং নাদ শিবা দক্ষিণতঃ স্থিতা। দীপ্তায়াং দিশি বিত্রস্তা রৌতি তস্থাপ্রমস্থা চ॥ ৪১॥ একপক্ষাক্ষিচরণা বর্ত্তিকা ঘোরদর্শনা। রক্তং বমন্তী দদুশে প্রত্যাদিত্যমভাস্বর!॥ ৪২॥ প্রববৌ চানিলো রক্ষশ্ভঃ শর্করকর্ষণঃ। অপস্ব্যানি স্বাণি মৃগপক্ষিক্তানি চ ॥ ৪৩॥ পৃষ্ঠতো বায়স: क्र्राया याहि याशील भारमि । মুক্তমুক্ত: ক্ষরতি চ দক্ষিণে। হস্য ভুজন্তদা ॥ ৪৪॥

[॥] ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ বর্ত্তিকা পক্ষিবিশেষঃ ॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥ দক্ষিনোভূজঃ ক্রুরতীতি ভবিষাতোহনিষ্ঠ প্রশমনপ্র লিঞ্চন্ । ৪৪ ॥

হৃদয়ঞ্বল্শ পি বামোহস্য পরিতপ্যতি। # স্বস্থাক্ষা বিকারশ্রাপানিষ্টঃ সমপদাত ॥ ৪৫॥ धर्यातारकार शि रमधावी मनामारना महस्रम्। দ্রৌপদীং পরিপপ্রচ্ছ क ভীম ! ইতি ভারত ! ॥ ৪৬ ॥ শশৎস তথ্মৈ পাঞ্চালী চির্যাতং রুকোদরম্। স প্রতক্তে । মহাবাছ ধৌম্যেন সহিত্যে রূপঃ॥ ৪৭॥ क्तिभना तकन् कार्या मिड्रावाह धनक्षत्रम्। নকুলং সহদেবঞ্ব্যাদিদেশ বিজ্ঞান প্রতি॥ ৪৮॥ স তত্ত পদ মুনীয় তত্মাদেবাশ্রমাৎ প্রভুঃ। श्रुतशामान कोट्या ভीमदमन महावत्त ॥ ८३ ॥ স প্রাচী দিশ মাস্থায় মহতো গজযুথপানু। দদর্শ পৃথিবীং চিহুৈ ভীমন্তা পরিচিহ্নিত।মৃ॥ ৫ • ॥ ততো মুগসহস্রাণি মুগেন্দ্রাণাং শতানি চ। পতিতানি বনে দৃষ্টা মার্গং তফাবিশন্প: # ॥ ৫১॥ ধাবতস্তম্য বীরস্য মুগার্থং বাতর হুনং। উক্তবাতবিনির্ভগ্না ক্রম। ব্যাবজি তাঃ পথি। ৫২॥

বিকারঃ ক্রুবণ্ম ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ এতেন ইফামনিট প্রশমনগুভবিবাতাবশ্য মিতি মন্যতে ধর্মরাজঃ। মুখপান্ পতিতান্ দদশে-তাধ্যঃ ॥ ৫০ ॥ অধ্বিশং ইতি ছেদঃ ॥ ৫১ ॥ ব্যাবর্জিতা নিষ্পিটা নিক্ষিপ্রন্থ বা ইত্যর্থঃ ॥ ৫২ ॥

^{* &#}x27;' পরি বর্ত্তে " ইতি ক পুস্তকঃ। '' সম্প্রতম্থে " ইতি সএব। * কপুস্তকে '' অবিদন্ধ!" ইত্যেবং পাঠঃ।

স গত্বা তৈন্তনা চিত্রৈ দিশে গিরিগন্ধরে।

ৰক্ষমায়ত ভূমিষ্ঠে নিজাত্রদ্মসঙ্কুলে #॥৫৩॥

* ঈরিণে নিজালে দেশে কন্টকিক্রমসংকুলে।

অশ্বস্থাপুক্সপাকীর্ণে স্কুর্গে বিষমোৎকটে।

গৃহীতং ভূজগেন্দ্রেণ নিশ্চেন্টমনুজ্ঞ তদা"—॥৫৪॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ্যাজগর পর্বাণি যুধিষ্ঠিরভীমদর্শনে

একোনাশীত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥১৭৯॥

বৈশন্দায়ন উবাচ।

যুধিষ্ঠির স্তমাসাদ্য সর্পভোগেন বেষ্টিভ্রম্।

দয়িতং ভ্রাতরং ধীমানিদ্দ বচন মন্ত্রবীং ॥ ১ ॥

'কুল্পীমাতঃ! কথ্মিমা মাপদং ত্ব মবাপ্তবান্।

কশ্চায়ণ পর্বতাভোগপ্রতিমঃ পন্নগোত্তমঃ ?''—॥ ২ ॥

স ধর্মারাজ মালক্ষ্য ভ্রাতা ভ্রাতর মগ্রজম্।

কথ্যামাস তং সর্বাণ গ্রহণাদি বিচেষ্টিভ্রম্ "—॥ ৩ ॥

ভীমদেন উবাচ।

জরিণে উহরে, ক্ষুপাঃ ক্রম রক্ষাঃ, " ব্রম্বশাখা শিকঃ ক্ষুপঃ" ইত্যমরঃ) ॥ ৫৩॥ ৫৪॥

ইত্যারণ্যকে পর্শ্বনি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে ঊনাশীত্যধিক শততমোধ্যায়ঃ ॥ ১৭৯ ।

যুধিচির ইতি—॥ ১॥ ২॥ ৩॥ প্রাণবান্ বায়ুভক্ষঃ সর্পইব নতু সর্পঃ

^{* &}quot;मकरि" हेि क, श।

^{* &}quot;ইরিণে" ইতি ভূষ পাঠো বা। "নির্কলে" ইতত্র "নির্কনে" ইতি ক, ঘ পুস্তকৌ পঠতঃ।

' অরমার্যা। মহাসত্ত্ব। # ভক্ষার্থং মাং গৃহীতবান্। নহুষো নাম রাজর্ষিঃ প্রাণ্বানিব সংস্থিতঃ''—॥ ৪॥
যুদিচির উবার।

" মুচাতা ময় মাযুদ্ধ । ভাতা মেংমিতবিক্রম:।
বয়মাহার মনাত্তে দাসামঃ জুলিবারণ্ণ'— ॥ ৫॥
সপ উবাচ।

" আহারো রাজপুত্রে; হয়ং ময়া প্রাপ্তো মুখাগতঃ।
গম্যতাং নেই স্থাতব্য শ্বা ভবানপি মে ভবেং। ৬॥
ব্রতমেতনহাবাহো! বিষয়ং মম যো ব্রজেং।
স মে ভক্ষো ভবেতাত। ব্রঞ্গ পি বিষয়ে মম॥१॥
চিরেণাল্য ময়াহারঃ প্রাপ্তোহয়মনুজন্তব।
নাহমেনং বিমোক্যামি ন চান্যমভিকাক্ষয়ে"—॥৮॥.

যুধিষ্ঠির উবাচ।

'দেবো বা যদি বা দৈত্য উরগো বা ভবান্ যদি।

নত্যং সর্পা বচো বুহি পৃচ্ছতি স্বাং যুষিষ্ঠিরঃ।

কিমর্থঞ্জ স্বরা প্রস্তো ভীনসেনো ভুজঙ্গম!॥ ৯॥

কিমাহ্যরে প্রস্তামি কথং মুঞ্জেন্তবানিমম্?''-॥ ১০॥

সর্প উবাচ।

ে নছযো নাম রাজাহ মাসং পূর্বস্তবানঘ!। প্রথিতঃ প্রথমঃ সোমানোয়েঃ পুরো নরাধিপ!। ১১॥

॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ কিমাছতা বিদিহাবেতি স্বস্থা সর্থ সর্বজ্ঞহঞ্চ স্চয়তি । ১০॥ সোমাৎ চন্দ্রাৎ॥ ১১॥

^{* &}quot; আ্রা মহাসর !" ই ত সমস্ত পাঠঃ কচিৎ।

ক্রভুভিন্তপদা চৈব স্বাধারেন দমেন চ।
বৈলোকৈ স্থা মব্যাং প্রাপ্তোহং বিক্রমেণ চ। ২২ ।
তদৈশ্ব্যং সমাসাদ্য দর্পো মা মগমন্তলা।
সহস্রং হি দ্বিজাতীনা মুবাই শিবিকাং মম। ১৩ ॥
প্রথ্যমদমন্তোহ্ মবমনা ততো দ্বিজান্।
ইমা মগস্তোন দশা মানীতঃ পৃথিবীপতে। । ১৪ ॥
ন তু মামজহাৎ প্রজ্ঞা যাবদদ্যেতি পাপ্তব!।
তদ্যৈবানু প্রহাজাজনগন্তাস্য মহাত্মনং। ১৫ ॥
যঠে কালে ময়াহারং প্রাপ্তোহ্য মনুজন্তব।
নাহমেনং বিমোক্ষ্যামি ন চান্যদ্পি কাময়ে॥ ১৬ ॥
প্রশানুক্তারিতানদ্য ব্যাহরিষ্যসি চেল্মম।
অব পশ্চাদ্যিমাক্যামি ভাতবং তে ব্কোদরম্শ—॥ ১৭ ॥
স্বাধ্বির উবাচ।

"বুহি সর্প ! যথাকাম প্রতিবক্ষ্যামি তে বচঃ।
অপি চেচ্ছকুয়া প্রীতি মাহর্তুং তে ভুজঙ্গম !॥ ১৮॥
বেদ্যঞ্চ ব্রাক্ষণেনেই তদ্ভবান্ বেক্তি কেবলম্।
সর্পরাজ ! ততঃ শ্রুত্বা প্রতিবক্ষ্যামি তে বচঃ—"॥ ১৯॥

॥ ১২ ॥ ১৩॥ ১৪ ॥ ১৫॥ ১৬ ॥ নত্মন্ত, জ্ঞানমের পুরুষার্থ ইতি মহা নচানাদিপিকাম্যে ইতি স্বস্ত জ্ঞানাদন্ত বৈরাগ্য প্রদর্শন কামঃ প্রশ্নমের রুণোতি প্রশানিতি—॥ ১৭॥ ১৮॥ বাহ্মাণেনেতি ঘটং করোতি ইতিবং ভাবিনীং রাক্ত মাজিতা অবাহ্মাণেপি নুমুক্ষো বহ্মবিদ্যাচি বাহ্মাণ শব্দ প্রয়োগঃ ক্রান্ত " আমৌনঞ্চ মোনঞ্চ নিবিদ্যাথ বাহ্মনং" ইতি শ্রবণ মননাত্মক মমৌনং নিদিধাসনাত্মকং মৌনঞ্চ নিবিদ্যা নিম্পাদ্য " বাহ্মণো বহ্মবিদ্যাত্মত" ইতি দর্শনাৎ কেবলং নিবিশেষং বেত্তি পুরুষার্থত্মন জ্ঞানাতি চেতর্হি তত্মস্থামি মাত্সংবাদায় ইত্যর্থঃ॥ ১৯॥ তর যানোব

मर्भ छेशह।

'ব্ৰাক্ষাণাং কো ভবেদ্ৰাক্ষন্ ! বেদ্যং কিঞ্চ যুধিষ্ঠির !। ব্ৰীষ্ঠিমভিং ত্বাং হি বাকৈয় রন্থমিমীমহে"—ঃ ২০॥
যুধিন্তির উবাচ।

' সতাং দানং ক্ষমা শীল মানুশ স্থাং তপো ঘৃণা।
দৃশ্যন্তে যত্র নাগেন্দ্র! স বা ক্ষণ ইতি স্মৃতঃ ॥ ২১॥
বেদ্য স্পা ! পরং ব্রহ্মা নির্দ্ধে সমুখ্য যথ।
যত্র গত্বা ন শোচন্তি ভবতঃ কি শ্বিবিক্ষিতম্!"॥ ২২॥

বন্ধবিল্লকণ্যি তানি বন্ধবিদ্যা সাধকানীতি মহানো বন্ধবিদো লকণ্থ ব্রদাস্বরূপঞ্চ পুচ্ছতি ব্রাদান ইতি—॥ ২০॥ সত্যং যথার্থং অহংশ্রঞ্চ বচনং, আনুশংশুং অনৈষ্ঠুর্যাং, তপঃ অধর্মাচরনং, মুনা কুপা ॥২১ ॥ পরং নির্বি- ' শেষং স্বিশেষতা ৰাজ্মনুসা গোচির্স্য আই হ্বাই ব্লাহোকেঃ 'ব্লুন্সা নমত্নতে যেনাত মনোমতং। তদেব ব্ৰহ্ম বংবিদ্ধি নেদং যদিদমুপাদতে।" ইত্যাদিনা, ত্রন্ম ত্রিবিধ পরিচ্ছেদ শূ্মুং বস্তু, তত্র পরমতে পরমাণো নিত্য-ত্বাৎ কালতঃ পরিচ্ছেদাভাবেপি দেশতো বস্তুতশ্চ পরিচ্ছেদোহন্তি, তথা কাশস্থ নিত্যবাৎ বিভূত্বাচ্চ কালতো দেশত্যত ভদভাবেপি বস্তৃতঃ পরি-চ্ছেদোহন্তোৰ, অয়মপি ত্রিবিধঃ "ব্লক্ষ্য স্বৰ্গতো ভেদঃ পত্রপুষ্প কলা-দিতঃ। বৃক্ষান্তরাৎ সজাতীয়ে। বিজাতীয়ঃ শিলাদিত" ইত্যুক্তসকণ্ঃ, সএব প্রমতে ঈশ্বরম্ম নিতাজানাদিভাঃ আত্মান্তরা কাশাদিভা শ্রম্ভি ্সা-প্যভাবেশ্ছ ত্রাভিপ্রেভঃ. অতএব স্ব্থাদিধর্মবন্নভবতি, যত্র অধ্বৈত্তকর্মে গ্রা নশোচতি শোকায়তনতা হৃদয়ত্তৈবাভাবাৎপুনঃসংসারং ন প্রাপ্নে:-তীতার্থঃ, এবং স্বমত মৃক্ত্যা পরমতং জিজাদতে ভবতঃ বিবক্ষিত মিতি—॥ ২ছ ॥ দপস্ত ত্রাক্ষণ পদেন জাতিমাত্তং বিবক্ষিত্র। শুক্তে তঃকণং ব্যভিচারয়তি—চাতুর্বণা মিতি সার্কেন—চতুর্ণং বর্ণাণাং হিতং সতাং প্রমাণ্ঠ ধর্মব্যবস্থাপকং ব্রহ্ম, শুদ্র বেদঃ শুদ্রাচার স্মৃতে রপি বেদ

সপ উবাচ।

"চাতুর্বর্ন্থ প্রমাণঞ্চ সভ্যঞ্চ ব্রহ্ম চৈব হি।
শূদ্রেম্বপি চ সভ্যঞ্চ দান মজোধ এব চ।
আনুশংস্য মহিংকা চ ঘূণা চৈব যুধিন্ঠির ! ॥ ২৩॥
বেদাং যচ্চত্রে নির্দ্দঃখ মস্থ্যঞ্চ নরাধিপ! ।
ভাভ্যা হীন পদ্যোনান্ন চদন্তীতি লক্ষ্যে "—॥ ২৪॥
গুধিন্তির উন্যাচ।

শ্দে চ যন্তবেল্লক্ষা বিজে তচ্চ ন বিদাতে।

ন বৈ শৃদ্যো ভবেচ্ছু দো বাক্ষণো ন চ বাক্ষণা । ২৫ ॥

যবৈতলক্ষাতে সৰ্প ! বৃত্তং স বাক্ষণা স্মৃতঃ।

যবৈতলভবেৎ সৰ্প ! তং শৃদ্য মিতি নিৰ্দিশেৎ ॥ ২৬ ॥

যথ পুনৰ্ভবতা প্ৰোক্ত নবেদাং বিদাতীতি চ।

তাভ্যাং হীনমিতি হতত পদং নাস্তাতি চেদ্পি ॥ ২৭ ॥

মূলত্বাৎ সর্ব্বোপ্যা চারাদিঃ জ্ঞাতি নুলক ইত্যর্থঃ, এবঞ্চ সত্যাদিকং যদি শুদ্রেপ্যান্তি তর্হি সোপি প্রাহ্মণ এব স্থাৎ ইত্যান্ত শুদ্রেম্বহণীতি—॥২৩॥ স্থা হঃখাতীতং পদমের নাস্তি তুক্তরপং প্রন্ধাপ্যাক্ষিপতি বেদ্য মিতি—পদং পদনীয়ং প্রাপ্যান্ত্রান্য ॥২৪॥ ইতরম্ভ প্রহ্মণ পদেন প্রন্ধানিকং বিবাদ্ধান কামাদিকং ন প্রাহ্মণেই নাপি প্রাহ্মণ লক্ষ্ম শুদ্রান্তি—শুদ্রান্ত্রান্ত কামাদিকং ন প্রাহ্মণেই নাপি প্রাহ্মণ লক্ষ্ম শুদ্রান্তি শুদ্রেইতীত্যর্থঃ, শুদ্রোপি শুমান্ত্যপতো প্রাহ্মণ এব প্রাহ্মণোপি কামান্ত্রপতঃ শুদ্র এবিত্যর্থঃ॥২৫॥ ২৬॥ যদপুক্তেৎ স্থান্তঃ পদিংলান্তি তদপ্যন্ত্রাদ প্রক্র মন্ত্রাপান্যেনিব পরিহর্তি সার্দ্ধেন যৎপুনরিতি—পদং পদনীয়ং প্রাণ্য প্রাপ্তং সহকর্মণা প্রাপ্তাং স্থানং তৎ স্থা মুঃখান্তাং হীনং নান্তি বন্ধা লাক্ষ্য হানাম্ ॥২৭॥ এতদেব দুটান্তেনাপ্রদণিত যথেতি—যথা শীতলক্ত জলদ্য

এবমেতন্মতং সর্প ! তাভ্যাং হীনং ন বিদ্যতে।
যথা শীতোফায়ো র্মধ্যে ভবেলাফাং ন শীততা॥ ২৮॥
এবং বৈ সুথজুঃখাভ্যাং হীনং নান্তি পদ্প ক্রচিং।
এয়া মম মতিং সর্প ! যথা বা মন্যতে ভবান্ "—॥ ২৯॥
সর্প উবাহ।

" যদি তে র্স্ততো রাজন্ ! ব্রাহ্মণঃ প্রসমীক্ষিতঃ। র্থাজাতি স্তদাযুগ্ন্! ক্তিযাবিন বিদ্যতে "—॥ ৩০॥ যুদ্ঠারে উবাচ।

"জাতিরত্র মহাদর্প। মনুষ্যত্বে মহামতে।। সন্ধ্রাৎ সর্ব্ববর্ণানাং তুষ্পারীক্ষ্যেতি মে মতিঃ॥ ৩১॥

মধ্যেইভান্তরে উষ্ণং আয় নান্তি নাপি উষ্ণে আয়ো শীততাযুক্তং জলং অস্তি , उत्हाः शत्रक्शत नित्तारधन मः त्यां भारमाना । २৮ ॥ अवः श्रमः शंननी ग्रः জ্ঞেরংবস্তু কচিদেশে কালে বা সুখত্বঃখাভ্যাৎ হীনং প্রাপ্তং নান্তি আধন্-সিক্ষোঃ স্থত্ঃৰয়ে। রধিষ্ঠানেন জ্ঞেরবস্তু না সহ সর্পায় রজ্বে কালত্রয়েপি-সম্বন্ধো নান্তীত্যৰ্থঃ "এহাৰ গতে," অস্ত্ৰ "আদিতশ্চ" ইতি নিষ্ঠা-তকার্ম্য নঃ, ঘু মাস্থা ইতি সূত্রেণ আত ইত্ত্ং, হাঙঃ পদাতেক গতার্থহাৎ জানার্গ-ছাতে হীনং প্রাপ্ত মিতি পদং জের মিতি চ ব্যাখ্যাতং, অন্যথাতু প্রশ্নো-ভররো রেকরপরা দেয়া মম মতি রিতি বাকাশেরে স্থানরণং নোপপদ্যতে, অন্যে তু শিদ্ধান্তে তাভাং হীনং পদং কিং নান্তী?—অপিতু অন্ত্যেবেতি কাকা ব্যাচকতে, জয়ং ভাবঃ, যৎ কর্মপ্রাপ্যং স্থানং তৎ স্থ্য-তুঃখ বর্জি তং কলাচিদপি নশিন্ত, যতু জেরং বস্তু নিত্যপ্রাপ্তং প্রমাণ সাম-র্থাৎ কণ্ঠগত বিস্মৃত চামীকরবৎ তব কণ্ঠে চামীকরং অমেব ব্রন্মেতি চ বাকোকসিদ্ধ মজ্ঞানাপনয়নমাত্র মপেক্ষতে, ন তত্ত স্থহুঃখ সম্বন্ধোস্থি অকর্মজবাৎ তৎপ্রাপ্তেঃ, অতএব চ তদ্যাহ নিতার মপি ন অজনারা দিতি ॥ ২৯॥ প্রথম প্রশোত্তর মাক্ষিপতি যদীতি—॥ ৩০॥ উত্তরমাহ জাতিরিতি ॥ ৩১ ॥ বাগাদীনামিব মৈথনস্যাপি সাধারণ্যাজ্জাতি ছ্রিজ্রা, তথাচ

সর্কে সর্কান্ত্রপত্যানি জনয়ন্তি সদা নরাঃ।
বাঙ্ মৈথনমথো জন্ম মরণঞ্চ সমং নৃণাম্॥ ৩২ ॥
ইদমার্যং প্রমাণঞ্চ যে যজামহ ইত্যপি।
তন্মাচ্ছীল প্রধানেষ্ট প্রকৃ র্যে তত্ত্বদর্শিনঃ॥ ৩৩॥
প্রাঙ্ নাভিবর্দ্ধনাৎ পুংসো জাতকর্ম বিধীয়তে।
তদাস্য মাতা সাবিত্রী পিতা স্বাচার্য্য উচাতে॥ ৩৪॥
তাবচ্চু দ্রসমো হেঘ বাবদ্বেদে ন জায়তে।
তিন্মিনের শমতি দ্বৈধে মন্ত্রং স্বায়স্কুবে(২ব্রবীৎ॥ ৩৫॥

আছতিঃ ''ন চৈত দিলো বাকাৰ্য সেবা বয় মত্রাক্ষণা বা" ইতি ত্রাক্ষণো সংশয় , মুপানাসাতি স্বরংজ্ঞাতিঃ॥ ৩২ ॥ নত্ন জাত্যানিশ্চয়ে কথং এশ্লাণে ১২ং ইতাদিভিমান পুরঃসরং যাগানে প্রবর্ততে ?—ইত্যাশ্র হৈ ইন মার্থমিতি অব ''বে বজামহ ' ইতানেন চ যে বয়ং স্মো প্রাক্ষণা অনো বা তে বয়ং বজ মতে ইতি আকানোহনবধারণং দৰ্শিতং, মন্ত্র লিজমপি 'ব এবাফি স সন্ যাজে" ইতি, নায়েবং স্বস্যাই এক্ষণ ংশক্ষে বজ্ঞস্যানি ঐকরত্ব সাপততি ইত্যাশস্কা তৎপরিহারায় যাগে যজমানদা প্রবর-বরণং ক্রিয়তে যাজিকৈঃ, ভক্ত 'অগ্নি হোতা" ইতি মত্ত্রে ''নোতমবদয়াস্যাব দলিবোৰদ্ বাধাৰৎ ' ইতি কুৰ্বভি, ত্যা চ প্ৰয়োজন মত্ৰাক্ষণস্যাপি যজ্ঞানস্য ত্ৰাক্ষণত্ব সম্পাদনং, তত্মাদাচার এব আক্ষাণ নিশ্চয়ে হেছু র্বেদ প্রামাণ্যা দিত্যুপ্সং হরতি তত্মাদিতি-প্রধানঞ্চ তদিষ্টঞ্চেত কর্মদারয়ঃ ॥ ৩৩ ॥ কর্মেব ব্ৰাহ্মণ্য হেছু বিভাগ্ছ প্ৰাণিতি—নাভিবৰ্দ্ধনাৎ নালচ্ছেদনাৎ ॥ ৩৪॥ জায়তে সংযুদ্ধাতে, বেদসংযোগনতর মেব ব্রাহ্মণ্য মুর্দেতি তদ্বৎ প্রবর্গেনাপীতি ভাগঃ, দ্বৈধে জ্বাতে সংশয়ে সতি॥ ৩৫ ॥ রুত্তং বৈদিক সংস্কারে মিদ ন বিদ্যুতে তার্ছ সর্কাঃ প্রজাঃ কৃতকৃত্যাঃ গুরুতুল্যাঃ তথাত স্মৃতিঃ 'ন শূদ্রে পাতকং কিঞ্চি লচ সংস্থার মহতি।" ইতি, তেষাৎ সংস্থারানইত্ব নিষ্পাপতাভিধানাৎ কৃতকৃত্যত্বং দর্শয়তি—তদ্বৎ তৈবিশিকা অপি স্থ্য ক্তক্ত্যা: পুনৰ্বাণ যদি বৃত্ত ন বিদ্যতে।
সঙ্কবন্ত নাগেক ! বলবান্ প্ৰসমীক্ষিত: ॥ ৩৬ ॥
যতেদানী ন মহাসৰ্প ! সংস্কৃত নুত্ত মিষ্যতে।
তং ব্ৰাহ্মণ মহং পূৰ্বে মুক্তবান্ ভূক্তগোত্তম ! "—॥ ৩৭ ॥
সৰ্প উবাচ।

" শ্রুতং বিদিতবেদ্যস্য তব বাক্য শুধিষ্ঠির!।
ভক্ষয়েয়মহং কক্ষান্ত্রাতরং তে বুকোদরম!"--॥ ৩৮॥
ইত্যারণ্যকে পর্কাণি আজগর পর্কাণি যুধিষ্ঠিরাজগরসংবাদে
অশীত্যধিক শততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৮০॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

"ভবানেতাদৃশো লোকে বেদবেদাঙ্গপারগঃ। বুহি কিং কুর্বভঃ কর্ম্ম ভবেদাভিরস্থুত্তমা"—॥ >॥ সর্প উন্ত ।

"পাতে দত্ত্বা প্রিয়াণুজ্বো সত্যমুক্ত্বা চ ভারত !। অহি∼সানিরতঃ স্বর্গং গচ্ছেদিতি মতিস্মম''—॥২॥

রিত্যর্থঃ, তত্ত্ব ব্রত্তাভাবে ॥ ৩৬ ॥ উপসংহরতি যত্ত্বে তি—॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকথীয়ে ভারতভাবদীপেহণীত্যধিক শত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮০ ॥

যুধীতি—এবং যুধিন্তির মুখেন ব্রন্ধবিদ্ধাণানি ব্রন্ধ চ নির্প্য সপামুখেন চিত্ত শুদ্ধ দারা আঁঅ-বিবিদিষোৎপাদন দারা বা ব্রন্ধপ্রাপারাল্ দানাদীন্ বিধাতু ময় মধ্যায় আর্ভাতে ভবানেতানুশ ইতি—উত্তমা গতিঃ অর্গাবান্তিঃ॥১॥২॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

দোনাদ্বা দৰ্প। সত্যাদ্বা কিমতো গুরু দৃশ্যতে। অহিংসাপ্রিয়য়োশ্চৈব গুরুলাঘ্ব মুচ্যতাম্"॥ ৩॥

সর্প উবাচ।

'দানঞ্চ সত্যং তত্ত্বং বাপাহিৎসা প্রিয়মেব চ।

এবং কার্যাগরীয়স্থাদ্শতে গুরুলাঘবন্॥ ৪॥

কন্মাচিদানযোগাদি সতামেব বিশিষাতে।

সত্যবাক্যাচ্চ রাজেন্দ্র! কিঞ্চিদানং বিশিষাতে॥ ৫॥

এবমেব মহেম্বাস! প্রিয়বাক্যান্মহীপতে!।

অহিংসা দৃশ্যতে গুর্বী ততশ্চ প্রিয়মিষাতে॥ ৬॥

এবমেতভবেদাজনু! কার্যাপেক্ষ মনন্তরম্।

যদভিপ্রেতমন্যত্তে বুহি যাবদুবীস্যহন্"—॥॥ ৭॥

॥ ৩॥ গুরু লাঘ্বং গৌরবং লাঘ্বঞ্চেতার্থ:॥ ৪॥ কার্যা গরীরস্ত্র মেব
সামানাতো বির্ণোত কমাজিদিতি—অয় মত্র নির্ণয়ঃ "পিশুনারভেরং
দাতুং ন সভাং মতিমাংশুাজেং। সাধুনা মভয়ারেই ভাজেং সভামপি
জ্বম্। শুনেয়্চ প্রিরাখানো দহিংসা শ্রেরমী মতা। অহিংসাতঃ
পরাত্মাখা প্রিরাখানং বিশিষাতে।" এতচ্চ পুরাংশুদোপদেশেন পুরাজ্য
পিতরং হঃখয়তা নারদেন মদালসরা চরত্যু ৫॥ তদেত দাহ তত্রু
প্রির মিষাতে—অহিংসাতোপি প্রিরং গুরুতর মিতার্থঃ॥ ৬॥ ৭॥
দেহাতিরিক্ত মাত্মানং সাধ্যিতুং প্রাক্রম্ম সন্তাবং দর্শবিষ্যন্ কর্মণাং
নিক্ষলত্বং তাবদাশক্ষাতে কথমিতি—অশরীরস্যা নঠাদেহস্য কথং স্বর্গতিঃ
কথং বা তত্র বিষ্যোপভোগঃ কথংবা কর্মফল্সা প্রুব্র মপ্রত্যাখ্যেয়র
মিতার্থঃ, স-দেহস্য হোত্রেয়ং যুজাতে নতু দেই হীনসোতিভাবঃ

য়ধিষ্ঠির উপাচ।
'কেথং স্বর্গে গতিঃ সর্প ! কর্মাণাঞ্চ ফলৎ ধূবম্। অশরীরস্য দুশ্যেত প্রবুহি বিষয়াংশ্চমে''—॥৮॥
সপ্উপাচ।

'তিত্রো বৈ গতয়ো রাজন্! পরিদৃষ্টাঃ স্বক্ষাতিঃ।
মানুষাং স্বর্গবাসক তির্যাগ্যোনিক তিন্ত্রিয়া ৯॥
তত্র বৈ মানুষালোকাদানাদিতি রতক্রিতঃ।
আহিংসার্সমাযুক্তৈঃ কারণৈঃ স্বর্গমাযুতে ॥ ১০॥
বিপানীতৈক রাজেন্দ্র! কারণৈ স্থানুষার্থা ভবেৎ।
তির্যাগ্যোনিস্থা তাত! বিশেষকাত বক্ষাতে॥ ১১॥
কামকোধসমাযুক্তো হিম্সালোভসমন্তিঃ।
মনুষারাৎ পরিভ্রুতির্যাগ্যোনো প্রস্থাতে॥ ১২॥

॥৮॥ অত্যেত্তর মাহ তি ইতি—যথা মৃদ্ধিব্রেদ্বাপি ঘট-শরাবাদ ধনাদিয়ু কুলালগতে। সদপ্শ-ক্রিয়া ভেদে বৈষমাহেতু ভবতঃ এবং ভোতিকে ধাপ স্বন্ধ তির্যুক্ণরীরেয়ু ভদনাকর্ত্তাত্ত্বগত সদপ্শ ক্রিয়াভেদে বৈষমা হেতুভ্বতঃ ইতি ভাবঃ, ভথাচ ক্রুত্তাঃ "বিদ্যাকর্মনী সমন্বারভেতে পূর্ব্ব-প্রজাচ।" "যোনি মন্যে প্রপদান্তে শরীরহার দেহিনঃ। স্থানু মনে হনু সংঘাত্ত যথাক্রম যথা ক্রুত্ত্ব।" ইতাদিনঃ, সন্তাক্তদেহং বিদ্যা উপাসনা কর্ম যজাদি পূর্বপ্রজা প্রাণ্ড বীয় সংস্কারঃ, সমন্বারভেতে জন্গত্রত ইতি ক্রুত্তি পদানা মর্থঃ, স্থানুহং, যোনিং স্করন্ধন-তির্যাপুপাং, ত্রুত্তি ক্রুত্তি পদানা মর্থঃ, স্থানুহং, যোনিং স্করন্ধন-তির্যাপুপাং, ত্রুত্তি ক্রুত্তি বিধা প্রত্যেক মুক্ত্য-মধ্যমা-ধ্য ভাবেন ক্রি-প্রকারং॥৯॥ এতদের বিরু গাতে তত্ত্তি ক্রুত্তি সাম্যান মাত্যত্ত প্রাণ্ড ত্রুত্তি বিরুত্তি পার্থা প্রত্যাপাপ্রায়ে সাম্যান মাত্যত্ত প্রাণ্ড প্রাণ্ডিক্যে ক্রুত্তি পার্থা গ্রুত্বাধিকের ক্রুত্তি পার্থা গ্রুত্বাধিকের নরকং, তার চ তদ্ধিকাংপ্রো ভৌগোন ক্রুত্বে জাতে সতি প্রাণ্ড প্রাণ্ডাত্তাবঃ। সাম্যান মাত্যত্ত যোনে ক্রুপ্রিত্তাপ্র প্রাণ্ডা প্রাণ্ডাত্তাবঃ। সাম্যান সাম্যাক্র বেশনে ক্রুপ্রিত্তাপ্র প্রাণ্ডাত্তাবির সাম্যান্ত্র তির্যাক্র যোনে ক্রিত্রের প্রান্ত প্রাণ্ডাত্তাবির সাম্যান্ত্র সাম্যাক্রিকা তির্যাক্র যোনে ক্রিপ্রিত্তাপ্র প্রান্তি সাম্যান্ত্র সাম্যাক্র সাম্যান্ত্র তির্যাক্র যোনে ক্রিপ্রিত্তাবির প্রান্তি সাম্যান্ত্র সাম্যান্ত্র সাম্যান্ত্র তির্যাক্র যানেনি

তির্যাগ্যোন্যাঃ পৃথস্তাবো মনুষ্যার্থে বিধীয়তে।
গবাদিভাস্তথাশ্বেভ্যো দেবত্বমপি দৃশ্যতে ॥ ১৩ ॥
সোহয়মেতা গতীস্তাত ! জন্তুশ্চরতি কার্য্যবান্।
নিত্যে মহতি চাত্মান মবস্থাপয়তে দিজঃ ॥ ১৪ ॥
জাতৌ জাতশ্চ বলবান্ ভুঙ্ক্তেচাত্মা স দেহবান্।
ফলার্থস্তাত ! নিষ্পাৃক্তঃ প্রজালক্ষণভাবনঃ"—॥ ১৫ ॥

বিশেষ মাহ তিৰ্বাগ্যোন্যা ইতি—পৃথক্ভাব স্ততো মুক্তিঃ, মনুবাৰ্থে মনুষ্য জম লাভায়, বিধীয়তে বেদেন বোধাতে যতো গ্ৰাদিভাঃ গোজাতিত এব যজে উপযুক্তাদেবর মণি দৃখ্যতে প্রতাক্ষং উপলভাতে বহব্চ বানানে "পশু বৈ নীয়মানঃ স মৃত্যুৎ প্রাপশ্যৎ স দেবারারকাময় তৈতুৎ দেবা অক্রবন্ধেহি স্বর্গংবৈ তালোক∾ গময়িবল্মঃ" ইতি ॥ ১৩ ॥ সোহস্মিতি— যথা লোকে কার্য্যবাংশ্চরতি ইভস্ততঃ পর্যাটনং করেণতি তদ্রাহিতস্ক স্বস্থানে স্থ মান্তে এব মিহাপি সংসার মে,কং বিভি ভাবঃ, মহভি ব্রমণি আত্মানং জীবং অবস্থাপরতে উপাধিতাব্যান মহাকাশে ঘটাকাশ মিব প্রনীনং করোতি ॥১৪॥ এতদকরনে দোষ মাহ জাত ইতি-- সচ দেহবান দেহাভিমানী আত্ম জীবঃ, বলবান্ অদুফৌপগৃহীতঃ, জাতে। জাতঃ পুনঃপুন লব্ধ জনা, ফলার্থঃ সুথকামঃ, ভূত্তে দেহযোগজং ফল মিতি শেষঃ, এতেন ফলার্থিনঃ প্রবৃত্তি স্ততঃ কর্ম ততঃ ফল ভোগ স্ততো রাগঃ, অভুক্তে রাগানুদয়াৎ, ততঃ ফলার্থিতেতি সংসারাগিচেছদো দর্শিতঃ, यत निम्लाकः निर्शादः शृकः कलमः (यार्गः यनाः कला-সঙ্গীত্যর্থঃ, স' প্রজানাং লক্ষণং জ্ঞাপকং জ্মামরণাদিকং অসাধার নং ধর্মং ভাষ্যতীতি তথা নিজামকর্মকর্তা চিত্তশুদ্ধাতিশয়াৎ জন্মরণাদীন্ रদায়ান্ পশ্যতীত,র্থঃ, হদ্ধ: গুজানাং কার্যা মাত্রস্য লক্ষণং আনির্বাচনীয় ইং ভাবয়তী ভ তথা অসন্তঃ পুমান অধিধান জানেন ততা ধন্তম্য সংসাবস: মিথ বিশ্ব শুক্তি জভসোৰ পশাতীভাৰ্থঃ ॥ ১৫ ॥ ইদমাক্ষিপতি শব্দে ইতি—তদ্য প্ৰজালকণ লক্ষ্যা অনিৰ্ব্বচনীয়দ্য অহমৰ্থ প্ৰদিদ্ধ প্ৰজাৰূপ

যুধিষ্ঠির উবাচ ৷

"শব্দে স্পর্শে চ কপে চ তথৈব রসগন্ধরোঃ।
তস্যাধিষ্ঠান মব্যগ্রো বুহি সর্প ! যথাতথম্ ॥ ১৬ ॥
কিং ন গৃহ্লাসি বিষয়ান্ যুগপত্ত্বং মহামতে ! ।
এতাবছুচাতাঞ্জেক সর্বং পন্নগসন্তম!"—॥ ১৭ ॥

মৰ্প উবাচ।

'যদাত্মজব্য মাযুগ্মন্ ! দেহসংশ্রমণান্বিতম্। করণাধিষ্ঠিতং ভোগাছুপভুঙ্কে যথাবিধি,॥ ১৮॥

কার্য্যাস্য কি মধিষ্ঠানং তদা ইদ মর্থ প্রায়াদ্ধে শব্দাদ্দে বিষয়ে প্রাহ্যে সতি কিং তদাাধিষ্ঠানং যথা প্রকাশ্য প্রকাশকরো ঘট স্থায়ে। রধিষ্ঠানে ভূ-নভদী ভিন্নে দৃষ্টে তদ্বদহ মিদ মৰ্থনো রপ্যধিষ্ঠানে পৃথক্ বাচ্চে ইতি ভাবঃ॥১৬॥ যদিতু ভর্কমতে ইব প্রকাশ্য প্রকাশকােঃ স্থজানয়াে রেকাছাধিষ্ঠানত মিঞ্চং ভর্ষি তরদেব মুগপজ্জানাছ ভূপলব্ধি লিজেন **দিদং মনোনামক মাজাতিরিক্ত দ্রবাতর মভাপেলং তেন** বিনা আরিনি তৎসংযোগ বৈজাত্য সিদ্ধস। কার্য্য বৈজাত্যমোদিয়াসমূলা দিতি শহতে কিং নেতি—॥ ১৭ ॥ ছঃখাদি গুণানা মাশ্রয়ভূতং তৎ দেহ সংশ্রয়েণ স্কুল স্ক্ষা শারীররপোপাধ্যালম্বনেন হেতুনা অবিতং বুদ্যাদিখুক্তং ভবতি আত্মনি স্থাদিভানং অবস্থাত্রোপাধিকং ন স্বাভাবিকং অবস্থাত্র গতদ্য স্থাদে রবস্থাতার দর্শনাভাবাৎ, তত উপাধি বিশিষ্ট মাজ্মদ্রত করণৈ বক্ষ্যমাণে রধিষ্ঠিতং সং ভোগান্ ভুঙ্কে তথাচ আতিঃ " আত্মে-ব্রিয় মনোযুক্তং ভোক্তেতাত মনীবিণঃ।" ইতি, যথাবিধি কর্মানুরপন্ ॥ ১৮ ॥ জ্ঞানং রপদিগকারা ধীরতিঃ, তেন তৎসাধনানীন্দ্রিয়ানি গৃহত্তে, বুদ্ধিঃ কর্ত্রাদি ধর্মকং বিজ্ঞানং "বিজ্ঞানং যজ্ঞং তন্তে" ইতি জ্ঞাতঃ, মনঃ সর্কবাহ্যকরনানু আহক মতঃ করন০১, ভোগাধিকরণে

জ্ঞানকৈবাত বৃদ্ধিক মনশ্চ ভরতর্ষভ!।
তদা ভোগাধিকরণে করণানি নিবোধ মে॥ ১৯॥
মনসা তাত। পর্যোতি ক্রমশো বিষয়ানিমান্।
বিষয়ায়ত নস্থেন ভূতাত্মা ক্ষেত্রনিঃস্থতঃ ॥ ২০॥
তত্র চাপি নরব্যান্ত! মনো জন্তোর্কিধীয়তে।
তক্মাদ্যুগপদত্রাস্য গ্রহণ নোপপদাতে ॥ ২১॥
স আত্মা পুরুষব্যান্ত! ভূবো রভর্মান্তিতঃ।
বুদ্ধিং দ্রব্যেষু স্কতি বিবিধেষু পরাবরাম্॥ ২২॥

দেছে, এতেন বিকার ভাজাং কত্রাদীনাং করণত্বচনেন তদিতর দকর্তাত্মক মধিষ্ঠানং বিবেচিতা। ১৯॥ দ্বিতীয় প্রশ্নেত্তির মাহ মনসেতি— বিষয়স্য আছিকত্বেনায়তনং স্থানং ইন্দ্রিয়ং তৎস্থেন মনসা করণেন ভূতাত্ম জীবঃ ক্ষেত্রাৎ তেন।তন দারেণ নিঃসূতঃ ক্রমণ ইমান্রপাদীন্ পর্বেণ্ডি, অনেন " অন্যত্ত মন। অভূবং নাঞ্জে, বং অন্যত্তমন। অভূবং না পশ্যং" ইত্যাদানু ভবস্থা আচহৈব দৰ্শিতবাৰানো নাম ব্যাপাকং করণং সিদ্ধায় ॥ ২০॥ তত্ত্রতি—তচ্চ মনঃ তত্র বিষয় গ্রহণে কর্ত্তব্যে স্তি বিধীয়তে বুদ্ধা কর্ত্র্যা ব্যাপারাবিষ্টৎ ক্রিয়তে ২তো ব্যাপার কাল ভেদাৎ মনো সুগপৎ বিষয়ার গৃহাতি ইতার্থঃ ॥২১॥বুদ্ধে রপি পরপ্রের্যার মাহ দইতি—যো वृक्ति मन रेक्टिरें करते कर्पाउः मन् (ङाका खाउद (ङाक्ट्राकः म আত্মা জবে৷ রন্তর মাজিত ইতি গুরক্তযুক্ত্যা তহুপাসকম্ম তহুপলব্ধি স্থান मुक्तः, त्रीकः जराष्ट्र क्र शामिष्ट्र थारश्यू मुक्कि (श्रेतशकि व्यवसाख्डेन লৌহং, পরাবরাং আত্মানাত্ম বিষয়ত্বেন উত্তমাধমাং কুলাল শ্চক্রমিব বুদ্ধিঃ ব্যাপারান্টিইটব মনো ব্যাপারয় ও আত্মাতু ন তথেতার্থঃ॥ ২২॥ নন্বুদ্ধে-. রেব কর্ত্ত্বন সর্বব্যবহার নির্বাহে সাতি কিং ক্লীব সদৃশেনাত্মান্তরেণ ইত্যাশফাহ বুদ্ধেরিতি—বুদ্ধি-তদভাবয়ো বা বেদনা জ্ঞানং সাক্ষিরপং বুধৈ ব্যোগিভি বুলেঃ সকাশাৎ বিবিক্ততয়া দৃশ্যতে যুক্তাাহন ভবেন চ গৃহাতে, এবঃ তদেব জানং ক্ষেত্ৰজ্ঞভাবন আত্মপ্রকাশকো বিধি রজ্ঞাত

বুদ্ধে রুত্তরকালাচ্চ বেদনা দৃশ্যতে বুখৈ:। এষ বৈ রাজশার্দিল ! বিধিঃ ক্ষেত্রজ্ঞভাবনঃগ—॥ ২৩ । যুদিন্তির উবাচ।

"মনসশ্চাপি বুদ্ধেশ্চ বুহি মে লক্ষণং পরম। এতদব্যাত্মবিত্যাশ পরশ কার্যাং বিধীয়তে" ॥ ২৪॥ সপ উবাচ।

"বুদ্ধি রাত্মানুগাতীৰ উৎপাতেন বিধীয়তে। তদাশ্রিতা হি সা জ্বেয়া বুদ্ধিস্তলৈয়ৰণী ভবেৎ ॥ ২৫॥

জ্ঞাপনং অপ্রকাশ মিতার্থঃ, নছি লয়েদিয়বত্যা বুদ্ধে রাজ্ত্বং সংভবতি কুতনাশাহ কুতাভ্যাগম প্রসন্ধাৎ ইত্যন্ত্র বিশুরুঃ । ২০ ॥ মনস ইতি— বুদ্ধিমনসো রন্যতর্দ্য কর্তৃত্বং করণত্বং বাস্তু কি মৃভয় কম্পানর। ইত্যাশরঃ ॥ ২৪॥ কার্যাভেদাত্মণ কম্পাত ইত্যাহ বুদ্ধি রিভি—বুদ্ধি রভীব আত্মা-মুগা অত্যন্তং আত্মনা দহ তাদান্তাং প্রাপ্তা লোছপিও ইণামিনা, অতঃ সা আত্ম হৈতন্যাত্ৰবিদ্ধা, উৎপাতেন উৎক্ৰাস্তাদিনা বিধীয়তে বলীক্ৰিয়তে उथा (हारभाउवका। अनुगंक आञ्चाभि छेरभाउवान् कमहस्र हाकमा ন্যায়েন ভৰতি, এতেন বুদ্ধাত্মনো রন্যোন্যাধ্যালে। দর্শিতঃ, ইদ মেবাজিতা তার্কিকা শুরো ধর্ম ধর্মিভাব মুপরন্তি, ননু অধাক্ততা মুপহিতেছ্ উপাধি ধৰ্মাঃ ঘটাকাশে ইব ঘট নাতি ৰ্বতু বিপন্নীত মপি ঘটে আকাশ গত ভাল্পৰ্যাদে বদৰ্শনাদিত্যাশকাহ তদাভিতাহি সাজেয়েতি-প্ৰসিদ্ধং হি আত্মচৈতন্যং বুদ্ধা আত্মিতং অতএব বৌদা বুদ্ধি রেব চেতনেতি वन्ति, बहेग्टकार्त्र मिलि नृकोट्खिन नेस वस्त्रा जाकान धर्ममा बहेर्साम मर्भनार, नन् व्यव्हानामात्रमन् व्यत्नानाधर्यका त्ववधाम छेउ धर्व-र्लातिश ?—व्यारमा धर्मिरनाः मममरच्न देवजाशिकः, व्यरका ब्राजीविश মিৰ্যাত্বাপত্তা৷ শ্নাশ্বেতাপতি রিত্যাশকাহ—বুদ্ধি তলৈবিদী তবেদিতি —वृत्तिः अत्रशिकार्थ माञ्चान मिथलान मिल्क्डि वृज्ज् दश देव वृज्जूर, उशाह धर्मानात्मवात्मात्मात्मा नष्ट्र धर्मित १३, एरको तक एतमाव तकरङ শুকে রধ্যাসভিবিৎ, অতো নেকি দেবিষয় প্রসম্বঃ ॥২৫॥ ননু স্বাপদ্যতাং

বুদ্ধি রুৎপদ্যতে কার্য্যান্মনস্তৃৎপদ্মমেব হি।
বুদ্ধে গুণিবিধানেন দ্ধ মনস্তদাণুণবস্তবেৎ ॥ ২৬॥
তত্তিশেষণং তাত! মনোবুদ্ধ্যোর্ঘদন্তরম্।
ত্বমপ্যত্তাভিসংবুদ্ধঃ কথং বা মন্যতে ভবান্!"—॥ ২৭॥

দ্বৈতং, নতু সৰ্ব্ব প্ৰমাণ সিদ্ধায়া বুদ্ধে মিথাবিং বক্তৃংশকাং ইত্যাশক্ষাহ वृक्षि कल्लागाट कार्यानि - विषया खात्र मरायानातः कार्यान वृक्षि ৰুৎপদ্যতে ভন্নির্জ্ঞো নিবর্ত্ত ইতি বুদ্ধে রনিভত্তেং প্রসিদ্ধং, নিভাগনি-তায়ে। শ্চাত্মবুদ্ধোর্ন ধর্মধর্মিভাবঃ সিদ্ধাতি, ঘটে যাবজপাভাবস্যাদর্শনে নাজনি যাবদুঃখাভাব লক্ষণত মোক্ষনাসিদ্ধেঃ, নাপি সংযোগঃ, সহি উভয় কর্মজোবাহন্যভরকর্মজো বা মলয়োঃ পক্ষিরক্ষয়োর্বা দৃষ্টঃ, न ह विजून। जाजन। जानृगः मश्यात्भा वृत्त विख जाकात्मत्नव घहेमा, यजु जरशांत्रि मशरयां भ मञ्जाल नाक्ष्य जन्यू कि धूनाः, लेवि जावामा जः, তম্মাদ্রজ্জুরগয়ো রিবানির্বাচনীয় স্তয়ো: সমন্ধ ইতি রক্ষুবদাত্মা নিত্যো রক্ষুরগবদাবিভাবতিরোভাববতী বুদ্ধি মিথ্যেতি যুক্ত মুৎপ্রাখামঃ, নদেবং বুদ্ধে রাক্ষিকত্বে তদ্ধ্যাণাং হঃখাদীনা মপ্যাক্ষিকভাপাতাং কৃত नामाकृजाजानाम समर्वेष्ट्र हेजामङ्गाह मनस्ट्रश्वरमरहीजि—दूर् ৰ্নাশেপি তজ্জন্য বাসনা ভদ্তসন্তানাত্মকং মনোহন্তাৰ, ততক পূৰ্ববাস নয়া বৃদ্ধি কংপদ্যতে, বৃদ্ধ্যা চ বাসনা বিবৰ্দ্ধত ইত্যনাদি রন্তা চৈষা বৃদ্ধি বাসনয়ো বাঁজাকুরবৎ সন্ততিঃ. তদেতদাহ বুদ্ধে রিতি-গুণ বিধানেন স্থাদ্যাকারপরিনাম ধারণেন, গুণবিধিনাস্তীতি পাঠে—গুণবিধি ৰুপাদান ছেনান্তি কিন্তুপাদেরত্ব মেব, মনস্থ্পাদানং পটতন্ত্ব দনরো ভেঁদ ইত্যৰ্থঃ, তদুগুণবৎ তদ্বাসনা যুক্তম্॥ ২৬ ॥ বিশেষণ ে ব্যাবৰ্ত্তকং, তস্মাৎ ফার্য্য ভেদাৎ মনোবুদ্ধ্যে। র্ভেদঃ, তেন চ বাসনা বীজ নাণাৎ সংসারাঙ্কুরো ন জায়ত ইতি সিদ্ধাংশ।

^{*} গুণবিধিনান্তীতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

• যুধিষ্ঠির উবাচ।

''অহো বৃদ্ধিমতাং শ্রেষ্ঠ ! শুভা বৃদ্ধিরিয়া তব। বিদিতং বেদিতব্যং তে কম্মান্মামনুপূচ্চিমি ! ॥ ২৮ ॥ সর্ব্বজ্ঞ ত্বাং কথং মোহ আবিশৎ স্বর্গবাসিনম্। এবমদুতকর্মাণমিতি মে সংশ্যো মহান্ত্র । ২৯ ॥

সর্প উবাচ।

"স্থাজ্ঞমপি চেচ্ছুর মৃদ্ধির্মাহয়তে নরম।
বর্ত্তমানঃ স্থাপে সর্ব্বো মুহাতীতি মতির্মম॥ ৩০॥
সোহহমৈশ্বর্যমোহেন মদাবিকৌ মুধিন্ঠির!।
পতিতঃ প্রতিসম্বুদ্ধস্তান্ত সমোধয়ামাহম্॥ ৩০॥
কৃতং কার্যাং মহারাজ! স্বয়া মম পরস্তপ!।
ক্ষীণঃ শাপঃ স্কুক্টো মে স্বয়া সংভাষ্য সাধুনা॥ ৩২॥
অহং হি দিবি দিব্যেন বিমানেন চরন্ পুরা।
অভিমানেন মন্তঃ সন্ কিঞ্চিল্লান্য মহিন্তয়ম্॥ ৩০॥
তক্ষমিদেবগন্ধর্ব মক্ষরাক্ষসপল্লগাঃ।
করাল্লম প্রযাভিত্তি সর্বের তৈলোক্যবাসিনঃ॥ ৩৪॥
চক্ষ্যা বং প্রপশ্যামি প্রাদিনং পৃথিবী পতে!। শ
তদ্যা তেজো হরামান্ত তদ্ধি দৃষ্টে বর্ত্তাং মম॥ ৩৫॥
তক্ষমিণিং সহস্রং হি উবাহ শিবিকাং মম।
স্বমা মপনয়ো রাজন্। ভংশয়ামাস বৈ ভায়ঃ॥ ৩৬॥

॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ জাতমপি জানং ঐশ্বর্গজাদপারশ্বতীতি জাত-তবোপি শমাদীনাশ্রেদিতি শেষগ্রন্থতাৎপর্য্য ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥

^{*} পৃথিবীশ্বর ইতি কঃ পুস্তকে।

তত্র হাগস্তাঃ পাদেন বহন স্পৃষ্টো ময়া মুনিঃ। অগস্তোন ততোহস্মাক্তো ধ্বংস সর্পেতি বৈ রুষা। ৩৭॥ ততস্ত্রশাদিমানাগ্রাৎ প্রচ্যুতক্ষ্যুত লক্ষণঃ #। প্রপতন্ বুবুধেত্মান ব্যালীভূত মধোমুখম। অযাচন্ত মহং বিপ্ৰ~ শাপস্যান্তো ভবেদিতি ''॥ ৩৮ ॥ * সর্প উবার। প্রমাদাৎ সংপ্রমূচ্ন্ত ভগবান কল্ক মইসিং—। ততঃ স মা মুবাচেদং প্রপতন্তং কুপাশ্বিত: ॥ ৩৯ ॥ যুধিন্তিরো ধর্মরাজঃ শাপাত্ত্বাং মোক্ষরিষ্যতি। অভিমানস্ত ঘোরস্ত পাপস্ত চ নরাধিপ!॥ 8•॥ करल कीरा महाताज ! कलः भूगमवाभामि। ততো মে বিশ্বয়ো জাতন্তদ্ধী তপসো বলম্॥ ৪১॥ ব্ৰহ্ম চ ব্ৰাহ্মণত্বঞ্চ যেন ত্বাহ মচুচুদ্ৰ। সত্যুৎ দমস্তপো দান মহিংসা ধর্ম্মনিত্যতা ॥ ৪২ ॥ সাধকানি সদা পুংসা ন জাতি র্ন কুলংনুপ!। অরিফ এষ তে ভাতা ভীমসেনো মহাবল:। স্বস্তি তেইস্ত মহারাজ ! গমিষ্যামি দিবং পুনঃ"—॥ ৪৩ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ। ইত্যুক্ত্বাজগরং নেহ॰ মুক্ত্বা স নহুষো নূপঃ। দিবাং বপুঃ **সমাস্থায় গতস্ত্রিদিব সেব হ ॥ ৪৪** 🛭 যুধিষ্ঠিরোহপি ধর্মাত্মা ভাত্য ভীমেন সঙ্গতঃ।

> * শ্বতভূষণ ইতি কঃ। * নাস্তোষ পাঠঃ ক পুস্তকে।

॥ ৩৭॥ বুরুধে আত্মানং (আর্বঃ)॥ ৩৮,॥ ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ ত্রাকণহং ত্রন্ধ-

ধৌম্যেন সহিতঃ শ্রীমানাশ্রমণ পুনরাগমৎ ॥ ৪৫॥

বিল্লুক্ণং স্পেফার্ক্মন্য । ৪২ । ৪৩ । ৪৪ । ৪৫ ।

ততো দিকেন্ডা: সর্বেন্ডা: সমেতেন্ডা যথাতথম।
কথয়ামাস তৎ সর্বাং ধর্মরাজাে যুদিন্তির: ॥ ৪৬ ॥
তচ্ছুত্বা তে দিজা: সর্বে ভাতরশ্যন্ত তে ত্রয়: ।
আসন্ সূত্রীভিতা রাজন্ ! ক্রৌপদী চ যশস্বিনী ॥ ৪৭ ॥
তে তু সর্বে দিজভোষ্ঠা: পাগুরানাং হিতেপায়া ।
মৈরমিতাক্রবন্ ভীমং গর্হান্তোহস্য সাহসম্ ॥ ৪৮ ॥
পাগুরাস্ত ভয়ানাকুং প্রেক্ষ্য ভীমং মহাবলম্ ।
হর্ষ মাহারয়াঞ্চকুর্বিজহ্শুচ মুদা যুতা: "—॥ ৪৯ ॥
ইত্যারনাকে পর্বন্যাজনর পর্বনি ভীমমোচনে একাশীত্য
ধিকশততমোহধ্যায়: সমাপ্তঃ ॥ ১৮১ ॥
সমাপ্তঞ্যজনরপর্বা ।

সমাপ্তঞ্চাজগরপর।

॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে একাশীত্যধিক শত তমেহধ্যায়ঃ ॥ ১৮১ ॥

নিদাঘান্তকরং কালঃ সর্বভূতস্থাবহং।
তত্তিব বসতাং তেষাং প্রার্ট্ সমভিপদ্যত ॥ ১॥
ছাদয়ন্তো মহাঘোষাঃ খংদিশক বলাহকাঃ।
প্রবেষু দ্বিবারাত্র মদিতাঃ সততং তদা ॥ ২॥
তপাত্যয়নিকেতকে শতশোহথ সহস্রশং।
অপেতার্কপ্রভাজালা সবিত্যাদ্বিমলপ্রভা॥ ৩॥
বিরুদ্ধনারা শর্মী মন্তবংশসরীস্থপা।
বভূব প্রসা সিক্তা শান্তা সর্বমনোরমা ॥ ৪॥
ন স্ম প্রজ্ঞায়তে কিঞ্চিদন্তসা সমবস্তৃতে।
সমং বা বিষমং বাপি নদ্যো বা স্থাবরাণি চ॥ ৫॥
ক্রেরো মহাবেগাঃ শ্বসমানা ইবাশুগাঃ।
সিন্ধবং শোভয়াঞ্জুঃ কাননানি তপাত্যয়ে॥ ৬॥

নিদাঘেতি—উজ্ঞামেব বৃদ্ধবিদ্যাং মার্কণ্ডের মুখেন নানাখ্যান পূর্ব্বকং প্রপঞ্চির্যান্ ভত্নপোদ্যাভবেন কাম্যকপ্রবেশং ভাবদাহ নিদাঘান্তব্বর কাল ইত্যাদিনা— ॥ ১ ॥ অসিতাঃ কৃষ্ণবর্ণাঃ ॥ ২ ॥ তপাত্যয়ে বর্বাহ্ম, নিকেতাইব মগুণীভূতা ইত্যর্পঃ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ সম্বস্তুতে আচ্ছাদিতে ছাবরাণি ভূতনাদীনি ॥ ৫ ॥ আশুগাঃ বাণবজীব্রেগাঃ, সিশ্ধবঃ নদ্যঃ শোণঘর্ষরাদ্যাঃ ॥ ৬ ॥

^{*} বিরুচ শক্ষাধরণীতি কঃ।

নদতা > কাননাম্ভেষু জায়ত্তে বিবিধাঃ স্বনাঃ। রুফিভিশ্ছাদ্যমানানাং বরাহ্মৃগ পক্ষিণাম্॥ । ॥ স্তোককাঃ শিখিনদৈব পুৎস্কোকিলগলৈঃ সহ। মন্তা: পরিপতন্তি শা দর্দেরেটেশ্চব দর্পিতা: । ৮॥ তথা বছবিধাকারা প্রার্ন্মেঘানুনাদিতা। অভ্যতীতা শিবা তেষাৎ চরতাং মরুধন্বস্থ ॥ ১॥ ক্রৌঞ্হৎসগণাকীর্ণা শরৎ প্রযুদিতাহভবৎ। ৰাচকক্ষবনপ্ৰস্থা প্ৰসন্মজলনিমগা॥ ১০॥ বিমলাকাশনক্ষতা শরক্তেষাং শিবাভবৎ। मुनाविक्रममाकीनी পाखवानाः महाज्ञनाम् ॥ '२०॥ पृশास्त्र भारत्रक्रमः क्षणा **क्षत्रभो**ठलाः । গ্রহনক্ষত্রসকৈশচ সোমেনৈব বিরাজিতাঃ । ১২॥ কুমুদৈ: পুগুরীকৈশ্চ শীতবারিধরা: শিবাঃ। नहीः शुक्रतिगीरेक्टव प्रमुखः समलक्ष्रुणः ॥ ১ ७ ॥ আকাশনীকাশতটা ে তীরবানীরসঙ্কুলাম্। বভূব চরতাং হর্ষঃ পুণ্যতীর্থাং সরস্বতীম্। ১৪॥ তে বৈ মুমুদিরে বীরাঃ প্রসন্নসলিলাং শুভাম। পশ্যন্তো দৃতধন্থানঃ পরিপূর্নাং সরস্বতীম্ ॥ ১৫ ॥ ভেষাং পুণ্যতমা রাত্রিঃ পর্বসঙ্কো স্ম শারদী। ত ত্রৈব বসতামাসীং কার্ত্তিকী জনমেজয় ! ॥ ১৬॥

॥ ৭ । ভোকাএব ভোককা শ্চাতকাঃ "ভোক—ব্রিছপে চাতকে প্মান্ শ ইতি মেদিনী, দহ্বাঃ মণ্ডকাঃ ॥ ৮ ॥ মৰুধ্যস্থ গিরেঃ শুক্ক ছানের ॥ ৯ ॥ রুচ্ককাণি বত্তৃণানি ধনানি প্রস্থাকোদিতানি সান্নি চ যন্তাংসা তথা "প্রস্থো ব্রিস্থাং মানভেদে সানা বত্যুক্ত বস্তান।" ইতি মেদিনী ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ নীকাশঃ সদৃশঃ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ কার্তিকী কৃত্তিকা যুক্তা পৌশ্মাসী ॥ ১৩ ॥ যোগং যুজ্যতে রখাদা বিভি ব্যুৎপত্যা বাহনা দিকং, পুণ্যকৃদ্ধির্ঘহাসবৈত্ব পাপের ।
তৎ দর্বং ভরত শ্রেষ্ঠাঃ সমূহু র্যোগ মুক্তমন্ ॥ ১৭ ॥
তিমিন্সাভুগদয়ে তিন্মিন্ ধৌন্যেন সহ পাপ্তরাঃ ।
স্থাতঃ পৌরোগবৈশ্চৈব কামাকং প্রযন্ত্রনম্ ॥ ১৮ ॥
ইত্যারণাকে পর্কাণি মার্কপ্রেয়সমস্যাপর্কাণি কাম্যকপ্রত্যাগমনে দ্বাশীত্যধিকশতত মোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮২ ॥

বৈশন্দারন উবাচ।
কামাকং প্রাপ্য কৌরবাা * যুধিষ্ঠিরপুরোগমাঃ।
কুতাতিথা মুনিগণৈ নিষেত্ন: সহ কুষ্ণরা॥ ১॥
ততন্তান পরিবিশ্বস্তান বসতঃ পাণ্ড্নন্দনান্।
ব্রাহ্মণা বহবস্তত্র সমন্তাৎ পর্যাবারয়ন্॥ ২॥
অথাব্রবীদ্বিজঃ কন্চিনর্জ্কুনস্য প্রিয়ঃ সথা।
স এষাতি * মহাবাহ্মণী শৌরি রুদারধীঃ॥ ৩॥
বিদিতা হি হরে যুঁয় মিহায়াতাঃ কুরুদ্ধাঃ।
সদাহি দর্শনাকাক্ষী শ্রেমোহন্বেষী চ বো হরিঃ॥ ৪॥
বছবৎসরজীবা চ মার্কপ্রেয়ো মহাতপাঃ।
স্বাধ্যায়তপসা যুক্তঃ ক্ষিপ্রং যুম্মান্ সমেষ্যতি॥ ৫॥

সমূতঃ আরোপিতভারং ক্তবস্তঃ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বাণীত্যধিক শত তমেহধ্যায়ঃ ॥ ১৮২ ॥

কাম্যকমিতি—॥১॥ ২ ॥ শেগির: কৃষ্ণ:॥ ৩॥ আয়াতা বিদিতা ইত্যৰুদ:, বঃ মুম্মাকং শ্রেরোহৰেমীতি সম্বন্ধ:॥ ৪॥ ৫॥

^{*} কচিৎ " কৌরব্য ! " ইত্যনেন জনমেজয়ঃ সম্বোধ্যতে। * ''এষ্যতীহ" ইতি ক পুস্তকৌ কচিৎ পুস্তকে।

তথৈব ব্রুবতস্তুস্য প্রত্যদৃশ্যত কেশবঃ। শৈব্যস্থ গ্রীবযুক্তেন রথেন রথিনাম্বরঃ। ৬। মঘ্বানিব পৌলোম্যা সহিতঃ সত্যভাময়।। উপায়াদেবকীপুজো দিচৃক্ষ কুরুসন্তমানু॥ १॥ অবতীর্য্য রথাৎ ক্লফো ধর্ম্মরাজণ যথাবিধি। वयरन भूति छ। धीभान् जीभक्ष विनायतम्॥ ৮ ॥ পূজয়ামাস ধৌম্যং স যমাভ্যামভিবাদিতঃ। পরিম্বজ্য গুডাকেশং দ্রৌপদীং পর্য্যসান্ত্রহং॥ ৯॥ স দৃষ্টা ফাল্গুনং বীরং চিরস্য প্রিয়মাগতম্। পর্যামজত দাশাহঃ পুনঃ পুন ররিন্দমঃ # ॥ ১০ ॥ তথৈব সত্যভামাপি দ্রৌপদীং পরিষস্বজে। পাগুবানাং প্রিয়াং ভার্যাা কৃষ্ণস্য মহিষী প্রিয়া॥ >>॥. ততত্তে পাওবাঃ সর্কে সভার্য্যাঃ স পুরোহিতাঃ। আনর্চ্চঃ পুগুরীকাক্ষং পরিবক্রশ্চ দর্ব্বশঃ॥ ১২॥ কুফস্ত পার্থেন সমেত্য বিদ্বান্ ধনঞ্জয়েনাস্থরতজ নেন। বভৌ যথা ভূতপতির্মহাআ, সমেত্য সাক্ষান্তগবান গুহেন॥ ১৩॥ ততঃ সমস্তানি কিরীটমালী, বনেযু রুক্তানি গদাগ্রজায়। উক্ত্রা যথাবৎ পুনরম্বপৃচ্ছৎ, কথং সুভদ্রা চ স চাভিমনুয়:॥ ১৪॥

॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ভূতপতিঃ ক্সঃ, গুহেন ক†র্তিকেরেন ॥ ১৩॥ ১৪॥ মধুহা মধু স্দনঃ।

^{* &#}x27; অবিন্দৃষ্ণ ত ক-পুস্তকন্ত I

স পূজয়িত্বা মধুহা যথাবৎ, পার্থঞ্চ কুফাঞ্চ পুরোহিতঞ্চ। উবাচ রাজানমভিপ্রশ্~সন্ যুধিষ্ঠিরং তত্ত্র সংহাপবিশ্য॥ ১৫॥ ধর্মঃ পরঃ পাপ্তব ! রাজালাভাত্তমার্থমাছস্তপ এব রাজন !। সত্যাজ বাভ্যাৎ চরতা স্বধর্মৎ জিতস্থা২্যঞ্পরশ্চ লোক: ॥ ১৬॥ অধীতমগ্রে চরতা ব্রতানি, সম্যন্ধনু র্ফেদ মবাপ্য কুৎস্বম্। ক্ষাত্রেণ ধর্মেণ বহুনি লকুা, সর্বে হ্রাপ্তাঃ ক্রতবঃ পুরাণাঃ ॥ ১৭ ॥ ন গ্রাম্যধর্মেয়ু রতিস্তবাস্তি কামান্ন কিঞ্চিৎ কুরুষে নরেন্দ্র !। ন চার্থলোভাৎ প্রজহাসি ধর্মৎ, তত্মাৎ স্বভাবাদসি ধর্মরাজ: ॥ ১৮॥ দানগু সভ্যঞ্ তপশ্চ রাজন্! শ্ৰহ্ণাচ বুদ্দিশ্চ ক্ষমা ধ্ৰতিশ্চ। অবাপ্য রাফি গুণি বস্থুনি ভোগান্, এষা পরা পার্থ! সদা রতিন্তে। ১৯ በ यमा जरनोचः कुक्काक्रलानाः কুফাং সভায়া মবলা মপণাৎ। অপেতধর্মব্যবহাররত্ত^, সহেত তৎ পাণ্ডব! কন্তুদন্য:॥ २०॥

॥ ১৫॥ ত'তার্থ পর্মার্থ । ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ এবা দানাদিরপা, সদারতিঃ নিতাৎ প্রীতিবিষয়ঃ॥ ১৯॥ ২০॥ নিগ্রহণে মন্তাঃ স্ম ইতি

অসৎশয়ং সর্বাসমৃদ্ধকামঃ, ক্ষিপ্রত প্রজাঃ পালয়িতাসি সমাক। ইমে বয় নিগ্ৰহণে কুৰাণাং, যদি প্রতিজ্ঞা ভবতঃ সমাপ্তা ৷ ২১ ৮ (धोमाक जीमक यूधिकितक, यदमो ह कृष्णक प्रभार्शनः । উবাচ দিষ্ট্যা ভবতাং শিবেন, প্রাপ্তঃ কিরীটা মূদিতঃ ক্লতাস্ত্রঃ ॥ ২২ ॥ প্রোবাচ ক্লফামপি যাজ্ঞসেনীং, দশাহভর্তা সহিতঃ মুহ্নদ্ভিঃ। पिकेश मम्बामि धनश्चरत्रन, সমাগতেতােব মুবাচ রুষ্ণঃ ॥ ২৩॥ কুষে ! ধনুর্বেদরতিপ্রধানা,-স্তবাত্মজান্তে শিশবং সুশীলা:। मिक्टः मरेनवाहितिष् श्रूक्षि, শ্চরন্তি পুক্রান্তব যাজ্ঞদেনি। ॥ ২৪॥ রাজ্যেন রাটেট্র দ নিমন্ত্রামাণাঃ, পিতা চ কুষ্ণে! তব সোদরৈশ্চ। भ युद्धरमनमा न माञ्जानाः, গুহেষু বালা রতিমাপ্লবন্তি॥ ২৫॥ वानर्ज्याचित्र्याः निर्वन, গত্বা ধন্তর্কেদরতিপ্রধানাঃ। তবাত্মজা রফিপুরং প্রবিশ্য, न रेनदर्ज्ञाः म्पृह्यस्य क्रस्थः ॥ २७ ॥ শেষঃ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ তবাত্মজাঃ প্রতিবিদ্ধাদয়ঃ

আনর্তং দারকা দেশন্ ॥ ২৬ ॥ যথা বং অর্হসি তথা স্করাপ্যইতি যথা

যথা স্বমেবাৰ্হসি তেমু রুত্তং, थारगाळ मार्या ह यरियन कुछी। তেম্বপ্রমাদেন তথা করোতি. **उटेश्य जुऱ्रक मना ऋ**ख्या ॥ २**१**॥ যথাহনিরুদ্ধন্য যথাভিমন্যো,-र्यथा स्नीथमा यरेथव जात्नाः। তথা বিনেতা চ গজিশ্চ ক্লফে!,-তবাক্সজানামপি রৌক্মিণেয়ঃ। ২৮॥ গদাসিচর্মগ্রহণেষু শ্রান্, অন্তেমু শিক্ষান্ত রথাশ্বযানে। সম্যাথিনেতা বিনয়েদতক্রাং,- * স্তাংশ্চাভিমন্ত্যঃ সততং কুমারঃ॥ ২৯॥ স চাপি সম্যক প্রণিধায় শিক্ষাং, শস্তাণি চৈষাং বিধিবৎ প্রদায়। তবাল্লজানাঞ্চ তথাভিমন্যোঃ, পরাক্রমৈস্তব্যতি রৌক্সিণেয়: ॥ ৩ । যদা বিহারং প্রসমীক্ষমাণাঃ, প্রয়ান্তি পুজান্তব যাজ্ঞদেনি!! একৈক মেধা মনুষান্তি তত্ৰ, রথাশ্বথানানি চ দন্তিন্দ "-" ৩১ ॥ অথাত্রবীদ্ধর্মরাজন্ত কুফো, কন্তী প্রযোক্ত, মর্হতি তথা স্বভ্যাপার্হতি যথা চার্হতি তথৈব করোতি চেতি সম্বন্ধঃ ॥ ২৭॥ বিনেতা শিক্ষয়িতা, রেছিলেরঃ প্রভ্যানঃ ॥ ২৮॥ ২৯ 📭

11 20 1 00 11

^{*} অতন্ত্ৰীন্ ইতি কঃ।

मभाईरयाधाः कुकुतां काका मा এতে নিদেশং তব পালয়ন্ত,-স্তিষ্ঠস্ক যতেচ্ছাদি তত্র রাজন ! ॥ ৩২ ॥ আবর্ত্তাং কার্মা কবেগবাতা, হলাযুধপ্রপ্রহণা মধুনাম। সেনা তবার্থেষু নরেন্দ্র ! যন্তা, সসাদিপত্তাশ্বর্থা সনাগা—॥ ৩৩॥ প্রস্থাপ্যতাৎ পাণ্ডব! ধার্ত্তরাফ :, স্প্রযোধনঃ পাপক্লতাং বরিষ্ঠঃ। ममाञ्चलः * मञ्जलान्क, ভৌমস্য * সৌভাধিপতেশ্চ মার্গম্॥ ৩৪ ॥ কামং তথা তিষ্ঠ নরেক্র। তাম্মন, যথা কুতন্তে সময়ঃ সভায়াম। मानाईत्यादेवन इकातित्यावः, প্রভীক্ষতাং নাগপুর্ ভবন্তম্।। ৩৫॥ ব্যপেতমন্ত্যু র্বাপনীতপাপ্যা, বিহ্নত্য যত্রেচ্ছসি তত্র কামসু। ততঃ প্রসিদ্ধং প্রথমং বিশোকঃ, প্রপৎস্যাসে নাগপুর সরাফ মৃ,,— 🕯 ॥ ৩৬ ॥

॥ ৩২ ॥ মধ্নাৎ মাধুরাণাং, হলাযুধঃ প্রছণো নিরন্তা যন্তা: সা সেনা যন্তা সল্লা: সাদিঃ অশ্বোদা॥ ৩৩॥ ভোমতা নরকাত্রতা, সৌভাধিপতেঃ শ্রিতা॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬॥

^{*}কপুস্তকেতু ''সহাত্রবন্ধঃ" ইতি পাঠঃ।

 [&]quot;নৌভদা" ইতি ক-পুস্তকদা।

^{* &#}x27;সুরাফ্রু ইতি ক-গা

তত্ত্বদাজায় মত্ মহাত্মা, যথাবছুক্তং পুরুষোত্তমেন। প্রশাস্য বিপ্রেক্য চ ধর্মারাজঃ, ক্বতাঞ্জলিঃ কেশ্বমিত্যুবাচ ॥। ৩৭॥ ''অস∽শয়ং কেশব। পাণ্ডবানাং, ভবান্ গতিস্তু চ্ছরণা হি পার্থাঃ। কালোদয়ে তচ্চ ততশ্চ ভূয়ঃ, কৰ্ত্তা ভবানু কৰ্দ্ম ন সংশয়োহস্তি॥ এ৮॥ যথাপ্রতিজ্ঞং বিহ্নতশ্চ কালঃ, সর্কাঃ সমা ধাদশ নিজ নেষু। অজ্ঞাতচর্য্যাং বিধিবৎ সমাপ্য, ভবদাতাঃ কেশ্ব! পাণ্ডবেয়াঃ॥ ৩৯॥ এবৈব বুদ্ধিৰ্জ্জুষতাৎ সদা স্বাং, সত্যে স্থিতাঃ কেশব। পাওবেয়াঃ। महानधर्माः मजनाः महादाः, সবান্ধবান্তুচ্ছরণা হি পার্থাঃ "--॥ ৪०॥ रिवनक्शातन छेगाह।

তথা বদতি বাফে য়ে ধর্মরাজে চ ভারত !।

অথ পশ্চান্তপোর্দ্ধা বছবর্ষসহস্রধৃক্ ॥ ৪১ ॥
প্রত্যদৃশ্যত ধর্ম্মাত্মা মার্কণ্ডেয়ো মহাতপাঃ।
অজরশ্চামরশ্চৈব ৰূপৌদার্য্যগুণাহ্বিতঃ ॥ ৪২ ॥ ।
ব্যদৃশ্যত তথাযুক্তো যথাস্যাৎ পঞ্চবিংশকঃ।
তমাগতম্ঘিং বৃদ্ধৎ বছবর্ষসহস্রিণ্ম্ ॥ ৪৩ ॥

॥ ৩৭॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ পঞ্বিংশকঃ বর্বৈরিতি শেষঃ॥ ৪৩॥

আনর্চ্চ ব্রিলাণাঃ সর্বে কৃষ্ণশাল্সহ পাওবৈ:। তমর্চিতং স্থবিশ্বস্থ মানীনমূষিসন্তমম্। ব্রাহ্মণানাৎ মতেনাহ পাওবানঞ্চে কেশবঃ॥ ৪৪॥

কৃষ্ণ উবাচ ।

"শুক্রাষ্ট্রকার পাপ্তবাত্তে ত্রাহ্লাশ্রুক সমাগতাঃ। জৌপদী সত্যভামা চ তথাহিৎ পরমং বচঃ। ৪৫॥ প্রার্ত্তাঃ কথাঃ পুণ্যাঃ সদাচারান্ সনাতনান্। রাজ্ঞাৎ স্ত্রীণাম্ঘীণাঞ্চ মার্কণ্ডের! বিচক্ষ্বনঃ "—॥ ৪৬॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

তেষু তত্ত্রোপবিফেষু দেবর্ষিরপি নারদঃ।
আকগাম বিশুদ্ধাত্মা পাপ্তবানবলোককঃ॥ ৪৭॥
তমপ্যথ মহাত্মানং সর্বেতে পুরুষর্ষভাঃ।
পাদ্যার্য্যাভ্যাং যথান্যায় মুপতস্থ দ্বনীষিণঃ॥ ৪৮॥
নারদন্ত থ দেবর্ষি জ্ঞাতা শস্ত কৃতক্ষণান্।
মার্কপ্তেরস্য বদতস্তাং কথা মন্ত্যোদত॥ ৪৯॥
উবাচ চৈনং কালজ্ঞঃ স্ময়ন্নিব সনাতনঃ।
"ব্রহ্মর্যে! কথ্যতা শস্তে পাপ্তবেষু বিবক্ষিত্য্ "—॥ ৫০॥
এবমুক্তঃ প্রত্যুবাচ মার্কপ্তেরো মহাতপাঃ।
"ক্ষবং কুরুষ্যং বিপুলমাখ্যাতবং ভবিষ্যতি "—॥ ৫১॥
এবমুক্তাঃ ক্ষণ চকুঃ পাপ্তবাঃ সহ তৈ দি জৈঃ।
মধ্যন্দিনে যথাদিত্যং প্রেক্ষন্ত মহামুনিম্॥ ৫২॥

স্বিশ্বতং ভগবন্ধারাদে দৃঢ় নিশ্চয়ম্॥ ৪৯॥ ৪৫॥ ৪৬॥ অবলোককঃ অবলোকনার্থী॥ ৪৬॥ ৪৭॥ ৪৮॥ ৪৯॥ সনাতনঃ কৃষঃ॥ ৫০॥ ৫১॥ ৫২॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। তং বিবক্ষনালকা কুরুর জো মহামুনিম্। কথাসংজননার্থায় চোদয়ামাস পাপ্তব:॥ ৫৩॥ " ভবান্ দৈবত দৈত্যানামৃধীনাঞ্চ মহাত্মনাম্। রাজ্বীণাঞ্চ সর্ফোষাং চরিতজ্ঞঃ পুরাতনঃ ॥ ৫৪॥ সেব্যশ্চোপাসিতব্যশ্চ মতো নঃ কাজ্ফিতশ্চিরম। অয়ঞ্চ দেবকীপুত্রঃ প্রাপ্তোহস্মানবলোককঃ। ৫৫। ভবতোৰ হি মে বুদ্ধিৰ্ফ্যুত্মানং স্থাচ্চ্যুত্ম। ধার্ত্তরাষ্ট্রাংশ্চ ছুর্ব্বভানৃধ্যতঃ প্রেক্ষ্য সর্বশঃ॥ ৫৬॥ কর্মাণঃ পুরুষঃ কর্তা শুভস্যাথাশুভস্য বা। স ফল^ তছুপাশ্বাতি কথং কর্ত্তাম্বিদীশ্বরঃ !। ৫৭। ক্তো বা স্থগতুঃখেষু নৃণাং ব্রহ্মবিদায়র ।। ইহ বা ক্লতমন্ত্রেতি পরদেহেহথ বা পুনঃ ?—॥ ৫৮॥ (मही ठ (मह~ महाका मुगामानः खर्चाखेटिः। কথং সংযুজ্যতে প্রেত্য ইহ বা দ্বিজসত্তম !॥ ৫৯॥ প্রহলৌকিক মেবেহ উতাহো পারলৌকিকম। ক্ল চ কর্মাণি তিষ্ঠন্তি জন্তোঃ প্রেতস্য ভার্মব ! -॥ ১০॥

। ৫৩ । ৫৪ । ৫৫ । ভবতোবহীতি—ধর্মাধর্ম ফলরো বিপর্যায়ং দৃষ্ট্ব। পুরুবঃ
কর্মণঃ ফলং কথংস্থি দশাতি ঈশ্বরো বা কথংস্থিৎ কর্তান্তীতি ধর্মেশ্বরয়ে।
রাক্ষেপঃ, ঋধাতঃ সমৃদ্ধিযুতান্ । ৫৬ । কথং স্বিদিত্যস্যোভয়ত্র সম্বন্ধঃ
। ৫৭ । কুতোবেতি—স্বভাবাৎ কর্মণো বা অন্তে ইছৈব পরত্রাপি বা কৃতং
কর্মণা সাধিতং স্থখ মবেতীত্যর্থঃ । ৫৮ । শুভাশুভৈঃ কর্মাভিঃ সদ্যোবিনাশিভি রিছ বা কারীর্যাদিভি রুষ্ট্যাদর্প্যং বিহিতঃ পরত্র বা দেহত্যাগে
সতি কথং সংযুজ্যতে কি মাজিত্য চকর্মাণি ভিষ্ঠন্তীতি ফলশ্য ব্যভিচারাদাশু
বিনাশিষ্যা দাজ্যাভাবাচ্চেতি ত্রেধা প্রাকর্মসন্তাব্যক্ষপঃ । ৫৯ ॥ ৬০ ॥

মার্কতের উবাচ। **"ত্বদ**্জোহ্য়মনুপ্রশ্রো যথাব্দ্দতায়র!। বিদিতং বেদিতব্যন্তে স্থিত্যর্থং ত্বন্তু পৃক্ত্নি 🐾 ॥ ৬১॥ অত্র তে কথয়িষ্যামি তদিহৈকমনাঃ শুণু। ষ্পেহামুত্র চ নরঃ স্থুখতুঃখ মুপাশু,তে॥ ৬২॥ निर्मालानि भतीतानि विश्वकानि भतीतिनाम्। সমৰ্জ ধৰ্মতন্ত্ৰাণি পুৰ্কোৎপন্নঃ প্ৰজাপতিঃ॥৬৩॥ অমোঘফলসঙ্কপোঃ সুব্রতাঃ সত্যবাদিন:। ব্রক্তুতা নরাঃ পুন্যাঃ পুরাণাঃ কুরুসন্তম । ॥ ৬৪॥ गटक (पटेवः ममासाखि ऋष्ट्राक्त न अञ्जादा তত্ত পুনর বিশ্বিত সর্বে স্বচ্ছন্তারিণঃ॥ ৬৫॥ चक्कम मत्रनाम्हामञ्जर्भः चक्कम की विनः। অপোবাধা নিরাতস্কাঃ সিকার্থা নিরুপদ্রবাং ॥ ৬৬॥ দ্রফারো দেবসজ্যানা সূধীণাঞ্ম মহাল্নান্। প্রত্যক্ষাঃ সর্বাধর্মাণাং দান্তা বিগতসংসরাঃ ॥ ৬ ।॥ আসন বর্ষসহস্রীয়া স্তথা পুত্রসহস্রিণঃ। ততঃ কালাস্তরেহ্ন্যস্মিন্ পৃথিবীতলচারিণঃ॥ ৬৮॥ কামক্রোধাভিভূতান্তে মায়াব্যাজোপজীবিনঃ। লোভমোহাভিভূতাক ত্যক্তা † দেহৈস্ততো নরাঃ॥ ৬১॥

ন্থিতার্থং লোকরক্ষার্থম্ ॥ ৬১ ॥ ৬২ ॥ ৬৩ ॥ তত্ত্র ধর্মাধর্ম কলরে। স্তাব দব্যভিচারং দশরন্ প্রথমং দোষং নিরস্তাতি নির্মানীত্যাদিনা— ॥ ৬৪ ॥ ॥ ৬৫ ॥ ৬৬ ॥ ৬৭ ॥ ৬৮ ॥ মারা কূটকার্যাপণাদিঃ, ব্যাক্তং দন্তঃ, তদেবোপ, জীবস্তি নতু ধর্মং, তে মারাব্যাজোপজীবিনঃ ॥ ৬৯ ॥

 [&]quot; বুলু পৃদ্ধি " ইতোবৃং ক-পাঠঃ।
 " ভূতান্তে সক্তাদেহৈঃ " ইতি কঃ।

অশুভৈঃ কর্মভিঃ পাপান্তির্যান্ত্রেররগামিনঃ।

সংসারের বিচিত্রের পচামানাঃ পুনঃ পুনঃ॥ ৭০॥

মোঘেন্টা মোঘদক্ষপা মোঘজানা বিচেতসঃ।

সর্বাভিশক্ষিনশৈব সংর্জাঃ ক্রেশদারিনঃ #॥ ৭১॥

অশুভিঃ কর্ম্মভিশ্চাপি প্রায়শঃ পরিচিত্রতাঃ।

দৌষ্কুল্যা ব্যাধিবজ্লা তুরাত্মানঃ প্রতাপিনঃ †॥ ৭২॥
ভবস্তাপায়ুষঃ পাপা রৌদ্রুকর্মকলোদয়াঃ।

নাথন্তঃ সর্ববামানাং নান্তিকা ভিরচেতসং॥ ৭০॥

জভোঃ প্রেভ্যা কৌত্রের! গজিঃ বৈরিহ কর্মজিঃ।

† "প্রাজ্ঞস্য হীনবুদ্ধেশ্চ কর্মকোষঃ ক্র তিষ্ঠতি।॥ ৭৪॥

কম্বতং সমুপাশ্লাতি স্কুক্ত মদি বেতরং ?"— #।

"ইতি তে দর্শনং মচ্চ ভ্রাপ্যান্ত্রনয়ং শুনু॥ ৭৫॥

অর মাদিশরীরেণ দেবস্থেটন মানবঃ।

শুভানা মশুভানাঞ্চ কুক্তে সঞ্চয়ং মহৎ॥ ৭৬॥

॥ ৭০ ॥ ৭১ ॥ ৭২ ॥ নাথন্তঃ প্রার্থয়ানাঃ, কামানাং কামান্ ॥ ৭০ ॥ অন্তাং প্রশ্ন মনুবদতি—জলোঃ প্রেতক্ষেতি লাভাাং—॥ ৭৪ ॥ অনুনয়ং সিদ্ধান্তন্ ॥ ৭৫ ॥ তপ্তোন্ত রেশৈব অর্থাং কর্মণা মাশুবিনাশিবদোষো নিরন্তো ভবতি ইত্যাভি সন্ধারাই অয়মাদীতি—আদিশরীরেণ লিচ্চদেইন যাবঘোক্ষং স্থামনা দেব সৃষ্টেন ধর্মাধর্ম সংস্টেন, যদ্বা ধর্মাদান্তরোধনা ঈশ্বরেণ বা স্টেন আবিক্তেন সর্ব্বাসনাময়ং লিচ্চমেব কর্মণা মাশ্রয় ইত্যর্থঃ ॥ ৭৬ ॥ কলেবরং স্থলদেইং মুগপেৎ দেইদ্বেন সংভবন্তি সংযুজ্যতে পূর্বভ্যাগাৎ প্রাণেব তৃণ জলোকান্যায়েন অপর মাদত্তে নতু তদনন্তরং অতএব অন্তর্মা

^{* &#}x27;' ক্লেশভাগিনঃ " ইতি ক-পুস্তুক্যা।

† '' অভি তাপিন ইতি ক-পুস্তুকঃ।

፲ ক পুস্তকে প্রাজ্ঞান্তানাং প্রাকৃ '' যুধান্তর উবাচ " ইতাধিকঃ।

* অসাংপরং '' মাকতের উবাচ " ইতি ক-গ-স্বুক্তাঃ।

আযুষোহতে প্রহায়েদং ক্ষীণপ্রায়ং কলেবরম্!
সম্ভবত্যের যুগপদেবানো নাস্ত্যম্ভরাহ ভবং ॥ ৭৭ ॥
তত্রাস্য স্থকতং কর্ম ছায়েবামুগত সদা।
কলত্যথ সুখার্ছো বা ছুংখার্ছো বাথ জায়তে ॥ ৭৮ ॥
কৃতান্তবিধিসং যুক্তঃ স জন্ত র্লক্ষণৈঃ শুভৈঃ।
অশুভৈর্বা নিরাদানো লক্ষ্যতে জ্ঞানদৃষ্টিভিঃ ॥ ৭৯ ॥
এবা তাবদবুদ্ধীনাং গতিরুক্তা যুধিষ্ঠির!।
অতঃপরুশ্বজনবতাং নিবোধ গতিমুক্তমাম্॥ ৮০ ॥
মনুষ্যান্তপ্ততপদঃ সর্বাগমপরায়ণাঃ।
স্থিরব্রতাঃ সত্যপরা শুরুশুক্রবণে রতাঃ ॥ ৮১ ॥
সুশীলাঃ শুরুজাতীয়াঃ শ ক্ষান্তা দাস্তাঃ স্থতেজসঃ।
শুচিযোন্যন্তরগতাঃ প্রায়শঃ শুভলক্ষণাঃ ॥ ৮২ ॥

মধ্যে ক্ষণমাত্র মপি অভবোহসংসারো নান্তি। ৭৭। তত্ত স্থলদেহান্তরে যর্তু মরণানন্তরং মধ্যে যাবদার্ভবাসং আতিবাহিকশরীরারতে দিবি ভুবান্ত-রীক্ষে নরকে বা ভবতীতি তং স্থুলদুফৈব ভেমং, উভয়ত্ত ভোগদাম্যেন স্থলাতি বাহিকয়ো র্ভেদাভাবাৎ যথোক্ত বসিষ্ঠেন "আতিবাহিক এবায়ং ভাদৃলৈ শিচন্তদেহকঃ। আধিভৌতিকয়া বুদ্ধাা গৃহীত শিচয়ভাবনাং" ইতি ॥ १৮ ॥ कृजांत्सा यम खः मदिक विधिः श्रांभाभिकन ভোগে নিয়োগাंत्सन সংযুক্ত শুমত্রতিষ্ঠন নিরাদানঃ প্রাপ্তং স্থাং হঃখাং বা দুরীকর্ত্ত মাশক্তঃ ে দে অবখণ্ডনে" ইতাশ্তরপম্। ৭৯॥ অবুদ্ধীনাং তত্তজান হীনানাং গতিঃ ষ্ম্য নরকরপা, উত্তমাৎ পুনরারতিবর্জিতান্। ৮০ । ৮১। শুক্ল জাতীয়াঃ শুক্রো যোগজো ধর্ম শুৎপ্রকারা শুদেকার্জনপরাঃ, প্রকারকবচনে জাতীয়র্ যোক্তরং আতিবাহিকযোক্ত পেক্ষরাহন্যাৎ আধিভৌতিকীং যোনিন ॥ ৮২ ॥ ধশিন ঈশ্বরাঃ মন্দরোগিণঃ নীরোগাঃ "ন তত্ত্ব শোকো ন জরা প্রাপ্তস্তা যোগাগ্নিময়ং শরীরং" ইতি আতে:, প্রারব্ধর্ম প্রাবল্যাৎকদাচিৎ প্রাপ্তমেব চাপকে বোগিনাং রোগাদিকং চেৎ ভত্তাহ অশ্বেতি—অপ্যং দৈতদর্শনং " অধ যত্রানাৎ পশাতানাৎ শূণোতি

^{*} ওদ্ধজাতীয়া ইতি পাঠ-ভেদঃ।

জিতেন্দ্রিরাদিনঃ শুক্লপ্রান্দরোগিণঃ।
অলপাবাধপরিত্রাসান্তবন্তি নিরুপদ্রবাং॥৮৩॥
চ্যবন্তং জারমানঞ্চ গর্ভস্থেব সর্বাশঃ।
স্থমাত্রানং পরশৈব বুধান্তে জ্ঞানচক্ষা॥৮৪॥
ঝাষরস্তে মহাত্রানঃ প্রত্যক্ষাগমবুদ্ধাঃ।
কর্মাভূমিমিমাং প্রাপ্য পুন্যান্তি স্থরালরম্॥৮৫॥
কর্মভূমিমিমাং প্রাপ্য পুন্যান্তি স্থরালরম্॥৮৫॥
কর্মভূমিমিমাং প্রাপ্য পুন্যান্তি স্থরালরম্॥৮৫॥
কর্মভূমিমিমাং প্রাপ্য প্রান্তি স্থরালরম্॥৮৫॥
কর্মভূমিমিমাং প্রাপ্ত কর্মান্ত স্থর্মানি বিচারণা॥৮৬॥
ইমা মত্রোপ্রাঞ্জাপি নিবোধ বদতায়র!।
মনুব্যলোকে যক্টেরঃ পর্ম্মন্যে যুধিষ্ঠির!॥৮৭॥
ইহ বৈক্স্য নামুত্র অমুত্রক্স্য নো ইহ।
ইহ চামুত্র বৈক্স্য নামুত্রক্স্য নো ইহ॥৮৮॥

তদপ্পং " ইতি ভাতেঃ, তত্মাৎ আবাগো ছঃখং তত স্ত্রাসাণ, নিকপদ্রবাঃ উপসমীপে দ্বিহা দ্রবতি স্থীরং ধর্ম মাসিঞ্চি ইত্যুপদ্রবোহতঃ করণং তক্রহিতাঃ, এতেন প্রারক্ষনাপি প্রতিঘাতায় নিবীজঃ সমাধিঃ প্রভবতীতি দৰ্শিতিমু ॥ ৮৩ ॥ নচ ভানুৰো পাপাওরভমা নাম বেদাস্থাঃ কলি দ্বাপর্য়োঃ সন্ধ্রে সভাবতন্থ ব্যাসভ্যা সমজনীতি অর্থাতে মোক্ষ ধর্মেয়ু অতঃ শুক্লজাতীয়ানামপি উৎক্র্যান্তিগতাগুলতায়াহপরিহার্য্যা ইতাশক্ষাহ চ্যবভামতি—অধিকারিণাং তেযাং লোকাল্লগ্রহার্থং স্বেচ্ছয়। গৃহাদ্ গৃহান্তরপ্রবেশবদিহ পরত্রচ সঞ্চারো ন কর্মাধীনতরাহমাক্ষিব ছঃখায় ভবতীতাশেরঃ, তথা নিণীতিং " যাবদ্ধিকার মবস্থিতি রাধিকারিণাম্ " ইতাত্র॥৮৪॥ ৮৫॥ দৈবাৎ মুঢ়োমত্রজড়ভরতাদিভি ধলভাতে তদৈবাদেব, হটাং যোগসিদ্ধৈ বিশ্বমিত্রাদিতিঃ ইতরৈঃ স্বকর্মভিঃ অন্যাতেষা মন্যত্মা একৈব কাচিৎ স্থিতি রস্তীতি বিচারণা তে তব মাস্তু॥৮৬॥ এবমাত্মবিদাং স্বাতন্ত্রা ইত্রেষাং স্থিতি চাতুর্বিধ্য মাহ ইমাফিতি—। ৮৭॥ ইহবেতি শবং শ্রের ইত্যন্ত্রোত, বা শব্দ এবার্থে, দ্বিরাবর্ততে, একস্য ইটেব পরং শ্রেমেন্ডি নামুত্র পরলোকে, একদা অমুত্রেবান্তি নহিহ, ইহচামুত্রচ একতা শ্রেষ্ট্রে, একতা তু উভয়ত্রাপি নান্তীতি লোকার্থঃ॥৮৮॥

ধনানি যেষাং বিপুলানি সন্তি, নিত্যং রমন্তে স্থবিভূষিতাঙ্গাঃ। তেষাময়ৎ শত্ররম্ ! লোকো, নাসৌ সদা দেহস্পথে রতানাম্—॥ ৮৯॥ যে যোগযুক্তান্তপদি প্রযুক্তাঃ, স্বাধ্যায়শীলা জরয়ন্তি দেহান্। জিতেন্দ্রিয়াঃ প্রাণিবধে নিরুত্তা-रख्यां गरतो नात्र गतित्र! (लाकः ॥ २० ॥ যে ধর্মামেব প্রথমঞ্চরন্তি, ধর্মেণ লক্ষা চ ধনানি কালে। দারানবাপা ক্রভির্ভজন্তে, * তেयामग्रदेश्वन পরশ্চ লোকঃ॥ ৯১॥ (य देनव विमा! न उत्था न मान॰, ন চাপি মুচাঃ প্রজনে যতন্তি। ন চাধিগছান্তি † সুখানভোগান্, তেষাময় ঞৈব পরশ্চ লোকঃ—। ৯২॥ সর্বে ভবন্তস্তৃতিবীর্য্যসন্ত্রা, **फिर्टियोक्सः ग**०इनरनार्शश्राः। লোকাদমুশ্বাদবনিং প্রপন্নাঃ, স্বধীতবিদ্যাঃ স্থারকার্যাহেতোঃ॥ ৯০ ॥

ইম মেব লোকং ব্যাচক্টে ধনানী ত্যাদিনা— ॥ ৮৯ ॥ যে ইতি—তেষামদের লোক এব নত্বন্ ॥ ৯০ ॥ ৯১ ॥ প্রজনে পুত্রোৎপাদনে ॥ ১২ ॥ ভবন্তপ্ত লোকদ্বরেপি শ্রেরাংস ইত্যাহ সর্কে ভবন্ত ইতি— ॥ ৯০ ॥ ৯৪ ॥ তত্মাৎ

^{*} যজন্তে ইতি বা পাঠঃ।

^{🕆 &}quot; স্থান্থভোগান— স্তেষাময়ং নৈব পারশ্চ লোক " ইতি কঃ।

কুবৈ কর্মানি মহান্তি শ্বা-,
স্তপোদমাচারবিহারশীলাঃ।
দেবান্ধীন্ প্রেভগণাংশ্চ সর্বান্,
সন্তপ্রিত্বা বিধিনা পরেণ—॥ ৯৪ ॥
স্বর্গং পরং পুণ্যক্তাং নিবাস্ন,
ক্রমেণ সম্প্রাপ্যাথ কর্মান্তিঃ স্থৈঃ।
মা ভূদ্বিশঙ্কা তব কৌরবেন্দ্র!,
দৃষ্ট্বাত্মনং ক্লেশমিমং স্থার্থ্য "—॥ ৯৫ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বনি মার্কণ্ডেরসমান্যাপর্বনি মার্কণ্ডের ক্থারাম্
ত্যশীভাবিকশ্ততমোহধারিঃ॥ ১৮৩॥

বৈশপায়ন উবাচ।
মার্কপ্রেং মহাত্মান মৃচুং পাওুস্কভান্তদা।
মাহাত্মাং দিজমুখ্যানাং শ্রোতুমিচ্ছাম কথ্যতাম্॥ ১॥
এবমুক্তঃ স ভগবান্ মার্কপ্রেয়া মহাতপাঃ।
উবাচ স্বমহাতেজাঃ সর্কশাস্ত্রবিশারদঃ॥ ২॥
মার্কণ্ডের উবাচ।
"হৈহ্যানাং কুলকরো রাজা পরপুরপ্রয়ঃ।

কুমারো ৰূপদম্পলো মূগরং ব্যচরছলী ॥ ৩ ॥

ধর্মাধর্মফলয়ো বৈ পরীতাং যন্ত্রা প্রাপ্তক্তং তত্তথা ন মন্তব্য মিত্যুপ সংহরতি মাতৃদিতি—॥৯৫॥ মার্কণ্ডেয় সমাসাারাং সহাসনে ইতার্থঃ 'আস উপবিশনে গ্লুমাং গাংধ।

> ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকণ্ঠীরে ভারত ভাবদীপে অগীত্যধিক শত তমোহধ্যারঃ ॥ ১৮৩ ॥

মার্কগুরে মিত্তি—ব্রশ্বিদাং শুকুজাতীয়ানাং স্বছলসরণং তেবাং ইত্যাদিনা প্রোক্তং মহাভাগ্যং প্রশ্বেকং বিবরীতু ময় মধ্যায় আরভ্যতে মার্কণ্ডের মিতি—কথাতং ত্রা॥১॥২॥ কুমারত্বা দবিবেক্তৃত্বং স্চিত্য্॥৩॥

চরমাণস্ত সোহরণ্যে তৃণবীরুৎসমারুতে। ক্ষণজিনোন্তরাসঙ্গং দদশ যুনিমন্তিকে॥৪। স তেন নিহতে। হরণ্যে মন্যমানেন বৈ মৃগম্। ব্যথিতঃ কর্মা তৎ কুত্বা শোকোপহতচেতনঃ॥ ৫ । জগাম হৈহয়ানাং বৈ সকাশং প্রথিতাত্মনাম। রাজ্ঞান রাজীবনেত্রোহসৌ কুমার: পূর্থিবীপতিঃ। তেষাঞ্চ তদ্বধারত্তং কথয়ামাস বৈ তদা।। ৬॥ তঞ্চাপি হিংসিত তাত ! মুনি মূলফলাশিনম্। শ্রুত্বা দৃষ্ট্রাচ তে তত্র বভূবুর্ণীনমানসাং ॥ १ ॥ ক্স্যায়মিতি তে সর্বে মার্গমাণাস্তত্ততঃ। জগ্মুন্চারিউনেম্নেহ্থ তাক্ষ্যাগ্রাম মঞ্জ্যা ॥ ৮॥ তেহভিবাদ্য মহাত্মানং ত^ মুনি^ নিয়তব্ৰতম্। তন্থ: সর্বে স তু মুনিতেষাং পুজা মথাহরৎ॥ ৯॥ তে ত মূচু শ্মহাত্মান ন বয়ং সৎক্রিয়াং মুনে!। ত্বভোহ্রাঃ কর্মদোষেণ ব্রাহ্মণো হিৎসিতো হি ন:॥ ১০॥ তানব্রবীৎ স বিপ্রধিঃ কথং বো ব্রাহ্মণো হতঃ। ক চাসৌ বুত সহিতাঃ পশ্যধং মে তপোবলম্। ১১। তে তু তৎ সৰ্ব্ব মধিল মাখ্যায়ালৈ যথাতথ্যু। নাপশাংস্কৃষি তত্ত্ব গতাস্থ তে সমাগতাঃ ॥ ১২ । অন্বেষমাণাঃ সত্রীডাঃ স্বপ্নবক্ষাতচেতনাঃ। তানব্রবীতত মুনি স্তাক্ষ্যঃ পরপুরঞ্জয়:॥ ১৩॥

উত্তরাসদঃ প্রাবরণম্ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ অরিষ্টনেমি শব্দ ইকারান্তোপ্যক্র অর্থতোপি জেয়ঃ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ আঝ্যায় কথরিতা ॥ ১২ ॥ তাক্তি

স্যাদরং ব্রাহ্মণঃ সোহথ যুক্সাভি র্যো বিনাশিতঃ। পুলো হয়ং মম মুপা স্তপোবলসম্বিতঃ "--॥ ১৪ ॥ তে তু দুকৈ বৈ ভ মূৰিং বিশায়ং পরমং গতাঃ। . মহদাশ্চর্যামিতি বৈ তে ক্রবাণা মহীপতে !॥ ১৫॥ মতো হয় মুপানীতঃ কথ~ জীবিত মাপ্তবান্। কিমেতত্তপদোবীর্য্যং যেনায়ৎ জীবিতঃ পুনঃ॥ ১৬॥ শ্রোতুমিচ্ছামহে বিপ্র। যদি শ্রোতব্যমিত্যুত। স তারুবাচ নামাকং মৃত্যুঃ প্রভবতে নৃপাঃ॥ ১৭॥ कांत्रनः यः व्यवकाः। ति (स्वृत्यांशमनागवः। সত্যমেব'ভিজাদীমো নানুতে কুর্দ্মহে মনঃ। স্বধর্মা মনুতিষ্ঠাম ক্তস্মান্মৃত্যুভয়ং ন নঃ॥ ১৮॥ যত্ব ক্লিণানাং কুশলং তদেষাং কথ্যামহে। নৈষাং তুশ্চরিতং ব্ম স্তস্মান্ত্রভর্ম ন নং॥ ১৯॥ অভিথীনন্নপানেন ভূত্যানত্যশনেন চ। স**ভোজ্য শেষমশ্লীম স্তম্মান্ম** তুল্ভয়ৎ ন নঃ ॥২০॥ भाखा पाखाः कमामीना खीर्यपानभदायगाः। পুণ্যদেশনিবাসাচ্চ তক্ষান্মৃত্যুভয়ং ন নঃ। তেজস্বিদেশবাসাচ্চ তন্মান্ত্রভয়ং ন নঃ॥ ২১॥

তৃক্ষনা কশ্যপতাপত্যম্॥ ১৩॥ তাদর মিতাঙ্গুলা নির্দিশতি॥ ১৪॥ ১৫॥ ॥ ১৬॥ ১৭॥ হেতুযোগঃ যুক্তিসম্বন্ধঃ সমাসঃ সংক্ষেপ স্তাভামিতি পঞ্চনার্থে তসিঃ, সভামেবাভিজানীম ইতাাদিনা সতাদেশি মৃত্যুজয় সাধনাভাচান্তে॥ ১৮॥ যদিতি—ত্রাক্ণনিকাগ্তাঃ স্তাভিপরাক্ষ ক্ষ ইতার্থঃ ॥ ১৯॥
ভ্তান্ ভার্যাদীন্ অত্যশনেন অশনাদ্ধিকেন দানমানাদিনা॥ ২০॥
পুরাদেশঃ গদাতীরাদিঃ তেজ্বিনাং যোগসিদ্ধানাং দেশঃ সামীপাং
ভৎসকা দিতার্থঃ॥ ২১॥ এতকৈ ইতি—যোগাকীগং ছভাবদেষম্পি

এতদৈ লেশ নাত্রং বঃ সমাখ্যাতং বিমৎসরাঃ।
গচ্চধং সহিতাঃ সর্বে ন পাপান্তরমন্তি বঃ"॥২২॥
এবমস্তিতি তে সর্বে প্রতিপূজ্য মহামুনিম্।
স্বদেশ মগমন হৃষ্টা রাজানো ভরতর্বত। ''—। ২০॥
ইত্যারণাকে পর্বেণি মার্কণ্ডেরসমাস্যাপর্বেণি ব্রাক্ষামাহাল্যাকথনে চতুরশীত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৮৪॥

শর্কণ্ডের উবাদ।

'ভূর এব মহাভাগ্যাৎ ব্রাহ্মণানাৎ নিবোধ মে।
বৈণ্যা নামেহ রাজর্ষি রশ্বমেধার দীক্ষিতঃ ॥ ১॥
ত মত্রির্গস্ত মারেভে বিস্তার্থ মিতি নঃ শ্রুতম্।
ভূরোহর্থং * নাল্বক্রধ্যং স ধর্মব্যক্তিনিদর্শনাং ॥ ২॥
সবিচিন্তা মহাতেজা বনমেবাল্বরোচয়ং ।
ধর্মপত্নীং সমাহুর পুজাৎশেচদ মুবাচ হ ॥ ৩॥
সংলাপমাত্রাং, বয়ং হস্তং সমর্থাঃ আ ইত্যর্থঃ ॥ ২২ ॥ ২৩॥
ইত্যারন্য পর্কাণ নৈলক্ষীয়ে ভারত ভাবদীপে
চতুরশীতাধিক শত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮৪॥

ভূয়ত্রবৈতি—মৃত্যুজয়হেতুঃ পূর্ব্বেকিঃ সত্যাদিধর্মে। বনস্থানামেব যুজাতে নতু গৃহস্থানাং তেষাং দুম্পুতিগ্রহ বলবিষেষাদিনা দোষ প্রসক্ত্যা তাদৃশধর্মাসস্তবাদিত্যাশয় বানধাায় মারভতে ভূর ইতি—॥১॥ সোহতি রর্থং ভূয়ো নানুক্ধাত অত্যন্তং অর্থাধী ন বভূব, কুতঃ ?—ধর্মব্যক্তি ধর্মস্য ফল দারা অভিন্যুক্তিঃ ফল ব্যক্ত্যা হি ধর্মো নগুতি অতস্তদ্রুক্ষণার্থং নৈচ্ছদিত্যুর্থঃ॥২॥বনং গৃন্ধং ইতি শেষঃ॥৩॥নিক্পদ্রবং অক্ষয়ং

^{* &}quot; ভুয়েৰ " ইতি কঃ

ে প্রাপ্স্যামঃ কলমতান্তং বছলং নিরুপদ্রবম্।

অরণ্যগমনং ক্ষিপ্রাম্ রোচতাং বো গুণাধিকম্"—॥ ৪ ॥

তংভার্যা প্রভাবাচাথ ধর্মমেবান্তৃত্বতী।

বৈণ্যং গত্বা মহাত্মান মর্থয়ন্ত্ব ধনং বছ ॥ ৫ ॥

স তে দাস্যতি রাজর্ষি র্যজমানোহর্থিতো ধনম্।

তত আদার বিপ্রবেষ ! প্রতিগৃহ্ব ধনং বছ ॥ ৬ ॥

ভূত্যান্ স্থতান্ সম্বিভজ্য ততো ব্রজ যথেপিত্রম্।

এব বৈ পরমো ধর্মো ধর্মবিদ্ধি রুদ। হৃতঃ"—॥ ৭ ॥

অত্তিক্বাচ।

েকথিতো মে মহাভাগে ! গৌতমেন মহান্সনা। বৈণাো ধর্মার্থসংযুক্তঃ সভাত্রতসমন্বিতঃ ॥ ৮ ॥ কিব্ৰুন্তি তত্র দ্বেটারো বিবসন্তি শ হি মে দ্বিলাঃ । যথা মে গৌতমঃ প্রাহ্ ততো ন ব্যবসাম্যহম্ ॥ ৯ ॥ তত্ত্ব স্মাবাচন কল্যানীং ধর্মকামার্থসংহিতাম্ । ময়োক্তামন্যথা ব্যুক্তত তে বৈ নির্থিকাম্ ॥ ১ ॥ ॥

মোক্ষাখান্ । ৪ ॥ ধর্মং মজাদিকং অভত বতী বিস্তারয় ন্তী 'হেতৌ শতৃ প্রভায়ঃ হ ধর্মার্থে ধনমেবার্জয়মেত্যবাচে ভার্থঃ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ভৃত্যানিত্য-ভিষ্ণি দেবতাদীনাং স্থতানিতি ভার্যা দীনাং চ উপলক্ষণং, ধর্মবিদ্রি মরাদিভিঃ "অনধীতা দিজো বেদানভংপাদা স্থতানপি। আনষ্ট্যা বিধিবদ্যকৈ মেক্ষি মুক্তন্ ব্রভাধঃ"—ই ত বদন্তিঃ ॥ ৭ ॥ "দশ স্থাসহমাণি নিতাং বছতি সেন্নিবঃ। তেন ভূলাঃ মৃতো রাজা ঘোর স্তম্য প্রভিত্তাইঃ।" ইতি মহ্বাক্যাদেব রাজ প্রভিত্তাই দোবং জানম্বি স্তর্ন বিশ্ব মুপ্তাস্তাত কথিত ইত্যাদিনা—॥ ৮ ॥ ব্যবসামি উদ্যাহং করোমে ॥ ৯ ॥ নিরর্থকা মাপিবাচং বদতাং পরাজ্যোপি পাপাবই ইভি ভাবঃ, ভথাচ ক্ষিতে "গুকংবং কৃত। তৃংকৃত্য বিপ্রহ নিজিন্তা বাদতঃ। অরণ্যে নির্কলে দেশে ভবতি ব্রম্বাক্ষয়ং" ইতি ॥ ১০ ॥ এবং জানম্বি শ্লেছ

^{*} নিবসন্তীতি ক।

গমিষামি মহাপ্রাজ্ঞে ! রোচতে মে বচন্তব। গাশ্চ মে দাসতে বৈণ্যঃ প্রভূতঞার্থসঞ্চয়ম্''—॥ ১১ ৫ মার্কণ্ডেয় উবার।

আবসুক্ত্বা জগামাশু বৈণ্যযজ্ঞ মহাতপাঃ।
গত্বা চ যজ্ঞায়তন মত্তিস্ত বৈণ্যজ্ঞ বং নৃপম্॥ ১২॥
বাক্যৈশ্বস্থলসম্মুকৈঃ পূজ্যানোহব্ৰবাদ্বচঃ—।
ভাত্তিক্ৰাত।

'রাজন ! ধন্যস্থীশশ্চ ভুবি স্বশ্ প্রথমো নৃপঃ । ১০ ॥
স্তবন্তি স্থাং মুনিগণাস্ত্রদন্যো নাস্তি ধর্মবিং"—।
ত মত্রবীদৃষিং কুছো বচনং বৈ মহাতপাঃ—। ১৪ ॥

গৌতম উলা ।

" মৈব মত্তে ! পুন্র্রা ন তে প্রজ্ঞা সম!হিতা ।

অত নঃ প্রথমং স্থাতা মহেন্দ্রো বৈ প্রজাপতিঃ"— । ১৫ ।

অথাতি রপি রাভেন্দ্র ! গোতমং প্রত্যভাষত ।

" অয়মেব বিধাতা হি বথৈবেন্দ্র: প্রজাপতিঃ। জন্মের মুমুদ্রে মোনার প্রজানত করাজি হ "। ১

ত্বমেব মুহ্তের মোহাল প্রজ্ঞান ওবাতি হ "। ১৬ । গোতম উবাচ।

" জানামি নাহং মুছামি স্বমেবাত্র * বিমুছসে। স্তৌষি স্বশ্বপ্রেক্সুরাজানং জনস্পদি *॥ ১৭॥

দোবাত্তংকর্ত্থ প্রতিজানীতে গমিবনামীতি— ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ পুরুষান ইতে তঙু কর্ত্বামিতাং স্তৃতিকলসা মুক্তঃ, ধনেনা ধনার্হঃ ঈণ ইতি ঈণিতা নিয়ন্তা, প্রথমঃ হিরণান্ত ই^ অগ্রজঃ, নৃপঃ মন্ব্যাণাং রক্ষকঃ॥ ১০ ॥ ॥ ১৪ ॥ অল প্রলোক মেব বহুমন্থানো গেতম আছ মৈবমিভি—॥ ১৫ ॥ ভত্তইক্ত ইব জল রাজৈব মহেন্দ্র ইতি বিক্তার্থা আলিঃ প্রপক্ষং দ্বয়তি অথে ত—॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

^{* &}quot; ব্ৰেমবাজে! " ইতি বা পাঠঃ ।

^{*} হ-ক-পুমুকে ' তুষ্যতে ছুদেরপ্রেম্পু শুদা দর্শননংখ্রাং * ইখম্পাঠঃ প্রদূষ্যতে।

न (दर्थ পরম॰ ধর্দ্মং न চাবৈষি প্রয়োজনমু। বালস্তুমসি মূচশ্চ বৃদ্ধঃ কেনাপি হেতুনা"— ॥ ১৮॥ মার্কণের উবাচ। "বিবদক্তো তথা তো ভু মুনীনাং দর্শনে স্থিতো। যে ত্রস্য যজ্ঞে সংবৃত্তান্তে পৃক্তন্তি কথ্য দ্বিমৌ ॥ ১৯ ॥ প্রবেশঃ কেন দত্তোয় মুভয়ো কৈণ্যদংসদি। উল্লৈঃ সমভিভাষন্তো কেন কার্য্যেণ ধিষ্ঠিতো। "॥ ২•॥ ততঃ পরমধর্মাত্মা কাশ্যপঃ সর্বাধর্মাবিৎ। বিবাদিনাবনুপ্রাপ্তৌ তাবুভৌ প্রত্যবেদয়ৎ ॥ ২১ ॥ অথাত্রবীৎ সদস্যাংস্ত গৌতমো মুনিসন্তমান্ *। '' আবয়ো ব্যাহ্নত৲ প্রশ্নং শুণুত দ্বিজসন্তমাঃ।— ॥ ২২॥ বৈণ্যং বিধাতেভাগিত্তি রত্ত্র নো সংশয়ো মহান্''—। 🌞 শ্রুটেশ্বর তু মহালানো মুনয়োহভ্যদ্রন্দ্রতম্ ॥ ২৩ ॥ সনৎকুমারং ধর্ম্মজ্ঞং সংশ্রুছেদনায় বৈ। স চ ভেষাং বঁচঃ শ্রুত্বা ষ্থাতজুং মহাতপাং। প্রত্যুবাচাথ তানেবং ধর্মার্থস্হিতং বচ:"—॥ ২৪॥ সনংক্ষার উবচে। " ব্ৰহ্ম ক্ষত্ৰেণ সহিতং ক্ষত্ৰঞ্চ ব্ৰহ্মণা দহ। সংযুক্তো দহতঃ শত্রন্ * বনানীবাগ্নিমারুতো ॥ ২৫॥ ॥ ५৮॥ मर्नात मृक्तिशर्थ ॥ ५৯॥ २०॥ २५॥ २२ ॥ त्नो जावरहाः ॥ २०॥ ॥ ২৪॥ ব্রাক্ষাণবলেন রাজ্যো বলং নতু স্বর্ক রং ইতি সমাধান প্রস্থার্থ ক্তেনন গোতমোক। নিন্দাপি বার্থা নাপি অতিপ্রোক্তা স্তাতরপি নিযুলৈতি জেরং, যদ্যপি লোভমূলকত্বং স্তুতি পক্ষে স্পর্টম্ অপ্রামাণ্য কারণং তথাপি অবিদ্যমানৈ রপি বিশেষণৈ ধনার্থিন রাজা ভোতব্য ইতি সনংকুমারাশয়ঃ॥ ২৫॥ প্রথিতঃ প্রথাৎ পতঃ, ধর্মাঃ,

^{*} অতঃ পরং '' গৌতম উবাচ " ইতি পঠাতে ক-পুস্তকে।

^{*} অত্যাপি " মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ " ইতি পাঠোহধিকঃ ক-পুস্তকে।

শত্রু মিত্যেকবচন পাঠঃ ক-পুস্তকে ৷

রাজা বৈ প্রথিতা ধর্মঃ প্রজানাং পতিরেব চ।

স এব শক্রঃ শুক্রশ্চ স ধাতা চ রহস্পতিঃ ॥ ২৬ ॥
প্রজাপতির্বিরাট্ সমাট্ ক্ষজ্রিয়ো ভূপতির্নৃপঃ।
য অভিঃস্থ যতে শব্দৈঃ কস্তং নার্চিত্র মার্চিত্র সার্চিত্র মার্চিত্র ভ্রমা।
তথের নুপতিভূমা বর্ধায়ান্দ্রতে ভূশম্॥ ৩১ ॥
তত্যে রাজ্ঞঃ প্রধানত্বং শাস্ত্র প্রামাণ্যদর্শনাৎ।
উত্তরঃ সিধ্যতে পক্ষো যেন রাজেতিভাষিত্র মৃ্ণাল্য মার্চিত্র উরাচ।

ততঃ স রাজা সংস্কৃষ্টঃ সিদ্ধে পক্ষে মহামনাঃ।
তমত্রিমত্রবীৎ প্রীতঃ পূর্বাং যেনাভিসপস্ততঃ॥ ৩২॥
বন্মাৎ সক্ষমনুষ্যেষু জ্যায়াংসৎ মামিহাত্রবীঃ।
সক্ষদেবৈশ্চ বিপ্রর্যে! সন্মিতং শ্রেষ্ঠমের চ॥ ৩৩॥

ধর্মস্থাপ্কঃ. শক্রঃ রক্ষিতা, শুক্রঃ নীতিবিং, ধাতা অতএব জনকঃ, বৃহ
স্পতিঃ হিতোপদেষ্টা ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ পুরাবোনিঃ ধর্মপ্রবর্ত্তকরেন প্রথমং
কারণং, যুধাজিং সংগ্রামে জয়কত্রিনাপদ্রবনাশকঃ, অভিযাঃ
অভিতো যাতি যামিকবদক্ষণার্থ মিত্যভিবাঃ মুদিতঃ ভবঃ ঈশ্বরঃ,
স্বর্ণতা স্বর্গংপ্রতি গময়িতা, সহজিং সদ্যোজরশীলঃ বক্র বিঞ্ছঃ, "বক্রনা
নকুলে বিষ্ণে বিপ্রলে পিন্দলে ত্রিষ্ " ইতি বলশর্মা ॥ ২৮ ॥ অধর্মাদিতি
—সর্বাপ্রাশ্বং বলং ক্ষত্রেষ্ট্রীতার্থঃ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩০ ॥

^{*} সতামহা রিতি ক:।

তন্মান্তেই হং প্রদাসামি বিবিধং বস্তু ভূরি চ।
দাসীসহজ্ঞং শ্যামানা নুষ্বস্থানামলক তম্ ॥ ৩৪ ॥
দশ কোটার্হিরণ্যস্থ রুক্সভারা নস্তথা দশ।
এতদ্দদানি বিপ্রর্ধে! সর্বজ্ঞস্থং মতো হি মে'—॥ ৩৫ ॥
ভদত্তির্ন্যায়তঃ সর্বা প্রতিগৃহ্যাভিসংকৃতঃ।
প্রত্যাজগাম ডেজস্বী গৃহানেব মহাতপাঃ॥ ৩৬ ॥
প্রদায় চ ধনং প্রতিঃ পুজেভ্যঃ প্রয়ভাত্মবান।
তপঃ সমভিসন্ধায় বন্মেবাস্থপদ্যত'—॥ ৩৭ ॥

ইত্যারণ্যকে প্রবি মার্কণ্ডেয় সমাস্যাপর্বিণি ত্রাহ্মণ মাহাত্মাকথনে পঞ্চাশীত্যধিক শত তমোহধ্যায়: ॥ ১৮৫॥

মার্কণ্ডের উবাচ।

" অতৈর চ সরস্বত্যা গীতং পরপুরঞ্জয় । । পৃষ্টয়া মুনিনা বীর । শৃণু তাক্ষ্যেণ ধীমতা— ॥ > ॥ তাক্ষ্য উবাচ।

' কিং মু শ্রেষঃ পুরুষদ্যে ভড়ে। কথং কুর্মন চ্যবতে স্বধর্মাৎ।

बाठका (म ठाक्रमकाकि ! मर्काः,

पुत्रान्त्रभिष्ठो न हारवत्रः अधर्मा ॥ २ ॥

॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ সত্যাদিধর্মকলং বন এব সিদ্ধাতীত্যাখ্যারিকাবদা-নমুখেনোপ সংহরতি প্রদায়চেতি—॥ ৩৭ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চাশীতাধিক শত তমোহধানুৱঃ ॥ ১৮৫॥

বনে সভাগদি ধর্মবভা যংকর্ত্তব্যং যংপ্রাপ্যং যক্ত ক্তেরং তদাহ অধারেন অত্তবেচ সরস্বভোজ্যাদিনা—সরস্বভী যজ্ঞতে চাল্লী হজ্ঞকল দালীচ দেবভা অথিহোলাদহ মভাগাতাহশীতি বাকাশেষাং ॥ ১ ॥ কথং কুর্যাংশ্রের ইভাগবর্ততে ॥ ২ ॥ লোকান্ কামান্, বিরক্তা আসক্তিহীনঃ, চরেরং উপল- কথঞা ঝিং জুছ্য়া পুজ যে বা,

কিম্মিন কালে কেন ধর্মো ন নশােৎ।

এতৎ সর্বাং স্থভগে। প্রবিটিং,

যথা লােকান বিরজাঃ সঞ্বেয়ম্"—॥ ৩॥

মাৰ্কতের উবাচ।

' এবং পৃষ্টা প্রীতিযুক্তেন তেন, শুক্রাযুমীক্ষোন্তমবুদ্ধিযুক্তম । তাক্ষ বিপ্রং ধর্মাযুক্তং হিতঞ্চ, সরস্থতী বাক্যমিদং বভাষে"—॥ ৪॥

সরস্বভুরে ।

"যো ব্রহ্মজানাতি যথাপ্রদেদং,
হাধ্যায়নিতাঃ শুচিরপ্রমন্তঃ।

স বৈ পারং দেবলোকস্য গন্তা,
সহামরৈঃ প্রাপ্নুয়াৎ প্রীতিযোগম্। ৫।
তক্র ম্ম রম্যা বিপুলা বিশোকাঃ,
ফুপুপ্রেতাঃ পুদ্ধরিণাঃ স্থপুণ্যাঃ।
ভাকদ্দমা মীনবতাঃ স্থতীর্থা,
হিরণাুরেরার্তাঃ পুশুরীকৈঃ। ৬।

ভেরং "তেষাং সর্বেষ্ লোকেষ্ কামচারো ভবতি" ইতি জ্ঞাতি প্রসিদ্ধ সর্ক্ষামভাক্ররপংকনং কেনেপোয়েন প্রাপ্নাদিত্যর্ব: ॥৩॥৪॥এম গুলং হান্দাকাশাখ্যং মুখাপ্রদেশং দেশভেদ মনতিক্রান্তং আচিরাদি মার্গেণ লভ্য মিত্যর্থঃ, নিগুণবিদো "ন তদ্য প্রাণা উংক্রামন্তি " ইতি গাতিনিষেধাৎ, স্বাধ্যায়ঃ প্রণবজ্ঞপঃ, দেবলোক্ষ্যা পারং কার্যা ব্রহ্মনাক্ষ্য ৫॥এন মেব তে.তি ছাভ্যাং তত্তেতি—॥৬॥

তাসাং তীরেম্বাসতে পুণাভাজো, মহীয়মানা: পৃথগঙ্গরোভিঃ। সুপুণ্যগন্ধাভিরলঙ্ক তাভি, হিরণ্যবর্ণাভিরতীবহৃষ্টা: ॥ १ ॥ পর্ন লোকং গোপ্রদান্ত্যাপ্র বস্তি, দত্ত্বানড়াহং সূর্যালোক ব্রজম্বি। বাসো দত্ত্ব। চান্দ্রমসম্ভ লোকং, দত্ত্বা হিরণামমরত্বমেতি ॥ ৮॥ ধেরু দত্ত্বা ইপ্রাদোহাত, কল্যাণবৎসামপ্রায়িনঞ। যাবন্তি রোমাণি ভবন্তি তস্যা, স্তাবন্তি বর্ষাণ্যাসতে দেবলোকে। ১॥ অনজ্যহু স্থবতং যো দদাতি, হলস্য বে। ঢারমনন্তবীর্যাম্। धूतकात । वलवखः यूवानः, প্রাপ্তি লোকান্ দশথেনুদস্য ॥ ১ ॥ ममाजि (या देव कशिला न महिला ?. का रमाभिताशः जिरितक्खतीरयः। তৈত্তৈপ্ত বৈ: কামতুঘাথ * ভূত্বা, নরং প্রদাতারমুপৈতি সা গৌঃ॥ ১১॥

॥ १॥ দেবলোকসা পার স্তাবদ্রেই স্তান এব তুকথং প্রাপ্য ইত্যত আছ 'পর মিত্যা দন।—অন্তুহং অনত্যহং শকট বহন সমর্থং বলীবর্দ্য ॥ ৮॥ ধেন্থং দোষ্ট্রীগায়॥ ৯॥ ১০॥ উত্তরীয়েঃ পশ্চান্তবৈ দক্ষিণাদিভি ক্র বৈয়ঃ সহিতাম্॥ ১১॥

^{*} কামছ্হা ইত্যপি পাঠঃ।

যাবন্তি রোমানি ভবন্তি ধেয়া, স্তাবৎ ফলৎ ভবতি গোপ্রদানে। পুত্রাংশ্চ পৌত্রাংশ্চ কুলঞ্চ সর্বা মাসপ্তমং তারয়তে পরত n ১২ u महिक्त । १क थिन ठाक मुक्री १, কাৎস্যোপদোহাৎ দ্রবিবৈরুত্তরীয়ে:। ধেন্তং তিলানাং দদতো দিজায়, লোকা বসুনাং সুলভা ভবস্তি॥ ১৩॥ শ্বকর্মাভি দানবসংনিরুছে, তীব্রাহ্মকারে নরকে পতন্ত্র। মহার্ণবে নৌরিব বাত্যুক্তা, দানংগ্ৰাং ভার্যতে প্রত্ত ॥ ১৪ ॥ যো ব্রহ্মদেয়াম্ভ দদাতি কন্যা>. ভূমিপ্রদানঞ্চ করোতি বিপ্রে। ममाजि मानः विधिनां ह यम्ह, স লোক মাপ্নোতি পুরন্দর্যা॥ ২৫॥ যঃ সপ্তবৰ্ষানি জুহোতি তাক্ষ্য হব্যস্থগ্নৌ নিয়তঃ সাধুশীলঃ। সপ্তবেরান্ সপ্তপূর্কান্ পুনাতি, পিতামহানাত্মন: কর্মডি: স্থৈ: "---॥ ১৬।

॥ ১২॥ তিলধেন্থ দানকাণ্ডে প্রাসকা ॥ ১৩॥ দানবৈঃ কামজোধাদিভিঃ
সন্ধিক্ত ব্যাপ্তে তীব্রাম্কারে অস্কেতমাস দেহাভিনিবেশাখো, তারমতে
যোগবিশ্বানাশ্যতি॥ ১৪॥ বৃদ্দদেয়াং 'বোদ্ধা প্রলংক্তা কন্যাং উদক
পূর্ব্বাং দদ্যাং এই বান্ধো বিবাহ" ইতি গৃহ্যোক্তেন বিধিনা দেয়াম্ ॥ ১৫॥
ইঃ সন্তেভি—ক্রোতং ধর্ম মন্থতিষ্ঠন্ আত্মনা সহ পূর্বানপরাংক তারমতীত্যর্থঃ॥ ১৬॥ " অধিহোত্তং ক্রোনো দোভজালং ভিনত্যতঃ

তাক্ষ্য উবাচ।

"কি ময়িকোত্রস্য ব্রতং পুরাণ,
মাচক্ষ্ব মে পৃক্ততশামুকপে ! ই ।
ত্বরামুশিটোহ্হমিহাদ্য বিদ্যাৎ,
যদয়িহোত্রস্য ব্রতৎ পুরাণম্ "—॥ ১৭ ॥
সরস্কুর্বাচ।

'ন চাশুচি রাপ্যানির্ণিক্তপাণিরাত্রন্ধবিজ্ঞ্যাল্লাবিপশ্চিৎ।
বুভূক্ষবং শুচিকামা হি দেবা,
নাঞ্জধানাদ্ধি হবিজ্ঞ্জ্বস্তি। ১৮।
নাঞ্জোত্রিয়ং দেবহব্যে নিযুপ্তাাব্যোঘণ পুরা সিঞ্চিত তাদৃশো হি।
অপূর্বে মঞ্জোত্রিয় মাহ তাক্ষ্যা।
ন চৈতাদৃগ্ জুহুয়াদিয়হোত্রম্। ১৯॥
ফুশাশ্চ যে জুহ্বতি প্রদ্ধোনাঃ,
সত্যব্রতা হুতশিক্ষাশিনশ্চ।

সম্মেহংছিত্বা"—ইত্যাদিনা মৈত্রারানীয়োপনিষদাপা মিছেত্রসা জ্ঞানাস্তবন্ধ মুক্তং অত স্তদান্তিত মেব বিশেষং ব্রতাদিকং পৃছতে কিমিতি—পুরাণং বেদোদিত্য ॥ ১৭ ॥ অনির্বিক্তপাদঃ অপ্রকালিত পালিপাদোহ নাচান্তক্ষ, অবন্ধবিং বেদং পাঠতোহর্গতক্ষাই বিশ্বান, অবিপশ্চিং বেদা দাধ্যাতসার্থিস্যাত্তবহীনঃ, বৃত্ৎসবঃ পরচিত্তংজ্ঞাতু মিক্তবঃ, যন্মাৎ ভাচিকামঃ ক্ষৃত্তি দেবস্তে ॥ ১৮ ॥ ঋষ্বিগলেগবংবিধএব কর্তব্য ইত্যাহ মা জ্যোত্তিক মিতি—দেবহুব্যে দেবানাং হ্ব্যাদানাদৌ, মোঘং নিক্ষ্পাং, পুরেতি—শীলগোত্তাদিজ্ঞানাং প্রাকৃ, অপুর্বাং অ্বজাত ইল্পীনং, আছু বেদ ইতিশেষঃ ॥ ১৯ ॥ কুশাঃ ধনাদি প্রভবেন দর্শেণ ছীনাঃ, শাহিশো

^{* &}quot;চাক্রণে।" ইতি ক:।

গবাং লোক৲ প্রাপ্যতে পুণাগন্ধ৲, পশান্তি দেবং পরমঞাপি সত্যম্''—॥ ২০ ॥ ভাক্য উবাচ।

' ক্ষেত্ৰজ্ঞভূতাং প্রলোকভাবে, কর্মোদয়ে বুদ্ধিমতিপ্রবিষ্ঠাম। প্রজ্ঞাঞ্চ দেবীং স্থভগে! বিমৃশ্য, পৃচ্ছামি ত্বা৲ কা হ্যাস চায়ন্ত্রপে!''॥২১॥

मद्रवपूर्वाह ।

' অগ্নিহোত্রাদহমভ্যাগতান্মি, বিপ্রধিভাগাৎ সংশয়চ্ছেদনায়। ত্বংসংযোগাদহমেত মক্রবং, ভাবে স্থিতা তথ্যমর্থং ষ্থাবং শ— ॥ ২২ ॥

যজমানা বা গবাং লোকং কর্মপ্রক্ষলোক সমীপন্থং পরম্ঞা দেবং প্রদান ততঃ ক্রমেণ সভ্যঞ্চ পরমং প্রসাধাং পণান্তি এতেন সর্বস্থেণ যুক্তস্যায়িহোক্রস্য পরম্পর্যা কৈবল্যপ্রাপকত্ব মুক্তন্ ॥২০ ॥ ক্ষেত্রজ্ঞ ভূতাং পরমাত্মরপাং তাং প্রজ্ঞাং পৃচ্ছামি তঞ্চ কাসীতি পৃচ্ছামি, প্রজ্ঞাং বিশিন্তি—পরলোক আত্মা তস্য ভাবে স্বরূপে বিষয়ে কর্মেণারে কর্মকলে বন্ধলোকানেচ বিষয়ে বৃদ্ধিমতি উৎকৃষ্টতরাং বৃদ্ধিং প্রবিষ্টাং কর্ম্ম বন্ধ ভর্মো নিবিষ্টা মিত্যর্থং, কিং কর্মা তাং দেবীং উভয়ত্বং দ্যোত্মন্তীং বিম্পা জ্ঞায় ॥২১ ॥ অহিছোক্রাং সংকর্মণঃ সকাশাদহং পরাপরবিদ্যান্ত্রপা সরস্বতী অভ্যাগতা আবিভূতামি, ত্ৎসংযোগাং ত্রনামিধিং প্রাপ্য, এতমর্থং কর্ম্মণাং পারম্পর্যোগ কৈবলা হেত্রহং সঞ্জ বন্ধ বিদ্যাঞ্চ অক্রবং যতোত্বংভাবে ছিতা প্রদাবাদ্ অগ্নিহোত্তাদিনা দেবতা-প্রসাদং প্রাপ্য কর্মোপান্তি জ্ঞানকলানি বিদ্যীত্যর্থঃ ॥২২ ॥ নহিত্রেভি পর্যাক্ষ ক্রেভাংপর্যাং সোপাসনেন কর্মণা বিদ্যা সমুদ্ধস্তীতি পর্যাক্ষ ক্রেভাংপর্যাং সোপাসনেন কর্মণা বিদ্যা সমুদ্ধস্তীতি পর্যাক্ষ

ভাক্ষা উবাচ!

"ন হি ত্বয়া সদৃশী কাচিদন্তি, বিভাজনে হৃতিমাত্রং যথা ঞ্রী:। ব্রপঞ্চ তে দিব্য মনন্তকান্তি-প্রজ্ঞাঞ্চ দৈবীং স্কুভগে! বিভর্ষি "—॥ ২৩॥

मदयञ्चान्छ।

"শ্রেষ্ঠানি যানি দ্বিপদাং বরিষ্ঠ!,

যজেষু বিদ্ধন্পপাদয়ন্তি।
তৈরেব চাহং সম্প্রবৃদ্ধা ভবামি,

চাপ্যায়িতা ৰূপবতী চ বিপ্র!॥ ২৪॥

যচ্চাপি দ্রব্য মুপযুজ্যতে হ,

বানস্পত্যমায়সং পার্থিক বা।
দিব্যেন ৰূপেণ চ প্রজ্ঞা চ,

তবৈব সিদ্ধিরিতি বিদ্ধি বিদ্ধন্!"—॥ ২৫॥

তাক্ষ্য উনাচ।

ইদ< শ্রেয়ঃ পরমং মন্যমানা,
 ব্যাযছন্তে মুনয়ঃ সংপ্রতীতাঃ।

বসিতোহর্থ: ॥ ২৩ ॥ যজেম শ্রেষ্ঠানি কর্মালাবর্দ্ধোপাসনানি, উপাসনা স্বরূপঞ্চ "অহং ক্রতু রহংযজ্ঞ: স্থাহ মহ মৌষধং, মজোহহ মহ মেশজা মহ মগ্লি রহং হতং"—ইতি ভগবত্পদিন্তং সর্বেষ্ণ যজালেষ্ ব্রহ্ণান্তি করণম্॥ ২৪ ॥ বানস্পতাং সমিজ্জুহ্বাদি,—আয়সং সৌবর্ণাদি,—পার্থিবং বীহ্যাদি,—দিবোন দিবে স্থগায় হিতেন রূপেণ,—প্রক্তরা অহংক্রতু রিত্যাদিনা উক্তবিধ প্রজ্ঞান্ত্রেন,—তবৈব প্রত্যাগ্রনঃ সিদ্ধিঃ, প্রাপ্তি মুক্তিবা, ন দ্ব নাল্লন্ত স্থানান্তর সিদ্ধিরিতি বিদ্ধি—॥ ২৫ ॥ ইদংতবৈব সিদ্ধি রিত্যানেনোপদ্বিতং প্রত্যক্রপং ব্যাক্তন্তে নিগৃত্বতি ইক্রিয়া

আচক্ষ্ব মে তং পরমং বিশোকং,
মোক্ষং পরং য^ প্রবিশন্তি ধীরাঃ।
সাস্থ্যা যোগাঃ পরমং যং বিদন্তি,
পর^ পুরাণ্ ত মহং ন বেদ্মি "— ॥ ২৬ ॥

मत्रयञ्जाकात्र ।

তে বৈ পরং বেদবিদঃ প্রপন্নাঃ
 পরং পরেভাঃ প্রথিতং পুরাণম্।
 স্বাধ্যায়বস্থো ব্রভপুণ্যযোগে
 স্তপোধনা বীতশোকা বিমুক্তাঃ॥২৭॥

দীনীতিশেষঃ, সম্প্রতীতাঃ সমাকৃ বিশ্বাস যুক্তাঃ 🛭 ২৬ 🗷 বেদবিদ এব প্রপল্পা ন হবৈদিকাঃ " নাবেদ্বিশ্বহৃতে ভং বৃহত্তম্ " ইতি শ্রুচতেঃ, পরংব্রদ্ধ পরেতাঃ বিরাট্ স্তান্তর্গামি দোপাধিতাঃ পরং নিরুপাধিকরাৎ শ্রেষ্ঠং, প্রথিতং সচিদানন্দরপেণ সর্বাত্র প্রথাং গতং যথোক্তং "প্রস্তি ভাতি প্রিয়ং রূপং নাম চেতার্থ পঞ্চং। আদাত্রয়ং ত্রন্মরূপং জ্ব জ্রপততো দ্বয় " ইতি, পুরাণং পুরাপি নবং, এতেন দে পাধিকানা-মুৎপত্তিঃ স্থৃচিতা, ব্ৰতং অহিংদাদি, পুণাৎ জপাদি, যোগ শিচত রুত্তি নিরোধঃ, তৈঃ, তপঃ স্বধর্মাচরণ মেব ধনং বেষাং তে প্রাপ্তবন্তীতি শেহঃ ॥ २१ ॥ ष्यमा व्यञायस्त्रनः, ष्रवादिनिकार्थः इठ वता स्वापिता मगूर्यान মাহ তদ্যেতি—তদ্য চিদাত্মন: মধ্যে বেতদো বঞ্জুল তকরিব সবীজাঙ্কুরো বন্ধাও রক্ষ: চিতা পরিচ্ছেদারাৎ তন্মধান্তঃ, পুলো রমণীয়ো গন্ধ ইব भक्तानि विराहा धर्म ज्ञान रेन्डारेनामधान च यित्र छी जि भूना भक्तः, সহত্রং অনতং শাখা ইব ভোগস্থানানি যামিন্, বিপুলোইপরিচ্ছিত্রঃ বিভাতি, ত্যানুলাদ বিদ্যারপাৎ সরিত ইব সন্তত প্রবাহবতো ভোগ বাদনাঃ প্রত্রবন্তি উত্তিষ্ঠন্তি, মধুবৎ মিষ্টং উদক্বদাপ্যায়ন করং ভোগাজং মুখং প্রস্তুতি তাঃ মধুদকপ্রস্তুত্তি, ভোগবাসনা ছি উত্তর্কালীনং

তস্যাথ মধ্যে বৈতসং পুণাগন্ধং,
সহস্রশাথো বিপুলো বিভাতি।
তস্য মূলাৎ সরিত: প্রস্রবন্তি,
মধুদক-প্রস্রবণাং স্বপুণ্যাং ॥ ২৮ ॥
শাথাং শাথাৎ মহানদ্যং সংযান্তি সিকভাশয়াং!
ধানাপুপা মাংসশাকা সদা পায়সকর্দ্দমাং ॥ ২১ ॥
যন্মির্যায়খা দেবাং সেন্দ্রাং সহ মরুদ্দাণাং।
ঈজিরে ক্রভুভিং শ্রেষ্টেন্তংপদৎ পরমং মম "—॥ ৩০ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডেরসমাস্যাপর্বাণি সরস্বতী তাক্ষ্য
সংবাদে বড়শীত্যধিকশতভ্যোহ্ধ্যায়ং ॥ ১৮৬

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ভোগমুখং প্রবৃত্তি জননাদিদার। প্রস্বতীতি প্রসিদ্ধন্ ॥ ২৮ ॥ শাখা মিতি—মহানদ্যো বাসনাঃ পুরা শাখাং শাখাং তত্ত্বং ভোগজানং সংযান্তি অপ্রথাহ পতিতং পুরুষং নয়ন্তীতার্থঃ, পুণা বাসনয়া পুণামাচরন্ অর্গং গছন্তি এব মনাত্রাপি, সিকতাইব পরক্ষার মসংশ্লিষ্টাঃ পুর পশ্বাদয় স্থাম্প শেরতে তাঃ সিকতাশয়া পুরাদিবিষয়া ইতার্থঃ, ধানা ভৃষ্ট্যবাঃ, অপুপাঃ সচ্চিত্রং ভক্ষাং, শেবং পুসিদ্ধং, ধানাদিকং মধুদকস্থানীয়য়া স্থামা বিশেবনাৎ, বিষয়স্থাই হি ধানাবং ন অনাতীয়ং প্রস্তুত্ত, অপুপবদ নেকছিত্রগুক্তং মাংসবং হিংসা লভাং "নাল্পহতা ভূতানি ভোগঃ সম্ভবতি ইতি প্রসিদ্ধেঃ, শাকবদশ্যারং, পারসবম্ম মধুরং পাকে গুরুতরঞ্জ কর্দমহং তিত্তপট্যা মলিনীকরণঞ্চ ইতি পারতিতনাভূমো অনাদ্যহ বিদ্যামূল্য ভূবিতোহয়ং সংসার বৃক্ষঃ অতি বিরসকলো বিদ্যয়াহ্বিদ্যা নাশাং সমুল মুন্তুলনীয় ইতার্থঃ, তথাত চিদ দ্বৈত মব্যাইতন্ ॥ ২৯ ॥ যন্মিন যংপ্রাধিনিমিতং, প্রেষ্ঠঃ ক্রতুভি র্যোম্বজে রয়্যাদ্যো যং গছন্তি তৎ মম বিদ্যারপায়াঃ সরস্বত্যাঃ পদং পদনীয়ং প্রাপানীয়ং স্থানং পরমং সর্বেণং কৃষ্টং জাতৃজ্ঞান জ্ঞেয়ভান শূন্যং ব্রক্ষাহৈতন্ ॥ ৩০ ॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগীরে জারত ভাবদীপে বড়শীত্যধিক শত তমেহধ্যায়ঃ ॥ ১৮৬ ॥ ততঃ স পাপ্তবো বিপ্রশ্ মার্কণ্ডেয় মুবাচ হ। কথয়স্থেছ চরিতং মনো বৈবস্বতস্যচ॥ ১॥

মার্কতের উবাচ।

' বিবস্বতঃ স্থতো রাজা মহর্ষিঃ স্থপ্রতাপবান। বস্থুব নরশার্দ্দ্ল। প্রজাপতিসমন্থ্যতিঃ ॥ ২ ॥

পূর্বক চিদ্রুমৌ অবিদ্যামূলো জগদ্বক উল্বিডঃ, সোহবিদ্যাক্ষয়ে ভূমাবেব লীয়ত ইতি দৰ্শিতং, তত্ৰ সকুদনিদ্যাক্ষয়ে সংসাৱভানং ন স্যাৎ, দৃশ্যতে চ कीशाविकानामिशि मार्कट ध्यानीनार मरमात्र जान मन्यानिवर, हेजि জীবনা,কৌ দন্দিহানো রাজা মার্কণ্ডেয় মুবাচ ইত্যাহ ততঃ দ ইতি— মনোঃ মহুতে ইতি অভিমানাত্মকো হলারো মহুস্তদা, বিশেষেণ বস্তে আচ্ছাদরতি চিৎপ্রকাশমিতি বিবোহজানং, তদান্ বিবস্থান্ মারাবী ঈশ্বরঃ, " মাগ্রিনন্ত মহেশ্বরং " ইতি আচতেঃ, দ এব বৈবস্বতঃ, তদ্য বৈব-অতস্য চরিতং সঞ্চরণং অবিদ্যানাশে সত্যাবিদ্যকোহকারঃ কথং সঞ্চ-রতি >—নহি তন্তু দাহে পট ত্তিষ্ঠতীতাকেপ: ॥ ১ ॥ অপরন্ত আধ্যারি-কা মনুস্ত্যৈর উত্তর মাহ বিবস্বত ইত্যাদিনা-অত পরব্রহ্ণণ এব রূপা-স্তরং মৎস্যাবোগ জীবঃ সে ১২৯ বেণ মহনা উত্তরে তরভাঠের অলি-@রাদিরপেয় স্থলদেহেয় তপোবলা নিপাতাতে, সচ সমুদ্রাখ্যে বৈরাজে দেহে নিপতিত কম্পান্তে অবিদ্যানাশরণে সভ্যাপ দ্রপটন্যায়ে নামুবর্তমান মহন্বারং সপ্তর্থি সংজ্ঞাকঃ প্রাণাদিভিঃ বীজ সংক্তৈঃ প্রার্থ্ধ कर्मां जिन्ह महिजर श्रवमाम नाराक्षिर रामना रवात्रा कीरमरामा अलग-कारल श्राह्यभानः (भन्नगृष्ठमारम्हाल ज्यावाजा जाल महामनशा निका-मनमर विनीन मञ्चलका जीवमर्रमा मर्मनर व्याप्त्रां विनीत शहकात्त्र জীবত্তং নশাতি, সপুন নিরস্তজীবভাবোৎহল্যাের বন্ধরপতা মাপলাে যথা भुद्धेर वामनमा क्रांप मुक्जि, नरकेशार विमारिश कांत्रत मश्मानजान দদ্শং কাৰ্যাং চক্ৰদ্ৰমিবং কিঞ্ছিৎ কাল মহ্বৰ্তত ইতি আধ্যায় তাং भवाम । १ । अकतार्थस—भिजतः वेशतः भिजामहर खंदर तम अजि

ওজসা তেজসা লক্ষ্মা তপসা চ বিশেষতং। অতিচক্রাম পিতরং মনুঃ স্বঞ্চ পিতামহ্ম্ 🛚 😊 🖟 উর্কুবাছ বিশালায়া বদ্যাংস নরাধিপ:। **একপাদস্থিত স্তীব্রঞ্চার স্থমহন্তপঃ ॥** ৪ ॥ অবাকৃশিরাস্তথা চাপি নেত্রৈ রনিমিবৈর্দ্ভম্। সোহতপ্যত তপো ঘোরং বর্ষাণামযুত্ত তদা॥ ৫॥ তং কদাচিত্তপস্যন্ত মার্ডচীরং জটাধরম্। চীরিণীতীরমাগম্য মৎস্থো বচন মত্রবীৎ॥ ৬॥ ' ভগবন্! কুদ্রমৎস্যোহিন্সি বলবদ্যো ভয়ং মম। মৎস্তেভ্যে হি'ততো মাং স্বং তাতুমईদি স্বত্ত । । ৭॥ দুর্বলং বলবন্তে। হি মৎস্থা মৎস্থং বিশেষতঃ। আস্বদন্তি সদা বৃত্তি বিহিত। নঃ সনাতনী ॥ ৮॥ তত্মান্তয়ৌঘান্মহতো মজ্জন্ত নাং বিশেষতঃ। ত্রাত্ম≨সি কর্ত্তাশি ক্তে প্রতিকৃতং তব"—॥ ৯ ॥ স মৎস্থাবচন<u> শুরুষা কুপরাভিপরিপ্ল</u>তঃ। মনু কৈবিশ্বতো হগৃহ্ণাত্তং মৎস্তাৎ পাণিনা স্বয়ম্॥ ১০॥ উদকান্ত মুপানীয় মৎস্থাং বৈবন্ধতো মনু:। অলিঞ্জরে প্রাক্ষিপত্তং চক্রাংশুসদৃশপ্রভাগ ॥ ১১॥ স তত্র বরুধে রাজন্। মৎস্তঃ পরমসৎকৃতঃ। 🗱 পুত্রবৎ স্বীকরে।ভবৈশ মনুর্ভাবং বিশেষতঃ ॥ ১২ ॥

চক্রাম, দেহাদাবাবেশ বলার মন্ত ইতার্থঃ ॥ ৩ ॥ এব মহস্কারস্য ঈশাদ্যভালাৎ বস্ত্রে প্রসন্তে তপস শুরির্জুগোয়ত্ব মাহ উর্ধবান্ত রিত্যাদিনা—
॥ ৪ ॥ ৫ ॥ চীরিণী—নদীবিশেবঃ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ আলিঞ্জের মানকাধ্যপাত্রে ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ন সম্ভবং স্কুলত্বেন ম্মাবিতার্থঃ

^{* &#}x27; পুত्रवक्रार करतार " देखि कः, डारेन्य देखि-यः शार्थः।

অথ কালেন মহতা স মৎস্ত্যঃ স্থুমহানভূৎ। অলিঞ্জেরে যথা চৈব নাসে সমভবৎ কিল। ১৩। অথ মৎস্থো মনুৎ দৃষ্টা পুনরেবাভ্যভাষত। " ভগবন্ ! সাধু মেহদ্যান্যৎ স্থান সংপ্রতিপাদয়"— । ১৪। উদ্বৃত্যালিঞ্জরা**ত্তমা ততঃ স ভগবান্মসু:।** তং মৎস্থামনয়দ্বাপীং মহতীং স মনুস্তদা॥ ১৫॥ তত্র ত প্রাক্ষিপচাপি মনুঃ পরপুরঞ্জা। অথাবদ্ধত মৎস্তঃ স পুনর্বর্ষগণান বছুন্॥ ১৬॥ দ্বি যোজনায়তা বাপী বিস্তৃতা চাপি যোজনম্। ত্যাং নাসে। সমভবন্ধংগ্যে রাজীবলোচন। ॥ ১৭॥ বিচেষ্টি ভুঞ্চ কৌন্তেয়! মৎস্তো বাপ্যা^ বিশা**স্পতে**!। মন্ত্রং মৎস্তস্তদা দৃষ্টা পুনরেবাভ্যভাষত ॥ ১৮॥ "নয় মাং ভগবন্। সাধো। সমুদ্রমহিষী প্রেয়াম্। গঙ্গাং তত্ৰ নিবৎস্থামি যথা বা তাত। মন্যাসে॥ ১৯॥ নিদেশে হি ময়া তুভ্যু হাতব্য মনস্কুয়তা। রুদ্ধিহি পরমা প্রাপ্তা ত্বৎক্ষতে হি ময়ানঘ। "॥ ২০॥ এবমুক্তো মনুর্দ্মৎস্তা মনয়দ্ভগবান বশী। নদীং গঙ্গাং ভত্ত চৈনং স্বয়ং প্রাক্ষিপদ্যুত॥ ২১॥ স তত্র বরূধে মৎস্তঃ কঞ্চিৎ কাল মরিনদম!। ততঃ পুনৰ্মানু দুক্টা মংস্যো বচনমত্ৰবীৎ ॥ ২২ ॥ " গঙ্গায়াং হি ন শক্ষোমি রুহত্বাচ্চেষ্টিভুং প্রভো !। সমুদ্র^ নর মামাশু প্রসীদ ভগবন্নিতি''— ॥ ২৩ ॥

॥ २०॥ २८॥ २०॥ २०॥ २०॥ अमश्टमा १०० हाउ हेडि मसक्कः ॥ १२॥ २२॥ २०॥

উদ্ধ ত্য গঙ্গাসলিলা উত্তো মৎসাং মনুঃ স্বয়ম্। সমুদ্র মনরৎ পার্থা! তত্র চৈন মৰাস্থল । ২৪॥ সুমহানপি মৎস্যস্ত স মনোর্য়তন্ত্রা। वानीम्बर्धकेश्यां म्ह न्यामंशक्तस्य थम्ह देव ॥ २०॥ যদা সমুদ্রে প্রক্রিপ্তঃ স মংস্যো মনুনা তদা। তত এনমিদ্শ বাক্যং স্ময়মান ইবাব্রবীৎ॥২৬॥ ' ভগবন্ ! হি কুতা রক্ষা ত্বয়। সক্ষা বিশেষতঃ। প্রাপ্তকালম্ভ ষৎকার্য্যং তথা তচ্চ য়তাং মম। ২৭॥ অচিব্রান্তগবন ! ভৌম মিদং স্থাবরজঙ্গমধ্। সর্বামের মহাভাগ। প্রলয়ং বৈ গমিষাতি॥ ২৮॥ সংপ্রকালনকালোহয়ং লোকানাং সমুপস্থিতঃ। তক্ষান্তাং বোধয়াম্যদ্য যত্তে হিতমন্ত্রতমন্ । ২৯॥ ত্রসানাং স্থাবরাণাঞ্চ যচ্চেঙ্গং যচ্চ নেক্সতি। ভদ্য সর্বাস্য সংপ্রাপ্তঃ কালঃ প্রমদারুণঃ ॥ ৩०॥ নৌশ্চ কারয়িতব্যা তেন্দুটা যুক্তবটারকা। তত্ত সপ্তর্ষিভিঃ সার্দ্ধ মারুহেথা মহামুনে ! ॥ ৩১॥ वीकानि रेठव मक्तानि यरथाकानि विरेकः भूता। তস্থামারোহয়ে * নাবি সুসংগুপ্তানি ভাগশঃ। ৩২।।

॥২৪॥ মংসাম্পর্শাগদ্ধকং চিদাভাস সম্পর্কজং স্থং যসাইটিত তস্য মনোঃ ॥২৫॥২৬॥২৭॥২৮॥ সংপ্রকালনং একীভাবেন শুক্তি রজতস্যের প্রপঞ্জ্যলস্য ভ্রীকরণ্য ॥২৯॥ অসানাং জদমানাং ইঙ্কং চলন শীলং, র্ক্ষাদিনেক্ষতি পাষাণাদি, কালঃ অন্তঃ ॥৩০॥ বটারকারজ্ঞঃ 'বটবেইনে' লাসরপং, সপ্তর্বভিঃ প্রাণেজিরৈঃ ॥৩১॥ বীজানি কর্মাণি স্পংগুশুনি দর্শনাযোগ্যানি অদুইনীতার্থঃ ॥৩২॥ মাং অন্তরাত্মানং প্রতীক্ষেথাঃ, প্রতীপং জড়ানৃতাদি প্রাতি কুলোন ইক্ষেথাঃ আলোচয়, আগমিষামি আবিভবিষ্যামি, শৃক্ষী শৃণাতি ছিন্তি জীবোপাধীন্ বাধতে ইতি শৃকং,

^{* &}quot; ক-^য-পুস্তকে আরোপয়ে " ইতি দুখতে।

নৌস্বন্দ মাং প্রতীক্ষেণা স্তদা মুনিজনপ্রিয়!। আগমিষ্যাম্যহ্ শুঙ্গী বিজ্ঞেয়ন্তেন তাপদ ! ॥ ৩০॥ এবমেতত্ত্বরা কার্য্য মাপুটোইসি ব্রজাম্যহম্। তা ন শক্যা মহত্যো বৈ আপস্তর্ভুৎ ময়া বিনা॥ ৩৪॥ নাভিশক্ষ্যমিদঞাপি বচনং মে স্বয়া বিভো! "-এবং করিষ্য ইতি ত॰ স মৎস্যং প্রত্যভাষত।। ৩৫ ॥ खग्रज्र यथाका म म सुख्या शा शत्र अगत्र । ততো মনুর্মহারাজ! যথোক্ত মৎস্থাকেন হ। ৩৬॥ বীজান্যাদায় সর্ব্বাণি সাগরণ পুষ্ণাবে তদা ! নৌকয়া শুভয়া বীর। মুহোর্মিণুমরিন্দম !॥ ৩৭॥ চিন্তুরামাস চ মনু স্তং মৎশ্রুৎ পৃথিবীপতে!। স চ ভচ্চিন্তিত^ জ্ঞারা মংস্থাং পরপুরঞ্জয় ! ॥ ২৮॥ শৃঙ্গী তত্রাজগামাশু তদা ভরতসভ্তম।। তং দৃষ্ট্ৰ মনুজব্যান্ত। মনুর্মাৎস্যং জলার্থবে। ৩৯। শৃঙ্গিণং ত^ যথোক্তেন ৰূপেণাডিমিবোচ্ছি তম্। विज्ञिक्तरार शाक्ष यथ यथ्यमा मुर्किन ॥ ४० ॥ মমুর্শ্মনুজশাদ্দুল! তিম্মিন্ শৃঙ্গে ন্যবেশয়ৎ। সপ্যতন্ত্রেন পাশেন মৎস্যঃ পরপুরঞ্জ ! ॥ ৪১॥ বেগেন মহতা নাবং প্রাকর্ষলবণান্তুসি। স চ তাংস্তারয়লাবা সমুদ্রং মনুজেশ্বর! ॥ ৪২ ॥ নুত্যমান মিবোশ্মীভি গ্রহ্মান মিবান্তুসা। কোভামাণা মহাবাতৈঃ সা নৌস্তুম্মিন মহোদধৌ ॥ ৪৩ n

মৃতি শুদান, কথাপকে স্থাম মেব। ৩৩। আপঃ সংসারঃ, মরা বিনা মদীরং জ্বানং বিনা। ৩৪॥৩৫॥৩৬॥৩৭॥৩৮॥৩৯॥৪০॥৪১॥৪২॥ ॥৪৩॥

ঘূর্ণতে চপলেব স্ত্রী মন্তা পরপুরঞ্জয়!। নৈব ভূমি র্ন চ দিশঃ প্রদিশো বা চকাশিরে॥ ৪৪॥ সর্ক্ষমান্তমমেবাসীৎ খণ দ্যৌশ্চ নরপুঞ্জব!। এবছুতে তদা লোকে সঙ্কুলে ভরতর্ষভ।॥ ৪৫॥ অদৃশ্ভর্ষঃ * দপ্ত মনুর্শ্ৎশ্ভন্তবৈ চ। এবং বহুন বর্ষগণান্ তাং নাবং সোহথ মৎস্যকঃ॥ ৪৬॥ চকর্ষতিন্ত্রিতো রাজংস্তশ্মিনু সলিলসঞ্চয়ে। ততো হিমবতঃ শৃঙ্গং যৎ পরং ভরতর্ষভ ! ॥ ৪৭ ॥ তত্রাকর্ষভতো নাবং স মৎস্তঃ কুরুনন্দন ! । व्यथाविवीखना मध्याखानुषीन् व्यव्मन् भरेनः ॥ ४৮ ॥ " অস্মিন্ হিমবতঃ শৃঙ্গে নাবং বগ্নীত মা চিরম্"। সা বন্ধা তত্র তৈত্র্ণ মৃষিভির্ভরতর্বভ । ॥ ৪৯॥ নৌ শ্বংখ্যন্থ বচঃ জাত্বা শৃঞ্চে হিমবতস্তদ।। ভচ্চ নৌবন্ধন শ্বাম শৃঙ্গং হিমৰতঃ পরম্॥ ৫ • ॥ খ্যাত মদ্যাপি কৌন্তেয় ! তদ্বিদ্ধি ভরতর্বভ !। অথাত্রবীদনিমিষ স্তানুষীন্ সহিতস্তদা ॥ ৫১॥

॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৮৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥ অহমিতি—অচলে অমুর্তে কারণাত্মনি শৃদ্ধে বন্ধনশ্য কলং ঈশ্বরান্ত্রহাদহং ব্রদ্ধানীতি জ্ঞান মিত্যর্থং, তথাচান্যত্র ' পূর্বেং মূর্ত্তে প্রতং চিত্তং মূর্তেং একৈকাবরব তাাগো নৈকদেশে মিত মাত্রে চ ধারয়েং " ইত্যুক্ত্ব্য " তত্র লব্ধ পদং চিত্ত মাক্রব্য ব্যোমি ধারয়েং তচ্চ ত্যক্ত্ব্য মদারোহে ন কিঞ্চিদপি চিত্তয়েং " ইতি ব্যোমাখ্যা মূর্ত্তহারা মূর্ত্তামূর্তেতয়ে শুদ্ধে আরোহ উক্তঃ আরু হিম্বতঃ শৃদ্ধে নাবং বন্ধীত ইতি অহং প্রজাপতি ব্রাহা ইতি চ শ্লোকাতাং মূর্ত্ত্যা রাধনাদেব কারণং ব্রদ্ধ নির্বিশেষঞ্চ বন্ধ ক্রমেণ প্রাণাত ইতি দশিতং, মৎসারপেণ জ্ঞাতেন যুসং ভ্রাম্থাক্ষিতা ইতি

^{* &}quot; অনৃশান্ত সপ্তর্বয় " ইত্যোবং কচি দৃশ্যতে তৎসাধু বা ২ সাধু বা পণ্ডিতৈ জফিবাং।

অহং প্রজাপতিত্র ক্লা মৎপর্ণ নাধিগম্যতে। মংস্থাৰপেণ যুয়ঞ্চ ময়। স্মান্মোক্ষিতা ভয়াৎ। ৫২।। मञ्जूना ह अकाः नर्दाः नर्पतासूत्रमानुषाः। অফব্যাঃ সর্বলোকাশ্চ যচ্চেঙ্গং যচ্চ নেঙ্গতি ॥ ৫৩ ॥ তপদা চাতিতীবেণ প্রতিভাষ্য ভবিষ্যতি। মৎপ্রসাদাৎ প্রজাসর্গে ন চ মোহং গমিষাতি"। ৫৪। इकुाकु वहन भएमाः ऋ त्ना एर्भनः गठः। স্রফার্কামঃ প্রজাশ্বাপি মনুবৈধবস্বতঃ স্বয়ম্। ৫৫॥ প্রমূচোহতুৎ প্রজাসর্গে তপস্তেপে মহন্ততঃ। তপদা মহতা যুক্তঃ সোহ্থ অন্ত্ৰু প্ৰচক্ৰমে। ৫৬॥ সর্বাঃ প্রজা মনুঃ সাক্ষা দ্বথাবদ্ভরতর্বভ!। ইত্যেত্রত্বাৎস্তকং নাম পুরাণং পরিকীর্ত্তিম্। ৫৭ ॥ আখ্যানমিদমাখ্যাতং সর্বাপাপহর মরা। য ইদং শুণুয়ান্নিত্যং মনোশ্চরিতমাদিতঃ। স সুখী সর্বপূর্ণার্থ: স্থর্গলোকমিয়াররঃ"॥ ৫৮॥ ইতারেণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডের সমাস্তা পর্বাণি বৈবস্বতো-পাখ্যানে সপ্তাশীত্যধিক শত তমোহধ্যায়ঃ॥ ১৮৭॥

ভয়ং আহলার (দেরের ধর্ম ইজু)ক্তং, শেষংস্পাইটন্॥ ৫২॥ ৫৩॥ ৫৪॥.৫৫॥ ॥ ৫৬॥ ৫৭॥ ৫৮॥

> ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তাশীত্যাধিক শত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮৭॥

বেশস্পায়ন উবাচ।
ততঃ স পুনরেবাথ মার্কণ্ডেয়ং যশন্ত্রিনম্।
পপ্রচ্ছ বিনরোপেতো ধর্মরাজাে যুধিন্তিরঃ ॥ ১॥
"নৈকে যুগসহস্রান্তা স্বুয়া দৃষ্টা মহামুনে !।
ন চাপীহ সমঃ কশ্চি দায়ুয়ান্ দৃষ্ঠতে তব ॥ ২॥
বর্জয়িয়া মহায়ানং ব্রহ্মানং পরমেন্তিনম্।
ন তেহন্তি সদৃশঃ কশ্চি দায়ুয়া ব্রহ্মবিন্তম !॥ ৩॥
অনন্তরীক্ষে লােকেহন্মিন্ দেবদানববর্জিতে।
ত্বমেব প্রলয়ে বিপ্রা! ব্রহ্মাণমুপতিষ্ঠসে ॥ ৪॥
প্রলয়ে চাপি নির্ক্রন্তে প্রুদ্ধে চ পিতামহে।
ত্বমেকঃ স্বজ্যানানি ভূতানীহ প্রপশ্সমি॥ ৫॥
চতুর্বিধানি বিপ্রর্মে! যথাবং পরমেন্তিনা।
বায়ুভূতা দিশঃ কৃত্বা বিক্ষিপ্যাপস্ততন্ততঃ ॥ ৬॥
ত্বরা লােকগুরুঃ সাক্ষাৎ সর্বলােকপিতামহঃ।
আরাধিতাে দ্বিজ্ঞেষ্ঠ। তৎপরেণ স্মাধিনা॥ ৭॥
আরাধিতাে দ্বিজ্ঞেষ্ঠ। তৎপরেণ স্মাধিনা॥ ৭॥

এবং জীবেল জিং প্রসাধা "তদ্যাথ মধ্যে বেতদঃ পুন্য গদ্ধা " ইত্যাদিনা নিগ্র নে বন্ধানে দগুনত মারিকো ভাবাভাবা বুক্তো তৎপ্রপঞ্চার্থং
"ততঃ দ পুনরেবাথ" ইত্যাদিমন্য মানে। বথা বিধীতান্ত মধ্যায় দ্বর মারভাতে অদ্বৈতিদদ্ধার্থে ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ অনন্তরীক্ষে স্থুল বিষদাদ্যভাববতি
অন্দিন্ লোকে প্রত্যাগান্ধনি প্রলয়ে স্থুল প্রপঞ্চন্য দতি ব্রহ্মানং স্কাভূতময়হিরণার্রভ্রুম্ ॥ ৪ ॥ ইহ হদয়পুণ্ডরীকে ॥ ৫ ॥ চতুর্বিধানি বাসনা
ময়ানি জরাযুদ্রাগুজ স্বেদজোন্তিজানি, অত্য প্রন্থর যত্ত্বসাধা
তা মাহ বাযুভূতা ইতি—দিশঃ স্থলং জগংপ্রাণনিরোধনে বাযুমাত্রতা
মাপাদ্য ততন্তত ন্তেন তেনো পায়েন অপঃ দেহাকার পরিণতাঃ
বিন্দিপ্য পরিতাজা ব্রহ্মাণ্ডং স্কুলদেহেতঞ্চ লিক্ষে প্রবিলাপোত্যর্থং ॥ ৬ ॥
লোকগুকঃ স্বান্ধা, সমাধিনা মনঃ প্রনিধানেন ॥ ৭ ॥ অনেকশঃ অনেকৈ
কপারিঃ কৃতং কার্যাং সর্কাং বন্ধাণ্ড< স্থ্রান্থ প্রাপ্রান্থ প্রাপ্রান্থ রুষ্

স্থাপ্রমাণমথো বিপ্রা । ব্রুষা ক্রতমনেকশং।
ঘোরেণাবিশ্র তপসা বেধসো নির্ক্তিন্ত রা ॥ ৮ ॥
নারায়ণাক্ষপ্রথান্ত শুণাল্পরায়েহতিপঠাসে।
ভগবানেকশং ক্রন্না ন্বয়া বিফোশ্চ বিশ্বক্রং ॥ ৯ ॥
কর্ণিকোদ্ধরণং দিব্যং ব্রহ্মণং কাম্ম্রপিণং।
রন্ত্রালক্ষার্যোগ্যাভ্যাং দৃগ্ভ্যাং দৃইন্ত রা পুরা ॥ ১ ॥
তন্মাং স্ব্যান্তকো মৃত্যু র্জরা বা দেহনাশিনী।
ন স্থাং বিশ্ভি বিপ্রর্ঘে প্রসাদাং প্রমেষ্ঠিনং॥ ১১ ॥
যদা নৈব রবিন্ত্রি র্ম বাযুর্নচ চন্দ্রমাং।
নৈবান্তরীক্ষণ নৈবোর্ষী শেষং ভবতি কিঞ্চন॥ ১২ ॥

সংবেদ্যং কুত্বা সাৰ্ব্বক্ষ্যং প্ৰাপ্যেত্যৰ্থঃ, ষোৱেন তীব্ৰেন তপদা ঐকাণ্ড্যোন " মনসন্চেন্দ্রিয়াণাঞ্চ ঐকাত্রাং প্রমং তপঃ " ইতি স্মৃতেঃ, বৈধসঃ বিরাজঃ, মরীচ্যাদয়ো বা, নির্জিতাঃ স্বাত্মশং কৃতাঃ ॥ ৮॥ নারায়ণসা অহঃ ব্যানং সমীপং বা "অহঃ স্থানেহবিকে ক্রোড়ে" ইতি বিশ্বঃ! তত্ত্ব প্রথাঃ প্রথাতঃ ভগবন্তকেয়ত্তমঃ, সাম্পরায়ে পরলোকে স্থূল-দেহত্যাগে বা কর্তব্যে সতি, অতিপঠাসে অত্যন্তং শুরুসে লোকৈ-রিতি শেবঃ, ভগবানিত্যাদি সার্দ্ধঃ অক্ষরাধিক্য মার্বং, বিষ্ণো এ কাণঃ উপলব্ধিস্থানছেন সংবন্ধি কর্নিকোম্বরণং কৃতা যোগকলয়া হৃদয় পুগুরীক মুদ্ধাটোতার্থঃ, ত্রা দৃষ্টাং ভগবাননেকশেছনেক বারং দৃষ্ট ইতাময়ঃ ব্রুমি ভত্তজাতাৎকৃষ্টবস্থুনি তেষাং অলঙ্কারো নিবারণক্রিয়া পরং বৈরাগা মিতি যাবৎ, যোগঃ অভিযোগোইভাসেঃ বৈরাগ্যাভ্যাসাভ্যা-মিতার্থঃ, দৃগ্ভা মিতি দ্বিং অন্তর্ক্তা হার্দাকাশে দৃষ্টঃ, বহিদৃষ্ট্যাপি যোগজধর্মসংকৃত্য়া ব্যবহিতাদিদর্শিনাা কংক্রকাণ্ডরপী করতলা-মলকবং দৃষ্ট ইত্যভিত্রারেণ ॥ ১ ॥ ১০ ॥ তব বাং ন বিশতীত্যপ কুষ্যতে ॥ ১১॥ শেষং অবশিষ্টং পঞ্চ মহাভূত প্রলয়ে সভীতার্থঃ॥ ১২॥ একার্ণর সদৃশে একরসে লোকে আত্মনি সলিল একো ক্রফা হৈতে৷ ভবতি

তিশিলেক। নিবে লোকে নটে স্থাবরজঙ্গমে ।
নটে দেবাসুরগণে সমুৎসন্নমহোরগে ॥ ১৩ ॥
শয়ান মমিতাত্মানং পাত্মাৎপালনিকেতনম্ ।
ত্বমেকঃ সর্বাভূতশান ব্রহ্মাণমুপতিষ্ঠসে ॥ ১৪ ॥
এতৎ প্রত্যক্ষতঃ সর্বাং পূর্বাবৃত্তন দিজোত্তম ! ।
তক্মাদিজ্ঞাম্যহং শ্রোভূন স্বাবহেত্বাত্মিকাং কথাম্ ॥ ১৫ ॥
অমুভূতং হি বছশ স্বাব্যকন দিজোত্তম ! ।
ন ভে্ষ্যাবিদিতং কিঞ্জিৎ সর্বালোকেষু নিত্যালা"—॥ ১৬ ॥
মার্কণ্ডেয় উবাচ ।

" হন্ত তে বর্ত্তরিষ্যামি নমস্কৃত্বা স্বরন্তুবে।
পুরুষার পুরাণার শাশ্বভারাব্যরার চ ॥ ১৭ ॥
অব্যক্তার স্কুস্কার নিগুণার গুণালনে।
য এষ পুরুষব্যান্ত! পীতবাসা জনার্দ্ধনঃ ॥ ১৮ ॥
এয কর্ত্তা বিকর্তা চ ভূতাল্মা ভূতকুৎ প্রভুঃ।
অচিষ্তাৎ মহদাশ্চর্যাৎ পবিত্রমপি চোচাতে॥ ১৯ ॥

"আত্মান মেব লোক মুপাসীত" ইত্যাদৌ নির্বিশেবে আত্মনি সলিল লোক শব্দরোঃ প্রয়োগদর্শনাৎ, স্থাবরাদৌ নফে বাধিতে সতি॥ ১৩॥ স্বয় মাপ তত্ত্ব শহানং সমুদ্রে বীচি বল্লীনং, পদ্মোৎপল নিকেত নং হংপদ্মবল্লীপুস্পস্থং আত্মানং মায়াবিনং ব্রহ্মাণং, ব্রহ্ম অন্থবাদ্যা পেক্ষরা পুংস্থং॥ ১৪॥ এতৎ সর্বাং ওয়াদৃষ্ট মিতি শেষঃ॥ ১৫॥ ১৬॥ স্বয়স্ত্রুবে অজ্মানে, অস্যাপি জনাত্তে তত্ত্ব তত্তাপীত্যানবস্থাপাতঃ, পুক্ষায় পূর্ণায়, প্রাণায় নিত্যৈকরপায়, শাস্থতায় অনাদয়ে অব্যায় নিত্যায়॥ ১৭॥ অব্যক্তায় রূপাদিহীনায়, স্ক্র্মায় ত্র্লক্ষ্যায়, গুণাত্মনে মায়োপাধ্রে, সত্ত্বইত্যক্ল্যা নির্দ্রিশতি॥ ১৮॥ বিকর্তা বিধিরপত্ব কর্তা, মহৎ ব্রহ্ম॥ ১৯॥ বিশ্বং বিশ্বান্ত্রকমাপ অব্যায়ং অপরিণামি অত্রবাক্ষয়ং অবিনাশী, এর পীত্রাসা, কর্ত্বে নতু জিয়তে, এতেন ক্রম্পূর্ত্তে

অনাদিনিধন তুতং বিশ্বমব্যয়মক্ষয়ম্।
এয কর্ত্তা ন ক্রিয়তে কারণঞ্চাপি পৌরুষে॥ ২০॥
য দ্যেষ শ পুরুষো বেদ দেবা অপি ন ত বিছুঃ।
সর্বা মাশ্চর্যা মেবৈতলিক্তিং রাজসত্তম !॥ ২১॥
আদিতো মনুজব্যান্ত ! কুৎস্নস্য জগতঃ ক্ষয়ে।
চত্ত্বার্যান্তঃ সহস্রাণি বর্ষাণা ত হ কুত যুগম্॥ ২২॥

ব্যবহার পেক্ষয়া নিত ও মনাদির্গুদশিতং তচ্চবুাৎ পাদিত মাদি সভা-পর্ব্বটীকয়েঃ, পেক্ষিয়ে কারণঞ্চার মেব ভঙ্গাৎ প্রার্থনীয় ইতিভাগঃ॥ ২০॥ যুত্তম মিতি হক্তাবো মাদোষ ইত্যুক্তি বেদ্যি বেদিতো রভান্তাভেদ প্রদর্শ নাৰ্থা তথাচ তচতিঃ "ব্ৰহ্ম বা ইদ মগ্ৰ আসন্তিৰাত্মান মেবাবেদহং ব্দ্যাদিন্তি তাদিদং সর্বমভবৎ" ইতি, " ব্রাদেব পাখাতি-ব্ৰদ্ম না ব্ৰম ব্ৰহ্ম প্ৰাতি " ইতি স্থৃতিশ্চ, দেবা অপিন ডং বিছুৱবাল্পন-স্ব্যোচরত্বাৎ, স্ক্রিতি—আদিতঃ প্রমাজ্বা নির্ভিং নিষ্পার্থ এতৎ প্রতাক্ষাদিগমাং সর্কাং জগৎ আশ্চর্যামের স্বপ্নমায়েন্দ্র জানবৎ অসন্তা-বনীয়োৎ পাত্তিছিতি ক মেব, কদা জগাতঃ ক্ষয়ে দুষ্টে সতি অধিষ্ঠান সাক্ষাৎকারাৎ প্রায়েগ্র বাহিতিঃ প্রধানপরমারাদিকং জগৎকারণ মত্র-মীয়তে তব্মিন সতি তু প্রধানাদে রভাবাবধারণাৎ কথ মেকমাদ-পরিণামিনোই সহায়া দিচিত্র চনাত্মকং জগজ্জাতং রজাঃ সপ্ইবেত্য-ভান্তাশ্চর্যামিতি ভাবঃ, ভথাচ ব্রহ্মৈব সং সরতি তদেব চজগ্যাত্মনা নিঠভত ইতি লোকদয়তাৎপর্যায়॥ ২১ ॥ অর্মেব পুরুষঃ স্বাজ্ঞানোপা, মাশ্চর্যারূপৎ জগৎ পশাংশুক্র রাগাদিমান্ভূহা যুগাড়্যুট্যাত্মা ভবতি তথাচ আছতিঃ "কলিঃ শহানো ভণতি সংজিহানস্ত দ্বাপরঃ। উত্তিঠং স্ত্রেতা ভবতি কৃতং সম্পদ্যতে চরন্ " ইতি, ধর্মাৎ পরামুঙ্খঃ পুরুষ এব কলিঃ, ধর্মং শাস্ত্রাচার্য্যাদ্বিজানন্ দ্বাপারঃ, ত মহুষ্ঠাতু মিচ্ছং স্ত্রেতা, অহু-তিষ্ঠন কৃতং ভবতি, এতেষাং বুংক্রমেণ কাল প্রমাণ মাছ কলে বীভং সত্ব প্রদর্শনার্থং চত্বার্ব্যান্তরিত্যাদি না—॥ ২২ ॥ তাবচ্ছতী চতুঃশতী সন্ধ্যা পুরবিদ্যান্ মুগে উত্তর যুগ ধর্মাণাং উপসর্জনতয়া সংক্রমঃ, সন্ধাংশস্ত উত্তর-শ্মিন্ পূর্ব্বযুগধর্মাণাং, তথাবিধ উত্তর প্রকার ক্রিশতী মৃতঃ, অয়মেব পূর্ব্ব-

^{* &}quot; য**ংহোষ " ইতি ক-পু**স্তক্সা |

তক্ষ তাবছতী সন্ধ্যা সন্ধ্যাংশশ্চ তথাবিধঃ *।

ত্রীনি বর্ষসহস্রানি ত্রেতাযুগমিহোচ্যতে ॥ ২০ ॥

তস্য তাবছতী সন্ধ্যা সন্ধ্যাৎশশ্চ ততঃ পরম্।

তথা বর্ষসহস্রে দ্বে দ্বাপরং পরিমাণতঃ ॥ ২৪ ॥

তক্ষাপি দ্বিশতী সন্ধ্যা সন্ধ্যাংশশ্চ তথাবিধঃ †।

সহস্রমেকৎ বর্ষাণাং ততঃ † কলিযুগং স্মৃতম্ ॥ ২৫ ॥

তক্ষ বর্ষশতৎ সন্ধিঃ সন্ধ্যাংশশ্চ ততঃ পরম্।

সন্ধি-সন্ধ্যাংশয়োস্তল্যং প্রমাণ মুপধারয় ॥ ২৬ ॥

ক্রীণে কলিযুগে চৈব প্রবর্তি কৃতৎ যুগম্।

এষা দ্বাদশসাহর্সী যুগাখ্যা পরিকীর্ত্তিতা ॥ ২৭ ॥

এতং সহস্রপর্যন্ত মহর্রাহ্ম মুদাহৃতম্।

বিশ্বাৎ হি ব্রান্ধতবনে সর্বাতঃ পরিবর্ত্তে ॥ ২৮ ॥

লোকানাং মনুজব্যান্ত । প্রলম্বং তৎ বিত্ব ব্র্ধাঃ ।

অপ্পাবশিষ্টে তু তদা যুগান্তে ভরত্বভ ! ॥ ২৯ ॥

বুগাপেক্ষা সন্ধাংশ উত্তরত্বাপেক্ষা সন্ধাতি চোচাতে তথাচ কৃত ত্তেত্বাঃ সন্ধা-সন্ধাংশো সপ্তশতী, ত্রেভা দাপরয়োঃ পঞ্চ শতী, দাপর ক্ষলোক্সিন্তী, পুন:কলিক্তযোস্ত পাঞ্চ শভীতি বিজ্ঞেরং, এবঞ্চ কৃত্ত-ভালে চতুঃশভী কল্যপেক্ষা সন্ধাংশোপি কৃতাপেক্ষা সন্ধা এবং সর্ব্ধত্র ভেন সন্ধাসন্ধাংশয়োভুলাং প্রমাণং ভবতি ॥২০॥২৪॥২৫॥॥২৬॥২৬॥২৮॥ ২৮॥ ২৯॥ কলে দোষান্ বর্ণয়তি—প্রহাণায় যন্ত্রাসেন্দাক্ষ মার্গে প্রীতি জননায় চ সহজ্রান্ত ইতি—সহজ্রসা চতুর্ধাক্ষতসাক্তেহ-

^{*} ততঃ পরং ইতি কঃ। '
† অত্তাপি—ততঃ পর মিতি ক-পাঠঃ।

! "তথা " ইতি ক-য-পুস্ত করোঃ।

সহস্রান্তে নরাঃ সর্বে প্রায়শোহনুতবাদিন:। যজ্ঞপ্রতিনিধিঃ পার্থ। দানপ্রতিনিধিন্তথা ॥ ৩ ।॥ ব্রতপ্রতিনিধিকৈব তঙ্গিন কালে প্রবর্ততে। ব্ৰাহ্মণাঃ শূদ্ৰকৰ্মাণ স্তথা শূদ্ৰা ধনাজ কা:। ৩১। ক্ষজ্রধর্মেণ চাপ্যত্র বর্ত্তয়ন্তি গতে যুগে। নিরুত্তযজ্ঞস্বাধ্যায়া দগুাজিনবিবজি'তা: ॥ ৩২ ॥ ব্ৰাহ্মণাঃ সৰ্ব্বভক্ষ্যাশ্চ ভবিষ্যন্তি কলৌ যুগে। অঞ্জপা ব্রাহ্মণাস্তাত। শূদ্রা জপপরায়ণা:॥ ৩৩॥ বিপরীতে তদা লোকে পূর্ব্বৰপং ক্ষয়স্থ তৎ 1 বহুবো স্লেচ্ছরাজান: পৃথিব্যাপ মনুজাধিপ। ॥ ৩৪ ॥ মৃষাকুশাসিনঃ পাপা মৃষাবাদপরায়ণাঃ। আক্রাঃ শকাঃ পুলিন্দাশ্চ যবনাশ্চ নরাধিপা: ॥ ৩৫॥ ় কাষোজা বাহ্লিকাঃ শ্রা স্তথাভীরা নরোত্তম!। যুগান্তে মনুজব্যাঘ্র ! তথাকারাশ্চ ভারত !। ন তদা ব্ৰাহ্মণঃ কশ্চিৎ স্বধৰ্ম্মযুপজীবতি॥ ৩৬॥ ক্ষজিয়া শ্চাপি বৈশ্যাশ্চ বিকর্মস্থা নরাধিপ !। অপোযুষ: স্থপবলা: স্থপেবীর্য্য পরাক্রমা: । ৩१ । অল্পসারাল্পদেহাশ্চ তথা সত্যাল্পভাষিণঃ। বহুশূন্যা জনপদা মুগব্যালারতা দিশ: ॥ ৩৮॥ যুগান্তে সমনুপ্রাপ্তে রুথা চ ব্রহ্মবাদিনঃ ;* ভোবাদিনন্তথা শূক্রা ব্রাহ্মণাশ্চার্য্যবাদিনঃ॥ ৩৯॥

ন্ধিমপালে ॥ ৩০॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩২ ॥ ৩২ ॥ ৩২ ॥ অধর্মং যাক্সন প্রতি গ্রহাদি ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ সত্যেহপাং সত্যাপাং সন্ত্যবাদোহত্যন্তং অপপ ইত্যর্কঃ ॥ ৩৮ রুধা অনুভবা ভাবাং ॥ ৩৯॥

^{*} বন্ধচারিণ ইতি ক-প্সতে পাঠ:।

মুগান্তে মনুজব্যান্ত ! ভবন্তি বছজন্তবঃ ।
ন তথা প্রাণযুক্তাশ্চ সর্বগন্ধা বিশাশ্পতে ! ॥ ৪০।
রসাশ্চ মনুজব্যান্ত ! ন তথা স্বাক্যোগিনঃ ।
বছ প্রজা ক্রম্বদেহাঃ শীলাচারবিবজি তাঃ
মুখেভগাঃ স্ত্রিযো রাজন্ ! ভবিষ্যন্তি যুগক্ষরে ॥ ৪১ ॥
অউশূলা জনপদাঃ শিবশূলাশ্চতুপ্রথাঃ ।
কেশপূলাঃ স্ত্রিয়ো রাজন্ ! ভবিষ্যন্তি যুগক্ষয়ে ॥ ৪২ ॥
অশ্পেকীরাস্তথা গাবো ভবিষ্যন্তি জনাধিপ ! ।
অশ্পেশুক্তাকলাশ্চাপি পাদপা বছবায়সাঃ ॥ ৪৩ ॥
ব্রহ্মবধ্যানুলিপ্তানাং তথা মিথ্যাভি সংশিনাম্ ।
মিথ্যা চ নথরোমাণি ধারয়ন্তি তদা দ্বিজাঃ ।
অর্থলোভান্রব্যান্ত্র! তথা চ ব্রহ্মচারিণঃ ॥ ৪৭ ॥

18 ০ ।। মূখেভগাং স্থিয়ো বংদের প্রদিদ্ধান্তে প্রথমং মুখেনৈর ভগকার্যং ক্রা পুরুষদা কাম মুদ্দীপয়ন্তঃ অত্যন্তং রতার্ত্যাই ।। ৪১ ॥ অউপুলা ইতি—'' অউ মলং শিবো বেদো ব্রাহ্মণাশ্চ চতুপ্পথাঃ। কেশো ভগং সমাখ্যাতং শূল ভদ্দিকয়ং বিছঃ " ইতি পূর্কেষাং ব্যাখ্যা সংক্ষেপঃ অউং অলং ভদেব শূলং ছঃখদং বেষাংভে স্কুলাধিএন্তা ইতার্থঃ, শিবাঃ সর্ক্রের প্রার্থনীয়ভয়া কল্যাণবভাঃ শূলাঃ পণাক্রিয়ো বেয়ুভে শিবশূলাঃ, বিটবারাদ্দা পূর্ণাশভ্রমথা ইতার্থঃ, ক্রিয়ঃ পাণি প্রহণবভ্যোপি কেশোপ লক্ষিতং সৌভাগ্যং লজ্জানুলং শীলং শূলমির ছঃখদং ত্যাজ্যঞ্জ যাসাং তাঃ কেশশূলাঃ ভর্তুদ্বেবিণান্তাক্তলজ্জাক ইতার্থঃ। "অউং ভক্তের শুক্তের শূলৎ স্যা জ্যোগ আয়ুধে। যোগে শূলভূপণান্ত্রী শিবং ক্ষেমে জলে স্থে। চতুপ্রথশ চতুর্মার্গে সংগমে প্রাহ্মণে পিচ। কেশঃ স্থাং প্রংমিবকণে ত্রীবেত্র কুভলেপিচ।" ইতি মেদিনী, ত্রীবেরং লজ্জানুলং শীল মিতার্থঃ, বেরশকঃ কর্ণানের মূলে প্রসদ্ধঃ ॥ ৪২ ॥ ৪০ ॥ মিথাা ধর্মঃ কপট ধর্মঃ স এব ধ্রজ ইব খ্যাত্যর্থই জ্ঞাপো। যেষাং ভে তথা চঞ্চুর্য়তে পীডান্তে দিশঃ দিক্ত্রাজনাঃ ॥ ৪৪॥

আশ্রমেষু রুধাচারাঃ পানপা গুরুতপেগাঃ। ঐহলৌকিকমীহন্তে মাৎসশোণিতবৰ্দ্ধনম্॥ ৪৮। নুপাণাং পৃথিবীপাল। প্রতিগৃহ্নন্তি বৈ দিজাঃ॥ ৪২॥ লোভমোহপরীতাশ্চ মিথ্যাধর্দ্মজারতাঃ। ভিক্ষার্থং পৃথিবীপাল ! চঞ্চাতে দ্বিজেদ্দিশঃ ॥ ৪৫ ॥ করভারভয়ান্তীতা গৃহস্থাঃ পরিমোধকাঃ। মুনিচ্ছলাকৃতিচ্ছনা বাণিজ্যমুপজীবিনঃ ॥ ৪৬ ॥ বছপাষ ও সংকীর্ণাঃ পরান্নগুণবাদিনঃ। আশ্রমা বনুজব্যান্ত। ভবিষ্যন্তি মুগক্ষয়ে ॥ ৪৯ । যথর্বর্ষী ভগবা ল তথা পাকশাসন:। ন চাপি সর্ববিজানি সমাগ্রোহন্তি ভারত।॥ ৫ ॥। হিং সাভিরামশ্চ জন 🚜 স্তথা সম্পদ্যতেহ শুচিঃ। অধর্মফলমত্যর্থং তদা ভবতি চানঘ।। ৫১ । তদা চ পৃথিবীপাল। যো ভবেদ্ধর্মণ যুতঃ। অপায়ুঃ স হি মন্তব্যা ন হি ধর্মোইন্তি কশ্চন । ৫২ ॥ ভূয়িষ্ঠং কূটমানৈশ্চ পণ্যৎ বিক্রীণতে # জনাঃ। বণিজশ্চ নরব্যাঘ্র ! বছমায়া ভবস্কাত ॥ ৫৩ । ধর্মিষ্ঠাঃ পরিহীয়ত্তে পাপীয়ান্ বর্দ্ধতে জনঃ। ধর্ম্মান বলহানিঃ স্যা দধর্মান্ত বলী তথা ॥ ৫৪ ॥ অপোযুষো দরিক্রাশ্চ ধর্মিষ্ঠা মানবান্তথা। मीर्घायुष: मञ्रकाम्क विधर्मात्म। यूनकारा । cc ।

॥৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ পানপাঃ মদাপাঃ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ শুটিঃ ব্রাহ্মণ. পরিব্রাজকাদিঃ, অশুটি রিভি বা ছেদঃ ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ৫৩ ॥ ৫৪ ॥ বিধ্মাণঃ ত্যক্তধর্মাঃ ॥ ৫৫ ॥ নগরানাং নগরস্থানাং বিহারেরু ক্রীড়াস্থ বিধ্যাবেণ

^{* &#}x27; তথা " ইতাত্র 'তদা " ইতিক:।

^{* &}quot; বিক্রীড়তে " ইতি কচিদ,শাতে।

নগরাণাং বিহারেষু বিধর্মাণো যুগক্ষয়ে। অধর্মিটেরুপারৈশ্চ প্রজা ব্যবহরস্কৃতে॥ ৫৬॥ সঞ্চয়েন তথাজ্পেন ভবন্ত্যাচ্যমদান্বিতাঃ। ধনং বিশ্বাসতো ন্যস্ত^ মিথো ভূয়িষ্ঠশো নরা: ॥ ৫৭ । হর্তু^ ব্যবসিতা রাজন্ ! পাপাচারসমন্বিতাঃ। নৈতদস্তীতি মনুজা বদন্তি 🚜 নিরপত্রপাঃ॥ ৫৮॥ পুরুষাদানি সন্ত্রানি পক্ষিণোহ্থ মৃগান্তথা ১ নগরাণাং বিহারেষু চৈতোম্বপি চ শেরতে॥ ১॥ সপ্তবর্ষাফ্টবর্ষাশ্চ ব্রেয়ো গর্ভধরানুপ।। দশদাদশবর্ষাণাং পুংসাৎ পুত্র: প্রজায়তে ॥ ৬০ ॥ ভবন্তি যোড়শে বর্ষে নরাঃ পলিতিনন্তথা। আয়ু:ক্ষয়ো মনুষ্যাণাৎ ক্ষিপ্সমেব প্রপদ্যতে॥ ৬১॥ ক্ষাণাযুষো মহারাজ ! তরুণা রুদ্ধশীলিনঃ। তৰুণানাঞ্ফ ফছীলং ভদ্দেষু প্ৰজায়তে। ৬২। বিপরীত।স্তদা নার্য্যো বঞ্চায়ত্ব। হতঃ পতীনু। ব্যুচ্চরন্ত্যপি চুঃশীলা দাসৈঃ পশুভিরের চ ॥ ৬০ ॥ বীরপত্ন্যস্তদা নার্য্য: সংশ্রয়ন্তি নরান্নপ !। ভর্তারমপি জীবন্ত মন্যান্ ব্যভিচরন্ত্যুত ॥ ৬৪ ॥ তিমান যুগগহুজান্তে সংপ্রাপ্তে চাযুষঃ ক্ষয়ে ৷ অনার্ফির্মহারাজ। জায়তে বছবার্ষিকী॥ ৬৫॥

ব্যভিচারিণঃ ॥ ৫৬ ॥ আচ্চোহ মিতি মদঃ আচামদঃ ॥ ৫৭॥ ৫৮॥ পুরুষাদানি বৃক ব্যান্ত্রাদীনি, চৈতোষু দেবতা স্থানেরু॥ ৫৯॥ গর্ভধরাঃ আতি কামাতুরা ইতার্থঃ॥ ৬০॥ ৬১॥ ৬২॥ অইতঃ যোগ্যান্॥ ৬৩॥ ৬৪॥ ৬৫॥

^{* &}quot; বৰ্তন্তে * ইতি ঘ পুস্তক:।

ততন্তান্যপানানি সন্থানি ক্ষিতানি বৈ।
প্রলাং যান্তি ভূমিষ্ঠ পৃথিব্যাং পৃথিবীপতে। ॥ ৬৬ ॥
ততো দিনকরৈনিপ্তিঃ সপ্তভিন্মুজাধিপ।।
পীয়তে দলিলং সর্বাৎ সমুদ্রেমু সরিৎস্ক চ॥ ৬৭ ॥
যক্ষ কাষ্ঠং তৃণংবাপি শুক্ষঞ্চার্দ্রপ্ত ভারত।।
সর্বাৎ ভদ্তমান্তেওং দৃশ্যতে ভরতর্বভ।॥ ৬৮॥
ততঃ সম্বর্তকো বহ্ন ব্যায়ুনা সহ ভারত।।
লোকমাবিশতে পূর্বা মাদিতারুপশোষিতম্॥ ৬৯॥
ততঃ স পৃথিবীং ভিত্তা প্রবিশ্য চ রসাতলম্।
দেবদানব্যক্ষাণাৎ ভয়ং জনয়তে মহৎ॥ ৭০॥
নির্দ্দহ্যাগলোকঞ্চ যক্ষ কিঞ্জিৎ ক্ষিতাবিহ।
অধস্তাৎ পৃথিবীপাল। সর্বাং নাশ্যতে ক্ষণাৎ॥ ৭১॥
ততো যোজনবিৎশানাং সহস্রাণি শতানি চ।
নির্দ্দহত্যশিবো বায়ুং স চ সম্বর্ত্তকাহনলঃ॥ ৭২॥

॥ ৬৬॥ ততো দিনকরৈ দাঁথৈ রিতাতঃ প্রাক্তনেন প্রস্থে কলিরপঃ জ্রীপুংসংখঃ দুরাচার বাক্লা) দনন্ত^ নরকং প্রাপ্রোতীত দর্শিত্র্য, তৎপরি
হারার্থং যোগ মহাতিঠে দিতি বিধীয়তে স্বাহ্ন ভব কথন প্রকারেণ
ততোদিনকরৈ রিত্যাদিনা—সোহয়ং প্রস্থো বহি দু দ্বীনাং কপ্পান্ত প্রতি
পাদন পরতয়া ভাসমানোপি যোগপর এবান্তি অনন্তরীকে লোকেমিন্
ইতি বাক্য শেবে আকারে ভাবস্যাপ্যক্তত্বেন নিরাশ্রয়ত্ত জল ধাড়ুমাত্রত্ত
সহা যোগাৎ সমান প্রকারে পুদ্ধর প্রান্ত্রভাবেচ "নফানলানিলৈ লোকে
নষ্ঠা কাশ মহীতলে" ইতি স্পক্তং ভূতপঞ্চক নাশস্য প্রতি পাদনাৎ,
তথাপি কথাপকে স্পট্টোহর্থ ইতি যোগপক এব ব্যাশ্যায়তে, কথাপকে
দিনকরৈ ছাদশাদিত্যৈঃ পীরতে সপ্ততি দাঁপ্তিঃ সপ্ত জ্বালাভিঃ কপ্যান্তামিনাচ ভন্মাৎ দৃশ্যত ইতি ছয়োঃ সম্বন্ধঃ ॥ ৬৭ ॥ ৬৮ ॥ তল্যাব

मराप्रदोस्त्रताकार्यः मयरकात्राताकाम्य । ততো দহতি দীপ্তঃ স সর্কামেব জগদ্বিভুঃ॥ ৭৩॥ ততো গজকুলপ্ৰখ্য। স্তডিমালাবিভূষিতাঃ। উত্তিষ্ঠন্তি মহামেঘা নভদ্যদুতদর্শনাঃ॥৭৪॥ কেচিন্নীলোৎ পলশ্যামাঃ কেচিৎ কুমুদসন্নিভাঃ। কেচিৎ কিঞ্জল্কসঙ্কাশাঃ কেচিৎ পীতাঃ পয়োধরাঃ॥ ৭৫॥ কেচিদ্ধ-রিদ্রসকাশাঃ 🚜 কাকাগুকনিভাস্তথা। কেচিৎ কমলপত্রাভাঃ কেচিদ্ধিঙ্গুলস্প্রভাঃ ॥৭৬ ॥ কেচিৎপুর বরাকারাঃ কেচিদ্গাজকুলোপমাঃ ৷ কেচিদঞ্জনসক্ষাশাঃ কেচিন্মকরসল্লিভাঃ ॥ ৭৭ । † বিছ্যুমালাপিনদ্ধাঙ্গাঃ সমূত্তিষ্ঠত্তি বৈ ঘনাঃ। খোরৰূপা মহারাজ ! ঘোরস্বন নিনাদিতাঃ। ততো জলধরাঃ সর্কে ব্যাপ্নুবন্তি নভস্তলম্॥ ৭৮॥ তৈরিয়॰ পৃথিবী সর্কা সপর্বতবনাকরা। অপুর্যাতে মহারাজ। সলিলৌঘপরিমৃতা ॥ ৭৯॥ ততত্তে জলদা ছোরা রাবিণঃ পুরুষর্ষত।। সর্ব্বতাঃ প্লাবয়ন্ত্যাশু চোদিতাঃ পরমেষ্টিনা॥ ৮०॥ বর্ষমাণা মহত্তোর পুরয়ত্তো বস্তন্ধরাম। স্থুছোরমশিবৎ রৌদ্রং নাশয়ন্তি চ পাবকম্॥৮১॥ ভতো দাদশ বর্ষাণি পয়োদান্ত উপপ্লবে। ধারাভিঃ পূর্য়ন্তে। বৈ চোদ্যমানা মহাত্মনা ॥ ৮২ ॥ ॥ ৭৩॥ গজকুল প্রখা: গজসমুদারা ইব কৃষ্ণা:॥ ৭৪॥ ৭৫॥ ৭৬॥ ৭৭॥ ৭৮॥ ৭৯॥ রাবিণঃ শব্দবন্তঃ॥৮০॥ ৮১॥ ৮২॥ যোগপক্তেডু দিনকরেঃ ষ্ঠানাড়ী ঈড়াতয়া 'বছবচনং তদীয়াবয়বাভিপ্রায়েণ' সলিল ে চৈতনা-* হরিদ্রা সন্ধাশা ইতি কঃ।

🗜 "ঘোরস্বর নিনাদিনঃ " ইতি ক-খ পুস্তকৌ।

ততঃ সমুদ্রঃ স্বাং বেলা মতিক্রামতি ভারত!।
পর্বতাশ্চ বিদীর্ঘান্তে মহী চাপ্সা নিমজ্জতি ॥ ৮৩ ॥
সর্বতঃ সহসা ভ্রান্তা ন্তে পয়োদা নভস্তলম্।
সংবেকীয়িত্বা নশুন্তি বায়ুবেগপরাহতাঃ ॥ ৮৪ ॥
ততত্তং মারুতং ঘোরৎ স্বয়ন্ত্র্যানু জাধিপ!।
স্থাদিঃ পদ্মালয়ে । ৮৫ ॥

পর্ভিতা চিত্তবৃত্তিঃ, সমুদ্রেষু কামেয়ু 'কামং সমুদ্র মাবিশ" ইতি মন্ত্রবর্ণাৎ, সরিৎস্থ নাড়ীয়ু প্রসূতা পীয়তে সংফ্রীয়তে, সপ্তভিঃ প্রাটেনকদী পিত্যা নাড়া বায়ুমাকুষা চিত্তবৃত্তি নিক্ষাত ইতার্থঃ তদা কাষ্ঠাদিত্লাং শরীরং ভত্মসাং ভূতং অদর্শনং গতং দুশাতে,অনুভূয়তে, তদানীং জাঠৱে বিরপি লোক দুষ্টা স্থিতং দেহং ন বাগতে, বায়ুনা তদ্যাপি লোকং ইফাং স্থানং জ্ঞান সন্ধি রূপৎ প্রতি নীত্রা দিত্যাহ তত ইতি পূর্ব্ব মাদিতৈ৷ বিভানাভীরপৈরপশোষিত মিত্যেতদের প্রপঞ্চয়তি চতুর্ভিন্ততঃ স ইত্যাদিভিঃ—বাযুরনলশ্চ নাডান্তর্গতো দহতি তত্ত দবয়ব মভিমান ত্যাগা দসৎকম্পং করোতীত্যর্থঃ, অত্র উপাধান্তরাশ্ররং বিনা পুর্ব্বোপাধি নির্মোকোন ভবতীতাশক্ষা তদানী মেব বেচকাজা-সাজ্জল ধাতু মাল্যা ভূ-ধাতুং সর্বাত্মনা তাজতি ইত্যাহ ততো গজ কুল প্রখ্যা ইত্যাদিনা—মহীচাপ্সু নিমজ্জতীতাতেন ততঃ সযুদ্র ইতি— সমুদ্রো দেহ বিষয়ঃ কামঃ, স্বাংবেবলাং দেহাতুল্লজ্মনং অতি ক্রামতি স কামঃ সর্বাধা নিবর্তত ইতার্থ: ॥৮৩॥ বাষুয়োঃ সাহচ্যাৎ অগ্নি সহিতং বায়ুমালম্বা জলধাতু মপিতাজতীতাক, সর্বত ইতি পয়োদা ইতি তন্নাশেন তদত্ত জলস্থাপি নাশোলকাতে তত্ত বায়ুবেগ পরাহতাঃ প্রেদ্যন্যন্তি স্বর্ঞ্ট নভন্তলং স্বেষ্ট্রিয়া আকাশং সংহত্য মাকৃতং পীত্ৰা আকাশ নাশেনৈৰ তৎকাৰ্যান্ত মাকতন্ত্ৰ নাশং কৃত্বা অপিতি স্বস্ত্ৰাত্তা গাল্পানং অপিতি গচ্ছতি তথাচ স্বপিতি শব্দ নির্বাচনং জায়তে যহৈত্ব-তৎপুৰুষ: স্বপিতি নাম সতালোম্য তদাসম্পন্নোভণতি তত্মাদেনং স্বপি-তীতাচক্ষতে ৰং খ্পীতোভবতীতি ষয়ন্তঃ স্ত্ৰাত্মা সতা শুদ্ধেন বন্ধনা সম্পন্নঐক্যং গতঃ স্বপ্রতা গান্তনা ॥ ৮৪ ॥ ৮৫ ॥

^{*} क-शृख्दक्ष् " जानि-शृषालय हेट्डार मम् श्रीरः।

ভিন্মিরেকার্গবে ছোরে নফস্থাবরক্তমা। *
নফদেবাস্থরগণে যক্ষরাক্ষসবর্জিতে ॥ ৮৬ ॥
নির্মান্তব্যে মহীপাল ! নিঃশ্বাপদমহীরুহে।
তানন্ত নীক্ষে লোকেহন্মিন্ ভ্রমাম্যেকোহমাহতঃ ॥ ৮৭ ॥
একার্গবিজলো হৈ রে বিচরন্ পার্থিবোস্তম!।
ভাপশ্রং সর্বভূতানি বৈক্ষব্যমগমন্ততঃ ॥ ৮৮ ॥
ততঃ স্কুদীর্ষণ গত্তাহং প্রবমানো নরাধিপ।।
ভাস্তাঃ কুচিন্ন শরণং লভামাহমতক্তিতঃ ॥ ৮৯।
ততঃ কদাচিৎ পশ্রামি তন্মিন্ সলিলসঞ্চয়ে।
ন্যগ্রোধন স্থমহান্তং বৈ বিশালন পৃথিবীপতে!॥ ৯০ ॥
শাখারাং তম্ত বৃক্ষন্ত বিন্তীর্ণায়াং নরাধিপ!।
পর্যক্ষে পৃথিবীপাল! দিব্যান্তর্নসংস্ততে ! ॥ ৯০ ॥
উপবিউন মহারাজ! পত্মেন্তু দদৃশাননম্।
ফুল্পত্মবিশালাক্ষণ বালন পশ্রামি ভারত!॥ ৯২ ॥

ভি তিক প্রপঞ্চ প্রদায় বিশ্বনিতি। ৮৬। অনন্তরিকে ইতি পঞ্চনহাতৃত দর উক্তঃ একোহং স্থূল প্রপঞ্চাতীতঃ তৈজসং স্ক্রমং প্রপঞ্চং প্রাপ্তঃ সন্ ভ্রমামীতি। ৮৭। ভ্রমহেতুমাই একেতি একার্ন্তে নির্বিশেষে বন্ধানি তমশ্চরতরা ঘোরে জলেসতি পারাবার শৃত্ত জলাত্মনা বিবর্তমানে সতি শুক্তা বিবরপ্রাত্মনা তশাচ্চ জল ভ্রমাদ্বরেবাং মৃচ্ছাং আগমং প্রাপ্তনামি । ৮৮। ততঃ স্থলীর্ষং গ্রাছমিত্যাদিনা সএই পুক্ষ ব্যাঘ্র সম্বন্ধীতে জনাদ্দিন ইত্যতেন প্রস্থেন কৃষ্ণ মূর্তে রেব সার্গাত্মং সর্বকর্তৃতং চোক্তং তদেতত্বপপাদিতং আদিসভয়োঃ অনেক বীজ গার্ভ ফল তুলাত্মানেক ব্রহাণ্ড রক্ষ কারণত্বং কৃষ্ণস্যা যুজ্যতে ইতি । ৮৯ । ৯০ । ৯১ । ৯২ ।

^{* &}quot; নকে ছাবর জন্ধমে" ইতি পৃথক পাঠঃ কচিৎ।

ক " একার্গ বে জলে " ইতি ঘ-পুশুকঃ।

[🗓] সংরতে ইতি ক-গ পুশুক্রো পাঠ: ।

ভতো মে পৃথিবীপাল ! বিশ্বয়ঃ স্থমহানভূৎ। কথং ত্বর্থ শিশু: শেতে লোকে নাশমুপাগতে ।॥ ৯৩॥ তপদা চিন্তয়ং শ্চাপি তং শিশু নাপলক্ষয়ে। ভূতং ভব্যং ভবিষ্যঞ্জানন্নপি নরাধিপ ! ॥ ৯৪ ॥ অতসীপুষ্পবর্ণাভঃ প্রীবৎসক্বতভূষণঃ। সাক্ষালক্ষ্যা ইবাবাসঃ স তদা প্রতিভাতি মে। ৯৫। ততো মামব্ৰীদ্বালঃ স পদ্মনিভলোচনং। শ্রীবৎসধারী চ্যুতিমান বাক্যং প্রুতিমুখাবহমু॥ ৯৬ ॥ " জানামি ত্বা~ পরিশ্রন্তেং তাতো 🚜 বিশ্রামকাক্ষিণ্য । মার্কণ্ডের। ইহাসস্থ স্থং যাবদিচ্চদি ভার্গব!'॥ ৯৭ ॥ অভ্যন্তরশরীরং মে প্রবিশ্য সুনিসত্তম ! ৷ আসৃস্ব ভো বিহ্নিতো বাসঃ প্রসাদক্তে ক্রতো ময়া "—॥ ৯৮ ॥ ততো বালেন তেনৈব মুক্তস্থাসীন্তদা মম। নিৰ্ব্বেদো জীবিতে দীৰ্ষে মনুষ্যত্বে চ ভারত !া ৯৯ ॥ ততো বালেন তেনাস্ত> সহসা বিরুতং কুত্রম। ज्ञाह्मवरमा वरक रेनवरयाना ९ थरवनि जः ॥ ১ • • ॥ ততঃ প্রবিষ্টন্তৎ কুক্ষিৎ সহসা মমুজাবিপ ! , সরাষ্ট্রনগরাকীর্ণাণ ক্রৎস্থাং পশ্রামি মেদিনীমু॥ ১০১॥ গঙ্গাং শতক্রং সীতাঞ্চ যমুনামথ কৌশিকীম। চর্মণ তীং বেতারতী > চন্দ্রভাগাং সরস্বতীম ॥ ১০২ ॥

॥ ৯০ ॥ ৯৪ ॥ ৯৫ ॥ ৯৬ ॥ ৯৭ ॥ ৯৮ ॥ ততোবালেনেতি নির্বেদ্ধেররাগ্যথ ধিক্ মমদীর্ঘ জীবিত্বং মানুষত্বঞ্চ যন্থাং বালোপি প্রসাদত্তে কৃতোমরেতি বদতীতি স্বাজ্ঞান প্রকাশনং ভগবন্ধায়াগ্যাঃ প্রাবল্যখ্যাপনার্থং ॥ ৯৯ ॥ ॥ ১০০ ॥ ১০১ ॥ ১০২ ॥

^{* &}quot; তাত ! বিশ্রাম কাজ্ফিশং " ইতি ক-পুস্তকস্য ৷

সিন্ধু প্রেব বিপাশাঞ্চ নদীং গোদাবরীমপি। বস্বোকদারাং নলিনীং নর্মদাক্ষৈব ভারত ! ০ ১ • ৩ ৪ নদীং তামাঞ্চ বেণাঞ্চ পুণ্যতোয়াং শুভাবহাম। स्रुटवर्गा**-** कुरक्षटवर्गाक्ष इंद्रामाक्ष महानमीम्॥ ১ • ८॥ বিতস্তাঞ্চ মহারাজ ! কাবেরীঞ্চ মহানদীম। শোন্ত পুরুষব্যান্ত! বিশল্যাৎ কিম্পূনামপি ॥ ১০৫ ॥ এতাশ্চান্যাশ্চ সরিতঃ পৃথিব্যাং যা নরোত্তম!। পরিকামন্ প্রপশ্যামি তম্ম কুকো মহাত্মনঃ ॥ ১০৬॥ ততঃ সমুদ্রং পশ্চামি যাদোগণ নিষেবিতম্। রত্রাকর মমিত্রস্থ প্রসে নিধিমৃত্তমম্। ১০৭। তত্র পশামি গগণং চন্দ্র্যাবিরাজিতম্। জাজ্বামান তেজোভিঃ পাবকার্কসমপ্রভয় ॥ ১০৮ ॥ প্রখামি চ মহীং রাজনু ! কাননৈরুপশোভিতায় । যজন্তে হি তদা রাজন্। ব্রাহ্মণা বহুভির্মথেঃ॥ ১০৯॥ क्वियाक প্রবর্তন্তে সর্ববর্ণানুরঞ্জনৈঃ। বৈশ্যাঃ ক্লুষিৎ যথান্যায়ং কারয়ন্তি নরাধিপ। ॥ ১১০ ॥ শুক্রারাঞ্চ নিরভা দিজানাং রুষলান্তদা। ততঃ পরিপতনাজং স্তদ্য কুক্ষৌ মহাত্মনঃ ॥ ১১১ ॥ হ্মবন্তঞ্ব পশামি ২েমকূটঞ্ব পর্বতম্। নিষধক্ষাপি পশ্যামি শ্বেতঞ্চ রজতান্তিত্য 🚜 ॥ ১১২ ॥ পশ্যামি চ মহীপাল ! পর্বতং গন্ধমাদনম্। মন্দরং মনুজব্যান্ত্র । নীলঞ্চাপি মহাগিরিম্॥ ১১৩॥ 11 566 11 666 11 666 11 406 11 406 11 406 11 206 11 806 11 006 1 220 1

^{*} রজতাচিত মিতি ক-খ-প্রত্তকয়ো:।

পশামি চ মহারাজ! মেরু কনকপর্বত্য। মহেন্দ্র পৈষ্ঠামি বিন্ধাঞ্চ গিরিমুক্তমম্ ॥ ১১৪॥ মলয়ঞাপি পশ্যামি পারিপাত্রঞ্চ পর্বতম। এতে চান্যে চ বহুবো যাবন্তঃ পৃথিবীধরাঃ ॥ ১১৫॥ তক্সোদরে ময়া দৃষ্টাঃ সর্বে রত্নবিভূষিতাঃ। সিংহান্ ব্যাত্রান্ বরাহাংশ্চ পশুমি মনুজাধিপ। ॥ ১১৬॥ পৃথিব্যাং যানি চান্যামি সন্ত্রানি জগতীপতে!। তানি স্কাণ্যহং তত্র পশান পর্যাচরং তদা ॥ ১১৭ ॥ কক্ষৌ তম্ম নরব্যান্ত। প্রবিষ্টঃ সঞ্চরন্দিশঃ। শক্রাদীং স্চাপি পশ্চামি রুৎস্নান দেবগণানহ্ম্॥ ১১৮॥ সাধ্যানুদাং তথাদিত্যানু গুছকান্ পিতরত্তথা। স্পালাগান স্থপণাংশ্চ বস্তু শ্চাথাশ্বিনাবপি॥ ১১৯॥ शक्तर्ताश्मतरमा यक्कानृषी रूठिय मही भरा !। দৈত্যদানবস্থাংশ নাগাংশ মনুজাধিপ ! 🚜 ॥ ১২ 🛮 ॥ সিৎহিকাতনয়াৎশ্চাপি যে চান্যে স্থুরশত্রবঃ। यक्र किक्षित्रहा (लाटक मुच्छेः স্থাবরজঙ্গমম ॥ ১২১॥ সর্বাং পশ্চামাহং রাজংস্তম্ভ কুকো মহাত্মনঃ। চরমাণঃ ফলাহারঃ রুৎস্ন জগদিদং বিভো!॥ ১২১॥ অন্তঃশরীরে তস্যাহং বর্ষাণাম্বিকং শত্ম। ন চ পশামি তন্তাহ (দহস্যান্তং কদাচন। ১২৩। সতত পাৰমানশ্চ চিন্তয়ানো বিশাম্পতে!। আসাদয়ামি নৈবাত্তং তদ্য রাজন্মহাত্মনঃ ॥ ১২৪ ॥ 278 11 276 11 270 11 274 11 275 11 250 11 250 11 255 11 255 11 250 11 1 258 1

^{* &}quot; कात्नज्ञाः क नज्ञाधिन ! * देखि क-भूखकमा ।

ততস্তমেব শরণং গতোহস্মি বিধিবত্তদা। वरत्नाः वतमः (मवर मनमा कर्यारेगव ह ॥ ১২৫ ॥ ততোহহং সহসা রাজন্! বাসুবেগেন নিঃস্তঃ। মহাত্মনো মুখাত্তভা বিরুতাৎ পুরুষোত্তম।॥ ১২৬॥ ততস্তস্যৈব শাখায়াং ন্যগ্রোধস্য বিশাম্পতে!। व्याटि मञ्जनामि ल ! कुष्त्रमामात्र देव कश्य ॥ ১२१ ॥ তেনৈব বালবেশেন এবিৎসক্তলক্ষণম। আসীনং তং নরব্যান্ত। পশ্যাম্যমিততেজ্বসমূ ॥ ১২৮ ॥ ততো মামব্রীদালঃ স প্রীতঃ প্রহস্ত্রিব। শ্রীবৎসধারী চ্যুতিমান্ পীতবাসা মহাচ্যুতিঃ॥ ১২৯॥ " অপीनानीः भतीत्रश्चित्रायत्व भूनिमख्य !। উষিতস্ত্র পরিশ্রাস্তো মার্কণ্ডেয়। ত্রবীমি তে"—॥ ১৩•॥ মুহুর্ত্ত। দথ মে দৃষ্টিঃ প্রাছুত্তা পুনর্ন বা। যয়া নিৰ্ম্মুক্তমাত্মান মপশ্যং লক্ষচেতসম্। ১৩১॥ তস্য তাত্রতলৌ তাত। চরণৌ স্থপ্রতিষ্ঠিতৌ। স্থজাতৌ মৃত্রক্তাভি রঙ্গুলীভি বিরাজিতৌ ॥ ১৩২ ॥ প্রযন্ত্রেন ময়া মূর্দ্ধ্য গৃহীত্বা হুভিবন্দিতৌ। দৃষ্ট্রাপরিমিতং তদ্য প্রভাবনমিতৌজদ:। ১৬৩। বিনয়েনাঞ্চলিং কুত্বা প্রযুজুনোপগম্যহ। पृत्छो मग्ना म ভূতাত্মা (पदः कमललांচनः ॥ ১৩৪ ॥ তমহং প্রাঞ্জলিভূ বা নমস্কৃত্যেদমক্রবম্। 'জ্ঞাতুমিচ্ছামি দেব। ত্বাং মায়াঞ্চৈতাং তবোত্তমাম্। ১৩৫।

0 24 C 11 24 0 11 24 0 11 24 0 11 200

আজেনানুপ্রবিষ্টোহহং শরীরে ভগবংস্তব। দুষ্টবান্থিলান স্কান সমস্তান জঠরে হি তে। ১৩৬॥ তব দেব ! শরীরস্থা দেবদানবরাক্ষসাঃ। यक्रशक्तर्यनां भाक्त क्रश् क्रावतक्रक्रमम् 🚜 ॥ ১৩१ ॥ ত্বৎপ্রসাদাচ্চ মে দেব। স্মৃতির্ন পরিহীয়তে। দ্রুতমন্তঃশ্রীরে তে সততং পরিবর্ত্তিনঃ *। ১৩৮। নির্গতোৎহমকামস্ত ইচ্ছয়া তে মহাপ্রভো!। ইচ্ছামি পুগুরীকাক্ষ। জ্ঞাতং স্বাহমনিন্দিতম্ ॥ ১৩৯॥ ইহ ভূত্বা শিশুঃ সাক্ষাৎ কি~ ভবানবতিষ্ঠতে। পীতা জগদিদং সর্বা মেতদাখ্যাত্মর্থসি । ১৪০। কিমর্থঞ্জ জগৎ সর্বাং শরীরস্থং তবানঘ।। কিয়ন্তঞ্ স্বয়া কাল মিহ স্বেয়মরিন্দম !—॥ ১৪১॥ এতদিচ্ছামি দেবেশ! শ্রেভু ব্রাহ্মণকাম্যয়া। ত্বত্তঃ কমলপক্রাক্ষ। বিস্তরেণ যথাতথ্য ॥ ১৪২ ॥ মহদ্যেতদচিন্তাঞ্চ যদহং দৃষ্টবান প্রভো!। ইভাক্তঃ স ময়া এমান্ দেবদেবো মহাত্যুতিঃ। সাস্ত্রন্ মামিদং বাক্য মুবাচ বদতাং বরঃ"— ॥ ১৪৩ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয় সমাস্তাপর্বাণ মার্কণ্ডেয় প্রশ্নে অফাশীত্যধিক শত তমোহধ্যায়:॥ ১৮৮॥

[॥] ১৩৬ ॥ ১৩৭ ॥ ১৩৮॥ ১৩৯ ॥ ১৪০ ॥ ১৪১ ॥ ১৪২ ॥ ১৪৩ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে অস্ক্রাশীভাধিক শততমোহধায়েঃ ॥ ১৮৮ ॥

 ^{*} ক পুন্তকেত্ শরীর স্থান্—রাক্ষসান্—নাগাংশেততি সর্বাত্ত দিতীয়া যক্ত্র্তন্ম।
 † পরিবর্ত্তিত ইতি ক পুন্তক্ষ্য।

দেব উবাচ ৷

। কাম- দেবাপি মান বিপ্র! ন হি জানন্তি ভত্ততঃ। ত্বৎপ্রীত্যা ত প্রবক্ষ্যামি যথেদ বিস্কাম্যহম্॥ ১। পিতৃভক্তোৎসি বিপ্রধে। মাঞ্চৈব শর্নং গতঃ। ততো দুফৌ হস্মি তে সাক্ষা দ ক্ষচর্য্যঞ্জ তে মহৎ ॥ ২ ॥ অপাণ নারা ইতি পুরা সংজ্ঞাকর্ম কুতং ময়া। তেন নারায়ণোহস্ম্যক্তো মম তত্ত্বয়ন সদা॥ ৩॥ অহং নারায়ণো নাম প্রভবঃ শাশ্বতোহ্ব্যয়ঃ। বিধাতা স্বভূতানাং স্হর্তা চ দিজোত্তম ! ॥ ৪॥ অহং বিষ্ণুরহং এক্সা শক্তশ্চাহণ সুরাধিপঃ। অহং বৈশ্রবণো রাজা যমঃ প্রেতাধিপত্তথা।। ৫।। অহং শিবশ্চ সোমশ্চ কশ্যপোহ্থ প্রজাপতি:। অহং ধাতা বিধাতা চ যজ্ঞাশ্চাহ্ন দ্বিজোত্তম ! ॥ ৬ ॥ অগ্নিরাস্তং ক্ষিতিঃ পাদৌ চন্দ্রাদিত্যৌ চ লোচনে। দৌমুর্দ্ধা খং দিশঃ শ্রোত্রে তথাপঃ স্থেদসম্ভবাঃ ॥ १ ॥ সদিশঞ্চ নভঃ কায়ো বাযুর্ম্মনসি মে স্থিতঃ। ময়া ক্রতুশতৈরিফং বছভি: স্বাপ্তদক্ষিণে: ॥ ৮ ॥

কামমিতি ॥ ১ ॥ ২॥ অপাংনারা ইতি অপাং অরুপলক্ষিত্সা পাঞ্জাতিকস্য সংঘাতস্য নারা ইতি যৌগিকংনাম আপৌবৈনর স্থন ইতি প্রদেশস্তিরে বিবরণাৎ নরেণ অবিদ্যাবন্দির রূপোণানাদিনা জীবে নারপাধে বৃদ্ধান শুক্তোরজ্জত্মির কম্পিত তাৎ মমত্রয়ন মিতি তৎ স্ট্রা তদেশস্থ প্রাবিশদিতিক্রাতেরহমের সংঘাতস্ত প্রস্তী তদভিমানী চেতিজীবেশ্বরযোরভেদো দশিতঃ ॥৩॥৪॥ অহং বিষ্ণুরহং ব্রক্ষেতাাদিনা তৎপদার্থ মহুদ্যতস্ত ব্রক্ষাদি জীবাভিন্নতংহ্যপ্রভৃত্তি জ্ঞাবর্গা ভিন্নতং চেতনাচেতনস্থিতি কর্ত্বঞ্চ প্রতিপাদ্যতে ॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥

যজন্তে বেদবিতুষো * সাং দেবযজনে স্থিতম্। পৃথিব্যাং ক্ষজিবেন্দ্রাক্ষ পার্থিবাঃ স্বর্গকাল্কিবঃ । ৯ ॥ যজন্তে মান তথা বৈশ্যাঃ স্বৰ্গলোকজিগীষবঃ। চতুঃসমুদ্রপর্য্যন্তাং মেরুমন্দরভূষণাম্॥ ১০॥ শেষো ভূত্বাহমেবৈতাং ধারয়ামি বস্থারাম্। বারাহ্ রূপমান্তায় ময়েয়ং জগতী পুরা ॥ ১১ ॥ मक्कमाना कल विथा। वीर्यागामी ममूक्रा। অগ্নিক বডবাবক্ট্রো ভূত্বাহ্ দিজসম্ভম ! ॥ ১২ ॥ । পিবাম্যপঃ * সদাবিদ্ধ-স্তাইশ্চব বিস্থজাম্যহম্। প্ৰহ্ম বক্তং ভুজৌ ক্ষত্ৰ স্থুৱ মে সংস্থিতা বিশঃ ॥ ১৩॥ পাদৌ শূদ্রা ভবন্তীমে বিক্রমেণ ক্রমেণ্চ। **अरधनः** म्भारतन्क यकुर्तिरनार् भारथक ह ॥ >९॥ মন্তঃ প্ৰাতুৰ্ভবস্তোতে মামেৰ প্ৰবিশন্তি চ। যতয়ঃ শান্তিপরমা যতাত্মানো বুভুৎসবঃ । ১৫ । ক।মক্রোধৰেষমুক্তা নিংসঙ্গা বীতকলাবাং। সত্ত্বস্থা নিরহকারা নিত্যমধ্যাত্মকোবিদাঃ ॥ ১৬ ॥ মামেব সতত্ত বিপ্রা শ্চিন্তয়ন্ত উপাসতে। অহং সম্বর্তকো বহি * রহণ সম্বর্তকোহনিল: ॥ ১৭॥ অহ্ সম্বৰ্ত্তকঃ সূৰ্য্য স্তৃহং সম্বৰ্ত্তকোহনলঃ। তারাৰপাণি দৃশ্যন্তে যান্যেতানি নভস্তলে। ১৮॥

^{1 2 1 20 1 25 1 25 1 20 1 28 1 26 1 26 1 27 1 29 1 29 1}

 ^{*} বেদবিদ্বাংস ইতি ক পুস্তকে লভাতে।
 * সদাবিদ্বন্ইভাত্ত সমাবিদ্ধা ইতি ক-পুস্তক: পঠতি।

^{*} বহ্নিবিতাত জোতি রিতিকঃ।

মম বৈ রোমকুপানি বিদ্ধি ত্বং দ্বিজ্ঞসন্তম!। রভাকরা: সমুদ্রাশ্চ সর্ববেত চত্রদিশম্ ॥ ১৯ ॥ वमनः भग्ननरेक्षव निलग्नरेक्षव विक्ति (म। मरेशव स्वविভक्तारि एक्त कार्यार्थ निकार ॥ २ • ॥ * কামং ক্লোধঞ্চ হর্মঞ্চ ভয়ং মোহন্তথৈব চ। মনৈব বিদ্ধি ৰূপাণি স্কাণেতোনি স্তম । ২১॥ প্রাপ্ন বন্ধি নরা বিপ্র ! যৎ কুত্বা কর্মা শোভনম্। সত্যং দান তপদেচাতা মহিৎসা চৈব জন্তুমু ॥ ২২ ॥ মদ্বিধানেন বিহিতা মম দেহবিহারিণঃ। ময়াভিভূতবিজ্ঞানা বিচেষ্টস্তেন কামতঃ । ২৩॥ मगार्यप्रभिशाना यकरस विविदेधर्यारेथः। শান্তাত্মানো জিতক্রোধঃ: প্রাপ্লুবন্তি দিজাতয়ঃ॥ ২৪॥ প্রাপ্ত: ন শক্যো যো বিদ্ধারৈছু দ্বু তকর্মভিঃ। লোভাভিছুতৈ কুপণৈ রনার্ট্য্রকুতাত্মভি:॥২৫॥ ভন্মান্মহাফলং বিদ্ধি নরাণাং ভাবিতাত্মনাম। স্থুতুপ্ৰাপ্ত বিমূচানাং মাৰ্গং যোগৈনিষেবিতম্॥ ২৬॥ যদা যদা চ ধর্মান্ড গ্লানির্ভবতি সন্তম!। অভ্যুত্থানমধর্মস্য তদাত্মান প্রজাম্যহ্য ॥ ২৭॥

॥১৯॥২০॥২১॥ ২২॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ তদাত্মানং সূজামাহং
আত্মানং কৃষ্ণাদি বিগ্রহং সূজামি সুর্যাবদা বিভাবয়ামি যথাস্থা আবিভবং
ভিরোভবংশ্চ অভ্যোদরাভ্যাং নক্ষাভত কিন্তু অম্মাভিরেব তত্ততা
কন্সিতো এবং নন্দনন্দনেপি জন্মনাশো মৃচদৃক্তিব কন্সিতাবিভার্থঃ
॥২৭॥

^{*} न(त्यायनार्क्तांक क श्रुष्टरक।

দৈত্যা হিংসানুরক্তাশ্চ অবধ্যাঃ সুরসন্তমৈঃ। রাক্ষসাশ্চাপি লোকেহিশ্মন যদে। পেৎশুন্তি দারুণাঃ ॥ ২৮॥ তদাহ পংপ্রস্থামি গুহেষু শুভকর্মণাম । প্রবিষ্টো মানুষং দেহং সর্বাৎ প্রশাম্যাম্যহন্॥ ২৯॥ एके। (एवमनुष्रा० क शक्तर्यादशताक्रमान्। স্থাবরাণি চ ভূতানি সংহরাম্যাত্মমায়য়া॥ ৩ ॥ কর্মকালে পুনর্দেহ মবিচিন্তাং স্কামাহ্য। আবিশ্য মানুষৎ দেহং মর্য্যাদাবন্ধকারণাৎ॥ ৩১॥ শ্বেভঃ কুত্যুগে বর্ণঃ * পীতস্ত্রেভাযুগে মম। রক্তো দ্বাপরমাসাদ্য ক্লফঃ কলিযুগে তথা ॥ ৩২॥ ত্রয়ো ভাগা হাধর্মান্ত তিমান্ কালে ভবন্তি চ। অন্তকালে চ সম্প্রাপ্তে কালো ভূত্বাতিদারুণঃ ॥ ৩৩॥ विदल्किः नामसारमाकः * कुरुन्नः स्वावक्रमम्। অহ্ ত্রিবল্প বিশ্বালা সর্বলোক সুখাবহঃ ॥ ৩৪ ॥ অভিভূতঃ সর্ব্বগোহনস্তো হ্নষীকেশ উরুক্রমঃ। क | लहकः नश्राद्यादका खक्त वश्यक्य कप् * । ७०। শ্মনং সর্বাভূতানাৎ সর্বালোকরতোদ্যম্। এবং প্রণিহিতঃ সম্যক্ মমাত্রা মুনিসন্তম !। সর্বভূতেষু বিপ্রেক্ত ! ন চ মাং বেন্তি কশ্চন॥ ৩৬॥ नर्कालारकषु भार ভক্তा। शृक्षप्रस्ति ह नर्काः। যচ্চ কিঞ্জিব্ৰয়া প্ৰাপ্তং ময়ি ক্লেশাত্মকং দিজ ! ॥ ৩৭॥ ॥ ७२ ॥ ७७ ॥ ७३ ॥ ७৫ ॥ ७७॥ ७१ ॥

পাত " ইত্যত্ত্রশাম ইতি পাঠ: ক গুন্তকে।
 লাশয়ামের ইত্যত্ত ত্ত্রাময়া মোক ইতি ক প্রতকে পাঠে। দৃশ্যতে।
 অরুপিবৈ ইতি ক পুন্তকে পাঠ:।

স্পুৰোদয়ায় তৎ সৰ্বাং শ্ৰেয়দে চ তবানঘ!। ৰচ্চ কিঞ্ছিৰুয়া লোকে দৃষ্টং স্থাবরজঙ্গমন্॥ ৩৮ ॥ বিহিতং স্বাথৈবাসো মুমাত্মা ভূতভাবন: । অর্দ্ধং মম শরীরকা সকলোকপিতামহঃ॥ ৩৯। অহ শ্রায়েণো নাম শব্দচক্রপদাধর:। যাবদ্যুগানাং বিপ্রর্ষে ! সহস্রপরিবর্ত্তনাৎ ॥ ৪০ ॥ তাবৎ স্থাপিমি বিশ্বাত্মা সক্ষত্নতানি মোহয়ন্। এবং সর্বামহ কাল মিহাস্সে মুনিস্তুস ! ॥ ৪১॥ অশিশুঃ শিশুৰূপেণ যাবদ্বা ন বুধাতে। ময়া চ দত্তো বিপ্রাত্যে ! বরত্তে ব্রহ্মরপিণা ॥ ৪২ ॥ অসক্কৎ পরিভুফেন বিপ্রধিগণপুঞ্জিত!। সর্ব্যমেকার্ণব্দ দৃষ্টা নফস্থাবরজঙ্গমম্॥ ৪০॥ বিক্লবোহসি ময়া জ্ঞাতস্ততত্তে দৰ্শিত^ জগৎ ! অভ্যন্তরং শরীরস্থ প্রবিষ্টোহ্দি যদা মস। ৪৪ । **मुक्ता** (लोकः ममस्रक्ष विश्वारका नाववृश्रास । ততোৎদি বক্তু । দ্বিপ্রধি । ক্রতং নিঃসারিতো ময়া ॥ ৪৫ ॥

আখ্যাতন্তে ময়া চাত্মা তুজে রো হি সুরাসুরৈঃ ॥ ৪৬ ॥
বাবৎস ভগবান ব্রহ্মা ন বুধ্যেত মহাতপাঃ ॥ ৪৬ ॥
তাবজুমিহ বিপ্রহে ! বিশ্রকশ্বর বৈস্থ্য ॥ ৪৭ ॥
ততো বিবুদ্ধে তন্মিংস্ত সর্বলোকপিতামহে।
একীভুতো হি স্রক্ষ্যামি শরীরাণি দ্বিজ্ঞোত্তম ! ॥ ৪৮ ॥
আকাশং পৃথিবী ১ জ্যোতি কায়েং সলিলমেব চ।
লোকে যচ্চ ভবেছেষ মিহ স্থাবর্ত্বক্ষম্য"— ॥ ৪৯ ॥

মার্কতের উবাচ।

"ইত্যক্ত্বান্তহিত্তাত! স দেবং প্রমাদ্ভঃ।
প্রজাশ্চেমাঃ প্রপশামি বিচিত্রা বিবিধাঃ ক্রতাঃ॥ ৫০॥
এবং দৃষ্টং মরা রাজ শুস্মান্ প্রাপ্তে যুগক্ষরে।
আশ্চর্যাং ভরত শ্রেষ্ঠ! সর্বাধর্ম ভূতায়র॥ ৫১॥
যং স দেবো মরা দৃষ্টঃ পুরা পদ্মায়তেক্ষণঃ।
স এব পুরুষব্যাঘ্রঃ * সম্বন্ধী তে জনার্দ্দনঃ॥ ৫২॥
অক্তৈব বরদানাদ্ধি শৃতির্ন প্রজহাতি মাম্।
দীর্ঘমামুশ্চ কৌন্তের। স্বছল্দমরণং মম॥ ৫৩॥
স এব ক্ষো বাফেরঃ! স্বছল্দমরণং মম॥ ৫৩॥
স এব ক্ষো বাফেরঃ পুরাণঃ পরমো বিভুঃ।
আত্তে হরিরচিন্ত্যাছা ক্রীডিন্নিব মহাভুজঃ॥ ৫৪॥
এব ধাতা বিধাতা চ সংহর্তা চৈব শাশ্বতঃ।
ব্রীবৎসবক্ষা গোবিন্দঃ প্রজাপতিপতিঃ প্রভুঃ॥ ৫৫॥

॥৪৯॥ যাবদিতি ব্ৰহ্ম বিরাট ইহলিজাত্মনি স্কুলাধানো দরাদ্বাক্ স্থেক। এব ছাত্ব্য মিত্যর্থ: স্পান্ত্য মন্ত্য ৪৭॥ ৪৮॥ ৪৯॥ ৫০॥ ৫১॥ ৫২॥ ॥৫৩॥ ৫৪॥ ৫৫॥

^{*} কচিৎ " পুৰুষ বাজি! " ইত্যেবং ব্লাজ্ঞঃ সম্বোধনং !

দৃদ্ধেমং র্ফিপ্রবরং স্থৃতির্মামিয় মাগতা।
আদিদেবময়ং * জিফুং পুরুষং পীতবাসসম্॥ ৫৬॥
সর্বেষামেব ভূতানাং পিতা মাতা চ মাধবঃ।
গচ্ছধ্বমনং শরণং শরণা কৌরবর্ষভাঃ"—॥ ৫৭॥
বিশম্পায়ন উবাচ।

এবমুক্তাশ্চ তে পার্থা যমৌ চ পুরুষর্বভৌ।
কৌপদ্যা সহিতা: সর্কে নমশ্চকুজনার্দনম্॥ ৫৮॥
স চৈতান্ পুরুষব্যান্তঃ সামা পরস্বজ্ঞনা।
সাস্ত্রামাস * মানার্হো মন্যমানো যথাবিধি॥ ৫৯॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয় সমাস্তা পর্বাণ মার্কণ্ডেয় নারায়ণস্বাদে একোননবত্যধিক শত তমোহধ্যায়: ॥ ১৮৯॥

বৈশিল্যায়ন উবাচ।

যুধিষ্ঠিরস্ক কৌন্তেয়ো মার্কপ্তেয়ে মহামুনিম্।
পুনঃ পপ্রচ্ছ সামাজ্যে ভবিষ্যাং জগতো গতিন্॥ ১॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।
"আশ্চর্য্যভূতং ভবতং শ্রুতং নো বদতাম্বর!।
মুনে! ভার্গব! যদ্ভং যুগাদৌ প্রভবাত্যয়ন্॥ ২॥

॥ ৫৬॥ ৫৭॥ ৫৮॥ ৫৯॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে একোন নবত্যধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮৯ ॥

এবং কৃষণ্টিদ্বতং প্রসাধ্য তত্ত্বপ্রীতিহেতো বিষয়বৈরাগ্যস্যোৎপাদনায় পুন্তবিষ্য মেবাধ্যায় দ্বেন প্রশ্ন পূর্বক মাছ মুধিষ্টের স্থিত্যাদিন। সাম্রা-জ্যে কর্তব্যস্তি ॥ ১ ॥ ২ ॥ কিন্তু কথন্ত শেষৎ জগন্ত্রবয়তি উৎকর্ষণ

^{*} অয় মিত্যত্র " অজং " ইতি জিম্পু মিত্যত্ত বিষ্ণুমিতি চ ক-পুস্তকে।

* শভিয়ামাস ইতি তালবাগদি পাঠঃ ক পুস্তকে।

অস্মিন্ কলিঘুণে বৃদ্ধি পুনং কৌতুহল নম।
সমাকুলেমু ধর্মেমু কিং কু শেষং ভবিষাতি ?—॥ ৩॥
কিৎ বীর্যা মানবাস্তত্ত কিমাহারবিহারিণ:।
কিমাযুষঃ কিষ্কমনা ভবিষ্যন্তি যুগক্ষয়ে ?—॥ ৪॥
কাঞ্চ কাঠাং সমাসাদ্য পুনং সম্পৎস্ততে কৃতন্!।
বিস্তরেণ মুনে! বৃহি বিচিত্রাণীই ভাষসে"—॥ ৫॥
ইত্যুক্ত: স মুনিশ্রেষ্ঠঃ পুনরেবাভ্যভাষত।
রময়ন্ বৃষ্ণিসার্দ্দুল পাশুবাৎশ্চ মহানৃষি:॥ ৬॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

" শৃণু রাজনৃ! ময়া দৃষ্টং যৎ পুরা ফ্রান্তমের চ।
অনুভূতক রাজেন্দ্র ! দেবদেব প্রসাদজম্ ॥ ৭ ॥
ভবিষ্যং সর্বালোকন্দ্র বৃত্তান্তং ভরতর্বভ!।
কলুষ্ব কালমাসাদ্য কথ্যমান নিবাধে মে ॥ ৮ ॥
কতে চতুপ্রাৎ সকলো নির্ব্রোজোপাধিবজি ত:।
বৃষঃ প্রতিষ্ঠিতো ধর্মো মনুষ্যে ভরতর্বভ! * ॥ ৯ ॥
অধর্মপাদবিদ্ধন্ত ত্রিভিরং শৈঃ প্রতিষ্ঠিতঃ।
ক্রেতায়াশ দ্বাপরেহর্দ্রেন ব্যামিশ্রো ধর্ম উচ্যতে ॥ ১০ ॥
ত্রিভিরং শৈ রধর্মন্ত লোকনোক্রম্য তিষ্ঠতি।
তামসং যুগমাসাদ্য তদা ভরতসন্তম! ॥ ১১ ॥
চতুর্থাংশেন ধর্মন্ত মনুষ্যানুপ্রিষ্ঠিত।
আযুর্বীর্য্যমথো বুদ্ধি ব্রল্প তেজশ্চ পাণ্ডব! ॥ ১২ ॥

প্রাপ্ত ম ৩ ॥ ৪ ॥ কাষ্ঠাং অবধিং কৃতং কৃত্যুবাং ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ কলুষ্ং কলিং ॥ ৮ ॥ নির্বাজঃ ছান্ত ইনিঃ উপাধিবর্জিতঃ লোডাদিহীনঃ ব্যইবচতু-স্পাধ ॥ ৯ ॥ অর্থেনাধ্যোগ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥

^{*} মনুষোমভবৎপুরা ইতি ক পুস্তকে।

মনুষ্যাণামনুষুগং হ্রসতীতি নিবোধ মে। রাজানো ত্রাক্ষণা বৈশ্যাঃ শূক্রাইশ্চব যুধিষ্ঠির॥ ১০॥ ব্যাজৈধ শ্ব- চরিষ্যন্তি ধশ্ববৈতংসিকা নরাঃ। সত্যুৎ সংক্ষেপ্যতে লোকে নরৈঃ পণ্ডিতমানিভিঃ॥ ১৪॥ সত্যহান্যা ততন্তেষা মাযুরপ্পং ভবিষ্যতি। আষুষঃ প্রক্ষাদ্বিদ্যাৎ ন শক্ষ্যন্ত্যপজীবতুম্ ॥ ১৫॥ বিদ্যাহীনানবিজ্ঞানাল্লোভোহপ্যভিভবিষ্যতি। লোভকোধপরা মুঢ়াঃ কামাসক্তাশ্চ মানবা:॥ ১৬॥ বৈরবদ্ধা ভবিষ্যন্তি পরপস্পরববৈধিব। ব্রাহ্মণাঃ ক্ষত্রিয়া বৈশ্যাঃ সৎকীর্যস্তঃ পরস্পারম্॥ >৭॥ শূদ্রত্বা ভবিষ্যস্থি তপঃসত্যবিবজি তাঃ। অন্ত্যা মধ্যা ভবিষ্যস্থি মধ্যাশ্চান্ত্যা ন সংশয়ঃ ॥ ১৮॥ ঈদৃশো ভবিতা লোকো যুগান্তে পর্যুপস্থিতে। বস্ত্রাণাং প্রবরা শাণী ধান্যানাং কোরদুষক:॥ ১৯॥ ভার্য্যামিত্রাশ্চ পুরুষা ভবিষ্যন্তি যুগক্ষয়ে। মৎস্থামিষেণ জীবন্তো তুহন্তশ্চাপ্যক্তৈডকম্॥ ২•॥ গোষু নফাপ্ল পুরুষা * যেপি নিত্যং ধৃতত্ততাঃ। তেপি লোভ সমাযুক্তা ভবিষ্যন্তি যুগক্ষয়ে॥ ২>। অন্যোন্য পরিমুক্ত হো হিংসয়স্থ মানবা:। অজপা নান্তিকান্তেনা ভবিষ্যন্তি যুগক্ষয়ে ॥ ২২ ॥

॥ ১৩ ॥ ধর্ষেবৈতং সিকাঃ ধর্ম জালিকাঃ বীতংসো বন্ধনোপারে পশুনাং পক্ষিণামপীতি মেদিনী ধর্ম জালং বিস্তার্য লোকান্বঞ্যন্তীত্যর্থঃ॥ ১৪ ॥ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ অন্ত্যা ইতি চাণ্ডালাঃ ক্ষত্রিয়াদি, কর্ম ক্ষত্রিয়াদয় ক্ষাণ্ডাল কর্ম করিয়ন্তীত্যর্থঃ ॥ ১৮ ॥ শানী শন স্বক্তা ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥

^{*} যেপীত্যাদি চরণছরং ক পুস্তকে নান্তি 1

সরিজীরেষু কুদ্দালৈ ব্বাপয়িষ্যন্তি চৌষধীঃ। তাশ্চাপ্যপ্পফলাস্তেষাং ভবিষ্যন্তি যুগক্ষয়ে॥২০॥ আদ্ধে দৈবে চ পুরুষা যে চ নিত্তং ধৃতব্রতাঃ। তেহপি লোভসমাযুক্তা ভোক্ষান্তীহ পরস্পারম ॥ ২৪॥ পিতা পুত্রস্থা ভোক্তা চ পিতৃঃ পুত্রস্তথৈব চ। অতিক্রান্তানি ভোজ্যানি ভবিষ্যন্তি যুগক্ষয়ে॥২৫॥ ন ব্রতানি চরিষ্যন্তি ব্রাহ্মণা বেদনিনদ্কাঃ। ন যক্ষ্যন্তি ন হোষ্যন্তি হেতৃবাদ্বিমোহিতাঃ। নিমেম্বীহাং করিষ্যন্তি হেতৃবাদবিমোহিতাঃ॥২৬॥ নিমে ক্লবিং করিষ্যন্তি যোক্যন্তি ধুরি ধেমুকাঃ। একহারনবৎসাপ্ত যোজ্যিয়ান্তি মানবাং॥ ২৭॥ পুত্রঃ পিতৃবধং কুত্বা পিতা পুত্রবধং তথা। নিরুদ্বেগো রহদ্বাদী ন নিন্দামুপলপ্যতে॥ ২৮॥ লেচ্ছভূতং জগৎ সর্বাং নিষ্কিয়ং যজ্ঞবজি তম্। ভবিষ্যতি নিরানন্দ মন্ত্রুপ্র মথো তথা ৷ ২৯ ৷ প্রায়শঃ রূপণানা হি তথাবন্ধুমতামপি । বিধবানাঞ্চ বিভানি হরিষ্যন্তীহ মানবাঃ॥ ৩•॥ স্বন্দবীর্য্যবলাঃ স্তব্ধা লোভমোহপরায়ণাঃ। তৎकथानानमञ्जूषे। कृष्टीनामिल मानवाः॥ ७১॥ পরিগ্রহং করিষাত্তি পাপাচারপরিগ্রহা:। সমাহ্বয়ন্তঃ কৌন্তেয়। রাজানঃ পাপবুদ্ধয়ঃ ॥ ৩২ ॥ পরস্পরবধোদ্যুক্তা মূর্খাঃ পণ্ডিতমানিন:। ভবিষ্যন্তি যুগস্থাক্তৈ ক্ষত্ৰিয়া লোককণ্টকাঃ ॥ ৩১॥

॥ २० ॥ २८ ॥ २ ৫ । নিমের হীনের কর্ম আ ॥ २७ ॥ २१ ॥ সুহদ্দী অকর্তা ব্লাহ মিতি বদনশীলঃ ॥ २৮ ॥ २৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ অরক্ষিতারো লুকাশ্চ মানাহস্কারদর্পিতাঃ। কেবলং দগুরুচয়ো ভবিষ্যস্থি যুগক্ষয়ে ॥ ৩৪ ॥ আক্রম্যাক্রম্য সাধূনাৎ দারাংশ্চাপি ধনানি চ। ভে কান্তে নির্মুকোশা রুদতামপি ভারত। ॥ ৩৫॥ ন কন্যাং যাচতে কশ্চিৎ নাপি কন্যা প্রদীয়তে। স্বয়ংগ্রাহা ভবিষ্যন্তি যুগান্তে সমুপস্থিতে । ৩৬ ॥ রাজানশ্চাপ্যসম্ভূফীঃ পরার্থানা তচেত্রয়:। সর্কোপারৈ হরিষান্তি যুগান্তে পর্গুপস্থিতে। ৩৭। স্লেচ্ছীভূতং জগৎ সর্বাং ভবিষ্যতি ন সংশয়:। হস্তো হস্তৎ পরিমুষেৎ যুগান্তে সমুপন্থিতে ॥ ৩৬ ॥ সত্যং সংক্ষিপ্যতে লোকে নরৈঃ পঞ্জিতমানিভিঃ। স্থবিরা বালমতয়ো বালা: স্থবিরবুদ্ধঃ। ৩৯॥ ভীরস্তথা শূরমানী * শূরা ভীরুবিষাদিন:। ন বিশ্বসন্তি চান্যোহ্ন্য> যুগান্তে পর্যুপস্থিতে ॥ ৪০॥ একাহার্য্যং যুগ্র সর্বাং লোভমোহ্ব্যবস্থিতম্। অধর্মো বন্ধতে তত্ত্র ন তু ধর্মঃ প্রবর্ততে ॥ ৪১॥ ত্রাহ্মণাঃ ক্ষত্রিয়া বৈশ্যা ন শিষান্তি জনাধিপ !। একবর্ণস্কদা লোকে। ভবিষ্যতি যুগক্ষয়ে ॥ ৪২ ॥ ন ক্ষংস্তাতি পিতাপুত্রং পুত্রক পিতর তথা। ভার্যাশ্র পতিশুক্রয়াৎ ন করিয়ান্তি সংক্ষয়ে † ॥ ৪৩॥

॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ পরার্থান্ পরধনানি ॥ ४१ ॥ হস্তোহন্তং পরিমুবেৎ হস্ত বদেকোদরজোপি ভাতা ভাতরং বঞ্চরেদেব ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥ একাছার্য্যং একবিধমেব মাৎস শাকাদিক মাহার মইতীতি তথা ভক্ষ্যাভক্য বিভাগো-নান্তীত্যর্থ: ॥ ৪১ ॥ একবর্ণঃ বর্গবিভাগে নাশনাৎ ॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥

^{*} ভীরবঃ শূরমতয়ঃ ইতি ক-পুস্তকে।

ক " করিব।ভি ন কাশ্চন * ইতি ক-খ-পৃস্তকয়োঃ।

रय यवात्रा जनপना शाध्यात्राखटेशव ह। তান দেশান্ সংশ্রেষ্যন্তি যুগান্তে প্রুপস্থিতে ॥ ৪৪ ॥ বৈরাচারাশ্চ * পুরুষা যোষিতশ্চ বিশাশপতে!। অন্যোন্যং ন সহিষ্যন্তি যুগান্তে পর্যুপপন্থিতে † ॥ ৪৫ ॥ লেচ্ছীভূত**্ জগৎ সর্বাং ভবিষ্যতি যুধিষ্ঠির** !। ন আহৈত্বপৃথিষ্যতি দৈবতানীহ মানবাঃ ॥ ৪৬॥ ন কশ্চিৎ কস্তাচিচ্ছোতা ন কশ্চিৎ কম্যাচিদ্যা ৰুঃ। তমোগ্রস্তদা লোকো ভবিষ্যতি জনাধিপ। ॥ ৪৭॥ পরমাযুশ্চ ভবিতা তদা বর্ষাণি ষোড্রশ। ততঃ প্রাণাছিমোক্ষান্তি যুগান্তে সমুপন্থিতে।। ৪৮॥ পঞ্চমে বার্থ ষষ্ঠে বা বর্ষে কন্যা প্রস্থয়তে। সপ্তবর্ষাইত্রবাশ্চ প্রজান্তান্তি নরান্তদা॥ ৪৯॥ পতে।ী স্ত্রী তু তদা রাজনু! পুরুষো বা স্ত্রিয়ং প্রতি। যুগান্তে রাজশাদ্দ্ল! ন তোষ মুপযাস্থাতি॥ ৫•॥ অপ্পদ্রব্যা রুথালিঙ্গা হিংসা চ প্রভবিষ্যতি। ন কন্চিৎ কস্তাচিদ।তা ভবিষ্যতি যুগক্ষয়ে॥ ৫১॥ অউশূলা জনপদাঃ শিবশূলাশ্চতুষ্পথাঃ। কেশশূলাঃ স্থিয় ভাগি ভবিষ্যন্তি যুগক্ষয়ে॥ ৫২ ॥ লেচ্ছাচারাঃ সর্বভক্ষা দারুণাঃ সর্ববন্দ্রসূথ। ভাবিনঃ পশ্চিমে কালে মনুষ্যা নাত্র সংশয়ঃ॥ ৫৩॥

॥ ৪४ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ প্রজাসে ভি প্রজাঃ জনিয়িয়া **ভি ॥ ৪৯ ॥ ৫० ॥** ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ৫৬ ॥

 ^{* &}quot; বৈদ্বাহার। " ইতি ক-পাঠঃ।
 † " সমুপন্থিতে " ইতি বা।

ক্রেরিক্রকালে চ সর্বঃ স্বাফ্ত বঞ্চনাম *। যুগান্তে ভরতশ্রেষ্ঠ। বিন্তলোভাৎ করিষাতি॥ ৫৪॥ জ্ঞানানি চাপ্যবিজ্ঞায় করিষ্যন্তি ক্রিয়ান্তথা। আত্মাচ্ছন্দেন বর্ত্তন্তে যুগান্তে সমুপস্থিতে। ৫৫॥ স্বভাবাৎ ক্রুরকর্মাণশ্চান্যোন্যমভিশংসিনঃ। ভবিতারে। জনাঃ সর্বে সংপ্রাপ্তেতু যুগক্ষরে 🕆 ॥ ৫৬ ॥ व्याता मारिक्टव वृक्षारक नाम शिषा छि निकार्याः। ভবিতা সংশয়ো লোকে জীবিতশু প্রহি দেহিনাম ॥ ৫৭॥ তথা লোভাভিভ্তাশ্চ ভবিষান্তি নরা নুপ!। ব্ৰাহ্মণাংশ্চ হনিষ্যন্তি ব্ৰাহ্মণস্থোপভোগিনঃ। ৫৮॥ হাহাক্তা দিজা শৈচৰ ভয়ার্ভা ব্যলাদিতাঃ। ত্রাভার মলভত্তো বৈ ভ্রমিষ্যন্তি মহীমিমাম্। ৫৯॥ জীবিতান্তকরাঃ ক্রুরা রৌক্রাঃ প্রাণিবিহিংসকাঃ। যদা ভবিষ্যন্তি নরাস্তদা সংক্ষেপ্যতে যুগম্॥ ৬ ॥ আপ্রায়েষ্যন্তি চ নদীঃ পর্বতান বিষমাণি চ। প্রধাবমানা বিত্রস্তা ছিজাঃ কুরুকুলোছছ! ॥ ৬১॥ দস্থ্যভিঃ পীড়িতা রাজন্। কাকা ইব দিজোন্তমাঃ। কুরাজভিশ্চ সতত্ত করভারপ্রপীডিতাঃ ॥ ১২॥ ধৈৰ্য্যৎ ত্যক্ত্যা মহীপাল। দাৰুণে যুগদংক্ষয়ে। বিকর্মাণ করিষান্তি শূদ্রাণাঃ পরিচারকাঃ॥ ৬৩॥

॥ ৫৪॥ জ্ঞানানি জ্ঞেয় স্বরূপাণি ॥ ৫৫॥ ৫৬॥ ৫৭॥ ৫৮॥ বৃষলার্দ্ধিতাঃ শূদ্রপীতিতাঃ॥ ৫৯॥ সংক্ষেপ্যাতে নাশং গমিষ্যতি॥ ৬০॥ ৬১॥ কাকাইব সর্বতঃ শহিনঃ নীচ বৃত্যুপজীবিনোবা॥ ৬২॥ ৬৩॥

 ^{* &}quot;বঞ্জন্ং" ইতি বা পাঠঃ।
 † সংপ্রাপ্তে যুগসংক্ষরে ইতি কঃ।

শূদ্রা ধর্মাং প্রবক্ষান্তি ব্রাহ্মণাং পয়ু পোসকাং। শ্রোতারশ্চ ভবিষ্যস্তি প্রামাণ্যেন ব্যবস্থিতাঃ॥ ৬৪ ॥ বিপরীতশ্চ লোকোহয়ং ভবিষ্যত্যধরোত্তরঃ। এডুকান পুজয়িষান্তি বর্জায়ান্তি দেবডাঃ ॥ ৬৫॥ শূদাঃ পরিচরিষাত্তি ন দিজান্ যুগসংক্ষরে। আশ্রমেষুমহর্ষীণাং ত্রাহ্মনাবস্থেষুচ। ৬৬॥ দেব স্থানেষু চৈত্যেষু নাগানা মাল য়েষুচ। এভূকচিত্রা পৃথিবী ন দেবগৃহভূষিতা ॥ ৬৭॥ ভবিষ্যতি যুগে ক্ষীণে তদ্যুগান্তভা লক্ষণম। यता (दोजा धर्माहीना माश्माताः भानभाख्यां ॥ ७৮ ॥ ভবিষ্যত্তি নরা নিত্য তদা সংক্ষেপ্যতে যুগম। পুজে পুজ प्राप्त वाजन् । कल वा कलमाधि उम् ॥ ७२ ॥ প্রজাক্ততি মহারাজ! তদা সংক্ষেপ্যতে যুগম্। অকালবর্ষী পর্জন্যে। ভবিষ্যতি গতে যুগে * ॥ ৭ • ॥ অক্রমেণ মনুষ্যাণাপ ভবিষ্যন্তি তদা ক্রিয়াঃ। বিরোধমথ যাস্তন্তি রুষলা ব্রাহ্মাণেঃ সহ। ৭১। মহী স্লেচ্জনাকীর্ণা ভবিষ্যতি ততোহচিরাৎ। করভারভয়াদ্বিপ্রা ভজিষ্যন্তি দিশো দশ॥ ৭২॥ নির্কিশেষা জনপদান্তথা বিটিকরার্দ্ধিতাঃ আঅমারুপলপ্রুন্তি † ফলমূলোপজীবিন:॥ ৭৩॥

॥ ৬৪॥ এড়কান্ অস্থান্ধিতানি কুড়ানি ভিত্তি স্ত্রীকুড়া মেড়ুকং যদন্তর্নাস্ত কীক সমিত্য মরঃ ॥ ৬৫ ॥ ৬৬॥ ৬৭॥ ৬৮॥ ৬৯॥ ৭০॥ ৭১॥ ৭২॥ নির্বিশেষাঃ তুল্যাচারক্লেষাঃ বিফিকরাঃ ভৃতি মদহা কারয়ন্তিতে॥ ৭৩॥

শুগক্ষরে ইতি ক পুস্তকে পাঠঃ।
 শুসান্ত্রিশং সান্তি ইতি ক পুস্তকে।

এব পর্যাকুলে লোকে মর্য্যাদা ন ভবিষ্যতি। ন স্থাস্থান্তপদেশে চ শিষ্যা বিপ্রিয়কারিণঃ । **৭৪** ॥ আচার্য্যোহপনিধিকৈর ভৎ স্থাতে তদনন্তরম্। অর্থযুক্ত্যা প্রবর্ৎ শুদ্তি মিত্রসম্বন্ধিবান্ধবাং ॥ ৭৫ ॥ অভাবঃ সর্বভূতানাং যুগান্তে সংভবিষাতি। দিশঃ প্রজ্বলিতাঃ সর্বা নক্ষত্রাণ্য প্রভাগি চ ॥ ৭৬ ॥ 🌞 জোতীংষি প্রতিকূলানি বাতাঃ পর্যাকুলান্তথা। উল্কাপাতাশ্চ বহুবো মহাভয়নিদর্শকাঃ॥ ৭৭॥ ষড়ভিরনৈয়ক সহিতো ভাস্কর: প্রতপিষ্যতি। তুমুলাশ্চাপি নিহ্রাদা দিগ্দাহাশ্চাপি সর্বশং॥ ৭৮॥ कवक्कार्खिइटा ভात्रुक्रमशास्त्रम्य जना। অকালবৰ্ষী ভগৰানু ভবিষ্যতি সহস্ৰদুক্ ॥ ৭৯ ॥ শক্তানি চন রোক্যান্তি যুগান্তে পর্যুপস্থিতে। অভীক্ষং ক্রুরবাদিন্যঃ পরুষা রুদিতপ্রিয়াঃ॥ ৮০॥ ভর্ত্তাপ বচনে চৈব ন স্থাম্মন্তি ততঃ † স্ক্রিয়ং। পুক্রাশ্চ মাতাপিতরৌ হনিষ্তি যুগক্ষয়ে॥ ৮১॥ স্থদরিয়ান্তি চ পতীন স্ত্রিয়ঃ পুত্রানপাঞ্চিতাঃ । অপর্বাণি মহারাজ! স্থায় বাছরু পৈষাতি ॥ ৮২ ॥ যুগান্তে হুতভুক্ চাপি সর্বতঃ প্রজ্বলিষ্যতি। পানীয়ং ভোজনঞাপি যাচমানাস্তদাধ্যাঃ ॥ ৮৩ ॥

॥ ৭৪ ॥ আচার্থ্যোপি অপনিধিঃ নিধ্নঃ ভংস্যতি ধিক্ ক্রিয়তে অর্থ যুক্তা ধন যোগেন নতু স্থেকেন ধর্মো বা॥ ৭৫॥ ৭৬॥ ৭৭॥ ৭৮॥ কবন্ধান্তর্হিতঃ রাহ্বন্তর্হিতঃ॥ ৭৯॥ ৮০॥ ৮১॥ ৮২॥ ৮৩॥

^{*} অত্ত্র প্রপ্রামি জ্যোতীংষি " ইত্যেবং পাঠোদুশ্যতে ক-পুস্তকে।

ক্তিতঃ , ইত্যত্ত্র 'তদা , ইতিকঃ।

ন লপ্যান্তে নিবাসঞ্চ নিরস্তাঃ পথি শেরতে। নিষ্।তা বায়দা নাগাঃ সকুনাঃ দমুগদ্বিজাঃ ॥ ৮৪ ॥ ৰক্ষা বাচো বিমোক্ষ্যম্ভি যুগান্তে পৰ্যাপস্থিতে। মিত্র**ু সম্বন্ধিনশ্চাপি সংত্যক্ষ্যন্তি নরা**ন্তদা। ৮৫ ॥ জনং পরিজনঞাপি যুগান্তে পর্যুপস্থিতে। অথ দেশান দিশকাপি পত্তনানি পুরাণি চ। ৮৬। ক্রমশঃ স•শ্রেষ্যন্তি যুগান্তে পযুর্গান্তি। হা তাত হা সুতেত্যেবং তদা বাচঃ সুদারুণাঃ ॥ ৮৭ ॥ विकाममानन्द्रानाः जत्ना गाः भर्याविषाि । ততস্ত্রমূলসংঘাতে বর্ত্তমানে যুগক্ষয়ে ॥ ৮৮ ॥ দ্বিজাতি পূৰ্ব্বকো লোকঃ ক্রমেণ প্রভবিষ্যতি। ততঃ কালান্তরেহন্যামান্ পুনলোকবিরুদ্ধয়ে । ৮৯॥ ভবিষ্যতি পুনদৈবমনুকূল यদৃচ্ছয়।। যদা সূৰ্যাশ্চ চন্দ্ৰশ্চ তথা তিষাবহস্পতী॥ ৯০॥ একরাশৌ সমেষ্যন্তি প্রপর্থস্তি * তদা কৃত্য। কালবর্ষী চ পর্জন্যো নক্ষত্রাণি শুভানি চ॥ ৯১॥ প্রদক্ষিণাঃ গ্রহাশ্চাপি ভবিষ্যম্ভান্নলোমগাঃ। ক্ষেমং স্থৃভিক্ষমারোগ্যং ভবিষ্যতি নিরাময়ম্। ৯২॥ कक्की विकृषभा नाम विकः काल প্রচোদিতः। উৎপৎস্ততে মহাবীর্যো মহাবুদ্ধিপরাক্রম:। ৯৩ ॥ সম্ভূতঃ সম্ভলগ্রামে ব্রাহ্মণাবসথে শুভে। মনসা তত্ত সর্বাণি বাহনান্যযুধানি চ। ৯৪।

॥৮৪॥৮৫।৮৬॥৮৭॥৮৮॥৮১॥यদেতি গুৰু স্ব্যচন্ত্রাঃ যদা যুগপৎ পুরা নক্তর মেব্যন্তি তদা কৃত্যুগ প্রবৃত্তি রিত্যর্থঃ॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৬॥ ১৪॥ * প্রবর্গোতি ইতি ক পাঠঃ। উপস্থাসান্তি যোধাশ্য শস্ত্রানি কবচানি চ।

স ধর্মবিজয়ী রাজা চক্রবর্ত্তী ভবিষ্যতি ॥ ৯৫ ॥

স চেমং সঙ্কলে লোকং প্রসাদমুপনেষ্যতি।
উপিতো ব্রহ্মনো দীপ্তঃ ক্ষয়ান্তরুত্বদারধীঃ ॥ ৯৬ ॥

সংক্ষেপে হি স সর্বস্থা যুগস্থা পরিবর্ত্তকঃ।

স সর্বত্র গতান্ ক্ষুদান্ ব্রাহ্মনো পরিবারিতঃ।
উৎসাদয়িষ্যতি তদা সর্বন্ধেছ্গণান্ দ্বিজঃ"—॥ ৯৭ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বনি মার্কণ্ডেয় সসাস্থাপর্বনি ভবিষ্যকথনে শ

নবত্যধিক শত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯০ ॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ।

"ততশ্চৌরক্ষয়ং রুত্বা বিজেভ্যঃ পৃথিবীমিমাম। বাজিমেধে মহাযজে বিধিবৎ কল্পয়িষ্যতি॥ >॥ স্থাপয়িত্বা চ মর্য্যাদাঃ স্বয়্মুবিহিতাঃ শুভাঃ। বনং পুণ্যশাংকর্মা রমণীয়ং প্রবেক্ষাতি॥ ২॥ তচ্ছীলমনুবর্ধ শুন্তি মনুষ্যা লোকবাসিনঃ। বিপ্রৈশ্চৌরক্ষয়ে চৈব রুতে ক্ষেম্ম ভবিষ্যতি॥ ৩॥

1 20 1 20 1 29 1

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকগায়ে ভারত ভাবদীপে নবত্যধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯০ ॥

তত ইতি কপারিষাতি দাসাতি॥ ১॥ ২॥ বিপ্রৈর্ডে: ক্তে ষুণো
॥ ৩॥ কৃষ্ণাজিনানি বক্ষারি পরিধেয়ানি তেন সর্বাণি বাক্ষণ কর্মাণি

^{*} কলি যুগ কথনে ইতি ক পাঠ:।

কুফাজিনানি শক্তীক ত্রিশূলান্যাযুধানি চ। স্থাপয়ন দ্বিজশার্দ্দুলো দেশেষু বিজিতেষু চ॥ ৪॥ সংস্ক্রমানে। বিপ্রেক্রেশ্মানয়ানো দিজোওমান্। কল্কিশ্চরিষ্যতি মহীং সদা দস্থাবধে রতঃ । ৫॥ হা তাত মাতঃ পুত্ৰেতি তাস্তা বাচঃ স্থদারুণাঃ। বিক্রোশমানানু স্নভূশং দস্থানেব্যতি সংক্ষয়ম্।। ও।। ততোহধর্মবিনাশে বৈ ধর্মবৃদ্ধিশ্চ ভারত।। ভবিষ্যতি কুতে প্রাপ্তে ক্রিয়াবাংশ্চ জনস্তথা * ॥ ৭ ॥ আরামাশ্চেব চৈত্যাশ্চ তডাগাবস্থান্তথা। পুষ্করিণ্যশ্চ বিবিধা দেবতায়তনানি চ ॥ ৮ ॥ যজ্ঞক্রিয়াশ্চ বিবিধা ভবিষান্তি ক্লুতে যুগে। ' ব্ৰাহ্মণাঃ সাধব শৈহব মুনয়শ্চ তপস্থিনঃ ॥ ৯॥ আত্রমাঃ সহ পাষ্ডাঃ স্থিতাঃ সত্যজনাঃ প্রজাঃ। প্রয়ন্তি † সর্ববীজানি রোপ্যমাণানি চৈব হ ॥ ১০ ॥ সর্বেষ,ভূষু রাজেন্দ্র ! সর্বাং শস্তাং ভবিষ্যতি । নরা দানেষু নিরতা ত্রতেষু নিয়মেষু চ॥ ১১॥ জপ্যযজ্ঞপরা বিপ্রা ধর্মকামা মুদা যুকাঃ। পালয়িষ্যন্তি রাজানো ধর্মেণেমাং বস্তুন্ধরাম্॥ ১২॥ ব্যবহাররতা বৈশ্ব। ভবিষ্যন্তি ধ্বতে যুগে। ষ্ট্কর্মনিরতা 🖠 বিপ্রা: ক্ষজিয়া বিক্রমে রতাঃ ॥ ১৩ ॥

লক্ষান্তে শক্তীরিত্যাদিন। রাজধর্মাঃ স্থাপয়ন্ এককএরো ধর্ম-ব্যবস্থাং চক্রে ইতি ভাবঃ॥ x॥ ৫॥ ৬॥ অধর্ম বিনাপ ইতিচ্ছেদঃ॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ যে আশ্রমাঃ সহপাবণ্ডাঃ প্রাকৃত্যিতান্তে প্রজাশ্চ সত্যজনা ভবিষ্যন্তীতি সম্বন্ধঃ প্রযন্তি নশ্যন্তি বীজানি সংস্থারাঃ রোপ্যমাণানিক্রিয়মাণেঃ কর্মুভি দুট্ং সম্পাদ্যমানান্যপি জ্ঞানবলামশ্যন্তীত্যর্থঃ॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥

^{*} তদা ইতি ক-পুস্তকঃ। † প্রয়ন্তীত্যত্তজাস্যন্তীতি পাঠঃ কপুস্তকে।

‡ " ষট্ কর্মাণি রতা " ইতি ক-ম পুস্তকয়োঃ।

শুক্রাবারাং রভাঃ শুদ্রান্তথা বর্ণত্ররক্ত চ। এষ ধর্শ্যঃ ক্লতযুগে ত্রেতায়াং দ্বাপরে তথা ৷ ১৪ ৷৷ পশ্চিমে যুগকালে চ যঃ স তে সংপ্রকীর্ত্তিতঃ। সর্বালেকস্থা বিদিতা যুগস্খ্যা চ পাগুব! ॥ ১৫॥ এতত্তে সৰ্ব্বমাখ্যাত্মতীতানাগতং তথা *। বাযুপ্রোক্তমনুস্মৃত্য পুরাণ্মৃষিসংস্ততম্ ॥ ১৬॥ এবং সংসারমার্গা মে বছশশ্চিরজীবিনা। দৃষ্টা শৈচবানুভূতাশ্চ তাৎস্তে কথিতবানহম্॥ ১৭॥ ইদঞ্বোপরং ভূয়ঃ সহ ভাতৃভিরচ্যুত!। धर्मा मः भारताकार्थः निर्वाध वहनः सम ॥ ১৮॥ ধর্ম্মে ত্বয়াত্মা সংযোজ্যো নিত্যং ধর্মমুভতাম্বর ! । ধর্মাত্মা হি স্কুখং রাজন। প্রেত্য চেহ চ নন্দতি 🕆 ॥ ১৯॥ নিবোধ চ শুভাং বাণীং যাং প্রবক্ষ্যামি তেইন্য!। ন ব্রাহ্মণে পরিভবঃ কর্ত্তব্যস্তে কদাচন ॥ ২০॥ বান্ধণ: কুপিতো হন্যাদপি লোকান প্রতিজ্ঞয়া "—। বৈশস্পায়ন উবাচ। মাৰ্কপ্তেয়বচঃ জ্ৰুত্বা কুৰুণা প্ৰব্ৰো নূপঃ॥২১॥ উবাচ বচনং ধীমান প্রমং প্রমন্ত্রাতিঃ। "ক্ষান্ধর্মে ময়া স্থের প্রজাঃ সংরক্ষতা মুনে ! ॥ ২২ ॥ কথঞ্চ বর্ত্তমানে। বৈ ন চ্যবেয় স্বধর্মতঃ! "-। মাৰ্কতেয় উৰাচ।

'দয়াবান্ সর্বভূতেষু হিতো রক্তোহনস্থয়কঃ॥২৩॥
সত্যবাদী মৃত্রদন্তঃ প্রজানাৎ রক্ষণে রতঃ।
চর ধর্মং ত্যজাধর্মং পিতৃন্ দেবাৎশ্চ পূজয়॥২৪॥
প্রমাদাদ্যৎ কৃতং তেহভূৎ সম্যাদানেন তজ্জয়।
অলস্তে মানমাশ্রেত্য সত্তৎ পরবান্ ভব॥২৫॥

^{* &#}x27;তথা ' ইত্যত্ত্ত 'ৰ্ময়া ' ইতি পাঠঃ ক-পুস্তকে। ণ বিন্দুতীতি কঃ।

বিজিত্য পৃথিবীৎ সর্বাং মোদমানঃ স্থুখীভব।
এব ভূতো ভবিষ্ণ ধর্মস্থে সমুদীরিতঃ ॥ ২৬ ॥
ন তেইস্তাবিদিতৎ কিঞ্চিদতীতানাগতৎ ভূবি।
তক্ষাদিমং পরিক্লেশং ত্বং তাত। কৃদি মা কুখাঃ ॥ ২৭ ॥
প্রাজ্ঞান্তাত। ন মুছন্তি কালেনাতিপ্রপীড়িতাঃ।
এব কালো মহাবাহো। অপি সর্বাদিবৌকসাম্ ॥ ২৮ ॥
মুছন্তি হি প্রজান্তাত। কালেনাভিপ্রচোদিতাঃ।
মাচ তেইত্র বিশঙ্কাভূৎ যন্ময়োক্তং তবানঘ। ॥ ২৯ ॥
আশক্ষ্য মন্বচো ছেত্তকর্মলোপো ভবেত্তব।
জাতোইসি প্রবিতে বংশে কুরণাৎ ভরত্বভ। ॥ ৫০ ॥
কর্মণা মনসা বাচা সর্বানেতৎ সনাচর"।

যু ধিন্তির উবাচ।

" যত্ত্বংগক্তিং দিজ শ্রেষ্ঠ ! বাক্যং শ্রুতিমনোহরম্। ৩১॥ তথা করিষ্যে যত্ত্বেন ভবতঃ শাসনৎ বিভো!। ন মে লোভোহস্তি বিপ্রেন্দ্র । ভয়ং ন চ মৎসরঃ। ৩২॥ করিষ্যামি হি তৎ সর্বামুক্তৎ যত্তে ময়ি প্রভো!"।

रेवमञ्जायम छेवाह।

শ্রুত্বা তু বচন তস্য মার্কণ্ডেয়স্থা ধীমতঃ ॥ ৩০॥
সংক্ষীঃ পাপ্তবা রাজন্! সহিতাঃ শাঙ্গ ধিয়না।
বিপ্রের্যভাশ্চ তে সর্বো যে তত্রাসন্ সমাগতাঃ ॥ ৩৪॥
তথা কথা শুভাং শ্রুত্বা মার্কণ্ডেয়স্থা ধীমতঃ।
বিশ্বিতাঃ সমপদ্যন্ত পুরাণস্থা নিবেদনাৎ"—॥ ৩৫॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয় সমাস্যা পর্বাণি যুধিষ্ঠি
রামুশাদনে একনবভাধিক শত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯১॥

॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ইত্যারণ্যকে পকাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে এক নবত্যধিকশততমোহধ্যায় ॥ ১৯১ ॥ হিশন্পায়ন উবাচ *।
ভূয় এব ব্রাহ্মণমহাভাগাং বকুমহ্দীত্যব্রবীৎ
পাগুবেয়ো মার্কপ্তেয়াং পূর্বমিদ শত্রু হতাম্।
অথাচন্ট মার্কপ্তেয়াং পূর্বমিদ শত্রু হতাম্।
ব্রাহ্মণানাম্ চরিতম্ † ॥ ২ ॥
অযোধ্যায়ামিক্ষাকুকুলোছহং পার্থিকঃ
পরিক্ষিন্নাম মৃগ্য়ামগমৎ ॥ ৩ ॥
তমেকাশ্রেন মৃগমনুসরন্ত শ্রুণা ভূতু ইন্টক্মিন্
দেশে নীলং গহনং বনষপ্ত ! মপশ্রুৎ ॥ ৫ ॥
ভচ্চবিবেশ * তত্তক্ত বনষপ্ত মধ্যহতীব
রমণীয়ং সরো দৃন্ধ্যা সাশ্ব এব ব্যুগাহত ॥ ৬ ॥
অথাশ্বন্ত স্বেগ্রু বন্ধিত আন্ত্রা,
নিঃক্ষিপ্য পুন্ধরিণীতীরে সংবিবেশ।
ততঃ শ্য়ানো মধুর শীত মশুণোৎ † ॥ ৭ ॥

মারণ শুল্ক নাদ্যান্যপি কর্মাণি কৃষ্ণাদৈত বিদ্যা বলেনৈব সিদ্ধন্তীতি মণ্ডুকাখ্যায়িকয়োবাহ ভূয় ইতি॥১॥২॥৩॥৪॥৫॥৩॥৭॥

^{*} বৈশম্পায়ন উবাচ ইত্যাস্য প্রাক্ "জনমেজয় উবাচ। ভূয় এব ব্রাহ্মণানাং মাহাত্মং বজুম্হাস পাণ্ডবানাং যথাচক্ট মার্কণ্ডেয়ো মহাতপাঃ " এয়ঃ শ্লোকঃ খপুস্তকে নান্তি কিন্তুন্য-পুস্তকে বর্ততে।

[†] কণ্যন্তকেহন্য শ্লোকন্য ভিন্নাপরিপাণী, যথা, "অপ্রাচষ্ট মার্কণ্ডেয়ঃ জ্ঞায়তাম্। কথয়ামীদং পূর্বাং ব্রন্থাণাং চরিতন্ " ইতি।

[‡] ষণ্ডমিতাত্ত খণ্ডমিতি পাশ্চাতাঃ।

* তচ্চাবিবেশ ইতি কঃ, অন্ধিন্পক্ষে আবিবেশ ইতি ছেদঃ।

[†] বিস ইতি দন্ত্যান্তোপি। কচিৎ সংবিবেশ ইত্যৱ শ্লোকান্তোদ্শ্যতে, ক-পুস্তকে তু গীত ইত্যৱ গীতশব্দমিতি পঠাতে।

স প্রত্যাচিন্তরনেই মনুষ্যগতি পশ্যামি, কম্ম খলুয়ং গীতশব্দ ইতি।৮॥ অথাপশ্ৰুৎ কন্যাৎ প্ৰমূৰপদৰ্শনীয়াং, পুজাণ্যবচিন্বতীং গায়ন্তীঞ্চ। অর্থ সারাজ্ঞঃ সমীপে পর্য্যক্রামৎ ॥ ৯॥ ভামত্রবীদ্রাজা, কদ্যাসি ভদ্রে কা বা ত্রমিতি শা প্রভাবাচ কন্যান্মীতি, তাপ রাজোবাচার্থী স্বয়াহমিতি॥ >•॥ অথোবাচ কন্যা সময়েনাহং শক্যা ত্বয়া লক্ষ্ নান্যথেতি, রাজা তাং সময়মপুচ্ছৎ, কন্যোবাচ, নোদকং মে দর্শয়িতব্যমিতি ॥ ১১ ॥ স রাজা তাং বাঢমিত্যুক্ত্রা তামুপযেমে, ক্লতোদাহশ্চ রাজা পরীক্ষিৎ ক্রীডমানো মুদা পরময়া যুক্তস্তৃফীং সঙ্গম্য তয়া সহাস্তে॥ ১২॥ ততস্তবৈবাসীনে রাজনি সেনামগচ্চৎ ॥ ১৩॥ সা সেনোপবিষ্ট^ # রাজান পরিবার্য্যাতিষ্ঠৎ। পর্য্যাশ্বস্তশ্চ রাজা তরৈর সহ শিবিকয়া প্রায়াদবঘোটিতয়া, স স্থ-নগর 🕇 মন্ত্রপাপ্য রহসি তয়া সহাত্তে ॥ ১৪॥ তত্রভ্যাসম্ভোহপি কশ্ভিত নাপশ্যদথ প্রধানামাত্যোহভ্যাসচরাঃ তস্য 🛊 স্ত্রিয়োহপুদ্ধ ॥ ১৫ ॥

কিমত্র প্রয়োজনং বর্ত্ত ইত্যথাক্রবংস্তাঃ স্ত্রিয়ঃ ॥ ১৬ ॥ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ অব্যোটিত্যাল্লক্ষীকৃত্যা ॥ ১৪ ॥ অভ্যাসম্ভোপি নিকটছোপি নাপশ্যৎ ক্রীডাসক্তং রাজানমিতি শেষঃ প্রয়োজনং কর্ত্ব্যং ॥ ১৬ ॥ ১৫ ॥

^{*} পদংপদেন দৃষ্ট্বাচ ইতাধিকঃ পাঠোহত্ত ক-পুস্তকে লভ্যভে।

' প স্বনগর্মাত কঃ।

া প্রধানামাত্যোহভাগেচরাইত্যতঃ পরং তদ্যেতি পাঠঃ ক-পুস্তকে নাস্তি

অপিচ প্রধানামাত্যস্ত্যাগভ্যাসচরাঃ ক্রিরোহপুচ্ছদিত্যের পাঠঃ।

স্থিয় মপূর্বামিই পশামিস্তাঞ্ রাজা সময়েনোপভূপ্ত কে,
যথোদকং মেন দর্শন্তিব্যমিতি।
স তথা বচন প্রজ্যা বনং কার্য়িস্থোদাররক্ষং বহুপুপাকলং,
তদ্য মধ্যে মুক্তাজালময়ীং পাধ্যে বাপীং স্পৃচ্ছাং
স্থোপলিপ্তা পরহন্থাপাসমা রাজানমন্ত্রীৎ ॥ ১৭ ॥ ।
বনমিদমুদারকং † মাধ্র রম্যতামিতি ॥ ১৮ ॥
স তদ্য বচনাত্তরৈব সহ দেবা। তদনং প্রাবিশৎ,
স কদাচিত্রন্দিন্তঃ প্রান্ত্যেই তিমুক্তকাগারমপশ্যং ॥ ১৯ ॥
তৎপ্রবিশা রাজা সহ প্রির্যা স্থোক্তাপ,

বিমলাপ সলিলপূর্ণং বাপীমপশ্যে॥ ২০॥ দুটো ব চ তাং তিস্যা শ্চঞ

তীরে সহৈব তরা দেব্যা ব্যক্তিষ্ঠত ॥ ২১ ॥
অথ তাং দেবী শারাজান্ত্রবীং সাধ্বতর বাপীসলিলমিতি,
সাতদ্বচ গ্রুত্বাব্তীহ্য বাপী শারাজন্ম পুনরুদমজ্জং ॥ ২২ ॥
তাং সাণ মুগ্রমাণো রাজা নাপশ্যদাপীমথ নিস্রাব্য,

মণ্ডুকং শ্বনুথে দৃষ্ট্ব। কুদ্ধ আজ্ঞাপয়ামাস স রাজা॥ ২০॥ সক্ষত্ত মণ্ডুকবধঃ ক্রিয়তানিতি যো ময়াখী স মাং

মৃত্যপ্ত কৈপায়নমাদ। যেবোপতি ঠেদিতি । । ২৪॥॥ ১৭॥ অতিমুক্তকাগারং বাসভী গৃহং॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ ॥ ২৩॥ ২৪॥ :

^{*} ক্লোকমিমং পাশ্চাতা। এবং পঠতি " অপূর্ব্বমিব পশ্যাম উদরনাত্ত্ব নীয়তইতাথামাত্যো নুদকংবনং কার্য়িজোনাররক্ষং বন্তপুষ্পফলমূলং তদ্য-মধ্যে মুক্তাজালমরীংপাথে বাপীগ্ঢাং স্থাদলিললিপ্তাং দর্হ-স্থাপগম্য রাজানমব্রীদিতি।

[†] বনমিদমুদ\রমন্ত্দকং ইতি কঃ।

‡ ব্যবহরদিতি ক-যপুস্তকে।

* ভস্যাএব ইতি কঃ।

† স ইতি নাস্তি ক-পুস্তকে।

‡ মণ্ডুকোপারনৈকপ্রতিঠেদিতি কঃ।

অথ মণ্ডু কবধে ঘোরে ক্রিরনাণে নিকু
সর্বাস্থ মণ্ডু কান্ ভয়মাবিবেশ।
তে ভীতা মণ্ডু কা রাজ্যে যথারত্ত নাবেদয়ন্॥২৫॥
ততো মণ্ডুকরাট তাপসবেশধারী রাজানীমভাগছত্বপিতা চৈনমুবাচ॥২৬॥
মাবাচন নাবেশবাধার ক্রিয়াল

या ताजन्। क्लाधवर्गः शमः अमानः कृतः । नाईमि मञ्जू कानायनश्रेताधिनाः वधः कर्ज्यमिति ।

শোকৌ চাত্র ভবতঃ ॥২৭ ॥ " মা মণ্ডু কান্ জিঘাংস ত্বং কোপত সন্ধারয়াচ্যুত !।

প্রকীয়তে ধনোদ্রেকো জনানামবিজ্ঞানতাম ॥ ২৮ ॥

প্রতিজ্ঞানীহি নৈতাংস্ত্রং প্রাপ্য ক্রোধং বিমোক্যাস।

অলস্কৃত্বা তবাধর্মাৎ মণ্ডুকৈঃ কিং হতৈর্ছিতে ?"—॥২৯॥ তমেবংবাদিনমিষ্টজনশোকপরীতাত্মা রাজ্ঞাবোবাচ॥৩০॥

ছুরাল্লভিঃ প্রিয়া মে ভক্ষিতা। সক্কথৈব মে বধ্যা মণ্ডুক¦ না≨সি,

বিদ্বনামুপরোদ্মিতি ॥ ৩১ ॥

স তদাক্যমুপলভ্য ব্যথিতেন্দ্রিমনাঃ প্রোবাচ,

প্রসীদ রাজন্তমাযুর্বাম মণ্ডু করাজো,

মম সা ছুহিতা সুশোভনা নাম।

जमा हि (मोश्मीनार्भे छ९,

বহবস্তয়া রাজানো বিপ্রলক্ষাঃপূর্বা ইতি 👫 ॥ ৩২ ॥

॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ধনোত্তেকঃ ঐতপদোকৎকর্মঃ ॥ ২৮ ॥ প্রতিজানীছি নিশ্চয়ং কুৰু প্রাপ্য প্রাপ্য মৃত্যুৎ ক্রোধং ক্রীশোকজং অলংকৃত্য মাকুৰু ॥ ২৯॥ ৩১ ॥ ৩১ ॥ বিপ্রালব্ধাঃ বঞ্চিতাঃ ॥ ৩২ ॥

^{*} তয়েতাত্র তথেতি, বিপ্রদর্মাঃ পূর্মা ইতাত্র চ বিপ্রদর্মপূর্মা ইতি ক-পুস্তকঃ।

তমন্ত্রবীদ্রাজা তয় স্মার্থী সা মে দীয়তামিতি॥ ৩৩॥
অথৈনা রাজে * পিতাহ্দাদন্ত্রবীচৈনামেন
রাজানং শুক্রাবস্থিতি॥ ৩৪॥
স এবমুক্ত্রা ত্রহিতরং কুন্ধঃ শশাপ,
যক্ষান্ত্রা রাজানো বিপ্রলক্ষা বহবস্তমাদন্তন্ধণ্যানি,
তবাপত্যানি ভবিষান্তীতান্তকত্বান্তবেতি॥ ৩৫॥
স চ রাজা তামুপলভ্য তস্যা স্থারতগুণনিবদ্ধহৃদয়ো,
লোকন্তরেশ্বর্যমিবোপলভ্য হর্ষবাষ্পকলয়া বাচা
প্রনিপত্যাভিপূজ্য মণ্ডুকরাজমন্ত্রবীদমুগৃহীতোহ্স্মীতি॥ ৩৬॥
স চ মণ্ডুকরাজ্যে তুহিতরমনুজ্ঞাপ্য ষথাগতমগদ্ধং॥ ৩৯॥
স চ মণ্ডুকরাজ্যে তুহিতরমনুজ্ঞাপ্য ষথাগতমগদ্ধং॥ ৩৭॥
অথ কস্যাচিৎ কালস্য তস্যাং কুমারাক্সয়ন্তর্যা
রাজ্যঃ সম্মভূবুঃ, শলো দলো বলশ্চেতি,।
ভতন্তেষা প্রাচিৎ শলং সময়ে পিতা,

রাজ্যেহভিষ্চ্য তপদি ধৃতাত্মা বনং জগাম। ৩৮॥
অথ কদাচিচ্চলো মুগ্যামনুচর-

ন্থাসাদ্য রথেনারধাবৎ ॥ ৩৯ ॥ স্তঞ্গেবাচ শীঘ্র^ মাং বাহয়স্বেতি। স তথোক্তঃ স্থতো রাজানমত্রবীৎ ॥ ৪০ ॥ ন ক্রিয়তামনুবন্ধো † নৈষ শক্যস্ত্রা মূগোহয়ং গ্রহীতুম্।

ষদ্যপি তে রথে প্রযুক্তো বাম্যো স্যাতামিতি, ততোহত্রবীদ্রাজা স্থতমাচক্ষ্ব মে বাম্যো হলি বা ত্রামিতি, স এবমুক্তো রাজভয়ভীতঃ স্থতো,

॥৩৩॥৩৪॥ বৃহ্ণাত্র বাহ্ণাহিতং তেন রহিতানি অবহ্ণাত্রি॥৩৫॥ ॥৩৬॥৩৭॥৩৮॥৩৯॥

^{*} পিতাদদাথিতি ক-পাঠঃ। ** ন ক্রিয়তামিতি ক-পাঠঃ।

বামদেবশাপভীতক সন্নাচখোট রাজ্ঞে, ততঃ পুনঃ স রাজা খ্রুমুদাস্য শীঘ্রং, কথয়ম্বেতি তমাহ হনিষ্যে ত্বামিতি, স তদাহ রাজভয়ভীতঃ স্থতো, বামদেবস্যাশ্যো বাম্যো মনোজবাবিতি ॥ ৪১ ॥ অথৈনমেবং ক্রবাণমত্রবীক্রাজা বামদেব।শ্রমংপ্র ঘাহীতি। স গত্বা বামদেবাশ্রমং তমূষিমত্রবীৎ॥ ৪২॥ ভগবন্মগো মে বিদ্ধঃ পলায়তে তং, সম্ভাবয়িত্মইসি * বাম্যৌ দাতুমিতি, তমত্রবীদ্যিদ্দদানি তে বাম্যৌ ক্লুতকার্য্যেশ,— ভবতা মদৈৰ বাম্যো নিৰ্যাত্যৌ ক্ষিপ্ৰমিতি. স চ তাবশ্বৌ প্রতিগৃহ্যানুজ্ঞাপ্য ঋষিং,---প্রায়াদ্বামীপ্রযুক্তেন * রথেন মুগং প্রতি.— গচ্চ~শ্বাব্রবীৎ স্থৃতসম্বরত্নাবিসাব্যোগ্যে বাঞ্চলানাং, নৈতৌ প্রতিদেয়ৌ বামদেবাযেত্যক্তা মূগমবাপ্য, স্থনগরমেত্যাশ্বাবতঃপুরেহ্স্থাপয়ং ॥ ৪৩ ॥ অথবিশিচন্তয়ামাদ তরুণো রাজপুত্রঃ কল্যাণং প্রমাদাদ্য, রমতে ন মে প্রতিনিষ্।তয়ত্যহো ক্টমিতি ॥ ৪৪ ॥ স মনসা বিচিন্তা মাসি পূর্ণে শিষামত্রবীৎ, গচ্চাত্রেয় ! রাজানং জহি যদি পর্য্যাপ্তং, নিৰ্যাতিয়োপাধ্যায়বাম্যাবিতি

বাম্যো বামদেবীয়ো রথে যুক্তো অশ্বো অশ্বতরো বামী প্ররুক্তেনেতি বাক্য শেষাৎ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ १५ এং বাছনং ॥ ৪৪ ॥

[&]quot; '' সম্ভাবয়ের মহমহিদিমে " ইতি ক-পাঠঃ।

 ^{*} বামিযুক্তেন ইতি কঃ।

^{*} উপাধ্যায়ায় বাম্যাবিতি ক পুস্তকঃ।

স গবৈষ তং রাজানমত্রবীৎ তৎ রাজা প্রভাবাচ,
রাজ্ঞামেতদাহনমন হা ত্রান্ধণা রত্মানামেবং বিধানাং,
কিং ত্রান্ধণানাম খৈঃ কার্যাং সাধু গম্যতামিতি * ॥ ৪৬॥
স গবৈত তুপাধ্যায়ায়াচন্ট তচ্ছুত্বা বচনমপ্রিয়ৎ,
বামদেবঃ ক্রোধপরীতাত্মা স্বয়মেবরাজানমভিগম্যাশ্বার্থিমচোদয়ন চাদদক্রাজা ॥ ৪৭॥

वाभरमव छेनाह।

" প্রযক্ত বামেন মন পার্থিব! ত্বং-কুতং হি তে কার্য্যনাভ্যানশক্যম্ । মা ত্বাবধীদরুলো ঘোরপালে-প্রস্কাক্ষপ্রভান্তরে বর্ত্তমানম্"॥ ৪৮॥

बारकावाह।

" অনজু হো সূত্রতো সাধু দান্তা-বেত দ্বিপ্রাণাং বাহন বামদেব।। ভাভ্যা থাহি ত্ব যত্র কামো মহর্ষে! চ্চন্দাংসি বৈ ত্বাদৃশ স্বহন্তি"॥ ১৯॥ বামদেব উবাচ।

" ছন্দা শিস বৈ মাদৃশং সংবৃহন্তি, লোকেংমুন্মিন্ পার্থিব! যানি সন্তি। অন্মিংস্ত লোকে মম যানমেতদ, শ্বহিধানামপরেষাঞ্চ রাজনু!"॥ ৫ • ॥

॥ ४०॥ ४७॥ ४९॥ ञ्रह्त (उत्म ॥ ४৮ ॥ ४৯ ॥ ४० ॥

^{*} প্রতিগদ্যতামিতি ক-ম পুস্তকৌ।

রাজোবাচ।

 प ठेषांतखाः वा गर्मछाः म-वश्छः শ্রেষ্ঠাশ্বতর্য্যো হরয়ো বাতরংহাঃ। তৈন্ত্ৰ শাহি ক্ষজ্ৰিয়ক্তেৰ বাহো, মটেমব বাম্যোন তবৈতো হি বিদ্ধি' ॥ ৫১ ॥

वामटमव छेवर्छ। '' ঘোরং ব্রভং ব্রাহ্মণকৈত্রদান্ত্রু

রেভদাজনু! যদি হা জীবমানঃ।

অয়স্ময়া ঘোরৰূপা মহান্ত,

শ্চত্তারো বৈ যাতুধানাঃ স্থরৌদ্রাঃ।

महा প্রযুক্তান্ত ছধমীপ্রমানা,

বহন্ত ত্বাপ শিতশূলাশ্চতুধা''—৷ ৫২ ॥

রাজোবাচ।

" যেত্বাং বিত্র ক্রিন্থ বামদেব! বাচা হন্তং মনদা কর্ম্মণা বা। তে ত্বাৎ সশিষ্যমিহ পাতয়ম্ভ, মদ্বাক্যনুরাঃ শিতখূলহস্তাঃ''—॥ ৫৩॥

वामाम छेवाछ।

" মুমৈতৌ বাম্যৌ প্রতিগৃহ্ব রাজন্ ! श्रनक्षामीजि अभारत प्रम्। প্রয়ছ শীঘ্রং মম বাম্যৌ স্বমশ্বৌ, यहाजानः कोविवृत्त कमः खाः"—॥ ८८॥

বাহো বাহনং 🛮 ৫১ 🗓 মদেতৎ ত্রাক্ষণস্য স্বমাজীবমানো সৈয়ত দিছ খোর মনিকপাকং ব্ৰতং কৰ্মান্তরিত্যময়ঃ বহস্তুততুদি ক্ষু প্রাপয়স্ত চতুর্ধাকুত্বেতি শেষ: । ৫২ । যেত্রাৎমাৎছক্ত মুদ্যুক্তং তেমদীয়া স্থামেব পাত্য়স্থিত্যর্থঃ । ৫৩ । ৫৪ । অসত্যথ মিখ্যা বাদিনমপিতা তাথ নাজ শাল্মি ন দওয়ামি

রাজোবাচ।

"ন ব্রাক্সণেভোগ মৃগয়া প্রস্থতা।
ন ত্বানুশাস্মাদাপ্রভৃতি স্স্বতাম্।
তবৈবাজ্ঞাৎ সংপ্রণিধায় স্কাং
তথা ব্রহ্মন্ ! পুণালোকৎ লভেয়ম্''—। ৫৫। •

বামদেব উবাচ।

" নাসুযোগা ব্রাক্ষণানাৎ ভবন্তি।
বাচা রাজন্। মনসা কর্মণা বা।
যন্ত্রেং ব্রহ্ম তপ্যান্তেতি বিদ্বাংস্থেন প্রেটো ভবতি হি জীবমানঃ"—॥ ৫৬ ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

रेनवःविधा धर्मानीला ভवन्ति"— *॥ (৮॥

অদ্যপ্রভৃতি তবাজ্ঞা মিতি সম্বন্ধঃ তবাপরাধান ক্ষমিয়ে আজ্ঞয়াচ বর্তিয়ে ইতি বরদ্বরং জেরং॥ ৫৫॥ এতৎ প্রত্যাচ্চেটনেতি অনুযোগঃ শাসনং অদন্ত্যা ব্রাহ্মণা ইত্যর্থঃ ব্রহ্ম বাহ্মণাজাতি যো ব্রাহ্মণদেবী সজীব ত্যানো নশ্যতীত্যর্থঃ বরদ্বর মাপি নিরর্থক মিতি ভাবঃ॥ ৫৬॥ ৫৭॥ দলঃ কনিষ্ঠো ভাতা বিধেয়া আজ্ঞা কারিণঃ॥ ৫৮॥ নিপাতিতং মৃতং

^{*} কর্মশীলা ইতি পুস্তকান্তরপাঠঃ।

এবং ক্রুবন্নের স যাতৃধালৈ, হতো জগামাশু মহীৎ ক্ষিতীশঃ। ততো বিদিন্ধা নুপতিং নিপাতিত-মিক । কৰে। বৈ দলমভ্য বিপান্। ৫১ । রাজ্যে তদা তত্র গন্ধা স বিপ্রঃ, প্রোব চেদং বচন বামদেবঃ। দলং রাজানং ' ব্রাহ্মণানাং হি দেয়-মেবপ রাজন্! সর্বাধর্মেষু দৃষ্টম্—॥ ৬০ ॥ विट्यि (हजुमवर्जा बदत्तु ! প্রযক্ত মে শীঘ্রমেবাদ্য বামেটা এতচ্চত্বা বামদেবস্থা বাক্যুৎ, স পার্থিবঃ স্থতমুবাচ রোষাং ॥ ৬১॥ " একং হি মে সায়কং চিত্রৰূপ[»], **षिक्ष** विस्थाहत मः गृही उस्। যেন বিকো বামদেবঃ শ্রীত সন্দেখ্যানঃ শভিরার্ভ্রপ:"—॥ ১২॥ वामटमन छेनाइ।

" জানামি পুত্রং দশ্বর্ষণ তবাহণ. জাতণ মহিষ্যাং সেনজিতং নরেক্র !। তণ জহি অং মন্বচনাৎ প্রধান স্তর্প প্রিয়ণ সায়কৈর্ঘোরেক্রপৈঃ"—॥ ৬৩॥ মার্কণ্ডের উপাচ।

" এবমুক্তে বামদেবেন রাজন্

॥ ৫৯॥ ৬০॥ ৬১॥ ৬২॥ তংজহি তবসায়কস্তৎপুত্রমেব হিংসিয়াতি নতুমা মিত্যর্থঃ॥ ৬৩॥ অন্তঃপুরে রাজপুত্রং জঘান। শ্রুত্বাদলন্তত্র বাক্যং বভঃযে॥ ৬৪।

রাজোশচ।

ইক্ষা করোহন্ত ! চরা মিবঃপ্রিয়ং। নিহনীমংবিপ্রমন্যপ্রমথ্য আনীয় তামপরন্তিগ্নতেজাং। স সায়কন্তিগ্নতেজা বিস্ফঃ

পশাধ্ মে বীৰ্যামদ্য ক্ষিতীশাः"। ৬৫॥

वाबादमव के वाह

- " যজুমেনং সায়কং ঘোরকপং। বিষেণ দিগ্ধ মম সন্দ্রধাসি।
- ন ত্বমেতং শরবর্য্যং বিমে:জুং,
- * সন্ধাতু বা শকাসে মানবৈক্স! ॥ ৬৬॥ রাজোগাচ।
- ' ইক্ষ্বাকবঃ পশ্যত মাং গৃহীতং, ন বৈ শক্ষোম্যেষ শর্জ বিমোক্ত মু ।
- ন চাস্তা কর্তুং নাশমভ্যুৎসহামি,
 আয়ুশ্বাথেষ জীবতু বামদেবঃ"॥ ৬৭॥
 বামদেব উবাচ।
- " সৎস্পৃথৈ নাং মহিষীং সায়কেন, ততস্তমাদেনসো মোক্ষ্যসে স্বম্"।
- ততন্ত্রথা ক্রতবান্ পার্থিবস্তু,
 ততো মুনিং রাজপুজী বভাষে। ৬৮ ।
 রাজ্যবাচ।
- ' यथायुक्त * वामत्तवाहरमनेः, हित्न हित्न मन्त्रिमश्ची नृभः म्यू।

॥ ৬৪॥ ৬৫॥ ৬৬॥ এবনুজ্বা বাম দেবেন শুস্তিত হস্ত পাদো রাজোবাচ ইক্ষ্বাকব ইতি॥ ৬৭॥ সংস্পৃশ্যহত্বা এনসো ব্রহ্ম হত্যাধাবসার জাৎ পাপাৎ ॥ ৬৮॥ এনঃ নৃশংসং ভর্ত্তারং দিনে দিনে স্মৃতানি ক্লাণি করাণি বাক্যানি

^{*} ন সন্ধাতু মিতি কঃ। * ততন্তথ। ইত্যাস্য প্রাকৃ ''মার্কণ্ডেয় উবাচ'' ইতি দৃত্যতে ক-পুন্তকে।

^{*} ২থাযুক্তৎ ইতি ক-পাঠঃ।

ব্ৰাক্ষণেভ্যোম্গ্যতী * স্থ্যতানি, তথা ব্ৰহ্মন্ ! পুণ্যলোকং লভেয়ম্ ॥ ৬৯॥ বামদেব উবাচ।

" ত্বয়া ত্রাতং রাজকুলং শুভেক্ষণে! বরং রণীম্বাপ্রতিমং দদানি তে। 'প্রশাধীমং স্বজনং * রাজপুত্রি! ইক্ষ্বাক্রাজ্যৎ স্থমহচ্চাপ্যনিন্দ্যে!॥৭০॥

রাজপত্নুবাচ।

' বরং রূপে ভগবন্নেবমেষ,
বিমুচ্যতাং কিল্লিষাদদ্য ভর্তা।
শিবেন চাধ্যাহি সপুত্রবান্ধবং,
বরে রুতো হেষ ময়া দ্বিজাগ্রা! "॥৭১॥
মার্কভেয় উবাচ।

' শ্রুত্বা বচঃ স মুনী রাজপুজ্রা স্তথান্তি বি প্রাহ কুরুপ্রবীর!। ততঃ স রাজা মুদিতো বভূব, বাম্যো চাস্মৈ সংপ্রদদৌ প্রণম্য"॥ ৭২॥ ইত্যারণ্যকে প্রবিণি মার্কণ্ডের সমাস্যা প্রবিণি মণ্ড্কো-পাখ্যানে * দ্বিবত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৯২॥

সংদিসন্তীতি সম্বন্ধ: বাশ্বণেভ্যা মুগয়তী বাশ্বণান্ সেবিতু মিছ্ন্তী ॥ ৬১ ॥ ৪ ৭০॥ ৭১ ॥ ৭২ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দিনবত্যধিক শততমেহিধ্যায়ঃ ॥ ১৯২ ॥

^{*} অমূগ্য়ং ইতি কঃ।

^{*} व्यक्तर शेंठ ह भाष्ठः।

শ্বামদেবচারতে ইতি ক-প্রস্তুক পাঠ:।

বৈশালারন উবাচ।

মার্কপ্রের্য্য্য্য্রপ্রারের ব্রাহ্মণা যুধিন্টিরশ্চ,
পর্য্যপৃচ্ছন্ন্ধিঃ কেন * দীর্ঘার্য্রাসীদ্ধকঃ,
মার্কপ্রেরস্ত তান্ সর্ব্যান্ত্র্যাচ ॥ > ॥

"মহাতপা দীর্যাযুশ্চ বকো রাজর্ধিনাত্র
কার্য্যা বিচারণা"॥ ২ ॥
এতচ্চুত্রা তু কৌত্তেরো ভাত্তিঃ সহ ভারত!।
মার্কপ্রেরং পর্য্যপৃচ্ছদ্ধর্মরাজো যুধিন্টিরঃ॥ ৩ ॥

"বকদাল্ভ্যো মহাত্মানো ক্রায়েতে চিরজীবিনো।
স্থায়ো দেবরাজস্ত তার্ষী লোকসম্মতৌ॥ ৪ ॥
এতদিচ্ছামি ভগবন্! বকশক্রসমাগমম্।
স্থাত্রংখসমাযুক্তং তত্ত্বন কথ্যস্থ মে"॥ ৫ ॥

" বৃত্তে দেবাস্থারে রাজন্! সণ্গ্রামে লোমহর্ষণে।

তরাণামপি লোকানামিন্দ্রো লোকাধিপোইভবৎ॥ ৬॥

সম্যক্ বর্ষতি পর্জন্যে * শহ্মসম্পদ উত্তমাঃ।

নিরাময়াঃ স্থার্ঘিষ্ঠাঃ প্রজা ধর্মপরায়নাঃ॥ ৭॥

মুদিতশ্চ জনঃ স্কাঃ স্থার্ঘেষু ব্যবস্থিতঃ।

তাঃ প্রজা মুদিতাঃ সক্রা দৃষ্ট্রা বলনিস্থানঃ॥ ৮॥

তাতস্ত মুদিতো রাজন্। দেবরাজঃ শতকাবুঃ।

ঐরাবত্ত সমাস্থায় অপশ্যন্দিতাঃ প্রজাঃ॥ ৯॥

মার্কতের উণাচ।

মাকতের মূবর ইত্যাদে রধ্যারস্য তাৎ পর্যাৎ ব্রহ্ম বিদ্যা লর্ধং তির জীবিত্মপি তুঃখ মিশ্রমতো বিদেহ কৈবল্য মেবক্সেন্ঠ মিতি। ১॥২॥৩॥ ॥৪॥৫॥৬॥৭॥৮॥৯॥

^{*} কিল ইতি ক পুস্তকঃ। * পর্জনা ইতি প্রথমন্তিঃ পাঠঃ ক-পুস্তকে।

আশ্রমাপ্স বিচিত্রাংস্ট নদীস্ট বিবিধাঃ প্রকাঃ। নগরাণি সমুদ্ধানি খেটান্ জনপদা-স্তথা ॥ ১০ : थकाभाननम्का<u> क गत्तकान् धर्मा</u>ठातिन् । উদপানং প্রপা বাপী তটাগানি * সরাংসি চ 🛚 ১১ ॥ নানাব্রহ্মসমাচারেঃ, † সেবিতানি দিজোভামঃ। ততোহ্বতীৰ্য্য রম্যায়াং পৃথ্যাং রাজন্। শতক্রতঃ ॥ ১২ ॥ তত্র রম্যে শিবে দেশে বছরক্ষসমাকুলে। পূর্বস্থাৎ দিশি রম্যায়াং সনুদ্রভ্যাসভো রপ!। ১৩। তত্রাশ্রমপদং রম্যং মুগদ্বিজনিষেবিতম্। তত্রশ্রেমপদে রমো বকৎ পশ্রুতি দেবরাট্। :৪॥ বকস্ত দৃষ্ট্। দেবেন্দ্রং দৃতং প্রীতমনাভবৎ। পাদ্যাসনার্ঘাদানেন ফলসুলৈর্থার্চরং॥ ১৫ ॥ সুখোপবিষ্টো বরদস্ততন্ত বলস্থদনঃ। ত্তঃ প্রশ্নং বকং দেব উবাচ ত্রিদশেশ্বরঃ। ১৬॥ ''শত্ত বর্ষসহস্রাণি মুনে! জাতস্ত তেইনঘ!। সমাখ্যাহি মম এক্ষন্ ! কি তুঃখং চির্জীবিনামু । ১৭ । বক উব্চ।

অপ্রিরিঃ সহ সংবাসঃ প্রিরেশ্চাপি বিনা ভবঃ।
অসদ্ভিঃ সৎপ্রয়োগশ্চ তদ্ধুং চিরজীবিনাস্॥ ১৮॥
পুত্রদারবিনাশোহত্র জ্ঞাতীনাৎ স্থহদামপি।
পরেষায়ন্ততা কৃচ্ছুং কিং মু তুখাতরং ততঃ॥ ১৯॥
॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥

 ^{*} তড়াগানি ইতি কঃ।
 † বতসমাচারৈ রিতি ক-পুস্তকঃ।

নান্যদৃঃখতরং কিঞ্চিলোকেষু প্রতিভাতি মে ৷ অর্থৈর্বিহীনঃ পুরুষঃ পরে: সৎপরিভূয়তে ॥ ২০॥ षकुलाना-कुरल ভाবং कुलीनानाः कुलक्षय्य । সংযোগ বিপ্রযোগঞ্চ পশান্তি চিরজীবিনঃ ॥ ২১ ॥ অপি প্রত্যক্ষমেবৈতত্ত্ব দেব। শতক্রতো।। অকুলানাং সমৃদ্ধানাং কথং কুলবিপর্য্যয়:॥ ২২ ॥ (पर्वपानरशक्त्रसम्बुरस्तात्रशक्रमाः। প্রাপ্নবন্তি বিপর্য্যাস্থ কিন্ন ছুঃখতরং ততঃ ১ । ২৩॥ কুলে জাতাশ্চ ক্লিখ্যন্তে দৌষ্কুলেয়বশানুগাং। আটোর্দ্ধরিদ্রাবমতাঃ কিন্নু ছুঃখতর^ ততঃ ? ॥ ২৪॥ লোকে বৈধর্ম্যামেতজু দৃষ্ঠতে বছবিস্তরম। জ্ঞানহীনাশ্চ হ্ৰষ্যন্তে * ক্লিখাতে প্ৰাজ্ঞ কোবিদাঃ ৷ ২৫ ঃ বছতুঃখপরিক্লেশং মানুষ্যমিহ দুখতে"। ইন্দ্র উবাচ। " পুনরের মহাভাগ। দেবর্ষিগণসেবিত। । ২৬। সমাখ্যাহি মম ত্রহ্মন! কিং স্থং চিরজীবিনামৃ"। বক উবাচ। " अकेरम दानरम वालि माक ये पहारे ग्रह ॥ २१ ॥. কুমিত্রাণ্যনপাশ্রিত্য কিৎ বৈ স্থখতরং ততঃ ?। যতাহানি ন গণ্যন্তে নৈন্মাছ্র্মহাশন্ম। ২৮ ॥ অপি শাকং পঢ়ানন্ত সুথং বৈ মঘবন্! গুছে। অৰ্জ্জিত স্বেন বীর্য্যেণ নাপ্যপাঞ্জিত্য কঞ্চন ॥ ২৯ ॥ ফলং শাকমপি শ্রেয়ো ভোক্ত_় হুরুপণ**ু গু**হে। পরস্থ তু গৃহে ভোক্তঃ পরিভূতস্থ নিতাশং"। ৩০ । n २० n २७ u २२ u २७ u २८ u २৫ u २७ n २१ u २৮ n २৯ u ७० n

দুখাত ইতি পাশ্চাত্যা:।

256

স্বুমুন্টমপি ন শ্রেয়ো বিকপ্পোয়মতঃ সতাম। শ্বৰং কীলালপো যস্ত পরান্ন ভোক্ত মিচ্ছতি। ৩১ 🗈 ধিগস্ত তম্ম তদ্যক্তং ক্লপণম্ম চুরাত্মনঃ।। যো দক্তাতিথিভতোভাঃ পিতৃভাশ্চ দ্বিজোপ্তমঃ॥ ৩২॥ শিষ্টান্যনানি যো ভুঙ্কে কিং বৈ স্থাতরং ততঃ? অতো মুফ্টতরং নান্যৎ পুতং কিঞ্চিছতক্রতো! । ৩৩ । দত্ত্ব। যন্ত্র তিথিভ্যোহরং ভুঙে ক্ত তেনৈব নিত্যশঃ। ষাবতো ছন্ধস: পিগুনশ্লাতি সততং দ্বিজঃ । ৩৪ ॥ তাবতা গোসহস্রাণাং ফলং প্রাপ্তে দায়ক:। यरिता रयोदनकूछः छ९ मर्खः नश्रां ४४म् ॥ ७৫ ॥ সদক্ষিণ্যা ভুক্তয়া দ্বিজয়া ভু করে গতম। যত্তারি বারিণা সিঞ্চেত্তদ্বোনস্তরতৈ ক্ষণাৎ॥ ৩৬॥ এতাশ্চান্যাশ্চ বৈ বহ্বীঃ কথয়িত্বা কথাঃ শুভাঃ। বকেন সহ দেবেক্র আপুচ্ছা ত্রিদিবং গতঃ"—॥ ৩৭ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ মার্কণ্ডেয় সমাস্থা পর্বাণ বকশক্রসংবাদে ত্রিনবত্যধিক শত তমোহধ্যায়: ॥ ১৯৩॥

বৈশস্থায়ন উবাচ ৷ ততঃ পাওবাঃ পুনর্মাকত্তেরমূচুঃ॥ > ॥ কথিত বান্ধণমহাভাগ্যমিদানীং, বাজনামহাভাগাৎ শুক্রাবাম ইতি।

95 | 95 | 99 | 98 | 96 | 95 | ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিনবত্যধিক ুশততমোহধায়িঃ॥ ১৯৩॥

বিদ্যাবলং যুদ্ধপ্রজাপালনাদিব্যথেষপি রাজস্বদ্ধীতি দর্শায়তু মাহ তত इंडि॥ ১॥

তানুবাচ মাৰ্কণ্ডেয়ো মহৰ্ষিঃ শ্ৰুষতামিদানীং, রাজন্যানাংমহাভাগ্যমিতি 🔻 । কুৰাণ্যন্যভ্যঃ স্থাহোতো নাম রাজা, মহর্ধীনভিগম্য নির্ত্য রথস্থমের রাজানমৌশীনরিং, শিবিং দদশাভিমুখম। তৌ সমেত্য পরস্পারেণ যথাবয়ঃ পূজা প্রযুজ্য গুণদাম্যেন পরস্পরেণ, जुला जारनी विकिञ्चारमा नामा शञ्चानः ন দদভূত্তত্র নারদঃ প্রাত্রাসীৎ। কিমিদং ভবদ্যে প্রস্পর্সা, পন্থানমার্ত্য তিষ্ঠত ইতি॥ ২॥ · তাবূচভুলারদং, নৈতদ্ঞগবন !• † পূর্বাকর্মানভিবিধিশিউস্য পহা, উপদিশ্যতে সমর্থায় বা আবাঞ্চ, সখ্যং পরস্পরেণোপগতৌ। তচ্চাবধানতে হতুহিক ট ! মধবোন্তরং পরিজ্ঞ টং, নারদক্ষেব্যুক্তঃ শ্লোকত্রমপঠৎ॥ ৩॥ " ক্রুরঃ কৌরব্য ! মৃদবে মৃত্যু: ক্রুরে চ কৌরব _!। সাধুশ্চানাববে সাধুঃ সাববে নাপ্রগ্রাৎ কথম ?—1 8 ॥ ॥ ২ ॥ নৈতংবংপত্বা ভাজা ইত্যেতরেতার্থঃ তত্ত্ব হেতুঃ পূর্বেতি পূর্বে চ তে চকা কওঁ সংক্ষেতি বিগ্ৰহঃ অভ্যন্ত বক্ত প্ৰভ্তয় আদি শ্ৰাৰ্থঃ প্রান্তে। পি ব্রতঃ অধ্যেতি আবিয়োস্তারতম্যং নাস্তাতার্থঃ॥ ৩॥ কুর ^ইংক পুরেতের খারতং নাগ্রয়াৎ **সাধুরং বৈ কথং নকুর্যাদিত্যর্থঃ ॥ ৪ ॥**

^{*} রাজনা মহাভাগা মিতিকঃ। * ় † পূর্ব্বধর্ম ইতি ক-পুস্তক্যা। ় হুৎফুট মিতি ক-য পুস্তক্ষোঃ।

ক্লতং শতশুণং কুর্যানান্তি দেবেমু নির্ণয়ঃ।
তথানিরঃ সাধুদীলো ভবতো বৈ মহীপতিঃ॥ ৫।
ক্লয়েৎ কদর্যাং দানেন সত্যেনান্তবাদিত্য।
ক্ষময়া ক্লুরকর্মাণমসাধুং সাধুনা জয়েৎ॥ ৬॥
তত্তভাবেব ভবতাবুদারৌ য ইদানী৽,
ভবত্তামন্যতমঃ সোহপদর্পতু এতদ্বৈ,
নিদর্শনমিত্যক্তবা তুফী৽ নারদো বভূব।
এতজ্ত্বা কৌরবাঃ শিবিৎ প্রদক্ষিণণ ক্র্যা,
পন্তানং দল্বা বহুকর্জভিঃ প্রশাস্য প্রথমৌ॥ ৭॥
তদেতজাজ্যে মহাভাগাসিত্যক্রবালারদঃ "—॥ ৮॥
ইত্যারণ্যকে প্রবিণ মার্কণ্ডেয়সমাস্যাপ্রবিণ শিবিচরিতে
চতুর্নব্তাধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৯৪॥

মার্কণ্ডের উল্চ।

" ইদমনাৎ ক্রারতাং য্যাতির্নান্থ্যো রাজা,
রাজ্যন্থঃ পৌরজনাত্ত আসাঞ্চক্রে,
শুর্বার্থী ব্রাহ্মণ উপোত্য অব্রবীৎ।
ভো রাজন্। শুর্বার্থণ ভিক্ষেয়ং সময়াদিতি॥ ১॥
রাজোব্চ।

" ব্ৰীভু ভগবান্ সময়মিতি॥ ২॥

॥ १॥ ७॥ १॥ ताख्यः नितः॥ ৮॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুর্নবত্যাধক-শততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৯৪॥

ইদমিতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ বিদ্বেষণং যাচকন্ত দ্বেষং প্রীত্যৈব দদাসি চেৎ প্রাহীষ্যা-

ব্ৰাহ্মণ উবাচ।

" বিদ্বেষণং প্রমং জীবলোকে, কুর্য্যানঃ পার্থিব ! যাচ্যমানঃ।

* তত্ত্বাং পূচ্চামি কথয়স্ক রাজন্!
দদ্যান্তবান দ্য়িতঞ্চ মেহদ্য ''—॥ ৩॥
বাজোলান।

"ন চানুকীর্ত্তয়েদন্য দত্ত্বা অযাচ্যমর্থক,
ন চ সংশৃণোমি ! প্রাপ্যমর্থক্ত সংক্রাত্য,
তঞ্চাপি দত্ত্বা স্থুস্থী ভবামি ॥ ৪ ॥
দদামি তে রোহিনীনাং সহস্রং,
প্রিয়োহি মে ব্রাহ্মণো যাচমানঃ । †
ন মে মনঃ কুপ্যতি যাচমানে,

দন্তং ন শোচামি কদাচিদর্থম্ "—॥ ৫॥
ইত্যুক্ত্বা ত্রাহ্মণায় রাজা গোসহত্রং দদৌ।
প্রাপ্তবাংশ্চ গবাং সহত্রং ত্রাহ্মণ ইতি "—॥ ৬॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয়সমাস্যাপর্বাণি নাছ্যচরিত্রে

পঞ্চনত্যধিকসততমোহধ্যায়:॥ ১৯৫॥

মীতার্থ: ॥ ৩ ॥ হেদদা দদোদানং তদর্হ দড়া ন কীর্ত্তয়ে ছুংখে সত্যেব কীর্ত্তনং স্যান্ধানাথেতি ভাবঃ ছুংখঞ্চ প্রিয়বিয়ে(গেইতো মমাদের। ভাবা ভ্রমপায়বারার্থো নান্ডীতাতঃ সর্বাং প্রাপাং স্ত্রীপুত্রদেহান্তং দেরমেব নত্তপাপাং দাতৃং শকামিতার্থঃ ॥ ৪ ॥ রোহিনীনাং গবাং রোহিনীকণ্ঠ ক্যাদীতাপক্রমা লোহিতাগবোরিতি মেদিনী ॥ ৫ ॥ অসাধাবিশ সাধুবং প্রীতা ইক্টার্থদানঞ্চ মহাভাগা মিতাধারদ্বয়তাংপর্যম ॥ ৬ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে
পঞ্চনবত্যধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯৫ ॥

^{*} उरदार देवर वा शांकः। † यात्रंभान इंडिक विक् भारत।

বৈশস্থায়ন উবাচ ৷ ভুয় এব মহাভাগ্যং কথ্যতামিতাব্রবীৎ পাণ্ডব: । ১ ॥ व्यथावर्षे मार्क (श्वरा महाताक । त्रवन करमञ्जनामात्नो, রাজনৌ নীতিমার্গরতাবস্ত্রোপাস্ত্রকৃতিনৌ॥ ২॥ সেতুকো ব্ৰদৰ্ভস্য বালসৈয়ৰ উপাংশুব্ৰতমভ্যজানাৎ, * কুপ্যমদেয়ং ব্রাহ্মণস্য h ৩ n অথ ত^ সেতুকং ব্রাহ্মণঃ কশ্চিছেদাধ্যয়ন সম্পন্নঃ, আশিষং দত্ত্বা গুর্বার্থী ভিক্ষিতবানু ॥ ৪ ॥ অশ্বসহস্রং মে ভবান দদাত্ত্বিতি, ত^ সেতুকো ব্ৰাহ্মণ মব্ৰথীৎ। ৫। নাস্তি সম্ভবো গুর্বার্থণ দাতুমিতি॥ ৬॥ স ত্বং গচ্ছ বুষদর্ভসকাশং, রাজা পরমধর্মজ্ঞো ব্রাহ্মণ ! ত^ ভিক্ষস্ব। স তে দাস্যতি তসৈ্যতত্বপাংশুব্রতমিতি॥ १। অথ ব্রাহ্মণো রুষদর্ভদকাশৎ গত্বা অশ্বসহস্রমযাচত। স রাজা ত**ং কশেনাতা**ডয়ৎ । ৮ ॥ তং ব্রাহ্মণোহব্রবীৎ কিং হিংস্যনাগসশ্মামিতি ॥ ১॥ এবমুক্তা তং শপস্তং রাজাহ। বিপ্র! কি যো ন দদাতি ভুভাযুতাহো,

ভূয়ইতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ উপাংশু বহিরত্বদ্যাটিতং কুপ্যং স্বর্ণরপ্যাদনাৎ ॥ ৩ ॥ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ কশেন পুংস্থামার্যং ॥ ৮ ॥ হিংসি হিনসিস তাডয়সি ॥ ৯ ॥ শপন্তং শাপং দিৎসন্তং হৈ বিপ্রা । বে ন দদাতি স্বীয়ং ধনংস্ভাং তশ্মৈ বা এতং শাপদানং উচিতঃ উতাহোসিৎ এতদ্রাহ্মণাং রাহ্মণ যোগাং স্বীয়-মপি দিৎসন্ত শাপ্যোগ্যঃ নাপি শান্তিধ্যারাহ্মণঃ শাপ্য দাতুমইন্তীত্যর্থঃ ॥ ১০ ॥

সিৎ ত্রাহ্মণামেতৎ ?—॥ ১০॥

^{*} অভ্য জানন্ ইতি বা।

ব্ৰাহ্মণ উৱাচ।

" র,জাধিরাজ ! তব সমীপং, সৈতুকেন প্রেষিতো ভিক্ষিত্বমাগতঃ । তেনালুশিফেন ময়া হৃৎ ভিক্ষিতোংশি ''—॥ >>॥ রাজোশ্চ।

' পূর্ব্বাক্সে তে দাস্যামি যো মেংদ্য বলিরাগমিষাতি। যো হন্যতে কশয়া কথৎ মোখং,

ক্ষেপণং তস্য স্যাৎ "—॥ ১২॥
ইত্যুক্ত্বা ব্রাহ্মণায় দৈবদিকামুৎপত্তিং প্রাদাং।
অধিকস্যাশ্বসহস্রস্য মূল্যমেবাদাদিতি॥ ১৩॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয় সমাস্যা পর্বাণি সেতৃক ব্র্বদর্জ
চরিতে বরবত্যধিক শততমোহধ্যায়ঃ॥ ১৯৬॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
দেবানাং কথা সংজ্ঞাতা মহীতলং গত্থা।
মহীপতিং শিবিমৌশীনরং সাধেনং,
শিবিশ জিজ্ঞাস্যাম ইতি।
এবং ভো ইত্যক্তা অগীক্রাবুপতিষ্ঠেতাম্॥ ১॥

॥ ১১ ॥ ক্ষেপণং দ্রী করনং অবশাং সপ্রসাদনীর ইত্যর্থঃ॥ ১২॥ দৈব-সিকাং একদিবসজাতা মুৎপত্তিং ধন্যা স্থানিয়ম ভদার প্রবৃত্তং বাক্ষাং দক্ষরিভূমপি প্রার্থিতাদধিকং দ্বা প্রসাদ্যিভূমপি সম্থা রাজান ইতি তাৎপর্যাং॥ ১০॥

> ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারতভাবদীপে ষশ্পত্যধিক শততমে৷২ধ্যায়ঃ ॥ ১৯৬ ॥

দেবানামিতি॥১॥

অগ্নিঃ কপোতৰূপেণ,

তমভ্যধাবদামিষার্থমিকঃ শ্যেনৰূপেণ ॥ ২॥ অথ কপোতো রাজ্যে দিব্যাসনাসীনগোৎসঙ্গং ন্যপত ।। ।। অথ পুরোহিতো রাজানমত্রবীৎ। প্রাণরক্ষার্থ শ্যেনাদ্ভীতো ভবন্তং প্রাণার্থী প্রপদ্যতে ॥ ৪॥ বস্থ দদাত অন্তবান্ পার্থিবোহস্য নিষ্কৃতিং কুর্য্যাৎ। ছোরং কপোত্স্য নিপাত্সাছঃ॥ ৫॥ অথ কপোতো রাজানমব্রবীৎ। প্রাণরক্ষার্থং শ্যেনাদ্ধীতো ভবন্তং প্রাণার্থী প্রপদ্যে। অক্সৈরক্ষানি প্রাপ্যার্থী মুনির্ভূত্বা প্রাণাংস্কুংং প্রপদ্যে॥ ৬॥ স্বাধ্যায়েন কর্ষিতং ব্রহ্মচারিণ্ণ মাং বিদ্ধি, তপদা মদেন যুক্তমাচার্য্যদ্যাপ্রতিকূলভাষিণং, এবং যুক্তমপাপং মাং বিদ্ধি॥ १॥ शक्षांत्र (वक्षान विकित्नामि इन्हः, সর্বে বেদা অক্ষরশো মে অধীতাঃ। ন সাধু দানং শোতিয়স্য প্রদান~, মা প্রদাঃ শ্যেনায় ন কপোতোহস্মি।৮।

পর্যায়েন বসভির্দ্মা ভবেয়ু, সর্বো জাতঃ পূর্বামশ্মাৎ কপোতাৎ ।

অথ শোনো রাজানমব্রবীৎ॥৯॥

॥২॥৩॥৪॥ বোরং নিন্দিতং অনিষ্টস্চকমিতার্থ: মৃত্যুদ্তর্বাং কপো-তক্ত অন্তবান্ দিগস্থানামীশ্বর: ॥৫॥ অদৈরিতি মুনিরহং স্বশরীরেণ্ কপোতশরীরং প্রবিষ্টোইশীতার্থ: প্রাণান্ প্রাণরক্ষকত্বন ব্যেব মম্ প্রাণা ইতার্থ:॥৬॥৭॥ শ্রোতিয়দ্য মে শ্যেনায় বৃৎকর্তৃকং প্রদানংন সাধুদানং ॥৮॥৯॥পর্যায়েনেতি পিতৃপত্বভার্যামাতৃপ্রভৃতীনামাধ্রোওর্য্যেণ ত্বমাদদানোহথ কপোতমেন^,
মা ত্বং রাজন্! বিশ্বকর্তা ভবেথা: "—॥ > • ॥
রাজোবাচ।

কেনেদৃশী জাতু পুরা টি দৃষ্টা,

বাল্ডচ্যমানা শকুনেন সংস্কৃতা ৷

শ যাং বৈ কপোতো বদতে যাঞ্চ শ্যেন ;,

উভৌ বিদিত্বা কথমস্ত সাধু। । ১১ ॥

নাস্য বর্ষংবর্ষতি * বর্ষকালে নাস্য বীজং রোহতি কাল উপ্তম। ভীতং প্রপন্নং যোহি দদাতি শক্তবে

ন ত্রাণং # লভেত্রাণমিচ্ছন্ স কালে ॥ ১২ ॥ জাতা হস্তা প্রজা প্রমীয়তে সদা.

ন বৈ বাসং পিতরোহম্ম কুর্বতে।

ভীত^ প্রপন্নং যোহি দদাতি শত্রবে,

নাস্ত দেবাঃ প্রতিগৃহ্নন্তি হ্ব্যম্॥১৩॥

মোঘমনং বিন্দতি চাপ্রচেতাঃ,

স্থগালোকান্ত শ্রতি শীঘ্রমেব।

যা জাযাসৈব ভবান্তরে মাতা যা পুত্রং সএব পিতা এবং শাত্র মিত্রং ভবতি মিত্রং বা শাত্র রিভি ভবেষু জন্মস্থ পর্যায়েণ বসতিঃ স্থিতি ভবতি অভন্তং সর্গে স্টো অন্মাং কপোতাং জাতোসি অভন্তং তব জন্মান্তরীয়ং পিতরং কপোতং আদদানো রক্ষণ মা আহারে বিশ্বং মাকুর্বিত্যর্থ: ॥ ১০ ॥ শকুনেনেত্যকারান্ডোইপি এত্যোঃ স্বরূপৎ জ্ঞাত্বা সাধু কর্ম কথং কুর্যামিতি বিশ্বশতীভার্থ: ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ হ্রন্থাশৈশবে এব প্রজ্ঞা প্রমীয়তে দ্রিয়তে॥ ১০ ॥ মোহং নিক্ষলং সোইরং বিন্দৃতি লহতে অপ্রচেতাঃ

^{*} যামি ভাত্তযো ইতি পাঠঃ ক পুন্তকে।

* বৰ্ষ মিতি নান্তি ক পুন্তকে।

^{*} লভতে ইতি ক পুস্তকগ্য

ভীতং প্রপন্নং যো হি দদাতি শত্রে. সেক্রা দেবাঃ প্রহর্ত্ত্যক্ত বক্ত্রন ॥ ১৪ n উक्तान् शक्ता मह उपरानन, অস্মাৎ কপোতাৎ প্রতি তে নয়স্ত। ৰশ্মিন দেশে রমসেহভীব খ্যেন ! ভত্ত মাপসং শিৰ্য়ন্তে বহস্তু"॥ ১৫॥ (भान छेवाह। " त्नाकान् अ दाकन्। व्यर्थत्त्रप्रः न हान्। দশাগাংসমধিক্যা কপোতাৎ। (मरेवर्षकः मार्थम यदेशस जक्त স্তম্মে দদৰ শকুনানামভাবাং' । ১৬ ॥: ब्रोटकार्गाः । " উক্ষাণ► বেহত মনুনং নয়স্তু, তে পশ্যন্ত পুরুষা মমৈব। ভয়াহিতভা দায়ং মমান্তিকান্ত্রাং, প্রাপয়স্ত ত্বন ছেনন মা হিন্সীঃ॥ ১৭:॥ ভাজে প্রাণারৈত দদ্যাং কপোতং. সৌম্যো হয়ং কিন্ত জানামি খোন!।

অভ্নার:॥ ১৪॥ অসাৎ কপোতাং এনং কপোতং মোচরিহা তে তুড়াং প্রতিণয়ন্ত প্রতিনিধিছেন সমর্পয়ন্ত ॥ ১৫॥ দদস্য দদ দানে ইতাস্যা রূপং শকুনানাং একস্মিরের বছরং অভারাৎ নাশেন। ১৬॥ উন্ধাণং বলীবর্দ্ধং বেহতং বন্ধ্যাং গাং বা অনুনাং সর্বাদ্দমংপূর্ণং যথাস্যাওখা ভরাহিত্স্য ভীগ্রন্তম্য কপোতস্যা দারং প্রতিধনং প্রত্যাম্যায়ং নয়ন্ত প্রবায়ন্ত পশান্ত আলোচরন্তচ সন্ত এনং কপোতং মাহিংসীরিতি ॥ ১৭॥ সোমােহারং সোমসংস্কৃতকত্বরিত্যং পরিপালােহারং হে সৌম্যা সোমবংপ্রিয়দর্শন

যথা ক্লেশ্ মা কুরুম্বেহ সৌমা ! নাছং, কপোতমপ্রিষ্যে কথঞ্চিৎ॥ ১৮॥ যথা মাং বৈ সাধুবাদৈঃ প্রসন্নাঃ, প্রশংসেযুঃ শিবয়ঃ কর্মাণা ভু। যথা শ্যেন প্রিযমেব কুর্য্যাণ, প্রশাধি মাণ যদ্ধদেস্তৎ করোমি" ॥ ১৯ n শোন উবাচ। '' উরোর্দক্ষিণাতুৎক্বতা স্বপিশিত৲ তাব, দ্রাজন্! যাব্যাংস্প কপোতেন সম্ম। তথা তম্মাৎ সাধু,ত্রাতঃ কপোতঃ, প্রশংসেয়ুঃ শিবয়ঃ ক্রতঞ্চ প্রিয়ং স্থান্মমেতি" ॥ ২ ० ॥ অথ্য দক্ষিণাদূরোরুৎক্ত্য স্বমাংসপেশী তুলয়াহধারয়ৎ * গুরুতর এব কপোত আসীৎ॥২১॥ পুনরনামুচ্চকর্ত্ত গুরুতর এব কপোতঃ ৷ **এবং সর্বাং সমধিকুত্য শরীরং তুলায়ামারোপায়ামাস**, তত্ত্তথাপি গুরুতর এব কপোত আসীৎ॥ ২২॥ অথ রাজা স্থমেব তুলামারুরোই। ন চ ব্যলীকমাসীদ্রাজ্ঞ এতদৃত্তান্তং দৃষ্ট্রা, ত্রাত ইত্যুক্তা প্রালীয়ত শ্রেনঃ, অথ রাজা অব্রবীৎ॥ ২৩॥ কপোত্ত বিদ্যুঃ ' শিবয়স্তুং কপোত! পূচ্ছামি তে শকুনে! কো মু শ্যেনঃ

॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ অধিকৃত্য চ্ছিত্বা ॥ ২২ ॥ জাপর্ব্যাপ্তেরী স্বয়মেব তুলামাবিষেদা ব্যলীকং অপ্রিয়ং ত্রাতস্ত্রা কপোত ইত্যক্তবা ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥

^{*} ধাররনিতি ক।

নানীশ্বর ঈদৃশং জাতু কুর্য্যাদেতং, প্রশং ভগবন্ধে বিচক্ষ্"॥ ২৪॥ কপোত উনাচ। " বৈশ্বানরোহহং জ্বলনো ধূমকেতৃ, রথৈব শ্যেনো বক্তহন্তঃ শচীপতিঃ। সাধু জ্ঞাতৃং স্বামুষভ^ সৌরথেয় ! # নৌ জিজ্ঞাসয়া ত্বৎসকাশং প্রপন্নৌ ॥ ২৫॥ যামেতা পেশীং মম নিষ্কু য়ায়, প্রাদান্তবানসিনোৎ কুত্যরাজনু! এতছোলক্মশিবং করোম। হিরণ্যবর্ণং রুচিরং পুণ্যগন্ধা ॥ ২৬॥ এতাসাং প্রজামান পালয়িতা যশসী, সুর্ধী বামথ সম্মতো ভূশম। এতস্মাৎ পার্শাৎ পুরুষো জনিষ্যতি, কপোতরোমেতি চ তম্ভ নাম॥ ২৭॥ কপোতরোমাণ্ শিবিনৌছিদং পুত্রং, व्याश्माि नृপत्यः गःइननः यट्गामीभागानः, দ্রফাসি শুরমূষভ ং সৌরথানাম্"॥ ২৮॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ মার্কণ্ডেয় সমাস্থা পর্বাণ শিবিচরিতে সপ্তনবত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯৭॥

সোরবের ! স্থারা: পত্র নো অবাং বিদ্ধীতি শেষঃ ॥ ২৫ ॥ অসিনা খড়োন এতন্মাংসং বঃ নৃপাণাং লক্ষ্ম চিত্রং করোমি ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ শিবিনা শিথিল-শরীরেণ জাতং উদ্ভিদেং উদ্ভিদেন জাতং যশসা দীপ্যমানং ॥ ২৮ ॥ ইত্যাবণ্যকে শর্কণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তনবত্যধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯৭ ॥

^{*} সৌবথেয়ং ইতি কঃ।

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ভুয় এব মহাভাগাং কথাতামিতাব্রবীৎ,

পাপ্তবো মার্কপ্রেয় মথাচন্ট মার্কপ্রেয়:,

অফকন্ড বৈশ্বামিত্রেরশ্বমেধে সর্বেরাজানঃ প্রাগচ্চন্ #॥ ১॥

আতরশ্চাক্ত প্রতর্দনো বস্থুমনাঃ শিবিরৌশীনর ইতি।

স চ সমাপ্তযজ্ঞো ভ্রাতৃতিঃ সহ রথেন প্রায়ান্তে চ,

নারদমাগচ্নতং তমভিবাদ্যারোহতু,

ভবান রথমিত্যক্রবন ॥ ২ ।

তা শ্বতে বুয়কু রথমারুরোহ।

व्यथ एकारमकः सूत्रिंश नातममञ्जी ।

প্রসাদ্য ভগবন্তং কিঞ্চিদিচ্ছেয়ন প্রফীমিতি॥ ৩॥

পুচ্ছেত্যব্ৰবীদ্যি: সোহ্ববীদাযুগ্ধ: সর্বগুণপ্রযুদিতা: # ।

অথাযুদ্মন্তং স্বৰ্গস্থানং * চতুৰ্ভিগাতব্য

স্যাৎ, কশ্চাবতরেৎ ?।—

অয়মফকো হবভরে দিত্য ব্রবীদৃষি: ॥ ৪।

কিং কারণমিত্যপৃচ্ছৎ।

व्यथावकी किंकना शृद्द महा छेविडः,

স মাং রথেনামুপ্রাবহদধাপশ্যমনেকানি

গোসহস্রাণি বর্ণশো বিবিক্তানি,

তমহমপুচ্ছ~, কদ্যেমা গাব ইতি!

ভূয়ইতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ আয়ুত্মতং চিয়কাল ভোগ্যং অর্গন্থানং পুংস্তমার্থং অবতরেৎ অর্গাৎ ভূমে প্রথমমিতি শেষঃ ॥ ৪ ॥

^{*} প্রাগছন্ত ইতি কঃ।

^{*} সমুদিতা ইতি স এব।

^{*} স্বৰ্গ বিশেষ মিতি ক খঃ।

সে। হব্রবীৎ, ময়া নিস্ফী। ইত্যেতাস্তেনৈর স্বয়ং শ্লাঘতি কথিতেন এবোহবভরেদথ ত্রিভির্যাতব্য**ু সাম্প্রতং কে**;হবন্তরেৎ <u>?</u>—॥ ৫॥ প্রতর্দন ইত্যব্রবীদৃষিঃ। তত্র কিং কারণং ?—প্রভর্দনস্যাপি গুহে ময়োষিতম্। স মাণ রখেনামুপ্রাবহৎ॥ ১॥ অথৈন^ ব্ৰাহ্মণোহ ভিক্ষেতাশ্বং মম দদাতু ভবানিতি রুতো দাস্যামীত্যব্রবীদাক্ষণম্। ত্বরিতমের দীয়তামিত্যত্রবীৎ ত্রাহ্মণ, স্থুরিতমের अञ्चलित्रावयुक्ता पिकानः भाषा अपनि । ने । অথান্যোহপ্যশ্বার্থী ব্রাহ্মণ আগচ্ছৎ। তথৈব চৈনমুক্তা বামপাঞ্চি মভ্যদাদথ প্রায়াৎ, পুনরপি চান্যোহপাশ্বার্থী ব্রাহ্মণ আগচ্ছৎ। ত্বরিতোহধ তক্ষৈ অপনহ্য বামং ধূর্য্যমদদৎ ॥ ৮। অধ প্রায়া পুনরন্য আগচ্ছদশ্বার্থী ব্রাহ্মণ্ডমব্রবীদ্ভিয়াভো দাস্যামি। ত্বরিতমেব দীয়তামিতাত্রবীষ্ াক্ষণস্ত স্মৈদত্ত্বাশ্বং রথধুরং গুহ্নতা ব্যাহ্নতং ব্রাহ্মণানাং সাম্প্রতং নাস্তি কিঞ্চিদিতি ॥ ৯॥ য এষ দদাতি চাম্থাতি চ তেন ব্যাহ্নতেন তথাবতরেৎ। অথ দ্বাভ্যাং যাতব্যমিতি কোহ্বভরেৎ!। ১০। বস্থুমনা অবভরেদিত্যব্রবীদৃষিং ॥ ১১ ॥ কি~ কারণমিতাপুক্তদথাচফ নারদঃ, অহ্ পরিভ্রমন্ বস্থুমনসো গৃহমুপস্থিত: । ১২ ॥

॥ ৫॥ ৬॥ পার্শ্বং রথচক্র প্রদেশস্থমশ্বং॥ १॥ ৮॥ অতিযাতোছ তিবেগবান্
অশ্বচন্তক্ষরস্যাপিদানাৎ ধুবং অহতেনৈব সৃহ্যতা সাম্প্রতং যুক্তাযুক্ত বিচারঃ
। ১॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥

স্বস্থিব চনমাসীৎ পুষ্পার্থস্য প্রায়োজনেন তমহ্মস্বগচ্ছং, স্বন্ধিরাচিতেমু ব্রাক্ষণেমু রথো ব্রাক্ষণানাং দর্শিতঃ॥১৩॥ তমহং রথং প্রাশংসমথ রাজাত্রবীদ্ভগবতা রথঃ প্রশস্তঃ এষ ভগবতো ভবতো রথ ইতি ॥ ১৪॥ অথ কদাচিৎ পুনরপ্যহমুপস্থিত:। भूनदार ह तथश्रदाकनमानी । সম্যাগয়মেষ ভগবত ইত্যেবং রাজাব্রবীদিতি। পুৰরের চ তৃতীয়ং স্বস্তিবাচন সমভাবয়মথ রাজা ব্রাহ্মণানাং দর্শয়নু মামৃভিপ্রেক্ষ্যাব্রবীৎ। অথো ভগবতা পুষ্পার্থম্য স্বস্তিবাচনানি স্থষ্ঠ সম্ভাবিতানি এতেন জোহ্বচনেনাবতরেৎ॥ ১৫॥ অথৈকেন যাতব্যং স্যাৎ কোহবতরেৎ ! ৷— পুনর্মারদ আহ, শিবিষাযাদহমবতরেয়ম্, অত্র কিং কারণমিত্যব্রবীৎ। অসাবহং শিবিনা ন সমানোহি স্ম * যতন্তং শিবিৎ ব্রাহ্মণোহভ্যাগচ্ছৎ * স চৈনমব্রবীৎ॥ ১৬॥ শিবে! অন্নার্থাস্মীতি তমত্রবীচ্ছিবিঃ, কিং ক্রিয়তামাজ্ঞাপয়ত্ ভবানিতি॥ ১৭॥ षर्थनः खाक्रालाश्खवीः

প্রস্পরথস্য গিরিগগনসাগরেষপ্রতিষিদ্ধমার্গস্য প্রয়োজনে ন তদর্থ মিত্যর্থঃ॥ ১৩॥ রথঃ স্তুত এব নতু যাচিতঃ রাজাপি মমাশরং বুদ্ধাপি রথং ন দত্তবান্ রথ স্তুতিঞ্চান্তবানিতি প্রদান্কার্থঃ॥ ১৪॥ দ্রোহ্বচনেন অদ্বা রুথান্তবেন॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥

^{* &}quot;শিবিনা ন সমোশীয়া" ইতি পাশ্চাতা পাঠঃ।

^{* &#}x27;' অভ্যাগত্তং—সচৈনং " ইতঃংশো নাতি পুস্তকান্তরে ৷

য এষ তে পুজো বৃহদ্পার্ভো নাম, এষ প্রমাতব্য ইতি তমেনৎ সৎস্ক রু অন্নপোপপাদয় ততোহহ প্রতীক্ষ্য ইতি। ততঃ পুত্রং প্রমাথ্য * সংস্কৃত্য বিধিনা সাধ্যিত্বা পাত্র্যামর্পরিত্বা শির্দা প্রতিগৃহ ত্রান্ধণমনুগরৎ ॥ ১৮॥ অথাস্য মুগয়মাণস্য কশ্চিদাচফ্ট এষ তে, ব্রাহ্মণো নগরং প্রবিশ্য দহতি তে গুহং, কোষাগারমাযুধাগার~স্ত্র্যগার * মশ্বশালাং হস্তিশালাঞ্চ ক্রন্ধ ইতি॥ ১৯॥ অথ শিবিস্তবৈধবাবিক্কতমুখবর্ণো, নগরং প্রবিশ্য ব্রাহ্মণং তমত্রবীৎ।— সিদ্ধং ভগবন্নন্মিতি ত্রাক্ষণো ন किञ्चिषा जरात विश्वशामरधा मुथ्या मी । २०॥ ততঃ প্রাসাদয়ৎ * ব্রাহ্মণং ভগবন্! ভুজ্যতামিতি, म मुहूर्जा जूबीका मिविमदवी ।। २১॥ ত্বমেবৈতদশানেতি প্রাহ্ন তথেতি শিবিস্তথৈবাবিমনা মহিত্বা কপালমভ্যুদ্ধার্য্য ভোক্ত নৈচ্ছৎ ॥ ২২ ॥ অথাস্য ব্ৰাহ্মণো হস্তমগৃহ্ণাৎ, অব্রবীচ্চেনং, জিতক্রোধোহসি ন তে কিঞ্চিদপরিত্যাজ্যং ব্রাহ্মণার্থে, ব্ৰান্ধণোহপি তৎ মহাভাগমসভাজয়ৎ॥ ২৩॥

॥ ১৮॥ ১৯॥ २०॥ २১॥ महिवाপु अधिवा कशान शीर्वा खिशा वर ॥ २२ ॥ २०॥

^{*} প্রমাপ্য ইতি কঃ।

^{* &}quot; স্ত্রাপারং " ইতি ক প্সতে নোপলভাতে। * প্রসাদয়ন ইতি বঃ।

স হা দ্বীক্ষামাণঃ পুত্রমপশ্রত অত্যে তিষ্ঠন্তং,
দেবকুমারমিব পুণ্যগন্ধান্তিমলক্ তম ।
সর্বাঞ্চ তমর্থং বিধার ব্রাক্ষণোহস্তরধীয়ত ॥ ২৪ ॥
তম্ম রাজর্ধেবিধাতা তেন বেশেন পরীক্ষার্থমাগত ইতি।
তম্মিনন্ত হিতে অমাত্যা রাজানমূচুঃ,
কিন প্রেপ্সুনা ভবতেদমেবং জানতা ক্লভমিতি ? ॥ ২৫ ॥
শিবিক্রাচ।

' নৈবাহমেতদ্যশদে দদানি,
ন চার্থহেতোর্ন চ ভোগতৃষ্ণয়া।
পালৈরনাসেবিত এব মার্গ,
ইত্যেবমেতৎ সকল করোমি ॥ ২৬ ॥
সন্তিঃ সদাধ্যাসিতম্ভ প্রশস্তং,
তক্ষাৎ প্রশস্তং শ্রয়তে মতির্মো।
এতন্মহাভাগ্যবরং শিবেস্ত,
তক্ষাদহং বেদ যথাবদেতৎ" ॥ ২৭ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বানি মার্কণ্ডেয় সমাস্যা পর্বানি রাজন্য-মহাভাগ্যকথনে অফনবত্যধিক শত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯৮ ॥

॥২৪॥২৫॥২৬॥ যো দরা শ্লাঘতে যশ্চাস্থ্যেৎ যশ্চার্থিনো লিপ্সিড মিলিটে জ্ঞারাপি তং স্থাত মাত্রেণৈর সংভাবয়তি নত্ত্বিন যশ্চ বান্ধণে-নার্থিতঃ আন্ধাক্ষমপূর্থকিমদেরমপি দদাতিঅকর্ত্ব্যম্পি করোতি তে উত্ত-রোভরং শ্রেষ্ঠাঃ ভ্রাপ্যস্ত্যে নারদাদপি শ্রেষ্ঠ ইতি দাত্তর্গুণদোষ্বিধান পরেছ্যমধ্যারঃ॥২৭॥

> ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে অফ্ট নবত্যধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯৮ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচা

মার্কণ্ডেরমূষরঃ পাপ্তবাক্ষ পর্যাপৃচ্চরন্তি, কন্দিদ্দেবতক্ষিরজ্ঞাততর ইতি ॥ ১ ॥

স তানুবাচান্তি খলু রাজর্ষিরিক্রত্যুদ্রো, নাম ক্ষীণপুণ্যন্তিদিবাৎ প্রচ্যুতঃ কীর্ত্তির্দ্যে, ব্যক্তিনেতি সমামুপাতিষ্ঠদথ,

প্রভাভিনাতি মাং ভবানিতি॥ ২॥

ভমহমক্রবং কার্য্যচেন্টাকুলত্বার বয় ক্র বাসায়নিকা গ্রাটেমকরাত্র বাসিনোন, প্রভ্যাভিজানীমোপ্যাত্মনোহর্থানামরুঠান ক্র ন শরীরোপভাপেনাত্মনঃ, সমারভামোহর্থানামন্তুঠানম্ ॥ ৩ ॥

অন্তি খলু হিমবতি প্রাবারকর্ণো নামোলুকঃ প্রতিবসতি স মন্ত্রশিচরজাতো ভবন্ত ম দি, জানীয়াদিতঃ প্রকৃষ্টে চাধনি,

হিমবাংস্তত্রাসৌ প্রতিবসতীতি ॥ ৪ ॥

মার্কণ্ডেয় ম্বয়য়য়ত যাবংকীর্জিন্তাবং অর্গে তিষ্ঠতি তুলানায়য়ণং যাবদকীরিজ্ঞাবয়য়েকপাতঃ কীর্জাকীর্জ্যোনাশে কর্মাল্লরপং রাল্ধনাদিশরীরং নীচযোনিষা উভাবপি ভূমৌ প্রাপ্ত ইতাধ্যায়তাংপর্যাং ॥১॥ প্রভাজিলাতি পরিচিনোতি॥২॥কার্যাং পুনাং তদর্থা চেফ্টাঞ্জপাদয়স্তাভিরাকুলত্বাং বাসায়নিকাঃ বাসোবিটাগায়ং তদেব অয়নং বাসায়নং তয়ভজবঃ প্রামেকরায়বাসিনজীর্পাটনশীলাঃ শরীরোপতাপেন ক্লেছ্পেবাসাদিজন্মনা দেহতাপেন অতো নবয়মতিতানাগতবিদঃমাইতিভাবঃ॥৩॥ধলুপ্রসিদ্ধং॥৪॥সঃ ইক্রছ্যমোহখোভূতামামবছং

^{* &}quot; নবরং বাদায়নিকা কর্ষিচেষ্টা কুলড়ার প্রত্যভিজানাম্যাত্মনোছ-র্থানা" মিতি ক পুস্তুকীয় পাঠ পরিপাটী।

^{*} অন্তীত্যস্য পূর্বং "সমা মুবাচ অন্তান্যত্ত্তশিচর জাত ইতি, তম্ম মূরবং * ইত্যধিকপাঠঃ কাদিপুন্তকে বর্ততে।

ততঃ স মামশ্বো ভূত্বা ততাবহদ্যত বভূবোলুকঃ। অথৈন স রাজা পপ্রচ্ছ প্রত্যভিজানাতি, মাণ ভবানিতি॥ ৫॥ স মুহুর্ভমিব ধ্যাত্বাত্রবীদেনং নাভিজানামি ভবন্তমিতি। স এবমুক্ত ইন্দ্রচুয়ঃ পুনস্তমুলুকমত্রবীৎ রাজর্ষিঃ॥ ৬॥ অথান্তি কশ্চিদ্রবন্তঃ সকাশাচ্চিরজাত ইতি। স এবমুক্তোত্রবীদন্তি খলিক্তব্যুস্থ নাম, সরস্তব্দিলাডীজজ্বো নাম বকঃ প্রতিবস্তি, সোংশত্তশ্চিরজাততরস্তং পুচ্ছেতি, তত ইন্দ্রন্থামো মামুলুকঞ্চাদায় তৎ সরোহগচ্ছৎ, যত্রাদৌ নাডীজজ্বো নাম বকো বভূব ॥ १ ॥ নোহস্মাভিঃ পৃষ্টো ভবানিমমিক্রছ্যুরং, রাজানং প্রত্যভিজানাতীতি স, শ্রুর্ভং ধ্যাত্বাহত্তবীৎ, নাভিজানাম্যহমিক্রতার্ত্রর রাজানমিতি, ততঃ সোহস্মাভিঃ পৃষ্টঃ কশ্চিদ্ভবতোন্য, শ্চিরজাতভরোস্তীতি স নোহব্রবীদস্তি, খলস্মিরেব সরস্যকূপারো নাম কচ্ছপঃ, প্রতিবসতি স মন্তশ্চিরজাততরঃ, म यमि कथक्षिपा छका नौ सामियः রাজানং তমকুপারং পৃচ্ছধমিতি। ৮।

1141151191151

^{* &}quot; এবনুক্তোহ ব্রবীন কর্তংখ্যাত্বা, ইতি পাঠঃ ক পুস্তকীয়ঃ।

ততঃ স বকস্তমকূপ∤র∾ কচ্চপং বিজ্ঞাপরামাস। অস্তাসাকমভিপ্রেতং ভবন্তৎ কঞ্চিদর্থমভিপ্রাইৎ, সাধাগম্যতাং তাবদিতি ৷ তচ্চত্বা কচ্ছপস্তস্মাৎ সরস উত্থায়াভ্যগচ্ছদ্যত্র, তিষ্ঠামো বয়ং তম্ম সরসন্তীরে. আগতং চৈনং বয়ম পৃচ্ছাম, * ভবানিমমিক্রছায়ং রাজানমভিজানাতীতি ॥ ৯ ॥ म মুহূর্ত্তং ধ্যাত্বা বাস্পদ্রপূর্ণনয়ন উদ্বিগ্ধহৃদয়ো. বেপমানো বিসংজ্ঞকপ্পঃ প্রাঞ্জলিরব্রবীৎ। কিমহমেনং ন প্রত্যভিজ্ঞাস্থামীহ স্থনেন, সহস্রক্ত্বশ্চিতিষু যুপা আহিতাঃ ॥ ১০ ॥ সরশ্চেদমন্ম দক্ষিণাভির্দন্তাভিরেতিক্রমাণাভিঃ, ক্রতমত্র চাহং প্রতিবসামীতি। ১১ । অথৈতৎ সকলং কচ্চপেনোদাহ্যত শ্ৰুত্বা, जमनखत्र (मवरलांकारकवत्रथः, প্রাত্রাসীদাচশ্চাক্রয়ন্ত ইন্দ্রচুয়ে , প্রতি প্রস্তুতন্তে স্বর্গো যথোচিতং স্থানং, প্রতিপদ্য স্বকীর্ত্তিমানস্থব্যগ্রো যাহীতি॥ ২২॥ ভবন্তি চাত্র শ্লোকাঃ। " দিবং স্পৃশতি ভূমিঞ্চ শব্দঃ পুণ্যন্ত কর্ম্মণঃ। যাবৎস শব্দো ভবতি তাবৎ পুরুষ উচ্যতে॥ ১৩॥ অকীর্ত্তিঃ কীর্ত্তাতে লোকে যত্ত্ব ভৃতত্ত্ব কন্স চিৎ। স পতভাধমালে কোনু যাবছকঃ প্রকীর্ভাতে ॥ ১৪॥ ॥ ৯॥ চিতিযু অগ্নিচয়নেষু কর্তব্যেষু সংস্থ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ পুরুষঃ স্বর্গস্থ-ইতিশেষঃ॥ ১৩॥

* " বয়ং পূছাম·" ইতি কগঘাঃ।

তন্মাৎ কল্যাণর্ত্তঃ স্থাদনস্থার নরঃ সদা।
বিহার চিত্তং পাপিষ্ঠং ধর্মমেব সমাশ্রমেরেং" ॥ ১৫ ॥
ইত্যেতচ্ছুত্বা স রাজাব্রবীত্তিষ্ঠ ভাবদ্যাবদিমৌ,
রুদ্ধৌ যথাস্থান প্রতিপাদরামীতি ॥ ১৬ ॥
স মাং প্রাবারকর্নঞোলুকং যথোচিতে স্থানে,
প্রতিপাদ্য ভেনৈব যানেন সংস্থি ভো,
যথোচিতং স্থানং প্রতিপেদে,
ভন্মরানুভূতং চিরজীবিনেদৃশমিতি,
পাণ্ডবানুবাচ মার্কপ্রেরঃ ॥ ১৭ ॥

পাওবালেচাচু:।

সাধু শোভনং ভবতা ক্বতং রাজানমিক্রছ্যমং,
স্বর্গলোকাচ্চ্যতং স্বেস্থানে,
প্রতিপাদয়তেত্যথৈতানত্রবীদসৌ,
নমু দেবকীপুত্রেণাপি ক্ষেত্রন নরকে,
মজ্জমানো রাজর্ধির্নঃ তস্মাৎ ক্ষন্ত্রাৎ,
পুনঃ সমুদ্ধ্যু স্বর্গং প্রাপিত ইতি''॥ ১৮॥
ইত্যারণ্যকে পর্বানি মার্কণ্ডেয় সমাস্থা পর্বানি ইক্রছ্যুমোপাখ্যানে নবনবত্যধিক শত তমোহধ্যায়ঃ॥ ১৯৯॥

॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ অসে মার্কণ্ডেরঃ ॥ ১৮॥

ইত্যারণ্যকৈ পর্ব্ধণি লৈলকতীয়ে ভারতভাবদীপে
উনশতাধিক-শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯১॥

বৈশন্দায়ন উবাচ।
ক্রান্ত্রা স রাজা রাজর্মেরিক্রকুরেম্ব তন্তর্বা।
মার্কণ্ডেরাম্মহাভাগাৎ স্থর্গন্ত প্রতিপাদনম্॥ ১॥
যুধিন্তিরো মহারাজ * পুনঃ পপ্রাক্ততং মুনিম্।
কীদৃশীযু হৃবস্থান্ত দন্ত্রা দান মহামুনে!॥ ২॥
ইন্দ্রলোকং ত্রন্তবেৎ * পুরুষস্তৎত্রবীহিমে।
গার্হস্থ্যেথ বা বাল্যে যৌবনে স্থাবিরেহপি বা।
যথা ফলং সমশ্রাতি তথা ত্বং কথয়ন্ত্র মে"॥ ৩॥
মার্কণ্ডেষ উবাচ।

" রথা জন্মনি চত্ত্বারি র্থা দানানি ষোডশ!
রথা জন্ম হুপুক্রস্থ যে চ ধর্মবহিষ্কৃতাঃ ॥ ৪ ॥
পরপাকেষু যেহশুন্তি আত্মার্থস্ক পচেতু যঃ।
পর্যাশুন্তির্থা যত্র তদসত্যং প্রকীর্ভাতে ॥ ৫ ॥
আর্চপতিতে দন্ত মন্যায়োপহিতঞ্চ যং।
ব্যর্থস্ক পতিতে দানং ব্রাহ্মণে তক্ষরে তথা॥ ৬ ॥
শুরৌ চানৃতিকে পাপে কৃত্ত্বে গ্রাম্যাজকে।
বেদবিক্রয়িণে দক্তং তথা ব্যল্পাচকে * ॥ ৭ ॥

অতঃপরং অর্গপ্রদান সাধারণান্ ধর্মানাহাধ্যারেন শুজা স রাজারাজর্থি রিতাণাদিনা বদন্তি লোকের বিশিষ্টবুদ্ধর ইত্যন্তেন ॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ পর্যাশন্তি বালর্দ্ধাতিথিতাঃ পূর্ব্বমন্থতি যত্তজন্মনি অসতাং বুথ। গোরান্ধণাদি-ত্রাণংবিনা কীর্ত্যন্তে তদপি রুখেতার্থঃ॥ ৫॥ আরুচন্দাসৌ পতিতঃ
আরুচোনৈটিকং ধর্মং বস্তপ্রচাবতেপুনঃ প্রান্ধিততং ন তস্যান্তি যেন শুদ্ধোৎ
স আত্মহতি শ্লোকোক্তঃ নৈটিকং যাবজ্জীব ব্রন্ধার্গ্য চতুর্থাশ্রমং বানপ্রস্তুহ বা প্রচারতে গার্হস্থোদ্দানা তাং নিঠাংতাজতি॥ ৬॥ গুরাবপ্যান্
নৃতিকেইন্তপ্রিরে রুষলঃ শুদ্রঃ॥ ৭॥ বন্ধবন্ধবাে জাতিমাত্র বান্ধার্ত্তা-

^{*} কচিৎ " মহারাজ ; " ইতি মুধিষ্ঠির বিশেষনতয়া পঠাতে।

* পুক্ষন্ত্বং ইতি কঃ।

* যাজকে ইতি বা।

ব্রহ্মবন্ধু যদন্তং যদন্ত^ র্ষলীপতী।
প্রীজনেষু চ যদন্তং ব্যালগ্রাহে তথৈব চ ॥ ৮ ॥
পরিচারকেষু যদন্ত^ র্থা দানানি ষোডশ।
তমোরতস্ত যো দদ্যান্ডযাৎ ক্রোধান্তথৈব চ ॥ ৯ ॥
ভুঙ্কে চ দান^ তৎ দর্মে গর্ভস্ত নরঃ দদা।
দদদ্দানং দ্বিজাতিভাগ র্দ্ধভাবেন মানবঃ ॥ ১০ ॥
তক্ষাৎ দর্মাস্ববস্থাস্থ দর্মদানানি পার্থিব!।
দাতব্যানি দ্বিজাতিভাঃ স্বর্গমার্গজিগীষয়া "—॥ ১১ ॥
য়ুধিষ্ঠির উবাচ।

" চাতুর্ব্বর্ণস্য সর্ব্বস্য বর্ত্তমানাঃ প্রতিগ্রহে। কেন বিপ্রা বিশেষেণ তারয়ন্তি তরন্তি চ ?"—॥ ১২,॥

মার্কতের উবাচ।

' জপৈর্দ্মন্তিশ্ব হোমেশ্ব স্থাধ্যায়াধ্যয়নেন চ।
নাবং বেদময়ীং কৃত্মা তারয়ন্তি তরন্তি চ॥ ১৩॥
ব্রাহ্মণাংস্থাবয়েশ্বস্ত তুষান্তে তদ্য দেবতাঃ।
বচনাচ্চাপি বিপ্রাণাং স্থর্গলোকমবাপুয়াৎ॥ ১৪॥
পিতৃদৈবতপূজাভিত্র ক্ষিণাভ্যর্চনেন চ।
অনন্ত পুণ্যলোকস্ত গন্তাদি ত্বং ন সংশয়ঃ॥ ১৫॥
শ্রেষ্মাদিভিক্সাপ্ততমুর্দ্মিরমাণো বিচেতনঃ।
ব্রাহ্মণা এব সংপূজ্যাঃ পুণ্যং স্থর্গমভীম্পতা॥ ১৬॥
শ্রাদ্ধকালে তু যত্ত্রেন ভোক্তব্যা হুজুগুম্পিতাঃ।
ছুর্বর্ণঃ কুনথী কুষ্ঠী মায়াবী কুগুগোলকৌ॥ ১৭॥

ধারিন শ্ন্যাঃ ॥ ৮ ॥ ১ ॥ দানং দানফলং অন্যকুদানং বৃদ্ধতাবেন জরয়া-ভুঙ্ক্তে ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ অজুগুপ্সিতাঃ অভিশস্ত পাতিতবর্জিতাঃ হুর্মণঃ অতিগোরোহতিক্লোবীভংসবর্গঃ ॥ ১৭ ॥ কাণ্ড-

বৰ্জনীয়া: প্ৰযত্নেন কাণ্ডপৃষ্ঠাশ্চ দেহিন:। জুগুপ্সিতং হি যক্তাদ্ধ দহত্যগ্রিরিবেন্ধনম্ ॥ ১৮॥ रय रय खोरक नि युकारस * मूकोऋवधित्रोप्तरः। তেহপি সর্বে নিযোক্তব্যা মিশ্রিতা বেদপারগৈ: ॥ ১৯॥ প্রতিগ্রহক্ষ বৈ দেয়ঃ শূণু যদ্য যুধিষ্ঠির !। প্রদাতারং তথাত্মানং যস্তারয়তি শক্তিমান ॥ ২০॥ তিমিন দেয়ং দিজে দানং স্ক্রাগমবিজানতা। প্রদাতারং তথাত্মান তারয়েশ্বঃ স শক্তিমান ॥ ২১॥ ন তথা হবিষো হোটমর্ন পুট্পের্নান্তলেপনৈ:। অগ্নয়ঃ পার্থ! তৃষ্যন্তি যথা হৃতিথিভোজনে ॥ ২২ ॥ তক্ষাত্ত্ব^ সর্ব্বযন্ত্রেন যতস্থাতিথিভোজনে। পাদোদক পাদঘতং দীপসমং প্রতিশ্রম ॥ ২৩॥ প্রয়ন্থ তু যে রাজনু! নোপদর্শন্তি তেষমম্। (प्रवेशालाशित्रात्र विक्वािक्कोविशार्कत्र ॥ २८ ॥ আকম্পপরিচর্যা চ গাত্রসম্বাহনানি চ। অতৈকৈকং নূপশ্ৰেষ্ঠ! গোদানাম্ব্যতিরিচ্যতে ॥ ২৫ ॥ কপিলায়াঃ প্রদানাস্তুমুচাতে নাত্র সংশয়ঃ। তস্মাদলস্কৃতাং দদ্যাৎ কপিলাস্ক বিজাতয়ে। ২৬। শোতিয়ায় দরিদায় গৃহস্থায়াথিকোতিনে। পুত্রদারাভিভূতায় তথা হামুপকারিণে ॥ ২৭ ॥ এবং বিধেষু দাতবা ন সমৃদ্ধেষু ভারত।। কো গুণো ভরতশ্রেষ্ঠ। সমুদ্ধেম্বভিবর্ধিতমু ॥ ২৮॥

পৃষ্ঠাঃ বাণনিষদ্ধরাঃ কাত্ররত্তয়.ইতার্থঃ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ॥ ২০ ॥ মাল্যং নির্মাল্যং ॥ ২৪ ॥ আকিপাঃ গদ্ধাদিনালংকরাং ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ আভিতৃতার দারিত্র্যাদেব ॥ ২৭ ॥ অভিবর্জিতংদত্তং ॥ ২৮ ॥ সাবহুভ্যোদত্তা

 ^{*} বিযুজান্তে ইতি ক পুতকে: ।

এক স্যৈকা প্রদাতব্যা ন বহুনা পকদাচন। সা গৌর্বিজয় মাপনা হ্নাজিপুরুবং কুলম্॥ ২৯॥ ন তারয়তি দাতারং ব্রাহ্মণং ইনব নৈব তু। স্থবর্ণস্য বিশুদ্ধস্য স্থবর্ণ যঃ প্রয়চ্ছতি ॥ ৩০ ॥ স্থবর্ণানাং শতং তেন দন্ত ভবতি শাখ্তম। অনত ৃহস্ত যো দদ্যাদ্বলবন্তং ধুরন্ধারম্ ॥ ৩১ ॥ স নিস্তরতি তুর্গাণি স্বর্গলোকঞ্চ গছতি *। বস্থারাস্ত যো দদ্যাৎ দ্বিজায় বিত্রধাত্মনে ॥ ৩২ ॥ দাতার > হানুগছন্তি সর্বকামাভিবাঞ্চিতা:। পুচ্ছন্তি চান্নদাতারং বদন্তি পুরুষা ভূবি॥ ৩৩॥ অধনি ক্ষীণগাত্রাশ্চ পাংশুপাদাবগুঠিতাঃ। তে্যামেবং অমার্তানাৎ যো হারং কথয়েদ্ব ধঃ ॥ ৩৪ ॥ অন্নদাতৃসমঃ সোহপি কীর্ত্তাতে নাত্র সংশয়ঃ। তত্মান্ত্রং সর্বাদানানি হিত্তারং সংপ্রয়ছ হ। ৩৫। ন হীদৃশং পুণাফলং বিচিত্রমিছ দৃশ্যতে। যথাশক্তি চ যো দদ্যাদন্নং বিপ্রেমু সম্কৃত্যু । ৩৬॥ স তেন কর্ম্মণাপ্নোতি † প্রজাপতিসলোকতায়। অন্নেব বিশিষ্টং হি যত্মাৎ পরতর্ম ন চ। ৩৭॥ অন্নং প্রজাপতিশ্চোক্তঃ স চ সমুৎসরো মতঃ। সম্বংসরস্ত যজোহসৌ সর্বাং যজ্ঞে প্রতিষ্ঠিতম ॥ ৩৮॥

॥ ২৯॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ ৩৩॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩**৭॥ প্রজাপতিঃ বিরাট্** অলং বিরাডিতিভুষ্ণতেঃ ॥ ৩৮॥

[&]quot; ব্রুলেক চ গছতি " ক-পাঠ:।
" কর্মণা খ্রেভি " ক-দ পুস্তকো।

তন্মাৎ সর্বাণি ভূতানি স্থাবরাণি চরাণি চ।
তন্মাদন্নং বিশিষ্টং হি সর্বেভ্য ইতি বিশ্রুতম্ । ৩৯ ॥
যেষাৎ তডাগানি মহোদকানি,
বাপ্যান্চ কূপান্দ প্রতিশ্রয়ান্চ।
অন্য্য দানং মধুরা চ বাণী
যমস্য তে নির্বাচনা ভবন্তি ॥ ৪০ ॥
ধান্যং শ্রমেণার্জিতবিত্তমঞ্চিত্তৎ,
বিপ্রে স্থানিক প্রয়চ্ছতে য়ং।
বস্কুল্বরা ত্যা ভবেৎ স্কুত্রুটা,

বস্থারা তগ্য ভবেৎ স্কৃষ্টা,
ধারা বস্থনাং প্রতিমুঞ্চতীব ॥ ৪১ ॥
অন্নদাঃ প্রথমং যান্তি সত্যবাক্ তদনন্তরম্।
অ্যাচিত প্রদাতা'চ সমং যান্তি ত্রয়ো জনাঃ ॥ ৪২ ॥
বিশম্পানন উবাচ।

কৌতুহলসমূৎ পন্ন: পর্য্যপৃচ্ছদে ধিন্তির:।
মার্কণ্ডেরং মহাআনং পুনরেব সহামুক্ত:॥ ৪০॥

• যমলোকস্য চাধান মন্তর্ম মানুষস্য চ।
কীদৃশং কিং প্রমাণং বা কথয়া তল্মহামুনে!।
তর্ত্তি পুরুষা শৈচব যেনোপারেন শাম্স মে "—॥ ৪৪॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

' সর্বশুহ্যতম প্রাক্তর স্থিদংস্ততম।
কথরিব্যামি তে রাজন ! ধর্মাং ধর্মাভৃতাষর ! ॥ ৪৫ ॥
বঙ্গীতিসহস্রাণি যোজনানাং নরাধিপ !।
ব্যব্যাক্ত চাধান মন্তরং মানুষ্য চ ॥ ৪৬ ॥

॥ ৩৯॥ প্রতিজ্ঞাঃ গৃহাঃ যেষাংয়ৈঃ উৎসৃষ্টা ইতি শেষঃ নির্বচনাঃ যমবা-স্তামপি ন শৃণ্প্তীত্যর্থঃ॥ ৪৯॥ বস্থনাং ধনানাং॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪৩॥ ৪৪॥ ৪৫॥ আকাশং তদপানীয়ং ছোর কান্তারদর্শনম্ #। ন তত্র রক্ষছায়া বা পানীয়ং কেতনানি চ। ৪৭। বিশ্রমেদ্যত্র বৈ শ্রান্তঃ পুরুষোহধনি কর্ষিতঃ †। नीयरख यमप्रदेख्य यमखाळाकदित्रस्तार ॥ ४৮॥ নরাঃ স্ত্রিয়ন্তথৈবান্যে **পৃথিব্যা**৲ জীবসংজ্ঞিতাঃ। ব্ৰাহ্মণেড্য: প্ৰদানানি নানাৰূপাণি পাৰ্থব! ॥ ৪৯ । হয়াদীনা^ প্রকৃষ্টানি তেইধানং যান্তি বৈ নরাঃ। সন্নিবার্যাতপং যান্তি ছতেবৈব হি ছতদাং । ৫০ । जुश्चारेम्ध्यात्रमाजादता शृज्ञाम्बाभागनत्रमाः । ৰক্ষিণো বস্ত্ৰদা যান্তি অবস্ত্ৰা যান্ত্যবস্ত্ৰদাঃ ॥ ৫১ ॥ হির্ণ্যদাঃ স্থাং যান্তি পুরুষান্তভালক ডাঃ । ভূমিদান্ত স্থাং যান্তি সর্বকামেঃ 🛊 স্থতর্পি তা: ॥ ৫২ ॥ যান্তি চৈবাপরিক্লিফী নরাঃ শশুপ্রদায়কাঃ। নরাঃ স্থগতরং যান্তি বিমানেষু গৃহপ্রদাঃ ॥ ৫৩॥ পানীয়দা হত্ষিতাঃ প্রকৃষ্টমনসো নরাঃ। পস্থানং দ্যোতয়ন্তশ্চ যান্তি দীপপ্রদাঃ সুখম্॥ ৫৪॥ গোপ্রদাস্ত স্থাং যান্তি নিমুক্তাঃ সর্বপাতকৈঃ। विभारेन ईश्मम्यूरेक्ड्यां खिमारमार्थवानिनः ॥ ५६ ॥ তথা বর্হিপ্রযুক্তৈশ্চ ষষ্ঠরাত্রোপবাসিন:। ত্ৰিবাত্ৰং ক্ষপতে যস্ত্ৰ একভক্তেন পাণ্ডব!। ৫৬॥

18 9 18 9 118 4 18 3 11 4 0 11 4 2 11 4 2 11 4 2 11 4 4 11

 [&]quot; খোর কান্তাদর্শনং " ইত্যেকং পদং বা।
 † " অধান কর্ষিত " ইতি ক-পুত্তকন্ত।
 1 " সর্কিঃ কামিঃ পাচান্তরং।

অন্তর্রা চৈব নাশাতি তক্ত লোকা হ্যনাময়াঃ।
পানীয়স্য গুণা দিব্যাঃ প্রেতলোকস্থাবহাঃ॥ ৫৭॥
তক্ত পুজোদকা নাম নদী তেষা বিধীয়তে।
শীতল সলিলং তক্ত পিবন্তি হ্যমতোপমম্॥ ৫৮॥
যে চ তৃষ্ক্তকর্মাণঃ পুয়ং তেষা বিধীয়তে।
এব নদী মহারাজ! সর্বকামপ্রদা হি সা॥ ৫৯॥
তত্মাত্ত্মপি রাজেন্দ্র! পুজরৈনান্ যথাবিধি।
তথ্মনি ক্ষীণগাত্রশ্চ পথি পাংশুসমন্বিতঃ॥ ৬০॥
পৃক্ততে হ্রদাতার প্র সায়াতি চাশয়া।
তং পুজয়াথ যত্নেন * সোহতিথিত্র ক্ষাণ্শ্চ সঃ॥ ৬১॥
তং যান্তমনুগছন্তি দেবাঃ সর্বে সবাসবাঃ।
তিমান্ সংপুজিতে প্রীতা নিরাশা যান্ত্যপুজিতে॥ ৬২॥
তত্মাত্ত্মপি রাজেন্দ্র! পুজরৈনং যথাবিধি।
এতত্তে শতশঃ প্রোক্তং কিং ভ্য়ঃ প্রোত্ত্মিছ্নি ?॥ ৬৩॥
যুধ্চির উবাচ।

" পুনঃ পুনরহং শ্রোতুই কথাং ধর্মসমাজ্ঞরাম্। পুণ্যামিচ্ছামি ধর্মজ্ঞ। কথ্যমানাং ত্বরা বিভো।"॥ ৬৪॥

মার্কতেয় উবাচ।

'ধর্মান্তর্ম প্রতি কথাম কথ্যমানাং ময়া নূপ!
সর্ব্ধপাপহরাং নিত্যং শৃণুদ্বাবহিতো মম॥ ৬৫॥
কপিলায়ান্ত দন্তায়াশ যথ ফলং জ্যেষ্ঠপুদ্ধরে।
তথ ফলং ভরতক্রেষ্ঠ! বিপ্রাণাং পাদধাবনে॥ ৬৬॥

| 49 | 47 | 42 | 40 | 42 | 42 | 40 | 48 | 44 | 45 |

^{* &}quot; তংপুদ্ৰয়েৎ প্ৰষড়েন " ইতি ক-খ-পুস্তকয়োঃ।

দ্বিজপাদোদকক্রিরা যাব্যক্তিক মেদিনী। তাবৎ পুষ্করপর্ণেন পিবস্থি পিতরো জলম্॥ ৬৭ ॥ স্বাগতেনাগ্রস্ত প্রা স্বাদনেন শতক্রতঃ। পিতরঃ পাদশৌচেন অন্নাদ্যেন প্রজাপতিঃ॥ ৬৮॥ যাবদ্বৎসম্য বৈ পাদো শির্ভৈত্ব প্রদুশাতে। তিমিন্ কালে প্রদাতব্যা প্রয়তেনান্তরাত্মনা। ৬৯। **अस्तीक्रशटा वर्षा यावरम्यानगर अनुभारक।** তাবদোগাঃ পৃথিবী জ্ঞেয়া যাবদার্ডং নমুঞ্জি॥ ৭০॥ যাবন্তি তস্যা রোমাণি বৎসম্য চ যুধিষ্ঠির !। তাবদ্যুগসহস্রাণি স্বর্গলোকে মহীয়তে। ৭১॥ ञ्चर्यनामार यः कृषा अथुतार * कृष्ण्यमुकाम्। তিলৈঃ প্রচ্চাদিতাং দদ্যাৎ সর্বার্ত্রেরলঙ্কৃতাম্। ৭২। প্রতিগ্রহং গৃহীত্বা যঃ পুনর্দদতি সাধবে। ফলানাৎ ফলমশ্লাতি তদা দল্পাচ ভারত ! ॥ ৭৩॥ সমমুদ্রগুহা তেন সশৈলবনকাননা। চত্রন্তা ভবেদ্ধতা পৃথিবী নাত্র সংশয়ী। ৭৪ ॥ অন্তর্জানুশয়ো † যস্ত ভুঞ্জতে সক্তভাজনঃ। যো দ্বিজঃ শব্দর্হিত শ ক্ষমস্তারণায় বৈ ॥ ৭৫ ॥ অপানপা ন গদিতাস্তথানো যে ছিজাতয়: 1 জপন্তি সংহিতাং সম্যক্ তে নিত্যং তারণক্ষমা: ॥ ৭৬॥

॥ ৬৭ ॥ ৬৮ ॥ ৬৯ ॥ ৭০ ॥ ৭১ ॥ ৭২॥ ৭০॥ ৭৪॥ ৭৫॥ অপানপাঃ অমদ্যপাঃ নগদিতাঃ নকেনচিদোষবত্তরা কীর্ত্তিতাঃ ॥ ৭৬॥

^{* &#}x27;' সখুরাং " ইতি বা। † '' শয়ো হন্তঃ—ইতি টীকান্তরং অন্তর্জানু তুজ " ইতি ক-পুস্তকে।

হব্যং কব্যঞ্চ যথ কিঞ্চিৎ সর্বাং তথ শ্রোত্রিয়োহ ইতি। দন্ত^ হি শ্রোত্রিয়ে সাধৌ জ্বলিতে২গ্নৌ যথা ছতম্ ॥ ৭৭ ॥ মন্যুপ্রহরণা বিপ্রা ন বিপ্রা: শস্ত্রযোধিন:। নিহ্ন্যুর্সানুনা বিপ্রা বজ্ঞপাণিরিবাস্থরান্ ॥ ৭৮॥ ধর্মাভিতেয়ন্ত কথা কথিতেয়ং তবানঘ।। ষাং প্রজা মুনয়ঃ প্রীতা নৈমিষারণ্যবাসিনঃ। ৭৯॥ বীতশোকভয়ক্রোধা বিপাপ্মানস্তথৈব চ। শ্রুবেমান্ত কথাং রাজনু! ন ভবন্তীহ মানবা: "-॥ ৮০॥ যুধিষ্ঠির উবাচ। " কিন্তুৎ শৌচপ ভবেদেবন বিপ্রঃ শুদ্ধঃ সদা ভবেৎ। তদিক্ষামি মহাপ্রাজ্ঞ ! শ্রোতুং ধর্মাভূতায়র ! "—॥ ৮১॥ मार्कालय डेवाह। ' বাকুশৌচং কর্মশৌচঞ যচ্চ শৌচ জলাত্মকমৃ। িত্রিভিঃ শৌচৈ রূপেতো যঃ স স্বর্গী নাত্র সংশয়ঃ॥ ৮২ ॥ সায়ং প্রাতশ্চ সন্ধ্যাৎ যো ত্রান্ধণোহভ্যুপদেবতে। প্রজপন পাবনী । দেবীং গায়ত্রীং বেদমাতরম । ৮৩॥ স তয়া পাবিতো দেব্যা ব্রাহ্মণো নফকিল্লিয়ঃ। ন সীদেৎ প্রতিগৃহ্থানো মহীমপি স্পাগরাম্॥ ৮৪॥ य ठाख माञ्चनाः क्विका हाः स्र्राम्या मिति । তে চাক্ত সৌম্যা জায়ত্তে শিবাঃ শিবতরাঃ সদা ॥ ৮৫ ॥ সর্বে নারুগতক্তিন দারুণাঃ পিশিতাশনাঃ 🚜 । ঘোরৰূপা মহাকায়া ধর্ষয়ন্তি দিতে। তুমন্ ॥ ৮৬ । ॥ ৭৭ ॥ १৮ ॥ ৭৯ ॥ न, ভবন্তীহ মানবাঃ স্বর্গং প্রাপেরাপ্রিগছন্তে। মুক্তিমেব প্রাপ্রবৃত্তীতার্বঃ॥ ৮০॥ ৮১॥ ৮২॥ ৮৩॥ ৮৪॥ ৮৫॥ ৮৬॥

^{* &}quot;পিশিতা শিন" ইতি ক পাঠঃ।

নাধ্যাপনাকাজনাছা অন্যন্মাছা প্ৰতিগ্ৰহাৎ ৷ দোষো ভবতি বিপ্রাণাৎ অলিতাগ্নিদমা বিজাঃ * ॥ ৮৭ ॥ ছুর্বেদা বা স্থবেদা বা প্রাক্তরাঃ সংস্কৃতান্তথা। ব্ৰাহ্মণা নাবমন্তব্যা ভশাক্ষা ইবাধয়ঃ। ৮৮॥ যথা শুশানে দীপ্তৌজাঃ পাবকো নৈব ছ্যাতি ! এবং বিদ্বানবিদ্বার বা ত্রাক্ষণো দৈবত মহৎ। ৮৯॥ व्याकारेत्रक भूत्रवारेतः व्यामारेतक भृषिविदः। নগরাণি ন শোভত্তে হীনানি ত্রাহ্মণোত্তমৈঃ ॥ ৯• ॥ বেদাঢ্যা বৃত্তসম্পন্না জ্ঞানবস্ত স্তপস্থিনঃ। यज जिकेखि रेव विश्वा खन्नाम नगतः नृष ! ॥ २ ॥ ত্তজে বাপ্যথবারণ্যে মত্র সন্থি বছশ্রুতা:। তত্তমগরমিত্যান্তঃ পার্থ! তীর্থঞ্চ তদ্তবেৎ॥ ৯২॥ রক্ষিতারঞ্চ রাজান ব্রাক্ষণঞ্চ তপস্থিনম্। জভিগম্যাভিপুৰ্জাথ সদ্যঃ পাপাৎ প্ৰমুচ্যতে। ৯৩॥ পুণ্যতীর্থাভিষেকঞ্চ পবিত্রাণাঞ্চ কীর্ত্তনম্। সন্তিঃ সম্ভাষণক্ষৈব প্রশস্তং কীর্ন্তাতে বুধৈঃ॥ ১৪॥ সাধুসঙ্গমপুতেন বাক্সুভাষিতবারিণা। পবিত্রীকৃতমাত্মানং সম্ভো মন্যস্তি নিতাশ: ॥ ৯৫। ত্রিদ গুধারণং মৌনং জটাভারোহথ মুগুনম। ष्मधिरहाबः वत्न वामः भंदीद्रशतिरभावनम् ।

॥ ৮৭॥৮৮॥৮১॥ ৯০॥ ৯১॥ ৯২॥ ৯৩॥ পবিত্রাণাং দ্বিস্থপর্ণাদি মস্ত্রাণাং ॥ ৯৪॥ ৯৫॥ অভিষেচনং তীর্থের্যজ্ঞান্তেইবভূথেবার্ন্নানং॥ ৯৬॥ জ্ঞাবশ্চিতং

^{* &#}x27;'জ্বলিভাগ্নি সমাহিতে' পুস্তকান্তর পাঠ।

শ্বি ভাবে। ন নির্মালঃ ॥ ৯৭ ॥
ন ছম্বর মনাশিত্ব স্থকর হুশন বিনা।
বিশুদ্ধিঞ্জুরাদীনাং বরামিন্রিয়গামিনার।
বিকারি তেষাং রাজেন্র ! স্থত্ম্বরতরং মনঃ ॥ ৯৮ ॥
যে পাপানি ন কুর্বন্তি মনোবাক্কর্মবৃদ্ধিভিঃ।
তে তপন্তি মহাত্মানো ন শরীরস্তা শোবন্য ॥ ৯৯ ॥
ন জ্ঞাতিভাো দরা যক্ত শুক্রদেহোহ্বিকল্ময়ঃ।
হিংসা সা তপসন্তক্ত নানাশিত্বং তপঃ স্মৃত্য ॥ ১০০ ॥
তিন্তন্ গৃহে চৈব মুনি নিত্য শুচিরলক্ষ্তঃ।
যাবজ্জীবং দয়াবাশ্দ সর্বাপাপেঃ প্রমূচ্যতে ॥ ১০১ ॥
ন হি পাপানি কর্মাণি শুধ্যন্ত্যনশনাদিভিঃ।
সীদত্যনশনাদেব মাংসশোণিতলেপনঃ ॥ ১০২ ॥
অজ্ঞাতং কর্মা কৃত্মা চ ক্লেশো নান্যং প্রহীয়তে।
নাগ্রির্দহতি কর্মাণি ভাবশ্ন্যন্তা দেহিনঃ ॥ ১০০ ॥

॥ ৯৭॥ নছ্করমিতি ইন্দ্রিগামিনাং বিষয়াণাং বিশুক্ষিং বিনা অশনং ভোগাঃ সুকরং ভোগোবিষয়শুক্ষিং নাপেকতে পণ্যাদনাসদাদিনাপি তংসিদ্ধেঃ কিন্তু অনাশিবং অয়তবং ভোগবর্জনং বাতাং বিনা ন স্করং যতোদৃক্ষরং অভাবতো হঃসম্পাদমিতি যোজনা হক্ষরত্বে হেতুমাহার্দ্ধেন বিকারীতি সহক্ষরতরং হর্জয়ং॥ ৯৮॥ ৯৯॥ জ্ঞাতিভাঃ প্রাদার্থে শুক্র-শেহঃ শুক্ররত্ত্বাপজীবী অবিকল্ময়ঃ শুক্ররত্ত্বা মঃ কুটুম্বংশীডয়তি স নিক্ষ-ল্যমোন ভবতীতার্থঃ তত্যোপপাদনমুত্তরণ্ট্রেন হিংসেতি অনাশিবং আশনত্যাপাঃ॥ ১০০॥ ১০১॥ মাংসশোণিতলেপনঃ দেহঃ॥ ১০২॥ অজ্ঞাতং শাজ্রাৎ কিন্তু অয়মেব কম্পিতং তপ্তশিলারোহণাদিতেন ক্লেশ্রব নতু অন্যৎ পাপং প্রহীয়তে ভাবশৃত্তম্যতি তদ্পি ভাবশ্বেং শুক্ষিছেত্ রিতিভাবঃ॥ ১০০॥

পুণাদেব প্রক্রন্তি শুধান্তানশনানি চ।
ন মূলফলভক্ষিত্বান্ন মৌনান্নানিলাশনাৎ ॥ ১০৪॥
শিরসো মুগুনাদ্বাপি ন স্থানকুটিকাসনাৎ।
নজটাধারণাদ্বাপি ন তু স্থগুলশয্য়া॥ ১০৫॥
নিতাং ফ্রন্শনাদ্বাপি নাগ্নিশুক্রমণাদপি।
ন চোদকপ্রবেশেন ন চ ক্ষাশ্য়নাদপি॥ ১০৬॥
জ্ঞানেন কর্ম্মণা বাপি জরামরণমেব চ।
ব্যাধয়শ্চ প্রহীয়ন্তে প্রাপ্যতে চোত্তমং পদম্॥ ১০৭॥
বীজানি হুগ্রিদঝানি ন রোহন্তি পুনর্যথা।
জ্ঞানদঝৈত্তথা ক্রেশে নাত্মা সম্মুজ্ঞাতে পুনঃ॥ ১০৮॥
আত্মনা বিপ্রহীণানি কাঠকুড্যোপমানি চ।
বিনশ্যন্তি ন সন্দেহঃ কেনানীব মহার্ণবে॥ ২০৯॥
আত্মনং বিন্দতে যেন স্ক্রন্তগুহাশ্য়ম্।
শ্লোকেন যুদি বার্দ্ধেন ক্ষ্মীণ্শ তম্ম্য প্রয়োজনম্॥ ১১০॥

পুণাদেব দয়ারপাথ বাজনঃকায়শুদ্ধিরপাক্ষ বৈরাগাশুদিমোকাঃ আর্কুফলাদাশনাদিনেতার্থঃ ॥ ১০৪ ॥ স্থানকুটিকাসনাংস্থাবর গৃহত্যাগাং॥ ১০৫॥
॥ ১০৬॥ বিধিৎসিত্যাই জ্ঞানেনেতি ॥ ১০৭॥ কেশোঃ অবিদ্যাদিন্তিঃ
॥ ১০৮॥ আত্মনতি শরীরাণীতিশেষঃ আত্মনা বিপ্রহীণানি নিরাত্মকা
নিরক্ষারগাদিবং যতঃ কাষ্ঠাদিসমানি জ্ঞানি দৃশ্যানীতার্থঃ এতেন
যদ্শুং তালিখোতি নির্মো দর্শিতঃ মুচ্দ্টগাপি নির্মান্তরমাহ
বিন্দান্তীতি যদ্শাং তদ্বনাশি অতো বিরদ্দিকমহঙ্কারক সাক্ষি
ভাষাত্মাৎ ঘটবিদ্নাবেতার্থঃ ॥ ১০১॥ নান্মি দেহাদিদ্শুরপ ইতি বা
নাহমহঙ্কারাখাদ্ফরপো বান্তম মৎসম্মার দেহা হহারাদিকমিতিবাদ্ধানং
নির্মতে ॥ ১১০॥ দ্বাক্ষরংভত্মিতি বাক্যাৎ অভিসন্ধার শাজাশরং

দ্বাক্ষরাদভিসন্ধায় কেচিৎ শ্লোকপদাঙ্কিতৈ:।
শতি রন্যৈ: সহতৈশচ প্রত্যাে মাক্ষলক্ষণম্ ॥ ১১১ ॥
নায়ং লােকোহন্তি ন পরাে ন স্থং সংশ্যাত্মনঃ।
উচুজ্জানবিদাে রক্ষাঃ প্রত্যাে মাক্ষলক্ষণম্ ॥ ১১২ ॥
বিদিতার্থস্ত বেদানাং পরিবেদ প্রয়ােজনম্ ।
উদ্বিজেৎ স তু বেদেভাাে দাবাগ্রেরিব মানবঃ ॥ ১১৩ ॥
শুষ্কতর্কং শ পরিত্যজ্য আপ্রয়েম্ব ক্রাতিং স্মৃতিম্ ।
একাক্ষরাভিসম্বন্ধং তত্ত্বং হেতুভি রিচ্ছসি।
বুদ্ধির্মিত সাধনস্য বিপর্যায়াঃ ॥ ১১৪ ॥
বেদপূর্বা্ক বেদিত্যা্ প্রয়াগুত্তির বেদন্তস্যাংবাদঃ শরীরম্ ।

কেবলীভাবং জাহা শ্লোকপদে: সত্যংজ্ঞানমনন্তমিতাা-দিভিমন্ত্রপদৈঃ অন্ধিতানি চিছ্লিতানি ত্রান্দানি ত্রন্ধিদাপ্রোতি প্রমি ত্যাদীনি তৈ: উপনিষদাংশতি:সহত্রৈর্বেতার্থ: প্রতারোহং ব্রশ্যীতাল ভ : यम्किक: जारम्के, प्रानिकारलाकमाक्किक: (माक्यलकनः छापकः ১১১ ॥ ১১২ ॥ পরিবেদসাকল্যেনবেদ বিদিতার্থো জ্বাতাত্বতঃ বেদ্যেক-কর্মভাঃ ॥ ১১৩ । শুক্কভর্ক্র প্রপঞ্চ: সভ্যোহবাধাত্বাৎ আত্মবৎবাভিরেকেন শুক্তিরজভবদেত্যাদিরূপং অগতিং নেহ নানান্তি কিঞ্চনেতি স্মৃতিং অজ্ঞান প্রভবাবোকাবেদা শ্রাজ্ঞানসম্ভবাঃ বিদিতাতা সতত্ত্ব নেহ নানান্তি কিঞ্চনেত্যাদিকাং জগদ্বাধপ্রদর্শিনীং আশ্রয়স্থ নৈষা তর্কেণ মতিরাপনেয়া নাবেদ্বিশ্বসূত্তে তংরুহন্ততমিতি আংতিভাগে একং চ তৎ অক্ষরং ব্যাপকং ত্তিবিধভেদশুনাং বস্তুতংসংবদ্ধং জ্ঞাতি স্মৃতিভত্তং হেডুভিঃ শ্রৌত্যুক্তিভিঃ অন্নেন সোমাশুংগে নাপোবূল মন্বিচ্ছ অন্তিঃ সোমাশুংগেন তেজোমূল-মহিচ্ছ তেজনা দোমাশুংগেন সন্নমৰিচ্ছ সন্লা: দোমোমা: প্ৰজা केळानिष्ठिः कार्यानिष्ठरक नानुमारनन शत्रभकादनः नर्गत्रक्षीष्ठः एएरान কার্ষ্যেণ মূলং কারণং ইচ্ছাস যদীতি শেষঃ বৃদ্ধিশুজুজানং সাধনস্য 'শমানেঃ শাস্ত্রাদেঃ বিপর্যায়াৎ অভাবাৎ অবৈদিকত্বাদা। ১১৪।

^{* &}quot;শুষ্কং তৰ্কং" ইত্যেবং পৃথক পাচঃ পুশুকান্তৰতা।

বেদস্তন্ত্র তৎসমাদোপশকো,

ক্লীকন্ত্ৰাক্সা তৎ স বেদ্যস্য বেদ্যম্॥ ১১৫॥
বেদাক্তমাযুর্দেবানামাশিবশৈচব কর্ম্মণাম্।
কলত্যন্ত্রপুগং লোকে প্রভাবশ্চ শরীরিণাম্॥ ১১৬॥
ইন্দ্রিয়াণাং প্রসাদেশ তদেতৎ পরিবর্জয়েও।
তত্মাদনশন্দ দিব্যাদ নিরুক্তিয়গোচরম্॥ ১১৭॥
তপ্যা স্বর্গমন্দ ভোগো দানেন জায়তে।
জ্ঞানেন মোক্ষো বিজ্ঞেয়ন্তীর্থস্কানাদ্যক্ষয়ঃ "—॥ ১১৮॥

বেদেতি তদক্ষরং তত্ত্বং নেদঃ প্রাণবঃ বাচ্য বাচকয়োরভেদাৎ শরীরং প্রতিপ্রমাপ্রণবদ্ধবিব তদ্ধিগ্মস্য সর্বতি দর্শনাৎ তথাচন্ডাতিঃ এত দৈ স্ত্যকাম্পরঞ্পেরং ব্রহ্মযদোক্ষারস্তম্মাদ্বিদ্বানেতে নৈদায়তনে নৈকতর-মনেতীতাাদিকা বেদস্তত্ত্বং তত্ত্বাধিগমহেতুঃ তৎসমাসোপ লক্ষো তদ্য-বেদস্য সম্পাঃ সংক্ষেপঃ প্রলায়েত্ব সতৎসম্পাস আত্র। যত্র বেদা অবেদা ইতি শ্রুতে: তদ্যো পলকো আত্মাক্লীব: অপ্রকাশ আত্মানঘটবৎ স্বাত্মানং প্রকাশরতি সাঅনিহতি বিরোধাৎ কথংতহি তজ্জানস্য সাধ্যহমূচ্যত ইত্যাশস্ক্রাহ তৎসবেদ্যস্য বেদ্যমিতি তত্তব্যাৎসঃ আত্মাবেদ্যস্য বুদ্ধিসন্ত্রস্য বেদাংজ্যেং দৃশ্যতেত্ত্তায় বুদ্ধামনসৈধানুক্তকীয় মিত্যাদিজ্ঞতিত্য কথং ভহিব্যানসা নম্ভত ইত্যাদি অবণং উচাতে চক্তঃ সনিহিতং কুন্তং যথা সুর্বো বিভাসফেৎ চিত্তকুত্তা তথা ব্যাপ্তং চিদালৈর প্রকাশয়েৎ স্বপ্রকাশং চিদাত্মানং রতিরাত্মন্তরং ভাসয়েন্ডাক্ষরমিব চক্ষু: স্ব্যান্তরং বিনার্ত্তিব্যাপ্তিমপে কৈব বেদারং প্রাক্তরামন্ত চিদন্তরানপৈক্ষাদ বেদ্যাৰং তথাগমাঃ আগমাঃ ব্যানসান্মভ্ৰতেমন সৈবাভ্ৰাক্টব্য মিত্যাদ্যা-বিজ্ঞাতারমরেকেন বিজানীয়াদিতিশ্রুতি: নিরাকরেছতি বেদ্যত্ব মনবস্থা: ভাষাদিতি ॥ ১১৫ ॥ ১১৬ ॥ প্রসাদেন নৈমলোন অনশনং নাম চিত্তে ক্রির নিরোধো নুবাহারত্যাগ ইত্যাহতশাদিতি ॥ ১, ৭ ॥ উক্তমর্থৎ পিণ্ডীকৃত্যাহ তপ্রেতি তপ্রাস্থর্যা চরণেন ৷ ১১৮ ৷

বৈশস্পায়ন উবাচ।

এবমুক্তস্ত রাজেন্দ । প্রত্যুবাচ মহাযশাঃ। 'ভগবন্! প্রোতুমিচ্ছামি * প্রদানবিধিমুক্তমম্ "--॥ ১১৯॥

মার্কতের উবাচ।

ে যত্ত্বিচ্ছিসি রাজেন্দ্র । দানধর্মং যুধিস্ঠির । ।
ইউপ্লেদং সদা মহাং রাজন্ ! গৌরবতস্তথা ॥ ১২ • ॥
শূবু দানরহস্যানি শ্রুতিস্মৃত্যুদিতানি চ ।
ছারায়াং করিবঃ আদ্ধং তৎকর্নপরিবীজিতে * ।
দশ কম্পাযুতানীহ ন ক্ষীয়েত যুধিস্ঠির । ॥ ১২১ ॥
জীবনায় সমাক্লিন্দ্র কর্ববিষ্ট্রেঃ সহীপতে । ।
বৈশ্যন্ত বাসয়েদ্যস্ত সর্ববিষ্ট্রেঃ স ইউবান্ ॥ ১২২ ॥
প্রতিল্যোতশ্চিত্রবাহাঃ পার্দ্ধন্যোহ্নামুসঞ্চরন্ ।
মহাধুরি যথা না বা সহাপাপোঃ প্রমৃচ্যতে ॥ ১২৩ ॥

॥১১৯॥১২০॥চ্ছায়ায়াং করিণঃ গুর্বমানোগেছখার্যসাজ্ছায়ায়ায় পর্বদেশকাল্যোগ্রুৎ করিব কর্ণা অশ্বর্যপ্রবাইন্তঃ বীজিতে দেশে জলোপান্তে
॥১২১॥ সমাক্রিয়ং আর্ডংবস্থ অনাদিদ্রবং বৈশাং বিশন্তামিরিতি বেশো
ধর্মগৃহং তদ্ধি কারিণং বৈশাং রুদ্ধ্যৌষধাখ্যায়ধনে ত্রিষ্বরের বস্থ স্তুতমিতি
বেশো বেশাগৃহে প্রোক্তো নৈপথ্যে গৃহমাত্রকে ইতি চ বিস্থঃ॥১২২॥
প্রতি শ্রেতিকত বাহাইতিসার্দ্ধঃ প্রোক্তঃ প্রতিপ্রতীপং পূর্ববাহিনা।ঃ
নদ্যাঃ পশ্চিমাভিমুখং আেতঃ প্রবাহো যত্রতংতীর্থং প্রতিপ্রোতঃ তর্ত্রশাত্রেইপিতাশিক্রবাহা উত্তমাশ্বাঃ বিগরিণমা অন্ধ্রাইত্রপক্রতে
অক্ষয়কলাইতার্থঃ পর্জনোরাল্লগরুর্ব্ অন্নর্থং অলুসঞ্চরন্ গর্জনাইন্দ্রোন্তর্বাক্তঃ অতিথিরপেন তৃপ্তইন্দ্রোপ্রক্রন্ স্থাপ্রক্রের্বার্যাইনার্বার্যার হলাব্রুছঃ। মহাধুরিমহতিধঃ সদৃশ্প্রবাহে বিপ্রবে রাহ্পরার্বার্যার হিপ্রেল্ডানি বিপ্রেল্ডানি নাপুরয়েবার্যাহাধুরিযোগভারে হথাসর্বপাপেঃ প্রমুচাতে তথাৰ গ্রুক্তারা আদ্বাদিকর্তারোপি মুচ্তইত্যর্থঃ
॥১২০॥ পর্বস্থ দশাদিষ্

 ^{*} প্রধান বিধি মুক্তম মিশ্তি পাশ্চাত্যাঃ পঠন্তি।
 * বীজিতৎ ইতি ক পাঠঃ।

विश्वदि विश्वप्रकानि मिथ्रस्य क्रमानि ह। পৰ্কস্থ দ্বিগুৰ্ণ দানমূতো দশগুৰ্ণ ভবেৎ।। ১২৪।। (অব্দেশত গুণং প্রোক্তমনন্তং বিষুবে ভবেৎ) 🐾। অয়নে বিষুবে চৈব ষড়শীতিমুখেষু চ। চন্দ্রহাপেরাগে চ দত্ত মক্ষয় মধাতে 🐕 ॥ ১২৫॥ ঋতুষু দশগুণ বদন্তি দত্ত , শতগুণমূত্মনাদিষু ধ্বম। ভবতি সহস্রগুণং দিনস্থা রাহো, র্কিষুবতি চাক্ষয় মশ্লুতে ফলম্॥ ১২৬॥ নাভূমিদে। ভূমিমশ্বাতি রাজন্, নাযানদো যানমারুছ যাতি। যান যান কামান্ ব্রাহ্মণেভ্যো দদাতি, তা তা বা কামান জায়মান: স ভুঙ্কে ॥ ১২৭॥ অথ্নে রপত্যং প্রথম স্থবর্ণং, ভূবৈৰ্ফ্ষৰী স্থ্যাস্থতাশ্চ গাৰ:। লোকাস্ত্রয়ন্তেন ভবন্তি দত্তা, यः काक्षन न नाम्ह महीक्षणणां ॥ ১२৮॥ পরং হি দানান্ন বভূব শাখতং, ভব্যৎ ত্রিলোকে ভবতে কুতঃ পুনঃ। তশ্মাৎ প্রধানং পরমণ হি দানং, বদন্তি লোকেষু বিশিক্টবুদ্ধরঃ"—৷ ১২৯ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয় সমাস্তা পর্বাণ দান মাছাত্ম্য কথনে দ্বি-শত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২০০॥

॥ ১২৪॥ বিষুবেজুলা মেষসংক্রান্ত্যোঃ ষড়শীতিমুখে মিখুন কনা। মীনসং काल्डियू ॥ ১२० ॥ ১२७ ॥ कामान् कामामानान् विवशन् ॥ ১२० ॥ ১२० ॥ ১२० ॥ ইতারেণাকে পর্ব্বণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে

দ্বিশতভমোহ্ধ্যারঃ॥ ২০০॥

^{*} নান্ত্যেষ্চ্ংশং ক-পুস্তকে। * उठाएउ रे उ क।

रिवमन्शाशन छेवाह। শ্রুত্বাজা রাজর্ধেরিন্দ্রগ্রুস্যা তত্তথা। মার্কণ্ডেয়ান্মহাভাগাৎ স্বর্গদ্য প্রতিপাদনম্। ১॥ যুধিষ্ঠিরো মহারাজ ! পপ্রচ্ছ ভরতর্বভঃ। মাৰ্কণ্ডেয়ং তপোরদ্ধং দীর্ঘাযুষ মকল্মষম্ ॥ ২॥ " বিদিডাস্তব ধর্মজ্ঞ। দেবদানবরাক্ষসাঃ। রাজবংশাশ্চ বিবিধা ঋষিব~শাশ্চ শাশ্বতাঃ॥ ৩॥ ন তেইস্তাবিদিত কঞ্চিদিমিলে কৈ দিজে।তম!। কথাং বেংসি মুনে ! দিব্যা । মনুষ্যোরগরক্ষদাম্ ॥ । । দেবগন্ধবিযক্ষাণাং কিন্নরাপ্সরসাৎ তথা। ইদ্মিচ্ছামাহং শ্রোতৃং তত্ত্বেন দ্বিজসন্তম।॥৫॥ কুবলাশ্ব ইতি খ্যাত ইক্ষ্বাকু রপরাজিতঃ। केथ- नामविश्वशामाक्कूमातेष मागजः॥ ७॥ এতদিচ্ছামি তত্ত্বেম জ্ঞাতৃং ভার্গবসন্তম।। বিপর্যান্তং তথা নাম কুবলাশ্বস্য ধীমত: "—॥ ৭॥ रेवनम्भाग्रत छेवाह । যুধিষ্ঠিরেবৈণৰ মুক্তো মার্কণ্ডেয়ে। মহামুনিঃ। ধৌকুমার মুপাখ্যানং কথয়ামাস ভারত।।৮।

হন্ত তে কথ রিব্যামি শৃণু রাজন্ যুথিন্ঠির!।
ধর্মান্ঠমিদমাখ্যানং ধুকুমার স্থা তচ্চুণু॥ ৯॥
যথা স রাজা ইক্ষ্যাকুঃ কুবলাশ্যো মহীপতিঃ।
ধুকুমারত্ব মগমৎ তচ্চুণুষ মহীপতে!॥ ১০॥

ভাগতে ধ্রীণাং রাজাং চলোক কণ্টকাদ্ধরণং পরমেশ্বর প্রীতিকর দিতিরুদ্ধুমারোপাখ্যানতাৎপর্যাৎ পদার্থঃস্পটঃ ॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥

মাৰ্কণ্ডেয় উৰাচ।

মহ বিকিঞ্জিত স্তাত, উতস্ক ্রু ইতি ভারত !।

সরুধন্ম রম্যেরু আশ্রমস্তম্য কৌরব ! ॥ ১১ ॥

উত্তম্প্র মহারাজ ! তপোহতপ্যৎ স্থুতুশ্চরম্ ।

আরিরাধ্য়িরু কিঞ্ং বহুন বর্ষগণান্ বিভুঃ ॥ ১২ ॥

তক্ষ প্রীতঃ স ভগবান্ সাক্ষাদ্দর্শন মেঘিবান্ ।

দৃক্তৈব চর্ষিঃ প্রস্তান্ত বিবিধৈঃ স্তবৈঃ ॥ ১৩ ॥

উত্তম উবাচ।

" ত্বরা দেব। প্রজাঃ সর্বাঃ সম্বরাস্থরমানবাঃ। স্থাবরাণি চ ভূতানি জঙ্গমানি তথৈব চ॥ ১৪॥ ব্রহ্ম বেদাশ্চবেদ্যথ্য ত্বয়া স্বন্ধং মহাত্রাতে! । শিরস্তে গগণত দেব ! নেত্রে শশিদিবাকরৌ॥ ১৫॥ নিশ্বাসঃ প্রণশ্চাপি তেজোংগ্লিশ্চ ত্রাচ্যুত!। বাহ্বন্তে দিশঃ স্বাঃ কুক্ষিশ্চাপি মহার্ণবঃ ॥ ১৬॥ উৰতে পৰ্বতা দেব। খং জচ্ছে মধুস্থদন।। পাদৌ তে পৃথিবী দেবী রোমাণোষধয়ন্তথা। ১৭॥ ইন্দ্রসোমাগ্রিবরুণা দেবাস্থর মহোরগাঃ। প্রহ্বান্তা মুপতিষ্ঠন্তি স্তবস্থো বিবিধৈঃ স্তবৈঃ ॥ ১৮॥ ত্বয়া ব্যাপ্তানি সকাণি ভূতানি ভূবনেশ্বর !। याशिनः स्मरावीर्याः खरिख द्वार मर्स्यः । ১৯॥ ত্বয়ি তুটে জগৎ স্বস্থং ত্বয়ি ক্রুছে মহন্তয়ম্। ভगाना में भारत जानि चरमकः श्रेक्स साख्य । ॥ २०॥ ় দেবানাং মানুষাণাঞ্চ সর্বাভূতস্থাবহ:। ত্রিভিব্বিক্রমটন দেব। ত্রয়ো লোকাস্ত্রা হৃতাঃ। ২১॥ 1 22 1 22 11 20 11 28 11 20 11 20 11 29 11 25 23 11 20 11 22 11

^{* &#}x27;উত্তরু' ইতি ত-কারদ্বর্যৎ পাঠো বা।

তব বিক্রমণৈর্দেবা নির্বাণমগমন্ পরম্। ২২ ॥
পরাভূতাশ্চ দৈত্যেন্দ্রান্ত্র বিক্রান্তর কুদ্দে মহাক্যতে !।
ত্বং হি কর্তা বিক্রা চ ভূতানামিহ দর্বশং। ২৩॥
আরাধ্য়িত্বা ত্বাং দেবাং স্থামেধন্তি দর্বশং"।
এবং স্তাতো ক্র্বীকেশ। উতক্ষেন মহাত্মনা॥ ২৪॥
উতক্ষ মত্রবীকিষ্ণুঃ প্রীতন্তেইহং বর্ণ র্ণু।

উত্তর উবাচ।

ে পর্য্যাপ্তো-মে বরো স্থেষ যদহং দৃষ্টবান্ হরিম্ ॥ ২৫॥ পুরুষৎ শাশ্বতং দিব্যংস্রাফারৎ জগতঃ প্রভুম্ "—। বিষ্ণুক্ষবাচ।

"প্রীতস্থেইরুলোল্যেন ভক্ত্যা চ তব সন্তম! ॥ ২৬॥
অবশ্যং হি ত্বয়া ব্রহ্মন ! মজে প্রাহ্যা বরো দ্বিজ ! "—
† " এবং সংছন্দ্যমানস্ত বরেণ হরিনা তদা ॥ ২৭॥
উত্তম্ব: প্রাঞ্জলি ব্বব্রে বরু ভরতসন্তম । ‡।
" যদি মে ভগবান প্রীতঃ পুশুরীকনিভেক্ষণ!॥ ২৮॥
ধর্ম্মে সত্যে দমে চৈব বুদ্ধির্বতু মে সদা।
অভ্যাসশ্চ ভবেদ্ভক্ত্যা ত্বরি নিত্যং মমেশ্বর!"—॥ ২৯॥
ব্রীভগবাহ্বাচ।

" সর্বামেতদ্বি ভবিতা মৎপ্রসাদান্তব দিজ।।" প্রতিভাস্যতি যোগশ্চ যেন যুক্তো দিবৌকসাস্॥ ৩০॥ ॥ ২২॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০॥

^{*} এবং স্তুত ইত্যস্য প্রাক্ " মার্কতেয় উবাচ " ইত্যাধিক পাঠঃ ক' পুস্তুকে দৃশ্যতে।

ণ এবং সংছন্দ্যমানস্ত ইতাসাঁপ্রাক্ " মার্কণ্ডেয় উবাচ " ইতি লভ্যতে পুশুকান্তরে।

[🚦] বদি মেভগবানি তাসাপ্রাক্ ' উতঃ উবাচ ' ইতি ক্র-পুস্তকে লভ্যতে।

ত্রাণামপি লোকানা মহৎ কার্য্যং করিষ্যদি।
উৎসাদনার্থ লোকানাং ধুন্ধুর্নাম মহাস্থরঃ ॥৩১॥
তপদ্যতি তপো ঘোরং শুণু য়ন্তং হনিষ্যতি।
রাজা হি বীর্য্যবাংস্তাত! ইক্ষাকু রপরাজিতঃ ॥৩২॥
রহদশ্ব ইতি খ্যাতো ভবিষ্যতি মহীপতিঃ।
তদ্য পুত্রঃ শুচিদ্দান্তঃ কুবলাশ্ব ইতি ক্রুতঃনা ৩৩॥
দ যোগবলমাস্থায় মামকং পার্থিবোত্তমঃ।
শাসনান্তর বিপ্রর্থে বিষ্ণু রন্তর্ধীয়ত "—॥৩৪॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয়সমাস্যাপর্বাণ ধুন্ধুমারো .
পাখ্যানে একাধিক দ্বিশততমোধ্যায়ঃ ॥২০১॥

মার্কণ্ডের উবাচ।

"ইক্ষাকৌ সংস্থিতে রাজন্। শশাদঃ পৃথিবীমিমাম্।
প্রাপ্তঃ পরমধর্মাত্মা সোহযোধ্যায়ান নৃপোহভবৎ॥ ১॥
শশাদস্য তু দায়াদঃ ককুৎস্থো নাম বীর্যাবান্।
অনেনাশ্চাপি কাকুৎস্থঃ পৃথুশ্চানেনসঃ স্কুতঃ॥ ২॥
বিশ্বগশ্বঃ পৃথ্যোঃ পুত্রস্তমাদ। দ্রিশ্চ * জজ্জিবান্।
অদ্রেশ্চ যুবনাশ্বস্ত প্রাবস্তস্যাত্মকোহভবৎ॥ ৩॥

1 82 1 00 1 50 11 60 11

ইত্যারগাকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে একাধিকদ্বিশততমে ২গায়ঃ ॥ ২০১॥

ইকাকাবিভি॥১॥২॥৩॥

* আত্র ইতি ক-পাঠঃ।

তগ্য আৰম্ভকো জেয়: আৰম্ভী যেন নিৰ্দ্বিতা। আবিস্তক্ষ্য 4 দায়াদো বুহ্দখো মহাবলঃ ॥ ৪ ॥ র্হদখন্য দারাদঃ কুবলাশ্ব ইতি স্মৃতঃ। কুবলাখন্য পুজাণাং সহস্রাণ্যেকবিংশতিং ॥ ৫॥ সর্বে বিদ্যাস্থ নিষ্ণাতা বলবন্তঃ স্থদারুণাঃ। কুবলা**খন্চ পিতৃতো গুণৈ** রভ্যধিকোইভবৎ ॥ ৬ ॥ সময়ে ত পিতা রাজ্যে রুহ্দশোহভ্যবেচয়ং। কুবলাশ্বং মহারাজ। শূর মুত্তমধার্শ্মিকম্ ॥ ৭ 🛊 পুত্রসংক্রামিতঞ্জির রুহদশ্বে। মহীপতিঃ। জগাম তপদে ধীমাংস্তপোৰন মমিত্রহা "-॥ ৮॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ। ' অথ শুশ্রাব রাজর্ষি ত মুত্তকো নরাধিপ !। বনং সংপ্রস্থিতং রাজন্ ! রুহদশ্বং দ্বিজোত্তম: ॥ ৯॥ ভ মুক্তকো মহাতেজাঃ দক্ষাস্ত্রবিত্বয় হরম্। ন্ত্রিরদমেয়াত্মা সমাসাদ্য নরোক্তমম্ "-1 ১০ ॥ উত্তর উবাচ। ' ভবতা রক্ষণ কার্যাং তত্তাবৎ কর্তুমর্হসি । নিরুদ্বিশা বয়ং রাজংস্তুৎপ্রসাদান্তবেম হি॥ ১১॥ ष्या हि शृथिवी ताजन् ! तकामाना महाजना । ভবিষ্যতি নিরুছিগ্না নারণ্যৎ গন্তসর্হসি॥ >২॥ পালনে হি মহানু ধর্মঃ প্রজানামিছ দৃশ্যতে। ন তথা দৃশ্যতেহরণ্যে মা ভূত্তে বুদ্ধিরীদৃশী ॥ ১৩ ॥ केनुरमा न हितारककः ! धर्त्यः कृतन नृभारक । প্রজানাং পালনে যো বৈ পুরা রাজবিভিঃ কৃতঃ ॥ ১৪ ॥

* '' প্রাবস্তানা তু '' ইতি ক, য।

রক্ষিত্রব্যাঃ প্রজা রাজ্ঞা তান্ত্রং রক্ষিতু মর্হাস। নিকুদ্বিস্তপশ্চভুং ন হি শক্ষোমি পাৰ্থিৰ ! ॥ ১৫॥ मनाधाममशील देव मरमयु मझभस्य । সমুদ্রো বাল্পুকাপূর্ণ উজ্জ্বালক ইভিমৃত: ॥ ১৬ ॥ वक्र्याकनिवजीर्गा वक्रयाकनमायुकः। তত द्रोटका मान्द्रदक्षा महावीर्घार्यंत्राकंगः ॥ >१ ॥ মধুকৈটভয়োঃ পুত্রো ধুকুর্নাম স্থানারুণঃ। অন্তর্গুমিগতে। রাজন্ ! বসত্যমিতবিক্রমঃ ॥ ১৮ ॥ তং নিহত্য মহারাজ। বনং ত্বং গন্তমর্হসি। শেতে লোকবিনাশার তপ আস্থায় দারুণ্য ॥ ১৯॥ जिन्मानाः विनामात्र लाकानाकाि भाषिव !। অবধ্যো দেবতানাং হি দৈত্যানা মথ রক্ষ্যাস্॥ ২০॥ नाशानामथ यक्तानार शक्तवानाक गर्वामः। অবাপ্য স বরং রাঞ্জীন ! সর্বলোকপিতামহাৎ ॥ ২১ ॥ তং বিনাশয় ভদ্রু তে মা তে বৃদ্ধিরতোহন্যপা। প্রাপ্যানে মহতীং কীর্ত্তি শাশ্বতীমব্যয়াং ধ্বাস্ ॥ ২২ ৮ ক্রুরম্ম তম্ম স্বপতো বালুকান্তর্হিতম্ম চ! সম্বংসরম্ভ পর্যান্তে নিশাস: সম্প্রবর্ততে ॥ ২৩॥ যদা তদা ভুশ্চলতি সংশলবনকাননা। তম্ম নিশ্বাসবাতেন রজ উদ্ধৃয়তে মহৎ॥ ২৪॥ আদিত্যপথমাশ্রৈত্য সপ্তাহং ভূমিকম্পনম্। अतिकृतिकः गजानः धूमिष्यः सुनाकः गम्॥ २०॥ তেন রাজন শক্ষোমি তিম্মিন স্থাতুং স্ব আশ্রেম। তং বিনাশয় রাজেন্দ্র । লোকানাপ হিতকাম্যয়া ॥ ২৬ ॥ 1 5 C || 5 O || 5 7 H 5 C || 3 লোকাঃ স্বন্ধা ভবিষান্তি তেমিন্ বিনিহতেই সুরে।

ত্বং হি তস্থা বিনাশার পর্যাপ্ত ইতি মে মতিঃ॥ ২৭॥
তেজদা তব তেজদ্ব বিষ্ণু রাপ্যান্তরিষ্যাতি।
বিষ্ণুনা চ বরো দক্তঃ পুর্বাণ মম মহীপতে !॥ ২৮॥
যস্তং মহাসুরং রৌক্রান্ত বিষয়তি মহীপতিঃ।
তেজস্ত বৈষ্ণবমিতি প্রবেক্ষাতি তুরাসদম্॥ ২৯॥
তত্তেজস্ত সমাধায় রাজেন্দ্র ! ভুবি তুঃসহম্।
তে নিস্থার রাজেন্দ্র ! দৈতাং রৌক্রপরাক্রমম্॥ ০০॥
ন হি ধুন্ধু র্মাহাতেজান্তেজসাল্পেন শক্যতে।
নির্দিশ্ব পৃথিবীপাল ! স হি বর্ষ তিরপি ত্বান্তর্যাকে পর্বানি মার্কণ্ডেয়দমাস্যাপর্বানি ধুন্ধুমারো
পার্থানে দ্বাধিক দ্বিশততমোধ্যায়ঃ॥ ২০২॥

মার্কতের উবাচ।

'স এবমুক্তো রাজর্ষি রুত্তক্ষেনাপরাজিতঃ।
উত্তক্ষং কৌরবশ্রেষ্ঠ! রুতাঞ্চলি রথাত্রবীৎ ॥ > ॥

"ন তেহভিগমন ত্রহ্মন্। মোঘ মেত্তবিধ্যতি।
পুত্রো মমায়ং ভগবন্! কুবলাশ্ব ইতি স্মৃতঃ ॥ ২ ॥
ধ্যতিমান্ ক্ষিপ্রকারী চ বীর্যোণা প্রতিমো ভূবি।
প্রিয়ঞ্চ তে সর্কমেতৎ করিষ্যতি ন সংশয়ঃ॥ ৩ ॥

॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০॥ ৩১॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে

দ্যক্ষিক্দিশততমেণ্ড্গায়ঃ॥ ২০২॥

সএবমিতি ১॥২॥৩॥

পুজে: পরিবৃত: সর্ধৈ: শূরে: পরিঘবাছভি:। বিসৰ্জ্ঞান্থ মাং ব্ৰহ্মনু! নান্তশন্ত্ৰোহন্মি দাক্ষতম্ ''—॥ ৪॥ তথাস্থিতি চ তেনোক্তো মুনিনামিততেজসা। স ত মাদিশা তনয় মুত্তকায় মহাত্মনে। ৫॥ ক্রিয়তামিতি রাজর্ষি জ্গাম বন মুক্তমম্। যুধিষ্ঠির উনাচ। "ক এষ ভগবনু ! দৈত্যো মহাবীৰ্যান্ত পোৰন ।॥ ৬॥ কস্য পুল্রোহথ নপ্তা বাপ্সেতদিছামি বেদিতুম্। **এবশ্বহাবলো দৈত্যো ন জ্ঞাতো মে তপোধন!॥१॥** এতদিছামি ভগবন ! ফাথাতথােন বেদিভুম্। সর্কমেত্রহাপ্রাজ্ঞ ! বিস্তরেণ তপোধন। "—॥ ৮॥ মার্কতের উবাচ। " শুণু রাজনিদং সর্বাং যথারতঃ রুরাধিপ !। কথ্যমানং মহাপ্রাক্ত। বিস্তরেণ যথাতথ্যু ॥ ৯॥ একার্ণবে 4 তদা লোকে নফে স্থাবরজঙ্গমে। প্রনফেষু চ ভূতেষু সর্বেষু ভরতর্ষভ । ॥ ১ ।॥ প্রভবং লোককর্ত্তার বিষ্ণুং শাশ্বত মব্যয়ম। य मारुप्रेनशः निकाः नर्नतानगरस्थतम् ॥ >> ॥ সুম্বাপ ভগবান বিষ্ণু রপ্স যোগত এব সং। নাগস্য ভোগে মহতি শেষস্যামিততেজসঃ । ১২ । লোককর্তা মহাভাগ। ভগবানচুতে। হরিঃ। নাগভোগেন মহতা পরিরভ্য মহীমিমাম্॥ ১৩॥ স্থপতস্তুস্য দেবস্য পদ্মং সূর্য্যসমপ্রভং। নাভ্যাপ বিনিঃস্তং দিব্যং তত্তোৎপন্নঃ পিতামহঃ॥ ১৪॥ • 2 1 20 11 25 11 25 11 20 11 28 11

* 'ভথা ' ইতাত্ত্ব ' তদা * ইতি ক।

সাক্ষালোকগুরুর না পদ্মে সূর্যাসমপ্রভে। চতুর্বেদশ্চতুর্গুভিস্তবৈর চ চতুমুখিঃ। ১৫॥ স্প্রভাবাদ রাধর্ষো মহাবলপরাক্রমঃ। कमाहिज्ञ्थ कालमा मानरनी वीर्यावज्रस्मो ॥ ১७ ॥ মধুশ্চ কৈটভশৈচৰ দৃষ্টবন্তৌ হরিং প্রভুম্। শরানং শয়নে দিব্যে নাগভোগে মহাত্যুতিম্॥ ১৭ ॥ वहरयां कर्नावसीर्ण वहरयां कर्माश्र दि কিরীটকৌস্তভধরং পীতকোশেয়বাসসম্॥ ১৮॥ দীপ্যমানং শ্রিয়া রাজনু! তেজসা বপুষা তথা। সহস্রপ্রতিম মন্ত্রোপমদর্শনম্॥ ১৯॥ বিসায়ঃ স্থমহানাসীমধুকৈটভয়োন্তথা। দৃষ্ট্র পিতামহঞ্চপি পদ্মে প্র্যানভেক্ষণম্ ॥ ২০॥ বিত্তাসয়েতামথ তৌ ব্ৰহ্মাণ মমিতৌজসম। বিত্রাস্যমানো বস্তুশো ব্রহ্মা ভাজ্যাং মহাযশাঃ॥ ২১॥ অকম্পয়ৎ পদ্মনাল্ ততোহ্ৰুধ্যত কেশবঃ। অথাপশ্যত গোবিন্দো मान्दो वीर्यावखदतो ॥ २२॥ मुक्ते। जा वजवीत्मवः श्वांशज्य वार महावत्नो । দদামি বাং বর়∿ শ্রেষ্ঠ৲ প্রীতি (
₹ মম জায়তে ॥ ২৬ ॥ তৌ প্রহুস্য ক্ষীকেশৎ মহাদপৌ মহাবলৌ। প্রত্যবুতা মহারাজ ! সহিতৌ মধুস্থদনম্ ॥ ২৪ ॥ আবাং বরয় দেব ! ত্বং বরদৌ ত্বঃ ত্বরোত্তম !। দাতারো স্বোবরং তুভাং ত্রুবীহাবিচারয়ন্ "- ॥ ২৫ ॥ @ || 26 || 29 || 28 || 28 || 20 || 20 || 28 || 20 || 28 || 20 || 2

হ গৰাভুৰাচ।

" প্রতিগৃহ্ছে বরং বীরাবীপ্সিত দ্ব বরো সম।

যুবাং হি বীর্যাসম্পন্নো ন বামন্তি সমঃ পুমান্ ॥ ২৬ ॥

বধ্যত্ব মুপুগচ্ছেতাং মম সত্যপরাক্রমৌ।

এতদিছাম্যহং কামং প্রাপ্ত্রু লোকহিতায় বৈ "—॥ ২৭ ॥

মধুকৈটভাবুচত্বঃ।

ে অনৃতং নোক্তপূর্বান বা কৈরেছিপি কুডোইনাথা।
সত্যে ধর্ম্মে চ নিরতৌ বিদ্যাবান পুরুষোত্তম ! ॥ ২৮ ॥
বলে ৰূপে চ সৌন্দর্য্যে শমে চ ন সমোইস্তি নৌ।
ধর্ম্মে তপসি দানে চ দীলসন্ত্রদমেষ্ চ ॥ ২৯ ॥
উপপ্রবো মহানস্মানুপাবর্ত্ত কেশব!।
উক্তং প্রতিকুরুষ তা কালো হি চুরতিক্রমঃ॥ ৩০ ॥
আবামিচ্ছাবহে দেব ক্রতমেকং ত্র্যা বিভো!।
অনারতেইসিন্নাকাশে বধং স্থ্রবরোত্তম!॥ ৩১ ॥
প্রত্ত্ব মধিগচ্ছাব স্তব চাপি স্থলোচন!।
বর এষ রতো দেব! তদিদ্ধি স্থরসন্তম!॥ ৩২ ॥
অনৃতং মা ভবেদ্বেব! যদ্ধি নৌ সংপ্রুত্ত তদা "—

জীভগবাভ্বাচ।
'বাচমেবং করিষ্যামি সর্বামেতদ্ভবিষ্যতি ''—॥ ৩৩॥
মার্কণ্ডের উবাঃ।

' বিচিন্তা ত্বথ গোবিন্দো নাপশাদ্যদনার্তম্। অবকাশং পৃথিব্যাম বাদিবি বা মধুস্থদনঃ॥ ৩৪॥

11 3 9 11 3 9 11 3 9 11 9 9 11 9 3 11 9 3 11 9 9 11 9 8 11

^{* &#}x27;तो ' इंजाब ' देव ' दें कि क, म।

স্থাবনারতাব্র দৃষ্ট্বা দেববর স্তদা।
মধুকৈটভয়ো রাজন্ ! শিরসী মধুস্থদনঃ।
চক্রেণ শিতধারেণ ন্যক্তত মহাযশাঃ "—॥ ৩৫ ॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি মার্কপ্রেয়সমাস্যাপর্বাণি ধুস্কুমারোপাখ্যানে ত্রাধিক দিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২০৩॥

মার্কতের উবাচ।

" ধুরুর্নাম মহারাজ। তরোঃ পুজাে বিছাতিঃ।

স তপাহতপ্যত মহৎ মহাবীর্যপরাক্রমঃ॥ ১॥

অতিষ্ঠদেকপাদেন ক্লো ধমনিসন্ততঃ।

তক্ষৈ ব্রহ্মা দদৌ প্রীতো বরং বব্রে স চ প্রভূম্॥ ২॥

দেবদানব্যক্ষাণাং সর্পান্ধরেক্ষসাম্।

অবধ্যোহহং ভবেয়ং বৈ বর এব রতো ময়া॥ ৩॥

এবং ভবতু পচ্ছেতি ত মুবাচ পিতামহঃ।

স এব সুক্তন্তংপাদৌ মূর্না ক্লুগা জগাম হ॥ ৪॥

স তু ধুরুর্বার্ক লক্ষ্মা মহাবীর্যপরাক্রমঃ।

অনুমারন্ পিতৃবধক ক্রতং বিষ্ণু মুপাগমৎ॥ ৫॥

স তু দেবান্ সগক্ষর্বান্ জিত্বা ধুকু রমর্ষণঃ।

ববাধ সর্বানসক্র দিষ্কুক দেবাক্ষ বৈ ভূশ্ম্॥ ৬॥

সমুদ্ধে বালুকাপুর্ণে উজ্জালক ইতি স্মৃতে।

আগম্য চ স মুক্তাত্মা তক দেশং ভরতর্ষভা। । ৭॥

II so II

ইত্যারনাকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে অধিক দ্বিশততমোহধ্যারঃ ॥ ২০৩ ॥

ধুরুরিতি ॥ ১॥ २॥ ०॥ ८॥ ৫॥ ७॥ १॥

বাধতে সা পর শক্ত্যা ত মুভদ্ধাশ্রমং বিভো!। অন্তর্মিগতন্ত্র বালুকান্তর্ভিন্তথা। ৮॥ মধুকৈটভয়োঃ পুত্রো ধুন্ধ ভীমপরাক্রমঃ। শেতে লোকবিনাশায় তপোবলমুপাশ্রিত: ॥ ৯॥ উতক্ষসাশ্রমাভ্যাদে নিশ্বসন্ পাবকার্চিষ:। এতি সিনেব কালে তুরাজা সবলবাহন: u > n উতঙ্কবিপ্রসহিতঃ কুবলাশ্বো মহীপতিঃ। भूरेखः मह महीभान । <u>श्र्यरयो जत्र</u>जर्व । ॥ >> ॥ महरेख दिकविश्मेजा मुखानामितमर्फनः। কুবলাখে। নরপতি রম্বিতো বলশালিনাম্॥ ১২॥ ত মাবিশত্ততো বিষ্ণু র্ভগবাৎস্কেল্যা প্রভু:। উতক্ষ নিয়োগেন লোকানাং হিতকাম্যা॥ ১০॥ তিমান প্রয়াতে তুর্দ্ধর্যে দিবি শব্দো মহানভুৎ। এষ শ্রীমানবধ্যোহদ্য ধুন্ধুমারো ভবিষ্যতি॥ ১৪॥ मिटेवाम्ह श्रेटेकास॰ (मर्वाः ममस्रार # शर्यावांकितन्। দেবতুন্তুভয়ন্চাপি নেতুঃ স্বয়মনীরিতাঃ ॥ ১৫ ॥ শীতশ্চ বাযুঃ প্রববৌ প্রয়াণে তক্ষ ধীমতঃ। विপा • खनार महीर कुर्त्तन ववर्ष ह ऋ दिश्वतः ॥ ১७॥ অন্তরীক্ষে বিমানানি দেবতানাং যুধিষ্ঠির!। তত্ত্বৈর সমদৃশান্ত ধুকু র্যত্ত মহাস্থর:॥ ১৭॥ কবলাশ্বস্য ধুক্ষোশ্চ যুদ্ধং কৌতুহলান্বিতাঃ। (प्रवश्चक्त्रमाञ्चाः मगरेवक्क्बर्धवः ॥ : b ॥ নারায়ণেন্ কৌরব্য। তেজসাপ্যায়িতস্তদা। স পতো নুপতিঃ ক্ষিপ্রং পুলৈক্তৈঃ সর্ব্বতো দিশম্॥ ১৯॥

25 11 20 11 28 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11

^{*} পর্যাবাকিরনি ভাত্রপর্যাবাররনিতি পাঠঃ খ-পুততে।

অর্ণবং খানয়ামাস কুবলাখো মহীপতিঃ। क्रवायक श्रेखक खिन् देव वानुकार्गर । २०॥ मर्खा जिल्लिकरेमः थाञ्चा मृहकै। ध्रुकुर्यादायतः। আসীদেবারং বপুস্তস্য বালুকান্তর্হিতং মহৎ।২১॥ দীপ্যমান যথা সূর্য্যং তেজনা ভরতর্বভ!। ততো ধুকুর্শহারাজ! দিশমারত্য পশ্চিমায় ॥ ২২॥ **ऋ ८७**। इन्हाक भार्कि, ल ! को लागल ममकूर्राजः । কুবলাশ্বন্থ পুলৈস্ত সর্বাভঃ পরিবারিতঃ । ২৩॥ অভিক্রতঃ শরৈস্তীকৈর্গদাভিস্ম্বলরপি ৷ পাঁট্রশৈঃ পরিছৈ: প্রাক্তে: খ্রক্তান্চ বিমলে: শিতে: । ২৪॥ गवधायानः मः कुष्तः ममुख्या महावनः । কুদ্ধশ্চাভক্ষয়ত্তেষা শস্ত্রাণি বিবিধানি চ। ২৫॥ **षामाधिमन् भावक म मञ्जूकममः उप।।** তান্ সর্বান্নপতেঃ পুজানদহৎ স্বেন তেজসা॥ ২৬॥ মুখজেনাগ্নিনা কুছো লোকানুছর্ত্যনিব। ক্ষণেন রাজশার্দিল। পুরেব কপিলঃ প্রভুঃ । ২৭ ॥ সগরস্থাত্মজান কুদ্ধন্ত্তমিবাভবৎ। তেষু ক্রোধাগ্নিদক্ষেযু তদা ভরতসম্ভম! । ২৮ ॥ তং প্রবুদ্ধণ মহাত্মানণ কুস্তকর্ণনিবাপরম্। আসদাদ মহা তেজাঃ কুবলাশ্বে। মহীপতিঃ ॥ ২৯ । তক্ত বারি মহারাজ! সুস্রাব বছ দেহতঃ। তদাপীয়ত তত্তেজো রাজা বারিময়ংরূপ ! ॥ ৩ ॥ (यांशी (यार्शन वङ्किश भगग्रामांत्र वार्तिना। ব্রহ্মাক্তেন চ রাজেন্দ্র। দৈত্যং কুরপরাক্রমম্। ৩১। u २० u २<mark>১ u २२ u २</mark>० u २8 u २৫ u २७ u २१ u २৯ u २৯ i ७. u ७১ u

দদাহ ভরত্ত্রেষ্ঠ। সর্বলোকাভয়ায় বৈ। সোহত্রেণ দক্ষা রাজবিঃ কুবলাখো মহাস্থরম্ । ৩২ । স্থরশক্ত মনিজন্ন জৈলোক্যেশ ইবাপরঃ। ধুক্ষোর্ক্ষান্তনা রাজা কুবলাখো মহামনাঃ। ৩০॥ ধুন্ধুমার ইতি খাতে। নামাপ্রতিরথোহভবৎ। প্রাতৈশ্চ ত্রিদশৈঃ সবৈধ শ্বহর্ষিসহিতে স্তদা। ৩৪। বর^ রুণীম্বেছ্যুক্তঃ ম প্রাঞ্জলিঃ প্রণৃতন্তদা। অতীব মুদিতো রাজন্মিদং বচনমত্রবীৎ।। ৩৫॥ ' দদ্যান বিত্তং দ্বিজাগ্রোভ্যঃ শত্রুণাঞ্চাপি তুর্জীয়ঃ। সখ্যক্ষ বিষ্ণুনা মে স্থান্ততেম্বজ্ঞাহ এব চ॥ ৩৬॥ ধর্ম্মে রতিশ্চ সতত স্বর্গে বাস স্তথাক্ষয়ঃ"—। তথাস্থিতি ততো দেবৈঃ প্রীতৈ রুক্তঃ স পার্থিবঃ॥ ৩৭॥ ঋষিভিশ্চ সগন্ধবৈ রুতক্ষেন চ ধীমতা। मञ्जाषा देहनः विविदेध त्रामीकादेन छट्टा नुश ! ॥ ७५ ॥ দেবা মহর্যাক।পি স্থানি স্থানানি ভেজিরে। তস্য পুজান্ত্রয়ঃ শিষ্টা যুধিষ্ঠির ! তদাভবন ॥ ৩৯॥ দৃঢাশ্বঃ কপিলাখন্চ চন্দ্রাশ্বনৈচৰ ভারত ! 🔢 তেভ্যঃ পরস্পরা রাজনিকুাকুণা মহামনাম্॥ ৪০॥ বংশস্থ স্থুমহাভাগ। রাজ্ঞা মমিততেজনাম্। 📣 বং স নিহতন্তেন কুবলাশ্বেন সন্তম ॥ ৪১ ॥ ধুনুর্নাম মহাদৈতো মধুকৈটভয়ো: স্কৃতঃ! কুবলাশ্বন্দ নৃপতিধুন্ধুমার ইতি শৃতঃ॥ ৪২॥ নামা চ গুণসংযুক্ত ন্তদাপ্রভৃতি সোহভবং।, এভত্তে সর্বাধ্যাতং যন্নাং বং পরিপুচ্ছসি॥ ৪৩॥

1 08 11 58 11 58 11 08 11 60 11 40 11 60 11 80 11

ধৌক্ষুমার মুপাথ্যানং প্রথিত শ্বস্য কর্ম্মণা!
ইদস্ত পুণ্যাখ্যানং বিক্ষো: সমন্ত্রীর্ভনম ॥ ৪৪ ॥
শৃণুয়াদ্যঃ স ধর্মাত্মা পুজ্রবাংশ্চ ভবেন্ধরঃ।
আযুমান ভূতিমা শৈচব ক্রত্মা ভবতি পর্বাস্ত ।
ন চ বাাধিভয়ং কিঞ্চিৎ প্রাপ্নোতি বিগতজ্বরঃ"॥ ৪৫ ॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয় সমাস্যা পর্বাণ ধুকুমারো-প্রাণানে চতুরধিক দি-শত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২০৪॥

रिवशक्याशम खेवाह।

তিতা যুধি ঠিরো রাজা মার্কণ্ডেয়ং মহাত্যুতিন্।
পপ্রচ্ছ ভরতশ্রেষ্ঠ ! ধর্দ্মপ্রশ্নং স্কুর্কিদেন্ * । ১॥
"শোতুমিচ্ছামি ভগবন্! স্ত্রীণাং মাহাত্মা মুন্তমন্।
কথ্যমান ব্রা বিপ্রা! স্কুন্দধর্মাঞ্চ দ তত্ত্বতঃ ॥ ২॥
প্রভ্যক্ষমিহ বিপ্রবেষ্ঠ ! দেবা দৃষ্ঠান্তিসন্তম ! ‡।
স্থ্যাচন্দ্রমদৌ বাযুঃ পৃথিবী বহ্লিরেব চ॥ ৩॥
পিতা মাতা চ ভগবন্! গুরুরেব চ সন্তম !।
যচ্চান্যদ্বেবিহিতং তচ্চাপি ভৃগুনন্দন !॥ ৪॥

H 88 H 80 H

ইতগ্রন্যকে পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত,ভাবদীপে চতুর্বাধক দ্বিশততমোধ্যায়ঃ ॥ ২০৪॥

ততইতি পতিব্ৰতাখ্যানমিতঃ স্ত্ৰীমাহ'স্যাদীনাং পৃষ্টানাং নিৰ্ব্যৰ্থং তত্তাপি নাহংবলাকাবিপ্ৰধেইত্যতঃ প্ৰাক্তনোতাহুঃস্পন্তাৰ্থঃ॥১॥২॥৩॥৪॥

🖠 " धर्माः " हे जि थ-श्रुकमा ।

^{*} অতঃপরং " রুধিষ্ঠির উনাচ " ইতি নর্ততে ক-ঘ পুস্তকে।

† "প্রত্যক্ষেণ হি দৃশ্যন্তে দেবা নিপ্রার্ধি সত্তম ! " ইত্যেবং পাঠঃ
ক-পুস্তক্সা ।

মান্যা হি গুরবঃ সর্বের একপত্মন্তথা স্তিয়:। প্তিব্রতানা শুক্রবা ছুম্বরা প্রতিভাতি মে। ৫। পতিব্ৰতানাং মাহাত্মং বক্তমৰ্হদি নঃ প্ৰভো!: নিরুধ্য চেক্তিয়গ্রাসং মনঃ সংরুধ্য চান্ছ! ॥ ৬ ॥ পতি~ দৈবতবচ্চাপি চিন্তয়ন্ত্যঃ স্থিতা হি যাঃ। ভগবন্! মুম্বরং ত্বেতৎ প্রতিভাতি মম প্রভো! ॥ ৭ ॥ মাতাপিত্রে।শ্চ শুক্রাষা স্ত্রীণাণ ভর্তুরি চ দ্বিন্ধ ।। জ্রীণাং ধর্মাৎ স্থঘোরান্ধি নান্যং পশ্চামি ছম্বরম্।। ৮।। সাধাচারাঃ স্ত্রিয়ো ত্রন্ধন্। যৎ কুর্বনন্তি সদাদৃতাং। ছ্ষরং খলু কুর্বনন্তি পিতরং মাতরঞ্চ বৈ॥৯॥ একপত্মশ্চ যা নার্য্যো যাশ্চ সত্যং বদস্ক্যত !। कुकिना मन मामारण गर्डर मरधात्रयस्ति याः॥ ১०॥ নার্য্য: কালেন সৎভূয় কিমদ্ভতভরং ততঃ। সম্পর্থ পর্মং প্রাপ্য বেদনা মতুলামপি॥ ১১॥ প্রজায়ন্তে স্থতান্নার্য্যো ছঃখেন মহতা বিভো!। পুক্তি চাপি মহতা স্নেহেন দ্বিজপুঙ্গব ! ॥ ১২ ॥ যে চ ক্ররেষু সর্বেষু বর্ত্তমানা জুগুপিসভাঃ। স্বকর্ম কুর্বান্ত সদা ছুম্বরং ভচ্চ মে মভম্। ১৩॥ ক্ষত্রধর্মসমাচারতত্ত্বং ব্যাখ্যাহি * মে ছিজ!। क्षः सूर्व्या विश्व ! नृगः एमन महाञ्चनाम् ॥ ১८ ॥ এতদিছামি ভগবন্! প্রশ্নং প্রশ্নবিদায়র !। আেতু । ভৃগুকুল আঠ। শুক্রবে তব স্ববত। "। ১৫। মার্কতের উবাচ। " হন্ত তে সর্বান্ধ্যান্তো প্রশ্নমেতং স্বত্র্বচ্ †।

॥ ৫॥ ৬ ॥ १॥ ৮॥ ৯॥ ১০ ১১ १ ১२॥ ১০ ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥

* ' কাত্রেধর্ম সম্চারেং তত্ত্বং চাধ্যাছি " ইতি বা গাঠান্তরং।

† '' অ্দুর্লভং " ইতি ক-ঘ।

তত্ত্বেল ভরতশ্রেষ্ঠ। গদতস্তন্নিবোধ মে॥ ১৬॥

মাভৃস্ত গৌরবাদম্যে পিতৃনন্যে ছু মেনিরে! ছুক্রং কুরুতে মাতা বিবর্দ্ধাতি যা প্রজা: । ১৭॥ তপসা দেবতেজ্যাভি কান্দনেন তিতিক্ষয়া। অভিচারে রুপায়েশ্চাপীহন্তে পিতর: স্থতান। ১৮। এবং কুচ্ছে। মহতা পুত্রং প্রাপ্য স্কুতুর্ভম। চিস্তয়ন্তি সদা বীর! কীদুশোধ্য়^ ভবিষ্যতি॥ ১৯॥ আশংসতে হি পুজেষু পিতা মাতা চ ভারত !। যশঃ কীৰ্ত্তি মথৈশ্বৰ্যাং প্ৰজা ধৰ্মাং তথৈব চ॥ ২০॥ ত্যোরাশান্ত সকলাং यः করোতি স ধর্মবিৎ। পিঁতা মাতা চরাজেন্দ্র ! তুষ্যতো যক্ত নিত্যশ:॥ ২১॥ ইহ প্রেত্য চ তম্ভাথ কীর্ত্তির্ধর্মণ শাশবঃ। নৈব যজ্ঞক্রিয়াঃ কাশ্চিন্ন শ্রাদ্ধং নোপবাসক্র । ২২॥ যা ত ভর্ত্তরি শুক্রাষা তয়া স্বর্গণ জয়ত্যত। এতৎ প্রকরণং রাজন্বধিক্ষতা যুধিষ্ঠির। ॥ ২৩ ॥ পতিব্ৰতানাং নিয়ত্ৰ ধৰ্মঞাবহিতঃ শৃণু " ৷ ২৪ ৷ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয় সমাস্থা পর্বাণি পতিব্রতো-পাখ্যানে পঞ্চাধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ। ২০৫।

মার্কিন্ডের উবাচ।

'কন্দিদ্বিজ্ঞান্তি প্রবেরো বেদাধ্যায়ী তপোধনঃ।
তপস্থী ধর্মাশীলন্চ কৌশিকো নাম ভারত!॥১॥
॥১৭॥১৮॥১৯॥২০॥২১॥২২॥২৩॥॥২৪॥
ইত্যারশ্যকে পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে
পঞ্চাধিক দিশতমোহধ্যায়ঃ॥২০৫॥

কশ্চিদিতি॥১॥

সাঙ্গোপনিষদো বেদানধীতে দ্বিজসন্তমঃ।

স রক্ষমুলে কমিৎ শিচদ্বেদাসুচ্চারয়ন স্থিতঃ ॥ ২ ॥
উপরিষ্টাচ্চ রক্ষম্য বলাকা সংন্যলীয়ত।
তয়া পুরীষ মুৎস্কং ব্রাহ্মণস্থা তদোপরি ॥ ৩ ॥
তা মবেক্ষ্য ততঃ কুক্ষং সমপধ্যায়ত দ্বিজঃ।
ভূশৎ ক্রোধাভিভূতেন বলাকা সা নিরীক্ষিতা ॥ ৪ ॥
অপধ্যাতা চ বিপ্রেণ ন্যপতদ্বরণীতলে।
বলাকাং পতিতাং দৃষ্টা গতসন্ত্রা মচেতনাম্ ॥ ৫ ॥
কার্মণ্যাদভিসন্তপ্তঃ পর্য্যশোচত তাং দ্বিজঃ।
অকার্য্যং কৃতবানিম্ম রোষরাগবলাৎকৃতঃ ॥ ৬ ॥
মার্কণ্ডের উবাচ। *

ইত্যুক্তা বছশো বিদ্বান্ প্রামং তৈক্ষায় সংশ্রিতঃ।

 প্রামে শুচীনি প্রচরন্ কুলানি ভরতর্বভ! ॥ ৭ ॥

 প্রিষ্টস্তৎ কুল যত্ত পূর্বঞ্চারতবা স্ত সং।

 দেহীতি যাচমানোহসৌ তিষ্ঠেত্যুক্তঃ দ্রিয়া ততঃ ॥ ৮ ॥

 শোচস্ত যাবৎ কুরুতে ভাজনস্ত কুট্রিনী।

 এতিম্মিল্ডরে রাজন্! কুধা সংপীতিতো ভূশম্ ॥ ৯ ॥

 ভর্তা প্রবিষ্টঃ সহস! তন্তা ভরতসন্তম!।

 মা তু দৃষ্টা পতি সাধী ব্রাহ্মনং ব্যবহায়তম্ ॥ ১০ ॥

 পাদ্য মাচমনীয়ং বৈ দদৌ ভর্তুস্তথাসন্ম্।

 প্রহ্মা পর্যাচরচ্চাপি ভর্তার মসিতেক্ষণা ॥ ১১ ॥

 আহারেণাথ ভক্ষ্যেশ্চ ভোজ্যৈঃ স্কমধ্রৈত্তথা।

 উচ্চিষ্ট ভাবিতা ভর্তুস্তিক্তে নিত্য যুধিষ্ঠির! ॥ ১২ ॥

11211211811411211211212012211211

^{*} ক-পুত্তকে নান্ডোহঃ পাঠঃ।

দৈবতঞ্চ পতিং মেনে ভর্কুশ্ভানুসারিণী।
কর্মণা মনমা বাচা নানাচিন্তাভ্যগাং পতিমু॥ ১৩॥
ত৲ সর্বভাবোপগভা পতিশুক্রাবণে রতা।
সাধাচারা শুচির্দ্দকা কুটুম্বস্য হিতৈবিণী॥ ১৪॥
ভর্কাপি হিতং যন্তৎ সভতং সান্ত্রবর্তে।
দেবতাতিথিভূত্যানাং শ্বক্র-শ্বশুরয়োস্তর্থা॥ ১৫॥
শুক্রবণপরা নিত্যং সভত্ত সংযতেক্রিয়া!
সা ব্রাহ্মণং তদা দৃষ্ট্বা সংস্থিতং ভৈন্যকাভ্রিদ্রণম্॥ ১৬॥
কুর্বাতী পতিশুক্রাবাৎ সম্মারাথ শুভেন্ফণা।
ব্রীডিতা সাভবৎ সাধী তদা ভরতসন্তম!
ভিক্ষামাদায় বিপ্রায় নির্ছগাম যশস্বিনী "॥ ১৭॥
ব্যাহ্মণ উবাচ।

" কিমিদং ভবতি স্বং মাং তিঠেত্যুক্ত্বা বরাঙ্গনে। । উপরোধণ ক্লতবতী ন বিসক্তিবত্যসি'— ॥ ১৮॥

মার্কণ্ডেয় উবাই।

"ব্ৰাহ্মণং কোধসন্তপ্তং জ্লন্তমিব তেজ্যা। দৃষ্ট্ৰা সাধী মনুষ্ট্ৰেক্ত ! সান্ত্ৰপূৰ্বাং বচোহব্ৰবীৎ "॥ ১৯॥ জ্ঞানাচ।

"ক্ষন্তম হিল মে বিশ্বন্। ভর্তা মে দৈবতং মহৎ। স চাপি কুধিতঃ আভঃ প্রাপ্তঃ শুক্রবিতো ময়া "॥২০॥

ব্ৰাহ্মণ উবাচ।

বান্ধান গরীয়া শ্রে। গরীয়াংত্তে পতিঃ কৃতঃ।
গৃহস্থর্মে বর্তন্তী ব্রাহ্মণান্বমন্যুসে ? ॥ ২১॥

20 # 28 # 20 # 20 # 29 # 20 # 20 # 20 # 20

ইন্দ্রোহপ্যেষাং প্রণমতে কিং পুনর্মানবো ভূবি।
অবলিপ্তে! ন জানীষে রুদ্ধানাং ন প্রভং স্বয়া?॥ ২২॥
ব্রাহ্মণা হারিসদৃশা দহেয়ুঃ পৃথিবীমপি ? "।
ব্যাহ্মণা ।

" নাহ^ বলাকা বিপ্রর্যেঃ * ত্যজ ক্রোধ^ তপোধন! ॥২৩॥ অনরা কুদ্ধরা দৃষ্ট্যা কুদ্ধঃ কিং মাং করিষ্যাসি ?। नावकानायाङ् विश्वान् ८५८वञ्चनग्रान् सनिष्याः ॥ २०॥ অপরাধসিমং বিপ্রা! ক্ষন্তুমর্ছসি মেই নহা!। জানামি তেজো বিপ্রাণাৎ মহাভাগ্যক্ত ধীমতামু। ২৫॥ অপেয়ঃ সাগরঃ ক্রোধাৎ ক্লতো হি লবণোদকঃ। তথৈব দীপ্ততপদাং মুনীনাং ভাবিভাল্নাম ॥ ২৬॥ যেয়াং ক্রেখাগ্রিরদাণি দংগ্রেক নোপশামাতি। ব্রাহ্মণানাং পরিভবাছাতাপিঃ স্তুরাত্মবান্। ২৭। অগন্তঃ মৃথ্মাসাদ্য জীর্ণঃ ক্রুরো মহাস্থরঃ। বন্ধপ্রভাবাঃ ক্রয়ন্তে ব্রাহ্মণানাং মহাত্মনাম্। ২৮॥ জোধং স্থবিপুলো ব্রহ্মন্ ! প্রসাদশ্চ মহাত্মনাম্। অসিংস্তিক্তমে ব্ৰহ্মন্! ক্ষন্তমে≨সি মেহ্নঘ়!॥২৯॥ পতিশুক্রষয়া ধর্ম্মো যং স মে রোচতে দিজ।। দৈবতেম্বপি সর্কেষু ভর্তা মে দৈবতং পরম্। ৩০॥ অবিশেষণ তদ্যাহং কুৰ্য্যাং ধৰ্মণ দ্বিজোন্তম্!। শুক্রবায়াঃ ফলং পশ্চ পত্যর্জান। যাদৃশম্॥ ৩১॥

া ২২ ॥ ২৩॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ দওকেদওকগ্রণ্যে ॥ ২৭ ॥ ২৮॥ ২৯॥ ॥৮০॥ শুক্রাবারা ইতি ভর্তজন্যা সাক্ষ্যেপাপ্তিদিশিতা॥ ৩১॥

^{*} বিপ্রেন । ইতি ক-খ।

বলাকা হি ত্বয়া দগ্ধা রোযান্ত ছিদিতং ময়া। কোধঃ শকুঃ শরীরত্থে মনুষাণাং ছিজোন্তম ! ॥ ৩২ ॥ মঃ ক্রোধমোহো ত্যজতি তং দেবা ব্রাহ্মণং বিদ্যুঃ। যো বদেদিই সত্যানি গুরুৎ সন্তোষয়েত চ। ৩৩॥ হিংসিতশ্চ ন হিংসেত তং দেবা ব্ৰাহ্মণং বিষ্ণুঃ। জিতেন্দ্রিয়ো ধর্মাপরঃ স্বাধ্যায়নিরতঃ শুচিঃ॥ ৩৪॥ कामरकारवी वरमो ४ यख ७० प्तवा खान्नवং विद्धः। यख होज्ञगरमा (लारको अर्ज्जक मनिष्यः ॥ ७৫॥ সর্বধর্মেয়ু চরত স্তং দেবা ত্রাহ্মণং বিছুঃ। যোহধ্যাপয়েদধীয়ীত যজেদা যাজয়ীত বা ॥ ৩৬॥ দদ্যাদ্বাপি যথাশক্তি তং দেবা ব্রাহ্মণং বিদ্যঃ। ব্রহ্মচারী বদান্যে। * যে। ২প্যধীয়া দ্বিজপুঞ্চবঃ ॥ ৩৭॥ স্বাধ্যায় বানমত্তো # বৈ তং দেবা ব্রাহ্মণৎ বিচুঃ। যন্ত্রাক্ষানাং কুশলং তদেয়াও পরিকীর্ত্তরেও। ৩৮। সত্যং তথা ব্যাহ্রতাপ নানুতে রনতে মনঃ। ধর্মন্ত ব্রাহ্মন্ত্রাহ্ম স্থাব্যায়ৎ দন মার্কবম ॥ ৩৯॥ ইন্দ্রিগাণাং নিগ্রহঞ্চ শাশ্বতং দ্বিজস্তম !। সত্যাৰ্ক্তং ধর্মমাহুঃ পর্ম ধর্মবিদো জনাঃ ॥ ৪০॥

সাচবাল্যানাং ব্ৰদ্যবিদামেশস্ত্ৰীতি ত্ৰক্ষণানাই ক্ৰেষ্টিউ ॥ ৩২॥ অবলক্ষণকথনং নিজা যোজনমিতি যান্যেৰ বিদ্যালানি তানি বিদ্যালাধনানীতি ন্যালেন ব্ৰাক্ষন্ত কামপ্ত ক্ৰেণ্ডিত্যাগো গুৰ্বাৱাধনাদিত কৰ্ত্তৰ-বেন বিধীয়তে য ইতি সত্যবাক্ গুৰুভক্তঃ ক্ষম্পাংশ্চ ভবেদিত্যৰ্থঃ॥ ৩৩॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩৭॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ২০॥ শাইতেধিৰ্মা আতাদশ্ৰমং

^{* &}quot; राम " रेजि क-भार्रः।

^{* &}quot; बनाहादी ए (नमान् य " डे(डादर क, घ।

^{* &}quot; স্বাধ্যারে চাপ্রমত্ত " ইতি ক-পুস্তক্ষ্য।

ছুক্তেয়িঃ শাশ্বতো ধর্ম্মঃ স চ সত্যে প্রতিষ্ঠিতঃ। শ্রুতিপ্রমাণো ধর্মঃ স্থাদিতি র্দ্ধারুশাসনম্॥ ৪১॥ বহুধা দৃশ্যতে ধর্ম্মঃ স্থন্দা এব দিজোন্তম। ভগবানপি ধর্ম্মজ্ঞঃ স্বাধ্যায়নিরতঃ শুচিঃ॥ ৪২॥ ন তু তত্ত্বেন ভগবন্! ধর্মাং বেৎদীতি মে মতিঃ। यि विखं! न कानीत्य धर्मा अवग्रव विक ! ॥ 80 ॥ ধর্মব্যাধণ ততঃ পৃচ্ছ পত্ম তু মিথিলাং পুরীম । মাতাপিত্ভ্যাং শুক্রাষুঃ সত্যবাদী জিতেক্সিয়:॥ ৪৪॥ মিথিলায়াং বদেদ্যাধঃ ম তে ধর্ম্মান্ প্রবক্ষ্যতি। তত্ত্র গছত্ত্ব ভদ্রং তে যথাকাসণ দিজোপ্তম! ॥ ৪৫॥ অত্যুক্তমপি মে সর্বাং ক্ষন্ত মর্হস্তনিন্দিত।। ় স্ত্রিয়ো হ্যবধ্যাঃ সর্কোষাং বে ধর্ম্ম মভিবিন্দতে"॥ ৪৬॥ ব্রাগাণ উবাচ। ে প্রীভোহস্মি তব ভদ্রং তে গতঃ ক্রোধশ্চ শোভনে!। উপালন্ত স্তৃষ ভুচ্জো মম নিঃশ্রেয়সং পরম্। স্বস্থি তেহস্ত গমিষ্যামি লাধ্যিষ্যামি শোভনে। "॥ ৪৭॥ মার্বতের উবাচ। ে তয়া বিস্ফৌ। নির্গম্য স্থমেব ভবনং যথৌ। বিনিন্দন্ স স্বমাত্মানং কৌশিকো দ্বিজসন্তমঃ "॥ ৪৮॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি মার্কণ্ডেয় সমাস্ঠা পর্ব্বণি পতিব্রতো-পাখ্যানে ষ্ড্ধিক দি শত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২০৬॥

বদাহ্যাজ্ঞবন্ধ্যঃ ইজ্যাচার দমাহিংসাদান স্বাধ্যার কর্মণাং অরস্ত পরমো ধর্মো বদ্ যোগেনাত্ম দর্শন মিতি সত্যে ট্রকালিক বাধ শ্রে বস্তুনি প্রতি-চিতঃ পর্যবেদিতঃ অক্যো ধর্মন্ত্রসভো প্রতিষ্ঠিত ভত্যথাং দিলং ॥ ৪১ ॥ ॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ সাধ্যিষ্ণামি স্বকার্য্য মিতি শেষঃ ॥ ৪৭ ॥ ॥ ৪৮ ॥

ইত্তারণ্যকে পর্বানি নৈলকণ্ডীয়ে ভারত ভাবদীপে বড়ধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২০৬॥

মার্কণ্ডের উবাচ। ' চন্তরিত্বা ভদাশ্চর্যাৎ স্ত্রিয়া প্রোক্ত মশেষত:। বিনিন্দ্ৰ স স্ব মাত্মান মাগকুত ইবাবভৌ॥ ১॥ চিন্তর।নশ্চ । ধর্মান্ত ফুক্মাঙ্গতি মথাব্রবীৎ। শ্রদ্ধানেন বৈ ভাব্যং গচ্চামি মিথিলামহম্ ॥ ২ ॥ ক্তাত্মা ধর্ম্মবিক্তঞাং ব্যাধো নিবসতে কিল। তং গচ্চাম্যহ মদ্যৈর ধর্মাং প্রফীং তপোধনম্ ॥ ৩॥ ইতি সঞ্চিন্তা মনসা শ্রহ্মধানঃ স্তিয়া বচঃ। वनाकाश्रकार्यनाटनी धरेन्यान वहरेनः खरेखः ॥ ८ ॥ সংপ্রতম্বে স মিথিলাং কৌতুহলসমন্থিতঃ।' অতিক্রাসন্তর্ণানি প্রামাংশ্র নগরাণি চ । ৫॥ ততো জগাম মিথিলাৎ জনকেন সুর্ক্ষিতাম ৷ ধর্মকতৃসমাকীর্নাং যজ্ঞোৎসবরতীং শুভাম্॥৬॥ গোপুরাট্রালকবতীং হর্দ্যপ্রাকারশোভনাম। প্রবিশ্য নগরী বুস্যাং বিসানৈর্বছভি বুতাম্॥ ৭॥ পল্যৈ বছভিযুক্তাং সুবিভক্ত মহাপথাম। অশ্বৈ রথৈম্বথা নাগৈ র্যোটেশ্চ বছভিত্র ভাষু ॥ ৮ ॥ क्रिकेश्वरेष्ठकनाकीर्गाः निर्वारम्बन्यम् । সোহপশ্যবহুরুভাতাপ বাক্সনঃ সন্তিক্রমন্ ॥ ১॥ ধর্মব্যাধ মপুচ্ছচ্চ স চাম্ভ কথিতো দিকৈঃ। অপশ্যন্তত গত্ম তং প্রনামধ্যে ব্যবহিতম্॥ ১০॥

চিন্তারিত্বতি আংগাহপরাধঃ ক্তমনেনেত্রগড়তঃ ॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ॥ ৫॥ ৩॥ বিমানেঃ সাপ্তভৌমিকগৃছৈঃ ॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ স্নাবধস্থানং তথাগে॥ ১০॥

^{* &#}x27; স্ব-ধর্মদ্য " ইতি পুস্তকান্তর পাঠঃ।

মার্গনাহিষ্যাংসানি বিক্রীণন্তং তপস্থিনস্।
আকুলস্বাচ্চ ক্রেত্ণা মেকান্তে সংস্থিতো দিল: ॥ >> ॥

স তু জ্ঞাস্বা দিজ^ প্রাপ্তং সহসা স^ভ্রমোপিতঃ।
আজগাম যতো বিপ্রাঃ হিত একান্তদর্শনে ''—॥ >২ ॥

বাধ উবাঃ।

' অভিবাদয়ে ত্বাং ভগবন্! স্থাগতং তে দ্বিজোন্তন!।

আহং ব্যাধো হি ভদ্ৰত্যে কিং করোমি প্রশাধি মান্॥ ১৩ ॥

একপত্যা যতুক্তোহিসি গল্প ত্বং মিথিলামিতি।
জানাম্যেতদহং সর্বাং যদর্থন্ত্রমিহাগতঃ "—॥ ১৪ ॥

শ্রুণা চ তক্তা তদ্বাক্যং স বিপ্রো ভূপবিক্ষিতঃ।

ক্বিতীয় মিদ মাশ্চর্যা মিত্যচন্তিয়ত দ্বিজঃ ॥ ১৫ ॥
আদেশস্থং হি তে স্থানমিতি ব্যাধোহত্রবীদ্বিজন্।

গৃহং গদ্ধাব ভগবন্! যদি তে রোচতেহ্নম্! "—॥ ১৬ ॥

মার্কণ্ডের উবাচ।

বাচমিতোৰ ত
 বিপ্রো হৃথে বচন মন্ত্রবীৎ।

 অন্ত্রন্ত দিল

 ক্রি স করা স জগাম গৃহং প্রতি ॥ ১৭ ॥

 প্রবিশ্র চ গৃহং রমা মাদনেনাভিপূজিতঃ।

পাদ্যমাচমনীয়ঞ্চ প্রতিগৃহ্য দিজোভমঃ॥ ১৮ ॥

 ততঃ স্থাপেবিইন্ত ব্যাধ্য বচন মন্ত্রবীৎ।

 কর্মৈতিদ্ব ন সদৃশ্য ভবতঃ প্রতিভাতি সে।

 অনুতপ্যে ভূশং তাত তব ঘোরেণ কর্মাণা"॥ ১৯ ॥

 বিক্রান্য ভূশং তাত তব ঘোরেণ কর্মাণা"॥ ১৯ ॥

 বিক্রান্য ভূশং তাত তব ঘোরেণ কর্মাণা"॥ ১৯ ॥

 বিক্রান্য ভূশং তাত তব ঘোরেণ কর্মাণাশ ॥ ১৯ ॥

 বিক্রান্য ভূশং তাত তব ঘোরেণ কর্মাণাশ ॥ ১৯ ॥

 বিক্রান্য ভ্রান্য ভ্রান্য বিক্রান্য ভ্রান্য ভ্রান্য বিক্রান্য ॥ ১৯ ॥

 বিক্রান্য ভ্রান্য ভ্রান্য বিক্রান্য ভ্রান্য বিক্রান্য ॥ ১৯ ॥

 বিক্রান্য বিক্রান্য ভ্রান্য বিক্রান্য বিক্রান্য ॥ ১৯ ॥

 বিক্রান্য বিক্রান্য বিক্রান্য বিক্রান্য মান্য বিক্রান্য বিক্

ব্যাধ উবাচ।

' কুলোচিত্মিদং কর্ম্ম পিতৃপৈতামহুৎ মম।
বর্ত্তমানস্থা যে ধর্ম্মে স্থে মন্তুং মা কুথা দ্বিজা। ॥ ২০॥

॥ ১১ ॥ ১२ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ छाट्म लेख् आर्यातार्म लेख् ॥ ১৬ ॥ ১९ ॥ ১९ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ २० ॥

বিধাতা বিহিত্ত পূর্নাৎ কর্ম্ম স্ব মনুপালয়ন্ *। প্রযন্ত্রাচ্চ গুরু রুদ্ধৌ শুক্রাযেহহং দ্বিজোক্তম! ॥ ২১॥ সত্যং বদে নাভ্যস্তয়ে যথাশক্তি দদানি চ। দেবতাতিথিভত্যানা মবশিষ্টেন বর্ত্তয়ে॥২২॥ न कुष्मशामाइश किश्रित गर्ह दलवलुत्म । ক্তমন্ত্রতি কর্তারং পুরা কর্মা দ্বিজোত্তম! ॥২৩॥ क्रियित्रांत्रकरोणिका मिर लाक्स कीरनग्रं দগুনীতিস্ত্রগ্নী বিদ্যা তেন লোকো ভবতাত ॥ ২৪ ॥ কর্ম শুদ্রে কুষিবৈর্থে সং প্রামঃ ক্রিয়ে স্মৃতঃ। ব্রন্দর্যাৎ তপো মন্ত্রাঃ * সভাঞ্চ ব্রান্ত্র্যে সদা ॥২৫॥ রাজা প্রশান্তি ধর্ম্মেণ * স্বধর্মানিরতাঃ প্রজাঃ। বিকর্ত্যাণশ্চ যে কেচিন্তান যুনক্তি স্বকর্মস্থ ৷ ২৬ ৷৷ - ভেত্তব্যং হি সদা রাজ্ঞাং প্রজানামধিপা হি তে। বারয়ন্তি বিকর্মস্থং নুপা মুগমিবেষুভিঃ ॥ ২৭ ॥ জনকদ্যেহ বিপ্রর্ষে! বিকশ্মস্থোন বিদ্যতে ৷ স্বকর্মনিরতা বর্ণাশ্চত্বারোইপি ছিজোত্তম। ॥ ২৮॥

গুরু মাতা পিতরে ॥ ২১ ॥ নাভাস্থ্যে পরগুণেয়ু দোফং নাণিচ্চুর্কে বর্তয়ে জীবামি॥ ২২ ॥ কুৎসা বিদ্যামান দোষ সঙ্গীতনং গর্হা অবিদ্যমান দোষারোপঃ পুরাকৃতং কর্মেতি সম্বন্ধঃ ॥ ২৩ ॥ লোকঃ পরলোকঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥
॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ন্য়াতি ন

^{ঁ*} অনুপালয়ে ইতি ক, ঘ। * '' ব্ৰহ্মচৰ্য্য তপো-মন্ত্ৰা " ইত্যেক পদং কচিদ্ধটং। * স্বধৰ্মো ত্যত্ত স্বক্ষোতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

স এষ জনকো রাজা তুর্বৃত্তমপি চেৎ স্থত্য। দ্রাৎ দত্তে নিক্ষিপতি তথা ন গ্লাতি ধার্ম্মিকম ॥ ২৯॥ * স্বযুক্তচারো নূপতিঃ সর্বাৎ ধর্মোণ পশ্যতি। গ্রীশ্চ রাজ্যঞ্ব দপ্তশ্চ ক্ষল্রিয়াণাং দ্বিজোত্তম।॥ ৩০॥ রাজানো হি স্বধর্মেণ শ্রেরমিচ্ছব্তি ভূয়সীমৃ। সর্বেষামেব বর্ণানাম ত্রাতা রাজা ভবতাত। ৩১। পরেণ হি হতান ব্রহ্মন । বরাহমহিষানহম্ ন স্বয়ং হল্মি বিপ্রধে ! বিক্রীণামি সদা ত্বহম্ ॥ ৩২ ॥ ন ভক্ষামি মাংসানি ঋতুগামী তথা ছহ্ম। সদোপবাসী চ তথা নক্তংভোজী সদা দ্বিজ !॥ ৩০॥ অশীলশ্চাপি পুরুষে। ভূত্বা ভবতি শীলবান্। প্রাণিছি-সারতিশ্চাপি ভবতে ধার্ম্মিকঃ পুনঃ॥ ৩৪॥ * ব্যভিচারান্নরেক্রাণাৎ ধর্মঃ সংকীর্যাতে মহান I অধর্মো বর্ত্তে চাপি সংকীর্যান্তে ততঃ প্রকাঃ। ৩৫॥ ভেরুতা বামনাঃ কুব্জাঃ স্থূলশীর্ষান্তবৈধব চ। क्रीवान्डाकान्ड विश्वा जायत्य खकालांडनाः ॥ ७७॥ পার্থিবানামধর্মত্বাৎ প্রজানামভবঃ সদা। স এষ রাজা জনকঃ প্রজা ধর্মেণ পশ্যতি॥ ৬৭॥ অনুগৃহ্ন প্রজাঃ সর্বাঃ স্বধর্মনিরতাঃ সদা। र्य देवव मान व्यम्श्यां रय ह निक्छि मानवाः॥ ७৮॥

প্লানিং নয়তি ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ অভিচারাৎ স্বৈরগতে: ॥ ৩৫ ॥ ভেৰুগুঃ ভয়ানকাঃ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ স্পরিণীতেন সাধ্না

<sup>সয়ুক্তচার ইতি পাঠান্তরয়।
শ অভিচারা দিতি গ পাঠঃ।</sup>

সকাৰ সুপরিণীতেন কর্মণা তোষ্যামাহ্য। যে জীবন্তি স্বধর্মেণ সংযুঞ্জন্তি চ পার্থিবাঃ ॥ ৩৯ ॥ ন কিঞ্চিত্রপজীবন্তি দান্তা উত্থানশীলিনঃ। শক্তাান্নদানং সতত্ত তিতিকা ধর্মনিত্যতা ॥ ৪০ ॥ যথাহং প্রতিপূজা চ সর্বাভৃতেমু বৈ সদা। ত্যাগালান্যত্র মত্যানাং গুণাস্তষ্ঠন্তি পুরুষে ॥ ৪১॥ মৃষাবাদং পরিহরেৎ কুর্য্যাৎ প্রিয়ম্যাচিতঃ। ন চ কামান সংরস্তা ন দেয়াদ্রর্ম্মযুৎস্কেৎ ॥ ৪২ ॥ প্রিয়ে নাতিভূশং ক্ষ্যেদপ্রিয়ে ন চ সংজ্বরে । ন মুহেদর্থকুছে মুন চ ধর্মং পরিত্যজেৎ ॥'৪০ N কর্মা চেৎ কিঞ্চিদনাৎ স্থা দিতরং ন তদাচরেৎ। যৎ কল্যাণমভিধ্যায়েপ্তত্রাত্মানং নিয়েজয়েৎ ॥ ৪৪॥ ন পাপে প্রতিপাপঃ ভাৎ সাধুরের সদা ভবেৎ। আত্মনৈৰ হতঃ পাপো যঃ পাপং কৰ্ত্তমিচ্ছতি ॥ ৪৫॥ कर्याटे क अनम धूना श्रिकाना मगाधूवर। ন ধর্মোহস্তীতি মন্থানাঃ গুটীনবহসন্তি যে। ৪৬। অশ্রদ্ধানা ধর্মস্ত তে নশ্যন্তি ন সংশয়ঃ। মহাদৃতিরিবাধ্যাতঃ পাপো ভবতি নিত্যদা ॥ ৪৭ ॥

স্পরিণীতেন সাধুনা বে সংযুঞ্জি সম্যাগ্রোগং সেনানিবেশং কুর্বন্তি তএব প্রাথিবা অন্তে চৌরা ইত্যর্থঃ॥ ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ সংরশ্বাস্থাং॥ ৪২॥ ৪৩॥ অন্তং নিপরীতং স্থাং ইতরভাদৃশং দি তীয়ং কল্যাণ্যেবাত্মাঃ পরিত্যচাভিধাা-য়েং জানীয়াং॥ ৪৪॥ পাপেপাপিনী প্রতিপাপঃ প্রতিপাপী ন স্যাং॥ ৪৫॥ বুজিনানাং বাসনবতাং অসাধুকেইবাদিন্তমং॥ ৪৬॥ দৃতির্ভন্তু আধ্যাতঃ সন্ম সারোপিপুটোভবেং॥ ৪৭॥ তদ্বন্দানাংভাবিতং চিন্তিতং অন্তর্যাত্মবতং

^{*} देव देखि क-श्रुख्यक शर्दिः।

মুচানামবলিপ্তানামসারং ভাবিতং ভবেৎ।
দর্শয়তান্তরাত্মা তং দিবা ৰূপমিবাংশুমান্॥ ৪৮॥
ন লোকে রাজতে মুর্খঃ কেবলাত্মশংসয়া।
অপি চেহ * মূজাহীনং ফুতবিদ্যঃ প্রকাশতে॥ ৪৯।
অক্রবন কম্ফাচিনিন্দামাত্মপূজামবর্ণমন্।
ন কশ্চিদান্ সম্পন্ধঃ প্রকাশো ভুবি দৃশ্চতে॥ ৫০॥
বিকর্মণা তপ্যমানঃ পাপাদ্ধি প্রিমুচ্যতে॥ ৫১॥
ন তৎ কুর্যাং পুনরিতি দিতীয়াৎ পরিমুচ্যতে॥ ৫১॥
কর্মণা যেন তেনেহ পাপাদ্ধিজবরোত্তম।।
এবং ফ্রতিরিয়ং ব্রদ্ধন্ ধ্রেষ্ প্রতি * দৃশ্যতে॥ ৫২॥
পাপান্যবুদ্ধের স্বার ক্রতানি,
প্রাক্ষমণীলোহপি বিহন্তি পশ্চাৎ।

প্রাগ্ধর্মশীলোহপি বিহন্তি পশ্চাৎ। ধর্ম্যো * রাজনুরতে পুরুষাণাং,

যৎ কুর্বতে পাপমিহ প্রমাদাৎ ॥ ৫৩ ॥ পাপ- কুত্বা হি মন্যেত নাহমস্মীতি পুরুষ: ।

🌞 তম্ভদেবাঃ প্রপশ্যন্তি স্ববৈদ্য বান্তর পুরুষঃ ॥ ৫৪ ॥

মৃতং দর্শয়ত মৃত্ত মেতামের অরপজাপকং ॥ ৪৮ ॥ মৃজাহীনঃ মলিন দেহঃ প্রিরেডি পাচান্তরে স্পটোহর্থঃ ॥ ৪৯ ॥ মৃত্রমত মাছ অব্রুবরিতি ॥ ৫০ ॥ পাপাৎ প্রাক্রতাৎ দিতীয়াৎ করিষামানাৎ ॥ ৫১ ॥ কর্মনেতি যেনতেনেতি জপতপ স্তীর্থাদ্যনতমেন যেন কেনচিদপি পাপাৎ পরি মৃচ্যত ইতাত্র্যজ্ঞাতে সত্রাক্ষণঃ কেনস্যাদ্যন্যাত্তেনেদৃশ এব স্যাদিতি প্রতিধি ধর্মেষ্থর্মেৎপত্তিবিষয়াজ্ঞানেৎপত্তীহ্বেক এব প্রবাদি মার্গোন্তঃ পস্থা বিদ্যাতেয়নায়েতি জ্ঞায়তে ॥ ৫২ ॥ প্রাকৃতানীতি সম্বন্ধঃ ॥ ৫৩ ॥ ৫৪ ॥ চিকীর্বেদিতি যঃ সাধুনাং ছিদ্রাণি ধনাদিহীনতয়া রিক্তানি

^{*} মৃদ্ধাহীনইতাত শ্রিয়াহীন ইতি ঘ-থুস্তকে।

^{*} পরি দৃশাতে ইতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

^{*} রাজ্মিতাত্র ব্রন্ধরিতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

^{*} ততুদেব। ইতিলোকার্ক্তং ক পুশুকে নাস্তি।

हिकोद्धित्व कलाप्ति धामधात्वार्वस्थातेः। বসনস্থেব ছিদ্রাণি সাধুনাং বিপ্লুণোতি যং ॥ ৫৫ ॥ পাপংচেৎ পুরুষঃ কুত্বা কল্টাণুমভিপদাতে। মুচ্যতে সর্বাপাপেভ্যো মহাব্রে ণেব চক্রমা: ॥ ৫৬ ॥ यशामिजाः मञ्जान् रेव जमः शुक्षः * वारशाहिज। এবং কল্যাণমাতিষ্ঠন সর্বাপাপেঃ প্রমূচ্যতে ॥ ৫৭ ॥ পাপানাং বিদ্যাধিষ্ঠানং লোভমেব দ্বিজোত্তম।। লুকাঃ পাপং ব্যবসন্তি নরা নাতিবছঞ্জতা: ॥ ৫৮॥ অধর্মা ধর্মারপেণ ভূণৈঃ কুপা ইবার্তাঃ। তেষাং দমঃ পবিত্রাণি প্রলাপা ধর্ম্মদংশ্রিচাঃ। ্লর্মণ হি বিদ্যতে তেমু শিষ্টাচার: সুতুর্ভ:॥ ৫৯॥ মার্কতের উনাচ। স তু বিপ্রো মহাপ্রাজ্যে ধর্মব্যাধমপুচ্ছত। শিষ্টাচারং কথমহং বিদ্যামিতি নরোভ্য ! ॥ ৬ • ॥ এতদিছামি ভদ্র তে শ্রোতং ধর্মাভৃতাম্বরঃ!। অতো মহামতে! ব্যাধ তদ্বীহি যথাতথম্। ৬১॥ ব্যাধ উবাচ ৷ যজ্ঞো দানং ভপো বেদাঃ সত্যঞ্জি দ্বজস্তুম !। পঞ্চৈতানি পবিতাণি শিষ্টাচারেষু নিত্যদা॥ ৬২॥

শ্রাদ্ধানীনি বঃ বির্ণোতি ধনাদিদানেন বির্ণোতি বিশেষতঃ পিদধাতি
॥ ৫৫ ॥ সঃকল্যানং মোন্দোপায়ং কর্তুমিচ্ছেদেব সাধুসেবনজাং পুণান্মুনুক্ষা উদেতীত্যর্থঃ ॥ ৫৬ ॥ যথেতি নুমুক্ষা পাপনাশ পুর্বিকৈবোদেতীতি ভাবঃ ॥ ৫৭ ॥ ৫৮ ॥ অধর্ষা ইতি লুব্ধাঃ ধর্মগুন্তা অপি ধর্মগুরুপমিব
রূপং যক্ত তেন দন্তেন আর্তাঃ তেবাং দন্তিনাং অত্রব দন্তিনাং সাধুনাঞ্চ বিশেষানবগ্যাৎ তৈরু দন্তিরু শিক্টাচারঃ সূত্রভঃ মুর্বোধ ইতার্থঃ॥ ৫৯॥
॥ ৬০॥ ৬১॥ শিক্টাচারমাছ বজ ইতি ॥ ৬২॥

^{*} পূর্ব্ব মিতাত্ত সর্ব্ব মিতি পাঠ ক পুশুকে।

कांत्रहर्कोरधी वर्ण कृषा पद्ध लाच्यनार्कवय्। ধর্মা 🚁 মিত্যের সংভূফীন্তে শিষ্টাঃ শিষ্টসম্মতাঃ ॥ ৬০॥ ন তেষাৎ বিদ্যতে রক্তং যজ্ঞস্বাধ্যায়শীলিনাম্। আচারপালনঞ্চৈব দ্বিতীয় শিক্টলক্ষণম ॥ ৬৪ ॥ গুরুভ্জেষণং সভ্যমক্রোধো দানমেব চ। এতচ্চতৃষ্টযং ব্রহ্মন্ শিফাচারেষু নিত্যদা॥ ৬৫॥ শিষ্টাচারে মনঃ কুত্বা প্রতিষ্ঠাপ্য চ সর্বাশঃ। যাময়ৎ লভতে বুক্তিং দা ন শক্যা হ্যতোহন্যথা। ৬৬। (विद्याभागितियः मञाः मञारमाभिनियक्षमः। দমস্যোপনিষভ্যাগঃ শিফাচারেয়ু নিত্যদা॥ ৬৭॥ (य जु धर्मानस्वरख वृक्तिमाशांत्रिका नवाः। অপথা গচ্চতাং তেষামন্ত্রযাতা 🐉 চ পীড্যতে ॥ ৬৮॥ যে তু শিষ্টাঃ স্থানিয়তাঃ প্রুতিত্যাগপরায়ণাঃ । ধর্মপ্রানমার্টাঃ সত্যধর্মপরায়ণাঃ॥ ৬৯॥ নিয়ছন্তি পরাং বুদ্ধিং শিষ্টাচারান্বিতা জনাঃ। উপাধ্যায়মতে যুক্তাঃ স্থিত্যা ধর্মার্থদর্শিনঃ । ৭ • ॥

শিষ্ট লক্ষণমাহ কামেতি ॥ ৬৩ ॥ বৃত্তং বৃতং সেচ্ছো পাত্তমিতি যাবৎ বৃত্তোহধীতেপ্যতীতেতি বর্তুলেহপিয়তে বৃত্তে ইতি মেদিনী ॥ ৬৪ ॥ ৬৫ ॥ অতোন্যথাগুৰু শুশ্রমণাদ্যভাবে ॥ ৬৬ ॥ বেদদ্যেতি উপনিষদ্ রহস্যথ সত্যং ব্রহ্ম তদজ্জানে বেদো নিক্ষল ইত্যর্থঃ, এবং দমাভাবে সত্যংনান্তি তাগাভাবে দমোহপি নান্তাতার্থঃ ॥ ৬৭ ॥ অপথ। অমার্গেণ অম্যাতা অম্যান্তা ॥ ৬৮ ॥ ত্রুতিক ত্যাগশ্চতে দে পরং অয়নং স্থানং বেষাংতে ত্রুতিকা পরায়গাঃ ॥ ৬৯ ॥ পরাং বৃদ্ধিং আত্মাকারাং বৃত্তি মিদিনি বিছতি নিগৃহত্তি পরবৈরগায়তইতার্থঃ ॥ ৭০ ॥

 ^{*} ধর্ম ইত্যেব ইতি ক পুস্তকে পাঠ: ।
 * অপীতি ক পুস্তকে পাঠ: ।

নান্তিকান ভিন্নমর্যাদান ক্রুরান পাপমতৌ স্থিতান। ত্যজ তানু জ্ঞানমাশ্রিত্য ধার্শ্মিকানুপদেব্য চ ॥ ৭ ১ ॥ কামলোভগ্রহাকীর্ণাৎ পঞ্চেক্রিয়জলাং নদীম। নাব প্রতিময়ী কুত্বা জন্মতুর্গাণি সন্তর ॥ ৭২ ॥ ক্রমেণ সঞ্চিতো ধর্মো বুদ্ধিযোগময়ো মহান্। শিষ্টাচারে ভবেৎ সাধু রাগঃ শুক্লে ব বাসসি॥ ৭৩॥ অহিংসা সভাবচনং সর্বাভূতহিত পরম। অহি~সা পরমো ধর্মঃ স চ সত্যে প্রতিষ্ঠিতঃ। সত্যে কৃত্বা প্রতিষ্ঠান্ত প্রবর্ত্তরে প্রবন্তরঃ ॥ ৭৪ ॥ সত্যমেব গরীয়স্ত্র শিষ্টাচারনিষেবিতম। আচারশ্চ সভাং ধর্মাঃ সন্তশ্চাচারলক্ষণাঃ ॥ ৭৫ ॥ যো যথাপ্রকৃতিজন্তঃ স স্বা> প্রকৃতিমশ্লতে। পাপাত্মা ক্রোধকামাদীন্ দোষানাপ্লোত্যনাত্মবান্॥ ৭৬॥ আরস্তো ন্যায়যুক্তো যঃ স হি ধর্ম ইতি স্মৃতঃ। অনাচারম্বর্ণেতি এতচ্ছিষ্টারুশাসনম্॥ ৭৭॥ व्यक्षारखोश्नस्यरखा नितर्कातमः। খাজবঃ শমসম্পন্ন। শিকীচারা ভবন্তি তে ॥ ৭৮॥ তৈবিদ্যবৃদ্ধাঃ শুচয়ো বৃত্তবন্তো মনস্থিনঃ। গুরুশুশ্রবে দান্তা: শিকীচারা ভবস্তাত ॥ ৭৯ ॥ ॥ १३ । १२ ॥ শিষ্টাচারবতি শুক্ল পটোপমে যোগধর্মঃ রাগইব সাধু-ৰ্ভবেং শুক্লেব্ৰেডি ইবাৰ্থে বৰাষ্থা তথৈবৈৰ মিত্যমনঃ॥ ৭০॥ অহিংসাং সতাঞ্চ স্তৌতি অহিংসেতি প্রতিষ্ঠাং স্থৈগং॥ ৭३॥ ৭৫॥ যোষ্থেতার্দ্ধং ব্যাচন্টে পাপাত্মেত্যাদিনা অনাত্মবান্ অজিতচিত্তঃ ৷ ১৬ ৷ ৭৭ ৷ অহকারে ৷ দর্পঃ মংসরঃ পর দোষা সহিত্ত্বং তদ্বর্জিতাঃ শিষ্টং গুরুশান্ত্রোক্তং আচরতঃ শিষ্টাচারাঃ ॥ ৭৮ ॥ তৈবিদ্যর্দ্ধাঃ তিত্রো বিদ্যাগ্যজুঃ সামা-ত্মিকা যত্ত্ৰ সাত্ৰিবিদ্যো যজ্ঞস্তত্ত্ৰ সাধ্য স্তৈবিদ্যা যাজ্ঞিকাঃ ব্লতং শীলং তদ্বন্তঃ মনস্মিনঃ জিভচিত্রাঃ ॥ ৭১ ॥ ছুক্ষরাচার কর্মণাং অন্যৈত্র্করঃ আচার-

তেষামহীনসন্ত্রানাং ছুদ্ধরাচারকর্ম্মণাম্।

ইষ্য কর্মাভিঃ সৎক্ষতানাং ঘোরত্বং সংপ্রণশ্যতি ॥ ৮০ ॥
তৎ সদাচারমাশ্চর্য্যং পুরাণৎ শাশ্বতৎ প্রবম্।
ধর্মাং ধর্ম্মেণ পশ্যন্তঃ স্বর্গং যান্তি মনীবিণঃ ॥ ৮০ ॥
আতিকা মানহীনাশ্চ দিজীতিজনপূজকাঃ।
গ্রুত্তর্জোপসম্পানাং সন্তঃ * স্বর্গনিবাসিনঃ ॥ ৮০ ॥
বেদোক্তঃ পরমো ধর্ম্মো ধর্ম্মশাস্তেমু চাপরঃ।
শিক্ষাচারশ্চ শিক্ষানাৎ ত্রিবিধং ধর্ম্ম লক্ষণম্ ।
পারণঞ্চাপি বিদ্যানাং তীর্থানামবগাহ্নম্ ॥ ৮০ ॥
ক্মাসত্যার্ম্বং শোচং সভামাচারদর্শনম্ ।
সর্বাভূতদয়াবত্যে অহিং সানিরতাঃ সদা ॥ ৮৪ ॥
পরুষঞ্চ ন ভাষত্তে সদা সন্তো দিজপ্রিয়াঃ।
গ্রুষ্কানাঞ্চানাঞ্চ কর্ম্মণাৎ ফলসঞ্চয়ে * ॥ ৮৫ ॥
বিপাকমভিজানন্তি তে শিক্ষাঃ শিক্ষসম্মতাঃ।
ন্যায়োপেতা গুণোপেতাঃ সর্বলোকহিতৈ্যিণঃ ॥ ৮৬ ॥

শীলং কর্মযজ্ঞাদি যেষাং তেষাং ঘোরহং হিংসাদি দোষবন্ধং ॥ ৮০ ॥ আশ্চর্যাম্মতাং ভ্রন্থটেয়হাৎ সদাচারং মন্তিরাচীর্গং প্রাণমনাদিং শাখতং অনবছিন্নং ধ্রুবং নিতাং অত্যাজ্য মিতার্থঃ ॥ ৮১ ॥ ৮২ ॥ বেদাকোইগ্রিহোত্রাদিঃ ধর্মশাস্ত্রোক্তঃ অইকাঞ্রাদ্ধাদিঃ শিষ্টাচারঃ হোলকাদিঃ
শিষ্টানাং ভৃষ্টিরিতিশেষঃ তত্ত্তমভিযুক্তৈঃ সতাংহি সন্দেহ পদের বহুষু প্রমাণমন্তঃ করণ্য্যা রক্তর ইতি অস্যাপি শিষ্টাচারে এবান্তর্ভাবাৎ তিবিধ মিত্যুক্তং পারবং সমাপন্থ ॥ ৮৩ ॥ ৮৪ ॥ ৮৫ ॥ বিপাকং ক্রমের্ণ প্রণাপাস্থাঃ ক্ষয়ং তেনপুর্ণাহ্রামহেতুঃ মুখং নেষ্ট্রাং পাপাহ্রামহেতুঃ ধ্বং সেন্চ্রামিতিভাবঃ ন্যায়েযুক্তিঃ গুণাঃ সমাদর্শুন্ত্পেতাঃ॥ ৮৬ ॥ শুক্লাঃ

 ^{*} তেনর†ঃ স্বর্গ গামিন ইতি ক পুস্তকে পাঠঃ।
 * সঞ্চয় মিতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

সন্তঃ স্বৰ্গজিত: শুক্লাঃ নন্নিবিফ্টাশ্চ সৎপথে। দাতারঃ সংবিভক্তারো দীনামুগ্রহকারিণঃ॥ ৮৭ । সর্বপূজ্যাঃ শ্রুতধনাস্তবৈধব চ তপস্থিন: 1 সর্বভূতদয়াবন্তন্তে শিক্টাঃ শিক্টসন্মতাঃ । ৮৮ । मान * मिकाः स्थारलांकानाश्रुवसीह ह व्ययम्। পীডয়া চ কলত্রসা ভ্ত্যানাঞ্চ সমাহিতা: ॥ ৮৬॥ অতিশক্ত্যা প্রয়ছন্তি সন্তঃ নদ্ভিঃ সমাগতাঃ। লোক্যাতাঞ্চ পশ্যন্তো ধর্মমাত্মহিতানি চ। ১০। এব প্রত্যা বর্ত্তমানান্তে ধত্তে শাশ্বতীঃ সমাঃ। অহিংসা সভাব্চন মানুশংস্যুমথার্জবম্॥ ১১॥ অদ্রোহোনা * ভিমানশ্চ ব্রীস্তিক্যি দমঃ শমঃ। ধীমন্তো ধৃতিমস্তশ্চ ভূতানামনুকম্পকাঃ॥ ৯২॥ অকামদ্বেষস যুক্তান্তে সন্তো লোকসাকিণ:। ত্রীণ্যেব তু সভামাছঃ সন্তঃ পদমনুত্তমম্ ॥ ৯৩ ॥ न टेव्च क्वरश्राम्लगांक मजार टेव्च मना वरम् । সর্বত্তি চ দয়াবন্তঃ সন্তঃ করুণ্বেদিনঃ ॥ ১৪ ॥ গচন্তীহ সুসম্ভট। * ধর্ম পরান্মুত্রম্য। শিষ্টাচারা মহাত্মানো যেষাং ধর্ম্মঃ স্থুনিশ্চিতঃ ॥ ৯৫ ॥ অনসূয়া ক্ষমা শান্তিঃ সন্তোষঃ প্রিয়বাদিতা। কামকোধপরিত্যাগঃ শিষ্টাচারনিষেবণম ॥ ৯৬॥

হিংসাশুন্যধর্মবন্তঃ সৎপথে ব্রহ্মারে সম্বিভক্তারঃ কুটুম্বের ॥ ৮৭ ॥ জ্ঞাতধনাঃ বিদ্যাধনাঃ ॥ ৮৮ ॥ ৮৯ ॥ ৯০ ॥ এধন্তেবর্জন্তে ॥ ৯১ ॥ নাভিমানঃ নিরভিমানঃ ॥ ৯২ ॥ সাজ্যং পদং পদনীরং প্রার্থনীরং ॥ ৯৩ ॥ কঞ্চাঃ ক্ষণাবন্তক্তে বেদনশীলাক মুর্থীয়েচু ॥ ৯৪ ॥ ৯৫ ॥ ৯৬ ॥ কর্ম্বচকর্মের

^{*} দান নিষ্ঠা ইতি ক প্রতকে পাঠঃ।

^{*} অনভিমানশ্চেতি ক পুস্তকস্য পাঠঃ।

^{*} ধর্মামিতি পাঠঃ ক প্রস্তুকে।

কর্ম চ শ্রুতসম্পানং সতাৎ মার্সমনুত্তমন্।
শিষ্টাচারং নিষেবন্তে নিত্যং ধর্মমনুত্রতাঃ ॥ ৯৭ ॥
প্রজ্ঞাসাদমারুহ্য মৃচ্যন্তে মহতো ভয়াৎ।
প্রেক্ষন্তো লোকর্ত্তানি বিবিধানি দিজোত্তম ! ॥ ৯৮ ॥
অতিপুণ্যানি পাপানি তানি দিজবরোত্তম ! ।
এতত্তে সর্বামাখ্যাতং যথাপ্রজ্ঞং যথাশ্রুতম্।
শিষ্টাচারগুণং ব্রহ্মন্ পুরস্কৃত্য দিজর্মভ ! ॥ ৯৯ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বানি মার্কপ্রেয়সমাস্যাপর্বানি দিজব্যাধসংবাদে সপ্তাধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২০৭ ॥

মার্কণ্ডের উবাচ।

স তু বিপ্রমথোবাচ ধর্মব্যাধো যুধিন্তির!।

যদহমাচরে কর্ম্ম ঘোরমেতদসংশ্রম্॥ >॥

বিধিস্ত বলবান্ ব্রহ্মন্! তুস্তরং হি পুরাক্কতম্।
পুরাক্কতম্ম পাপস্থ কর্মদোষো ভবত্যরম্॥ ২॥

দোষক্ষৈতস্থ বৈ ব্রহ্মন্! বিঘাতে যতুবানহম্।
বিধিনা হি হতে পূর্বং নিমিন্তং ঘাতকো ভবেং॥ ৩॥

কর্মণেতি গৌড়পাঠে কর্মণাজ্ঞতেন চ সম্পন্ন মিতার্থ: ॥ ৯৭ ॥ প্রজ্ঞাঋতং ভরাখ্যাবস্থু যথাস্কাবিষয়ং জ্ঞানং তদেব উচ্চত্বাৎ প্রাসাদং ভরাৎ সংসারাৎ লোকানাং বৃত্তানি অতীতানাগ্রাদীনি॥ ৯৮ ॥ ৯৯ ॥

> ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তাধিক দ্বিশত তমে।২ধ্যায়ঃ ॥ ২০৭॥

সন্থিতি এতমাংস বিক্রয়াত্মকং ॥ ১ ॥ ২ ॥ দোষদ্যেতি যত্নবানপি ন পরিহতু ং শক্ষোমি বিধেঃ প্রাবল্যাদিতর্থ্যঃ ॥ ৩ ॥ নিমিত্তেতি শরবন্নিমিন্ত-

নিমিত্তভূতা হি বয়ং কর্মাণোইম্ছ দিজোত্তম ! ়া যেষা হতানাং মাংসানি বিক্রীণামীই বৈ দ্বিজ! ॥ ৪॥ তেষামপি * ভবেদ্ধর্মা উপযোগেন ভক্ষণে। দেবতাতিথিভূত্যানাং পিতৃণাঞ্চাপি পূজনম্॥ ৫॥ ওবধ্যো বীরুধকৈচব পশ্বো মুগপক্ষিণঃ। অপ্নাদ্যভূতা লোকস্থা ইত্যপি প্রায়তে প্রভেতঃ ॥ ৬ ॥ व्याजागारमञ्जारमन क निविद्योगीनद्वा नुशः। স্বৰ্গ * স্বত্ন গ্ৰাপ্তঃ ক্ষাবান্ বিজস্ত্তম ! ॥ ৭॥ রাজ্ঞো মহানদে পূর্বাৎ রন্তিদেবস্থা বৈধিজ !। দ্বেসহস্তেত্বধ্যতে পশূনাম্বহংতদ!॥৮॥ অহন্যহনি বধ্যেতে দ্বে সহস্তে গবাৎ তথা। ্সমাংস^ দদতোফুল্প রন্তিদেবস্থা নিত্যশঃ॥ ৯॥ অতুলা কীর্ত্তিরভবন্ধপন্থ দিজমন্তম ।। চাতুর্মান্তে চ পশবো বধ্যন্ত ইতি নিত্যশঃ॥ ১০॥ অগ্নয়ো মাশ্সকামাশ্চ ইত্যপি ক্রয়তে ক্রতিঃ ৷ যজ্ঞেষু পশবো ব্ৰহ্মন্ ! বধ্যন্তে সততং দিজৈঃ ॥ ১১ ॥

তুতা বয়ং সন্ধাতৃবৎ কর্তাতু বিধিরেবেতার্থঃ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ অন্নাদ্যভূতাঃ অন্নঞ্চ তদদ্যঞ্চ ভোগ্যং ভক্ষ্যঞ্চেতার্থঃ সর্বমন্যান্নং ভবতীতি জ্ঞতেঃ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ যেস্যান্নয়ো জুহ্বতো মাংস কামাইতি মন্ত্রালিক্ষমপি জ্ঞতি-বেব ॥ ১১ ॥

^{*} তেষামপি ভবেং কর্ম উপভোগেন ভক্ষণ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

প্রসাদেনে ত্যত্ত প্রদানেনেতি ক-য প্রস্তকরে। পাঠঃ।

^{*} স্বর্গগুড়কর মিতি ঘ পুস্তকে।

সংস্কৃতাঃ কিল্ মন্ত্রৈশ্ব তেহপি স্বর্গমবাপ্লাবন্।
যদি নৈবাগ্রয়ো ব্রহ্মন্! মাংসকামান্তবন্ পুরা॥ ১২ ॥
ভক্ষাং নৈবান্তব্যাংসং কন্সচিদ্ধিজস্ত্রম।॥ ১৩ ॥
ভক্ষাং নিবান্তব্যাংসং কন্সচিদ্ধিজস্ত্রম।॥ ১৩ ॥
ভক্ষাপি বিধিক্তিশ্ব মুনিভিন্মাংসভক্ষণে।
দেবতানাং পিতৃ গঞ্চ ভুঙ্কে দন্ত্যাপি যঃ সদা।
যথাবিধি যথা শ আদ্ধিং ন প্রত্নাত্তি ভক্ষণাৎ॥ ১৪ ॥
ভাষাংসাশী ভবত্যেবমিত্যাপি ক্রায়তে প্রাক্তঃ।
ভাষ্যাং গচ্ছন্ ব্রহ্মারী খাতৌ ভবতি ব্রাহ্মাণঃ॥ ১৫ ॥
সত্যান্তে বিনিশ্চিত্যু অ্রাপি বিধিক্ষান্তত্ত।
কৌদাসেন তদা রাজ্ঞা মানুবা ভক্ষিতা দ্বিজ!।
শাপাভিভূতেন ভূশমত্র কিং প্রতিভাতি মে॥ ১৬ ॥
স্বধর্ম ইতি ক্রা তু ন তাজামি দিজোভ্রম!।
পুরা কৃতমিতি জ্ঞান্বা জীবামোতেন কর্ম্মণা॥ ১৭ ॥

॥ ১২॥ অতাপীতাদি সার্দ্ধলোকং কলোতু মাংসেন পৈতৃক্যা নিষেধাৎ দেবতাশ্বেষ যজিয় মাংসাদন্ত্র মাংস ভক্ষণং ছ্যাতোবেতি ভাবঃ
॥ ১৩॥ ১৪॥ অম্ংসাণীতি যজিয় মাংস ভুজেহিপি শতুগামিনো বৃদ্ধরে উপচারিকমমাংসাণিত্ব মিতিভাবঃ॥ ১৫॥ সত্যান্ত জ্ঞানকর্ম-মার্দো অত্যাপি যজিয় মাংস ভক্ষণে বিধিবিশেষঃ তমেবাই পরকৃতিমুখেন সোদাসেনেতি কর্তৃহাদ্যভিমানবতা নুট্নে কর্মটেন যজিয়মাপি মাংসং ভক্ষণীয়ং ন জ্ঞানমার্গছেনেতি ভাবঃ রভিদেবনিদর্শনন্ত যুগাভরাভিপ্রায়ং অত্যবিং প্রতিভাতিমে কিং শকঃ কুৎসায়াং অত্য মাংসে ভক্ষণীয়ে মম্নিন্দা প্রতিভাতি অত্যব ন হল্মিন ভক্ষামীতি প্রায়ণবাজক্ষাদিংসালিদাবাইতীত্যশিল্পাই শ্বেতি অকর্ম ইতাস্য ব্যাখ্যা পুরায়ত মিত্যাদি ॥ ১৭॥

^{*} যথাএদ মিতি ক প্তক্স্য পাঠঃ।

স্বৰ্ণ্ম ত্যন্সতো ব্ৰহ্মন্নধৰ্ম্ম ইতি দৃশ্যতে। স্বকর্মনিরতে! যস্ত ধর্মাঃ স ইতি নিশ্চয়ঃ ॥ ১৮॥ পূর্বাং হি বিহিত্ত কর্ম্ম দেহিনং ন বিমুঞ্জতি। थाळा विधितसः पृरको वद्या कर्म निर्ने सा । ১৯ ॥ দ্রফীব্যা তু ভবেৎ প্রজ্ঞা ক্রুরে কর্ম্মাণ বর্ত্ততা। কথ্য কর্ম শুভ্র ক্র্যাং কথ্য মুচ্চে পরাভবাৎ ॥ ২০॥ কর্মণস্তদ্য ঘোরদ্য বছধা নির্ণয়ো ভবেৎ। ঁ দানে চ সভ্যবাক্ষ্যে চ গুরুশুক্রঘণে ভথা ॥ ২১॥ দিজাতি পুজনে চাহং ধর্মে চ নিরভঃ সদা। অভিমান!তিবাদাভ্যা^ নিরুতোহিমা দ্বিজোত্তম!॥ ২২॥ ক্ষিং সাধিতি মন্যন্তে তত্ত্র হিৎসা পরা স্মৃতা। কর্ষত্তো লাঙ্গলৈঃ পুংসো স্থান্তি ভূমিশয়ান্ বহুন ॥ ২ ।॥ জীবানন্যাংশ্চ বছশস্তত্ত কিং প্রতিভাতি মে। ধান্যবীজানি যান্যাছব্ৰীহ্যাদীনি দিজোত্তম ! । ২৪ ॥ সৰ্বাণোতানি জীবানি তত্ত্ব কিং প্ৰতিভাতি মে। * আধ্যাক্রম্য পশু~শ্চাপি ছত্তি বৈ জক্ষান্তি চ॥ ২৫॥ वका व्यथोवधी कालि हिन्ति शुक्रवा दिख !। জীবা হি বহবো ব্ৰহ্মনু! বুক্ষেমু চ ফলেমু চ ॥ ২৬॥ উদকে বহুবশ্চাপি তত্র কিং প্রতিভাতি মে। সর্বাং ব্যাপ্তামদং ব্রহ্মন্ ! প্রাণিভিঃ প্রাণিজীবলৈঃ ॥ ২৭ ॥

॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২ ॥ তথানি হিংদাম্মিশ্রং কর্ম তবাপাযোগা মিতাশেষ্য সর্বাত্ত হিংসায়া অপরিহার্যাত্তে আছ ক্র্যিং সাধীতীতাাদিনা কেন রাজীবান ছিংসভাপিতু সর্বেইপি হিংসভেবেতার্থঃ॥ ২০॥ ২৪॥ ॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥

^{*} অগ্নাক্রমোতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

মৎসাান্ গ্রসন্তে মৎস্যাশ্চ তত্র কিং প্রতিভাকি মে । সব্রৈঃ সন্তানি জীবন্তি বছধা দিজসত্তম ! ॥ ২৮॥ প্রাণিনোহন্যোন্যভক্ষ্যাশ্চ তত্র কিং প্রতিভাতি মে। চংক্রম্মাণা জীবাং শ্চ ধর্ণী সংশ্রেতান বহুন ॥ ২৯ ॥ পদ্র্যাং দ্বন্থি নরা বিপ্র ! তত্ত্ব কিং প্রতিভাতি মে। উপবিষ্টাঃ শয়ানাশ্চ স্নন্তি জীবাননেকশঃ॥ ৩০॥ জ্ঞানবিজ্ঞানবস্তুশ্চ তত্র কি॰ প্রতিভাতি মে। জীবৈত্র স্থামদং সর্বামাকাশং পৃথিবী তথা। ৩১॥ অবিজ্ঞানাচ্চ হিংসন্তি তত্র কি॰ প্রতিভাতি মে। অহিৎসৈতি যতুক্তং হি পুরুষৈর্বিস্মিতঃ প্রা। ৩২ ॥ কে ন হিংমন্তি জীবান্ বৈ লোকেহিস্মন্ দ্বিজসন্তম ।। বছ সংচিন্তা ইতি বৈ নান্তি কশ্চিদহিৎসকঃ। ৩০॥ অহিংসায়াস্ত নিরতা যতয়ে। দ্বিজসন্তম । । কুর্ব্বন্ত্যেব হি হিংসাং তে যত্নাদম্পতরা ভবেৎ। ৩৪। কালক্ষ্মাশ্চৈব পুর্য়য়াঃ কুলে জাতা মহাগুলাঃ i মহাঘোরাণি কর্মাণি কৃত্বা লজ্জন্তি বৈ ন চ ॥ ৩৫॥ সুক্রদঃ সুক্রদোহন্যাপশ্চ তুক্র দশ্চাপি তুক্র দঃ। সম্যক্প্রবৃত্তান্ পুরুষান্ ন সম্যপন্থপশ্যত: ॥ ৩৬ ॥ मग्रेष्कम् न नन्ति वाञ्चवा वाञ्चरेवत्रि। গুৰু শৈচৰ বিনিন্দন্তি মূচাঃ পণ্ডিভমানিনঃ॥ ৩৭॥ বছ লোকে বিপৰ্য্যন্তং দৃশ্যতে ছিল্পন্তম ! ! ধর্মাযুক্তমধর্মাঞ্চ তথা কি॰ প্রতিভাতি মে * ॥ ৩৮॥ 1241001001001001001001001001001001

^{*} অনক্যা ইতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

* অত্তাধ্যায়ে যত্ত্ব অপ্তিভাতিমে ইতি পাঠঃ বৰ্ততে তত্ত্ব তত্ত্ব
য-ক-পুস্তকে প্ৰতিভাতিতে ইতি পাঠেছিন্তি।

বক্ত্র বছবিধং শক্যং ধর্মাধর্মেষু কর্মষু।
স্বকর্মনিরতো যোহি স যশঃ প্রাপ্নেয়ায়হৎ ॥ ৩৯ ॥
ইত্যারণাকে পর্বানি মার্কণ্ডেয়সমাস্যাপর্বানি শ পতিব্রতোপাখ্যানে
ভিজব্যাধসংবাদে অফাধিকদ্বিত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ২০৮॥

মার্কণ্ডের উলাচ।
ধর্মবাংগিন্তে নিপ্নং পুনরের ঘুধিন্তির !।
বিপ্রবিভযুবাচেদং সর্বাধর্মজিত হিলারুশাসনম্ ।
ক্রাধ উলাচ।
ক্রাতিপ্রমানো ধর্ম্মোহ্রমিতি ব্লারুশাসনম্ ।
ক্রানা গতির্হি ধর্মস্য বহুশাখা হানন্তিকা ॥২॥
প্রানান্তিকে বিবাহে চ বক্রব্যমন্তং ভবেৎ।
অন্তেন ভবেৎ সত্যং সত্যেনৈবান্তং ভবেৎ॥ ॥
বিপ্র্যুর্ক্তো ধর্মাঃ পশ্য ধর্মস্য ক্রান্তান্॥ ৪॥
বং করেত্যেশুভং কর্ম শুভং বা যদি সন্তম।
অব্শৃং তৎ সমাপ্রোতি পুরুষো নাত্র সংশ্রং॥ ৫॥
॥৩৯॥

ইত্যার**লকে পর্বা**ণি নৈলকতীয়ে ভারতভাবদীপে অন্তাধিক দিশততমে।ইধ্যায়ঃ ॥ ২০৮ ॥

শান্তাপদয়ে জ্ঞানাস্কৃত্য ধর্মাঃ প্রোক্তাঃ সম্প্রতি জ্ঞানং বিনা ক্রতক্ত্যতা নান্তীতি বক্তুং ধর্মতিজ্বসা ভ্রবগাহনং প্রপঞ্চন নিঃপারস্বস্থাচাতে
ধর্মব্যাধিস্থিত্যাদিনা ৫১॥২॥৩॥ ধারণাবধারণং নিশ্চয় ইত্যর্থঃ ॥৪॥
॥৫॥

^{*} অধ্যায়াবসানে পতিব্রতোপাখ্যানে ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে ন্স্তি।

বিষমাঞ্চ দশাং * প্রাপ্তো দেবানু গর্হতি বৈ ভূশমু। আলুনঃ কর্ম্মদোষ্টি ন বিজ্ঞানাত্যপঞ্জিত। ॥ ৬॥ মু: ঢা নৈক্নতিক শ্চাপি চপলশ্চ দ্বিজ্ঞান্তম। স্থ্যতুঃথবিপর্যাদান দদা সমুপপদ্যতে ॥ ৭॥ নৈনং প্রক্রা স্থনীত বা ত্রায়তে নৈব পৌরুষয়। যো যমিচ্ছেদ্বথা কামণ তং তণ কামং স আপ্লাই । ৮॥ यि मानिश्वाधीन (शोक्षमा कियाक्त्य। স্থ্যতাশ্চাপি দক্ষাশ্চ মতিমন্তশ্চ মানবাঃ ৷ ৯ ৷ मृशारच निष्कलाः मद्यः श्रहीशाः * मद्यकर्षानिः । ভূতানামপরঃ কশ্চিদ্ধিংসায়াৎ সততোপিতঃ। ১০॥ বঞ্চনায়াঞ্চ লোকস্যা স স্থা জীবতে সদা। অচেন্টমপি চাসীন প্রী: কঞ্চিত্রপতিষ্ঠতি ॥ ১১॥ কশ্চিই কর্মাণি কুর্বান্ হি ন প্রাপামধিগচ্ছতি। দেবানিষ্টা তপস্তপ্তা * কুপণৈঃ পুত্রগুদ্ধিভিঃ॥ ১২॥ দশমাসধূতা গর্বে জায়ত্তে কুলপাণসনাং। অপরে ধনধালৈ চেটোক্ট পিতৃস্ঞিতৈঃ । ১৩ ॥ विश्रोलत जिला शास्त्र नकारे खरतव मक्रोतः। কশ্বজা হি মনুষ্যাণা বোগা নাস্তাত্ত সংশয়ঃ । ১৪॥ व्याधरमा विनि वर्षि एख * वारिषः क्रमभूभा हैव । ত চাপি कुनलिरेक्तिपार्निश्रोनः मः ভৃতोषरेशः॥ ১৫ ॥ । ৬॥ ৭ ॥ স্থনীতং গুকশিকা ॥৮॥ ১ ॥ প্রহীণাঃ প্রান্তারপীতার্থঃ ॥ ५० ॥ ५८ ॥ श्रुविश्रं क्षिः श्रुविकारेमः ॥ ५२ ॥ ५० ॥ ५८ ॥ ५८ ॥ धारुनी

^{*} প্রাপ্যেতি ক প্স্তকে পাঠঃ।

* সর্ব্বেত্যত্ত স্ব স্থ ইতি ঘ ক পুস্তক্সা,পাঠঃ।

* তথ্যেত্যত্ত কুড়েতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

^{*} ব্যাধয়ো বিনিবার্য,ন্ত ইত্যত্ত্র আধিভিক্তির বাধ্যন্তে ইতি ঘ ক প্রস্তক্ষ্য পাঠা।

ব্যাধয়ো বিনিবার্যান্তে মুগা ব্যাধেরিব দিজ।।

বেষামন্তি চ ভাক্তব্যং প্রহণীদোষপীডিতাঃ। ১৬ ॥

ন শক্রুন্তি তে ভোক্তব্যং পশু ধর্মভুতাম্বর!।

অপরে বাহুবলনঃ ক্রিশুন্তি বহবো জনাঃ॥ ১৭ ॥

তুংখেন চাধিগচ্ছন্তি ভোজনং দিজসন্তম!।

ইতি লোকমনাক্রনং মোহশোকপরিপ্লুত্য॥ ১৮॥

বেসাতসাহসক্রদাক্ষিপ্তং ক্রিয়মাণং বলীয়সা।

ন দ্রিয়েয়ুর্ন জীর্যায়ুঃ সর্বের স্থাঃ শ সার্বকামিকাঃ॥ ১৯॥

নাপ্রিয়ং শ প্রতিপশ্রেযুর্বিশিষ্ত যদি বৈ ভবেং।

উপযুগির লোকস্য সর্বেগ গন্তং সমীহতে।

যততে চ যথাশক্তি ন চ তম্বর্ততে তথা॥ ২০॥

বহবঃ সংপ্রদৃশ্যন্তে তুল্যনক্ষত্রমঙ্গলাঃ।

মহন্ত ফলবৈষম্যং দৃশ্যতে কর্মসন্থিয়ু॥ ২১॥

ন কেচিদীশতে ব্রহ্মন্। স্বয়্যং প্রাছ্য্য সত্রম।।

কর্মণাপ্রাক্কতা ল নাং বৈ ইহ দিদ্ধিঃ প্রাদৃশ্যতে॥ ২২॥

বিষ্টান্তবোগঃ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ অনাক্রনং অসহায়ং আক্রন্দ ক্রন্দনেহবানে মিত্রদারুক যুদ্ধয়েরিতি মেদিনী ॥ ১৮ ॥ স্রোত্তসা কর্মপ্রবাহেন অসকং আদ্বিপ্তথ আধিব্যাধিভিন্তাভিঙং ব্রিয়মাণং অবশং ॥ ১৯ ॥ নত্ন সর্প্রেশাএব দৃশ্যন্তে নেত্যাহনেতি ॥ ২০ ॥ বহব ইতি দৈবজ্ঞ শাস্তমাপি ব্যভিচারিফল মিত্যাশয়ঃ ॥ ২১ ॥ নেভি স্বীয়ম্পি বস্তু স্বস্যান্ধীনং প্রাক্রম্পাদ্বভীত্যর্থঃ তত্তাপি দৃষ্ট সাম্প্রী বৈকল্যমিতি লোকায়ত মত্মাশঙ্কাহ কর্মণেতি প্রাক্রতানাং দেহাত্মবাদিনাং কৃতহানাক্রতাভ্যাগমাদিদেশ্য দানিনান্ত প্রাক্রিব প্রধান মিতিভাবঃ ॥ ২২ ॥ এতদেববক্তুং জীবস্য নিত্য-

^{* *} শাৰ্ষইত্যত্ত দৰ্ব্ব ইতি পাঠান্তর্ম।

প্রতি পশােষুরিতাত্র প্রতি পদােরুরিতি পাঠঃ য পুস্তকে।

^{*} কৰ্মনাং প্ৰাকৃতা মিতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

যথা শ্রুতিরিরং ব্রহ্মন্! জীবঃ কিল সনাতনঃ।
শরীরমধ্বং লোকে সর্বেষাং প্রাণিনামিহ॥ ২০॥
বধ্যমানে শরীরে তু দেহনাশো ভবভ্যুত!।
জীবঃ সংক্রমতেহন্যত্র কর্ম্বিক্সনিবক্সনঃ॥ ২৪॥

ব্ৰাহ্মণ উবাচ।

কথং কর্মবিদান শ্রেষ্ঠ জীবো ভবতি শাশ্বতঃ। এতদিচ্ছামাহং জ্ঞাতুন তত্ত্বেন বদতাম্বর!॥২৫॥

ব্যাধ উবাচ।

ন জীবনাশোহন্তি হি দেহভেদে মিথৈতদাছমি রতীতি মূঢা:।
জীবস্ত দেহান্তরিত: প্রযাতি দশার্দ্ধতৈবাস্তা শরীরভেদঃ ॥ ২৬ ॥
অন্যো হি নাশাতি কৃতং হি কর্ম্ম মনুষ্য লোকেমনুজন্য কন্দিং।
যত্তেন কিঞ্ছিদ্ধ কৃতং হিকর্ম তদশুতে নাস্তি কৃতস্থানাশঃ॥ ২৭ ॥
স্পুণ্যশীলা হি ভবন্তি পুণ্যা নরাধনাঃ পাপকৃতো ভবন্তি।
নরোহনুষাতন্ত্রিই কর্মজিঃ বৈস্ততঃ সমুৎপদ্যতি ভাবিতকৈঃ॥ ২॥

ত্বমাহ যথেতি॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥ দশার্কতা পঞ্চরং॥ ২৬॥ নত্ত্বতাশো১পি ক্ষাদিকলেয় দৃশাতে২তঃ ক্তংকমান দেহান্তরেহ স্বর্তিবাতে দেহাদন্য্যা ভাষানিত্যাশঙ্ক্ষাহ অন্যোহীতি ভোজনকলবং ক্ত্ন্য কর্মণঃ
কলমপরিহার্যাং যত্র তু সদাঃ কলং ন দৃষ্টং তত্তাপি জন্মান্তরে ভবিষ্যতীতাহ্মেয়ং যত্র চাক্তমপি কলং নিধিলাভাদি উপেতি তত্র জন্মান্তরী,য়ং
সাধনং কপ্যামিত্যর্থঃ॥ ২৭॥ উৎপদ্যতি জন্মান্তরং লভতে যতন্তঃ প্রাচীনৈঃ কর্মাভিভাবিতোরঞ্জিতঃ অভএব ক্রম্মানং 'প্রকৃত্য প্রস্তুতে তথ বিদ্যাকর্মণী সমন্বারভেতে পূর্কপ্রজ্ঞাচেতি তন্মাৎ স্বক্তমেব স্বয়ং ভূঙ্জে
নত্ত্বাক্তনন্যাহতোশান্তি ক্ত্র্যা নাশ ইত্যুক্তং॥ ২৮॥ বাশ্বণ উবাচ। কথং সন্তবতে যোনো কথং বা পুণ্যপাপয়োঃ। জাতীঃ পুণ্যা স্তৃ * পুণ্যাশ্চ কথ**৲ গছেতি সম্ভন**়॥ ২৯॥

বাধ উবাচ।

গর্ত্তাধানসমাযুক্তং কর্ম্মেদং সংপ্রদৃষ্ঠতে।
সমাসেন তু তে ক্ষিপ্রং প্রবক্ষ্যানি ছিজোন্তম ! ॥ ৩॰ ॥
যথা সম্ভ্রমন্তারঃ পুনরেব প্রজারতে।
শুভক্বজুভয়োনীযু পাপক্ষৎ পাপযোনিষু ॥ ৩১ ॥
শুভৈঃ প্রযোগদেবত্বং ব্যামিশ্রৈর্মানুষো ভবেৎ।
মোহনীয়ৈর্বিযোনীযু স্বধোগামী চ কিল্মিনী ॥ ৩২ ॥
জাতিমৃত্যুজরাত্বংথৈ সততং সমভিদ্রতঃ।
সঞ্চরে † পচ্যমানশ্চ দেবিরাজ্বকুতের্নরঃ॥ ৩৩ ॥

॥ ২৯ ॥ এবং স্থলশরীরাদন্যত্বসাত্মনঃ প্রদাধ্য লিন্ধশরীরাদিপি ব্যতিরেকং সাধ্যিত্বং বৈরাধ্যাৎপত্যর্থং জন্মাদীনাং ছংখ রপত্মাহ গর্ভেডাদিনা গর্ভাধানেন পিণ্ডোৎ পত্তিপ্রকাশকেন প্রস্থেন এতংসর্বং সমাযুক্তং সমাছিতং তদেব সংক্ষিপ্যাহ ইদং যৎ সংপ্রদ্ধাতে স্থলদেহাদি ঘটান্তং তৎসর্বং কর্মেবেতি অরমর্থঃ ন্রিয়মাণোজন্ত বিদ্যা কর্ম পূর্বে প্রজ্ঞাভিঃ পঞ্চপ্রামনাবৃদ্ধি দশেক্রিয়রূপ সপ্তদশকাত্মকেন লিন্ধেন ইতউৎক্রম্য যথা কর্ম স্থাং নরকং বা গ্রাধা তত্তভোগান্ ভূক্ত্বা কর্মশোর্থণ র্ফিদারেণ প্রবিদ্যালি করপেণ পরিণমতে বীজে প্রনিদ্ধ শরীব্রণাধিশ্য তৈরেব পূর্বেবিদ্যাদি সংস্কারে ব্রক্তাজায়তে তৎকেন কর্মণা ক্রেজায়ত ইত্যেতৎ প্রক্রামীতার্থঃ ॥ ৩০ ॥ সংভ্তাঃ সংভারাঃ কর্মবীজ্ঞান্ত বিশ্বেন উৎক্রান্তামিন্ত অধ্যানরক্তির্যক্ষ্ক্র এ২ ॥ জাতির্জন্মন্তরে ধ্রেনিসঞ্চরে উৎক্রান্তামিন্ত। ৩৩ ॥

অত্তরপুণ্যাশ্চ ইতি ক পুস্তকন্ত পাঠ:।
 শুসংসারে ইতি ক পুস্তকন্য পাঠ:।

তির্যাদের্যানিসহস্রাণি গত্বা নরকমেব চ। জীবাঃ সংপরিবর্ত্তন্তে কর্মাবন্ধনিবন্ধনাঃ॥ ৩৪॥ জম্বস্তু কর্মভিব্তৈকৈ: স্বক্ষুতি: প্রেত্য তুঃখিত: ' তদ্বংখপ্রতিঘাতার্থ মপুণ্যাৎ যোনিমাপুতে। ৩৫। ততঃ কর্মা সমাদত্তে পুনরনান্নব বছ। পচ্যতে তু পুনস্তেন ভুক্ত্যাপথ্যমিবাভুরঃ॥ ৩৬॥ অজজমেব ছুঃখার্ত্তোহছুঃখিতঃ সুখদ জকঃ। ততোহনির্ত্তবন্ধবাৎ কর্মণানুদয়াদিগি। ৩৭॥ পরিক্রামতি সংসারে চক্রবদ্বছবেদনঃ। স চেন্নির্ত্তবন্ধস্ত বিশুদ্ধশ্চাপি কর্মাভিঃ॥ ৩৮॥ তপোযোগদমারম্ভ^ কুরুতে দিজসভম।। কর্মাভিকছভিশ্চাপি লোকান্মাতি মানবং॥ ৩৯॥ স চেন্নিরম্ভবন্ধস্ত বিশুদ্ধশাপি কর্মাতিঃ। প্রাপ্তি স্কুতালোঁকান্ যত্র গত্বা ন শোচতি ॥ ৪০ ॥ পাপং কুর্ঝন্ পাপরুত্তঃ পাপ়স্থান্তং ন গছতি ! তস্মাৎ পুণাং যতেৎ কর্ত্তং বর্জ্জযীত চ পাপকম্ ॥ ৪১ ॥ অনপূর্ঃ কুভজ্ঞ কল্যাণানি চ'দেবতে। সুখানি ধর্মমর্থঞ স্থর্গঞ্চ লভতে নরঃ॥ ৪২॥

॥ ৩৪॥ প্রেত্যমূলা হুংগাত্মকঃ প্রতীষাতঃ হুংখং ভোক্সিতার্থঃ॥ ৩৫॥ অপ্রামিতিছেদঃ॥ ৩৬॥ অহুংখিত ইতিছেদঃ দুংগাতাবস্যুচস্থ মিতিসংজ্ঞা মতু সংসারে স্করপতঃ স্থমন্তি তথাচাতঃ ভারেহপনীতে স্থানঃ সংস্কৃতাঃস্টতি ততঃ অহুং-থেস্থাগাসাৎ অনি বৃত্তেতিছেদঃ॥ ৩৭॥ নির্ভবদ্ধোবিতরাগঃ তত্র হেতঃ বিশুদ্ধদেতি॥ ও৮॥ তদ্যাক্ষণং তপো-যোগায়ে। আবলোচনধানিরোঃ সমার্যাং॥ ৩৯॥ ৪০॥ যতেও যতেত ॥ ৪১॥ পুণ্যক্ষমাহ অনস্থুরিতি॥ ৪২॥ সংস্কৃত্যা অফ্টাহ্বারিংশং সংস্কার

সৎস্কৃতভাচ দান্তিভা নিয়তভা যতাত্মনঃ। প্রাজ্ঞদ্যানন্তর। রুজিরিহ লোকে পরত চ ॥ ৪৩ ॥ সতাং ধর্মেণ বর্ত্তেত ক্রিয়াং শিক্টবদাচরেং। অসংক্লেশেন লোকশু বৃত্তিং লিপ্সেত বৈ দ্বির।॥৪৪॥ স্বধর্মেণ ক্রিয়া লোকে কর্ম্মণঃ সোহপ্যসঙ্করঃ। সন্তি হাগমবিজ্ঞানাঃ শিষ্টাঃ শাস্ত্রে বিচক্ষণাঃ ॥ ৪৫ ॥ প্রাজ্ঞা ধর্ম্মেণ রমতে ধর্ম্মাঞ্চেবোপজীবতি। তস্মাদ্ধনাদ্ধাপ্তেন ধনেন দ্বিজসন্তম । ॥ ৪৬॥ তক্ষৈব সিঞ্তে মূল^ গুণান্ পশাতি যত্র বৈ। ধর্মাত্মা ভবতি ছেবং চিত্তঞ্চাম্ভ প্রদীদতি ॥ ৪১ ॥ স মিত্রজনসমুষ্ট ইহ প্রেভাচ নন্দতি। শব্দ স্পাৰ্শ তথা ৰূপং গ্ৰানিকাং ক্ষ সন্তম! !! ৪৮ ৷ প্রভুবং লভতে চাপি ধর্মাস্থৈতৎ ফলৎ বিছুঃ। ধর্ম্ম চ ফল শলকু! ন তুষাতি মহাদ্বিজ! ॥ ৪৯॥ ष्यञ्भागात्। निर्दितनगात्भात खानकक्षा। প্রজ্ঞাচকুর্নর ইহ দোয় নৈবারুরুধ্যতে ॥ ৫০ ॥

যুক্তন্য দান্তন্য জিত বাহে ক্রিয়ন্য নিয়ত্ন্য শৌচাদি পরনা যতাত্মনঃ জিতচিত্তন্য অন্তরাস্থলভারত্তি জবিনং বিষয় স্থামিতি যাবং ॥ ৪৯ ॥ ॥ ৪৪ ॥ স্থামেণিত যতঃ শিক্ষাউপদেফারঃ সন্তি অতঃ কর্মণঃ কর্মাণি বজী কর্মস্থামেণ সোচিতেনাচারেণ ক্রিয়াঃ ক্রুছ আণীর্লিঙ্ মধ্যমৈক বচনং নাপিঅসংকরঃ ধর্মানামিতিশেষঃ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ যত্র ধর্মো ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ প্রভূহং অপ্রতিহতেছহং ধর্মানাতি চিত্তপ্রাভোগেছায়াং ক্ষীণায়াং স্থাপিবৈরায়াং জায়তে ইতঃর্যঃ ॥ ৪৯ ॥ অতৃপামানঃ প্রতিমলভ্যানঃ। নির্বেদং বৈরায়াং আপোদে আপোতি লকারব্যতার আর্থঃ দোষঃ রায় দ্বেদিকং নাভ্রুধ্যতে ভদ্বশোন ভ্রতীত্যর্থঃ ॥ ৫০ ॥

বিরজ্যতে যথাকাম ল চ ধর্মাণ বিমুক্ষতি।
সর্বত্যাগে চ যততে দৃষ্ট্যা লোকং * ক্ষমাত্মকম্ ॥ ৫১ ॥
ততো মোক্ষে প্রযততে নারুপায়াতুপায়তঃ।
এবং নির্বেদমাদত্তে পাপং কর্মা জহাতি চ ॥ ৫২ ॥
ধার্ম্মিকন্টাপি ভবতি মোক্ষঞ্চ লভতে পরম্।
তপো নিশ্রেমং জভোস্তম্ম মূলং শ্রেমা দমঃ ॥ ৫৩ ॥
তেন সর্বানবাপ্নোতি কামান্ যান্ মনসেচ্ছতি।
ইন্দিয়াগাং নিরোধেন সত্যেন চ দমেন চ।
ব্রহ্মণঃ পদমাপ্নোতি যৎ পরং দ্বিজস্তম! ॥ ৫৪ ॥
বাহ্মণ উবাহ।

ইন্দ্রিয়াণি তু যান্যান্থ: কানি তানি যতত্তত ! ।
নিপ্রাহ্শ্চ কথং কার্য্যো নিপ্রাহস্ত চ কিং ফলন্ ॥ ৫৫ ॥
কথঞ্চ ফলমাপ্রোতি তেষাং ধর্মাভূতান্বর ! ।
এতদিছামি তত্ত্বেন ধর্মাণ জ্ঞাতুণ † নিবোধমে ॥ ৫৬ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কপ্রেয় সমাস্থা পর্বাণি দ্বিজব্যাধ
সংবাদে নবাধিকদ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২০৯॥

॥ ৫১॥ উপায়ত এব মোক্ষে প্রবততে নত্তপায়াকৈবমাত্রাশ্রাশ দিতি-যাজনা॥ ৫২॥ তপঃজ্ঞানং নিঃশ্রেয়সং মোক্ষসাধনং॥ ৫০॥ তেন তপ্রসা ॥ ৫৪॥ তেষাং নিগ্রহ্ম্য ফলঞ্চ কিং কথঞ্চ ফলমাপ্রোতীতিসমন্ধঃ॥ ৫৫॥ ॥ ৫৬॥

> ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভাৰত ভাৰদীপে নবাধিক দিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২০৯ ॥

ক্ষাত্মক মিতি পাঠান্তরম্ ঘ পুত্তকে।
 কৃষার্থ্যকে ইতি ক পুত্তকে পাঠঃ।

মার্কণ্ডের উবাচ।

এবমুক্তস্ক্র বিপ্রেণ ধর্মাব্যাধো যুধিষ্ঠির!

প্রত্যুবাচ যথা বিপ্রং তচ্চুণুম্ব নরাধিপ! ॥ ১ ॥

ব্যাধ উবাচ।

বিজ্ঞানার্থং মনুষ্যাণাং মনঃ পূর্বাং প্রবর্ততে।
তৎ প্রাপ্য কাম ভজতে রোষঞ্চ দিজসন্তম। ॥ ২ ॥
ততন্তমর্থং যততে কর্ম্ম চারভতে মহং।
ইন্টানা ক্রপগন্ধানামভ্যাসঞ্চ নিষেবতে ॥ ৩ ॥
ততো রাগং প্রভবতি দেষশ্চ তদনন্তরম্।
ততো লোভঃ প্রভবতি মোহশ্চ তদনন্তরম্॥ ৪ ॥
ততো লোভাভিভূতক্য রাগদ্বেষহতক্য চ।
ন ধর্ম্মে জায়তে বুদ্ধিব্যাজাদ্ধর্ম করোতি চ ॥ ৫ ॥
ব্যাজেন চরতে ধর্ম্মর্থং ব্যাজেন রোচতে।
ব্যাজেন সিধ্যমানেষু ধনেষু দিজসন্তম! ॥ ৬ ॥
তত্তবে রমতে বুদ্ধিক্তঃ পাপ দিকীর্ষতি।
স্ক্রন্থিব্যাগাশ্দ পণ্ডিতৈশ্চ দিজোত্তম! ॥ ৭ ॥

এবমিতি ॥ ১ ॥ স্থান শরীরাদপ্যান্তানং বিবেচিতৃং ইন্দ্রিয়াণা মজরেদোষমাই বিজ্ঞানার্থ মিত্যাদিন। মহাস্কেলরে বিদ্যমানাং স্বটাদীনাং
বিজ্ঞানার্থং ঘটলিছন্তাঘাইগতি দীপপ্রতের ব্রহ্মনি বিদ্যমান রূপাদীনাং
বিজ্ঞানার্থং ইন্দ্রিয়াছিলে দারা বহিগতং তৈজসংমনঃ প্রথমং প্রবর্ততে তৎ
রূপাদি বিজ্ঞানং প্রাপ্য জ্ঞাতের্থে কামং রাগং ক্রেমিং দ্বেমাং ভলতে ॥ ২ ॥
তত্র রাগ কার্যমাই সপাদলোকেন ততইতি ॥ ৩ ॥ প্রভাতি স্বকার্য্য
সাধনেন কৃত ক্ত্যোভ্রতি দ্বেকার্যমাই পাদোনলোকেন দ্বেদতি ॥ ৪ ॥
উত্যোঃ কার্যমাই ইতোলোভেতি ব্যাজাৎ দ্বাৎ ॥ ৫ ॥ বার্মজেন কৌটিলোন অর্থং ধনং ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ প্রভিতসম্বন্ধং অসন্দোই মুদাদীনোই মৃত্যাদি
স্বশ্রুতি যোজিতং প্রতিপথে শান্ত্যাদো যোজিতং যোগঃ তদ্রহিতং

উত্তরং শ্রুতি সম্বাণ বিবিত্ত শ্রুতি বার্গিল হা। ৮॥
পাপং চিত্তরতে চৈব ব্রবীতি চ করোতি চ।
তক্ষাধর্ম প্রবৃত্ত গুণা নক্ষান্ত সাধবং॥ ৯॥
একশীলৈক্ষ মিত্রত্বং ভজম্মে পাপকর্মিণঃ।
স তেন ছংখমাপ্রোতি পরত্র চ বিপদ্যতে॥ ১০॥
পাপালা ভবতি হোবং # ধর্মলাভমুমে শৃণু।
যন্ত্রোন্ প্রজ্ঞা দোষান্ পূর্বমেবানুপক্ষতি॥ ১১॥
কুশলঃ সুখছংখেষু সাধুংক্যাপ্রাপ্রেতি।
তক্ষা সাধুসমারস্তাছ্ দিব ক্মেরু রাজতে †॥ ১২॥
বাদ্দা উবাচ।

ত্ৰবীষি স্থন্তং ধৰ্মাং যক্তা বক্তা ন বিদ্যতে। দিব্যপ্ৰভাৰঃ স্থমহান্ধিরেব মতোহসি মে। ১০।

বাাধ উবাচ।

ব্রাহ্মণা বৈ মহাভাগাঃ পিতরোহগ্রভুজঃ সদা।
তেষাং সর্বাত্মনা কার্য্যং প্রিয়া লোকে মনীবিণা॥ ১৪॥
যন্তেষাঞ্চ প্রিয়া তন্তে বক্ষ্যামি দ্বিজসন্তম!।
নমস্কৃত্মা ব্রাহ্মণেভ্যো ব্রাহ্মীং বিদ্যাং নিবোধ মে॥ ১৫॥

যথাসাক্তথা শমাদি শুকোপি অসক্ত শাক্তীয়ং শকেনৈব দর্শয়তীতার্থঃ
॥ ৮॥ মনোবাকায়জত্বন তৈত্তিধামেবাহ পাপমিতিসাধবঃ শমাদয়ঃ॥ ৯॥
পাপকর্মিণঃ ভাবপ্রধানোনির্দ্দেশঃ পাপকর্মকর্তাদিতার্থঃ॥ ১০॥ ধর্মলাভোপায়মেবাহ সার্দ্ধেন যন্ত্তি॥ ১১॥ ১২॥ স্নৃতং প্রিয়ং ধর্মাঞ্জ॥ ১০॥
॥ ১৪॥ বাক্ষীং বাক্ষণানাং সভূতাং॥ ১৫॥ বিদ্যামেবাহ ইদ্মিত্যাদিনা

 ^{*} ধর্ম লোকস্থিতি ক পুস্তকদ্য পাঠঃ।
 † জারত ইতি ক পুস্তকদ্য পাঠঃ।

ইদং বিশ্বং জগৎ সর্বামজযাঞ্চাপি সর্বাশ:। মহাভূতাত্মকং ব্রহ্ম নাতঃ পরতরং ভবেৎ। ১৬।

ইদং প্রত্যক্ষাদি প্রমাণসিদ্ধং বিশ্বংক্তর জগত স্থাবর জন্মাত্মকংসর্বাৎ সর্ব্বমিপি অজ্যাৎ কর্মাণানলভাৎ সর্ব্বশঃ সর্ব্বপ্রকারেণ ইদং সর্ব্বং যদয়-মাত্র। আত্মৈনেদং সর্ব্ধমিত্যাদি আচতিভাঃ সর্ব্ধস্যাত্মমাত্রত্মাদিতি ভাবঃ ননুপশুৰস্ক্ৰা জীসৰ্কামোকানভিজয়তীতি কৰ্মজ্যাত্বং জগতঃ কথং আ্ফতে তত্তাহ মহাভূতাত্মকমিতি যতঃ ব্রহ্ম ক্রিবিধ পরিচ্ছেদ শূন্যৎ বস্তুত-দেব মহাতৃতানি আকাশাদীনি আত্মাজীবঃ কং আৰন্দ রূপুদ্ধরঃ এবত্তিত যাত্মকং তথাচল্রুচিতঃ ভোক্তাভোগ্যং প্রেরিভারক মহা সর্বং প্রোক্তং ত্রিবিধং ত্রন্মতদিতি নাতঃ পরতরং ভবেৎ অতৌ ত্রন্ধণোনাৎ শ্রেষ্ঠতরং প্রাপাৎ নান্তি জয়শ্রুতিস্ত অবিদ্যাবিদ্বিয় কর্মকাণ্ডাভিপ্রায়া ৷ ১৬ ৷৷ নমু-কেয়ং বিদ্যানাম আত্মিকর প্রতিপত্তিরিতিত্র মঃ কিংশাল্রামে বিফুর্মিব প্রত্যাগান্ত্রনি সার্কান্তাংভাবনাত্মকং কুর্য্যাদিতি বিধিতএব ইহপ্রতিপত্তবাং উত্তৰক্লাবেক্সিকতাক্ষিকত্ত্বমদ্যাদিশক প্ৰমাণাৎ প্ৰতিপত্ত্ব্যং আদেছে-জ্যা বচন ব্যাকোপঃ দ্বিতীয়েতাবিকাদ্বৈত কর্মোপান্তিকাওয়ো রপ্রামাণ্যং নচেষ্টাপত্তিঃ তদ্বদেব জ্ঞানকাণ্ডমাপ্যপ্রামাণ্যপত্তেঃ ভেদগ্রাহি প্রত্য-ক্ষাদি প্রমাণান্তর বিরোধস্ত্রস্পেক্টএবেত্যাশংক্যাহ মহাভূতানীতি খাদয়ঃ শবাদয়ক তদ্গুণাঃ তিমিন্ বৃষ্ণি অমিতাগুণাঃ বিগুণাত্মকমারা কার্যা-षार भाग्नायान्वाका उदेवार रिनरायानकिः अक्षरेन निर्माणः भाग्नास-প্রকৃতিই বিদ্যাশাযিনন্ত মহেশ্বরিমিত্যাদি আচতিভাঃ অয়মর্থঃ চল্রেণাসং न्भ, **रोभि ।** जनश हत्यहक्ष नवात्तर विश्व विष्य विश्व প্রভাগাত্মনা ২সংস্ফাপি মারাতত্ত হুংখিবানেক্ছাদ্যারোপত্তেতু র্বতীতি তথাচল্ডতয়ঃ একএ বতু ভূতাত্মা ভূতে ভূতেব্যবস্থিতঃ একধাবহুধাচিব দৃশ্যতে চলচন্দ্রবং সসম্পন: শন্ত্রলোকাবনুসঞ্রতি ধ্যাযতীব লোলযতীব ঘটসং ব্ৰতমাকাশং নীয়মানেয়থাঘটে ঘটোনীয়েতনাকাশং তম্বজ্ঞীবোনভোপম ইত্যাদ্যাঃ সমানঃ বুদ্ধিতাদাত্মাং প্রাপ্তঃ লেলায়তি লোলুপৌভবতি একৈব মহাভূতানি খং বাযুরগ্নিরাপস্তথা চ ভূ:।
শক্ষঃ স্পর্শন্চ রূপঞ্চ রসো গন্ধন্চ তদ্গুণা:॥ ১৭ ॥

অপ্নাদিন্বিৰ স্বাজ্ঞানাং স্বান্মিন্ননেক ভেদভিন্নং প্ৰপঞ্চং পাশ্যতি প্ৰমাণ-ভশ্চভদ্বাধে একমেব শিষাতে অভাে রজ্জুরগন্যায়েন প্রপঞ্চ স্যাধিষ্টানা-দনন্ত্ৰাদান্ত্ৰমাত্ৰত্বং অবিদ্যাবস্থায়াং কৰোপান্তি জ্ঞানকাণ্ডানাং প্ৰামাণ্যং উৎপরেতুজ্ঞানে বেদা অবেদা ইতিক্রতিব অস্যপ্রামাণ্যং নিষিদ্ধমিতি নকিঞ্চিদ্ঃস্থ যদাভঃসংপ্রদায়বিদঃ দেহাত্ম প্রতায়ো যদ্ধ প্রমাণত্বেন কম্পিত: লৌকিকং তম্বদেবেদং প্রমাণং ত্রাত্মনিশ্চবাদিতি আ। আত্মনিশ্চরা-দিতিচ্ছেদ: তন্মাৎযুক্তযুক্তং খাদযস্তদ্রণাইতি ॥ ১৭ ॥ অত্ততার্কিকাঃ খাদয়: শব্দাদিগুণবন্তোমে আত্মাচগুণবাননো নতুতেষাং পরস্পরং গুণগুণি-ভাবোন্ডীত্যাক্তন্ত্রিরস্যাত তেষামপীতি তেষাং অব্যবধানাৎ শব্দাদীনাং ধাদিগুণানামপি সতাংগুণান্তারত মন্দ্রহাদয়:দন্তি সর্কেদৃশামানাঃ অনেন **সাদ**্যাৎপরম্পরয়া বা আহামাত্রং পাঞ্চভৌতিক্মিতু,ক্তং কলিত্মাহ গুণবুত্তিঃ পরস্পরমিতি অযসিদয়ৢত্তং বল্লোভতুকোণভ্মিত্যনোনাসং-ক্রমোদৃষ্টঃ তম্বদান্তানাত্মধর্মানামপি আত্মনাপি আনন্দোবিষয়াত্বভবো নিত্যত্বং চেতি সন্তিধর্মান্তে চাপৃথক্তেপি চৈতনাাং পৃথগিবাবভাসমাণা অন্তঃকরণে দৃশ্যন্তে এবমন্তকরণধর্মাতৃঃখিত্বাদয়োপীতরত্তেতিভারোপর-স্পরাজিতত্বমানিদাকং যুজাতে অতোনাত্মনঃ পৃথ্যভূতাংখাদয়ঃ কিন্ত রজ্ঞুবগাবৎ তত্ত্বৈবাধ্যস্তাইভিভাবঃ ত্তিযুঈশস্ত্রবিরাট্স সর্বেইভি এতে-ষাং উপযুৰ্গেরি পরস্পরাধ্যানেশি পূর্ব্বস্য সর্বেগুণা উত্তরশ্বিন্ ভবস্তি উত্তরসাতু কেচিদেব পূর্ব্ধশ্মিন ভবস্তীত্যুক্তং অযমর্থ: যথাশুদ্রে স্ফটিকেঞ্চপা কুছম সান্তিধ্যাক্তক হাধ্যাসস্ত ত্রৈব ক্ষটিকধী প্রমোহেসতি পদারাগাহাধ্য-সস্তত্ত্বৈ চাঞ্ডিকায়া মিঞ্ডনীলত্বাধাাদ ইতিচ্ছুরূপে ক্ষটিকে গুণবৎ অনোপাধিকেয়্তিয় পূর্ব পূর্বগুণদা দর্বদা। "পুতেরোতরভাধানা দৃশ্যতে তথাছি ক্ষটিকগভাসতা নির্বাচনীয়ে দৌছিতােখ।স্তা নতু ক্ষটিকে लोहिण धर्मा निर्सातीय मधास्तर धर उत्तरमाः निक्रमानमाः कुलिन-

তেষামপি গুণাং সর্বে গুণুর্জিঃ পরস্পরম্।
পূর্বপূর্বগুণাং সর্বে ক্রমশো গুণিষু ক্রিষু ॥ ১৮ ॥
ষঠস্ত চেতনা নাম মন ইত্যভিধীয়তে।
সপ্তমী তু ভবেদ্ধ দ্ধিরহক্ষারস্ততঃ পরম্ ॥ ১৯ ॥
ইন্দ্রিয়াণি চ পঞ্চাত্মা রজঃ সন্ত্বং তমস্তধা।
ইত্যেষ সপ্তদশকো রাশিরব্যক্তসংজ্ঞকঃ ॥ ২০ ॥

কারে দৃশ্যন্তে যথোক্তং অন্তিভাতি প্রিয়ং রূপং নামচেত্যং শপঞ্চকংআদ্যৎ ত্তরং ব্রহ্মরূপং জগদ্রপং ততোদ্যুমিতি এবঞ্চরজ্জু দর্পভ্রমে ভীষণ্যাদর ত্তবং সর্পরস্থারজ্বামধ্যসাভেন্তু মিথ্যাত্বাদয়ন্তবং নমুসর্পেপি অভিগম্যত্বাদ্-য়োরজ্জ্ব ধর্মা ন দৃশ্যন্তে ইতি সর্বে ইত্যুক্তি রসংগতেতি চেৎসত্যং অর্থণ্ড-করদে ব্রমণি সচ্চিদানন্দা: স্বরূপানতিরিক্তা অপি অনুত জড় হুঃখ প্রতি-যোগিত্বেন কপ্পাত্তে নতুরপরসাদিবদকপিতাংসত্তি অতঃকম্পিতানাং তেষাং কাৰ্যোত্তরত্তিনাত্মপাপন্ন। যেতু ঈশাদো অকম্পিতা ঈশনবাদরো নতে সুত্রাদিম্বর্তিকে কিন্তু কর্তৃত্ব সহাদয় এব ডমাৎ কম্পিড ধর্মাভি প্রায়েণ সর্ব্বে পূর্বস্য ধর্মা উত্তরম্মিন্ সন্তি ইত্যুক্তং তেন দৃশ্যং সর্ববং ভৌতিকং তচ্চ বন্ধা ভেদেনাধান্তমিতি পূৰ্ব্বাধাৰ্থঃ তত্তাপি স্কুলং শুদ্ধেশ স্ট্রেরত্ব-গুতং স্থাৰং শুদ্ধেশাস্তাং ঈশঃশ্ৰদ্ধেন শুদ্ধন্ত নকেনচিদত্বগত মিতি উত্তরা-র্দ্ধেশাদৰ্শিতং ভৌতোর্থ স্তু তদ্য স্পষ্ট এবেতি নিষ্কর্যঃ তথাচ ন ক্রব্যানাং প্রত্যক্ষ স্বরূপাৎ পৃথকু সিদ্ধিরস্তীতি তদ্বিকদং তর্কমতং নিরস্তং ॥ ১৮॥ অত্তান্তৰমেৰ প্ৰমাণয়তি পঞ্চ ইতি চেতনা ধীরুত্তি শুরাকাম সংকশ্পাদয়ো वर्षः भक्ति পঞ্চকাপেক্ষয়া অয় । ভাষঃ মনে বিষয়ং शां भनकार् কম্পায়তি অপ্রেতথাদর্শনাৎ বুদ্ধিন্তং প্রকাশয়তি অহংকারোভিমনাতে ময়াযংজ্ঞাত ইতি তত্মাৎ মনমাত্রং জগৎ মনদোহভাবে তৎসত্ত প্রমাণাভাষা দিতি 🕯 ১৯ । নভ্পতাক্ষমের তর প্রমাণ মিতাশিলাহ ইব্রিয়াণীতি আত্মাজীবঃ অব্যক্তং মায়াতংসংজ্ঞকঃ প্রমাতা প্রমাণং প্রমেষঞ্চ অপ্সদৃষ্টান্তেন মায়ামাত্র মিতাবগন্তব্য মতি ভাবঃ ৷ ২০ ৷ ইন্দ্রি-

সবৈরিহেন্দ্রিয়ার্থৈস্ত ব্যক্তাব্যক্তঃ স্থাপর্তৈঃ।
চতুর্বিংশক ইত্যেষ ব্যক্তাব্যক্তময়ে গুণঃ।
এতত্তে সর্ব্যাখ্যাতং কিং ভূয়: গ্রোভূমিচ্চসি॥ ২১॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয় সমাস্থা প্রবাণি ব্রাহ্মণ
মাহাত্মে দশাধিকদ্বিশতত্যোহধ্যায়ঃ। ২১০॥

भार्करखश्च छेवाह।

এবমুক্তঃ স বিপ্রস্ত ধর্মবা†ধেন ভারত।। কথামকথয়দুয়ো মনসঃ প্রীতিবর্দ্ধনীম্॥১॥

ব্রাগাণ উবাচ।

মহাভূতানি যান্যান্তঃ পঞ্চ ধর্মাভ্তাম্বর !। একৈকন্ত গুণান্ সম্যক্ পঞ্চানামপি মে বদ॥২॥

মানিমনো বৃদ্ধিভাগে সহ সপ্ত তেবামর্থাঃ মন্তব্য বোদ্ধব্যাভ্যাং সহ শব্দাদয়ঃ
সপ্ত ব্যক্তা ব্যক্তিঃ বাংহিন্দ্রিয় প্রাহা ব্যক্তাঃ অন্যেহব্যক্তাঃ তৈঃ সহ স্থ
সংহতি রিভি বৃদ্ধি গুছারাং লীনৈ রিত্যুক্তং তেচতুর্দ্ধশ আকাশাদয়ঃ পঞ্চ
আত্মা অহং কারেগ্রেণ ত্রুয়ঞ্চেভি চতুর্বিং শতে গণঃ ব্যক্তা ব্যক্তরূপঃ গুণঃ
ভোগ্য বর্গঃ এতেভ্যো বিবিক্তৎ যত্তদেব সর্বাং সর্বাত্মহাৎ সর্বা শব্দা
ভিধেরং ভোক্ত বৃদ্ধেত্যর্থঃ ॥ ২১ ॥

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দশাধিক দিশত তমেহিধাংঃ ॥ ২১০॥

এবং পূর্ব্বত ইনং জগামহাত্তাত্মকং ব্যাক্তাত্তং ওলাখ্যাতৃং তৃতগুণান্ বিভজতে সর্বাত্মকত্বং বৃদ্ধাব্যাচন্টে এবমুক্তঃ সইত্যাদিনাছধারেন ১) ১ ২ ৪ গুণোতরাণি উত্তরোজর গুণাঃ পূর্ব্ব পূর্ববিদ্ বর্তন্ত ইত্যর্বঃ বাধ উবাচ।
ভূমিরাপন্তথা জ্যোতির্ব্বাযুরাকাশমেব চ।
ভূমেরাপন্তথা ক্যোতির্ব্বাযুরাকাশমেব চ।
ভূমেরাপন্তথানি সর্বানি তেবাং বক্যামি তে গুণানা। ৩।
ভূমির পঞ্চঞ্জন বক্ষানুকঞ্চ চতুগুণ্ম।
ভুগান্তরন্তেজনি চ তারশ্চাকাশবাতরোং॥ ৪॥
শব্দং স্পর্শন্চ কপঞ্চ রুমের গর্কেলে পঞ্চমং।
এতে গুণাং পঞ্চ ভূমের সর্বেভ্যো গুণবন্তরাং॥ ৫॥
শব্দং স্পর্শন্চ কপঞ্চ রুমন্চাপি দ্বিজ্যোত্তম !।
ভ্যামেতে গুণা ত্রকান্ কীর্ত্তিভান্তব ক্ষুত্রত !॥ ৬॥
শব্দং স্পর্শন্চ কপঞ্চ তেজসোহথ গুণান্তর্য়ং।
শব্দং স্পর্শন্চ বারো তু শব্দন্চাকাশ এব তু॥ ৭ ।
এতে পঞ্চদশ ত্রকান্ ! গুণা ভূতেযু পঞ্চম্থ।
বর্ততে সর্বান্তব্যু যেষু লোকাং প্রতিষ্ঠিতাং॥ ৮॥
ভ্যাম্বর্গং নাতিবর্ত্তির সম্যক্ চ ভ্রতি দ্বিজ !।
যদা তু শ্বিষয়ী ভাবমাচরন্তি চরাচরাং॥ ৯॥
বদা তু শ্বিষয়ী ভাবমাচরন্তি চরাচরাং॥ ৯॥

॥ ৩ ॥ এডদেবাছ ভূমি রিতি ত্রয় ইতি আকাশে একঃ বাতে দাবিতার্থঃ
॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ १ ॥ সর্বভৃতের জরাযুজাদির লোকাশ্চিদাছো পাবিভৃতানি
পঞ্চতানি ॥ ৮ ॥ নাতি বর্ত্তরে পঞ্চব্দেকেন বিনা ইতরাণি ভৃতানি
ন ডিকন্তীতার্থঃ সমাক্ চ ভবতি একীভাবেন প্রকাশন্তে একয়মার্থং সং
পূর্ব্বাদঞ্গাতি পূজনয়ো রিতামাদ্বাতোঃ ঝরিগাদিনা কিনি সমঃ সমিরাদেশঃ সমিতোকীভাবে ইতি যাক্ষঃ নহভূতানাং পরম্পর মবিয়েবেশমরণং নক্ষাৎ তৎসংঘাতোহিচেতন আত্মতি লোকায়ভমতমাশরাহে
যদেতি অবিষয়ং বিয়য়মিব যত্র ভাবয়তি স সয়্বেপাবিয়য়ভাবঃ তেজীবান্তীর সম্বেপা বেশাদাং দেহং ভাবয়ন্তি তদভিমানদাটোন পূর্বদেহস্যাত্যন্ত বিশ্বতোসত্যাৎ মৃতা ইত্যান্তে নতু মৃতদেহেপিভূতানাং
মিধোবিয়োগোন্তীতার্থঃ পাঠান্তরে ভাবং সঙ্কপং বিষমং অদেহবিলক্ষণং
দেহন্তরবিষয়ং ॥ ৯ ॥ বিনশান্তি তিরোভবন্তি

^{*} বিষম মিতি ক পুশুক্স্য পাঠ:।

তদা দেহী দেহমনা ব্যতিরোহতি কালত:।
আনুপূর্বনা বিনশুন্তি জায়ন্তে চানুপূর্বশং॥ > ॥
ভক্র কর হি দৃশুন্তে ধাতবং পাঞ্চভৌতিকাঃ ।
বৈরাহ্তনিদ সর্বাং জগৎ স্থাবরজঙ্গমম্॥ >>॥
ইক্রিয়েঃ স্বজ্ঞাতে যদ্যভ্তন্তাক্তমিতি শৃতম্।
তদব্যক্তমিতি জ্ঞেয় লিক্ষপ্রাহ্যমতীক্রিয়ম্॥ >২॥
যথাস্থ প্রাহ্কাণ্যেষাং শব্দদিনামিমানতু।
ইক্রিয়াণি যদা দেহী ধারয়ন্নিব তপ্যতে॥ >৩॥
লোকে বিত্তমাত্মানং লোকঞ্চাত্মনি পশ্যতি।
পরাব্রজ্ঞঃ সক্তঃ সন্স তু ভূতানি পশ্যতি॥ ১৪॥

জায়ন্তে আবির্ভবস্তি । ১০ । ধাতবো রেত আদয়ঃ প্রত্যেকং পাঞ্চতৌ-তিকাঃ সম্ভোপি ॥ ১১ । সুজাতে সংস্কাতে যদ্বাপ্রাংশতো দেবাদেবেভো লোকা ইতিভাগমান দৃষ্টি সৃষ্টাভি প্রায়েন চকুরাদিভিঃ স্থ্যাদি সৃষ্টি ধারা লোকঃ সূজ্যত ইতি যথা আচতমেৰ ব্যক্তং ঘটাদি অব্যক্তং ইন্দ্রাদি লিঙ্গং রূপাদি প্রকাশ তেন গ্রাছ্যৎ অভুমেয়ং॥ ১২॥ যথাস্বং স্ববিষয়ানতিক্রমেণ ইমানি ইন্দ্রিয়াণি ধারয়ত্ নিগৃহ্লন্ তপ্যতইব আত্মান মবিষয়মপ্যালোচ য়তইব মন আদীনাং নিগ্ৰহণ্ৰব আত্মালোচন মিতাৰ্থ: ॥ ১৩॥ আত্মন: সোপাধিকং রূপমপেক্ষ্যাহ লোকে ইতি বিভতং সুগুলেকনক্ষ্মিব উপাদান-ত্বের ব্যাপকং নিরূপাধিকং রূপমপেক্ষ্যাহ লোক মিতি লোকঞ্চাসম্বৰ-খিল্যবদা জুনি চিদেকরদে বিলীনং পশাতি তথাচ শুতীব্ৰহ্মবিদাং দেজবন্ধে निक्रभग्नजः यथवर विमाहर अमान्यीजिम् हेमर मर्कर खविज यज्ञपमा मर्क-মাজৈবাভূত্তৎ কেন কং পশ্যেদিতি উক্তঞ্চাভিযুক্তিঃ দোপাধি নিরূপাধি-क्टाइश बच्चविद्वहाट मार्शाधकः माध्यक्षा निज्ञशास्थाह शाधिक देंडि পরাপরজঃ পরং নিরূপাধি অপরং সোপাধিসকঃ প্রারুত্তর কর্মণাবদ্ধঃ সন্যা-বলৈহ পাত্যেৰ সমাধৌ সোপাধিকাৰত্বা মৃত্তৰতি নতুৰিলেইকৈবলো পীতাৰ্থ: 1 ১৪ ৷ বিদ্যাফলমাছ পশাত ইতি ব্ৰন্ধবেদ ব্ৰহ্মৈৰ ভবতীতি-অচতে একভূতসা উপাধিত্যাগাদিত্যর্থঃ অশুভেন পুণাপাপরোঃ কলেন मध्यका ममाधाविदका प्राधीन ए जिल्ला वर स्थाता विकास भगान

পশুত: সর্বভূতানি সর্বাবস্থাস্থ সর্বদা।
বেশভূতক সংযোগো নাশুভেনোপপদ্যতে ॥ ২৫ ॥
ক্রানমূলাত্মকং ক্লেমমতির্ত্তক্ত পৌরুষম্।

* লোক র্ভি প্রকাশেন জ্ঞানমার্গেণ গমতে ॥ ১৬ ॥
অনাদিনিধনং জন্তমাত্মযোনিং সদাবার্ম।
অনৌপম্যমূর্ভিঞ্চ ভগবানাই বৃদ্ধিমান্॥ ১৭ ॥
তপোমূলমিদং সর্বাং যায়াং বিপ্রান্থপৃচ্চিস।
ইন্দ্রিয়াণ্যের সংযায় তপো ভবতি নান্থা॥ ১৮ ॥

কৰ্মণা ন লিপাত ইতাৰ্থঃ ॥ ১৫ ॥ জ্ঞান্নুলেভিজ্ঞানং বিদ্যা তস্যাঃ মূলং মারা ব্রহ্মাকারান্তঃ করণ রত্তেরপি মায়া কার্য্যবাৎ মায়াত্মকৎ মিথারূপৎ ক্লেশন অবিদ্যাদিরপং অতিবৃত্তমা অতিক্রমাগতমা যোগিনঃ লোকসম্বন্ধিন্যা-রুত্তেবর্ত্তন জীবনাত্মিকাযাঃ প্রকাশোয়েন তাদুশেন জ্ঞানরূপেন জানমার্গেণ পৌক্তবং পরম পুরুষার্থরপো মোক্ষোগমাতে প্রকাশতে মারিকোবা বিদ্যা মারিক্যৈব বিদ্যয়ানফাচেল চাতে ইতার্থ: যথোক্তং আভাগবতে विमान्तिमा अञ्च रिक्राक्षत मंत्री दिनार याक रस्त कती आरमा सामान्त्र राज्य বিনির্মিতে ইতি জ্ঞান পূর্ব্বাত্মক মিতি পাঠেপি সত্রবার্থ:॥১৬॥মুক্ত कीवण खत्रश माह जनामी जिलामा विश्वपान लोकाय मध्य जरम স্থাত্মত্বং নিরস্ত - জন্তুং পুত্তিকাদি একাতং জীবং আত্মযোনিং জীবস্থাত্ম-যোনিবং বদতা জীবছতেতোরবিদ্যাদেঃ পৃথক্ সত্ত। সাংখ্যাদ।ভিমতা নিরস্তা অবায় মিতি তার্কিকাভিমঙং খুখ ছঃখাদিবিকার বর্থ নিরস্তং সদেতি আগান্তুক বিকারা স্পর্শির মুক্তং এতেনৈব ক্লিক শৃত্য বাদাবিপি নিরজৌ অমূর্ত মিতি অতএবাত্ম বাদো দেহ সংমিতাত্মবাদশ্চ পরাস্তঃ অনৌপমাৎ তকাকমামিতার্থ: ভগবানাহ স্ব নিঃশ্বসিতর্পেণ বেদেন হেতু দৃষ্টান্ত বর্জিতং নিত্যং বিভূং সর্বগাতং স্থ স্থক্ষাং যদ্ভত যোনিং পরিপশ্রস্তি धीव। इंड्यानिमा दुक्तिभान् दुक्तिः नियमारदमामाग्रेडी जिम्हथा ॥ ১१ ॥ उर्ला-ধ্যানং । ১৮। ইঞ্জিয়ণি নিগৃহীতানি স্বৰ্গায় বিসৃষ্টানি নরকায়েতি যোজনরা

^{*} লোক বুদ্ধি প্রকাশেনেতি ক পুশুক্স্য পাঠঃ।

ইন্দ্রিয়াণোর তৎ সর্কাং যথ শ্বর্গনরকারুভৌ।
নিগৃহীতবিস্ফানি শ্বর্গায় নরকায় চ ॥ ১৯ ॥
এব যোগবিধিঃ ক্রংস্লো যাবদিন্দ্রিয়ারণম্।
এতন্মূলং হি তপসং ক্রংস্লুভা নরকন্ত চ ॥ ২০ ॥
ইন্দ্রিয়াণাৎ প্রসঙ্গেন দোষ মাচ্চ ন্তি * সংশয়ম্।
সংনিষ্মা তু তান্যের ততঃ সিদ্ধিং সমাপ্র্য়াৎ ॥ ২১ ॥
বর্গামাজনি নিত্যানামেশ্বর্যাং যোহ্ধিগচ্ছতি।
ন স পাপেঃ কুতোহনবৈর্গ্রেডির বিজিতেন্দ্রিয়ঃ ॥ ২২ ॥
রথঃ শরীরং পুরুষস্য দৃষ্ট,
মাজা নিয়ন্তেন্দ্রিয়াণ্যান্তরশ্বান্।
তৈরপ্রমন্ত কুশলী সদশ্বৈ,

দিকৈঃ স্থাপ যাতি রথীব ধীরঃ ॥ ২৩।
বাধামাজনি যুক্তনামি ক্রিয়াণাং প্রমাথিনাম।
বাধীরো ধারয়ে ক্রশ্মীন স ক্যাৎ পরমসারথিঃ ॥ ২৪॥
ইন্দ্রিয়াণাং প্রক্ষানাং হয়ানামিব বর্জ স্থ।
ধ্বতিশ কুক্রীত সার্থ্যে ধৃত্যা তানি জয়েজবম্॥ ২৫॥

পুর্বার্দ্ধনৈব ব্যাখ্যা ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ এতমাল মিত্যেতদাচ্চটে ইন্দ্রিয়াণা মিতি
দোবং রাগবিদ্বেদ্দি রূপং আর্চ্ছান্তি প্রাপ্ত্র ॥ ২১ ॥ বল্লাং মনঃ ষষ্ঠানামিক্রিয়াণাং নিত্যানাং আন্ত্রনি কম্পিত্তেন রক্ত্রুক্তক বদাচ্যন্ত শ্ন্যানাং
শ্রেমাণ্ নিয়ন্ত্রং অনহৈ প্রমাত্তাদি কর্তব্য ভোক্ত্ররপৈ: ॥ ২২ ॥
উক্তেথে প্রমাণ স্চনার্থং আন্তানং রথিনং বিদ্ধানীরং রথমেব চৈত্যাদি
কটবল্লীনামর্থং সংগ্রাতি রথ ইত্যাদিনা ॥ ২০ ॥ আন্তার্দ্ধিঃ ॥ ২৪ ॥
ইন্দ্রিয়াণামন্ত্রে শাক্তরাপি প্রজ্ঞা নশ্যতীত্যাই ইন্দ্রিয়াণামিতি॥ ২৫ ॥
অন্ত্রিধীয়ভইতি কর্মকর্ত্রিলকারঃ যসোক্রিয়সাগ্রীনং মনোভ্বতিত্তেদেব

^{*} ঋদ্তীতি য ক পুশুকয়ে।: পাঠঃ।

ইক্সিয়াণাং বিচরতাং যন্মনোহন্মবিধীয়তে।
তদস্য হরতে বুদ্ধি নাবং বাযুরিবান্তিনি । ২৬ ॥
যেষু বিপ্রতিপদ্যন্তে ঘট্ম মোহাৎ ফলাগমং *।
তেম্বধ্যবসিভাধ্যায়ী বিন্দতে ধ্যানজ্ঞ ফলম্ ॥ ২৭ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্মণি মার্কণ্ডেয় সমাস্যাং পর্মণি দ্বিজব্যাধ্ব
সংবাদে একাদশাধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২১১ ॥

মার্কণ্ডের উবাচ।

এবস্তু স্থাক্ষে কথিতে ধর্মব্যাধেন ভারত। ।
ব্রাহ্মণঃ স পুনঃ স্থাক্ষাং পপ্রাচ্ছ স্থাসমাহিতঃ ॥ ১ ॥
ব্যাহ্মণ উবাচ।
সন্তুম্ম রক্ষসশৈচৰ তমসশ্চ যথাতথম্।
শুণাংস্তত্ত্বেন মে ত্রাহি যথাবদিহ পুচ্ছতঃ ॥ ২ ॥

প্রজ্ঞাং নাশয়তীত্যর্থ: ॥২৬॥ ষট্স্থ স সঙ্গলেষু শব্দাদিষু ফলাগমে তর্জনো স্থাছাপলস্থে বিষয়ে বিপ্রতি পদান্তে রাগিণঃ স্থ মুপাদের মিত্যান্ত্ বীত রাগাহের মিত্যাদি রূপা বিপ্রতিপত্তিঃ তত্ত্ব যন্তেষু অধ্যবসিতং বন্তু দৃট্যা নিশ্চিতং মন্ধ্যেত্বং তদেবাধ্যাতুং শীলং যস্য সঃ বিষয়দোষ, দর্শনেন বীতরাগ ইত্যর্থ: ॥২৭॥

ইত্যরণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে একাদশাধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২১১॥

পূর্ব্বাধ্যায়া মুক্ত বিপ্রতিপত্তি কারণং গুণ ত্রয়ং সকার্য্যং বক্তুমারভতে এবমিতি স্থক্ষ বন্ধাণ স্থক্ষং তৎপ্রাপ্তি কারণং গুণ ত্রয় বিভাগং তেনা-বাদ্ধাণেভায়ে বন্ধ বিধিক্ত মিত্যুক্তং ভবতি ॥ ১ ॥ ২ ॥

^{*} कनांशरम देखि च क श्रुक्ताः भाष्ठः।

वार्थ डेवरह।

হস্ত তে কথয়িষামি যনাৎ ত্বং পরিপৃচ্ছসি। এষা প্রধান পুথক্তেন নিবোধ গদতো মস। ৩। মোহাত্মকং তমন্তেষাং রজ এষাং প্রবর্ত্তকম। প্রকাশবছলত্বাচ্চ সত্ত্বং জ্ঞায় ইহোচাতে ॥ ৪ ॥ অবিদ্যাবছলো মৃতঃ স্বপ্নশীলো বিচেতনঃ। ছুহ্ ৰীকস্তমোধন্তঃ সক্ৰোধস্তামসোহলস:॥ ৫॥ প্রবৃত্তবাক্যো মন্ত্রী চ যো নরাগ্রোগ্রন্ত্র্রকঃ। বিধিৎসমানো বিপ্রর্ষে ! স্তব্ধো মানী স রাজসং ॥ ৬ ॥ প্রকাশবছলো ধীরো নির্বিধিৎসোহনস্থয়কঃ। ष्यद्याधरना नदा धीमानु नाखटेन्छ्य म माख्रिकः ॥ १॥ সাত্ত্বিকন্ত্রথ সংবুদ্ধো লোকরত্তেন ক্লিশ্যতে। যদা বুধ্যতি বে†ছব্যং লোকরুন্তং জুগুপ্সতে ॥ ৮॥ বিরাগদ্য চ ৰূপম্ভ পূর্ব্বমেব প্রবর্ত্ততে। মৃতুর্ভবত্যহৃদ্ধর: প্রসীদত্যার্ভবঞ্চ যৎ। ১॥ ততোহস্য সর্বাহনু ানি প্রশাম্যন্তি পরস্পারম্। ন চাস্য সংযমো * নাম ক্রচিন্তবতি কশ্চন ॥ ১ ।।।

॥ ৩ ॥ ৪ ॥ তুর্ক বীকঃ হুন্তে নিয়ঃ ॥ ৫ ॥ বিধিৎসা বিশেষতৃষ্ণা ধেট্ পানে অন্তর্নপথ প্রস্তুত্ত বাক্যঃ প্রস্তিবাক্ অনস্থকঃ পরদোষাদর্শতিত্ত হেড়ঃ বিধিৎসমান ইতি শুন্তোনমুক্ষারাদ্যকরণং মানশুদ্ধেতু মহ্বাভিমানশু হুভরাবান্ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ লোক বৃত্তে রজশুমঃ কার্বো যদাযতঃ তর্জুগুলাতে নিন্দতি ॥ ৮ ॥ বিরাগপ্র রাগ হীনপ্র রূপথ লক্ষণং মৃহঃ শুন্তাদি হীনঃ আর্জব নিম্কেটিলাং ॥ ১ ॥ দুন্ধু মানাপমানাদীনি ॥ ১০॥ জাতম্প্রতি কর্মনিষ্টী

^{*} সংযম ইত্যত্ত সংশর ইতি পাঠঃ ঘ পুশুকে।

শুদ্রবোনৌ হি জাতস্য স্কাণানুপতিষ্ঠতঃ।
বৈশ্যত্বং লভতে ব্রহ্মন্ ক্ষল্রিয়ত্ব তথৈব চ। ১১॥
আর্ক্রবে বর্ত্তমানস্য ব্রাহ্মণামভিজায়তে।
গুণান্তে কীর্ত্তিয়ং সর্ব্বে কিং ভূয়ং শ্রোভুমিচ্ছদি॥ ১২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কপ্রেমমাস্যাপর্বাণি দ্বিজব্যাধসংবাদে
দ্বাদশাধিকদ্বিশতত্বমোহ্ধ্যায়ঃ॥ ২১২॥

वाचन छेगा।

পার্থিবং ধাতুমাসাদ্য শারীরোহগ্নি কথং ভবেৎ। অবকাশবিশেষেণ কথ^ বর্ত্তয়তেহনিলঃ॥১॥

মার্কতেয় উবাচ।

প্রশ্নমেত সমুদ্দিউ বাদ্মণেন যুধিষ্ঠির ! ।
ব্যাধস্ত কথরামাস বাদ্মণায় মহাত্মনে ॥ ২ ॥

বৈশাত্বং কর্ত্বসন্গুণবস্তং বৈশাত্বাদহঃ স্বয়মায়ান্তীতি গুণ ক্বত এব বর্ণ বিভাবোন জাতি কৃত ইতি ভাবঃ ॥ ১১ ॥ বাদ্মানাথ ব্রদ্মবিস্তং ॥ ১২ ॥ ইত্যারণাকে পর্মাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপো দাদশাধিক দিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২১২ ॥

জানকিয়া শক্তিমতো ধাঁপ্রাণয়ে। রাত্মাগ্রত্ব মন্ত্রি মূর্দ্ধাদিবঃ ককুংপতিঃ
পৃথিব্যা অয়ং অপাং রেতাংসিজিম্বতীতি মন্ত্র প্রকাশিতং বক্তুমারভতে
পার্থিব মিতি পার্থিবং পৃথিবী বাহুল্যাং ধাতুংত্বগাদিময়ং দেহং আসাদ্য
প্রাপ্য প্রকাশ প্রক্রি মোহাদ্যাশ্রয়েন্নি বিজ্ঞানাখ্যন্তেজাে ধাতুঃ শারীরঃ
শরীরাভিমানী কথং ভবেৎ অবকাশ বিশেষেণ নাডীমার্গ ভেদেন
বর্ত্তরতে শরীরং চেইন্সতে ॥ ১॥ ২॥ মূর্দ্ধনি সহজা্রেছিভন্তাং শ্রেছ্বা

ব্যাধ উনাচ।

মূর্দ্ধানমান্ত্রিতো বহ্লিঃ শরীরং * প্রতি পালয়ন্।
প্রাণো মূর্দ্ধনি চাগ্নো চ বর্ত্তমানো বিচেইতে । ৩।
ভূতং ভবাং ভবিষ্যঞ্চ সর্বাং প্রাণে প্রতিষ্ঠিতম্।
শ্রেষ্ঠং তদেব ভূতানাৎ ব্রহ্মযোনিমূপাস্মহে ॥ ৪।
স জন্তঃ সর্বাভূতাত্মা পূরুষঃ স সনাতনঃ।
মহান্ বুদ্ধিরহঙ্কারো ভূতানাং বিষয়শ্চ সঃ ॥ ৫।

দ্বা মুদ্ধানং তিদাস্থানং অমিবিজ্ঞানাস্থালিত শুহুপাধিতাং প্রাপ্তঃ সন্ শরীরং পরিপালয়ন চিৎপ্রতিবিষ্ণ প্রাপ্য ধীধাতুঃ শরীরং চেতয়তীতার্থঃ এতেনামি মূর্দ্ধিতি পদদ্বরং ব্যাখ্যাতং প্রাক্তু তারো কভারোরপ্যপাধি রিত্তাহ প্রাণ ইতি এতেন চিদ্বিজ্ঞানং দ্বরং বায়ুশন্ধিতং তস্য ককুদিব করুৎচালকতয়া শ্রেষ্ঠঃ প্রাণ ইত্যুক্তং ॥ ৩ ॥ অস্ত করুত্বং ব্যাচষ্টে ভূত মিতি প্রাণে চিষিজ্ঞ:নাভ্যাং যুক্তে স্তামরূপে ত্রন্ম কার্যা রূপং যোনিং বিরাজাদেঃ ॥ ৪ ॥ সঃ চিদ্বিজ্ঞান প্রাণানাং সন্ধাতো জন্তুঃ সমষ্টিজীবঃ সর্বে-ষাং ভূতানাং কার্য্য কারণরপাণাং আত্মাচেত্যিতা সনাতন: পুরুষ: পরং ব্রহ্মচ সএব নিরস্তোপাধিঃ সন্ সএবোপাধি পক্ষ পাতীসনাহদাদাত্যা ভব তি বিষয়শ্চ শব্দাদিঃ সএব এতেন পতিঃ পৃথিব্যা অয় মিতি দ্বিতীয়ঃ পাদো ব্যাখ্যাতঃ অয়ং চিদ্বিজ্ঞানপ্রাণসংঘাতঃ পৃথিব্যাঃ ক্ষেত্রপ্রেডি ব্রুতি প্রবারর্থ:।। ৫।। এবমিতি সর্ব্যত অন্তর্ব হিস্চ স্থিতং সর্ব্বং প্রাণেন দেহলী দীপবন্মধ্যন্তেন অভিরং বিজ্ঞানং বাহ্যং দেহেন্দ্রিয়াদিকঞ্চ পাল্যত ইত্যৰ্থ: অপাং রেতাৎসি জিম্বতীতান্তপাদং ব্যাচটে পৃষ্ঠত ইত্যাদিনা অন্নয়ং হি সৌমামন আপোমরঃ প্রাণস্তেজোমরী বাগিতিশ্রুতেঃ সাক্ষাৎ প্রস্পরহাবা প্রাণ মন ইন্দ্রিয়াণাপাং রেতাংসি জিল্পতি তর্পয়তি সং-घाजात्वाजिक्षाजिकानामर्थः शृष्ठजः উপाधार्विभाक्षीवद व्याखानस्वर সমানেন ইত্বং ভাবে তৃতীয়া স্বাং স্বাং পৃথক্ গম্যাং গতিং আদ্রিতো-

^{*} প্রতিপালয়ন্ ইতাত পরিপালয় নিতি ক পুস্তকে।

এবং দ্বিহু স সর্বাক্ত প্রাণেন পরিপালাতে।
পৃষ্ঠতন্ত সমানেন স্বাং স্থাং স্থ গতিমুপাশ্রিতঃ ॥ ৬॥

† বস্তিমূলং শুদ্দ হৈব পাবকং সমুপাশ্রিতঃ ।

বহন্মূলং পুরীষঞ্চাপ্যপানঃ পরিবর্ত্তে ॥ ৭ ॥
প্রথত্নে কর্মানি বলে স ! এমন্তিমু বর্ততে ।

উদানমিতি তং প্রান্তরধাাত্মবিজ্বাধা জনাঃ ॥ ৮॥
সক্ষো সক্ষো সন্নিবিক্টঃ সর্ক্রেম্প তথানিলঃ ।

শরীরেষ্ মনুষ্যাণাং ব্যান ইত্যুপদিশ্যতে । ৯॥
ধারুদ্মিন্ত বিত্তঃ স তু বায়ুসমীরিতঃ ।
রসান্ ধাতৃংশ্ব দোষাংশ্ব বর্ত্তন্ন পরিধাবতি ॥ ১০॥
প্রাণানাং সন্নিপাতাত্মু সন্নিপাতঃ প্রজায়তে ।
উন্মা চাগ্রিরতি জ্রেয়ো যোহন্দ প্রতি দেহিনাম্ ॥ ১১॥

ভবতি সমান বায়ু বং প্রাপ্তঃ পাবকং জাঠর মাঞ্রিতঃসন্ বস্তি মুলংমুরাশায়ং
গুদং পুরীবাশয়ঞ্চ জাঠরস্থ সমানোশিত পীতাদিকং পাচরিরাপানরপীভূবা স্বং স্বং স্থানং নয়ভীতার্থঃ ক্লোকবয়ং॥ ৬॥ ৭॥ কর্ম গমনাদি প্রযন্ত্র
স্তব্য ক্লোচেন্টা বলং ভারোদ্য মনাদে সামর্থং বিহুষঃ সকাশাং শুদেরতি
শেষঃ ॥৮॥৯॥ধাতুয় বগাদিয় আনির্জাচয়ঃ বিততো ব্যাপ্তঃ রসাদী লু পরিবর্তয়ন্ পরিবাময়ন্ রসান্ অলাদী ন্ ধাতুং স্থাাদী ন্ দোষান্ পীতাদী ন্॥ ১০॥
কথং বর্তয়তে নিল ইতি পৃষ্টং তত্রাছ প্রাণানা মিতি সনিপাতঃ সমর্ব স্তর্জ্জউত্থানি ক্লাচরো ভবতি॥ ১১॥ সংনিপাতং ব্যাকরোতি সমানেতি নাভিত্বং
সমানং ছদিস্থঃ প্রাণএতি গুদক্ষেপানঃ কপ্তস্থ নুদান মেতি তেন প্রাণাপান
সমানানাং নাভিদেশে সংঘর্ষণ সম্বিতো নিপ্পাদিতঃ অধিষ্ঠা বং সপ্তধা-

^{*} উপাঞ্জিত ইত্যত্ত অপাশ্রিত ইতি ক পুস্তকে দৃশ্যতে।

[†] বস্তিমূল মিত্যত্র সপ্তমন্তে পাঠঃ ঘ ক পুস্তরোঃ। বি এব ইত্যত্র এক ইতি পাঠঃ ক ঘ-পুস্তকে।

সমানোদানযোম থ্যে প্রাণাপানৌ সমাহিতো।

সমর্থিতস্ত্ব ধিষ্ঠান সমাক্ পচতি পাবকঃ ॥ ১২ ॥

† অস্যাপি পাযুপর্যান্তস্তথা স্যাক্ষাদেশ জ্বিতঃ।

স্রোতাংসি তমাজ্জায়তে সর্বপ্রোণেষু দেহিনাম্॥ ১৩ ॥

অগ্নিবেগবহং প্রাণো গুদান্তে প্রতিহন্যতে।

স উর্দ্ধু মাগম্য পুনঃ সমুৎক্ষিপতি পাবকম্॥ ১৪ ॥

পকাশয়স্ত্বধো নাভ্যামূর্দ্ধ্বমামাশয়ঃ স্থিতঃ।

নাভিমধ্যে শরীরস্য প্রাণাঃ সর্বে প্রতিষ্ঠিতাঃ॥ ১৫ ॥

প্রস্তা হৃদয়াৎ ‡ সর্বেতির্যাগৃদ্ধ্ব মধস্তথা।

• বহস্তান্ত্রসান্নাড্যো দশপ্রাণ্পচোদিতাঃ ॥ ১৬॥
তুময়ং শরীরং সমাক্পততি র্দ্ধাদি পরিণামং নয়তি ॥১২॥ অসা পাবক্সা
পার্পর্যন্তো গুদপ্রবেশা গুদসংজ্ঞিতোপানো ভবতি স্রোতাংসিনাতী
মার্গাঃ তত্মা দপানাং প্রাণের প্রাণাদির পঞ্চয় প্রাণাদিভাঃ পাবকাং
পত্তিঃ পাবকাচাপান দারা প্রাণাদ্যৎ পত্তি র্ন্তবিতি প্রঘদ্কার্থঃ ॥ ১৬॥
এতদেবোপপাদয়তি অগ্লীতি অগ্লিবেগাং ক্সুকবহুর্য মৃৎপ্লুতঃ প্রাণোগুদ্দান্তে প্রতিহতঃ পুনক্ষ পতার্মি মপ্যংক্ষিপতীতার্থঃ দৃশ্যতে চাগ্লিবেগাং
বাষ্পবায় র্দ্ধি বায়ুবেগাচ্চায়ি র্দ্ধিঃ তথাচ প্রাণরোধে সতি জাচরং ভয়ং
নিবর্ততেইতঃ প্রানহম পতার্মি মপ্যংক্ষিপতীতার্থঃ দৃশ্যতে চাগ্লিবেগাং
বাষ্পবায় রিদ্ধি বায়ুবেগাচ্চায়ি র্দ্ধিঃ তথাচ প্রাণরোধে সতি জাচরং ভয়ং
নিবর্ততেইতঃ প্রাণোবেগাদ্য ইতিভাবঃ ॥ ১৪॥ জাচর নিরোধ সর্বেধামিজিয়াণাং নিরোধো ভবতীত্যাশ্রেনাই পকেতি প্রাণমঃ প্রান স্থানং
আমাশয়ঃ অপকার স্থানং নাভিমধ্যে ইতি তাৎস্থ্যাজ্ঞাচরে প্রাণা ইন্দ্রিয়াণি
প্রতিষ্ঠিতাঃ লীনা ভবন্তীত্যর্থঃ ॥ ১৫ ॥ সর্ব্রের্নাঃ হাদয়াং হাদয়ং প্রাণ্যদশভিঃ প্রাণঃ প্রেরিতাঃ তেচ প্রাণাদয়ঃ পঞ্চ নাগ কুর্ম ক্রকল দেবদত্ত
ধনঞ্জাশ্রুপঞ্চ ॥ ১৬ ॥ এষমুর্দ্ধাদি পায়ুপর্যন্তঃ তৎপরং ব্রন্ম মুর্দ্ধনি স্বয়্মুব্র

^{*} সমর্থিত ইতাত্র সমন্থিত ইতি ক ষ পুস্তাকে পাঠঃ।

[†] অস্যেত্যত্ত তস্যেতি পাঠঃ য কপুস্তকে।

[🚶] সর্কে ইত্যার সর্কাঃ ইতি ক-পুশুকে পাঠঃ।

যোগিনামেষ মার্গস্ত যেন গছান্ত তৎ পরম।
জিতক্লমাঃ সমাধীরা মূর্দ্ধন্যাত্মানমাদধুঃ ।
এবং সর্বেষু বিততৌ প্রাণাপানৌ হি দেহিয় ॥ ১৭ ॥
একাদশবিকারাত্মা কলাসম্ভারসমূতঃ ।
মূর্ভিমন্তং হি তং বিদ্ধি নিত্যং * যোগজিতাত্মকম্ ॥ ১৮ ॥
তিমিন্ যং সংস্থিতো † হ্যানিত্যং স্থাল্যামিবাহিতঃ।
আত্মান্ তং বিজানীহি নিত্যং যোগজিতাত্মকম্ ॥ ১৯ ॥

য়ানাড্যা সহস্রারং প্রাপ্য যেত্ত্রাত্মানং প্রাণোপাধি মাহিত্ত্বন্ত স্তে গচ্ছন্তি দেহিরু জীবদেহেরু মর্কেষামপ্যের মার্গোগন্তং যোগ্য ইতি ভাবঃ॥ ১৭॥ ন ক্বলং প্রাণরোধ এব পু্ক্ষার্থঃ কিন্তু তং সাধ্যং বিজ্ঞান মিত্যাহ একা দশেতা দিনা স্পাণ্যের প্রানোনাম ভবতি বদন্ বাক্ পশান্ চক্ষঃ শৃণুন্ শ্রোত্রং মহানো মন ইতি আচতে রেকাদশ বিকারা লিন্দ শরীরং তদান্ত্র। তত্তাদাত্মাং গতঃ যদ্যপি পঞ্চপ্রাণ মনোবুদ্ধি দশেন্ত্রিয় সম্বিতং অপঞ্চী কৃত ভূতোত্থং ফুক্ষাদ্ধং ভোগদাধন মিতি সপ্তদশাত্মকং লিন্দং তথাপি মনসি বুদ্ধেদিশৈল্যিয়ে সামান্যা করণরতিঃ প্রাণাদ্যা বায়বঃ পঞ্চেতি সাংখ্যমতেন প্রাণ পঞ্চকস্য চাত্তর্ভাবং বিবক্ষিত্বা একাদশ বিকারাত্মেতিঃ জ্ঞেরং কলাঃ যোডশ প্রাণঃ শ্রদ্ধা খংবায়ু র্জ্ক্যোতিরাপঃ পৃথিবীক্রিয়ং মনোনং বীর্ষ,ং তপোমজ্রাঃ কর্মলোকা নাম চেতি এতাসাং সম্ভারেণ সংভূত কলারপো পাধিনা মূর্ত্তি হীনমপি মূর্ত্তিমতং স্থক্ষ স্থূল দেহবলং আত্মানং বিদ্ধি বিজ্ঞানীহি জ্ঞান সাধনমাহ নিতঃ মিতি যোগেন জিত আত্মা বুদ্ধিং-ন তং আত্মান মিত্যুত্তরাদপ কুষাতে ॥১৮॥ প্রাণাদিভ্যে জীবং বিবিনক্তি তশিলিতি তশিন্ কলাসংভারে অগ্নিবদাত্বা প্রকাশরপঃ স্থালীবংকলা অপ্রকাশাত্মিকা: আত্মানং ত্বং পদার্থং ॥ ১৯ ॥ অস্য তৎপদার্থা ভেদমাই

কর্মজিতাত্মক মিতি পাঠান্তর্য্ য় পুস্তকে ।
 ক সংস্কৃত ইতি ক-পুস্তকে দৃশতে ।

দেবো যাং সংস্থিতস্তামিন্ধিন্দুরিব পুদ্ধরে।
ক্ষেত্রজ্ঞ তং বিজানীহি নিতাং যোগজিতাত্মকম্॥২০॥
জীবাত্মকানি জানীহি রজঃ সন্তুং তমস্তথা।
জীবমাত্মগুণং বিদ্ধি তথাত্মান- প্রাত্মকম্॥২১॥

দেব ইতি অব্বিন্দ্র দৃষ্টান্ডেনাসং গ্রংদর্শিতং ক্ষেত্রজ্ঞং প্রমাস্তানং॥২০॥ নমুত্রং পালার্থঃ সংগী তৎ পালার্থো সংগাঃ কথমনরো রভেদ ইত্যাশকা বিষ প্রতিবিষয়ে রিবেত্যাশয়েনাহ জীবাত্মকানীতি রজ আদিনা প্রবৃত্যা-দলো ধর্মা জীবাত্মকা উপাধি বিশিক্টা শ্রিতা শ্চাঞ্চল্যাদয়ইব জলচ ত্তে তং জীবং আত্মগুৰুৎ ঈশ্বরস্য গুৰুৎ ভৃত্যবং পোষাং আত্মানং ঈশ্বরং পুরাত্মকং নিগু-িং বিদ্ধি অয়মর্থঃ ভরত্ব ভটাক প্রতি বিষ্ণ কর্পেটি ধীমাযো-পাধী জীবেশ্বরো নিয়ম্য নিয়ামকৌ তয়েরজাবি ঈশ্বরাত্মা ঈশ্বরস্ত বিষম্থা--নীয়াসঙ্গ চিদ্ৰূপ ইতি তথাচ শ্ৰুতিঃ একএবতু ভূতাত্মা ভূতে ভূতে ব্যবস্থিত একধা বহুধা চৈব দুশাতে জলচন্দ্ৰ বদিতি ভূতাত্মা নিতা সিদ্ধ শ্চিদাত্মা এক-ধেতি ঈশ্বর রূপেন বহুধেতি জীব রূপেন ॥ ২১॥ অচেতনং জড শরীরাদি সচেতন মিতি তদেব আহে তেওজীবসা গুণং ভোগাং বদন্তি সআত্মা চেষ্টতে জীবরপেন চেষ্টয়তে ঈশ্বর রূপেন ততন্তাভ্যাৎ জীবেশ্বরাভ্যাৎ পরং উৎকৃষ্টং তংবদন্তি যোভুবনানি সপ্তভুরাদীনি প্রাকপায়ৎ প্রাবর্তয়ৎ নত্ত্বং নিৰুপাংগঃ প্ৰৱৰ্তকত্ত্বমুচাতে অধিষ্ঠান তয়েতিক্ৰমঃ তথাচল্ডাতিঃ যতোৰা ইমানি ভূতানি জায়ন্ত ইতি ব্ৰন্ধণো লক্ষণ মুক্তা অন্নময়াদি কোশ-কারণী ভূতানামন্নাদি শব্দিতানাং বিরাডাদীনাংজগৎ কারণকত্বং অন্না-দ্ধোৰ খল্লিমানি ভূতানি জায়ন্ত ইত্যাদিনা স্থুলা কন্ধ 🖨 ন্যায়েন বিরা-ভাদীনে সোপাধিকানি ব্ৰহ্মাণি উক্ত্যু প্ৰজ্ঞানধন এবানন্দভূক্ তেতো মুখঃ প্রাজন্ত তীয়ঃ পাদ এষ সর্বেশ্বর ইতি মাণ্ডুক্য শুতি প্রসিদ্ধন্থানং দময়স্য ইখরস্য কারণীভূতে আনন্দাখ্যে ব্রহ্মণি আনন্দান্ধ্যের থল্লিমানি ভূতানি জায়ন্ত ইতি মুখ্যংকারণকৈ ব্যবস্থাপিতং তথাপ্রদেশান্তরেপি কৌহ্যেবা-न्गारकः व्याग्तिमात्म व्याकाम व्यानत्मा नगामिति, व्यानिताकामात्मा कांत्ररंग यम्प्रानत्या नमा। खर्डि ७९ कार्या त्महार्तनी कूछः व्यान नामि मा

:093

সচেত্তনং জীবগুৰাং বদস্তি স চেফতৈ চেফয়তে চ সর্বায়। ততঃ পরং ক্ষেত্রবিদো বদন্তি, † প্রাকল্পয়দেবা ভুবনানি সপ্ত ॥ ২২ ॥ এবং সর্কেষু ভূতেষু ভূতাত্মা 🛊 স প্রকাশতে। দৃশ্যতে ত্বগ্রা বুদ্যা স্থক্ষা জ্ঞানবেদিভিঃ॥২৩॥ চিত্তফা হি প্রসাদেন হন্তি কর্মা শুভাশুভম্ ! প্রসন্নাত্মান ভিত্না স্থ্যমানত্যমশ্রতে॥ ২৪॥ লক্ষণন্ত প্রসাদন্ত যথা ভূপ্তঃ মুখ স্বপেৎ। নিবাতে বা যথা দীপো দীপ্যেৎ কুশলদীপিতঃ ॥ ২৫॥

দিতি তাত্তির মুখাংপ্রবর্তকরং দর্শরতি । ২২ । মহু ঈশ্বর সন্তাবে ভুবন প্রক্তিরেব কারনং দৃশ্যতে নতুতদন্যস্য নিগুণন্য ঈশ্বরেণেব তদ্যান্যথা সিদ্ধবাদিত্যাশস্ক্রাহ এব মিতি ভুতাত্মা নিত্যসিদ্ধ আত্মা আনন্দাখ্য: ঐ খর্যাসা তু সশিত্যা সাপেক হার নিতা সিদ্ধরং স্থপ্তিপ্রলয়যো রীশিত্রা ভাবাদনীশ্বর হাপত্তে রিভানন্দাৈর নিতামেশ্বর্থ মায্যাভিব্যজ্ঞাত ইতি ভাবঃ জ্ঞানং ব্রহ্মাকার। রুত্তি স্তৎ সান্ধি-ভিস্তেন বেদ্যাদীশাদনা স্তৎপ্র-কাশক ইতি দৰ্শিতং ॥২৩॥ প্ৰদন্মাত্মারতি জনিত কালুয়া ত্যাগাদ্বিশুদ্ধচিতঃ আত্মনিস্থা চিত্তদা ৰূপ্যমূপি ত্যাক্ত্য দুখং অনায়াদেন আনন্তাং মোক্ষং ॥ ২৪ ॥ যথাজলাছত্তীর্ণস্য শরীরে সংশ্লিষ্টঃ সূক্ষতমঃ পটঃ সন্নপ্যসন্লিব ভাতি এবং সমাধৌ বিকম্পাভাবাৎ সদপি চিত্তং নভাতীতি স্থপ্তিতুল্যানাং প্রসাদস্যাহ লক্ষণমিতি ॥ ২৫ ॥ বিশুদ্ধাত্মা শুদ্ধচিত্তঃ আত্মানং ব্রদ্ধ আত্মনি

^{*} সচেত নমিত্যত্র অচেতন মিত্তি ক ঘ পুশুকে।

[🕇] প্রাকশায়দিত্যত্র প্রাবর্ত্তরদিতি क ব পুস্তকে পাঠঃ।

[🚦] সংপ্ৰকাশতে ইত্যত্ত্ব ন প্ৰকাশতে ইতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

পুর্বারোত্রহপরে চৈব যুঞ্জান: সভতং মন:। লঘু গৈরো বিশুদ্ধাত্মা পশুন্ন আনমাত্মনি ॥ ২৬॥ প্রদীপ্তেনেব দীপেন মনোদীপেন পশ্যতি। দৃষ্টাত্মানং নিরাত্মান^ স তদা বিপ্রমুচ্যতে ॥ ২৭ ॥ সর্বোপায়ৈস্ত লোভস্ত ক্রোধস্ত চ বিনিগ্রহঃ। এতৎ পবিত্রং লোকানাং তপো বৈ সংক্রমো মতঃ ॥ ২৮॥ নিত্যং ক্রোধান্তপো রক্ষেত্বর্গং রক্ষেচ্চ মৎসরাং। *বিদ্যাৎ মানাপমানাভ্যামাত্মানন্ত প্ৰমাদতঃ ॥ ২৯ ॥ আনুশংস্তাং পরে। ধর্মঃ ক্ষমা চ পরমং বলম। আত্মজানং পরং জ্ঞানং সত্যং ব্রন্তপর্প ব্রতম্ ॥ ৩० ॥ সত্যস্থা বচনং শ্রেয়: সত্যৎ জ্ঞানৎ হিতং ভবেৎ। ষদ্ভহিতমত্যন্ত তদৈ সত্যং পর্ মত্য্ । ৩১॥ यख मर्द्य मगावसा निवामीद्यक्षनाः मना। ত্যাগে যন্ত হুত পৰ্বং দ ত্যাগী সচ বুদ্দিমান্। ৩২। যতো ন গুরুরপ্যেনং আবয়েতুপপাদয়েৎ। ত বিদ্যাদ কণে। যোগং বিয়োগং যোগদং জ্ঞিতম । ৩০॥

ছদয়ে ॥ ২৬ ॥ নিরাত্মানং নিজ নং নিলানং চিত্তং যদ্মিল্ তং তাবশ্বনো নিরোদ্ধন্যং ছদিযাবং ক্ষয়ংগতং এতজ্জানঞ্চ ধ্যানঞ্চ শেষোন্যোগ্রন্থ বিস্তর ইতি অটিভি চিত্তক্ষয় এবাত্ম দর্শন মিতার্থঃ ॥ ২ ৭ ॥ সংক্রমঃ সেতু পার প্রাপকো মার্গঃ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ তৃতহিত মনৃত মিপি সত্যমেব তৃতানা মহিতকরং সত্য মপানৃত মেবেতার্থঃ ॥ ৩১ ॥ তাাগো ফলতাগো হতং হোম যজ্জদানাদি ত্যাগী সন্ন্যাসী ॥ ৩২ ॥ এনং ব্রন্ধনোযোগং ন আনব্রেং অপদার্থ্যাৎ কিন্তু উপপাদয়েলক্ষণয়া জ্ঞাপ্পয়েং তংচিত্তযোগমেব বিক্সালক্ষণয়া যোগসংজ্ঞিতং প্রান্তঃ তংবিদ্যা হুঃখ সংযোগং বিয়োগং যোগসজ্জিত মিতাদাগ্যমা ইতার্থঃ ॥ ৩৩ ॥ মৈতাং মিত্তকা শুদেবা-

ন হিংস্থাৎ সর্বভ্তানি মৈত্রায়ণ গত * শ্বরেৎ।
নেদ্র জীবিত্রমাসাদ্য বৈরং কুবর্বীত কেনচিৎ॥ ৩৪॥
আকিঞ্চন্য স্থান্তাবো নির্নাশিত্বমচাপলম্।
এতদেব পর্ব্ব জ্ঞানং সদাআ্জানমুন্তমম্॥ ৩৫॥
পরিগ্রহং পরিত্যজ্য ভবেছ্দ্রা। যতব্রতঃ।
আশাকং স্থানমাশ্রিত্য নিশ্বলং প্রেত্য চেহ্ চ॥ ৫৬॥
তপোনিত্যেন দান্তেন মুনিনা স্ব্যাত্মনা।
অজিতং জেতুকামেন ভাব্যং সঙ্গেদ্বস্থিনা॥ ৩৭॥
গুণাগুণ্মনাসঙ্গমেককার্য্যমনন্তরম্।
এতন্ত † দুক্ষণো বৃদ্ধমান্তরেক পদং স্থাম্॥ ৩৮॥
পরিত্যজ্যি যো তুংখং স্থাং বাপ্যুভ্রং নরঃ।
বক্ষ প্রাপ্রোতি সোহত্যন্তমসঞ্চেন চ গচ্ছতি॥ ৩৯॥

রনং মার্গস্তকাত শ্চরেৎ॥৩৪॥জ্ঞানং জ্ঞানসাধনং জ্ঞান মপিস্তোতি সাধনে প্রত্যর্থং সদাত্ম জ্ঞানমুত্তম মিতি॥৩৫॥ অশোকং স্থানং বৈরা-গাং প্রেত্য হৃত্বা স্বর্গাদে ইহচ রাজ্যাদে আপ্রিত্য যতরতো ভবেৎ ॥৩৬॥৩৭॥গুণাং লোক বেদাদরঃ অগুণা যশ্মিন্ ভংগুণা গুণং অত্র-লোকা অলোকা বেদা অবেদা ইত্যাদিশ্রুতেঃ অনাসন্ধং রূপাদি সন্ধহীনং অতএব এক কার্য্যং একেন প্রত্যাগাত্মনৈব নিম্পাদ্যং অনন্তরং অজ্ঞান মাত্রাপ্নরাদ্বাম্যৎ হতুক্রিরাব্যবহিতং স্বর্গাদি স্থেবৎ ব্রতং প্রাকৃ সিদ্ধং একমেব পদ্যতে গম্যতে নতু জ্ঞান জ্ঞের বিভাগো যশ্মিন্ ভংএকপদং ॥৩৮॥৩১॥

গত ইত্যত গ্লাভি বিভি ক ঘ পুশুক্ষোঃ পাঠঃ।

[🕇] এতত্তমু কণ ইতত্ত এততু বকণ ইতি ক ব পুশুকরো পাঠ:।

যথা প্রাক্তনিদং সর্বাৎ সমাসেন দিজোন্তম ।

এতত্ত সর্বামাখ্যাতং কিং ভূম: শ্রোতুমিচ্ছসি ॥ ৪০ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বানি মার্কণ্ডেয় সমাস্থা পর্বানি দিজব্যাধ

সংবাদে এয়োদশাধিকদিশত তমোহ্ধ্যায়ঃ ॥ ২১৩ ॥

মার্কণ্ডের উনাচ।

এবং সংক্থিতে কুংলে মোক্ষধর্মে যুধিষ্ঠির!।

দৃঢ় * প্রীতমনা বিপ্রো ধর্মব্যাধমুবাচ হ॥ ১॥

ন্যাধ্যুক্তমিদং সর্বাৎ ভবতা পরিকীর্ত্তিতম্।

ন তেহস্তাবিদিত্র কিঞ্চি † দ্বার্মেদ্বি হহি দৃশ্যতে॥ ২॥

ন্যাধ উনাচ।

প্রত্যক্ষং মম যোধর্মসঞ্চ পশু দিকোত্তম!। যেন সিদ্ধিরিয়ং প্রাপ্তা মরা ব্রাক্ষণপুক্ষব!॥৩॥ উত্তিষ্ঠ ভগবন্! ক্ষিপ্রং প্রবিশ্যাভাত্তরং গৃহম্। ক্ষমুম্ছিন ধর্মজ্ঞ! মাতরং পিত্রঞ্চ মে॥৪॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ইত্যুক্তঃ স প্রবিশ্বাথ দদর্শ পরমার্চিতম্। সৌধং হৃদ্যং চতুঃশালমতীব চ মনোরমম্॥ ৫॥

180 1

ইত্যারণ্যকে পং নিঃভাং ব্রাহ্মণ ব্যাধ সম্বাদে ক্রয়োদশাধিক দ্বিশত ত্রেশাহধ্যায়ঃ ॥ ২১৩ ॥

' এবমিতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ শয়নাসন সন্বাধৎ শয়নাদি সংকীৰ্ণ ।

শৃত্ত প্রতিমনাবিপ্রইত্যত্ত দৃঢ় মিতি ক ঘঁ পুস্তকে পাঠ: ।
 শৃ ধর্মেরি ভারে ধর্মেন্ডা ইতি পাঠ: ক পুস্তকে।

দেবতাগৃহসংকাশ > দৈবতৈক্ষ স্থপৃক্তিত্য। শয়নাদনদয়াধ্ব গলৈক পরসৈর্ভম্ । ৬॥ তত্ত শুক্লাম্বরধরৌ পিতরাবস্থ পূজিতৌ। কুতাহারৌ স্থসম্ভূফারুপবিফৌ বরাসনে। ধর্মব্যাধস্ত তৌদুষ্ট্রা পাদেষু শিরসাপতৎ॥ ৭॥ উত্তিঠোত্তিঠ ধর্মজে। ধর্মাস্ক্রমভিরক্ষতু। প্রীতৌ স্বস্তব শৌচেন দীর্ঘমাযুরবাপ্ন হি॥৮॥ গতিমিকাং তপো জ্ঞানং * মেধাঞ্চ প্রমাণ গতঃ। সংপ্রত্রেণ ব্রা পুত্র নিত্যং কালে স্বপূজিতৌ । ১ ॥ न (७३ नारेक्व राज्य कि कि रिक्व राज्य विकास প্রয়তত্বাদ্বিজাতীনাং দ্যেনাসি সমন্বিতঃ॥ ১০॥ পিতৃঃ পিতাম হ যে চ তথৈব প্রপিতামহাঃ। প্রীতান্তে সততং পুত্র। দমেনাবাঞ্গ পূজ্যা॥ ১১॥ মনসা কর্মণা বাচা শুক্রাষা নৈব হীয়তে। ন চান্যা হি তথা বুদ্ধিৰ্দ্দৃশ্যতে সাম্প্ৰত॰ তব॥ ১২॥ জামদয়োন রামেণ যথ। রুদ্ধৌ স্পপুজিতৌ। তথা ত্বয়া কুত্র সর্বাং তদ্বিশিষ্টঞ্চ পুত্রক! ॥ ১৩ ॥ ততন্ত্ৰ ব্ৰাহ্মণ্ৰ তাভ্যাং ধৰ্মব্যাধো ন্যবেদয়ৎ। তৌ স্থাগতেন ত^ বিপ্রমর্চয়ামাসভুস্তদা॥ ১৪॥ প্রতিপূজ্য † চ তাং পূজাং দ্বিজঃ পপ্রচ্ছ তারুভৌ। সপুজাভ্যাৎ সভ্ত্যাভ্যাং কচিষাৎ কুশলং গুহে। खनामयू क बांश किक्ट गरेन्द्व भंदीद्वाः ॥ : c ॥ ७ ॥ ९ ॥ ७ ॥ २ ॥ २०॥ २२ ॥ २४ ॥ २० ॥ २८ ॥ वर्ष युव्हारः ॥ २० ॥

তপোজ্ঞান মিতাত্র তথাজ্ঞান মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে, ্শাতে।
 প্রতি পূজা ইত্যত্র প্রতি গৃছ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

वृक्षाकेव्यः।

কুশলং নৌ গৃহে বিপ্রা! ভূত্যবর্গে চ সর্ব্বশঃ! কচিতত্ত্বমপ্যবিশ্বেন সম্প্রাপ্তো ভগবলিতি *॥ ১৬॥ মার্কণ্ডের উবাচ।

বাঢমিত্যেব তৌ বিপ্রঃ প্রত্যুবাচ মুদান্বিতঃ। ধর্মব্যাধো নিরীক্ষ্যাথ ততন্তং বাক্যমত্রবীৎ॥ ১৭॥

ব্যাধ উবাচ।

পিতা মাতা চ ভগবলেতো † মদৈবতং পরম্।

যদৈবতেতাঃ কর্ত্তবাৎ তদেতাত্যাৎ করোম্যহম্॥ ১৮॥

ক্রমন্ত্রিৎশদ্যথা দেবাঃ সর্বে শক্রপুরোগমাঃ।

সম্পুল্যাঃ সর্বিলোকস্থা তথা র্দ্ধাবিমৌ মম॥ ১৯॥
উপহারানাহরতো দৈবতানাৎ যথা দিকাঃ ।

কুর্বন্তি তদ্বদেতাত্যাং করোম্যহমতক্রিতঃ॥ ২০॥

এতো মে পরমৎ ব্রহ্মন্ । পিতা মাতা চ দৈবতম্।

এতো মুপ্রেণফলৈ রক্তরেষয়ামি সদা দিল ! ॥ ২১॥

এতাবেবায়য়ো মস্থং যানু বদন্তি মনীঘিণঃ।

যজ্ঞা বেদাশ্চ চত্বারঃ সর্বামেতৌ মম দিল ! ॥ ২২॥

এতদর্থৎ মম প্রাণা ভার্যা পুক্রঃ স্কুক্তনঃ।

সপুজ্ঞদার: শুক্রাষা নিত্যমেব করোমাহ্ম ॥ ২৩ ॥
শ্বয়ঞ্চ স্থাপাম্যেতো তথা পাদৌ প্রধাবয়ে।

আহারং সংপ্রযক্তামি স্বয়ঞ্ছ ছিজসন্তম। ॥ ২৪॥ ।

(म) व्यक्तिकाः ॥ ५७ ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५८ ॥

[†] এতৌমদৈৰত মিত্যত্ত এতৌমেদৈৰত মিতি পাঠঃ য ক পুস্তকে। 1 পুলৈপঃ কলৈবিত্যত্ত পুস্প কলৈ বিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

অমুকুল তথা বিচ্যু বিপ্রিয়ং পরিবর্জ য়ে।
অধর্মেণাপি সংযুক্তং প্রিয়মাভাগং করোম্যহম্॥২৫॥
ধর্মমেব গুরুং জ্ঞাত্বা করোমি দিজস্তম।।
অতন্তিতঃ দদা বিপ্র! শুক্রামাং বৈ করোম্যহম্॥২৬॥
পঞ্চৈব গুরবো ব্রহ্মন। পুরুষস্য বুভূষতঃ।
পিতা মাতাগ্লিরাত্বা চ গুরুশ্চ দিজস্তম্।॥২৭॥
এতেমু যস্ত বর্ত্তে সম্যাবে দিজোত্তম।।
ভবেমুরগ্লমস্তম্য পরিচীণাস্ত নিত্যশং।
গাইস্যে বর্ত্তমানস্য এম ধর্মঃ সনাতনঃ॥২৮॥
ইত্যারণ্যকে পর্বণি মাকপ্রেমমান্যাপর্বণি দিজব্যাধ্যংবাদে ।
চতুর্দশাধিকদিশতত্বমাহধ্যায়ঃ॥২১৪॥

মার্কতেয় উবাচ।

শুক নিবেদ্য বিপ্রায় তৌ মাতাপিতরাবুভৌ।
পুনরের স ধর্মাত্মা ব্যাধো ব্রাহ্মণমত্রবীৎ॥ ১॥
প্রবৃত্তক্ত্ব তিহিন্ম সম্পশ্য তপদো বলম্।
যদর্থমুক্তোহসি তয়া গছস্ব মিথিলামিতি॥ ই॥
পতিশুক্রমপরয়া দান্তয়া সত্যশীলয়া।
মিথিলায়াং বদেদ্যাধঃ স তে ধর্মানু প্রবক্ষ্যতি॥ ৩॥
॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ ২১॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চতর্দ্দশাধিক দ্বিশত তমে:২ধ্যায়ঃ ॥ ২১৪॥

গুর ইতি ॥ ১ ॥ প্রবৃত্ত কু দিব্যদ্ফি: তপসঃ পিতো; শুঞ্জধাস্তকস্থ ॥ ২ ॥ ৩ ॥

ব্ৰাহ্মণ উবাচ। প্তিব্রতারাঃ স্ত্যায়াঃ শীলাচ্যায়া য্তব্রত !। সংস্কৃত্য বাক্যং ধর্মজ্ঞ । গুণবানসি মে মতঃ ॥ ৪॥ বাধ উবাচ। যন্তদা ত্বং দিজশ্রেষ্ঠ ! তয়োক্তো মাং প্রতি প্রভো !। # দৃষ্টমেতত্ত্বরা সম্যোকপত্ত্বা ন সংশ্রঃ॥ ৫॥ ত্বদনুগ্রহবৃদ্ধ্যা তু বিপ্রৈতদর্শিত ময়া। বাক্য চ শূণু মে ভাত। যত্তে বক্ষে হিতং দ্বিজ। ॥ ৬॥ ত্বয়া বিনিক্কতা মাতা পিতা চ দ্বিজসন্তম!। অনিস্ফৌহসি নিস্কাত্তো গৃহান্তাভ্যামনিন্দিত ! ॥ ৭ ॥ বেদোচ্চারণকার্য্যার্থমযুক্তং তত্ত্বুয়া ক্লতম। তৰ শোকেন বৃদ্ধৌ তাবস্ধীস্তৃতৌ † তপস্থিনৌ ॥ ৮॥ তৌ প্রসাদয়িতুং গচ্ছ মা স্বাং ধর্ম্মোইত্যগাদয়ম্। তপত্মী ত্ব^ মহাত্মা চ ধর্মে চ নিরতঃ সদা॥ ৯॥ সর্ববেমভদপার্থং তে ক্ষিপ্রং তৌ সম্প্রসাদয়। **শ্রদ্ধৎস্থ মম ব্রহ্ম**নাবাথা কর্তুমর্হান। গম্যতামদ্য বিপ্রধে ! শ্রেয়ন্তে কথ্যাম্যহম্॥ ১০॥ ব্রাহ্মণ উবাচ। যদেততুক্তং ভবতা সর্বং সত্যমসংশয়ম্। প্রীতোহস্মি তব ভদ্রংতে ধর্ম্মচারগুণান্বিত!॥ ১১॥ ব্যাধ উবাচ। দৈবতপ্রতিমো হি স্বং যস্তুৎ ধর্মমনুত্রতঃ।

দৈবতপ্রতিমোহি স্বং যস্ত্রণ ধন্মমনুত্রতঃ। পুরাণং শাশ্বতং দিবাং ‡ ছুষ্পুণ্ণ্যমক্তাল্পভিঃ॥ ১২॥ ॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥

^{*} দৃষ্টমেতভয়েতাত্ত্ব দৃষ্টমেবতরেতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

† তপন্মিনাবিত্যত্ত্ব মূনন্মিনাবিতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

‡ দুষ্পাপামিত্যত্ত্বস্পাপমিতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

মাতাপিতোং দকাশ৲ হি গত্বা ত্ব^ দিলদভম !। অভন্দিতঃ কুরু ক্ষিপ্রং মাতাপিতোি (রু পূজনম্। অতঃপরমহ^ ধর্মাং নান্যং পশ্যামি কঞ্চন ॥ ১৩॥

ব্ৰাহ্মণ উবাচ।

ইহাহমাগতো দিন্ট্যা দিন্ট্যা মে সঙ্গতং স্বয়া।

ঈদৃশা তুর্নভা লোকে নরা ধর্মপ্রদর্শকাং॥ ১৪॥

একো নরং সহস্রেষ্ ধর্মবিদ্যিতে ন বা।
প্রীতোহন্মি তব * সংখ্যান ভক্রংতে পুরুষর্মভ!॥ ১৫॥
পাতমানোহদ্য নরকে ভবতান্মি সমুদ্ধৃতঃ।
ভবিতব্যমথৈবঞ্চ যদ্দুটোহদি ময়ানঘ!॥ ১৬॥
রাজা যযাভিদৌ হিজৈঃ পভিতন্তারিতো যথা।
সদ্ভিঃ পুরুষশার্দ্দুল! তথাহ্ ভবতা † দ্বিদ্ধঃ॥ ১৭॥
মাতাপিত্ভ্যাং শুক্রাধাং করিষ্যে বচনান্তব।
নাক্নতাত্মা বেদয়ভি ধর্মাধ্যাবিনিশ্রম্॥ ১৮॥
দ্বন্দ্রেরং শাশ্বতো ধর্মাঃ শুদ্রযোনৌ হি বর্ত্তে !।
ন স্থা শুদ্রমহং মনো ভবিতব্যং হি কারণ্ম॥ ১৯॥

যেন * কর্মবিশেষেণ প্রাপ্তেরং শুদ্রতা স্বয়া।

^{11 30 11 38 11 30 11 30 11 30 11 30 11}

^{*} সখ্যেনেতার সত্যেনেতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

[†] দ্বিজ ইত্যত্রবিহেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

[🗜] বৰ্ততে ইতাত্ত বৰ্ততা ইতি পাচঃ ক পুস্তকে।

কর্ম বিশেষেণেত্যত্ত কর্ম বিপাকেনেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

এতদিচ্ছামি বিজ্ঞাতু * তত্ত্বেনহি মহামতে।
কাময়া বুহি মে দর্কাং দত্যেন প্রয়তাত্মনা * ॥ ২০॥
ব্যাধ উবাচ।

অনতিক্রমণীয়া বৈ ব্রাহ্মণা মে দিজোতম!। मुन् मर्क्तिमः त्रुखः शृक्तिप्त् मगोनघ ! । २) ॥ অহং হি ত্রাহ্মণঃ পূর্ব্বমাসং দ্বিজবরাত্মজ!। বেদাধ্যায়ী স্থকুশলো বেদাঙ্গানাঞ্চ পারগঃ । ২২ ॥ আত্মদোষকুতৈত্র হ্মন্নবস্থা মাপ্তবানিমাম। কশ্চিদ্রাজা মম সখা ধরুর্বেদপরায়ণঃ॥ ২৩॥ সৎসর্গাদ্ধরুষি শ্রেষ্ঠস্ততে ইহমভবং দিজ!। এতস্মিন্নেব কালে তু মুগয়া৲ নির্গতো নুপঃ॥ ২৪॥ সহিতো যোধমুথ্যৈশ্চ মন্ত্রিভিশ্চ স্থসৎরুতঃ। ততোহভ্যহন্ গাংস্তত্র স্বহুনাশ্রমং প্রতি॥ ২৫॥ অথ ক্ষিপ্তঃ শরো ঘোরো ময়াপি দ্বিজসন্তম।। তাডিভশ্চ ঋষিস্তেন শরেণানতপর্বাণ। ২৬॥ ভূমৌ নিপতিতো ব্ৰহ্মরণাচ প্রতিনাদয়ন্। নাপরাধ্যাম্যহ কিঞ্জিৎ কেন পাপ্রমিদ ক্রতম্ ॥ ২৭ ॥ মন্থানন্তং মূগং চাহ্ন সংপ্রাপ্তঃ সহসা বিভো!। অপশ্যন তমুষিন বিদ্ধং শরেণানতপর্বাণ। ২৮॥

कांब्रजा चेल्ह्जा ॥ २० ॥ २১ ॥ २२ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २८ ॥ २७ ॥ २१ ॥ २৮ ॥

^{*} তত্ত্বন হীত্যত্ত্ব তত্ত্বনাহ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
† পুয়তাত্মনাইত্যত্ত প্রয়তাত্ম বানিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

অকার্য্যকরণাচ্চাপি ভূশং মে ব্যথিতং মনঃ।
তমুগ্রতপদং বিপ্রং নিউনন্ত মহীতলে॥ ২৯॥
অজানতা কৃত্যিদং ময়েত্যহমথাক্রবম্।
ক্রমের্ছনি মে সর্ব্যমিতি চোক্রো ময়া মুনিঃ॥ ৩০॥
ততঃ প্রত্যবীদ্বাক্যম্যির্মাং ক্রোধমূর্চ্ছিতঃ।
ব্যাধস্ত ভবিতা কুর শুদ্রমোনাবিতি ক্রিল।॥ ৩১॥
ইত্যারণ্যকে পর্বানি মার্কপ্রেয় সমাক্রা পর্বানি দ্বিজব্যাধ
সংবাদে পঞ্চদশাধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২১৫॥

ব্যাধ উবাচ।

এবং শপ্তোহ্ছ্ষণা তদা দ্বিজবরে।ত্তম !।
অভিপ্রসাদয়স্ঘিং গিরা ত্রাহীতি মাণ তদা ॥ ১॥
অজানতা ময়াহ্কার্যমিদমদা কৃত্ মুনে !।
ক্ষম্ভমান্তি এই শ্বিক্রাচা

ঋষিকবাচ।

নান্যথা ভবিতা শাপ এবমেতদসংশয়ম। আনৃশংস্থাত্ত্বহং কিঞ্চিৎ কর্ত্তানুগ্রহমদ্য তে॥ ৩॥ শূদ্রযোন্যাং বর্ত্তমানো ধর্মজ্ঞো হি ভবিষ্যদি। মাতাপিত্রোশ্চ শুশ্রুষাং করিষ্যদি ন সংশয়ং #॥ ৪॥

নিষ্ঠনত্তং শব্দং কুৰ্ববিত্তং ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥

ইত্যা রণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চদশাধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২১৫॥

এবমিতি অভি প্রসাদয়ং অড্ভাব আর্ব:॥১।২॥৩॥৪॥

* সংশয় মিত্যত্র সংশয় ইতি পাঠঃ ক য পুস্তকরো।

তরা শুক্রারা দিদিং * সহত্বং সমবাপ্যাসি।
জাতিমারশ্চ ভবিতা স্বর্গং চৈব গমিষাসি॥ ৫॥
শাপক্ষরে তু নির্বৃত্তে ভবিতাসি পুনদ্ধিজ:।
এবং শপ্তঃ পুরা তেন ঋষিণাম্ম গ্রেতেজসা॥ ৬॥
প্রাদশ্চ কৃতস্তেন মনৈবং দিপদায়র!।
শার্ক চোদ্ধৃতবান্মি তেন্তু বৈ দিজসক্তম!॥ ৭॥
আশামঞ্চ ময়া নীতো ন চ প্রাণেব্যাযুজ্যত।
এতত্তে সর্বামাখ্যাতং যথা মম পুরাভবং॥ ৮॥
অভিতশ্চাপি গন্তব্যং ময়া স্বর্গং দিজোক্তম!॥ ৯॥

ব্ৰাকাণ উপাত।

এবমেতানি পুরুষা ছংখানি চ সুখানি চ।
প্রাপ্নুবন্ধি মহাবুদ্ধে নোৎক্র্কাং কর্তুমইসি॥ ১০॥
ছুদ্ধরং হি কৃত্ত কর্মা জানতা জাতিমাত্মনঃ।
লোকরন্তান্তন্তন্ত্ব ! নিত্যং ধর্মপরায়ন। ॥ ১১॥
কর্মদোষশ্চ বৈ বিদ্ধনাত্মজাতিক্তেন বৈ।
কঞ্চিৎ কালমুষ্যতাং বৈ ততে হিসি ভবিতা দিজঃ॥ ১২॥
সাম্প্রতঞ্চ মতো মেহসি ব্রাহ্মণো নাত্র সংশয়ঃ।
ব্রাহ্মণঃ পতনীয়েষু বর্ত্তমানো বিকর্মান্থ ১০॥
দান্তিকো ছুদ্তপ্রাজ্ঞঃ * শৃদ্রেণ সদৃশো ভবেৎ।
যন্ত শৃদ্রো দমে সন্ত্যে ধর্মো চ সততোপিতঃ॥ ১২॥

^{*} মহত্বং সমবাপ্যসীত্যত্ত মহতীং ত্বং সমাপ্যতীতি পাঠঃ ৰু পুস্তকে।

' * প্ৰাক্ত ইত্যত্ত প্ৰায় ইতি পাঠঃ কু পুস্তকে।

তং ব্রাহ্মণমহৎ মন্যে রুজেন হি ভবেদ্বিজঃ।
কর্ম্মনি, যেণ বিষমাৎ গতিমাপ্নোতি দারুণাম্॥ ১৫॥
ক্ষীণদোষমহৎ মন্যে চাভিতস্থাৎ নরোন্তম!।
কর্তুমইসি নোৎক্ঠাৎ স্বন্ধি। হাবিষাদিনঃ।
লোকর্ত্তারুর্ভ্জা নিত্যং ধর্মপরায়ণাঃ॥ ১৬॥

याभ छे भहा

था अवस्था भागमः पुरुषः इन्याक्तातीतरभीषरेवः। এতদ্বিজ্ঞানসামর্থাং ন বালৈঃ সমতামিয়াং॥ ১৭॥ অনিউস্প্রাগান্ত বিপ্রযোগাৎ প্রিয়ম্ম চ। মন্ত্রন্যা মাননৈর্দ্ধের্জ্যন্তে চাম্পরুদ্ধরং ॥ ১৮ ॥ গুণৈভূতিনি যুজাতে বিযুজাতে তথৈৰ চ সর্বাণি নৈতদেকস্ত শোকস্থানং হি বিদ্যতে । ১৯॥ অনিষ্টং চান্ধিতং পৃষ্ঠাংস্কুথা ক্ষিত্রাৎ বিরজ্যতে। তত্ত প্রতিকুর্বন্তি যদি পশান্যপক্রমাৎ॥ ২০॥ শেচতো ন ভবেৎ কিঞ্জিং কেবলং পরিতপ্যতে। পরিত্যজন্তি যে তুঃখং স্থুখং চাপুতের্থ নর।:॥ ২১॥ ত এব সুখমেধন্তে, জ্ঞানত প্রা মনীবিণঃ। অসন্তোষপরা মূচাঃ সন্তোধৎ যাত্তি পণ্ডিতাঃ। ২২।। অসন্তোষকা নাস্যুত্তন্তিশ্চ পরমং সুখন। ন শোচন্তি গতাধানঃ পশ্যন্তঃ প্রমাৎ গতিয়॥২৩॥ ন বিষাদে মনঃ কাৰ্য্য বিষাদো বিষযুক্তমম্। মারয়ত্রকৃতপ্রজ্ঞং বালং কুদ্ধ ইবোরগং॥ ২৪॥

॥ ১৫॥ ১৬ ॥ ১৭॥ ১৮॥ গুলৈঃ গুল কার্যোঃ সুখ ছংখ মের্ছিঃ॥ ১৯॥ ॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ গতাখানঃ প্রাপ্ত জ্ঞান মার্গাঃ॥ ২৩॥ ৯৪॥ য় বিষাদোহ ভিভবতি বিক্রমে সমুপস্থিতে।
তেজসা তস্থ হীনস্থা পুরুষার্থোন বিদ্যাতে॥ ২৫॥
অবশ্বং ক্রিয়মাণ্ড কর্মণো দৃশ্বতে ফলম্।
ন হি নির্বেদমাগম্য কিঞ্চিৎ প্রাপ্নোতি শোভনম্॥ ২৬॥
অথাপ্যপায়ং পশ্চেতে তুঃথন্থ পরিমোক্ষণে।
অশোচনারভেততবং মুক্তশ্চাব্যসনী ভবেৎ॥ ২৭॥
ভূতেম্বভাব সংচিন্তা যে তু বুদ্ধেঃ পরং গতাঃ।
ন শোচন্তি ক্তপ্রজাঃ পশ্রতঃ পরমান গতিম্॥ ২৮॥
ন শোচামি চ বৈ বিদ্ধন কালাকাক্ষ্মী স্থিতো ছহম্।
এতৈর্নিদর্শনৈত্র ক্রিবসীদামি সন্তম। ॥ ২৯॥
ভ্রাক্ষণ উবাচ।

কৃতপ্রজ্ঞাহসি মেধাবী বুদ্ধিশ্চ বিপুলা তব।
নাহ্ ভবন্ত শোচামি জ্ঞানতৃপ্তোহসি ধর্মবিৎ ॥ ৩০॥
আপুচ্ছে ত্বাং স্বস্তি তেহস্ত ধর্মা হ্বাং পরিরক্ষতু।
অথমাদস্ত কর্তব্যা ধর্মে ধর্মাভূতাম্বর! ॥ ৩১॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

বাচমিত্যেব তং ব্যাধঃ ক্তাঞ্জলিক্সবাচ হ।
প্রদক্ষিণমথো কৃত্বা প্রস্থিতো দিজসন্তমঃ ॥ ৩২॥
স তু গত্বা দিজঃ * সর্কাং শুক্রাবাং কৃতবাংস্তদা।
মাতাপিতৃভ্যাণ বৃদ্ধাভ্যাং যথান্যায়ণ স্থসণশিতঃ ॥ ৩০॥
এতত্তে সর্কমাখ্যাতং নিখিলেন যুধিষ্ঠির ।।
পৃষ্টবানসি যংতাত। ধর্মাং ধর্মাভ্তাম্বর ।॥ ৩৪॥

॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ বুদ্ধেন্ডয় জ্ঞানাৎ পরং ত্রন্ম গতাঃ প্রাপ্তাঃ । ২৮ ॥ ২৯ ॥ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ প্রদক্ষিণং কুষ্। উপদেষ্টা গুৰুর্নিতি বুদ্ধা ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥

^{*} সর্বাং শুর্ঞাবামিতাত্ত সর্বাঃ শুক্রবাঃ ইতি পাঠঃ ক य পুশুকে।

পতিব্রতায়া মাহাত্যং ব্রাহ্মণস্থ চ সন্তম!। মাতাপিত্রেশ্চ শুক্রাধা ধর্ম্মব্যাধেন কীর্ত্তিতা। ৩৫॥

য়ুধিষ্ঠির উনাচ।

জতাদুতমিদং ব্রহ্মন্ ধর্ম্মাখ্যানমনুত্তমম্।
সর্বাধর্মাবিদাং শ্রেষ্ঠ ! কথিতং মুনিসন্তম !॥ ৩৬॥
স্থেশ্রব্যতয়া বিদ্ধন্ মুহূর্ত ইব মে গতঃ।
ন হি তৃপ্তোহিন্ম ভগবন্ শৃণ্যানো ধর্মমৃত্তমম্॥ ৩৭॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয়সমাস্যাপর্বাণি দিজব্যাধ্ব সম্বাদে ধোড়শাধিক দিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২১৬॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

শুনঃ পপ্রচ্ছ তম্বিং মার্ক শুরোজঃ শুভাং কথাম্। পুনঃ পপ্রচ্ছ তম্বিং মার্ক শুরেমিদং তদা॥ ১॥ ॥৩৫॥১০৬॥৩৭॥

> ইত্যারণাকে পংনৈং ভাং যোড়শাধিক ্দ্রিশত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২১৬॥

ধর্ম ব্যাধােক ধর্মেয় মাতাপিতায়ি রায়া> গুরুশ্চ বিজ সন্তমেতি মুমুকুলাং পঞ্চ সেব্যবেন প্রোক্তা স্তত্ত্ব পতিএতাে পাথ্যানে ধর্ম ব্যাধনিদর্শনেন
মাতাপিতােঃ পতি ব্রতা নিদর্শনেন গুরোশ্চ শুক্রাযাঃ ফলং দর্শিতং
তবৈব মাক্ষ ধর্ম প্রস্তাবে আত্ম সেবনং ফলকােক্তং পরিশিফায়ি সেবনস্য
মাক্র ছেত্ত্ব প্রকারং বক্তবুং আজিরসমারততে ক্রান্তমাং ধর্ম সংযুক্তা
মিত্যাদিনা ॥ ১ ॥ কথ মিতি নত্ত্বম্যে প্রথমাে অঙ্গরা শ্বারিতি বেদে
বিল্লে রঞ্জিরসত্বং ক্রায়তে অত্রতু অজ্বিসাে বিল্লবং কৃথং পুচ্ছতি সত্যৎ
উভয়োরভেদেন বীজাঙ্করবং পরস্পার জনক্রেন বাহ্বদেষিঃ। তথাচ

যুধিষ্ঠির উবাচ 1

কথমগ্নির্বনিং যাতঃ কথঞাপ্যক্সিরাঃ পুরা।
নফেইমো হবসমবহদগ্নিভূবা মহাদ্যুতিঃ ॥২॥
আগ্নির্বান ত্বেক এব বছর্পান্ত কর্মস্থ ।
দৃশ্যতে ভগবন্! সর্বামেতদিচ্ছামি বেদিতুম্॥৩॥
কুমারশ্চ যথোৎপল্লো যথা চাগ্নেঃ স্পতোহভবৎ।
যথা রুদ্রাচ্চ সম্ভূতো গঙ্গায়াৎ ক্তিকাস্থ চ॥৪॥
এতদিচ্ছাম্যহং স্বত্তঃ শ্রোতৃৎ ভার্গব সন্তুম!।
কৌতুহলসমাবিকৌ যথাতথাং মহানুনে!॥৫॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ।

অত্রাপুদাহরন্তিমমিতিহাস পুরাতনম্।
যথা কুনো ছতবহস্তপন্তপ্তঃ বনং গতঃ ॥ ৬॥
যথা চ ভগবানিমিঃ স্বরমেবাঙ্গিরাভবং।
সন্তাপারংশ্চ প্রভয়া নাশারংগ্রিমিরাণি চ॥ ৭॥
পুরাঞ্গিরা মহাবাংহো! চ চার তপ উত্তমম্।

অগ্নিথৈ বাদ্ধন ইতি অহংতদমি অমেতল্যমানি যোনি ন্তৰ্যোনির্ম্মীতি চ চ্ছাতীভবতঃ বনং সলিলং যাতঃ প্রবিষ্টঃ প্রতিবিদ্যাপ ইতি মন্ত্রপথি জীবনং ভূবনং বন মিতা মরঃ ॥ ২ ॥ অগ্নিরিতি একস্যাপ্যাগ্নেঃ কর্ম স্থূপ্যা মান মনেকত্বং কথ্যপুপ্রদাতে নহি আগ্নেরাক্রা কপালঃ দর্শ পূর্ণ মাস চাতুর্মামানিয় এক এবেতি বক্তবুং শকাং অন্যাব্যবহা যোগাং অন্যান্ত গুণ্মা দ্রামা বা যাগভেদকস্যাভাবাদেবতাভেদএব যাগ ভেদ ছেতুরিতি অবশ্যাৎ বাচ্যং সচাগ্নেরের কথং সন্তব্তীতার্থঃ ॥ ৩ ॥ অথএকস্থা সভতো অনেকেগ্নি নামানঃ সন্তীতি তর্হি আগ্নেয়া ক্ষম্যা কথং ক্রাদি প্রস্ক্রম্পিম্মর্থাত ইত্যাহ কুমার শ্রেতি ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ অক্ষিরাভব্বং সন্ধ্নির রড্ভাবোর। আর্থঃ ॥ ৭ ॥ তথেতি অগ্নেরগাধিকোভূরা স্থ্যবং

আশ্রমস্থা মহাভাগো হ্বাবাহং বিশেষয়ন্।
তথা স ভূবা তুতনা জগৎ সর্বাং ব্যকাশয়ৎ॥৮॥
তপশ্বরং স্ত ভভুক্ সন্তপ্তস্তম্য ভেজসা।
ভূশং প্লানশ্চ তেজস্বী নচ * কিঞ্চিৎ প্রজজ্ঞিবান্॥৯॥
অথ সঞ্চিন্তয়ামাস ভগবান্ হব্যবাহনঃ।
অন্যোহ্মিরিহ লোকানাং ব্রহ্মণা সংপ্রকল্পিতঃ॥১০॥
আগ্নব্বং বিপ্রনন্তং হি তপ্যমানশ্য মে তপাঃ।
কথমগ্লিঃ পুনরহং ভবেয়মিতি চিন্তা সঃ॥১১॥
অপশ্রদ্মিবলোকা স্থাপয়ন্তং মহামুনিম্।
সোপাসপজ্বনভীতস্তমুবাচ তদাক্ষিরাঃ॥১২॥
শীঘ্রমেব ভবস্বাগ্লিস্থং পুনর্বোকভাবনঃ।
বিজ্ঞাতশ্চাসি লোকেষু ত্রিষু সংস্থানচারিষু॥১৩॥
অমগ্নিঃ প্রথমং স্থেটা ব্রহ্মণাতিমিরাপাইঃ।
স্বস্থানং প্রতিপদ্যেম শীঘ্রমেব তমোকুদ !॥১৪॥
ভগ্নিকবাচ।

নফকীর্ত্তিরহ্ লোকে ভবান্ জাতো ছতাশনঃ। ভবস্তমেব জ্ঞান্সন্তি পাবক ন তুমাং জনাঃ॥ ১৫॥

জগৎ প্রকাশিত বান্॥৮॥তপশ্চরন্নিতি মহন্ত হ্নল্বং স্থবিরং তদাসী দ্যোনাবিষ্ঠিতঃ প্রবিবেশিথাপ ইতি প্রাসদ্ধান কেনচিন্নিমিত্তেন জলে প্রবিশ্ব তপশ্চরন্নমি রাজিরসেন তেজসা সন্তপ্তো ভূদিতার্থঃ উল্লং উল্লণং স্থবিরং প্রাচীনং আবিশ্বতিষ্ঠতীত্যাবিষ্ঠং ভরং সংজাতমন্ত স আবিষ্ঠিতঃ॥৯॥॥১০॥১১॥১২॥ সংস্থান চারিষু স্থাবর জন্সমেষু সস্যক্ স্থানং গতিনির্ভি র্যেষু চরণশীনেষু চেতিযোগাৎ ত্রিষু অন্তর্গহিদিবিচ উত্তমাধ্য মধ্যমেষুবা॥১৩॥১৪॥১৫॥নিক্ষিপামীতি অত্যাধি শক্ষেন দিক্ষেশ

^{*} নচ ইতাত্র ন স ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

নিক্ষিপাম্যহমগ্নিত্ব ত্বমগ্নিঃ প্রথমো ভব।
ভবিষ্যামি দ্বিতীয়োহ্ছং প্রাজাপত্যক এব চ॥ ১৬॥
ভাদ্ধিরা উবাচ।
কুরু পুণ্যং প্রজাস্বর্গাং ভবাগ্নিন্তিমিরাপহঃ।
মাঞ্চ দেব কুরুম্বাগ্নে প্রথমং পুত্রমঞ্জনা॥ ১৭॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
তচ্চুত্বাঙ্গিরসো বাক্যং জাতবেদান্তথাকরোৎ।
রাজন রহস্পতির্নাম তন্তাপ্যঙ্গিরসং স্কুতঃ ॥ ১৮॥
জাত্বা প্রথমজং তস্তু বহ্নেরাঙ্গিরসং স্কুত্ম।
উপেত্য দেবাঃ পঞ্জচুঃ কারণং তত্ত্ব ভারত। ॥ ১৯॥

কাল কত্রণিদাত্মা স্থ সংজ্ঞোহিরণ্য গর্ভ উচাতে তক্ষ অগ্নিরতাপাঃ কারণাত্মনাবস্থানং প্রথমঃ প্রথমকঃ স্ক্রাত্মেত্যর্থঃ হে প্রজাপত্য প্রজাপতি পুত্র হে অদিরঃ অহং দিতীয়ঃ কঃ ক সংজ্ঞো বিরাজ্মা ভবিষামি॥ ১৬॥ কুর্বিতি পুনাং হবিবহনং প্রজানাং স্বর্গাং স্বর্গায় হিত্ত প্রথমং পুত্রং রহস্পতি সংজ্ঞং আরং ভাশঃ ঈশস্ত বিরাডুপাসনাভিঃ সিদ্ধাং ক্রমেণ বন্ধ প্রজাপতি রহস্পতি সংজাঃ পূর্ব্ব পূর্ব্বপ্ত উত্তর উত্তরঃ শতাংশ সংমিতৈশ্বর্যঃ তথাত আতি রারোহেক্রমেণাছ তেযে শতং রহস্পতে রাননাঃ সত্তকঃ প্রজাপ্ততে রাননাঃ তেয়েণতং প্রজাপতে রাননাঃ সত্রকো ব্রহ্মণ আনন্দ ইতি তত্ত্বাপি বীজাঙ্কুর ন্যায়েনাট্রেরন্ধিরাঃ অন্ধি-রসো রহস্পত্যাখ্যোষ্ট্রিরিতি বোধাং তদ্যদিদমাত রমুং যজামুং যজেতোতলৈরসা বিসৃষ্টিঃ স্থপর্ণং বিপ্রাঃ কবয়োবচোভি রেকং সন্তং বহুধাকপ্দায়ন্তীত্যাদি ভাগতি প্রাসিদ্ধং সূত্রাত্মনঃ সর্বদেবতার পত্ন মাদিরস তাৎপর্বাৎ তদিদং জ্ঞাত্বা যজমানস্তাগ্নিরপি মোকদারং ভবতীত্যর্থঃ ॥ ১৭ ॥ তংখ্ঞাহেতি অকরোৎ অন্ধীচকার জাতবেদাঃ স্বয়ং কারণং গায়া স্ব পুত্র মদিরস মকরোকভাপি পুতঃ স্বয়ং রহস্পতি নামাভবদিতি ॥ ১৮॥ তর রহস্পতেঃ কারণতং জ্ঞানাদেব যুজাতে এক বিদ্ধুকৈব ভবতীতি ক্রতে त्रज्ख भावीकार्थर मिता इस्मिणिर अिक कावनर अक्त भक्षाक्र ।। ১৯॥

স তু পৃষ্ঠস্তদা দেবৈস্ততঃ কারণ্মব্রবীৎ।
প্রত্যগৃহ্ণস্ত দেবাশ্চ তদ্বচোহ ক্লিরসস্তদা ॥ ১৯ ॥
তত্ত্ব নানা বিধানগ্রীন্ প্রবক্ষ্যামি সহাপ্রভান্।
কর্ম্মভিবাছভিঃ খ্যাতান্ নানাধান্ ব্রাক্ষণে বিহ ॥ ২১ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডের সমাস্থা পর্বাণি আঙ্গিরসোপাখ্যানে সপ্তদশাধিক দ্বিশত ত্যোহধ্যারঃ ॥ ২২৭ ॥

भार्कट ७ श छे वाह ।

বদ্দণো যস্তীয়স্ত পুত্রঃ কুরুকুলোদ্বছ !।

* তন্তাভবৎ সুভা ভার্য্যা প্রজান্তন্তাঞ্চ মে শৃণু ॥ ১॥

তিশিংশ্চতে নোক্তে দতি প্রত্যগৃত্ধন্ অভিবনোবচঃ অয়ং ভবতাং গুক্ত বিতি অজীকৃত বভঃ॥২০॥নানার্থান্ পৃথক্ প্রয়োজনান্ বান্ধানের কর্ম-বিধিবাক্যের ॥২১॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তদশাধিক দ্বিশত তম্যেহন্যায় ॥ ২১৭ ॥

কালাভি মানিজ্যে দেবতা অপি অপিরঃ সংজ্ঞাৎ স্ত্রাত্মনএব সকাশাজ্ঞাতা ইতি বজুমধার মারভতে বন্ধন ইতি বন্ধাঃ কারণাৎ স্ত্রং ততন্তম্পান্তি সিদ্ধোপিরা ইতি তম্ম তৃতীয়ন্বং স্থভাকালাভি মানিনী দেবতা সুষ্ঠু সংবৎ-সরাদ্যাত্মনাহোরান্যাত্মনাবাভাতীতি স্থভা শুভা ইতি পাঠেপি সৈব প্রাহ্যা । ১ ॥ বুহৎকীর্ত্তি বাদীনি রহস্পতেরেব বিশেষণানি কীর্ত্তি র্যশঃ জ্যোতিঃ শারীরং তেজঃ ব্রন্ধ বেদাধারনং মনঃ সক্ষপাদিরপং মন্ত্রো-বিচারঃ ভাপ্রতিভাবিদ্বার্থা তত্মকুর্তিঃ এতানি রহন্তি যম্ম সত্থা তথা

^{*} তত্মভবদিতাত্ত তত্মাপি চ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

রহৎকীর্ত্তিরি হজ্যোতির্বি হজু কা রহমনাঃ।
রহমন্ত্রো রহন্তামস্থা রাজন রহস্পতিঃ ॥ ২ ॥
প্রজাস্থ তাস্থ দর্বাস্থ নােণা প্রতিনাতবং।
দেবী তারু মতী নাম প্রথমান্তিরনঃ স্থতা ॥ ২ ॥
ভূতানামের দর্বেরাশ যন্তাশ রাগতদ তবং।
রাগাদোগতি যামান্ত বিতিয়ান্তিরসঃ স্থতা ॥ ৪ ॥
যাং কপদ্পিস্থতামান্ত দি শ্যাদি স্থেতি দেহিনঃ।
তন্ত্রবাং সা দিনীবালী তৃতীরান্তিরসঃ স্থতা ॥ ৫ ॥
পশ্যতার্চিষ্কতী ভাভিইবিভিশ্চ হবিষ্কৃতীন ॥ ৬ ॥
ধর্তীক্রিসঃ কন্যাশ পুণ্যামান্ত্র্যাহিষ্কৃতীন ॥ ৬ ॥

শকঃ পাদ পূরণার্গঃ ॥ ২ ॥ তাস্ত্রক্রমান্ত্রের রুদ্ধিন্ত স্থা যুক্তাদিবসাভিমানিনীভার্থঃ ॥ ৩ ॥ রাভিমান ভূতানা নিতি স্থাপ্তিকালবেন শ্রমনাশ করাভ্রপাং রাগো ভবং রাগাং রাগহেত্রাং সক্রাঘ্যে রাগোপেত হাদ্বা॥ ৪ ॥ কপদিনোক্রজত স্থানিব স্থতাং চন্ত্রকণাং ললাটে প্রতাং দৃষ্ণাদৃষ্ঠ রূপাং ভত্তহেতুঃ ভত্তবাদিভিত্নের স্থাক চন্দ্র যুক্তরং লক্ষাতে চতুর্ব্বশী যুক্তামাবাজা সিনীবালী যা পূর্ব্বামানা সা নিনীবালী যোভারা সাকুর্বিতি শ্রমতেঃ ॥ ৫ ॥ অর্চিম্বতী পূর্ব্যমানা সা নিনীবালী যাজাং ভাভির্জনোরাত্রাবিপি পশ্রতি রূপাদিক মিতি শেষঃ সাচ তুর্থী যজাং ভাভির্জনোরাত্রাবিপি পশ্রতি রূপাদিক মিতি শেষঃ সাচ তুর্থী যজাং হবিভিদে বিতাইজ্যন্তে সা হবিম্বতী প্রতি পদ্যক্তা পৌর্বাং পৌর্ণ মানীং অন্নমতীং নাম যাপেনি মানী সাংখ্যমতী ব্যভিরাসা রাকেতিশ্রমতা অন্নমতীং নাম যাপেনি মানী সাংখ্যমতী ব্যভিরাসা রাকেতিশ্রমতা আমাবাজায়াং হিদীক্ষাং কর্ত্রর্ধমান শ্বন্তোক্সতে পোর্ণমালাজ্য ক্ষীয়মানঃ অভোদিপ্তি মংস্থা দিনের এবা মহামন্তীত্বচাতে যতোর মহং

^{*} স্বতাইত্যৱ স্থতা মিতি পা:ি ক পুস্তকে।

মহামথেম, ক্লিরসী দীপ্তিমৎস্থ মহামতে!।
মহামতীতি বিখ্যাতা নপ্তনী কথাতে স্কৃতা॥৭॥
যান্ত দৃষ্ট্যা ভগব ীং জনঃ কুছকুহায়তে।
একানংশেতি তাম,ছঃ কুছনজিরমঃ স্কৃত্যা দ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বালি মার্কপ্রের স্মান্তা পর্বালি আক্লিরসোপাখ্যানে অক্টাদশাবিক ছিশত তমাহধ্যারঃ॥২১৮॥

मान्ति एस छ तर।

রহস্পতেশ্চান্ত্রকী ভার্যাভূদ্ধা মশস্বিনী।, অগ্নীন্ সাজনয়ৎ পুণ্যান্ শ যতেকাঞ্চাপি পুল্লিকাম্॥১॥

মহস্বান্ বা অভাইতো বিদ্যতে সামেতি বোগাং পূর্ববিদ্যা কারো-ভাদেশ আহিঃ ॥ ৭॥ কুত্কুহায়তে বিন্মিতো ভবতি একাকলা অনংশা জম্পাংশবতী অলব্যা বশ্যুবিতি বদস্যাপেনত্ যোত্তবাসা কুছুবিতি অহতেঃ প্রতিপদ্যুক্তা সম্যান্সা কুছুবিতি প্রসিদ্ধং ॥ ৮॥

ইত্যারণাকে পর্ক্ষতি ইননকটিয়ে ভারত ভাবদীপে অফাদশাধিক দ্বিশত তমেং২থাকঃ ॥ ২১৮॥

তত্রকংক্ষত্তঃ কলিং প্রান্তিতঃ অথক্ষক্ষত্তা দেবতাঃ প্রপঞ্চিত্থ বিরাড়পান্তি ফলবিস্থান রহস্পতে বিভূতিরপাং সন্তাতিং বজ্যুপক্ষতে রহসপতে রিতি চাল্রমনী চল্রমনা আক্রাতা তারানাম রডগ্লীন্ শংযুপ্রভূত তীন্ বক্ষ্যমাণান্ এনাং প্রতিকাং স্বাহাখ্যাং ম ১॥ আহতির প্রধানাত্তির

^{*} পুণ্যা নিত্যত্র পুত্রানিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

আছতিখেব যন্তাগেইবিষাদ্যং # বিধীযতে।

গোহগির্বাহস্পতেঃ পুল্রঃ শংগুর্নাম মহাত্রতঃ ॥ ২ ॥

চাতুর্মান্তেমু যন্তেন্টা মশ্রমেবেহগ্রজঃ পশুঃ।

দীপ্তো জালৈরনেকাতৈরগ্নি † রেকোইথ বীর্যাবানু ॥ ৩ ॥

শংযোরপ্রতিমা ভার্যা সত্যা সত্যায় ধর্মজা।

অগ্নিস্তম্ম স্থানে দীপ্রস্তিস্রাং কন্যান্দ স্কর্তাঃ ॥ ৪ ॥

প্রথমেনাজ্যভাগেন পূজ্যতে যোহগিরধ্বে।

অগ্নিস্তম্ম ভরদাজঃ প্রথমঃ পুল্র উচ্যতে॥ ৫ ॥

দর্শে পৌর্ণমানে চ্যুদ্য আদ্যুৎ হবিষা তৃতীয়া প্রথমার্থে প্রথমং হবি
বিষীয়তে যদায়েয়েক কণালো মাবাদ্যায়ঞ্চ পৌর্ণমাদ্যাঞ্চালুতো ভবভীত্যাদি প্রভাগ লোদ্যতে দ শংসুর্নাম ॥২॥ চাতুর্মাদ্যেয়ু চতুর্মাদ্যেয়ু
কর্ত্তবােয়ু বৈশ্বদেব বক্ষণ প্রহাদ্যা কামেধ শুনাদারীযাগ্যাপর্ক চতুক্তয়েয়ু
আগ্রেষ্মফীকপালং নির্বপতি দৌমাঞ্চক মিতি প্রতিপর্বতুল্য বদ্যি বামাযতে ভথাপ্রমাদে চ্যুদ্যাং ইন্টি দমীপে জগ্রন্থঃ প্রথমঃ পশুর্ববিতি
ভব্র বাপশা বিভিক্তরতোন্যতরে বা গ্রেন্তী নাগ্রা বৈশ্ববীবেতি আর্থলায়নাত্যকা ভথাচদশ পূর্ণমাদ চাতুর্মাদ্য পশুর্বমেগঃ বংপুর্বকাঃ দোগ্রিবাহিস্পত্যঃ শংযুর্নামে ইত্যর্থঃ॥৩॥ শংসুসন্ততিমাহ শংযোরিতি অপ্রতিমা
অতিদুন্দরী ধর্মজা ধর্ম কন্যা সত্যানাম দীপ্রো দীপ্রিমান্॥ ৪॥ তদ্যানামাহ
প্রথমেনেতি অপ্রবে দশাদ্যে প্রথমাজ্য ভাগ দেবতা যোগ্রিঃ সভরন্নাজ
ইত্যর্থঃ তদ্য শংযোঃ॥৫॥ পৌর্ণমাদ্যেতি অবেন্ত্যতং হবিঃ প্রথমাধারন্তদ্য দেবতা ভরতোনাম শংযোঃ পুত্রঃ পূর্ণমাদ্যদাহ সর্বতিহিকার পরভেন দর্শোপি গৃহাতে পৌর্ণমান্যে পুত্রঃ পূর্ণমাদ্যা উপদিষ্টা ইত্যাশ্বলায়নবচনাৎ যদ্যপি প্রোবাধারঃ প্রাজ্যপতান্তথাপি স ভরত সংজ্ঞব প্রজা-

আদ্যমিত্যত্র আজামিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 ক এক ইত্যত্র এষ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

পৌর্ণমাক্তেরু সর্কেরু হবিষাজ্ঞান ক্রুনের লাজতা।
ভরতো নামতঃ সোহগ্রিছি তীয়ং শান্যুতঃ স্কুতঃ ॥ ৬॥
তিব্রুঃ কন্যা ভবন্ত্যন্যা যাসাং স ভরতঃ পতিঃ।
ভরতপ্ত স্কুতস্তম্ভ ভরত্যেকা চ পুক্রিকা॥ ৭॥
ভরতো ভরতম্থা গ্রেই পাবকস্ত প্রজাপতেঃ।
মহানতার্থমহিতস্তথা ভরতসন্তম!॥ ৮॥
ভরদ্বাজন্ম ভার্যা তু বীরা বীরম্ম পিগুদা।
প্রাহ্রাজ্যেন তন্মজ্যাং সোমস্থেব দ্বিজাঃ শনৈঃ॥ ৯॥
হবিষা যো দ্বিতীয়েন সোমেন সহ যুজ্যতে।
রথপ্রভ্রথাধানঃ কুন্তরেতাঃ স উচ্যতে॥ ১৩॥

পতি বিভিজেয়ং॥৬॥ ভবঙ্তি শংযুত ইতাত্ম কুষাতে পতি র্জ্বোষ্ঠঃ অত্ত্র-, কন্যানাং নামধেয়ানি সন্ততিশ্ভাত্ত্তাপি অত্ত্ৰৈবাস প্ৰত্যন্ত দেবতাত্বেনতা-বোধ্যাঃ বিস্তরভয়াতুমুনিনা ন প্রদর্শিতাঃ তদ্যভরতদেশর্জ সংজ্ঞদা পুরো-ভরতঃ উর্জঃ পুত্রং ভরতং সূঞ্জদাত্রমিত মন্ত্রবর্ণাৎ ॥ ৭ ॥ ভরতঃ ভরণং কুর্ব্বতঃ তেনভরত শব্দস্য নির্ব্বচনং দর্শিতং ভরতম্য প্রজাপতেঃ পাবকঃ স্থতঃ স অত্যৰ্থং মহিত্ৰাৎমহানু মহিত্ৰং মহাফল প্ৰদাত্ৰং যত্তকৰ্মণি আগ্রয়ণাদে প্রথমোগ্র নান্তি তত্রাপি অয়ং মহরাৎ কর্ত্তন্য এবেতার্থঃ পাবক ইতানি পর্যায়মাত্রং ন গুণঃ অগ্নি সংজ্ঞোনিরিতার্থঃ তথাচ ধেন যজে নেংদেং কুর্বাদের তথ্রায়ব্মস্টা কপালমিতি আপস্তমেজিঃ সং-গচ্ছতে ঈংশেৰ বিধিত মিচ্ছে ॥ ৮ ॥ শংয়োঃ কনিষ্ঠ পত্ৰ সন্ততি মুক্তা জোষ্ঠ সম্ভতি মাহ ভরম্বাজসোতি বীরানামতঃ ধীরদা বহুঃ পিওদা শরীরকর্ত্রী মাতেতার্থঃ। ভরদ্বাজাৎ বীরাহাং ধীরোজাত ইতার্থঃ। তস্য আজ্যেন ইজ্যাৎ প্রান্তঃ শনৈঃ উপাংশু শোমদ্য বেতি তংসহিত্ব মুদাতে তথামীযোমারুপাংশু • যষ্ঠবাং বজামিত্বা দেতিভাত হোরমি দোমযোর্মধ্য-স্থোগিঃ সহ ইত্যর্থঃ॥ ৯॥ এতদেবাহ হবিষেতি দ্বিতীযেন আ্যোগভারেণ অবৈষৰ নামান্তরাণি রথেত্যাদীনি ॥ ১০ ॥ সরথ প্রভাদিনামাণ্রবৃাৎ ভার্যা-

সর্যাং জনয়ন সিদ্ধি ভারুং ভাভিঃ সমার্ণোৎ।
আয়েয় মানয়য়িত্যমাহ্বানে ছেম হয়তে॥ ১১॥
যস্ত ন চাবতে নিত্যং যশসা বর্চসা শ্রিয়া।
আয়ির্নিচাবনো নাম পৃথিবীং স্তৌতি কেবলম্॥ ১২॥
বিপাপা কলু ধৈমু ক্রো বিশুদ্ধ ভারিত জার্চিষা জলন্।
বিপাপোইয়ঃ স্তস্তস্ত সতাঃ সময়ধর্মকং॥ ১৩॥
আক্রোশভান্ত ভূতানাং যঃ করোতীই নিচ্চৃতিম্।
আয়িঃ স নিচ্চৃতির্নাম শোভয়ত্যভিসেবিতঃ॥ ১৪॥
আনুকৃজিত্ত যেনেই বেদনার্ভাঃ স্বয়্ম জনাঃ।
তত্য পুল্রঃ স্থনো নাম পাবকঃ স রুজক্ষরঃ॥ ১৫॥
যস্ত বিশ্বস্ত জগতো বুদ্ধিমাক্রম্য তিষ্ঠতি।
ত প্রান্তর্বাল্যবিদো বিশ্বজিলাম পাবকম্॥ ১৬॥
আস্তরামিঃ স্থতো যস্ত ভূক্তং পচতি দেহিনাম্।
স জ্ঞে বিশ্বভুঙ্নাম সর্বলোকেষু ভারত॥ ১৭॥

য়াং সিদ্ধিনাম পুত্রং জনমৎ যঃভাল্থং স্থাং ভাভিদি প্রিভিঃ আর্নোৎ স্থা আর্তে আমেনং অমি দৈবতাং যাগং মান্যন অমিম্ম আবহেতাত্ত্ব মন্ত্রেয় যুক্তসংবৃদ্ধা এবস্থাতে স্থ কুউরতে কীর্তাতে উঙ শব্দে ইতি ধাতুঃ ॥ ১১॥ রহস্পতে দিতীয়ঃ পুত্র নিশ্চাবনঃ পৃথিবীং স্তৌতীতি পৃথিবী সাহ্দর্য মুচাতে ভেন বাগভিমানি দেবতা রূপঃ স ইতার্থ ঃভস্য বাচাস্চৌ পৃথিবী চামিশ্চেতি ভাতেঃ॥ ১২॥ নিশ্চাবন পুত্রঃ সত্য সময় ধর্মোবাচ্য বাচিক সম্বন্ধ স্তৎ কর্তা ॥ ১০॥ সত্যস্যিত্ব নামান্তরং নিস্কৃতিঃ অভি সেবিতে পৃহারামাদৌ শোভ্যতি শোভাং করোতি॥ ১৪॥ কজাকরঃ পীডাকরঃ অনোনাম সত্য পুত্রঃ ॥ ১৫॥ এবংদ্যোর্থাইস্পত্রাঃ কর্ম কর্মেন্সিয় ব্যাপিকত্বমাহ বস্থিতি॥ ১৬॥ চত্তর্থামাহ অস্ত্র-বিশ্বিত ॥ ১৭॥

ব্রহ্মচারী যতাত্বা চ সততং বিপুলব্রতঃ।
বাহ্মণাঃ পূজয়ন্ত্যেনং পাক্যজেষু পাবক্ষ্॥ ১৮॥
পবিত্রা গোমতী নাম নদী যক্তাভবং প্রিয়া।
তিম্মিন কর্মাণি সর্বাণি ক্রিয়ন্তে ধর্মাকর্তৃভিঃ॥ ১৯॥
বডবাগ্লিঃ পিবত্যন্তো যে ২সৌ পরমদ,রুনঃ।
উর্দ্ধারং পিবত্যন্তো যে ২সৌ পরমদ,রুনঃ।
উর্দ্ধারং হবির্যন্ত গৃহে নিত্য প্রদীয়তে।
ততঃ বিষ্টং ভবেদাজ্য বিষ্টারুৎ পরমং স্মৃতঃ॥ ২১॥
যঃ প্রশান্তেষু ভূতেষু মন্থ্যার্ডবিতি পাবকঃ।
কুদ্ধান্তঃ ভুরসো জজ্ঞে মন্যন্তে † চাথ পুল্রিকাং॥ ২২॥ '
স্বাহেতি দারুণা কুরা সর্বাভূতেষু তিঠতি।

এনং বিশ্বভুজং পাক্ষরজেয় শার্ত কর্ম ॥ ১৮ ॥ কর্মাণি গৃহাণি
॥ ১৯ ॥ পঞ্চমং বার্চস্পত,মাহ বডবামিরিতি সএবাধ্যাত্মং উর্দ্ধং ভাগৃদ্ধ
গতি কদান সংজঃ অতত্তবোর্দ্ধ ভাঙ্ নাম কবি র্রান্ধণং প্রাণাশিতঃ
প্রাণ বায়ভিমানী ॥ ২০ ॥ বঠং বার্চস্পতা মাহ উদগ্দার মিতি উত্তরার্দ্ধাং
সৌবিষ্ঠ কৃতমিতি ক্রান্তেঃ উদাগাগমনং গৃহেন্দ্রী সম্বন্ধে কর্মণি ততন্তেন
স্মিইং স্বফুইফাং ভবতি জাজাং আজ্যাদি দ্রব্যঞ্চ তত্তোত্তরার্দ্ধ যোগাৎ
পৃথক্তাহণং তত্তাপি স্মিইকং প্রাপণার্থং॥ ২১ ॥ সপ্তমীং কন্যামাহ য ইতি
পাবকো রহস্পতিঃ মহ্যাঃ ক্রোধরপী ভবতি তদায়োস্যা রসস্বেজঃ প্রভবঃ
প্রান্ধেনঃ জজেজাতঃ তামেক্তজ্জামেব পুত্রিকাং মন্যে মন্যন্তী চাথ পুত্রিকিত পাঠেছ সরস্বত্র পুত্রিকা মন্যন্তী দেবতোদেনেন তাক্তং হবিরভ্
জানতী ॥ ২২ ॥ কাদাবিত্যত আহ স্বাহেত্যর্দ্ধন অস্যা ব্রিগুণাত্মকা
ভালৃদীং তৎসন্ততিমাই ত্রিদিবে ইতি এতেন রাজ্স্যাঃ স্বহায়াঃ কামরপ্রা

 ^{*} তুরসোজজ্ঞেত্যত্র তরদাজজ্ঞেতি পাঁচ: ক পুস্তকে
 † মন্যন্তে চার্থ পুত্রিকমিত্যত্র। মন্যন্তীচাথ পুত্রিকা ইতি পাঁচ: ক পুস্তকে।

ত্তিদিবে যক্ত সদৃশো নাস্তি ৰূপেণ কশ্চন।
অতুল্যস্থাৎ ক্ততো দেবৈৰ্নায়া কামস্ত্ৰ পাৰকঃ ॥২৩॥
সংহৰ্ষাদ্ধারয়ন্ ক্রোধং ধন্ধী শ্রম্থীরথে স্থিতঃ।
সমরে নাশয়েচ্ছকুনমোঘো নাম পাবকঃ॥২৪॥
উক্থো নাম মহাভাগস্তিভিক্তক্থৈরভিষ্ট তঃ।
মহাবাচন্ত্রজনরৎ সমাশ্বাসং হি যং বিজুঃ॥২৫॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডের সমাক্তা পর্বাণি আক্সিরসো-পাধ্যানে একোনবিংশ লাধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ॥২১৯॥

মার্কণ্ডের উবচে। ' কাশ্যপো হুঞ্ ব্যক্তিই প্রাণশ্চ প্রাণপুত্রকঃ। অগ্নিরাঙ্গিরসকৈত চ্যবনস্ত্রিস্কুবর্চ্চকঃ॥ ১॥

সম্বতিকক্তা ॥ ২০ ॥ তামসাং সন্ততিং ক্রোগাভি চারাদ্যাত্মিকামাই সংহর্ষা দিতি জেষামো বেতাং সাহঃ সংহরঃ ॥ ২৪ ॥ সাধিক্যাঃ স্বাহায়ঃ সন্ততি মাই উক্থ ইতি উৎ উর্ধং মোক্ষপদং ন্যত্যক্থঃ তিভিক্কেথঃ উত্তিষ্ঠ তাসাং কর্মফল মিত্যক্থং তত্র শরীরা ছ্পিতং কর্মেতি শরীর মুক্থং শরীরোপাপকত্যা প্রাণউক্থং প্রাণোপাপকত্যা পরমাত্মাপ্রক্থং সজন্যোগ্নি জ্রভিরপ্যক্ষে রভিষ্ঠুত শুদাত্মনান্থিতঃ মহাবাচং মহতীং বাচং পরাধান্ত্র্য ব্রহ্মকলাং অজনয়ৎ আবিভাবিতবান্ পূর্কেষামান্যু পাসকানাং যং সমাধাসং সমাধাসিতি বিশ্রামং প্রাপ্রোতানে নেতিতং মোক্ষে হেতুং বিছ্বে দাচার্যা ইতি শেষঃ ॥ ২৫ ॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে একোন বিংশত্যধিক দ্বিশত তমে হিগ্রায়ঃ ॥ ২১৯ ॥

কাশাপ ইতি ত্রয়াণাং সম্বন্ধং অত্ত পাঠক্রমা দর্থক্রমস্য বলীয়স্থাৎ আদ্যকোঃ লোকরোব্যাত্যাদেনার্থো প্রাক্ষ অচর দিতি সপুর্বাধায়াস্তোক্ত
উক্ষো নাম কাশ্যপঃ বাসিষ্ঠঃ প্রাণ পুত্র ইতি প্রাণস্থৈব বিশেষণং আ্লি
রান্ধিরস শ্চাবনাইত্যেকঃ ॥ ১ ॥

শার্ম স তপস্থীর শুলার্থে বছবার্ধিকম।
পুল্রান লভার শর্মিষ্ঠং যশসা ব্রহ্মণা সমম্॥ ২॥
মহাব্যাক্তিভিধ্যাতঃ পঞ্চিতিস্তস্তদা ত্বথ।
জ্ঞে তেজা মহার্চিয়ান পঞ্চবর্ণঃ প্রভাবনঃ॥ ৩॥
সমিদ্ধাহি মিরস্তম্ভ বাহু স্থ্যানিভৌ তথা।
ত্বভ্নেরে চ স্বর্ণাভে ক্ষেণ্ড জ্জের চ ভারত।॥ ৪॥
পঞ্চবর্ণঃ স্থতপসা কৃত্তৈঃ পঞ্চিভিন্নঃ।
পাঞ্চলন্যঃ প্রত্যো দেবঃ পঞ্চব্যশকরস্ত সং॥ ৫॥
দশ বর্ষসহ্র্যাণি তপস্তপ্ত্যা মহাতপাঃ।
জনয়ন পাবকং হোরং পিতৃণাং স প্রজাঃ * স্কর্॥ ৬॥ '
রহ্মপন্তরং মুর্দ্ধে, বক্তু দা তরসাহরৌ।
শিব্য নাভাগি বলাদিক্রং বাযুগ্রী প্রাণ্তে।হ্স্ক্র ॥ ৭॥

২ ॥ মহাব্যাহৃতিভিঃ ভূরর মধরে পৃথিবৈয় ॥ স্থাহেত্যাদিভিঃ ভূভূবিঃ
স্থাহে। অগ্নি বায়ু স্থা চন্দ্র পৃথিব্যন্তরিক্ষ হ্যাদিগুপলক্ষিতেন সর্কাস্বাক্রের রপেণ তংখ্যাতবন্ত ইত্যর্থঃ তত্ত্বেবং বিহুষো যজ্জাত্মা যজমানঃ বীত রাগ বিষয়ংবা চিন্ত শিতি আুতিস্থৃত্যা বি হুষোপি ধ্যেয় হ
দর্শনাং জজে প্রদীপইব পুরুরপেণা বিভূতঃ অতএব অর্চিম্বানিয় রিবেতি
লুপ্তোপমা প্রভাবনঃ জগৎ সৃষ্টি কর্ত্তা॥ ৩ ॥ পঞ্চ বর্গরমেবাহ সমিদ্ধ
ইতি জ্বালাবর্গং শিরস্তান্যতার্থঃ তথাহাগিতি হুচোপি স্থ্যনিভত্ব মুক্তং ॥ ৪ ॥
তপসাক্ত ইতি তপোনামেতার্থঃ সএব পাঞ্চজনাক্ষ যোগিকমন্য নামদরং ॥ ৫ ॥ পিতৃণাং পাবকং দক্ষিণায়িং প্রজাঃ সৃজন্ প্রজাক্রমী ॥ ৩ ॥
বৃহৎ মুয়্রঃ রক্ষন্তরং বক্তাৎ বাশকক্রার্থঃ এতে অহোরার দেবতে
রাধন্তরী বৈ রার্যহর্গাইত মিতিশ্রুতেঃ অতএব তরুসা বেগেন হরতঃ
আায়ুব্যাদিরিতি তরুসা হরো শিবং অহ্লারাভিমানিনং করেং নাজ্যাং
নাজিতঃ প্রাণতঃ প্রাণং সৃষ্ট্যা বায়ুয়ী অসুজ দিতি সর্কার সম্ব্যুতে ॥ ৭ ॥

^{*} সৃজন্নিত্যত্ত সৃজদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে

বাছভ্যামনুদাত্তো চ বিশ্বে ভূতানি চৈব হ।

এতান্ স্ফ্রী ততঃ পঞ্চ পিতৃণামসজৎ স্টান্ । ৮॥
বৃহত্তথক্ত প্রনিধিঃ * কাশ্চাপক্ত মহন্তরঃ।
ভানুরক্সিরসোধীর পুলো বর্চক্ত সৌভরঃ *॥ ৯॥
প্রাণক্ত চানুদান্তস্ত ব্যাখ্যাতাঃ পঞ্চবিংশতিঃ।
দেবান্ যজ্ঞমুষশ্চান্যান্ স্ক্রৎ পঞ্চদশোন্তরান্॥ ১০॥
স্থভীমমতিভীমঞ্চ ভীমৎ ভীমবলাবলম্।
এতান্ যজ্ঞমুষঃ পঞ্চ দেবানাং স্ক্রজ্ঞপাঃ॥ ১১॥
স্থমিতং মিত্রবন্তঞ্চ মিত্রজ্ঞং মিত্রবর্জনম্।
মিত্রধর্মাণমিত্যেতান্ দেবানভাস্কত্তপাঃ॥ ১২॥
স্বরপ্রবিঃ বীরঞ্চ * স্থ্রেশঞ্চ স্ক্রপাঃ॥ ১৩॥
স্বরাণামপি হস্তারং প্রেক্তানস্ক্রপাঃ॥ ১৩॥

অহৃদাত্তী মন্তে প্রাক্তাহ্নাতঃ শতপথ বাক্ষণে চ বৈক্তোহ্নাতঃ উদাত্ত মনুদাত্ত মনন্তা মিতি ভাষিক স্থ্রেণ প্রাক্তাদাত্ত্বা বাক্ষণে হুদাত্ত্ব বিধানাং তেনাভ্যাঞ্ তদ্বামন্ত বাক্ষণ ভাগাত্মকো বেলোলক্যতে বাহুভ্যামিতি হস্ত স্বরেণ তয়োরনুদাত্তয়োঃ প্রদর্শনীয়হং স্টিতং এতাক বেলান্তরাণা মপ্যুপলক্ষণং বিশ্বে সমনক্ষেন্তিয় দেবতাঃ ভূতানিপঞ্চ এতান্ বিংশতি সংখ্যাকান্ ॥ ৮ ॥ ব্রুদ্রেখন্য বাসিইন্য প্রণিধি রংশত ইতি শেষঃ আদ্বর্ম শ্চাবন্দ্যা বর্চন্য স্থ্যক্তিমা ॥ ৯ ॥
অস্ত্র সৃষ্টিমাহ দেবানিতি উত্তরা নপাশ্চাভ্যান্ ॥ ১০ ॥ ভীমবল মবলঞ্চেতি
সমাহারঃ তপঃ তপঃ সংজ্ঞঃ পাঞ্চলনাঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ২৩ ॥ যজ্ঞ যাজিনঃ

^{*} কাশ্যপত্ম মহতর ইতাত্র কশ্যপত্ম ব্লহতর ইতি পাঠ: ক পুত্তক।

* দেনিভর ইতাত্র দেনিবত ইতি পাঠ: ক,পুত্তকতা।

য়রেশঞ্সবর্চ সমিতাত্ত স্বেশং স্ববর্চসমিতি পাঠঃ ক পুশুকশ্য।

ত্রিবিধং সংস্থিতা ছেতে পঞ্চ পঞ্চ পৃথক্ পৃথক্ ।

মুফল্যক স্থিতা হেতে স্থাতো যজ্ঞযাজিনঃ ॥ ১৪ ॥
তেষামিউৎ হরস্তোতে নিম্নন্তি চ মহন্ধবিঃ ।

স্পর্দ্ধরা হব্যবাহানাৎ নিম্নস্তোতে হরন্তি চ ॥ ১৫ ॥
বহির্বেদ্যাং তদাদাদানং কুশলৈঃ সম্প্রবর্তিতম্ ।
তদেতে নোপদর্পন্তি যত্র চাগ্রিঃ স্থিতোহভবৎ ॥ ১৬ ॥
চিতাগ্রেরুবহনাজ্যং পক্ষাভ্যাৎ তৎপ্রবর্তিতে ।*

মল্রৈঃ প্রশামতা হেতে নেইং মুফন্তি যজ্ঞিরম্ ॥ ১৭ ॥
রহতুক্থন্তপত্তাবিত্রত পুজো ভূমিমপাশ্রেতঃ ।

জাগ্রেহাত্রে হ্রমানে পৃথিব্যাং সন্তিরিজ্যতে ॥ ১৮ ॥
রথন্তরশ্চ তপসঃ পুজোহগ্নিং পরিপঠ্যতে ।
মিত্রবিন্দায় চৈতন্ত হবিরধ্র্যাবো বিজুঃ ॥ ১৯ ॥

ইন্ট মিত্যুত্তর শ্লোকাদপ র্যাতে ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ তদাদানং তেয়াং আদেয়ো—
ভাগাঃ বহির্বেদ্যাং উৎকরে দেশে তুমৈবৈকলী কর্মান্তির হবির্ছেভো
রক্ষাংস নিরভজন্তরা মহা যজাদিতিশ্রুতেঃ অস্ত্রালোহিতেন তত্ত্র্যালিতের যন্তর্গায় অন্তর্গো॥ ১৬ ॥ পক্ষতামিন চক্রাভাং উপলক্ষিভেতত্ত্ব চয়নে প্রবর্ত্তিতে হবির্দ্ধানে শকটে প্রবর্তিতে সতি চিতায়ে শ্চয়ন কর্ত্বের্কানস্য আজ্ঞাং তত্ত্পলক্ষিতং হবিঃ এতে উদ্বহন্ উদ্বহন্তি উপর্যাব
হরন্তীত্যর্থঃ মন্ত্রেরকোন্ত্রঃ প্রশমিত্যঃ সন্তঃ ইন্টং হবিঃ নমুক্ষান্তি ॥ ১৭ ॥
এবমন্ত্রাণাং নামানিভাগধেয়ং নির্ত্রাপায়ঞাক্ত্রা পানঃ পাঞ্চজন্য বংশম্ম্
সংধতে রহত্ব্যাভিত্রপান তপুসঃ ভূমিমুপাশ্রিত ইতি ত্রান্ত পৃথিব্যাভিত্রি তথ্যে তথ্যা তপুসঃ ভূমিমুপাশ্রিত ইতি ত্রান্ত পৃথিব্যাভিত্রি তথ্যার প্রান্তর শিক্তির তথ্যা তথ্যাঃ মহাবিরাট্ বৃহস্পত্য পেক্ষরাশ্রেষ্ঠঃ
তথ্যৈ তন্তাব প্রান্তরে মিত্রিদা মহাবিরাজীত্যা শ্রশান্ত্রন বচনাদিদমুহ
নীয়ং ॥ ১৯ ॥

প্রবর্ত্তিতে ইতাত্ত প্রবর্ততে ইতি পাঠঃ ক প্রাছকে ।

মুমুদে পরমপ্রীতঃ সহ পুক্তৈর্ম্মহাযশাঃ ॥ ২০॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয় সমাস্তা পর্বাণি আঙ্গিরসে বিংশত্যধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২২০॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
গুরুতির্নির মৈর্যন্তো ভরতো নাম পাবক:।
তামিঃ পুটিমতির্নাম তুটঃ পুটিং প্রযক্ত্তি।
ভরত্যেব প্রজাঃ সর্বাস্ততো ভরত উচ্যতে ॥ ১ ॥
তার্যান্দ শিবো নাম শক্তিপুজাপরশ্চ সঃ # ।
তুংখার্তানাঞ্চ সর্বোবাৎ শিবকৃৎ সতত্ব শিব:॥ ২ ॥
তপসস্ত ফল্ দৃষ্ট্য সম্প্রবৃদ্ধং তপো মহৎ।
উদ্ধর্তুকামো মতিমান্ পুজো জজ্ঞে পুরন্দর:॥ ৩ ॥

3 a H

ইত্যারণাকে পর্ব ণি নৈলক্ষ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে বিংশতাধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২২ ০॥

দিংহাবলোকন ন্যায়েন শংযোঃ পৌত্রং উর্জ্ঞপুত্রং ভরতং শ্রৌতি সার্দ্ধেন

গুরু ভিরিতি পুটিমতি রিভ্যেকং নাম ॥ ১॥ তথেব তপদস্তৃতীয়ৎ

মতং শিবং স্তোতি অগ্নির্ধান্চেতি শক্তি শ্রুক্তি স্তদ্যাঃ পূজানিনির্কিপ সমাধিরপা ॥ ২॥ তপদএব পূর্ব্বোক্ত চহারিংশতোনো
পুরন্দর উন্ধা মন্তঃ শস্তঃ আবশধা ইতি পঞ্চপুতানাহ চতুর্ভিঃ তপদ
ইতি তপদোহয়েঃ কলং এখর্যাং সংপ্রদ্ধাং দৃষ্ট্যাতং উদ্ধর্ত্বং পিত্রাং

দগরং পুত্রেব লভতে ইতি দর্শনা তদীয় মৈশ্বর্ষাং প্রাপ্তঃ পুরন্দরোদ্য
প্রেক্ষাতঃ॥ ৩॥ উন্ধাচ তপদঃ সকাশাং জন্জে য়ঃ ভূতেমু উন্থানা হেতো

^{*} স ইত্যত্ত্ব য ইতি ক পুস্তকে পাঠঃ ৷

উন্না হৈবোন্তবা জজ্ঞে সোহনিভূতির লক্ষ্যতে।
অনিশ্বাপি মনুর্নাম প্রাজ্ঞাপত্যমকাররং॥৪॥
শস্ত্মন্নিমথ প্রান্তবাক্ষণা বেদপারগাঃ।
আবস্থাঃ দিজাঃ প্রান্তবিশিল্পপ্রভান।
উক্তক্ষরান্ হব্যবাহান্ স্বর্ণসদৃশপ্রভান।
ততন্তপো হজনয়ৎ পঞ্চয়জ্ঞস্তানিহ॥৬॥
প্রশাস্তোহনির্মহাভাগঃ পরিপ্রান্তো গ্রাং পতিঃ।
অস্তরান্জনয়ন্ দ ঘোরান্ মত্যাপ্রশাস্তরা প্রথিধান্॥৭॥
তপসক্ষ মনুপ্রজং ভানুঞ্গপ্যক্ষিরাঃ স্বজং।
রহদ্যানুস্ত তপ প্রান্তবাক্ষণি বেদপারগাঃ॥৮॥
ভানোভার্যা স্প্রজা তু বৃহন্তাসা তু স্থ্যজা।
অস্তেভান্ত ষট পুজান্ শৃণু ভাসাং প্রজাবিধিম্॥৯॥

ল'কাতে অকারয়ৎ অকরোৎস্বার্থে নিচ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ উপসংহরতি উর্জ্বরা নিতি যজস্তান্ যজে অভিষ্তান্ আদিকর্মনিক্তঃ সোমভাগিন ইত্যর্থঃ মদ্বাযক্তঃ গোমঃ স্থতো যেভান্তে ইতি যোগঃ ॥ ৬ ॥ প্রশান্তে অস্তকালে পরিশ্রান্তো গবাং রহ মীনাংপতিঃ স্থাঃ অগ্নির্ভবিতি আদিত্যোবা অন্তং যন্ত্রি মন্ত্রপ্রিশতীতি শুভেঃ যক্ষ ঘোরান্ স্থরান্ জনয়ন্ ভবভিতংতপো জনযদিতি পূর্ব্বেনায়য়ঃ ॥ ৭ ॥ তপদ ইতি মন্ত্রমাত প্রাজ্ঞাপতা কর্তৃরং উচাতে ভাল্লং নামতঃ অকিরাক্ষ সৃজদিতি সম্বন্ধঃ । তপঃ পুত্রসাণি অধিরঃ সৃজ্যবোক্তি ভাল্লং প্রতিকূলাল পিতৃবদন্ধিরসোন্যথা দিদ্ধতুং মাভূদিতি তেন মূল কারণ মেবান্তাং কার্যান্ত ইব তত্ত্বেবেণ ক্ষুব্রতীতি দিন্ধং অতএব আকাশ, দ্বানুরিত্যাদৌ আকাশভাবমাপন্ন আত্মবর্বায়্ মসুজনকবল আকাশইতি ব্যাখ্যাতং সংপ্রদায় বিদ্ধিঃ ॥ ৮ ॥ এবং বৃহদ্যান্ ভাষস্তান্ তপনঃ পুত্রান্ উক্বাতং পৌত্রানাই ভানোরিতি॥ ১ ॥

জনয়িয়তায় অসৃজদিতি পাঠঃ ক পুস্তবে।

তুর্বলানান্ত ভূতানামস্থন যা সংপ্রযাক্তি।
তমগ্লিম বলদং প্রান্থান্ত প্রথমং ভারতঃ স্থতম্ ॥ ২০।
যা প্রশান্তের ভূতের মন্ত্রার্ডবতি দারুলঃ।
তগ্লিঃ স মন্যুমানাম দিতীয়ো ভারতঃ স্থতঃ।। ১১।।
দর্শে চ পৌর্ণমানেম দিতীয়ো ভারতঃ স্থতঃ।। ১১।।
বিষ্ণুর্নামেহ যোহগ্লিস্ত প্রতিমানাম সোহঙ্গিরাঃ॥ ১২॥
ইল্রেণ সহিতং যক্ত হবিরাগ্রয়ণং স্মৃত্যু।
তগ্রিরাগ্রয়ণো নাম ভানোরেবাস্বয়স্ত সং॥ ১০॥
চাতুর্ম্বাক্তের নিত্যানাং হবিষাম যোনিরগ্রহঃ।
চতুর্জিঃ সহিতঃ পুরুত্রভানোরেবাস্বয় স্তভঃ॥ ১৪॥
নিশা অজনয়ৎ কন্যামগ্রীষোমারুভৌ তথা।
মনোরেবাভবদ্বাগ্যা স্বয়ুবে পঞ্চ পাবকানু॥ ১৫॥

॥১০॥ বলদো মহ্যমান্ বিশ্বরিতিত্রয়ঃ স্থঞ্জায়াঃ স্বতাঃ॥ ১১॥ তত্ত্বতিপাংশুষাগদেবতা বিশ্বক ভয়ত্ত্বস্থামাণ ত্রেলাদশামাবস্থায়া মাত্ত্যোহ্রতে
চতুদশি পৌর্ণমাস্থামিতি লিদদর্শন মন্যথয়তি দর্শোপি বিঞ্চোঃ শ্বরণেন
চতুদশাত্তি যোগাৎ অতএবান্তরেণ হবিষী বিশ্ব নূপাং কৈত্রেয়িণ
ইত্যাশ্বলায়নঃ সম্প্রমাণ মুভয়ত্তোপাংশু যাজ মবগময়তি॥১২॥ ভাহ্
ভার্যায়া য়হন্তাসায়াঃ সন্ততিঃ আগ্রয়ণহৈশ্বনায়াবয়বোল্লিরেকঃ॥১৩॥
হবিষাং আয়েয়াদীনামস্টানাং যোনি কন্তবন্থানং বৈশ্ব দেবে পর্বাণ
মুখ্যো বিশ্বদেব সংজ্ঞােমি দ্বিতীয়ঃ স্ততঃ স্তয়তে ভাতীতি স্তভ
স্তৢতীয়ঃ॥১৪॥ নিশানামী ভাষপর নামো মনোরপর। তৃতীয়া ভার্যাভবৎ কন্যাং বক্ষামাণাং রোহিণীং অয়িং সোমং অন্যান্ পঞ্চেত্যক্টাবপভ্যানি স্বয়্বে॥১৫॥ শেষান্ পঞ্চক্ষমে পাহ পূজ্যভ ইত্যাদিনা চাত্ম প্রি
নামারস্তাৎ পূর্ভ্যে বৈশ্বানর পার্জনেটিঃ ক্রিয়তে ভত্তবিশ্বানরঃ প্রথমাে

পূজ্যতে হবিষাগ্রোণ চাতুর্মাস্যেমু পাবকঃ।
পর্জন্যসহিতঃ শ্রীমানগ্লিকৈশানরস্ত সং॥ ১৬॥
অস্য লোকসা সর্বস্যা যং প্রভুঃ পরিপঠ্যতে।
সোহগুর্কিশ্বপতির্নাম দ্বিতীয়ো বৈ মনোঃ স্থতঃ॥ ৭॥
ততঃ দ্বিতঃ ভবেদাজ্য দ্বিতীয়া বৈ মনোঃ স্থতঃ॥ ৭॥
কন্যা সা রোহিণী নাম হিরণকেশিপোঃ স্থতা॥ ১৮॥
কর্মণাসৌ বভৌ ভার্যা স বহিঃ স প্রজাপতিঃ।
প্রাণানাশ্রিত্য যো দেহ প্রবর্ত্তরতি দেহিনাম্।
তস্য সন্নিহিতো নাম শন্দরপদ্য সাধনঃ॥ ১৯॥
শুক্রক্ষণতির্দ্বো যো বিভর্তি ছতাশনম্।
অকল্ম্যঃ কল্ম্যাণাং কর্তা ক্রোধাশ্রিত্তপ্ত সঃ॥ ২০॥
কপিলং পরমর্ষিঞ্চ বং প্রান্থ্যতয়ঃ সদা।
ভাগ্নিঃ স কপিলো নাম সাস্থ্যযোগ প্রবর্ত্তকঃ॥ ২১॥

মন্পুত্তঃ ॥ ১৬॥ পরিপচাতে ২ এং যেনেতিশেবঃ সবিশ্বপতিদিতীয় ।
॥ ১৭॥ স্ফিক্টদেব কন্যা রোহিনী পঞ্চভাহিধিকা ॥ ১৮॥ তন্তাশ্চ কিঞি দ্যোবজং ভার্যান্থং বস্তু তস্তু সবিহ্নঃ প্রজাপতিমন্ত্র সংক্রৈব কর্মনা মৈথু নতঃ প্রজাজননাথোন নিমিত্তেন তথাচ প্রুভিঃ সইম্মেবাত্মানং দ্বেধাপাত্রতঃ পতিশ্চ পত্নী চাভবতামিতি সন্নিহিতো নাম তৃতীয়ঃ শন্দর-পত্ত শব্দরপ্রহণতা সাধনঃ প্রবর্তকঃ ॥ ১৯॥ চতুর্থমাহদাতাং শুক্রেতি বন্দাং উপান্তাকর্মনা আরাধিতাং ক্রমেন শুক্র ক্ষে গতী অচিরাদি ধুমাদি মার্গো অপুনরার্ভি প্রবর্গি ফলো প্রাপেটতে সশুক্র ক্ষ গতিঃ অকল্ময় শুক্রণাৎ কল্মানাং কাম্যকর্মনাং ॥ ২০॥ অতএব কপিলঃ সাংখ্যং নিরীশ্বর শাস্ত্রং তক্রপোষোণ শুক্ত প্রবর্তকঃ ॥ ২১॥ পঞ্চম মাহ অর্থমিতি বৈশ্বদেবান্তে মন্ত্র্য যক্ত্রিং যৎপ্রয়ন্তিভি

অঞং গচ্ছন্তি ভূতানাং যেন ভূতানি নিত্যদা। কর্মান্ত্র বিচিত্রেষ্ সোহগ্রণীর্মান্ত্রক্রচাতে॥ ২২॥ ইমানন্যানস্জত পাৰকান প্ৰথিতান্ ভুবি। অগ্নিহোত্ৰস্য তুষ্টস্য প্ৰায়শ্চিত্তাৰ্থ মুল্বণান্ ॥ ২৩ ॥ मः म्पृरमयूर्यनात्नानाः कथिकायूनाययः। ইফিরফাকপালেন কার্য্যা বৈ শুচয়েগ্নয়ে ॥ ২৪ ॥ দক্ষিণাগ্লির্যদা দ্বাভ্যাং সৎস্কেত তদা কিল। ইফিরফাকপালেন কার্যা বৈ বীতয়েহগ্নয়ে ॥২৫॥ यमाश्रदश हि न्नार्यार्निटवमन्द्रा मवाश्रिना। ইন্টিরফীকপালেন কার্যা তু শুচয়েহগ্নয়ে॥ ২৬॥ অগ্নিং রজস্বলা বৈ স্ত্রী সংস্পূ শেদগ্রিছোত্রিকম। ইফিরফীকপালেন কার্যা দস্ক্যমতেহগ্নয়ে ॥ ২৭ ॥ মৃতঃ শ্রুষেত যো জীবঃ প্রেযুঃ পশ্বো যদা। ইটিরফাকপালেন কার্য্যা স্থরমতেহগ্নয়ে ॥ ২৮ ॥ আর্তো ন জ্ছয়াদ্যিং ত্রিরাত্রং যস্ত ত্রাহ্মণঃ। ইটিরফাকপালেন কার্য্যা স্যাতুত্তরাগ্নয়ে। ২৯॥ দর্শঞ্চ পৌর্ণমাসঞ্চ যদ্য তিষ্ঠেৎ প্রতিষ্ঠিতম। ইন্টিরন্টাকপালেন কার্য্যা পথিক্লতেহগ্নয়ে॥ ৩০॥ স্থৃতিকায়ির্যদা চাগ্নিৎ সৎস্পু শেদগ্নিহোত্রিকমু। ইটিরফাকপালেন কার্যা৷ চায়িমতেইয়য়ে ॥ ৩১ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয়সমাস্যাপর্বাণি আঙ্গিরসে একবিংশত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২২১ ॥ তদগ্রং ॥ ২২ ॥ ইমানন্যানিত্যাদিনা প্রোক্তা অফার্যমোমনোরের সন্ততিঃ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাপদীপে গুক্বিংশত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২২১ ॥

মার্কতের উবাচ।

আপিস্য মুদিতা ভার্যা সহস্য পরমপ্রিরা।
ভূপতিভূবভর্তা চ জনয়ৎ পাবকং পরম্॥ ১॥
ভূতানাঞ্চাপি সর্বেরা বং প্রান্তঃ পাবকং পতিম্।
আল্লা ভূবনভর্তেতি সাম্বয়েষু দ্বিজাতিষু॥ ২॥
মহতাক্ষৈব ভূতানাং সর্বেরামিহ যঃ পতিঃ।
ভগবান স মহাতেজা নিতাং চরতি পাবকঃ॥ ৩॥
অগ্নির্গ্রিপতির্নাম নিতাং যজেষু পূজ্যতে।
ভতং বহতি যো হব্যমস্য লোকস্য পাবকঃ॥ ৪॥

কথম্মির নং যাত ইতি পৃষ্টং অগ্নে জল প্রবেশ প্রকারং বক্তুমার-ভতে অপেত্রেতি অপ্রপ্ত অপ্রু বিদিত্ত সহস্ত সহসংজ্ঞাগ্রে মুদি-ভানাম পরমা প্রিয়া ভার্যা। ছহিতেতি পাঠেপি সংজ্ঞা শব্দ এবায়ং ভূপতি ভূবভুৰ্তাচ সহসংজ্ঞ এব ভূভূব লে কিয়োঃ স্বামী নতু স্বলে কিন্ত অনায়তি স্থানত ত্রিধৈবার্ত্ত লোকবিভাগোভিপ্রেভঃ তেন বন্ধলোকা দবাচীনতা ক্রুত্রতা স্বামীত্যর্থঃ সংপরং অদ্ভতাখ্যৎ পাবকং অজনরৎ সহসপুত্রৌ অন্তত ইতি মন্ত্রবর্ণাৎ সহশব্দোত্র অকারান্তোপি বেদে সকারান্তোজ্যেঃ ॥ ১ ॥ অদ্ভুত মেব স্তৌতি ভূতানামিতি চহুর্ভিঃ যং পাৰকং পতিং অভিপ্ৰেত্য ভূবনভৰ্তা ভূতানাং চতুৰ্বিধানা মাত্মেতি প্রান্তঃ সাধ্যেষু উপদেশ পরং পরাবৎস্থ ॥ ২ ॥ ন কেবলং জরাযুজাদীনা মাত্রা অপিতু মহতাং ভূতানাং বিয়দাদীনাং পতিঃ অষ্ট্ৰাদিনা অতএব ভগবান্ এশ্বগ্ৰ সম্প্ৰাপ্ত জ্বান্ত যাশন: শ্ৰিয় বৈরাগ্যন্ত ধর্মপ্র ষরাৎ ভগ ইতীন্ধনেতি স্মৃত্যুক্ত গুণবান্॥ ৩॥ পতি: অধিষক্তং ত্রেঁতাগ্রি অধ্যাত্মং জাঠর: উভাবপি উভরত্ত স্থিবা-পিও ব্রশাওস্থান্ দেবান্ত্রেন হবিষাচ তপাঁয়ত ইতি হ্ব্যবাহো॥ ৪॥ অপামিতি অপ্ সম্বন্ধা দাপাপরনামা সহ এবাত অপ্ শাদার্থ: তক্তর্গর্ভা:

অপাশ গর্ডো মহাভাগ: # সত্ম ভুগ্যো মহান্তুতঃ।
ভূপভিভূবভর্তা চ মহতঃ পতিরুচ্যতে ॥ ৫॥
দহন্মৃতানি ভূতানি ভস্যাগ্রির্জরতোহভবং।
অগ্রিষ্টোমে চ নিয়তঃ ক্রেবুশ্রেষ্ঠো ভর্ম্য তু॥ ৬॥

পুত্র: সত্ব ভুক্ অধ্যাত্মং বুদ্ধি সংহতা অধিভূতং লোকত্রয় সংহত্য-মহাংশ্চামৌ অন্ত: মহত ইতি নামৈক দেশে ন তলৈ ব প্রহণং ভামা সভাভামেতি বং মহতঃ মহাদ্ভত পতিঃ পিতা ভূপতি ভূবভঙা চেত্যৰ্থ: অত্ৰমত্চ্ছব্দেন অধ্যাত্ত মহত্তবং স্কাব্দ্ধাখ্যং প্ৰাহ্যং সহশব্দেন कांत्रण भवाकाथार व्यर्गरक्म मिलन (धरक। अकोरेष्ठरा ७वर्जी जामि ক্তিতো সনিলে নোপমিতং শুদ্ধং ব্ৰহ্ম আহ্যং॥৫॥অগ্ৰ সহস্ত অপাৎ প্রবেশে কারণ মাহ দহ নিতি অধিভূতং ভরতশিচতানিঃ সহস্য পৌত্রঃ অদ্তত পুত্র: অধ্যাত্মং মহতঃ পুত্রোহংকারঃ ভরতি বিভর্তীতি মৃতানি অচেতনানি খাদীনি দেহাকারাণি ধার্যতীতি ভরতোনাম ওপ্রৈব ভূওসং ছার ছানহং দছরিতি দর্শিতং ভরস্থ ভরতম্থ তকার কোপ আর্থঃ ক্রডুঃ নাম অধ্যাত্মং ক্রতুঃ সংকম্পাত্মকং মনঃ অমিটোম শব্দেন তলৈবেং বিহুষো যজ্ঞাতা যজমান: আদা পত্নী শবীর মিধাুমুরো বেদিলে মানি ৰহিরিত্যাদিনা তৈতিরীয়কে সমাহাতে। দেহ তৎ সম্বন্ধি ক্রিয়াকলাপা-ষ্মকো মরণরপা বভূথান্তঃ সংসার উচ্চতে নিয়তঃ নিত্যঃ ॥ ৬॥ मह छेहार ध्रथम हे डि वित्मयगोष (मिरेन: स्रोत विकिरेश महाविदार ड ভোগার্থিভি: পরেছিম্বর্গ: করণাড়োতি সংসার ক্রতুফল মনিবার্গং দুষ্ট্রা সংখাপি শুদ্ধ বন্ধ। বিবেশেডু:ভরাধ থিঃ কারণাত্মতা প্রাপ্তস্যাপি তৎসম্বন্ধানপায়াৎ অন্যথা হুপ্তি মুক্তানে মুচোতা যত্নতোজন ইত্যাপ-(मा**ड शकास्टर** मनाधिर (शोखर निज्ञजांशा मात्रांसर मुख्ना न्थमं छत्रार चंत्रराशाहर इस्टेरेजि नक्कता रुर्गतर विदिश ज्ञांशाकि मर्काजकार আপ্রোমি রাত্মানং বহুধা কুরামি ছোত্রাদির শ্লাশানাদির্চন্থিত ইত্যুপা-

^{*} সহ ভূগ বে। মহাদ্ৰুত ইত্যৰ সহপুৰে। মহাদ্ৰুত ইতি পাঠঃকপ্ততকে।

স বহিঃ প্রথমো নিত্যং দেবৈর্থিষাতে প্রভুঃ!
আরান্তং নিয়তং দৃষ্ট্বা প্রবিবেশার্লবং ভয়াৎ॥ १॥
দেবান্তরাধিগছন্তি মার্গমাণা যথাদিশন্।
দৃষ্ট্বা অ্লিরথর্কাণ্শ ততো বচনমত্রবীৎ॥ ৮॥
দেবানাশ বহ হব্যশ অ মহং বীর স্বত্নকলঃ।
তাথ অং গছ্ছ মধক্ষং প্রিয়মেতৎ কুরুম্ব মে॥ ৯॥
প্রেষ্য চাগ্লিরথর্কাণমন্যং দেশং ততোহগমৎ।
মৎস্যান্তস্য সমাচ্থাঃ ক্রুম্বভানগ্লিরত্রবীৎ।
ভক্ষ্যা বৈ বিবিধৈভাবৈ ভবিষ্যথ শরীরণাম্॥ ১০॥
অথর্কাণ্শ তথা চাপি হব্যবাহোহত্রবীঘ্রচঃ॥ ১১॥
অনুনীয়মানোহপি ভূশশ দেববাক্যান্ধিতেন সং। ॥
বৈন্তুদ্বেত্শ হবিঃশ সোতৃং শরীরঞ্গপি সোহত্যক্রং॥ ১২॥

শারতে ॥ १॥ দেবাইতি অথকাণং অদিরসং তীব্রতপদংদ্দী। ॥ ৮॥
মধকং পিদাকং অনিং ভাবপ্রধানোনিদেশঃ দ্বোকরোদ্বিচনৈক বচনে
ইতিবং জন্যথা দেকে দিতিসাং দিকৈবরো রিতি ব্যাখ্যানাহপ
পাত্তক তেনৈক স্তুমেবানিছে গচ্ছেতার্থঃ তথাচ নিকিপামার মনিছং
দমনিঃ প্রথমো ভবেতুাপক্রমন্তোপদংহারেণ সহৈকবাক্যতা ভবতি
॥ ৯॥ প্রেষ্য আদিশ্য সার্ধঃ শ্লোকঃ ॥ ১০॥ তথাচাপি তথেব মংস্যা
রাখ্যাতোপি বচঃ ছং মধকো ভবেতি পূর্কোক্ত মেব॥ ১১॥ শরীরং
আন্নেয়ং দেহং পক্ষেমায়া ডাক্তা নি বিকিপ্পো ভূদিতার্থঃ ॥ ১২॥ দেহ
তাব্য প্রকারমাহ সইতি তৎ স্কুলং শরীরং সংতক্ষ্য ধরাৎ ধারণাং ধরালয় স্থানং লিক্ত শরীরং প্রবিশ্য ত্রাপি সংকশ্যোপনতান্ ভূমাাদী
নস্ক্ত ভূমীং স্পৃত্বা উপাধে আবেশং কৃত্বা অন্ত ধাতন্ নীল পীতাকী-

^{*} দেববাক্যাদ্ধিতেন স ইত্যত্ত দেববাক্যাদ্বিচেতন ইতি পাঠঃকপুদ্ভকে।

†শোঢ় মিত্যত্ত সর্বামিতি পাঠঃকপুস্তকে।

সতচ্ছরীরং স্তাজ্য প্রবিবেশ ধরান্তদা।
ভূমিং স্পৃষ্ঠাস্ডজাতৃন্ পৃথক পৃথগতীব হি ॥ ১৩ ॥
পূরাৎ স গল্প তেজশ্চ অন্তিভ্যোকদেবদার চ।
শ্লেমণং ক্ষাটিকস্তম্য পিজান্মারকতং তথা ॥ ১৪ ॥
যক্ষ ক্ষায়স্থ তম্য ত্রিভিরেব বভুং প্রজা।
নথান্তম্যার্ত্র পটলং শিরাজালানি বিদ্রুমম্ম ॥ ১৫ ॥
শরীরাদ্বিধাশ্চান্যে ধাতবোহ্স্যাভবন্নপ!।
এবং ত্যক্ত্রা শরীরঞ্গ পরমে তপসি স্থিতঃ ॥ ১৬ ॥
ভূপজিরাদিভিভূরিস্তপ্রেমাথাপিতস্তদা।
শা ভূশং জন্মাল তেজস্বী তপসাপ্যায়িতঃ শিখী ॥ ১৭ ॥
ভূপজিরাদিভিভূরিস্তপ্রেমাথাপিতস্তদা।
ভূমাং জন্মাল তেজস্বী তপসাপ্যায়িতঃ শিখী ॥ ১৭ ॥
ভূমাং ক্রাল তেজস্বী ত্রমধর্ষাণ্মথা প্রিতম্ ।
ভূমাং ক্রাল ক্রেমানাল স্রামাণ্য স্কার্বম্য ।
স্বিত্রং স্ক্রিভ্রানা মুন্নমাণ্য মহার্বম্য ॥ ১৯ ॥
সিষ্তাং স্ক্রভ্রানা মুন্নমাণ্য মহার্বম্য ॥ ১৯ ॥

তানিব বাসনা ময়নি নাড়ীরপাণি দৃশ্যন্তে যোগমার্গে তথাচ আছতিঃ
তিন্দ্রন্ত নীলমান্তঃ পিন্দলং হরিতং লোহিতঞ্চ এবপদ্যাব্ররূণা হাত্ত্ বিত্ততেনৈতি ব্রন্ধবিং পুণাকৃত্তৈজসন্দেতি তৈজনো লিন্দ্রহাভিমানী পক্ষান্তরেতু ধাতুন্ মনঃ শীলাদীন্॥১৩॥১৪॥ যক্তং শরীরান্তর্বতা অব য়ব বিশেষঃ তিভিঃ কাষ্ঠ পাষাণ লোহেঃ॥১৫॥ অন্যে স্বর্গ পারদাদ্রয়ঃ শরীরং লিন্ধং পরমে নিশ্বপাণো তপান আলোচনাম্বকে ধ্যানে॥১৬॥ তপদা দামর্থেনে উথাপিতঃ দমাধেশ্চরিতঃ॥১৭॥ শ্ববিং অথবা দিরদং ভারং পুর্ব্বোক্ত মেব সাধ্রেন্নকঃ॥১৮॥ অথবাভিতি অর্থ অর্থ মুন্মাথ-তেন পাবক মালোক্য লোকানসূজ দিতি ক্রমেণারয়েজেয়ঃ পুর্ব্বোক্তরাদ্রা

^{*} অথাবিব মিতাত অপাবিত মিতি পাঠ:কপুস্তকে।

অবম্য্রির্জগবতা নফঃ পূর্ব্বমথর্বা।।
আক্তঃ সর্ব্বভূতানাং হব্য বহুতি সর্ব্বদা॥২০॥
এবং ত্বজনয়দ্বিষ্ণান্ বেদোক্তান্ বিবিধান্ বহুন্।
বিচরন্ বিবিধান দেশান্ ভ্রমমাণস্ত তত্র বৈ॥২১॥
সিন্ধুং নদং পঞ্চনদং দেবিকাথ সরস্বতী।
গঙ্গা চ শতকুস্তা চ সরযুর্গগুসাহ্বয়।॥২২॥
চর্মাণুতী মহী চৈব মেধ্যা মেধাতিথিস্তথা।
তাদ্রবিত্তী নদ্যস্তিক্রোহ্থ কৌশিকী॥২৩॥
তমসা নর্ম্মদা চৈব নদী গোদাবরী তথা।
বেণোপবেণা ভীমা চ বড়বা চৈব ভারত।॥২৪॥
ভারতী স্থপ্রেয়া চ কাবেরী মূর্ম্মুরা তথা।
তুক্সবেণা ক্ষেবেণা কপিলা শোণ এব চ॥২৫॥
এতা নদ্যস্ত ধিষ্ণানাং মাতরো যা, প্রকীর্ত্তিতাঃ।
অন্তুত্তস্য প্রিয়া ভার্য্যা ত্য্য পুজ্যে বিভূর্মিঃ।
যাবস্তঃ পাবকাঃ প্রোক্তাঃ সোমাস্তাবন্ত এব তু॥২৭॥
যাবস্তঃ পাবকাঃ প্রোক্তাঃ সোমাস্তাবন্ত এব তু॥২৭॥

॥২০॥ এবজ্বিত অগ্নের্মিরা স্ততো রহস্পতি স্ততঃ শংযাদি জেমেন বেদোকান্ ধিফ্যান্ নানাস্থানানি অজনয়ৎ অধ্যাত্ম পক্ষেত্র সমাধেঃ দকাশাল্লবিতাহং কারং প্রকৃত্য রক্তিনদীয়ু চিদাত্মা সঞ্চর-তীতি॥২১॥ পক্ষান্তরে স্পষ্ট এবার্থঃ সিন্ধুমিতি॥২২॥২০॥২৪॥২৫॥২৬॥ অন্তবেশ্বতি বিভূরদিরিতি অন্তব্রহ্ণকরনং তেনবিভূরদি প্রবাহন ইতাহ্বাকোকা অনেটে ধিফ্যা অগ্নরো দর্শিত স্তেষাং জ্যোকো বিভূরিত,র্থঃ যাবন্তপাবকা ধিফ্যাঃমন্তি তাবতঃ:সামাঃ সোম্যাগাঃ এতচ্চ ক্ষিত্রেক্সেব প্রদিদ্ধ ॥২৭॥ তানেব অগ্নীনেব আত্মনি চিত্তে অধাররং অনিংধ্যায়তোগ্নিরেব প্রজারূপেণাবিবভূবে তার্থঃ এবঞ্চ শ্বান্তরা দাস্থাপলক্ষণ তথাচ সর্বাং কর্মাণ্ণি বিদ্বতাং সর্বে

অত্তেশ্চাপান্তরে জাতা ব্রহ্মণো মানসাঃ প্রকাং।
তাত্তিঃ পূজান প্রায় কামাং স্তানেবাদ্মনাধারয়ৎ॥ ২৮।
তাত্ত তদু দ্ধাণ কায়ান্নিইরন্তি ছতাশনাঃ।
এবমেতে মহাদ্মানং কীর্ত্তিতিহেইয়য়ো ময়া॥ ২৯॥
অপ্রমেয়া যথোৎপন্নাঃ শ্রীমন্ত ন্তিমিরাপহাঃ।
অভুতক্ত তু মাহাদ্মাং যথা বেদেয়ু কীর্ত্তিম্॥ ৩০॥
তাদৃশং বিদ্ধি সর্কেষামেকো হোষ ছতাশনঃ।
এক এবৈষ ভগবান বিজ্ঞেয়ঃ প্রথমোইক্সিরাঃ॥ ৩১॥
বছধা নিঃস্তঃ কায়া জ্জ্যোতিষ্টোমং ক্রতুর্যথা।
ইত্যের বংশং স্কমহা নয়ীনাং কীর্ত্তিতো ময়া।
যোহচ্চিতো বিবিধৈশ্বক্তৈ হ্ব্যং বহুতি দেহিনাম্॥ ৩২॥
হত্যারণ্যকে পর্কাণি মার্কপ্রেয়সমান্তাপর্কাণ আক্সিরসে
ভাবিংশত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২২২॥

মার্কতেয় উবাচ।

অগ্নীনাং বিবিধা বংশাঃ কীর্ত্তিতাত্তে ময়ানঘ!। শুণু জন্ম তুকৌরব্য কার্ত্তিকেয়স্য ধীমতঃ॥১॥

বাশাণা অগ্নি সন্ততি রিত্যক্তং ভবতি॥ ২৮॥ তম্ম অত্তেঃ ব্রহ্মণঃ বাদ্ধপশ্ম কারাদ্দেহাৎ ত্তাশনাঃ নির্হান্তি নিশ্চরন্তি সার্ধঃ॥ ২৯॥ ৩০॥ ৩১॥
কারাৎ কম্ম প্রজাপতেঃ প্রত্যোদিরা কারন্তমাৎ কশনাদণ্ প্রত্যারে কস্মেদিতি ইকারোন্তাদেশঃ ণিরাদাদি রুদ্ধিঃ যুগাজ্যোতিষ্ট্রোমো যুগা উন্তিদাদিরপেণ বত্তধানির্গত শুরুৎ॥ ৩২॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারতভাবদীপে দাবিংশত্যধিক দ্বিশত ১মে ২ধ্যায়ঃ ॥ ২২২॥

ক্রম প্রাপ্তং কুমারশ্চ যথোৎপরো যথাচাগ্রেঃ হতে। ভবদিতাস্যোও-রমাহ অমীন ং বিবিধা বংশা ইত্যাদিনা। ১॥ অন্তুত্স্যারেঃ অন্তুতং অদুত্রসাদুতং পুত্রং প্রকলাম্যমিতৌজসং। 🚜 জাতং ব্ৰহ্মধিভাৰ্য্যাভিব্ৰ'ক্ষণ্যং কীৰ্ত্তিবৰ্দ্ধনম্ ॥ ২ ॥ দেব সুরাঃ পুরা যন্তা বিনিম্নন্তঃ পরম্পার্য। তত্ৰাজয়নু সদা দেবানু দানবা ঘোরৰপিণঃ॥ ৩॥ वधामान वल पृष्ठी वद्यमरेखः शूतन्ततः। স্বলৈন্যনায়কার্থায় চিন্তামাপ ভূশং তদা॥ ৪। (प्रतिनाद पानरेवर्या * ७४।२ पृथ्वे। प्रश्वावतः। পালয়েদ্বীর্যামাশ্রিত্য দ জেয়ঃ পুরুষো ময়া॥ १॥ म रेमलः মाনगः গত্বा धाराञ्चर्याप्रसः कृमम्। শুশাবার্ত্তম্বর্ণ হোর মথ মুক্তং স্থিয়া তদা ॥ ৬॥ অভিধাবতু মাং কশ্চিৎ পুরুষস্তাতু চৈব হ। পতিঞ্মে প্রদিশতু স্থাং বা পতিরস্তু মে॥१॥ পুরন্দরস্তু তামাহ মা ভৈর্নান্তি ভয়ং তব। এবমুক্ত্য ততোহ পশ্যৎ কেশিনং স্থিতমগ্রতঃ॥৮॥ কিরীটিন^ গদাপাণিং ধাতুমন্তমিবাচলম্ । रु शृहीद्वा कन्याः ত। मरेथन वामरवाश्ववी ॥ a ॥ অনাৰ্য্যকৰ্মনু কন্মান্ত্ৰ মিমাং কন্যাং জিহীৰ্ষাস। বজ্ঞিণ মাণ বিজানীহি বিরমাস্যাঃ প্রবাধনাৎ ॥ ১০॥ কেন্ড্যব15

বিস্তজন্ম ভ্রুমেবৈনাং শক্তিষা প্রার্থিত। ময়া।
ক্ষমন্তে জীবতো গন্তং প্রপুরং পাকশাসন !॥ >>॥
স্বাভিন্বং ॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ব্রিয়া দেবদেনাভিমানি দেবভয়া॥ ৬

11 2 11 20 11

^{*} অমিতোজসমিতাত্ত্ব অমিতোজস ইতিপাঠাক পুস্তকে

* যইত্যাত্ত্ৰ হাতি পাঠ খ পুস্তকে

এবসুক্ত্বা গদাপ কেশী চিক্ষেপেক্সবধায় বৈ।
তামাপতন্তীং চিচ্ছেদ মধ্যে বক্সেণ বাসবং॥ ১২॥
অথাসা শৈলশিথবং কেশী কুদ্ধো ব্যবাস্থজং।
তদাপতন্তং সপপ্রেক্ষ্য শৈলশৃঙ্গং শতক্রতুঃ॥ ১৩॥
বিভেদ রাজন্ বক্সেণ ভূবি তলিপপাত হ।
পততা তু তদা কেশী তেন শৃঙ্গেণ তাড়িতঃ॥ ১৪॥
হিত্বা কন্যাং মহাভাগাং প্রাদ্রবদ্ধুপণীড়িতঃ।
অপ্যাতেহস্করে তিস্যংস্তাং কন্যাং বাসবোহ্রবীং।
কাসি কম্মাসি কিঞ্ছেহ কুরুষে ত্বপ্রভাননে॥ ১৫॥
ইত্যারণ্যকে প্রবিণি মার্কণ্ডেয়সমান্তাপ্রবিণি ক্ষন্দোংপজীে
কয়েবিংশত্যধিকদ্বিশত্তমোহ্ধ্যায়॥ ২২৩॥

करनारिवाह ।

আহং প্রজাপতেঃ কন্যা দেবসেনেতি বিশ্রুতা।
ভিগিনী মে দৈত্যসেনা সা পূর্বাৎ কেশিনা হৃতা॥ ১॥
সদৈবাবাৎ ভগিন্যো তু সখাভিঃ সহ মানসম্।
আগচ্ছাবেহ রত্যর্থমনুজ্ঞাপ্য প্রজাপতিম্ ॥ ২॥

11 25 11 20 11 28 11 20 11

ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে অয়োবিংশত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৩ ॥

অহমিতিতি॥১॥२॥७॥৪॥

* তদাইত্যত্ত তমিতিপাঠঃক গুস্তকে

নিত্যঞ্চাবাং প্রার্থয়তে হর্তুং কেশী মহাস্থরঃ।
ইচ্ছত্যেনং দৈত্যসেনা ন চাহং পাকশাসন । ॥ ৩॥
সা ক্লতানেন ভগবন্ ! মুক্তাহং স্বদ্ধলেন তু ।
স্বায়া দেবেন্দ্র নির্দিষ্টম্পতিনিচ্ছানিত্রজ্যম্॥ ৪॥
ইল্র উবাচ।

মম মাতৃস্বসেয়ী ত্বং মাতা দাক্ষায়ণী মম। আখ্যাতৃন্তু হমিচ্ছামি স্বয়মাত্মবলৎ ত্বয়া॥ ৫॥

करनार्वाठ।

অবলাহং মহাবাহো। পতিস্ত বলবাম্ম। বরদানাৎ পিতুর্জাবী স্কুর।স্কুরনমস্কৃতঃ॥৬॥

इस डेगा।

কীদৃশস্ত বলৎ দেবি পতুস্তেব ভবিষ্যতি। এতদিচ্ছাম্যহৎ শ্রোতুং তব বাক্যমনিন্দিতে!॥৭॥

ক্ৰোগৰাচ

দেবদানব্যক্ষাণাং কিন্নরোরগরক্ষসাম্।
জেতা যো ছুফ্টদেত্যানা মহাবীর্য্যো মহাবলঃ ॥ ৮॥
যস্ত ভূতানি সক্ষাণি ত্বয়া সহ বিজেষ্যতি।
স হি মে ভবিতা ভর্তা ব্রহ্মণ্যঃ কীর্ত্তিবর্দ্ধনঃ ॥ ৯॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ইন্দুস্তস্থা বচঃ শ্রুত্বা তুঃখিতোহচিন্তর্ভূশন্। অস্থা দেবাণঃ পতিনান্তি যাদৃশং সম্পূভাষতে॥ ১০॥ অথাপশ্যৎ স উদয়ে ভাক্ষরং ভাক্ষরত্যুতিঃ। সোমধ্যের মহাভাগৎ বিশ্মানৎ দিবাকরম্॥ ১১॥

10181010191151121201221

অমাবাস্থাৎ প্রবৃত্তায়াৎ মুহুর্ত্তে রৌদ্র এব তু। দেবাস্থরঞ্জ সশ্প্রামং সেইপশাতুদয়ে গিরৌ ॥ ১২ ॥ লোহিতৈশ্চ ঘনৈর্যাক্তাং পূর্বাং সন্ধ্যাং শতক্রত্বঃ। অপশ্যলোহিতোদঞ্ভগবান্ বরুণালয়ম্॥ ১৩॥ ভৃগুভিশ্চাঞ্চিরে।ভিশ্চ ছতং মক্রৈঃ পৃথিধিথৈঃ। হব্যং গৃহীত্বা বহ্নিঞ্চ প্রবিশন্ত^ দিবাকরম্॥ ১৪॥ পর্বে চৈব চতুর্বিংশং তদা স্থ্যামুপস্থিত্য। তথাধর্ম্মনতং রৌদ্রং সোমং স্থ্যাগতঞ্চ তম্ ॥ ১৫ । সমালোকৈকেত:মেবং শশিনো ভাষ্করম্ভ চ। সমবারস্ত ত^ দৃষ্ট্যা রৌদ্রং শক্রেইন্নচিত্তরং ॥ ১৬ ॥ স্র্বাচন্দ্রমসোর্ঘের দুশাতে পরিবেশনম্। এতি স্মিরেব রাত্রান্তে মহদ্যুদ্ধন্ত শংস্তি॥ ১৭॥ সরিৎ সিম্বরপীয়ন্ত প্রতাহথাহিনী ভূশন্। শুগালিন্যপ্যগ্নিবক্তা প্রত্যাদিত্য বিরাধিনী ॥ ১৮॥ এষ রৌদ্রুশ্চ সংঘাতো মহান্ যুক্তশ্চ তেজসা। সোমক্ত বহিষ্ঠ্যাভ্যামদ্ভোহয়ং সমাগমঃ॥ ১৯॥ জনয়েৎ যং স্কৃতং সে।মঃ সোহস্থা দেব্যাঃ পতির্ভবেৎ। আগ্নিটেভগু নৈযুক্তঃ সংক্রৈরগ্নিশ্চ দেবতা ॥ ২০॥ এষ চেজ্জনয়েদার্বং সোহস্থা দেব্যা: পতির্ভবেৎ। এবং সঞ্চিন্ত্য ভগবান ব্রহ্মলোক তদা গতঃ॥ ২১॥ গুহীত্বা দেবদেনান্তামবন্দৎ স পিতামহম্। উবাচ চাস্থা দেবাস্তিং সাধুশূরৎ পতিৎ দিশ। ২২॥

1 2 2 1 2 2 1 28 11 26 1

बदकां वर्ष মবৈত * চিন্তিতং কাৰ্য্যৎ স্বয়া দানবস্থান।। ত্থা স ভবিতা গরোঁ বলবানুর বিক্রমঃ॥২৩॥ স ভবিষ্যতি সেনানীস্থা সহ শতক্ৰো!। অফা দেবাঃ পতিশৈচৰ স ভবিষ্যতি বীৰ্যাবান্॥ ২৪॥ এ टक्ट्या नमस्टेया क्यांटमी मह कनाया। তত্রা ভ্যাক্তদে বৈন্দো যত্র দেবর্ষয়ে। ২ভবন্ । ২৫॥ বশিষ্ঠ প্রমুখা মুখ্যা বিপ্রেন্দ্র স্থমহাবল: । ভাগার্থং তপ্রো ধাতুং তেষা ১ সোমং তথাধ্বে ॥ ২৬॥ পিপাদবো যনুৰ্দেৱাঃ শতক্রপুরোগমাঃ। ইটিং কুত্রা যথান্যায়ৎ স্কুসমিজে হুতাশনে॥ ২৭॥ জুছবুত্তে মহাত্মানো হব্য় সঞ্চলিবৌকসাম। সমাহ্রতো হুতবহঃ সোদ্দুতঃ সূর্যামগুলাৎ ॥ ২৮ ॥ বিনিস্ত্য যথৌ বহ্নিগিয়েতো বিধিবং প্রভুঃ। আগম্যাহ্বনীয়ং বৈ তৈছি জৈৰ্মন্ত্ৰতো ছত্ৰ্। ২৯॥ স তত্র বিবিধং হব্যং প্রতিগৃহ ছাতা শনঃ। ঋষিভ্যো ভরতশ্রেষ্ঠ ! প্রাযক্ষত দিবৌকসাম্॥ ৩০॥ निक्षाप्रश्नाभाग्य म भद्रीत्ख्याः महाज्ञनाम्। ব্বেদ্বাদনেন্পবিক্টাঃ স্থপন্তীক্ষ য্থাস্থ্য ॥ ৩১॥ রুকাুবেদিনিভাস্তাস্ত চন্দ্রলেখা ইবামলাঃ। হুতাশনাচি'ঃ প্রতিমাঃ স্কান্তারা ইবাদুতাঃ ॥ ৩২ ॥ স্তক্ষতেন মনসা * বভূব ক্ষ্ভিতেন্দ্রিরঃ। পত্নীদৃষ্টি । ছিজেন্দ্রাণাৎ বহিঃ কামবশৎ যথৌ॥ ৩০॥ 11 20 11 28 11 28 11 29 11 29 11 29 11 20 11 20 11 20 11 20 11

 ^{*} মরেতার বথা ই ত পাঠা তরং।
 * তদ্পতেনেত্র তরতেনেতি পাঠাখঘ পুত্তকে।

ভূষঃ স চিন্তরামাস ন ন্যায্যং ক্ষ্ভিতো ছাহম্।
শাধ্যঃ পজ্যো দ্বিজেক্স নামকামাঃ কাম্যামাহম্॥ ৩৪ দ নৈতাঃ শক্যা ময়া দ্বফুং প্রাক্তুং বাপ্যনিমিন্ততঃ।
গাইপত্যং সমাবিশ্য তস্মাৎ পশ্যামাভীক্ষাঃ॥ ৩৫॥

মাৰ্কতেয় উনাত।

সৎস্পৃশন্নিব সর্বাস্তাঃ শিখাভিঃ কাঞ্চনপ্রভাঃ। পশ্যমানশ্চ মুমুদে গাৰ্ছপতাং সমাজিতঃ॥ ৩৬॥ নিরুষ্য তত্র স্থাচির মেব॰ বহ্নির্বাশং গতঃ। মনস্তাস্থ বিনিক্ষিপ্য কাম্যানে। বরাঙ্গনাঃ॥ ৩৭ ॥ কামসন্তপ্তহ্বদয়ো দেহত্যাগবিনিশ্চিতঃ। অলাভে ব্ৰাহ্মণস্ত্ৰীণাৰ্মাশ্বৰনমুপাগমৎ॥ ৩৮॥ ' স্বাহা তং দক্ষত্নহিতা প্রথমণ কামযন্তদা। সা তম্ম চ্ছিদ্রমনৈচ্ছচিরাৎ প্রভৃতি ভাবিনী॥ ৩৯॥ অপ্রমন্তব্য দেবস্থা ন চাপশ্যদনি ন্দিতা। সা তং জ্ঞাত্বা যথাবত্ত বহিং বনমুপাগতম্॥ ৪০॥ তত্ত্বতঃ কামসন্তপ্তং চিত্তয়ামাস ভাবিনী। অহং সপ্তৰ্যিপত্নীনাৎ কৃত্ৰা ৰূপাণি পাবকম্ ॥ ৪১ ॥ কাময়িষ্যামি কামার্জা তাসাং ৰূপেণ মোহিত্য। এবস্কৃতে প্রীতিরস্থা কামাবাপ্তিশ্চ মেভবেৎ॥ ৪২॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডের সমাস্তা পর্বাণ ক্লেন্পেডো চতুর্বিবিংশত্যধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২২৪॥

॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩৭॥ ৩৮॥ ৩১॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বলি নৈলকঙীয়ে ভারত ভার দি,পে চতুর্ব্বিং শত্যধিক দ্বিশত তমে(২ধ্যায়॥ ২২৪॥ মাৰ্কণ্ডের উরাচ।
শিবালুভার্য্যা স্বক্সিরসঃ শীলৰপগুণাবিতা।
তস্যাঃ সা প্রথমং ৰূপং কুল্বা দেবী। জনাধিপ।।। ১॥
জগাম পাবকাভ্যাসৎ তঞ্চোবাচ বরাক্সনা।
মামগ্রে কামসন্তপ্তাং স্বং কামরিতুমইসি॥২॥
করিব্যসিন চেদেবৎ মৃতাৎ মামুপধারর।
অহমক্সিরসো ভার্য্যা শিবা নাম হুতাশন।
শিক্তাভিঃ প্রতিতা প্রাপ্তা মন্ত্রান্ত্র্যা বিনিশ্চরস্য। ৩॥

অগ্রিক্রাচ

কথ^ মাং ত্ব^ বিজানীৰে কামান্ত্মিতরাঃ কথন্। যাসুয়া কীন্তি তাঃ সংবাঃ সগুৰীণা^ প্রিয়াঃ স্তিরঃ ॥ ৪ ॥ শিবোবন

অস্মাকং স্বং প্রিয়ো নিতাং বিভীমস্ত বরং তব। স্বিচ্চত্রনিঙ্গিতৈজ্ঞারা প্রেষিতাস্মি তবান্তিকম্ ॥ ৫॥ মৈথুনাযেহ সপ্রাস্তা কামং প্রাস্ত্রুং ক্রতং চর। * যাময়ো মাণ প্রতীক্ষতে গমিয়ামি ছতাশন!॥ ৬॥

মার্কণ্ডেয় উনাত

ততে। ২ গ্লিক্ল থেনে তাং শিবাং প্রতিমুদাযুতঃ।
প্রীত্যা দেবী সমাযুক্তা শুক্রং জ্ঞাই পাণিনা ॥ ৭ ॥
ব্যাচন্তর্মনমেদং যে ৰূপে দ্রক্ষান্তি কাননে।
তে ব্রাহ্মণীনামন্তং দোষ বক্ষ্যন্তি পাবকে ॥ ৮ ॥
তক্ষ্যাদেত দ্রক্ষ্যাণা গরুডী সং ভ্রাম্যন্য।
বনান্নির্গমনধ্রৈ মুখং মম ভ্রিষ্যতি ॥ ৯ ॥

नि(ति जि∥े । । २॥०॥ १॥ **८॥०॥ १॥ ४॥ ३॥**

^{*} যাম্য ইতাত যাতর ইতি পাঠঃ কপুস্তকে

মাৰ্কণ্ডেয় উবাত

সুপর্নী সা তদা ভূত্বা নির্জ্জগাম মহাবনাৎ। অপশ্যৎ পর্বাতং শেত শরস্ত হৈঃ স্কুসংবৃত্র ॥ ২০॥ দ্ষিবিষঃ সপ্তশার্ষিগুপ্তি ভাগিভিরদ্ধতৈঃ। রক্ষোভিশ্চ পিশাকৈশ্চ রৌদ্রৈভু তগণৈস্তথা। ১১॥ রাক্ষদীভিশ্ব সমপূর্ণমনেকৈশ্ব মুগ্রিজঃ। সা তত্র সহসাঃগত্বা শৈলপৃষ্ঠং স্তুর্গমম্। ১২ । প্রাক্ষিপৎ কাঞ্চনে কুণ্ডে শুক্রং সা স্বরিতা শুভা। 🌞 শিক্টানামপি সা দেৱী সপ্তর্ধীণাং মহাত্মনাম ॥ ১৩॥ পত্ৰীসৰপক কুতা কাময়ামাদ পাবক মৃ। দিব্যং ৰূপমৰুদ্ধত্যাঃ কৰ্ত্তু ন শ্কিতং ত্য়া॥ ১৪॥ ত্য্যান্তপঃ প্রভাবেন ভতু শুক্রষণেনচ। ষট্কুত্বতা নিক্পিথমগ্নেতঃ কুৰ্ত্তম । ॥১৫॥ তিথান্ কুণ্ডে প্রতিপদি কামিন্যা স্বাহয়া তদা। তৎ ক্ষনং তেরুকা তত্র সম্বূত্র জনরং স্কুত্র ॥ ১৬ ॥ ঋষিভিঃ পূজিতং কল্লনন্তং কলতাং ততঃ। ষ্টুশিরা দ্বিগুণ্শোতো দাদশাকিভুজক্রনঃ। ১৭॥ একগ্রীবৈকজঠরঃ কুমারঃ সমপদ্যত। দ্বিতীয়াযামভিব্যক্তস্তীয়ারাং শিশুর্কভৌ।১৮॥ অঙ্গপ্রত্যুক্ষর তশ্চ বুর্থ্যামভবদা হ। লোহিতারেৣণ মহতা সংর্তঃ সহ বিছ্যুতা॥ ১৯॥ লোহিতাত্ত্রে স্থমহতি ভাতি স্থ্য ইবোদিতঃ। গৃহীতন্ত ধনুস্তেন বিপুল্প লোমহর্ণম্॥ ২ • 💵 11 20 11 25 11 25 11 20 11 28 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11

^{*} শিকীনামিত অসপ্তানামিতি পাঠঃ খগুন্তকে।

নাস্ত> যত্তিপুরত্বেন সুরারিবিনিক্সন্তনম। **क्रका ही जा अन्नरव्यक्तर नमक वनवार छना ॥ २**२॥ সন্মেরিরেমান স্তীলেঁকান সচর চরান্। তক্স ত্রিনদ< প্রত্যা মহামেঘৌঘনিস্বনাম্॥ ২২ ॥ উৎপেতভুর্মাহানাগৌ ,চিত্রদৈচরাবতক্ষ হ। তাবাপতভৌ সংপ্রেক্য স বালোহর্কসমন্ত্রতিং । ২৩॥ দ্বাভ্যাৎ গুহীত্বা পাণিভ্যাৎ শক্তিঞ্চান্যেন পাণিনা। অপরেশ্রনিদায়াদস্তাত্ত্রভং ভূজেন সং॥ ২৪॥ মহাকায়সুপশ্লিষ্টং কুকুটং বলিনাম্বর্। গুহীত্বা বানদন্তীম চক্রিডি চ মহাভুজঃ। ইং॥ দ্বাভ্যাং ভুজাভ্যাং বলবংন্ গৃহীত্বা শ**ন্থামুত্তম**ন্। প্রাধ্যাপয়ত ভূত নাং তাসনং বলিনামপি॥২৬॥ দ্বাভ্যাং ভুজ,ভ্যামাকাশৎ বছশোহভিজ্বান হ। জীড়ন্ ভাতি মহাসেনস্তীলোকান্ বদনৈঃ পিবন্॥ ২৭ ॥ পর্বভাত্তোহ প্রমেয়ালা রশ্যিমনুদয়ে যথা। স তম্ম পর্বতেস্যাত্রে নিষণ্ণোহড়ুত্বিক্রমঃ॥ ২৮॥ व्यक्ताकस्रमरमस्याचा मूटेथनानाविदेशिक्षः। স পশ্যন বিবিধান ভাবাংশ্চকার নিনদ্প পুনঃ ॥ ২৯॥ তমা ত্রিনদং প্রত্বা নাপতন্ বছধা জনাঃ। ভীতাশ্চোদিগ্নমনস্ত্রমেব শরণং যয়॥ ৩০॥ যে তু তং সংশ্ৰিতা দেবং নানাবৰ্।স্তদা জনাঃ। তানস্তান্তঃ পারিষদান ত্রান্সাণান স্থমহাবলান্॥ ৩১॥ স তুথায় মহাবাঁছ রূপসাত্ম চ তান জনান্। ধনু বিক্লয় ব্যক্তজ্বাণান শ্বেতে মহাগিরৌ ॥ ৩২ ॥ ॥ २५ ॥ २२ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २८ ॥ २७ ॥ २१ ॥ २४ ॥ २७ ॥ ७० ॥ ७५ ॥ ७२ ॥

বিভেদ স শরৈঃ শৈল জাঞ্চ হিমবতঃ সুতম। তেন হ৲সাশ্চ গুধাশ্চ মেব্ৰুং গচ্ছন্তি পৰ্ববিতম ॥ ৩৩॥ স বিশীর্ণোইপতকৈলো ভূশমার্ভস্রান্বন্! তিমিরিপতিতে বুনো নেচুঃ শৈলা ভূশং ভদা। ৩৪॥ স তং নাদ্ধ ভূশার্ত্তনাও প্রভব্বাপি বলিনায়রঃ। ন প্রাব্যথদমেয়াত্রা শক্তিমুদ্যম্য চানদ্র ॥ ৩৫॥ সা তদা বিমলা শক্তিঃ ক্ষিপ্তা তেন মহাত্মনা। বিভেদ শিখরং ঘোরং শ্বেতফা তরসা গিরেঃ॥ ৩৬॥ স তেনাভিহতো দীর্ণো গিরিঃ খেতোহচলৈ: সহ। উৎপণাত মহীৎ ত্যক্তা ভীতঃ স স্থমহাল্লনঃ ॥ ৩ ।॥ ততঃ প্রব্যথিতা ভূমিকাদীর্যতে সমন্ততঃ। আৰ্ত্তা স্কন্দৎ সমাসাদ্য পুনৰ্ববলবতী বভৌ । ৩৮ । পর্বতাশ্চ নমস্কৃত্য তমেব পৃথিবীক্ষতাঃ। অথৈনমভন্নলোকঃ ফক্ং শুক্লুম্ম পঞ্চীম ॥ ৩৯॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয়সমাস্যাপর্বাণি কল্পেণে তৌ পঞ্বিংশত্যধিকদ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২২৫॥

মাৰ্কণ্ডের উবাচ।
তিমান্ জাতে মহাসত্ত্বে মহাসেনে * মহাবলে।
সমুপ্তস্থাহোৎপাতা ঘোরৰূপাঃ পৃথিবিবাঃ। ১॥
। ৩৩॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩৭॥ ৩৮॥ ৩৯

ইত্যারণাকে পর্ব্ধণি নৈলকণ্ঠায়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চবিংশতাধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২২৫॥

তন্মিল্লিতি ॥১॥ বিপরীতং বৈরং দ্বন্ধানি অতিশীতাতুকোদীনি

^{*} মহাদেনইত্যত্ত মহাত্মনীতি পাঠঃকপুস্তকন্ত ।

স্ত্রীপুংসোর্বিপরীতঞ্চ তথা ছন্দ্রানি যানি চ। গ্রহা দীপ্তা দিশঃ থঞ্জ ররাস চ মহী ভূশমু॥ ২॥ श्रावसम्ह महारचातान् मृरक्षे । অকুৰ্বান্ শান্তিমুদ্ধিয়া লোকানা লোকভাবনাঃ ৫ ৩ ॥ নিবসন্তি বনে যে তু তিমাৎ কৈত্রেরথে জনাঃ। তেহক্রবন্ধে নেইনর্থ: পাবকেনাহিতো বৃহান্॥ ৪॥ সঙ্গম্য ষড্ভিঃ পত্নীভিঃ সপ্তৰীণামিতি স্ম হ! অপরে গরুডীমাছস্তয়ানর্থোঽয়মাহ্নতঃ॥৫॥ যৈদ ফা সা তদা দেবী তম্মা ৰূপেণ গচ্ছতী। ন ত তৎ স্বাহয়া কর্মা কুতৎ জানাতি বৈ জনঃ॥ ৬॥ স্থপণা ত বচঃ শ্রুত্বা মমায়ৎ তনয়স্থিতি। উপগ্ৰম্য শনৈঃ কন্দ মাহাহং জননী তব ॥ ৭॥ অথ সপ্তর্ধরঃ শ্রুত্বা জাতং পুত্রং মহৌজসম। তত্যজ্বঃ ষট তদা পত্নী র্বিনা দেবীমরুক্ষতীয় ॥ ৮॥ যড়ভিরেব তদা জাত মাছস্তদ্ববাসিনঃ। সপ্তর্থীনাহ চ স্থাহা মম পুজোহয়মিত্যত। ॥ ৯॥ অহং জানে নৈতদেব মিতি রাজনু পুনঃ পুনঃ। বিশ্বামিত্রস্ত কুত্বেটি সপ্তর্বীণা মহামুনি: ॥ ১০ ॥ পাৰকং কামসন্তপ্ত মদুক্ত: পৃষ্ঠতোহৰগাৎ। তত্তেন নিখিল পর্যবিদ্যালয় যথাতথ্য ॥ ১১॥ বিশ্বামিত্রস্ত প্রথমং কুমারং শরণ গতঃ। रहवः मिवाः मः श्रव्यक्ति महारमनस्य वालि मः॥ ১२॥ মঞ্চলানি চ সর্বাণি কৌমারাণি ত্রয়োদশ। জাতকর্মাদিকান্তস্য ক্রিয়াশ্চক্রে মহামুনিঃ ॥ ১৩ ॥ २॥७॥४॥৫॥७॥१॥४॥२॥३०॥३১॥३२॥ जाउकसंकितः বিবাহাৎ প্রাচীনান্ত্রোদশ ক্রিয়াঃ ॥ ১৩॥

ষড়, জুন্য তু মাহান্তাং কুকুট্না তু সাধন্য।
শক্তা দেবাং সাধনগ তথা পারিষদামপি॥ ১৪॥
বিশামিত্রশক্তারৈতং কর্ম লোকহিতায় বৈ।
তক্মাদ্বিং কুমার্ম্য বিশ্বামিত্রোহ্ভবং প্রিরং॥ ১৫॥
অর্জানাচ্চ সাহায়া রূপানাত্রং মহামুনিং।
অর্বীচ্চ মুনীন্ মর্কা রাপরাধ্যন্তি বৈ স্তিরং॥ ১৬॥
শক্তা তু তত্তক স্তন্মা তে পালীঃ সর্বভাহত্যজন্।
মার্কণ্ডের উল্লেখ্য

স্থানিক জাত্বা তদা দেবা বাসবং সহিতাক্রবন্। ১৭ ।

অবিষয়বলন স্থান্য জহি শক্রাশ্র মা চিরম।

যদি বা ন নিহংস্যোনং দেবেন্দ্রেইইই ভবিষাতি। ১৮ ।

বৈলোকান সন্নিগছান্দ্রাং স্থান্য শক্র মহাবলঃ।

স তানুবাচ ব্যথিতো বালোহর স্থান্তাবলঃ। ১৯ ।

অফাবমপি লোকানাং যুধি বিক্রম্য নাশরেং।

ন বালমুৎসহে হস্তু নিতি শক্রঃ প্রভাষতে। ২০ ।

তহকেবন্ নান্তি তে বীর্যাং যত এবং প্রভাষমে।

স্ব্যান্ত দাতিগছন্ত স্থান্য লোকস্থ মাতরঃ। ২১ ॥

কামবীর্যা সম্ভ দৈনং তথেত্যক্রা চ তা যয়ুং।

তমপ্রতিবলং দৃক্রা বিষয়বদনান্ত তাঃ। ২২ ॥

তাশক্যোহরং বিচিন্তাবং ত্মেব শরণং যয়ুঃ

উদ্বেশ্বনংস্ক্রম্মাকং পুল্রো ভব মহাবল।। ২০ ॥

পত্নী স্তাক্তবন্ত ইতার্থঃ ॥১৭ ॥১৮॥১৯॥२०॥ ২১॥২২॥২৩॥

॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ জাত্বা তু জাত্বাপি সর্ব্যতঃ লোকাপবাদ ভয়াক্রামবং

^{*} তহত ইতাত্র তহ্ব ইতি পাঠঃকপুস্তকে।

^{*} উচু শ্বৈন্যিভাত্র উচুশ্চাপীতি পাঠঃকপুস্তকে।

অভিনন্দস্থ নং সর্বাং প্রস্নু তাং সেহবিক্লবাং।
তাসান্তদ্বচনং প্রুত্বা পাতুকাসং স্থনান্ প্রস্তুং॥ ২৪॥
তাং সম্পূজ্য মহাসেনঃ কাসাংশ্চাসাৎ প্রদায় সং।
অপশ্রদায়ান্তং পিতরং বলিনাং বলী॥ ২৫॥
য তু সংপূজিতন্তেন সহ সাত্গণেন হ।
পরিবার্য্য মহাসেনং রক্ষমাণঃ স্থিতঃ শিবং॥ ২৬॥
সর্বাসাং যা তু মাতৃগাৎ নারী ক্রোধসমুদ্রবা।
ধাত্রী স্বপুত্রবং কন্দং শ্লহস্তাভ্যরক্ষত ॥ ২৭॥
লোহিতন্তোদ্ধেঃ কন্যা ক্রুরা লোহিতভোজনা।
পরিষ্ক্র্য মহাসেনং পুত্রবং পর্যারক্ষত ॥ ২৮॥
অগ্নিভূত্বা নৈগমের শ্চাগবক্ত্বো বছপ্রজঃ।
রম্যামাস শৈলস্থ বাল্ছ ক্রীড়নকৈরিব॥ ২৯॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাশি মার্কপ্রেয়সমান্তাপর্বাণি ক্রন্দোৎপত্তী
বড় বিংশভ্যধিক দ্বিশতত্বেমাহধ্যায়ঃ॥ ২২৬॥

ম;ৰ্কণ্ডেয় উবাই।

গ্রহাঃ সোপগ্রহাশৈচব ঋষয়ো মাতরস্তথা।
ছতাশননুখাশৈচব দীপ্তাঃ * পরিষদাংগণাঃ॥ ১॥
এতে চান্যে চ বহুবো ঘোরাস্ত্রিদিববাসিনঃ।
পরিবার্য্য মহাসেনং স্থিতা মাতৃগণৈঃ সহ॥ ২॥

॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারতভাগদীপে বড়বিংশত্যাধিক দ্বিশতত্তোধাহধ্যায়ঃ ॥ ২২৬ ॥

গ্রহাইতি উপগ্রহারাত্ প্রভুতরঃ॥১॥২॥

* দীপ্রাপরিষদা মিতাত দৃত্তাঃপারিষদা মিতি পাঠঃখপুততে !

मन्द्रिकः विकास पृष्ट्री विकास व्याहर स्टरायदः । আরু হৈর বাবতং ক্ষন্ত প্রথয়ে দৈবতৈঃ সহ।। ৩।। আদায় বজ্রং বলবানু সর্বৈর্দেবগণৈর্ব্যুতঃ। বিজিঘাণ স্থ শ্বহাসেনমিক্রস্পতর্ণ যথৌ॥ ৪ ॥ উগ্রং তচ্চ মহানাদ্দ দেবানীকং মহাপ্রভম। বিচিত্রধল্মনাহ্ণ নানাবাহনকার্ম্বম্ ॥ ৫॥ প্রবরাম্বনম্বীত শ্রেরা জুইনলঙ্কুতম্। বিজিঘাংস্থং তমারান্তং কুমারং শক্রমন্বরাৎ॥ ৬॥ বিনদন্ পার্থ! দেবেশো দ্রুতং যাতি মহাবলঃ। সংহর্ষানু দেবসেনাং জিঘাংস্কঃ পাবকাল্পজমু॥ ৭ ॥ ্সম্পুদ্রসানস্ত্রিদশৈস্তথৈব পরমর্ষিভিঃ। সমীপমথ সংপ্রাপ্তঃ কার্তিকেরম্ম বাসবং॥৮॥ দি~হনাদ~ ততশ্চক্রে দেবেশঃ সহিতঃ স্থারঃ। গুহোহিপি শব্দং তং প্রচন্ত্র ব্যনদং সাগরো যথা ॥ ১ । তন্ত শব্দেন মহতা সমুদ্ধ তোদধিপ্ৰভম্। বভাম তত্ত তত্ত্বৈব দেবসৈন্যমচেতনম্॥ ১০॥ জিঘা শুরুপসম্প্রাপ্তান্ দেবান্ দৃষ্ট্র। স পাবকিঃ। বিসসজ মুখাৎ কুদ্ধঃ প্রবৃদ্ধাঃ পাবকার্চিষঃ ॥ >> ॥ # অদহদ্বেব সৈন্যানী বেপমানানি ভূতলে। তে প্রদীপ্তশিরোদেহাঃ প্রদীপ্তাযুধবাহনাঃ॥ ১২॥ প্রচ্যতাঃ সহসা ভান্তি ব্যস্তাস্তারাগণা ইব। . দহামানাঃ প্রণন্নাস্তে শ্রণ্ং পাবকাত্মজম্ ॥ ১৩॥ 1018141010101010101010101010101010101

^{*} অদহদেবসৈন্যানী ত্যত্ত তাদেব সৈন্যান্যদেহং শেচফামানানি ভূতলে ইতি ক পুস্তকে পাচঃ।

দেবা বজ্রবরং ত্যক্ত্রা ততঃশান্তিমুপাগতাঃ।
তাক্তো দেবৈস্ততঃ স্থান্দে বজ্ঞ শক্রো ন্যপাত্রং॥ ১৪॥
তিরি স্টেং জ্বানাশু পার্শ্বং স্কুনন্ত দক্ষিন্ম।
বিভেদ্চ মহারাজ। পার্শ্বং ক্তন্ত মহাল্লনঃ॥ ১৫॥
বজ্ঞ প্রহারাৎ স্কুনন্ত সঞ্জাতঃ পুরুষোহপরঃ।
যুবা কাঞ্চনসন্নাহঃ শক্তিপ্থগ্রিব্যকুগুলঃ॥ ১৬॥
যন্ত্রেবিশনাক্ষাতো বিশাথস্তেন সোহভবং।
সঞ্জাত্রমপরং দৃষ্ট্রা কালানলসমত্যতিম্॥ ১৭॥
ভয়াদিক্রস্তত্ স্কুন্দে প্রাঞ্জলিঃ শরণং গতঃ।
তন্তাভয়ং দদৌ কুন্দঃ সহসৈন্যন্ত সন্তমঃ।
ততঃ প্রস্কুনিস্তিদশা বাদিত্রাগ্রভ্রাদয়ন্॥ ১৮॥
ইত্যারণ্যকে পর্বানি মার্কপ্রেরসমন্ত্রাপ্রবিণ স্কুন্দশক্রন্দাগ্রেম সপ্রবিংশত্যধিক্ষিশত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ২২৭

মার্কণ্ডেয় উবাচ

স্থানিবদান্ ঘোরান্ শৃণুষাদ্ভদর্শনান্।
বজ্ঞহারৎ স্কল্স্য জজ্ঞস্ত কুমারকাঃ॥ ১॥
যে হরন্তি শিশুন্ জাতান্ গর্ত্তস্থাং শৈচব দারুণাঃ।
বজ্ঞপ্রহারাৎ কন্যাশ্চ জজ্জিরেহ্স্য মহাবলাঃ॥ ২॥
॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ বজ্ঞ্সা বিশনাং বাহো রাখননাচ্ছ বিশাধ ইত্যর্থঃ
॥ ১৭॥ ১৮॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারতবাবদীপে সপ্তরিংশাধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২২৭॥

क्रमिडि॥ ১॥ २

কুমারান্তে বিশাখগ পিতৃত্বে সমক প্রান্। স ভুত্রা ভগবান্ সংখ্যে রক্ষংস্ছাগমুখন্তদা ॥ ৩ ॥ ब्रुक्ट कन्माभरेगः भरेक्तिबाचीरेबः मञ् शुळरेकः। মাতণাল প্রেক্ষতীনাঞ্চ ভক্রশার্থক কৌশলঃ॥ ৪॥ ততঃ কুমারপিতর∿ ক্ষন্ম ছ'জনা ভূবি। क्क्यभिभूयाः अ चारः अप्तामम् महायलग् ॥ ७॥ যজন্তি পুত্রকামাশ্চ পুত্রিণশ্চ সদা জনাঃ। 🛱 যাস্ত্রসমূহ কন্যাস্তপো নাম হতাশনঃ॥ ৬॥ কিং করোমাতি তাঃ কন্দ^ স্প্রাপ্তাঃ সমভাষরন। কুমার্য্য উচুঃ। ভবেম সর্বলোকস্য মাতরো বয়মুভ্যাই॥ ৭॥ প্রসাদান্তব পুজ্যাশ্চ প্রিয়মেতৎ কুরুম্ব নং। সোহ * বাদীখাতনিত্যেব ভবিষাধ্ব পুণপিধা। ৮। অশিবাশ্চ শিব। टेम्চव शूनः शूनकृपादवीः। ততঃ मक्षण्या श्रुलाच्च कन्नः माङ्गाताञ्चावः॥ २॥ काकी ह इनिया टेंडर यानिनी दूर्वहना उथा। আর্য্যা পলালা বৈমিত্র। সপ্তৈতাঃ শিশুমাতরঃ॥ ২০॥ **७**जामां वार्यामस्याः निश्वनीयाजिनाकुनः। স্কন্দপ্রসাদজঃ পুজে: লোহিতাকো ভরকরঃ॥ ১১॥ এষ বীরাফকঃ প্রোক্তঃ স্কন্দশাততুগণোদ্ভবঃ। ছাগবক্তেণ দহিতো নবকঃ পরিকীর্ত্ত্যতে॥ ১২॥ ষষ্ঠংছাগনয়ং বক্ত্ৰ ~ কন্দলৈয়বেতি বিদ্ধি তৎ।

11 0 1 8 1 4 1 5 1 1 9 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5 1 1 5

ষ্টশিরহভান্তরং রাজনিতাং মাতৃগণার্চ তম্॥ ১৩॥

 ^{*} কন্ত্রমন্ত্রি নুখামিতি পাচঃক্বপুস্তকে।
 * বাস্তা ইতাত্র এতা ইতি পাচঃকপুস্তকে।
 * অবাদীদিত্যত্র অএবাদি তিপাচঃঘপুস্তকে।

যপ্তান্ত প্রবাং তানা শীর্ষাণ, নিহ শক্ষাতে।
শক্তিং বেনাস্থানিক শক্ষাতে।
শক্তিং বেনাস্থানিক দিকাং ভক্তশাখ ইতিহা হা। ১৪।
ইত্যেতদিবিধাকারং রুত্ত শুক্লসা পঞ্জীন্।
তত্ত্ব বুদ্ধং মহাযোৱং রুত্ত^ ষঠ্যা^ জনাবিপ! ১৯॥
ইত্যাবিণাকে পর্কানি মার্কণ্ডেনসমাসাপ্তানি স্কেন্দ্রাপ্তানে
ভাইবিং শতাবিক্তিশিত গ্রোহ্যাত্ত্র ৪২২৮॥

を行べの5 章 (b) (

ভিগবিকীর তং কলং হিরণাদবর্তস্থান্থ ।
হরণাচূড়মুকুট শহরণাকং মহাপ্রভন্ম ।
কোহিতামর মন্নীতং ভারদশ কা শ মনোরমন্।
মর্কালকাশ শপূর্ণ তৈলোকা স্যাপি স্থপ্রিয়ন্ ॥ ২ ॥
ততস্তং বরদং শুরং রুবান শ্রুকু গুলন্।
অভজহ প্ররূপা প্রাং স্বর্ধান শরীরিণী । ৩ ॥
প্রিয়া জুন্টঃ পৃথু মশাং স্কুকু মারবরস্তদা।
নিষপ্নো দুশ্যতে ভূতৈঃ পৌর্ণমান্তাশ শশী যথা॥ ৪ ॥
অপুজয়লহালানো ব্রাক্ষণান্তং মহাবলন্।
ইদমাজস্তদা হৈব কালং ভ্রু মহর্বাঃ ॥ ৫ ॥
শ্বর উচুঃ।
হিরণাগর্ম হলেশ তে লোকানাং শঙ্করো ভব।
ব্রা বড়াত্রজাতেন সর্কালোকা বশীক্ষ্তাঃ ॥ ৬ ॥
॥ ১৪ ॥ ২৫ ॥ ইতারিণাকে পর্কাশ নৈলক্ষীরে ভারত ভাবদীপো
অন্তানিংশাংশক দ্বিশতত্বেহিধান্যঃ ॥ ২২৮ ॥

উপ্ৰিষ্টমিতি ॥১॥২॥৩॥৪৫৫॥ হির্ণাগর্ভে তি সম্বোধনেন ক্ষন্স্য স্ত্রাত্ম মূর্বিতাং দশ্রতি॥৩॥ অভয়ঞ্চ পুনর্দন্তং স্বটয়বৈষাং স্পরোক্তম!।
তত্মাদিন্দো ভবানস্ত তৈলোক্যস্যাভয়ঙ্করঃ॥ १॥

কিমিন্দ্র: সর্বলোকানাং করোতীহ তপোধনাঃ। কথ^ দেবগণাংকৈব পাতি নিত্যং স্পরেশ্বরঃ॥ ৮॥

ঋষয় উচুঃ।

ইন্দ্রো দধাতি ভূতানাং বলন তেজঃ প্রজাঃ সুখন।
তুটঃ প্রযক্তি তথা সর্বান্ কামান্ স্থরেশ্বরঃ ॥ ৯ ॥
তুর্ব্রানাং সংহরতি শ ব্রতস্থানাং প্রযক্তি।
অনুশান্তি চ ভূতানি কার্য্যেষ্কু বলস্থানাং ॥ ১০ ॥
অসুর্য্যে চ ভবেৎ স্থ্যান্তথাচন্দ্রে চ চন্দ্রমাং ।
ভবতাগ্লিশ্চ বায়ুশ্চ পৃথিব্যাপশ্চ কারণৈঃ ॥ ১১ ॥
এতদিন্দ্রেণ কর্তাব্যমিন্দ্রে হি বিপুলং বলম্ ।
ত্বঞ্চ বীর ! * বলীশ্রেষ্ঠস্তম্মাদিন্দ্রো ভবস্থ নঃ ॥ ১২ ॥
শক্র উবাচ।

ভবস্বেন্ত্রো মহাবাহো। সর্কেষাং নঃ স্থাবহঃ। অভিষিচ্যস্ব চৈবাদ্য প্রাপ্তরূপোহসি সন্তম।। ১৩॥ স্কন্দ উবাচ

শাধি বঁমেব ত্রৈলোক্যমব্যগ্রো বিজয়েরতঃ। অহং তে কিঙ্করঃ শক্র ! ন মমেক্রত্বমীপ্দিতম্॥ ১৪॥ শক্র উবাচ।

বলং তবাদ্ভুতং বীর! ত্বং দেবানামরীন জহি। অবজ্ঞান্ততি মাং লোকা বীর্য্যেণ তব বিস্মিতা: ॥ ১৫ ॥

9 || > || 2 || 2 0 || 2 3 || 2 4 || 2 4 || 2 9 || 2 8 || 2 6 ||

^{*} বতন্থানামিত্যত্র বৃত্তন্থানামিতি পাঠঃক্ষ পুস্তকে।

* বলীত্যত্র বলোতি পাঠঃকপুস্তকে।

ইন্দ্রেইপি স্থিত বীর! বলহীনং পরাজিতম।
আবয়েশ্চ মিথোভেদে প্রয়তিষ্যন্তন্দ্রিতাঃ॥ ১৬॥
ভেদিতে চ স্বয়ি বিভো লোকো দ্বৈধমুপৈয়াত।
দ্বিগ্রাভূতেমু লোকেমু নিশ্চিভেদ্বাবয়েস্তথা॥ ১৭॥
বিগ্রহঃ সংপ্রবর্ত্তে ভূতভেদান্মহাবল!।
তত্র স্থং মাং রণে তাত! যথাপ্রদ্ধং বিজেয্যসি॥ ১৮॥
ভন্মাদিন্দ্রো ভবানেব ভবিতা মা বিচারয়।
স্থন্দ উবাচ
স্বমেব রাজা ভদ্রু তে তৈলোক্যক্ত মনৈব চ॥ ১৯॥
করোমি কিঞ্চ তে শক্র! শাসনং তদ্ববীহি মে।
ইন্দ্র উবাচ।

আহমিক্রো ভবিষ্যামি তব বাক্যান্মহাবল !॥ ২০॥
যদি সত্যমিদং বাক্যং নিশ্চয়ান্তাঘিতং স্বরা।
যদি বা শাসনং ক্ষন্দ। কর্জুমিচ্ছসি মে সূণু॥ ২১॥
অভিষিচ্যস্থ দেবানাং সৈনাপত্যে মহাবল!।

ऋक् डेवाह

দানবানাং বিনাশায় দেবানামর্থসিদ্ধয়ে ॥ ২২ ॥ গোব্রাহ্মণহিতার্থায় দৈনাপত্যেহভিষিঞ্চ মাম্।

মার্কতেয় উবাচ।

সোহভিষিক্তো মঘবতা সর্বৈর্দেবগণৈ সহ ॥ ২৩॥
অতীব শুশুভে তত্ত্ব পুজ্যমানো মহর্ষিভিঃ।
তত্ত্ব তৎ কাঞ্চনং ছত্রং ধ্রিমাণং ব্যরোচত ॥ ২৪॥
যথৈব স্থসমিদ্ধস্য পাবকস্যাত্মমগুলম্।
বিশ্বকর্মাকৃতা চাঁস্য দিব্যা মালা হিরণাুয়ী॥ ২৫॥

11 5 4 5 11 5 11 5 11 5 11 4 11 4 2 11 4 2 11 4 2 11 4 2 11

আবদ্ধা ত্রিপুরক্ষেন স্বয়মেব যশস্থিনা। আগম্য মমুজব্যান্ত। সহ দেব্যা পরস্তপ ॥ ২৬ ॥ অৰ্চয়ামাস স্থূপ্ৰীতো ভগবানু গোরুষধৃজঃ। রুদ্রমগ্রি ছিজাঃ প্রাহুরুদ্রসূত্রস্ত তস্ত সং॥ ২৭॥ ৰুদ্ৰেণ শুক্ৰমুৎস্ফং তচ্ছেতঃ পৰ্ব্বতোহভবৎ। পাবকদ্যেন্দ্রিয়ং খেতে ক্বন্তিকাভিঃ ক্বত্ত নগে। ২৮। পূজ্যমানম্ভ রুদ্রেণ দৃষ্ট্বা সর্ব্বে দিবৌকসঃ। রুদ্রস্থার ততঃ প্রাছগু হিন্দু গুণবতাম্বরম্।। ২৯॥ অনুপ্রবিশ্য রুদ্রেণ বহিং জাতো হয়ং শিশুঃ! তত্র জাতস্ততঃ স্বন্দো রুদ্রস্থ্রস্থতোহভবৎ ॥ ৩০॥ রুদ্রস্য বহেঃ স্বাহায়াঃ ষণ্ণাং স্ত্রীণাঞ্চ ভারত।। জাতঃ কনঃ সুরশ্রেষ্ঠো রুদ্র স্থুনুত্ততোহভবৎ॥ ৩১॥ অরজে বাসসী রক্তে বসানঃ পাবকাল্পজঃ। ভাতি দীপ্তবপু: শ্রীমানুক্তাব্ত্রাভ্যামিবাংশুমান্॥ ৩২॥ কুরুটশ্চাগ্নিনা দত্তস্তস্য কেতুরলঙ্কৃতঃ। রথে সমুপ্রিতো ভাতি কালাগ্নিরিব লোহিত:। ৩০। যা চেষ্টা সর্বাভূতানাৎ প্রভা শান্তির্বলং তথা। অগ্রতন্ত্রস্য সা শক্তিদেবানাণ জয়বদ্ধনী॥ ৩৪॥ বিবেশ কৰচঞ্চাস্য শরীরে সহজং ভতঃ। ষুধ্যমানস্য দেবস্য প্রাত্মুর্ডবতি তৎ সদা। ৩৫॥

॥ ২৬ ॥ কন্দ্রমানিতি কন্দোবা এব্যদ্যিরিতি আচতিবিদো দিজাঃ প্রান্তঃ
॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ প্রকারান্তরেণ ক্ষন্দ্র্যা কন্দ্রস্থাই অন্থ প্রবিশ্যতি
অন্প্রবিশ্য স্থিতেনেতিশেষঃ ডডঃ বঙ্কিনেছে প্রবিষ্ঠাকন্দ্রা জ্ঞাত ইতিবা
কন্দ্রস্থারিভ্যর্থঃ ॥ ৬০ ॥ ৬১ ॥ ৬১ ॥ ৬৪ ॥ ৬৫ ॥

শক্তিধ শ্মো বলং তেজঃ কান্তত্ত্ব সত্যমুশ্লতিঃ।* ব্রহ্মণ্যত্মসম্মোহো ভক্তানাং পরিরক্ষণমু॥ ৩৬॥। নিক্সন্ত শত্ গাং লোকানাঞ্চাভিরক্ষণম। স্বন্দেন সহ জাতানি সর্বাণ্যের জনাধিপ !॥ ৩৭॥ এবং দেবগগৈঃ সর্কৈঃ সোহভিষিক্তঃ স্বলস্কৃতঃ। বভৌ প্রতীতঃ স্থমনাঃ পরিপূর্ণেন্দুমগুলঃ ॥ ৩৮ ॥ रेटेकेः श्राधायाद्यादेवन (नवर्षावदेवत्रि। দেবগন্ধর্বগীতৈশ্চ সর্বৈরস্পরসাৎ গগৈঃ॥ ৩৯॥ **पटिज्ञारेगाक वर्षा जिल्ला कर्येक र्रेकः चलक रेजः ।** স্থাংরতঃ পিশাচানাং গগৈর্চ্দেবগণৈস্তথা ॥ ৪০ ॥ ক্রীডন্ ভাত্তি তদা দেবৈরভিষিক্তশ্চ পার্বকি ॥ অভিষিক্তং মহাদেনমপশ্যন্ত দিবৌকসঃ॥ ৪১॥ *বিনিহত্য তমঃ স্থ্য্যপ যথেহাভ্যুদিতং তথা। অথৈনমভ্যযুঃ সর্কা দেবদেনাঃ সহস্রশঃ ॥ ৪২ ॥ অমাকং স্বং পতিরিতি ক্রবাণাঃ সর্বতো দিশঃ। তাঃ সমাসাদ্য ভগৰানু স্বাভূতগগৈৰ্ক তঃ ॥ ৪৩॥ অর্চিতস্ত স্তত শৈচৰ সাস্ত্র্যামাস তাঅপি। শতক্রতৃশ্চাভিষিচ্য কন্দ সেনাপতিং তদা ॥৪৪॥ সম্মার তাং দেবদেনাং যা সা তেন বিমোক্ষিতা। অরং তদ্যাঃ পতিকুনং বিহিতো ব্রহ্মণা স্বরম্। ৪৫॥ ইতি চিন্ত্যানয়।মাস দেবসেনাং স্বলক্ষ্তাম। क्रन्मरक्षितार वनिविष्ति कना सूरवाख्य !॥ १७॥ 09 || 09 || 05 || 90 || 81 || 82 || 83 || 84 || 86 || 89 ||

^{*} উন্নতীত্যত্র অব্যুতি রিন্তি কপুস্তকে পাঠঃ !

* বিনিহত্যে ত্যত্রবিনিহুত্যেতি পাঠঃখপুস্তকে ৷

অজাতে ত্বয়ি নির্দ্ধিন্টা তব পত্নী স্বয়ন্ত্বা।
তন্মাত্ত্বয়ন্তা বিধিবৎ পানিং মন্ত্রপুরক্তন্ ॥ ৪৭ ॥
গৃহান দক্ষিণং দেব্যাঃ পানিনা পদ্মবর্চসা #।
এবমুক্তঃ স জগ্রাহ তন্তাঃ পানিং যথাবিধি ॥ ৪৮ ॥
রহস্পতির্মন্ত্রবিদ্ধি জজাপ চ জুহাব চ।
এবং কন্দন্ত মহিনীং দেবদেনাং বিছুজ নাঃ ॥ ৪৯ ॥
ষচীং যান ব্রাহ্মনাঃ প্রান্থ রাজ্জারানাঃ প্রথপ্রদান্।
সিনীবালীন কুন্তব্যেব মন্ত্রমপরাজিতান্ ॥ ৫০ ॥
যদা কন্দং পতির্ব্রিঃ শাশ্বতো দেবসেনয়!।
তদা তমাশ্রম্লক্ষীঃ স্বয়ন দেবী শরীরিনী ॥ ৫১ ॥
শ্রিজুন্টঃ পঞ্চমীং কন্দন্তন্মাজ্বীপঞ্চমী স্মৃতা।
ষঠ্যাং ক্রতার্থোহভূদ্দশাজন্মাৎ ষচী মহাতিধিঃ ॥ ৫২ ॥
ইত্যারন্যকে পর্কানি মার্কণ্ডেয় সমাস্থা পর্কানি ক্ষন্দোপাখ্যানে
উনত্রিংশদধিক দ্বিশ্বত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২২৯ ॥

মার্কণ্ডের উবাচ। শ্রিরা জুষ্টং মহাসেনং দেবসেনাপতিং ক্নতম্। স্পুর্ষিপত্ন্যঃ ষড্দেব্যস্তৎসকাশমথাগমন্॥১॥

॥ ৪৭॥ ৪৮॥ ৪৯॥ ৫০॥ ৫১॥ ৫২॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারতভাব দীপে উনত্তিংশদধিক দ্বিশত তমে¦২ধ্যায়॥ ২২৯॥

শ্রিয়েতি॥১॥

^{*} পদাবর্চনেতাত্র পদাবর্চ সমিতি ক পুস্তকেপাঠঃ।

শ্বিভিঃ নংপরিত্যক্তা ধর্মবুক্তা মহাব্রতাঃ।
দ্রুতমাগন্য চোচুস্তা দেবদেনাপতিং প্রভুষ্ ॥ ২ ॥
বয়ং পুত্র পরিত্যক্তা ভতৃভিদেবদাহিতঃ।
অকারণাক্রবা তৈস্ত পুণ্যস্থানাৎ পরিচ্যুতাঃ॥ ৩ ॥
অক্ষাভিঃ কিল জাতস্ত্রমিতি কেনাপ্যুদাহতম্।
তৎ সত্যমেতৎ সংশ্রুত্য তন্মানস্ত্রাতুমর্হদি॥ ৪ ॥
অক্ষয়ন্দ ভবেৎ স্বর্গস্তৎপ্রসাদাদ্ধি নং প্রভো।
ত্বাং পুত্রকাপ্যভীক্ষামঃ ক্রৈত্রদন্ণো ভব ॥ ৫ ॥
স্কন্দ ভবাচ

মাতরো হি * ভবস্তো মে স্কুতো বোহহমনিন্দিতাঃ। যদাপীচ্ছত তৎ সর্বাং সম্ভবিষ্যতি বস্তথা॥ ৬॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ

বিবক্ষন্তং ততঃ শক্রং কিং কার্যামিতি সোইব্রবীৎ।
উক্তঃ স্কন্দেন বুহীতি সোইব্রবীদাসবস্ততঃ ॥ १ ॥
অভিজিৎ স্পর্ক্ষানা তুরোহিণ্যাঃ কন্যুদী স্থসা।
ইচ্ছন্তী জ্যেষ্ঠতাং দেবী তপস্তপ্তঃং বন্দ গড়া॥ ৮॥
তত্র মূচোহন্মি ভদ্রং তে নক্ষত্রং গগণাচ্চ্যুত্রম্।
কাল্যু বিমং পরং ক্ষন্দ! ব্রহ্মণা সহ চিন্তুয় ॥ ৯॥

২॥৩॥৪॥৫॥৬॥ বিবৃক্ষন্তং অভিজিল্প জাঁসপেতনালক জ্যংখ্যা কথং সমাভবেদিতি প্রস্ট্র সিচ্ছন্তং শক্রং সঃ ক্ষন্ধঃ কিং কার্যামিত্য ব্রবাং ॥ ৭ ॥ কন্য সীকনিষ্ঠাবনং নতা অগ্নিকারং ত্যক্তেতিশেষঃ ॥৮॥ সাচজ্যেষ্ঠতা স্পর্দ্ধরা নানাৎ
চ্যুতা অতোহং মুটোমিনক্ষত্র সংখ্যা পূরণ প্রকারস্যাজ্যানাদিতি ভাবঃ
॥ ৯ ॥ ধনিষ্ঠাদি রিভি যদ্যা নক্ষত্রস্যাদ,ক্ষণে চন্দ্র স্থ্য গুরুণাং যোগন্ত-

^{*} ভবস্তো(মে ইত্যত্র ভবত্যোমে ইতি কঘ পুস্তকে পাঠঃ।

ধনিষ্ঠাদিন্তদা * কালো ব্ৰহ্মণা পরিকল্পিতঃ।
রোহিণী ছভবৎ পূর্বমেবন সংখ্যা সমাভবৎ॥ ১০॥
এবমুক্তে তু শক্রেণ ত্রিদিবং ক্তিকা গতা।
নক্ষত্রং সপ্তশীর্ষাভন ভাতি তছহিদৈবতম্॥ ১১॥
বিনতা চাত্রবীৎ ক্ষলং মম ত্বন পিগুদঃ স্থতঃ।
ইচ্ছামি নিত্যমেবাহং ত্বয়া পুক্র সহাসিতুম্॥ ১২॥
স্কল উবাচ

এবমস্ত নমস্তেহস্ত পুত্রস্কেহাৎ প্রশাধি মাম। স্ব্রুষয়া পূজ্যমানা বৈ দেবি বৎস্যসি নিত্যদা॥ ১৩॥
মার্কতের উবাচ

অথ মাতৃগণঃ সর্বাঃ ক্ষন্দং বচনমত্রবীৎ।
বয়ং সর্বান্ত লোকন্ত মাত্রঃ কবিভিঃ স্তৃতাঃ।
ইচ্ছামো মাতরস্তুভ্যং ভবিতুৎ পূজয়স্থ নঃ॥ ১৪॥
স্কন্দ উবাচ

মাতরো হি ভবত্যো মে ভবতীনামহৎ স্কৃতঃ। উচ্যতাং যন্ময়! কার্য্যৎ ভবতীনামথেম্পিতমু॥ ১৫॥

দ্মুগাদিনক্ষত্বপ তচ্চ পূর্বাং রোহিণ্ডত্থ তদাভিজিৎপতন কালেডু একমানে রহোরাত্বৈ ভ্রণণ্যভোগাৎ কুত্রগাদি নক্ষত্বং ধনিষ্ঠেবাভবদি
তার্থাঃ সংখ্যা কলাকাষ্ঠাদীনাং ॥ ১০ ॥ তথা চ ক্রজিকাভিরেব নক্ষত্র সংখ্যা
পূর্ত্তিং কুর্বিতি শক্রাশয়ং জ্ঞারা তান্তিদিবং গতাঃ ॥ ১১ ॥ নম্বট্ক্রজেকাঃ কথং সপ্তশীর্যভিমিতাত আহ বিনতেতি ঋষি পত্নীনামিব গৰু
স্থতা অপি রূপং স্বাহয়ার্তমিতি তৎসাহিত্যাৎ সপ্তশীর্যভিমিতার্থঃ
॥ ১২ ॥ স্বুয়াদেবসেনয়া ॥ ১০ ॥ মাতৃগণঃ বিনতাদি সমূহঃ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥

^{*} তদা ইত্যত্ত তথাইতি ক্য পুস্তকে পাঠঃ।

মাতর উচুঃ

যাস্ত তা মাতরঃ পূর্বং লোকস্যাস্য প্রকল্পিতাঃ।
অন্মাকঞ্চ ভবেৎ স্থানং তাসাফ্টেব ন তদ্ভবেৎ ॥ ১৬॥
ভবেম পূল্যা লোকস্য ন তাপুজ্যাঃ স্থরর্বভ।
প্রজাম্মাকং ক্রতাস্তাভিস্তৎক্কতে তাঃ প্রযক্ত নঃ॥ ১৭ ॥
স্কন্দ উবাচ

র্জাঃ প্রজান তাঃ শক্যা ভবতীভির্নিষেবিতুম্। অন্যাং বঃ কা^ প্রয়ন্থামি প্রজায়াং # মনসেচ্ছও ॥ ১৮॥ মাতর উচুঃ

ইচ্ছাম তাসাং মাতৃণা প্রজা ভোক্তৃং প্রয়ন্ছ নঃ।
স্বয়া সহ পৃথগ্ভূতা যে চ তাসামথেশ্বরাঃ॥ ১৯॥
স্কন্দ উবাচ

প্রজাবো দল্মি কফস্ত ভবতীভিরুদাক্তম।
পরিরক্ষত ভদ্রং বঃ প্রজাঃ সাধুনমস্কৃতাঃ॥২০॥
মাতর উচঃ

পরিরক্ষাম ভদং তে প্রকাঃ কন্দ। যথেছিল।
ত্বা নো রোচতে কন্দ। সহ বাসন্ধিরং প্রভা। ॥২১॥
তাঃ প্রসিদাঃ মাতরোরাশীমাহেশ্রী প্রভ্তয়ঃ॥১৬॥ ত্ৎকতে ত্দর্থন
ভাতি রাশ্যানিভিঃ অন্দ্রত্ন্ মিথ্যাভিশাপ দোষেণ কোপয়ন্তী তঃ
প্রজাহতাঃ সদাভাবানিভার্থঃ সন্ধিরার্থঃ নঃ অন্যভাং প্রমুক্ত তেওঁণা মহকুলনে নেভার্থঃ॥১৭॥ রভাংময়া দত্তা অপিময়াপ্রার্থিতা অপি মুনয়ো মুন্দান্
নাদীকরিষাভীতিভাবঃ॥১৮॥ মাতৃণাং রাশ্যানীনাং তাসাংপ্রজানাং কর্পরাঃ
পিত্রাদয়ঃ॥১৯॥ প্রজ্যাঃ অন্দাদ্যাঃ নমস্কৃতা যুয়ং ময়েতিশেষঃ॥২০॥২১॥

[#] বুতাইতাত্ত দতা ইতি কঘ পুস্তকে।

^{*} প্রজায়া মিত্যত্র প্রজাৎ যামিতি কব পুস্তকে পাঠঃ।

ক্ষন্দ উবাচ

যাবৎ ষোডশ বর্ষাণি ভবন্ধি তরুণাঃ প্রজাঃ। প্রবাধত মনুষ্যাণাং তাবজ্রপৈঃ পৃথমিবিঃ॥ ২২॥ অহঞ্চ বঃ প্রদান্যামি রৌদ্রমান্সানমব্য়েম্। প্রমুং তেন সহিতাঃ স্থাং বৎস্যুথ পূজিভাঃ॥ ২৩॥

মার্কতের উনাচ।

ততঃ শরিরাৎ কন্স্য পুরুষঃ পাবকপ্রভঃ।
ভোক্তঃ প্রজাঃ স মর্ত্যানাৎ নিপ্সপাত * মহাপ্রভঃ॥ ২৪॥
অপতৎ সহসা ভূমো বিসৎজ্ঞাহথ * কুবার্দিতঃ।
ফলেন সোহভাযুজ্ঞাতো রৌদ্রূরপোইভবদ্যাইঃ॥ ২৫॥
কন্দাপশারমিত্যাছপ্রহং তং দিজসভ্তমাঃ।
বিনতা ভূ মহারৌদ্রা * কথ্যতে শকুনি গ্রহঃ॥ ২৬॥
পূতনাৎ রাক্ষসীং প্রান্তত্তং বিদ্যাৎ পূতনাগ্রহম্।
কন্টা দারুণাকারা কথ্যতে শীতপূতনা।
পর্ত্তান সামুষীণাম্ভ হরতে ঘোরদর্শনা॥ ২৮॥
অদিতিং রেবতিৎ প্রান্ত্রপাস্ত রৈবতঃ।
সোহপি বালাক্রংঘোরো বাধতে বৈ মহাগ্রহঃ॥ ২৯॥
দৈত্যানাং যা দিতিশ্রাতা তামান্ত্রমু থ * মণ্ডিকাম্
অত্যর্থং শিশুমাৎসেন সংপ্রকৃষ্টা তুরাসদা॥ ৩০॥
॥ ২২॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ ২০॥

^{*} মহাপ্রভ ইত্যত্র মহাবল ইতি কপুস্তকে পাচঃ। যপুস্তকে মহাপ্রভুরিতি।

^{*} বিসংজ্ঞোহথ ইতাত্র বিসঙ্গোহর্থ ইতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

^{*} রৌক্রাইতাত্ত্র রৌক্র ইতি ক্ পুস্তকে পাঠঃ।

^{*} মণ্ডিকামিত্যত্ত মুণ্ডিকামিত্তি ক পুস্তকে পাঠঃ।

कुमातान्ह कुमाधान्ह (य প্রোক্তাঃ ऋक्त मसुवाः। তেৎপি গর্ৱভুজঃ সর্বে কৌরবা সুমহাগ্রহাঃ ॥ ৬১ ॥ তাসামের তু পত্নীনাৎ পত্রুস্ত প্রকীর্ত্তিতাঃ। অজায়মানা # গৃহন্তি বালকান্ রৌদ্রকর্মিনঃ। ৩২ ॥ গবাৎ মাতা তু যা প্রাজ্ঞেঃ ক্রাতে স্করভিনৃ প।। শকুনিস্তামথারুহা সহ ভৃত্ত ক্রে শিশূন ভ্বি॥ ৩৩॥ সরমা নাম যা মাতা শুনা দেবী জনাধিপ।। मानि गर्डान् मभाषा मानुषीगा महेमव हि॥ ७९॥ পাদপানাঞ্যা মাতা ক্রঞ্জনিল্যা হি সা। বরদা সা হি সৌম্যা চ নিত্যং ভূতানুকন্পিনী ॥ ৩৫ ॥ করঞ্জে তাং নমস্যন্তি তক্ষাৎ পুত্রার্থিনো নরাঃ। ইমে স্বন্ধাদশান্যে বৈ গ্রহা মাংসমধুপ্রিয়: ॥ ৩৬॥ দ্বিপঞ্চরাত্রণ তিষ্ঠন্তি সভতং স্থৃতিকাগুহে। কদ্রুঃ স্থাক্ষা গরিণীং প্রবিশত্যথ । ৩৭॥ ভুঙ্জে সা তত্ত ত গৰ্ৱং সা তু নাগং প্রস্থাতে। গন্ধবাণাঞ্চ যা মাতা সা গৰ্ৱং গৃহ্য গছতি॥ ৩৮॥ ততো বিলীনগর্ত্তা সা মানুষী ভূবি দৃশ্যতে। যা জনিত্রী ত্রপারসাং গর্বগান্তে প্রগৃহ সা॥ ৩৯॥ 🗱 উপনষ্টং ততো গর্বং কথয 🐯 মনীষিণঃ। লোহিতদ্যোদধেঃ কন্যা ধাত্রী ক্ষন্দস্য সা স্মুতা ॥ ৪০ ॥ লোহিতায়নিরিভ্যেব কদম্বে সাহি পুজ্যতে। পুরুষেষু যথা রুদ্রন্তথার্য্যা প্রমদান্ত্রপি॥ ৪১॥ 1 05 11 02 11 00 11 08 11 04 1109 11 09 11 09 11 80 11 85 11

^{*} অজারমানা ইত্যত্ত অজ্ঞায়মানা ইতি ঘক পুস্তকে পাঠ:।

^{*} উপনম্ভ মিত্যত্র উপবিষ্ট মিতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

আর্য্যা মাতা কুমারস্য পৃথক্কামার্থমিজ্যতে। এবমেতে কুমারাণাং ময়া প্রোক্তা মহাগ্রহা। ॥ ৪২॥ যাবৎ ষোডশ বৰ্ষাণি । শিশুনাংহ্য শিবাস্ততঃ। বে চ মাভূগণাঃ প্রোক্তাঃ পুরুষাদৈচব যে গ্রহাঃ ॥ ৪৩ ॥ সর্বে ক্ষন্দগ্রহা নাম জেয়া নিত্য শরীরিভিঃ। তেষাং প্রশমনং কার্যাং স্থানং ধূপমথাঞ্জনম। বলিকর্ম্মোপহারাশ্চ * ক্ষন্সন্যেক্সা বিশেষতঃ ॥ ৪৪ ॥ এবমভার্চিতাঃ দর্কে প্রয়ন্ত্রি শুভং নৃণাম্। আযুর্বীর্যাঞ্চ রাজেন্দ্র ! সম্যক্ পূজানমস্কৃতা: ॥ ৪৫ ॥ উদ্ধৃত্ত বোডশাৰ্ষাদে ভবতি গ্ৰহা নৃণাম। তানহং সংপ্রবক্ষ্যামি নমস্কৃত্য মহেশ্বরম্ ॥ ৪৬॥ যঃ পশ্যতি নরো দেবানু জ্রাগ্রন্থা শয়িতোহপি বা। উন্নাদ্যতি স তু ক্ষিপ্রং তন্ত দেবগ্রহং বিদুঃ ॥ ৪৭ ॥ আসীনশ্চ শয়নেশ্চ যঃ পশ্যতি নরঃ পিতৃ न। উন্মাদ্যতি স তু ক্ষিপ্রং স জ্ঞেয়ন্ত পিতৃগ্রহ: ॥ ৪৮॥ অবমন্যতি য়ং সিদ্ধান্ কুদ্ধাশ্চাপি শপন্তি যম্। উন্সাদ্যতি স তু ক্ষিপ্রং জ্ঞেষঃ সিদ্ধগ্রহস্ত স: । ৪৯ । উপাত্রাতি চ যো গন্ধানুসাংস্চাপি পৃথবিধান্। উন্মাদ্যতি স তু ক্ষিপ্র~ স জেয়ে। রাক্ষসগ্রহঃ॥ ৫०॥ গন্ধর্বাশ্চাপি ষ্ণ দিব্যাঃ সংবিশক্তি নর্ণ ভূবি। উন্নাদ্যতি স তু ক্ষিপ্রং গ্রহো গান্ধর্ম এক সং। ৫১। অধিরোহন্তি যং নিত্যৎ পিশাচাঃ পুরুষং প্রতি। উন্মাদ্যতি স তু ক্ষিপ্রণ গ্রহঃ পৈশাচ এবসঃ,॥ ৫২॥ 1 8 3 1 8 9 1 8 8 1 8 4 1 8 9 1 8 9 1 8 9 1 8 9 1 8 9 1 6 9 1 6 9 1 6 9 1 6 9 1

^{*} শিশুনাংহ্য শিবা ইত্যত্ত হাশিবান্তে শিবা ইতি ক পুত্তকে পাঠঃ ৷

^{*} উপহারা ইত্যত্র উপহার ইতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

অবিশন্তি চ যং যক্ষাঃ পুরুষং কালপর্যায়ে। উন্নাদ্যতি স ভূ ক্ষিপ্রণ জ্ঞেয়ো যক্ষগ্রহস্ত্র সঃ॥ ৫৩॥ যদ্য দেবিঃ প্রকৃপিত্র চিত্তং মুহ্যতি দেহিনঃ। উন্নাদ্যক্তি স তু ক্ষিঞ্জং সাধনং তৃদ্য শাস্ত্ৰতঃ 🛭 ৫৪ ॥ . . বৈক্লব্যাচ্চ ভয়াচৈচৰ ঘোৱাণাঞ্চাপি দর্শনাৎ। উন্মাদ্যতি স'তু ক্ষিপ্রণ দাস্ত্রং তত্ত্ত সাধনম্। ৫৫॥ কশ্চিৎ ক্রীডিতু কামো বৈ ভোক্তৃকামন্তগাপর:। অভিকামস্তথৈবান্য ইত্যেষ ত্রিবিধো গ্রহঃ॥ ৫৬॥ যাবৎ সপ্ততিবর্ষাণি ভবস্তোতে গ্রহা নুণাম। অতপরং দেহিনান্ত গ্রহতুল্যো ভবেক্ষারঃ॥৫৭॥ অপ্রকীর্ণেক্রিয়ং দান্ত^ শুচিং নিত্যমতক্রিতম । আস্তিকং 🗯 শ্রেদ্ধানঞ্চ বর্জ্জনন্তি সদা গ্রহাঃ ॥ ৫৮ ॥ ইত্যেষ তে গ্রহোদ্দেশো মানুষাণাং প্রকীর্ত্তিতঃ। ন স্পুশন্তি গ্রহা ভক্তান্তরান্দেবং মহেশ্বম ॥ ৫৯॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি মার্কণ্ডেয় সমান্যাপর্বাণি আঙ্গিরদে মন্ত্রষ্ত্রহকথনে ত্রিংশদ্ধিকদ্বিশ তত্ত্বোহ্ধ্যায়ং॥ ২৩०॥

॥ ৫৩॥ ৫৪॥ ৫৫॥ ৫৬॥ ৫৭॥ মিথাভিশাপ প্রস্থানামপি কল মাতৃণাং বালগ্রহাদিনা চাধিকার প্রাপ্তিঃ কিন্ত সাক্ষাদোহ কর্তৃণামতঃ সর্বদোষ পরিহারার্থং মহেশ্বঃ পূজা ইত্যুপসংহরতি অপ্রকীর্ণেক্সীয় মিতি॥ ৫৮॥ ৫৯॥

> ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকণ্ঠীরে ভারতভাব দীপে ত্রিংশদধিক দ্বিশত তমো২ধ্যায় । ২৩০॥

^{*} অন্ধান মিত্যত্ত শুদ্ধাচার মিতি ক গুস্তকে পাঠঃ।

মাৰ্কপ্ৰেয় উবাচ।

যদা কলেন মাতৃণামেবমেতৎ প্রিয়ং কৃত্য।
অথৈনমব্রবীৎ স্থাহা মম পুক্রস্থুমৌরসং । ১॥
ইচ্ছাম্যহং স্বয়া দক্তা প্রীতিং পর্যক্তল ভাম।
তামব্রবীক্ততঃ কুলঃ প্রীতিমিচ্ছসি কীদৃশীম্ ॥ ২॥
স্থাহোবাচ।

দক্ষস্যাহং প্রিয়া কন্যা স্বাহা নাম মহাভুজ। বাল্যাৎ প্রভৃতি নিত্যঞ্চ জাতকামা হুতাশনে ॥ ৩ ॥ ন স মাং কামিনীং পুজ্র ! সম্যগ্জানাতি পাবকঃ।
•ইচ্ছামি শাশ্বতং বাসং বস্তু পুজ্র সহাগ্নিনা॥ ৪ ॥
স্কুল উবাচ।

• হবাং কবাঞ্চ যথ কিঞ্চিদ্ধি জানাং * মন্ত্ৰসংস্তম্।
হোষ্যন্ত্যমৌ সদা দেবি ! স্থাহেত্যুক্ত্বা সমুদ্ধৃতম্॥ ৫ ॥
আদ্য প্ৰভৃতি দাস্যন্তি সুবৃত্তাঃ সংপথে স্থিতাঃ।
এবমগ্নিস্কুয়া সাৰ্দ্ধি সদা বৎস্যতি শোভনে ॥ ৬ ॥
মাৰ্কণ্ডেন্ন উবাচ।

তবমুক্তা ততঃ স্বাহা তৃটা ক্ষন্দেন পূজিতা।
পাবকেন সমাযুক্তা ভক্রা ক্ষমপূজয়ৎ॥ ৭॥
ততো ব্রহ্মা মহাসেনং প্রজাপতিরথাব্রবীং।
অভিগচ্ছ মহাদেবং পিতরং ক্রিপুরাদিনম্॥ ৮॥
রুদ্রেণাগ্রিং সমাবিশ্য স্থাহা মাবিশ্য চোময়া।
হিতার্থণ সর্বালোকানাণ জাতস্ত্রমপরাজিতঃ॥ ৯॥
উমাযোন্যাঞ্চ রুদ্রেণ শুক্রং দিক্তং মহাত্মনা।
অম্মিন গিঝৌ নিপন্তিতং মিঞ্জিকামিঞ্জিকণ তঁতঃ॥ ১০॥
বদ্বিত॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ১॥ ১০॥

^{*} মন্ত্রসংস্কৃতিমিতাত মন্ত্র সংস্কৃত মিতি পাঠঃক পুস্তকে।

সম্ভূতং লে।হিতোদে তু শুক্রশেষমবাপতং। স্থ্যরিশাষু চাপ্যন্যদন্টেচবাপতদ্ববি । ১১ ॥ আসক্তমনাঙ্কেষু তদেবং পঞ্চাপত । তত্ত তে বিবিধাকারা গণা জ্ঞেরা মনীষিভিঃ। তব পারিষদা ঘোরা য এতে পিশিতাশিন:॥ ১২॥ এবমন্তিতি চাপাজ্যে মহাসেনো মহেশ্বরম্। অপুজয়দমেয়াত্মা পিতর: পিতৃবৎসলঃ ॥ ১৩ ॥ মার্কতের উনাচ। **অর্কপুল্পৈস্ত তে** পঞ্চ গণাঃ পুজ্যা ধনার্থিভিঃ। ব্যাধিপ্রশমনার্থক্ত তেষাং পূক্ষাং সমাচরেও॥ ১৪॥ मिञ्जिकामिञ्जिकरेक्षय गिथुन॰ क्र<u>ज</u>मसुयम्। নমকাৰ্যাং সদৈবেহ বালানাশ হিত্মিচ্ছতা 🕆 ১৫ ؛ জ্রেয়োমাকুষমা^ সাদার্জিকানান নামতঃ। রক্ষেমু জাতান্তা দেবো। নমন্ধার্যাঃ প্রজাথিভিঃ । ১৬ । এবমেতে * পিশাচানামসৎখ্যের গণঃে স্মৃতাঃ। ঘনীয়াঃ সপতাক। য়াঃ শূণু মে সম্ভবং নূপ ! । ১৭ ।। প্রাবতসা ঘণ্টে ছে বৈজয়ন্ত্যাবিত প্রতে। প্রহস্য তে স্থান দত্তে ক্রমেণ্বি। যা * ধীমতা । ১৮॥ একা তত্র বিশাখদ্য ঘণ্টা ক্ষুদ্র চাপরা। পতাকা কার্ত্তিকেয়সা বিশার্থস্য চ লে:হিতা ॥ ১৯ ॥ यानि क्लीफनकानामा (मरेवर्मकानिरेव छना । তৈরেব রমতে দেবো মহাদেনো মহ।বলঃ ॥ ২০ ॥ 11 05 11 25 11 70 11 38 11 70 11 30 11 30 11 30 11 30 11 30 11

^{*} এবমেতে ইত্যত্ত এংমেব ইতি পাঠঃকপুস্তকে। অসংখ্যের ইত্যত্ত অসংখ্যেরাচ।

^{*} ক্রমে শানাযা ইত্যত্র শক্রেশানায়্য ইতি পাচঃক্ষ পুস্তকে।

স সংরক্তঃ পিশাচানাং গগৈদেবগগৈল্পথা।
শুশুভে কাঞ্চনে শৈলে দীপ্যমানঃ শ্রিয়া রক্তঃ ॥২০॥
তেন বীরেণ শুশুভে স শৈলঃ শুক্তকাননঃ।
আদিতোনেবাং শুমতা মন্দরশাক্তকন্দরঃ ॥২২॥
সন্তানকবনৈঃ ফুল্লৈঃ করবীরবনৈরপি।
পারিজ্ঞাতবনৈশৈচব শুল্ঞালেকবনৈস্থা॥২৩॥
কদস্তক্র্যেণ্ডেশ্চ দিব্যার্গ্রগাণবিরপি।
দিব্যৈঃ পক্ষিগণৈশৈচব শুশুভে শ্বেতপর্বতঃ॥২৪॥
তত্র দেবগণাঃ সর্ব্বে দ্বের্ষয়ন্তথা।
মেঘত্র্যারবাশৈচব ক্ষুকোদ্ধিসমন্দনাঃ॥২৫॥
তত্র দিব্যাশ্চ গল্পবা নৃত্যন্তেহ প্ররশ্বথা।
হৃষ্টানাৎ তত্র ভূতানাং ক্রার্তে নিন্দো মহান্॥২৬॥
এবৎ সেন্দং জগৎ সর্বাৎ শেতপ্রতিস্প্রিত্য।
প্রাকৃত্যিং প্রেক্ষতে স্কান্ধ ন চ প্লায়তি দর্শনাৎ॥২৭॥
মার্কণ্ডেয় উব্যাচ

যদাভিষিক্তো ভগবান সৈনাপত্যেন পাবকিং।
তদা সংশ্রন্থিতঃ শ্রীমান ক্রটো ভদ্রবটন হরং॥ ২৮॥
রথেনাদিত্যবর্ণেন পার্বেত্যা সহিতঃ প্রভুঃ।
সহস্রং তস্য সিংহানান তিমান যুক্তং রথোন্তমে॥ ২৯॥
উৎপপতি দিবন শুলং কালেনাভিপ্রচোদিতম্।
তে পিবন্ত ইবাকাশং ত্রাসয়ন্ত করাচরান্॥ ৩০॥
দিংহা নভস্যগছন্ত নদন্ত কারুকেশরাং।
তিমানুথে পশুপতিঃ স্থিতো ভাত্যুময়া সহ॥ ৩১॥
॥ ২১॥ ২২॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০॥ ৩১॥

^{*} জপাশোকবনৈত্বিত্যত্ৰ জ্বাশোক বনৈ বিভি পাঠঃ **ক্ষ পশুকে।**

বিদ্বাতা সহিতঃ সূর্যাঃ সেন্দ্রচাপে ঘনে যথা। অগ্রতন্তস্য ভগবান ধনেশো গুহাকৈঃ সহ। ৩২। আত্মায় তুচিরং * যাতি পুজাকং নরবাহনঃ প্রাবতং সমাস্থায় শক্রশ্চাপি স্থ রৈ: সহ॥ ৩ · ॥ পৃষ্ঠতোহনুষ্যো याचः বরদং রুষভধ্জন্। *** জু স্তুকৈর্ফরকোভিঃ অধিভি সমলক্ষ্তঃ । ৩৪**॥ যাত্যমোঘো মহাথকো দক্ষিণং 🕸 পক্ষম স্থিতঃ। তস্য দক্ষিণতো দেবা বহুবশিচত্রযোধিন: ॥ ৩৫ ॥ গচ্ছত্তি বস্তুতিঃ সার্দ্ধং রুদ্রৈশ্চ সহ সঙ্গতাং। যমশ্চ মৃত্যুনা সার্দ্ধং সব্বতঃ পরিবারিতঃ । ৩৬ ॥ ঘোরৈর্ব্যাধিশতৈর্ঘাতি ঘোরৰপবপুত্তথা। যমস্য পৃষ্ঠতকৈচৰ ঘোরস্ত্রিশিখরঃ শিতঃ॥ ৩৭॥ বিজয়ো নাম রুদ্রস্যাতি শূল: স্বলঙ্কুত:। তমুগ্রপাশে। বরুণো ভগবানু সলিলেশ্ব:॥ ৩৮॥ পরিবার্য্য শনৈর্যাতি যাদোভিন্ধিবিধৈর্ব্যুতঃ। পৃষ্ঠতো বিজয়স্যাপি যাতি রুদ্রস্য পট্টিশ: ॥ ৩৯॥ शनामुष्यमञ्जारिनार्क् जः श्रहत्राखरेगः। পট্ডিশব্ৰুগাড়াজনু ছত্ৰ- রৌদ্র- মহাপ্রভুম্ ॥ ৪০ ॥ কমগুলুকাপ্যমু তং মহর্ষিগণসেবিতঃ। ত্য্য দক্ষিণভো ভাতি দণ্ডো গচ্ছন্ শ্রেয়া রুভঃ ॥ ৪১॥ ॥ ৩২॥ ৩০ । জ্ঞুকৈ আহি বিশেষঃ ॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬ ॥ ৩৭॥ ৩৮ ॥ ७৯ ॥

শাস্থারতু চির মিতাত্র আন্থায় কচির মিতি পাঠঃ ক

য় পুশুকদা।

^{*} জৃম্ভকৈ রিভাত্ত জন্তকৈ রিভি পাঠঃ ক পুস্তকে।

^{*} পক্ষান্থিত ইত্যত্র পক্ষাত্রিত ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ভুগঙ্গিরোভিঃ সহিতো দৈবতৈকানুপুজিতঃ। এষান্ত পৃষ্ঠতো রুদ্রো বিমলে সান্দনে স্থিতঃ ॥ ৪২ ॥ যাতি সংহর্ষরন্ সর্বান্তেজসা ত্রিদিবৌকসঃ। ৠষয় শ্চাপি দেবাশ্চ গর্মীর্না ভুজগান্তথা। ৪০॥ ना द्वाः ममुखः क उरेथवाश्मतमार शर्गाः। নক্ষত্রাণি গ্রহাইশ্চব দেবানাং িশ্বশ্চ যে॥ ৪৪॥ ব্রিয়ক বিবিধাকারা যাত্তি রুদ্রুতা পৃষ্ঠতঃ। স্জন্তাঃ পুষ্পাবর্ষাণি চারুরপা বরাঙ্গনাঃ । ৪১॥ পর্জনাশ্চাপ্যমুখযৌ নমক্ষ্ত্য পিনাকিনন্। ছত্রঞ্প পাপ্তরং সে। মন্তস্য মূর্দ্ধন্যধার্য়ৎ । ৪৬॥ চামরে চাপি বাযুশ্চ গৃহীত্বাগ্নিশ্চ বিক্তিতৌ। শক্রশ পৃষ্ঠতস্তদ্য যাতি রাজন্ আিয়া রুচঃ 🛭 🕒 🛭 সহরাজর্ষিভিঃ সবৈস্কৃত্রানো রুষকেতনম। গৌরী বিদ্যাথগ।স্বারী কেশিনী মিত্রসাহ্বয়া ॥৪৮॥ माविज्ञा मह मर्साष्ट्राः भा विज्ञा याचि भुक्षेत्रः। তত্রবিদ্যাগণাঃ সর্বে যে কেচিৎ কবিভিঃ ক্লতাঃ ॥৪৯ । ভদ্য * কুর্বান্তি বচন স্বেন্দ্র। দেবা শুমুমুখে। সুহীত্বা তু পতাকা • * বৈষাত্যতো রাক্ষসো গ্রহঃ ॥৫०॥ ব্যাপৃতস্ত শ্বাশানে যো নিতা ক্রদ্রস্য বৈ স্থা। शिक्रता नाम यरकरा (लाकः ग्रानन्ति विकः ॥ ৫ > ॥ এভিক সহিতে। দেবন্তত যা ত যথা সুখম। অপ্রতঃ পৃষ্ঠতকৈব নহি তস্য গাতধুবা * ॥৫২ ॥ 80 11 98 11 80 11 80 11 80 11 80 11 80 11 80 11 80 11 80 11

^{*} ভদ্য ইক্যত্র থদ্য ইভি পাঠঃ ক পুস্তকে।

* বৈ ইভ্যত্ত্ব দ ইভি পাঠঃ ক পুস্তকে।

* গভিধুৰ। ইভ্যত্ত্ব গভি ভূব ইভি পাঠঃ দ পুস্তকে।

१८३ षरी

রুদ্রং সৎকর্মাভিশ্মত্যাঃ পূজয়ন্তীহ দৈবতম। শিবমিত্যেব যং প্রান্থরীশং রুদ্রং পিতামহম্*॥ ৫০॥ ভাবৈস্ত বিবিধাকারিঃ পূজয়ন্তি মহেশ্বরম। দেবদেনাপতিস্তেব্ দেবদেনাভিরার্জঃ। অনুগচ্ছতি দেবেশং ব্রহ্মণ্য: রুত্তিকাস্থত: ॥ ৫৪ ॥ ष्यथाञ्जवीत्रशास्त्रनः महारामस्या त्रह्यहः । সপ্তমং মারুতক্ষরং রক্ষ নিতামতক্রিতঃ। ৫৫॥ ऋष छेवाइ।

সপ্তমং মারুতক্ষরং পালয়িষ্যাম্যহং প্রভো!। যদন্যদিপি মে কার্য্যৎ দেব তদ্বদ মা চির্মু॥ ৫৬॥ রুদ্র উবাচ।

कार्र्याष्ट्र प्रा शूख ! मः क्रियाः मरेनव हि । দর্শনান্মম ভক্ত্যা চ শ্রেয়ঃ পরমবাপ্যাসি ॥৫৭॥ মার্কণ্ডের উবাচ।

ইত্যক্ত্বা বিসমর্কৈন পরিষজ্য মহেশ্বরঃ। বিসন্ধিতি ততঃ ক্ষন্দে বভূবে ংপাতিকং মহৎ ॥ ৫৮ ॥ সহসৈব মহারাজ! দেবানু সর্কানু প্রমোহয়ৎ। জজাল খন সনক্ষত্রং প্রমূচং ভুবনং ভূশম্ ॥ ৫৯ ॥ চচাল वानमाकार्की जामाञ्चर काषाची। ততন্ত্রদারুণং দৃষ্ট্বা কুভিতঃ শঙ্করন্তনা। ৬০। উমা চৈব মহাভাগা দেবাশ্চ সমহর্ষরঃ।

ততন্তেষু প্রমৃচেষু পর্বতাষুদদন্নিভম্॥ ৬১॥ নানাপ্রহরণং ঘোরমদৃশ্যত মহদল্য। তদ্ধি ঘোরমসভ্যের গর্জ চি বিবিধা গির:॥ ৬২॥ || 40 || 48 || 44 || 45 || 49 || 49 || 40 || 40 || 40 || 40 ||

^{*} পিতামহ মিতাত্র পিনাকিন মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

অভ্যদ্রকণে দেবান ভগরন্তঞ শক্ষরম। তৈৰ্কিস্টান্যনীকেষু বাণ্জালান্যনেকশঃ॥ ৬৩ । পর্বতাক্ষ শতন্মক প্রাসাসিপরিঘা গদাঃ। ্নিপতদ্ভিশ্চ তৈর্ঘেরিদেবানীক সহাযুধিঃ॥ ৬৪ ম ক্ষণেন ব্যদ্রবৎ সর্বাং বিমুখঞ্চাপ্যদৃশ্যত। নিক্লভযোধনাগাখং কুভাযুধমহারথম্ ॥ ৬৫॥ मानटेवर्ताक्वं टेमनाः (मवाना विश्वर्थः वट्डो। অস্তুরৈর্বধ্যমানং তৎ পাবকৈরিব কাননম্॥ ৬৬॥ व्यथा अध्यक्ष कि विश्व महास्त्र महास्त्र महा । তে বিভিন্নশিরোদেহা: # প্রাদ্রবন্তো দিবৌবসঃ ॥ ৬৭ ॥ ন নাথমধিগচ্ছতি বধ্যমানা মহারণে। অথ তদ্বিক্তত > সৈন্যং দৃষ্ট্বা দেবঃ পুরন্দরঃ ॥ ৬৮॥ আশ্বাসয়ন্ত্রবাচেদং বলভিদানবাদিত্য। ভয়ং ত্যজত ভদ্রং বঃ শূরাঃ শস্ত্রাণি গৃহ্ত ॥ ৬৯ ॥ কুরুধং বিক্রমে বুদ্ধিং মা রঃ কাচিদ্বাথা ভবেং। জয়তৈনান স্তুর্ক জান দানবান ঘোরদর্শনান্ ॥ १०॥ অভিদ্ৰত ভদ্ৰং বো ময়া সহ মহাসুৱান। শক্তস্য বচনৎ শ্রুত্ব। সমাশ্বস্ত। দিবৌকসঃ ॥ ৭১॥ দানবান প্রত্যযুধ্যন্ত শক্তং কৃত্বা ব্যপাশায়ম্। ভতত্তে ত্রিদশাঃ সর্বে মক্তৃত্ত মহাবলাঃ ॥ ৭২ ॥ প্রভ্যাদ্বযুশ্মহাভাগাঃ সাধ্যাশ্চ বস্তুভিঃ সহ । তৈৰ্ব্বিস্ফান্যনীকেষু কুদ্ধৈঃ শস্ত্ৰাণি সংযুগে। ৭৩।

^{*} প্রাদ্রবস্ত ইত্যত্ত প্রাচারস্ত ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

#শরাশ্বলৈত্যকায়েষু পিবস্থি রুধিরং বছ। তেষাং # দেহান বিনির্জিদ্য শরাত্তে নিশিতাক্তদা। ৭৪ ॥ নিপভত্তো * হাদৃশ্যন্ত নগেভ্য ইব পন্নগাং। তানি দৈত্যশারীরাণি নির্ভিন্নানি স্ম শায়কৈ:॥ ৭৫॥ অপতন্ ভূতলে রাজন্ ছিন্নার্ ্ণীব সর্কাশঃ। ততস্তদানবং দৈন্যং সর্ক্তেদ্বেগনৈর্ঘা । ৭৬॥ ত্রাসিতং বিবিটধর্বালৈঃ ক্লুতক্ষৈব পরাত্ম থম। ভাথোৎকুষ্টং তদা হৃটেষ্টঃ সর্বৈর্দে বৈরুদাযুধৈঃ॥ ৭৭॥ সংহতানি চ তুর্গাণি প্রাবাদ্যত ছনেকশঃ। * এব্মন্যোন্যসৎযুক্তৎ যুদ্ধমাসীৎ স্থদারুণ্য ॥ ৭৮॥ (प्रवाना॰ पानवानाक मा॰मरभावि कर्कमम्। অনয়ে। দেবলোকস্য সহসৈবাভ্যদুশ্যত ॥ ৭৯ ॥ তথাহি দানবা ঘোরা বিনিম্বন্তি দিবৌকসঃ। ততন্ত্র্যপ্রণাদাক ভেরীণাঞ্চ মহাস্বনাঃ॥৮०॥ वकुर्वमानदवकानाः निर्ह्नामाम माक्रवाः। অথ দৈত্যবলাদেশ্রানিস্পূপাত মহাবলঃ ॥ ৮১॥ দানবো মহিষো নাম প্রগৃছ বিপুল গিরিম। তে ত॰ ঘনৈরিবাদিতাং দৃষ্টা সংপরিবারিতম্॥ ৮২॥ ॥ १८ ॥ १८ ॥ १७ ॥ ११ ॥ १४ ॥ व्यन्त्यूक्त्र्व्यत्तिः ॥ ५० ॥ ४० ॥ ४० ॥ ४० ॥ 11 45 11

^{*} লরাশ্বেতাত গজাখেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

^{*} দেহানি তাত্র দেহ মিতি পাঠঃ ক ঘ পুস্তকে।

^{*} নিপতন্ত ইত্যত্ত নিষ্পতন্ত ইতি পাঠঃ ক ঘ পুস্তকে।

^{*} এবমনোন্য সংযুক্তং যুদ্ধ মাসীদিত্যত্র এব মন্যোন্য সক্তং, তদ্যুদ্ধ
মাসীদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

* তমুদ্যতগিরিং রাজনু ব্যদ্রবস্ত দিবৌকসঃ। অথাভিক্তত্য মহিষো দেবাং শিচকেপ ত গিরিম। ৮৩। প্রতাতেন গিরিণা দেবলৈনাস্য পার্থিব!। ভীমৰপেণ নিহতমযুতং প্ৰাপতদ্বি ॥ ৮৪ ॥ অর্থ তৈর্দ্ধানবৈঃ সার্দ্ধ্য মহিষস্ত্রাসয়ন স্থরান্। অভ্যদ্রবদ্রণে তুর্ণং সিংহঃ ক্ষুদ্রমুগানির ॥ ৮৫ ॥ তমাপতন্তং মহিষ্ দৃষ্টা দেক্রা দিবৌকসঃ। ব্যদ্রবন্ত রণে ভীতা বিকীর্ণাযুধকেতনাঃ॥ ৮৬॥ **७७: म महियः क्रुक्त छुर्न** अप्रतथः ययो । • অভিদ্রুত্য চ জ্ঞাহ্ রুদ্রস্য রথকুবরম্ ॥ ৮৭ ॥ यना इन्द्रबंश कुरका महिषः गहमा शठः। রেসভুরোদসী গাতং মুমুগুশ্চ মহর্ষরঃ ॥ ৮৮ ॥ অनमः क महाकांशा देन्छा। कल्यद्वालमाः। আসীচ্চ নিশ্চিতং তেষাৎ জিতমম্মাভিরিভাত ৮৯॥ * তথা ভূতেতু ভগবানহন নহিষং রুণে। সন্মার চ তদা ক্ষন্দং মৃত্যুং তদ্য ছুরাত্মনঃ॥ ৯০॥ মহিষোহপি রথং দৃষ্টা রৌদ্রো রুদ্রস্য চানদৎ। দেবান সন্ত্রাসয়ং ক্রাপি দৈত্যা শুহাপি প্রহর্ষর ॥ ৯১ ॥ ততস্ত্রিন ভয়ে হোরে দেবানা সমুপস্থিতে। আজগাম মহামেনঃ ক্রোধাৎ স্থা ইব জ্বন ॥ ৯২ ॥ ॥৮০ ॥৮৪ ॥৮৫ ॥৮৬ ॥ কূবরংধুঃ প্রদেশং ॥৮৭ ॥ রেসভুঃ শব্দংচক্রছুঃ রোদসীদ্যবাভূমী ॥৮৮॥৮৯॥ অহনৎ হতবান্॥৯০॥৯১॥৯২॥

^{*} ভমিতাত্র স মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

* তথা ভূতেতু ভগবানহনমহিষং রণে ইতাত্র তথা ভূতোপি
ভগবান্নবিধীমহিষং রণে ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

লোহিত।মুরসম্বীতে। লোহিতপ্রশ্বিভূষণঃ। লোহিতাখো মহাবাছ হিরণ্যকবচঃ প্রভুঃ ॥ ৯৩॥ রথমাদিত্যসঙ্কাশমাস্থিতঃ কনকপ্রভম্। তং দুखे। रेन ठारमना मा वाजव र महमा तरन ॥ ৯৪॥ স চাপি তাং প্রজ্বলিতা মহিষ্দ্য বিদার্ণীম। यूरमां मिक्टिः तार्षाक्यः । महारमता महारमः ॥ २०॥ দা মুক্তাভ্যহরন্তদ্য মহিষ্দ্য শিরো মহৎ। পপাত ভিল্নে শির্দি মহিষ্ড্যক্তজীবিতঃ ॥ ৯৬ ॥ পততা শিরসা তেন দ্বারং ধোডশযোজনম। পর্বাভারেন পিহিতং তদাগম্য ততে। ইভবৎ ॥ ৯৭ ॥ উত্তরাঃ কুরবস্তেন গচ্ছন্ত্যদ্য মথ সুখন্ ৷ কিন্তা কিন্তা তু সা শক্তিईত্বা শত্ৰ, মহস্ৰশঃ ॥ ৯৮ ॥ कन्मरुखमञ्जू श्रीक्षा मुन्गार्ट (मवनागरेवः। প্রায়ঃ শরৈবিবিনিহত। মহাদেনেন ধীমতা॥ ৯৯ ॥ শেষা দৈতাগণা ঘোরা ভীতান্ত্রন্তা চুরাসদৈঃ। স্বন্দপারিষদৈর্হত্বা ভক্ষিতাশ্চ সহস্রশঃ ॥ ১০০॥ দানবান ভক্ষয়ন্তন্তে প্রপিবন্তক্ষ শোণিতম্। ক্ষণালিদানবং সর্বামকাষু ভূশহর্ষিতাঃ॥ ১০১॥ जमार मीव यथा स्टर्गात्रकान श्रियंनान श्राः। তথা ক্ষেত্ৰেরজ্ঞাত্ত্র স্বেন বার্যেণ কীর্তিমান্ ॥ ১০২ ॥ সংপ্रজামানস্তিদলৈরভিবাদা মহেশ্বর্য। শুশুভে কৃত্তিক।পূত্র: প্রকীর্নাংশুরবাৎশুমান্। ১০০। নষ্টশত্র্যদা কন্দঃ প্রযাতস্ত মহেশ্বরম্। তদাত্রবাঝহাসেনং পরিম্বজ্য পুরন্দরঃ ॥ ১০৪॥

॥ ৯৩ ॥ ॥ ৯৪ ॥ ৯৫ ॥ ৯৬ ॥ দারিং উত্তর কুরুণামিতিশেশঃ আগম,মিতি-ছেদঃ॥ ৯৭ ॥ তেন দারেণ ॥ ৯৮ ॥ ৯৯ ॥ ১০০ ॥ ১০২ ॥ ১০২ ॥ ১০৪ ॥

ব্রহ্মদন্তবরঃ কন্দ ! ত্রয়ায়ং মহিষো হতঃ। দেবাস্থ্যমা যন্ত বভুবুজ রতাম্ব ! ॥১০৫॥ সোহয় ব্যা মহাবাহো! শমিতো দেবকতকঃ। শত মহিষতুল্যানাং দানবানাং ত্বয়া * রণে। ১০৬॥ নিহতং দেবশকুণাপ ধৈৰ্ব্বয়ৎ পূৰ্ব্বতাপিতাঃ। তাবকৈর্জাত। কানবাঃ শতসংঘশঃ॥ ১০৭॥ অজেরস্তু > রণেইরীণামুমাপতিরিব প্রভুঃ। এতত্তে প্রথমণ দেব খ্যাতং কর্ম ভবিষ্যতি॥ ১০৮॥ ত্রিষু লোকেষু কীর্ত্তিশ্চ তবাক্ষয়া ভবিষ্যতি। 'বশ্বাশ্চ ভবিষ্যন্তি সুরাস্তব মহাভুজ । ১০১॥ मङ्ग्राटननरभवभूक्षा निवृद्धः मह रेपवरेठः। অনুজ্ঞাতো ভগবতা ত্রায়কেণ শচীপতি: ॥ ১১০॥ গতো ভদ্ৰবট্ ৰুদ্ৰে। নির্প্তাশ্চ দিবৌ ক্সঃ। উক্তাশ্চ দেবা রুদ্রেণ ক্ষন্দং পশ্যত মামিব। ১১১। म হত্বা দানবগণান পূজ্যমানো মহর্ষিভিঃ। একাহৈবাজয়ৎ সর্বাং ত্রৈলোকাং বহিনন্দনঃ॥ ১১২॥ क्रन्मख य ইদং বিপ্রঃ পঠেক্ষন্ম সমাহিতঃ। স পুটিমিহ সংপ্রাপ্য * কন্দ সালোক্যমাপ্র রাৎ ॥ ১১৩॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি মার্কণ্ডের সমাস্থা পর্বাণ আঙ্গিরসে স্কন্দোৎ পত্তৌ মহিষাস্তর্বধে একত্রিংশদ্ধিক্দিশতত্যোৎধ্যায়ঃ ॥২ ৩১॥ 11 206 11 200 11 200 11 200 11 200 11 202 11 202 11 200 11 ইত্যার্ণ্যকে পর্ব্ধনি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারতভাব দি পে

একত্রিংশদ্ধিক দ্বিশত তমে ২ধ্যায়॥ ২৩১॥

^{*} ত্রা ইত্যত্রমহা ইতি পাঠ ঘ পুত্তকৈ।

^{*} ক্ষন সালোক্য মাপ্নুয়ানিতাত্ত ক্ষন সালোক্য তামিয়ানিতি ক ব পুস্তকে পাঠঃ।

য়বিষ্ঠির উবাচ।
ভগব প্রাতুমিচ্চামি নামানাক্স মহাত্মনঃ।
ত্তিষু লোকেষু যান্যক্ষ বিখ্যাতানি দ্বিজোত্তম।। ১॥

ইব্যক্তঃ পাপ্তবেয়েন মহাত্মা ঋবিস্ক্রিধী।

ইত্যক্তঃ পণ্ডিবেয়েন মহাত্মা ঋষিসলিখে। উবাচ ভগবাংস্তত্ত্ব মার্কণ্ডেয়ো মহাতপাঃ ॥ ২॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

আংগার শৈব ক্ষমণ দীপ্রকীর্ত্তিরনাময়:।
ময়্রকেতৃধ শ্লিজা ভূতেশো মহিষার্দনঃ॥ ৩॥
কামজিৎ কামদঃ কাস্তঃ সত্যবাগ ভূবনেশ্রঃ।
শিশুঃ শীঘ্রঃ শুচিশ্চপ্রো দীপ্রবর্ণঃ শুভাননঃ॥ ৪॥
আমোঘস্থনঘো রৌদ্রঃ প্রিয়শ্চল্রাননস্তথা।
দীপ্রশক্তিঃ প্রশান্তাত্মা ভদ্রকং কূটমোহনঃ॥ ৫॥
ষষ্ঠীপ্রিয়শ্চ ধর্মাজা পবিত্রো মাতৃবৎসলঃ।
কন্যাভর্ত্তা বিভক্তশ্চ সাহেয়ো রেবতীস্ততঃ॥ ৬॥
প্রভুর্নেতা বিশার্থশ্চ নৈগমেয়ঃ স্কুত্র্শ্চরঃ।
স্বরতো ললিতশৈচব বালকীডনকপ্রিয়:॥ ৭॥
খচারী ব্রহ্মচারী চ শূরঃ শরবণোদ্ভবঃ।
বিশ্বামিকপ্রিয়শ্চব প্রেয়: প্রিয়ক্রদেব তুর্বা
মানোতানি দিব্যানি কার্ত্তিকেয়ন্তা যঃ পঠেং।
স্বর্গং কীর্ত্তিং ধনক্ষৈব স লভেয়াক্র সংশারঃ॥ ৯॥

সর্বেষাং গ্রহাণাং ক্ষন্দারীনতা ক্তক্তান্তরে ক্ষন্ধং প্রার্থবির্ভু কামন্ত্রদীর্থ নামাদিকং পৃচ্ছতি ভগবির্ন্ধি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ কামজিৎপুণ মনেরেথঃ ॥ ৪ ॥ কুটং কপটং বালগ্রহাদি তেন মোহয়ত তি কূটমোহনঃ ॥ ৫ ॥ কন্যাভতা অধিপ্রবেনাধিরপরাংভূতীয়োধি ঐ পতিরিতি মন্ত্র প্রচ্ছ ॥৬। ৭।৮॥৯॥

মার্কতের উবাচ। স্থোষ্যামি দেবৈঋষিভিশ্চ জুইং, 🟶 শক্ত্যা গুহং নামভিরপ্রমেয়ম্। ষডানন- শক্তিধরং সুবীর .. নিবোধ চৈতানি কুরুপ্রবীর!॥ ১০॥ বন্ধাে বৈ বন্ধজা * বন্ধবিচ্চ. ব্রন্ধেশযো ব্রহ্মবতাৎ বরিষ্ঠঃ। ব্ৰহ্মপ্ৰেয়া ব্ৰাহ্মণসূত্ৰতী ত্ৰং. বন্ধভো বৈ বান্ধণনাঞ্চ নেতা ॥ ১১॥ স্বাহা স্বধা ত্ব~ পরমং পবিত্রং. মন্ত্রস্ততন্ত্র প্রথিতঃ বড্চিঃ। সম্বংসরস্তুং ঋতবশ্চ ষ্টেড্র, यानार्क्तमानाव * यनः किमान ॥ ১२॥ ত্বং পুষ্করাক্ষস্ত্ররবিন্দবক্ত্রঃ, সহস্রবক্তোহসি সহস্রবাহঃ। षु शाक्यां भत्र श्रिकः ত্বং ভাবনঃ সর্ব্বস্থুরাস্থরাণায় । ১৩ ।

জুফাং সেবিত । ১০॥ বৃষ্ণাবাদ্ধণে মুদাধুঃ বৃদ্ধজ্ঞ বেদোকেন গর্ভাধানাদিকর্মণাজাতঃ অতএব হেতুদ্বাধ বৃদ্ধাবিৎ বেদার্থজ্ঞাতা ততএব বিশ্বেশনিকর্মণাজাতঃ অতএব হেতুদ্বাধ বৃদ্ধাবিৎ বেদার্থজ্ঞাতা ততএব ব্যাবিদ্ধানিকর্মণ কর্মবৃদ্ধানিত। বানিতার্থঃ বৃদ্ধানিত। কর্মানিতার্থঃ বৃদ্ধানিত। কর্মানিতার্থঃ বৃদ্ধানিত। কর্মানিতার্থঃ বৃদ্ধানিত। কর্মানিতার্থঃ বৃদ্ধানিত। কর্মানিতার্থঃ তৎকর্মোপাতি পরবাদ্ধণাবৃদ্ধানিত নাম্বিদ্ধানিত। বৃদ্ধানিত বৃদ্ধানিত বৃদ্ধানিত। বৃদ্ধানিত বৃদ্ধানিত। বৃদ্ধানিত বৃদ্ধানিত। বৃদ্ধানিত বৃদ্ধানিত। বৃদ্ধানিত বিশ্বানিত। বৃদ্ধানিত বিভ্নানিত। বৃদ্ধানিত বিভ্নানিত। বৃদ্ধানিত বিত্র বৃদ্ধানিত বিভ্নানিত। বৃদ্ধানিত বিভ্নানিত। বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত। বৃদ্ধানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত। বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত। বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত। বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত। বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভ্নানিত বিভানিত বিভানি

^{*} শক্তাগগুছ মিতাত্র ভক্তাগুছ মিতি পাঠঃ ক পুন্তকে।

^{*} বন্ধবিচ্চ ইভাত্ত বন্ধবিত্ব মিভি পাঠঃ ন পুস্তকে i

শ্বর্ম বিভার অয়নে ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ত্বমেব সেনাধিপতিঃ প্রচণ্ডঃ, প্রভূর্বিভূশ্চাপ্যথ 🕈 শক্রজেতা। সহস্র ভূস্ত্রংধরণী ত্বমেব, সহস্ৰভৃষ্টিশ্চ সহস্ৰভুক্ চ । ১৪॥ সহস্রশীর্ষস্ত_ৰমনন্তৰপঃ, সহস্রপাত্ত্বং * গুহুশক্তিধারী। গঙ্গাস্থতন্তং স্বমতেন দেব, ! স্বাহামহীক্লব্ৰিকানাং তথৈব॥ ১৫॥ दः कीष्टम वंगू थं कुकूरहेन, यरथकेनानाविधकामक्त्री। **लीकां**नि * भारता त्रक्रांक त्रहेत्व, 🤲 ধর্মোহসি বাযুরচলেন্দ্র ইন্দ্র: ॥ ১৬॥ সনাতনানামপি শাশ্বতস্তং, প্রভু: প্রভূণামপি চোগ্রধন্ব।। ঋতফা কর্তা দিতিজান্তকন্ত্রু ১, জেতা রিপুণা > প্রবরঃ স্থরাণাম্॥ ১৭॥ স্থানং তপস্তৎ পরমণ ব্রমেব, পরাবরজ্ঞোহপি পরাবরস্তুম। ধর্মন্ত কামন্ত পরন্ত চৈব, ত্রত্তেজ্ব। কুৎস্নমিদ্ মহাত্মন্ ॥ ১৮॥ 11 78 11 74 11 74 11 74 11 74 11

^{*} বিভুশ্বাপাথ ইঙাত্ত বিভূশ্বাস্থ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে;

[🊁] গুৰু শক্তিধারীত্যত্ত গুৰুশক্তি ধারীতি পাঠ: ক ঘ পুস্তকে।

^{*} দীকাসিইতাত্ত্র দক্ষোহসি ইতি পাঠঃ ক ঘ পুশুকে।

ব্যাপ্তং জগৎ সর্বস্থরপ্রবীর,
শক্ত্যা মরা সংস্তৃত লোকনাথ!।
নমোহস্ত তে দাদশনেতবাহো,
অতঃ পরং বেদ্মি গতং ন তেহহম়॥১৯ দ
স্কন্দন্ত য ইদং বিপ্রঃ পঠেজ্জন্ম সমাহিতঃ।
শ্রোবয়েছাল্গণেভ্যো যং শৃণুয়াদা দিজেরিতম্॥২০॥
ধনমাযুর্যশো দীপ্তং পুজান শক্তুজয়ং তথা।
স পুষ্টিতুষ্টী সম্প্রাপ্য স্কন্দসালোক্যমাপ্রাং॥২১॥
ইত্যারণ্যকে পর্বানি মার্কণ্ডেয় সমাস্থা পর্বানি আঙ্গিরসে কার্তি^{ক্রা}
কেয়ন্তবে দ্বাতিংশদ্ধিক দিশত তমোহ্ধ্যায়ঃ॥২৩২॥

সমাপ্তঞ্চ মার্কত্তেয় সমস্থা পর্ব।



॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ইত্যারণ্যকে পর্বান নৈলকগ্যায়ে ভারতভাবদীপে স্বাভিংশদধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৩২॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

উপাদীনেষু বিপ্রেষু পাশুবেষু মহাত্ম ।
কোপদী সত্যভামা চ বিবিশাতে * তদাসনম্। ১॥
জাহস্যমানে স্থ প্রীতে স্থং তত্র নিষীদতুঃ।
চিরস্য দৃষ্টা রাজেন্দ্র। তেহ্ন্যোন্য্যা প্রিয়ম্বদে॥ ২॥
কথয়ামাসতুশ্চিত্রাঃ কথাঃ কুরুষদৃথিতাঃ।
অথাত্রবীৎ সত্যভামা রুষ্ণ্য্য মহিষী প্রিয়া॥ ০॥
সাত্রাজিতী ষাজ্ঞসেনীং রহসীদং স্থমধ্যমা।
কেন দ্রৌপদি রুজেন পাশুবান্ধিভিষ্ঠিদ ॥ ৪॥
লোকপালোপমান্ বীরান্ পুনঃ * পরমসংহতান্।
কথঞ্চ বশ্বাস্তভাং ন কুপ্যন্তি চ তে শুভে॥ ৫॥
তব বশ্যা হি সততং পাশুবাঃ প্রিয়দর্শনে।
মুথপ্রেক্ষাশ্চ তে সর্প্রে তত্ত্বেত্র্বীহি মে॥ ৬॥

পতিরতোপাখ্যানে স্চিতান্ স্ত্রীধর্মান্তির রীজুং জেপিনী সূত্যভাষা সন্থানমারউতে উপানীনের বিপ্রেমিত্যাদিনা সমং একত্ত ॥ ১ ॥ জাহদ্য-মানে পরকার মতিশয়েন হসন্ত্যো ২ ॥ কুক্ষর্থিতাঃ কুক্র্যত্ত্ব্ উৎপন্নঃ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ সংহতান্ দূঢান্ধান্ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ত্রতংশোমবার ত্রতানি তপউপবাসাদি স্থানং সন্ধানে মন্ত্রোপেত মৌষধং বনীকরণার্থং বিদ্যা-কামশান্ত্রোক্তা রতাত্তে বামপাদেন তত্লিন্দ মুখস্পূশেং ব্যক্তবিং পতি-

 ^{*} তদাসম মিত্যত্ত তদাশ্রম মিতি পাঠঃ ক পুশুকে।
 * পুন রিত্যত্ত যুন ইতি পাঠঃ ক ঘ পুশুকে।

ত্রতচর্ঘ্যা তপো # বাপিস্থানমন্ত্রৌষধানি বা। विमारीया भूनवीया अभरहामां गमा खथा ॥ १ ॥ মমান্যাচক্ষু পাঞ্চালি ঘশস্যং ভগদৈবতম্। (यन क्रस्थ ভবেলিত্যং মম क्रस्था वशासूधः । ৮ h এবমুক্ত্র সত্যভামা বিররাম যশস্থিনী। পতিব্ৰতা মহাভাগা দ্ৰৌপদী প্ৰভাবাচ তাম্ ॥ ৯ ৫ অসৎস্ত্রীণাৎ সমাচারং সত্যে মামমুপুচ্ছদি। ष्ममहोत्रिष्ठ मार्श कथ्र मान्युकीर्डनम् । >० । অনুপ্রশ্ন: সৎশয়ে। বা নৈতন্ত্র্যাপপদ্যতে। , তথা ছুপেতা বুদ্ধ্যা স্বং ক্লফ্ষ্য মহিনী প্রিয়া॥ ১১ ॥ যদৈব ভর্ত্তা জানীয়ান্মস্ত্রমূলপরাং স্ত্রিয়ম্। েউদ্বিক্তেত তদৈবাস্যাঃ সর্পাদ্বেশ্মগতাদিব ॥ ১২ ॥ উদ্বিদ্যা কুতঃ শান্তিরশান্ত্য্য কুতঃ স্থ্যম্। ন জাতু বশবেগা ভর্তা স্ত্রিয়াঃ স্যান্মস্ত্রকর্ম্মণা ॥ ১৩ ॥ অমিত্রপ্রহিতাং ক্যাপি গদান্ পরমদারুণান্। 🗱 মূলপ্রচারৈ হি বিষং প্রযক্তন্তি জিঘাংসবং ॥ ১৪ ॥ किन्त्रा यानि भूक्षयञ्जन वाभाभरमवर् । তত্ত্র চুর্ণানি দন্তানি হকুয়ঃ ক্ষিপ্রমসংশয়ম্। ১৫ ।

শুদাগর্জদানো ভবেৎ ধ্রণ মিত্যাদিকা তদ্বীর্বাং মুলবর্বাং মুলং অপাচাতং তাকণাদেতদ্বীর্বাং জপছোমাগদাঃ বিশক্ষিতাঃ সমুদিতা বা অগদােং জনাদিরৌবধং ॥ ৭ ॥ ভগদৈবতং সোভাগারেশ্ধকং সৌর ব্রতাদিকং ভগবেদন মিতিপাঠে সৌভাগান্ত্চকং বশাস্থাঃ ইছাস্থারী ॥৮॥৯॥ হেসত্যে অস্কীর্ত্তনং উত্তরং ॥১০॥১১॥১২॥১৩॥ ঔষধাদি প্রয়োগেইনিফমাই অমির্ত্তোত গ্রান্বান্য ১৪॥১৫॥জলোদরঃ উদর্রোগঃ রুকোদর ইতিপাঠে ক্ষিব্যাধি

^{*} বাপীত্যত্ত বান্তীতি পাঠঃ ক পুন্তক্স্য।

* মূল প্রচারে রিভাত্ত মূল প্রবারে রিভি পাঠঃ ক পুন্তকে।

জলোদরসমাযুক্তাঃ শ্বিত্রিণঃ পালিতান্তথা। অপুমা৲সঃ ক্বতাঃ স্ত্রীভিজ'ডাস্তবধিরাস্তথা॥ ১৬॥ পাপানুগাস্তু পাপাস্তা: পতীনুপস্জদ্ভ্যত। ন জাতু বিপ্রিয়ং ভর্ত্তঃ স্ত্রিয়া কার্য্যং কথঞ্চন ॥ ১৭॥ বঁর্ডামাহন্ত যাং রুদ্ভিং পাগুবেষু মহাত্মস্থ। তাং সর্বাণ শৃণু মে সত্যাং সত্যভামে যশস্থিনি॥ ১৮॥ षक्कातः विश्वासंकः कामदकारभो ह मर्वना । সদারান পাগুবালিত্যং প্রযুক্তাপচরাম্যহম ॥ ১৯ ॥ প্রণয়ং প্রতিসংক্ষত্য নিধায়াত্মানমাত্মন। শুক্রমুর্নিরভীমানা পতীনাং * চিত্তর কিণী ॥ ২০॥ তুর্ব্যাহ্রতাচ্চ্কমানা তুঃস্থিতাদারবেকিতাৎ। ছুরাসিতাদ্র জিতাদিঙ্গিতাধ্যাসিতাদপি॥২১॥ ऋर्यादेवश्वानतम्यान् (मायकण्याश्वात्रथान्। সেবে চকু হ্ব: পার্থ নুগ্রবীর্য্যপ্রভাপিন: ॥ ২২ ॥ **(मर्व) मनूरका शक्तरका यूवा हालि अनक्रुङः ।** দ্ৰব্যানভিৰপো বা ন মেহন্যঃ পুঁৰুষো মতঃ ॥ ২৩ ॥

ভশ্মক নামাশ্চিত্রিণঃ কুষ্ঠবন্তঃ ॥ ১৬ ॥ উপসৃজ্ঞন্তি দো বৈর্যাজয়ন্তি ॥ ১৭ ॥
॥ ১৮ ॥ সদারানিতি সপত্নীনামপি সেবনং পতিপ্রীত্যর্থং কর্ত্তর মিত্যর্থঃ
॥ ১৯ ॥ প্রণয়ং ঈর্বাং আত্মানং চিত্তং আত্মনিশ্বন্দিন নির্বাভিমানা দর্পইনা ॥ ২০ ॥ ইন্দিতং অভিপ্রায়ং অধ্যাসিতঃ ক্ষিপ্তোযন্দিন্ কটাক্ষে
ভশাং ইন্দিতাধ্যাসিতাং ॥ ২১ ॥ চক্ষুইণঃ দৃষ্টেনুব রিপুন্মন্তি তাদৃশান্
॥ ২২ ॥ অভিরূপঃ অন্দরঃ ॥ ২৩ ॥ নাভুক্তবতীতিভর্তরি অভুক্তবতিনাশামীত্য পর্ব্যাতে তথা অন্নাতে নন্নামীতিশেষঃ তথা কর্মকরেমু ভূত্যেছপি অসং বিষ্টেমুনমং বিণামি অনাশিতেমুনা শ্বনীতিচ বিপরিণামাপ-

^{*} চিক্ত রক্ষিণীতাত্র চিক্ত চারিণীতি পাঠ: য পুস্তকে।

নাভুক্তবতি নাম্লাতে নাসংবিষ্টে চ ভর্তুরি। ন সংবিশামি ন শ্লামি সদা কর্মাকরেম্বপি॥ ২৪॥ ক্ষেত্রাধনাধা আমাধা ভর্ত্তরেং গৃহমাগতম। প্রত্যুপায়াভিনকামি আসনেনোদকেন চা ২৫ ৷ প্রমৃষ্টভাণ্ডা মৃষ্টান্না কালে ভোজনদায়িনী। সংযতা গুপ্তধান্যা চ হুসং মৃট্টনিবেশনা। অ তিরক্তমন্তাষা তুঃস্ত্রেয়োনারুদেবতী। অনুকুলবতী নিত্যং ভবাম্যনল্যা সদা 🛭 ২৭॥ অন্সাচাপি হসিতং দারি স্থানমভীক্ষশঃ। অবস্করে চির্প স্থান্থ নিষ্কুটেমু চ বর্জ য়ে ॥ ২৮ ॥ অতিহাসাতিরোবৌ চ ক্রোধস্থানঞ্বর্জয়ে। নিরতাহ∼ সদা সভ্যে ভর্গামুপসেবনে ॥২৯ ॥ সর্বাথা ভর্তুরহিতং ন মগেটং কথঞ্চন। যদা প্রবসতে ভর্ত্তা কুটুস্বার্থেন কেনচিৎ॥ ৩০॥ স্কমনোবর্ণকাপেতা ভবাসি ব্রভচারিণী। যক্ত ভৰ্ত্তা ন পিবতি যক্ত ভৰ্ত্তা ন সেবতে। ৩১॥ যচ্চ নাশাতি মে ভর্তা স্কান্তৰজ্বাম্যইয়। यर्थाश्राम्य नियुक्ता वर्त्तमा वर्ताक्राम ॥ ०२ ॥ স্বলঙ্ক হা সূপ্রয়তা ভর্কুঃ প্রিরহিতে রতা। যে চ ধর্মাঃ কুটুষেয়ু শ্বশ্রা মে কথিতাঃ পুরা ৷ ৩৩ ৷

কর্মনে নযোজ্যং ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ প্রায় ভাগু। সংমার্কিত গুংহাপকরণা ॥ ২৬ ॥ অতিরক্ষত সংভাষা তিরস্কার শুনা বচনা ॥ ২৭ ॥ অনর্ম পরিহাস হীনং হসিতং হাসঃ স্থানং স্থিতিং অবস্করেতিরক্ষরোমি কিরতে রিদং রূপং উৎকরে ইতিব। নিষ্কুটেয় গৃহারামেয় ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ভতুরিহিতং ভত্বিয়োগং॥ ৩০ ॥ স্থানো বর্ণকাপেতা প্রস্কোরন্থলিপনৈশ্বর্জিতাঃ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩০ ॥ মানঃ পুজা সংকার আদেরঃ॥

ভিক্ষাবলি আদ্বমিতি স্থালীপাকাশ্চ পর্বাস্থ। মান্যানাং মানসংকারা (य हाटना विभिन्न सम ॥ ७८ ॥ তান্ সর্বানন্ত্বর্তানি দিবারাত্রমতন্ত্রিতা। বিনয়|লিয়মাংশ্চাপি কদা স্কালনাম্ভিতা ॥ ৩৫ ॥ মৃদুন্ ৰক্ষে সত্যশীলান্ সভ্যধর্মানুপালিনঃ। আশীবিধানিব জুদান্ পতীন্ পরিচরামাহ্য্। ৩৬॥ পত্যাপ্রয়োহি মে ধর্মো মতঃ স্ত্রীনাং সনাতনঃ। म (एवः मा मिक्सीना। जमा का विश्वियः हत्व ॥ ७१ ॥ অহং পতীরাতিশয়ে নাত্যশ্রে নাতিভূষায়ে। নাপি পরিবদে শতাং সর্বাদা পরিযন্তিতা॥ १৮॥ অবধানেন স্কুভগে নিভ্যোথিতত য়ৈবচ। ভর্ত্তারো বশগা মহ্যুৎ গুরুশুক্রাষ্ট্রেব চ । ৩৯ ॥ নিত্যমার্য্যামহং কুন্তীং বীরস্থুৎ সত্যবাদিনীম্। স্থাং পরিচরাম্যেতা পানাচ্ছাদনভোজনৈ:॥ ৪০॥ নৈতাসতিশয়ে জাতু বস্ত্রভূষণভোজনৈঃ। * নাপি পরিবদে চাহং তাং পৃথাং পৃথিবীসমাম্॥ ৪১॥ অফীবত্রে ব্রাহ্মণানাৎ সহস্রাণি স্ম নিত্যদা। ভুঞ্জতে রুকাপাতীয়ু যুধিষ্ঠিরনিবেশনে॥ ৪২॥ অফাশীতিস্ত্রাণি স্নাতকা গৃহদেধিনঃ। ত্রিশদাসীকএবৈকো যানু বিভর্তি যুধিষ্ঠিরঃ॥ ৪৩॥ দশান্যানি স্হ্সাণি যেষামন্নং স্কুসংস্কৃত্যু। ক্লিয়তে রুকাপাত্রীভিষ্তীনামূর্দ্ধ্রেতসাম্॥ ৪৪॥ ॥ ৩৪॥৩৫॥৩৬॥৩৭ ॥ নাভিশয়ে নাভিক্রমামি নপরিবেদন নিন্দামি॥ ৬৮ ॥ অবধানেন অপ্রমাদেন মহাৎ মম।। ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪৩॥ ৪৪॥

শ নাপীতাত্ত নাহং চাহমিত্যত বাচ মিতি প ঠঃ ক পুস্তকে।

जान गर्नान खोश्दान खोकानान * द्वापानाः। যথা পুজয়ামি স্ম পান। চ্ছাদনভোজনৈ: ॥ ৪৫॥ শতং দাদীসহস্রাণি কৌস্তেয়স্ত মধা জ্বনঃ। কমু বে যুরধারিণ্যো নিষ্ককণ্ঠাঃ স্বলঙ্ক তাঃ ॥ ৪৬॥ মহাईমাল্যাভরণাঃ স্বরণা * भागताकि छोः। মনীন হেম চ বিভ্রত্যো নৃত্যগীতবিশারদাঃ ॥ ৪৭॥। তাসাং নাম চ ৰূপঞ্চ ভোজনাজাদনানি চা সর্বাসামের বেদাহৎ কর্মা চৈব ক্লভাক্রত্য ॥ ৪৮॥ শত৲ দাদীসহস্রাণি কুতীপুত্রস্থ ধীমতঃ। পার্ত্রীহন্তা দিবারাত্রমতিথীন ভোজয়স্তাত ॥ ৪৯ ॥ শতমশ্বসহস্রাণি দশ নাগাযুতানি চ। যুধিষ্ঠির স্থানুযাত্রনিক্র প্রস্থানিবাসিনঃ॥ ৫০॥ এতদাসীত্তদা রাজ্ঞো যক্ষহীং পর্য্যপালয়ৎ। বেষা সপ্রা * বিধিপ্রেব প্রদিশাসি শৃণোমি চ ॥ ৫১ ॥ অন্তঃপুরাণাং সর্কেষাৎ ভূত্যানাক্ষৈব সর্কশঃ। আগোপালাবিপালেভ্যঃ সর্বান বেদ কুতাকুতম্॥ ৫২॥ সর্বাপ রাজঃ সমুদয়মায়ঞ্চ ব্যয়মেব চ। একাহং বেদ্মি কল্যাণি পা গুবানাং যশস্থিনি ! ॥ ৫৩॥

অগ্রহারেণ বৈশ্বদেবাতে প্রথমদেরেনারেন ॥ ৪৫॥ ৪৬॥ ৪৭॥ ৪৮॥ ॥ ৪৯॥ অনুযাত্তং বৈশ্বয়াত্তারা মপি পরিবারভূতং ॥ ৫০॥ ৫১॥ বেদবেদ্মি। ৫২॥ ৫৩॥

^{*} বেদবাদি ন ইত্যত্ত ব্ৰহ্মবাদি ন ইতি পাঠঃ ক প্তকে।

^{*} স্বর্ণাইত্যত্র স্বস্ত্রা ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

^{*} সংখ্যাইতাত্ত সংখ্যা মিতি পাঠঃ ঘ ক পুশুকে।

ময়ি সর্বাং সমাসজ্ঞা কুটুয়ং ভরতর্ষভাঃ।
উপাসনরভাঃ সর্ব্যে * ঘটয়ন্তি বরাননে॥ ৫৪॥
তমহং ভারমাসক্তমনাধ্যাং তুরাত্মভিঃ।
স্থাৎ সর্বাৎ পরিত্যজ্ঞা রাত্রাহানি ঘটামি বৈ॥ ৫৫॥
অধ্যাৎ বরুণভাৈব নিধিপূর্ণমিবোদধিম।
একাহৎ বেদ্ধি কোষণ বৈ পতীনাৎ ধর্মচারিণাম্॥ ৫৬॥
অনিশায়াং নিশায়াঞ্চ সহায়াঃ কুংপিপাসয়োঃ।
আরাধয়ন্ত্যাঃ কৌরব্যাৎ স্তুল্যা রাত্রিরহম্চ মে॥ ৫৭॥
প্রথমং প্রতিবুধ্যামি চরমং সংবিশামি চ।
নিত্যকালমহং সত্যে এতৎ সম্বদন্ৎ মম॥ ৫৮॥
এতজ্ঞানাম্যহং কর্তুং * ভর্তু সম্বন্ধ মহৎ।
অসৎক্রীণাং সমাচারৎ নাহং কুর্যান্ন কাময়ে॥ ৫৯॥
বৈশল্যায়ন উণাচ।

তচ্ছু স্বাধর্ম সহিত্র ব্যাহ্নতং ক্রফ্য়া তদা। উবাচ সভ্যা সৎক্রত্য পাঞ্চালীং ধর্মচারিনীম্॥ ৬০॥ অভিপন্নাম্মি পাঞ্চালি যাজ্ঞসেনি ক্ষমস্ব মে।

কামকারঃ সথীনাং হি সোপহাস~ প্রভাষিতম্ ॥ ৬১ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি দ্রৌপদীসত্যভামাসংবাদ পর্ব্বণি দ্রৌপদীনিজ-কার্য্য কথনে এয়স্তিং শদ্ধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৩৩ ॥

। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। সংবর্মং বলীকরণং। ৫৮। ৫৯। ৬০। আভি প্রা প্রার্থিকা। ৬১॥

> ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠায়ে ভারতভাবদীপে ত্রয়বিংশদধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৩৩॥

^{*} ঘটয়ম্ভীতাত্র ঘটন্তিশ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

^{*} ভর্তুসম্বনন মিতাত্ত্র ভর্তুসম্বনন মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ট্রেপ্রাবাচ।

ইমন্ত তে মার্গমপেতমে হং, বক্ষ্যামি চিত্তগ্রহণার ভর্তঃ। অস্মিন্ যথাৰৎ স্থি বৰ্ত্তমানা, ভর্তারমাচ্ছেৎশুদি কামিনীভাঃ ॥ ১ ॥ বৈতাদুশ্ দৈবতমস্তি সত্যে, गर्दाषु (लार्क्यु मरमवरक्यु। যথা পতিস্তম্ভ হি সর্বাকামা, লভ্যাঃ প্রসাদাৎ কুপিত চ্ন্যাৎ ॥ ২ ॥ তম্মাদপত্যং বিবিধাশ্চ ভোগাঃ. শ্যাসনান্ত্যভ্যদর্শনানি। বস্তাণি মাল্যানি ভথৈব গন্ধাঃ. স্বৰ্গশ্চ লোকো বিপুলা চ কীৰ্ত্তিঃ । ৩॥ সুথ্ সুথেনেহ ন জাতু লভ্যং, তুঃখেন সাধী লভতে সুখানি। मा क्रथमाताध्य मोक्रापन, প্রেমা চ নিত্যং প্রতিকর্মাণা চ ॥ ৪ ॥ তথাসনৈশ্চারুভির গ্রামাল্যে, मिकिनार्यारेशर्किविरिधम् गरेकः। অন্তাঃ প্রিয়োহশ্মীতি যথা বিদিম্বা, ত্বামেব সংশ্লিষ্যতি তদ্বিধৎস্ব॥ ৫॥ শ্রুত্বা স্বরং দারগতম্ফ ভর্ত্তঃ, প্রভ্যুম্বিতা তিষ্ঠ গৃহস্ত মধ্যে। দৃষ্ট্রা প্রবিষ্টং ত্রিভাসনেন, পাদ্যেন চৈনং প্রতিপূজয়স্ব। ৬॥ ইমমিতি আছেৎ স্যাসি বলাৎ হরিষ্যাস কামিনীভ্যঃ সপত্নীভাঃ ॥১॥

ा विकिश्नो काश्राक्रान्। । । । ।

नः ट्यिषिकाशां मथरेहव मांचा, মুত্থায় সর্বাং শ্বয়মেব কার্যাম। জানাতু ক্লফস্তব ভাবমেত্ৰ সর্বাত্মনা মাং ভক্ততীতি সত্যে। ৭। प्रश्निवासी यर कथरप्रर পতित्स, যদ্যপ্যগুহাৎ পরির্কিতব্যম। কাচিৎ সপত্নী তব বাস্থদেবং, প্রত্যাদিশেক্তেন ভবেদ্বিরাগঃ॥ ৮॥ প্রিয়াংশ্চ রক্তাংশ্চ হিতাংশ্চ ভর্তু, ন্তান ভোজয়েথা বিবিটধরুপাটয়:। দ্বেয়ৈর * পেক্ষেরহিতৈশ্চ তম্ভ, ভিদ্যস্থ নিত্যং কুহকোদ্যতৈশ্চ । ১॥ মদ^ প্রমাদং পুরুষেষু হিত্বা, সংযক্ত ভাবং প্রতিগৃহ্থ মৌনম্। প্রত্যুম্বশায়াবপি তে কুমারৌ, নোপাসিতবাে) বহিতে কদাচিৎ। ১০। মহাকুলীনাভির পাপিকাভিঃ, স্ত্রীভিঃ সতীভিস্তব স্থাসস্তু। চপ্তাশ্চ শৌপ্তাশ্চ মহাশনাশ্চ, Cहोत्रां क कुकें किललाक वर्क्डाः ॥ >> ॥ ॥৬॥৭॥৮॥৯॥ রহিতে বিজনে ॥১০॥ চণ্ডাঃ ক্রাঃ শৌণ্ডাঃ পরাভিভবদমর্থাঃ মহাশনাঃ বহুজঃ দৃষ্টাঃ দ্বেধাদ্যাক্রান্তাঃ জ্বিয়োবর্জ্যা-

ইতিশেষঃ॥ ১১॥

^{*} অপেকৈরিত্যত্ত অপকৈরিতি পাঠ: ক পুস্তকে।

এতদ্যশস্থাং ভগদৈবতঞ্চ,

* স্বার্থাপ তথা শকুনিবর্ধাঞ্চ।
মহার্ধমাল্যাভরণাঙ্গরাগা,
ভর্তারমারাধয় পুণ্যগন্ধা॥ ১২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি দৌপদীসত্যভামাসংবাদ পর্বাণি দৌপদীকর্ত্ব্য কথনে চতুস্ত্রিং শদ্ধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২৩৪॥

বিশাপায়ন উবাচ।

মার্কপ্রেয়াদিভিবিবৈশ্রেং পাণ্ডবৈশ্চ মহাল্পভিঃ।

কথাভিরনুকুলাভিঃ সহ স্থিলা জনার্দ্ধনঃ॥ ১॥

ততকৈঃ সম্বিদং কুলা যথাবন্ধপুস্থনঃ।
আক্রুকুর্বাং সত্যামাস্থ্যামাস কেশবঃ॥ ২॥

সত্যভামা ততন্ত্র স্থাজন সমাহিত্য়॥ ৩॥

কুষ্ণে মাভূতবোৎকঠা মা ব্যথা মা প্রজাগরঃ।
ভর্জির্দেবসঙ্গাশৈ র্জিভাং প্রাপ্সাসি মেদিনীম্॥ ৪॥

ন স্থোং শীলসম্পন্না নৈবং পূজিতলক্ষণাঃ।
প্রাপ্রুবিভি চিরং ক্লেশ্ন যথা স্থমসিতেক্ষণে॥ ৫॥

ভগদৈবতং ভাগ্যকরং॥ ১২॥

ইত্যারণাকে পর্কাণ বিশ্বতম্বাহধারঃ॥ ২৩৪॥

মার্কণ্ডেয়াদিভিরিতি॥ ১ ॥ সম্বিদংসংভাষাং ॥ ২ ॥ স্বজিতা অশ্লিষ্য ॥ ৩॥ কৃষ্ণে হেন্দ্রৌপদি ॥ ৪ । ৫ ॥

^{*} স্থামিতাত স্থামিতি পাঠ: ক **য পুস্তকে।**

অবশ্যঞ্চ ত্বয়া ভূমিরিয়^ নিহতকণ্টকা। ভর্তভিঃ সহ ভোক্তবা নির্দানে,তি প্রুতং ময়া ॥ ৬ ॥ ধার্ত্তরাষ্ট্রবধণ কুত্বা বৈরাণি প্রতিযাত্য চন যুধিষ্ঠিরস্থাং পৃথিবীং দ্রক্ষ্যদে দ্রুপদাল্পজে॥ ৭ ॥ যাস্তাঃ প্রব্রজমানাং স্বাং প্রাহ্মনু দর্পমোহিতাঃ। তাঃ ক্ষিপ্রং হতসঙ্গপা দ্রক্ষাসি স্ব৲ কুরুস্ত্রিয়ঃ ॥৮॥ তব ছুংখোপপনায়া ঘৈরাচরিতমপ্রিয়ম। বিদ্ধি সংপ্রস্থিতানু সর্বাংস্থান্ ক্লুফে যমসাদনমূ ॥ ৯ ॥ পুত্রত্তে প্রতিবিদ্যাশ্চ স্কৃতদোমস্তথা * বিভুঃ। প্রাতকর্ম।র্জ্জুনিশৈচৰ শতানীকশ্চ মাকুলিঃ 🖟 🔾 🤊 ॥ সহদেবাচ্চ যো জাতঃ শ্রুতসেনস্তবাল্পজঃ। সর্ব্বে কুশলিনো বীরাঃ ক্তান্তান্ত স্থতান্তব॥ ১১॥ অভিমন্ত্র্যরিব প্রীতা দারবত্যাং রতা ভূশম্। ত্বমিবৈষাং স্কুভদা চ প্রীত্যা সব্বাত্মনা স্কিতা ॥ ১২ ॥ প্রীয়তে তব নিদ্ব'নদু। তেভ্যশ্চ বিগতজ্বা। ছুঃখিতা তেন ছুঃখেন স্কুখেন স্কুখিতা তথা॥১৩॥ ভজেৎ সর্ব্বাত্মনা চৈব প্রত্নুমঞ্জননী তথা। ভানুপ্রভৃতিভিশৈচনান্ * বিশিন্ফি চ কেশব: ॥ ১৪ ॥ ভোজনাচ্ছাদনে চৈষাং নিত্যং মে শ্রশুরঃ স্থিতঃ। রামপ্রভূতয়: দর্কে ভজন্তাক দর্ক্ষ ॥ ১৫॥ নিম্বলিম্প্তিপকা ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ১॥ ১০॥ ১:॥ ১২॥ ১৬॥ ১৪॥ 11 30 1

তথাবিভুরিত্যত্ত তথাবিধ ইতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

 « এনান্ ইত্যত্ত এতান্ ইতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

ভুল্যো হি প্রণয়ন্তেষা^ প্রজ্যাস্থা চ ভাবিনি।

এবমাদি প্রিয়্রণ সতাং ক্লামুক্ত্বা মনোহনুগ্র্য় ॥ ১৬ ॥

গমনায় মনশ্চক্রে বাস্কুদেবরথং প্রতি।

তাং ক্ষণং ক্ষমহিষী চকারাভি প্রদক্ষিণ্য্ ॥ ১৭ ॥

ভারুরোহ রথং শৌরেঃ সত্যভামাথ ভাবিনী।

শ্ময়িস্থা ভু যত্তপ্রেঠো দ্রৌপদীং পরিসাস্থা চ।

উপাবত্য তিঃ শীদ্রৈছিইয়ৈঃ প্রায়াৎ পুরং স্বকং * ॥ ১৮ ॥

ইত্যারণাকে প্রাণি দ্রৌপদীসত্যভামাস্থ্যায়ঃ ॥ ২০৫ ॥

সমাপ্তঞ্চ জৌপদীসত্যভামাসংবাদ পর্ব।



প্রণয়ঃ ক্ষেছঃ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ উপাবর্ত্য পাগুবানিজিশেষঃ ॥ ১৮ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকণ্ঠায়ে ভারতভাবদীপে পঞ্চত্রিংশদধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৩৫ ॥

^{*} স্বক্ষিত্যত্ত তদেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।



এবন বর্ত্তমানা নরাগ্রাঃ.
শীতোঞ্চবাতাতপকর্ষিতাঙ্গাঃ।
সরস্তদাসাদ্য বনঞ্চ পুণ্যং,
ততঃ পরং কিমকুর্বস্ত পার্থাঃ। ১॥
বৈশন্পায়ন উবাচ।

সরস্তদাসাদ্য তু পাণ্ডুপুজা,
জনং সমুৎস্ক্য বিধায় বেশম্।
বনানি রম্যশিগ্রথ পর্বতাংশ্চ,
নদীপ্রদেশাংশ্চ তথা বিচেরুঃ ॥২॥
তথা বনে তান বসতঃ প্রবীরান,
স্বাধ্যায়বন্তশচ তপোধনাশ্চ।
অভ্যাযযুর্ব্বেদবিদঃ পুরাণা,
স্তান পুক্রমামস্কর্থো নরাগ্র্যাঃ ॥ ৩॥
ততঃ কদাচিৎ কুশলঃ কথাস্থ,
বিপ্রোহভ্যগচ্ছতুবি কৌর্বেয়ান্।
স তৈঃ সমেত্যাথ যদৃচ্ছরৈব,
বৈচিত্রবীর্যাং নুপমভ্যগচ্ছৎ ॥ ৪॥

এবংবনে বর্ত্তমানা, ইত্যাদেঃ স্বপুরং বিবিশুন্ত দেতান্তরস্য প্রস্থান ঈর্ষা-লুহ্ হ্যোধনবদপ্যানং প্রাপ্নোতিসাধুন্চ যুধিটির বচ্চত্ত্র-পুমুপকরোতীতি তাৎপর্যাং সরোচ্চত্ত্বনন্ত্র ॥ ১ ॥ জনর সমুদায়ং বেশং গৃহং নদী প্রদে-শান্ত্রসমীপ স্থানেচ ॥ ২ বনে দ্বেবনে ॥ ৩ ॥ সুপং প্রতর্ত্তিং ॥ ৪ ॥

२७७ घर

অথোপবিষ্টঃ প্রতিসংক্রডক, বৃদ্ধেন রাজ্ঞা কুরুসন্তমেন। প্রচোদিতঃ র সংকথয়ায় সূব, ধর্মানিলেক্ত প্রভবান যমৌ চ। ৫॥ কুশাংশ্চ বাতাতপক্ষিতাক্সান্, তু:খন্য চে:গ্রাম্য মুখে প্রপন্ন। তাঞ্চাপ্যনাথামিব বীরনাথাং, ক্ষাং পরিক্লোগুণেন যুক্তাম।। ৬।। ততঃ কথান্তদ্য নিশম্য রাজা, বৈচিত্ৰবীৰ্যাঃ কুনয়াভিতপ্তঃ। বনে তথা পার্থিবপুত্রপৌত্রান্, শ্রুত্বা তথা চুঃখনদীং প্রপন্নান ॥ ৭॥ প্রোবাচ দৈন্যাভিহতান্তরালা, নিশ্বাস্বাতোপহত্তদানী্যু। বাচৎ কথঞ্চিৎ স্থিরতামুপেত্য, তৎ সর্বমাত্মপ্রভবং বিচিষ্টা ॥ ৮॥ কথং নু সত্যঃ শুচিরার্য্যরুত্তো, ছজ্যক্ঠঃ স্কুতানাং মম ধর্মরাজঃ। অজাতশক্রঃ পৃথিবীতলে স্ম, শেতে পুরা রাঙ্কবকূটশায়ী ॥ ৯ ॥

॥ ৫ ॥ ও ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ রক্ষোষ্ণ বিশেবস্য লোমরাশিমন্ত্রী ভূলিকা রাক্ষর কূটং

^{*} স মিতাত স ইতি পাঠঃ ক পুশুকে।

প্রবোধ্যতে মাগধস্থতপূর্বগ, র্নিত্যং স্তবন্ধিঃ স্বয়মিন্দ্রকণ্পঃ। পতজ্ঞিসংঘঃ স জঘন্যরাত্তে. প্রবোধ্যতে মূনমিডাতলস্থঃ॥ ১০॥ কথ্ নু বাতাতপক্ষিতাকো, রকোদরঃ কোপপরিশ্লভাঙ্গঃ। শেতে পৃথিব্যামতথোচিতাঙ্গঃ, রুফাসমক্ষৎ বস্থাতলম্বঃ॥ ১১॥ তথार्জ्ज्नः स्रक्रगादता मनश्री, বশে স্থিতো ধর্মস্কুত্স্য রাজ্ঞঃ। বিদুয়মানৈরিব সর্বাগাতৈ, ধ্রুবং ন শেতে বসতীরমর্যাৎ॥ ১২॥ यरमो ह क्रकांक युधिकितक, ভীমঞ্ দৃষ্টা স্থাবিপ্রযুক্তম্। বিনিশ্বসন দৰ্প ইবোগ্ৰতেজা, ধ্রুবং ন শেতে বসতীরমর্যাৎ॥ ১৩॥ তथा यस्मी हाभास्य तथी स्थारही, मग्रुक्षकशाविमद्रो ि क्रिवीव। প্রজাগরছো ধ্রুবমপ্রশান্ত্রো, ধর্মেণ সত্যেন চ বার্য্যমাণো॥ ১৪॥ मभीतर्वनाथ मरमा वरलन, সমীরণ সৈয়ব স্থতে। বলীয়ান। স ধর্মপাশেন সিতোহগ্রজেন, ধ্রুবৎ বিনিশ্বস্য সহত্যমর্ষ্য ॥ ১৫॥ ইডাতলন্থঃ ভূতলন্থঃ ইডাতু বুধযোষিতি দৌরভেয়াঞ্চ বচনে বস্থু মত্যা মপিজিয়া মিতি মেদিনী॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ উতাতেজা অর্কঃ॥ ১৩॥ প্রজাগরছো ভুবিশয়াতে ইতি শেষ:। ১৪॥ ১৫॥

স চাপি ভূমৌ পরিবর্ত্তমানো, বধং সূত্ৰিং মম কাজ্জমাণঃ সভোন ধর্ম্মেণ চ বর্য্যমাণঃ, কালং প্রতীক্ষতাধিকো রণেহন্যৈঃ ১৬ ছ অজাতশত্রৌ তু জিতে নিক্নত্যা, দ্বঃশাসনো যৎপরুষাণ্যবোচং। তানি প্রবিষ্টানি রকোদরাঙ্গং, দহন্তি ককাগ্লিরিবেক্সনানি ॥ ১৭ % ন পাপকৎ ধাষ্ঠতি ধর্মপুরো, ধনঞ্জয়শ্চাপ্যন্ত্রবং স্থাতে তম্ অরণ্যবাদেন বিবর্দ্ধতে ভু ভীমন্ত কোপোংগ্রিরিবানিলেন ৷ ১৮ ৷ স তেন কোপেন বিদ্যুমানঃ, কর্প করেণাভিনিপীড়া বীরঃ। বিনিশ্ব সিত্যুফ্মতীবঘোরং, দহন্নিবেমান্তম পুত্রপৌত্রান ॥ ১৯ ॥ গাঞীবধন্বা চ রকোদরশ্চ, সংর্দ্ধিণাবস্তককালকপ্পৌ। ন শেষয়েতাং যুধি শক্রসেনা ১, শরান কিরন্তাবশনি প্রকাশান ॥ ২০॥ দুর্য্যোধনঃ শকুনিঃ স্থতপুজো, তুঃশাসনশ্চাপি সুমন্দচেতাঃ। মধু প্রপশ্বন্তি ন তু প্রপাতং, যদ্যতমালয়া হরন্তি রাজাম ॥ ২১ ॥ অন্যৈ: অন্যভ্যঃ অধিকঃ প্রভীক্ষতীত্যপ্রাপ পদাভাবেপিক্ছান্ধ্যা গৰ্হায়াং লট্ ১৬॥১৭॥১৮॥১৯॥२०॥२১॥

শুভাশুভ^ কর্মা নরো হি কুত্বা, প্রতীক্ষতে তম্ম ফলৎ সা কর্তা। স তেন মুহাত্যবশঃ ফলেন, মোকঃ কথং স্থাৎ পুরুষম্ম তসাৎ ৷ ২২ ॥ ক্ষেত্রে স্কুন্টে হ্রাপিতে চ বীজে, দেবে চ বর্ষত্যভুকালযুক্তম। ন ভাৎ ফলং তন্তা কুতঃ প্রসিদ্ধি, ্রনাত দৈবাদিতি চিত্তয়ামি॥ ২৩॥ কুত্ৰু মতাক্ষেণ্ যথা ন সাধু, সাধুপ্রারত্তেন চ পাওবেন। ময়া চ তুষ্পাত্রবশানুগেন, যথা কুৰুণ।ময়সন্ত কালঃ॥ ২৪॥ ধ্রুবং প্রবাস্যত্যসমীরিতোহ্পি, ধ্রবং প্রজাম্ভত্যত গর্ত্তিনী যা। क्ष्य किर्नाटमी तक्षनी व्यवास, ख्या क्रशासी ह मिन अवागः । २०॥

শুভেতি ফলং স্বর্গনরকরপং তেন মুদ্দা ভুস্মারমাক্ষেন্তিতার্থঃ
॥২২॥ দৃষ্ট সামপ্রাণং সভ্যামপি দৈব প্রাভি কুস্যাৎ ফলং নজায়ত
ইত্যাহ ক্ষেত্রে ইতি উপিতে ভারেও এবং মচিতরে ভুর্যোগনাদীনাঞ্চতিতে
কুদ্ধহিতোপদেশো রুগা ভবতীতি ভাবঃ ॥২০॥ যথান সাধুসশুভং
স্যাত্তথামতাক্ষেণ শকুনিনাকতং পাণ্ডবেন চ তদানীমেব তাব আনিম্নতা
সাধুকৃতং মরাচ তথাকৃতং যথায়ং অন্তক্ষাল উপস্থিত ইতি শেষঃ ॥২৪॥
প্রবান্তিতি বাত ইতি শেষঃ প্রজাতি অপভাং জনয়িষ্যতি ক্ষপাদৌ
রাত্রাদৌ এত্র পাপত্য ফলং অপরিহার্ঘ মিতি ভাবঃ ॥২৫॥ কথং
ভর্ষি প্রাবেতিরচিত্তিত মিতা। শক্ষাহ ক্রিয়েতেতি যদ্যেবং বিবেত্র

ক্রিয়েত কন্মাদ পরে চ কুর্য্যু,
ক্রিন্তে ন দত্যুঃ পুরুষাঃ কথঞ্চিৎ।

* প্রাপ্যার্থ কালঞ্চ ভবেদনর্থঃ,
কথং স্তু তৎস্থাদিতি তৎ কুতঃ স্যাৎ॥২৬॥

কোনুণাং ভবেৎ তর্হি বিভং কন্মাদ্ধেতে রম্মদাদি রন্যায়েনাপি ক্রিয়েত সাধয়েৎ ত্বং মুর্খ্বেসীতিচেৎ অপরেপি পূর্ব্বে রাজানঃ কমাৎ বিত্তং কুর্যুঃ অর্জমেয়ঃ অর্জিতং বা বিত্তং পুরুষাঃ সাধবোপি কথঞিং ধর্ম কামাদ্যর্থেবা কলার্ম্বভাঃ নপরিত্যজেয়ুঃ তলাৎ প্রাণিনাং বিত্তসার্ভনে অর্জিভন্ম পালনেচ স্বাভাবিকী বুদ্ধির পবিহার্ধ্যেতি ভাবঃ বিত্তেনেতি গৌড পাচেতু বিত্তেন হেতুনা বিত্তার্থং কমাৎ ক্রিয়েত যত্ন ইতি যত্নং কুরুর্ব রিতি চ অধ্যাহ্মতা যোজাং কর্ধঞ্চ দৃহ্য রিতি হস্তাজরঞ্চ তৈয়ে শেক্তং নম্বৰ্জনাভাবে এব কোদোষ ইত্যত আহ প্ৰাপ্ৰেয়তি অৰ্থকালং অর্থসাধ্যদারক্রিয়াদি কালং যৌবনাদিকং প্রাপ্য অনর্থঃ ব্যাকুরত্তং ভবেৎ তদেবাছ তৎধনসাধাৎ কার্যাৎ কথং ভকেন প্রকারেণ বা মমনিধ-নস্তস্তাৎ কুতোবা উপায়াৎ তৎধনং মমনিদৈবস্তস্তাৎ সংপদ্যেতেতি চিন্তারপোহনর্থঃ দ্যাদেবেতার্থঃ । ২৬ ॥ নবেব মর্থদা ইদানী মপ্যনর্থ-কর হং জানতা ত্বয়া পাণ্ডবানামংশঃ স্থতাজস্ততশ্চননাশ শঙ্কান্তি ইত্যা শক্ষাহ কথং মু ইতি পুত্ৰৰ পশুৰচ্চ পিণ্ডীভূতঃ প্ৰিয়তমশ্চাৰ্থঃ কথং নু ভিদ্যেত দ্বিধাভবেং বৈণ্রিব করপত্তেণ ন কথঞ্চিন্তেত্ত্বং শক্য ইতি ভাবঃ নচত্রবেত আমপাত্রাজ্ঞল মিব স্তোকং স্তোকমপি ন বহির্গচ্ছেৎ প্রার্থনারাং লিঙ্ এবমহং প্রার্থানি তেন পরে প্রাম পঞ্কমপি যাচিতং তেৰ দাস্যামীত দৰ্শিতং ন চ প্ৰসিচ্যেৎ পাত্ৰধাৰয়াবা ন বহিৰ্গচ্ছেত্ৰনাৰ্দ্ধ রাজা দানং স্থতরাং নদেয় মিত্যক্তং ইতি হেতোধনিং রক্ষিতবামেব

^{*} প্রাপার্যে ইত্যত্র প্রাপ্যা থেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

কথন্ন ভিদ্যেত ন চ অবেত. ন চ প্রসিচ্যেদিতি রক্ষিতব্যমু ! অরক্ষ্যমানং শতধা প্রকীর্য্যে, দ্ব ব ন নাশোহস্তি কুতন্ত লোকে। ২৭ ॥ গতো হ্রণ্যাদপি শক্রলোক~, ধনপ্রয়ঃ পশাত বীর্য্যমন্ত। অস্ত্রাণি দিব্যানি চতুর্বিধানি, জ্ঞাত্বা পুনর্ব্বোকমিম প্রপন্নঃ ॥ ২৮॥ স্বর্গং হি গত্বা সশরীর এব, কো মানুষং পুনরাগন্ত মিচ্ছে । অন্যত্র কালোপহত ননেকান, সমীক্ষাণস্ত কুৰন্ মুমুষূ ন্॥ ২৯॥ ধরুপ্র হেশ্চার্জ্বঃ সব্যসাচী, ধনুশ্চ তদ্গাণ্ডিবং ভীমবে গম্। অস্ত্রাণি দিব্যানি চ তানি তম্ভ, ত্রয়স্ত তেজঃ প্রসহেত কোহত্র ॥ ৩০॥

নজোক মৰ্দ্ধং বা তেভাঃ প্রদেয় মিতি ভাবঃ তত্ত্ব হেতুঃ অরক্ষামাণং শতধা প্রকীর্ধ্যেদিতি অর্থনাশ এব মহাননর্থ ইত্যর্থঃ নর্থেনাপি পুত্রনাশঃ সংভাব্যত ইত্যা শঙ্ক্যাহজ্রব মিতি তেষাং মরনং হর্গতির্বাইদব কতা ভ্রিবার্থ্যা কিমর্থদানেন প্রত্যক্ষ হৃংথে নেতি ভাবঃ ॥২৭॥ কিঞ্জুল্লাংশভাগিনো দায়াদদ্যোৎ কর্যাপি হৃঃসহ ইত্যাশয়েনাহ গত ইত্যাদিনা ॥২৮॥ অন্যত্ত্র স্বর্গে স্থান বিশেষ মহিয়াদিব্যজ্ঞান সম্পন্নোর্জ্নঃ ক্রম্মুর্যুন্ সমীক্ষমাণঃ কোপি মাহ্যো নান্তীত্যর্থঃ ॥২৯॥ ৩০॥ অহ্যেটা মৃত্যু ভয়াৎ সচাথ হন্ত ইতি পাঠে হন্তঃ পাওবেভ্যোম্পাপ

নিশ্ম্য তদ্বচনং পার্থিবস্থা,
তুর্ব্যোধনং রহিতে সৌবলোহ্থ।
অবোধয়ৎ কর্ণমূপেত্য সর্বা,
তিন্দু চাপজেক্টোগুডুবদপ্পচেতাঃ ॥ ৩১ ব

ঁ স চাপ্যহ্নফৌহভবদপ্পচেতাঃ ॥ ৩১ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্কানি ঘোষযাত্রা পর্কানি ধ্বতরাষ্ট্রখেদে ষট্তিং শদ্ধিক দ্বিশত তমে হুধ্যায়ঃ ॥ ২৩৬ ॥

रियमान्याम छेत्राह ।

ধ্বুটরাষ্ট্রস্থা তদ্ধান্যং নিশম্য শকুনিস্কদা। ছুর্য্যোধনমিদং কালে কর্ণেন সহিত্যোহত্তবিং॥ ১॥

- প্রবাজ্য পাগুরান্ বীরান্ স্বেন বীর্যোণ ভারত!। ভুজেকুমাং পৃথিবীমেকো দিবং শম্বরহা যথা॥২॥

প্রাচ্যাশ্চ দাক্ষিণাত্যাশ্চ প্রতীচ্যোদীচ্যবাসিনঃ।
কৃতাঃ কর প্রদাঃ সর্বের রাজানস্তে নরাধিপ। ॥ ৩ ॥
যা হি সা দীপ্যমানেব পাগুবানতজং প্রা।
সাদ্য লক্ষীস্থয়া রাজন্মবাপ্তা ভ্রাতৃতিঃ সহ ॥ ৪ ॥
ইন্দ্র প্রস্থাতে যাং তাং দীপ্যমানাং যুগিন্ঠিরে।
অপশ্যাম * প্রিয়ং রাজন্ দৃশ্যতে সাত্রাদাবৈ ॥ ৫ ॥

শত্রবস্তব রাজেন্দ্র! নচিরং শোক কর্ষিতাঃ। সা * তু বুদ্ধিবলেনেয়ং রাজ্ঞস্তমাদ্যুধিটিরাং॥ ৬॥

নদেয় মিতি প্তরাফ্র প্রতিজ্ঞা প্রবণং ॥ ৩১ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাদি নৈলকগ্রায়ে ভারতভাবদীপেষট্ ডিংশদধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৩৬ ॥

প্পতরাক্রস্যেতি ॥ ২ ॥ প্রতীচন উদীচা শ্চদেশব্সদ্বাদিনঃ তেম্বরা ॥ ৩ ॥ সাদ্যাংসাদ্যাত্ত্ব নাশস্তিত্ব যোগ্যাঃ শত্রব স্তেবাং লক্ষ্মীঃ সাদ্যলক্ষ্মীঃ। ৪ ॥ ৫ ॥ নচিরং অস্পাকালং শোক কর্শিতাঃ অতস্ত্বৎ প্রতিজ্ঞাতোম্মাবং মুখং কালোভূয়ানস্তীতিভাবঃ সাভূজীঃ ॥ ৬ ॥

^{*} প্রিয়ং রাজন্ দৃশ্যতে সাতবাদ্যবৈইতাত্ত মহারাজ নচিরং শোক কর্মিতাঃ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

^{*} সাতু বুদ্ধিবলেন ইতাস্য পূর্ব্বাদ্ধিং কুপুস্তকে নাল্ডি।

ज्यांकिश्वा महावादश! मीतायात्वव मुख्य ह । তথৈব তব রাজেন। রাজানঃ পরবীরহন । १॥ শাসনেহধিষ্ঠিতাঃ সর্বেক কিং কুর্ম্ম ইতি বাদিনঃ। # তেবয় পৃথিবী রাজনিখিলা সাগরামুরা॥ ৮॥ স পর্বেত্রনা দেবী স্থামনগর।করা। নানাবনোদেশবতী প্রত্তেশ্বরণপোভিতা । ৯॥ বন্দামানো ছিজৈ রাজনু! পুজামানশ্চ রাজভিঃ। পৌक्रवाकित परतिषु खोङ्ग तिभागानिव॥ ১०॥ ক্লুট্রেরিব যুগো রাজা মক্লুদ্রিরিব বাসবঃ। কুরুভিন্তং রুতোরাজন্! ভাসি নক্ষত্রাড়িব॥ ১১॥ থৈঃ স্ম তে নাজিয়েভাজ্ঞান চ তে শাসনে স্থিতাঃ। পশামন্তান শ্রেয়া হীনান্ পাওবান বনবাসিনঃ॥ ১২॥ জায়তে হি মহারাজ! সরো দৈতবনং প্রতি। বসন্তঃ পা গুৰাঃ সাৰ্দ্ধন ব্ৰাহ্মণৈৰ্ব্যবাসিভিঃ॥ ১৩॥ স প্রয়াহি মহারাজ! প্রিয়া পরময়। যুতঃ। তাপয়ন পাওপুত্রং স্ত্র রশ্মিমানিব তেজসা॥ ১৪॥ স্থিতো রাজ্যে চ্যুতান্ রাজ্যাৎ শ্রিয়া হিনাঞ্জি রার্ভঃ। অসমুদ্ধান সমৃদ্ধার্থঃ পশ্য পাওুস্কতার প ! : ১৫ ॥ মহাভিজনসম্পন্নং ভদ্রে মহতি সংস্থিতম। পাপ্তবাস্ত্রাভিবীক্ষন্ত * যথাতিমিব ন।ছ্ধম্ ॥ ১৬ ॥ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ বন্দামানঃ স্ত্রমানঃ দিজৈ দ্রৈবণি কৈঃ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ नाजिएएक नामुका॥ ३२ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३৫ ॥ व्यविश ॥ ३७ ॥

^{*} তেবন মিতাত্র তবাদ্যোতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

^{*} পর্বাত রিভ্যত্র পত্তনৈরিভি পাঠঃ ক পুস্তকে।

^{*} বীক্ষপুইত্যত্র বীক্ষন্তা মিতি পাঠঃ কপুস্তকে।

যাং শ্রিয়ং স্কেল্ডেব ছুর্ছ দক্ষ বিশাম্পতে!।
পশ্যন্তি পুরুষে দীপ্তাং সা সমর্থা ভবত্যুত!॥ ১৭॥
সমস্থো বিষমস্থান্ হি ছুরু দো যোহভিবীক্ষতে।
জগতীস্থানিবাদ্রিস্থা কিমতঃ পরমং স্থেম্॥ ১৮॥
ন পুত্রধনলাভেন ন রাজ্যেনাভিবিন্দতি।
প্রীতিৎ নূপতি শার্দ্দূল! যামমিত্রাঘদর্শনাৎ॥ ১৯॥
কিন্নু তম্ম স্থাং ন স্থাদাশ্রমে যো ধনপ্তয়ম্।
অভিবীক্ষেত সিদ্ধার্থো বল্ফলাজিনবাসসম্॥ ২০॥
স্থাসন্সোহি তে ভার্যা বল্ফলাজিনস্প্রতাম্।
পশ্যন্ত ছুংখিতাং কুষ্ণাং সা চ নির্বিদ্যতাং পুনঃ॥ ২১॥
বিনিন্দ্রাং তথাত্মানং জীবিতঞ্চ ধনচ্যুত।
ন তথা হি সভামধ্যে তম্ভা ভবিতুমইতি।
বৈমনস্থাং যথা দৃষ্ট্যা তব ভার্যাঃ স্থলস্ক্তাঃ॥ ২২॥

বৈশন্দ্যায়ন উবাচ।

এবমুক্ত্বা তু রাজানং কর্ণ: শকুনিনা সহ।
তুফীষ্বভূবতুরুভৌ বাক্যান্তে জনমেজয়! ॥ ২৩ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি ঘোষ্যাত্রা পর্বাণি কর্ণ শকুনিবাক্যে
সপ্ততিংশদধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৩৭ ॥

সমর্থা স্থলাং হর্ষং শতুনাঞ্চ শোকং দাতুমিতি শেষঃ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥
সমিত্রেম্ঘদর্শনাং স্থাং ভ্রংখং স্থান্তব্যসনে ছঃখে ছুরিতে চন পুংসক
মিতিমেদিনী ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ নির্বিদ্যতাং জীবিতাদ্পি বিরক্তা ভবতু ॥ ২১ ॥
১২ ॥ ২৩ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারজ ভাবদীপে সপ্তান্ত্রিংশদধিক দ্বিশততমোহধ্যারঃ ॥ ২৩৭॥

रिवर्गण्यात्रम छेराह । কর্ণস্থ বচনং প্রুদ্ধা রাজা দুর্য্যোধনস্ততঃ। হৃটো ভুত্বা পুনর্দীন ইদং বচনমত্রবীং । ১ ॥ <u>ज्रवीिष यतिष्ट कर्न । मर्न्टर मनमि ८म ऋउम् ।</u> ন স্বভানুজ্ঞাপ লক্ষ্যামি গমনে যত্র পাপ্তবাঃ॥ ২॥ পরিদেবতি তান্ বীরান গুতরাষ্ট্রো মহীপ্তিঃ। মন্যতেইভাধিকাং শ্চাপি তথে যোগেন পাগুৱান ॥ ৩॥ অথবাপানুরুধ্যেত নূপোহশা কং চিকীর্ষিতয়। এবমপ্যায়তি৲ রক্ষরাভ্যন্তজ্ঞাতুমইতি॥ ৪॥ न हि देवज्वरन कि शिक्षिष्ठमार छ ना धरा छन्। উৎসাদনমূতে তেষাং বনস্থানা<u>∼ মহাত্রাতে ! ॥ ৫ ॥</u> জানাসি হি মথা ক্ষন্তা দ্যুতকাল উপস্থিতে। অত্রবীদ্যক মাং ত্বাঞ্চ সৌবলঞ্চ বচন্তদা॥ ৬॥ তানি সর্বাণি বাক্যানি যজানাৎ পরিদেবিতম। বিচিন্ত্য নাধিগজামি গমনায়েতরায় বা ॥ ৭ ॥ यभाषि हि सङ्गन् इर्धा यहदः जीसकास्त्रती। ক্লিফাবরণ্যে পশ্যেয়ং কুষ্ণর। সহিত্যবিতি । ৮। ন তথা ছাপ্ল রাং প্রীতিমবাপা বস্তুধামিমাম্। দুষ্টা যথা পাণুসুতান্ বল্কলাজিনবাসসং॥ ৯॥ किन स्थानिधकः ख्यान्यम् क्रानाज्ञाम्। Cक्रोलनीर कर्न शरश्चार कावायवननार वरन ॥ >०॥ যদি মাং ধর্মাজন্চ ভীমদেনন্চ পাগুবঃ। যুক্তং পরময়। লক্ষ্যা পখ্যেতা পজীবিতম্ভবেৎ । ১১।

কর্ণস্রেতি । ১ । ২ । ৩ । আরতিং উত্তরকালং ।।৪।৫।৩। ইতরায় অবস্থানায় নাধি গচ্ছামি অধিগমং নিশ্চয়ং ন প্রাপ্তোমি । ৭ । ৮ ॥ ৯ । ১০ ॥ লক্ষ্যা-উপেতং পঞ্জেতাঞ্চেজ্জীবিতং যুক্ত মিতি সম্বন্ধঃ ॥ ১১ ॥

উপায়ং ন তু পশ্চামি যেন গছেম তম্বনম। যথা চাভানুজানীযাদাভ্তঃ মাং মহীপতি:॥ ১২ ॥ স সৌবলেন সহিতত্তথা তুঃশাসনেন চ। উপায়ং পশু নিপুনং ষেনগচ্ছেম তম্বনম্। ১৩ ।। অহমপ্রদ্য নিশ্চিত্য গমনায়েতরায় বা কল্যমেব গ্রিষ্যামি সমীপং পার্থিবস্ত হয় ১৪ ম ময়ি তত্ত্বোপবিফে তু ভীয়ে চ কুরুসত্তমে। উপায়ো যো ভবেচ্চস্টস্তং বয়াঃ সহসৌবলঃ 🕠 🤉 🖫 বচো ভীয়ান্তা রাজ্ঞশ্চ নিশম্য গমনৎ প্রতি। ব্যবসায় করিষ্যে হ্রমনুমীয় পিতামহম্। ১৬। তথে হ্যক্তা হু তে সর্কে জগ্ম রাবস্থান্ প্রতি। ব্যুষিতায়াং রজন্যান্ত কর্ণো রাজানমভ্যয়াৎ॥ ১৭ । ততো ছুর্যোধনং কর্ণ: প্রহুসন্নিদমন্ত্রবীৎ। উপায়ঃ পরিদুষ্টে হয়ং তরিবোধ জনেশ্র ! ॥ ১৮॥ ঘোষা দ্বৈতবনে সর্বে ত্বৎপ্রতীক্ষা নরাধিপ ! । ছোব্যাকাপদেশেন গমিষ্যামো ন সংশয়ং ॥ ১৯॥ উচিত্তৎ হি সদা গম্ভং ঘোষযাত্রাং বিশাম্পতে !। এবঞ্জাং পিতা রাজন্! সমনুক্তাতুম ইতি॥ ২০ । তথা কথ্যমানৌ তু ঘোষঘাতাবিনিশ্চয়ম। গান্ধাররাজঃ শকুনিঃ প্রভ্যুবাচ হসন্নিব ॥ ২১ । উপাযোহয়ং ময়া দুষ্টো গমনায় নিরাময়ঃ। অনুজ্ঞান্ডতি নো রাজা * বোধরিষ্যতি চাপ্যুত॥ ২২॥

॥ ১২॥ ১৩॥ कमार प्यांजः ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ ছোবাগোরজাঃ ॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ অয়মুপারো ছোববালৈব ॥ ২২॥

শ ব্যেধরিষাতীতাত্ত চোদরিষাতীতি পাঠ: ক পুস্তকে।

ঘোষা দৈতবনে সর্বে ত্বৎপ্রতীক্ষা নরাধিপ ! । ঘোষযাত্রাপদেশেন গমিষ্যামো ন সংশয়ঃ ॥ ২৩ ॥ ততঃ প্রহসিতাঃ সর্বে তেহন্যোন্যস্ত তলান্ দত্য়ঃ । তদেব চ বিনিশ্চিত্য দদৃশুঃ কুরুসভ্তমম্ ॥ ২৪ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি ঘোষযাত্রা পর্বাণি ঘোষযাত্রামন্ত্রণে অফতিংশদধিক দিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৩৮ ॥

देवसम्याश्चम छेवात।

ধৃতরাষ্ট্রং ততঃ সর্বে দনৃশুর্জনমেজয়ঃ!।
পৃথী সুখনথো রাজ্ঞঃ পৃন্টা রাজ্ঞা চ ভারত!॥১॥
তততৈর্বিহিতঃ পূব্দং সমঙ্গো নাম বল্লবঃ।
সমীপস্থান্তদা গাবো ধৃতরাষ্ট্রে নাবেদয়ৎ॥২॥
আনন্তরঞ্চ রাধেয়ঃ শকুনিশ্চ বিশাম্পতে!।
আহতুঃ পার্থিবশ্রেষ্ঠ ধৃতরাষ্ট্রং জনাধিপম্॥৩॥
রমণীয়েষু দেশেষু ঘোষাঃ সংপ্রতি কৌরব!।
* আহণে সময়ঃ প্রাপ্তো বৎসানামপি চাঙ্কনম্॥৪॥
ফুগয়া চোচিতা রাজন্মিন্ কালে স্কৃতক্ত তে।
ফুর্য্যোধনক্ত গমনং সময়ুজ্ঞাতুময়্সি॥৫॥

॥ ২৩॥ তলান হস্ততলানি॥ ২৪॥

ইতাগুরণাকে পর্ব্যণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে অফ্টব্রিংশদধিক দিশত তমোহধাগায়ঃ॥ ২০৮॥

প্রতরাফ্র মিতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ আরিলে আরল ছেতে কর্মণিগবাং সংখ্যা পূর্বকং ইবরোবর্ণজা, তনামাং লেখনে আরণাসময় ইতি গৌডাঃ পঠন্তি ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ বিশ্রন্তঃ বিশ্বাসোন গভব্যো ন কর্তব্যঃ পাণ্ডবৈর্ভেদিতা তে-

^{*} সারণে ইত্যত্ত স্মারণা ইতি পাঠঃ কপুস্তকে।

প্রতরাফ্র উনাচ। মুগয়া শোভনা তাত! গবাং হি সমবেক্ষণম্। বিশ্রস্তু ন গল্ভব্যো বল্লবানামিতি শ্বরে॥ ৬॥ তে তু তত্ত নরব্যাদ্রাঃ সমীপ ইতি নঃ প্রুতম্। অতো নাভ্যনুজানামি গমনং তত্র বং শ্রম্। ৭। ছত্মনা নিৰ্জ্বিতান্তে তু কৰ্ষিতাশ্চ মহাবনে। তপোনিত্যাশ রাঘের সমর্থাশ মহারথাঃ॥৮॥ ধর্মারাজোন সংক্রুধ্যেন্দ্রীমসেনস্থ, মর্ধাঃ। যজ্ঞসেনভা ছুহিত। তেজ এব ভু কেবলম্॥ ১॥ যুয়ঞ্চাপাণরাধোযুদপ্মোহ্যমন্তিত।ঃ। ততো বিনিৰ্দহেয়ুত্তে তপদা হি সমন্বিতা:॥ ১০॥ ঁ অথবা সাযুধা বীরা মলুরুনাভিপরিপ্লভাঃ। সহিতা বন্ধনিস্ত্রিংশা দহেযুঃ শস্ত্রতেজসা॥ ১১॥ অথ মুয়ং * বছত্বান্তানভিষাত কংঞ্চন। অনার্যাং পর্মণ তৎ ফাদশকাং ভক্ত বৈ মত্র্য । ১২ ॥ উবিতো হি মহাবাছরিক্রলোকে ধনঞ্জঃ। দিব্যান্যস্ত্রাণ্যবাপ্যাথ ভতঃ প্রভ্যাগতো বন্য । ১৩॥ অকুতাস্ত্রেণ পৃথিবী জিতা বীভৎস্থনা পুরা। কিং পুন: দ কুতাস্ত্রোহ্ন্য ন হন্যাদে। মহারথ: ॥ ১৪ ॥

কদাচি দ্র্মাং স্তংপুরতো নিখ্যুক্চেদনিষ্টং স্থাদিতি ভাষঃ ॥ ৬ ॥ তদেবাছ তেরিতি ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ তেজাগ্নিরেবঃ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ অশক্যত্ব মেবাছ উবিতোহীতি ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ উদ্বিধান ইতি বন বানেনাদিয়ের পাওবেরু বিশ্রম্বাৎ সভ্যবতা এতেনাম্মান্ বাধিষান্ত ইতি বিশ্বাসাদ্যা ভবতাং বাসঃ স হঃখং হঃখদো ভবিষাতি পূর্কিপিরতে বিশ্বাসান ন

^{*} বহুৱাভানভিয়াত ইত্যত্ত বহুৱালাকিপন্তঃ ইতি পাঠঃ ক্ষ পুস্তকে।

অথবা মদ্বচঃ শ্রুত্বা তত্র যন্তা ভবিষ্যথ।
উদ্বিধাবাসোহ বিশ্রস্তাদদুঃখান তত্র ভবিষ্যতি॥ ১৫॥
অথবা সৈনিকাঃ কেচিদপকুর্যুর্য্ থিন্তিরম্।
তদবুদ্ধিকৃতং কর্ম দোষমুৎপাদয়েচ্চবঃ॥ ১৬॥
তন্মাদাচ্ছ পুরুষাঃ শারণায় প্রকারিণঃ।
ন স্থান তত্র গমনং রোচয়ে তব ভারত!॥ ১৭॥
শক্ষাক্রাচ।

ধর্মজ্ঞঃ পাগুরো জোষ্ঠঃ প্রতিজ্ঞাতঞ্চ সংসদি।
তেন ছাদশ বর্যানি বস্তব্যানীতি ভারত ! ॥ ১৮ ॥
অনুরুজ্ঞাশ্চতে সর্বের পাগুনা ধর্মাচারিণঃ।
যুধিষ্ঠিরস্ত কৌতেরো ন নঃ কোপং করিষ্যতি ॥ ১৯ ॥
মূগয়াস্পৈন নো গস্তমিচ্ছা সংবর্জতে ভূশম্।
স্মারণাস্ত চিকীর্যামো ন তু পাগুনদর্শনম্॥ ২০ ॥
ন চানার্য্য সমাচারঃ কশ্চিত্তক্ত ভবিষ্যতি।
ন চ তক্ত গমিষ্যামো যক্ত তেষাং প্রতিশ্রমঃ॥ ২১ ॥

বৈশন্দানন উবাচ।

এবমুক্তঃ শকুনিনা ধৃতরাষ্ট্রো জনেশ্বরঃ।
ছুযোধনং সহামাত্যমনুজজ্ঞেন কামতঃ॥২২॥
অনুজ্ঞাতস্ত গান্ধারিঃ কর্ণেন সহিতস্তবা।
নির্যযৌ ভরতত্রেঠো বলেন মহতার্তঃ॥২৩॥
ছুঃশাসনেন চ তথা দৌবলেন চ * ধীমতা।
সংরতো ভ্রাতৃতিশ্চান্যৈ স্ত্রাভিশ্চাপি সহস্রশঃ॥২৪॥

কর্ত্তব্য ইত্যর্থঃ ॥ ১৫ ॥ পক্ষান্তর মাহ অথবেতি ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ঘুরুম্পি দুযুর্গতি ধর্মজ ইত্যাদিন । ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥

^{*} ধীমতা ইতাত্ত দেবিনা ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

তরির্যান্তং মহাবান্তং দেউং দৈতবনং সরঃ।
পৌরাশ্চানুযযুং সর্বে সহদারা বনঞ্চ তথা ২৫॥
অক্টো রপ্সহস্রাণি ত্রীণি নাগাযুতানি চ।
পক্তরো বহুসাহস্রা হয়:শ্চ নবতিং শতাং ॥২৬॥
শকটাপণবেশাশ্চ বণিজো বন্দিনন্তথা।
নরাশ্চ মৃগয়াশীলাঃ শতশোহ্থ সহস্রশঃ॥২৭॥
ততঃ প্রয়ানে নৃপতেঃ স্কুমহানভবং স্বনঃ।
প্রার্থীব মহাবারোক্তক্ষতন্তা বিশাশ্পতে।॥২৮॥
গব্যুতিমাত্রে ন্যুবসন্তাজা তুর্য্যোধনন্তদা।
প্রয়াতো বাহনৈং সর্বেন্ততো দৈতবনং সরঃ॥২৯॥
ইত্যারণ্যকে পর্বণি ঘোষ্যাত্রা পর্কণি তুর্য্যোধনকৈত্বনগমনে
একোনচত্বারিংশদ্ধিক দ্বিত তুর্মোধনকৈত্বনগমনে

বৈশক্ষারন উল্চ।
অথ ছুর্য্যোপনো রাজা তত্র তত্র বনে বসন্।
জগাম ঘোষানভিতন্ততশ্চক্রে নিবেশনম্॥ ১।
রমণীয়ে সমাজ্ঞাতে সোদকে সমহীক্রহে।
দেশে সর্বস্থানোপেতে চকুরাবসধারাঃ॥ ২॥
তথৈব ও তৎসমীপস্থান পৃথগাবস্থান্ বহুন্।
কর্মন্ত শকুনেশৈচব ভাতৃণাক্ষেব সর্বশং॥ ৩॥

॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ শকটাঃ ভার বহাসনাংসি আপাণাঃ পাণানি বেশো বেশা জনাশ্রয়ঃ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ গব্যাতিঃ ক্রোশন্বয়ং ॥ ২৯ ॥

> ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে একোনচন্ধারিংশদধিক দ্বিশততমোহধায়েঃ । ২৩৯ ।

অথেভিচক্তে কৃতবান্॥১॥২॥৩॥

^{*} তৎসমীপস্থান্নিতাত্র তৎসমীপেইনাান্ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

দদর্শ স তদা গাবঃ * শতশোহ্থ সহস্রশঃ। অকৈবঁকৈশ্চ তাঃ সর্বা লক্ষ্মাম।স পার্থিবঃ ॥ ৪ ॥ অঙ্কয়ামাস বৎসাংশ্চ জজ্ঞে চোপস্তা~স্ত্রি। বালবংদাশ্চ যা গাবং ক'লয়।মাস তা অপি॥ ৫॥ অথ সংস্মারণাং কৃষা লক্ষ্যির তিহায়ণান্। हुट्या পোপालरेकः श्रीट्या वाद्तर कुकूनक्तः॥ ७॥ ন চ পৌরজনঃ মধ্যঃ দৈনিকাশ্চ সহস্রশঃ। যথোপজোষ চিক্রীভুর্বনে তিমান যথামরা: ॥ १॥ . ততো গোপাঃ প্রগতেরঃ কুশলা * নৃত্যবাদনে ৷ शर्डिताष्ट्रेमूलाचिष्ठेन् कना देन्हव चनक् छ। ॥.৮॥ স স্ত্রীগণারতো রাজা প্রহৃষ্টঃ প্রদদৌ বস্তু। তেভ্যো যথা

হ্মন্নানি পানানি বিবিধানি চ॥ ৯ । ততত্তে সহিতাঃ সর্কে তরক্ষুনু মহিষান্ মুগান্। গবয়ক বিরাহাং 🌤 সমন্তাৎ পর্য্যকালয়ন্॥ ১০॥ স ভাঞ্জরৈর্কিনিভিদ্য গজাপশ্চ প্রবহুন্ বনে। রমণীযেষু দেশেষু আহ্য়াম।স বৈ মৃগান্। ১১॥ গোরসানুপযুঞ্জান উপভোগাংশ্চ ভারত!। পশ্যন্দ রমণীয়ানি বনান্যুপবনানি চ। ১২। মন্তভ্রমরজুফীনি বহিণাভিক্ন গানি চ। অগচ্ছদানুপুর্য্বোণ পুণ্যং দৈত্বনং সরঃ॥ ১৩॥

তাহৈঃ চিট্রেঃ লক্ষে: সংখ্যানিঃ লক্ষান পুংলি বংখ্যারা মিতি মেদিনী ॥ ৪ ॥ অত্তে জ্ঞাতবান্ উপস্তান্ দমনার্থান বংসতরান্ সমীপাগভান্ বা কাল্যামাস সংখ্যাত বান্ ॥ ৫ ॥ তিহারনাং জ্ঞাবর্ধান্ র্যান্ ব্যাহরৎ বিজহার ॥ ৬ ॥ যথোপজোষং যথাক'চ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ॥ ১০ ॥

 ^{*} গাব: ইত্যত্রগাবৈ ইতি পাঠ: ক পুস্তকে।
 * নৃত্যবাদনে ইত্যত্র নৃত্যবাদিতে ইতি পাঠ: ক পুস্তকে।

মন্তভ্রমরসংজ্ফং নীলকগ্রবাকুলম্। সপ্তভ্দসমাকীর্ণং পুরাগবকুলৈর্ভ্য ॥ ১৪ ॥ ঋদ্ধা প্রময়া যুক্তো মহেন্দু ইব বজ্রভুং । যদক্ষা চ ভত্রস্থে। ধর্মগুলো যুধিন্টিরঃ ॥ ১৫॥ ঈজে রাজর্ষিযজেন সাদ্যক্ষেন বিশাম্পতে।। দিব্যেন বিধিনা চৈব বন্যেন কুৰুগন্তম॥ ১৬ ॥ ক্লন্তা নিবেশমভিতঃ সরসস্তুস্য কৌরবঃ। ट्योलमा महित्का वीमान् धर्मावक्ता नवाधिलः ॥ २० ॥ ততো দুর্যোধনঃ প্রেষ্যানাদিদেশ সহস্রশঃ *। আক্রীডাবসথাঃ ক্ষিপ্রৎ ক্রিয়ন্তামিতি ভারত 🗅 ১৮ 🛭 তে তথেত্যেব কৌরব্যযুক্ত্য বচনকারিণঃ। চিকীর্যস্তলাকীডান্ জগ্ম হৈছিতবনং সরঃ ॥ ১৯ ॥ প্রবিশন্তং বনছারি গন্ধবাঃ সমবার্যন। সেনাগ্র্যং ধার্ত্তরাষ্ট্রসা প্রাপ্তং দ্বৈতবনণ সরঃ ॥ ২•॥ তত্র গন্ধর্বরোজো বৈ পূর্ব্বমেব বিশাস্পতে !। কুবেরভবনাদ্রাজনাজগাম গণারভঃ ॥ ২১॥ গ্রব্যবসার্থিব তিদশানাং তথাত্মজৈঃ। বিহারশীলঃ ক্রীডার্থং তেন তৎ সৎরতং সরঃ॥ ২২ ॥ তেন তৎ সংবৃত্ত দৃষ্ট্র তে রাজপরিচারকাঃ। প্রতিজন্ম স্ততো রাজনু যত্র চুর্য্যোধনো নৃপঃ ॥২৩॥ স ভু তেষা বচঃ প্রজ্বা সৈনিকান্ যুদ্ধরূমদান্। প্রেষয়ামাস কৌরব্য উৎসার্য়ত তানিতি ॥ ২৪॥ ॥ ३৫ ॥ मानाट्यन अकार मार्यान ॥ ३७ ॥ ३१ ॥ ३४ ॥ ३० ॥ १० ॥ । ২১॥ আত্মজৈর্জয়ন্ত†দিভিঃ সহেতি শেষঃ॥ ২২॥ ২৩॥ ২৪॥

^{*} সহস্রশ: ইত্যাত্র সহাত্মজঃ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে

ত্যা তদ্বচনং প্রভন্ন রাজ্ঞ: সেনাগ্রযায়িনঃ ৷ সরো দৈতবনং গভা গলকাবিনিদমক্রবন্॥ ২৫॥ রাজা ছুর্য্যোধনো নাম ধুতরাই্রস্থতো বলী। বিজিহীমুরিহাযাতি তদর্থমুপসর্পত॥২৬॥ এবমুক্ত স্তু গন্ধৰ্কাঃ প্ৰহ্মন্তো বিশাস্পতে !। প্রত্যক্রবংস্তান্ পুরুষানিদং হি পরুষং বচঃ ॥ ২৭ ন চেতয়তি বো রাজা মন্দরুদ্ধিঃ স্থযে।ধনঃ। যোহস্মানাজ্ঞাপয়তোর বশ্যানিব দিবৌক্ষঃ ॥ ২৮ ॥ বুয়ং মুমূর্ববশ্চাপি মন্দপ্রজ। ন সংশয়ঃ। যে তৃষ্য বচনাদেবমস্মানু বত বিচেত্র ॥ ২৯॥ গচ্ছধং ত্ররিতার সর্বেয়ের রাজা স কৌরবঃ। न टिमरेमार शष्ट्रधः धर्माताकनिरवशनम् ॥ ७०। এবমুক্তাস্ত গন্ধবৈর রাজ্ঞঃ সেনাগ্রযায়িনঃ। সংপ্রাদ্রবন্ যতো রাজা পুতরাইস্কুতোহ্ভবং॥ ৩১॥ ইত্যারণাকে পর্কণি ঘোষ্যাত্রা পর্কণি গল্পক ছুর্য্যোধন সেনাসংবাদে চত্ত্বারিং শদ্ধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৪**০** ॥

বৈশল্পায়ন উবাচ।
ততন্তে সহিতাঃ সর্বে জুর্যোধনমুপাগমন্।
অব্রেব শ্চ মহারাজ ! যদুচুঃ কৌরবং প্রতি ॥ ১ ॥
॥ ২৫ ॥ বিজিছীর্ষ্ হিছর্জু মিচ্ছঃ ডপ্যপ্ত সেমাপং গচ্ছত ॥ ২৬ ॥ ২৭
॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥
ইত্যারণাকে প্রাণি নৈল্কগীয়ে ভারত ভাবদীপে চহা রিংশদ্ধিক

• বিশত তমো ধ্যারঃ ॥ ২৪১॥

ততন্তে সহিতা ইতি ॥ ১ ॥

গন্ধবৈৰ্ধারিতে সৈন্যে ধার্ত্তরাষ্ট্রং প্রতাপবান্। অমর্ধপূর্ণঃ দৈন্যানি প্রত্যভাষত ভারত। ॥ ২ ॥ শাসতৈনান ধর্মজ্ঞান্ মম বিপ্রিয়কারিণং। যদি প্রক্রীডতে সবৈর্দে বৈঃ সহ শতক্রতঃ ॥ ৩ ॥ তুর্ব্যোধনবচঃ প্রুত্থা ধার্ত্তরাষ্ট্র। মহাবলাঃ। সর্বব এবাভিসন্নর। যোধাশ্চাপি সহস্রশঃ ॥ ৪ ॥ ততঃ প্রমথ্য সর্কাংস্তাংস্তদ্ধনং বিবিশুর্কালাৎ। সিংহ্নাদেন মহতা পূর্যন্তো দিশো দশঃ॥ ৫॥ ততোহপরৈরবার্যান্ত গন্ধবিষধ কুরুসৈনিকাঃ। তে বাৰ্য্যমাণা গল্পবৈধিঃ সামৈৰ বন্ধধাধিপ ! ॥ ৬ ॥ তাননাদৃত্য গন্ধাৰ্বাংস্তদ্ধনং বিবিশুৰ্মাহৎ। যদা বাচা ন তিষ্ঠতি ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ সরাজকাঃ॥ ৭॥ ভতত্তে খেচরাঃ পর্বে চিত্রদেনে ন্যবেদয়ন। গন্ধরে।জন্তান সর্বানত্রবীৎ কৌরবান প্রতি॥৮॥ অনার্যান শাসতেতোতাংশিক্রেসেনোইতামর্বাঃ। অনুজ্ঞাতাশ্চ গন্ধর্বাশ্চিত্রসেনেন ভারত। ॥ ৯ ॥ প্রগৃহীতাযুধাঃ সর্বে ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ত্রপাদ্রবন্। ুতান্দৃষ্ট্য * পততঃ শীঘান্ গন্ধবিানুদ্যতাযুধান্ ॥ ১০ ॥ * প্রাদ্রব স্তেদিশঃ সর্বেধ ধর্ত্তিরাষ্ট্রস্থ পশ্যত। তান্ দৃষ্ট্রা দ্রবতঃ দকান্ ধার্ত্রাষ্ট্রান্ পরাঙ্মুখান্॥ ১১॥

Francisco Control of the Control of Control

^{*} পততঃ শীখানিতাত ক্রবতঃ শুরানিতি পাঠঃ ব পুস্তকে।

^{*} প্রাদ্রবং তেদিশঃ সর্বে ধার্তরাফ্রত পশ্যত ইতাত্ত সংপ্রাদ্রবচ্চ-মুঃসর্বা ধার্ত রাক্রত ভারতেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

রাধেয়স্ত তদা বীরে! নাসীত্তত্র পরাস্ত মুখঃ। আপতন্তীন্ত সংপ্রেক্ষ্য গর্মবাণাৎ মহাচমুণ্ ॥ ১২ ॥ মহতা শরবর্ষেণ রাধেয়ঃ প্রত্যবারয়ৎ। কুরজৈবিশিথৈউলৈবিং সদক্তৈত্তথায়সৈঃ॥ ১০॥ গন্ধবিঞ্ছিতশোহভিদ্মন্ত্রাৎ স্থতনন্দনঃ। পাত্যন্ত্রমাঙ্গানি গন্ধবিশি। মহারথঃ ॥ ১৪ ॥ ক্ষনেণ ব্যধমৎ সর্বাং চিত্রসেনস্থা বাহিনীম্। তে বধ্যমানা গন্ধবাঃ স্থ গপুত্রেণ বীমতা ॥ ১৫॥ ভূয় এবাভ্যবৰ্ত্তত শতশোহ্থ সহস্ৰশঃ। গন্ধকভূতা পৃথিবী কণেন সমপদ্যত ॥ ১৬॥ षाপ्रविद्यादार्विशिम्ब्बरम्बस्य रेमिन्टिकः। অথ ছুর্যোধনো রাজা শকুনিশ্চাপি দৌবলঃ ॥ ১৭ ॥ कुः भामत्ना विकर्गम्ह य हात्ना श्रु बहा द्वेकाः। ন্যহনংস্তত্ত্বদা সৈন্যং রথৈর্যক্রডনিস্বটনঃ॥ ১৮॥ ভূরশ্চ যোধয়ামাস্থ্য ক্লত্বা কর্ণমথাগ্রতঃ। মহতা রথস~ঘেন * রথবারেণ চাপ্যত॥ ১৯॥ रेवकर्डनः भर्तीष्मरन्त्रा श्यार्कान् * ममवाकित्रन्। ততঃ সংন্যপতন্ সর্কো গন্ধকাঃ কৌরবৈঃ সহ॥২०॥ छन। अञ्जूषा भूकमञ्चरल। महर्भन्य। ততত্তে মৃদবোহভূবন গন্ধকাঃ শরপীজিতাঃ ॥২১॥ উচ্চুকুশুশ্চ কৌরব্যা গন্ধবান প্রেক্ষ্য পীডিতান্। शंक्राव्या निजान् मृष्ट्री हिज्याना रागर्यनः ॥ २२ ॥ 11 25 11 20 11 28 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11 25 11 25 11

^{*} রথবারেনে ভ্যত্র হয়বারেনেভি পাঠঃ ক প্রস্তকে।

সমবাকিররিতাত সমবারয়রিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

উৎপপাতাদনাৎ ক্লুদ্ধো বধেতেষাং সমাহিতঃ। ততো মায়াস্ত্রমাস্থায় যুযুধে চিত্রমার্গবিৎ। তরামুহ্যন্ত কৌরব্যাশ্চিত্রসেনস্য মায়য়া॥ ২৩॥ একৈক্সা * তদা যে।ধো ধার্ত্তরাষ্ট্রস্থ ভারত।। প্রয়াবর্ত্তর * গন্ধ কৈর্দশভিদশভিঃ সহ॥ ২৪॥ ততঃ সংপীডামানাস্তে বলেন মহতা তদা। প্রাক্তবন্ত রূপে ভীতা * যেচ রাজন জিজীয়বঃ॥ ২৫॥ ज्जामारनम्नीरकम् शर्जतारश्चेम् नर्यभः। কর্ণো বৈকর্ত্তনো রাজ শস্তক্ষো গিরিরিবাচলঃ ॥ ২৬॥ ष्ठ्रद्याधनम्ह कर्नम्ह भकुनिम्हालि (मोवनः। গন্ধবান যোধয়।মান্তঃ সমরে ভূশবিক্ষতাঃ। ২৭॥ সর্ব্ব এব তু গন্ধর্বাঃ শতশোহ্থ সহস্রশঃ। জিঘাংসমানাঃ সহিতাঃ কর্ণমভ্যদ্বন্নে ॥ ২৮ ॥ অসিভিঃ পট্টিশৈঃ শ্লৈগদাভিশ্চ মহাবলাঃ। স্তপুর্ত্ত জিঘাংসন্তঃ সমন্তাৎ পর্যাবাকিরন্॥ ২৯॥ व्यत्तार्थ यूत्रमिष्ट्नित् अक्रमता नापा व्यत्। केभारता इशानता स्कारता नाभावसन् ॥ ७०॥

॥ ২৩ ॥ একৈকন্ত যোধাঃ একৈকং যোধাঃ পর্যাবর্ত্তন্ত পরীতবন্তঃ ॥ ২৪ ॥ জিজীষবঃ অত্তার্থো লোপোবোর্গলীতি লোপঃ জিজীবিষবঃ ॥ ২৫॥ রাজন্ হেজনমেজয় ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥

^{*} একৈকস্যেত্যত্র একৈকোহীতি পাঠঃ ক প্রস্তুকে।

^{*} পর্যাবর্তন্তেত্যত্র পর্যাবর্ততেতি পাঠ ক পুস্তকে।

^{*} যেচ রাজন্ জিজীমণ ইত্যত্র যেন রাজায়ুধিষ্ঠির ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

অন্যে ছত্রং বর্ধাঞ্চ বন্ধুরঞ্চ তথাপরে।
গন্ধবা বহুসাহস্রান্তিলশো বাধমনুথম্। ৩১॥
ততো রথাদবপ্লুত্য স্ইতপুজোহসিচর্মাভূং।
বিকর্ণরথমান্তায় মোক্ষায়াশানচোদয়ং॥ ৩২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি ঘোষ্যাতা পর্বাণি কর্ণরণভঙ্গে
একচন্মারিংশদ্ধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ং॥ ২৪১॥

रेरमञ्जाह्म छेनाह । গন্ধবৈস্ত মহারাজ। ভাগে কর্ণে মহারথে। সংপ্রাদ্রবন্ধমুঃ সর্ব্বা ধার্ত্তরাষ্ট্রয় পশাতঃ ॥ ১ ॥ তান দৃষ্ট্র দ্রবতঃ সর্বান্ ধার্ত্তরাপ্তান্ পরাগ্মুখান্। তুর্যোধনে। মহারাজো নাসীতত পরাত্মথঃ ॥ ২॥ তামাপততীং সম্প্রেক্য গন্ধবি।। মহাচমুন্। মহতা শরবর্ষেণ সোহভাবর্ষদ্রিন্দমঃ॥ ৩॥ অচিন্ত্য শ্রবর্ষন্ত গন্ধবিশিন্তমা তং রথমু। তুর্য্যোধন জিঘাংসন্তঃ সমন্তাৎ পর্য্যবারয়ন্ ॥ ৪॥ যুগমীশাং বৰ্ষঞ তথৈব ধ্ৰুসার্থী। অশ্বাংস্ত্রিবেশুং তম্পঞ্চ তিলশো ব্যধমঞ্চরৈঃ॥ ৫॥ ছুর্য্যোধন চিত্রসেনো বিরথং পতিতং ভুবি। অভিদ্ৰুত্য মহাবাছজীবগ্ৰাহমথাগ্ৰহীৎ ॥ ৬॥ वज्रबश्त्रथ अखिर वज्रुद्रर दथ वज्रनानि ॥ ७১ ॥ ७२ ॥ ইত্যারণাকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে একচহারিং শদ্ধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৪১ ৬

গন্ধবিবিভি॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ জীবগ্রাহং জীবস্তমেব গৃহী-ভেতি নমুলন্তং ক্যাদিখাদ গ্রহীদিতাল প্রয়োগঃ॥ ৬ ॥ তিশিন্ গৃহীতে রাজেন ! স্থিতং ছুঃশাসনং রথে।
পর্যগৃহত গন্ধবিঃ পরিবার্য সমস্ততঃ ॥ ৭ ॥
বিবিশ্পতিচিত্রসেনা বাদাযান্যে বিছুক্তারুঃ।
বিদানুবিন্দাবপরে রাজদারাশ্রুষ্ঠ সর্বশাঃ ॥ ৮ ॥
শ্বেধাশ্রুষ্ঠ গন্ধবিঃ সমভিক্রতাঃ।
পূর্বপ্রভিয়েঃ সহিতাঃ পাপ্তবানভাযুস্তদা ॥ ৯ ॥
শকট্যপন্বেশাশ্রু যানযুগ্যঞ্চ স্বশাঃ।
শারনং পাপ্তবান্ জ্যা ক্রিয়মাণে মহীপতৌ ॥ ১০ ॥
সোনকাউচুঃ।

প্রিয়দশী মহাবাহুর্থার্তরাষ্ট্রো মহাবলঃ।
গন্ধবিত্রিবতে রাজা পার্থান্তমন্তর্ধাবত॥ ১১॥
ছুঃশাসনো ছুর্বিষহো ছুমুথো ছুজ রন্তথা।
বদ্ধা হ্রিয়ন্তে গল্পবৈ রাজদারাশ্চ সর্বশঃ॥ ১২॥
ভ ইতি ছুর্য্যোধনামাত্যাঃ ক্রেশন্তো রাজগ্রিনঃ।
আর্ত্রা দীনান্ততঃ সর্বের যুগিন্তিরমুপাগমন্॥ ১৩॥
তাংস্তথা ব্যথিতান দীনান্ ভিক্ষমাণান্ যুধিন্তিরম্।
রন্ধান্ ছুর্য্যোধনামাত্যান্ ভীমসেনোহভাভাবত॥ ১৪॥
মহতা হি প্রযন্তের গল্পবৈস্তদনুন্তিতম্॥ ১৫॥
অন্যথা বর্ত্তমানানামর্থো জাতোহ্যমন্যথা।
ছুর্মান্ত্রিতমিদং তাবদ্রাজ্ঞা ছুর্দ্ তিদ্বিনঃ॥ ১৬॥

। ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ র†ভেল মুধিচিরিতা॥ ১৬॥

^{*} যোধা ইত্যত্ত দৈন্য মিতি পাঠঃ ঘণুস্তকে।

^{*} ইতি হুৰ্যোধনামাত্যা ইত্যস্য প্ৰাকৃ বৈশন্সায়ন উবাচ ইতি পাঠঃ ক প্ৰস্তুক্ষ্য

দেকীরমন্যে ক্লীবস্থাপাতয়ন্তীতি নঃ শ্রুতম্।
ইদং ক্লতং নঃ প্রত্যক্ষং গন্ধবৈরতিমানুষম্॥ ১৭॥
দিন্টা লোকে পুমানস্থি কশ্চিদমাৎপ্রিয়ে স্থিতঃ।
যেনাম্মাকং ক্লতো ভার আসীনানাং স্থাবহঃ॥ ১৮॥
শীতবাতাতপসহাংস্তপনা চৈব কর্মিতান্।
সমস্যো বিষমস্থান্ হি দ্রুইনিচ্ছতি ছুর্মাতঃ॥ ১৯॥
ভাধর্মাচারিন্তস্থা কৌরবাস্থা ছুরাম্মনঃ।
যে শীলমনুবর্তনি তে পশ্রন্তি পরাভবম্॥ ২০॥
ভাবর্মো হি ক্লতস্থেন যেনৈতছপশিক্ষিতম্।
অনুশংসাস্ত কৌন্ডেরাস্থং প্রত্যক্ষণ ব্রবীমি,বং॥ ২১॥
এবং ক্রবানাং কৌন্ডেরাস্থং প্রত্যক্ষণ ব্রবীমি,বং॥ ২১॥
এবং ক্রবানাং কৌন্ডেরাস্থং প্রত্যক্ষণ ব্রবীমি,বং॥ ২১॥
বিষ্কারনাক প্রবিশি ঘাষ্যাতাপ্রবি ছুর্য্যোধনাদিহরণে
দ্বিতম্বারিংশদ্ধিকদ্বিশতত্যমাহ্যায়ঃ॥ ২৪২॥

যুগিষ্ঠির উবাচ।

অস্মানভিগতাংস্তাত ! ভ্যার্ত্তাঞ্জুরণৈষিকঃ। কৌরবান্ বিষমপ্রাপ্তান্ কথং বুয়াস্তুমীদৃশমু॥ ১॥

ক্লীবস্তা অপক্তরাং ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ অপস্বরং ক্রোধেন বিকলবর্গ যথা তাত্তথা ক্রবানং ॥ ২২ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বিচন্বারিং শদ্ধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৪২ ॥

অশানিতি॥ ১॥

ভবন্তি ভেদা জ্ঞাতীনাং কলহাশ্চ রুকোদর !। প্রসক্তানি চ বৈরাণি কুলধর্ম্মোন নশ্যতি ॥২॥ যদা তু কশ্চিজ্জাতীনাং বাহঃ প্রার্থয়তে কুলম্। ন মর্ষয়ন্তি তৎ সভো বাছেনাভিপ্রধর্যণ । ৩ । জানাত্যেষ হি ছুর্ব্ধুদ্ধিরস্মানিহ চিরোঘিতান্। স ত্রবং পরিভূয়াস্মানকার্যীদিদমপ্রিয়ম্ ॥ ৪ ॥ তুর্য্যোধনস্থ গ্রহণাদ্যান্ধর্মেণ বলাং প্রভো!। স্ত্রীণাং বাহাভিমর্ষাচ্চ হতং ভবতি নঃ কুলম্। ৫ ॥ শরণঞ্চ প্রপন্নানাৎ ত্রাণার্যঞ্চ কুলফাচ। উত্তিষ্ঠধং নরব্যাঘাঃ সজ্জীতবত মা চির্ম্॥ ৬॥ वर्ष्यक्तिक यरमो टेंहर वृक्ष रीताश्रताकि छः। মোক্ষয় নরবাভা ভিয়মাণং স্কুযোধনম্॥ ৭॥ এতে রথা নরব্যাঘ্রাঃ সর্বাশস্ত্রসমন্বিতাঃ। ধতরাষ্ট্রস্থ পুত্রাণাং বিমলাঃ কাঞ্চনধ্জাঃ॥৮॥ সস্থনানধিরোহধং নিত্য সজ্জানিমানুথান্। ইন্দ্রমেনাদিভি স্থাটভঃ ক্লভশন্তৈরগ্পিতান ॥ ৯॥ এতানাস্থায় * বৈয়ন্তা গন্ধবান্ যোকু মাহবে। স্থাধনভা মোকায় প্রয়তপ্তমতক্রিতাঃ॥ ১০॥ য এব কশ্চিদ্রাজন্যঃ শরণার্থামহাগতম। পরং শক্ত্যাভিরক্ষেত কিৎ পুনস্তৃং হকোদর ! ॥ ১১ ॥ ক ইহার্য্যো ভবেজ্ঞাণমভিধাবেতি চোদিতঃ। প্রাঞ্জলং শরণাপলং দৃষ্ট্য শক্রমপি ধ্রুবম্॥ ১২॥ 12101811011011911101 ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ অভিধাবয়াহীতি গেদিত আর্যাঃ ত্রাণং রক্ষকঃ শর্ণাগতভকঃ ভবেৎ য আর্য্যামহান্স ভবেৎ শরণাগত রক্ষণঃ সমর্থো ছুর্লভ ইতিভাবঃ । ১২ ॥ * বৈয়ত্তেতাত্ত্র বৈতাতা ইতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

বরপ্রদানং রাজ্যঞ্চ পুত্রজন্ম চ পাপ্তবাঃ।
শক্রোশ্চ মোক্ষণং ক্লেশান্ত্রীলি চৈকঞ্চ তৎসমন্॥ ১০॥
কিঞ্চান্তাধিকমেতস্মান্দ্রদাপনঃ স্কুযোধনঃ।
ব্রন্ধান্তরাজীবিতং পরিমার্গতে॥ ১৪॥
ব্যুমেব প্রধাবের থানি ন স্থান্ধ কোনর।।
বিত্তো মে ক্রন্থবির! ন হি মেহত্র বিচারলা॥ ১৫॥
সামৈব তু যথা ভীম! মোক্ষ্মেথাঃ স্কুযোধনন্।
তথা সর্কৈরপায়ৈত্ত্বং যতেথাঃ কুরুনন্দন!॥ ১৬॥
ন সামা প্রতিপদ্যেত যদি গন্ধান্তরাজ্যে।
প্রাক্রমেণ মৃত্বা মোক্ষ্মেথাঃ স্কুযোধনম্॥ ১৭॥
অথাসৌ মৃত্বুব্দ্বন ন মুঞ্জেন্তীম কৌরবান্।
সর্কোপায়ৈর্বিমোচ্যান্তে নিগৃহ্ব পরিপন্থিনঃ॥ ১৮॥
এতাবিদ্ধ ময়া শক্যং সন্দেক্ত্বীং বৈ বুকোনর!।
বৈতানে কর্ম্বনি ততে বর্ত্তমানে চ ভারত!॥ ১৯॥

বৈশস্পায়ন উন্যচ।

অজাতশত্রোবাচন^ তচ্চুত্মা তু ধনঞ্জয়ঃ। প্রতিজ্ঞে গুরোবাক্যিক শ কৌরবাণাং বিমোক্ষণমূ॥২০॥

অৰ্জ্জুন উণাচ।

যদি সামা ন মোক্ষান্তি গুলার্কা ধৃতরাষ্ট্রজান্। অদ্য গল্পর্করাজস্ম ভূমিঃ পাস্থাতি শোণিত্য ॥ ২১॥

11 20 11 28 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11 20 11

* বাক্য মিত্যত্র বাক্যা দিতি পাঠঃ কপুস্তকে।

অর্জুনম্ফ তু তাং শ্রুত্বা প্রতিজ্ঞাং সত্যবাদিনঃ।
কৌরবাণাং তদা রাজন পুনঃ প্রত্যাগতং মনঃ॥ ২২॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি ঘোষ্যাত্রাপর্বাণি দুর্যোধনমোক্ষণারুজ্ঞায়াং ত্রিচত্মারিংশদ্ধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৪৩॥

বশশারন উবাচ।

যুধিষ্ঠিরবচঃ শুজা ভীমনেনপুরোগমাঃ ।

প্রক্ষেবদনাঃ দর্বে সমুক্তস্থ র্রর্ভাঃ ॥ ১ ॥

অভেদ্যানি ততঃ সর্বে সমনহাত্ত ভারত!।

জাষ্ নদবিচিত্রাণি কবচানি মহারথাঃ ॥ ২ ॥

আযুধানি চ দিব্যানি বিবিধানি সমাদধুঃ ।
তে দংশিতা রথৈঃ সর্বের ধজিনঃ সশরাসনাঃ ॥ ৩ ॥
পাগুবাঃ প্রত্যদৃশ্যন্ত জ্বিতা ইব পাবকাঃ ।
তানুথান্ সাধুসম্পন্নান্ সংযুক্তান্ জবনৈইরৈঃ ॥ ৪ ॥

আহায় রথশার্দ্ লাঃ শীঘ্রমেব যযুক্ততঃ ।
ততঃ কৌরবসৈন্যানাৎ প্রাত্ররাসীন্মহাস্থনঃ ॥ ৫ ॥
প্রযাতান্ সহিতান্ দৃষ্ট্বা পাণ্ডুপুল্রান্ মহারথান্ ।
জিতকাশিনক্ষ খচরাস্ত্ররিতাক্ষ মহারথাঃ ॥ ৬ ॥
ক্ষণেনৈর বনে তিন্দিন্ সমাজগ্মুরভীতবং ।
নাবর্ত্তন্ত ততঃ সর্বের গন্ধার জিতকাশিনঃ ॥ ৭ ॥

॥ २२ ॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিচহারিং শদ্ধিক দ্বিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৪৩ ॥

যুধিষ্ঠিরেতি । ১ । ২ । দংশিতাঃ সরদাঃ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । १ ।

দৃষ্ট্বা রথগতান বীরান্ পাগুবাং শচতুরো রণে। তাংস্ত বিভাজিতান্ দৃষ্ট্। লোকপালানিবোদ্যতান্ ॥ ৮ ॥ ব্যঢানীকা ব্যতিষ্ঠন্ত গন্ধমাদনবাসিনঃ। রাজ্ঞস্ত বচনৎ শ্রুত্বা ধর্মপুল্রন্থ ধীমতঃ ॥ ৯ ॥ ক্রমেণ মূত্রনা যুদ্ধমুপ ক্রান্তঞ্চ ভারত! ন তু গন্ধবর্শ জম্ম দৈনিক। মন্দ্রেতসঃ॥ ১০॥ শক্যন্তে মৃত্যুনা শ্রেয়ঃ প্রতিপাদয়িতুণ যদা। ততন্তান্ যুধি ছুর্দ্মধানু সব্যসাচী পরন্তপঃ ॥ >> ॥ माञ्चभूक्विमन वाकाम्वाह शहतान्त। বিসর্জয়ত রাজানং ভাতরং মে স্থযোধনম্॥ ১২ ৪ ত এবমুক্তা গন্ধবিশিঃ পাণ্ডবেন যশস্বিনা। উৎসায়ন্তন্তদা পার্থমিদং বচনমক্রবন্ । ১৩॥ একস্থৈব বয়ৎ ভাত। কুৰ্য্যাম বচনৎ ভূবি। যত্ত শাসনমাজ্ঞায় চরামো বিগতজ্বাঃ ॥ ১৪ ॥ তেনৈকেন যথাদিউং তথা বৰ্ত্ত।ম ভারত।। ন শান্তা বিদ্যতেহ্সাক্মন্যন্তসাৎ স্থরেশ্রাৎ। ১৫। এবমুক্তঃস গন্ধবৈঃ কুন্তীপুত্রো ধনঞ্জয়:। গন্ধবান পুনরেবেদং বচন প্রত্যভাষত ॥ ১৬ । ন তদান্ধবাজ্যা যুক্ত^ কর্মা জ্ওপ্সিত্ম। পরদারাভিমর্থন্চ মানু বৈশ্চ সমাগ্যং ॥ ১৭ ॥ উৎস্জ্বং মহাবীগ্যান পুত্রাষ্ট্রস্কুতানিমান্। मातार रेम्हबार विमुक्षक धर्माताजमा भामनार ॥ ३৮॥ যদি সাশ্বা ন মোক্ষধণ গন্ধকা ধৃতরাষ্ট্রজান্। মোক্ষরিষ্যামি বিক্রম্য স্বয়মেব স্থ্যোধনম্॥ ১৯॥ ॥ ১ ॥ ১০ ॥ শ্রেয়ঃ কলাণেং প্রতিপাদয়িতুং প্রাপয়িতুং ॥ ১১ ॥

॥ ১२ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५৫ ॥ ५७ ॥ ५० ॥ ५० ॥ १० ॥ १० अ । विकान् रार्शनाम्य-

এবমুক্ত্যা ততঃ পার্থঃ সবাসাচী ধনপ্তয়ঃ।
সসজ্জ নিশিতান্ বাণান্ খচরান্ খচরান্ প্রতি॥ ২০॥
তথৈব শরবর্ষেণ গন্ধাবান্তে বলোৎকটাঃ।
পাপ্তমানভ্যবর্ত্তি পাপ্তবাশ্চ দিবৌকসঃ॥ ২১॥
ততঃ স্বত্তমূলণ যুদ্ধণ গন্ধাবাণাণ তর্মিনাম্।
বভূব ভীমবেগানাণ পাপ্তবানাঞ্চ ভারত।॥ ২২॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি ঘোষ্যাত্রাপর্বাণি পাপ্তবগন্ধার্দ্ধে
চত্ত্রশুর্বিংশদ্ধিক দ্বিশতত্মোহ্ধ্যায়ঃ॥ ২৪৪॥

বেশলারন উবাচ।

ততো দিব্যাস্ত্রসম্পানা গল্পকা হেমমালিনঃ।

বিস্জন্ত শরান্ দীপ্তান্ সমন্তাৎ পর্যবারয়ন্॥ > ॥

চত্মার: পাগুবা বীরা গল্পকাশ্চ সহস্রশঃ।

রণে সংন্যপতনাজ শন্ত দিতৃতি মিবাভবং॥ ২ ॥

যথা কর্ণস্য চ রথো ধার্তরাষ্ট্রস্য চোভযোঃ।

গল্পকৈ: শতশশ্চিন্নো তথা তেবাং প্রচক্রিরে॥ ৩ ॥

তান্ সমাণততো রাজন্ গল্পকাঞ্জিতশো রণে।

প্রত্যস্ক্ররব্যাঘাঃ শরবর্ধিরনেকশঃ॥ ৪ ॥

তে কীর্যামাণাঃ থগমাঃ শরবর্ধিরনেকশঃ॥ ৪ ॥

তে কীর্যামাণাঃ থগমাঃ শরবর্ধির সমন্ততঃ।

ন শেকুঃ পাণ্ডুপুল্রাণাং সমীপে পরিবর্জিতুম্॥ ৫ ॥

মান্ খচরান্ গল্পকান্ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২১ ॥

ইত্যারগকে পর্কান্ নিলক্ষীরে ভারত ভাবদীপে চতুশ্চরাবিংশদ্দিক

দিশত ত্মোহধ্যারঃ ॥ ২৪৪ ॥

ততঃ ইতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ তথাতেষাং চতুর্ণামিশি রথান্ছরান্ প্রচক্রিরে গন্ধবিঃ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥

অভিকুদানভিকুদো গল্পবানৰ্জ্নস্তদা। লক্ষ্ত্রিথ দিব্যানি মহাজ্রাণ্যপচক্রমে ॥ ৬॥ সহস্রাণাৎ সহস্রানি প্রাহিণোল্বসমাদনম। पार्शसार्जनः मरस्या भन्नकीनाः वरनारकहेः॥१॥ তথা ভীমো মহেন্বাসঃ সম্বুলে বলিনামুরঃ ৷ গন্ধবিঞ্তশো রাজন্ জন্মান নিশিতেঃ শব্রৈঃ॥ ৮॥ माजीशुकानिश उथा युगामारनी यता एक छो। পরিগৃহ্যাএতো রাজন্ জানুত্র শতশঃ পরান্। ১। তে ব্যামানা গলকা দিবোর জৈর্মান্তর থৈঃ। উৎপেতুঃ খনুপাদায় প্রত্যাষ্ট্রস্ক্রাণস্তঃ॥১০॥ স তারুৎপতিভান্ দৃষ্ট্। কুন্ডীপুজো ধনপ্রয়ং। মহতা শরজালেন সমস্তাৎ পর্যাবারর্থ॥ ১১॥ তে রুদ্ধাঃ শরজালেন শকুন্তা ইব পঞ্রে। বব্দু রক্জুনং জোধাদাদাশক্ত্যাটিরটিভিঃ ॥ ১২ ॥ গদাশক্ত্যাতীরুটীয়া নিহত্য পরমাস্ত্রবিং। গাতাণি চাহনছকৈর্বরাণাং ধনঞ্জাঃ ॥ ১৩॥ শিরোভিঃ প্রপতক্তিক চরণৈর্বাছভিস্তথা। অশার্টিরিবাভাতি পরেবামভবদ্রম্। ১৪। তে বধামানা গজ্বলাং পাওবেন মহাজ্বা। ভূমিষ্ঠ মন্তরীক্ষত্তাঃ শরববৈরবাকিরন্॥ ১৫॥ তেযান্ত শরবর্ষাণি দবাসাচী পরস্তপঃ। অস্ত্রৈঃ সংবার্য তেজস্বী গল্পান প্রভাবিধ্যত ॥ ১৬॥ ञ् । । कर्तन्त्रकान्यः (मोत्रकाशि ज्थार्क्क् नः। আংগ্রেপ্তাপি সৌম্যঞ্সস্জ কুরুনন্দনঃ ॥ ১৭ ॥ 1 7 11 4 11 5 11 20 11 22 11 25 11 20 11 28 11 20 11 29 11 29 11

তে দহ্মানা গন্ধক্রি: কুন্তীপুল্রন্থ সায়কৈ:। দৈতেয়া ইব ? শক্তেণ বিঘাদমগমন্ পরম্॥ ১৮॥ উর্মাক্রমমাণাশ্চ শরজালেন বারিতাঃ। বিদর্পমাণা ভলৈন্চ বার্যান্তে সব্যস্তিনা ॥ ১৯ ॥ গন্ধর্কাংস্ত্র:সিতান্ দৃষ্টা কুন্তীপুজেণ ভারত। । চিত্রসেনো গদাং গৃহ্য সব্যসাচিনমান্তবং ॥ ২০ ॥ তস্থাভিপততস্তূর্ণং গদাহস্তম্য সংযুগে। शमा नर्सायमीर भार्थः भरेति किर्टेक्टम मक्षया ॥ २३ ॥ म भनार वर्षा मृच्या क्रुखार वारेन्छ तश्चिना। স্পুত্য বিদ্যাহান্প যোধয়ামাস পাপ্তবম্ ॥ ২২ ॥ অস্ত্রাণি তম্ম দিব্যানি সৎপ্রযুক্তানি সর্বাশঃ। मिटेवातटेख्रुखमा वीतः পर्यावात्रमर्ड्युनः ॥ २० ॥ স বার্য্যমাণ্টেস্তরস্কৈরজ্জনেন মহাল্পনা। গন্ধবরাজো বলবানু সায়য়। তাহিতন্তদা ॥ ২৪ ॥ षानु हिन्तु भागका अहत्त्र मथा उर्जुनः। তাডয়ামাস খচরৈর্দিব্যাক্ত প্রতিমন্ত্রিতেঃ ॥ ২৫ ॥ षात्रधीनवधकाषा हत्क कुरकार्ड्जूनस्रता। শব্দবেধং সমাশ্রিত্য বহুরপো ধনপ্রয়ঃ ॥ ২৬ ॥ म वधामानरेखतरेखतर्ब्ब्यान महाज्ञना । ততোক্ত । দর্শয়ামাস তদীলানং প্রিয়ঃ সথা ॥ ২৭ ॥ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ গৃহ গৃহীয়া ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ সংরত্য আচ্ছদ্য বিদ্যরা তাদৰ্শন শক্তা ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥

^{*} শক্রেণেতাত্র বজ্রেণেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

^{*} ততোম্বেত্যত্র অন্যথেতি পাঠঃ ক প্রস্তুকে।

চিত্রদেনস্তথোবাচ স্থায়ং যুধিবিদ্দিমাং,

* চিত্রসেনমথা লক্ষ্য স্থায় ব্রধি ছুর্বলম্। ২৮॥
সংজহারাস্ত্রমথ তৎ প্রস্থাই পাশুবর্ষভঃ।
দৃষ্ট্রা ছু পাশুবাঃ সর্ব্বে সংক্ষৃতাস্ত্র ধনপ্রয়ম্। ২৯॥
সংজহ্রঃ প্রদ্রুতানশ্বান্ শরবেগনে ধন্তুংঘি চ।
চিত্রসেনশ্চ ভীমশ্চ স্ব্যুসাচী ঘ্যাবপি।
পৃষ্ট্রা কৌশল্যমন্যোন্যং রথেদেবাবভিত্তিরে। ৩০॥
ইত্যারণ্যকে পর্বণি ঘোষ্যাতা পর্বাণি চিত্রসেন গন্ধবিপরাভ্বে
পঞ্চিছারিংশদ্ধিক দ্বিশতত্যেহধ্যায়ঃ। ২৪৫॥

रित्रभाषात्रम छेवाह ।

ততোহর্জুনশ্চিত্রসেনং প্রহসন্নিদমন্ত্রবীৎ।
মধ্যে গল্পকৈসৈন্যানাং মহেম্বাসো মহাছ্যুতিং ॥ ১॥
কিন্তে ব্যবসিতং বীর! কৌরবাণাং বিনিগ্রহে।
কিমর্থঞ্চ সদারোহ্য়ং নিগৃহীতঃ স্কুযোধনং ॥ ২॥
চিত্রসেন উবাচ।

বিদিতোহ্য়মভি প্রায়স্তত্তত্ত্ব ছুরাত্মনঃ। ছুর্য্যোধনস্থ পাপস্থা কর্ণস্থাচ ধনপ্রয়া।। ৩।

॥ २४ ॥ २३ ॥ ७० ॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চতারিংশদাধক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৪৫॥

ততোৰ্জন ইতি॥ ১॥ ২॥ তত্ত্বেন ময়েতিশেষঃ॥ ৩॥

^{*} চিত্রসেন মিতাশ্র পূর্ম্বার্দ্ধং ক পুস্তকে নাস্তি।

বনস্থান ভবতো জ্ঞাত্বা ক্লিশ্যমানাননাথবং। সমস্থে বিষমস্থা প্রধান দ্রক্ষ্যামীত্যনবস্থিত। । । । र्रे राश्वरहमिन् था था त्यो भनीक य माल्य नीय। জ্ঞাত্বা চিকীর্ষিতকৈষাং মামুবাচ স্করেশরঃ॥ ৫॥ গচ্ছ তুর্যোধনং বন্ধা সহামাত্যমিহানয়। ধনঞ্জরশ্চ তে রক্ষ্যঃ সহ ভ্রাকৃভিরাহবে ॥ ৬ ॥ স চ প্রিয়সখা তুভাং শিষাশ্চ তব পাওবং। বচনাদ্দেবরাজন্ম ততোহস্মীহাগতো ক্রতম্ ॥ ৭॥ অয়ং তুরাত্মা বদ্ধশ্চ গমিব্যামি স্থর।লয়ম্। নেষ্যাম্যেন তুরাত্মান পাকশাসনশাসনা । ৮ ॥ অর্জন উবাচ। উৎস্ক্যতাৎ চিত্রসেন ভ্রাতাস্মাকং স্কুযোধনঃ। ধর্মারাজন্ম সন্দেশাম্ম চেদিছাসি প্রিয়ম ॥ ১॥ চিত্রসেন উব্যচ। পাপোহয়ং নিত্যসম্ভষ্টো ন বিমোক্ষণমূহতি। প্রলকা ধর্মারাজন্ত কুফারাশ্চ ধনপ্রর ।॥ ১০॥ নেদং চিকীর্ষিতন্তম্ম কুন্তীপুজে। যুবিষ্ঠিরঃ। জানাতি ধর্মরাজো হি শ্রুত্বা কুরু যথেচ্ছসি। ১১॥ বৈশম্পারন উবাচ। তে সর্ব এব রাজানমভিজগার্ট্ধিটির্য। অভিগম্য চ তৎ সর্বাণ শশংস্কুস্তম্য চেটিতম্ ॥ ১২ ॥ অজাতশত্রস্ত ত্বা গন্ধর্বস্থ বচন্তদা। মোক্ষামান তান স্কান্ গক্কান্ প্রশশংস চ॥ ১৩॥ ॥৪।৫॥৬॥৭॥৮ । ৯ ॥ নিত্যং সমুক্টোমতইতার্থঃ সন্তুফীবাদমাইতি হচ্চো-

দৃপ্যতি দৃপ্তোধর্ম মতি ক্রামতীত্যাপশুষ্বচনাৎ প্রলব্ধকঃ ॥ ১০ ॥ ইদংমহুক্তং সমস্থো বিষমস্থাংস্তান্ দ্রক্ষ্যামীতি ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৬ ॥ দিষ্ট্যা ভবদ্ধির্বলিভিঃ শক্তৈঃ সর্কৈ র্ন হিংসিদঃ। ছুর্ব্ব, জ্যে ধার্ত্তরাষ্ট্রে। হয়ং সামাত্যজ্ঞ: তিবান্ধব: ॥ ১৪ ॥ উপকারো মহাংস্তাত। ক্লভোহয়ং মন খেচরৈঃ। কুল ন পরিভূতং মে মোকণেই অ চুরাত্মনঃ। ১৫। আজ্ঞাপয়ধমিফানি প্রীয়ামো দর্শনেন বঃ। প্রাপ্য সর্বানভিপ্রায়াংস্ততো ব্রজ্জ মা চির্মু : ১৬ ॥ অনুজ্ঞাতান্ত গন্ধব্যঃ পাণ্ডুপুত্রেন ধামতা। সহাপ্সরোভিঃ সংক্ষান্তিত্রসেনমুখা যযুঃ॥ ১৭ ॥ দেবরাডপি গন্ধবি মৃতাংস্তান্ সমজীবয়ং। দিব্যেনামূত্ৰবৰ্ষেণ যে হতাঃ কৌনবৈৰ্দ্ধি॥ ১৮ ॥ জ্ঞাতীংস্তানবমুচাথে রাজদারাংশ্চ সর্বাশঃ। **রুত্বা চ তুম্ববং কর্ম্ম প্রীতি**যুক্ত। 🏲 পা**ও**বাং 🛊 ১৯ 🥫 সন্ত্রীকুমারেঃ কুরুভিঃ পূজ্যমানা মহারথাঃ। বভাজিরে মহাত্মানঃ ক্রুমধ্যে যথাগ্রঃ॥ ২০॥ ততো তুর্যোধনং মুক্তং ভ্রাতৃভিঃ সহিত্তদ।। যুধিষ্ঠিরস্ত প্রণয়াদিদং বচনমত্রবীং ॥ ২১ ॥ মা স্ম তাত। পুনঃ কার্যারীদুশং সাহসং ক্লচিৎ। ন হি সাহসকর্তার: স্কুখ্মেধান্ত ভারত! ॥ ২২ ॥ স্বন্থিমান সহিতঃ সবৈত্র তিভিঃ বুরুনন্দন!। গুহানু ব্ৰহ্ম যথাকামং বৈমনস্থাপ্ত মা কুথাং ॥২৩॥ रेवनम्भारम छ । পাপ্তবেনাভারুজ্ঞাতো রাজা তুর্য্যোধনস্তদা।

অভিবাদ্য ধর্মপুত্রণ গতেনির ইবাতুরঃ ॥ ২৪ ॥

158॥১৫॥ দৃষ্টানি বস্ত্রালিকারাদীনি আজ্ঞাপরয়ং ভবদর্থং নানেবানেষাতীতি
॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ স্বর্থং স্থাবেন এখন্তি এবত্তে
বর্জন্তে ॥ ২২ ॥ বৈমন্ত্রং বৈরক্ষেন চিৎসহমাকৃষ্যঃ সাকুক ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥

বিদীর্ঘ্যমাণো ব্রীডাবান্ জগাম নগরং প্রতি।
তিন্মন্ গতে কৌরবেয়ে কুন্তীপুজাে যুবিষ্ঠিরঃ ॥ ২৫ ॥
ভাতৃভিঃ সহিভাে বীরঃ পূজ্যমানো দিজাতিভিঃ।
তপােধনৈক তৈঃ সর্ক্রের্কাতঃ শক্র ইবামরৈঃ ॥ ২৬ ॥
তথা দৈতবনে তন্মিন্ বিজহার মুদা যুতঃ ॥ ২৭ ॥
ইত্যারন্যকে পর্কাণি ঘােষ্যাক্রা পর্কাণি ছুর্য্যাধনাদিমাক্ষণে
ঘট্চত্মারিং শদ্ধিকদ্বিশ্ততমােহ্ধ্যায়ঃ ॥ ২৪৬ ॥

জনমেজয় উবাচ।

শকুভিজিতিবদ্ধ পাওবৈশ্চ মহাল্পভিঃ।
মোক্ষিতস্থা মুধা পশ্চামানিনঃ স্কুরাল্পনঃ॥ ১ ৫
কথনস্থাবলিপ্তস্থা গবিভিন্ন চ নিত্যশঃ
মূল চ পৌরুষৌদার্থাঃ পাওবানব্যন্তঃ॥ ২ ॥
দুর্ঘোধনস্থা পাপস্থা নিত্যাহস্কারবাদিনঃ।
প্রবেশো হান্তিনপুরে দুদ্ধরঃ প্রতিভাতি মে॥ ৩॥
তম্ম লজ্জান্থিত স্থৈব শোকব্যাকুল চেত্সঃ।
প্রবেশং বিস্তরেণ ত্বন বৈশন্পায়ন! কীর্ত্রি॥ ৪॥

१८ । ২৬ । ২৭ ।
 ইত্যারন্তে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে
 ইত্যারশ্বিংশদ্ধিক দিশকতমাহধ্যায়ঃ । ২৪৬ ।

শক্তিরিতি ॥ ১ ॥ কখনস্থ আগ্রন্থতি পরস্থ অবলিপ্তদ্য পাপাশয়স্থ গবিতদা অত্যবমানিনঃ অতএব পাণ্ডবান্ব মন্যতঃ অহস্কারং গবিং বদতী-তিত্থা ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ বৈশস্থায়ন উবাচ।

ধর্মরাজনিস্ফস্ত ধার্ত্তরাষ্ট্রঃ স্কুযোধনঃ। লজ্জরাধোমুখঃ সীদর্পাসর্পৎ স্কুত্রখিতঃ ॥ ৫॥ সপুর∿ প্রযো রাজা চতুরঙ্গবলারুগঃ। শোকোপহত্যা বুদ্ধা চিন্তয়ানঃ পরাভব্য ॥ ৬॥ বিমুচ্য পথি যানানি দেশে স্থযবসোদকে। সনিবিটঃ শুভে রম্যে ভূমিভাগে যথেপি চম ॥ ৭॥ হস্তাশরথপাদ ত যথাস্থানং নাবেশ্রে । অথোপবিষ্টৎ রাজানং পর্যাক্ষে জ্বনপ্রতে। ৮॥ উপপ্লতং কথা সোমং রাহ্বা রাতিদ~ক্রে। উপগম্যাব্রবীৎ কর্ণো তুর্য্যোধনমিদ তদা ॥ ৯ । िक्छि। कीविंग शाकाद्र निक्छ। नः मक्रमः श्रुनः। দিষ্ট্যা ত্বয়া জিতাকৈর গন্ধব**ি কাম**রূপিণঃ ॥ ১০ ॥ দিষ্ট্যা সমগ্রান্ পশ্যামি ভাতৃপত্তে কুরুনন্দন!। বিজিগীযু ন্নে যুক্তালিজি তারীমহারথান্ ॥ ১১ ॥ অহং ত্বভিদ্রুতঃ সর্টের্কর্গন্ধবৈঃ পশ্যতন্ত্র । नामक् वर ञ्चालतिकुर नीयामानाक वाहिनीम् ॥ ১२ ॥ শরক্ষতাঙ্গদ ভূশং ব্যপয়াতোহতিপীডিতঃ। ইদত্ত্তাদ্তংমন্যে যদযুগানিহ ভারত ! ॥ ১৩ ॥ অবিফানকত। শচাপি সদারবলবাহনান। বিমুক্তান্ সংপ্রপশ্চামি যুদ্ধান্তশাদমানুষাৎ ॥ ১৪ ॥ নৈতন্ত কর্ত্তা লোকেহন্মিন্ পুমান্ বিদ্যতি ভারত।। যৎক্ত^ তে মুহারাজ! সহ ভাতৃভিরাহবে ॥ ১৫॥

1 4 1 4 1 9 1 7 1 2 1 20 1 22 1 22 1 20 1 28 1 24 1

বৈশম্পারন উপ্ত। এবমুক্তস্ত কর্ণেন রাজা ছুর্যোধনস্তদা । * উবাচ চাঙ্গরাজানৎ বাস্পর্গদাদ্যা গিরা॥ ১৬॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি ঘোষঘাত্রাপর্বাণি কর্ণছুর্যোধনসংবাদে সপ্তচত্বারিংশদ্ধিক্দিশ্তত্যোধ্যায়ঃ॥ ২৪৭॥

ছুর্যাধন উরাচ।

তাজানভত্তে রাধের নাভ্যন্ত্রামাহং বচঃ।

জানানি ত্ব জিভাঞ্জুন্ গল্পবি। স্তেজসা মরা॥ ১॥

তাবোধিতাপ্ত গল্পবাঃ স্কৃতির প্রেনির র্মান ।

মরা সহ মহাবাহো। ক্রতশ্চোভরতঃ ক্ষরঃ ॥ ২॥

মারাধিকাপ্ত যুধান্ত যদা শূরা বিয়দ্দাতাঃ।

তদা নো ন সমপ যুদ্ধমভবং থেচরৈঃ সহ॥ ৩॥

পরাজয়ঞ্চ প্রাপ্তাঃ স্মোরণে বন্ধনমেব চ।

সভ্ত্যামাত্যপুল্লাক্চ সদারবলবাহনাঃ॥ ৪॥

উদ্ধেরাকাশমার্কে। ক্রিরামিন্তঃ স্কুঃখিভাঃ।

তথ নঃ সৈনিকাঃ কেচিদ্যাত্যাক্চ মহার্ধাঃ॥ ৫॥

॥ ১৬ ॥ ইত্যারগ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তচন্ত্রারিংশদধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৪৭ ॥

জাজানতত্তে ইতি নাভাত্য়ামি দোষবদিতি ন মতে ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ॥ ৫ ॥

^{*} উনাচচান্দ রাজানমিত্যত্র উনাচানাক্ শিরাঃ কর্ণ মিতি পাঠঃ ক পুত্তকে।

উপগম্যাক্রবন্ দীনাঃ * পাগুবাং শ্চরণ প্রদান্। এষ ছুর্য্যোধনো রাজা ধার্ত্তরাষ্ট্রঃ সহান্ত্রজঃ॥ ৬॥ সামাত্যদারে। হ্রিয়তে গন্ধবৈর্দিবমাপ্রিতেঃ। তং মোক্ষয়ত ভদ্রং বঃ সহদারং নরাধিপম ॥ १॥ পরামর্শো মা ভবিষ্যৎ কুরুদারেযু সর্দ্ধশঃ। এবমুক্তে তু ধর্মাত্মা জ্যেষ্ঠঃ পাণ্ডস্কতন্তদা ॥ ৮॥ প্রসাদ্য পাওলানু সর্বানাজ্ঞ।পয়ত মোকণে। অথাগন্য তনুদেশৎ পাপ্তবাঃ পুরুষর্যভাঃ॥ ১ ॥ সাজ্বপুর্বাস্থাচন্ত শক্তাঃ সন্তো মহারথাঃ। যদা চাম্মান্ন মুমুচুর্গন্ধবাঃ সান্ত্রিতা অপি ॥ ১০ ॥ ততে। ২ জ্রুন * চ ভীম * চ यगर को চ বলোৎ কটৌ। মুমুচুঃ শরবর্ষাণি গন্ধকীন্ প্রত্যনেকশঃ ॥ ১১ ॥ অথসর্কে রণং মুক্তা প্রযাতাঃ থেচরা দিবমু। অস্মানেব।ভিকৰ্ষন্তো দীনান্ মুদিত্যানসাঃ ॥ ১২॥ ততঃ সমন্তাৎ পশ্চামঃ শরজালেন বেফিতম। অমানুষাণি চান্ত্রাণি প্রমুঞ্চরং ধনঞ্জর্ম। ১৩ । ममातृ जा निरमा मुन्हे। भा खर्यन निरेजः भरेतः। ধনপ্রস্থাত্মান দর্শরামাস বৈ তদা ॥ ১৪ ॥ চিত্রসেনঃ পাগুবেন সমাশ্লিষ্য পরস্পার্য। কশল পরিপপ্রচ্ছ তৈঃ পৃষ্টশ্চাপ্যনাময়ম্॥ ১৫॥ 9 || 12 || 20 || 30 || 32 || 32 || 30 || 38 || 30 ||

 ^{*} পাওবাংশ্চরণ প্রদায়িতায় পাওবান্ শরণ প্রদায়িত পাঠঃ ক
প্রকে।

তে সমেত্য তথান্যোন্য সন্নাহান্ বিপ্রমুচ্য চ।
একীভূতাস্ততো বীরা গল্পবাঃ সহঃ পাগুৱৈঃ।
অপুজয়েতামন্যোন্যং চিত্রসেনধনপ্লয়ৌ ॥ ১৬॥
ইত্যারণ্যকে পর্নাণি ঘোষযাত্রাপর্বাণ কর্ণত্র্যোধনসংবাদে
অফচত্বারি শদ্ধিক্দিশত তমোহ্যায়ঃ ॥ ২৪৮॥

ছুর্ব্যাধন উল্কান।

চিত্রসেন প্রমাণ সমাণ মা প্রহ্মর ব্রুদ্ধিন।
ইদং বচনমন্ধীবনত্রবীৎ পরবীরহা॥ ১॥
ভাত্নর্হসি মে বীর মোকুং গল্পর্বসন্তম!।
ভান্হর্হসি মে বীর মোকুং গল্পর্বসন্তম!।
ভান্হর্হসি মে বীর মোকুং গল্পর্বসন্তম!।
ভান্হর্হসি মে বীর মোকুং গল্পর্বান।
ভবাচ যথ কর্ন! বয়ং মল্লয়তো বিনির্গ্রাণঃ ॥ ৩॥
ভ্রমির মে স্থাদ্ধীনান্ সদারান্ পাওবানিতি।
ভিন্মির্কার্যমাণে তু গল্পর্বেণ বচস্থা॥ ৪॥
ভূমের্বিবর মরৈছ্ং প্রেকুং ব্রীডয়ান্বিতঃ।
রুধিন্তির মথাগম্য গল্পর্বাণঃ সহ পাওবৈ॥ ৫॥
ভ্রমাদ্ধুর্মিন্তিক ভব্মে বদ্ধাংশ্রাম্যবেদয়ন্।
স্রীসমক্ষমহং দীনো বদ্ধাং শত্রুবশং গভঃ॥ ৬॥
যুধিন্তিরস্থোপক্ষতঃ কিন্ত্র্থমতঃ প্রম্।
যে মে নিরাক্তা নিত্যং রিপুর্যেষামহং সদা॥ ৭॥
॥ ১৬॥

ইত্যারণ্যকে পর্ম্বণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে অফ্টচন্থারিং শদধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৪৮ ॥

চিত্ৰেন মিতি॥ ১॥ २॥ ७॥ ৪॥ ৫॥ 🗢॥ १॥

হৈর্ম্মোফিতে ২হং তুর্ব্ব দ্বিদ্তুং তৈরেব জীবিতম্। প্রাপ্তঃ স্থাপ যদ্যহং বীর ! বধং তিমান্তারণে ॥ ৮ ॥ শ্রেরস্কৃতিতা মহা নৈবং ভূতফা জীবিতস্। অভূদ্যশঃ পৃথিব্যাৎ মে খ্যাতৎ গন্ধবিতো বধাৎ ॥ ৯॥ थाश्वाक भूगाताकाः सुर्गाहत्त्व, परनश्याः। যত্ত্বা মে ব্যবসিত্ত ভেচ্পুধ্ নর্যভাগে। ১০ ॥ ইহ প্রাযমুপাশিষ্যে যুরং ব্রজত বৈ গুহানু। ভাতরশৈচৰ মে সংখা যান্তুদ্য স্বপুরং প্রতি॥ ১১ ॥ কর্ণ প্রভূতর হৈছেব প্রহ্লদো বান্ধবাশ্চ যে। ছংশাসনং পুরস্কৃত্য প্রয়ন্ত্রদ্য পুরং প্রতি॥ ১২ ॥ ন হাংং সংপ্রযাক্তামি পুরং শকুনিরাক্তঃ। শত্মানাপহো ভূত্বা স্কলং মানকুত্তথা। ১৩। স স্থৃহচ্ছোকদো জাতঃ শত্রাপ হর্বর্দ্ধনঃ। বারণাহ্বযুমাসাদ্য কিং বক্ষ্যামি জনাধিপমু॥ ১৪ ॥ ভীন্মদ্রোণৌ রূপদ্রৌণী বিত্ররঃ সঞ্জযন্তথা। বাহ্লিকঃ সৌমদন্তিশ্চ যে চান্যে বুদ্ধসন্মতাঃ॥ ১৫॥ ব্রাহ্মণাঃ শ্রেণিমুখ্যাশ্চ তথোদাগীনরত্তয়ঃ। কি॰ মাং বক্ষ্যান্ত কিঞ্চাপি প্রতিবক্ষ্যামি তানহয়॥ ১৬॥ রিপূণাং শিরসি স্থিতা তথা বিক্রম্য চোরসি। আত্মদোষ্থ পরিভ্রম্ব: কথ্য বক্ষ্যামি তানহমু॥ ১৭ ॥ कुर्विनी छाः खिब्र थाश्रा दिम्राटेम खर्यात्मव वा। তিষ্ঠন্তি ন চিরং ভদ্রে যথাহ্ মদগর্বিতঃ ॥ ১৮॥ ॥৮॥ এবং ভূতস্মজীবিতং নশ্রের ইতি সম্বন্ধঃ অভূৎ অভবিষ্যৎ॥ ৯॥ ১०॥ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ (अनिमूर्यातः निष्णि मः योज मूर्यातः প্রকৃতয় ইত্যর্থ: ॥ ১৬ ॥ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

আহোহনাইমিদং কর্ম কন্টং তুশ্চরিতং ক্তম্।
স্বাং তুর্কৃদ্ধিনা মোহাদেয়ন প্রাপ্তোহিন্ম সংশ্যম্॥ ১৯॥
তন্মাৎ প্রায়মুপাশিষ্যে ন হি শক্ষামি জীবিতুম্।
চেত্যানো হি কো জীবেং কুছু ছিত্র ভিরুদ্ধতঃ॥ ২০॥
শকু ভিশ্চাবহসিতো মানী পৌরুষবর্ভিতঃ।
পাপ্তবৈর্কিক্রমাটোশ্চ সাব্যানমবেক্ষিতঃ॥ ২১॥

বৈশভাগ্যন উবাচ। এবং চিন্তাপরিগতো জুঃশাসন মুথাত্রবীং। ছঃশাসন! নিবোধেদং বচনৎ মম ভারত। ॥ ২২ ॥ প্রতীচ্ছ ত্বং ময়া দত্তমভিবেক নুপো ভব। . প্রশাধি পৃথিবীং ক্ষীতাং কর্ণসৌবলপালিতাম্॥ ২৩॥ ভাতৃনু সালয় বিশ্বরং মক্তে। রুত্রহা যথা। বান্ধবাস্থোপজীবন্ত দেবা ইব শতক্রম্ ॥ ২৪ ॥ ব্রাহ্মণেয়ু সদা র্ত্তি^ কুর্কীথাশ্চাপ্রমাদতঃ। বন্ধুনা স্ফ্লাঞৈব ভবেথাস্তুং গতিঃ সদা ॥ ২৫ ॥ জ্ঞাতী শ্চাপ্য রূপ শ্রেখা বিষ্ণু দেবগণান যথা। গুরবঃ পালনীয়ান্তে গচ্ছ পালয় মেদিনীয়॥ ২৬॥ নন্ধন্ সুহৃদঃ সর্বান্ শাত্রবাং শ্চাবভৎ সয়ন্। কঠে চৈনং পরিষজ্য গম্যতামিত্যবাচ হ। ২৭॥ তক্ত তদ্বচনং প্রুত্বা দীনো তু:শাসনোহত্রবীৎ। অঞ্কেঠঃ সুদু:থার্ডঃ প্রাঞ্জলিঃ প্রণিপত্য চ॥ ২৮॥ সগদাদমিদ^ বাক্যং ভ্রান্তরং জোষ্ঠমাত্মনঃ। প্রসীদেত্যপতদ্ধুমৌ দূরমানেন চেত্সা॥ ২৯,॥ ॥১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ বিঅব্ধং সবিশাসং বথাকাতথা॥ ২৪ ॥ २०॥२७॥२१॥२৮॥२৯॥

তুঃথিত পাদয়োস্তম্য নেত্রজং জলমুৎস্ঞান্। উক্তবাৎশ্চ নরব্যান্ত্রে। নৈতদেবং ভবিষ্যতি ॥ ৩১॥ বিদীর্য্যেৎ সকলা ভূমির্দি শৈকালীভবেৎ। রবিরাত্মপ্রভান জন্মাৎ সোমঃ শীতা শুতাং তাজেৎ। ৩১॥ বাযুঃ শৈঘ্ৰমথো জহাদিমবংশ্চ প্ৰিজেৎ। শুষ্যেক্তোর সমুদ্রেষু বহ্লিরপুষ্ণভাং ভ্যক্তেং॥ ৩২ ॥ न जुरू जुनु एक लोकन् श्रमारमग्नर वस्काराम्। পুনঃ পুন: প্রান্তে বাক্যঞ্চেদ্বাচ হ ॥ ৩৩ ॥ व्याप्त नः कृत्न द्राकां ভবिषानि भठः गर्भाः। এবমুক্তা স রাজানং স্থস্তরং প্ররুরোদ হ॥ ৩৪॥ भारित मः म्लूभा भागारो जाजूर क्रिकेश क ते । I তথা তৌ তুঃখিতৌ দুঝা তুঃশাসন স্কুষে,ধনৌ ॥ ৩৫॥ অধিগম্য ব্যথাবিষ্টঃ কর্ণস্তৌ প্রত্যভাষত। विधीमशः कि॰ कोत्रत्यो ! वालिशा ९ आक्रुटाविव ॥ ८७ ॥ ন শোকঃ শোচমানতা বিনিবর্ত্তে কাইচিং। यहां ह (भाहतः (भारका वामन * नांभक्षां ह ॥ ७१ ॥ সামর্থাং কিন্তুতঃ শোকে শোচমানৌ প্রপশ্রথ:। ধুতিং গুহ্নীতং মা শকুন্ শোচন্তৌ নন্দবিষাথঃ ॥ ৩৮ ॥ कर्त्वा । ह कु उर ताकन्। भा खरेव छव मा कन्यू। নিভামেব প্রিয়ং কার্যাং রাজ্ঞো বিষয়বাসিভিঃ। ৩৯। ७ ॥ ७ ॥ ७ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ यमार्टिक या विमार्टिक स ব্যসনং নশোত্রহিদ কর্ত্তবাঃ নতুত্ত্তথা ও অ ৩ঃ শোকে। ন কর্ত্তবা ইত্রধঃ

^{*} নাপকর্যতাত্ত চাপকর্যতীতি পাঠ: য পুতকে।

পালমোনান্ত্রা তে হি নিবসন্তি গতজ্বা:।
নাইক্সেব-গতে মনুং কর্জুং প্রাক্তবদ্যথা ॥ ৪০ ॥
বিষশ্ধ স্তব সোদর্যাান্ত্রি প্রায়ং সমান্থিতে।
উত্তিষ্ঠ ব্রজ্ ভদ্রং তে সমাশ্বাসয় সোদরান ॥ ৪১ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বনি ছোষ্য তা পর্বনি কর্ণ তুর্যোধনসংখাদে
ভনপঞ্জাশদ্ধিক দ্বিশতভ্যোহধ্যায়ঃ ॥ ২৪৯ ॥

कर् डेराह।

রাজয়শ্যাবগজামি তবেছ লঘুসত্ত্তাম।
কিমত্র চিত্রং যদীর! মোক্ষিতঃ পাপ্তবৈরসি॥ ১॥
সদ্যোবশং সমাপন্নঃ শত্ত্বাং শতুক্ষা।
সেনাজীবৈশ্চ কৌরবা! তথা বিষরবালিভিঃ॥ ২॥
অজ্ঞাতৈ ছথাবা জ্ঞাতৈঃ কর্ত্বাং নৃপভেঃ প্রিম্ম।
প্রায়ঃ প্রধানাঃ প্রকাঃ ক্ষোভরন্তারিবাহিনীম্॥ ৩॥
নিগৃহন্তে চ যুদ্ধেরু মোক্ষান্তে চ স্বসৈনিকৈঃ।
সেনাজাবাল্চ ষেরাজ্ঞাং বিষয়ে সন্তি মানবাঃ॥ ৪॥
তৈঃ সক্ষমা নৃপার্থায় যভিত্বাং যথাত্থম্।
যদ্যেবং পাপ্তবৈ রাজন্। ভবাছম্যবাসিভিঃ॥ ৫॥
মন্ত্রা মোক্ষতাহ্সি তক্র কা পরিদেবনা।
ন চৈতৎ সাধু যাজান্য। পাপ্তবাস্থাং নৃপোত্ম *॥ ৬॥
॥ ১০॥ ৪১॥

ইত্যারণ্যকে পর্কণি নৈলকণীয়ে ভারত ভাবদীপে উনপঞ্চাশদধিক ধিণত তমেহিধ্যায়ঃ ॥ ২৪৯ "

রাজনিতি স্পর্ফার্থোধানঃ ॥১॥२॥७॥৪॥৫॥७॥

নুপোত্তমেত্যর নুপোত্তমমিতি পা১ঃ ধ পুত্তকে।

चरमनम् मः अम्रास्तः नानुगासि च पृष्ठकः। শূরাশ্চ বলবমূশ্চ সংযুগেম্বপলায়িনঃ॥ ৭ ॥ ভবতত্তে সহায়া বৈ প্রেষাতাং পুর্বিমাগতাঃ ৷ পাগুবেয়ানি রজ্বানি স্বমদ্যাপুপেভুঞ্জদে ॥ ৮ ॥ সত্ত্বস্থান্ পা গুৱান্ পশ্চ ন তে প্রায়মুপাবিশন্। উত্তিষ্ঠ রাজন্! ভদ্র৲ তে ন চির৲ কর্তু্রহিদি ॥ ৯ ॥ অবশ্যমেব নুপতে রাজ্যো বিষয়বাসিভিঃ। প্রিয়াণ্যাচরিতব্যানি ৫তা কা পরিদেন। । ১০॥ মন্বাক্যমেভদ্রাজেন্দ্র । যদ্যেবং ন করিষাসি। স্থাস্যামীহ ভবৎপাটেন গুজবন্ধনিমৰ্দন! ॥ ১১ ॥ নোৎসহে জীবিভূমহং অভিহীনো নর্বভ!। প্রায়োপবিষ্টস্ত নুপ ! রাজ্ঞাং হাস্তো ভবিষ্য স । ১২ ॥ देनमन्ताग्रम छेनाइ। **ध्वयकुल कर्णन हाका पूर्याधनला।** বৈবেপথাতুশ মনস্চক্রে স্বর্গায় ক্লভনিশ্চয়ঃ ॥ ১৩ ॥ इंड्याद्रगारक शक्ति (घ यराजा शक्ति कर्ग्ब्र्स्याधन मन्यादन পঞ্চাশদ্ধিক ছিশভভ্যোহ্ধ্যায়: ॥ ২৫০ ॥

বৈশন্পায়ন উবাচ। প্রায়োপবিষ্টি রাজানং তুর্য্যোধন মমর্থণম্। উবাচ সাস্থ্যনুজিঞ্কুলিঃ সৌবলস্তদা॥ ১॥

প্রাংপবিষ্ট মিতি॥১॥

भक् नक्राह।

 সম্প্রক্তং হি কর্ণেন তচ্চতং কৌরব ত্বয়।। ময়াহ্বতা শ্রেষং ক্রীতাং তাং মোহাদপহায় কিম্॥ ২॥ ष्मवृक्ताना नृপতে। প্রাণানুৎস্রন্ট্রন্থনি। 🏶 অথবাপাবগচ্ছামি ন রুদ্ধাঃ সেবিতাস্থা।। ৩ ॥ यः मञ्जूरপভিতং হर्ष रेप्तनार या न नियक्छि । স নশুতি ভাষেং প্রাপ্য পাত্রনামমিবান্তুসি। ৪॥ অতিভীরুমতিক্লীবং দীর্ঘসূত্রং প্রমাদিনমু। ব্যসনাদিষয়।ক্রান্তং ন ভজন্তি নূপং প্রজাঃ॥ ৫॥ সৎক্ষতত হি তে শোকো বিপরীতে কথং ভবেং। মা কুতং শোভন পাহৈছি: শোকমালয় ন শয়। ৬ ॥ যত্র হর্বস্তর। কার্য্যঃ সৎকর্ত্ব্যাশ্চ পাওবাঃ। তত্ত শোচসি রাজেন্দ্র । বিপরীতমিদ্ধ তব॥ १॥ প্রসীদ মা ভ্যকাত্মানং ভুফান্ট স্থকুতং স্মর। প্রয়েচ্ছ রাজ্যং পার্থানাং যশো ধর্মানবাপ্লাই ॥ ৮ ॥ ক্রিয়ামেতাং সম;জ্ঞায় ক্লতজ্ঞসুং ভবিষ্যাস। मोखाबर পा खरेवः कृषा ममवद्या रा रेव जान ॥ २ ॥

২॥৩॥ পাত্রং মুৎ পাত্রং আমং অপকং ॥৪॥ ভীরং আমনাশ
শঙ্কাকু ২ ক্লীবং সামর্থহীনং দীর্থস্থারং চিরকারিনং প্রমাদিন মনবহিতং ব্যসনাৎ দৃত্তিপান মুগ্রাদি রূপাং বিষয়েঃ জ্র্যাদিভিরাক্রান্তং
তত্ত্বাং মধ্যে প্রমাদী বিষয়াক্রান্ত শেচভিভাবঃ ॥ ৫॥ পার্থিঃ ক্লতং
শোভনং শোক্রমালয় মানশ্যেতি সম্বন্ধঃ॥৬॥৭॥ আত্মানং শরীরমাত্মজ্ঞ
॥৮॥১॥

^{*} অথবাপীতাত্ত অদ্যচাপীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

পিত্র্যং রাজ্যং প্রযুক্তিষাং ততঃ স্থ্রথমবাপ্সাসি। বৈশস্পায়ন উব্দুচ।

শকুনেস্ত বচঃ শ্রুত্বা তুঃশাসনমবেক্ষ্য চ ॥ ১০ ॥
পাদয়োঃ পতিতং বারং বিক্ত ত ভাতৃসোক্ষদাং ।.
বাস্থভাত সাধুজাতাভাঃং তুঃশাসনমরিন্দমম্ ॥ ১১ ॥
উপাপ্য সংপরিষক্য প্রতিতা জিন্তুত মূর্দ্ধনি ।
কর্নিবিলয়োশ্চাপি সংশ্রুত্য বচনান্যসৌ ॥ ১২ ॥
নিকেদং পরমং গত্বা রাজা তুর্য্যোধনস্তদা ।
ব্রীডয়াভিপরীতাল্লা নৈরাশ্রুমগমহ পরস্ ॥ ১৩ ॥
তচ্ছুত্বা স্কুদল্টের সমন্মারিদমন্ত্রবীং ।
ন ধর্ম্মধনসৌখ্যান নৈশ্বর্যেণ ন চাজ্ঞরা ॥ ১৪ ॥
নৈব ভোগৈশ্চ মে কার্যাং মা বিহুন্যত গচ্ছত ।
নিশ্চিত্রেক মম মতিঃ স্থিতা প্রায়োপবেশনে ॥ ১৫ ॥
গচ্চ্ছাং নগরক সন্মোক্ষিক্য ল ১৬ ॥
বা গতিস্তব রাজেন্দ্র । সান্ধাক্ষমি ভারত ! ।
কথং বা সংপ্রবিক্যামস্কৃদ্ধিহীনাঃ পুরং ব্যম্ ॥ ১৭ ॥

॥ ১০॥ বিক্তং স্লানং ভাত্দেহিদং ভাত্রি দৌহনং বাৎসলা
গাসান্তি তি ভাত্দেহিদন্তং ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ নিবেদং জীবিত বৈরাগাং
বৈরাশাং রাজ্যলাভে ইতি শেবং ॥ ১৩ ॥ সমনুহি বৈনাবান্ ধর্মেন ধর্মেন
দৌখ্যেনবা ন মমকার্যা মিতি সহস্কঃ ধর্মধনাভ্যাং যংদৌধ্যং তেনবা
আজিয়া আজাফলেন রাজ্যেনেতার্থ ৪ ১৪ ॥ মাবিহন্যত আজানং
মা্যাত্রতমমসংকপাৎবামানাণ্যত ॥ ১৫ ॥ পুরাা ভবভিরিতি
শেষঃ গুরবোর্তরাফ্রীদয়ঃ ॥ ১৬ ॥ ২৭ ॥ স্হন্তিঃ কর্নবিদ্যঃ অমাত্যৈঃ
শক্ষি প্রতিভিঃ ভাত্তিঃ হংশাসনাদিতিঃ স্কর্নঃ সহিদ্ধিভঃ

বৈশস্পায়ন উবাচ।

স সুহৃত্তিরমাতৈয়ক ভ্র.তৃভিঃ স্বজনেন চ। বছপ্রকারমপুরক্তো নিশ্চয়ান্ন বিচালাতে ॥ ১৮ । দর্ভান্তর ব্যান্তীর্যা নিশ্চয়াক্তরাষ্ট্রকঃ। সংস্থাপঃ শুচিভূ স্বাভূ গলে সমুপস্থিত:। ১৯ ॥ কুশচীরাম্বরধরঃ পরং নিয়মমাস্থিত:। বাগ্যতো রাজশার্দিলং স স্বর্গতিকাম্যা ॥ ২০ ॥ মনদোহপচিতি > কৃত্বা নিরস্থ চ বহিষ্ক্রিয়াঃ। অথ তং নিশ্চরং তহ্য বুদ্ধা দৈতেয়দানবাঃ ॥ ২১ ॥ পা डालवानिता (ब्रोजाः शृक्ष - एएरेवर्किनिक्किंडाः। তে স্পক্ষরং ভদ্ত জ্ঞাত্বা তুর্য্যোধনতা বৈ। ২২ । আহ্বনায় তদা চকুঃ কর্মা বৈতানসম্ভবম্। রুহস্পত্যুশনে।কৈশ্চ মক্ত্রের্গ্মন্ত্রবিশারদাঃ ॥ ২৩ ॥ व्यथक्रद्रविष्ट्याटेळ्क वार्ष्मात्रनिविष क्रियाः। মন্ত্রজপ্যসময়েক্তান্তান্তদা সংপ্রতিয়ন্॥ ২৪॥ জুহ্ব ত্যথৌ হবিঃ ক্ষীরং মন্ত্রবৎ স্থাসমাহিতাঃ। ব্রাক্ষণা বেদবেদাঙ্গপারগাঃ স্কুদুতব্রতাঃ ॥ ২**৫ ।**

॥ ১৮॥ ১৯॥ বাগ্যতো মেনী স্বর্গগতির্মরণং তৎকাষায়া তদিচ্ছয়।॥ ২০॥ মনসা উপসমীপে চিতিং দাছার্থং কাষ্ঠ সঞ্চয়ং ক্রহা সংকল্পা অবশ্যং মর্ত্ব্য মিতি নিশ্চিত্যেত্যর্থ: বহিঃ ক্রিয়াঃ স্থানপানাদ্যাঃ॥ ২১॥ ২২॥ বৈতানসং ভবং অগ্রিবিস্তার সাধাং নবকুঞ্জাদি বিধানং আথর্মণিকং নতু ক্রীরূপং॥ ২০॥ উপনিষদি আর্ল্যকে প্রোক্তাঃ ক্রিয়াঃ সর্বাং প্রবিধ্যাক্রমং এবিধ্য শিরোভি রঞ্জধমনীঃ প্রভ্রেত্যাদি মন্ত্র প্রকাশিতা শক্রন্দরণর্থা এতমন্ত্র জপছোমাদিরপাঃ সম্বর্ত্তরন্ সংপ্রাবর্ত্তরন্ দৈতের দানবা ইতি পুর্বেণ সম্বন্ধঃ॥ ২৪॥ ২৫॥ কৃত্যা আজ্ঞাকরী দেবতা

কর্মানিদ্ধী তদা তত্র জ্পুমানা মহান্তুতা।
ক্রত্যা সমুপ্রতা রাজন্ ! কিং করে মীতি চাত্রবীৎ ॥ ২৬ ॥
আছদৈত্যাল্চ তাং তত্র স্থপ্রীতেনান্তরাত্মনা।
প্রায়োপবিকং রাজানং ধার্ত্রপ্রীমহানয় ॥ ২৭ ॥
তথেতি চ প্রতিক্রত্য সা ক্রত্যা প্রযোগ তদা।
নিমেষাদগমভাপি যত্র রাজা স্ক্রোধনঃ ॥ ২৮ ॥
সমাদায় চ রাজান প্রবিশে রসাতলম্।
দানবানাং মুহুর্ভাচ্চ তমানীতং ন্যবেদয়ং।
তমানীতং নৃপা দৃষ্ট্যা রাত্রৌ সংগত্য দানবাঃ ॥ ২৯ ॥
প্রহ্মিমনসঃ সর্বে কিঞ্চিত্রৎফুল্ললোচনাঃ ।
সাভিমানমিদ বাক্য স্ক্রোধনমথাক্রবন্ ॥ ৩০ ॥
ইত্যারণাকে পর্বেণি ঘোষ্যাত্রা পর্বেণি মুর্যোধন প্রায়োপবেশে
ত্রুপঞ্চাশদধিক দ্বিশতত্যোহ্যায়ঃ ॥ ২৫১ ॥

मानवा छेटू:।

ভোঃ সুযোধন রাজেন্দ্র । ভরতানাং কুলোছই।
শূরৈঃ পরিষতো নিতাং তথৈব চ মহাল্পভিঃ ॥ ১ ॥
অকার্যাঃ সাহসমিদং কন্মাৎ প্রায়োপবেশনম্।
আগলতারী হুধো যাতি বাচ্যতাঞ্চাযশক্ষরীমু ॥ ২ ॥

ম ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥
 ইভ্যারণ্যকে পর্বাণ বৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে
 এক পৃঞ্চাশদ্ধিক বিশতভ্যোহধ্যায়ঃ ॥ ২৫১ ॥

ভোঃ অ্যোধনেতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ কার্ষা বিকলেয়ু শত্রুজয় বিকলেয়

ন হি কার্য্যবিরুদ্ধেষু বছপাপেষু কর্মাস্ত। মূলঘাতিষু সজ্জন্তে বুদ্ধিমন্তো ভবদিধাং।। ৩। নিষ্টেছনা মতি রাজনু! ধর্মার্থস্থন শিনীম্ 1 যশঃপ্রতাপবীর্যাল্লীং শক্রণাং হর্ষবর্দ্ধনীম্ । ৪ ॥ শ্রুরাঞ্চ প্রভা। তত্ত্বং দিব্যত ঞ্জারনো মূপ।। নির্মাণ্ড শরীরস্থ ততো বৈর্যামবাপ্র হি । ৫॥ পুরা ত্বং তপসামাভির্লকো রাজন্। মহেশ্বরাং। পূর্বিকাষশ্চ * সর্বান্তে নির্দ্মিতো * বজ্রসঞ্চরেঃ ॥ ৬ ॥ অস্ত্রৈরভেদ্যঃ শস্ত্রেশ্চাপ্যধংকায়শ্চ তেহনঘ!। ॰ ক্লতঃ পুষ্পাময়ো দেব্যাৰপাতঃ স্ত্ৰীমনোহরঃ॥ ৭॥ এবনীশ্বরস্যুক্তন্তব দেহো নুপোত্তম।। দেব্যা চ রাজশার্দিল। দিব্যস্তু > হি ন মারুষঃ ॥ ৮ ॥ ক্ষ. ভ্রয়াশ্চ মহাবীয়া ভগদত্তপুরোগমাং। দিবাাস্ত্রবিতুষঃ শূরাঃ ক্ষয়যিষান্তি তে রিপূন্ । ১ i जम्लः एक विषादमन जरू कर न विमादक। # সাহায্যার্থঞ তে বীরাঃ সম্ভূতা ভূবি দানবাঃ॥ ১০॥ ভীন্নভোণরূপাদীংশ্চ প্রবেক্ষান্ত্যপরেহস্থরাঃ। বৈরাবিষ্টা ঘূণা৲ ত্যক্ত্যা যোৎস্যন্তে তব বৈরিভিঃ ॥ ১১ ॥ পাপেষু আত্মহত্যাদিয়ু॥ ৩ ॥ নিয়চ্ছতাজেতার্থ: ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ পূর্বকায়: নাভেৰপরি॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ১ ॥ ১০ ॥ অমুরা ইতি চ্ছেনঃ মূণাং কুপাং 1 22 1

^{*} সর্বাইতাত্র পূর্ব ইতি পাঠঃ ধ পুস্তকে।

^{*} বজ্রসঞ্চৈরিত্যত্ত বজ্রসঞ্চর ইতি পাঠঃ ঘ পুস্তেকে।

শ সাহায্যার্থ মিত্য কর্ম শহারার্থ মিতি পাঠঃ এ ঘ পুতকে !

নৈব পু্্রান্ন চ ভাভূন পিভূন চ বান্ধবান্। নৈব শিষ্যান্ন চ জ্ঞাতীন্ন বালান্ স্থবিরান্ন চ॥ ১২॥ যুধি সংপ্রহরিষান্তো মোক্যান্তি কুরুসভ্য।। নিংস্লেহা দানবাবিফাঃ সমাক্রান্তে২স্তরাল্লনি ॥ ১৩॥ প্রছরিব্যক্তি * বন্ধুভ্যঃ স্নেহমুৎস্জ্য দূরত:। হৃষ্টাঃ পুরুষশার্দ্দুলাঃ কলুষীক্লতমানসাঃ। অবিজ্ঞানবিষুঢ়াক্ট দৈবাচ্চ বিধিনিশ্মিতা । ১৪॥ वाां जावभागानात्वाताः न तम जीवन विद्याकारम्। সর্বাস্ত্রযোকেণ পৌরুষে সমবস্থিত। ১৫॥ প্লাঘমানাঃ কুরুজ্রেষ্ঠ ! করিষান্তি জনক্ষয়ম্। তেহপি পঞ্চ মহাত্মানঃ প্রতিষোৎস্যস্থি পাণ্ডবাঃ॥ ১৬ । বধঞ্চিবা করিষান্তি দৈবযুক্তা মহাবলাঃ। দৈত্যরক্ষোগণাকৈত সম্ভূতাঃ ক্ষত্রযোনিযু ॥ ১৭॥ যোৎদ্যন্তি যুধি বিক্রম্য শক্তভিন্তব পার্থিব!। গদাভিমু বলৈঃ শুলৈঃ শক্তৈব্ৰুক্চাবচৈন্তথা ॥ ১৮॥ यक्र ८७२ खर्भ ७० वीतः ! ভ स मर्ब्कू नम खवम् । ভত্রাপি বিহিতোহস্মাভির্কধোপায়োহর্জুনস্য বৈ ॥ ১৯ । হতস্য নরকস্যাত্মা কর্ণমূর্ভিমুপাশ্রিতঃ। তদ্বৈরং সংশারন্ বীর! যোৎসাতে কেশবার্জ্ক্রে। । ২০॥

১২ ॥ অন্তরাত্মনি চিত্তে সমাক্রান্তে দানবৈরেব ॥ ১৩ ॥ অবিজ্ঞানং কার্য্যা কার্য্য বিজ্ঞানাভাবন্তেন মৃঢ়াঃ দৈবাদদৃষ্টাৎ বিধিনির্মিতাৎ পূর্ব্ব কর্ম কৃতাৎ ॥ ১৪ ॥ ব্যাভাবমাণাঃ বিৰুদ্ধ মাভাবান্তঃ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥

^{*} বন্ধুভা ইত্যত্ত বিবশা ইতি পাঠ: ঘ পুস্তকে |

স তে বিক্রমশৌ ঞীরো রণে পার্থং বিজেষাতি।
কর্নং প্রাহরতাং শ্রেষ্ঠং সর্বনি শ্রুলারী মহারথং ॥ ২১॥
জ্ঞাবৈত চ্ছামনা বজ্ঞী রক্ষার্থং সব্যসাচিনঃ।
কৃপ্তলে কবচপ্রেব কর্নসাপাহরিষাতি ॥ ২২ ॥
তত্ম দ্যাভিরপাত্র দৈত্যাং শতসহত্রশং।
নিযুক্তা রাক্ষমাশৈচন যে তে সংসপ্তকা ইতি ॥ ২০॥
প্রখ্যাতান্তেই জ্র্রিনং বীরং নিহনিষান্তি মা শুচং।
অসপত্রা ত্বয়া হীয়ং ভোক্তব্যা বস্তুধা নূপ!॥ ২৪॥
মা িহাদং গমস্তুলা নৈত জুবুপেপদ্যতে।
বিন্তে ত্বি চাল্মাকং পক্ষো হীয়েত কৌরব।॥ ২৫।
গক্ত বীর! ন তে বুদ্ধিরন্যা কার্য্যা কথঞ্জন।
ভ্রমন্মাকং গতির্নিত্যং দেবতানাঞ্চ পাশ্রবাং॥ ২৬॥
বৈশ্পপায়ন উবাত।

বেমুক্ত্রণ পরিষজ্য দৈতা তিং রাজকুপ্তরম্।
সনাধাস্য চ তুর্দ্ধবিং পুত্রবদানবর্মভাঃ॥ ২৭॥
সিরাং করা বুদ্ধিমন্য প্রিষাণাক্ত্রণ চ ভারত।।
গম্যতামিতা মুজ্ঞার জরমাপ্র হি চেত্যথ ॥ ২৮॥
তৈকিস্ফ ইঃ মহাবাছ ক্তা। দৈবানরং পুনঃ।
তমেব দেশং যতা সৌতদা প্রায়মুপাবিশং ॥ ২৯॥
প্রতিনিক্ষিপ্য তং বীরং ক্তা। সমভিপূজা চ।
তমুক্তাতা চ রাজ্ঞা সা তত্রৈবাত্তরধীয়ত॥ ৩০॥

বিক্রমে শত্রজনে শেনটারঃ সমর্থঃ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ তের্লা অক্যামরণাপ্নী বৈরণান্ত্রপাবা বুদ্ধিন্কার্যা ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ৬রমাপ্রুছিচেত্যুত্র মিতি শেষঃ অথতৈ বিস্ফ মিতিসম্বন্ধঃ ॥ ২৮ ॥ ॥২৯ ॥ ৩০ ॥

গতারামথ তদ্যাস্ত রাজা তুর্য্যোধনস্কলা। স্থপ্রভূত্মিদ[্] স্ক্সিচিন্তুয়ত ভারত। i ৩১ i বিজেষামি রণে পাণ্ডুনিতি চ,স্যাভবন্সতিঃ। কর্ণৎ সংসপ্তকাং শৈচৰ পার্থস্যানিত্রঘাতিনঃ ॥ ৩২ ॥ অমরাত বধে যুক্তান্ সমর্থাংশ্চ স্থযোধনঃ। এবমাশা দুচা তস্য ধার্ত্তরাষ্ট্রম্য তুর্গাভেঃ। ৩০॥ বিনিজ য়ৈ পাপ্তবানামভবস্তুরতর্মভ ! কর্ণোইপ্যাবিষ্টচিদ্ধাত্মা নরকস্যান্তর,ত্মনা 🖟 ৬৪ 🔻 অর্জুনস্য বধে ক্ররাং করে।তি স্ম তদা মতিম্। সংসপ্তকাশ্চ তে বীৰা রাক্ষমাবিফটেচভদঃ ১৩৫॥ রজ্জমোভাগি ক্রিডাঃ কাল্পন্য ববৈধিন। ভীন্ন প্রেপাদ্যাশ্চ দানবাক্রাস্তচেত্র ভঙ্গা ন তথা পাণ্ডুপু<u>জাণাং স্নেহ্</u>বন্তো বিশাম্পতে 🗀 ন চাচচক্ষে ক স্মৈচিদেতদ্রাজা স্থযোধন: ॥ ৩ । ॥ ছুর্য্যোধনং নিশান্তে চ কর্ণো বৈকর্ত্তনোহত্তবীৎ। স্ময়নিবাঞ্জি কুত্রা পার্থিবং হেত্মদ্বচঃ ॥ ৩৮॥ ন মৃতে। জয়তে শকূন্ জীবন্ ভদ্যাণি পাশ্যতি। মৃতস্য ভদ্রাণি কুতঃ কৌরবেয় : কুড়ো জয়ঃ : ৩৯ न कारलाइमा विकासमा असमा भरताया। পরিষ্ক্যাব্রবীচেনং ভুজাভাগে স মহাভুজঃ 🐉 ॥ ৪০ উত্তিষ্ঠ রাজন্। কিং শেষে কম্মাচ্ছোচ্যি শত্ৰুহন্। শতুন্ প্রতাপ্য বীর্যোগ স কথং মৃত্যমিচ্ছাস ৪১॥

্ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ অন্তরাজনামনসः॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ পাৰ্জু 🔎 । মুপরীতিশেষঃ ॥ ৩**%**॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ 🛊

^{*} মহাভূজ ইতাত্র নহাভূজ (মতি পাচঃ ঘ পুস্তকে।

অথ বা তেভয়ং জাতং দৃষ্ট্যাৰ্জ্বপরাক্রমণ্। সত্যং তে প্রতিজানামি বধিষ্যামি রণেহর্জ্জুনমু॥ ৪২॥ গতে ত্রয়োদশে বর্ষে সভ্যেনাযুধমালভে। আন্য়িষ্যাম্যহং পার্থান্ বশং তব জনাধিপ। ॥ ৪৩॥ এবমুক্তস্ত কর্ণেন দৈত্যানাং বচনান্তথা। প্রাণিপতেন চাপ্যেষামুদ্ভিষ্ঠৎ সুযোধন: ॥ ৪৪॥ দৈত্যানাপ তথচঃ শ্রুত্বা হৃদি কুত্বা স্থিরাং মতিম। ততো মনুজশার্দ্ধ লো যোজয়ামাস বাহিনীয় ॥ ৪৫ ॥ রথনাগাখকলিলাং পদাতিজনসঙ্গ লাম। • গঙ্গেষপ্রতিমা রাজনু । প্রযাতা সা মহচেমু: ॥ ৪৬ ॥ শ্বেতচ্ছত্রৈঃ পতাকাভিশ্চামরৈশ্চ স্থপাগুরৈ:। · ৯থৈৰ বৈৰ্ণঃ পদাতৈশ্চ শুশুভেহতীৰ সঙ্কুলা ॥ ৪৭ ॥ ব্যপেতাভ্রঘনে কালে দ্যৌরিবাব্যক্তশারদী। জয়াশীর্জি জৈক্তে: স স্থয়মানোহধিরাজবং॥ ৪৮॥ शृक्तक्षनिमानाक धार्जताद्वा जनाधिभः। সুযোধনো য্যাবতা ভারা পর্ময়া জ্বন । ৪৯॥ कर्णन मार्कः बारककः ! (भोवलन ह प्विना । তুঃশাসনাদয়শ্চাম্ম ভাতরঃ সর্ব্ব এব তে॥ ৫०॥

॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥ এবাং ছংশাসনাদীনাং ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ পদাতিঃ
পদাতিভিঃ সাচমুদে গাঁরিব শুশুভে ইতি ঘয়োসম্বন্ধঃ ॥ ৪৭ ॥ ব্যাপেভঃ
অভ্যনঃ মেঘবিস্তারোরান্দিন্ ঘনং স্থাদিছু পক্তমা বিস্তারে লোছ মুদারে
ইতি মেদিনী শরদীতার্থঃ অব্যক্তাদিষদাক্তা শারদীশরক্তাত পণ্ডরীক কাশ
কুত্মাদ্যাকারক্ত্ত চামরাদিরপাশোভা যতাং সাহব্যক্ত শারদী অধিরাজা
সার্থভৌমো যুগিছির স্তম্বং ॥ ৪৮ ॥ গৃহন্ দৃক্ প্রসারাদিনা অহুগৃহন্
অঞ্জলিমালাঃ নমন্দ্রারাঞ্জলিপংকীঃ বদ্ধাঞ্জলী নিত্যর্থঃ ॥ ৪৯ ॥ দেবিনাদ্যুভরতেন ॥ ৫০ ॥

ভূরিশ্রবাঃ সোমদজো মহারাজশ্চ বাহ্লিকৃঃ।
রথৈননোবিধাকারৈ ইয়ৈর্গজবরৈস্তথা ॥ ৫১ ॥
প্রয়াতং নূপদি শহন্তম মুজগা; কুৰ্দ্দাং।
কালেনাপেন রাজেন্দ্র! স্বপুরং বিবিশুস্তদা ॥ ৫২ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি ঘোষযাত্রাপর্বাণি ভূর্য্যোধনপুরপ্রবেশে
দ্বিপঞ্চাশদ্ধিকদ্বিশতত মোহধ্যায়ঃ॥ ২৫২ ॥

জনমেজয় উবাচ।

বসমানেষু পার্থেষু বনে তান্মন মহাত্মসং।
ধার্ত্তরাষ্ট্রা মহেম্বাসাং কিমকুর্বত সভ্তমাং ॥ ১ ॥
কর্নো বৈকর্ত্তনশৈচৰ শকুনিশ্চ মহাবলং।
ভীন্মজোণ ক্রপাশৈচৰ তল্মে শ্রুমার্হসি॥ ২ ॥
বৈশ্পায়ন উবাচ।

এবং গতেষু পার্থেষু বিষ্ঠে চ স্থ্যোধনে।
আগতে হান্তিনপুরং মোক্ষিতে পাণ্ড্নন্দনৈঃ॥ ৩॥
ভীয়োহববীন্মহারাজ! ধার্ত্তরাষ্ট্রমিদং বচঃ।
উক্তং তাত! # ময়া পূর্বং গছতত্তে তপোবনম্ । ৪॥

11 62 11 65 11

ইতাগরণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকণ্ডীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বিপঞ্চাশদধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৫২ ॥

বসমানে ছিভি ৷ ১ ৷ ২ ৷ ৩ ৷ ৪ ৷ তবগমনং নক্তিতং নাভুমোদিতং

^{*} ময়াইতাত্র যথেতি পাঠঃ খ ঘ পুস্তকে।

গমনং নে ন রুচ্তিং তব * তত্ত রুতঞ্চ তে। ততঃ প্রাপ্তং দ্বয়া বীর! গ্রহণ্ম শক্রভির্বলাৎ॥ ৫ । (माकिठ काशि धर्मरेकः शाखरेवर्म व नक्करम। প্রত্যক্ষণ তব গালারে মরৈনাস্তাবিশাম্পতে।॥ ৬॥ স্তপুত্রোহপ্রান্তীতো গন্ধরাণাং তদা রণাং। ক্রোশতস্তব রাজেন্দ্র। সমৈন্যস্থা নৃপাত্মজ!॥ २॥ দুষ্টন্তে বিক্রমন্ত্রেক পাগুরানাং মহাত্মনাম্। কর্ণন্ড চ মহাবাহো। স্তুতপুত্রস্থা তুর্গতে: । ৮ ॥ ন চাপি পাদভাক্ কর্ণ: পাগুবানাং নুপোত্তম!। ধমুর্বেদে চ শৌর্য্যে চ ধর্ম্মে বা ধর্ম্মবংসল। ॥ ১ ॥ ज्यापहर क्रमः मत्ता शाखरेवरेखर्मशाजिः। সন্ধি^ সন্ধিবিদাংশ্রেষ্ঠ ! কুলস্থাস্থ্য বিরুদ্ধযে । ১০ ॥ এবমুক্তস্ত ভীয়োণ ধার্ত্তরাষ্ট্রো জনেশ্বরঃ। প্রহস্ত সহসা রাজন্! বিপ্রতম্থে সমৌবলঃ॥ ১১॥ তম্ভ প্রস্থিতমাজ্ঞায় কর্ণচুঃশাসনাদয়ঃ। অনুজগ্মুর্মহেম্বাসা ধার্ত্তরাষ্ট্রং মহাবলন্। ১২ ॥ তা স্তু সম্প্রস্থিতান্ দৃষ্টা ভীষাঃ কুরুপিতামহঃ। লক্ষ্যা ব্রীডিতো রাজন্। জগাম স্বং নিবেশনম্॥ ১৩॥ গতে ভীন্ন মহারাজ। ধার্ত্রাষ্ট্রো জনেশ্বরঃ। পুনর। গম্য তং দেশ্মমন্ত্রত মন্ত্রিভঃ । ১৪॥ মেমষা তে ব্যাচতরকুতং ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ অপরাৎ পলারিত: ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ সৃদ্ধিক্ষমং যুক্তং মনো॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥

^{*} তত্ত্বেতাত্ত্ৰ তত্ত্বেতি প¦ঠঃ ক গুস্তকে। * মোক্ষিতশ্চাণীত্যত্ত্ব মোক্ষিতশ্চা মীতি পাঠঃ ঘু গুস্তকে।

কিমস্মাকং ভবেচ্ছেয়ঃ কিং কার্য্যমবশিষ্যতে। কথঞ্জ স্থারত তৎস্থানাত্র্যামোহদ্য যদ্ভিতম্ ॥ ১৫ ॥ कर्ग छेत्रा ।

ष्ट्रर्याधन निर्वारधन यञ्जाः वक्ताधि रकोतव । । ভীয়োহসান্নিন্দতি সদা পাপ্তবাংশ্চ প্রশৎসতি। ১৬॥ ব্বন্দেনাচ্চ মহাবাছো! ম্যাপি দ্বেষ্ট মৃহতি। বিগ≨তে চ মাং নিতা∾ ত্বংসমীপে নরেশ্বর।॥ ১৭॥ সোহহ ভীশ্বচস্তবৈ ন মুধামীহ ভারত।। ত্বৎসমকং যতুক্তঞ্ ভীয়েণামিত্রকর্ষণ ! ॥ ১৮ ॥ পাওবানাং যশো রাজংস্তব নিন্দাঞ্জ ভারত। । অনুজানীহি মাং রাজন্! সভ্তাবলবাহনম্। ১৯ ॥ জেষ্যামি পৃথিবীং রাজন্। সশৈল বনকানন্য। জিতা চ পাওবৈভূমিশ্চভুর্জিকলশালিভিঃ ॥ ২•॥ তামহন্তে বিজেষ্যামি এক এব ন সংশয়ঃ। সংপশ্যত্র স্বত্রক দিভীয়া কুরুকুলাধমঃ ॥ ২১ ॥ অনিন্দ্য নিন্দতে যো হি অপ্রশংস্তং প্রশংসতি। স পশ্যত্ বল । মেহদ্য আত্মানস্ত বিগৰ্হতু ॥ ২২ ॥ অনুজানীহি মাং রাজনু! ধবো হি বিজয়ন্তব। প্রতিজানামি তে সত্যুৎ রাজনাবুধমালভে। ২৩॥ ভচ্জা তুবচোরাজন্! কর্ণ ভরতর্ভ!। প্রীত্যা পরময়। যুক্তঃ কর্ণমাহ নরাধিপঃ । ২৪॥ ধন্যে। ধ্যারপুহীতোহিষ্মি যক্ত মে স্ব^ মহাবলঃ। হিতেরু বর্ত্তমে নিত্যং সফলং জন্ম চাদ্য মে ॥ ২৫॥

॥ ১৫ ॥ ५७ ॥ समालिमामिलि ॥ ५१ ॥ ५৮ ॥ ५० ॥ २० ॥ २२ ॥ २२ ॥ २० ॥

1 28 | 20 |

যদা চ মন্যসে বীর! সর্বশক্রনিব ধ্বমৃ।
তদা নির্গল্ভ ভন্ততে ছারুশাধি চ মামিতি॥ ২৬॥
এবমুক্তত্তদা কর্নো ধার্ত্তরাষ্ট্রেন ধীমতা।
সর্ব্ব মাজ্ঞাপয়ামাস প্রাথাত্রিকমরিন্দম!॥ ২৭॥
নির্যথা চ মহেম্বাসো নক্ষত্রে শুভদৈবতে।
শুভে তিথো মুহুর্তে চ পুজ্যমানো দ্বিজা তিভিঃ॥ ২৮॥
মঙ্গলৈশ্চ শুভৈঃ স্নাতো বাগি ভশ্চাপি প্রপূজিতঃ।
নাদয়ন্থঘোষেণ ত্রৈলোক্য স্বচরাচরম্॥ ২৯॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি খোষ্যাত্রা পর্বাণ কর্ণদিখিজয়ে ত্রিপঞ্চাশদধিক দ্বিশততমোহধ্যায় ॥ ২৫৩ ॥

বৈশম্পায়ন উন্চ।
ততঃ কর্ণো মহেম্বাসো বলেন মহতার্তঃ।
ত্রুপদস্থ পুরু রুম্যং রুরোধ ভরতর্ষভ।॥ ১॥
যুদ্ধেন মহতা চৈনং চক্রে বীরং বশারুগম।
স্থবর্ণ রজতঞ্চাপি রত্মানি বিবিধানি চ॥ ২॥
করঞ্চ দাপায়ামাস ক্রপদং নূপসন্তম।।
তং বিনির্ভিত্য রাজেন্দ্র! রাজানস্তম্ম বেহ্নুগাঃ॥ ৩॥

॥ ২৬ ॥ প্রায়াত্রিক। প্রয়াতুং রাজ্যোহপোক্ষিতং শকটাপণবীথাাদি ॥ ২৭ ॥ ॥ ২৮ ॥ মঙ্গলৈঃ মন্ধলক্র ব্যৈঃ স্থান্ধ তৈলাদিভিঃ স্থাতঃ শুভৈনীরাজনা-দিভিঃ প্রযয়ে ইতি সম্বন্ধঃ ॥ ২৯ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিপঞ্চাশদধিক দ্বিশততমোধ্যায়ঃ ॥ ২৫৩ ॥

उठ्हें । । । । । ।

তান্ সর্বান বশগাংশ্চক্তে করঞ্চিনানদাপয়ে। অথোত্তরাং দিশং গত্বা বশে চক্তে নরাধিপান্। ৪। ভগদত্তঞ্চ নিব্দিত্য রাধেয়ো গিরিমাকুহৎ। হিমবন্ত মহাশৈলং যুধ্যমানশ্চ শক্ৰভিঃ॥ ৫॥ व्यययो ठ निमः मर्खान्न शतीन् वनमानत्र । স হৈমবতিকানু জিল্পা করং স্কান্দাপ্রং॥ ৬॥ (निभानविषरस (यह ज्ञाकानन्यान वाकस्र । শ অবতীর্য্য ততঃ শৈলাৎ পূর্ব্বাণ দিশমভিদ্রতঃ ॥ ৭ ॥ অঙ্গান বঙ্গান কলিজাৎশ্চ মাণ্ডিকালিথিলানথ। মাগধান কর্কখণ্ডাৎশ্চ নিবেশ্য বিষয়েত্মনঃ॥ ৮॥ আবশীরাংশ্চ যোধ্যাংশ্চ অহিক্ষত্রঞ্চ নির্দ্ধরং #। পূৰ্ববা^ দিশং বিনিক্কিতা বৎসভূমিং তথাগমং॥৯॥ বৎসভূমিং বিনিৰ্জিত্য কেবলীং মৃত্তিকাবতীম। মোহনং পত্তনঞ্চৈব ত্রিপুরীং কোশলাপ তথা।। ১০।। এতানু সর্বানু বিনিদ্ধিতা করম।দায় সর্বাশঃ। पिक्त भाष्ट्र किया का किया महातथान ॥ ১১ ॥ রুক্মিণ্ দাক্ষিণাত্যেষু যোধরামাস স্থতজঃ। স যুদ্ধং ভুমুলং কুত্বা ৰুক্মী প্রোবাচ স্থতজন্ম ১২॥

॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ १॥ নিবেশ্য বিষয়েত্মনঃ আত্মনে; গোচরে ক্রেডার্থঃ আকার পূর্ব্বরূপং লোপোরা আর্যঃ ॥ ৮॥ নির্জয়ং জিতবান্ অভভাব আর্থঃ॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ প্রতিজ্ঞাং ক্ষত্রধর্মং সমপালয়ং পালিত বানস্মি ক্ষত্রধর্মাবেক্ষয়ৈর দ্বয়া সহ যুদ্ধং কৃতং নথজ্জিগীয়য়েতিভাবঃ

^{*} অবতীর্যা ততঃ শৈলাদিতাস্য পূর্ব্বার্দ্ধৎ ক পুত্তকে নান্তি।

^{*} নির্জ্যদিত্যত্ত যোজয় দিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

প্রীতোহম্মি তব রাজেন্দ্র! বিক্রমেণ বলেন চ। ন তে বিশ্বং করিষ্যামি প্রতিক্তাং সমপালয়ম্॥ ১৩ । প্রীত্যা চাহং প্রযক্ষামি হিরণ্যং যাবদিচ্চসি। সমেত্য রুকাণা কর্ণঃ পাণ্ডাং শৈলঞ্চ সোহগমং॥ ১৪॥ म কেরলং রুণে চৈব নীলঞ্চাপি মহীপতিম। বেণুদারিস্কৃতবৈঞ্ব যে চান্যে নূপসন্তমাঃ ॥ ১৫॥ শৈশুপালি ততো গত্বা বিজিগ্যে স্থৃতনন্দনঃ ॥ ১৬ । পাশ্ব স্থাংশ্চাপি নুপতীন্ বশে চত্তে মহাবলঃ । আব্ত্যাংশ্চ বশ্রে ক্লবা সামা চ ভরতর্যভ !। র্ফিভি: সহ সঙ্গম্য পশ্চিমামপি নির্বরং॥ ১৭॥ वाक्रनी० किनामात्रमा यावनान् वर्वादा० छथा। নুপান পশ্চিমভূমিস্থান্ দাপয়ামাস বৈ করান্॥ ১৮॥ বিজিতা পৃথিবীং সর্ব্বাং স পূর্ব্বাপরদক্ষিণাম । সম্ভেটেবিকান্ বীরঃ সপ্রব্তনিবাসিনঃ ॥ ১৯ ॥ ভদ্রান্যেহিতকাং শৈচব আগ্রেয়া লালবা নীপি। গণানু সর্বান বিনিদ্ধিত্য নীতিক্বৎ প্রহুসন্নিব॥ ২০॥ শশকান্ যবনাং শৈচৰ বিজিগ্যে স্তনন্দনঃ। নয়জিৎপ্রমুখা ১ শৈচব গণানু জিল্পা মহারথান্ ॥ ২১॥ **এব** म পৃথিবীং সর্ববাং বশে রুত্বা মহারথ:। विकिछा शुक्रववारिया नागमाञ्चयमागमः॥ २२॥ তমাগতং মহেছাসং ধার্ত্তরাষ্ট্রো জনাধিপা:। প্রভাষাম্য মহারাজ! সভাভূপিতৃবান্ধবঃ॥ ২৩॥ ॥ १०॥ रम्नर क्रिक्श ॥ १८॥ १८॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ १०॥ ॥ २२ ॥ २७ ॥

चर्छशामाम विधिनां कर्नमाह्य माजिनम्। আশ্রোবয়চ্চ তৎকর্ম প্রীয়মাণো জনেশ্বর: ॥ ২৪ ॥ যন ভীষান চ দোণান কুপান চ বাহ্লিকাৎ। প্রাপ্তবানিম ভদ্রতে বৃত্তঃ প্রাপ্তং ময়া হি তৎ ॥ ২৫॥ বছনা তু কিমুক্তেন শুণু কর্ণ! বচো মম। সনাথোহস্মি মহাবাহে। । ত্বয়া নাথেন সন্তম ! ॥ ২৬॥ ন হি তে পাওবাঃ মর্বে কলামইন্তি যোডশীম। অন্যে বা পুরুষবাাঘ্র ! রাজানোইভ্যুদিতোদিতাঃ ॥ ২৭ ॥ म ভবান্ ধৃতরাষ্ট্রং ত^ গান্ধারীঞ্ব যশস্থিনীম্। পশ্য কর্ণ মহেম্বাস আদিতিং বজ্রভুদ্যথা ॥ ২৮ ॥ ততো ২লহলাশকঃ প্রাত্তরাসীদ্বিশাস্পতে।। हाहाकाता क वहरवा नगरत नागमा खर्य। १२०॥ কেচিদেনং প্রশানসন্তি নিন্দৃত্তি আ তথাপরে। जूकीमाग^खथा हात्मु नृशीखज জनाधिপ !॥ ৩०॥ এবং বিজিতা রাজেন । কর্ণঃ শস্ত্রভূতামরঃ। সপর্বতবনাকাশাং সম্মুদ্রাং সনিষ্কৃটাম ॥ ৩১॥ (मरेगक्कावरिकः शूर्वा अखरेनर्मगरेतत्रि । দ্বীপৈশ্চাকুপদ পুৰ্টুৰ্নঃ পৃথিবীং পৃথিবীপতে।। ৩২। কালেন নাতিদীর্ঘেণ বশে ক্লম্বা তু পার্থিবানু। অক্ষয় ধনমাদায় স্থতজো নুপমভায়াৎ।। ৩৩।

তৎকর্ম কর্ণবিজয়ং প্ররে উদ্যোষয়ামাস ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ অভ্যুদিতেভ্যোপ উদিতঃ শ্রেষ্ঠতমাঃ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ হলহলাশকং হাহাকারং কর্ণ নিন্দাঞ্চ পাত্তবপক্ষপাতিন শুকুরিতার্থঃ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ আকৃশঃ
পর্বতি বলয়ো রন্তকালং শস্যাত্মংপত্তি ভূমিমিতার্থঃ ॥ ৩১ ॥ অভ্পং
সর্বতে ক্লং তেন সংপূর্ণিঃ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥

প্রবিশ্য চ গৃহে রাজন্নভান্তরমরিনদম !।
গান্ধারীসহিতং বীরো ধৃতরাষ্ট্রং দশ্রশ সং॥ ৩৪॥
পুজ্রবচ্চ নরব্যান্ত ! পাদৌ জগ্রাহ ধর্মবিৎ।
ধৃতরাষ্ট্রেণ চালিষ্য প্রেমা চাপি বিসক্তিং॥ ৩৫॥
তদা প্রভৃতি রাজা চ শকুনিশ্চাপি সৌবলং।
জানতে নির্দ্ধিতান পার্থান কর্ণেন মুধি ভারত !॥ ৩৬॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি ঘোষযাত্রাপর্বাণি কর্ণদিশ্বিজয়ে চতুঃ-পঞ্চাশদ্ধিক দ্বিশততমোধ্যায়ঃ॥ ২৫৪॥

বৈশব্দায়ন উবাচ। 'জিত্বা তু পৃথিবীং রাজন্ স্থতপুত্রো জনাধিপ!! অব্রবীৎ পরবীরত্বো তুর্য্যোধনমিদং বচঃ॥১॥

কৰ্ উবাচ।

ছুর্ব্যোধন নিবোধেদং যত্ত্বাশ বক্ষ্যামি কৌরব ।।

* শুজা চ তত্ত্বা সর্বাং কর্জুমইস্যারিন্দম ॥ ২ ॥

তবাদ্য পৃথিবী বীর । নিঃসপত্রা নূপোত্তম !।

তাং পালয় যথা শক্রো হতশ্ত্রুর্মহামনাঃ ॥ ৩॥

| 98 | 90 | 95 |

ইত্যারণাকে পর্ত্তাণি নৈলক্ষীরে ভারতভাবদীপে চড়ুঃ-পঞ্চাশদধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৫৪॥

11 2 11 2 11 2 11

শুলাচতত্ত্বা সর্কমিতাত আন্তাবাচং তথা সর্কমিতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

বৈশস্পায়ন উল্চ। এবমুক্তস্ত কর্ণেন কর্ণং রাজাত্রবীৎ পুনঃ। न किक्षिफ् ल्लं ७९ जच्च यमा चर श्रुक्षवं ७ ! ॥ ८ ॥ সহাযশ্চানুরক্তশ্চ মদর্থক সমুদাতঃ। অভিপ্রায়স্ত মে কশ্চিত্ব্ বৈ শৃণু যথাতথম্॥ ৫ । রাজস্থরং পাগুবস্য দৃষ্ট্। ক্রভুবরং মহং। মম স্পৃহা সমুৎপনা তাং সম্পাদর স্থাতজ। ॥ ৬॥ এবমুক্তস্ততঃ কর্ণো রাজানমিদমন্ত্রবীৎ। তবাদ্য পৃথিবীপালা বশ্যাঃ মর্কে নূপোন্তম।॥৭॥ আহুষন্তাং দিজবরাঃ সম্ভারাশ্চ মথাবিধি। সম্ভিয়ন্তাং কুরুশ্রেষ্ঠ। যজ্জোপকরণানি চ । ৮॥ ঋত্বিজশ্চ সমাছুত। যথেকি বেদপারগাঃ। ক্রিরাণ কুর্বন্ত তে রাজন্ যথাশাস্ত্রমরিন্দম।॥ ৯॥ বহ্বন্নপানস্পুক্তঃ স্থুসমূদ্ধগুণাবিতঃ। প্রবর্ত্তবাং মহাযজ্ঞস্বাপি ভরতর্যভ ।॥ ১০॥ এবমুক্তস্ত কর্ণেন ধার্ত্তরাষ্ট্রো বিশাম্পতে 🕕 পুরোহিত সমানাযা বচনঞ্চেমব্রবীৎ॥ ১১॥ রাজস্থাং ক্রতুস্পেষ্ঠং সমাপ্তবরদক্ষিণম্। আহ্র ত্বং মম ক্লতে যথান্যারং যথাক্রমম্। ১২ ॥ স এবমুক্তো নৃপতিমুবাচ দ্বিজসভ্মঃ। ন স শক্যঃ ক্রভুত্রেষ্ঠো জীবমানে যুধিষ্ঠিরে ॥ ১৩ ॥

॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ १ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ জীবমানে ইত্যেকন্মিন্
কুলে দেবিকাজ স্বেট্ন নভবত ইতি বা তন্মিন্নজিত ইতি বা ভাবঃ ॥ ১৩ ॥
সচ শক্ত ন তৎপ্ৰতি বন্দী অস্থাকং কাচিদন্তিদ্যুতেনচ জিতোস্ক্যেবে
ত্যাশস্থাই দীৰ্ঘায়ুব্ৰিতি পিত্যা কৃত্যাজ স্বেয় জীবতি সতি স্বয়ন্তং

আহর্ত্তং কৌরবজ্রেষ্ঠ। কুলে তব নৃপোত্তম।। দীর্ঘাযুর্জীবতি চ তে ধ্তরাষ্ট্রঃ পিতা নৃপঃ । ১৪ । অতশ্চাপি বিরুদ্ধস্তে ক্রতুরেষ নৃপোত্তম।। অস্তি স্বন্যাহৎ সত্রণ রাজসূয়সমন প্রভো । ॥ ১৫ ॥ তেন ত্বং যজ রাজেন্দ্র ! শূর্ চেদং বচো মম। য ইমে পৃথিবীপালাঃ করদান্তব পার্থিব ! ॥ ১৬ ॥ তে করান্ সংপ্রযাজ্ঞ স্থর্বর্গ কতাক্রতম্। তেন তে ক্রিয়তামদ্য লাঙ্গলং নূপসন্তম। ॥ ১৭ ॥ যজ্ঞবাটস্থ তে ভূমিঃ ক্লুষ্যতাং তেন ভারত!। তত্র যজে। নুপ্রজেষ্ঠ । প্রভারঃ স্কুসংস্কৃতঃ ॥ ১৮ ॥ প্রবর্ততাং যথান্যায় সক্ষতো ছনিবারিতঃ। তে এষবৈফবো নাম যজ্ঞঃ সংপুরুষোচিতঃ॥ ১৯॥ এতেন নেফবান্ কশ্চিদতে বিষ্ণুৎ পুৱাতনম্। রাজস্থাং ক্রভুশ্রেষ্ঠ স্পর্কত্যেষ মহাক্রভুঃ॥ ২০ । অস্মাকং রোচতে চৈব শ্রেয়শ্চ তব ভারত।। নিবিষ্ণেশ্চ ভবত্যেষ সফলা স্থাৎ স্পৃহা তব ॥ ২১॥ এবমুক্তস্ত তৈর্ব্বিপ্রেধার্ত্তরাষ্ট্রো মহীপতিঃ। कर्नक त्मोवलरेकव जाज्यरेकत्वमञ्ज्ये ॥ २२॥ রোচতে মে বচঃ কুৎস্ব^ ব্রাক্ষ্ণানাং ন সংশয়ঃ। রোচতে যদি যুশ্বাকং তন্মাৎ প্রবৃত মা চিরম্॥ ২৩॥

নকুর্বাদিতার্থঃ অন্ধ্রমণ পিতু রন্ধিকার।ত্তংসতাং যদ্যপ্যধিকার প্রতিবন্ধকং নভবতি কিন্তু যুধিঠের জয়। সামর্থ্য মেব তথাপি তৎকীর্ত-রিভুমশক্য মিত্যে বহুদাহুতং তথাচ বক্ষাতি হতেয়ু যুধি পার্থেয় রাজ স্বের তথাত্বরা আহুতেহং নরজেঠবাং সভাজয়িতা পুনরিতি॥ ১৪॥ ১৫॥॥ ১৬॥ কৃতং ঘটিতং অলকারাদিরপ্থ অকৃত মৃত্তং॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥॥ ২০॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ ২০॥

এবমুক্তাস্ত তে সর্বে তথেতাচুর্বরাধিপম।
সন্দিদেশ ততো রাজা ব্যাপারস্থান যথাক্রমম্॥ ২৪॥
হলস্থ করণে চাপি ব্যাদিফাঃ সর্বাশিশ্পিন।
যথোক্তঞ্চ নূপশ্রেষ্ঠ! কুতং সর্বাক্রমম্॥ ২৫॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি ঘোষযাত্রাপর্বাণি ছুর্য্যোধনযজ্ঞারস্তে পঞ্চপঞ্চাশদ্ধিকদ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥২৫৫॥

বৈশস্থারন উবাচ।

ততন্ত্ব শিশিপনঃ সর্বে অমাত্যপ্রবরাশ্চ যে।
বিত্রশ্চ মহাপ্রাজ্ঞো ধার্ত্তরাষ্ট্রে নাবেদয়ৎ॥ ১॥
সজ্জ্বন ক্রে রাজন্ কালপ্রাপ্তঞ্চ ভারত।।
সৌবর্ণঞ্চ ক্রতং সর্বাং শ লাঙ্গলঞ্চ মহাধনম্॥ ২॥
এতচ্ছুত্রা নৃপশ্রেষ্ঠো ধার্ত্তরাষ্ট্রো বিশাশ্পতে।।
আজ্ঞাপয়ামাস নৃপঃ ক্রুরাজপ্রার্ত্তনম্॥ ৩॥
ততঃ প্রবর্তে যজ্ঞঃ শ প্রভূতার্থঃ স্থাক্রময়্॥ ৪॥
দীক্ষিতশ্চাপি গান্ধারির্যধাশাস্ত্রং বথাক্রময়্॥ ৪॥

ব্যাপার স্থান্ শিপ্পিনঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥

ইত্যারণ্যকৈ পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চ

পঞ্চাশদধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৫৫ ॥

उठ हे जि । । । । । । । । । । ।

 ^{*} সর্ব্ব মিতাত্র দিব্য মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 * প্রত্যুপ ইডাত্র প্রভূতার ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

প্রক্রটো ধৃতরাষ্ট্রশ্চ বিতুরশ্চ মহাযশাঃ। ভীয়ো দোণঃ রূপঃ কর্ণো গান্ধারী চ যশস্বিনী ॥ ৫॥ নিমন্ত্রণার্থং দূতাংশ্চ প্রেষয়ামাস শীঘ্রগান্। পার্থিবানাঞ্চ রাজেন্দ্র। ব্রাহ্মণানাং তথৈব চ ॥ ৬॥ তে প্রযাতা যথোদ্দিকী। দূতান্ত্রিতবাহনাঃ। তত্র কঞ্চিৎ প্রয়াতস্ত দূতং ছুঃশাসনোহত্রবীৎ। ৭॥ গচ্ছ দ্বৈত্বনং শীঘ্র পাপ্তবান পাপপুরুষান্। নিমন্ত্রয় যথান্য।য়ং বিপ্রাপস্তান্সন্ বনে তথা।। ৮॥ স গত্ব। পাপ্তবান্ সর্কানুবাচাভিপ্রণম্য চ। ছুর্য্যোধনো মহারজে ! যজতে নূপদত্তমঃ ॥ ৯॥ স্ববীর্য্যাদ্ধিতমথৌ ঘ্রমবাপ্য কুরুসভ্রমঃ। তত্র গছন্তি রাজানো ব্রাহ্মণাশ্চ ততস্ততঃ ॥ ১০॥ অহন্ত প্রেষিতো রাজন্ কৌরবেণ মহাত্মনা। আমন্ত্রয়তি বো রাজা ধার্ত্তরাষ্ট্রো জনেশুরঃ ॥ ১১॥ মনোহভিল্বিতং রাজ্ঞতং ক্রতুং দ্রক্মইথ। ততো যুধিষ্ঠিরে। রাজা তচ্ছত্বা দূতভাবিতম্ ॥ ১২ । व्यविज्ञलभाष्ट्रतां पिक्या ताका स्रायायनः। যজতে ক্রত্নমুখ্যেন পূর্বেষাং কীর্ত্তিবর্দ্ধনঃ ॥ ১৩॥ ব্যমপ্র্যপ্রাম্ভামো ন স্থিদানী কথঞ্চন। সমযঃ প্রতিপাল্যো নো যাবদ্ধং ত্রোদশন্॥ ১৪ ॥ শ্রুতদ্বর্মরাজম্ম ভীমো বচনমন্ত্রবীৎ। তদা তু নুপতির্গন্তা ধর্মারাজো যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ১৫ ॥ অন্ত্রশন্ত্রপ্রদীপ্তে২গ্নৌ যদা ত^ পাত্যিষ্যতি। বর্ষাক্রযোদশাদুর্দ্ধং রণসত্তে নরাধিপঃ॥ ১৬॥ 11 @ 11 9 || 9 || 12 || 20 || 25 || 25 || 20 || 28 || 20 || 29 ||

যদা ক্রোধহবিশ্মোক্তা ধার্ত্তরাষ্ট্রেষু পাগুবঃ। আগন্তাহ তদান্দীতি বাচ্যন্তে স স্থযোধনঃ ॥ ১৭॥ শেষাস্ত পাণ্ডবা রাজনৈবোচুং কিঞ্চিদপ্রিয়ম। पृত*ठालि यथात्रखः शार्जनार्हे नारवन्यः ॥ ১৮ ॥ অথাজগ্ম র্নরভ্রেষ্ঠা নানাজনপদেশ্বরাং। ব্রান্ধণশ্চ মহাভাগা। ধার্ত্তরাষ্ট্রপুর্ব প্রতি ॥ ১৯॥ তে ছচ্চিতা যথাশাস্ত্রং যথাবিধি যথাক্রমন্। মুদা পরমধা যুক্তাঃ প্রীতাশ্চাপি নরেশ্বরাঃ ॥ ২०॥ ধ্বতরাষ্ট্রে:২পি রাজেন্দ্রঃ সংবৃতঃ সর্ববেকীরবৈঃ। হর্ষেণ মহতা যুক্তো বিদুর্গ প্রভ্যভাষত ॥২১॥ যথা সুখী জনঃ সর্বরঃ ক্ষন্তঃ আদরসংযুক্তঃ। তুষোচ্চ যজ্ঞসদনে তথা ক্ষিপ্ৰং বিধীয়তামু॥ ২২॥ বিত্রস্ত তদাজ্ঞায সর্ববর্ণানরিন্দম!। যথাপ্রমাণতো বিদ্বান্ পূজ্যামাস ধর্মবিং॥২৩॥ एकारशियात्रशास्त्र गारेला कालि कुगिकि । বাসেভিকিবিধৈশৈ6ব যোজয়ামাস হৃষ্টবং ॥ ২৪ ॥ ় কুত্বা হ্যবেমথানু বীরো যথাশাস্ত্রণ যথাক্রমমু। সাজ্যিত্বা চ রাজেন্দ্রো দল্পা চ বিবিধং বস্তু ॥ ২৫॥ বিসর্বামাস নুপান বান্দাণ শচ সহস্রশঃ। বিস্জ্য চ নুপান্ সর্বান্ ভাতৃতিঃ পারবারিতঃ ॥ ২৬॥ বিবেশ হান্তিনপুর্ সহিতঃ কর্ণদৌবলৈঃ॥২৭॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি ঘোষযাত্রাপর্ব্বণি চুর্য্যোধনযজ্ঞসমাপ্তৌ

ষ্ট্পঞ্চাশদ্ধিকদ্বিশতভ্যোহধ্যায়ঃ॥২৫৬॥ ধার্তরাক্টেয়ু স্বয়ং ক্রোধেন জ্বং হ্যক্তাধহবিঃ ক্রোধরপং স্পিত্তিয়া

ধার্তরাক্তের স্থায়ং ক্রোধেন জ্বলং অংকাধহলিঃ ক্রোধরপেং সাপিতের। মত্যান্তোদীপকং মোক্ষ্যাতি তদাহং আগান্তা আগামিষ্যামি ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ॥১৯॥২০॥২১॥২২॥২৬॥২৪॥২৫॥২৬ ॥ কর্ণনৌষ্ট্রঃ সোৰ্গ্যাইদাঃ ॥ ২৭ ॥

> ইত্যারণাকে পর্বাণ নেলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে বট্-পঞ্চাশদ্ধিক দিশতভমোহধ্যারঃ ॥ ২৫৬ ॥

বৈশক্ষায়ন উপচ। প্রবিশন্তং মহারাজ ! স্থতাস্তুক্ট বুরচ্যুত্র। জনাশ্চাপি মহেষাসং ভুষ্টারু 🏶 রাজসভ্ম। ॥ ১॥ लारेजम्बन्द्रविन्ध विकीधा ह जनाउउः। উচুদ্দিন্ট্যা নুপাবিল্পঃ সমাপ্তে। হয়ং ক্রন্তুস্তব ॥ ২ ॥ অপরে ত্বক্রংস্তত্র বাতিকাস্তং মহীপতিম্। যুধিষ্ঠিরস্থ যজেন ন সমো হোষ তে ক্রন্তঃ॥ ৩।। নৈব তম্ম ক্রতোরেষ কলামইতি ষোডশীম। এবং তত্রাক্রবনু কেচিদ্বাতিকান্ত^ জনেশ্বর্ ॥ ৪॥ स्कार कुर कर का विश्व किया निष् कर्ड । যয।তির্বছষশ্চাপি মান্ধাতা ভরতস্তথা । ৫॥ ক্রত্বেনং সমাহৃত্য পূলা সর্কে দিবং গতাং। এতা বাচঃ শুভাঃ শৃণুন্ স্কুদাং ভরতর্ষ 🕏 । । ৬ ॥ প্রবিবেশ পুরং হৃষ্টঃ স্ববেশ্ম চ নরাধিপঃ। অভিবাদ্য ততঃ পাদৌ মাতাপিত্রোকিশাস্পতে!॥ १॥ ভীয়জোণরূপাদীনাং বিছুরস্য চ ধীমতঃ। অভিবাদিতঃ কনীয়ে।ভিভ্।তৃভিভ্।তৃনন্দনঃ ॥ ৮॥ নিষ্যাদাসনে মুখ্যে ভাতৃভিঃ পরিবারিতঃ। তমুখায় মহারাজ! স্তপুত্রেইববীষচঃ॥৯॥ দিন্টা তে ভরতভাষ্ঠ। সমাপ্তোহয়ং মহাক্রতঃ। হতেষু মুধি পার্থেষু রাজস্থরে তথা ত্রা॥ >०॥ প্রবিশন্ত মিতি ॥১॥২॥ বাতিকাঃ বাতরোগোপ হতচেতস উচিত ভাষণানভিজ্ঞাঃ ॥৩॥৪॥৫॥৬॥৭॥৮॥৯॥১০॥ সভাজরিতা পুজ-

^{*} রাজসত্তমেত্যত্ত রাজসত্তম মিতি পাঠঃ ক ঘ পুশুকরোঃ।

আহতে হং নর শ্রেষ্ঠ। ত্বাৎ সভাজ্যিতা পুনঃ। তমত্রবীমহারাজো ধার্ত্রাষ্ট্রো মহাযশাঃ ॥ ১১ ॥ শত্যমেতত্ত্বযোক্তং হি পা ওবেষু দুরাল্মস্থ। নিহতেষু নরশ্রেষ্ঠ। প্রাপ্তে চাপি মহাক্রতৌ ॥ ১২॥ রাজস্থয়ে পুনর্কার স্বমেবং বর্দ্ধযিষ্যুদি। এবসুক্রা মহারাজ ! কর্নাশ্লিষ্য ভারত। ॥ ১৩॥ রাজস্থাং ক্রভ্রেষ্ঠং চিন্ত্যামাস কৌরবঃ। সোহত্রবীৎ কৌরবাংশ্চাপি পাশ্বস্থান্নপ্সন্তমঃ॥ ১৪॥ কদা মু তৎ ক্রভুবর । রাজস্থর সহাধনম। নিহতা পাগুৰান সৰ্বানাহরিষ্যামি কৌরবা: । ॥ ১৫॥ তমব্রবীন্তদা কর্ণঃ শূণু মে রাজকুঞ্জর !। शारिन न भावरय जावन्यावन निरुट्जिनः॥ ১७ ॥ কীলালজং ন খাদেয়ং চরিষ্যে চাস্করব্রতম্ ॥ নাৰ্স্তাতি নৈৰ ৰক্ষ্যামি যাহিতো যেন কেনচিং॥ ১৭॥ व्याथारकुक्तर मार्क्षारम्यार्वतार्धेर्माहातरेयः। প্রভিজ্ঞাতে কাজ্মনস্য বধে কর্বেন সংযুগে ॥ ১৮ ॥ বিজিতাং শাপ্রমনাত পাওবান্ধুতর। ইকাঃ। ছুর্য্যোধনোহপি রাজেল ! বিশুজ্য নরপুঞ্চবানু॥ ১৯॥ প্রবিবেশ গৃহৎ এমান যথা চৈত্ররথং প্রভুঃ। তেহপি সর্বে মহেম্বাসা জগা,ব্রেশ্বানি ভারত !॥ ২০॥ পাওবাশ্চ মহেদ্বাসা দূতবাক্যপ্রচোদিতাঃ। চিন্তুযন্তস্তমেবার্থং নালভন্ত সুর্থৎ ক্লচিৎ॥২১॥

রিষণামি ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ধাবরে পরেণেডিপেরঃ ॥ ১৬ ॥ কীলালজং মাংসং তদ্ধিঘনীভূতং কবিরমেব কীলালং ক্রিরেতোরে ইতি মেননী অস্তরং স্থরারহিতঞ্চ ব্রতং স্থানিরম করিবোমদ্যং মাংসঞ্চাকেইত্যেই ॥ ১৭ ॥ উংকু তইং উচ্চৈঃ শব্দ কৃতঃ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

ভূষশ্চ চারৈ রাজেন্দ্র ! প্রবৃত্তিরুপপাদিতা।
প্রতিজ্ঞা স্থতপূজ্ম্য বিজয়ম্য বধং প্রতি ॥ ২২ ॥
এতচ্চুত্বা ধর্মস্কতঃ সমুদ্ধিয়া নরাধিপ ! ।
অভেদ্যকবচং মন্বা কর্ণমন্তু চবিক্রমন্ । ২৩ ॥
অনুস্মর শ্চ সংক্রেশার শান্তিমুপয়াতিসঃ ।
তম্য চিন্তাপরীতস্য বুদ্ধির্জ জ্ঞে মহান্মনঃ ॥ ২৪ ॥
বছবালম্গাকীর্ণং ত্যক্ত ং দৈত্বন বনন্ ।
ধার্ত্ররাষ্ট্রেপি নূপতিঃ প্রশাস বস্তুর্রাম্ ॥ ২৫ ॥
ভাতৃতিঃ সহিতো বীরৈভীম্মনোল্রুপৈন্তথা।
সঙ্গ্রম স্বতপুজ্রেণ কর্নেনাহ্বশোভিনা ॥ ২৬ ॥
দুর্য্যোধনঃ প্রিয়ে নিত্যং বর্ত্তমানো মহীভূতাম্ ।
পুজয়ামাস বিপ্রেন্দ্রান্দ্র কুতুভূর্ণিক্রিণঃ ॥ ২৭ ॥
ভাতৃনিঞ্চ প্রিরুপ রাজন্ স চকার পরন্তপঃ ।
নিশ্চিত্য মনসা বীরো দক্তভুক্তফলং ধনম্ ॥ ২৮ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি ঘোষযাত্রাপর্বাণি যুধিষ্ঠিরচিন্তাযাৎ সপ্তপঞ্চাশদধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥২৫৭॥

সনীপ্তঞ্চ ঘোৰযাত্ৰা পৰ্ব।

॥ ২২ ॥ ২০॥ ২৪ ॥ ২৫ ২৬ ॥ ২৭॥ ২৮ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকণ্ঠীরে ভারতভাবদীপে সপ্তপঞ্চাশদ্ধিক দ্বিশততমোহধায়েঃ ॥ ২৫৭ ॥

জনমেজন উপাত।

ছুর্য্যোধনং মোক্ষয়িত্ব। পাঙ্পুল্ল: মহানলাঃ। কিমকাষু ক্রনে ভিন্মিং স্তন্মনাথ্যাভুমর্হাস॥ ১॥ বৈশপ্যয়ন উল্লে

ততঃ শ্যানং কৌন্তেয়ং রাত্রৌ দৈতবনে মূগাঃ। স্বপ্নাতে দর্শয়ানাস্কুর্বাস্পক্তা যুদ্রিতীরমূ। ২ ॥ তানত্রবাঁৎ স রাজেন্দ্রো বেপমানানু ক্লভাঞ্জলীন্। বৃত যদ্ধকামাঃ স্থা কে ভবস্তঃ কিমিষ্যতে॥ ৩॥ এবনুক্তाः शाखरवन कोरछरयन यगांत्रना। প্রত্যক্রবন্ মৃগান্তত্র হতশেষা যুধিষ্ঠিরম্ । ৪ ॥ বয়ণ মুগা দ্বৈ ১বনে ২তশিফীস্তে ভারত।। নেংসীদেম মহারাজ! ক্রিয়তাং বাসপ্র্যায়ঃ ॥ ৫॥ 📽 ভবতো ভ্রতিরঃ শূরাঃ সর্বা এবাস্ত্রকোবিদাঃ। কুলান্যম্পাৰ্থামি ক্লুত্ৰন্তে। বনৌক্সামূ॥ ৬॥ বীজভূতা বয়ং কেচিদ্বশিষ্টা মহামতে!। বিবর্দ্ধেমহি রাজেন্দ্র। প্রসাদাত্তে যুধিষ্ঠির !॥ १ । তান্ বেপমানান্ বিত্রস্তান্ বীজমাতাব**ে বিতান্**। মুগান্ দৃষ্টা স্কুঃখার্ভো ধর্মরাজো যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৮॥ তা শ্বত বৈত্যবাদী দাজা সৰ্ব্যকৃত হৈতে রতঃ। যথা ভবন্তো ব্রুবতে করিষ্যামি চ তত্তথা॥ ৯॥

ছুর্বোধন মিতি॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ বাসস্পর্যারঃ বৈপরীতাং নাত্র-বস্তব্য মিতার্থঃ ॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥

^{*} ভবত ইত্যাত্র ভবন্ত ইতি পাঠিঃক পুস্তকে।

ইত্যেবং প্রতিবুদ্ধঃ স রাত্র্যন্তে রাজসন্তমঃ। অব্রবীৎ সহিতান্ ভাত্নু দ্যাপন্নে। মুগানু প্রতি॥ ১•॥ উক্তো রাতৌ মূগৈরন্মি স্বপ্নান্তে হতশেষিতৈঃ। তম্ভভূতাঃ স্ম ভদ্রং তে দয়া নঃ ক্রিয়ভামিতি॥ ১১॥ তে সত্যমান্তঃ কর্ত্তব্যা দ্যান্সাভিব্যনৌকসাম। শাষ্টমাসং হি নো বর্ষং যদেনার পযুক্ষহে ॥ ১২ ॥ পুনর্বান্ত্রসাং রমাং কাম্যক্র কাননে ত্রমম্। মরুভূমেঃ শিরঃ স্থানং 📽 তুণবিন্দুগরঃ প্রতি ॥ ১৩ ॥ ভত্রেমাং বস্তিং শিক্টাং বিহরুন্তো রমেমহি। ততন্তে পাপ্তবাঃ.শীঘ্রং প্রযযুর্ধর্মকোবিদাঃ॥ ১৪॥ ব্রাহ্মণৈঃ সহিতা রাজনু যে চ ভত্র সংহাষিতাঃ। **इत्तरमना** निভिटेन्हर ८था देवा ब्रह्म शास्त्र । । २०॥ তে याञ्चानुष्टिञ्चारेर्तः यरेनः एकिननाविरेजः। দদ্ভঃ কাস্ত্রু পুণামাশ্রমং তপদাঃ* যুত্রু । ১৬ ॥ বিবিশুন্তে সা কৌরব্যা রুতা বি প্রর্থটভন্তদা। তদ্বনং ভরতশ্রেষ্ঠা: স্বর্গৎ স্কুরু ভিনো যথা। ১৭॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ মুগস্বপ্নোত্তব পর্বাণি কাম্যক প্রবেশে ষ্ঠপঞ্চাশদ্ধিক বিশতভ্যোহ্ধ্যায়ঃ ॥ ২৫৮ ॥ সমাপ্তঞ্চ মৃগ স্বপ্ৰোদ্ভব পৰ্ব।

॥১০॥১১॥একংবর্বংবৎসরং উপযুক্ষ্মছেভক্ষামঃ ॥১২॥১৩॥১৪॥১৫॥১৬॥১৭॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবনীপে অক্তপঞ্চাশদ্ধিক দ্বিশতভ্যোহধ্যায় ॥ ২৫৮॥

^{*} স্থান মিত্যত্ত্তখাত মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে। * যুতমিত্যত্ত যুতা ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

্ট্রিক্তাকার্ডাকার্ডাকার্ডাকার্ডাকার্ড্রাক্রিক্তাকার্ডাকার্তাকার করেন্তাকার করেন্তা

বৈশ্বপায়ন উপ্ত।

বনে নিবসভাং তেষাং পাগুবানাং মহাত্মনাম্। বর্ষাণ্ডেকাদশাতীযুঃ ক্লেছ্ণ ভরতর্যভা। ১॥ ফলমূলাশনান্তে হি সুখার্হাঃ 🐕 তুঃখমুত্তমম্। প্রাপ্তকালমনুধ্যান্তঃ সেহিরে বরপুরুষাঃ॥ ২॥ যুধিষ্ঠিরস্ত রাজধিরাত্মকর্মাপরাধজম্। চিত্তযন্ স মহাবাছজাত্ণাং ছুংখনুত্তমন । ৩॥ ন সুম্বাপ সুখ্ রাজা হৃদি শল্যৈরিবার্পিতেঃ। দৌর।আমরুপশ্রংস্তৎ কালে দ্যুতোন্তবং সাহি॥ ৪॥ সংশ্রন্ পরুষা বাচ: স্তপুত্রস্থা পাওবং। নিশ্বাসপরমো দীনো বিভ্রুৎ কোপবিষ্ণ মধ্র। ৫॥ অর্জুনো যমজৌ চোভৌ দৌপদীচ যশস্থিনী। স চ ভীমো মহাতেজাঃ সর্বেষামুক্তমো বলী ॥ ৬ ॥ যুধিষ্ঠির মুদীকন্তঃ স্ভেতু থেমনুত্তমম্। অবশিক্টনল্পকালং মন্বানাঃ পুরুষর্বভাঃ॥ १॥ वश्रुत्रनानिवाकाषु ऋष्माहामर्थराधिटेजः। কক্ষচিত্ত্বথ কালস্থা ব্যাসঃ সত্যবতীস্কৃতঃ ॥ ৮ ॥ বনেইতি॥ ১॥ ধ্যান্তঃ ধ্যায়তঃ॥ ২॥ ৩॥ তৎকালে তিমান্কালে ছাতো-দ্ভবস্য দ্যুতছেতোঃ শকুন্যাদেঃ ॥৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ -

^{*} হুঃখ মিত্যত্ত সুখ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

আজগাম মহাযোগী পাণ্ডাবানবলোককঃ। স্থাগতমভিপ্রেক্য কুন্তীপুলো যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ১॥ প্রত্যুদ্ধান্য মহাত্মানং প্রত্যুক্ত, দ্বথাবিধি। তমানীনমুপানীনঃ শুজ্জ্যু নিয়তে ক্রিয়ঃ । ১০॥ তোষ্যন্ প্রণিপাতেন ব্যাস্থ পাণ্ডবনন্দনঃ। তানবেক্ষা কুশান্ পৌজ্রান বনে বন্যেন জীবতঃ ॥ >> ॥ মহর্ষিরনুকম্পার্থ মত্রবীদ্বাস্পগদান। যুধিষ্ঠির মহাবাহো। শূণু ধর্মাভূত।ম্বর। ॥ ১২ ॥ নাতপ্ততপদো লেংকে প্রাপ্রবিদ্ত মহৎ স্থায়। স্থুখ ছুঃখে হি পুরুষঃ পর্যাযেগ্রেপিসেবতে ॥ ১৩ ॥ ন হানতং সুখং কিশ্চং প্রাপ্নোতি পুরুষর্যভ।। প্রজাবাংস্তেব পুরুষ: সংযুক্তঃ পর্যা বিষা। ১৪॥ উদযান্তমনত্তো হি ন হৃষ্যতি ন শোচতি। সুখ্যাপতিতং সেবেদঃখ্যাপতিতং সহেৎ॥ ১৫॥ কলেপ্রাপ্তরুপাদীত শস্তানামিব কর্ষকঃ। তপকো হি পরং নাস্তি তপদা বিন্দতে মহং॥ ১৬॥ নাসাধ্যং তপসঃ কিঞ্ছিনিত বুধ্যস্থ ভারত।। मठामार्क्रवमात्का (४: मर्ग्वार्श प्रमः भागः ॥ >१॥

অবলোককোহবলোবিতু কামঃ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ অনন্তং স্থাং নপ্রাপ্রোতি কাল্ড পৃথক জনঃ নন্তাহিতৎ প্রাপ্রোতীত্যাহ প্রজ্ঞাবানিতি পারয়াধিয়া ব্রন্ধবিদায়া ॥ ১৪॥ উদয়ান্তমনং জগত উৎপত্তি স্থিতিলয়
কায়ণং ব্রন্ধতজ্জো নশোচতিনকাংক্ষতি মিথাভূতে জগতি প্রিয়য় স্থাস্যাভাষাত্তিরোগারঃ শোকোষাতাদিছো বাত্যান জায়ত ৬ তার্থঃ প্রারন্ধ
কর্মোপস্থাপিতং স্থাহুঃখাদ্য পরিহার্যা মিত্যাহ স্থামিতি ॥ ১৫॥ তপন্যাজ্ঞানে মহদুক্ষ ॥ ১৬॥ ১৭॥

অনস্থা বিহিৎসা চ শৌচমিক্রিযসংযমঃ। পাবনানি মহারাজ। নরাণাং পুণাকর্ম্মণাম্॥ ১৮॥ অধর্মক্রচয়ো মূঢান্তির্ঘান পতিপরায়ণাঃ। কুচ্ছা প্রোনিমন্ত্রপ্রাপ্তা ন স্থাং বিন্দতে জনাঃ॥ ১৯॥ ইহ যৎ ক্রিয়তে কর্ম্ম তৎ পরত্রোপভুজ্যতে। তম্মাচ্ছরীর মুঞ্জীত তপসা নিষ্মেন চ॥ ২০ ॥ यथोगिक अयरक्क म॰পृक्यां चिथानग्र ह। কালে পাত্রেচ হৃষ্টাত্মা রাজন বিগত মৎসরঃ॥ ২১॥ সত্যবাদী লভেতাযুরনায়াসমথার্ক্রম্। অক্রোধনোহনস্থক্ষ নির্বাতিং লভতে পরাম্॥ ২২ ॥ माखः भमभवः भथः পরিক্লেশং ন বিন্দৃতি। ন চ তপ্যতি দান্তাত্মা দৃষ্ট্যা পরগতাং শ্রেরম্ ॥ ২৩ ॥ সংবিভক্তা চ দাতা চ ভোগবান সুখবানরঃ। ভবত্যহিংসকলৈ পরমারোগ্যসন্ত ॥ ২৪ ॥ মান্যমানয়িতা জন্ম কুলে মহতি বিন্দতি। वामरेनर्न जू मः योगः প্রাপ্নোতি বিজিতে न्त्रियः ॥ २ ०॥

॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ কালে দান কালে॥ ২১॥ অনায়াসং ক্লেশ পরিছারং
নির্বতিং স্থাং পরাং মোক্ষাখ্যাং॥ ২২॥ দান্তঃ জিতেজ্ঞিয়ঃ দান্তঃ প্রতিপত্তি যোগ্যতামাপাদিত আত্মামনোযত্ত জিতচিত্ত ইত্যর্থঃ॥ ২৩॥
সংবিভক্তা অন্নাদে, বিভাগকর্তা দাত্যখনাদেঃ॥ ২৪॥ ইন্দ্রির জয়কল
মাছ মান্যোভিব্যসনৈঃ জী মদ্য দ্যুতাদ্যৈঃ॥ ২৫॥ শুভ্যেবান্ত্ শেতে
শুভ পক্ষ পাতিনী বুদ্ধিদ্যা কাল ধর্মেণ মরণেন তদ্যাগাং শুভান্ত্শস্থ

শুভানুশয়বুর্দিই সংযুক্তঃ কালধর্ম্ম।। প্রাত্মুক্রতি তদ্মোগাৎ কল্যাণমভিরের সং॥ ২৬॥ যুধিষ্ঠির উব্বচ। ভগবন্ দানধৰ্মাণাং তপদো বা মহামূনে!। কিং স্বিষ্ঠ্পণ প্রেডা কিং বা চুষ্করমূচ্যতে ॥ ২৭॥ ব্যাস উবা । দানান্ন ছন্ধরং তাত। পৃথিব্যামন্তি কিঞ্চন। অর্থেচ মহতী তৃষ্ণা স চ দুঃখেন লভ্যতে ॥ ২৮॥ পরিতাজ্য প্রিয়ানু প্রাণানু ধনার্থ হি মহামতে।। প্রবিশন্তি নরা ধীরাঃ সমুক্রমট্রীন্তথা॥ ২৯॥ ক্ষবিগোরক্ষমিভ্যেকে প্রতিপদ্যন্তি মানবাঃ। পুরুষাঃ প্রেষ্যভামেকে নির্গচ্ছন্তি ধনার্থিনঃ ॥ ৩০ ॥ ভস্মাদ্র:খার্ক্তিকৈব পরিত্যাগঃ সুতুষ্করঃ। ন তুষ্করতরং দানাজুম্মাদানং মত মম। ৩১। विरमवस्त्रुव विरक्करमा नगारम्यानाभाक्षिणः धनम्। পাত্রে কালে চ দেশে চ সাধুত্যঃ প্রতিপাদয়েৎ॥ ৩২॥ অন্যায়াৎ সমুপাত্তেন দানধর্মো ধনেন যঃ। ক্রিতে ন স কর্তার ম্বায়তে মহতো ভয়াথ। ৩৬। পাত্তে দান**ং স্থণ্প**মপি কালেদত্তং যুধিষ্ঠির!। মনুসা হি বিশুদ্ধেন প্রেত্যানস্তফলং স্তৃ। ৩৪॥

যোগাৎ সকলাণ মতিরেৰ প্রাত্তৰতিজায়তে॥ ২৬ ॥ দানজানাৎ ধর্মাণাৎ তপ্সঃ কায় ক্লেশ কৃত্যা কুচ্ছাদেঃ এতয়োর্মধা প্রেডা মুখা কিং বছ্থাণং কিং পরলোকে ঝেঠমিডার্থঃ॥২৭॥২৮॥২৯॥৩০॥ মুঃধার্মি ভক্ত ধনসোড়ি শেষঃ মতং ঝেঠছেন॥৬১॥৬১॥ ৩০॥ ৩৪॥ জোনো- শ অত্তাপ্যদাহরন্তীমমিতিহাসং পুরাতনম্।
 ত্রীহিক্তোণ পরিত্যাগাদ্যৎ ফলং প্রাপ মুদ্দালঃ ॥ ৩৫ ॥
 ইত্যারণ্যকে পর্বাণ ত্রীহিক্তোণিক পর্বাণ দান ছুদ্ধরত্বকথনে
 উনষ্ট্যধিক দ্বিশতত্যোহধ্যায়ঃ ॥ ২৫৯ ॥

মুধিন্তির উবাচ।
বীহিদ্রোণঃ পরিত্যক্তঃ কথং তেন মহাত্মনা।
কম্মৈ দন্তশ্চ ভগবন বিধিনা কেন বাপা মে॥ ১॥
প্রত্যক্ষধর্মা ভগবান যক্ত তুকৌ হি কর্ম্মভিঃ।
সকলং তম্ভ জন্মাহং মন্যে সদ্ধর্মচারিণঃ ॥ ২॥
বাস উবাচ।

শিলোঞ্র্তির্ধর্মাত্মা মুকাল: সংষতে ক্রিয়:।
আসীক্রাজন কুরুকেত্তে সভাবাগনস্থাক: । ৩ ॥
অভিথিত্রতী ক্রিয়াবা৲শ্চ কাপোতী৲ বৃত্তিমান্থিত:।
সত্তমিষ্টাকুত্র নাম সমুপাত্তে মহাতপাঃ॥ ৪ ॥

মান বিশেষস্তন্মিতা ব্রীহয়ন্তেবাং দানাং॥ ৩৫॥ ইত্যারণ্যকে পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে উনষ্ঠাধিক ীদিশত তমোহধ্যায়ঃ॥ ২৫৯॥

বীহিজেণি ইতি॥ ১॥ প্রত্যক্ষর্মা নৃগাং ধর্মম্য বেক্তা ভগবানীশবঃ
॥ ২॥ শিলং কনিশার্জনং উঞ্চঃ কণশোর্জনং উঞ্চঃ কণশ আদানং কনিশাদার্জনং শিল মিতি যাদবঃ তেউতের্ত্তি জীবনং যন্ত সশিলোঞ্ছ রুদ্ধিঃ
॥ ৩॥ কাপোতীং রুদ্ধিং অপা সংগ্রহরূপাং ইফীকৃতং ইফিভিরেব নির্বস্তাহ
নমুপ্রাদিনা শত্রং যজাং॥ ৪॥

^{*} অত্তাপ্ৰদাহরভীমমিতি লোক: য পুশুকে নাভি।

সপুত্রদারো হি মুনিঃ পকাহারো বভূব হ। কপোতবৃত্ত্যা পক্ষেণ ত্রীহিদ্যোণমুপার্কয়ৎ॥ ৫॥ দর্শঞ্চ পৌর্নাদঞ্চ কুর্বানু বিগতমৎসর:। দেবতাতিথিশেষেণ কুরুতে দেহ * যাপনম্ ॥ ৬ ॥ তত্তেন্ত্র: সহিতো দেবৈঃ সাক্ষাল্রিভুবনেশ্বরঃ। প্রত্যগৃহ্ণমহারাজ। ভাগং পর্বাণি পর্বাণি॥ १॥ স্ পর্বকালং কুত্বা তু মুনির্ন্ত্যা সমন্বিতঃ। অতিথিভ্যো দদাবন্নং প্রহুষ্টেনান্তরাত্মনা॥ ৮॥ ব্রীহিদ্রোণস্থ তদ্ধাস্থা দদতোহন্নং মহাত্মনঃ। শিকং মাৎসৰ্যাহীনতা বৰ্দ্ধত্যতিথিদৰ্শনাৎ ॥ ৯॥ তচ্চতান্যপি ভুঞ্জি ব্ৰাহ্মণানাং মনীষিণাম। মুনেস্ত্যাগবিশুদ্ধ্যা তু তদন্নং র্দ্ধিমর্চ্ছ তি॥ ১০॥ তম্ভ শুলাব ধর্মিষ্ঠং মূলালং সংশিতত্রতম্। তুর্বাসা নূপ ! দিখাসান্তমথাভ্যাজগাম হ ॥ ১১॥ বিভ্ৰচানিয়ত > বেশমুনত ইব পাণ্ডব! | বিক্চঃ পরুষা বাচো ব্যাহরন্ বিবিধা মুনিঃ ॥ ১২ ॥ অভিগম্যাথ তং বিপ্রযুবাচ মুনিসন্তমঃ। অনার্থিনমনুপ্রাপ্তং বিদ্ধি মাং দিজসম্ভম ! ॥ ১৩ ॥

৫। ৬॥ १॥ পর্বাংকববৰণ প্রধানাদিকং কর্ম কালং কালে ফাল্গুন্যাদৌ অত্যন্ত সংযোগে দ্বিতীয়া বীহিজ্ঞাণ মাত্রং যদাসিধ্যতি তদাদদাতি ॥ ৮ ॥ তদাচদীয়মানং তদ্বর্ধতি বদ্ধতে ॥ ৯॥ অচ্ছতি প্রাণ্ডোত ॥ ১০॥ ১০॥ ১১॥ বিকচঃ হসন্ মুণ্ডোবা॥ ১২॥ ১০॥

^{*} দেহযাপন মিতাত্র দেহ পালনমিতি ক পুস্তকে পাঠঃ।

স্বাগত তেইন্তি মুনিং মুদ্দালঃ প্রত্যভাষত। পাদ্যমাচমনীয়ঞ্ * প্রতিপাদ্যার্যাযুদ্ভমম্ ॥ ১৪ ॥ প্রাদাৎ স তাপসায়ানং * ক্ষ্বিতাযাতিথিবতী। উন্মন্তায় পরাৎ শ্রদামাস্থায় স ধৃতব্রতঃ ॥ ১৫ ॥ ততন্তদন্ধ রসবৎ স এব কুধরা श्रिकः। বুভুজে রুৎসমুন্মতঃ প্রাদান্তমৈ চ মুদ্যালঃ ॥ ১৬॥ ভুক্তা চান্ন ততঃ সর্বাসুচ্ছিফৌনান্মনস্ততঃ। অথারুলিলিপে২ঞ্চানি যথাগতমগাচ্চ সং॥ ১৭॥ এবং দিতীয়ে সংপ্রাপ্তে * পর্বাকালে মনীষিণ:। আগম্য বুভুজে সর্ব্বমন্নমুঞ্জোপজীবিনঃ॥ ১৮॥ নিরাহারস্ত স মুনিরুঞ্মার্জ্ররতে পুনঃ। न रेठन विकिशः (नव्यभक्य काला क्र्या ॥ ১৯ ॥ न क्लिरिश न ह मार्मश्रं नावमारना न मस्माः। मेथूलमात्रमूक्ष्ख्यादिद्यभ विद्याख्यम् ॥ २०॥ তথা তমুঞ্জধর্মাণং জুর্কাসা মুনিসন্তমং। উপতত্তে থথাকাল^ ষট্ব্লত্তঃ ক্নৃত্নিশ্চয়ঃ॥ ২১॥ * নচাস্থ মনসঃ কঞ্ছিকারং দদুদে মুনিঃ। শুদ্ধসন্ত্রুম্ম শুদ্ধং স দদুশে নির্ম্মলং মনঃ॥ ২২ ॥ ॥ ১८ ॥ ১৫ ॥ ১७ ॥ ১৭ ॥ म्रिजीरत्र भटक ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ २० ॥ २১ ॥ २२ ॥

^{*} প্রতিপাদার্ঘামুক্তমমিতাত্র প্রতিপাদার্মুক্তমমিতি পাঠঃ ক পুস্তকে

^{*} প্রাদাৎ স তাপসায়ান্নমিত্যত্ত প্রাদাৎস তপসোপাও মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

পর্ককালে ইতাত্ত যথাকাল ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

^{*} ন চাসঃ মনসঃ কঞ্চিদিতাত ন চাস্য মনসা কশ্চিদিতি পাঠঃধ পুস্তকে।

তমুবাচ ততঃ প্রীতঃ স মুনিমুদ্দাল^ ভতঃ। ত্বংসনো নান্তি লোকেহিন্মিন্ দাতা মাৎস্থ্যৰব্ভিতঃ ॥ ২৩ । ক্ষুদ্ধর্মসংজ্ঞাং প্রণুদত্যাদত্তে ধৈর্য্যমেব চ। রসানুসারিণী জিহ্ব। কর্ষত্যেব রসানু প্রতি॥ ২৪॥ আহারপ্রভবাঃ প্রাণা মনো ছুর্নিগ্রহঞ্লম্। মনসন্দেক্তিয়াণাঞ্চাবৈপ্যকাগ্রাং নিশ্চিতং তপঃ ॥২৫॥ **অ**মেণোপাৰ্ধ্বিতং ত্যক্তং জু:খং শুদ্ধেন চেতসা। তৎসৰ্বাং ভবতা সাধো যথাবছুপপাদিতম্ ॥ ২৬॥ প্রীতাঃ ম্মোহনুগৃহীতাশ্চ সমেত্য ভবতা সহ। ইন্দ্রিয়াভিজয়ো ধৈর্যাং দশ্বিভাগো দমঃ শমঃ। ২৭। দয়া সত্যঞ্চ ধর্মান্ড ছবি সর্বাং প্রতিষ্ঠিতম। জিতাত্তে কর্মভির্লোকা: প্রাপ্তে:হ্রি পরমাং গতিম্ ॥ ২৮॥ অহো দানং বিষুউত্তে স্থমহৎ স্বৰ্গবাদিভি:। সশরীরো ভবান গন্থা স্বর্গং স্কুচরিতত্ত্রত ! ॥ ২৯॥ ইত্যেব বদতক্ত তদা তুর্বাসস্থে মুনেঃ। দেবদুতো বিমানেন মুদ্দালং প্রত্যুপস্থিতঃ॥ ৩০॥ इ~ममातमयूर्कन किकिनीकालमालिना। কামগেন বিচিত্রেণ দিব্যগন্ধবতা তথা। ৩১॥ উবাচ চৈনং বিপ্ৰধিং বিমানং কৰ্মভিৰ্জিতমু। সমুপ।রোহ্মংসিদ্ধি প্রাপ্তোহিদ পরমা মুনে। ৩২॥ ভমেবং বাদিনমূষিদেবদুভমুবাচ হ। ইচ্ছামি ভবতা প্রোক্তান্ গুণান্ স্বর্গনিবাদিনাম্। ৩৩।

॥ ২৩ ॥ কুৎকুধা ধর্ম সহিতাং সংজ্ঞাং ত্রাতু প্রাণ, ধর্মঃ কুধা ইন্দ্রির ধর্মোরসনা তহুভরং জিতমিত্যর্থ:॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ উবাচ দেবদূত ইত্যন্ত্রমাতে ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ কে গুণান্তত্র বসতা কিং তপঃ কশ্চ নিশ্চয়ঃ।
বিগে তত্র স্থাং কিঞ্চ দোষো বা দেবদূতক ! ॥ ৩৪ ॥
সতাং সপ্তপদ নৈত্রমাছঃ সন্তঃ কুলোচিতাঃ।
মিত্রতাঞ্চ পুরস্কৃত্য পৃচ্চামি ত্বামহন বিভো!॥ ৩৫ ॥
যদত্র তথ্যং পথ্যঞ্চ তথু বীছ্যবিচারয়ন্।
আত্বা তথা করিষ্যামি ব্যবসায়ং গিরা তব ॥ ৩৬ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্কাশ ত্রীহিটোণিক পর্কাশ মুক্ষালোপাখ্যানে
যন্ত্যাধিকদিশতত্যে হ্যায়ঃ ॥ ২৬ ॥

দেবদৃত উনাচ।

মহর্ষে আর্য্যবুদ্ধিস্তাং ষা স্বর্গস্থথমূত্তমমন্।

সংপ্রাপ্তাপ বহু মন্তব্যং বিষ্ণাস্থাবুধো যথা॥ ১॥

* উপরিফীদেসৌ লোকো যোহযং স্থারিতি সংজ্ঞিতঃ।

উদ্ধারণ সৎপথঃ শাখাদেব্যান্চরো মুনে!। ২॥

॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ব্যবসায়ং নিশ্চয় ॥ ৩৬ ॥
ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে

ষষ্ট্যাধিকদিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬০ ॥

মহর্ষে ইতি বিমূশসি শুভ্রম শুভং বেতি বিচারয়সি স্বর্লোকঃ স্থলোকঃ
যায় তৃঃখেন সংভিন্নং নচপ্রশু মনন্তরং অভিলাষোপনীতং যতংক্ষাং স্বঃ
পদাস্পদমিতি আচতিঃ তৎপ্রধানতালোকোপি স্বঃ শব্দবাচ্যঃ উর্বৃৎ
গামানাদি ভূর্ম্বেরঃ সংপথঃ ব্রহ্মার্গঃ ক্রম্মুক্তি স্থান মিত্যর্থঃ দেব্যানের
মার্গেণ অর্চিরাদি পর্ব্বতাচর ন্তামিন্নিতি দেব্যান্তরঃ ॥ ২ ॥ পুংসঃ

^{*} উপরিফাদসোলোক ইতাত্র উপরিফ্রাচ্চ স্বলোক ইতি পাঠ:খ পুস্তকে।

নাতপ্ততপদঃ পুংসো নামহাযজ্ঞযাজিনঃ। নানৃতা নান্তিকাশৈচৰ তত্ৰ গচ্ছন্তি মুদ্দাল ! ॥ ৩॥ ধর্মাত্মানো জিতাত্মানং শান্তা দান্তা বিমৎসরাং ৷ দানধর্মারতা * মত্যাঃ শূরাশ্চাহবলক্ষণাঃ ॥ ৪॥ তত্র গছাতি ধর্মাগ্রাৎ কুরা শমদমালুকম্। <u>লোকান্ পুণাক্ষতান্ একান্ সন্তিরাচরিত নিভিঃ । ৫। ।</u> দৈবাঃ সাধ্যাস্তথা বিশ্বে তথৈব চ মহর্ষয়ঃ। यामा धामान्द्र (मोक्ताना ! शक्तवाश्मक्रमख्या ॥ ७ ॥ धवार प्रविनिकायानार भूथक् भूथक्रानकमः। ভাষতঃ কামসংপ্রা লোকাত্তেজোময়াঃ শুভাঃ॥৭॥ ্তরান্ত্রং শৎসহত্রাণি যোজনানি হিরণায়ঃ। মেরুঃ পর্বভরাত্যত্র দেবে। দ্যানানি মুদ্দাল। ॥ ৮॥ नम्नामीन शुग्रानि विश्वातः शुग्रकर्ष्यभाग्। ন কুৎপিপাসে ন গ্লানির্ন শীতোফে ভরং তথা। ১। বীভৎসমশুভং বাঁপি তত্র কিঞ্চিন্ন বিদ্যুতে। মনোজ্ঞাঃ সর্বতো গলাঃ স্থতস্পর্শাশ্চ সর্বশঃ॥ ১০॥ শক। শ্রুতিমনোগ্রাহা: সর্বতন্তত্ত বৈ মুনে !। न (भारका न ब्ह्रा ठव नात्रां मश्रतिरम्बरन ॥ ১১॥ क्रिमः म गूरन ! (लांकः खकर्मकल रह्जूकः। সুকুটভস্তত পুরুষাঃ সংভবন্তা জ্বকর্মাভিঃ॥ ১২ ॥

পুমাংসঃ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ধর্মাপ্রাং ধর্ম শ্রেষ্ঠং বোগং ॥ ৫ ॥ যামা ধামাশ্চ গণ বিশেষাঃ ॥ ৬ ॥ দেবানাং নিকায়া আলয়া থেয়ু তেষাং দেবনিকায়ানাং ॥ ৭ ॥ তয়,স্তংশং সহস্থাণি থোজনানি উপারি পরিধি রিত্যর্থঃ উচ্ছামসঃ চতুরণীতি সহত্রং মানামাত ক্ষুখণ্ডেবক্ষা মানতাং ॥ ৮॥৯॥১০॥১১॥১২

^{*} মর্ত্যাইত্যত্ত পুংস ইতি পাঠঃ এ পুস্তকে।

তৈজসানি শরীরাণি ভবন্ত্যত্তোপপদ্যতাম্। কর্মজান্যেব মৌদ্যাল্য। ন মাতৃপিতৃজান্যুত॥ ১৩॥ ন সংস্থেদো ন দৌর্গন্ধ্য পুরীষং মূত্রমেব বা। ভেষাং ন চ রজো বস্ত্রং বাধতে তত্র বৈ মুনে। ॥ ১৪॥ ন স্নায়ন্তি অজন্তেষাং দিব্যগন্ধা মনোর্মাঃ। थ्यपूजारस विमारेनण बक्कात्वव< विदेवण एस ॥ ३० ॥ विधारभाकक्रमारशृजा साहगारमर्याविङ्गाः। স্থ্ৰং স্বৰ্গজিতস্তত্ৰ বৰ্তন্ত্ৰতে মহামুনে ! ॥ ১৬ ॥ তেষাং তথাবিধানান্ত লোকানাশ মুনিপুঞ্চব ! । উপযুর্গির লোকভা লোকা দিবাগুণাবিতাং॥ ১৭॥ পুরস্তাদ্বাদ্ধান্তত লোকান্তেজেমিয়াঃ শুভাঃ। यक यास्त्रावस्ता विकान পূ চাঃ দৈয় কর্মাভঃ শুটভঃ॥ ১৮॥ ঋভবো নাম ততানো দেবান।মপি দেবতাঃ। * তেষাং লোকাঃ পরতরে তানু যজনীহ দেবতাঃ॥ ১৯॥ স্মংপ্রভাত্তে ভাষত্তো লোকাঃ কামতুষাঃ পরে! ন তেষাং জীক্বতন্তাপোন লেটেকশ্বয়মৎসরঃ॥ ২০॥ ন বর্ত্তরাহাতভিত্তে নাপামূতভোজনাঃ। তথা দিব্যশরীরাজে ন চ বিগ্রহমূর্ত্তয়ঃ ॥ ২১॥ न यूर्थ यूथकामारख (प्रत्राः मनाजनाः। ন কম্পপরিবর্ভেষু পরিবর্ভন্তি তে তথা।। ২২।।

উপপদ্যতিং উপগচ্ছতাং ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ এবং বিধৈরিতি দৃশ্যমান প্রদর্শনং ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥

^{*} তেষাৎ লোকাঃ পরতরে তান্ যজন্তীহ দেবতা ইত্যত্ত তেষাং লোকাং পরতরে যান্যজন্তীহ দৈবতা ইতি পাঃঃ খ গুন্তকে।

জরা মৃত্যুঃ কুতন্তেষা৲ হর্ষঃ প্রীতিঃ সুখ৲ ন চ। ন জুঃখং ন স্থাপ বাগি রাগছেষৌ কুতো মুনে ! ॥ ২৩ ॥ দেবতানাঞ্চ মৌদ্যালা। কাঞ্জিতা সা গতিঃ পরা। ष्ट्रष्ट्रांभा भवमा मिक्कित्रभमा कामरभाटरेवः ॥ २८ ॥ ত্ত্রয়ন্ত্রিপশদিমে দেবা যেষাং লোকা মনীযিভিঃ। शमारख निश्रोतः (खोरेश्वेमीरेनर्स्य। विधिश्रासिरेकः ॥ २०॥ সেয়ং দানকৃতা ব্যুফিরনুপ্রাপ্তা স্থং স্বয়। তাং ভুক্ষা স্কুতৈর্ব্ধাং তপদা দ্যোতিতপ্রভঃ॥২৬॥ এতৎ স্বৰ্গস্থাং বিপ্ৰ! লোকা নানাবিধান্তথা। শুণাঃ শুর্গস্য প্রোক্তান্তে দোষানপি নিবোধ মে॥ ২৭॥ কুত্ৰা কৰ্মাণস্তত্ৰ ভুজ্যতে যং ফলং দিবি। ন চান্যৎ ক্রিয়তে কর্মা মূলচ্ছেদেন ভুল্যতে ॥ ২৮॥ সোহত দোধো মম মতস্তস্যাত্তে পতনগ যং। স্থাব্যাপ্তমনকানাং পতন মচ্চ মুদ্যাল ! ॥ ২৯ ॥ অসম্ভোষঃ পরীতাপে। দৃষ্টা দীপ্ততরাং শ্রিয়ঃ। যন্তবজ্য বরে * স্থানে স্থিত। নাং তৎ স্বত্নরম্। ৩০॥ স ত বামাহ চ পততাং রজসাচ প্রধর্ণ ম। প্রস্লানেষু চ মাল্যেষু ভতঃ পিপতিষোর্ভযমু ॥ ৩১ ॥ আব্ৰহ্মভবনাদেতে দোষা মৌদাল্য! দাৰুণাং। নাকলোকে স্কুতিনাং গুণাস্থুতশো নৃণাম ॥ ৩২ ॥ অযন্ত ন্যে গুণ শ্রেষ্ঠ ক্রেডা নাং স্বর্গতো মুনে !। শুভারুশয়যোগেন মনুষ্যেষ্পজ,যভে ॥ ৩৩ ॥ ॥२७॥२८॥ तूरिः मण्यकः॥२७॥२०॥२४॥२०॥७०॥७०॥ ॥ ७२ ॥ ७० ॥

^{*} অবর ইত্যত্ত অধর ইতি প†ঠঃ ক পুস্তকে।

তত্রাপি স মহাভাগঃ স্থ্যভাগভিজায়তে।
নচেৎ সংবুধ্যতে তত্ত্ব গচ্চতাধমতাং তত্তঃ ॥ ৩৪॥
ইহু যৎ ক্রিয়তে কর্মা তৎ পরত্রোপভূজ্যতে।
কন্মভূমিরিয়ৎ ব্রহ্মন্ ফলভূমিরসৌ মতা॥ ৩৫॥
মুদ্দাল উবাচ।

মহান্তস্ত অমীদোষান্ত্রয়া স্বর্গন্ত কীর্ত্তিলা:। নির্দোষ এবযন্ত্রন্যা লোকন্তং প্রবদস্বমে ॥ ৩৬॥

দেবদূত উবাচ।

ব্রন্ধণ সদনাদূর্দ্ধং ত্রিষ্টোঃ পরমং পদং।
শুদ্ধং সনাতনং জ্যোতিঃ পরং ব্রন্দ্রেতি যদিতুঃ॥ ৩৭॥
নতত্রবিপ্রগচ্ছান্ত পুরুষাবিষরাত্মকাঃ।
দন্তলোভ মহাক্রোধ মোহজোইরভিক্রতাঃ॥ ৩৮॥
নির্মানিরহংকারা নির্দ্রশ্বঃ সংযতেক্রিয়াঃ।
ধ্যানযোগ পরাশৈচব তত্রগচ্ছান্ত মানবাঃ॥ ৩৯॥
শ্ব এতত্তে সর্ব্বমাখাতিং য্যাং পৃচ্ছান মুদ্দাল।।
তবানুকম্পায়া সাধাে! সাধুগচ্ছাম মা চির্ম্॥ ৪০॥
ব্যাস উবাঃ।

এতচ্ছুত্বা তু মৌদ্বাল্যো বাকাং বিময়শে ধিয়া। বিমৃষ্ঠ চ মুনিশ্রেটো দেবদূতমুবাচ হ ॥ ৪১॥ দেবদূত নমস্তেহস্ত গচ্ছ তাত! যথাস্থাম্। মহাদোষেণ্ মে কার্যাং ন স্থর্গেণ স্থানে বা॥ ৪২॥

^{*} এতত্তে সর্ক্ষাখ্যাত মিত্যসা প্রাক্ মুদ্গল উবাচ ইত্যাদি নির্মান্ নিরহঙ্কারা ইত্যন্তং শ্লোক চতুষ্টায়ং ক পুস্তকে নাজি।

পতনাত্তে মহদ : খং পরীতাপং স্থদার ন্ম। স্বর্গভাজশ্বরতীই তমাৎ স্বর্গং ন কামযে। so ॥ যত গড়া ন শোচন্তি ন ব্যথন্তি চলন্তি বা। তদহং স্থানমত্যন্তং মার্গযিষ্যামি কেবলমু॥ ৪৪॥ ইত্যক্তা স মুনিৰ্ব্যাক্যৎ দেবদূতং বিহুজ্য তং। শিলোঞ্জরতির্ধর্মাত্মা শমমাতিষ্ঠত্বতমন্। ৪৫। जुनानिक छिज्भिता मगरना छ। भाका श्रमः। জ্ঞানযোগেন শুদ্ধেন ধ্যাননিত্যো বভূব হ।। ৪৬॥ धानर्याभावनः नक्। श्राभा वृक्तिमञ्जनाम्। জগাম শাশ্বতীং সিদ্ধি পরাং নির্বাণলক্ষণাম্ ॥ ৪৭ ॥ তন্মান্ত্রমপি কৌতেয়। ন শোক্ত কর্ত্তমর্থসি। রাজ্যাৎ ক্ষীতাৎ-পরিভ্রষ্টস্থপসা তদবাপাসি ॥ ৪৮ ॥ स्थिया । खत्र पुर्धर पुर्धया नगुत्र स्था । পিয়⊓যে⊲পিসপিন্তে নর∾ নেমিমরা ইব⊣ ৪৯॥ পিত্পৈতামহণ রাজ্যণ প্রাপ্যক্তমিতবিক্রম!। বর্ষাজ্যোদশাদুর্ক > ব্যেত তে মানসো জুরঃ। ৫০॥ रिवनम्थाशम छेवाह।

এবমুক্ত্রা স ভগবান্ ব্যাসঃ পাপ্তবনন্দ্রন্য । জগাম তপসে ধীমান্ পুনরেবাশ্রমং প্রতি । ৫১ ॥ ইতারেকে পর্বাণ বৌহিন্টোনিকপ্রবিণি মৃদ্যালদের

ইত্যার্যকে পর্বাণ ত্রীহিদ্রৌণিকপর্বণি মুক্ষালদেবদূত সম্বাদে এক্যফ্টাধিকদ্বিশততমোহধ্যারঃ॥২৬১॥

সমাপ্তঞ্চ ত্ৰীহিদ্ৰোণিকপৰ্ব।

॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ বলং পরবৈরাগ্যং বুদ্ধিং জ্ঞানং ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥
নেনিং চক্রধারাং অর: নাভিনেমি সন্ধান দাকণি ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্কানি নৈলকগারে ভারত জাবদীপে
একষ্ট্যাধিক দ্বিশততমোহধায়ঃ ॥ ২৬১ ॥

জিতজেতজিতজিতজিতজিতজিত অথ জে)পদীহরণ পর্ব ॥ ১৪॥

দূর্য ব্যক্ত ব্যক্ত

বসৎস্বেং বনে তেমু পাগুবেমু মহাল্লস্থ।
রমমাণেমু চিত্রাভিঃ কথাভির্দ্ধ্নভিঃ দহ॥ ১॥
স্থাদন্তাক্ষানেন ক্ষারা ভোজনাব্রি।
বাজনাপন্তর্পামাণেমু যে চারার্থমুপাগভাঃ॥ ২॥
আর্ণ্যানাং মুগাণাক মাপ্রের্নাবিশেরপি।
ধার্তিরাষ্ট্রী জুরাল্লানঃ মর্কে জুর্য্যোধনাদয়ঃ॥ ৩॥
কথং তেমুকুর্বভিত্ত পাপাচারা মহামুনে।।
জুঃশাসনস্থ কর্ণস্থি শকুনেশ্চ মতেন্থিতাঃ॥ ৪॥
এতদাচক্ষ্র ভগবন্ বৈশ্বপায়ন পৃষ্ক্রেঃ।
বিশ্বপায়ন উব্চ।

শ্রুত্বা তেষা তথা রক্তিং নগরে বদ্রতামিব ॥ ৫॥
ছুর্য্যোধনো মহারাজ। তেমু পাপমরোচয়ৎ।
তথা তৈর্নিকৃতিপ্রতিজঃ কর্নজুংশাসনাদিভিঃ ॥ ৬॥
নানোপাথৈরঘং তেমু চিন্তযৎস্থ ছুরাল্লস্থ।
অন্ত্যাগচ্ছৎ স ধর্মাত্মা তপসী সুমহাযশাঃ ॥ ৭॥
শিষ্যাযুতসমোপেতো ছুর্নাসা নাম কামতঃ।
তমাগতমভিপ্রেক্য মুনিং পর্মকোপন্ম ॥ ৮॥
ছুর্য্যোধনো বিনীতাল্লা প্রশ্রেণ দমেন চ।
সহিতো ভ্রাতৃভিঃ শ্রীমানাতিথ্যেন ন্যমন্ত্রম্থ ॥ ৯॥
বসংস্থিতি ॥ ১॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ অখং ছুংখং॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥

বিধিবৎ পূজয়ামান স্থাং কিয়রবৎ স্থিতঃ।

অহানি কভিচিন্তত্র তন্থা স মুনিসন্তমঃ ॥ ১০ ॥

তঞ্চ পর্যাচরদ্রাজা দিবারাত্রমতন্ত্রিতঃ।

ছর্ষোধনো মহারাজ! শাপান্তক্য বিশক্তিঃ ॥ ১১ ॥

সুধিতোহম্মি দদস্থার শীঘ্রং মম নরাধিপঃ!!

ইত্যুক্ত্রা গচ্ছতি স্লাতুং প্রত্যাগচ্ছতি বৈ চিরাৎ।

ন মোক্ষ্যাম্যদ্য মে নান্তি কুধেত্রাকৈত্যদর্শনম্ ॥ ১২ ॥

অকম্মাদেতা চ বৃত্তে ভোজযাম্মাং স্থর; লিতঃ।

কদাচিচ্চ নিশীথে স উপায় নিক্তৌ স্থিতঃ ॥ ১৩ ॥

পূর্ববেৎ কার্যিত্বালং ন ভূত্তে গইয়ন্ স্ম সঃ।

বর্ত্তানে তথা তন্মিন্ যদা দুর্যোধনো নূপঃ ॥ ১৪ ॥

বিক্তিং নৈতি ন ক্রোধ তদা ভূফোহ ভবন্মুনিঃ।

আহু চৈনং দুরাধর্ষো বরদোহস্মীতি ভারত! ॥ ১৫ ॥

ছর্ক্সা। উনাচ।

বর্ণ বর্ষ ভদ্তে যতে মনসি বর্ত্তে।

বর্ম বর্ষ ভদ্রশ্বে যত্তে মনসি বর্ত্ততে। ময়ি প্রীতে তু যদ্ধর্ম্মাং নালভ্যং বিদ্যুতে তব ॥ ১৬ ॥
বৈশস্থায়ন উবাচ।

এতচ্ছু ত্বা বচস্তম্য সহর্ষেভাবিতাত্মনঃ।
অমন্যত পুনর্জাতমাত্মান সমুযোধনঃ॥ ১৭॥
প্রাণেব মন্ত্রিক্ষানীৎ কর্নভূগাননাদিভিঃ।
যাচনীয় মুনেস্তুফাদিতি নিশ্চিতা ভুর্ফাতঃ॥ ১৮॥
অতিহ্র্যান্তিলে রাজা বর্মেনম্যাচত।
শিষ্যৈঃ সহ মম ব্রহ্মন্! যথা জাতোহ্তিথির্ভবান্॥ ১৯॥

॥ ১०॥ ১১॥ ১२॥ ১७॥ ১৪॥ ১৫॥ धर्मार धर्मामन लिख्य ॥ ५७॥ ॥ ১৮॥ ১৯॥ অস্থ্য ক্লে মহারাজো জোঠঃ শ্রেঠো যুধিন্তিরঃ।
বনে বসতি ধর্মান্তা ভাতৃতিঃ পরিবারিতঃ ॥২০॥
গুণবান্ শীলসম্পন্নস্তস্থ বুমজিথির্জন।
যদা চরাজপুত্রী সা স্থকুমারী যশস্বিনী ॥২১॥
ভোত্মিন্তা দিক্লান্ সর্বান্য পতী শ্রুত বরবর্ণিনী।
বিশ্রান্তা চ স্বয়ং ভুকুল স্থাসীনা ভবেদ্দদা ॥২২॥
তদা স্থং তত্র গচ্ছেথা যদ্যস্ত্রাহ্যতা মরি।
তথা করিষ্যে স্থপ্রীত্যেত্যেবমুক্ত্রা স্থ্যোধনন্ম॥২০॥
দুর্ব্যাসা অপি বিপ্রেন্দ্রো যথাগতনগান্ততঃ
কৃতার্থমিব চাল্মান্য তদা মেনে স্থ্যোধনঃ ॥২৪॥
করেন্ চ করং গৃহ্য কর্নস্থ মুদিতো ভূশন্।
কর্নোহা

দিন্ট্যা কামঃ স্থুসংরুত্তো দিন্ট্যা কৌরব। বর্দ্ধসে। দিন্ট্যা তে শত্রবো মগ্গা তুস্তরে বাসনার্ণবে॥ ২৬॥ তুর্বাসঃজোধজে বঙ্গ্লো পতিতাঃ পাণ্ডুনন্দনাঃ। বৈরুরেব তে মহাপাপৈর্গতা বৈ তুস্তর্গ তমঃ॥ ২৭॥

रिवमस्थाशम छेवाह।

ইশ্বং তে নিক্তিপ্ৰজ্ঞা রাজন্ত ছুর্যোধনাদয়:। হদন্তঃ প্রতিমনকো জগ্মঃ স্বং স্থ কিলেতনম্ ॥ ২৮॥ ইত্যারণ্ডে পর্বানি দ্রোপদীহরণ পর্বানি ছুর্বান উপাখ্যানে দ্বিষ্টাধিক, দ্বং, ত জমোহধ্যায়ঃ॥ ২৬২॥

॥ २० ॥ २১ ॥ २२ ॥ २० ॥ २৪ ॥ २৫ ॥ २७ ॥ २५ ॥ २৮ ॥ ইত্যারণাকে পৰুণি নৈলকগীয়ে তারত ভাবদীপে দিফটাধিক দিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬২ ॥

বৈশস্পায়ন উনাচ।

ততঃ কদাচিদ্রবাসাঃ স্থাসীনা স্ত পাওবান্। ভুক্তা চাবস্থিতাং কুষ্ণাং জ্ঞাত্বা তান্মন্বলে মুনিঃ॥ ১॥ অভ্যাগচ্ছৎ পরিবৃতঃ শিবৈদরযুতসম্মিতৈঃ। দৃষ্ট্যাযান্তং ভমতিথিং স চ রাজা যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ২ ॥ জগামাভিমুখ: শ্রীমান্ সহ ভাতৃভিরচুতে:। তদ্মৈ বদ্ধাঞ্জলিৎ সম্যক্তপবেশ্স বরাসনে।। ৩।। विधिव शृष्ठशिद्धां जभाषि एथान नामलु ३९। আহ্লিক ভগবন্। কৃত্বা শীঘ্রমেহীতি চাত্রবীং॥ ৪॥ জগাম চ মুনিঃ সোহপি স্নাতৃং শিষ্টোঃ সহান্তঃ ! ভোজ্যেৎ সহশিষ্য সাং কথ্যতাবিচিত্তয়ন্ ॥ ৫॥ ন্যমজ্জৎ সলিলে চাপি মুনিম্জাং সমাহিতঃ। এতব্যানন্তরে রাজন ! দ্রৌপদী যে বিভায়রা॥ ৬॥ চিন্তামবাপ প্রমামন্তহেতোঃ পতিব্রতা। সা চিন্তযন্ত্রী চ যদা নান্তহতুমবি নিত ॥ ৭॥ মনসা চিত্তয়ামাস রুঞ্জ কৎসনিস্থদনম। क्रुक्ष ! क्रुक्ष ! महावादश ! ८मवर्कीनन्मनावाय ! ॥ ৮॥

ততইতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ এ চিনারন্তরেকালে ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ কৃষ্ণং পাপকর্ষকং কংসস্য কামানেত্র কাজোলা নিস্দন্ধ হৈ কৃষ্ণ কৃষ্ণ অত্যান্দর স্থানার্থং দিবচনং কৃষ্ণ হৃত্যানিকঃ শন্দোলন্ধ নির্বৃত্তি বাচকঃ তয়োরৈকাং পরং বন্ধ কৃষ্ণ ইত্যাভিধীয়ত ইতিশ্রুত প্রনীতঃ কৃষ্ণপদস্যার্থঃ মহাস্তো বন্ধান কিছিল প্রতাভিধীয়ত ইতিশ্রুত প্রনীতঃ কৃষ্ণপদস্যার্থঃ মহাস্তো বন্ধান পিতাবহাই ভক্ষ মৌবাহুয্স্য সংবাতভাগং ধমতি সং পতত্রেদার্থি ভূমিজনয়ন্দের এক ইতি শ্রুতিঃ অব্যয় অবিনাশিন্ অত্র দেবকীনন্দন ম্যাব্যয়ত্বং বদন্ত্যা কৃষ্ণমূর্তের ভৌতিকত্ব মুক্তং একমাদিনা্থামর্থঃ শঙ্কর ভ্রাবৎপাদীয়ে বিষ্ণু সহন্দ্র নাম ব্যাখ্যানেত্র বন্ধান্তঃ ॥ ৮ ॥

বাস্থদেব। জগনাথ। প্রণতার্ভিবিনাশন।। বিশ্বাত্মনু! বিশ্বজনক ! বিশ্বহর্ত্তঃ ! প্রভো ! হব্যয় ! ॥ ৯॥ প্রপাল! গোপাল! প্রজাপাল! পরাৎপর।। আকৃতীনাঞ্চ চিন্তীনাং প্রবর্ত্তক নতান্মি তে ॥ ১০॥ বরেণ্য! বরদানন্ত! অগতীনাং গতির্ভব। পুরাণপুরুষ ! প্রাণমনোরস্ত্যাদ্যগোচর ! ॥ ১১ ॥ স্ক্রিয়ক ! প্রাধ্যক ! স্থামহং শ্রণ্থ গতা। পাহি মাং রূপয়া দেব। শরণাগতবৎসল। ॥ ১২॥ নীলে। ৎপলদলশ্রাম! পদাগর্ত্তারুণেক্ষণঃ!। পীতাম্বরপরীধান! লসৎকৌস্তভভূষণ!॥১৩॥ ত্বমাদিরত্তো ভূতানাং ত্বমেব চ পরায়ণ্ম। পরাৎপরতরং জ্যোতির্কিশাত্মা সর্কতো মুখঃ। ১৪॥ प्राय्यां छः भवर वीष्टर निश्वानः मर्यम्भाग् । ত্মা নাথেন দেবেশ। স্কাপচ্চ্যে ভয়ং নহি॥ ১৫॥ তুঃশাসনাদহং পূর্বাং সভায়াং মোচিতা যথা। ত্তথৈব সন্ধটাদসানামুদ্ধর্তুমিহার্ছনি ॥ ১৬ ॥ रेनमञ्जाश्रम छेना । এব^ স্তুতস্তদা দেবঃ কুফ্য়া ভক্তবৎসলঃ।

এবন স্ততন্তনা দেবং কৃষ্ণয় ভক্তবংশলং।
দৌপদ্যাঃ সঙ্কটন জ্ঞাত্বা দেবদেবো জগৎপতিং॥ ১৭॥
পাশ্ব স্থান শয়নে ত্যক্ত্বা রুক্মণীন কেশবং প্রভুঃ।
তত্তাজ্ঞগাম ত্বরিতো হুচিন্ত্যগতিরীশ্বরং॥ ১৮॥
ততন্তন দৌপদী দৃষ্ট্বা প্রণম্য প্রয়া মুদা।
অববীৎ বাস্থদেবার মুনেরাগমনাদিকম্॥ ১৯॥

॥ ৯॥ আকৃতীনাং চিত্তিনাকেতি চেতোরত্তি বিশেষাণাং ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ততন্তামত্রবীৎ কুঞঃ কুধিতোহিন্ম ভূশাতুরঃ। শীঘ্রং ভোজয় মাং ক্লুফে পশ্চাৎ সর্বাং করিষাসি॥ ২০॥ নিশম্য তদ্বচঃ কৃষ্ণা লজ্জিতা বাক্যমন্ত্ৰবীৎ। স্থাল্যাং ভাস্করদন্তায়ামন্নং মদ্যোজনাবধি ॥ ২১ ॥ ভূক্তবত্যস্ম্যহং দেব ! তত্মাদন্ন ন বিদ্যতে। ততঃ প্রোবাচ ভগবানু কুফাং কমললোচনঃ॥ ২২॥ কুষ্ণে ন নশ্মকালোহয়ং ক্ষ্ত্ৰেগভুৱে ময়ি। শীঘ্রং গচ্ছ মম স্থালীমান্যিয়া প্রদর্শর । ২০ ॥ ইতি নির্বান্ধতঃ স্থালীমানায়া স যদুদ্ধই।। স্থাল্যাঃ কঠেহথ সপলগ্নং শাকানং বীক্ষ্য কেশবঃ ॥ ২৪ ॥ উপযুজ্যাত্রবীদেনামর্নেন হরিরীশ্বরং। বিশ্বাত্মা প্রীয়তাং দেবস্তুউশ্চান্তি বিজ্ঞভূক্ ॥ ২৫ ॥ আকারয় মুনীনু শীঘ্রং ভোজনায়েতি চারবার। সহদেবং * মহাবাহুঃ क्रुग्धः (क्रुगविनाभनः॥ २७॥ ততো জগাম ব্রিতো সহদেবো মহাযশাঃ। আকারিভুম্ভ তান্ সর্বান্ ভোজনার্থং নূপোন্তন। ॥ ২৭॥ স্লাতৃৎ গতান দেবনদ্যাং ছ্র্রোসঃপ্রভৃতীয় নীন্। তে চাবতীর্ণাঃ সলিলে ক্তবন্তোহ্ঘমর্থ্য ॥ ২৮॥ দুফৌকারান্ সালরসান্ তৃপ্তা পরময়া যুতা: 1 উত্তীর্য্য সলিলাত্তস্মান্দূ উবন্তঃ পরস্পারম্ ॥ ২৯॥ ছুবাসসমভিপ্রেক্য সর্বে তে মুন্যোইক্রবন্। রাজ্ঞা হি কার্যিত্বালং বয়ং স্লাতৃং সমাগভাঃ॥ ৩০ ॥ || २० || २১ || २२ || २७ || २8 || २৫ || २७ || २१ || २৮ || २৯ || ७० ||

^{*} সহদেব মিত্যত্ত ভীমদেন মিতি পাঠঃ ক ঘ পুস্তকে।

আকণ্ঠতৃপ্তা বিপ্রর্ষে! কিং স্বিদ্ধুঞ্জামহে বয়ম্। রুথা পাকঃ ক্তোহস্মাভিস্কত্র কিং করবামহে॥ ৩১॥ ফুর্কাসা উব্যাচ।

র্থাপাকেন রাজর্ষেরপরাধঃ কতো সহান্।
মাস্মানধাকুর্দ্ কৈ ব পা ওবাঃ কুরচকুষা॥ ৩২॥
স্থানুত্রভাবং রাজর্ষেরয়রীয়ন্ত ধীমতঃ।
বিভেমি স্কুতরাং বিপ্রা হরিপাদাশ্রয়ার্ক্ষনাৎ॥ ৩০॥
পাণ্ডবাশ্চ মহাত্মানঃ সর্বে ধর্মপরায়ণাঃ।
শ্রাশ্চ কতবিদ্যাশ্চ ত্রতিনন্তপ্যি স্ক্তাঃ॥ ৩৪॥
সদাচাররতা নিত্যু বাস্কুদেবপরায়ণাঃ।
কুদ্ধান্তে নির্দ্ধের্দের ভূলরাশিমিবানলঃ।
তত এতানদুকৌ ব শিষ্যাঃ শীঘ্র পলায়ত॥ ৩৫॥
বৈশ্পায়ন উপ্র।

ইত্যক্তান্তে দিজাঃ সর্কো মুনিনা গুরুণা তদা।
পাণ্ডবেভ্যো ভূশং ভীতা ছুক্রবুন্তে দিশো দশ। ৩৬।
সহদেবো দেবনদামপশুলু নিসন্তমান্।
তীর্থেদিকস্ততন্ত্রা বিচচার গবেষধন্। ৩৭।
তত্রন্তের্যপ্রপানভাঃ ক্রন্থা তাৎকৈর বিক্রতান্।
যুধিন্তির মথাভ্যেতা তং রন্তান্তং ন্যবেদয়ৎ। ৩৮।
ততন্তে পাণ্ডবাঃ সর্কো প্রত্যাগমনকাক্ষিণঃ।
প্রতীক্ষন্তঃ কিয়ৎকালং জিতাল্লানোহ্বতন্থিরে। ৩৯।
নিশীথেহভ্যেতা চাকন্দাদন্দান্ স ছল্ঘিষাতি।
কথক্থ নিস্তরেমান্দাৎ ক্র্ট্রাকৈবোপসাদিতাং। ৪০।
ইতি চিন্তাপরান্ দৃষ্ট্রা নিশ্বসন্তো মুহুদ্মুহঃ।
উবাচ বচনং শ্রীমান্ ক্ষঃ প্রত্যক্ষতাঙ্গতঃ। ৪১॥
। ৩১। ৩২। ৩২। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১।

ঐক্স উবাচ।

ভবতামাপদং জ্ঞাত্বা ঋষেঃ পরমকোপনাৎ।
ক্রোপদ্যাশ্চিন্তিতঃ পার্থা অহং সত্তরমাগতঃ॥ ৪২॥
ন ভর্ম বিদ্যতে তক্ষাদ্যেদ্ র্বাসনােহ পাকন্।
তেজসা ভবতাং ভীতঃ পূর্বামেব পলায়িতঃ॥ ৪০॥
ধর্মনিত্যাস্ত্র যে কেচিৎ ন তে সীদন্তি কহিচিৎ।
ভাপুচ্ছে বো গমিষ্যামি নিয়তং ভদ্রমস্ত বঃ॥ ৪৪॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

শ্রুবিতি কেশবস্থা বভূবুঃ স্বস্থমানসাঃ।
ট্রোপদ্যা সহিতাঃ পার্থাস্তমূচুর্ব্বিগতজ্বাঃ॥ ৪৫॥
ত্বয়া নাথেন গোবিন্দ। তুস্তবামাপদং বিভো!।
তীর্নাঃ প্রবমিবাসাদ্য মক্ষমানা মহার্ববে॥ ৪৬॥
ত্বস্তি সাধয় ভদ্রস্তে ইত্যাক্তাতো যথো পুরীম্।
পাপ্তবাশ্চ মহাভাগ! দ্রৌপদীসহিতাঃ প্রভো!॥ ৪৭॥
তিবুঃ প্রহৃষ্টমনদো বিহরন্তো বনাদ্বনম্।
ইতি তেহভিহিতং রাজন! যৎ পৃষ্টোহহমিহ ত্বয়া॥ ৪৮॥
এবং বিধানালীকানি ধার্ত্ররাইছুর্বাক্সভিঃ।
পাপ্তবৈষু বনস্থেষু প্রযুক্তানি র্থাভবন্॥ ৪৯॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণ দ্রৌপদীহরণ পর্বাণি তুর্বাস উপাখ্যানে
তিষ্ট্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৬৩॥

ু॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ অলীকানিচ্ছানি অলি-কন্ত্ৰ প্ৰিয়ে নৃতে ইতি নানাৰ্থঃ ॥ ৪৯ ॥

> ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিষট্যধিকদ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬৩ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। তিমানু বহুমুগেহরণ্যে ঘটমানা মহারথাঃ ৷ কাম্যকে ভরতশ্রেষ্ঠা বিজহুত্তে যথামরাঃ॥ ১॥ প্রেক্ষমাণা বছবিধান বনোদেশান সমন্ততঃ। যথৰ্ভুকালরম্যাশ্চ বনরাজীঃ স্থপুঞ্জিতাঃ ॥ ২ ॥ পাওবা মৃগয়াশীল। শরন্ত স্তন্মহদ্বনম্। বিজহ্রিন্দ্রপ্রতিমাঃ কঞ্চিৎ কালমরিন্দ্রমাঃ । ॥ ৩॥ ততত্তে যৌগপদোন যযুঃ সর্ব্বে চতুর্দ্দিশম। মূগরাণ পুরুষব্যাদ্রা ত্রাহ্মণার্থে পরন্তপাঃ॥ ৪॥ দ্রৌপদীমাশ্রমে ন্যস্ত তৃণবিন্দোরনুজয়া। মহর্ষেণীপ্ততপদো ধৌম্যস্থ চ পুরোধসং॥ ৫॥ ততন্ত্র রাজা দিক্ষনাং বার্দ্ধকলির্মহাযশাঃ। বিবাহকাম: শালেয়ান প্রয়াতঃ সোহভবস্তদা॥ ৬॥ মছতা পরিবর্টেণ রাজযোগ্যেন সংরুতঃ। রাজভিকান্তভিঃ দার্দ্ধাপাযাৎ কাম্যকঞ্চ সং॥ ৭ ॥ তত্রাপশ্রৎ প্রিয়াং ভার্য্যাং পাগুবানাং যশস্থিনীম। তিষ্ঠন্তীমাশ্রমদারি দৌপদী নর্জনে বনে ॥ ৮॥ বিভাজমানাং বপুষা বিভ্ৰতীং ৰূপমুত্তমম্। ভাঙ্গরতীং বনোদেশং নীলা ব্রুমিব বিছাতমু ॥ ৯ ॥ অপ্সরা দেবকন্যা বা মায়া বা দেবনির্মিতা। ইতি কুত্বাঞ্চলং সর্বে দদুশুন্তামনিন্দিতাম্। ১০।।

তন্মিরিতি ॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ পরিবর্হেণ পরিচ্ছদেন পরি-বর্হন্ত রাজার্হ বস্তুন্যাপি পরিচ্ছদে ইতি বিশ্বঃ॥ १॥ ৮॥ নীলমেখং নীলাজং॥ ৯॥ ১০॥ ততঃ স রাজা সিক্না বার্দ্ধ প্রথম বার্দ্ধ বিশ্বিত ন্থান বার্দ্ধান বিশ্বিত ন্থান বার্দ্ধান বার্দ্

ইত্যারণাকে পর্বাণি দ্রৌপদীহরণ পর্বাণি জয়দ্রথাগ্রনে চতুঃঘক্ট্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬৪॥

॥ ১১ ॥ কোটিকাস্যৎ কোটী হুৰ্গং অন্তঃপুরং তত্রাধিক তাঃ কোটিকাঃ তেষাং আসামিব মুখ্যং আখামিতি পাঠে সংখ্যান্তরং বক্তারমিতিবা অশ্যেতি পাঠে কোটিকাঃ অশ্যাঃ ব্যাপ্যায়স্যেতিবা রাজানং ক্ষত্রিয়ং প্রভুং বা রাজা প্রভৌচ নৃপতৌক্ষত্রিয়ে রজনীপতা বিতি মেদিনী ॥ ১২॥ ১৩॥ ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥

ইত্যারণ্যকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুঃষ্ট্যাধিক দিশত তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬৪ ॥ কোটিক উলাই।

কা ত্বং কদস্বস্থা বিনম্য শ শাখা, মেকাশ্রমে তিষ্ঠসি শোভমানা। দেদীপ্যমানাগ্রিশিখেব নক্তং,

দোধুরমানা * পবনেন স্কুক্রঃ ! ॥ ১॥

অতীবৰূপেণ সমন্বিতা ত্বং,

ন চাপারণােষু বিভেষি কিন্নু।

(मरी सू यकी यनि मानवी वा,

বর প্রা দৈত্যবরাঞ্না বা 🛚 ২ ॥

বপুষ্তী বোরগরাজকন্যা,

वत्नहती वा कननाहत्रञ्जी।

যদ্যেব রাজ্ঞো বরুণম্ম পত্নী,

যমস্থা সোমস্থা ধনেশ্রস্থা॥ ৩॥

ধাত্রিধাতুঃ সবিতুর্বিভোর্ঝা,

শক্রম্য বা ত্বং সদনাৎ প্রপ্রা।

ন ছেব নঃ পৃচ্ছদি যে বয়ং স্ম,

ন চাপি জানীম তবেহ নাথম্॥ ৪ ॥

বয়ং হি মান্ত্তব বর্দ্ধয়ন্তঃ,

পূচ্চাম ভচ্চে প্রভবং প্রভুঞ্চ।

আচক্ষ্য বন্ধুংশ্চ পতিং কুলঞ্চ.

তত্ত্বন যচেছ করোমি কার্যাম্। ৫॥

কেতি ॥১॥২॥৩॥ ধাতুঃ প্রজাপতেঃ সরস্বতী বা বিধাতুঃ কশ্যপদ্য কদ্রেদ্য বা অদিতিঃ পার্বতী বা বিভোগিফো লক্ষ্মীর্বা ॥৪.॥ প্রভবং পিতরং প্রভুৎ মহান্তং ॥ ৫॥ ं

^{*} বিনমোত্যত্ত নিয়মোতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

* দেংধ্যমানাইত্যত্ত ব্যাধ্য মানা ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

অহন্ত রাজ্ঞঃ সুর্থম্য পুরো, যং কোটিকান্ডোতি বিতুর্মানুষ্যাঃ। অসৌ তু যন্তিষ্ঠতি কাঞ্চনাঙ্গে, রথে হুতোঽগ্লিশ্চয়নে যথৈব ॥ ৬॥ ত্রিগর্ভরাজঃ কমলায়তাকঃ, क्षिमकरता नाम म ध्व वीतः। অস্বাৎ পরস্থেষ মহাধনুয়ান্ পুক্তঃ কুলিন্দাধিপতের্ব্বরিষ্ঠঃ॥ १॥ নিরীক্ষতে স্থাৎ বিপুলায়তাক্ষঃ, স্থপুষ্পিতঃ পর্ব্বতবাসনিত্যঃ। वामी जू यः श्रुष्कतिनीमभीत्म, স্ঠামো যুবা তিষ্ঠতি দর্শনীয়ঃ॥ ৮ । ইক্ষাকুরাজ্ঞঃ সুবলম্ব পুত্রঃ, স এব হন্তা বিষতাং সুগাতি। যন্তানুযাতা * ধজিনঃ প্রয়ান্তি, সৌবীরকা দ্বাদশ রাজপুত্রাঃ॥ ৯ ॥ শোণাশ্বমুক্তেমু রথেমু সর্কে, মথেষু দীপ্তা ইব হব্যবাহাঃ। অঙ্গারকঃ কুঞ্জরো গুপ্তকশ্চ, সক্রপ্তয়ঃ সপ্তয়সূপ্রবৃদ্ধী॥ ১০॥

রাজ্ঞঃ ক্ষত্তিরস্য চয়নে ইফ্টকাচরে ॥ ৬ ॥ ৭॥ ৮ ॥ অস্লচক্রং সৈন্য মনুলক্ষী ক্বত্য প্রথান্তি চক্রং সৈন্য রথান্সয়োরিতি বিশ্বঃ পাচান্তরে ২ স্ যাত্রায়াত্রোপকরণ পালা ইত্যর্থঃ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥

^{*} অনুষাত্তেতাত্ত অনুচক্রমিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

* প্রভন্ধরাহ্থ ভ্রমরো রবিশ্চ,
শ্বঃ প্রভাপঃ কুহ্নশ্চ নাম।

য়ুন যট্ সহস্রা রথিনোহনুযান্তি,
নাগা হয়াশ্চৈর পদাভিনশ্চ॥ ১১॥
জয়দ্রথো নাম যদি শ্রুতস্তে,
সৌরীররাজঃ স্কৃত্তা স এবং।
তদ্যাপরে ভাতরোহদীনসন্তা,
বলাহকানীকবিদারণাদ্যাঃ॥ ১২॥
সৌরীরবীরাঃ প্রবরা যুবানো,
রাজানমেতে বলিনোহনুযান্তি।
এতৈঃ সহাযেরূপ্যাতি রাজা,
মরুদ্দাণৈরিক্র ইবাভিগুপ্তঃ॥ ১৩॥
ভ্রজানতা> খ্যাপ্য নঃ স্ক্রেশি।
কস্যাদি ভার্যা ছুহ্তা চ ক্সা॥ ১৪॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি দ্রৌপদীংরণ পর্বাণি কোটিকাস্য প্রশ্নে পঞ্চষষ্ট্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬৫ ॥

পদাতিনঃ পদ্ধাং অভিত্ং সততং গন্তং শীলং যেষাং তেপদাতয়ঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥

ইত্যারণাকে পর্বান নৈদকণ্ঠায়ে ভারতভাবদীপে পঞ্চ ষষ্টাধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৬৫॥

* প্রভন্ধর ইত্যত্র ভয়ম্বর ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

বৈশক্ষায়ন উবাচ।

व्यथावरीत्मी भनी ताकभूकी, পুষ্টা শিবীনাৎ প্রবরেণ তেন। অবেক্ষ্য মন্দং প্রবিষ্ণুচ্য শাখাং, সংগৃহতী কৌশিকমুন্তরীযম্॥ ১ । বুদ্যাভিজানামি নরেক্র পুত্র, ! ন মাদৃশী ত্বামভিভাকী মুগ। ন ত্বেব বক্তান্তি তবেহ বাক্য, মন্যো নরো বাপ্যথ বাপি নারী । ২ । একা হাহং সংপ্রতি তেন বাচং, ममानि देव छक ! निर्वाध (ठम्म। অহং হারণ্যে কথমেকমেকা, ত্বামালপেয়ৎ নিরতা স্বধর্মে। ৩॥ জানামি চ ত্বাং সুর্থসা পুত্রং ৰণ কোটিকাস্যেতি বিভুৰ্মসুষ্যাঃ। তত্মাদহং শৈব্য! তথৈব ভুজ্য মাখ্যামি বক্ষুন প্রথিত পকুলঞ্ ॥ ৪॥ অপত্যমিক্ষিক্রপদসা রাজ্ঞ, ক্লুফেতি মাং শৈব্য! বিভুৰ্মনুব্যাঃ। সাহং রূপে পঞ্চ জনান্ পতিত্বে, যে থাওবপ্রস্থাতাঃ জ্রুতান্তে॥ ৫॥

অথেতি শিবীনাং শিবিবংশ্যানাং ক্ষত্তিয়াণাং মৃন্দং সৈরং অবে-ক্ষ্য সংকোচা তদেবাছ বিমুচ্যেতি কৌশিকং কৌশজং॥১॥ অভিভাষ্ট্রং অভিভাষিত্রং॥২॥ তেনকারণেন॥ ৩॥৪॥ পঞ্জনান্ পঞ্চারকান্॥ ৫॥ यू विकित्ता जीयरमनार्क्क्ता ह, याजा क शुद्धी शुक्रवश्ववीत्तो। তে মাং নিবেশ্যেহ দিশশ্ভবস্তো, বিভজ্য পার্থা মুগয়াৎ প্রয়াতাঃ ॥ ৬॥ প্রাচীং রাজা দক্ষিণাৎ ভীমদেনো, জয়ঃ প্রতীচীং যমজাবুদীচীম্। মন্যে তু তেষাং রথসত্তমানাং, কালোহভিতঃ প্রাপ্ত ইহোপয়াতুম্ ॥ ৭ ॥ সন্মানিতা যাসাথ তৈর্ঘথেকং বিষুচ্য বাহনেবরোহয়ধ্য। প্রিয়াতিথিধর্মস্কতো মহাত্মা, প্রীতো ভবিষ্যত্যভিবীক্ষ্য যুশ্মান্॥ ৮॥ এতাবছুক্তা ক্রপদাত্মজা সা, শৈক্যাত্মজং চন্দ্রমুখী প্রতীতা। বিবেশ তাং পর্নশালান প্রশস্তাং, সঞ্চিত্ত্য তেৰ।মতিথিত্বমর্থে ॥ ৯ ॥

ইত্যারণ্যকে প্রকৃণি ক্রোপদীহরণ পর্ব্বণি ক্রোপদীবাক্যে ষত্যক্ট্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬৬॥

॥७॥ জয়োর্কুনঃ । ৭ ॥ ৮ ॥ তেষা মর্থে অতিথিয়ু যোগ্যাং স্বধর্মং পুজাদিকং কর্তুং সঞ্চিন্ত্য শালাং বিবেশ ॥ ৯ ॥

> ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে। ষড়্যফ্যাধিক দিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৬৬॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

তথাসীনেষু দর্বেষু তেষু রাজস্থ ভারত।।

যতুক্তং কৃষ্ণরা সার্দ্ধং তৎ দর্বং প্রত্যবেদরৎ॥ ১॥
কোটিকান্সবচঃ প্রুত্থা শৈবাং সৌবীরকোহব্রবীৎ।

যদা বাচং ব্যাহরস্ত্যামস্তাং মে রমতে মনঃ॥ ২॥
সীমন্তিনীনাৎ মুখ্যায়াং বিনির্ত্তঃ কথং ভবান।
এতাৎ দৃষ্ট্বা ব্রিয়ো মেহন্যা যথা শাখাম্গব্রিয়ঃ॥ ৩॥
প্রতিভান্তি মহাবাহো। সত্যমেত্র্বীমি তে।

দর্শনাদেব হি মন স্তরা মেহপক্তং ভূশম্॥ ৪॥
তাং সমাচক্ষ্ব কল্যানীৎ যদি স্থাক্ত্ব্য মানুষী।

কোটিক উগাচ।

এষা বৈ জৌপদী কৃষ্ণা রাজপুত্রী যশস্বিনী ॥ ৫ ॥
পঞ্চানাং পাণ্ডুপুত্রাণা মহিষী সন্মতা ভূশন্।
সক্ষোধ্যের পার্থানা প্রিয়া বছমতা সতী ॥ ৬ ॥
তয়া সমেত্য সৌবীর! সৌবীরাভিমুখো ব্রজ।

বৈশস্পায়ন উবাচ।

এবমুক্তঃ প্রভ্যুবাচ পশ্চামো জৌপদীমিতি ॥ ৭ ॥ প্রতিঃ সৌবীরসিকুনাপ ছুফভাবো জয়দ্রথং। স প্রবিশ্বাশ্রমং * পুণ্যপ সিপহগোষ্ঠং রুকো যথা॥ ৮॥

তথেতি ॥ ১ ॥ দেশিবীরকো জয় দ্রথঃ ॥ ২ ॥ यদাস্যাং মেমনো রমতে তদা ভবান্ কথং বিনির্ভ ইতি যোজ্যং ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৩ ॥ ৭ ॥ দিংহগোষ্ঠং সিংহসভাং গোষ্ঠং গোস্থানকং গোষ্ঠীসভা সংলাপয়োঃ স্তিরামিতি মেদিনী লিম্ববিবক্ষিতং গোষ্ঠমিবগোষ্ঠ মিতি বা স্থানুমেব ॥ ৮ ॥ সপ্তমঃ

^{*} প্রামিতাত্ত শূন্য মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

আত্মনা সপ্তমঃ কৃষ্ণামিদং বচনমত্ত্রবীৎ।
কুশলং তে বরারোহে ভর্তারস্থেহপ্যনাময়াঃ॥ ৯॥
যেযা^ কুশলকামাসি তেহপি কচ্চিদনাময়াঃ।
ত্ত্বোপছাবাচ।

অপি তে কুশলং # রাজ্যে রাষ্ট্রে কোষে বলে তথা। >০।
কচিদেকঃ শিবীনাচ্যান্ সৌবীরান্ সহ সিন্ধুভিঃ।
অনুভিন্ঠসি ধর্মোণ যে চান্যে বিদিতান্ত রা।। >>।
কৌরব্যঃ কুশলী রাজা কুন্তীপুজো যুধিষ্ঠিরঃ।
অহঞ্চ ভাতরশ্চান্ত যাণশ্চান্যান্ পরিপুক্ষ্মি। >২।
পাদ্যং প্রতিগৃহাণেদমাসনঞ্জ নূপাত্মজ!।
মুগান্ পঞ্চাশতক্তিব প্রতিরাশণ দদানি তে।। >৩।।
অণেযান্ পৃষ্তান্ ন্যক্ষুন্ হরিণান্ শরভান্ শশান্।
আক্ষানুরান্ শয়রাণশ্চ গ্রয়াংশ্চ মৃগান্ বহুন্।। ১৪।
বরাহান্মহিষাণ শৈচব যাশ্চান্যা মৃগজাত্য়ঃ।
প্রদাস্তি স্বয়ং তুভ্যং কুন্তিপুজো যুধিষ্ঠিরঃ।। ১৫।
শি

জয়ড়থ উবাচ।
কুশলং শ্প্রাতরাশনা সর্বাং মে দিংসিতং স্বয়া।
এহি মে রথমারোহ স্থথমাপ্ল হি কেবলম্॥ ১৬॥
গতশ্রীকান্ ক্তরাজ্যান্ কুপণান্ গতচেতসং।
অরণাবাসিনং পর্থোনানুরোদ্ধুং স্বমর্হা॥ ১৭॥
ন বৈ প্রাজ্ঞা গতশ্রীকং ভর্তারমুপযুঞ্জতেঁ।
যুঞ্জানমনুযুঞ্জীত ন প্রিয়: সংক্ষয়ে বসেং॥ ১৮॥

বলাহকালীন ষট্ভাতৃত্পলক্ষ্য আত্মনা শরীরেণ সপ্তানাং পুরণঃ ॥৯॥ ১০॥ অভ্যতিষ্ঠান পালয়ান বিদিতাঃ লব্ধঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ প্রাঃ সংক্রে সতীতি শেষঃ হীন লক্ষীকে ইত্যর্থঃ ॥ ১৮ ॥ সমাঃ

^{*} রাজ্যে ইতাত্র রাজন্নিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

শ্রেরা বিহীনা * রাজ্যান্ত বিনকীঃ শাশ্বতী সমাঃ।
অলং তে পাণ্ডুপুত্রাণাং ভক্ত্যা ক্লেশমুপাসিতুম ॥ ১৯॥
ভার্য্যা মে ভব স্থগ্রোণি । ত্যকৈনান স্থথ্যাপ্লুহি ।
অথিলান্ নিকুসৌবীরাপ্লাহি স্থং ময়া সহা॥২০॥

বৈশপারন উবাচ।

ইত্যুক্তা সিন্ধুরাজেন বাক্যং হৃদ্যকম্পানম্।
কৃষ্ণা তম্মাদপাক্রামদ্দেশাৎ সা ভুকুটামুখী । ২১॥

* অবমত্যাস্য তদ্বাক্যমাক্ষিপ্য চ স্থমধ্যমা।
মৈবমিত্যব্রবীৎ কৃষ্ণা লজ্জনে নেতি সৈন্ধাবম্॥ ২২॥
সা কাক্ষমাণা ভভূণামুপ্যান্মনিন্দিতা।
বিলোভয়ামান প্রং বাকোর্বাক্যানি যুগ্ধতী॥ ২৩॥

ইত্যারণ্যকে পর্কণি দ্রৌপদীহ্রণ পর্কণি জয়দ্রথদ্রৌপদী সম্বাদে সপ্তথ্যট্যধিক দ্বিশততমোধ্যায়ঃ ॥ ২৬৭ ॥

मञ्चरमङ्ग्नि ॥ ১৯ ॥ २० ॥ २১ ॥ २२ ॥ २७ ॥

ইত্যারণ্যকে পূর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তয়ন্ত্রীধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬৭ ॥

 ^{*} রাজ্যাদিতাত্ত্র রাষ্ট্রাদিতি পাঠঃকপুস্তকে।
 * অবমত্যাদ্যেতাত্র অনাদৃত্য চেতি পাঠঃ কপুস্তকে।

শ স রোধরাগোপহতেন বল্কুনা,
সরাগনেত্রেণ নভোন্নতক্রবা।
মুখেন বিক্ষুর্য্য স্থবীররাষ্ট্রপং,
তত্তেহিত্রবীক্ত^ দ্রুপদাল্পজা পুনঃ॥ ১ ।
যশস্থিনস্তীক্ষবিযান্ত্র্যেগ্রেগ্রেগ্রে
।

বৈশস্পায়ন উবচ।

নতিক্রবন্মূচ। ন লজ্জদে কথম্। মহেন্দ্রকণ্পান্নিরতান্স্বকর্মস্থ্র,

স্থিতান্ সমুহেম্বপি যক্ষরক্ষসাম্॥ ২॥

न किश्विमीष्ठा॰ ध्यवमन्ति लाल॰, वत्नहत्र॰ वा गृहस्मिधनः वा ।

তপস্থিনং সংপরিপূর্ণবিদ্যং,

ভষন্তি হৈবং শ্বনরাঃ স্থবীর ! ॥ ৩॥

অহন্ত মন্যে তব নাস্তি কশ্চি,

দেতাদৃশে ক্ষত্রিয়সরিবেশে !

যম্বাদা * পাতালমুখে পতত্ত^,

পাণো গৃহীত্বা প্রতিসৎহরেত ॥ ৪ ॥

সরোবেতি রোবেণ রাগোরজিমা তেনসহিতং সরোধরাগং ততুপহতঞ্চমানকতেন বল্গুনা স্থানের নতে স্বভাবতঃ উনতে ক্রোধেনজবো
যক্ষান্তথা বিক্ষর্থ কৃৎকারং করা ॥ ১ ॥ অভি অভিক্রম্যক্রবন্দ্রিতান্
অচলান্ যক্ষাদিভি রপ্যজেয়ানিতার্থঃ ॥ ২ ॥ ঈজাংস্কুতাং বনেচরং বান
প্রস্থাপং পাপবচনং প্রবদন্তি সন্তইতি শেষঃ শ্বনরাঃ শুনকতুলা।
নরাশ্বাদৃশাল্পুএবং উক্তরীতা৷ ভয়ন্তিক্রবন্তি ॥ ৩ ॥ ক্ষতিরসংনিবেশ
নৃপসমাজে পাতাল মুখে মহাগর্তে প্রতি সংহ্রেৎ প্রতিবেধেত ॥ ৪ ॥

^{*} দ ইতাত্র মেতি পাঠঃ কপান্তকে ৷

^{*} আদ্যেতত্ত্ব আদ্যেতি পাঠঃ ঘগুন্তকে।

নাগং প্রভিন্নং গিরিকুটকণ্প, মুপত্যকা**ং হৈমবতীং** চরন্তম্। দণ্ডীব যূথাদপ সেধসি ত্বং, যো জেতুমাশৎ সসি ধর্মরাজ্যু॥ ৫॥ বাল্যাৎ প্রস্থুস্য মহাবল্স্যা, দিংহ্ন্য পক্ষাণি মুখালুনাসি। পদা সমাহত্য পলায়মানঃ, কুদ্ধং যদা দ্রহ্ম্যাসি ভীমদেনম্॥ ৬॥ মহাবলপ ঘে'রতরং প্রবৃদ্ধং, জাতং হরি॰ পর্বতকন্দরেষু। প্রস্থায়প্রং প্রপদেন হংসি, यः कुक्तमार्यारमानि कियुनुञ्जम ॥ १ ॥ ক্লফোরগো ভীক্ষবিষৌ দ্বিজিহ্বৌ, মত্তঃ পদা ক্রামসি পুচ্ছদেশে। যঃ পাণ্ডবাভ্যাং পুরুষোত্তমাভ্যাৎ, জঘন্যজাভ্যা৲ প্রযুযুৎসসে স্বয়্॥৮॥ यथा ह (वर्षः कम्ली नत्ना वा, 🗱 ফলতাভাবায় ন ভূত্যে পুনঃ। তথৈব মাং তৈঃ পরিরক্ষ্যমাণা, মাদাস্যসে কর্কটকীব গর্ভম্। ১।

উপত্যকাং অন্ত্রিসমীপভূমিং দণ্ডীদণ্ডমাত্রা যুধোযুথাং সমুহাং অপসেধনি অপকর্ষনি ॥ ৫ ॥ বাল্যাং মৌচ্যাং পক্ষাণিমুখোপরিস্থকেশান্ পদাসম হত্য লুনানিচ্ছিনংনি ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ বেঝাদয়ঃ ফলিতা এব নশ্যন্তি কর্কটীচ পরিণত গর্ভা নশ্যতীতি লোক প্রসিদ্ধং ॥ ১ ॥ বিভীষণেন ভয়পুদর্শনেন

^{*} ফলতাভাবায় নভূতয়ে পুনরিত্যত্ত ফলন্তভাবায় ন ভূতয়েত্বম ইতি পাঠঃ এঘ প্তকয়োঃ।

জন্ত্রথ উবাচ।
জানামি ক্লফে বিদিতং মথৈত,
দ্যথাবিধান্তে নরদেবপুলাঃ।
ন ত্বেমেতেন বিভীষণেন,
শক্যা বয়ং প্রানয়েতুং অয়াদ্য॥ ১০॥
বয়ং পুনঃ সপ্তদশেষু ক্লফে,
কুলেষু সর্বেহনবমেষু জাতাঃ।
বড়ুভ্যো গুণেভ্যোহভাধিকা বিহীনা,
নান্যামহে দ্রৌপদি পাণ্ডুপুলান্॥ ১১॥
সা ক্লিপ্রমাতিষ্ঠ গজং রথং বা,
ন বাক্যমাত্রেণ বয়ং হি শক্যাঃ।
আশংস বা অং ক্লপনং বদন্তী,
সৌবীররাজন্ত পুনঃ প্রসাদ্য॥ ১২॥

॥ ১০॥ ব্যমিতি সপ্তদশ অফৌকর্মাণি নবশক্তাদয়শ্চ নিতাং সন্তিবের্
তানি সপ্তদশানি নিতাবোগে মত্বর্থীরোশ আদাচ্ তত্তক্ষবিণিক পথেতুগং সেতুঃ কুঞ্জুর বন্ধনং স্থনাকর করাদানং শ্ন্যানাঞ্চ নিবেশনং অফৌসন্ধান কর্মাণি নিযুক্তানি মনীবিভি রিতিকর্মাষ্টকং কোষ বৃদ্ধিকরং তথা
প্রভুশক্তিমন্ত্র শাক্তকংলাহ শক্তিঃ প্রভুশিদ্ধি মন্ত্রাদিদ্ধিকংশাহিদিদ্ধিঃ
প্রভুদয়ে৷ মন্ত্রোদয় উৎসাহোদয়ঃ প্রভুগলীনাং স্থরপতঃ সামর্থ্যতঃ
ফলতশ্চবেষু নিতাবোগ ইতার্থঃ অনন্ধেয়ু অনীচেয়ু ষড়ভ্যো গুণেভ্যঃ
ন্যরোপে পঞ্চমীবড্গুণান্ প্রাপ্য পাগুবেভ্যোভ্যধিকাঃ তেচ শৌর্যাভেন্ধা
প্রভিদাক্ষিণা দানেশ্ব্যাণি ভগবতাপ্যক্তাঃ শৌর্যাং তেচহাতি যত্র যুদ্দে
চাপ্যপলায়নং শৌর্য এবান্তর্ভুতিমিতি বডেবক্ষতির কর্মাণি তম্মগুণ
ক্রেনাচান্তে সন্ধিবিপ্রহ যানাদন দ্বিভাষা প্রয়াখাস্কুগণানীতি শাক্তোভা
নেহ গৃহত্তে তেবাংসর্বেবামুৎকর্ষানাধায়করাৎহীন বল এব সন্ধিদ্ধেধালীন
ইচ্ছতি ন প্রবল ইতি ॥ ১১ ॥ শক্যাঃ নিবারিতু মিতিশেষঃ পুনরিতি
পাগুব পরাজয়ানন্তরং বা ইদানিমেব বা ত্বং মহপ্রসাদং আশং স প্রাঞ্ধী
॥ ১২ ॥ প্রমাথাৎ নিপ্রহাৎ প্রতীতা সাদরা প্রখ্যাতাবা সভায়াং বস্তরাশি

দ্রোপত্নাবাচ।

महावला कि:खिड पूर्वालव, সৌবীররাজন্ম মতাহমন্মি। নাহং প্রমাথাদিহ সম্প্রতীতা. সৌবীররাজ কুপণং বদেয়ম। ১৩। যম্খা হি ক্লফৌ পদবী তরেতাং, সমান্থিতাবেকরথে সমেতৌ। ইন্দ্রোহপি তাং নাপহরেৎ কথঞ্চি, মনুষ্যমাত্রঃ কুপণঃ কুতেহিন্যঃ ॥ ১৪ ॥ যদা কিরীটা পরবীরঘাতী, নিশ্বনুথস্থো দ্বিতাৎ মনাংসি। यम्ख्रात चन्नु किनीः व्यातकी, ककः महन्नशितिरवाकःरामु॥ ১৫॥ कंनार्फनः माञ्चकवृष्टिवीद्वा, মহেম্বাসাঃ কৈকেয়াশ্চাপি সর্বো। এতে হি দর্কে মম রাজপুত্রাঃ, প্রকৃষ্টৰপাঃ পদ্বীঞ্রেযু:। ১৬। মৌৰাবিষ্টাঃ স্তনয়িজুঘোষা, গাঞ্জীবমুক্তান্ত্ৰতিবেগৰতঃ। ছন্তং সমাহত্য ধনপ্রয়ন্ত, ভীমাঃ শুব্দং ঘোরতরং নদন্তি॥ ১৭॥

अमारनन जगरमञ्जादी ज्यार अजिज्ञः मानदा ज्यार कर्षे देजिएमिनी ॥ ५०॥ कृष्णे राष्ट्रस्तृ अर्ज्ज्याने भन्ती अ दिजार अर्ज्याने कृष्णे अर्थे वास्त्र अर्ज्याने अर्थे वास्त्र वास्त्र

গাণ্ডীবমুক্তাংশ্চ মহাশরৌঘানু, পতঙ্গসঙ্গানিব শীঘ্রবেগান। * যদা দ্রফাস্তর্জ্জনেন প্রযুক্তান, তদা স্ববুদ্ধি প্রতিনিন্দিতাসি ॥ ১৮ ॥ সশস্থাযোষঃ সতলত্রঘোষো, গা छीवधन्न। मुह्कुक्दर्भ । যদা শরানপ্রিতা তবোরসি, তদা মনস্তে কিমিবাভবিষ্যৎ ৷ ১৯ ৷ পদাহন্তং ভীমমভিদ্রবন্তং, মাদ্রীপুত্রো সংপতত্তো দিশক। অমর্যজং ক্রোধবিষ্ ব্যন্তৌ, দৃষ্ট্য চিরং তাপমুপৈষ্যদি ত্বমৃ * ॥ ২০॥ যথা চাহ্ নাভিচরে কথঞ্জিৎ, পতীন্মহার্ছান্ মনসাপি জাতু। তেনাদ্য সত্যেন বশীক্ষত বাং, ज्रेष्टी त्रि भार्रिकः भित्रक्षा मानम् ॥ २১ ॥

॥ ১৮ ॥ অভবিষ্থ ভবিষ্যতীতার্থে ব্যতায়েনলঙ্ ॥ ১৯ ॥ অধ্যেতিক্ছেদঃ
॥ ২০ ॥ ২১ ॥

^{*} যদান্তকাপ্তর্জুনেনপ্রযুক্তারিতাত্র যদান্তকাস্যর্জুনং বীর্মাণিন,
মিতি পাঠঃ খব প্তক্রোঃ।

^{*} তাপমুপৈষ্যদিব মিত্যত্র তাপমুপৈষ্যদেধমিতি পাঠঃ খ মৃঃ পুস্তুকরোঃ।

ন সন্ত্ৰমং গন্তমহং হি 🦇 শক্যা, ত্বয়া নৃশংদেন বিক্লষ্যমাণা। সমাগতাহ্ হি কুরুপ্রবীরে:, পুনর্বন কাম্যকমাগতান্ম। ২২। বৈশস্পায়ন উবাচ। সা তানমুপ্রেক্ষ্য বিশালনেতা, জিম্বক্ষমাণানবভৎ সয়ন্তী। প্রোবাচ * মা মা শুশতেতি ভীতা, ধৌম্যং প্রচুক্রোশ পুরোহিতং সা॥২৩॥ জগ্রাহ তামুত্তরবস্ত্রদেশে, জয়দ্রথন্তং সমবাক্ষিপৎ সা। 'তয়া সমাক্ষিপ্ততনুঃ স পাপ্নঃ, পপাত শাখীব নিক্নন্তমূলঃ ॥ ২৪ ॥ প্রগৃহমাণা তু মহাজবেন, মুহুর্কিনিশ্বস্থা চ রাজপুত্রী। সা কুষ্যমাণা রথমারুরোহ, ধৌস্যস্থ পাদাবভিবাদ্য কুষ্ণা॥ ২৫॥ ধৌমা উবাচ। নেয়ং শক্যা ত্বয়া নেতৃমবিজিত্য মহারথান া ধর্মাং ক্ষত্রন্থ পৌরাণ্মবেকস্ব জয়দ্রথ!॥ ২৬॥

সংভ্ৰমং ভয়ং আগতেবান্মি নতু বদ্ধশে স্থাস্যামীত্যৰ্থঃ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥

^{*} শক্যেত্যত্ত্ৰ শক্ষ্যে ইতি পাঠঃ খ ঘ পুস্তকয়োঃ।

^{*} মামামিত্যত্র মামেতি পাঠঃ থ ঘ পুস্তকয়োঃ।

ক্ষং কৃত্বা ফলং পাপং ত্বং প্রাপ্সামি ন সংশয়ঃ। আসাদ্য পাগুবান্ বীরান্ ধর্ম্মরাজপুরোগমান্॥ ২৭॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ইত্যুক্ত্বা ব্রিয়মাণাং তাং রাজপুত্রীং যশস্বিনীম্। অন্বগচ্ছত্বা ধৌম্যঃ পদাতিগণ্মধ্যগঃ॥ ২৮॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি দ্রৌপদীহরণ পর্বাণি দ্রৌপদীহরণে অফ্ট্যুফ্ট্যাধিকদ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬৮ ॥

বৈশস্পারন উবাচ।

ততো দিশঃ সংপ্রবিহ্নতা পার্থা, ।
মৃগান্ বরাহালহিষাংশ্চ হত্ম।
ধরুধ রাঃ শ্রেষ্ঠতমাঃ পৃথিব্যাং,
পৃথক্ চরন্তঃ সহিতা বভূবুঃ ॥ > ॥
ততো মৃগব্যালগণারুকীর্ণং,
মহাবনং তদিহগোপয়ুয়ম্।
ভাতংশ্চ তানভাবদদ্যুধিষ্ঠিরঃ,
শ্রুত্মা গিরো ব্যাহরতাং মৃগাণান্॥ ২ ॥

11 29 11 25 11

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধনি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে অফ্টয়ন্টাধিক দ্বিশততমোধ্যায়ঃ ॥,২৬৮॥

ততইতি॥ ১ ॥ মহাবনং কাম্যকং ॥ ২ ॥ মহাবনং মহানালয়ঃ গৃহিণী

অ'দিত্যদীপ্তা^ দিশমভাূপেত্য, মৃগাদ্বিজাঃ ক্রুরমিমে বদন্তি। আয়াসমুগ্র প্রতিবেদয়স্থা, বহাবন শকুভিকাধ্যমানম্॥ ৩ ॥ ক্ষিপ্রং নিবর্ত্তধ্ব্যল সুগৈরো, মনো হি মে দুয়তি দহুতে চ। বুদ্ধিং সমাচ্ছাদ্য চ মে সমন্ত্র্যু, রুদ্ধ য়তে প্রাণপতিঃ শরীরে॥ ও॥ সরঃ স্থপর্ণেন হৃতোরগং যথা, রাষ্ট্র যথারাজকমান্তলক্ষি। এবং বিধং মে প্রতিভাতি কাম্যকং, শৌতওর্ঘণা পীতরসশ্চ কুস্তঃ॥ ৫॥ তে সৈন্ধবৈরত্যনিলোগ্রবেগৈ, শ্মহাজবৈকাজিভিক্রহ্মানাঃ। যুক্তৈর্হভিঃ স্বর্থেন্বীরা, স্তদাশ্রমাভিমুখা বভূবুঃ॥ ৬॥

গৃহমুচাত ইত্যুক্তে গৃহিণী বনং নপ্তংসকং নীরে নিবাসালয় কাননে ইতি মেদিনী মহাধনমিতি পাঠে মহচ্চ তদ্বন ঞ্চেতি জ্রীরূপমেব ধনং ॥ ৩ ॥ জমাদ্দাদা মোহয়িয়া সমহাঃ দৈন্যসহিতঃ প্রাণানাং আধ্যাত্মিকানা মিল্রিয়াণাং পতিমু্থাঃ প্রাণঃ ॥ ৪ ॥ অরাজকং রাজহীনং শৌতেঃ শুগুরাবিদিতৈ গভিঃ পীতরসঃ পীতজলঃ ষথাদাসী মুদকুন্তং নয়ন্তী মহাকাত্রেরাহজাত মেব গজং তংপৃষ্ঠতোনীয়া তেন তজ্জলং শোষয়তি সাচাক্মাদ্মট্থ লম্ত্রারিক্তং পশ্চাজ্জানাতি তদ্বং অম্যাতিঃ রজ্ঞাতোহমাদ্দাদ্মট্থ লম্ত্রারিক্তং পশ্চাজ্জানাতি তদ্বং অম্যাতিঃ রজ্ঞাতোহমাদ্দাদ শৈক্ষাবিষ্যতি তদারিক্ত কুন্তবদ্দাণ পশ্চাদ্দাম ইত্যর্থঃ ॥ ৫ ॥ সৈম্বারিয় সিলুদেশকৈ বাজ্ঞিভিরখৈঃ হারথৈঃ শোভনরথৈঃ সমানাধিকরণং তৃতীয়াত্রয়ং ॥ ৬ ॥

ি তেষাম্ভ গোমাযুরনম্পঘোষো, নিবর্ত্তা> বামমুপেত্য পাশ্ব'ম। অব্যাহরত্তৎ প্রবিমৃষ্য রাজা, প্রোবাচ ভীমঞ্ ধনঞ্জয়ঞ ॥ ৭ ॥ যথা বদত্যেষ বিহীনযোনিঃ. শালারকো বামমুপেতা পাশ্বি। ञ्चराक्रमञ्जानवमना शारेभः, ক্লতোহভিমর্দ্দঃ কুরুভিঃ প্রস্থা। ৮॥ ইত্যেব তে তদ্বনমাবিশন্ত্রো, মহত্যরণ্যে মুগয়াঞ্চরিত্বা। বালামপশান্ত তদা ৰুদন্তীণ. ধাতেয়িকাং প্রেষ্যবধূং প্রিয়ায়াই॥ ৯ ॥ তামিন্দ্রদেনস্ত রিতোহভিত্ত্য, রথাদবপ্লাত্য ততে। হভ্যধাবৎ। প্রোবাচ চৈনাং বচনং নরেক্র! * ধাতেয়িকাম।র্ভতরস্তদানীম ॥ ১০॥ কিং রোদিষি ত্বং পতিতা ধরণ্যাশ্র কিন্তে মুখৎ শুষ্যতি দীনবর্ণম্ । কচিল পাপৈ: স্থনুশং স্কৃতিঃ, প্রমাথিতা দৌপদী রাজপুত্রী॥ ১১॥

৭॥৮॥প্রেষ্য বধুং দাস ভার্ষ্যং॥৯॥ অন্তিতরঃ সমীপতরঃ আত-ভরইতি পাঠঃ॥১০॥১১॥

^{*} ধাত্রেয়িকা মার্ত্তর ইত্যত্র ধাত্রেয়িকা মন্তি তর ইতি পাঠঃখপুস্তকে।

অচিন্তাৰপা স্থবিশালনেতা, भतीत्रञ्जा कुङ्गश्रुक्रवानाग्। यरमात रमनी शृथिनीः अतिकी, দিবং প্রপন্নাপ্যথ বা সমুদ্রমু ॥ ১২ ॥ তস্যা গমিষ্যন্তি পদ^ হি পার্থা, যথা হি সন্তপাতি ধর্মপুত্রঃ। (का शिक्षानामतिक्नानाः, ক্লেশক্ষমাণা মপরাজিতানাম্। ১৩॥ প্রাণৈঃ সমামিষ্টতমাৎ জিহীর্ষে, দমুক্তমং রত্নমিব প্রমূচঃ । ন বুধাতে নাথবতামিহাদ্য বহিশ্চরং হৃদয়ং পাগুবানাম। ১৪। কস্যাদ্য কায়ং প্রতিভিদ্য ঘোরা, মহীং প্রবেক্ষ্য তি শিতাঃ শরাগ্র্যাঃ। মা ত্বং শুচন্তাৎ প্রতি ভীরু! বিদ্ধি, যথান্য কুষ্ণা পুনরেষ্যতীতি॥ ১৫॥ নিহত্য সর্বান দিষতঃ সম্প্রান্, পার্থাঃ সমেষ্যন্ত্যথ যাজ্ঞদেন্যা। অথাত্রবীচ্চারু মুখং মিমূজ্য, * ধাতেরিক। সার্থিমিক্রদেনমু ॥ ১৬॥ জয়দ্রথেনাপহতা প্রমথ্য, পঞ্চেন্দ্রকণ্পান্ পরিভূয় রুফা। তিষ্ঠন্তি বন্ধানি নবান্যমূনি, রক্ষাশ্চ ন লান্তি•তথৈব ভগাঃ॥ ১৭॥ 1 5 2 11 20 11 38 11 30 11 39 11 39 11

^{*} বিমুজ্যেত্যত্র বিমুশ্যেতি পাঠঃ খ ঘ পুস্তকয়োঃ।

আবর্ত্তয়ধ্বং হানুয়াত শীঘ্রং, ন দূর্যাতৈব হি রাজপুত্রী। সন্মূধং সর্ব্ব এবেন্দুকণ্পা! মহান্তি চাৰাণি চ দংশনানি । ১৮॥ গৃহ্ছীত চাপানি মহাধনানি, শরাৎশ্চ শীঘ্রং পদবীঞ্রধ্ব। পুরা হি নির্ভৎ সনদগুমোহিতা, প্রযুচচিত্তা বদনেন শুষ্যতা ॥ ১৯॥ प्रपाि करेंग्यि हिम्नईरं उन्नूर, বরাজ্যপূর্ণামিব ভশ্মনি ব্রুচম্। পুরা তুষাগাবিব হুয়তে হবিঃ, পুরা শাশানে অগিবাপবিধাতে ॥২০॥ পুরা চ সোমে ১ ধ্রগোহবলিহতে, শুনা যথা বিপ্রজনে প্রমোহিতে। মহত্যরণ্যে মুগয়াঞ্চরিত্বা, পুরা শৃগালো নলিনী প্রিগাইতে ॥ ২১॥ মা বং প্রিরায়াঃ স্থনসং স্থলোচনণ, চন্দ্রপ্রভাভং * বদনং প্রসন্নয়। স্পুশ্যাচ্ছ ভং কশ্চিদ্মত্যকরী, শ্বা বৈ পুরোডাশমিবাধরস্থম। এতানি বন্ধান্যনুষাত শীঘং, মা বঃ কালঃ ক্ষিপ্রমিহাত্যগালৈ । ২২ ॥

১৮॥ পুরায়াবৎ অনহতে তমুং নদদাতি ভাবৎ শীব্রং অমৃষ্টেডি চতুর্থেন সমৃদ্ধঃ ॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥

^{*} আভ্ৰিত্যত্ৰ আচ্ছ মিতি পাঠ: খ পুস্তকে।

যুগিছিব উক্চা

ভদ্রে ! প্রতিক্রাম নিযক্ষ্ বাচং,
মাস্মৎসকাশে পরুষাণ্যবোচঃ ।
রাজানো বা যদি রাজপুত্রা,
বলেন মন্তা বঞ্চনাং প্রাপ্পুর্বন্তি ॥ ২৩ ॥
বৈশস্ধায়ন উবাচ ।

এতাবছুকু প্রয়ু হি শীঘ্রং, তান্যেব বন্ধান্যন্ত্রবর্ত্তমানাঃ। মুহুমুহিক্যালবছুচ্ছ্বশস্তো,

জ্যা বিক্ষিপস্তশ্চ মহাধনুর্ছ্যঃ ॥ ২৪ ॥ ততোহপশ্যশস্তন্য দৈন্যন্য রেণু,

্রতার নাজ কর্ম বেলেন ব্রুদ্ মুদ্ধুতং বৈ বাজিধুরপ্রণুলম্।

পদাতীনাং মধ্যগতঞ্চ ধৌম্যৎ

বিক্রোসন্তং ভীমমভিদ্রবৈতি ॥ ২৫ ॥ . তে সাস্থ্য ধৌম্যৎ পরিনীনসন্ত্রাঃ,

স্থুখং ভবানেত্বিতি রাজপুলাঃ।

শ্যেনা যথৈবামিষসপ্রযুক্তা,

জবেন তৎ সৈন্যমথাভ্যধাবন ॥ ২৬ ॥

তেষাণ মহেক্রোপমবিক্রমাণাং,

मन्त्रकानान धर्षनाम्बद्धरमन्तरः।

কোধঃ প্রজন্মাল জয়দ্রথঞ্চ,

দৃষ্ট্রা প্রিয়াং তস্য রথে স্থিতাঞ্চ । ২৭ ।

প্রতিক্রাম দূরে ভব পর্কবাণি অনর্থতে তত্ত্বং দদাতীত্যাদীনি হঃশ্রাব্যাণি মৃত্তবাৎ বঞ্চনাৎ স্বজ্ঞনস্য তবৈব বধরূপাং ॥ ২৩।। ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥ ধর্বণাং পরাভবাং ॥ ২৭॥

প্রচুকুশুশ্চাপ্যথ সিন্ধুরাজ্বন,
রকোদরশৈচব ধনঞ্জয়শ্চ।
যমৌ চ রাজা চ মহাধন্ধুরা,
স্ততো দিশঃ সংমুমুহুঃ পরেষাম্॥ ২৮॥

ইত্যারণ্যকে পর্বানি দ্রৌপদীহরণপর্বানি পার্থাগমনে ঊনসপ্তত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬৯ ॥

বৈশস্থারন উব্ত।

ততো ঘোরতরঃ শব্দো বনে সমভবন্তদা।
ভীমসেনার্জুনৌ দৃষ্ট্বা ক্ষজ্রিরাণামমর্ষিণাম্॥ ১॥
তেবাং শ্বজাগ্রাভিনীক্য রাজা,
অয়৲ ত্রাআকুরুপুঞ্চবানাম্।
জয়দ্রথোযাজ্ঞ সেনীমুবাচ,
রথে স্থিতাং ভানুমতীং ক্রতৌঞ্জাঃ॥ ২॥
আয়ান্তীমে পঞ্চরথা মহন্তো,
মন্যে চ ক্লঞ্চে পতয়ন্তবৈতে।
সা জানতী খ্যাপয় নঃ স্থকেশি
পরং পরং পাগুবানাং রথস্থা॥ ৩॥

॥ ২৮ ।। ইত্যারণ্যকে পর্বনে নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে উন্নপ্তভাধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬৯ ॥

ততইতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ অনায়ুষ্যং আয়ুর্নাশকং মুত্যুদ্ধিত্যুর্থ

দ্রৌপদ্যুবাচ।

কিন্তে জ্ঞাতৈর্ম ঢ় । মহাধনুধ'রৈ, রনাযুষাং কর্মা ক্লুভিঘোরম। এতে বীরাঃ পতয়ো মে সমেতা, न वः শেষঃ कन्छिमिशास्त्रि गुरक ॥ ३॥ আখ্যাতব্যং ত্বেব সর্বাং মুমূষোর ম্য়া ভুভ্যুপ পৃক্ষা ধর্ম্ম এবং। ন মে ব্যথা বিদ্যুতে ত্বন্দ্ৰয়ং বা, সং পশ্যন্ত্যাঃ সামুজ । ধর্মারাজম্॥ ৫ ।। যস্য ধুজাগ্রে নদ্তৌ মুদঞ্চৌ, नत्माशनत्मी मधुरतो युक्तकरशो। ·এত প্রধর্মার্থ বিনিশ্চযক্তং, সদা জনাঃ কুত্যবস্তোহনুয়ান্তি॥ ৬॥ य এव काम्र नम् अकरगोतः, প্রচণ্ডঘোণস্তরুরাঘতাক:। এনং কুরুশ্রেষ্ঠতমং বদন্তি, যুধিষ্ঠিরং ধর্মস্কৃত পতিং মে ॥ १॥ অপ্যেয় শ্রোঃ শ্রণ্গত্স্য, मना । প্রাণান ধর্মচারী নৃবীরঃ। পরেছেন শুঢ়। জবেন ভূতরে, प्रमाज्ञनः थाञ्चलिनाउमञ्जः॥ ৮॥ অথাপ্যেনং পশ্যানি যং রথস্থ , মহাভুজং শালমিব প্রবৃদ্ধ। সন্দটোষ্ঠং জ্বুটীস্ণহতজ্ব , इटकानदा नाम পতिर्मारेमयः ॥ २॥

18 11 1 4 11 ७ 11 १ । भटतिक्नित्र शिष्ट अने धर्मत्राह्म । ৮ ॥ २ ॥

আজানেয়া বলিনঃ সাধুদান্তা, মহাবলাঃ শূর মুদাবছব্য। এতস্য কর্মাণ্যতিমান্নযাণি, ভীমেতি শব্দে হস্য গতঃ পৃথিবাৰ্য ॥ ১০॥ নাস্যাপরাদ্ধাঃ শেষমহাপ্রবন্তি, নায় বৈর বিশারতে কদাচিত। বৈরস্যান্ত শংবিধায়োগ্যাতি. পশ্চাচ্চান্তিং ন চ গছভ্যতীব : ১১ ii ধ্যুর্ধর্ধগ্রেটা প্রতিমান যশসী, জিতেন্দ্রিয়ে। রুদ্ধসেবী নুবীরঃ। ভাতা চ শিব্যশ্চ বুধিন্তিরস্যু, थनक्षरता नाम পতिर्मारेमवः ॥ ১३ ॥ যো বৈ ন কামার ভয়ার ও কোপাৎ, তাজেন্ধৰ্মং ন নুশংলাঞ্চ কুৰ্যাছ। म এষ বৈশ্বানরভুলাভেজাঃ, কুন্তীস্তভঃ শত্রুসহঃ প্রমাণী ॥ ১৩ ॥ যঃ সর্ববর্মার্থ(বিনিশ্চয়জ্ঞো, ভয়ার্তানাং ভয়হর্তা মনীষী। যন্যোত্তনং ৰূপমাহুঃ পুথিব্যাং, य॰ পাগুৰাঃ পরিরকান্তি মর্কে। ১৪॥

আজানের। অধ নিশেষাঃ ॥২০॥ অপরাদ্ধাঃ অপরাধ্বন্তঃ শেষং জীবনং বৈরস্যান্তং শক্তনাশং স্থিধার আহাত্য উপযাতি কুর্বর্রাণ অতীব শান্তিং নোপৈতীতি মরণাভানি বৈরাণীতি লোকে প্রসিদ্ধং অরম্ভ মার্রিয়াপি পুত্রপৌত্রাদিকমপি নশেষ্যভীতি অত্যন্তং দীর্ঘকোপির যুক্তং॥১১॥ ১২॥১৩॥ যংপীরিরক্ষন্তি সানকুল ইতি ঘলোঃ সম্বন্ধঃ॥১৪॥

^{*} কোপাদিত্যত্ত লোভাদিতি পাঠঃ এ ঘ গুস্তকয়োঃ।

প্রাবৈর্গরীয়াৎসমনুত্রতং বৈ, স এব বীরো নকুলঃ পতির্দ্ধে। • যঃ খড়্গযোধী লঘুচিত্রহস্তো, गरा॰क धीमान महरमटवावि**डीयः ॥ ५**० ॥ यगामा कर्य क्रकारम मूहमञ्जू শতক্রতোর্বা দৈত্যসেনাস্থ সংখ্যে। শূরঃ কুতান্ত্রো মতিমান্মনস্বী, প্রিয়ঙ্করে। ধর্মস্কুতস্য রাজ্ঞঃ ॥ ১৬॥ য এষ চক্রার্কসমানতেজা, জঘন্যজঃ পাগুবানাং প্রিয়ক। বুদ্ধ্যা সমো যদ্য নরো ন বিদ্যতে, বক্তা তথা সৎস্থ বিনিশ্চয়জ্ঞ ॥ ১৭॥ য এহ শূরো নিত্যমমর্থশ্চ, ধীমানু প্রাজ্ঞঃ সহদেবঃ প্রতিমে। ত্যজেৎ প্রাণানু প্রবিশেষব্যবাহং, ন ত্বেবৈষ ব্যাহরেজর্ম বাহ্যম্ ॥ ১৮ ॥ সদা মনস্বী ক্ষত্রধর্মে রতক্ষ্ কুন্ত্যাঃ প্রাণৈরিফতেমো নৃবীরঃ। বিশীর্য্যন্তীন্নাব্মিবার্ণবান্তে, রত্নাভিপূর্ণাং মকরস্য পৃষ্ঠে ॥ ১৯ ॥ কেনাং তবেমাং হতসক্ষযোধাৎ, বিক্ষোভিতাং দ্রুকাসি পাণ্ডুপুজৈ:। ইত্যেতে বৈ কথিতা: পাণুপুত্রা, যাংস্তু সোহাদবমন্য প্রবৃত্ত। যদ্যেতেভ্যো মুচ্যসেহরিফদেহঃ, পুনর্জন্ম প্রাপ্স্যাদে জীব এব॥ २०॥ ১৫॥ মুদসত্ব মুদুরুদ্ধে শতক্তে। বা শত ক্রতোরিব ॥১৬ ॥১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ । জীবএব জীবরেব অমৃত্বৈব পুনর্জন্ম প্রাপ্সাসে ॥ ২০॥

* সেনাং তবেমামিত্যত্ত সেনাহস্তরেমামিতি পাঠঃ ষ প্রস্তকে ।

বৈশন্সায়ন উবাচ।
ততঃ পার্থাঃ পঞ্চ পঞ্চেন্দ্রকন্পা,
স্থ্যক্তা ত্রস্তান্ প্রাঞ্জলীংস্থান্ পদাতীন্।
গ্লু রথানীকং শরবর্ষান্ধকারং,
চক্রুঃ কুদ্ধাঃ সর্ব্যন্তঃ সন্নিগৃত্য ॥ ২১ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি দ্রৌপদীহরণ পর্বাণি দ্রৌপদীবাক্যে
সপ্তত্যধিকদ্বিশ্বতমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭০ ॥

বৈশন্দায়ন উবাচ।

সংশতিষ্ঠত প্রহরত তূর্ণং বিপরিধাবত।
ইতি স্ম সৈন্ধবো রাজা চোদয়ামাস তায়পান্॥ >॥
ততো ঘোরতমঃ শব্দো রণে সমত্রত্তদা।
ভীমার্জ্রন্মান দৃষ্টা সৈন্যানাং সমুধিষ্ঠিরান্॥ ২॥
শিবিসৌবীরিস্কুনাং বিষাদশ্চাপ্যজায়ত।
তান্ দৃষ্ট্যা পুরুষব্যাঘ্রান্ ব্যাঘ্রানিব বলোৎকটান্॥ ৩॥
হেমচিত্রসমুৎসেধাং সর্কাশেক্যামনীং গদাম্।
প্রস্থাভাদ্রবদ্ভীমঃ সৈন্ধাবং কালচোদিত্র্॥ ৪॥
তদন্তরমধার্তা কোটিকাস্যোহ্ভাহার্যথ।
মহতা রথবংশেন পরিবার্য্য রুকোদরম্॥ ৫॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকণ্ডীয়ে ভারতভাবদীপে সপ্ততাধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৭০॥

1 23 11

সং তিষ্ঠতেতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ অন্তরং অভ্যহারয়ং ভীম্জয়জথ য়োর্মধ্যে প্রবেশেন,র্যবধানং কৃতবান্ রথবংশেন রথবর্গেণ ॥ ৫ ॥

^{*} রথানীক মিত্যত্র যথানীক মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে ৷

শক্তিভোমরনারাটে বীরবাছপ্রচোদিতে:। কীৰ্য্যমাণোহপি বহুভিন স্বা ভীমোহভাকস্পত ॥ ৬॥ গজন্ত সগজাবোহু পদাতী শচ চত্ৰদিশ। জঘান গদযা ভীমঃ দৈহাবর্জিনীমুখে। ৭॥ পার্থঃ পঞ্চশতান শূরান পার্বকীরামহারথান। পরীপ্দমানঃ মৌবীরং জঘান ধজিনীমুখে। ৮॥ রাজা স্বয়ং স্ক্রীরাণাং প্রবরণাং প্রহারিণাণ্। নিমেযমাত্রেণ শতং জ্বান সমরে তদা।। ৯।। দদুশে নকুলস্তত্র রথাৎ প্রস্কন্য খড়গধুক্। শিরাংসি পাদরকাণাং বীজবং প্রবপন্তঃ ॥ ১০ **महरम्बद्ध क्ष मः यार्टा तर्थन शक्र्याक्षिनः।** পাত্যামাস নারাচৈদ্রু মেভ্য ইব বহিণঃ ॥ ১১ ॥ ততন্ত্রিগর্ভঃ সধন্তরবতীর্য্য মহারথাৎ। গদরা চতুরো বাহ্নাজ্ঞস্তম্ম তদাবধীৎ॥ ১২॥ ত্মভ্যাদগতং রাজা পদাতিং কুন্তিনন্দনঃ। অর্দ্ধচন্দ্রেণ বাণেন বিবাধোরসি ধর্মার টু ॥ ১৩ ॥ म ভিন্তদ্বো বীরো বক্ত্রাচ্ছোণিতমুদ্ধনন্। পপাতাভিমুখঃ পার্থ∿ ছিল্লুল ইব দ্রুমঃ ॥ ১৪ ॥ ইব্রুসেন্দ্রিভীযস্ত রথাৎ প্রস্কল্য ধর্ম্মরাই। হতাশ্বঃ সহদেবস্ত প্রতিপেদে সহারথম্॥ ১৫॥ নকুলন্ত্রভিসন্ধাব ক্ষেমক্ষরমহার্থৌ। উভাবুভয়তস্তীক্ষ্ণে শরবধৈরবর্ষতাম্ ॥ ১৬ ॥ 1 0 1 9 1 5 1 30 1 30 1 32 11 32 11 38 11 30 11 30 11

শংবাত ইতাত সন্ধায়ে ইতি পাঠঃ য় পুশুকে।

তোমরৈরভিবর্ষন্তো জীমূতাবিব বার্ষিকো। একৈকেন বিপাঠেন জন্মে মাদ্রবভীস্কৃতঃ ॥ ১৭॥ ত্রিগর্ত্তরাজঃ স্থরথস্তস্যাথ রথধূর্গতঃ। র্থমাক্ষেপ্যামাস গজেন গজ্যান্বিৎ ॥ ১৮ ॥ নকুলস্তপভীস্তশাদ্রথাক্রর্মাসিপানিমান্। উদ্ভাষ্য * স্থানমাস্থায় তস্থে গিরিরিবাচলঃ ॥ ১৯॥ স্থ্রথস্তং গজবর্ৎ বধা্য নকুলম্ভ তু। প্রেষযামাস সজোধমভ্যাজ্ঞিতকরং ততঃ ॥ ২০॥ নকুলস্তম্য নাগম্য সমীপপরিবর্তিন:। সবিষাণ্ং ভুজং মূলে খড়্গেন নিরক্লন্তত ॥ ২১॥ স বিনদ্য মহানাদং গজ: * কক্কটভূষণঃ। পতর্বাকৃশিরা ভূমৌ হস্ত্যারোহ্মপোথয়ং ॥ ২২ ॥ দ তৎ কর্মা মহৎ রুত্বা শূরো মাদ্রবতীস্থতঃ। ভীমসেনরথৎ প্রাপ্য শর্মা লেভে মহারথং ॥ ২৩ ॥ ভীমস্থাপততো রাজ্ঞঃ কোটিকাস্থস্থ সঙ্গরে। স্থতভা নুদতো বাহান * কুরপ্রেণাহরচ্ছির: ॥ ২৪॥ ন বুবোধ হত প্রতং স রাজা বাছশালিনা। তম্ভাশ্ব। ব্যদ্রবন্ সংখ্যে হতস্থতাস্তত্ততঃ ॥ ২৫॥

॥১৭॥১৮॥১৯॥२०॥ সবিষাণং ভুজং সদস্তং শুণোদণ্ডং মূলে গগুপ্রদেশে ॥২১॥ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ তলযুক্তেন মুক্তিযুক্তেন তলং স্বরূপে ইত্যুপক্রম্য

^{*} উদ্ভানোতাত উদ্ভান্ত মিতি পাচঃ ধ ঘ পুস্তকয়োঃ।

^{*} কষ্ট ভূষণ ইত্যত্ত কঙ্কণ ভূষণ ইতি পাঠঃ য পুস্তকে।

^{*} ক্ষুরপ্রেণাহরচ্ছির ইতাত্র ক্ষুরেণাপাহরচ্ছির ইতি ঘ গুস্তকে পাঠঃ।

বিমুখ্ হতস্থৃতন্তং ভীমঃ প্রহরতা বরঃ। জঘান তলযুক্তেন প্রাদেনাভ্যেত্য পাগুবং ॥ ২৬॥ षामभागास मर्द्यसा॰ (मोवीतांनाः धनक्षतः। চকর্ত্ত নিশিতৈউল্লেখ কুশ্যি চ শিরাংসি চ। ২৭॥ শিবীনিক্ষুকুমুখ্যাংক ত্রিগর্তান্ সৈন্ধবানপি। জ্যানাতিরথঃ সংখ্যে বাণ্গোচরমাগতান্। ২৮ ॥ সাদিতা: প্রত্যদুশ্যন্ত বহবঃ সব্যসাচিনা। সপতাকা**শ্চ** মাতজাং সধ্জাশ্চ মহারথাং ॥ ২৯ ॥ প্রচ্ছাদ্য পৃথিবীৎ তস্থঃ সর্বিমাযোধনং প্রতি। শরীরাণ্যশিরস্কানি বিদেহানি শির্ণংসি চ॥ ৩०॥ শ্বপুধকককাকোলভাসগোমাযুব।যসাঃ। অতৃপ্যংস্তত্র বীরাণাপ হন্তানাং সাংস্পোণিতৈ॥ ৩১॥ হতেষু তেষু বীরেষু সিন্ধুরাজে। জয়দ্রথঃ। বিষুচ্য কুঞাং সংত্ৰস্তঃ পলায়নমনাভবং 🛭 ৩২ 🛭 স তিম্মন্ সঙ্কুলে সৈন্যে দ্রৌপদীমবতার্য্য তাম্। প্রাণ্পেপারুপাধাবদ্বং যেন নরাধমঃ॥ ৩০॥ फोलनीः धर्मताजञ्च मृष्णे। धोगान्तक्ञाम्। মাদ্রীপুজেণ বীরেণ রথমারোপ্যক্তদা ॥ ৩৪ ॥ ততন্ত্রিদ্রুতং সৈন্যমপ্যাতে জয়দ্রথে। व्यापिशापिश नातारेहताकचान त्रकामतः॥ ७०॥ সব্যসাচী ভূ তং দৃষ্ট্য পলায়ন্তং জয়দ্রথম্। वात्रयामाम निष्क्रसः जीमः रेमक्कवरेमनिकान् ॥ ७७॥

চপেটে চৎসরাবিতি মেদিনীৎ সকঃ থাজাদি মুক্তি। ২৬॥ ২৭॥
॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ ৩৩॥ ৩২॥ আদিশ্যনাম বিশ্রাব্য
॥ ৩৫॥ দৈনিকান্ বিশ্বস্থং জীমং বার্যামাস॥ ৩৬॥

অৰ্জুন উবাচ।

যস্তাপচারাৎ প্রাপ্তোহ্যমন্মান্ ক্লেশো তুরাসদঃ।
তমন্মিন্ সমরোদেশে ন প্রস্তামি জয়দ্রথম্। ৩৭॥
তমেবান্থিষ ভদ্রতে কিন্তে ধোধৈর্মিপাতিতে:।
অনামিষ্মিদ্দ কর্ম্ম কর্থদ বা মন্যতে ভবান্॥ ৩৮॥

বৈশন্দায়ন উবাচ।
ইত্যুক্তো ভীমদেনস্ত গুডাকেশেন ধীমতা।
যুধিষ্ঠিরমভিপ্রেক্য বাগ্মী বচনমন্ত্রবীৎ ॥ ৩৯ ॥
হতপ্রবীরা রিপবো ভূমিষ্ঠং নিক্রতা দিশং।
গৃহীত্বা ক্রোপদীং রাজন্ নিবর্ত্ত ভবানিতঃ ॥ ৪০ ॥
বমাভ্যাপ সহ রাজেন্ ! ধৌমোন চ মহাত্মনা।
প্রাপ্যাপ্রমপদং রাজন্ ! ক্রোপদীং পরিসাজ্বয় ॥ ৪১ ॥
ন হি মে মোক্যতে জীবন্ মূচঃ সৈক্সবকো নৃপাঃ।
প্রাশ্রেলতলসংক্ষেহিপি যদি শক্রেহিস্থা সার্থিঃ ॥ ৪২ ॥

বুধিষ্ঠির উবাচ।

ন হন্তব্যো মহাবাহো! ছুরাজাপি স সৈক্ষবঃ। ছুঃশলামভিসৎস্থা গান্ধারীঞ্ যশস্থিনীয়॥৪৩॥

বৈশস্থারন উবাচ।

তচ্ছুত্বা দ্রৌপদী ভীমনুবাচ ব্যাকুলেন্দ্রিয়া। কুপিতা ত্রীমতী প্রাজ্ঞা পতী ভীমার্জুনাবুভৌ॥ ৪৪॥ কর্ত্তব্যঞ্চেৎ প্রিয়ং মহৃৎ বধ্যঃস প্রুষাধমঃ। দৈক্ষবাপদদঃ পাপো দুর্ম্মতিঃ কুলপাংশনঃ॥ ৪৫॥

সমরোদেশে রণভূমে। ৩৭॥ অবিষ অবিচ্ছ ॥ ৩৮॥ ৩৯ ॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ছঃশলং ভূর্যোধন ভ্রিনীং ॥ ৪৩॥ ৪৪ ॥ ৪৫॥

ভার্যাপহর্তা যো বৈরী যক রাজ্যহরো রিপুঃ। যাচমানোহপি সংগ্রামে ন মোক্তব্যঃ কথঞ্চন ॥ ৪৬॥ ইভ্যুক্তৌ তৌ নরব্যাঘ্রো যযতুর্যত্র দৈক্ষবঃ। রাজা নিবরতে কৃষ্ণামাদায় সপুরোহিতঃ॥ 8 ।॥ স প্রবিষ্ঠাশ্রমপদ ব্যপবিদ্ধর্ষীমঠয়। মার্কণ্ডেয়াদিভিব্বিপ্রৈরনুকীর্ণং দদর্শ হ। ৪৮। দ্রৌপদীমন্ত্রশোচন্ডিত্র ক্লিণৈক্তঃ সমাহিতৈঃ। সমিয়ায় মহাপ্রাজ্ঞঃ সভার্য্যো ভ্রাকুমধ্যগং॥ ৪৯॥ তে স্ম তং মুদিতা দৃফ্টা পুনঃ প্রত্যাগত নৃপম। জিত্বা তান্ সিন্ধুসৌবীরান্ দ্রৌপদীঞ্চাহ্নতাং পুনঃ॥ ৫०॥ স তৈঃ পরিবৃতো রাজা তত্র চোপবিবেশ হ। প্রবিবেশা**ল্রম**ণ কুষ্ণা যমাভ্যাং সহ ভাবিনী। ৫১। ভীমার্জ্জুনাবপি শ্রুত্বা ক্রোশমাত্রগতং রিপুম্। श्वयमभारञ्जनत्त्रो को करवरेनवाचाधावकाम् ॥ ६२ ॥ ইদমত্যদ্ভক্ষাত্র চকার পুরুষোহর্জুনঃ ৷ ক্রোশমাত্রগতানখান সৈক্ষবস্য জঘান যৎ। ৫৩॥ म हि पिवाञ्चिमन्त्रेनः कृष्ट् कार्लश्त्रारः । অকরোদ্ধরণ কর্ম শরৈরস্ত্রান্ত্রমন্ত্রিতঃ॥ ৫৪॥ ততোহভাধাবভাং বীরাবুভৌ ভীমধনঞ্জয়ৌ। হত। খং সৈন্ধাবং ভীতমেকং ব্যাকুলচেত্ৰসম্। ৫৫। দৈক্ষবস্তু হতান্ দৃষ্ট্বা তথাখান স্বান স্বত্যংথিতঃ। ষতিবিক্রমকর্মাণি কুর্বোণঞ্চ ধনঞ্জয়ম্। ৫৬। ॥৪৬।৪৭॥ অপনিদ্ধাইতভতো বিশীৰ্ণারুদ্যো শ্বধীণা মাসনানি মঠাশ্চহ্মা-ত্রাণা মালয়াযত্র তৎ॥ ৪৮ ॥ ৫৯॥ ৫০॥ ৫১॥ ৫২॥ ৫১॥ ৫৫॥ অতি বিক্রম যুক্তানি কর্মাণি॥ ৫৬॥

পলায়নক্তোৎসাহঃ প্রাক্তংদ্যেন বৈ বনম্।
কৈরবং অভিসংপ্রেক্ত্য পরাক্রান্তং পলায়নে ॥ ৫৭ ॥
অনুযায় মহাবান্তঃ কাল্পনো বাক্যমন্ত্রবীৎ।
অনেন বীর্যোণ কথা স্তিয়ং প্রার্থায়সে বলাং॥ ৫৮ ॥
রাজপুত্র! নিবর্ত্তম্ব ন তে যুক্তা পলায়নম্।
কথং হারুচরান হিত্বা শক্রমধ্যে পলায়সে॥ ৫৯ ॥
ইত্যুচামানঃ পার্থেন সৈক্ষবো ন ন্যবর্ত্ত।
তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি তা ভীমঃ সহসাভাদ্রবহলী।
মারধীরিতি পার্থস্তং দয়বোন্ প্রত্যভাষত ॥ ৬০ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি দ্রৌপদীহরণ পর্বাণ জয়দ্রথপলায়নে একসপ্তত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭১ ॥

সমাপ্তঞ্চ দ্রোপদীহরণ পর্ব।

। ৫৭॥ ৫৮॥ ৫৯॥ ৬০॥ ইতাব্যব্যকে পর্ব্যণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে একমপ্রত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৭১॥

্ট্রিকেটেকেটেকেটেকেটেকেটেকেট্র ত্ত্বী অথ জয়দ্রথ বিমোক্ষণ পর্ব। ত্ত্বী ক্রিকেট্রেকেট্রেকেট্রেক্টর্

বৈশস্পায়ন উবাচ।

জয়দ্রথন্ত সংপ্রেক্ষ্য ভাতরাবুদ্যতাযুথে।।
প্রাধাবজুর্মব্যথ্যো জীবিতেপ্যঃ স্বত্বঃথিতঃ।।
তং ভীমদেনা ধাবন্তমবতীর্য্য রথাদলী।
অভিক্রন্তা নিজ্ঞাহ কেশপক্ষে হুমর্নণঃ।।
মমুদাম্য চ তং ভীমো নিপ্পেশের মহীতলে।
শিরো গৃহীত্বা রাজানং ভাডয়ামাস চৈবহ।। ৩॥
পুনঃ সঞ্জীবমানস্য তস্যোৎপতিভূমিচ্ছতঃ।
পদা মূর্দ্ধি, মহাবাহুঃ প্রাহরদিলপিষ্যতঃ।। ৪॥
তস্য জান্ম দদৌ ভীমো জত্মে চৈনমরত্বিনা।
স মোহমগমদ্রাজা প্রহারবরপীড়িতঃ।। ৫॥
সরোধ্য ভীমদেনন্ত বারয়ামাস ফাল্কুনঃ।
তুঃশলায়াঃ ক্রতে রাক্ষা যন্তদাহেতি কৌরবঃ॥ ৬॥

জরত্রথন্তি ॥ ১॥ ২॥ অত্রাস্য জরত্রথস্য পরদারহর্তুঃ ক্ষত্রিরাধমরাৎ পঞ্চামারণ মূক্তং শিরোগৃহীত্বেত্যাদনা শিরঃ কেশেষিত্যর্থঃ
তাজরামাস চপেটাভিরিতিশেষঃ যথোক্তং নীতিশাক্তে বামপাণি কচোৎ
পীড়া ভূমো নিম্পেষণং বলাৎ মূদ্ধি পাদ প্রহরণং জাত্রনাদর মদনং
মাল্রাকাররা মুষ্টা কপোলে দৃট তাড়নং ককোণিপাতোপাসরং
সর্বতি তুল তাড়নং তালেন মুদ্ধে ভ্রমণং মারণং স্কৃত মন্টাধিতি চতুভিঃ
ক্ষত্রিয়ং হন্যাৎপঞ্চভিঃ ক্ষত্রিয়াধমং ষড্ভির্নাং সপ্তভিন্তু শুদ্রং সংকরমন্টাভিরিতি॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥

^{*} অায়ুধাবিত্যত্ত উভাবিতি **পাঠঃ খ পুস্তকে।**

ভীম উবাচ।

নায়ং পাপসমাচারো মত্তো জীবিভুমইতি। क्रकाशांखननशांशाः शति (क्रकी नतायगः । १॥ কিন্ন শ্ক্যং ময়া কর্তুং যদ্রাজা সততং স্থী। স্বঞ্চ বালিশরা বুদ্ধনা স্টেদবাস্মান্ প্রবাধসে। ৮॥ এবমুক্তা সটাস্তম্য পঞ্চ চক্রে রুকোদরঃ। অর্দ্ধচন্দ্রেণ বাণেন কিঞ্চিদক্রেবতস্তদা। ১॥ বিকথারিত্বা রাজানং ততঃ প্রাহ রুকোদরঃ। জীবিতুপেচ্ছদে মূঢ! হেতুং মে গদতঃ শুণু। ১০॥ দাসোহস্মীতি স্বয়া বাচ্যং সংসৎস্কু চ সভাস্তু চ। এবং তে জীবিতং দদ্যামেষ যুদ্ধজিতো বিধিং। ১১। এবমস্থিতি তং রাজা কুষ্যমাণো জয়দ্রথঃ। প্রোবাচ পুরুষব্যাঘ্রং ভীমমাহবশে;ভিনমু 🗈 ১২ 🛚 তত এনং বিচেষ্টন্থং বন্ধা পার্থো রুকোদরঃ। রথরোপরামাস বিসংজ্ঞ পাংগুগুগিতম্ ॥ ১৩॥ ততন্ত্রপ্রাম্ম ভামঃ পার্থানুগন্তদা। অভ্যেত্যাশ্রমমধীস্থমভ্যগচ্ছদ্যুধিষ্ঠিরম্ ॥ ১৪ ॥ দর্শরামাস ভীমস্ত তদবস্থ জয়দ্রথম। ত শ্রাজা প্রাহসক কুটা মুচ্যতামিতি চাব্রবীং॥ ১৫॥ রাজানকাত্রবীদ্ধীমো দ্রৌপদাং কথাতামিতি। দাসভাবং গতো হেষ পাওুনাং পাপচেতনঃ॥ ১৬॥

॥ १॥ श्रुगेमशावान्, वानिगता अण्यातावास्तम শক্তং হতুং নদদাসি॥ ৮॥ সটাঃ জটাঃ কেশ সংনিবেশে মধ্যে মধ্যে পঞ্জ স্থানেহু অগ্ধিনত্তার বানেন ক্ষোরবিশ্বামানেতাথঃ॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১০॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥

ভমুবাচ ভডো জ্যেষ্ঠো ভ্রাতা সপ্রণয়ং বচং। মুঞ্মেমধমাচার প্রমাণা যদি তৈ বয়ম্। ১৭॥ দ্রৌপদী চাত্রবীস্তীমমভিপ্রেক্ষা যুধিষ্ঠিরম্। मारमार्य पुराजाः ताख्युमा शक्षमहेः क्रुडः ॥ ১৮॥ স মুক্তোহভ্যেত্য রাজানমভিবাদা যুধিষ্ঠিরম্। ববন্দে বিহ্বলো রাজংস্তাংশ্চ দৃষ্ট্য সুনীংস্তদা ॥ ১৯ ॥ তমুবাচ ঘূণী রাজা ধর্মপুজো মুধিষ্ঠিরং। তথা জয়দ্ৰথং দৃষ্ট্য গৃহীতং সব্যসাচিনা ॥২•॥ অদাসো গচ্ছ মুক্তোহসি মৈবণ কার্যীঃ পুনঃ# পুনঃ। স্ত্রীকামঞ্চ ধিগস্ত তাং কুদ্র: কুদ্র সহায়বান্॥ ২১॥ এবন বিধং হি কঃ কুর্য্যান্ত্রদন্যঃ পুরুষাধমঃ । গ্রুসন্ত্রমিব জ্ঞাত্বা কর্তারমণ্ড্রস্য তম্॥ ২২॥ সংপ্রেক্ষ্য ভরতভোষ্ঠঃ রূপাঞ্চক্রে নরাধিপঃ। ধর্ম্মে তে বন্ধতাং বুদ্ধির্মা চাধর্ম্মে মনঃ কুথাঃ॥২৩॥ সাশ্বঃ সর্থপাদাতঃ স্বস্তি গচ্ছ জয়দ্রথ!। এবমুক্তন্ত সত্রীড# স্তু ফীং কিঞ্চিদবাত্মুখঃ 👢 ২৪ ॥ জগাম রাজা তুথার্তো গঙ্গাদারায় ভারত 👣 স দেবং শরণ্ গত্বা বিৰূপাক্ষমুমাপতিম্॥ ২৫॥ তপশ্চচার বি**পু**লং তস্য প্রীতো রুষধ্**জঃ I** বলিং স্বয়ং প্রত্যগৃহ্ণ প্রীয়মাণিক্রালাচন: ॥ ২৬॥ ॥ ১९ ॥ ১৮ ॥ ५৯ ॥ २० ॥ २১ ॥ २२ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २० ॥ विनर छेपेहां दर

^{*} পুনরিত্যত্ত কচিদিতি পাঠঃ খ পুস্তকে। * সত্রীড ইত্যত্ত সত্রীভূমিতি পাঠঃ খহ পুস্তকয়োঃ।

বরঞ্চালৈ দদৌ দেবং স জগ্রাহ চ তচ্চূণু।

* সমস্তান্ সরথান্ পঞ্চ জ্যেয়ং যুধি পা গুবান্॥ ২৭॥
ইতি রজোব্রবীদ্দেবং নেতি দেবস্তমব্রবীং।

* অজ্যাংশ্চাপ্যব্যাৎশ্চ বার্য়িষ্যাসি তান্ যুধি ॥ ২৮॥
ঋতেহজুনং মহাবান্তং নর্ম নাম স্থরেশ্বরম্।
বদর্যাম তপ্তপুসং নারায়ন সহায়কম্॥ ২৯॥
আজিতং সর্বলোকানাং দেবৈরপি তুরাসদম্।
ময়া দত্তং পাশুপতং দিব্যমপ্রতিমম শর্ম।
অবাপ লোকপালেভ্যো বজ্ঞাদীন্ স মহাশ্রান্॥ ৩০॥
দেবদেবো হানন্তাল্লা বিষ্ণু: স্বরগুরু: প্রভু:।
প্রধানপুরুষোহ্ব্যক্তো বিশ্বাল্লা বিশ্বমূর্ত্তিমান্॥ ৩১॥
যুগান্তকালে সম্প্রাপ্তে কালাল্লিদ্হতে জগং।
স পর্বতার্গবদ্বীপং সংশ্লবনকাননম্॥ ৩২॥

॥২৭॥২৮॥ নারায়ণঃ সহারোষদা তং নারায়ণ সহায়কং ॥২৯॥
শবং শৃণাতি হিনন্তীতি শরমন্ত্রং ॥৩০॥ নারায়ণঃ সহায়দা জেয়য়ং
বক্তুং নারায়ণ মাহাম্মানেবাহ দেবদেব ইত্যাদিনা দেবানাং দেয়ত
কানাং স্বাচন্দ্রীচন্দুর্মনোবাচাং জ্যোতিষাং দেবঃ প্রকাশকঃ বেন
স্বান্তপতি তেজদেদ্ধঃ যেন চন্দুংদি পশান্তি ইত্যাদি আহতিতাঃ অভতঃ
ক্রিবিধ পরিছেদ শূনাঃ আত্মস্করপং যদা প্রধানং ত্রিগুণাত্রিকা মায়া
পুরুষদিচন্দ্রপঃ তত্তরাম্মাচিদচিম্নয়ঃ অব্যক্তা জগৎ কারণ রূপো
বিজ্ঞান্তর্গত বউতুলাঃ অভএব বিশ্বামা বিশ্ববাদ্ধা চেতনাংশেন বিশ্ব
মৃতিমান্ জভাং শেন॥ ৩১॥ এবং নারায়ণা জগদ্জেত্র মৃক্যা তদা
জগৎ সংহত্ত্মাহ যুগাস্থেতিকালামিরপো নারায়ণা নির্দ্ধতে॥ ৩২॥

^{*} সমস্তান্ সরকান্ পঞ্চেত্যে প্রাক্ত জয়য়ঀ উবাচেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

[🛊] অজ্ঞাং শেষতাত্ত প্রাক্ মছেশ্বর উবাচেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

নির্দ্ধহন্নাগলোকা শ্বন্ধ পাতালতলচারিণঃ।
অথান্তরীক্ষে সুমহন্নানাবর্ণাঃ প্রেয়ধরাঃ॥ ৩৩॥
যোরস্বরা বিনদিনস্তডিআলাবল্যিনঃ।
সমুন্তিতলিশঃ সর্বা বিকর্বন্তঃ সমন্ততঃ॥ ৩৪॥
ততোহ্বিং নাশয়ামাস্থঃ সম্বর্তাগ্লিনিয়ামকাঃ।
অক্ষমাত্রৈশ্চধারাভিন্তিত্ত্ত্যাপূর্য্য সর্ব্বশঃ॥ ৩৫॥
তকার্ণবে তদা তক্মিনুপশান্তে চরাচরে!
নউচন্দ্রাক্পবনে গ্রহনক্ষত্রবর্ধিতে॥ ৩৬॥
চতুর্যুগদহল্রান্তে সলিলেনাপ্লুতা মহী।
ততো নারায়ণাখ্যন্ত সহল্রাক্ষঃ সহল্রপাৎ॥ ৩৭॥
সহল্রশীর্ষা পুরুষঃ স্বপ্তুকামস্ত্রতীন্দ্রিয়ঃ।
ফণাসহ্ল্রবিকট্প শেষপর্যাক্ষ ভাগিনম্॥ ৩৮॥

॥ ৩৩॥ বিনদিনঃ গার্জ তিঃ সমুত্তিষ্ঠন্ স্নুদ্ তিষ্ঠন্ উত্তিষ্ঠ তি তার্থঃ
॥ ৩৪॥ নাশরামাত্রঃ প্রোধরা ইতি প্রপুর্বেণাররঃ অক্ষমত্তিঃ
রথাক্ষমাত্রাতিঃ স্থূলাতিঃ , সামান্যেনপুংসকং যদাধারাভিরিতি ধারাশব্দ আকারাতঃ সোমপাশব্দবং পুংলিদ ধাবমানাএবরাত্তি আদদতে
ক্রেদনীয়ং বস্তিবৃতিধারাঃ রা আদানেশাং কিপ্ ॥ ৫৫॥ একাবি
ইতি অবান্তর প্রলয়ে মিন্ প্রন নাশোক্তি নিদাঘট্ট তদন্ত্পলন্তমাত্রপরা ॥ ৩৬॥ চতুর্যুগ সহত্র প্রমাণং বৃদ্ধাদিনং তদন্তে
আপ্রতা সলিলেই তহিতেতার্থঃ নারায়ণ ইত্যাখ্যা নাম্যম্য ঘদানারায়ণাদেব আখ্যা প্রথা যম্য স হিরণাগতঃ স্বাল্মা বিশ্বাভিমানী অতএব
সহত্র প্রদাদিমান্ ॥ ৩৭॥ স্বপ্তুক্ষাঃ স্বাদনাত্তে ফট্যাহত্রং ফণা
সহত্রং অধ্যতিষ্ঠ দিতিশেষঃ ॥ ৩৮॥ আমতহ্যতিং অভ্যন্তং দ্যাভমানং

^{*} ভোগিনমিতাত্র ভাজনমিতি পাঠঃ খ পুস্তকে

সহস্রমিব তিয়াংশুসংঘাতমমিতক্সতিম্।
কুন্দেন্দ্রহারগোক্ষীরমূণালকুমুদপ্রভম্ ॥ ৩৯ ॥
তত্তাসৌ ভগবান্দেবং স্বপন্ জলনিধৌ তদা।
নৈশেন তমসা ব্যাপ্তা^ স্বাং রাত্রিং কুরুতে বিভূঃ ॥ ৪০ ॥
সন্ত্রেক্ষাৎ প্রবুদ্ধস্ত শূন্য লোকমপশ্যত।
ইমপ্টোদাহরস্তাত শ্লোকং নারায়ণ্শ প্রতি ॥ ৪১ ॥
আপো নারাস্থ তনব ইত্যপাং নাম শুক্রম।
অরনং তেন চৈবাস্তে তেন নারায়ণঃ স্মৃতঃ ॥ ৪২ ॥
প্রধানসমকালন্ত প্রজাহেতোঃ সন্তিনঃ ।
ধ্যানসমকালন্ত প্রজাহেতোঃ সন্তিনঃ ॥ ৪০ ॥
ততশ্চভূর্ম্বা বেলা নাভিপ্লাদ্বিনঃস্তঃ ।
তত্তোপ্রিফঃ সহস্যা প্রে লোক্সিত্যমহঃ ॥ ৪৪ ॥

॥ ৩৯॥ ৪০॥ সহো দ্রেকাভমদো শক্ষো ভিভবে সতি সহস্যাবির্জ্ঞাবাং প্রাথি প্রাণ্ড প্রাণ্ড সক্ষার্থ পদং নির্বৃত্তি আপেইতি নরাজাতানরঃ নূনরয়ে দ্বি শেচতি নোরাদিন্য পাচাং প্রাপ্তেমির গণকার্যসার্থ নিতাহার তত্তনবঃ ত্যা নারাল্ড গ্যেব তনবঃ যথা সৌবর্ণং কুণ্ডলং স্বর্ণ মেব এবং নরজা আপোনর এবেতার্থঃ নারাঃ আপাঃ দেহাল্যাকার পরিণ্ডা অন্তন্থ নিবাসন্থানং যদ্য অথবাতাভিঃ সহত্তালান্তাং প্রাপ্য আতে ইতিবা নারাল্ড ইতি তংস্কু। তদেবাত্ম প্রাণিশদিতি আত্মেল্রিয় মনোযুক্তং ভোক্তেতাহেম নীমিণ ইতিচ্ছাতিঃ পরমান্ত্রনএবন্ধ স্কলেহে প্রবেশং দেহ সম্ভালম ভোক্ত্রণ্ড দর্শয়তি তেন চেতনাচেতনং সর্বাং জগলারাল্যাক মিত্যুক্তং তবতি॥ ৪২॥ প্রধানেতিধান সম্কালে প্রজাহেতোঃ প্রজানামুৎপত্যর্থং সনাতন শিরস্তনো বন্ধানাভিপ্যানিন্যস্তঃ তাল্শেন রূপেণ ধ্যাত্ম দুর্কো প্রতাভাদিতার্থঃ ততাধ্যাত্মাত্র ধ্যানান্তরং বিফোর্নাভাণং পদ্মঃ সমুখ্তিঃ॥ ৪৩॥ তন্মংশ্চ পদ্মেলিতাম্ছ উপবিষ্ট ইতিক্রম ভঙ্কেনবোজ্যং॥ ৪৪॥ মরীচি প্রমুখান্ মরীল

শ্ব্যং দৃষ্ট্য ভূগৎ কুৎসং মানসানাত্মনঃ সমান্। ততো মরীচিপ্রযুখান্মহর্ষীনস্জন্ব ॥ ৪৫ ॥ তে দৃষ্ট্য সর্বাভূতানি ত্রস্তানি স্থাবরাণি চ। যক্ষরাক্ষসভূতানি পিশাচোরগমানুষান্ ॥ ৪৬ । স্বজাতে ব্ৰহ্মমূৰ্তিস্ত রক্ষতে পৌরুষী তন্তু:। রৌদ্রীভাবেন শময়েজিস্রোহবস্থাঃ প্রজাপতেঃ॥ ৪৭॥ ন প্রতং তে সিন্ধুপতে বিষ্ণোরদ্ভুতকর্ম্মণঃ। कथामानानि मुनिञ्जि ऋतिपर्विष्मात्रेताः ॥ १৮॥ জলেন সমন্ত্রাপ্তে সর্বতঃ পৃথিবীতলে। তদা চৈকার্ণবে তিমান্নেকাকাশে প্রভূশ্চরন্ ॥ ৪৯॥ নিশায়ামিব খদ্যোতঃ প্রার্ট্কালে সমস্ততঃ। প্রতিষ্ঠ নায় পৃথিবীং মার্গমাণ্ডদাভবং ॥ ৫০॥ জলে নিমগ্না গা দৃষ্ট্বা চোদ্ধর্তু মনসেচ্ছতি। কিনুৰপমহং কৃত্বা সলিলাছ্করে মহীম্॥ ৫১॥ এব॰ সঞ্চিন্ত্য মনসা দৃষ্ট্য দিব্যেন চক্ষ্যা। জলক্রীডাভিরুচিতং বারাহ কপমম্মর । ৫২।

চিরত্রাজিরসৌ পুলস্তঃ পৃঃহঃ ক্রত্যু বশিষ্ঠো নারদদৈত ভ্রুনিংমহর্ষাঃ
॥ ৪৫ ॥ তদানি জলমানি ॥ ৪৬ ॥ প্রজাপতেরীশ্বরদ্য মায়াদবলদা
তিলোবস্থা একৈক গুণেঃকর্ষ নামন্তাঃ রজদ উৎকর্ষে বন্ধাদন্ সূজাতে
দথেংকর্ষে পেইরষী বৈঞ্চবীং তত্ত্বং প্রবিশ্য রক্ষতি তমদ উৎকর্ষে
রোজীভাবেন ক্রমভাবেন দময়েদিতি ॥ ৪৭ ॥ হেদিরুপতে তেত্ব
ক্রচতং প্রবণং নান্তি যতঃ বিফোঃ অন্তুত কর্মণঃ কথ্যমানানি কথনীয়ানি
কর্মাণি নবেৎসী তিশেবঃ ॥ ৪৮ ॥ তান্যেক্র্মাণ্যাছ একার্ণবে সতি
একার্কাণে আকাশমাত্রে বায়ুভেজঃ পৃথিবীরছিতে জলমাত্রেসতি ॥ ৪৯ ॥
খদ্যেত ইতি আকাশ মাত্রত্ব মূচাতে প্রতিষ্ঠা নায়লোক প্রতিষ্ঠাপেনার্থং
॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥ জলকীভারাং অভিক্চিতং প্রতির্ব্যা ॥ ৫২ ॥ বরাছবপুরং

ক্ষা বরাহ্বপুষং বাজায়ং বেদসন্মিত্য। দশযোজনবিস্তীর্ণমায়ত্ত শত্যোজনন্। ৫৩॥ মহাপর্বভবন্ধাভং তীক্ষদং ট্রু প্রদীপ্তিমং। মহামেঘৌঘনিৰ্ঘোষং নীলজীমূতসন্নিভ্যু । ৫৪ ॥ ভূত্বা যজ্ঞবরাহো বৈ অপঃ সংপ্রাবিশৎ প্রভুঃ। দংপ্তেপৈকেন চোদ্ধৃতা স্বেস্থানে ন্যবিশন্মহীম্। ৫৫॥ পুনরেব মহাবাছরপূর্বাৎ তনুমাঞ্চিতঃ। নরস্যা রুত্বার্দ্ধতন্ত্রু সিংহস্যার্দ্ধতন্ত্রু প্রভুঃ 🛽 ৫৬ ॥ দৈতোক্রস্য সভাশ গত্বা পাণিং সশ্স্পৃশা পাণিনা। দৈত্যানামাদিপুরুষঃ স্থরারিদিতিনন্দনঃ । ৫৭ ॥ দৃষ্ট্রা চাপুর্ববপুষং 📽 ক্রোধাৎ সংরক্তলোচনঃ। শূলোদ্যতকর: অশ্বী হিরণ্যকশিপুস্তদা । ৫৮॥ মেঘস্ত্রিত্রিঘোষা নীলাব্রু চয়স্থিত। দেবারির্দিকিকো বীরো নুসিংহ সমুপাদ্রবং । ৫৯ ॥ সমুৎপত্য ততন্তীকৈর্ম্য গেল্রেণ বলীয়সা। নারসিংছেন বপুষা দারিতঃ করজৈর্ভুশম্॥ ৬०॥ এবং নিখ্ত্য ভগবালৈতোক্রং রিপুঘাতিনম্। ভূষে। হন্যঃ পুগুরীক।ক্ষঃ এভূর্বোকাহিতায় চ। ৬১।

তাত্মানমিতিশেষঃ বৃদ্ধি মরং চতুর্বেদময়ং বেদসংমিতং বেদ প্রমিত যজ্ঞ রূপং ॥ ৫৩ ॥ বর্ষ শরীরং ॥ ৫৪ ॥ দংষ্ট্রেণ দংষ্ট্রান্য বিশং ন্যবেশরং ॥ ৫৫ ॥ এবং বরাহাবতার মুক্ত্বা নরসিংহাবতার মাছ পুনরেবেতাদিনা অপুর্বাং লোকে পূর্বাং ন দৃষ্টাং ॥ ৫৬ ॥ ৫৭ ॥ ৫৮ ॥ ৫৯ ॥ হুণেজ্ঞেণাপি সমুপোত্য দৈত্যসমীপে গড়া সমুপাদ্রবন্ হিরণাকশিপুঃ করজৈনবৈ-দ্যিতঃ ॥ ৬০ ॥ এবং নৃসিংহাবতার কথা মুপসংঘত্য বামনাবতার কথাং প্রত্যেতি এবমিতি ॥ ৬১ ॥ গভধারিতঃ গর্ভধারিতঃ সপ্তমীতি যোগবিতা-

^{*} ৰপুষ মত্যত্ত পুৰুষ মতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

কপাপস্যাত্মতঃ শ্রীমানদিত্যা গর্ৱধারিতঃ। পূর্ণে বর্ষদহত্রে তু প্রস্থৃতা গর্ভমুক্তমম্। ৬২ । कुर्षिना स्थापमपुरमा मीखारका वामनाकू जिः। पञ्जी कमञ्जूषतः श्रीवरमात्रिष्ठ्विडः ॥ ७० ॥ জটা যজেপেবীতী চ ভগবান বালরূপধুৎ। যজ্ঞবাটং গতঃ শ্রীমান্দানবেক্রস্য বৈ তদা । ৬৪ ॥ वृङ्ग्शिक्शिरायांश्रमो अविष्ठे। विल्ला मर्थ । তং দৃষ্ট্রা বামনত্রুণ প্রহ্নটো বলিরব্রবীৎ ॥ ৬৫॥ প্রীভোহন্ম দর্শতে বিপ্র! ব্রুছি স্বং কি॰ দদানি তে। এবমুক্তস্ত বলিনা বামন: প্রত্যুবাচহ ॥ ৬৬ ॥ স্বস্তী হ্যক্ত বলিং দেবঃ স্ময্মানোহভাভাষত ! মেদিনী দানবপতে! দেহি মে বিক্রমত্ত্রম্ম ৬৭॥ বলিদ্দৌ প্রসন্নারা বিপ্রায়ামিডতে জমে। ততো দিব্যাদ্ভতম^ ৰূপং বিক্রমতো হরেঃ॥ ৬৮॥ বিজ্ঞ মৈস্ত্রিভিরক্ষোভ্যো জহারাশু দ মেদিনীম্। परिनो भकाय ह मही विकृतियः मनाजनः ॥ ७३॥ এষ তে বামনো নাম প্রাতুর্ভাবঃ প্রকীর্ত্তিভঃ। তেন দেবাঃ প্রাত্রাসন্ বৈষ্ণবঞ্চোটেতে জগং । ৭০॥

গাৎসমাসঃ॥ ৬২॥ হুর্দিনং প্রার্ট্দিনং তত্তভবোজোদঃ কৃষ্ণেষন্তৎসদৃশঃ
মেষক্ষরেক্লি ছুর্দিনমিতামরঃ জীবংসেন উর্নিভূষিত ইতি লুপ্তবিভাক্তকং
পদং॥৬৩॥ বলেঃ বামনঃ বাটং স্থানং॥ ৬৪॥ বলিনেবিলঃ অব্যামকারান্ত
ইয়ত্ত শক্ষেদৃশ্যতে॥৬৫॥ দদানিঃদীপ্তি মিতি শেবঃ॥৬৬॥৬৭॥ দিব্যঞ্চতৎ অদুত্তমঞ্চরপং বভূবেতি শেবঃ॥ ৬৮॥ ৬৯॥ ৭০॥ অবতীর্ণবিতরনং

অসতাৎ নিগ্রহার্থায় ধর্ম্মদৎরক্ষণায় চ। অবতীর্ণো মনুষ্যাণামজারত যতুক্ষয়ে । ৭১ 🛭 স এব ভূগবানু বিষ্ণু ক্লফেতি পরিকীর্ত্তাতে। অনাদ্যন্তমজন দেবং প্রভুং লোকনমস্তম ॥ ৭২ ॥ যং দেবং বিদ্বুযো গান্তি তদ্য কর্মানি দৈক্সব। যমাছরজিতং কৃক্ণ শহুচক্রগদাধরম্॥ ৭৩ ॥ জীবৎসধারিণ দেবং পীতকৌবেয়বাসসম্। প্রধানং * শস্ত্রবিত্রধাং তেন ক্লফেন রক্ষাতে। ৭৪॥ সহাযঃ পুগুরীকাকঃ শ্রীমানতুলবিক্রমঃ। नमानस्यक्तन शार्थमास्राय शतवीत्रः॥ १०॥ ন শকাতে তেন জেতু॰ ত্রিদলৈরপি ছুঃসহঃ। কঃ পুনর্মানুষো ভাবো রণে পার্থং বিজেষ্যতি ॥ ৭৬ ॥ তমেক বর্জবিত্ব। তু সর্বা থৌ ধিষ্ঠিরং বলন্। চতুরঃ পাপ্তবান্।জন্ দিনৈকং জেষ্যদে রিপুন্॥ ৭৭॥ रेवनन्यात्रम छेवाह। ইত্যেবহুকু নৃপতিং সর্বাপাপহরে। হরঃ। উমাপতিঃ পশুপতির্যজ্ঞহা ত্রিপুরার্দ্দনঃ ॥ 🗫 ॥ वाभरेनिकिकरेषेः कुरैक्करूश्वायवनुष्पिरेनः। রুতঃ পারিষ্টেদর্যোরের্নান,প্রহরণোদ্যতৈঃ ॥ ৭৯॥

কুর্বরজায়ত আবিভূতিঃ যতুক্ষারে যদ্নাং গৃছে। ৭১॥ ৭২॥ তত্ত কর্মাণি বিজুযোন্যন্থকাং গান্তি গায়ান্ত॥ ৭৩॥ স অর্জুনঃ অন্ত্রবিজ্যাং প্রধানং ক্রেচঃ যং অজিত মান্তন্তেন কুফোনরক্ষাতে॥ ৭৪॥ ৭৫॥ তেন কৃষ্ণ সহায়-বেন হেতুনা ভাবঃ পুজাতমঃ ভাবঃ পুজাতমেলাকে ইতানেকার্থঃ॥ ৭৬॥ দিনৈকং একাদন্মেব ন স্বাদা॥ ৭৭॥ ৭৮॥ ৭৯॥ দক্ষ্যক্ত ভগাতানেতাং

^{*} শস্ত্রবিহুষ্মিভাত্ত সোহজ্রবিহুষ্মিভি পাঠঃ খ পুস্তকে \

তামকো রাজশার্দ্র। ভগনেত্রনিপাতনঃ।
উমাসহায়ো ভগবাংস্ত ক্রেবান্তরধীয়ত॥৮০॥
জয়দ্রথোহপি মন্দাত্মা স্বমেব ভবনং যযৌ।
পাণ্ডবান্দ বনে তন্মিন্নবৃদন্ কাম্যকে তথা॥৮১॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি জয়ক্রথবিমোক্ষণ পর্বাণি দ্বিসপ্রত্যধিকদ্বিশততমোহধ্যায়:॥ ২৭২॥

সমাপ্তঞ্চ জয়দ্রথ বিমোক্ষণ পর্ব।

নিপাতিত বান্ ভগনেত্রনিপাতনঃ ॥ ৮০॥ ৮১॥

ইত্যারণাকে শর্কণি নৈলকথীয়ে ভারত ভাবদীপে

দিসপ্ততাধিক দিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭২ ॥

ত্রিতার করিতার করিতার করিছে। ত্রিতার করিতার করিতার করিছে করিতার করিতা

জনমেজয় উবাচ।

এব হাজায়াং ক্লফায়া প্রাপ্য ক্লেশমনুত্তমন্।
আত উক্বি নরব্যান্তাঃ কিমকুর্বত পাগুবাঃ॥ ১॥
বৈশম্পায়ন উবাচ।

এবং রুফাং মোক্ষয়িত্ব। বিনিদ্ধিত্য জয়দ্রথম্। আসাঞ্চক্রে মুনিগণৈধর্মরাজো যুগিন্টিরঃ ॥ ২ ॥ তেষাং মধ্যে মহর্ষীণাৎ শৃণুতামন্ত্রশোচতাম্। মার্কণ্ডেয়মিদং বাক্যমন্ত্রবাৎ পাণ্ডুনন্দনঃ॥ ৩॥

যুপিন্তির উবাচ।

ভগবন্দেবর্ষীণাং ত্ব খাতো ভূতভবিষ্যবিৎ।
সংশারং পরিপুচ্ছামি তং ছিক্সিন্সদি মে স্থিতন্ ॥ ৪ ॥
দ্রুপদস্য সূতা হোষা বেদিমধ্যাৎ সমুপ্তিতা।
অযোনিজা মহাভাগা সুবা পাণ্ডোর্ম্মহাত্মনং ॥ ৫ ॥
মন্যে কালশ্ব ভগবান দৈবঞ্চ বিধিনির্মাতম্।
ভবিতব্যঞ্চ ভূতানাং যস্যনাস্তি ব্যতিক্রমং ॥ ৬ ॥
ইমাং হি পত্নীমন্মাকং ধর্মজ্ঞা শর্মচারিণীম্।
সংস্পৃশোদীদৃশো ভাবং শুচিং স্বৈন্যমিবানৃতম্॥ ৭ ॥
এবমিতি॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ দৈবং ধর্মাধ্যে বিধিঃ সদসংকর্মণী
ভাতাং নির্মিতং ॥ ৬ ॥ উদ্শোভাবং পরেণ হরণং ॥ ৭ ॥

^{*} ভগবানিভাত্ত বল বান্নিভি পাঠঃ ক পুস্তকে !

ন হি পাপং ক্লভং কিঞ্চিৎ কর্ম্ম বা নিন্দিতং ক্লচিৎ।

টোপদ্যা ব্রাক্ষণেশ্বের ধর্ম্মঃ স্কুচরিতো মহান্॥ ৮॥
তাং জহার বলাদ্রাজা মৃত্যুদ্ধির্দ্যান্ত ।
ভক্তাঃ সংহরণাৎ পাপঃ শিরুদঃ কেশপাতনম্॥ ৯॥
পরাজয়ঞ্চ সংগ্রামে সসহায়ঃ সমাপ্তবান্।
প্রত্যাহ্ণতা তথান্মাভির্ত্ত্য তৎ সৈন্ধবং বলম্॥ ১০॥
তদ্ধারহরণ প্রাপ্তমন্মাভিরবিতর্কিতম্।
ছুঃখন্চায়ং বনে বাসো মৃগয়ায়ায় জীবিকা॥ ১১॥
হিংসা চ মৃগজাতীনা বনৌকোভির্বনৌকসাম্।
ভ্রাতিভির্বিপ্রবাদশ্চ মিধ্যাব্যবসিতরিয়ম্॥ ১২॥
ভাতিভির্বিপ্রবাদশ্চ মিধ্যাব্যবসিতরিয়ম্॥ ১২॥
ভবতা দৃষ্টপুথেরা বা ক্রন্তপূর্ব্বোহপি বা ভবেৎ॥ ১৩॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাখ্যান পর্বাণ মুর্ধিষ্টরপ্রশ্নেশ
ব্যপ্তত্যধিক্ছিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭৩॥

মার্কতেয় উবাচ।

প্রাপ্তমপ্রতিমং ছুঃখং রামেণ ভরতর্ষভ ! ।
রক্ষসা জানকী তম্ম হৃতা ভার্য্যা বলীয়সা ॥ > ॥
॥ ৮ ॥ > ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ মিধ্যাব্যবসিতেঃ রুথাতাপসবেষধরেঃ ইয়ংহিংসাক্রিযত ইতি শেষঃ ॥ ১২ ॥ ময়াসম ইতি শেষঃ ॥ ১৩ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিসপ্তত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭৩॥

প্রাপ্তমিতি॥ ১॥

আশ্রমান্ত্রিক সেন্ত্রেণ রাবণেন সুরাত্মনা।
মায়ামান্ত্রিক তরসা হত্বা পৃধু কটাযুষ্ম ॥ ২ ।
প্রত্যাজহার তা রাম: স্থাবিবলমান্তিত:।
বন্ধ্যা সেতুং সমুদ্রন্থ দক্ষ্যা লঙ্কাং শিতৈ: শরৈ:॥ ৩ ॥

* সুধিন্তর উবাচ।

কমিনাম: কুলে জাতঃ কি বীর্যাঃ কিংপরাক্রম:।
রাবণঃ কস্য পুজো বা কিং বৈরং তস্য তেন হ ॥ ৪ ॥
এতন্মে ভগবন্ সর্বাং সম্যুগাখ্যাতুমর্হসি।
শোতুমিছামি চরিতং রামস্যাক্লিউকর্ম্মণঃ॥ ৫ ॥
মার্কতের উবাচ।

অজো নামাভবদ্রাজা মহানিক্ষ্যকুব~শজঃ।
তদ্য পুলো দশরথঃ শশ্বৎ স্বাধায়বান্ শুচিঃ॥৬॥
অভবংস্তদ্য চত্ত্বারঃ পুলা ধর্মার্থনোবিদাঃ।
রামলক্ষ্যশক্ষ্য ভরতক্ষ মহাবলঃ॥৭॥
রামদ্য মাতা কৌশল্যা কৈকেয়ী ভরতদ্য চ।
স্থতৌ লক্ষ্যশক্ষ্যে স্থমিতায়াঃ পরস্তপৌ॥৮॥
বিদেহরাজো জনকঃ দীতা ভদ্যাত্মজা বিভো!!
যাঞ্চকার স্বয়ং ভ্রকী রামদ্য মহিষীং প্রিয়াম্॥৯॥

় মায়াং সংন্যাসিবেহং ॥২॥৩:৪॥৫॥७॥৭॥৮॥ বফাপ্রজাপতিঃ স্বযুম্ব সংক্পেন চকার নতুমৈপুনস্থারা অযোনিজামিতার্থঃ॥৯॥

^{*} মুধিষ্ঠির উবাচ ইত্যক্ত প্রাক্ ততন্তং বলবানাবোরপুং ভার্ষ্যাপহারিণম্ সহবানর সৈনেন জ্যানরণ মুদ্ধনীত্যেক শ্লোকঃ ক প্রন্তকক্ত !

^{*} অজোনামভব্দোজা ইতাস্য প্রাক্ শুণু রাজন্ যথারত মিতিহাস পুরাতনং সভার্যোণ যথাপ্রাপ্তং হঃখং রামেণ ভারতেত্যেকঃ লোকঃ কুপুত্তকশু ৷

এতদ্রামস্য তে জন্ম সীতায়াশ্চ প্রকীর্ত্তিতম। রাবণস্যাপি তে জন্ম ব্যাখ্যাস্যামি জনেশ্বর ! । ১০। পিতামহো রাবণ্যা সাক্ষাদেবং প্রজাপতিঃ। স্বযন্তঃ দৰ্বলোকানাং প্ৰভুঃ অন্তা মহাতপা: ॥ ১১॥ পুলস্ত্যো নাম ত্য্যাদীঝান্দো দয়িতঃ স্কুতঃ। তস্য বৈশ্রবনো নাম গবি পুজোহভবৎ প্রভু:॥ ১২ । পিতর প্রসমুৎ হজাপিত। মহমুপস্থিত:। তস্যকোপাৎপিতারাজন সমর্জানমালনা। ১৩॥ স জভ্তে বিশ্রবা নাম তদ্যাত্মার্দ্ধেন বৈ দ্বিজঃ। প্রতীকারায় সক্রোধস্ততো বৈশ্রবণস্য বৈ॥ ১৪॥ পিতামহস্তু প্রীতাত্মা দদৌ বৈপ্রবণস্য হ। 'অমরত্বং ধনেশত্ব^ লোকপালত্বমেব চ। ১৫। ঈশানেন তথা সথাং পুত্রঞ্ব নলকুবরম্। রাজধানীনিবেশঞ্চ লঙ্কাং রক্ষোগণান্তিতাম্॥ ১৬॥ विमानः शुष्ट्रकः नाम कामगत्र माने अष्टः। ষক্ষাণামাধিপত্যঞ্চ রাজরাজত্বমেব চ॥ ১৭॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাখ্যানে পর্বাণি রামরাবণ্য়োর্ক্রনা কথনে চতুঃ সপ্তত্যধিকদ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭৪ ॥
॥ ১০ ॥ ১১ ॥ গবিগোসংজ্ঞায়াং ভার্যায়াং ॥ ১২ ॥ তপ্তবিশ্রবণস্থ কোপাই
মাংত্যক্তবা মংপিতরং সেবত্ইত্যতিজ্বলনাং বৈশ্রবণং বাধিতুং পুলস্ত্যএব
গোগবলেন বিশ্রবঃ সংজ্ঞাংদেহান্তরং চক্রে ইত্যর্থঃ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥
॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

ইত্যারণ্যকে **প্রক্রণি** নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুঃ সপ্তত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭৮ ॥ মার্বতের উবচ।

পুলস্ত্যস্থ তু যঃ ক্রোধাদর্ধদেহোহভবস্মৃনিঃ। বিশ্ববা নাম সক্রোধঃ স বৈশ্ববণ্টমক্ষত ॥ ১ ॥ বুবুধে তম্ভ দক্রোধং পিতর^ রাক্ষদেশ্বঃ। কুবেরস্তৎপ্রসাদার্থং যততে স্ম সদা নূপ। ॥ ২॥ म तो खतारको लक्काशां न नावमन्त्रवाहनः। রাক্ষসীঃ প্রদদৌতিমাংপিতুরৈ পরিচারিকাঃ ॥ ৩॥ তাঃ সদা ত^ মহাত্মানং সত্তোষ্যিত্মুদ্যতাঃ। ঋষিং ভরতশাদিল ! নৃত্যগীতবিশারদাঃ ॥ ৪ ॥ পুষ্পোৎকটা চ রাকা চ মালিনী চ বিশাস্পতে!। অন্যোন্যস্পর্দ্ধরা রাজনু । শ্রেরকামাঃ স্থুমধ্যমাঃ ॥ ৫॥ म जामार जनवार खरका महात्रा अनुस्ति वतान्। লোকপালোপমান্ পুজানেকৈকস্থা যথেপিসভান্ ॥ ৬॥ পুষ্পোৎকটায়াং জজ্ঞাতে দৌপুলো রাক্ষ্যেশ্বরৌ। কুম্ভকর্ণদশগ্রীবৌ বলেনাপ্রতিমৌ ভূবি॥ १॥ মালিনী জনয়ামাস পুত্রমেকং বিভীষণম্। রাকায়াং মিথুনং জড্জে থরঃ শূর্পণখা তথা ॥ ৮॥ বিভীষণস্তু ৰূপেণ সর্কোভ্যোহভ্যধিকোহভবৎ। স বভুব মহাভাগো ধর্মগোপ্তা ক্রিয়ারতি: ॥ ৯॥ দশগ্রীবস্তু সর্বেষাং ত্রেষ্ঠো রাক্ষ্য পুঙ্গবঃ। মহোৎদাহো মহাবীর্য্যো মহাসত্ত্ব পরাক্রমঃ॥ ১ •॥ कु अकर्ता वलना नी शर्का खा श्वाधिक प्राप्ति । भाशानी तनरमो ७ मह ८ तो जम्ह तक मौहतः ॥ 🖔 ॥ পুলস্তাস্যেতি ॥১॥ পিতরং বিশ্রবসং রাক্ষসেশ্বরঃ কুবেরো রক্ষঃ পুরীনায়

খবো ধনুষি বিক্রাস্থো ত্রন্ধদ্বিট্ পিশিতাশন:। সিদ্ধবিষ্ণকরী চাপি রৌদ্রা শূর্পণখা তদা ॥ ১২ ॥ সর্ব্বে বেদবিদঃ শূরা: সর্ব্বে স্কুচরিতত্ত্রতা:। উষুঃ পিত্রা সহ রতা গন্ধমাদনপর্বতে । ১৩॥ ততো বৈপ্রবাং তত্র দদুশুর্নরবাইনম্। পিত্রা সার্দ্ধৎ সমাসীনমূদ্যা পরময়া যুত্র ॥ ১৪॥ জাতামধান্ততন্তে তু তপদে ধুতনিশ্যাঃ। ব্রহ্মাণং তোষয়ামাস্কর্ছোরেণ তপসা তদা। ১৫॥ षा जिथे एक निर्मातिक मह्य प्रतिव देश में । বাযুভকো দশগ্রীবং পঞ্চাগ্নিং সুসমাহিতঃ ॥ ১৬ ॥ অধঃশায়ী কুম্তকর্ণো যতাহারো যতব্রতঃ। বিভীষণঃ শীর্ণপর্নেকমভ্যবহার্যৎ ॥ ১৭ ॥ উপবাসরতিধীমান্ সদা জপ্যপরায়ণ:। তমেব কালমাতিষ্ঠতীব্রং ব্রতমুদারধী: ॥ ১৮॥ খরঃ শূর্পনখা চৈব তেষাং বৈ তপ্যতা তপঃ। পরিচর্য্যাঞ্চ রক্ষাঞ্চ চক্রভুক্ উমানসৌ॥ ১৯॥ পূর্ণে বর্ষসহত্রে তু শিরশ্ছিত্ত্বা দশাননঃ। জুহোত্যথৌ চুরাধর্ষস্তেনাতৃষাজ্জগৎ প্রভু:॥ ২০॥ ততো ব্ৰহ্মা স্বয়ং গত্মা তপসস্তানবার্যখ ৷ প্রলোভ্য বরদানেন স্কানেব পৃথক্ পৃথক্ ॥ ২১ ॥ उत्भावाह।

প্রত্যাবাদ। প্রতিষ্ঠিকা বিনিবর্ত্ত ধং বরান্ রণুত পুত্রকা:। যদ্যদিউমৃতে ত্বেকমমরত্বং তথাস্ত তথ। ২২॥

॥১২॥ পিতা বিজ্ঞাবসা॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ পঞ্চিক্ষুচ্বার একঃ স্থ্য ইতি পঞ্চানাম্মীনাম্ধ্যায়ঃ পঞ্চায়িঃ॥ ১৬॥ বিভীষ্ণঃ তপ আতিষ্ঠদিত্যনুরঃ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ यদ্यদয়ো হুত্ত সৰ্কাং শিরস্তে মৃহদীপ্সয়া। তথৈৰ তানি তে দেহে ভবিষ্যন্তি যথেপ্সষা॥২৩॥ বৈৰূপ্যঞ্চ ন তে দেহে কামৰূপধরস্তথ্য। ভবিষ্যাস রণেহরীণাং বিজেতা ন চ সংশয়ং॥২৪॥

द्रादन छेन्।

গন্ধবদেবাস্থরতো যক্ষরাক্ষসতস্তথা। সর্পকিন্নরভূতেভ্যোন মে ভূ্যাৎ পরাভবঃ॥২৫॥

ব্ৰশ্বোগ্চ (

য এতে কীর্ত্তিতাঃ সর্ব্বেন তেভ্যোহস্তি ভয়ং তব। ঋতে মনুষ্যান্তদ্রতে তথা তদিহিতং মযা॥২৬॥

মার্কতেয় উবাচ।

এবমুক্তো দশগ্রীবস্তুফীঃ সমভবন্তদা।
অবমেনে হি তুর্বা দির্ম্মনুষ্যান্ পুরুষাদকঃ ॥ ২৭॥
কুপ্তকর্নথোবাচ ভথৈব প্রপিতামহঃ।
সবব্রেমহতী নিদ্রাং ভমসা গ্রস্ত চেতনঃ॥ ২৮॥
তথা ভবিষ্যতীভুক্ত্বা বিভীষ্ণ মুবাচহ।
বরং র্ণীষ্ব পুত্র ত্বং প্রীভোহস্মীতি পুনঃ পুনঃ॥ ২৯॥

বিভীষণ উবাচ।

পরমাপাকাতফাপি নাধর্মে মৈ মতির্ভবেৎ। আশক্ষিতঞ্জগবন্ ব্রহ্মান্ত্রৎ প্রতিভাতু মে॥ ৩০॥

মহদীপ্রয়া শ্রেষ্ঠ পদাপেক্ষরা ॥ ২৩ ॥ খ৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ । ২৭ ॥ তমসেতি অনিষ্ঠামপি নিজাং মোহাদ্ধ্তবানিত্যর্থ: ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ॥ ৩০ ॥ যোনো কেবে নতুরেতোহত্ত রাক্ষমন্তি তক্ষামাতৃদোষা দেবং

ব্ৰখোবাত !

যক্ষাজাক্ষসযোগে তে জাতফামিত্রক্ষণ। নাধর্ম্মে ধীয়তে বুদ্ধিরমরত্ব^ দদানি তে॥ ৩১॥

মার্কত্তের উবাচ।

রাক্ষসস্ত বরং লক্ষ্য দশগ্রীবো বিশাম্পতে! লস্কায়াশ্চাবিয়ামাস যুধি জিত্বা ধনেশ্বরম্ ৷ ৩২ ৷ हिञ्जा म ভগব: ल का मार्थिमका का प्रत्य। গন্ধবিষক্ষানুগতে। রক্ষ:কিং পুরুষেঃ সহ।। ৩০।। বিমানং পুষ্পাক ত্সা জহারাক্রম্য রাবণঃ। শশাপ তং বৈশ্রবণো ন স্বামেতদহিষ্যতি ৷ ৩৪ ৷ . যস্তু ত্বাং সমরে হন্তা তমেবৈতদ্বহিষ্যতি। অবমন্য গুরুৎ মাঞ্চ ক্ষিপ্রং ত্বং ন ভবিষ্যসি॥ ৩৫॥ বিভীষণস্ত ধর্মাত্মা সতাৎ মার্গমনুস্মরন্। অবগচ্চন্হারাজ ! শ্রিয়া পরময়া যুতঃ ॥ ৩৬ ॥ তম্মৈ স ভগবা-স্কুষ্টো ভাতা ভাতে ধনেশ্বর:। সৈনাপত্যং দদৌ জীমানু যক্ষরাক্ষসসৈন্যয়ো:। ৩৭। ताकनाः शूक्षामान शिवाहान महावलाः। সর্বে সমেত্য রাজানমভাষিঞ্চন্শাননম্॥ ৩৮॥ দশগ্রীবস্ত দৈত্যানাং দেবানাঞ্চ বলোৎকটঃ। আক্রম্য রত্বানাহরৎ কামরূপী বিহঙ্গম:। ৩৯।

ক্রেরিং রাবণাদীনামিত্যর্থ: নরানাং মাতুলক্তম ইতি প্রানিদ্ধং ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৬ ॥ ৩৪ ॥ ন ভাববাসি মারবাসি ॥ ৩৫ ॥ অরগচ্ছৎ কুবের মিতি শেষঃ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ রত্নানিজাতৌ জাতোযত্ত্বকৃষ্টং তক্তর মভিধীয়তে বিহলমঃ খেচরঃ ॥ ৩৯ ॥

রাবয়ামাস লোকান্ যক্তস্মান্দ্রবিণ উচ্যতে।
দশগ্রীঃ কামবলো দেবানাৎ ভয়মাদধৎ ॥ ৪০॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাখ্যান পর্বাণি রাবণাদিবরপ্রাপ্তৌ পঞ্চনপ্রত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭৫ ॥

মার্কতের উবাচ।

ততো ব্ৰহ্মষ্যঃ সৰ্ফো সিদ্ধা দেবৰ্ষয়স্তথা। ° হব্যবাহ^ পুৱস্কৃত্য ব্ৰহ্মাণ্ শ্বণং গতাঃ॥১॥

অগ্নিকরাও।

যোহসৌ বিশ্রবদঃ পুজো দশগ্রীবো মহাবলঃ। অবধ্যা বরদানেন ক্তো ভগবতা পুরা॥২॥ স বাধতে প্রজাঃ সর্কা বিপ্রকারৈর্মহাবলঃ। ততো নস্ত্রাভূ ভগবারান্যস্ত্রাতা হিবিদ্যতে॥ ৩॥

ব্ৰশোবার।

ন স দেবাস্থবৈঃ শক্যো যুদ্ধে জেতুং বিভাবসো।
বিহিত্ত তত্ত্ব যথ কার্য্যমভিতস্তন্য নিপ্রাছঃ ॥ ৪ ॥
তদর্থমবতীর্ণোখনৌ মনিয়োগাচ্চতুর্ভু জঃ ।
বিষ্ণুঃ প্রহরতাং শ্রেষ্ঠঃ স তথ কর্ম্ম করিষ্যতি॥ ৫ ॥
রাবয়ামান হিংসার্থস্য ক্ডোরপ্রমিনং ॥ ৪০ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাগদীপে পঞ্চসপ্রত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭৫॥

তত ইতি॥ ১॥ ২॥ বিপ্রকারেঃ বিবি ধ্য়ে প্রকারেঃ॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥

মার্কতের উবাচ।

পিতামহস্ততন্তেষা পদানধৌ শক্রমত্রবী । সবৈদেবগণৈঃ সাৰ্দ্ধং সম্ভব স্বং মহীতলে ॥ ৬॥ विस्थाः महात्रानुकीयु वानतीयु ह मर्खणः। জনয় হং সুতান বীরান্কামরপবলা হিতাম্ ॥ ৭ ॥ ততো ভাগানুভাগেন দেবগন্ধবিদানবাঃ। অবতর্তু মহীং সর্কে মন্ত্ররামাস্থরঞ্জনা॥ ৮॥ তেষাং সমক্ষং গদ্ধাব্বীং ছুন্ছু ভী নাম নামতঃ। শশাস বরদো দেবো দেবকার্য্যার্থসিদ্ধয়ে ॥ ১॥ পিতামহ্বচঃ প্রুত্বা গন্ধর্মী তুন্তুভী ভতঃ। মন্থরা মানুষে লোকে কুব্জা সমভবত্তদা॥ ১০ 🛭 শক্রপ্রভূতয়শ্চৈব সর্ব্বে তে সুরস্ত্তমাঃ। বানরক্ষবিরস্ত্রীযু জনয়ামাস্থরাত্মজান্ ॥ ১১ ॥ তেহম্বর্ত্তন্ পিতৃনু সর্বে যশসা চ বলেন চ। ভেক্তারোগিরিশৃঙ্গাণাং শালতাল শিলাযুধাঃ॥ ১২ ॥ বজ্রসংহননাঃ সর্বের সর্বের চৌঘবলাম্বর্থা। কামবীর্ঘ্যবলাকৈব সর্বে যুদ্ধবিশারদাঃ ॥ ১৩ ॥ নাগাযুতসমঞাণা বাযুবেগসমা জবে। যত্তেচ্চকনিবাসাশ্চ কেচিদত্ত বনৌকসঃ ॥ ১৪ ॥ এবং বিধায় তৎ সর্বাং ভগবালোঁ কভাবনঃ। মন্তর্হে বেধিয়ামাস যদ্যৎ কার্য্য যথা যথম ॥ ১৫॥

॥ ৬॥ ৭ ॥ ৮॥ ৯॥ ১ । ১১॥ ১২॥ বজ্রসংহননাঃ বজ্রবদ্ধ চাঙ্গাঃ॥ ১৩॥ যত্ত্বেচ্ছাততৈত্ব নিবাসোয়েষাৎ তে মতেচ্ছকনিবাসাঃ॥ ১৪॥ যৎষৎকার্য্য কৈকেয়ী প্রলোভনং রাম প্রবাজনাদিচ॥ ১৫॥ সা ভদ্বচঃ সমাজ্ঞায় তথা চক্রে মনোজবা। ইতক্ষেত্রশ্চ গচ্চত্তী বৈরসন্ধ্রুক্ষণে রতা॥ ১৬॥ ইত্যারণাকে পর্কাণি রামোপাখানে পর্কাণি বানরাচ্যুৎপত্তৌ বট্মপ্রত্যধিক দ্বিশ ততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৭৬॥

খুদিন্তির উবাচ।
উক্তং ভগবতা জন্ম রামাদীনাং পৃথক্ পৃথক্।
প্রস্থান কারণং ব্রহ্মন্ শ্রোতৃমিচ্ছামি কথ্যতাম্॥ ১॥
কথং দাশরথী বীরেরী ভাতরেরী রামলক্ষাণী।
সংপ্রস্থিতৌ বনে ব্রহ্মন্ মৈথিলী চ যশস্থিনী ॥ ২॥
মাক্তের উব্যাচ।

জাতপুলো দশরথঃ প্রীতিমানভ্বরূপ!।
ক্রিয়ারতির্থন্নরতঃ সতত বৃদ্ধসেবিতা। ৩।
ক্রেনেণ চাস্য তে পূলা ব্যবদ্ধন্ত মহৌদ্ধসঃ।
বেদেযু সরহস্যেযু ধনুর্বেদেযু পারগাঃ॥৪॥
চরিত্রক্ষচর্যান্তে ক্রুচনারান্দ পার্থিব!।
বদা তদা দশরথঃ প্রীতিমানভবৎ স্থা।। ৫॥
ক্যেটো রামোহভবভেষা র্ময়ামাস হি প্রজাঃ।
মনোহরতয়া ধীমান্ পিতুহুদয়নন্দনঃ॥ ৬॥
ততঃ স রাজা মতিমান্ মন্ত্রানিং বয়োহধিক্য।
মন্তর্যামাস সচিবৈধ্নাঞ্জিশ্চ পুরোহিতেঃ॥ ৭॥

সংধুক্ষণেদীপনে ॥ ১৬ ॥
 ইভ্যারণ্যকে পর্ত্তানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে
 য়ৣড়য়প্রত্যধিক দিশততমেহিধ্যায়ঃ ॥ ২৭৬ ॥

উক্তমিতি ॥১॥२॥७॥৪॥৫॥রামপদং নির্বক্তি জ্যেষ্ঠইতি॥৬॥।।

অভিষেক্ষ রাম্যা ধৌবরাজ্যেন ভারত ! 1 প্রাপ্তকালগুতে দক্ষে মেনিরে মন্ত্রিসন্তমাঃ॥৮॥ লোহিতাকং মহাবাহুং মন্ত্রমাতঙ্গামিনম্। দীর্ঘবাহুং মহোরকং নীলকুঞ্চিতমূদ্ধজন্॥৯॥ দীপামানং শ্রেয়া বীরং শক্রাদনধর বে। পারগং দর্বধর্মাণা বহস্পতিসমং মতৌ ॥ > ॥ সর্বানুরক্তপ্রকৃতিং সর্ব্ববিদ্যাবিশারদম। জিতেন্দ্রিমমিতাণামপি দৃষ্টিমনোহ্রম্ ॥ ১১ ॥ নিয়ন্তারমসাধুনা । তাংগ্রারং ধর্মচারিণামু। ' ধ্রতিমন্তমনাধুষ্যং জেতারমপরাজিতমু । ১২ ॥ পুত্রং রাজা দশরথঃ কৌশল্যানন্দিবর্দ্ধনম। 'সন্দৃত্য পরমাং প্রীতিমগচ্ছৎ কুরুনন্দন। ১৩ ॥ চিন্তরংশ্চ মহাতেজা গুণানামন্ত বীর্য্যবান্। অভ্যভাষত ভদ্রতে প্রীয়মানঃ পুরোহিতম্॥ ১৪॥ অদ্য পুষ্যো নিশি ব্ৰহ্মন্ পুণ্যং যে গমুপৈয়তি। সংভারাঃ সন্তিরন্তাৎ মে রামশ্চোপনিমন্ত্রতাম্॥ ১৫॥ * ইতি তদ্রাজবচন প্রতিশ্রুত্যাথ মন্থরা। रेकरक्षी मिल्सियामः कारल वहनमद्वी । ১७॥

॥ ৮ ॥ মহাতে শক্তজরক্ষমো বাহ্যন্ত তংদীর্ঘো আজান্পর্যান্তো বাহ্যদ্যতং॥৯॥১০॥ দর্ব্বশঃ অন্নব্তনঃ প্রকৃতরঃ প্রজাবস্মিত্তং দর্বান্ত-রক্ত প্রকৃতিং॥১১॥১২॥১৩॥ ভদ্রতে ইতি যুগিষ্টিরং প্রতি আশীর্ব্বচনং পুরোছিতং বদিষ্ঠং॥১৪॥১৫॥১৬॥

^{*} ইতি তদ্রাজবচন মিত্যস্ত প্রাকৃষ্ণ এব পুরো। ভবিতাবত রামঃ স্থতো ময়া। যৌবরাজ্যেইভিষেক্তব্যঃ পৌরেষু সহ মন্ত্রিভিঃ ইত্যেক শ্লেকঃ ক পুস্তকস্য

আদা কৈকেরি । দৌর্ভাগ্যং রাজ্ঞা তে খ্যাপিত নহৎ।
আশীবিষাস্থাং সাক্রুদ্ধণ্ডো দশতু তুর্ভগে॥ ১৭॥
স্থভগা খলু কৌশল্যা যক্তাঃ পুল্রোহভিষেক্যতে।
কুতো হি তব সৌভাগ্যা যক্তাঃ পুল্রো ন রাজ্যভাক্॥ ১৮॥
সা ত্র্বচনমাজ্ঞায় সর্বাভরণভূষিতা।
কেদীবিলগ্নমধ্যের বিভ্রতী রূপমুক্তমন্॥ ১৯॥
বিবিক্তে পতিমাসাদ্য হসন্তীব শুলিস্মতা।
প্রথম ব্যঞ্জয়নীব মধুরং বাক্যমন্ত্রবীং॥ ২০॥
সভাপ্রতিজ্ঞ যমে ত্বং কামমেক নিস্ফবান্।
উপাকুরুষ ত্রাজংক্তমান্ত্রস্থ স্কটাং॥ ২১॥

दारजावाह ।

বর্ণ দদানি তে হন্ত ভদগৃহাণ যদীচ্ছসি।
ভাবধ্যো বধ্যভাং কোহ্দ্য বদ্ধঃ কোহ্দ্য বিমৃচ্যভাম্॥ ২২॥
ধনং দদানি কন্সাদ্য বিশ্বভাং কন্স বা পুনঃ।
ব্রাহ্মণস্থাদিহান্যত্র যৎ কিঞ্চিদ্বিত্তমন্তি মে॥ ২৩॥
পৃথিব্যাং রাজরাজোঃশি চাতুর্ব্বর্ণ্যন্ত রক্ষিতা।
যন্তেহভিল্যিতঃ কামো বুহি কল্যাণি মা চিরম্॥ ২৪॥
সা তদ্বচনমাজ্ঞায় পরিগৃহ্থ নরাধিপম্।
ভাজনো বলমাজ্ঞায় তত এনমুবাচ হ॥ ২৫॥
আভিষ্চেন্তুক্ণ যন্তে রামার্থমুপকিশ্পতম্।
ভরতন্তবাপ্রোতুবনং গছতুরাঘ্রঃ॥ ২৬॥

॥১৭॥ ১৮॥ বেদীবৎবিলগ্নঃ ক্রেণা মধে, যেস্তাঃ॥ ১৯॥ ২০॥ কামং বরং উপাকুরুদ্ধ দেছি সংকটাৎ কঞ্চাৎ॥ ২১॥ ২২॥ ২৩॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬॥

🗱 স তদ্রাজা বচঃ শ্রুত্বা বিপ্রিয়ণ দারুণোদয়ম্। তুঃখার্ত্রো ভরতশ্রেষ্ঠ। ন কিঞ্চিদ্যাজহার হ॥ ২৭॥ ততস্তথোক্তং পিতরং রামে। বিজ্ঞায় বীর্যাবান্। বন^ প্রতম্থে ধর্মাত্মা রাজা সভ্যো ভবত্বিতি ॥ ২৮॥ তমন্বগচ্ছলক্ষীবান্ ধনুষাল ক্ষণস্তদা। সীতা চ ভাৰ্য্যা ভদ্ৰৱে বৈদেহী জনকাত্মজা॥২৯॥ ততো বনগতে রামে রাজা দশর্থস্তদা। সমযুজ্যত দেহস্য কালপ্যায়ধৰ্মণা 🖟 ৩০ ॥ রামন্ত গতমাজ্ঞায় রাজানঞ্ তথাগতম। অনায্য ভরতং দেবী কৈকেয়ী বাক্যমত্রবীৎ ॥ ৩১॥ গত দশর্থঃ স্বর্গৎ বনস্থৌ রামলক্ষাণৌ। গৃহাণ রাজ্যং বিপুলং ক্ষেমং নিহতকত্টকম্॥ ৩২॥ তামুবাচ স ধর্মাত্মা নৃশ্পদ্প বত তে কুত্র। পতি > হত্ত্বা কুলঞ্চেদমুৎসাদ্য ধনলুকায়া।। ৩৩।। অযশঃ পাত্যিত্বা মে মুর্চি, ত্ব্ কুলপাংশনৈ। সকামা ভব মে মাতরিত্যক্ত্রা প্ররুরোদ হ ॥ ৩৪॥ স চারিত্রণ বিশোধ্যাথ সর্বব্যক্তিসন্নিধৌ। অন্বয়ান্ত্রতরং রামং বিনিবর্ত্তনলালমঃ॥ ৩৫॥

॥ ২৭॥২৮॥ সীতালাদল পদ্ধতিন্ততো জাতত্বাদিয়মপিসীতা বিদেহাপত্য হাছিদেহী ॥ ২৯॥ কাল পর্যায় ধর্মণা মৃত্যুনা ॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ ৩০॥ ॥ ৩৪॥ চারিত্রাং বিশোধাইদং কৈকেব্যাব কৃতং নতুময়েকিঃপ্রদর্শ্য॥ ৩৫॥

^{*}স তদ্রাজাবতঃ গুলুহেত্যসা প্রাক্ নব পঞ্চ চ বর্ধাণিদগুকারণামান্তিতঃ। চীরাজিন জটাধারী রামোবসতু তাপনঃ ইত্যেক শ্লোকঃ কু পুশুক্স্য।

কৌশল্যাঞ্চ স্থামত্রাঞ্চ কৈকেয়ীঞ্চ স্কুতঃখিতঃ। অত্যে প্রস্থাপ্য যানৈঃ স শক্রত্মসহিতো যযৌ। ৩৬ 🏾 বশিষ্ঠবামদেবাভ্যাপ বিবৈশ্রন্থানাঃ সহস্রশঃ গ পৌরজানপলৈঃ সার্দ্ধং রামানয়নকাজ্জয়া॥ ৩৭ ৪ দদশ চিত্রকৃটস্থ সারামৎ সহলক্ষণম্। তাপদানামলক্ষারং ধারয়তং ধনুর্দ্ধরণ্। ৩৮। বিসর্ভিঃ স রামেণ পিতৃর্বচনকারিণা। নন্দিগ্রামেইকরোদ্রাজ্য পুরস্কুত্রাস্য পাতুকে॥ ৩৯॥ রামস্ত পুনরাশক্ষ্য পৌরজনপদাগমন। প্রবিবেশ মহারণ্যং শরভঙ্গাশ্রমণ প্রতি॥ ৪•॥ সংক্রত্য শরভঙ্গং স দপ্তকারণামাশ্রিভ:। নদীং গোদাবরী রুম্যামাশ্রিত্য নার্থসন্তদা ॥ ৪১ ॥ বস্তস্ত্রস্রাম্য্য ততঃ শূর্পন্থাকুত্র। খরেণাসীমহবৈরং জনস্থান নিবাসিনা॥ ৪২ ॥ রক্ষার্থন তাপসানান্ত রাঘবো ধর্মাবৎসলঃ। চত্দিশ সহসাণি জ্বান ভুবি রাজসান্। ৪০॥ দুষণপ্ত খরবৈশ্ব নিহত্য স্থমহাবলী। চক্রে ক্ষেমং পুনর্ধীমান ধর্মারণ্যং স রাঘবং॥ ৪৪॥ হতেষু তেষু রক্ষঃস্থ ততঃ শূর্পণখা পুনঃ। यायो निक्छनारभोष्ठी नका जाजूर्नित्यमनम् ॥ ८०॥ ততো রাবণমভ্যেত্য রাক্ষসী তুঃখমূচ্ছিতা। পপাত পাদয়োভা তৃ: সংশুষ্কর্ষিরাননা ॥ ৪৬ ॥ তা তথা বিক্কাং দৃষ্ট্ব। রাবণঃ ক্রোধমুচ্ছি তঃ। উৎপপাতাসনাৎ ক্রছো দত্তৈদন্তারুপস্পুশন্॥ ৪৭॥ 09 | 09 | 05 | 03 | 80 | 83 | 82 | 80 | 88 | 80 | 80 | 89 | 89 |

স্থানমাত্যান্ বিস্তজ্যাথ বিবিক্তে তামুবাচ সং। কেনাপ্যেবং কুভা ভদ্রে মামচিন্তাবিমন্য চ॥ ৪৮॥ कः भूत्र जीक्रमामाना मक्त्रशादिवर्निष्यवरा । কঃ শির্স্যাগ্রমাধায় বিশ্বস্তঃ স্বপতে সুখ্য ॥ ৪৯ ॥ आशीविषः (चात्रजतः शारमन न्यूगजीह कः। সি॰ হং কেশরিণং কল্চ দং ষ্ট্রায়াং স্পৃশ্য তিন্ত ।। ৫০॥ ইত্যেবং ক্রুবতস্তম্য শ্রোভোভ্যস্তেজনোহর্চিষঃ। নিশ্চেরুর্দহতো রাত্রৌ রুক্ষস্যেব স্বরন্ধ তঃ ॥ ৫১ ॥ তস্য তৎ সর্বানাচখ্যে ভগিনী রামবিক্রময়। থরদূষণদ^যুক্তং রাক্ষসানা^ পরাভবম্॥ ৫২॥ 🛮 * স নিশ্চিত্য ততঃ ক্বত্যং স্বসারমুপসান্ত্য চ। উর্দ্মাচক্রমে রাজা বিধায় নগরে বিধিম্। ৫০॥ ত্রিকৃট^ সমতিক্রম্য কালপ্রত্যেব চ। দদর্শ মকরাবাসং গন্তীরোদং মহোদধিম্। ৫৪॥ তমতীত্যাথ গোকর্ণমভ্যপচ্চদশাননঃ। দয়িতং স্থান মব্যগ্রং শূলপাণেশ্মহাত্মনঃ॥ ৫৫॥

॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ সিংহং হিংশ্রং কেসরিণং সটাবন্তং মৃগরাজং ॥ ৫০ ॥ ত্যোতাভাশ্চশ্বাদিরক্ষেভাঃ তেজসো চিবোমেজুলিাঃ ॥ ৫১ ॥ খর-দ্যণসংযুক্তং তৎপরাভবসহিতং ॥ ৫২ ॥ বিধিং রক্ষাং ॥ ৫৩ ॥ পুরারমভরাৎ বিশ্বামিত যজ্ঞ প্রসাদেন জাতাং॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥

^{*} দৰিশ্চিত্যতাসা প্ৰাক্ ততো জ্ঞাতিবদং জ্ঞাত্ব। রাবণঃ কালোচো-দিতঃ । রামস্য বধমাকাজ্জনারীচং মনসাধ্য দিত্যক শ্লোকঃ ক পুস্তক্ষ্য ।

তত্রাভাগচ্চনারীচং পূর্বামাতাং দশাননঃ!
পুরা রামভয়াদেব তাপদ্যং সমুপাশ্রিতম্ ॥ ৫৬॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাখ্যান পর্বাণি রামবনাভিগমনে
সপ্ত সপ্তত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৭৭॥

मार्करकत छेत्।

মারীচন্ত্রথ সংভাত্যে দৃষ্টা রাবণমাগতগৃ।
পূজ্য়ামাস সংকারেঃ ফলমূলাদিভিন্ততঃ ॥ ১॥
বিশ্রন্তর্গেনমাসীনমন্বাসীনঃ স রাক্ষসং।
উবাচ প্রস্কৃতং বাক্যং বাক্যজ্জো বাক্যকোবিদন্ ॥ ২॥
ন তে প্রকৃতিমান্ বর্ণঃ কচিছে ক্ষেমং পুরে তব।
কচিছে প্রকৃতয়ং সর্বা ভজন্তে ত্বাং যথা পুরা ॥ ৩॥
কিমিহাগমনে চাপি কার্যন্তে রাক্ষ্যসেশ্বর!।
কৃতিমিতোব তিদ্দি যদ্যপি স্যাৎ স্কৃত্ত্বরু ॥ ৪॥
শশংস রাবণস্তক্ষৈ তৎ সর্বাং রাম্যেটিত্র্।
সমাসেনব কার্যাণি ক্রোধামর্যসমন্বিতঃ ॥ ৫॥
মারীচন্ত্রবীৎ প্রুদ্ধা সমাসেনব রাবণম্।
ভলন্তে রামমাসাদ্য বীর্যজ্ঞো হৃদ্মি তন্তু বৈ ॥ ৬॥

ii a Sii

ইত্যারণাকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্ত সপ্তত্যধিক,দ্বশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৭৭॥

মারীচ ইতি ॥ ১ ॥ প্রসূতং পুক্ষলার্থবং ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ রামং আসাদ্য অলং রামং নৈবাসাদয়ে রিতার্থঃ অলং খল্লোঃ প্রতিষেধয়োঃ প্রাচাৎ ক্রেভিনিষেধার্থকালং শব্দযোগেক্র্য প্রত্যয়ঃ ॥ ৬ ॥ বাণবেগ॰ হি কস্তস্ত শক্তঃ সোচুং মহাত্মনঃ। প্রজ্যায়াশ হি মে হেতুঃ স এব পুরুষর্মভঃ ॥ ৭ ॥ বিনাশমুখনেতত্তে কেনাখ্যাতং ছুরাত্মনা। তমুবাচাথ সকোধো রাবণঃ পরিভৎ স্থন্। ৮। অকুর্বভোহত্মদচনং স্থান্মত্যুরপি তে ধ্রুবম্। মারীচন্চিত্তযামাস বিশিক্তীমরণং বর্ম॥ ৯॥ অবশ্যং মরণে প্রাপ্তে করিষ্যাম্য যুগতম্। ততস্ত্র প্রত্যবাচাথ মারীচো রাক্ষদেশ্রম্॥ ১০ । কিন্তে সহুং ময়। কার্য্যং করিষ্যাম্যবশোহপি তৎ। ভমব্রবীদ্দশগ্রীবো গচ্ছ সীতাপ প্রলোভয় ॥ ১১॥ রজুশঙ্গো ভূত্বা রত্নচিত্রতভূরুইঃ। ধ্রুবং পীতা সমালক্ষ্য স্বাং, রামপ্রোদ্যিষ্যতি ॥ ১২ ॥ অপক্রান্তে চ কাকুৎস্থে সীতা বশ্চা ভবিষাতি। তামাদায়াপনেষ্যামি ততঃ স ন ভবিষ্যতি॥ ১৩॥ ভার্যাবিযোগ দি ব্রিদ্ধিরেত । সহং কুরু**ষ মে**। ইত্যেবমুক্তো মারীচঃ ক্লুগোদকমথাত্মনঃ॥১৪ রাবণ্• পুরতো যান্তম**ন্বগচ্ছ**ৎ **স্বতুঃখিতঃ।** ততস্থতাভ্রমণ গত্বা রামস্যাক্লিফ কর্ম্মণঃ॥ ১৫॥ চক্রত্তত্তথাসর্বাস্থ্যতা যৎপূর্বাসাত্ত্রতম্। রাবণস্ত যতিভূবি। মুগুঃ কুণ্ডী তিদগুধৃক্॥ ১৬॥ মৃগশ্চ ভূত্বা মারীচন্তং দেশমুপজগাতুঃ। দর্শবাসাস মারীচো বৈদেহাং মুগৰপধৃক্॥ ১৭ ॥

চোদরামাস তভার্থে সা রামং বিধিচোদিতা। রামস্তস্তাঃ প্রিয়ণ কুর্বান্ ধনুরাদায় সত্ত্রঃ ॥ ১৮ ॥ तकादर्श लक्ष्म १९ ना ख श्रवरणी मृत्रलिश्नया। স ধন্বী বদ্ধত্নীরঃ খড্গগোধাসুলিত্বান্॥ ১৯॥ **অবধাবন্দা রামো রুদ্রন্তারামূগং যথা।** সোহন্তর্হিতঃ প্নস্তস্ত দর্শনং রাক্ষদোহব্রজং॥ ২০॥ -চকর্ষ মহদধান রামস্তং বুরুপে ততঃ। নিশাচরং বিদিত্ব্য তং রাঘবঃ প্রতিভানবঃনু ॥ ২১ ॥ অমে। ঘং শরমাদার জঘান মৃগরূপিণ্ম। সরাম বাণাভিহতঃক্লবা রামস্বরং তদা ২২॥ চা সীতে লক্ষণেত্যেবৎ চুক্রোশার্ত্তস্থরেণ হ। শুশ্রাব তস্য বৈদেহী ততন্তাং করুণাণ গিরম্॥ ২৩॥ সা প্রাধাবদ্যতঃ শব্দন্তামুৰাচাথ লক্ষণঃ। অলস্তে শঙ্কয়া ভীরু কো রামণ প্রহরিষ্যতি ॥ ২ও ॥ মুহূর্ত্তাদ্দি ক্যাসে রামং ভর্তারং স্বং শুচিন্মিতে। ইত্যুক্তা সা প্রবৃদ্তী পর্য্যশঙ্কত লক্ষ্যমৃ । ২৫॥ হতা বৈ স্ত্রীস্বভাবেন শুক্লচারিত্রভূষণ্য্ 🐾। সা তং পরুষমারকা বক্তুং সাধী পতিব্রতা ॥ ২৬ ॥ रैनम कारमा ভবেम ह ! य॰ दः व्यार्थप्रस्म ऋना। অপ্যহং শস্ত্রমাদায় হন্যামাত্মানমাত্মনা॥ ২৭॥

়॥১৮॥ গোধাজ্যাঘাত ব্যবণং অসুলিত্ত্বতদ্বান্॥১৯॥ তারাম্গং তারারপং মৃগং প্রজাপতিঃ স্বাংস্থিতরং মৃগোভূরাজগাম ত একজঃ শিরোই ফ্রিনতদে তম্গণীবং নাম নক্ষতং॥২০॥২১॥২২॥২০॥২১॥ পগ্য শঙ্কং লক্ষণো ম্যাভিলাম্বানিতি শঙ্কামক্রেং ॥ ২৫॥ ২৬॥২৭॥

^{*} ভূষণ মিতাত্ত ভূষণেতি পাঠঃ খ পুন্তকে।

^{*} বিষোঠীমিত্যত্ত বৈদেহীমিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

কথং হি ভিন্নকর চং শ পি আনং বনগোচরস্।
উপস্থায় শ মহানাগং করেণু শূকর শপুশেং ॥ ৩৯ ॥
কথং হি পীত্বা মাধীক শীত্বা চ মধুমাধবী ।
লোভং সৌবীরকে কুর্যানারী কাচিদিতি সারে শ ॥ ৪০ ॥
ইতি সা তং সমাভাষ্য প্রবিবেশাশ্রমং ততঃ।
কোধাৎ প্রস্কুরমাণোষ্ঠী বিধুন্থানা করে মুহুং ॥ ৪১ ॥
তামভিদ্রুতা স্থোলী নাবণং প্রত্যাধ্যমং।
ভংস্থিত্বা চ ৰক্ষেণ স্থরেণ গতচেতনা । ৪২ ॥
স্কুজেমু নিজ্ঞাহ উর্ন্ধুমাচক্রমে ততঃ।
তাং দদশ ততো সৃধ্যে জটার্মিরিগোচরং।
কুদ্রীং রামরামোত ক্রিয়মাণাং তপন্থিনীন্ ॥ ৪৩ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্কাণি রামোপাখ্যানপর্কাণি মারীচব্যে অফসপ্তত্যধিকদ্বিশততমে,হধ্যারঃ ॥ ২৭৮॥

ভিন্নকরটং ভিন্নগণ্ডস্থলং মত্তং করেণু ইন্ডিনী। ৩৯ ॥ মাধীকং মধু পুষ্পজং মদ্যং মধুমাধবীং ক্ষোজ্জাং স্থাং দৌধীরং কাঞ্জিকং॥ ৪০॥ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪৩॥

> ইত্যারণাকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে অফ সপ্তত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৭৮॥

^{*} পদ্মিন মিভাত্ত হস্তিন মিভি পাঠঃ য পুস্তকে।

* মহানাগ মিভাত্ত মহাভাগ মিভি পাঠঃ য পুস্তকে।

^{*} স্বরে ইত্যত্ত স্বরেদিতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

মার্কণ্ডের উবাচ।

मथा দশরথসা। भौज्जि हो युतक व जिल्हः। গুধরাজো মহাবীর: সম্প:তির্যস্য সোদর: ॥ > ॥ **স দদর্শ তদা সীতা**ণ রাবণাশ্বগতাং স্থান। সক্তোধোহভাদ্রবৎ পক্ষী রাবণণ রাক্ষণেপর ॥ ২॥ व्यरेथन मखवीका रुषा मुक्ष मुक्षय रेमिषलीम्। ধি্যমাণে ময়ি কথং হরিষ্যাস নিশাচর ॥ ৩ ॥ न हि त्य त्याकार्म जीवन् यपि ता १ एक तम दश्य । উক্তৈব্বণ রাফদেন্দ্রং তং চকর্ত্ত নথরৈর্ভ্শন্॥ ৪॥ পক্ষতুগুপ্রহারেশ্চ বছশো জর্জরিক ত্র । চক্ষার রুধিরং ভূরি গিরিপ্রস্রবলৈরিব ॥ ৫॥ স বধ্যমানো গৃধেণ রামপ্রিযহিতিযিলা। থড গমাদায় চিচ্ছেদ ভুজৌ তস্য পত্ত্ৰিণঃ ॥ ৬॥ নিহত্য গুধুরাজ ৭ দ ভিলার শিখরে পমন্। উর্দ্ধাচক্রমে সীতাং গৃহীত্বাক্ষেন রাক্ষ্ণঃ॥ ৭॥ যত্র যত্র তু বৈদেহী পশ্যত্যাশ্রমমণ্ডলম্। সরো বা সরিতো বাপি তত্ত্রমুঞ্চি ভূবণ্ম॥৮॥ रा पपर्भ गिति अप्टर शक्ष वानतश्रुक्रदान्। তত্র বাসে। মহদ্দিব্যমুৎসমর্ক্ত মনস্থিনী ॥ ৯ ॥ তত্তেষা বানরেন্দ্রাণা পপাত প্রনাদ্ধত্য। মধ্যে স্থপীতং পঞ্চানাং বিত্যুন্মেঘান্তরে যথা।। ১০।।

সংখতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ অমৈথিলীং স্বাচাদৌ মৈথিলী স্বাজানীয়া সুষা মেথলস্থতেতার্থঃ প্রিয়মাণে জীবতি ॥ ৩ ॥ নখরেঃ নথৈস্তীক্ষৈঃ ॥ ৪ ॥ চক্ষার স্থলার ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ অক্ষেন উৎসঙ্গেন ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ গিরিপ্রস্থে পর্যাতশি-খরে প্রস্থোজিয়াং মান ভেদে সানাবস্থা চ্চবস্থনীতি মেদিনী ॥ ১ ॥ ১০ ॥

অচিরেণাতিচক্রাম থেচরঃ খে চরল্লিব। प्रकर्भाध পুরী॰ রম্যাং বছদ।রা॰ মনে।রমান্॥ ১১॥ প্রাকারবরসমাধাৎ নির্মিতা প্রিশ্বকর্মণা। প্রবিবেশ পুরীং লক্ষ্যং সসীতো রাক্ষসেশ্বর: ॥ ১২ ॥ এবং ক্তাযাং বৈদেহাা রামে। হত্তা মহামুগ্য । নিরুত্তো দদুশে ধীমান্ ভাতরং লক্ষণ্ং তদী॥ ১০॥ কথমুৎস্থজা বৈদেহীং বনে রাক্ষসমেবিতে। ইতি তং ভাতরং দৃষ্ট্_বা প্রাপ্তে,হর্মীতি ব্য**গ€্যং॥** ১৪॥ মুগৰাপাধরেশাথ রক্ষদা সোহপাকর্ষণন্। ভাতুরাগমনপ্রৈর চিত্তমন্ পর্য্তপ্যত॥ ১৫॥ গর্হ্যনেব রামস্ত ত্রবিতত্তং সমাসদং। অপি জীবতি বৈদেহী নেতি পঞ্চামি লক্ষ্মণ !॥ ১৬॥ তম্ম ৩ৎ স্ক্রমাচখো সীতাযা লক্ষণে বচঃ। यञ्च का जानमार देव दिन्दी शिक्तिर वहः ॥ ३१ ॥ দহ্মানেন তু হৃদা রামোই ভাপতদার্থমন্। স দদর্শ তদা গুধু নিহত পর্বতোপমন্। ১৮। त्राकमः भारमानखः विक्रम् वनव**न्नन्यः।** অভ্যধাৰত কাকুৎস্থস্তত্তং সহলক্ষণঃ॥১৯॥ স ভারুবচে তেজস্বী সহিতৌ রামলক্ষাণৌ। গুদ্রাজোহস্মি ভক্রণ বাং স্থা দশর্থস্থ বৈ॥ ২•॥ তত্ত্ব তত্ত্বনং প্ৰত্যা সংগ্ৰহ ধনুষী শুভে। কোহ্যং পিতরমস্মাকং নামাহেভাচতুশ্চ তৌ । ২১॥ ॥ ১১ ॥ প্রাকারঃ পরিধিভিত্তিঃ বপ্রস্তদাহং বেণুময়ং ছুর্গৎ তাভাাং সংবাধা তুগমাবর্ত্তঃ স্থানে পুমানক্ত্রী বেনুক্লেত্রেচপেটকে ইতি মেদিনী ॥ ५२ ॥ ५७ ॥ कथर व्यारिक्षांम 😈 मचन्नः । ५८ ॥ ५৫ ॥ ५७ ॥ ५१ ॥ ५৮ ॥ ॥ ১৯ ॥ বাং মুব্রো:॥२०॥ আছবুতে॥২১॥

ততো দদুশভুস্তৌ তং ছিন্নপক্ষয়ং খগম্। ত্যোঃ শশংস গুধস্থ সীতার্থে রাবণাদ্ধন্। ২২ ॥ অপুক্তদ্রাঘ্রো গুধুং রাবনঃ কাং দিশণ গতঃ। তক্ত গুধুঃ শিরঃকল্পৈরাচচক্ষে মমার চ॥২৩। দক্ষিণামিতি কাকুৎস্থো বিদিস্বাস্থা তদিঙ্গিতম্। সংকারং লাম্রয় মাস স্থায়ণ পূজ্যন্ পিতৃঃ॥ ২৪। ততো দুট্য অমপদ ব্যপবিদ্যুষীমঠন। বিধ্নস্কল্ম শূন্ত গোমাযুশত্সস্কুল্। ২৫॥ ष्ठुःशरमाकममावित्को देवत्म शैष्ट्रतना कित्वो। জগ্মতুর্দগুকারণ্যং দক্ষিণেন পরন্তপৌ॥২৬॥ বনে মহতি তক্মিংস্ত রামঃ সৌমিত্রিণা সহ। দদশ মৃগযুথানি দ্ৰমাণানি স্কাশঃ॥২৭॥ শব্দঞ্চ ছোর সজ্বানাং 🤻 দাবাগ্নেরিব বর্দ্ধতঃ। অপশ্রতাৎ মুহূর্ত্তাচ্চ কবন্ধং যোরদর্শনন্॥ ২৮॥ মেঘপকাতসক্ষাশং সালককা মহাভূজন্। উরোগতবিশালাক মহোদরমহামুখ্। ২৯। যদৃচ্ছযাথ তদ্রকঃ করে জগ্রাহ লক্ষণম্। বিষাদমগমৎ সদ্যঃ সৌমিত্রিরথ ভারত ! ॥ ৩০ ॥ স রামসভিসংপ্রেক্ষ্য ক্রয়তে যেন তন্মুখ্। বিষয়শ্চাত্রবীদ্রামণ পশ্চাবস্থামিমাণ মম ॥ ৩১ ॥

২২॥২৩॥২৪॥২৫॥২৬॥২৭॥২৮॥ উর্স নেত্রে উদরে মুখঞ্চযক্ত কবন্ধঃ শীর্ক-ছীনঃ পুমান্ ॥ ২৯॥ ও০ ॥ যেন যতঃ তন্মু এং ততঃ ক্ষাতে॥ ৩১॥

^{*} দাবামেরিব বর্দ্ধত ইত্যাত্র দাবামিরিব বর্দ্ধন ইভি পাঠঃ ম প্রতকে।

इत्रविक्षव देवरमञ्चा सम हायसूर्वा । রাজ্যভ্রংশশ্চ ভবতস্তাত্ত্য মরণং তথা ॥ ৩২ ॥ নাহং ত্বাপ সহ বৈদেহা সমেতং কোশলাগভ্য। দ্রক্যামি পৃথিবীরাজ্যে পিতৃপৈতামহে স্থিত্য॥ ৩০॥ क्कान्छ। र्याया धन्। य क कुनना कमनी करनः। অভিষিক্তস্ত বদনং সোমং শান্তঘনং যথা॥ ৩९॥ এবং বছবিধং ধীমান বিললাপ স লক্ষ্মণঃ। তমুবাচাথ কাকুৎস্থ: সম্ভূমেম্বপ্যদন্ত মঃ॥ ৩৫॥ মা বিষীদ নরব্যান্ত । নৈষ কশ্চিন্নযি স্থিতে। ছিন্ধ্যস্ত দক্ষিণ্ং ব'হুং ছিন্নঃ সব্যো মধা ভুজঃ॥ ৩৬॥ ইত্যেবং বদতা তম্ম ভুজো রামেণ পাতিতঃ ৷ খডে গন ভূশতীক্ষেন নিক্নন্তব্যিলক। গুৰুৎ। ৩৭।। ততোহস্ত দক্ষিণ্ বাছ্ৎ থড়েগ নাজপ্লিবান্ বলী ৷ সৌমিত্রিরপি সংপ্রেক্ষ্য ভাতরং রাঘবং স্থিত।। ৩৮। পুনর্জ্যান পার্শ্বে বৈ তদ্রকোলক্ষাণো ভূশন্। গতাস্থরপতদুমৌ কবন্ধা স্থমহাৎস্ততঃ ॥ ৩৯ ॥ ত অদেহাদিনিঃ হত্য পুরুষো দিব্য দর্শনঃ। मनुर्भ निवमास्थाय निवि स्था हेव खलन्॥ 8०॥ পপ্রচ্চ রামস্তং বাগ্মী কন্তং প্রবৃহি পৃচ্ছত:। কাম্যা কিমিদং চিত্রমাশ্চর্যাং প্রতিভ†তি মে॥ ৪১॥

॥৩২॥৩৩॥ ৩৪॥ এবং বহু বিধং রামমত্রবীৎ অসংভ্রম: নির্ভয়ঃ॥ ৩৫॥৩৬॥॥ ৩৭॥ বিনিঃ সৃত্য দিব্যদশনোভূৎ প্রক্ষঃ ক্রবস্কানুদ্ধারী স চ দৃশোদ্ফঃ। ৩৮॥ ৩৯॥ ৪০॥ ক্রম্যা ইচ্ছয়া॥ ৪১ ॥

^{*} কুশলাজশমীজলৈরিতাত্ত কুশলাজশমীলবৈরিতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

ভ্যাচচক্ষে গন্ধবেন। বিশাবস্থারহং নূপ!।
প্রাপ্তো ব্রাহ্মনশাপেন যোনিং রাক্ষমসেবিতাম্॥ ৪২॥
রাবণেন হ্বতা মীতা রাজ্ঞা লক্ষ ধিবাসিনা।
স্থ্রীবমভিগচ্ছ ত্ব^ * স তে সহাং করিষাতি॥ ৪০॥
এষা পশ্পা শিবজলা হংসকার প্রবায়তা।
খ্যামূকস্থা শৈলস্থা সন্নিকর্ষে ভড়াগিনী॥ ৪৪॥
বসতে তত্র স্থ্রীবশ্চতুর্ভিঃ সচিবৈঃ সহ।
ভ্রাতা বানররাজন্যে বালিনো হেমমালিনঃ॥ ৪৫॥
তেন ত্বং সহ সঙ্গম্য ত্বংখমূলং নিবেদয়।
ত্ব বানররাজন্য বালিলো শ্বেমালিনঃ॥ ৪৬॥
এতাবচ্ছক্যমন্মাভিক্তিকুং দ্রুক্টাসি জানকীম্।
ধ্বং বানররাজন্য বিদিতো শ্বেম্যালয়ঃ॥ ৪৭॥
ইত্যুক্ত্বান্তর্হিতো দিবাঃ পুরুষঃ স মহাপ্রভঃ।
বিশ্বরং জগ্মতুশ্বেটি প্রক্ষঃ স মহাপ্রভঃ।

ইত্যারণ্যকে পর্কাণ রামোপাখ্যান পর্কাণ কবন্ধহননে ঊনাশীত্যধিকদ্বিশততমোহ্য্যায়ঃ ॥ ২৭৯॥

18২18৩।পেন্পানামতঃ তটাকিনী সরসী ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ইত্যারণাকে পর্কাণ নৈলকণ্টীয়ে ভারতভাবদীপে উনাশীত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭৯।।

* ত্মিতাত্র স্বৈতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

* রাবণাদয় ইত্যত্র রাবণাদয় ইতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

মার্কতের উবাত।

ততোহি বিদূরে নলিনী প্রভূতকমলে (ৎপলাম্। মীত। হরণত্রঃখার্ত্তঃ পম্পান রামঃ সমাসদং ॥ ১॥ মারুতেন সুশীতেন সুখেনামূতগানিনা। সেবামানো বনে তিমানু জগাম মনসা প্রিয়াম্॥ ২॥ বিল্লাপ স * রাজেন্দ্র স্তত্তকান্তামনুস্মরন্। কামবাণাভিসন্থঃ সৌমিত্রিস্তমথাত্রবীৎ ॥ ৩ ॥ ন ত্বামেবংবিধো ভাব: স্প্রন্ট মহতি মানদ!। আত্মবন্তমিৰ ব্যাধিঃ পুরুষ^ রুদ্ধশীলিনম্ 🛭 । ৪ ॥ প্রবৃত্তিরুপলক। তে বৈদেহা রাবণস্থ চ। তাং স্বং পুরুষকারেণ বুদ্ধা চৈবোপপাদয়॥ ৫॥ অভিগচ্ছাৰ স্থগ্ৰীৰণ শৈলস্বং হরি,পুঙ্গৰম্। ময়ি শিৰোচ ভূত্যেচ সহায়েচ সমাশ্বস। ৬॥ এব∽ वहाविद्वारिकार्वकारान म ताघवः। উক্তঃ প্রক্রতিমাপেদে কার্য্যে চানস্তরোহভবৎ॥ १ । নিষেব্য বারি পান্সায়ান্তর্পযিত্বা পিতৃনপি। প্রতম্বরুর ভৌবারৌ ভাতরোরামলক্ষণী। ৮। তার্ষ্যমূকমভোত্য বছ্মূলফলক্রমম্। গিঘ্যতো বানরান্ পঞ্ বীরৌ দদুশতুস্তদা॥ ১॥ সুগ্রীবঃ প্রেষ্যামাস সচিবং বানরং তয়োঃ। বুদ্ধিমন্ত ৽ হনুমন্ত ং হিমবন্তমিব স্থিতমু ॥ ১• ॥ ,

তত ইতি অবিদূরে সমীপে নলিনীং প্রক্ষরিণীং উৎপলানি কুমুদানি ।। ১ ॥ অমৃত গান্ধিনা অমৃত সদৃশেন ।। ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ উপপাদয় সফলীকুঞ্ ॥ ৫॥ ৬ ॥ অনন্তরঃ সংলগ্নঃ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ঋষানুকং পর্বতং ॥ ৯ ॥ ১০ ॥

^{*} বাজেন্দ্র ইত্যত্ত রাজেন্দ্রেতি সম্বোধনান্ত পাঠ:কপুস্তকে

তেন সম্ভাষ্য পূর্ব্ব^ তৌ স্থগ্রীবমভিজগ্মতুঃ। সথাং বানররাজেন চক্রে রামন্তদা নুপ। ॥ ১১॥ তদ্বাদো দর্শধামাস্কুস্তম্ভ কার্য্যে নিবেদিতে। বানরাণাম্ভ যৎ সীতা ব্রিয়মাণা ব্যপাস্থজৎ ॥ ১২ ॥ তং প্রত্যয়কর<u>ে লক্ষা স্থ</u>াবিং প্রব্যাধিপম্। পুথিব্যান বানবৈশ্বহো স্বয়ং রামোহভাষেচ্যং! ॥ ১৩ ॥ প্রতিজভ্তে চ কাকুৎস্থঃ সমরে বালিনো বধম। স্ত্রীবশ্চাপি বৈদেহাঃ পুনরান্যনং নৃপ। ॥ ১৪॥ ইত্যুক্ত । সময় ~ ক্রা বিশ্বাস্থা চ পারস্পরম্। অভ্যেত্য সৰ্বে কিন্ধিন্তাং তস্থু কি ভিকাজিকণঃ॥ ১৫॥ স্থাত্তীবং প্রাপ্য কিঞ্চিন্ধ্যাং ননাদৌঘনিভস্বনং। নাম্ম তং মমুষে বালী তারা তং প্রত্যুষেধ্যৎ॥ ১৬॥ যথা নদতি সুত্রীবো বলবানেষ বানরঃ। মন্যে চ, প্ররবান্ প্রাপ্তোন স্বং নিষ্ক্রান্তমর্হান ॥ ১৭ ॥ হেমমালী ততো বালী তারাৎ তারাধিপাননাম। প্রোবাচ বচনং বাগ্মী তা> বানরপতিঃ পতিঃ॥ ১৮॥ স্কাভূতকুতজা বং পশা বুদ্ধা সম্বিতা। কেনাপাশ্রয়বান প্রাপ্তো মীম্য ভাতৃগন্ধিকঃ॥ ১৯॥ চিন্তযিত্বা মুহূর্ত্তম্ভ তারা তারাধিপপ্রভা। পতিমিত্যব্রবীৎ প্রাজ্ঞা শূণু সর্কাং কপীশ্বর!॥২০॥ হৃতদারো মহাসত্ত্বো রামো দশরথাত্মজঃ। তুল্যারিমিত্রতাং প্রাপ্তঃ স্থ্রীবেণ ধমুর্দ্ধরঃ॥২১॥

॥ ১১॥ ১২ ॥ ১৩॥ ১৪ । ১৫॥ ওঘোজনরন্দস্তরিভঃ স্বনোযস্ত ওঘোবেণো জলস্মচ রন্দপর্ব প্রায়াঞ্চেতি মেদিনী॥ ১৬॥ আজয়বান্ পারবলাঞিতঃ

11 24 11 24 11 29 11 50 11 52 11

ভাতা চাষ্ঠ মহাবাহুঃ দৌমিত্রিরপরাজিতঃ। লক্ষণো নাম মেধাবী স্থিতঃ কাৰ্য্যাৰ্থনিদ্ধয়ে॥ ২২॥ रेमम् क बिविनरे कर इस्त्र मार का निला खुकः। জামবানুক্ষরাজন্চ সুগ্রীবসচিবাঃ স্থিতাঃ ॥ ২৩॥ সৰ্বএতে মহাত্মানো বুদ্ধিমন্তো মহাবলাঃ। আলং তব বিনাশায় রমেবীর্যবলাশ্রয়াও ॥ ২৪॥ তশুস্তিদাক্ষিপ্য বচো হিত্যুক্ত^ কপীশ্বরং। প্রাশস্কৃত তামীযুঁ: সুগ্রাবগতমানসাম্ ॥২৫ ॥ তারাৎ পর্যযুক্তা তু নির্বগাম গুহামুখাৎ। স্থিতং মাল্যবতোহভ্যানে স্ক্রীবং দোহভ্যভাষত॥ ২৬। অসকুত্রৎ ময়া পূঝং নির্ভ্জিতো জীবিতপ্রিয়ং। মুক্তো জ্ঞাতিরিতি জ্ঞাত্বা কাত্মরা মরণে পুনঃ॥ ২৭॥ ইত্যক্তঃ প্রাহ্ন সুগ্রীবো ভ্রাতরণ হেতুমদ্বচঃ। প্রাপ্তকালমমিত্রয়ে। রামং স্যোধ্যল্পির ॥ ২৮॥ হতদার্থ্য মে রাজন্ হতর জ্যেষ্ট ত্রা। কিং মু জীবিতসামর্থ্যমিতি বিদ্ধি সমাগতম্ ॥ ২৯ ॥ এবমুক্ত্রা বছবিধং ততস্তৌ সন্নিপেততুঃ। সমরে বালিস্থগীবৌ শালতালশিলাযুধৌ ॥ ৩० ॥ উভৌ জন্ম হুরন্যোন্যন্তৌ ভূমৌ নিপেততুঃ। 'উভৌ ববল্গভুশিত্তং সুক্তিভিশ নিজম্বভুঃ॥ ৩১॥ উভৌ রুধিরসংসিক্তৌ নথদন্তপরিক্ষতৌ। শুশুভাতে তদা বীরৌ পুষ্পিতাবিব কি×শুকৌ। ৩২॥

॥ २२ ॥ २७ ॥ २৪ ॥ ঈরু : ঈর্ষারু ॥ २৫ ॥ २७ ॥ २৭ ॥ २৮ ॥ জীবিতসা-মুর্থাং জীবনতা শ্লাঘ্রং ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥

न विश्विखरगर्यार्य एक यन। कन्छन मुखरा । স্থগ্রীবন্থ তদা মালা > হ্নুমানু কণ্ঠ আসজৎ। ৩০। স মাল্যা তদা বীরঃ শুশুভে কণ্ঠসক্ত্যা। শ্রীমানিব মহাশৈলো মলযো মেঘমালযা। ৩৪॥ ক্লতচিহ্নস্ত সূর্ত্রীবং রামো দৃষ্ট্র মহাধন্মঃ। কিচকর্ষ ধন্ত্র: শ্রেষ্ঠং বালিমুদ্দিশ্র লফ্যবং ॥ ৩৫ ॥ বিক্ষারস্তব্য ধনুষো যন্ত্রন্থেব তদা বভৌ। বিত্রতাস তদা বালী শরেণা (এহতো হ্রনি॥ ৩৬॥ म जिन्नक्रमरयां वाली वङ्गारकानि वन्नुबन्न्। দদশাবস্থিতং রামং ততঃ সৌমিত্রিলা সহ ১৩৭ ॥ গর্ধায়ত্বা স কাকুৎস্থং পপাত ভুবি মূচ্ছিতঃ। তারা দদর্শ তং ভূমৌ তারাধিপ্যমৌজসম্। ৩৮॥ হতে বালিনি স্থঞীবং কিষ্কিন্ধ্যাং প্রভ্যপদ্যত। ভাঞ্চ তারাপতিমুখীং তারাং নিপতিতেশ্বরাম্॥ ৩৯॥ রামস্ত চতুরো মাদান্ পুষ্ঠে মাল্যবতঃ শুভে। নিবাসমকরোজীমান স্থাবেণাভ্যুপস্তি:॥ ৪০॥ রাবণোহপি পুরাং গত্ব। লঙ্কাং কামবলাৎকুতঃ। সীতাং নৈবেশ্যমোস ভবনে নন্দনোপমে ॥ ৪১॥ অশোকবনিকাভ্যাসে তাপসাঞ্জমস্লিভে। ভতু স্মরণতথ্য তাপদীবেশধারিণী ॥ ৪২॥ উপবাসতপংশীলা তত্ত্র সা পুথুলেকণ্।। উবাস ছঃখবসতিং ফলমু≅ক্তাশনা ॥ ৪৩ ॥

দিদেশ রাক্ষমীস্তত্র রক্ষণে রাক্ষমাধিপঃ। প্রাসাসিশূলপর শুমুদারালা তথারিণী: ॥ ৪৪ ॥ षाकाः वाकीः नन्तिका भीषिकश्वमिक्रिश्वमाम्। ত্রিস্তরীমেকপাদাঞ্চ ত্রিজ্ঞামেকলোচনাম্ । ৪৫॥ এতাশ্চান্যাশ্চ দীপ্তাক্ষ্যঃ করভোৎন ট্যার্নজাঃ। পরিবার্য্যাসতে সীভাপ দিবারাত্রমতক্তিতাঃ ॥ ৪৬ ॥ তাস্ত তামায় লগেঞীং পিশাল্যো দারুণস্বরঃ । তর্জ্বন্তি দলা রৌদ্রাঃ গরুষব্যঞ্জনাক্ষরাঃ॥ ৪৭॥ খাদাম পাট্যামৈনাৎ তিলশঃ প্রবিভ্যজ্যতাম। ষেয়ং ভর্ত্তারমস্থাক্ষর্যন্যেই জীবতি ॥ ৪৮॥ ইতোবং পরিভং সন্তীস্তাম্ভামানা পুনঃ পুনঃ। ভতু শেকেসম।বিষ্টা নিশ্বস্থেদমুবার্চ তাঃ । ১৯॥ আর্যাঃ! থাদত মাং শীঘ্র ন মে লাভোইস্তি জীবিতে। বিনা তং পুণ্ডরীকাক্ষং নীলকুঞ্চিতমুর্দ্ধজম্॥ ৫০॥ অপ্যেবাহন নিরাহারা জীবিতপ্রিযুবর্ভিতা। भाष येषामि शाकानि यानी जानगठा यथा ॥ e> ॥ ন স্বনামভিগচ্ছেষং পুমাংসং রাঘবাদুতে। ইতি জানীত সত্যং মে ক্রিয়তাং যদনন্তর্য ॥ ৫২ ॥ ত্তান্তব্দনং জ্রু রাক্ষ্যন্তাঃ ধরস্বনাঃ। আ।খ্যাতৃং রাক্ষসেক্রায় জগ্মস্তৎ * সর্বানাদৃতা: ॥ ৫৩ ॥

া ৪৪॥ ৪৫॥ করভেশ কটমূদ্ধজা: উক্রসদৃশকেশাঃ॥ ৪৬॥ পাক্ষব্যস্থল স্বরাত্মকাঃ গদাধাসাং ভাঃ॥ ৪৭॥ ৪৮॥ ৪৯॥ ৫৯॥ ৫১॥ ৫২॥ ৫৩॥

^{*} আগতা ইত্যত্ত আদিত ইতি পাঠঃ ক ঘ পুস্তকয়োঃ।

গতাত্ব তাত্ব সর্বাস্থ ত্রিজটা নাম রাক্ষদী। সান্ত্রাসান বৈদেহী পর্যাঞ্জা প্রিযবাদিনী ॥ ৫৪ ॥ সীতে বক্ষ্যামি তে কিঞ্ছিশ্বাসং কুরু মে স্থি !। ভষং স্থং ত্যজ বামোর শৃণু চেদং বচো মম। ৫৫॥ . অবিল্যো নাম মেধাবী রুদ্ধো রাক্ষমপুঞ্জবঃ। म तामखा विভাत्त्रियो जुनार्थ हि म माध्यम् ॥ ৫৬॥ সীতা মন্বচনাদ্বাচ্যা সমাশ্বান্থ প্রসাদ্য চ। ভৰ্ত্তা তে কুশলী নামো লক্ষ্মণানুগতো বলী॥ ৫৭॥ সখ্যং বানররাজেন শক্রপ্রতিমতেজসা। क्षेट्रवान : घरः जीमार छुन्दर्य ह ममूनु छः ॥ ८৮॥ মা চ তেহস্ত ভয়ং ভীক রাবণালোকগছিতাং। নলকুবরশাপেন রক্ষিতা ইসি নন্দিনি ॥ ৫ : ॥ শপ্তো ছেষ পুরা পাপো বধৃং রস্তাং পরামৃষন্। ন শক্ষেত্যবশা**ৎ না**রীমুপৈতুমজিতেক্রিয় ॥ ৬০ । ক্ষিপ্রমেষ্যতি তে ভর্ত। সুগ্রীবেণ্যভিন্ত किতঃ॥ সৌমিত্রিসহিতে। ধীমা ত্রাঞ্চেতো মোক্ষ্যিষ্যতি॥ ৬১॥ স্বপ্না হি স্থমহাঘোরা দৃষ্টা মেহনিষ্টদর্শনাঃ। বিনাশাষাস্থা তুর্বান্ধেঃ পৌলস্ত্যকুলঘাতিনং ॥ ৬২ ॥ দারুণো ছেব ছুফাত্মা কু দ্রকর্মা নিশাচরঃ। श्वाचाकीन पार्या मर्स्यमाः ७ यवर्षानः ॥ ७०॥ স্পর্দ্ধতে সর্বাদেবৈর্যঃ কালোপহতচেতনঃ। 🌣 মযা বিনাশলিঙ্গানি স্বপ্নে দুষ্টানি তদ্য বৈ ॥ ৬৪॥ ॥ ४८। ४८॥ ४५॥ ४५॥ ४५॥ ४५॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥

^{*} চতুঃযতি শ্লোকস্য পরাহৎ পঞ্চতি শ্লোকস্য পূর্ব্বার্ক্ত খ পুতকে নান্তি

তৈলাভিষিক্তো বিকচো মৰ্জন্ পক্ষে দশাননঃ 1 অদক্তৎ খরযুক্তে তু রথে নৃত্যন্নিব স্থিত:॥ ৬৫॥ কুম্ভকর্ণাদয়শ্চেমে নগাঃ পতিতমুদ্ধজাঃ ৷ গচ্ছন্তি দক্ষিনামাশাং রক্তমাল্যান্তলেপনাঃ ॥ ৬৬ ॥ খেতাতপত্রঃ সোফীয়ঃ শুক্লমাল্যানুলেপনঃ। শ্বেতপৰ্বতমাৰ্চ এক এব বিভীষণঃ ॥ ৬৭ ॥ সচিবাশ্চাস্য চত্ত্বারঃ শুক্লমাল্যান্মলেপনাঃ। শ্বেতপৰ্বতিমাৰটা মোক্ষ্যন্তেই স্মান্মহাভ্যাৎ ॥ ৬৮ । রামস্যাস্ত্রেণ পৃথিবী পরিক্ষিপ্তা সমাগরা। যশসা পৃথিবী কংস্পাং পূর্বিষাতি তে পতি: ॥ ১৯॥ অস্থিসঞ্যমাৰতে। ভূঞানো মধুপায়সম্। লক্ষ্যাক্ত ময়া দুটো বিবিক্ষুঃ সর্বতো দিশম ॥৭০॥ রুদতী রুধিরান্ত্রি স্পী ব্যাছেণ পরিরক্ষিতা। অসক্তব্রং মহা দৃষ্টা গচ্ছন্তী দিশমুক্তরাম্ । ৭১ ॥ হর্ষমেষ্যাসি বৈদেহি ক্ষিপ্রং ভর্ত্রা সমন্বিতা। রাঘবেণ সহভাতা গীতে ত্বমচিরাদিব ॥ ৭২ ॥ ইত্যেতন্ম গশাবাক্ষী তচ্চুত্বা ত্রিজটাবচঃ। বভুবাশাবতী বালা পুনর্ভর্তুসমাগমে॥ ৭৩॥ যাবদভ্যাগতা রৌদ্রাঃ পিশাচ্যস্তাঃ স্থদারুণাঃ। দদশুন্তাং ত্রিজট্যা সহাদীনাং যথা পুরা। ৭৪॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাখ্যান পর্বাণি ত্রিজটাক্কত সীতা-সাস্ত্রনে অশীত্যধিকদ্বিশততমোহধ্যায়:॥২৮०॥ 1 34 1 35 1 39 1 36 1 38 1 40 1 93 1 94 1 95 1 98 1 ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে অশীত্যধিক দিশততমোহধ্যায়:॥২৮০॥

भार्कत्था छेता : ততন্তাং ভর্তুশোকার্তাং দীনাং মলিনবাসসম। মণিশেষাভালস্কারাং রুদতীঞ্চ পতিত্রতাম। ১। রাক্ষসীভিত্রপাস্থান্তী শমাসীনাং শিলাভলে। রাবণঃ কামবাণার্ভো দদর্শোপসমর্প চ ॥২॥ (परणानवशक्तवयक्रकिः शुक्रदेवयुधि। অজিত্যেহশোকবনিকাং যয়ে কন্দর্পগীডিতঃ ॥ ৩। দিব্যাষ্ব্রধরঃ শ্রীমান্ স্কুমুষ্টমণিক গুলঃ। বিচিত্রমালামুকুটো বসস্ত ইব মূর্ত্তিমান্ ॥ ৪ ॥ 🏶 স কম্পরক্ষসদুশো যত্নাদপি বিভ্রিতঃ। শ্বশানতৈত্যক্রমবদ্ধতি ভাষ্ঠ । ৫॥ ল তভান্তনুমধ্যায়াঃ সমীপে রজনীচরঃ। **प्रमुद्य (**ताहिशीदम्जा भटेनम्ब्त देवज्रहः ॥ ७॥ স তামাগন্তা সুত্রোণীং পুষ্পাকেতৃশরাহতঃ। ইদমিত্যত্রবী * দ্বাকাংত্রস্তাণ রোহীমিবাবলামু॥ ৭॥ সীতে পর্যাপ্তমেতাবং ক্লতো ভর্তুরমুগ্রহ:। প্রসাদং কুরু তম্বাঙ্গ ক্রিযতাং পরিকর্মা তে ॥ ৮॥ ভজস্ব মাং বরারোহে মহাছাভরণাম্বা। ख्व भारत्वनात्रीनामुख्या # वत्रवर्गिनी ॥ **२** ॥

তত ইতি মনিং মর্গলস্ত্রগতঃ সএব শেনেফেশং তে তৎসদৃশা অভ্যলং কারায়প্রান্তাং ॥ ১॥ উপাক্সনীং উপাক্তমানাং ॥২॥৩॥৪॥৫॥৬॥ রোহীং হ্রিনীং ॥ १॥ পরিকর্ম বস্তাভ্রণাদিন। প্রসাধনং॥৮॥৯॥

খ পুস্তকগ্য।

^{*} সৈতাতনেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

শ বাকামিতাত্ত্র বালামিতি পাঠঃ ক মপ্তকয়োঃ।
 * বরবর্নিনি ইতি সম্বোধনান্ত পদে বরবর্নিনীতি দীর্ঘ ইকারান্ত পাঠঃ

সন্তি মে দেবকন্যাশ্চ গন্ধবিশাঞ্চ যে যিত:। সন্তি দানবকন্যাশ্চ দৈত্যানাঞ্চাপি যোষিতঃ ॥ >०॥ চতুৰ্দ্ধশ পিশাচানা কোটো। মে বচনেস্থিতাঃ। विद्यावर शुक्रवानानार तकनार जीमकर्यानाम् ॥ >> ॥ ততো মে ত্রিগুণা যক্ষা যে মছচনকারিণঃ। কেচিদেব ধনাধাকং ভাতর । ম সমাজিতা: ॥ >২ ॥ গন্ধবি প্রসে। ভদ্রে মামাপানগতং সদা। উপতিষ্ঠতি বামোরু যথৈব ভাতরং মম॥ ১৩॥ शुर्खा १ हमिश विश्वर्यः माका विश्ववरमा मुरनः। পঞ্চমো লোকপালানামিতি মে প্রথিতং যশঃ॥ ১৪॥ দিবাানি ভক্ষ্যভোজ্যানি পানানি বিবিধানি চ। যথৈব ত্রিদশেশস্থ তথৈব মম ভাবিনি॥ ১৫॥ ক্ষীয়তা প তুষ্কুতং কর্মা বনবাসকুতং তব। ভार्या भ छव ऋष्यानि । यथा मत्मानती उथा ॥ ১७ ॥ ইত্যক্তা তেন বৈদেহী পরিরুত্য শুভাননা। তৃণমন্তরতঃ কুত্বা তমুবাচ নিশাচরম্ ॥ ১৭ ॥ অশিবেনাভিবামোকরজঅ~নেত্রবারিণা। স্তনাবপতিতৌ বালা সংহতাবভিবর্ষতী॥ ১৮॥ উবাচ বাকাং তং ক্ষুদ্রং বৈদেহী পতিদেবতা। অসকুদ্বদতো বাক্যমীদৃশং রাক্ষদেশ্বর! ॥ >৯ ॥ বিষাদযুক্তমেতত্তে ময়া শ্রুতমভাগায়া। ভদ্দস্থ ! ভদ্রং তে মানদং বিনিবর্ত্তাম ॥ ২০॥

॥ ১০ ॥১১ ॥ ১২॥১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭॥১৮ ॥ ১৯ ॥ ছে ভক্ৰস্থ ভক্তং কল্যানাবংং স্থাং যজ পারুদার্শ্য স্থাং ত্কল্যানাবছ। মতি ভাবঃ বিনিবর্ত্য-তাং মত ইতি শেষঃ ॥ ২০॥

প্রদারাম্মাল্ভ্যা চ সততঞ্চ পতিব্রতা। ন চৈবৌপ্যিকী ভাষা। মানুষী ক্লপণা তব ॥ ২১॥ বিবশাং ধর্ষযিত্বা চ কাং ত্ব~ প্রতিমবাপ্যাস। প্রজাপতিসমো বিপ্রো ব্রহ্মযোনিঃ পিতা তব ॥ ২২ ॥ ন চ পালয়দে ধর্মং লোকপালসমঃ কথ্য। ভাতর্ রাজরাজানং মহেশ্বস্থ প্রভুষ্ ৷ ২৩ ৷ ধনেশ্বং ব্যপদিশন কথৎ বিহ ন লজ্জদে। ইত্যক্তা প্রাক্তার কম্পযন্তী প্রোধরৌ ॥ ২৪॥ শিরোধরাঞ্ তম্বরু। মুখং প্রচ্ছাদ্য বাসসা। তস্যা ৰুদত্যা ভাবিন্যা দীৰ্ঘবেণী স্থসংযতা॥ ২৫॥ দদুশে স্থসিতা স্মিগ্ধা কালী ব্যালীব মুর্দ্ধনি। ঞ্জা তদ্রাবণো বাক্যং সীত্যোক্তং স্থুনিষ্ঠ্রণ ॥ ২৬॥ প্রত্যাখ্যাতোহপি ছুর্মেধাঃ পুনরেবারবীষ্টঃ। কামমঙ্গানি মে দীতে ছুনোতু মকরধুজঃ ॥ ২৭ ॥ ন ত্বামকামাং স্কুশোণি ! সমেষো চারুহাসিনি ! । কিন্ন শক্যং ময়া কর্ত্ত্র যত্ত্বমদ্যাপি মানুষম্ ॥ ২৮ ॥ আহিরভূতমস্মাকণ রামমেবালুরুঞ্চমে ॥ ২৯॥ ইত্যক্তা তামনিন্দ্যান্ত্রীং স রাক্ষদমহেশ্বরং। তবৈবান্তহিতো ভূত্বা জগামাভিমতাং দিশমু॥ ৩০॥ রাক্ষসীভিঃ পরিবৃতা বৈদেহী শোককর্ষিতা। সেব্যমানা ত্রিজট্যা তত্রৈব ন্যবস্ত্তদা॥ ৩১॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ রামোপাখ্যানপর্বাণ সীতারাবণসংবাদে একাশীত্যধিকদ্বিত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ২৮১॥

উপয়িকী উপযোগার্হা॥ ২১॥ ২২॥ ২৬॥ ২৪॥ শিরোমুখঞ্চ প্রক্রাদ্য ধরাং দদৃশেহপশ্যদিতি সম্বন্ধঃ॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০॥ ৩১॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্বাণ নৈলকগীয়ে ভারতভাবদ্বীপে একাশীতাধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৮১॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

রাঘবং সহসৌমিত্রিঃ সুগ্রীবেণাভিপালিতঃ। वमगानावजः शृष्धं पपर्भ विमन् नजः ५०॥ স দৃষ্ট্য বিমলে ব্যোমি নির্মল শশলক্ষণম্। প্রহ্নক্ষত্রতারাভির্মুখাত্ম্মিত্র।। ২ ॥ कुमुरम् ९ शनभाना । भन्नभामात्र वायुना । মহীবরস্থঃ শীতেন সহসা প্রতিবোধিতঃ॥ ৩॥ প্রভাতে লক্ষণ বীরমভ্যভাষত দুর্ম্মনাঃ। শীতাং সংস্থা ধর্মারা রুদ্ধাং রাক্ষসবেশ্মনি। ৪॥ গচ্ছ লক্ষাণ! জানীহি কিঞ্চিন্ধ্যায়াং কপীশ্বরম। প্রমন্ত্র প্রামাধর্মের ক্রম্ম স্বাধপণ্ডিত্য ॥ ৫॥ (य १ दमो कूलायरमा मृत्या मया बाढ्याश्विष्टि । সর্ববানরগোপুচ্চা যমুক্ষাশ্চ ভক্তত্তি বৈ॥ ৬॥ যদর্থ নিহতে। বালী ময়। র্যুকুলোদ্বহ । ॥ ত্বরা সহ মহাবাহো! কিন্ধিন্তোপবনে তদা। १॥ কুতম্বং তমহং মনো বানরাপদদ ভূবি। যো মামেবঞ্জে মূঢোন জানীতেহ্দ্য লক্ষ্য !॥ ৮॥ ष्या प्राप्त न कानी एक गमस्य कियाननम्। ক্রতোপকারং মাং ভুনমব্মন্যাপায়া ধিযা॥ ১॥ যদি তাবদনুদ্যুক্তঃ শেতে কামস্থাত্মকঃ। নেতব্যে। বালিমার্গেণ সর্বভূতগতিং স্ব্যা॥ ১০॥ - অংশপি ঘটতেহস্মাকমর্থে বানরপুঞ্সবঃ। ভমাদাবৈৰ কাকুৎস্থ ! স্বরাবান্ ভব মা চির্মু॥ ১১॥

রাঘর ইতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ আমাধর্মের্মৈথুন। দিরু নিমিত্ত তেরু প্রমতং অসাবধানং ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ গুরোরাক্তি হতে

ইত্যুক্তো লক্ষণো ভ্রাতা গুরুবাক্যহিতে রতঃ। প্রতত্তে রুচিরং গৃহ সমার্গণগুণ্ম ধনুঃ । ১২ ॥ কি জিল্লাদার মাসাদ্যপ্রবিবেশানিবারিতঃ। স্ক্রোধ ইতি ত^ মত্বা রাজা প্রত্যুদ্যযৌ হরি:॥ ১৩॥ ত সদারে বিনীতাত্মা সুগ্রীবঃ প্লবগাধিপ:। পুজয়া প্রতিজ্ঞাহপ্রীয়মাণস্তদর্হয়া ॥ ১৪ ॥ তমব্রবীদ্রামবচঃ সৌমিত্রিরকুতোভয়ঃ। স তৎ সর্বামশেষেণ শ্রুত্বা প্রহ্ন: কুতাঞ্জলিঃ॥ ১৫॥ সভৃত্যদারো রাজেন্দ্র স্থগ্রীবো বানর।ধিপঃ। देमगाइ विष्टः श्रीराजा नक्मगर नत्रकुक्षत्रम् ॥ ১७ ॥ নাম্মি লক্ষ্য। ছুর্মেধা * নাকুতজ্ঞো ন নিঘূণি।। ক্রয়তা । যং প্রাল্লে মে দীতাপর্যোষণে কুতঃ ॥ ১৭ ॥ দিশঃ প্রস্থাপিতাঃ সর্বে বিনীতা হরয়ো ময়া। শর্কেষাঞ্চ ক্লতঃ কালো মাদেনাগমনং পুনঃ॥ ১৮॥ বৈরিয়ৎ সবনা সাজিঃ সপুরা সাগরাম্বরা। বিচেত্র্যা মহাবীর! স্থামনগ্রাক্রা॥ ১৯॥ স মাসঃ পঞ্চরাত্তেণ পূর্ণো ভবিতুমইতি। ততঃ শ্রোষ্যাদ রামেণ দহিতঃ স্থমহৎ প্রিরম্॥ ২০॥ ইভ্যুক্তো লক্ষ্মণস্তেন বানরেক্রেণ ধীমতা ৷ ত্যক্তা রোষমদীনাত্মা স্থাবং প্রত্যপূজ্মৎ। ২১॥ न जामः महस्रुवीर्या मानावः शृष्ठेमान् उम्। অভিগ্রোদ্রণ ভষ্ম কার্য্যম্ম প্রভাবেদরৎ। ২২। চ রতন্ত্রৎপরঃ ॥১२॥১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ २० ॥ २১॥ २२ ॥

^{*} নাত্তজ্ঞ ইতাৰ ন কুতন্ন ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ইত্যেবং বানরেক্রান্তে সমাজগ্নঃ সহস্রশঃ। দিশস্তিত্রো বিচিত্যাথন তু যে দক্ষিণাং গতাঃ॥ ২০॥ আচ্থান্তত্র রামায় মহীং সাগর্মেখলান। বিচিতাং ন তু বৈদেহা দর্শন রাবণস্য বা॥ ২৪ ॥ গতাস্ত দক্ষিণামাশাৎ যে বৈ বানরপুঙ্গবাঃ। আশাবাং স্তেমু কাকুংস্থং প্রাণানার্ভে:২ভ্যধারয়ং ॥২৫॥ দ্বিমানোপরমে কালে ব্যতীতে প্রবগাস্ততঃ। স্থাীবমভিগন্যেদং স্থরিতা বাক্য মক্রবন্ ॥ ২৬॥ রক্ষিতং বালিনা যন্তৎ ক্ষাতং মধ্বনং মহৎ। স্থা চ প্লবগশ্রেষ্ঠ। তদুঙ্কে প্রবাত্মজঃ ॥২৭। वालिश्वरकारकार कर त्य हारना क्षेत्रवं छाः। বিচেতৃৎ দক্ষিণামাশাণ রাজন্ প্রস্থাপিতান্ত্রা ॥ ২৮ ॥ তেষাং তৎপ্রণয়ং শ্রুত্বা মেনে স কুত্রকুত্যতান। কুতার্থানাং হি ভূত্যানামেতন্তবতি চেটিতমু॥ ২৯॥ স তদ্রামায় মেধাবী শশ্শ স প্লবগর্মভঃ। রামশ্চাপ্যসুমানেন মেনে দৃষ্টাস্ত মৈথিলীয় ॥ ৩০ ॥ হরুমৎপ্রমুখাশ্চাপি বিজ্ঞান্তান্তে প্লবঙ্গমাঃ । অভিজগা ইরীক্রণ তপ রামলক্ষ্যুণসলিধৌ ॥ ৩১॥ গতিঞ্চ মুখবর্ণঞ্চ দৃষ্ট্যা রামে। হনুমতঃ। অগমৎ প্রত্যরং ভূষো দৃষ্টা দীতেতি ভারত। ৩২॥ হরুমৎপ্রমুখান্তে তু বানরা: পূর্ণমানদা:। প্রবেদ্ধবিদ্ধান স্থাবং লক্ষ্মণং তথা। ৩৩॥

॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ছয়োর্মান্স্যাকপরমঃ সমাপ্তির্যনিংস্তানিন্ কালে ॥ ২৩ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥

তানুবাচানতানামঃ প্রগৃহ্য সশরং ধনুঃ। অপি মান জীব্যিষ্যধ্বপি বং কৃতকৃত্যভা ॥ ৩৪ ॥ অপি রাজ্যমযোধ্যায়াৎ কার্যিধ্যামাহং পুনঃ। নিহত্য সমরে শতুনাহ্নত্য জনকার্মজান ॥ ৩৫॥ অনোক্ষরিত্বা বৈদেহীমহত্বা চ রণে রিপূন্। হৃতদারোহ্বধূত চ নাহ্ৎ জীবিতুমুংসহে। ৩৬ a ইত্যুক্তবচনৎ রামং প্রত্যুবাচানিলাগাজঃ। ় প্রিয়মাখ্যামি তে রাম ! দৃষ্টা সা জানকী ময়া॥ ৩৭॥ বিচিত্য দক্ষিণামাশাং সপ্রবৃত্বনাক্রাস। শ্রাস্থাঃ কালে ব্যতীতে স্ম দৃষ্টবন্তো মহাগুহাম্॥ ৩৮॥ প্রবিশামো বয়ং ভাস্ত বহুযোজনমায়তাম্। অন্ধকারাং স্কবিপিনাং গ্রনাং কীটসেবিভাস্॥ ৩৯॥ গত্ব। স্থমহদধানমাদিত্যস্য প্রভাৎ ততঃ। দুষ্টবন্তঃ স্ম তত্ত্রৈব ভবন॰ দিব্যমন্তরা॥ ৪০॥ ময়স্য কিল দৈও্যস্য তদাসীদ্বেশ্ম রাঘব।। তত্র প্রভাবতী নাম ওপোহ্ডপ্যত তাপসী॥৪১॥ তয়া দন্তানি ভোজ্যানি পানানি বিবিধানি চ। ভুক্ত্বা লব্ধবলাঃ সন্তস্তয়োক্তেন পথা ততঃ॥ ৪২॥ নিৰ্যায় তক্ষাতুদ্দেশাৎ পশ্যামো লবণান্তুসঃ। नभील मञ्जलायो प्रजूतिक महाशितिम् ॥ ८०॥ ততো মলয়ম।রুহ্য পশ্যস্থো বরুণালয়ম। বিষয়া ব্যথিতাঃ থিমা নিরাশা জীবিতে ভূশম্॥ ৪৪॥ चारनकमञ्जिलीर याजनानाः मरहामिसम्। তিমিনক্রঝাবাসং চিন্তয়ন্তঃ স্বত্যু:থিতাঃ॥ ৪৫॥ ॥ ৩৪॥ কাররিব্যামিকারের নিচ্॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩৭॥ ৩৮॥ ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ 1 82 11 80 11 88 11 80 11

তত্রানশনসঙ্কপেং কুত্রাসীনা বয়ং তদা। ততঃ কথাত্তে গুধুস্থা জটাযোরভবৎ কথা। ৪৬॥ ততঃ পর্বাতশৃঙ্গাভিশ ঘোররূপং ভয়াবহৃম্। পক্ষিনং দৃষ্টবন্তঃ স্ম বৈনতেযমিবাপরম্। ৪৭ ॥ সোহস্মানতর্ক্যদ্ধোক্ত মথাভ্যেত্য বচোহত্রবীং। ভোঃ ক এয় মম ভাতু∉টাযোঃ কুরুতে কথামু॥ ৪৮ ॥ সম্পাতির্নাম ভষ্ঠাহং জোঠো ভ্রাতা খগাধিপঃ। অন্যোন্যস্পদ্ধিবাৰ্চাবাৰামাদিত্যসংপদ্য #.॥ ৪৯ ॥ ততো দগ্ধাবিমৌ পক্ষৌ ন দক্ষৌ তু জটাযুবঃ। তদা মে চিরদুষ্ট: স জাতা গুধুপতিঃ প্রিরঃ॥ ৫०॥ নির্দগ্ধপক্ষঃ পতিতো ছহমন্দ্রিন মহাগিরৌ। তক্তৈবং বদতোহ্যাভিহতো ভাতাংনিবেদিতঃ ॥ ৫১॥ বাসনং ভবতশেচদ সংক্ষেপারৈ নিবেদিত্য। স সম্পাতিস্তদা রাজন প্রত্যা স্থমহদপ্রিয়ম ॥ ৫২॥ বিষন্নচেতাঃ পপ্রচ্ছ পুনরস্মানরিন্দম !। কঃ স র†মঃ ক্থং সীতা জট†যুশ্চ ক্থ∾ হতঃ॥ ৫০॥ ইচ্ছানি সর্ব্বমেবৈতচ্ছে । তুং প্রবগদন্তমাঃ !। তস্থাহ পর্মমে বৈতদ্ভবতো ব্যসনাগমন্। ৫৪। প্রাযোপবেশনে চৈবছেত্ং বিস্তরতোহক্রবম্ (माश्यानुषानेयांमाम वारकानांतन निकताहै। ००॥ রাবণো বিদিতো মহাপ লক্ষা চাম্য মহাপুরী। দুন্টা পারে সমুদ্রস্থা তিকুটগিরিকন্দরে॥ ৫৬॥

॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ৪৮ ॥ সংৎপাদং গাতৰস্থা বিতিশেষঃ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ॥ ৫৩ ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥ ৫৬ ॥

^{*} সৎপদমিত্যত্ত সংসদমিতি পাঠ: ক য পুস্তকয়োঃ।

ভবিত্রী তত্ত্র বৈদেহী ন মেহস্তাত্র বিচারণা। ইতি তক্ত বচঃ শ্রুত্ব। বষমুত্থার সত্ত্রাঃ । ৫৭ ॥ সাগরক্রমণে মন্ত্রং মন্ত্রধাম: পরস্তপ !। नांध्रवां अप्यमा किन्द्रिं मां श्रवेश विल्खात ॥ १४॥ ভক্তঃ পিতরমাবিশ্ব * পুশ্লবেহহং মহার্ণবম্। শতযোজনবিস্তীর্ণ নিহত্য জলরাক্ষদীম ॥ ৫৯॥ তত্র সীতা ময়া দৃষ্টা রাবণাস্তঃপুরে সতী। উপবাসতপঃশীলা ভর্তুদর্শনলালসা ॥ ৬০ ॥ জটিলা মলদিয়াঙ্গী কুশা দীনা তপশ্বিনী। নিমিকৈন্তমহং সীতামুপলভ্য পৃথমিকৈঃ॥ ৬১॥ উপস্ত্যাক্রবং চার্য্যামভিবাদ্য * রহোগতাম। সীতে রামস্য দূতোহহং[ং]বানরো মারুতাল্মজঃ॥ ৬২।। ত্বদর্শনমভিপ্রেশ্ রিছ প্রাপ্তো বিহায়স। ॥ রাজপুজ্রৌ কুশলিনৌ ভাতরৌ রামলক্ষণৌ ॥ ৬৩ ॥ সর্বশাখামূগেন্দ্রেণ স্থগ্রীবেণাভিপালিতৌ। কুশলস্বাত্রবীদ্রামঃ সীতে সৌমিত্রিণা সহ। ৬৪। স্থিভাবাচ্চ সুগ্রীবঃ কুশলং স্বানুপৃচ্ছতি। क्रिश्वरमगुष्ठि তে ভর্জা সর্ক্ষশাখামূলৈ: मह॥ ७४॥ প্রত্যথং কুরু মে দেবি বানরোহস্মি ন রাক্ষসঃ। মুহূর্ত্তমিব তদ্যাত্বা সীতা মান প্রত্যুবাচ হ। ৬৬। অবৈমি ত্বাং হনুমন্তমবিশ্বাবচনাদহ্য। অবিস্থ্যো হি মহাৰাহো ! রাক্ষ্যো বুদ্ধসম্মতঃ ॥ ৬৭॥ 1 4 9 1 4 7 1 4 7 1 9 0 1 9 2 1 9 2 1 9 2 1 9 8 1 9 4 1 9 9 1 9 9 1

পিতরমাবিশ্বেতাত্রপিতর মুদ্দিশ্বেতি পাঠ: ক পুস্তকে
 শ্বেতিবাদ্যতাত্র অভিন্যাতি পাঠ: ধ পুস্তকে।

কথিতন্তেন স্থানিস্থ ছিখৈ: সচিবৈর্ম্ ত:।
গমাতামিতি চোক্তা মাং সীতা প্রাদাদিম মণিম ॥ ৬৮ ॥
ধারিতা যেন বৈদেহী কালমেতমনিন্দিতা।
প্রত্যায়ার্থ কথাঞ্চেমাং কথ্যামাস জানকী ॥ ৬৯ ॥
ক্রিপ্রামিষীকাং কাকায় চিত্রকূটে মহাগিরৌ।
ভবতা পুরুষব্যান্ত! প্রত্যভিজ্ঞানকারণাং ॥ ৭০ ॥
গ্রাহ্যিত্বাহমাত্মানং ততা দগ্ধা চ তাং পুরীম।
সংপ্রাপ্ত ইতি তং রামঃ প্রিযবাদিনমার্চ্চয়ং ॥ ৭১ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাখ্যানপর্বাণি হন্তমংপ্রত্যাগমনে
দ্বাশীতাধিকদিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৮২ ॥

মার্কতের উবাচ।

ততন্ত তৈবে রামস্য সমাসীনস্য তৈ: সহ।
সমাজগ্ম: কপিশ্রেষ্ঠাঃ স্থগ্রীবব্চনান্তদা ॥ ১॥
বৃতঃ কোটিসহস্রেণ বানরাণা তরন্ধিনাম্।
শ্বশুরো বালিনঃ শ্রীমান স্ক্রেণো রামমভ্যয়াৎ ॥ ২॥
কোটাশতর্তো চাপি ॥ গজো গবয় এব চ।
বানরেন্দ্রো মহাবীর্ঘ্যো পৃথক্ পৃথগদৃশ্যতাম্॥ ৩॥

॥ ৬৮ ॥ ধারিতাজীবনং প্রাপ্তাইদানীমেতদিয়োগাদত্যন্তং ব্যাকুলারা-শুস্যালাভার্থং শীব্রং যতিতব্যমিতিভাবঃ॥ ৬৯॥॥ ৭০॥॥ ৭১॥

> ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকতীয়ে ভারতভাবদীপে ধ্যশীত্যধিক দিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৮২ ॥

ভভন্তবৈভি॥ ১॥ ২॥ ৩॥

^{*} গজইতাত্র গরইতি পাঠ ক **খ পুন্তক**রো:।

ষ্ঠিকেটি गহস্রাণি প্রকর্ষন্ প্রত্যাদৃষ্ঠত। পোলাস্থলো মহারাজ! গবাকো ভীমদর্শনঃ॥ ৪॥ গহ্নমাদনবাদী তু প্রথিতো গন্ধমাদনঃ! কেটিশতসহত্রাণি হরীণাং সমকর্ষত॥ ৫॥ প্ৰসোনাম মেধাবী বানরঃ স্থুমহাবলঃ। কোটার্দশ দ্বাদশত *ক্রিংশৎপঞ্চ প্রকর্ষতি॥ ৬॥ শ্রীমান্ দ্ধিমুখো নাম হরিরুদ্ধোহতিবীর্য্যবান্। প্রচকর্ষ মহাসৈনাৎ হরীণাং ভীমতেজসাম ॥ ৭ ॥ क्रकाना १ * भूरे शुक्षां ना भूका ना ० की भक्ती ना । ' কেটিশতসহত্ৰেণ জাষ্কান্ প্ৰতাদৃশ্যত। ৮॥ এতে চান্যে চ বহবো হরিযুথপযুথপাঃ। অসুপ্রোয়া মহারাজ ৷ স্মায়ুরামকারণাৎ ॥ ৯ ॥ গিরিকুটনিভাঙ্গানাৎ সিংহানামিব গর্জ্জ তাুয় । শ্রেষতে তুমূলঃ শব্দস্তত্র তত্র প্রশাবত।মূ॥ ১০॥ গিরিকুটনিভাঃ কেচিৎ কেচিমহিষ্মরিভাঃ। শরদন্ত্রপ্রতীকাশাঃ কেচিদ্দিস্থলকাননাঃ॥ ১১॥ উৎপতত্তঃ পতত্তশ্চপ্লবমানাশ্চবানরাঃ। উদ্রভোহপরে রেণূন্ সমাজগাঃ সমন্ত ঃ ॥ ১২ ॥ স বানরমহাদৈন্যঃ পূর্ণদাগরসন্মিভঃ। নিবেশমকরোত্তত্র স্থগ্রীবানুমতে তদা॥ ১৩॥ ভতত্তেষু হ্রীন্তেষু সমারতেষু সর্কাশঃ। তিথৌ প্রশস্তে নক্ষতে মুহুর্ত্তে চাভিপুজিতে॥ ১৪॥ ॥ ৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ মুখে পুঞ্জিলকং যেযাং তে ললাটে উর্দ্ধপ্রা কারেণ চিল্লেন চিল্লিতানং ।। ৮ ।। ১০ ।। ১১ ।। ১২ ।। ১৩ ।। ১৪ ।।

^{*} তিংশৎপঞ্চ প্রকর্মতীতাত্ত তিংশতঞ্চ প্রকর্মতীতি পাচঃ ক্ষ পুস্তকরেন্ট।

^{*} মুখপুঞালামিতার মুখপাওুনামিতি পাঠঃ ঘ পুশুক্ত।

তেন ব্যাচেন সৈন্যেন লোকানুদ্রত্তিয়ার । প্রথয়ে রাঘবঃ শ্রীমান স্বর্গ্রীবসহিত্রদা ॥ ১৫ ॥ মুখনাদীতু দৈন্দ্য হনুমান্ মাকৃতারজঃ। জঘন~ পাল্যামান দোমিত্রিরকুতোভয: ॥ ১৬ ॥ বন্ধগোধাঙ্গলিতাণী রাঘবৌতত জগাতঃ। वृट्डो इतिमहामारेज म्हन्स्य द्यो अरहतिव ॥ ১१ ॥ প্রবভৌ হরিদৈনান্তৎ সালতালশিলাযুধম। স্থমহচ্ছালিভবন যথা স্থর্ব্যাদয়ং প্রতি । ১৮॥ नलनीलाञ्चमकाष्ट्रेयनम्बिरिम्भालिखाः। যযৌ স্থমহতী সেনা রাঘবস্যার্থসিদ্ধযে। ১৯॥ বিবিধেযু * প্রশক্তেষু বহুমূলকলেষু চ। প্রভূতমধুমাংসেযু বারিমৎস্থ শিবেষু চ॥ ২০॥ নিবসন্তী নিরাবাধা তথৈব গিরিমানুষু ! উপাযाक्षतिरमन। मा * कारतानमथ मांगतम् ॥ २) ॥ দ্বিতীয়সাগর্নিভং তদ্বলং বছলধ্জম। दवलावनः समामान्य नियासमकद्वाखना ॥ २२ ॥ ততো দাশরথিঃ শ্রীমান স্বগ্রীবৎ প্রত্যভাষত। মধ্যে বানরমুখ্যানাং প্রাপ্তকালমিদং বচঃ॥২৩॥ উপায়ঃ কো নু ভবতাং মতঃ দাগুরলজ্মনে। ইয়ং হি মহতী দেনা সাগরশ্চাতিত্বস্তরঃ॥ ২৪॥

॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ শালিভিৰ্ভাতীতি শালিভং তচ্চ ভদ্বনং পকশালি ভবনং ভদ্বৎ পীতবৰ্ণামত্যৰ্থঃ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥

^{*} প্রশন্তেমিতাত বনেমেবেতি পাঠঃ ঘ পুত্তক্সা ৷

^{*} ক্ষারোদমিতাত ক্ষীরোদ মিতি পাঠঃ য পুতকে।

^{*} বেলাবন্মিত্যত্র বেলাবল্মিতি পাঠঃ ঘ পুস্তক্স্য।

তত্রান্যে ব্যাহরস্তি সা বানরা বছমানিনঃ । সমর্থা লজ্ঞনে সিম্বোর্ন তু তৎক্রৎস্নকারকম্॥ ২৫॥ কেচিন্নৌভির্ব্যবস্থান্ত কেচিচ্চ বিবিধৈঃ প্লবৈঃ। নেতি রামস্ত্রতান্ সর্বান্ সাত্ত্বয়ন্ প্রত্যভাষত ॥ ২৬ ॥ শতযোজনবিস্তারং ন শক্তাঃ সর্ববানরাঃ। জ্যন্তং তোষনিধিশ বীরা ! নৈষা বো নৈষ্ঠিকী মতিঃ॥ ২৭॥ নাবোন সন্তি সেনায়া বহ্বাস্তার্যিতৃং তথা। বণিজামুপঘাতঞ কৃথমশ্বদিধশ্চরেৎ ॥ ২৮॥ विखीनेटेक्षव नः रेमनार इन्गाष्ट्रिरक्तन देव श्रवः। প্রবোডুপপ্রতার । ১ বিবার মম রোচতে ॥ ২৯॥ অহব্রিমং জলনিধিং সমারস্গাম্যুপায়তঃ। প্রতিশেষ্যাম্যুপবসন্ দর্শফিষ্যতি মান্ততঃ॥ ৩ ॥ ন চেদ্দৰ্শযিতা মাৰ্গন্ধক্যামোনমহৎ ততঃ। মহাস্ত্রৈরপ্রতিহতৈরত্যগ্লিপবনোজ্লৈ: *॥ ৩১॥ ইত্যক্তা সহসৌমিত্রিরুপস্পৃত্যাথ রাঘবং। প্রতিশিষ্টে জলনিধিং বিধিবৎ কুশসংস্তরে। ৩২॥ সাগরস্তু ততঃ স্বপ্নে দর্শবামাস রাঘবম। দেবো নদনদীভর্জা জীমান্ যাদোগণৈর্কৃতঃ ॥ ৩০ ॥ কৌশল্যামাতরিত্যেবমাভাষ্য মধুর বচঃ। ইদমিত্যাহ রত্মানামাকরৈ: শতশো রুড: ॥ ৩৪॥

॥ ২৫॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ প্লবঃ অলাবু ঘটাদিময়ং তরণ সাধণংউড়ুপং ক্ষুত্র নৌকাডাভ্যাং প্রভারন্তরণং॥ ২৯॥ সমারপ্যামি আরাধ্যিষ্যামি॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ ৩০॥ মধুংং বচঃ ইন্দ্র শ্বিত্যাহেতিশেষেণ বোজ্যং॥ ৩৪॥

^{*} অতায়িপবনোজ্বলৈরিতাও অতানিজ্বলনোজ্বলৈরিতি ক পুত্তকে

বুহি কিন্তে করোম্যত্র সাহায্যং পুরুষর্গত !। ইক্ষাকু^{র্হ্}যন্মি তে জ্ঞাতিরিতি রামস্তমত্রবীৎ॥ ৩৫॥ মার্গমিচ্ছামি সৈন্যস্ত দক্তং নদনদীপতে। যেন গত্বা দশগ্রীবং হন্যাং পৌলস্তাপাংশনমূ ॥ ৩৬ ॥ যদ্যেব যাচতো মার্গ ন প্রদান্ততি মে ভবান। শরৈস্থাং শোষ্যিষ্যামি দিব্যাস্ত্রপ্রতিমন্ত্রিতৈঃ ॥ ৩৭ ॥ ইত্যেবং ব্রুবতঃ শ্রুত্বা রামশ্য বরুণাল্যঃ। উবাচ ব্যথিতো বাক্যমিতি বদ্দাঞ্জলিং স্থিত:॥ ৩৮॥ নেচ্ছামি প্রতিঘাত তে নাম্মি বিশ্বকরস্তব। শুণু (চেদ্প বচো রাম। শুজ্বা কর্ত্তব্যমাচর । ৩৯॥ যদি দা স্থামি তে মার্গন সৈন্যস্থা ব্রজতো জ্ঞয়া। অন্যেহপ্যাজ্ঞাপযিষ্যন্তি মামেবং ধনুষো বলাৎ ॥ ৪০ ॥ অস্তি ত্বত্ত নলো নাম বানরঃ শিল্পদম্মতঃ। ত্বক দৈবকা তনযো বলবান বিশ্বকর্মণঃ॥ ৪১॥ স যৎ কাষ্ঠং তৃণ্যাপি শিলাং বা ক্ষেপ্যতে মযি। সর্বস্থদার্যিষ্যামি স তে সেতুর্ভবিষ্যতি॥ ৪২॥ ইত্যক্তান্ত হিত তিমান্ রামো নলমুবাচ হ কুরু সেতুং সমুদ্রে ত্ব॰ শক্তে ছিসি মতে। মম। ৪৩। তেনোপাযেন কাকুৎস্থ: সেতুবন্ধমকার্যৎ। দশবোজনবিস্তারমাযত শতবোজনমু ॥ ৪৪ ॥ নলসেতুরিতি খ্যাতো যোহদ্যাপি প্রথিতো ভুবি। রামস্ভাজ্ঞাং পুরদ্ধৃত্য নির্যাতো গিরিসন্নিভ: ॥ ৪৫ ॥ তত্ৰস্থং স তু ধৰ্মাত্মা সমাগছছিভীষণঃ। खां देव बाक्करमञ्जूमा हजू किः महिटेवः मह ॥ ८७ । ॥ ७६॥ ७७॥ ७१॥ ७৮॥ ७৯॥ व्याब्बद्याज्यिक् मः भूक् ऋभमा 🕸 । ८०॥ 1 82 1 85 80 1 88 1 84 1 89 1

প্রতিজ্ঞাহ রামস্ত স্থাগতেন মহামনাঃ। স্থুগ্রীবস্য তু শঙ্কাভূৎ প্রনিধিঃ স্যাদিতি স্ম হ॥ ৪৭॥ রাঘবঃ সত্যচেষ্টাভিঃ সমাকস্কুচরিতেঞ্জিতৈঃ॥ যদা তত্ত্বেন তৃষ্টোহভুত্তত এনমপ্রজয়ং ॥ ৪৮ ॥ সর্ববাক্ষসরাজ্যে চা পভোষিঞ্চলিভীয়ণম ॥ * চক্রে ট মন্ত্রসচিব**্ প্রহু**দ্ধে লক্ষ্মণ্য্য চ । ৪১ । বিভীষণ মতে চৈব সোহত্যক্রামন্মহার্ণবম। সবৈন্যঃ সেত্না তেন মালেনৈব নরাধিপ ! ॥ ৫०॥ ততো গত্ব। সমাসাদ্য লক্ষে দ্যান ন্যানকশঃ। (ভদ্যামাস কপিভিশাহ†তি চ বছুনি চ । ৫১ ॥ তত্রস্থৌ রাবণামাত্যৌ মন্ত্রিণৌ শুক্সারণৌ। চরৌ বানররূপেণ তৌ জঞাহ বিভীষণঃ॥ ৫২॥ প্ৰতিপন্নে যদা ৰূপং রাক্ষ্যং তৌ নিশাচরে।। দর্শব্রিত্বা ততঃ সৈন্যং রামঃ পশ্চাদবাস্তল্ব ॥ ৫৩॥ নিবেশ্যাপবনে দৈন্যং তৎপুরঃ প্রাক্তবানরম্। প্রেষ্যামাস দৌত্যেন রাবণস্থ ততোইঙ্গদম্। ৫৪॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাখ্যান সেতৃবন্ধনেত্র্যশীত্যধিক দিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৮৩॥

প্রণিধিছলরুৎগুপ্তচারোধা প্রণিধির্নাঝলে চরে ইতি মেদিনী ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ ॥ ৫১॥ ৫২ ॥ ৫৩ ॥ দৌতোনহেতুনা ॥ ৫৪ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে ত্রাশীত্যাধিক দ্বিশতত মোহধ্যায়ঃ ॥ ২৮৩ ॥

চক্রেচমন্ত্র সাচবমিতার চক্রেচ মন্ত্রাবরজ মিতি পাঠঃ ক ঘ পুস্তকয়োঃ।

मार्कटलम डेवाह।

প্রভূতাশ্বোদকে তন্মিন্ বছমূলফলে বনে। সেনা নিবেশ্য কাকুৎস্থে। বিধিবৎ পর্য্যরক্ষত ॥ ১ ॥ রাবণঃ সম্বিধং চক্রে লক্ষায়ান শাস্ত্রনির্ম্মিতায়। প্রকৃত্যৈব ছুরাধর্ষা দৃঢপ্রাকারতোরণা: ॥ ২॥ অগাধতোযাঃ পরিখা মীননক্রসমাকুলাঃ। বভুবুঃ সপ্ত দুর্ধর্যাঃ খাদিরৈঃ শঙ্কুভিশ্চিতাঃ ॥ ৩॥ কপাট্যব্ৰপ্ৰধ্বা বভূবুঃ সহুডোপলাঃ। শ সাশীবিষঘটা যোধাঃ সদর্জরদপাংশবঃ ॥ ৪॥ মুষলালাতনারাচতোমরাদিপরশ্বধিং। অবিতাশ্চ শতন্মীভিঃ সমধৃচ্চিষ্টমুকারাঃ॥ ৫॥ পুরদ্বারেষু সর্ফেষু গুলাঃ স্থাবরজঙ্গমাঃ। বভূবুঃ পত্তিপছলাঃ প্রভূতগজবাজিনঃ ॥ ৬ ॥ व्यक्रमञ्जूष नकाय। बातरमभूमानजः। বিদিতে। রাক্ষদেক্রস্য প্রবিবেশ গতব্যথ:॥ १॥ মধ্যে ব্ৰাক্ষদকোটীনাং বহ্বীনাং স্থমহাবলং। শুশুভে মেঘমালাভিরাদিত্য ইব সংরুতঃ॥৮॥

প্রভূতিতি ॥ ১॥ সংবিধং সম্যাধিগান্তানবা তাং বাজাদি সম্পতিং ॥ ২॥
॥ ৩॥ কপাটেরিকৈ গোলাহাৎকেপন সাধনৈ হ্রিহাঃ পরিখাঃ সহডাঃ
দোপলাক হুডং মূলাহাৎসর্জনার্থং শৃঙ্গং উপলাঃ প্রক্রেপা গোলকাঃ॥ ৪॥
সমগ্রুছিট মূলারাঃ মধ্ন্ছিটং ক্লেজং মর্মদানিব্যার্ত্যর্থ মুচ্ছিটপদং
॥ ৫॥ গুলাগুপ্তোপবেশন স্থানানি ব্রুজাখ্য। মহাস্তন্তাঃ স্থাবর গুলাঃ
জন্মগুলাঃ সেনাদ্যাঃ অলক ইত্তিহিতাঃ॥৬॥ বাত ব্যথোনির্ভাঃ গ্রানাচ॥

সালীবিষ্ট্রাবাধা ইত্যত্র আশীবিষ্ট্রালোরা ইতি পাঠঃক পুস্তকে।

স সমাসাদ্য পৌলস্তামমাতৈরেভিসৎরতম্। রামসন্দেশমামন্ত্র্যাগ্মী বক্ত্র প্রচক্রমে ॥ ১ ॥ আহ ত্বাং রাঘবো রাজন কোশলেন্দো মহাযশাঃ। প্রাপ্তকালমিদং বাক্যং তদাদৎস্ব কুরুষ চ॥ ১০॥ অকুতাত্মানমাসাদ্য রাজানমন্যে রতম্। বিনশ্যন্ত্যন্যাবিফী। দেশাশ্চ নগরাণি চ॥ ১১॥ ত্ববৈকেনাপরাদ্ধং মে সীতামাহরতা বলাৎ। বধায়ানপরাদ্ধানামন্যেষাৎ তদ্ভবিষ্যতি॥ ১২॥ (य ज्या वलपर्ना जामावित्सेन बत्नहताः। ঋষযো হিংসিতাঃ পূর্বাং দেবাশ্চাপ্যবমানিতাঃ ॥ ১৩ ॥ রাজর্ঘশ্চ নিহতাঃ রুদতাশ্চ হৃতাঃ স্ত্রিয়ঃ। তদিদং সমনুপ্রাপ্তং ফলং তস্থানয়স্থ তে॥ ১৪॥ হন্তান্মি ত্বাং সহামাতৈয়র্ধ্যম পুরুষো ভব। পশ্য মে ধনুষোবীর্যাৎ মানুষস্থা নিশাচর ! ॥ ১৫॥ মচ্যতাং জানকী সীতা ন মে মোক্ষ্যাস কৰিচিৎ। অরাক্ষসমিমং লোক কর্ত্তামি নিশিতৈঃ শরৈঃ । ১৬। ইতি তম্ম ক্রোণম্ম দৃতম্ম পরুষং বচঃ। এক স্বান মমূষে রাজারাবণঃ কেে। ধমূচ্ছিতিঃ ॥ ১৭ ॥ ইঙ্গিভজ্ঞান্ততো ভর্তুন্চত্বারো রজনীচরাঃ। চতুষ ক্ষেষ্ জগৃহঃ শাৰ্দ্ধ লমিব পক্ষিণঃ॥ ১৮॥ তाः खथा दश्यू मः मङ्गानक्रामा तकनी हतान्। व्यामारेयव अमूर्वा आमाम्बन्माविमर ॥ ३०॥

আমেন্ত্রা হেরাবণ ইতি সম্বধ্য ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ । ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥

বেগেনোৎপততন্তম্য পেতৃন্তে রজনীচরাঃ। ভূবি সংভিন্ন দ্বাঃ প্রহারবরপীডিতা: ॥ ২ । ॥ সংসক্তো হর্দ্যাশিখরাত্তমাৎ পুনরবাপতং। লঙ্ঘযিত্ব। পুরী পলকাং স্ববল্স্য সমীপতঃ॥ ২১॥ (कामालक्षमथानमा मर्खमाद्यमा वानवः। বিশ্র্যাম স তেজস্বী রাঘ্বেণাভিনন্দিতঃ ॥ ২২ ॥ ততঃ সর্বাভিসারেণ হরীণা শ্বাতরংহসাম ॥ ভেদ্যামাস लक्कायाः श्रीकातः त्रश्नुनन्दनः ॥ २०॥ বিভীষণক্ষাধিপতী পুরস্কৃত্যাথ লক্ষণঃ। " দিকিণং নগরছারমবামৃদ্ধের বাসদম্ ॥ ২৪ ॥ করভারুণপাণ্ডুণা 🛰 হরীণাং যুদ্ধণালিনাম্। কোটীশতসহস্রেণ লঙ্কামভ্যপতস্কা॥২৫॥ প্রলম্বাছুরুকরজজ্ঞান্তরবিলমিনান। ঋক্ষাণাং ধূমবর্ণানাং তিব্রঃ কোট্যো ব্যবস্থিতাঃ॥ ২৬॥ উৎপতদ্ভিঃ পতদ্ভিশ্চ নিপ্তদ্ভিশ্চ বানবৈঃ। নাদৃশ্যত তদা সুয্যো রজসা নাশিতপ্রভঃ॥ ২৭॥ শালিপ্রস্থনসদুশৈ<mark>: শিরীষকুস্থমপ্রতৈঃ।</mark> তক্রণাদিতাসদূলেঃ শণগৌরৈশ্চ বানরৈঃ॥ ২৮॥ প্রাকারং দদুশুন্তে তু সমন্তাৎ কপিনীক্তম। রাক্ষসা বিশ্বিতা রাজন্ সন্ত্রীরুদ্ধাঃ সমন্ততঃ ॥ ২৯॥

॥২০॥ ২১॥২২॥ সর্ব্ধাভিদারঃ যুগপৎ সর্ব্বোমভিদারো যতুশুন স্থলতানট বা ইতি ফ্লেচ্ছ প্রসিদ্ধেন ॥২০॥ কক্ষাপপতির্জাববান ॥২৪॥ করভোমনিবন্ধানি কনিষ্ঠাতঃ হতুপ্রদেশস্তদ্ধৃত্ব পাত্তবঃ শ্বেতাক্ষণাঃ ॥২৫॥২৬॥২৭॥ শ্লোগোণী স্ব্রোপাদ,নবীকং॥২৮॥২৯॥

^{*} পাণ্ডুনামিত্যত্ত গাত্রানামিতি পাঠঃ ক ঘ পুস্তকয়ে।ঃ।

বিভিত্নতে মণিস্তস্তান কর্ণাউশিথরাণি চ। ভয়োল্যবিতশৃঙ্গাণি যন্ত্রাণি চ বিচিক্ষিপু:। ৩০॥ পরিগৃহ শতস্মীশ্চ সচক্রাঃ সপ্তডোপলাঃ। हिक्किश्रुष्ट्र खरवरभन **लका** मरधा मश्राचनाः॥ ७) ॥ প্রাকারস্থাশ্চ যে কেচিনিশাচরগণান্তথা। প্রত্নুদ্রব্যুত্ত শতশঃ কপিভিঃ সমভিক্রতা:॥ ৩২ ॥ ততন্ত্র রাজবচনা দ্রাক্ষসাঃ কামৰূপিণঃ। নির্যযুক্তিক তাকারাঃ সহস্রশত সৎঘশঃ॥ ৫৩॥ শস্ত্রবর্ষাণি বর্ষন্তো '* জাব্যন্তো বনৌকসঃ। প্রাকারং শোভ্যন্ততে পরং বিক্রমনাস্থিতা:॥ ৩৪ ॥ স মাৎসরাশিসদুদৈশ্বভুব ক্ষণদাচরেঃ। 'ক্তো নির্বানরে। ভূষ: প্রাকারো ভীমদর্শনৈ:॥ ৩৫ ॥ পেতৃ: শূলবিভিন্নাঙ্গা বহবো বানরর্গভাঃ! স্তম্ভতোরণভগ্নাশ্চ পেতৃস্তত্ত নিশাচরাঃ॥ ৩৬॥ क्रिमारकमाञ्चयम्युद्धः तक्रमाः वानरेतः मर्। नरेथर्नरेखक वीजाना शामजा रेव शेवक्शवम् ॥ ७१ ॥ নিন্দনস্থা হাভ্যতন্ত্ত বানররাক্ষ্যাঃ। হতা নিপতিতা ভূমো ন মুঞ্জ্তি পরস্পরম্।। ৩৮॥

যাতৈ হুৰ্গ রক্ষণার্গৎ দাম জ্রীক্বতা দৈবতে বাং নগ্রনাশায়াতু দিতা কি বিভিন্নতে ইত্যাদিনা কর্ণন্তি গা গানান তেন প্রকারেণ যৎপাধাণাদি বিদ্ধরেণ ক্রিতে তত্ত্বনূগৃহ বিশেষং কর্ণাদৃমিতি বদান্ত তদ্ধি দিকোণ্য চতুর অন্যোপরি বিদিকোণং চতুর অং তহপরি দিকোণ্য তহপরি গ্রেরিদিকোণ নিতোবং ক্রমেণোন্তরে গ্রেরিকমিশ প্রমাণে ক্রুর শৈঃ দমাপ্যত ইতি প্রক্রিমাণ ১০ ॥ ৩১ ॥ ৩১ ॥ ৩১ ॥ ৩১ ॥ ৩৫ ॥ শুপ্ততঃ শুক্রিরানরোপাত্তিঃ রপে ভ্রমারণভ্রাঃ ॥ ৩৬ ॥ কেশাকেশি অন্যোদ্যং কেশের গৃহীয়া ॥ ৩৭ ॥ নিফানন্তঃ শব্দং ক্রেন্তঃ ॥ ৩৮ ॥

^{*} দ্রাব্যস্ত ইতাত্র জাবয়িহেতি পাঠঃ য পুস্তক্স্য

রামস্ত শরজালানি ববর্ষ জলদো যথ।।
তানি লঙ্কাং সমাসাদ্য জন্ম নুজনীচরান্ ॥ ৩৯ ॥
সৌমিত্রির শি নারাটেচ্চ্ চধস্বা জিতক্লমঃ।
তাদিশ্যাদিশ্য তুর্গস্থান্ পাত্যামাস রাক্ষসান্ ॥ ৪০ ॥
ততঃ প্রত্যবহারোহভূৎ দৈন্যানাং রাঘ্যাজ্ঞ্যা।
কৃতে বিমর্দে লঙ্কাযাং লক্ষলক্ষ্যো জ্যোত্তর ॥ ৪১ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বণি রামোপাখ্যান পর্বণি রামলঙ্কাপ্রবেশে চতুরশীত্যধিকদ্বিত্তমোহধ্যায়ঃ ২৮৪॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ততো নিবিশমানাংস্তান্ সৈনিকানাবণানুগাং।
অভিজয় গ্ৰাহনেকে পিশাচ ক্ষুত্ৰক্ষসাম্॥ ১॥
পক্ষাং পতনো জন্তঃ খরঃ ক্রোধবশো হরিং।
প্রক্ষজশ্চারুজশ্চৈব প্রঘসশ্চৈবমাদযঃ॥ ২॥
ততোহভিপততাং তেষামদৃশ্যানাং ছুরাজ্যান্।
অন্তর্ধানবধণ তজ্জ্ঞশ্চকার স বিভীষণং॥ ৩॥

॥ ২৯॥ আদিতা সংমুখী ক্তোতার্থ: ॥ ৪০॥ প্রতাবছার: শিবিরং প্রতি-গমনং লব্ধা: আযুধ্য: প্রাপ্তালক্ষ্যা বেধ্যাযাস্থান্ অবন্ধা প্রছার ইতি যাবৎ জয়োত্তরো জয়োৎকর্ষবান্॥ ৪১॥

> ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে চতু-রশীত্যধিক দ্বিত্তমে হুধ্যায়ঃ ॥২৮৪॥

গণা অনেকে ইতিচ্ছেদঃ ॥১॥২॥ অন্তর্ধানবধং অন্তর্ধান শক্তের্না শং ॥৩॥

তে দুশামানা হরিভিবলিভিদুরিপাতিভিঃ। নিহতাঃ সর্বশো রাজন্ মহী জন্ম গত। সবঃ ॥ ৪ ॥ ্ষিস্থ্যাণঃ সবলো রাবণো নির্যাবধ। রাক্ষদানাং বলৈর্ঘেরিঃ পিশাচানাঞ্চ সমৃতঃ। ৫। যুদ্ধশাস্ত্রবিধানজ্ঞ উশনা ইব চাপরঃ। ব্যহ্য চৌশনসং বৃাহণ হরীন স্কানহার্যং। ৬॥ রীঘবস্ত বিনির্যান্তই ব্যুচানীকৎ দশনেনম্। বা≨সপ্ৰাং বিধি∿ কৃত্বা প্ৰত্যবৃাহলিশা5নে্॥৭ ॥ সমেত্য যুষুধে তত্র ততো রামেণ রাবণঃ॥ যুযুধে লঙ্ক্ষণশ্চাপি তথৈবেক্সজিতা সহ॥৮॥ বিৰূপাক্ষেণ স্থতীবস্তারেণ চ নিথর্কটঃ। তুত্তেন চনলস্তত্র পটুশঃ প্রনদেন চ। ১। বিসহ্যং যং হি যে। মেনে স তেনৈব সমেযিবানু। যুরুধে যুদ্ধবেল।যাং স্ববাছবলমাপ্রিতঃ ॥ ১০॥ স সংপ্রকারে। বরুধে ভীরণাং ভযবর্দ্ধনঃ। লোমসংহর্ষণো ঘোরঃ পুরা দেবাস্থরে যথা॥ ১১॥ রাবণো রামমানচ্ছ চিক্ত শ্লাসির্ফি ভঃ॥ নিশিতেরায়নৈতাকৈ রাবণঞাপি রাঘবঃ॥ ১২॥ **उरिश्रवक्तिक उर् यदः नक्तार्ग। मर्ज्ञारक किः ॥** ইন্দ্রজিচ্চাপি সৌমিত্রিং বিভেদ বহুভিঃ শরৈঃ॥ ১৩॥ বিভীষণঃ প্রহস্তঞ্চ প্রহস্তস্ত বিভীষণ্য । খগপুরিঃ শ্রৈন্তীকৈরভ্যবর্ষকাতব্যথং ॥ ১৪॥

॥ ৪॥ ৫॥ হরীক্রানরান্ অভ্যবহারয়ন্ আবেফিউবান্॥ ৬॥ ৭॥ ॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ আনদ্হ ৎ অপীডয়ত॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ তেষাপ বলবত মাসী মহাস্তাণাং সমাগমঃ ॥
বিব্যুপ্থ: সকলা যেন এযো লোকা শ্চরাচরাঃ ॥ ১৫॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাখ্যান পর্বাণ রামরাবণ জন্দ্র
যুদ্ধে পঞ্চাশীত্যধিকজিশতত মেইধ্যায় ॥ ২৮৫॥

মার্কতের উবার।

ততঃ প্রহন্তঃ সহসা সমভ্যেত্য বিভীষণ্য।
গদ্যা তাড্যামাস বিনদ্য রণকক্ষ শিং॥ ১॥
স তথাভিহতো ধীমান্ গদ্যা ভীমবেগ্যা।
নাকম্পত মহাবাছ ইমবানিব স্থান্থরঃ॥ ২॥
ততঃ প্রগৃষ্থ বিপুলা শত্র্মনীং ক্লিউষণ্ঃ।
অনুমন্ত্র্য মহাশক্তিং চিক্ষেপাস্য শিরং প্রতি॥ ৩॥
পতন্ত্যা স ত্যা বেগাজাক্ষসোহশনিবেগ্যা।
* হুত্তোভ্রমাঙ্গো দদুশে বাত্ত্রুগ্ন ইব জ্রমঃ॥ ৪॥
তং দৃষ্টা নিহতং সম্ব্যো প্রহন্তং ক্ষণদাচর্য।
অভিমুদ্রাব ধূমাক্ষো বেগেন মহতা কপীন্॥ ৫॥
তম্ম মেঘোপমং সৈন্যমাপতন্তীমদর্শন্য।
দৃকৌব সহসা দীর্ণা রণে বানরপুস্কবাঃ॥ ৬।

1 2 a 1

ইত্যারণাকে পর্ত্তণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে পঞ্চা-শীত্যধিক দ্বিশততমোধ্যায়ঃ ॥ ২৮৫॥

ততঃ পেছন্ত ইতি ॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ७॥

* হত্তোত্তমাদ ইতাত্ত ক্ৰোত্তমাদ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ততন্তান সহসা দীর্ণান্ দৃষ্ট্রা বানরপুঞ্চবান্। निवां र्या कि निर्माफ् ला इन्मान् 🤻 পर्यावश्विः ॥ १ ॥ তং দৃষ্ট্যবিস্থিতং সম্বো হরষঃ পবনাত্মজম্। মহত্যা ত্বর্যা রাজন্ সন্নাবর্ত্তন্ত শব্দশঃ । ৮॥ ততঃ শব্দো মহানাগীতুমুলো লোমহর্ষণঃ। রামরাবণদৈন্যানামন্যোন্যমভিধাবভাম ॥ ৯॥ তিমান্ প্রবৃত্তে সংগ্রামে ঘোরে রুধিরকর্দমে। * ধূম্রাক্ষঃ কপিদৈন্তুদ্বিয়ামাস পতিভি:। ১০॥ তং রাক্ষসমহামাত্রমাপতত্ত সপত্রজিৎ। প্রতিজ্ঞাহ হ্রুমা°স্তর্মা প্রনাত্মজঃ । ১১ ॥ ় তথে। যুদ্ধিমভূদেঝারং হরিরাক্ষসবীরযোঃ। জিগীষতোর্যান্যান্যমিন্সপ্রাদ্যোরিব ॥ ১২ ॥ গদাভিঃ পরিষৈশ্চৈব রাক্ষসো জল্পিবান্ কপিন্। কপিশ্চ জল্পিবানুক্ষঃ সক্ষন্ত্রিটপৈদ্রু মৈঃ॥ ১৩॥ ততস্তমতিকোপেন সাশ্বং সর্থসার্থিম। ধূআকমবধীৎ কুদো হতুমাঝারুতাত্মজঃ ॥ ১৪॥ ততন্ত্ৰ নিহতং দৃষ্ট ৷ ধূমাক্ষণ রাক্ষসোত্তমন্ ৷ হরয়ে জাতবিশ্রভা * জন্মরন্যেচ সৈনিকান্॥ ১৫॥

॥ १॥ ৮ ॥ २ ॥ २० ॥ त्रत्का महोमोजः तकः (अर्घः ॥ २२ ॥ २२ ॥ २० ॥ ॥ २८ ॥ २० ॥

পর্বাহিত ইত্যর মাক্তাল্পজ ইতি পাঠঃ খ ঘ পুত্তকরোঃ।
 জন্মরন্যেচসৈনিকানিত্যর জন্মরহৈত্য সৈনিকানিতি পাঠঃ ঘ পুত্তক্র্য।

তে ব্ধ্যমানা হরিভির্কলিভির্ন্নিতকাশিভিঃ। রাক্ষ্যা ভগ্নক্ষপা লক্ষ্যভ্যপত্ন ভ্যাৎ ॥ ১৬॥ তেহভিপত্য পুরং জগ্না হতশেষা নিশাচরাঃ। সর্বিং রাজে যথারত্ত রাবণায় ন্যবেদয়নু ॥ ১৭ ॥ শ্রুতা তুরাবণস্তেভ্যঃ প্রহুত্তং নিহতং যুধি। थूआकक्ष मर्घामः मरेमना० वानत्वं रेखः ॥ ১৮॥ স্থার্থনিব নিশ্বস্থ সমুৎপত্য বর্গান। । উৰচে কুস্তুকৰ্ণ ভাক শৰ্মকালোহ্যমাগতঃ ॥ ১৯ ুঃ हैर्टावश्वक्रु । विविदेधवी मिरेकः स्थमश्विरेनः । শ্যানমতিনিদ্রান্তং * কুন্তুকর্ণমধ্যেধ্যং ॥ ২০॥ প্রবেধ্য মহতা চৈন্দ্র যুদ্ধের গ্রহণ স্বস্থমাসীন্মব্যগ্রং বিনিদ্রং রাক্ষ্সামিপঃ॥২১॥ ততে।হ্রধীদশ্জীবঃ কুন্তুকর্ণ মহানলম্। थरिना श्री यस्त्र एक निक्का कुछकर्पिय कुशी ॥ २२ ॥ य इति पाक्त गांक विश्व न कार्नी (य नहा खया। এষ তিত্ববিশ্ব রামঃ সেতুনা হরিভিঃ সহ॥ ২৩॥ জ্বমন্যেহনঃ সর্বানু কর্রোভিক্রনং মহৎ। ময়াত্বপ্রতা ভাগ্যা সীতা নাম্ভ জানকী ॥ ২৪॥ তা॰ নেতৃং স ইহাষাতে। বদ্ধা সেতৃং মহার্বে। তেন চৈব প্রহন্তাদিম হালঃ স্বজনো হতঃ ॥ ২৫ ॥ ত্যা নান্যে। নিহন্তান্তি আমূতে শত্ৰুকৰ্ষণ !। म मर्भिट्डाइ जिनियाय ज्ञान वालना यत ॥ २७!॥ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ অংশত সাধ্যঃ জীতভয়ঃ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ॥२७॥ २८॥ २८॥ २७॥

* অন্ধ্যিতাত্র অালুমিতি পাঠঃ খার্ভকে। -

রামাদীন সমরে সর্বান্ জহি শকুনরিন্দম !
দূষণাবরজৌ চৈব বজ্ঞবেগপ্রমাথিনৌ ॥ ২৭ ॥
তৌ ত্বান্দ্র বলন মহতা সহিতাবনুষাস্যতঃ ।
ইত্যুক্ত্বা রাক্ষসপতিঃ কুস্তুকর্ণং তরন্থিনম্ ।
সন্দিদেশেতিকর্তব্যে বজ্ঞবেগপ্রমাথিনৌ ॥ ২৮ ॥
তথেত্যুক্ত্বা তু তৌ বীরৌ রাবণং দূষণানুজৌ ।
কুস্তুকর্ণং পুরস্কৃত্য তূর্ণং নির্যযকুঃ পুরাৎ ॥ ২৯ ॥
ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাধ্যান পর্বাণি কুস্তুকর্ণরণগমনে
ষডশীত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ং ॥ ২৮৬ ॥

মাকতের উবাচ।
ততো নির্যায় স্বপুরাৎ কুণ্ডকর্বাঃ সহানুগঃ।
অপশ্রুৎ কপিলৈনাং তজ্জিতকাশ্যপ্রতঃ স্থিতন্॥ ১॥
স বীক্ষমাণ্ডৎ সৈন্যং রামদর্শনকাক্ষ্মা।
অপশ্রুচাপি সৌমিত্রিং ধনুষ্পাণিং ব্যবস্থিতম্॥ ২॥
তমভ্যেত্যাশু হর্মঃ পরিবক্রঃ সমন্ততঃ।
অভ্যস্থাক মহাকাথৈর্বিছভির্জগভীরুইেঃ॥ ৩॥
করজৈরতুদংশ্চান্যে বিহাষ ভষমুত্তমম্।
বছধা যুধ্যমানান্তে যুদ্ধনাগৈঃ প্রবঙ্গমাঃ॥ ৪॥

11 49 11 44 11 49 11

ইত্যারণাকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে ষড-শীত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৮৬॥

তত ইতি জিতকাশি দৃঢ় মুক্তি কাশিমু ফি: প্রকাশনাদিতিযাম্ব: ॥ ১ ॥ । ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥

নানাপ্রহরণৈভীমৈ রাক্ষসেক্রমতাডযন্। স তাডামানঃ প্রহ্মন ভক্ষমামাস বানরান্॥ ৫॥ वन १ छवना था १ वज्र व छक्ष व न तम्। তদ্ষ্ী ব্যথন কর্ম কুম্তুকর্ণস্থ রক্ষমঃ॥ ৬॥ উদক্রেশন্ পরিত্রস্তারপ্রভূত্যস্তদা। তারুকৈঃ ক্রেশতঃ দৈন্যান্ প্রজ্বা স হরিষ্থপান্। ৭। অভিছুদ্রাব স্থগ্রীবঃ কুম্তুকর্ণমপেতভীঃ। ততোহভিপত্য বেগেন কুস্তকর্ণ মহ।মনাঃ ॥ ৮॥ শালেনাজ ন্বিবাম জিনু বলেন কপিকুঞ্জরঃ। স মহাত্মা মহাবেগঃ কুন্তুকর্ণস্থ মূর্দ্ধনি ॥ ৯ ॥ विरञ्ज भाल अञ्जीत्वा न रेहवावायय किंशः। ততো বিনদ্য সহসা শালস্পর্শবিদ্যোধিতঃ ॥ ১ • ॥ मिर्जामानाय श्रुथीव० कुखक्ट्यांश्रहत्वनार। ব্রিযমাণস্ত সুগ্রীবৎ কুন্তুকর্ণেন রক্ষসা॥ ১১॥ অবেক্ষ্যাভাদ্রবদ্বীরঃ সৌমিতির্ম্মিত্রনন্দনঃ। সোহভিপত্য মহাবেগৎ রুকাপুত্থং মহাশরম্॥ ১২॥ প্রাহিণোৎ কুম্তকর্ণায লক্ষ্মণঃ পরবীরহা। স তম্ভ দেহাবরণং ভিত্তা দেহঞ্চ সাযক:। ১৩॥ জগাম দার্যন্ ভূমিৎ রুধিরেণ সমুক্ষিতঃ। তথা স ভিন্ত্দযঃ সমুৎস্জ্য কপীশ্বর্ম ॥ ১৪ ॥ কুস্তকর্ণো মহেষাদঃ প্রগৃহীতশিলাযুধঃ। অভিত্নতাব সৌমিত্রিমুদ্যম্য মহতীং শিলাম্॥ ১৫॥ তক্ষাপি পততন্ত্রণ ক্রাভ্যামুচ্ছিতৌ করৌ। চিচ্ছেদ নিশিতাপ্রভ্যাং স বভূব চতুভুজঃ॥ ১৬॥

তানপান্ত ভুজান স্কীন্ প্রগৃীতশিলাগুধান্। কুরৈশ্চিচ্ছেদ লঘুত্রং সৌমিত্রিং প্রতিদর্শবন্ ॥ ১৭ ॥ স বভূবাতিক।যশ্চ বহুপ।দশিরোভুজঃ। ত শ্বন্ধাস্ত্রেণ সেনিতিদিদারা তিচ্যোপময় ॥ ১৮॥ স পপ,ত মহাবীর্যো। দিব্যাস্ত্রাভিহতো রণে। মহাশ্নিবিনিদ্ধঃ পাদপোহস্কুরবানিব॥ ১৯॥ তং দুखे। वृज्यमहाभार कु सुकर्गण जत्रिमम्। গত।সুং পতিতং ভূমৌ র ক্ষাঃ প্রাদ্রবন্ ভ্যাৎ॥ ২০॥ তভন্তঃনু দ্রবতো যেধোন্ দৃষ্ট্য ভৌদূষণানুজৌ ! অবস্থাপ্যাথ সৌমিত্রিং সংক্রুদ্ধবিভাষাবতাম॥ ২১॥ ত विक्रितरहो म॰ कृष्को रङ्गरितभ्रमाथिरगो। প্রতিজ্ঞাহ সৌমিতিকিন্দ্যোভৌ প্রত্তিভিং 🕸 ॥ ২২ ॥ ভতঃ স্তুমূলং যুদ্ধমভবলোমহর্ণম্। पुरागानुकरगाः পार्थ ! लक्का ख ह दीय छः ॥ २०॥ মহতা শরবর্ষেণ রাক্ষসৌ সোহভ্যবর্ষ হ। ভৌ ঢাপি বীলৌ সংক্রন্ধাবুভৌ তং সম বর্যভাগ্ ॥ ২৪॥ মুহুর্ত্তমেবমভবরজ্ঞবোপপ্রমাথিনোঃ । भोगिर्ज्य महावारहाः म॰ शहातः स्नातः । २०॥ অথাতিশুজ্মাদায় হতুমামারুত। লুজঃ। অভিদ্রত্যাদদে প্রাণান বজ্ঞবেগস্থা রক্ষসঃ॥ ২৬॥ নীলশ্চ মহতা আবা দূষণাবরজং হরিঃ। প্রমাথিনমভিক্ততা প্রমমাথ মহাবলঃ॥ ২৭॥

 ^{* ি}ন্দ্যোভো পত্রিভিরিতার বিতুদ্ধৌ পত্রিভিরিতি পাঠঃ ক পুস্তক্ষ্য।

ততঃ প্রাবর্ত্ত পুনঃ সু-গ্রামঃ কটুকোদয়ঃ। রামরাবণ্দৈন্যান্মেন্যান্যমভিধ্বেত্র ॥ ২৮॥ শতশো নৈখাতান্বন্যা জন্মবিন্যাংশ্চ নৈখাতাঃ। নৈখ তান্তত্র বধ্যন্তে প্রায়েণ ন ভু বানরাঃ॥ ২৯॥ ইত্যারণ্যকে পর্ক্ষণিরামোপাখ্যান প্রকৃণি কুন্তুক্ণাদিবধে সপ্তানীত্যবিক্ষিশততমোহধ্যায়ঃ॥২৮৭॥

भार्कित्थत छेवाँ ।

ততঃ প্রক্রা হতং সংখ্যে কুন্তর্বন সহাত্র্যান্। প্রহত্তপ্র মধ্যোস~ ধূত্রাক্ষণাতিতেজসম্॥ ১॥ পুত্রমিক্তজিত পরিং রাবণঃ প্রভাভাষত। জহি রামম্মিত্র ! সূত্রীরপ সলকাণ্য । ২ ॥ ত্ব্যা হি মম সংপুত্র ! যশে। দীপ্তমুপার্কতম্। জিত্বা বজ্রধরং স্প্রোসহস্থাকং শ্চাপতির্॥ ৩॥ অন্তর্হিতঃ প্রকাশো বা দিবৈদ্যন্তবরেঃ শরেঃ। জহি শত্রনমিত্রয় ! মম শস্ত্রভূতায়র ! ॥ ৪ ॥ রামলক্ষণসূত্রীবাঃ শরস্পর্শান ন তেইনম্।। সমর্থাঃ প্রতিসোচ্ঞ কুততদরুয়াযিনঃ॥ ৫॥ অগত। যা প্রহন্তেন কুমুকর্ণেন চান্য।। 🗱 খরস্থাপিচিতিঃ মংখ্য তাং গচ্ছ স্বং মহাভূজ। ॥ ७॥

॥ २ ४ ॥ वनागः वटन इत्रामनताः ॥ २० ॥ ইত্যারণ:কে পর্ব্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তাশীত্যধিকদ্বিশততমে ২ধ্যায়ঃ ॥ ২৮৭॥

তত ইতি ৷ ১ ৷ ২ ৷ ৩ ৷ ৪ ৷ ৫ ৷ ৬ ৷

^{*} খরপ্রেভাত্ত বৈর্গ্রেভি পাঠঃ ঘ পুস্তক্তা।

ष्ममा निभिटे क्या शिक्षा भेजन् मरेमनिक नु। প্রতিনন্দ্য মাং পুত্র ! পুরা জিত্বেব বাসবন্ ॥ ৭ ॥ ইত্যক্তঃ স তথেত্যক্তা রথমাস্থায় দংশিতঃ। প্রথমাবিজ্রজিজাজংস্কৃর্নাযোধনং প্রতি। ৮॥ ততো বিশ্রাব্য বিম্পান্তং নাম রাক্ষসপুঞ্জবঃ। আহ্ব্যামাস সমরে লক্ষ্ণং শুভলক্ষণ্য । ১॥ তং লক্ষাণোহভাধাবচ্চ প্রগৃহ সশরং ধরু?। ত্রাসয় শস্তলঘোষের সিংহঃ ক্ষুদ্রসূগং যথা । ১০ ॥ তर्याः मगञ्जन्यूकः स्रगङ्क्यगृकितनाः। मिकाञ्चिविष्ठ याखी बगरनामा म्याक्तिरना छन। >> ॥ রাবণিস্ত यह। रेननः বিশেষযতি সায়কৈঃ। ততো গুরুতরং যত্ত্রমাতিঠনলিনাং বরঃ॥ ১২॥ তত এনং মহাবেগৈরদ্দিশাসাস তোমরৈঃ। তানাগতান্স চিচ্ছেদ সৌমিত্রির্নিশৈতেঃ শরৈ॥২৩॥ তে নিকুন্তা: শরৈস্ত্রীকৈন্পতন্ বস্থাতলে। তমঙ্গদো বালিস্ত: শ্রীমানুদামা পাদপম্॥ ১৪॥ অভিদ্রুত্য মহাবেগ * স্তাড্যামাস মূর্দ্ধনি। ज्ञान कि प्रभाव के व्याप्त का कि वी श्रीयान् ॥ ১৫ ॥ প্রহর্ত্তামজ্ভঞ্গ ভা প্রাসং চিচ্ছেদ লক্ষণः। তমভ্যাসগতং বীরমঙ্গদং রাবণাত্মজঃ॥১৬॥ গদ্যাতাড্যৎ সব্যে পারে বানরপুঙ্গবম্। ত্যচিন্ত্য প্রহারং স বলবান বালিনঃ স্কৃতঃ । ১৭ । 11 9 11 5 11 30 11 35 11 30 11 38 11 30 11 39 11 39 11

 ^{*} বেগইতাত্ত্র বেশমিতি পাঠঃ ক পুস্তকন্ত।

সসর্কেন্দ্রজিতঃ ক্রোধাৎ শালস্কন্ধ্য তথাঙ্গদঃ। সে। ২ঙ্গদেন রুষোৎস্থটো বধায়েন্দ্রজিতস্তরুঃ ॥ ১৮॥ জঘানেক্রজিতঃ পার্থ। র্থণ সাশ্বং সসার্থিম। ততো হতাশ্বাৎ প্রস্কলা রথাৎ স হতসার্থিঃ॥১৯॥ ত তৈবান্তৰ্দধে রাজনু মায্যা রবেণালুজঃ। অন্তর্ভিৎ বিদিয়া তং বহুমাযঞ্ রাক্ষসমূ॥ ২০॥ রামস্ত্র দেশমাগম্য তৎ সৈন্যং পর্যাঃক্ষত। স রামমুদ্দিশ্য শরৈস্ততো দক্তবরৈস্তদা॥ ২১॥ বিব্যাধ সর্ববগাতে যুলক্ষণঞ্চ মহাবলম্। তমদৃশ্যৎ শরৈ: শূরৌ মায্যান্ত(ইতং তদা ॥ ২২ ॥ (यावयामामञ्क्राको तार्वार तामनम्मानो। স রুষা সর্বাগতেষু তয়েঃ পুরুষ্সিংহয়েঃ ॥২৩॥ ব্যস্ত্রজৎ সায়কান্ ভূষঃ শত্রশেষ্ট্রে সহস্রশঃ। তমদৃশ্যং বিচিন্নতঃ স্তজন্তমনিশ্র শরান্। ২৪॥ হরযে। বিবিশুবের্যাম প্রগৃহ্থ মহতীঃ শিলাঃ। তাংশ্চ তৌ চাপ্যদৃশ্যঃ স শরৈর্কিব্যাধ রাক্ষসঃ॥ ২৫॥ 🏶 সভূশং তাডয়ামান রাবণির্মায্যা রুতঃ। को भरेवताहिएको वीरतो खालरतो तामलकारो। পেততুর্গগণান্দ্রিণ স্থ্যাচন্দ্রমসাবিব ॥ ২৬॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাখ্যান পর্বাণি ইন্দ্রজিৎসংগ্রামে অউ।শীত্যধিক্দ্রিশততমোহ্ধ্যায়ঃ ॥ ২৮৮॥

সনর্জ উৎস্ফৌবান্ শালক্ষরং মহাক্ষমং তকং ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥ তান্ হরীন্ তেগ্চ রামলক্ষাণো ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ইত্যারণ্যকৈ পর্কাণ নৈলকগীরে ভারত ভাবদীপে অফ্টাশীতাধিকদ্বিত্তমোহধ্যারঃ ॥ ২৮৮ ॥

^{*} সভূশং তাডয়ামাদেতাত্ত স্থভূশং তাডয়ন্ বীরেতি পাঠঃ ক'ঘ পুস্তুকয়োঃ।

মার্কতের উবাচ।

তাবুলৌ পতিতৌ দুষ্ট্য ভাতরৌ রামলক্ষণৌ। ववन्नताविश्वभ्यः भरेतर्पख्यरेतछा। । । ॥ তৌ বীরৌ শরবদ্ধেন বদ্ধাবিক্ত জিতা রণে। রেজত্বঃ পুরুষব্যাঘ্রো শকুমাবিব পঞ্জরে॥ ২॥ তৌ দৃষ্ট্ৰ পতিতৌ ভূমৌ শতশঃ সাযকৈশিতে।। স্থগ্রীবং কপিভিঃ দার্দ্ধং পরিবার্য্য ততঃ স্থিতঃ॥ ৩॥ ऋरयगरेमन्द्रिविटेनः कुनुटननां क्रटनन छ। হনুমন্নীলতারৈশ্চ নলেন চ কপীশ্বরঃ। ৪॥ ততন্তং দেশমাগম্য কুতকর্দ্যা বিভীষ্ণঃ। বোধযামাস ভৌ বীরো প্রজ্ঞান্ত্রেণ প্রবেগিতৌ ॥ ৫ ॥ বিশল্যো চাপি স্থগ্রীবঃ ক্ষণেনৈতৌ চকার হ। বিশল্যা মহৌষধ্যা দিব্যমন্ত্রপ্রযুক্তযা ॥ ৬ ॥ তৌ লক্ষণংজ্ঞী মূবরো বিশল্যাবুদ্ভিষ্ঠভান্। গততক্রীক্লমৌ চাপিক্ষণেটনতৌ মহার্থৌ॥৭॥ ততো বিভীষণঃ পার্থ। রাম্মিক্সাকুনন্দন্য। উবাচ বিজ্বং দৃষ্ট্ব। কৃতাঞ্জলিরিদং বচঃ॥৮॥ ইদমন্তো গৃহীত্বা তু রাজরাজন্ত শাসনাৎ। গুহুকোইভ্যাগতঃ শ্বেত।জুংসকাশমরিন্দম!॥৯॥ ইদমন্তঃ কুবেরস্তে মহারাজ প্রযক্ততি। অন্তর্ভিলনাং ভূতানাং দর্শনার্থং পরস্তপ। ॥ ১০ ॥ অনেন মৃক্টনযনো ভূতান্যন্ত*হি*তান্ত্যুত। । ভবান্ জক্ষ্যতি যদৈম চ প্রদাস্ততি নরঃ ম তু॥ ১১॥

তাবিতি ১১॥২॥৬॥৪॥৫॥৬॥৭॥৮॥১॥১০॥১১॥

বল্পর্বা।

তথেতি রামস্তদারি প্রতিগৃহাভিসংস্কৃত্যু। চকার নেত্রযোঃ শৌচং লক্ষণ*চ মহামনাঃ॥ ১২॥ স্ত্রীবজাস্ববন্তৌ চ হনুমানঙ্গদন্তথা। বৈন্দবিদিনীলাশ্চ প্রায়ঃ প্লবগদন্তমাঃ॥ ১৩॥ তথা সমভবচ্চাপি যতুবাচ বিভীষ্ণঃ। ক্ষণোতীন্ত্রিয়াগ্রেষাং । কুংষ্যাসন্ যুধিষ্ঠির । ॥ ১৪ ॥ ইন্দ্রজিৎ ক্লতকর্মা তু পিত্রে কর্ম্ম তদাস্থানঃ। নিবেদ্য পুনরাগচ্চত্ত্বরযাজিশিরঃ প্রতি॥১৫॥ তমাপতত্ত সংকুদ্ধং পুনরেব যুযুৎস্যা। অভিত্নজাব সৌমিত্রিবিজীষণমতে স্বিতঃ॥ ১৬॥ অক্লতাক্লিকমেবৈন্দ জিঘাৎস্কৃত্তিক।শিন্স। শরৈজ্যান সংকুদ্ধঃ কুতসংজ্ঞোহ্য লক্ষ্যঃ॥ ১৭॥ তযোঃ সমভবদ্যুদ্ধ তদান্যোন্যং জিগীয়ভোঃ। অতীব্চিত্রমাশ্চর্যাৎ সক্রপ্রহাদযোরিব ॥ ১৮॥ অবিধ্যাদন্ত জন্তীকৈঃ সৌমিত্রিং মশ্বভেদিভিঃ। भोगिकिकानलण्यारेर्मत्विधाकाविश् भोरेतः ॥ ३० ॥ সৌমিত্রিশরসৎস্পর্শাদ্রাবিণিঃ ক্রোধমুচ্ছিতঃ। অক্জলক্ষণাযাটো শ্রানাশীবিযোপনান ॥ ২০॥ ত্য্যাস্থন পাবকস্পদৈঃ সৌমিত্রিঃ পত্রিভিন্তিভিঃ। যথা নিরহরদীরস্তমে নিগদতঃ শৃণু ॥ ২১॥ একেনাস্য ধনুমন্তং বাহুং দেহাদপাত্যং। দ্বিতীযেন সনারাচং ভুজং ভূমৌ ন্যপাত্যং॥ ২২ ॥ তৃতীয়েন তু বাণেন পৃথুধারেণ ভাস্বতা। ' জহার স্থনসংখাপি শিরো ভাজিফুকুওলম্॥২৩॥

॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ অতীব্রিয়াণি অতিব্রিয়ার্থ আহকানি ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ক্রুডসংজ্ঞঃ বিভীয়ণেন সংক্রেডিঃ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥২০॥ ২১ ॥,২২ ॥ ২৩ ॥ বিনিক্কন্তভুজক্ষন্ত কবন্ধ ভীমদর্শনন্। ত হত্বা স্থতমপ্যস্তৈর্জ্বান বলিনাম্বরঃ । ২৪॥ লঙ্কাং প্রবেশয়ামাস্থতং রথণ বাজিনস্তদা। দদর্শ রাবণস্তঞ্চ রথং পুত্রবিনাক্রতম্॥ ২৫॥ স পুত্রং নিহতং দৃষ্ট্রা ত্রাসাৎ সংভান্তমানসং। রাবণঃ শোকমোহার্ত্তো বৈদেহী । হস্তমুদ্যতঃ ॥ ২৬ ॥ অশোকবনিকাস্থাং তাং রামদর্শনলালসাম্। শ্বজামাদায় দুষ্টাল্লা জবেনাভিপপাত হ ॥ ২৭ ॥ তং দৃষ্ট্রা তস্য ছুর্ব্বনেরবিক্সাঃ পাপনিশ্চযম্। শময়ামাস সংক্রন্ধৎ প্রেয়তাৎ যেন হেতুনা॥ ২৮॥ মহারাজ্যে স্থিতো দীপ্তে ন স্তিয়ং হন্তমর্হসি। इटेंडरेवया यहां क्यों ह वक्तान्या ह एक वर्षा । २०॥ ন চৈষা দেহভেদেন হতা স্যাদিতি মে মতিঃ। জহি ভর্ত্তারমেবাস্যা হতে তন্মিনু হতা ভবেৎ। ৩০॥ ন হি তে বিক্রমে তুল্যঃ সাক্ষাদপি শতক্রতঃ। অনুকৃদ্ধি ত্বয়া সেন্দ্রাস্ত্রাসিত।ব্রিদশা যুধি ॥ ৩১॥ এবং বছবিধৈৰ্বাকৈয়রবিন্ধ্যো রাবণং তদা। কুদ্ধং সংশ্মযামাস জগুহে চ স তদ্বচঃ ॥ ৩২ ॥ নির্যাণে স মতিং কুত্বা নিধায়।সিং ক্ষপাচরঃ। আজ্ঞাপয়ামাস তদা রথো মে কম্প্যতামিতি॥ ৩৩॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি রামোপাখ্যান পর্বাণি ইন্দ্রজিন্বধে ঊননবত্যাধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৮৯ ॥ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ নিধায়বশ্বং অসিং শুজাং ॥ ৩৩ ॥

> ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে উননবত্যধিকদ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৮৯ ॥

মার্কণ্ডেয় উনাচ। ততঃ ক্রুদ্ধো দশগ্রীবঃ প্রিয়ে পুত্রে নিপাতিতে। নির্যযৌরথমান্তার হেমরত্নবিভূষিতম্॥ ১॥ म॰ রুতো রাক্ষ**সৈর্ঘো**রির্বিবিধাযুরপাণিভিঃ। অভিছুক্তাব রামং স যোধযন্ হরিযুথপান্॥ ২ ॥ ख्यां क्रवंखर मञ्कूष रेमक् नी लनला अपाः। হতুমান্ জামবাং শৈচব সলৈব্যাঃ পর্য্যবারয়ন্। ৩॥ তে দশগ্রীববৈন্যন্তদুক্ষবানর পুঙ্গবাঃ। জ-নৈর্বিধংস্যাঞ্চকুর্দশক্রীব্যা পশ্যতঃ ॥ ই॥ ভতঃ স্বলৈন্যমালোক্য বধাম।নমরাতিভিঃ। মারাবী চাস্তলনারা করাবণো ব্রাক্ষসাবিপঃ॥ ৫॥ তম্য দেহবিনিষ্ক্রান্তাঃ শতশোহুথ সহস্রশ:। রাক্ষদাঃ প্রতাদৃশ্যন্ত শরশক্তাফিপাণ্যঃ॥ ৬॥ তানামো জল্পবান্ সর্বান্ দিব্যেনাজ্রেণ রাক্ষসান্ व्यथ ভূষোহপি মায়া॰ म न्यामधाकाक्रमाधिभः ॥ १॥ কুত্ৰা রামস্য ৰূপাণি লক্ষ্মণস্য চ ভারত!। অভিত্র দাব রামঞ্চ লক্ষ্যঞ্চ দশাননঃ ॥ ৮॥ ততত্তে রামমাচ্ছত্তা লক্ষনঞ্চ ক্ষপাচরাঃ। অভিপেতৃস্তদা রামণ প্রগৃহীত শরাসনাঃ। 🔊 ॥ তাং দুকী রাক্ষ্যেক্র্স্য মায়।মিক্ষ্যুক্নক্ন:। উবাচ রামং সৌমিত্রিরসংভাস্কো রুহ্দ্বচ: ॥ ১০ ॥ জহীমান্।ক্ষমান্ পাপানাত্মনঃ প্রতিরূপকান্। জঘান রামস্তাংশ্চান্যান্ত্রনঃ প্রতিরূপকান্॥ ১১॥

ততঃ কুদ্ধ ইতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ রামস্থারূপং কৃত্বালক্ষণ মভিত্নতাব লক্ষাণস্থারূপং কৃত্বা রামমিতি যোজনা ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ততে। হ্যাশ্বয়ুক্তেন রথেনাদিতাবর্চসা।

উপতত্তে রণে রামং মাতলিঃ শক্রসার্থিঃ ॥ ১২॥
মাতলিক্বাচ।
তামং হুর্গেয়েগ জৈলে। মাহানিঃ সাক্রেন্তিমঃ

অষং হ্য্যশ্ব্গ জৈতো মঘোনঃ স্যান্নে ত্রিমঃ। অনেন শত্রুঃ কাকুৎস্থ সমরে দৈত্যদানবান ॥ ১০॥ শতশং পুরুষব্যাঘ্র ! রথোদারেণ জল্পিবান্। जित्तन नत्त्वां <u>घा भया य</u> एक गः पूर्वा । ३८ ॥ चान्त्र कि कि थ॰ तार्व भा हित क्रिशः। ইত্যুক্তো রাঘবস্তর্থ্যং বচোহশঙ্কত মাতলে॥ ১৫॥ মাথৈয়া রাক্ষসস্থ্যেতি তমুবাচ বিভীষণঃ। নেবং মারা নরব্যান্ত রাবণস্থাতুরাত্মনঃ ॥ ১৬ ॥ তদাতিষ্ঠ রথং শীঘ্রমিমমৈক্ত্রণ মহাজ্ঞাতে !। ততঃ প্রহাটঃ কাকুৎস্থ্রেপ্রাক্তা বিভাষান্ ॥ ১৭॥ রথেনাভিপপাতাথ দশগ্রীবং রুষান্বিতঃ। হাহারুতানি ভূতানি রাবণে সমভিদ্রুতে॥ ১৮॥ मि॰ इनामाः मलोहा मिति मित्राख्यानम्ब। দশকরারর জহু বে । স্তদা যুদ্ধমভূমহৎ । ১৯ ॥ অল্কোপ্মমন্ত্র তথোরেব তথাভবং। স রামায মহাঘোর বিসদর্জ নিশাচরঃ॥ ২০॥ শূলমিক্রাশনিপ্রথাৎ ব্রহ্মদপ্তমিবোদ্যতম্। তচ্চুলং সত্তরং রামশ্চিচ্ছেদ নিশিতেঃ শরেঃ॥ ২১॥ তদ্দু ক্রী ছুষ্করং কর্ম্ম রাবণং ভ্যম।বিশৎ। ততঃ কুদ্ধং সম্বাশু দশগ্রীবং শিত।গুরান্॥ ২২ ॥ সহস্রাযুতশো রামে শস্ত্রাণি বিবিধানি চ। ততো ভুষুগ্রীঃ শূলানি মুষলানি পরশ্বধান্ ॥ ২৩॥

1 25 11 20 11 28 11 20 11 20 11 20 11 20 11 50 11 50 11 50 11

শক্তীশ্চ বিবিধাকখলাঃ শতল্পীশ্চ শিতান্ কুরান্। তাং মারা । বিক্তাং দৃষ্টা দশগ্রী অ রক্ষঃ ॥ ২৪॥ ভযাৎ প্রত্নকুঃ সর্বের বানরাঃ সর্বতোদিশম। ততঃ স্থপত্রং স্থমুখং হেমপুষ্থং শরোত্তমণ্॥ ২৫॥ ভূণাদাদায় কাকুৎস্থো ব্রন্ধান্ত্রেণ যুখোজ হ। ত প্রাণ্বর্যাং রামেন ব্রহ্মান্ত্রেণাভিমন্ত্রিতম্ ॥ ২৬ ॥ জহ্নযুর্দেবগন্ধবা দৃষ্ট্য শক্রপুরোগমাঃ। অপ্পবিশেষমাযুশ্চ ততোহ্মন্যন্ত রক্ষসঃ॥ ২৭॥ अभारिकामी वर्गाष्ट्र कार्ट्यमा नवित्रवाह । ততঃ সুসূর্জ তং রামঃ শ্রমপ্রতিমৌজস্ম । ১৮ ॥ রবেণান্তকরং ঘেরং ব্রহ্ম ওমিবোদাভ্য । মুক্তমাত্রেণ রামেণ দুরাক্কটেন ভারত।॥ ২৯॥ স তেন রাক্ষসভোটঃ দর্থঃ সাশ্বসার্থিঃ। প্রজন্ম মহাস্কালেনাগ্নিনাভিপরিপ্লতঃ॥ ৩০॥ ততঃ প্রহুটান্ত্রিদশাঃ সহগন্ধবিচারণাঃ॥ নিহতং রাবণং দৃষ্ট্রা রামেনাক্লিটকর্ম্মণা ॥ ৩১॥ তত্যজুন্তং মহাভাগং পঞ্চ ভূতানি রাবণম্। ভ্ৰ-শিতঃ সৰ্বলেকেযু দ হি ব্ৰন্ধাস্ত্ৰতেজ্যা॥ ৩২॥ শ্রীরধাতবে। হুস্থ মাৎসৎ ক্রধিরমেব চ। নেশুব্ৰ'ন্সনিৰ্দন্ধান চ ভসাপাদুখাত॥ ৩০॥

ইত্যারণ্যকে প্রবলি রামোপাখ্যান প্রবিণ রাবণ্যধে ন্বত্যধিক্ষিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৯০॥

বিক্কতাং ভীষণাং ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ পঞ্চভূতানিতভাজমূত ইভাৰ্যঃ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ १ ইত্যারণাকে পর্কাশ নৈলকণীয়ে ভারত ভাষদীপে নণভাধিকদ্বিশতভমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৯০ ॥ মার্কতের উগ্রচ

স হত্ব। রাবণং ক্ষুদ্রু রাক্ষসেন্দ্রং স্থর্দ্বিষ্ট্র। বভূব হৃষ্টঃ সমুহৃদ্রামঃ সৌমিতিনা সহ॥ ১॥ ততে। হতে দশগ্রীবে দেবাঃ সর্ষিপুরোগমাঃ। আশীর্ভিরযুক্তাভিরানর্চ্চ সং। ভুজম্ ॥ ২ ॥ রামং কমলপত্রাক্ষণ ভুষ্টাবুঃ সর্ব্বদেবতাঃ। গন্ধবাঃ পুষ্পাবধৈশ্চ বাগিভশ্চ ত্রিদশালযাঃ॥ ৩॥ পূজ্যিত্বা তথা রামং প্রতিজ্ঞার্যথাগতম্। তন্মহোৎসবসঙ্কাশমাসীদাকাশমচ্যুত!॥৪॥ ততো হত্তা দশগ্রীবং লঙ্কাৎ রামো মহাযশাঃ। বিভীষণায প্রদদৌ প্রভুঃ পরপুরঞ্জয়:॥ ৫॥ ততঃ দীতাং পুরস্কৃত্য বিত্লীষণপুরস্কৃতাম্। অবিক্যো নাম স্থপ্ৰজ্ঞো বৃদ্ধামাত্যো বিনিৰ্যযৌ । ও॥ উবাচ চ মহাত্মানং কাকুৎস্থং দৈন্যমান্থিতঃ। প্রতীচ্চ দেবীং সদ্ধৃতাং মহাত্মন্ জানকীমিতি । ৭॥ এতচ্চত্রা বচস্তমাদবতীর্য্য রথোন্তমাৎ। বাজেণাপিহিতাং মীতাং দদর্শেক্ষ্যাকুনন্দনঃ॥৮॥ তা দুষ্ট্ৰ চাৰুসৰ্ব্যঙ্গীং যানস্থাৎ শোককৰ্ষিতাস্। মলোপচিত্রসর্বাঞ্চীং জুটিলাং রুফবাসসম্॥ ৯॥ উবাচ রামো বৈদেহীং পরামর্শবিশক্ষিতঃ। शष्क्र रिरामिश्च मुक्ता द्वः यः कार्या - जन्नया कुल्म् ॥ >० ॥ মামাদাদ্য পতিং ভদ্দের ত্ব রাক্ষদবেশান। জরাং ব্রজেথা ইতি মে নিহতোহদৌ নিশাচরঃ ॥ >> ॥

সহত্তে ॥ ১ ॥ ২ ॥ ত্রিদশালয়ঃ স্বর্গস্তৎস্থাঃ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ॥৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥

কথং হৃত্মদিধো की তুজানন্ ধর্মবিনিশ্চযম্। পরহন্তগতাং নারী সুহূর্ত্রমপি ধার্যেৎ। ১২। সুরুত্তামস্তুরতাং বাপ্যহং ত্রামদ্য মৈথিলি !। নোৎসহে পরিভোগায স্থাবলীত হবির্যথা। ১৩। ততঃ সা সহসা বালা তচ্চ্বা দারুণ বচঃ | পপাত দেবী ব্যথিতা নিক্কন্তা কদনী যথা। ১৪। যোহপ্যস্যা হর্ষস্ভুতো মুখরাগস্তদাভবৎ। ক্ষণেন স পুনর্বটো নিশ্বাস ইব দর্পনে । ১৫॥ ততন্তে হরয়ঃ দর্কে তচ্ছুত্বা রামভাষিত্য। গতাস্থ্যুকল্পা নিশ্চেষ্টা বভূবুঃ সহলক্ষ্ণাঃ ১৬ ৷ ততো দেবে। বিশুদ্ধান্ত্রা বিমানেন চতুমুখিঃ। প्रवासिक्षित्र अध्यक्ति। नर्भयामी म त्राचित् ॥ ১१॥ শক्र महाश्चिम्ह वायुम्ह यदमा वक्रव धव ह। যক্ষাধিপশ্চ ভগবাৎস্তথা সপ্তর্ষবোহমলাঃ॥ ১৮॥ রাজা দশরথশৈচব দিব্যভাস্বরমূর্তিমানু।* বিমানেন মহাহেঁণ হংস্যুক্তেন ভাস্বতা ॥ ১ ॥ ততোহন্তরীক্ষং তৎ সর্বাং দেবগন্ধর্বসঙ্কুলমু। শুশুভে তারকাচিত্রং শরদীব নভস্তলম্।। ২০॥ তত উপায় বৈদেহি তেষাং মধ্যে যুশস্থিনী। উবাচ বাক্যং কল্যানি রামং পুথুলবক্ষসম্ব। ২১॥ রাজপুত্র ন তে দোষং করোমি বিদিতা হি তে। গতিঃ জ্রীণাপ নরাণাঞ্চ শৃণু চেদং বচে। মম । ২২॥ অন্তশ্রাত ভূতানাং মাত্রিশ্বা মদাগতিং। न মে বিমুপ্ত প্রাণান্ যদি পাপং চরামাহ্য ॥ ২৩॥

11 25 11 20 11 28 11 20 11 20 11 20 11 20 11 40 11 42 11 40 11

অগ্নিরাপন্তথাকাশং পৃথিবী বাযুরেব চ। ।
বিমুপ্তর মন প্রাণান্ যদি পাপঞ্চরাম্যহম্ ॥ ২৪॥
বথাহং অদৃতে বীরানান্যং অপ্রেহপ্যচিন্তয়্।
তথা মে দেবনির্দ্ধিস্তমেব হি পতির্ভব ॥ ২৫॥
ততোহন্তরীক্ষে বাগানাং ও স্তর্ভগালোকসাকিনী।
পুণা সংহর্ঘনী তেষাপ বানরাণাং মহাজ্বনাম্ ২৬॥
বাযুক্বার।

ভো ভো রাঘৰ সতাপ ৰৈ বাবুরিম সদাগতিঃ। অপাপা মৈথিলী রাজন্ সঙ্গছ সহ ভার্যায়। ২৭। অগ্নিকব্চ।

অহমন্তঃ শরীরস্থো ভূতানাৎ রঘুনন্দন ! । 'স্থ্যুক্ষমপি কাকুৎস্থ ! মৈথিলী নাপরাধ্যতি ॥ ২৮॥ বৰুণ উধাচ ।

রসা বৈ মৎপ্রস্থতা হি ভূতদেহেরু রাঘব !।
আহু বৈ আং প্রব্রীমি গৈথিলী প্রতিগৃহতান্॥ ২৯ ॥
ব্যালাগায়।

পুক্ত নৈতদিহাশ্চর্যাৎ স্থায় রাজ্যবিধার্মণে।
সাধৌ সদৃত্ত কাকুৎস্থ ! শৃণু চেদৎ বচো মম ॥ ৩০ ॥
শকুরেষ স্থা বীরং ! দেবগন্ধর্বভোগিনাম্।
যক্ষাণাং দানবানাঞ্চ মহর্মীণাঞ্চ পাতিতঃ ॥ ৩১ ॥
অবধ্যঃ সর্বাভূতানাৎ মৎপ্রসাদাৎ পুরাভবং।
কক্ষাচিচৎ কারণাৎ পাপঃ কঞ্চিৎ কালমুপেক্ষিতঃ ॥ ৩২ ॥

11 7 8 11 7 4 11 4 5 11 4 7 11 4 7 11 4 7 11 9 8 11 9 8 11 9 8 11 9 8 11 9 8 11 9 8 11 9 8 11 9 8 11 9 8 11 9 8 11

^{*} স্বভগালোক সাক্ষিণীতাত্ত সৰ্কাৰিজাবয়ন্ দিশ ইতি পাঠঃ ক ঘ পুতক্ষোঃ।

বধার্থমাল্লনস্তেন হাঁচা সীতা জ্রাল্লনা।
নলকুবরশাপেন রক্ষা চাক্তাঃ কতা মযা।। ৩৩ ॥
যদি ফ্কামামানেবেং স্থিমমন্যামপি ধুব্য।
শতধাক্ত কলেল্যু দ্ধা ইত্যক্তঃ সোহভবং প্রা।। ৩৪ ॥
নাত্র শক্ষা ত্বযা কার্য্যা প্রতীক্ষেমাং মহাজ্যতে !।
কৃতং ত্বযা মহৎ কার্য্যং দেবানাসমরপ্রভ।।। ৩৫ ॥
দশরণ উরাচ।

প্রীতোহন্মি বংস। ভদ্রং তে পিতা দশরপোহন্মি তে। অনুজানামি রাজ্যঞ্চ প্রশাধি পুরুষোভ্তম। ॥ ১৬॥
রাম উপত।

অভিবাদ্ধে ত্বাং রাজেন্দ্র । যদি ত্বা জনকো মন। গমিষ্যামি পুরীৎ রম্যামধ্যোধ্যাং শাসনাত্তব ॥ ৩৭॥ মার্কণ্ডের উবাচ।

তনুবাচ পিতা ভূয়ঃ প্রহান্ত ভরতর্ব ভ ।।
গচ্চাষোধ্যাৎ প্রশাধীতি রামং রক্তান্তলোচনন্ ॥ ৩৮ ॥
সংপূর্ণানীই বর্ষাণি চতুর্দ্ধশ মহাত্যুতে ! ।
তকো দেবালমস্কৃত্য স্ক্লান্তরিভিনন্দিতঃ ॥ ৩৯ ॥
মহেন্দ্র ইব পৌলোম্যা ভার্যারা স সমেষিবান্।
ততো বরৎ দদৌ তস্মৈ হবিদ্যায় পরন্তপঃ ॥ ৪০ ॥
ক্রিটাঞ্চার্যানাভাগি যোজয়ামাস রাক্ষ্যীন্ ।
তমুবাচ ততো ব্রহ্মা দেবৈঃ শক্র পুরোগমৈঃ ॥ ৪১ ॥
কৌশল্যামান্তরিকাৎ স্তে বরানদ্য দদানি কান্ ।
বব্রেরামঃ স্থিতিং ধর্মে শক্রভিশ্বপরাজলন্ ॥ ৪২ ॥
রাক্ষ্যেনিইভানাঞ্চ বানরাণাং সমুদ্রবন্ ।
ভতন্তে ব্রহ্মণা গোক্তে তথেতি বচনে ভদা ॥ ৪৩ ॥

1001081001001001001001001001001001001

সমুক্তস্থাহারাজ। বানরা লকচেতসঃ। । সীতা চাপি মহাভাগা বরং হনুমতে দদৌ॥ ৪৪॥ রামকীর্ত্ত্যা সমং পুজ্র। জীবিতং তে ভবিষ্যতি। দিব্যাস্তামুপভোগাশ্চ মৎপ্রসাদক্তাঃ সদা॥ ৪৫॥ উপস্থাস্যান্তি হনুসনিতি স্ম হরিলোচন।। ততত্তে প্ৰেক্ষমাণানাং তেষামক্লিফকৰ্মণাৰ্॥ ৪৬॥ অন্তর্ধানং যযুর্দ্দেবাঃ সর্নের শত্রুপুরোগমাঃ। দুষ্টা রামন্ত জানক্যা সঙ্গতং শক্রসার্থিঃ ॥ ৪৭॥ উবাচ পরমগ্রীতঃ সুক্রমধ্য ইদৎ বচঃ। দেবগন্ধর্বযক্ষাণাৎ মানুষাস্থরভোগিনাম্॥ ৪৮॥ অপনীতং ত্বরা তুঃখমিদ > সত্যপরাক্রম!। गरिताञ्चतशक्तर्वा यक्तताक्तमभन्नभाः॥ ४०॥ কথ্যিব্যক্তি লোকাস্তাং ধাবদ্ধমিধরিব্যতি। ইত্যেবমুক্তানুজ্ঞাপ্য রামং শস্ত্রভৃতায়র্য ॥ ৫० ॥ সৎপূজ্যাপাক্রমন্তেন র্থেনাদিত্যবর্চসা। ততঃ দীতাং পুরস্কৃত্য রামঃ দৌমিত্রিণা সহ। ৫১। স্থাবপ্রমুখৈশ্বের সহিতঃ সর্ববানরৈঃ। বিধায় রক্ষাং লঙ্কায়াং বিভীষণপুরস্কৃতঃ ॥ ৫২ ॥ সন্ততার পুনস্তেন সেতৃনা মকরাল্যম্। পুষ্পকেণ বিমানেন খেচরেণ বিরাজিতা। ৫৩॥ কামগেন যথামুখ্যৈরমাক্ত্যৈ সপরতো বশী। ততন্তীরে সমুদ্রস্থ বত্র শিস্থে স পার্থিবঃ। ৫৪॥ তত্রৈবোবাস ধর্মাত্রা সহিতঃ সর্ধবানরৈঃ। অথৈনানাঘ্বঃ কালে সমানীয়াভিপূজ্য চ। ৫৫॥ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ৫৩ ॥ যত্ত্ৰিশি শু

্পূর্বং সমুদ্র প্রার্থনার্থং শয়নং রূতবান্ ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥

বিসর্জ্যামাস তক্ষ রব্রৈঃ সন্তোষ্য সর্ক্ষাং। গতেষু * বানরেন্দ্রেষু গোপুচ্ছকে মু তেষু চ। ৫৬॥ ञ्चीवमहित्व। तामः किष्ठिकारः श्वनताविभः #। বিভীষণেনামুগতঃ স্বগ্রীবসহিতস্তদা ॥ ৫৭ ॥ প্রজাকেণ বিমানেন বৈদেছা দর্শবন্ বন্দ্ কিন্ধিন্তান্ত সমাসাদ্য রামঃ প্রহরত। মুরঃ । ৫৮॥ অঙ্গদং ক্লতকর্মাণং যৌবরাজ্যেহভাষেচ্যৎ। ভতত্তৈরেব সহিতো রামঃ সৌমিত্রিণা সহ। ৫৯॥ যথ,গতেন মার্গেণ প্রথয়ো স্বপুরং প্রতি। অবোধ্যাং স সমাসাদ্য পুরীৎ রাষ্ট্রপতিস্ততঃ ॥ ৬০ ॥ ভরতায হরুমন্তং দূতং প্রাস্থাপ্যতদা। नक्षियञ्जिष्ठः मर्स्त श्रियः ठरेम निर्देश रेत ॥ ७५॥ वायूशू ल श्वाः आखि निक्वामम्भागमः। স তত্র মলদিপ্ধাঞ্চং ভরতঞ্চীরবাসসম্। ৬২ ॥ অগ্রতঃ পাছকে কুত্রা দদশাদীনমাদনে। সঙ্গতো ভরতেনাথ শত্রুদ্ধেন চ বীর্যাবান্॥ ৬৩॥ রাঘবঃ সহসৌমিত্রির্মুদে ভরতর্বভ!। ততো ভরতশক্রমো সমেতো গুরুণা তদা॥ ৬৪॥ বৈদেয়া দর্শনেনে ভৌ প্রহর্ষং সমবাপতঃ। তথ্যৈ তদ্ভরতো রাজ্যমাগতাবাভিসংক্রতম্। ন্যাস্থ নির্যাত্যামাস যুক্তঃ পর্মরা মুদা ॥ ৬৫॥ ॥ व ७ ॥ व १ ॥ व ४ ॥ व ৯ ॥ ७ ० ॥ ७ ১ ॥ ७ २ ॥ ७ ० ॥ छ क वी बीटमव ॥ ७ ८ ॥ 1 30 1

শবানরেক্রেছিভাত্তের সর্বেছিতি পাঠঃ ক ঘ পুশুকরোঃ।
 শকাবিশদিতার আগমদিতি পাঠঃ খ পুশুক্ত।

ততন্তং বৈষ্ণবে শূরং নক্ষত্রেহ ভিজিতেই হনি।
বিশিষ্টো বামদেবশ্চ সহিতাবভাষিঞ্চতাম্ ॥ ৬৬ ॥
সোহ ভিষিক্তঃ কপিশ্রেষ্ঠ শুক্রীবং সমুক্তজ্ঞনম্।
বিভীষণ্প পৌলস্তামম্বজানাদৃগৃহান্ প্রতি ॥ ৬৭ ॥
অভার্চ্চা বিবিধৈ ভাগৈঃ প্রীতিমুক্তৌ মুদা যুতৌ।
সমাধায়েতিকর্ত্তবাং তুংখেন বিসমর্জহ ॥ ৬৮ ॥
পুষ্পাকঞ্চ বিমানং তৎ পুজায়ন্তা স রাঘ্বঃ।
প্রাদাধৈপ্রধানের প্রতিতা স রঘুনন্দনঃ ॥ ৬৯ ॥
ভতো দেবর্ষিস্হিতঃ সরিতং গোমতীমন্ত্র ।
দশাশ্বেধানাজ্যে জার্থ্যান্ স নির্গলান্॥ ৭০ ॥

ইত্যারণাকে পর্ক্ষণি রামোপাখ্যান পর্ক্ষণি রামরাজ্যাভিষেকে একনবত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৯১ ॥

বৈষ্ণবে নক্ষত্রে শ্রবণে ॥ ৬৬ ॥ ৬৭ ॥ ৬৮ ॥ ৬৯ ॥ জাকথান্ বিশ্বণদক্ষিণানিত্যর্জনমিশঃ জুব্ভান্থরিত্যাণিদ স্ত্রে জরথং মাংস মিতি
শাক্ষিণা তদামাণস ময়ান্ মাংসাদি দান প্রধানান প্রধানিত। থাঃ নিরগ্রলান্ অরাদার্থিনা মনারত ছারান্ জরুণোহস্থর বিশেষ ইতি বেদভাষাং
জকথং হন্ যক্ষি রায়েপ্র ক্রিমিতি মন্ত্রবর্গাৎ জকথং গকথং গুণাতে রিতি
যাক্ষরচনাচ্চ জরুথং স্তোত্রং তথাচায়ং মন্ত্রো নিক্তা ভাষে। ব্যাখ্যাতঃ
হেহয়ে ছাং পুরক্ষিং মছাত্রং সমিধানঃ সমান্দীপরন্ বসিধো মুনিঃ রায়ে
ধন প্রাপ্তরে জক্থং স্তোত্রং হন্ গময়ন্ যক্ষিণজতি অত্র জরুতেঃ স্তার্থতা
শক্ষারিপাদের্থা বিরোধাচ্চ জরুথংস্তাত্র মিত্রাচ্যত ইতি জাকথান্
স্থাতাহানিত্যর্থঃ ॥ ৭০ ॥

ইত্যারনাকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে একন্যত্যিকদ্বিতত্যোহ্গণ্যঃ ॥ ২৯১ ॥ মার্কভের উগাচ।

এবমেতলহাবাহো! রামেণামিততেজ্যা। প্রাপ্তং ব্যানমভ্যত্রাং বনবাদক্ষতং পুরা॥ ১॥ মা শুচঃ পুরুষব্যান্ত্র ! ক্ষল্রিয়োহিদি পরন্তপ ।। বাছবীৰ্য্যাপ্ৰিতে মাৰ্গে বৰ্ত্তমে দীপ্ৰনিৰ্ণয়ে । ২ ॥ ন হি তে রুজিনং কিঞ্ছিত্ততে পরমণ্পি। অস্মিন্ মার্গে নিষীদেয়ুঃ সেক্রা অপি স্কুরাস্করাঃ॥ ৩॥ সংহত্য নিহতো বুতো মরুন্তির্বজ্ঞপানিনা। নমুচিশৈচব তুর্দ্ধর্যো দীর্ঘজিহর। চ রাক্ষসী॥ ৪॥ সহাযবতি সর্বার্থাঃ সন্তিষ্ঠন্তীহ সক্ষশঃ। কিন্তজাজিতং সংখ্যেষ ভ্ৰতি ধনঞ্জয় ॥ ৫॥ অষপ্ত বলিনাং শ্রেটো ভীমো ভীমপর।ক্রমঃ। যুবানৌ চ মহেম্বাসৌ বীরৌ মাদ্রবতীস্ততৌ ॥ ৬ ॥ এভিঃ সহাথৈঃ কমাত্ত্ব^ বিঘীদ্দি পরন্তপ !। य हेटम विक्रिनः (मनार जरायुः मनकुकानाम ॥ १॥ ज्ञरात्राजिम (इश्वादेमः महारेयर्दिवक्ति जिः। বিজেঘাসি রণে সর্কানমিত্রান্ ভরতর্যভ।॥৮॥ ইত 🕶 ত্রমিমাং পশু সৈন্ধবেন তুরাতানা। বলিনা বীর্য্যন্তেন হতামেভির্যহালভিঃ। ৯॥ আনীতাং দৌপদীং রুফাৎ রুত্বা কর্মা স্বত্নসংগ্র জয়দ্রথঞ্চ রাজান্ বিজিত্ত বশ্মাগ্রাম্॥ ১০॥ অসহাযেন রামেণ বৈদেহী প্নরাহ্নতা। হত্বা সংখ্যে দশগ্রীবং রাক্ষসৎ ভীসবিক্রমণ্ ॥ ১১॥

এবমেতদিতি॥১॥দীগুনির্গগে অসন্দিধো প্রত্যক্ষকলে॥২॥৩.॥ ॥৪॥৫॥৬॥৭॥৮॥৯॥১০॥১১॥ যশ্য শাথামূগা মিত্রাণ্যকাঃ কালমুখাত্তথা । জাত্যন্তরগতা রাজন্মেতছুদ্যানুচিন্তয় ॥ ১২॥ ভক্ষাৎ সর্বাং কুরুশ্রেষ্ঠ। মা শুচো ভরতর্ধভ।। অদিধা হি মহাত্মানো ন শোচন্তি পরন্তপ।॥ ১০

বৈশক্ষায়ণ উলায়।

এবমাশ্বাসিতো রাজা মার্কণ্ডেয়েন ধীমতা। ত্তিকু । তুঃখ্মদীনাক্সা পুনরপ্যেনমত্রবীৎ॥ ১৪॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি রামোপাখ্যন পর্ব্ধণি যুধিষ্ঠিরাশ্বাসনে দ্বিবত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৯২॥

সমাপ্তঞ্চ রামোপাখ্যান পর্ব।

। ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ইত্যারণাকে পর্বার্ণ নৈলকগ্রীয়ে ভারতভাবদীপে দ্বিনবত্যধিক

প্রকাণ নৈলকগায়ে ভারতভাবদাপে ছিন্বত ছিন্ততমোহধায়ঃ ॥ ২৯২ ॥

যুগিছির উগাও।

নাজানমনুশোচামি নেমান্ আতৃন্ মহামুনে।।
হরণপাপি রাজানা যথেমাং দ্রুপদালাজান্॥ ১॥
দূতে ত্রাজাভিঃ ক্লিটাঃ ক্লেনা তারিতা ব্যন্।
জয়দ্ধেন চ পুনর্নাচ্চাপক্তা বলাৎ॥ ২॥
অন্তি সীমন্তিনী কাচিদ্ ই পুর্বাথ বা ফ্রা।
পতিব্রতা মহাভাগা যথেয়ং দ্রুপদালাজা॥ ৩॥

মাকণ্ডের উলাচ।
শূলু রাজন কুলন্ত্রীলাং নহাভাগাং যুধিষ্ঠির !।
সর্বমেতদ্যথা প্রাপ্তং সাবিত্রাা রাজকন্যয়া॥৪॥
আসীল্লচেষু ধর্লালা রাজা পরমধার্শ্লিকঃ।
বেহ্নাগ্রুছ মহালা চ সভ্যসন্ধাে জিভেন্সিয়ঃ॥৫॥
যজা দানপতির্দকঃ পৌরজানপদপ্রিয়ঃ।
পার্থিবোহশপতির্নাম স্বাভৃতহিতে রভঃ॥৬॥
ক্ষমাবাননপত্যশ্চ সভ্যবাধিজিতেন্দ্রিয়ঃ।
ভাতিক্রান্তেন বয়সা সন্ত্রাপমুপজ্মিবান্॥৭॥
অপভ্যোৎপাদনার্থক ভীব্রশ্ন নিয়মমান্থিতঃ।
কালে নিয়মিভাছারো বহ্নালারী জিভেক্সিয়ঃ॥৮॥

নাজনামিতি ॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥ ৩॥ ৭॥ ৮॥ সাবিত্রা সাবিত্রী সবিত্কন্যা তদৈবত্যয়া ঝচাসাচ সোমোবগুযুরভবদশ্বিনাস্তা মুভাবরা স্ব্যাং ছবা শতসহত্রং স সাবিত্রা রাজসন্তনঃ। ।

মঠে মঠে তদা কালে বভুব মিতভোজনঃ ॥ ৯ ॥

এতেন নিষ্মেনাসীদ্র্যাণ্যটাদশৈব তু।
পূর্ণে অক্টাদশে বর্ষে সাবিত্রী তুফিমভ্যগাৎ॥ ১০ ॥
কাপিনী তু তদা রাজন্। দর্শ্যাসাস ত নৃপ্য।
ভাগ্নিহোত্রাৎ সমুখা্য হর্ষেণ সহতান্থিতা।
উবাচ চৈন্দ বরদা বচন্দ পার্থিবং তদা॥ ১১ ॥

সাবিভাবাচ।

ব্ৰহ্মচৰ্য্যেণ শুদ্ধেন দমেন নিয়নেন চ।
সক্ষাত্মনা চ ভক্ত্যা চ তুফান্মি তব পাৰ্থিব!॥ ১২।
বন্ধং র্ণীঘাশ্বপতে মদ্রবাজ ঘদীপ্সিতন্।
ন প্রমাদশ্চ ধর্মেষু কর্তব্যশ্তে কথঞ্চন॥ ১৩॥
অশ্বপতিক্বাচ।

অপত্যার্থঃ সমারন্তঃ ক্তো ধর্মেপ্স্যা ন্যা। পুলা মে বহুবো দেবি! ভবেয়ুঃ * কুলভাবনাঃ॥ ১৪॥ তুটাসি যদি মে দেবি!বরমেতং রুণোমাহন্। * সন্তানঃ প্রমোধর্ম ইত্যাহ্মাং দ্বিজাত্যঃ॥ ১৫॥

যৎপত্যে শংসভীং মনসা সবিতাদদাদিতি যদাসবিত্র মন্ত্রী স্বকন্যা স্থ্যা স্থাস্য স্ত্রীস্থ্যা যদতা তদা সোমোন্যা বধুযুর্ধা অভ্চরোভূং সবিতা চ স্থ্যাং পত্যেপভূঃ কল্যাগার্থং শংসতীং কথ্যতীং মনসা উভেবিরৌ পুত্ররপৌ অধিনো অদদাদিতি মন্ত্রার্থঃ ইতএব বাক্যাদেত্স্য মন্ত্র্যা লক্ষ-হোমাদপত্য প্রাপ্তি প্রতীতিগান্যতে ষঠেকালেং ইধা বিভক্তস্যান্ত্রঃ বঠেং-শে॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২ ॥ ১০॥ ১৪॥ ১৫॥

কুলভাবনাইত্যত্ত্ব কুলভাজনাইতি পাঠঃ ঘ পুশুক্ত ।
 সন্তানইত্যত্ত্ব সন্তানমিতি পাঠঃ ঘ খ পুশুক্রোঃ ।

সাবিক্ত্যবাচ।

পূর্ব্বমের ময়া রাজনাভপ্রায়মিম তব।
জ্ঞাত্বা পুজার্থমুক্তো বৈ ভগবাংস্তে পিতামহঃ॥ ১৬॥
প্রশাদাকৈর ভন্মান্তে স্বয়ন্ত্রবিহিতাদুরি।
কন্যা তেজস্বিনী সৌম্য ! ক্ষিপ্রমের ভবিষ্যতি॥ ১৭॥
উত্তরপ্র ন তে কিঞ্চিদ্ব্যাহর্ত্র্য কথঞ্চন।
পিতামহনিসর্গেণ তুফা হেতন্ত্র্বীমি তে॥ ১৮॥
মার্কভেয় উপাত।

দ তথেতি প্রতিজ্ঞায় সাবিত্র্যা বচনং নৃপাঃ।
প্রসাদয়ামাস পুনঃ ক্ষিপ্রমেতদ্ধবিষ্যতি ॥ ১৯ ॥
অন্তর্ভির্যাং সাবিত্র্যাং জগাম স্বপুর্ব নৃপাঃ।
স্বরাজ্যে চাবসদ্বীরঃ প্রজা ধর্ম্মেণ পাল্যন্॥ ২০ ॥
কিম্মান্টিস্তু গতে কালে স রাজা নিষ্ঠত্রতঃ।
জ্যেষ্ঠাযাং ধর্মচারিণ্যাং মহিষ্যাং গর্জমাদ্ধে॥ ২১ ॥
রাজপুল্র্যাস্ত গর্ত্তঃ * স মানব্যা ভরত্ত্র্যভ !।
ব্যবদ্ধত তদা শুক্লে তারাপতিরিবাস্থরে ॥ ২২ ॥
প্রাপ্তে কালে তু স্বযুবে কন্যাব্দ রাজীবলোচনাম্।
ক্রিযান্ট তন্ত্র্যা দ্তা সাবিত্র্যা হত্ত্রা হাপি।
সাবিত্র্যা প্রতিষ্ঠা দ্তা সাবিত্র্যা হত্ত্রা হাপি।
সাবিত্রীত্রের নামান্ত্রান্ট্রপ্রান্তথা পিতা ॥ ২৪ ॥
সা বিগ্রহ্বতীব শ্রীর্বিদ্ধত নৃপাক্ষা।
কালেন চাপি সা কন্যা যৌবনস্থা বভূব হ ॥ ২৫ ॥

॥ ১৬ ॥১৭ ॥ উত্তরং প্রতার্থং প্রার্থনাবচনং নিসর্কোণ আজ্ঞা ॥১৮॥ প্রতি-জ্ঞার অঙ্গিক্তা ॥১৯॥২০॥ ২১ ॥ মানব্যামস্প্রত্যাঃ ॥ ২২॥২৩॥২৪॥২৫ ॥

^{*} স মানব্যেত্য ত্র সমালব্যেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

তাৎ স্থমধ্যাং পৃথুশ্রোণীং প্রতিমাং কাঞ্চন্নীমিব।
প্রাপ্তেরং দেবকন্যেতি দৃষ্ট্যা সংমেনিয়ে জনাঃ ॥ ২৬ ॥
তাস্ত পত্মপলাশাক্ষীৎ জলন্তীমিব তেজসা।
ন কশ্চিদ্বর্যামাস তেজসা প্রতিবাধিতঃ ॥ ২৭ ॥
অথোপোষ্য শিরংস্কাতা দেবতামভিগম্য সা।
ছত্মাগ্রিৎ বিধিবদ্বিপ্রান্ বাচ্যামাস পর্বাণি ॥ ২৮ ॥
ততঃ স্থমনসঃ শেষাঃ প্রতিগৃহ্ছ মহাত্মনঃ ।
পিতুঃ সমীপমগমদ্দেবী শ্রীরেব কাপিণী ॥ ২৯ ॥
সাভিবাদ্য পিতুঃ গাদৌ শেষাঃ পূর্বাং নিবেদ্য চ ।
ক্রতাঞ্জলির্বারাহা নূপতেঃ পার্যমান্থিতা ॥ ৩০ ॥
যৌবনস্থাং তু তাৎ দৃষ্ট্যা স্থাং স্কৃতাং দেবকপিণীম্ ।
অ্যাচ্যমানাঞ্চ বরৈন্পতিছু থিতোহভবৎ ॥ ৩০ ॥
রাজ্যোবাচ।

পুত্তি প্রদানকালন্তে ন চ কশ্চিদ্ নোতি মাম।
স্বমস্থিক্ত ভর্তারং গুলৈঃ সদৃশ মাল্লনঃ॥ ৩২॥
প্রাথিতঃ পুরুষো যশ্চ স নিবেদ্যস্ত যা মম।
বিম্ব্যাহণ প্রদান্তামি বর্ষ স্থং যথেন্সিতম্॥ ৩৩॥
প্রভং হি ধর্মশাস্ত্রেষু পঠামানং দ্বিজাতিভিঃ।
যথা স্বমপি কল্যাণি! গদতো মে বচঃ শৃণু॥ ৩৪॥
অপ্রদাতা পিতা বাচ্যো বাচ্যশ্চানুপ্যন্ পতিঃ।
মৃতে ভর্ত্তরি পুত্রশ্চ বাচ্যো মাতুরর্ফিতা॥ ৩৫॥

॥ ২৬॥ প্রতিবারিতোহভিত্তঃ ॥ ২৭॥ ২৮॥ স্থানসঃ ইউদেবতায়াঃ
স্থান্ধাণঃ স্থানস জিদিবেশ। ইতামরঃ শেষাঃপ্রসাদ পূর্ব্ধকং দভানিমাল্যানি প্রসাদভূতা মালাইতার্থঃ প্রসাদায়িজ নির্মালা দানে শেষায়্কীর্ত্তিতিতি বিশ্বঃ ॥ ২৯॥ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ প্রার্থিতঃ ইচ্ছিতঃ॥ ৩০॥ ৩৪॥
বাচ্যোনিন্দাঃ অন্নুপরন্ শ্বতাবগচ্ছন্॥ ৩৫॥

ইদং মে বচনং প্রাক্তা ভর্জুরম্বেষণে ত্বর। দেবতানা মথা বা(চ্যা ন ভবেয়ং তথা কুরু॥ ৩৬॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

এবমুক্ত্রা ছহিতরং তথা রুদ্ধাংশ্চ মন্ত্রিণং।
ব্যাদিদেশানুষাতঞ্চ গম্যতাঞ্চেত্যচোদয়ৎ॥ ৩৭॥
সাভিবাদ্য পিতুঃ পাদৌ ব্রীডিতেব তপস্থিনী।
পিতুর্বচনমাজ্ঞায় নির্কগামাবিচারিতম্॥ ৩৮॥
সা হৈমং রথমাস্থায় স্থবিরঃ সচিবৈর্ক্ তা।
তপোবনানি রম্যাণি রাজর্ঘীণাৎ জগাম হ'॥ ৩৯॥
মান্যানাং তত্র রুদ্ধানাং কৃত্বা পাদাভিবন্দনম্।
বনানি ক্রমশস্তাত! স্ক্রাণোবাভাগচ্চত ॥ ৪০॥
এবং তীর্থেষু সর্কেষু ধনোৎস্ব্রুৎ লুগাল্পজা।
কুক্তিটী দ্বিজনুখ্যানাং তং তৎ দেশং জগামহ॥ ৪১॥

ইত্যারণ্যকে পর্বলি পতিব্রতামাহাল্ম পর্বণি সাবিক্র্যপাথানে ত্তিনবত্যধিকদ্বিশততমোহধায়ঃ॥ ২৯৩।

মাৰ্কণ্ডেয় উনাচ।

ভাথ মজাধিপো রাজা নারদেন সমাগতঃ। উপ্ৰিটঃ সভামধো কথাধোগেন ভারতু!॥ ১॥

॥ ৩৬ ॥ অভ্যাত্তং যাত্রোপকরগং বাছনাদি ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ৪০॥৪১॥ ইত্যারণাকে পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারভভাবদীপে ত্রিনবত্যধিক দিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৯৩॥

जार्थि कथारियार्गन कथाध्यमस्मन ॥ ३ ॥

ততোহভিগম্য তীর্থানি সর্ব্বানি চাশ্রমাণক্ষ সা । আজগাম পিতৃর্ব্বেশ্ম সাবিত্রী সহ মন্ত্রিভিঃ ॥ ২ ॥ নারদেন সহাসীন্দ সা দৃষ্ট্বা পিতরং শুভা। উভযোরেব শিরসা চক্রে পাদাভিবন্দন্য ॥ ৩ ॥

নাৱদ উবাচ। ক্ব গতাভূৎ স্থতেয়ং তে কুতদৈচবাগতা নূপ!। কিমৰ্থ- যুবতীং ভৰ্জ্ৰেনচৈনাণ সংপ্ৰয়চ্ছসি॥৪॥

> অশ্বপতিক্বাচ। প্রক্রিকাইনের চাওক

কার্য্যেণ খলনেনৈর প্রেষিতাল্যৈর চাগতা। এতস্যাঃ শৃণু দেবর্ষে ভর্তারং যোহন্যার্তঃ॥ ৫ ॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ।

'সা বুহি বিস্তরেণেতি পিত্রা, সঞ্চোদিতা শুভা।

* দৈৰতস্যেৰ বচনং প্ৰতিগৃহেদমত্ৰবীৎ ॥ ৬॥

সাবিক্রাবাচ।

আসীচ্ছালেয়ু ধর্মাত্মা ক্ষাত্রয়ঃ পৃথিবীপতিঃ।

ত্যুমৎসেন ইতিখ্যাতঃ পশ্চাচ্চাল্কো বভূব সং * ॥ १॥

বিনইটচকুষস্তুস্য বালপুত্রস্য ধীমতঃ।

সামীপ্যেন হৃতং রাজ্যং ছিদ্রেহিন্দিন্ পূর্বেবৈরিণা॥ ৮॥ •

স বালবৎসয়া সার্দ্ধং ভার্যায়া প্রস্থিতো বনম্।

মহারণ্যগতশাপি তপস্তেপে মহাব্রতঃ॥ ৯॥

া২।৩॥৪॥৫॥७॥৭॥সামীপোন সমীপবাসিনা ক্রিডে অন্ধত্তে সভি॥৮॥৯॥

^{. *} দৈৰতদ্যেৰ বচনমিত্যত্ত তদৈৰতদ্যৰচনমিতি পাঠঃ খ পুস্তক্ষা।

* সইতাত্ত হেতি পাঠঃ খ পুস্তক্ষা।

ত্যা পুত্ৰঃ পুরে জংতঃ সংবৃদ্ধশ্চ তপোবনে। সত্যবানসুৰূপো মে(ভর্তেতি মনসা বৃতঃ ॥ ১০॥ নারদ উবাচ।

অহো বত মহৎ পাপং সাবিত্রা নূপতে! ক্তম্।
অজানন্ত্যা যদন্যা গুণবান্ সত্যবান্ বৃতঃ ॥ ১০॥
সত্যং বদত্যস্য পিতা সত্যং মাতা প্রভাষতে।
ততোহস্য ব্রাহ্মণাশ্চকুর্নামৈতৎ সত্যবানিতি॥ ১২॥
বালস্যাশ্বাঃ প্রিয়াশ্চাস্য করোত্যশ্বাংশ্চ মৃণ্যুয়ান্।
চিত্রেহপি বিলিখতাশ্বাংশ্চিত্রশ্ব ইতি চোচ্যতে॥ ১৩॥

রাজেবার।

অপীদানীং স তেজস্বী বুদ্ধিয়ানু বা নূপাত্মজঃ। ক্ষমাবানপি বা শূরঃ সত্যবান্ পিতৃবৎসলঃ॥ ১৪॥

नात्रम छेवात ।

বিবস্থানিব তেজস্বী রহস্পাতসমো মতৌ। মহেন্দ্র ইব শূরশ্চ বস্তুধেব ক্ষমান্মিতঃ॥ ১৫॥

অশ্বপতিকবাচ।

অপি রাজাত্মজো দাতা ব্রহ্মণ্যক্ষাপি সত্যবান্।

ক্রম্বানপ্যদারো বাপ্যথ বা প্রিয়দর্শনঃ॥ ১৬॥

नात्रम छेवाह।

সাংকৃতে রন্তিদেবস্য স্থশক্ত্যা দানতঃ সমঃ। ব্রহ্মণ্যঃ সত্যবাদী চ শিবিরৌশীনরো যথা॥ ১৭॥ যযাতিরিব চোদারঃ সোমবৎ প্রিরদর্শনঃ। রূপেণান্যতমোশ্বিভাং চ্যুমৎসেনস্থতো বলী॥ ১৮॥

সত্যবালামতঃ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ তেজস্বীপ্রভাববান্ রুদ্ধিমান্ বা বাশকশ্চার্থে ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ সাংক্তেঃ সংক্তিপুত্রতা ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ স দান্তশ্চ মৃত্যু শূরঃ স সত্যঃ সংঘতে শ্রিরঃ।
স মৈত্রঃ সোহনস্থান্দ স জীমান্ ত্যুতি শৃতিশ্চ সং॥ ১৯॥
নিত্যশান্ত জিবং তিমান্ স্থিতিস্কলৈয়ব চ ধ্রুবা।
সংক্ষেপতস্তপোরকৈঃ শীলরকৈন্দ কথ্যতে॥ ২০॥

অশ্বপতিৰুক্ত। শুণৈক্লপেত্ৰ সৰ্বৈস্তিগ ভগবন্ প্ৰব্ৰবীষি মে। দোষানপ্যস্থা মে বহি যদি সন্তীহ কেচন॥২১॥

नात्रम छेगा ।

এক এবাস্থা দোষোঁ হি গুণানাক্রম্য তিষ্ঠতি।
স চ দোষঃ প্রযন্ত্রেন ন শক্যশ্চাতিবর্ত্তিতুন্॥ ২২॥
একো দোষোহস্তি নান্যোহস্থা সোহদ্যপ্রভৃতি সত্যবান্।
সম্বংসরেণ ক্ষীণামুর্দেইন্যান্যং করিষ্যতি॥ ২০॥

রাজোবাচ i

এহি সাবিত্রি ! গচ্ছস্ব অন্যং বর্ষ শোভনে ! ।
তস্য দোষো মহানেকো গুলানাক্রম্য চ স্থিতঃ ॥ ২৪॥
যথা মে ভগবানাহ নারদো দেবসংক্রতঃ ।
সংবংসারেণ সোহম্পাযুর্দেইন্যাসং করিষ্যতি ॥ ২৫॥

সাবিক্রাবাত।

সক্লংশো নিপততি সক্ত কন্যা প্রদীযতে।
সক্কাহ দদানীতি ত্রীণ্যেতানি সক্তং সক্তং ॥ ২৬ ॥
দীর্ঘাযুরথবাণ্পাযুং সগুণো নিগুণোহপি বা।
সক্কাতি ময়া ভর্তান দ্বিতীয়ং রণোম্যহম্ ॥ ২৭ ॥

॥১৯।২০॥২১॥ আক্রম্য অভিভূর ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ অংশঃ কাঠপা-যাণাদেঃ শকলঃ সক্রমপততি কৃত্ত করণং নাস্তীত্যর্থঃ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ মনসা নিশ্চয়ং কুত্বা তভো বাচাভিধীয়তে। ক্রিয়তে কর্মনা পশ্চ ৎ প্রমানং মে মনস্ততঃ॥ ২৮॥

माद्रम छेगा ।

স্থিরা বুদ্ধির্নরশ্রেষ্ঠ ! সাবিত্র্যা তুহিভুস্তব। নৈষা বার্ষিভুং শক্যা ধর্মাদক্ষাৎ কথঞ্চন॥২৯॥ নান্যক্মিন্ পুরুষে সন্থি যে সত্যবতি বৈ গুণাঃ। প্রদানমেব তক্ষাল্মে রোচতে তুহিভুস্তব॥৩০॥

রাজেবার।

অবিচাল্যমেতত্বক্ত^ তথ্যক্ষ ভবতা বচঃ। করিষ্যাম্যেতদেবঞ্চ গুরুহ্ ভগবান্মম॥ ৩১ ৫

নারদ উবাচ।

অবিষ্ণমস্ত সাবিত্যাঃ প্রদানে ছহিতুন্তব। সাধ্যম্যাম্যহং তাবৎ সর্কেষাং ভদ্রমস্ত বং॥ ৩২॥

मार्कटल्य डेवाह।

এবমুক্ত্রা খমুৎপত্য নারদস্ত্রিদিবৎ গতঃ। রাজাপি তুহিতুঃ সজ্জৎ বৈবাহিকমকার্যৎ॥ ৩৩॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি পতিব্রতামাহাত্মে সাবিত্র্যপাখ্যানে চতুর্মবত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৯৪॥

॥২৮॥২৯॥৩০॥ যত্তৎ সাবিত্রাবিচনং অবিচাল্য ভবতাচ তথাং উক্তং ॥৩১॥
সাধরিষ্যামি গমিষ্যামিধাভূনা মনেকার্থত্বাৎ গত্যবুর্থায়ং॥ ৩২॥ ৩৩॥
ইত্যাবৃণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে
চতুর্বত্যধিক দিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৯৪॥

মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ। মোৰাৰ্থং বিচিত্তয়

অথ কন্যাপ্রদানে স ত্যেবার্থং বিচিন্তবৃদ্ধী।
সমানিন্যে চ তৎসর্বাশ ভান্তং বৈবাহিকং নৃপাঃ ॥ ১॥
ততা র্ন্ধান্ দিলে পুণ্যে প্রথযৌ সহ কন্যযা ॥ ২ ॥
সমাহ্য় দিনে পুণ্যে প্রথযৌ সহ কন্যযা ॥ ২ ॥
মেধ্যারণ্যং স গল্পা চ ছ্যুমৎসেনাশ্রমং নৃপাঃ ।
পদ্খ্যামেব দিলেঃ সার্দ্ধান রাজর্ষিং তমুপাগমৎ ॥ ৩ ॥
তত্রাপশ্রমন মহাভাগং শালরক্ষমুপাশ্রিতম্ ।
কৌশ্যাং র্য্যান সমাসীনং চক্ষ্মিনং নৃপান তদা ॥ ৪ ॥
স রাজা তম্ম রাজর্ষেঃ ক্ত্রা পূজাং যথাইতঃ ।
বাচা স্থানিতো ভূলা চকারাল্মনিবেদনম্ ॥ ৫ ॥
তস্যার্ঘ্যমাসনক্ষিব গাঞ্চানেদ্য স ধর্ম্মবিৎ ।
কিমাগমনমিতোবং রাজা রাজ্যনমন্তবীৎ ॥৬॥
তস্য সর্ব্যমভিপ্রাথমিতিকর্ত্ব্যভাঞ্চ তাম্ ।
সত্যবস্তান সমুদ্দিশ্য সর্ব্যমেব ন্যবেদ্যং ॥ ৭ ॥

অখপতিৰুবাচ।
সাবিত্ৰী নাম রাজর্ষে! কন্যেশ মম শোভনা।
তাং স্বধর্মেণ ধর্মজ্ঞ। সম্বার্থে স্বং গৃহাণ মে ॥ ৮॥
হ্যমংসেন উবাচ।

চ্যুতাঃ স্ম রাজ্যাদ্বন্বাসমাজিতা, শ্বরাম ধর্মং নিয়তান্তপন্থিনঃ। কথন্ত্বনুষ্ঠা বনবাসমাজ্যমে, নিবৎস্যতে ক্লেশ্মিমং স্থৃতা তব॥১॥

অথেতি ভাগুবৈবাহিকং উপকরণং বিবাহোচিতং,॥ ১॥ ২॥ ৩॥ কৌশ্রাং কুশমন্তাং রুশ্বাং আসনে॥ ৪॥ আত্মনিবেদনং অশ্বপতি রহমিতিজ্ঞাপনং॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ভবাভবাত্মকং উৎপত্তি বিনা-

্ৰশ্বপতিকবাচ।

স্থাক তুঃখাক ভবা বিশ্ব বিশ্ব কং,

যদা বিজানাতি স্তাহমেব চ।
ন মদ্বিধে যুজ্যতি বাক্যমীদৃশং,

বিনিশ্চযেনাভিগতোহিন্ম তে নৃপ! ॥ ১০ ॥
আশাং নার্হান মে হস্ত^ সৌহ্হদাৎ প্রণতস্য চ।
অভিতঃ স্বাগতং প্রেমা প্রত্যাখ্যাতৃং ন মার্হান ১১ ॥
অনুরূপো হি যুক্তশ্চ ত্বং মমাহ্ তবাপি চ।
স্বাশ প্রতীচ্ছ মে কন্যাং ভার্যাং স্ত্যব্তঃ স্তঃ ॥ ১২ ॥

হ্যমংসেন উব্চেঃ

পূর্ব্বমেবাভিল্যিতঃ সম্বন্ধো সে ত্ব্যা সহ।
ভ্রম্টরাজ্যস্ত হুমিতি তত এত দ্বিচারিতম্ ॥ ১৩ ॥
ভাঙিপ্রাযন্ত্বযং যো মে পূর্ব্বমেবাভিকাজ্জিতঃ।
স নির্ব্বর্ভতু মেহদ্যৈর কাজ্জিতো হুদি মেহতিথিঃ॥ ১৪ ॥
ততঃ সর্বান্ সমানায্য দ্বিজানাশ্রমবাদিনঃ।
যথাবিধি সমুদ্ধাহং কারয়ামাসতুর্ পৌ ॥ ১৫ ॥
দত্ত্বা সোহশ্বপতিঃ কন্যাং যথাইঞ্চ পরিচ্ছদম্!
যযৌ স্বমেক ভবনং যুক্তঃ পরম্যা মুদা ॥ ১৬ ॥
সত্যবানপি তাং ভার্যাং লক্বা, সর্বভিণাত্বিতাম্।
মুমুদে সাচ তং লক্বা ভর্তারং মনসেশিতম্ ॥ ১৭ ॥
গতে পিতরি সর্বাণি সংন্যস্যাভরণানি সা।
জগুহে বল্কলান্যের বস্ত্রং কাষাযমের চ ॥ ১৮ ॥

শাত্মকং তেত্বাং প্রতি॥ ১০ ॥ মামাং ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩॥ নির্বর্ত্তু নিষ্পাদ্যতাং॥ ১৪॥ ১৫॥ সপরিচ্ছদং পারিবর্হসহিতং॥ ১৬॥১৭॥ ১৮॥ পরিচারৈ তুঁ বিশেষর পশ্রমেশ দমেন চ।
সর্বাকামক্রিয়াভিশ্চ সর্বোধাং তুটিমাদর্কে॥ ১৯॥
শ্বশ্রং শরীরসংকারৈঃ সর্বৈরাচ্ছাদনাদিভিঃ।
শ্বশুরং দেবসংকারের্বোচঃ সংযমনেন চ॥ ২০॥
তথৈব প্রিয়বাদেন নৈপুণোন শ্বমেন চ।
রহক্রেপেচারেণ ভর্তারং পর্য্যতোষ্যৎ॥ ২১॥
এবং তত্রাশ্রমে তেষাং তদা নিবসতাং সতাম্।
কালস্তপশ্রতাং কল্চিদপাক্রামত ভারত।॥ ২২॥
সাবিত্রাস্ত শ্বানাযান্তিগ্র্ডাশ্চ দিবানিশম্।
নারদেন যতুক্তং তদ্বাক্যং মনসি বর্ত্তত॥ ২৩॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি সাবিক্র্যপাখ্যানে পঞ্চনবত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৯৫॥

মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ। ভতঃ কালে বছভিথে ব্যতিক্রান্তে কদাচন। প্রাপ্তঃ স কালো মর্ভব্যং যত্র সত্যবতা নূপ!॥১॥

পরিচারিঃ সেবনৈঃ গুলৈঃ শীল সত্যাদিতিঃ প্রশ্নারেণ স্নেহেন দমেন জিতেন্দ্রিয়তয়া সর্বকামক্রিয়াভিঃ সর্বেষাং ইফসম্পাদনেন ॥ ১৯॥ ২০॥ ॥ ২১॥ ২২॥ ২৩॥

> ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে পঞ্চনবত্যধিকদ্বিততমোহধ্যারঃ॥ ২৯৫॥

उठहें । '३ ॥

^{*} সাৰিত্যান্ত শ্রামায়ইতাত্ত সাৰিত্যাগ্রামায়মা নাযাইতি পাঠঃ ধ প্রস্তুকে।

গণ্যন্ত্যাশ্চ সাবিজ্যা দিবসে দিবসে গতে।

যদাক্যং নারদেনে কৈং বর্ততে হৃদি নিত্যশং ॥ ২ ॥

চতুর্থেহ্ছনি মর্ত্তব্যু মিতি সঞ্চিত্ত্য ভাবিনী।

ত্রতং ত্রিরাত্ত্যুদ্দিশু দিবারাত্রং স্থিতাভবং ॥ ৩ ॥

তং প্রাত্ত্বা নিষমং কন্তা ভূশং তুংখাখিতো নূপঃ।

উপায় বাক্যং সাবিত্রীমন্ত্রবীং পরিসাত্ত্বন্ ॥ ৪ ॥

ত্বামৎসেন উবাচ।

অতিতীত্রোহ্যমারস্তম্বারকো নুপ্রাক্সজে। তিহানা বসতীকা হিন্তান পরমত্ত্রম্ ॥ ৫॥ সাবিজ্যবাদ।

ন কার্য্যস্তাত ! সন্তাপঃ পার্থিষ্যাম্যহং ব্রতম্ । ব্যবদায়ক্তং হীদ্প ব্যবসায়ক্ষ কারণ্য্॥ ৬॥ ভাষংসেন উবাচ।

ব্রতং ভিন্ধীতি বক্তু ত্বাৎ নাশ্মি শক্তঃ কথঞ্চন। পার্যস্থেতি বচনৎ যুক্তমন্মদ্বিধে। বদেৎ ॥ ৭॥

মাৰ্কত্তের উৰাচ।

এবমুক্ত্বা প্র্যাৎসেনো রিররাম মহামনাঃ।
তিষ্ঠন্তী চৈব সাবিত্রী কাষ্ঠভূতেব লক্ষ্যতে॥ ৮॥
স্বোভূতে ভত্মিরণে সাবিত্রা ভরতর্ষত।।
পুংথাবিতাযান্তিষ্ঠন্তাঃ সা রাত্রিব্যত্যবর্ত্ত ॥ ৯॥
আন্য তদ্দিবসঞ্চেত ছত্বা দীপ্তং ছতাশন্ম।
যুগমাত্রোদিতে সূর্যে কৃত্বা পৌর্বাহ্নিকীঃ ক্রিয়াঃ॥ ১০॥

॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ বসতী নাং স্থানং ভোজন তারনিরোধঃ উপবস্থতীত। দি । বসতে স্তাদর্থাদর্শনাং ॥ ৫॥ পার্থায়ব্যামি সমাপ্রিয়ামি ব্যবসায়কতং উদ্যোগকৃতঃ ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ যুবং হস্তস্কং তাব স্থাতে উপ-রিয়াতে ॥ ১০॥ ভতঃ সর্বান্ দ্বিলান্ র্কান্ শ্বশ্রুণ শুশুরুদ্বে চ।
অভিবাদ্যান্ত্রপূর্বেরণ প্রাঞ্জলিনিযতা স্থিত। ॥ ১১॥
অবৈধব্যাশিষস্থে তু সাবিত্রার্থণ হিতাঃ শুভাঃ।
উচুন্তপন্থিনঃ সর্বে তপোবননিবাসিনঃ॥ ১২॥
এবমন্ত্রিতি সাবিত্রী ধ্যানযোগপরাষণা।
মনসা তা গিরঃ সর্বাঃ প্রত্যাগৃহ্ণান্তপন্থিনান্॥ ১৩॥
তং কালণ তং মুহুর্রঞ্চ প্রতীকন্তী নূপাল্মজা।
যথোক্তং নারদ্বচশ্চন্তুযন্ত্রী স্কুতঃখিতা॥ ১৪॥
ততন্ত্র শুশুশুলাবুর্চতুম্ঞাং নূপাল্মজান্।
একান্তমান্থিতাং বাক্যং প্রীত্যা ভরতসন্তম !॥ ১৫॥
শিশুরার্চ্তুঃ।

ব্রত৲ যথোপদিউ৲ তে তথা তৎ পারিতং ত্বদা।
আহারকালঃ সংপ্রাপ্তঃ ক্রিযতাং যদনন্তরম্ ॥ ১৬ ॥
সাবিক্রাবাচ।

অন্তং গতে ময় দিতো ভোক্তব্যং ক্তকামরা। এষ মে হৃদি সক্ষপাঃ সময়ক ক্তো মরা॥ ১৭॥ মার্কণ্ডের উবাই।

এবং সম্ভাষমাণাষাঃ সাবিজ্ঞা ভোজনং প্রতি। ক্ষপ্তের পরশুমাদায় সত্যবান্ প্রস্থিতো বনম্॥ ১৮॥ সাবিজ্ঞা স্থাহ ভর্তারং নৈকস্তবং গন্তমইসি। সহ স্বয়া গমিব্যামি ন হি স্থাপ হাতুমুংসহে॥ ১৯॥

সভাবাহ্না ।

বন্দ ন গতপূর্বাং তে ছুঃখঃ পন্থাশ্চ ভাবিনি ! । ব্রতোপবাসক্ষামা চ কথ্দ পদ্যাদ গমিষ্যসি॥ ২০॥

11 22 11 22 11 20 11 28 11 20 11 29 11 29 11 20 11

সাবিক্রাবাচ 1

উপবাসাল মে প্লানির্দ্ধৃতি চাপি পরিশ্রমঃ। গমনে চ ক্তোৎসাহাঁই প্রতিষেদ্ধুং ন মার্হসি॥ ২১॥ সত্যবাল্লবাচ।

যদি তে গমনোৎসাহঃ করিষ্যামি তব প্রিযম্। সম ত্বামন্ত্রয গুরু ন মাং দোবং স্পৃশেদয়ম্॥২২॥

মার্কতের উবাং।

মাভিবাদ্যাত্রবীচ্চুক্রং শ্বশুরঞ্চ মহাত্রতা।
অবং গচ্ছতি মে ভর্ত্তা ফলাহারো মহাবনশ্ব ॥২৩॥
ইচ্ছেযমভানুজ্ঞাতা আর্য্যা শৃশুরেণ চ।
অনেন সহ নির্গন্তং ন মেহদ্য বিরহঃ ক্ষমঃ ॥২৪॥
গুর্বামিহোত্রার্থকতে প্রস্থিতক স্কৃত্তব।
ন নিবার্য্যো নিবার্যাঃ স্থাদন্যথা প্রস্থিতো বনম্॥২৫॥
* সম্বংসরঃ কিঞ্চিদ্নো ন নিষ্ক্রান্তাহ্মাশ্রমাৎ।
বনং কুসুমিতং দ্রক্ষ্ণ পর্ব কৌতুহলং হি মে॥২৬॥

ছামংদেন উপাচ।

যতঃ প্রভৃতি দাবিত্রী পিত্রা দ্বান্তা স্বান্ধ। মম।

নান্ধাভার্থনাযুক্তমুক্তপূর্বাৎ স্মরাম্যহন্ ॥ ২৭ ॥

তদেধা লভতাৎ কামং যথাভিল্যিতৎ বধ্ং।
অপ্রমাদশ্চ কর্ত্বাঃ পুল্লি সত্যবতঃ পথি ॥ ২৮ ॥

11 2 2 11 2 2 11 2 2 11 2 2 11 2 2 11 2 2 11 2 2 11

^{*} দম্বংসর ইত্যাসপ্রোক্ যুবাভাগে ন নিগার্য্যাহং সহ যাগাম্যহং বন মিতি পাচঃ ক প্রত্তক্ষা।

মার্কণ্ডের উবার।
উভাভ্যামভারুজ্ঞাতা সা জগাম যশস্থিনী।
সহ ভত্র হৃদস্তীব হৃদয়েন বিদ্যতা ॥ ২৯॥
সা বনানি বিচিত্রানি রমনীয়ানি সর্বাশঃ।
মগ্রগণজুন্তানি দদর্শ বিপুলেক্ষণা॥ ৩০॥
নদীঃ পুণ্যবহাকৈর পুজিতংকে নগোন্তমান্।
সত্যবানাহ পশোতি সাবিত্রীং মধুরং বচঃ॥ ৩১॥
নিরীক্ষমানা ভর্তারং সর্বাবস্থমনিন্দিতা।
* মৃতমেব হি ত্রু মেনে কালে মুনিবচঃ স্মরন্॥ ৩২॥
জারুক্রবন্তী ভর্তারং জগাম মৃত্রগামিনী।
ছিবেব হৃদয়ং কুত্রা তঞ্চকালমবেক্ষতী॥ ৩৩॥
ইত্যারনাকে পর্বানি পতিগ্রতা মাহাল্যে সাবিক্রগোখানে
যল্লব্রাধিক ছিশতত্যোহধ্যায়ঃ॥ ২৯৬॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
তথে ভার্য্যাসহায়ঃ স ফলান্যাদায বীর্য্যবান্।
কঠিনং পূর্যামাস ততঃ কাঠান্যপাত্যং॥ ১॥
ভক্ত পাট্যতঃ কাঠং স্থেদো বৈ সমজাযত।
ব্যাযামেন চ তেনাম্ম জজ্ঞে শির্সি বেদনা॥ ২॥
॥ ২৯॥ ৩৯॥ ৩১॥ ৩২॥ ৩৩॥

ম ২৯ ॥ তেম ॥ তেম ॥ তেম ॥ তত ॥ ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈশকগীয়ে ভারত ভাবনীপে ২প্লবত্যধিকদ্বিশতত্মো২ধাণ্যঃ ॥ ২৯৬ ॥

অথেতি কঠিনং ছালীং কঠিনং নিষ্ঠুরে স্থাল্যামিতি বিশ্বঃ॥১॥২॥

^{*} মৃত্যের হি তং মেনেইতাত্র মৃত্যেরহিভর্তারমিতি পাঠিঃ প্রক্রকাা i

সোহভিগম্য প্রিয়াং বিশ্বিয়ামুবাচ শ্রমপীডিতঃ। ১ মতাবাল্বাচ।

ব্যাষামেন মমানেন জাতা শিরসি বেদনা॥ ৩॥
অঙ্গানি চৈব সাবিত্রি! হৃদয়ং দূষতীব চ।
অস্থানিব চাজানং লক্ষযে মিতভাবিনি!॥৪॥
শ্লৈরিব শিরো বিদ্ধানিং সংলক্ষযান্যহম।
তৎ স্বপ্তামিচ্ছে কল্যানি! ন স্থাতুং শক্তিরস্তি মে॥৫॥
সা সমাসাদা সাবিত্রী ভর্তারমুপগমা চ।
উৎসঙ্গেই শালার কর্রা নিবসাদ মহীতলে॥৬॥
ততঃ সানারদবচো বিমৃষতী তপস্থিনী।
তং মুহুর্ত্ত্বং কলং বেলাং দিবসঞ্জ যুযোজ হ॥৭॥
মুহুর্তাদেব চাপশ্রুৎ পুরুষৎ রক্তবাসসম্।
বজমোলিৎ বপুমন্তমাদিত্যসমতেজসম্॥৮॥
শ্রামাবদাতৎ রক্তাক্ষৎ পাশহন্তং ভ্যাবহ্ম।
হিতৎ সত্যবতঃ পাশ্বে নিরীক্ষন্তং তমেব চ॥৯॥
তৎ দৃষ্ট্রা সহসোপায় ভর্তুর্যান্ত শনৈঃ শিরঃ।
কৃতাঞ্জলিক্রবাচার্ভা ক্ষদয়েন প্রবেপতী॥১০॥

সাবিক্র্যবাচ।

দৈৰতং ত্বাভিজানামি বপুরেভদ্যমানুষম্। কাময়া ত্রহি দেবেশ। কস্তবং কিঞ্চ চিকীর্ষসি॥ ১১॥

যম উবাচ।

পতিব্ৰতাসি সাবিত্ৰী! তথৈব চ তপোহন্বিতা। অতস্ক্ৰামভিভাষামি বিদ্ধি মাং ত্বং শুভে যুম্মু॥ ১২॥

॥৩॥৪॥৫॥৬॥ সুবোজ অনুচিন্তিত বতী॥৭॥৮॥৯॥১০॥ কামরা ইচ্ছ্য়া।১১॥১২॥ অষং তে সত্যবান্ ভৰ্ত্ত**া কীণাযুঃ পার্নিবান্সজঃ।** নেয্যাম্যেনমহং বন্ধা বিদ্যোত্তমে চিকীর্বিতম্॥ ১৩॥

স†বিক্র্যব†5 ।

শ্রুষতে ভগবন্ দূতান্তবাগছন্তি মানবান্। নেতুং কিল ভবান্ কন্মাদাগতোহসি স্বয়ং প্রভো! ॥১৪॥

মার্কতের উবাচ।

ইত্যুক্তঃ পিতৃরাজ্নতাং ভগবান্ স্বচিকীর্ষিতম্।

যথাবং সর্বমাখ্যাতু তংপ্রিযার্থং প্রচক্রমে ॥ ১৫॥

অরঞ্চ ধর্মসম্বুক্তো রূপবান্ গুলুসাগরঃ।
নার্হো মৎপুরুষের্নেতুমতোহিন্ম স্বযমাগতঃ ॥ ১৬॥
ততঃ সত্যবতঃ কাষাৎ পাশবদ্ধ বশঙ্গতন্।
অঙ্গুঠমাত্রং পুরুষ নিশ্চকর্ষ যমো বলাৎ ॥ ১৭॥
ততঃ সমুদ্ধ্ প্রথাণং গতশ্বাসং হতপ্রভন্।
নির্বিচেন্টং শরীরং তদ্ভূবাপ্রিযদর্শনম্ ॥ ১৮॥
যমস্ত তং ততো বদ্ধা প্রযাতো দক্ষিণামুখঃ।
সাবিত্রী চৈব হুংখার্তা যমমেবান্থগছত।
নিষ্মব্রতসংশিদ্ধা মহাভাগা পতিব্রতা ॥ ১৯॥

যম উবাচ।

নিবর্ত্ত গচ্ছ সাবিক্রি! কুরুম্বাস্ফৌর্দাহিক্দ্। কৃতং ভর্তুস্ত্র্যান্ণ্য মাবদ্গম্য গতৎ স্ব্যা॥ ২০॥

॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ অঙ্কুষ্ঠমাত্রং হৃদয়াকাশ প্রতিষ্ঠিতহাৎ তৎ-প্রমাণং পুর্যাক্টকবেষ্টিতং স্থক্ষ শরীর বস্তং॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥

^{*} अत्रक-धर्यमश्रुक देउामाश्रीक् यम छेता देखि शांठः क श्रुकमा।

े সংবিজ্ঞাৰ্চ।

যত্র মে নীয়তে ভর্তা দুয়স্বা যত্র গছতে।
ময়া চ তত্র গন্তব্যমেষ ধর্মাঃ সনাতনঃ ॥ ২১ ॥
তপসা শুক্তব্ত্তা চ ভর্তুঃ ক্ষেত্ত্যুহুতেন চ।
তব চৈব প্রসাদেন ন মে প্রতিহতা গতিঃ ॥ ২২ ॥
প্রাছঃ সাপ্তপদং মৈত্রং বুধান্তত্ত্বার্থদর্শিনঃ।
মিত্রতান্ত পুরস্কৃত্য কিঞ্চিদ্ধক্ষামি তচ্চুণু ॥ ২০ ॥
নানাত্মবন্তন্ত বনে চরন্তি ধর্মাঞ্চ বাসঞ্চ প্রক্রিশ্রমঞ্চ।
বিজ্ঞানতো ধর্মামুদাহরন্তি,
তক্ষাৎ সন্তো ধর্মান্ত প্রধানন্ ॥ ২৪ ॥

॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ সনাত্মবন্তঃ অজিতেন্দ্রিয়াঃ বনেধ্র্যাঃ

যজাদি রূপাং ন চরন্ধি জিতেন্দ্রিয়া এব বনেপ্রামেশা যজাদীং ব্রী সংবদ্ধান্
ধর্মান্ কুর্বন্তি তেন গৃহস্থ বানপ্রস্থায়েঃ সংগ্রহঃ বাসং গুককুলন্মং
ব্রদ্ধান্ কুর্বন্তি তেন গৃহস্থ বানপ্রস্থায়েঃ সংগ্রহঃ বাসং গুককুলন্মং
ব্রদ্ধান্ কুর্বন্তি তেন গৃহস্থ বানপ্রস্থায়েঃ সংগ্রামং পাচান্তরে প্রতিপ্রায়ং
পরিপ্রমং পরিত্রাগ রূপমাশ্রমং সংন্যাসং পাচান্তরে প্রতিপ্রয়ং
প্রতিনিন্তঃ প্রয়ঃ কর্মকলাশ্রয়ণ শব্রেতি প্রতিপ্রয়ং সংন্যাসং বিজ্ঞানতঃ
চতুর্ব্যার্থে সার্ব্র বিভক্তিকস্তানিঃ ধর্মসাফলং আত্মবিজ্ঞান মিতার্থঃ তমেতঃ
বেদান্ত বচনেন ব্রাহ্মণা বিবিদ্বন্তি যজেন দানেন তপানা নাশকেনেতি
ক্রতমেব প্রবাজিনো লোকমিচ্ছন্তঃ প্রব্রজ্ঞীতি চ বেদান্ত্রচনস্য যজাদীনাং
প্রক্রমান্ত আত্মলাভার্থ্য প্রবর্জিত দ্রাহাল্য ধর্মণাং সমুচ্চয়ং
বার্য়তি একস্যোতি চতুর্ণা মন্য তমস্য একস্যাশ্রমস্য ধর্মণাং সত্তং মতেন
দন্তাদি রহিতঃ প্রদ্ধা সম্যানন্তিতেনেতার্থঃ সর্বের্ধ বয়ং আ্রাহ্মান্তং মার্গং
জ্ঞানমার্গং প্রপার্য প্রায়ান্ত প্রতিপ্রয়ং চেতি পাঠ ক্রমাপেক্রা দ্বিতীরং
নৈষ্ঠিকং গুরুকুলবাসং দারাহ্বরণ রূপং ভৃতীয়ং পরিব্রাজ্যাং দারাদি ত্যাগ্রপ্রং বা নবান্তে জ্ঞানহেতোঃ প্রধান ভূতস্য ধর্মস্যান্ট্রাপি সিন্ধেরিত্যর্থঃ

একন্ত ধর্মেণ সতাং মতেন,
 সর্কে স্মৃতং মার্গমনুপ্রপন্ধ।
 মা বৈ দিতীয় মা তৃতীয়ঞ্ বাঞ্জে,
 ভিত্মাৎ সন্তো ধর্মাছঃ প্রধানম্॥২৫॥

যম উবাচ!

নিবর্জ তুফোইস্মি তবান্যা গিরা, স্থরাক্ষরবাঞ্জনহেতৃযুক্ত্যা। বর্ত্ব র্ণীধেহ বিনাম্ম জাবিতং, দদানি তে সর্বামনিন্দিতে ! বরম্॥ ২৬॥

সাবিক্রাব্চ।

চুতেঃ শ্বরাজ্যাদ্বনবাসমাপ্রিতাে, বিনফিচকু: শ্বশুরো মমাপ্রমে। স লক্ষতুর্বলবান্ ভবেন্ধুপা, স্তব প্রসাদাক্ষ্কলনাক্সনিভঃ॥ ২৭॥

যম উবাচ।

দদানি তেইহং তমনিন্দিতে! বরং, যথা ত্বযোক্তং ভবিতা চ তত্তথা। তবাধনা প্লানিমিবোপলক্ষযে, নিবর্ত্ত গছেম্ব ন তে শ্রমো ভবেং॥ ২৮॥

মন্তর্ভ্রণেন আবরোধ শং মানাশয়েতিজাবঃ ॥ ২৫ ॥ নিবর্তনিবর্তক কর্মতিদারাদিঃ অক্ষর মকারাদি বাঞ্জনং ককারাদি এতন্যুক্তকেন বাকাস্য শব্দতো নির্দোষত্ব মুক্তং হেডুমুক্তকেন যুক্তিযুক্তকমপুরক্তং ॥ ২৬ ॥ ভর্তারং মোচরিন্যামেরতি ক্ষমং নিশ্চিমানা বরান্তরাণোব তাবং প্রার্থক্তী সাবিজ্যবাচ্চ্যত ইতি॥ ২৭ ॥ অধনা মার্গেণ নতুভত্নিশেন অনম্ভএবভর্তেগ্রান্যায়ঃ ॥ ২৮ ॥ মজোমজ ভর্তাসাগতিঃ তত্তিব গমনং ধ্রানিশ্চিতা

^{*} একস্য ধর্মেণ সভাতিতি শ্লোকঃঘপুস্তকে নাস্তি।

সাবিক্রাবাচ।

শ্রমঃ কুতো ভর্জ্সমীপতো হি মে,
যতো হি ভর্তা মফ সা গতিপ্র বা।
যতঃ পতিং নেষ্যসি তত্ত মে গতিঃ,
হ্রেশ ভূযশ্চ বচো নিবোধ মে॥ ২৯॥
সতাং সকুৎ সঙ্গতমীপ্সতৎ পরং,
ততঃ পরং মিত্রমিতি প্রচক্ষতে।
ন চাফলং সৎপুরুষেণ সঙ্গতং,
ততঃ সতাং সন্নিবসেৎ সমাগ্রমে॥ ৩০॥

यम छेन्।

মনোহনুকুলং বুধবুদ্ধিবৰ্দ্ধনশন স্বয়া যতুক্তং বচনং হিতাশ্রযম্। বিনা পুনঃ সত্যবতোহস্য জীবিত্তন বরং দ্বিতীয়ং বর্ষস্থ ভাবিনি।॥ ৩১॥

সাবিজ্যবাচ।

হৃতি পুরা মে শশুরস্য ধীমতঃ,
স্বমেব রাজ্যং লভতাং স পার্থিবঃ।
জহ্বাৎ স্বধর্মান চ মে গুরুর্যথা,
দ্বিনীয়মেতদ্বয়ামি তে বরুষ্॥ ৩২॥

• যম উন্চ।

স্বমেব রাজ্য প্রতিপৎস্যতেই চিরা

ন্ন চ স্বধর্মাৎ পরিহাস্যতে নূপঃ।

ক্তেন কামেন ময়া নূপাল্লজে,!

নিবর্ত্ত গচ্ছস্থ ন তে আমো ভবেৎ॥ ৩০॥

॥২৯॥ সতামিতি সাধোস্ত্রবসমাগম মাত্রেণ জাতামৈত্রীরং নিক্ষলানৈর ভবে দিতি ভবেঃ॥৩০,॥ হিতাপ্রায়ং যুক্তান্ত্রনং পূর্ব্বমাশ্রম ধর্মাণাং জ্ঞানহেতুত্ব মুক্তমিহতু সংসংগ্রোতি ভেদঃ তথাচ শুতিশুদ্বিজ্ঞানার্থং স গুরুমেবাভি গ্রেছদিতি॥৩১॥ গুরুষ শ্বশুরঃ॥ ৩২॥৩৩॥ জ্ঞানানবাপ্তৌ দোষমাহ

প্রজাই স্ত রৈতা নিয়মেন সংযতা, নিয়ম্য চৈতা নয়সে ন কাময়া। ততো যমত্বং তব দেব বিপ্রান্ত ১, নিবোধ চেমাং গিরমীরিতা ময়। ॥ ৩৪ ॥ অজোইঃ সর্বভূতেষু কর্মণা মন্যা গিরা। অনুগ্রহ্ম্চ দানঞ্চ সত্যাৎ ধর্মঃ সনাতনঃ॥ ৩৫॥ এবস্পারশ্চ লোকে হ্যৎ মনুষ্যাঃ * শক্তিপেশলঃ। সন্তত্যে,বাপ্যমিত্রেষু দয়াং প্রাপ্তেষু কুর্বাতে ॥ ৩৬॥ প্রভাইতি নিয়মেন নিয়মনৈন সংযতানি গৃহীতাঃ সতাঃ ভবন্তিতাশ্চপুনঃ 'কর্মভূতা স্থং নিকাময়া কাহিতেনার্থেন নয়সে সংযোজয়সি যাতনাত্তে সংকর্ম ফলমপি ভাভোগ দদাসি ন কামেতি পাঠে তা স্থং ইচ্ছয়ান নয়সে কর্মফলায়েতি শেষঃ কিন্তু তত্তৎ কর্মবশাদেবেতার্থঃ যেষান্তু জানিনাং কাম-নৈৰ নাজি নতেবদ্বশে ভৰতি নাপি দেহৈঃ ফলায় সংযুজ্যন্ত ইত্যৰ্থঃ তথা-চল্ডাতিঃ ইতিহুকামর মান্দোতি সংসারিণা মুচ্চাব্চাং গতিমুপসং হৃত্যাথা কাময় মানে।যোকামো নিজাম আপ্তক,মঃদান্ত্রতা প্রাণা উৎক্রাম স্ত্যাত্ত্ৰৰ সমৰনীয়ন্তে এক্ষৈৰসন্ একাপোতীতি ভদ্বিদা মকামানাং গভ্যাদ্য ভাবং দর্শরতি তথাসকামানাং পুনঃ পুনঃ সংসার্ঞ দর্শরতি ন সাম্পরারঃ প্রতিভাতি বালং প্রমান্যতং বিত্তবোভেন মূচং অয়ং লোকো নান্তি পর ইতি সানীপুনঃ পুনুষ্ণ সাপদ্যতে মে ইতি যম্যাতনা নিহ্নতার্থং সার্মুপা-দিশন শ্রোতারমভিমুখী করোতি নিবোগেতি॥ ৩৪॥ অন্তোহঃ দ্রোহাভারঃ অন্তগ্রহো দয়া দানং সংবিভাগঃ ও মপি মরি দয়াং কুর্কিতিভাবঃ ॥ ৩৫॥ এবং প্রায় ইত্যাপা যুট্বং ভতু রভিনয়তি অণক্তিপেশলাঃ শক্তি কৌশল ধীনাঃ পাচাতুরে ভাক্তঃ এদাকোশলঞ্চ ভাত্যাং ছীনাঃ সন্ধিরার্ধঃ আয়ুঃ শক্তিকৌশল হীনা মন্ত্ৰামুদ্শিঃ সংতস্ত্মিতেছপি আপ্তেষু শরণাগতেষু দসা॰ কু ইন্তি কিমৃত মাদৃশেয় দীনেমিতি ভাবঃ॥ ৩৬॥ মথতৃপ্তি করমিতি

^{*} এজা ইতাস। প্রাক্ সাবিক্রাবাটেতি পাঠঃ ক য পুস্তকয়োঃ।

[🌣] শক্তিপেশলাইত্যত্র ভক্তি পেশলাইতি পাঠঃ য পশুকে।

যম উবার।

পিপাসিতস্যেব ভবেদ্যথা প্র।
ন্তথা ত্বয়া বাক্যমিদং সমীরিত্য ।
বিনাপুনঃ সত্যবতোহস্য জীবিতং,
বর্থ র্ণীম্বেই শুভে যদীচ্ছ্সি॥ ৩৭॥
সাবিভ্যবাত।

মমানপত্যঃ পৃথিবীপতিঃ পিতা, ভবেৎ পিতুঃ পুত্রশতৎ তথৌরসম্। কুলস্য সন্তান করঞ্চ যদ্ভবেৎ, ভূতীয়মেভদ্বর্যামি তে ব্রম্ ॥ ৩৮॥

ষম উব্চ।

কুলস্য সন্তানকরং স্থবর্চসং,
শতং স্থতানাং পিতুরস্ত তে শুভে!।
কুতেন কামেন নরাধিপাত্মজে,!
নিবর্ত্ত দুরং হি পথস্কুশগতা॥ ৬৯॥

সাবিজ্যবাচ।

ন দূরমেতক্মন ভত্ সিলিধৌ,
মনো হি মে দূরতর পঞ্চাবতি।
অথ ব্রজন্নেব গিরং সমুদ্যতাং,
মযোচ্যমানাপ শৃণু ভূয় এব চ॥ ৪০॥

শেষঃ ॥ ৩৭ ॥ উরস মিতি দত্ত ক্রীতাদি ব্যাবৃত্তিঃ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ সমুদ্যতাং
উপস্থিতাং ॥ ৪০ ॥ বিবস্থতঃ বস্যতে আজ্ছাদ্যতে ইতিবঃ আজ্ছাদ্নং
তদ্বান্ বস্থাং শুদ্নো বিবস্থানিবাবরণো জগদা্থা স্থাঃ স্থা আ্রাজগতশু
স্থাশ্তে ভাতেঃ তস্যতনয়ঃ পুত্রঃ অত্যন্ত হিত ইতার্থঃ সমেন শক্র মিত্রাদি তারতম্য হীনেন তব্যুমেণ প্রশাসনেন তাঃ প্রজাশ্চরন্তি মদাজা- বিবস্বতস্থাং তনয়ঃ প্রতাপবাং,
তততেহিশি বৈবস্থত উচাদে বুথৈঃ।
সমেন * ধর্মেণ চ রঞ্জিতাঃ প্রজা,
ততততেবেহেশ্বর ধর্মরাজতা ॥ ৪১ ॥
আার্ন্যপি ন বিশ্বাদস্তথা ভবতি সহস্থ যঃ।
তক্ষাৎ সহস্থ বিশেষেণ সর্বার প্রান্মচ্চতি ॥ ৪২ ॥
দৌহদাৎ সর্বাভূতানাং বিশ্বাদেশ ক্রুতে জনঃ ॥ ৪৩ ॥
উদাহ্ত ও তে বচনং যদস্যনে,
শুভেন তাদৃক্ স্কৃতে প্রভত ময়া।
আনেন তুটোহিন্মি বিনাদ্য জীবি তাং,
বরাণ চতুর্থং বর্মস্থ গচ্ছ চ ॥ ৪৪ ॥

মমাত্মতং সভ্যবতস্তথৌরসং, ভবেত্বভাভ্যামিহ যং কুলোদহ্য। শতং স্থতানাপ বলবীয়াশালিনা মিদ্ধ চতুর্থপ ব্রয়ামি তে বর্ম্॥৪৫॥

যম উপাচ।

সাবিভাগবাট 1

শত শত্রানাপ বলবীর্যাশালিনাং, ভবিষ্যতি প্রীতিকরণ তবাবলে। পরিশ্রমস্তে ন ভবের্পাত্মজে, নিবর্ত্ত দুরং হি পথস্তৃমারতা॥ ৪৬॥

বশগা ইতার্থঃ অতএব তর্নাম ধর্মরাজ ইতি ধর্মেণেব রাজতে ধর্মোস্য রাজত ইতি বা॥ ৪১॥ লোকিকেমপি বিশ্বাসং কুর্বন্নিফীসিদ্ধিং প্রাপ্রোতি কিনুত ত্রি ধর্মরাজে ইত্যাশরেনাহ আত্মনাপীতি প্রায়ং প্রার্থনাং॥ ৪২॥ ॥ ৪৩॥ তেত্রা॥ ১৪॥ সমাত্মতং সত্যবতশ্চ ঔরসং নতুর্তরাফ্রাদি বদ-নাতো মরিজাত মিতার্থঃ•॥ ৪৫॥ ৪৬॥ শাশ্বতো ধর্মঃ পত্যঃ শকাশাদেব।

^{*} সমেন ধর্মেণ চ রঞ্জিতাঃ প্রজা ইত্যত্ত্ব সমেন ধর্মেণ চরস্তিতাঃ প্রজা ইতি পাঠঃ য পুস্তকে।

স†বিজ্ঞাব†চ।

সতাপ সদা শাশ্বতংশ্বৃত্তিঃ,
সন্তো ন সীদন্তি ন চ ব্যথন্তে।
সতাপ সন্তিন্তি ন চ ব্যথন্তে।
সতাপ সন্তিন্তি ন সকলে। ৪৭ ॥
সন্তো ভ্রাপ নামুবর্ত্তি সন্তঃ ॥ ৪৭ ॥
সন্তো ভ্রাপ তপা ধার্যন্তি।
সন্তো গতিভূতিভবাস্য রাজন্,
সতাং মধ্যে নাবলীদন্তি সন্তঃ ॥ ৪৮ ॥
ভার্যজুই নিদং বৃত্তমিতি বিজ্ঞার শাশ্বত্য।
সন্তঃ পরার্থং কুর্বাণা নাবেক্ষন্তে * প্রতিক্রিয়ান্ ॥ ৪৯ ॥
ন চ প্রসাদঃ সংপুরুষেরু মোঘো,
ন চাপার্থো নশ্যতি নাপি মানঃ।
বন্ধাদেত্রিয়তং সংস্থু নিত্যং,
তক্ষাৎ সন্তো রক্ষিতারো ভ্রন্তি ॥ ৫০ ॥

পত্যোং পাদনং সতাং মানৃশানাং দারাগাং তত্ত্বৈর রক্তিঃ নহুগতার্থি পত্যো কথং তৎসাদিত্যত আহ সন্ত ইতি বরং দ্বা সন্তো নব্যপ্তি নাপি-সীদন্তি কিন্তু উক্তং নির্বহন্তে বেতার্থঃ অত্যন্তা শক্যের্থে কথং স্যাদিত্যত আহ সতা মিতি সতামশক্য মিপ নাস্তি ভহং চান্যস্য তেন্ডোনাস্তীতি তত্ত্ব-ভোহং নির্ভর্ম স্মীতি ভাবঃ ॥ ৪৭ ॥ ত্বরাপি সন্ত্যং স্মীয়ং রক্ষনীয় মিত্যাহ সভোহীতি ভূত ভব্যস্য ভূত্স্য ভবিষ্যম্য চ॥ ৪৮ ॥ পরস্পরং উপকার প্রভাপকারং ॥ ৪৯ ॥ এতং ত্রেয়ং প্রসাদোর্থোমানশ্চ দরিক্রস্য প্রসাদোনা-র্থায় প্রামতাং প্রসাদোর্থ কৃদ্পি ন্মানদঃ সতান্ত্রমানদ ইতি খলেতু প্রসাদ এব নাস্তি অত্ত্রুয়ং হয়েবস্থিত মিতি বং রক্ষিতা স্মাকং ভবেতি ভাবঃ॥৫০

^{*} প্রতিক্রিন্নামিত্যত্র পরস্পর মিতি পাঠ: **ঘ পুস্তকে।**

যথা যথা ভাষসি ধর্মগংহিতং,
মনোহনুকুলং স্থপদং মহার্থবিং।
তথা তথা মে স্থায় ভক্তিরুক্তমা,
বরং রূণীষাপ্রতিমং পতিব্রতে ! ॥ ৫১ ॥
সাবিক্রাবাচ।

ন তেহপবর্গঃ স্ক্রকাদিনা ক্রত্র,
তথা যথান্যেষু বরেষু মানদ!।
বরং রণে জীবতু সত্যবানযং,
যথা মৃতা হেবমহং পতিং বিনা॥ ৫২ ॥
ন কাময়ে ভর্জুবিনাক্রতা স্বর্থণ,
ন কাময়ে ভর্জুবিনাক্রতা দিবম।
ন কাময়ে ভর্জুবিনাক্রতা জিয়ণ,
ভর্জুহীনা ব্যবসামি জীবিতুম্॥ ৫৩॥
বরাতিসর্গঃ শতপুত্রতা মম,
ত্রুইব দজো ব্রিষতে চ মে পতিঃ।
বরং রণে জীবতু সত্যবানযং,
ভবৈব সত্যং বচনণ ভবিষ্যতি॥ ৫৪॥

তথেত্যুক্তা তু তং পাশং মুক্ত্বা বৈবস্বতো যম:। ধর্ম্মরাজঃ প্রহৃষ্টাত্মা-দাবিত্রীমিদমন্ত্রবীং । ৫৫॥ এষ ভদ্রে। ময়া মুক্তো ভর্তা তে কুলনন্দিনি।। অরোগস্তব নেযুক্ত দিদ্ধার্থক্য ভবিষ্যতি॥ ৫৬॥

॥ ৫১॥ তে ততঃ অপর্বর্গঃ পুত্র ফল প্রাপ্তিঃ স্কৃতাদিন। সমীচীনাদাস্পাতা যোগাদৃতে ক্ষেত্রজাদি পুরাপ্তিন নক্তো নিস্পাদিতে। ভবতি
যথান্যের বরের ভত্রি মদরস্তাব সিষ্টান্যেব নতন্ত যন্মাদেরং তন্মাদ্বরং
রূপে ॥ ৫২॥ ব্যবসামি শক্রোমি ॥ ৫৩॥ ৫৪॥ ৫৫॥ ৫৬॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ।

চতুর্বর্ষশতাযুক্ষ ত্বযা সার্দ্ধমবাপ্যাতি। ইফী যজৈক ধর্মেণ খ্যাতিং লোকে গমিয়তি॥ ৫৭॥ ত্বায় পুত্রশতঞাপি সত্যবান্ জনযিষ্যতি। তে চাপি সর্বের রাজানঃ ক্ষজিয়াঃ পুত্রপৌজিনঃ ॥ ৫৮॥ খ্যাতাস্ত্রামধেযাশ্চ ভবিষ্যন্তীহ শাশ্বতাঃ। পিতুশ্চ তে পুত্রশতং ভবিতা তব মাতরি॥৫৯॥ মালব্যাং মালবা নাম শাশ্বতাঃ পুত্রপৌত্রিণঃ। ভ্রাতরস্তে ভবিষ্যন্তি ক্ষত্রিযান্ত্রিদশোপমাঃ॥ ৬০॥ এবং তত্তৈ বরান দত্তা ধর্মরাজঃ প্রতাপধান। নিবর্ত্তযিত্বা সাবিত্রী^ স্বমেব ভবনং যথৌ ॥ ৬১ ॥ সাবিত্রাপি যমে যাতে ভর্তার প্রতিলভ্য চ। জগাম তত্র যত্রাম্য ভর্তুঃ শ্রাবং ক্লেবরম্। ৬২। সা ভূমৌ প্রেক্ষ্য ভর্তারমুপস্ত্ত্যোপগৃহ চ। উৎসঙ্গে শির আরোপ্য ভূমারুপবিবেশ হ॥ ৬৩॥ সুত্জাঞ্চ স পুনর্লন্ধ সাবিত্রীমভ্যভাষত। প্রোষ্যাগত ইব প্রেমা পুনঃ পুনরুদীক্ষ্য বৈ ॥ ৬৪॥ মত্যবাহ্নবাচ।

স্কুচিরং বত স্থপ্তোহন্মি কিমর্থং নাববোধিত:। ক্ল চাসৌ প্রুষঃ শুমো যোহসৌ মাণ সঞ্চকর্ষ হ॥ ৬৫॥ সাবিক্রাবাচ।

স্থাচিরং ত্বং প্রস্থাপ্রেরি সমাক্ষে পুরুষর্ষত।। গতঃ স ভগবানু দেবঃ প্রজাসপ্যমনো যমঃ॥ ৬৬॥

॥ ৫৭॥ ৫৮॥ জন্মধেরাঃ সাবিতা ইতি॥ ৫৯॥ ৬০॥ ৬১ । শাবিং শানুমং

ા હર ા હું ા હા કા હું લા હું હા

বিশ্রান্তে হিন্দ মহাভাগ! বিনিদ্রশ্চ নূপাত্মজ!।
যদি শক্যং সমুত্তিষ্ঠ বিগাতা পশ্চ শব্দরীম্॥ ৬৭॥
মার্কণ্ডের উব্চ।

উপলভ্য ততঃ সৎজ্ঞাং সুখসুপ্ত ইবোণ্যিতঃ। দিশঃ সৰ্বা বনান্তাশ্চ নিরীক্ষ্যোবাচ সত্যবান্ ॥ ৬৮ ॥ ফলাহারোহস্মি নিষ্ক ভিত্ত্যা সহ স্থমধ্যমে! । ততঃ পাট্যতঃ কাষ্ঠং শিরসো মে রুজাভবং॥ ৬৯॥ শিরেহিভিতাপসন্তপ্তঃ স্থাতুং চিরমশকুবন্। তবোৎসঙ্গেপ্রস্থাহিন্ম ইতি সর্বাং স্মরে শুভে ! ॥ ৭০ ॥ ত্বয়োপগৃচস্য চ মে নিদ্রযাপহ্নতং মনঃ। ততোহপশ্যং তমো ছোর পুরুষঞ্চ মহৌজসন ॥ ৭১॥ তদ্যদি অং বিজানাসি কিন্তুছ্ স্থমধ্যমে!। श्रद्भन * यिन वा मृत्को यिन वा मजारमव ज् ॥ १२॥ তমুবাচাথ সাবিত্রী রজনী ব্যবগাহতে। শ্বন্তে সর্বাৎ যথার্ত্তমাখ্যাস্যামি নৃপাত্মজ ! ॥ ৭৩॥ উত্তিষ্ঠোত্তিষ্ঠ ভদ্ৰতে পিতরৌ পশ্য স্থবত ! । विशाहा तकनी (इय॰ नितृखण्ड मिवाकतः ॥ १८॥ নক্তঞ্চরাশ্চরন্ত্যেতে হৃষ্টাঃ কূরাভিভাষিণঃ। क्षायरस्य अर्वभक्षाण्य मृत्रागाक्षत्रजाः वरन ॥ १० ॥ এতান ঘোরান্ শিবা নাদান দিশং দক্ষিণপশ্চিমাম। আস্থায় বিরুবস্ত্যগ্রাঃ কম্পয়স্তো মনো মম । ৭৬ ॥ সভ্যবাহ্নবাচ ৷

বনং প্রতিভয়কার প্রনেন তমসার্তন্। ন বিজ্ঞাস্যসি পৃষ্ঠান প্রতিঞ্চব ন শক্ষ্যসি॥ ৭৭॥॥॥॥ ৬৭॥ ৬৮॥ ৬৯॥ ৭০॥ ৭১॥ ৭২॥ ৭০॥ ৭৪॥ ৭৫॥ ৭৫॥ ৭৮॥ ११॥

^{*} यদীত্যত্র ময়ীতি পাঠঃ ঘ পুস্তকে।

সাবিক্রাবার।

অস্মিন্ন বনে দধ্যে শুস্কর্কঃ স্থিতো জ্বন্।
বায়ুনা ধন্যমানোহত দৃশ্যতেহি গ্লিঃ ক'চৎ কচিৎ ॥ ৭ ৮ ॥
ততোহগ্নিমান্যিত্বেই জ্বান্যিয়ামি সর্বতঃ।
কাপ্তানীমানি সন্তীই জহি সন্তাপমাল্লনঃ ॥ ৭৯ ॥
যদি নোৎসহদে গন্তঃ সক্ত্রুৎ ত্বাং হি লক্ষ্যে।
নচ জ্বান্যমি পন্থানং তমসা সংর্তে বনে ॥ ৮০ ॥
শ্বঃ প্রভাতে বনে দৃশ্যে যাস্যাবোহনুমতে তব।
বসাবেই ক্ষপামেকাং ক্রচিতং যদি তেইন্য ! ॥ ৮১ ॥
সভ্যবাল্লবাচ।

শিরোক্তরা নির্ত্তা মে স্বস্থান্যক্রানি লক্ষযে।
মাতাপিত্ত্যামিচ্ছামি সঙ্গমং অ্ৎপ্রসাদজম্॥ ৮২ ॥
ন কদাচিদ্বিলাল হি গতপুরো ম্যাশ্রমঃ।
অনাগতাযাং সন্ধ্যাযা মাতা মে প্রকাদ্ধি মান্॥ ৮৩ ॥
দিবাপি ময়ি নিষ্ক্রান্তে সন্তপ্যেতে গুরু মম।
বিচিনোতি হি মান তাতঃ সইহবাশ্রমবাসিভিঃ ॥ ৮৪ ॥
মাত্রা পিত্রা চ স্বভূশং তুঃথিতাভ্যামহন পুরা।
উপ লকঃ স্বভ্শিচিরেণাগচ্চসীতি হি ॥ ৮৫ ॥
কা অবস্থা ত্যোরদ্য মদর্থমিতি চিন্তযে।
ত্যোরদৃষ্ঠে ময়ি চ মহদ্বুংথং ভবিষ্যতি ॥ ৮৬ ॥
পুরা মামূচতুশৈচব রাত্রাবস্রাযমাণকৌ।
ভূশং স্বত্থাতৌ র্দ্ধৌ বহুশঃ প্রীতিসংযুতৌ ॥ ৮৭ ॥
অ্যা হীনৌ ন জীবাব মুহুর্ত্মিপ পুক্রক!।
যাবদ্ধরিষ্যেন্য পুক্র ! তাবনৌ জীবিতং প্রস্কু ॥ ৮৮ ॥
বচ্ছা এন ৮০ ॥ ৮১ ॥ ৮২ ॥ ৮০ ॥ ৮৪ ॥ ৮৫ ॥ ৮৫ ॥ ৮৮ ॥

॥ १४ ॥ १৯।४०॥४३॥४२॥४०॥४८॥४८॥४८॥४७॥ अख्रांत्र मानितः कन्द्रो ॥४१॥(नः जार्द्याः ॥४४॥

বুদ্ধযো রক্ষযোর্যটিস্কৃষি বংশঃ প্রতিষ্ঠিতঃ! ত্ময়ি পিগুল্চ কীর্ত্তিল্চ সন্তানঞ্চাবযোরিতি ॥ ৮৯॥ 🌞 মাতা বৃদ্ধা পিতা বৃদ্ধস্তযোর্যন্টিরহ্^ কিল। তৌ রাতৌ মামপশ্যন্তো কামবস্থাং গমিষাতঃ ॥ ৯০॥ নিদ্রাখান্চাভ্যস্থামি যক্তা হেতোঃ পিতা মম। মাতা চ সংশয়ং প্রাপ্তা মৎক্তেইনপকারিণী। ৯১॥ তাহ্প্য সংশ্বং প্রাপ্তঃ কুচ্ছ্রামাপদমান্তিতঃ। মাতাপিতৃভ্যাৎ হি বিনা নাহণ জীবিতুমুৎসহে॥ ৯২॥ ব্যক্তমাকুল্যা বুদ্ধা প্রজাচক্ষ্ণ পিতা মম। একৈকমন্তাং বেলাযাং পৃচ্চত্যাপ্রমবাদিনম্ † ॥ ৯০॥ নাত্মানমনুশোচামি যথাহ- পিতরং শুভে!। 'ভর্ত্তারঞাপ্যসূগতাং মাতর্৽ পরিত্র্বলম্॥ ৯৪ ॥ মংক্লতে ন হি তাবদ্য সন্তাপা পরমেষ্যতঃ। জীবন্তাবনুজীবামি ভৰ্তব্যৌ তৌ মযেতি হ। ৯৫। তযোঃ প্রিয়ং মে কর্ত্তব্যমিতি জানামি চাপ্যহম্। মার্কভের উবাচ।

এবন্জ্বা স ধর্মাত্মা গুরুভক্তো গুরুপ্রিয়ঃ ॥ ৯৬ ॥ উচ্ছি ত্য বাছু ছুঃখার্ভঃ সম্বরং প্রক্রােদ হ। ততােহব্রবীত্তথা দৃষ্ট্বা ভর্তারং শােককর্ষিত্র ॥ ৯৭ ॥ বিমূজ্যাক্রানি নেত্রাভ্যাং সাবিত্রী ধর্মাচারিণী। যদি মেহস্তি তপস্তপ্তং যদি দক্তং ছতং যদি ॥ ৯৮॥

। ४० ॥ २० ॥ २२ ॥ अख्रिहिक्क्रक्काः ॥ २० ॥ २८ ॥ २० ॥ २० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥

^{*} মাতা ব্লব্ধিতা হল ইত্যাদি যস্যাহেতোঃ পিতাম্মেতাতঃ লোক॰ ঘ প্রতকে নান্তি।

[🕆] আ্রমবাসিনমিতাত্র আ্রমবাসিনামিতি পাঠঃ ক প্রস্তুক্স। ।

শৃক্রশাস্তরভর্ত্বাং মম পুরাস্তি শর্বরী। ন স্মরামুক্তপূর্বাং বৈ স্থৈরেঘপ্যনৃতাং গিরস্॥ ৯৯॥ তেন সত্যেন ভাবদ্য ধ্রিযেতাৎ শৃশুরৌ মম।

সভাবাহুধার।

কামযে দর্শনং পিত্রোষাহি সাবিত্রি ! মা চিরস্॥ ১০০॥ পুরা মাতৃঃ পিতৃকাপি যদি পশ্চামি বিপ্রিযম্। ন জীবিষ্যে বরারোহে ! সত্যেনাত্মানমালভে ॥ ১০১॥ যদি ধর্ম্মেচ তেবুদ্ধির্মাঞ্চে জ্জীবন্তমিচ্ছসি। মম থ্রিং বা কর্ত্রবাং গচ্ছাবাশ্রমমন্তিকাং ॥ ১০২॥

মার্কতের উবাচ।

সাবিত্রী তত উত্থায় কেশানু সংযায় ভাবিনী।
প্রতিমুখাপ্যামাস বাছভাগে পরিগৃষ্থ বৈ ॥ ১০৩॥
উত্থায় সত্যবাংশ্চাপি প্রমূজ্যাঙ্গানি পানিনা।
সর্বা দিশঃ সমালোক্য কঠিনে দৃষ্টিমাদ্ধে ॥ ১০৪॥
তমুবাচাথ সাবিত্রী শঃ ফলানি হরিষ্যাস।
যোগক্ষেমার্থমেতন্তে নেয়ামি পরশুস্তুহম্॥ ১০৫॥
কৃত্বা কঠিনভার পা বৃক্ষশাখাবলম্বিন্ম।
গৃহীত্বা পরশুং ভর্তুঃ সকাশে পুনরাগমং॥ ১০৬॥
বামে ক্ষেক্ষে তু বামোক্ষর্ভর্ক্ষাহুপ নিবেশ্য চ।
দক্ষিণেন পরিষ্বজ্য জগাম গজগামিনী॥,১০৭॥
সত্যবায়বাচ।

অভ্যাসগমনান্তীর পন্ত নেগ বিদিতা মম্। রক্ষান্তরালোকিত্যা জ্যোৎস্মযা চাপি লক্ষ্যে॥ ১০৮॥

॥ ৯৯ ॥ দ্রি য়েওাঁং জীবেতাং শ্বশুরোশক্রশশুরো ॥ ১০০ ॥ ১০১ ॥ ১০২ ॥ ॥ ১০০ ॥ কঠিনে ফল পূর্ণে পাত্রে॥ ১০৪॥ ১০৫॥ ১০৬॥ ১০৭॥ ১০৮॥ আগতৌ স্থং পথা যেন ফলান্যবিচ্তানি চ ।

যথাগতং শুভে ! গচ্ছ পন্থান মা বিচার্য ॥ ১০৯ ॥

* পলাশখণ্ডে চৈতস্মিন পন্থা ব্যাবর্ততৈ দিধা।
তস্যোত্তবেণ যং পন্থাস্তেন গচ্ছ ত্বরস্থ চ ॥ ১১০ ॥

স্বস্থোহস্মি বলবানস্মি দিদৃক্ষ্ণ পিতরাবুভৌ।
ক্রেবনেবং ত্বরাযুক্তঃ সম্প্রায়াদাশ্রমং প্রতি ॥ ১১১ ॥

ইত্যারণাকে পর্বাণি পতিব্রতামাহাত্মে সাবিক্র্যপাখ্যানে
সপ্তনবত্যধিকদ্বিশ্ততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৯৭ ॥

মার্কভেয় উবাচ।

এতিশানের কালে তু ত্যুম্ৎসেনো মহাবল:।
লক্ষচক্ষ্য প্রসন্নাযাং দৃষ্ট্যাৎ সর্বাং দদর্শ হ। ১॥
স সর্বানাশ্রমান গড়া শৈব্যয়া সহ ভার্যয়া।
পুত্রহেতোঃ পরামার্ভিং জগাম ভরতর্ষভ!॥২॥
তাবাশ্রমানদীশৈচর বনানি চ সরাৎসি চ।
তক্ষাং নিশি বিচিন্নতৌ দম্পতী পরিজগ্মতুঃ॥৩॥
গ্রুড্বা শব্দন্ত যং কঞ্চিত্রমুখৌ স্কুতশঙ্কষা।
সাবিত্রীসহিত্যেহভোতি সত্যবানিত্যভাষতাম্॥৪॥

11 202 11 250 11 222 11

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধনি নৈলকণ্ডীয়ে তারত ভাবদীপে সপ্তনব-ভ্যাধিক দ্বিশততমোধ্যায়ঃ ॥ ১৯৭ ॥

এত স্মিরেবেতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ভিন্নৈর্বিদীর্ণেঃ প্রক্ষার্থ

* পলাশখণ্ড ইত্যত্ত পলাশষ্ও ইতি পাঠঃ ক পুস্তক্স্য।

ভিন্নেশ্চ পরুষেঃ পাদেঃ সন্ত্রবৈঃ শোণিতােক্ষিতৈঃ।
কুশকন্টকবিদ্ধান্ধানুমান্ধানিবধানতঃ॥ ৫॥
ততে। হভিস্তা তৈর্বিপ্রেঃ সর্বৈরাশ্রমবাসিভিঃ।
পরিবার্যা সমাখাভা তাবানীতৌ স্বমাশ্রমন্য ॥ ৬॥
তত্র ভার্যাসহায়ঃ স রতাে রক্ষৈত্রপােবনঃ।
আখাসিতাে বিচিত্রাহিঃ পূর্বেরাজ্ঞাং কথাশ্রহৈঃ॥ ৭॥
ততন্তৌ পুনরাশ্বন্তৌ রক্ষো পূজ্রদিদৃক্ষযা।
বাল্য রন্তানি পুজ্রভা সারতৌ ভূশতুঃথিতৌ॥ ৮॥
পুনরুজা চ করুণাং বাচন্টো শােককর্বিতৌ।
হা পুল্র! হা সাধি! বধু। কাসি কাসীত্যরােদতাম্।
ভাকাঃ সত্যবাক্তেষামুবাচেদং তয়ােবিচঃ॥ ৯॥
* স্বর্চা উরাচ।

যথাস্য † ভার্য্যা সাবিত্রী তপসা চ দমেন চ। . আচারেণ চ সংযুক্তা তথা জীবতি সত্যবান্॥ ১০॥ গৌতম উবাচ।

বেদাঃ সাঙ্গা মধাধীতান্তপো মে সঞ্চিতং মহৎ।
কৌমার ব্রহ্মচর্য্যঞ্চ গুরবোহশিক তোবিতাঃ ॥ ১১॥
সমাহিতেন চীর্ণানি সর্বাণ্যের ব্রতানি মে।
বাযুভক্ষোপবাসক ক্তো মে বিধিবং সদা॥ ১২॥
অনেন তপসা বেদ্মি সর্বাং পরচিকীর্ষিত্য।
সত্যমেত্রিবোধ ত্বং ধ্রিয়তে সত্যবানিতি॥ ১৩॥

^{*} স্বৰ্চা: উবাচতাক্ত প্ৰাক্ বান্ধাঃ সত্যবাক্তেষামুবাচেদং ভয়োৰ্ধ্বচ ইতি পাঠঃ ক প্ৰতকে নান্তি।

[🕂] যথান্তেতাত্ত্বাস ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

শৈষ্য উনাচ ৷

উপাধ্যায**ন্ত মে বক্তু দ্যথা বাক্যং বিনিঃস্তম্।** নৈব জাতু ভবে**ন্মি**থ্যা তথা জীবতি সত্যবানু॥ ১৪॥

श्वय छेठूः।

यथाख जार्या। माविजी मरेक्टरत्व स्नलकरेवः ।

অবৈধব্যকরৈয়ু ক্তা তথা জীবতি সভ্যবান্। ১৫।

ভারদাজ উবাচ।

যথাস্য ভাষ্যাসাবিত্রী তপসাচদমেন চ।

আচরেণ চ সম্যুক্তা তথাজীবতি সত্যবান্। ১৬।

मान्डा छेवाछ।

যথা দৃষ্টিঃ প্রবৃত্তা তে সাবিত্র্যাশ্চ যথা ব্রতম্।

গতাহারমকুত্বা চ তথা জীবতি সত্যবান্॥ ১৭॥

* মাওবা উবাচ ৷

যথা বদন্তি শান্তাযাং দিশি বৈ মুগপক্ষিণঃ।

পার্থিবী চ প্রবৃত্তিন্তে তথা জীবতি সত্যবান্॥ ১৮॥

ধেম্য উবাচ।

সবৈত্ত বৈরুপেতত্তে যথা পুজে। জনপ্রিয়ং।

দীর্ঘাযুর্বক্ষণোপেতস্তথা জীবতি সত্যবান্॥ ১৯॥

মার্কতের উবাচ।

এবমাশ্বাদিত স্তৈস্ত , সত্যবাগি্ভস্তপশ্বিভিঃ।

তাংস্তান বিগণ্যন্ সর্বাংস্ততঃ স্থির ইবাভবৎ ॥ ২০ ॥

॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭॥ শান্তারাং প্রসন্নারাং পার্থিবী পার্থিবত্বা-গ্যোপ্রাক্ত ধর্মঃ॥ ১৮ ॥ ১৯॥ ২০॥

^{*} মাওব্য উবাচ ইত্যত্ত আপশুষ উবাচ ইতি পাঠঃ য পুশুকে।

ততো মুহুর্তাৎ সাবিত্রী ভর্তু। সত্যবতা সহ। আজগামাশ্রমং রাত্রৌ প্রস্কৃষ্টা প্রবিবেশ হ॥ ২১॥ বাদ্যানা উচুঃ।

পুজেণ সঙ্গতং ত্বান্ত চকুষান্তং নিরীক্ষ্য চ।
সর্বের বয়ং বৈ পৃচ্চামো রুদ্ধিং তে পৃথিবীপতে !॥ ২২॥
সমাগমেন পুজন্ত সাবিত্র্যা দর্শনেন চ।
চকুষশ্চাত্মনো লাভাজিভিদিন্ট্যা বিবর্দ্ধসে ॥ ২৩॥
সবৈরেশ্মাভিরুক্তং য়ৎ তথা তর্মাত্র সংশয়ং।
ভূষো ভূয়ং স রুদ্ধিন্তে ক্ষিপ্রমেব ভবিষ্যতি॥ ২৪॥
মাকণ্ডেষ্কু উবাচ।

ততোহি যিং তত্র স্কুলার দ্বিজাস্তে সর্বর এব হি।
উপাসাঞ্চলিরে পার্থ! ছামৎসেন মহীপতিম্ ॥ ২৫॥
শৈব্যা চ সত্যবাশ্বৈশ্ব সাবিত্রী চৈকতঃ স্থিতাঃ।
সবৈবৈত্তরভারুজ্ঞাতা বিশোকাঃ সমুপাবিশন্॥ ২৬॥
ততো রাজ্ঞা সহাসীনাঃ সর্বেতে বনবাসিনঃ।
জাতকৌত্হলাঃ পার্থ! পপ্রচ্ছুর্ন্পতেঃ স্বত্য ॥ ২৭॥
স্বয উচুঃ।

প্রাণের নাগতং কন্মাৎ সভার্য্যেণ স্বয়া বিভো!। বিরাত্তে চাগতং কন্মাৎ কোহনুবন্ধন্তবাভবৎ ॥ ২৮॥ সন্তাপিতঃ পিতা মাতা ব্যঞ্জিব নূপাত্মজ্ঞ। কন্মাদিতি ন জানীমন্তৎ সর্বাং বক্তুমইসি॥ ২৯॥

॥২১ ॥২২ ॥২৩ ॥২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ কিরাত্তে বছরাতে কালে আগাতং আগামনং ॥২৮॥২৯॥

ততোগ্নিমিতাত প্রাক্ মার্কণ্ডের উবাচ ইতি পাঠঃ

ব পুত্রকে নান্তি।

মত্যবাহ্যবাচ।

পিত্রাহমভারুজ্ঞাতঃ সাবিত্রীসহিত্যে গতঃ।
অথ মেহভূচ্ছিরোত্য়খন বনে কাঠানি ভিন্দতঃ॥ ৩০ ॥
স্থপ্তশ্বাহং বেদনযা চিরমিত্যুপলক্ষরে।
তাবৎকালং ন চ মরা স্থপ্তপূর্বাং কদাচন॥ ৩১ ॥
সর্বেষামেবভবতাং সন্তাপোমাভবেদিতি।
অতোবিরাত্রাগমনং নান্যদন্তীহকারণ্য॥ ৩২ ॥
গৌতম উবাচ।

অকস্মাচকুষঃ প্রাপ্তির্চ্চামৎসেনস্থা তে পিভুঃ।
নাস্থা ত্বং কারণ বেৎসি সাবিত্রী বন্ধু মইতি। ৩০।
শ্রোতুমিচ্ছামি সাবিত্রি। ত্বং হি বেপা পরাবরম্।
ত্বাং হি জানামি সাবিত্রি। সাবিত্রীমিব তেজসা। ৩৪।
ত্বমত্র হেতু জানীষে তম্মাৎ সত্যং নিরুচ্যতাম্।
রহস্থাং যদি তে নাস্তি কিঞ্চিদেব বদস্ব নঃ॥ ৩৫॥

সাবিজ্যবাচ 1

এবমেতদ্যথা বেষ্ণ সঙ্কাল্পো নান্যথা হি বং।
ন হি কিঞ্চিত্ৰহস্থা মে প্রায়তাশ তথ্যনত্র যথ ॥ ৩৬ ॥
মৃত্যুক্সে পাত্যুরাখ্যাতো নারদেন মহাজ্বনা।
স চাদ্য দিবসং প্রাপ্তপ্ততো নৈনং জহান্যহম্ ॥ ৩৭ ॥
স্পুঞ্জৈনশ যমং সাক্ষাত্মপাগছ্ছৎ সকিন্ধরঃ।
স এনমন্যদ্ধনা দিশং পিতৃনিষেবিতাম্ ॥ ৩৮ ॥
অস্প্রেষং তমহং দেবং সত্যেন বচসা বিভূম্।
পঞ্চ বৈ তেন মে দ্ভা বরাঃ শুণুত তাল্মম ॥ ৩৯ ॥

চকুষী চ স্বরাজ্যঞ্গ দৌ বরৌ শ্রশুরস্য মে । লকং পিতুঃ পুত্ৰশতং পুত্ৰাণাঞ্চাত্মনঃ শতম্॥ ৪০॥ চতুৰ্ব্বৰ্ষশতাযুৰ্দ্বেভৰ্তালৰক সত্যবান। ভর্জ জীবিতার্থন্ত ম্যা চীর্ণস্থিতং ব্রতন্ ॥ ৪১॥ এতৎ সর্বাপ মযাখ্যাতং কারণং বিস্তাইরণ বঃ। যথ। বৃত্তং স্কুখোদক্মিদং তুঃখ সহন্ম ॥ ৪২ ॥

ঝধ্য উচ্:।

নিমজ্জমানং ব্যসনৈরভিদ্রুতং,

कुलः नदबन्धना ज्यामाय इति। प्रयो स्नभौनख ज्रूषागुक्रया, সমুদ্ধৃতং সাধি। পুনঃ কুলীনয়া॥ ৪৩॥ মার্কভের উবাচ।

তথা প্রশস্য হাভিপূজ্য চৈব, বর্জ্রিয় তামুষ্যঃ সমাগতাঃ। নরেন্দ্রমামন্ত্র্য সপুত্রমঞ্জসা শিবেন জগ্মুর্দিতাঃ স্বমালযম্॥ ৪৪॥

ইত্যারণ্যকে পর্বনি পতিত্রতামাহাত্মপর্বনি সাবিত্রীকথায়াং অফ্টনবত্যধিকদ্বিশততমোহধ্যায়: ॥ ২৯৮॥

1801851841891881

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলক্তীয়ে ভারত ভাবদীপে অষ্টনবত্যধিক দ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৯৮॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ত্স্যাং রাত্রাং ব্যতীতাযামুদিতে স্থ্যমণ্ডলে। ক্তপূর্বাহ্নিকাঃ সর্বে সমেযুক্তে তপোধনাঃ॥ ১॥ তদেব সর্বাং সাবিত্র্যা মহাভাগ্যং মহর্ষয়ঃ। ত্যুসৎদেনায় নাতৃপান কথযন্তঃ পুনঃ পুনঃ ॥ ২॥ ততঃ প্রকৃত্যঃ সর্কাঃ শালেভ্যোহভ্যাগতা নূপ ! 1 আচখ্যাৰ্নিহতক্ষৈব স্বেনামাত্যেন তং দ্বিষ্ম ॥ ৩॥ ত भविता इंड अन्या ममहाय भवाकावम्। · नार्द्रप्यन् यथोवृखः विक्रु छक्ष विषवलम् ॥ ८ a ঐকমত্যঞ্চ সর্ববস্য জনস্যাথ নৃপৎ প্রতি। সচক্ষাপ্যচক্ষা স নো রাজা ভবত্বিতি। ৫। অনেননিশ্চযেনেহ বযং প্রস্থাপিতা নুপ!। প্রাপ্রানীমানি যানানি চতুরঙ্গণ তে বলম্। ৬। প্রাযাহি রাজন্ ভদ্রতে ঘুটত্তে নগরে জয়ঃ। অধ্যাম্ব চিররাত্রায পিতৃপৈতামহং পদম্॥ १॥ চক্ষাত্তঞ্ তং দুফা রাজানং বপুষান্তিত্য। भुक्ष् । निপতिতाः मर्स्य विश्वरयाः कुल्ला हनाः ॥ ৮॥ ততোহভিবাদ্য তান্ রুদ্ধান্ দ্বিজানাশ্রমবাসিনঃ। তৈক্ষাভিপুজিতঃ সর্কৈঃ প্রযযৌ নগরং প্রতি॥ ৯॥ रेभवा ह मह माविका श्रान्तीर्शन स्वर्कमा । নরযুক্তেন যানেন প্রথযৌ সেন্যা রুতা॥ ১০॥ ততোহভিষিষিচু: প্রীত্যা ত্যুমৎসেনং পুরোহিতাঃ। পুত্রঞ্চাস্য মহাস্মান্ যৌবরাজ্যেহভ্যবেচযন্॥ ১১॥ তস্যামিতি॥১॥২॥৩॥৪॥৫॥७॥ চিররাতায় বর্ত্কালং॥৭॥৮॥

11 20 11 22 11

ততঃ কালেন মহতা সাবিত্র্যাঃ কীর্ত্তিবর্দ্ধনন্।
তবৈ পুজ্রশত জজে শ্রাণাননিবর্ত্তিনান্॥ ২২॥
ভাতৃণা সোদরাণাঞ্চ তথৈবাস্যাভবজ্ঞতন্।
মদ্রাধিপস্যাশ্বপতেশ্বালব্যা স্থাহাবলম্॥ ১০॥
এবমান্থা পিতা মাতা শ্বক্তঃ শ্বন্ধর এব ট।
ভর্তঃ কুলঞ্চ সাবিত্র্যা সর্বাং ক্রজ্ঞাং সমুদ্ধতন্॥ ১৪॥
তথৈবৈষাপি কল্যাণী দ্রৌপদা শীলসম্পাদা।
তার্থিয়তি বং স্বান্ সাবিত্রীব কুলাঙ্গনা॥ ১৫॥
বেশস্যায়ন উবাচ।
এবং স পাপ্তবন্তেন অনুনীতো মহান্থনা।

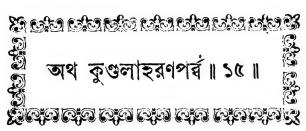
এবং স পাপ্তবন্তেন অনুনীতো মহাত্মনা।
বিশোকো বিজ্বো রাজন্ কাম্যকে ন্যবসভদা ॥ ১৬ ॥
যক্ষেদ্ শৃণুযান্তক্ত্যা সাবিত্রাখ্যানুমুত্তমন্।
স সুখা সর্কাসিদ্ধার্থো ন তুঃখং প্রাপ্নায়রঃ ॥ ১৭॥

ইত্যারণ্যকে পর্বনি পতিত্রতামাহাত্ম পর্বনি সাবিক্র্যুপাখ্যানে নবনবত্যধিকদ্বিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৯৯ ॥

সমাপ্তঞ্চে দংপতিব্ৰতামাহাত্ম পৰ্ব।

11 25 11 20 11 28 11 20.11 20 11 20 11

ইত্যারণ্যকে পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে নবনবভ্যধিক দ্বশততমোহধ্যায়ঃ॥ ২৯৯॥



জনমেজয় উবাচ।

যন্তন্তনা মহদু ক্লালে মেশো বাক্যমত্রবীৎ। ইন্দ্রস্য বচনাদেব পাণ্ডুপুত্রং যুধিষ্ঠিরম্॥ ১॥ যচ্চাপি তে ভযং তীত্রং ন চ কীর্ত্তয়সে ক্লান্তিং। তচ্চাপ্যপহরিষ্যামি ধনপ্রয় ইতো গতে॥ ২॥ কিন্নু তজ্জপতাং শ্রেষ্ঠ কর্নং প্রতি মহন্ত্যম্। আসীন্ন চ স ধর্মাত্মা কথ্যমোস কম্মান্তিং॥ ৩॥ বিশম্পায়ন উব্যাচ।

অথ
ক্ষেত্র বিজশার্দ্র কথিয়ানি কথানিমান্।
পৃচ্নতো ভরতশ্রেষ্ঠ । শুক্রমন্থ গিরং মম ॥ ৪ ॥
দাদশে সমতিকান্তে বর্ষে প্রাপ্তে করাদশে।
পাণ্ড্নাং হিতকচ্চকঃ কর্ণং ভিক্ষিতুমুদ্যতঃ ॥ ৫ ॥
অভিপ্রাযমথো জ্ঞাত্বা মহেক্রম্থ বিভাবস্থঃ ।
কুপ্রলার্থে মহারাজ ! স্থ্যঃ কর্নমুপাগতঃ ॥ ৬ ॥
মহার্হে শরনে বীর শুস্পর্দ্ধান্তরন্সমূতে।
শ্যান্মতিবিশ্বস্তং ব্রহ্মণ্য শত্যবাদিন্য ॥ ৭ ॥

যভ্দিতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ বিভাবস্থঃ বিশিষ্টাভাঃ দীপ্তিঃ সৈবব-স্থানং যদ্য তাদৃশঃ স্থাঃ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥

শ অথেতাত্ত অয় মিতি প\ঠঃ থ পুস্তকে \

স্বপ্লান্তে নিশি রাজেক ! দর্শ্যামাস রশ্মিবান। ক্রপথা পর্যাবিষ্টঃ পুত্রস্থেহাচ্চ ভারত। ॥ ৮॥ ব্ৰাহ্মণো বেদবিভূত্বা হুৰ্য্যো যোগান্ধি ৰূপবান্। হিতার্থমত্রবীৎ কর্ণ্- সান্ত্রপূর্ক্ষমিদং বচঃ॥৯॥ কর্ণ। মছচনং তাত ! শৃণু সত্যবতায়র ! । ক্রবতোহদ্য মহাবাহো। নৌহ্নদাৎ পরমং হিতমু॥ ১০॥ উপাযাস্যতি শক্তস্তাং পাণ্ডবানাং হিতেপ্যয়। ব্ৰাক্ষণজ্ঞনা কৰ্। কুগুলাপজিহীৰ্ষ্যা॥ ১১॥ বিদিত্ত তেন শীলতে সর্বায়্য জগতস্তথা। যথা বং ভিক্ষিতঃ সদ্ভিদ্দদায়েত্ব ন যাচসে॥ ২২॥ বং হি তাত! দদাস্থেব ব্ৰাহ্মণেভ্যঃ প্ৰবাচিতম্। বিত্তং যচ্চান্যদপ্যান্থৰ্ন প্ৰত্যাখ্যাসি কম্মচিৎ ॥ ১০॥ ज्ञान्त रेहरू विधः क्लांजा स्राः रेव शाक्यामनः। আগন্তা কুণ্ডলার্থায় করচক্ষৈব ভিক্ষিতৃম্॥ ১৪ ॥ তস্মৈ প্রযাচমানায় ন দেয়ে কুগুলেত্বয়া। অনুনেযঃ পরং শক্তা। শ্রেষ এতদ্ধি তে পরম্॥ ১৫॥ কুণ্ডলার্থে ক্রবং স্তাত। কারণৈর্মছভিস্তুযা। অনোর্বাহ্যবিধিব্বিক্তিং ग নিবার্য্যঃ পুনঃ পুনঃ ॥ ১৬ ॥ রক্তৈঃ স্ত্রীভিন্তথা গোভিধ নৈর্বান্থবিধরপি। নিদর্শনৈশ্চ বহুভিঃ কুগুলেপ্দ্র: পুরন্দরঃ ॥ ১৭ ॥ यि मार्खाप्त कर्ग ! द्व महर्ष कु खत्न अप्ट । আযুষঃ প্রক্ষযং গত্বা মৃত্যোকশমুপৈষ্যসি॥ ১৮॥ কবচেন সমাযুক্তঃ কুগুলাভ্যাঞ্চ মানদ!। অবধ্যন্ত্রং রণেহরীণামিতি বিদ্ধি বচে। মম ॥ ১৯॥

স্পাত্তে স্প্রম্থো ॥ ৮ ॥ ৯॥॥১०॥১১॥১২॥১০॥১৪॥১৫॥১৬॥১৭॥১৮॥;১৯॥

অমৃত্ত চুপ্থিত **হেত চুভ্যং রত্নসম্ভবস্।** তথ্যাক্রক্যং ত্বয়া কর্ণ! জীবিত্তঞ্চেৎ প্রিয়ং তব ॥ ২০॥ কর্ন উবাচ।

কো মামেব ভবান প্রাহ দর্শযন সৌহৃদ পরম।
কার্য় ভগবন্ বুহি কো ভবান দ্বিজবেশগ্রক্॥২১॥
বালাণ উবাচ।

আহং তাত। সহস্রাংশুঃ সৌহৃদাত্ত্বাং নিদর্শযে। কুরুস্বৈতদ্বটো মে ত্মতদ্ভ্যেঃ পরং হি তে॥ ২২॥ কর্ম উবাচ।

শ্রেষ এব মমাতান্ত শক্তা মে গোপতিঃ প্রভুঃ।
প্রবক্তান্য হিতাবেষী শৃণু চেদং বচো মম॥ ২৩॥
প্রসাদযে ত্বাণ বরদং প্রণয়াক্ত ব্রবীমাহম।
ন নিবার্য্যো ব্রতাদস্মাদহং যদ্যস্মি তে প্রিয়ঃ॥ ২৪॥
ব্রতং বৈ মম লোকোহয়ং বেন্তি ক্রৎস্ক বিভাবসো।
যথাহং দ্বিজমুখ্যেভ্যো দদ্যাং প্রাণানপি ধ্রুবম়॥ ২৫॥
যদ্যাগচ্ছতি মাং শক্রো ব্রাহ্মণচ্ছঅনার্তঃ।
হিতার্থং পাণ্ডুপুল্রাণাং খেচরোন্তম ভিক্ষিতুম্॥ ২৬॥
দাস্থামি বিধুধশ্রেষ্ঠ। কুগুলে বর্ষ চেক্রিমন্থ।
ন মে কীর্ত্তিঃ প্রণক্ষেত ত্রিষু লোকেষু বিশ্রুতা॥ ২৭॥
মদ্বিধ্যায়শস্তং হি ন যুক্তং প্রাণরক্ষণম্।
যুক্তং হি যশসা যুক্ত মরণং লোকসম্মতম্॥ ২৮॥
সোহহমিন্তায় দাস্থামি কুগুলে সহ বর্মণা।
যদি মাং বলর্ত্রমেং ভিক্ষার্থমুপ্যাস্থাতি॥ ২৯॥

। २० ॥ २२ ॥ २२ ॥ २० ॥ २८ ॥ २८ ॥ २७ ॥ २० ॥ २৮ ॥ २० ॥

হিতার্থং পাওপুজালাক কুণ্ডলে মে প্রয়াচিত্র। ত্রাে কীর্ত্তিকরং লােকে তম্ম কীর্ত্তিবিয়াতি । ৩০॥ র্নোমি কীর্ত্তিং লোকে হি জীবিতেনাপি ভান্তমন। কীৰ্ত্তিমানশ্ব তে স্বৰ্গং হীনাকীৰ্ত্তিস্তু নশ্চতি॥ ৩১॥ নীর্ভিছি পুরুষ শলাকে সঞ্জীবয়তি মাতৃবং। অকীর্ত্তিজীবিতং হস্তি জীবতোছপি শর্বারিণঃ॥ ৩২ ॥ অয়ং পুরাণঃ শ্লোকে। হি স্বয়ং গীতো বিভাবসো। ধাতা লোকেশ্ব। যথা কীর্ত্তিরাযুর্নরম্ভাই।। ৩৩ ঃ প্রক্রমন্ত পরে লোকে কীর্ত্তিরের পরায়ণ্য। ইছ লেটকে বিশুদ্ধা চ কীৰ্ভিং বাৰ্যবিধিবৰ্দ্ধনী॥ ৩৪॥ Mाश्चर महोत्राक पद्धा कीर्डिश आश्मामि माभागीए। দত্তা চ বিধিবদ্যান আক্ষণেভ্যো যথাবিধি । ৩৫॥ छात्र। भारतीतः मान्धाः स्म कृषा कर्षा **स्म स्म स्म स** বিজিতা চ পরানাজৌ যশঃ প্রাপ্যামি কেবলম্। ৩৬। ভীতানামভ্যং দল্ধা সংগ্রামে জীবিতার্থিনান্। ব্ৰদান বালান দ্বিজাতীংশ্চ মোক্ষমিদ্ধা মহাভ্যাৎ॥ ৩৭॥ প্রাপ্যামি পরমং লোকে যশংস্বর্গমন্ত্রত্তময়। জীবিতেনাপি মে রক্ষা কীর্ত্তিগুদিদি মে ব্রত্যু ॥ ৩৮ ॥ মে হ্ৰং দত্ত্ব। মহাবতে ভিক্ষামেতামনুত্তমায়। ব্রাক্ষা ছে আনে দেব! লোকে গন্তা পরাং প্রতিষ্।। ৩৯॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি কুগুলাহ্রণপর্বাণি কর্ণসূর্য্যসৎবাদে ত্রিশততমোহব্যায়ঃ॥ ৩০০ ।

॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২৭ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ ইত্যারণাকেঁ পর্কাণি নৈসক্তীয়ে ভারত ভারদীপে জিশ্র ভয়োহধান্তঃ ॥ ৩০০ ॥

স্থা উবাচ। মাংহিত কর্ণ। কার্ষীন্ত, মাত্মনঃ স্কুদাপ তথা। পুত্রাণামথ ভার্য্যাণামথো মাতুরথো পিতৃঃ॥ ১॥ শরীরস্থাবিরোধেন * প্রাণিনাং প্রাণভূদর!। ইয়তে যশসঃ প্রাপ্তিঃ কীর্ত্তিশ তিদিবে স্থিরা॥২॥ যন্ত ং প্রাণবিরোধেন কীর্ত্তিমিচ্ছান শাশ্বতীয়। সা তে প্রাণান্ সমাদায গমিষ্যতি ন সংশয়ঃ॥ ৩॥ জীবতা^ কুরুতে কার্য্যং পিতা মাতা স্তুত স্তথা। যে চান্যে বান্ধবাঃ কেচিলোকেহিম্মন্ পুরুষর্যভ !॥ ৪॥ রাজানশ্চ নরব্যান্ত। পৌরুষেণ নিবোধ তৎ॥ কীর্ত্তিশ্চ জীবতঃ দাধী পুরুষতা মহাত্যুতে ! ॥ ৫॥ মৃতস্ত কীর্ত্ত্যা কিং কার্য্য% ভশ্মীভূতস্ত দেহিনঃ। মৃতঃ কীৰ্ত্তিং ন জানীতে জীবন্ কীৰ্ত্তিং সমশ্বতে॥ ৬॥ মৃতভা কীর্ত্তির্মত বৈখা মালা গতার্বঃ। অহন্ত ত্বাণ ব্ৰবীম্যেতদ্ভক্তোহসীতি হিতেপযা।। ৭।। ভক্তিমন্তো হি মে রক্ষ্যা ইত্যেতেনাপি হেতুনা। ভক্তোৎয়ৎ পরষা ভক্ত্যা মামিত্যেব মহাভুজ।॥৮॥ মমাপি ভক্তিরুৎপন্না স ত্ব^ কুরু বঢ়ো মম। অস্তি চাত্র পরং কিঞ্চিদধ্যাত্মং দৈবনির্দ্ধিতম্। অতশ্চ স্থাং ব্রবীম্যেতৎ ক্রিয়তামবিশঙ্ক্ষ্যা॥ ৯॥ দেবগুছাং স্বয়া জ্ঞাতুং ন শক্যং পুরুষর্ঘত। । তশারাখ্যামি তে গুহুং কালে বেৎস্ততি তত্তবানু॥ ১০॥

মাহিত মিতি জহি**ও মিতি চ্ছেদঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ জীবতাং প্রতাদীনাং** কার্য্যং প্রয়োজনং পরিষ্কাদিজং স্থং পিত্রাদিঃ কুরুতে লভতে হয়ি হতে হং পিত্রাদীনাং কি স্থং স্যাদিতিভাবঃ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৩ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১ ০॥

^{*} প্রাণিনা মিত্যত্র প্রাণিভিরিতি পাঠঃ ক ঘ পুত্তকরোঃ।

পুনরুক্তপ্প বক্ষ্যামি সুং রাধেষ নিবোধ তৎ। মাস্মৈ তে কুগুলে দদ্যা ভিক্ষিতে বজ্রপাণিনা ॥ ১১॥ শোভদে কুণ্ডলাভাগিও রুচিরাভ্যা^ মহাছাতে!। বিশাখ্যোর্মধ্যগতঃ শশীব বিমলে দিবি॥ ১২॥ কীৰ্ত্তিশ্চ জীবতঃ সাধী পুৰুষক্ষেতি বিদ্ধি তং! প্রত্যাখ্যেষ্ট্র তাত। কুণ্ডলার্থে স্থরেশ্বরঃ॥১৩॥ भक्ता व्हिविधक्विरिकाः कुछल्ला ! व्यानघ । বিহ্ন্তু॰ দেবরাজন্ম হেতুযুক্তিঃ পুনঃ পুনঃ॥ ১৪॥ হেতৃমত্নপপনার্থৈম।ধুর্য্যক্কভভূষণেঃ! পুরন্দরম্ভ কর্ণ হুং বুদ্ধিমেতামপারুদ। ১৫॥ ত্বং হি নিতা নরব্যাঘ্র স্পর্দ্ধদে সব্যাগিন।। সব্যসাচী ত্বযা চেহ যুধি শূরঃ সন্মেব্যতি॥ ১৬॥ ন তু স্বামৰ্জুনঃ শক্তঃ কুগুলাভ্যাং সমন্বিত্য। বিজেতৃ প্রথি যদ্যক্ত স্বর্থমিক্রঃ সর্থা ভবেৎ॥ ১৭॥ তত্মান দেযে শক্রায় স্বয়ৈতে কুগুলে শুভে। मः वाद्यारम यपि निटर्ङ्कः कर्न का भगरमञ्ज्कुनम् ॥ ১৮ ॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণি কুগুলাহরণ পর্বাণি কর্ণস্থ্য্যসংবাদে একাধিকত্রিশততমোহধ্যায়:॥ ৩০১॥

॥ ১১ ॥ বিশাধরোঃ বিশাধানক্ষত্রস্য দ্বেভাস্কুরে তারে তয়ে মধ্যেরতঃ
পূর্বভন্তঃ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ বিহন্তং শক্যেতি সম্বন্ধং হেভুজীবনাদি প্রদর্শনং
তদ্যুক্তিঃ হেডুযুক্তিন্তদ্বন্তি চ উপপন্নার্থানি হেলাভাস রহিতানি তৈঃ
সর্বতি এবালানং নোপায়েৎ নস্পারাস্কুলিং দদ্যাৎ শরীরমাদ্যৎ খলু ধর্ম
সাধন মিত্যা দিভির্বাক্যেঃ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১ । ॥ ১৮ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে একাথিক ক্রিশতভ্যোহধ্যায়ঃ॥ ৩০১॥

कर्व छेवाह ।

ভগবন্তমহং ভক্তো যথা মাং বেখা গোপতে!। ত্রা প্রমতিগা-শো নাস্তাদেয়ং কথঞ্চন॥ ১॥ न (म नाता न (म श्रुका न नाजा स्करना न न। তথেষ্টা বৈ সদা ভক্ত্যা যথা ত্বং গোপতে। মম ॥ ২॥ ইন্টানাঞ্চ মহাত্মানো ভক্তানাঞ্চন সংশয়ঃ। কুর্ব্বন্তি ভক্তিমিষ্টাঞ্চ জানীষে স্বঞ্চ! ভাস্কর॥ ৩ ॥ ইফৌ ভক্তশ্চ মে কর্ণো ন চান্যদৈবত্র দিবি। জানীত ইতি বৈ ক্ল'বা ভগবানাহ মদ্ধিত্য ॥ ৪ ॥ ভূষশ্চ শিরসা যাতে প্রসাদ্য চ পুনঃ পুনঃ। ইতি ব্ৰবীমি তিগ্নাংশো ত্বন্ত মে ক্ষন্তুমইসি॥ ৫॥ বিভেমি ন তথা মৃত্যোর্থা বিভ্যেৎনৃতাদহন। বিশেষেণ দ্বিজাতীনাৎ সর্বেবাং সর্বেদা সভাগ ॥ ৬॥ প্রদানে জীবিত্স্যাপি ন মেহত্রাস্তি বিচারণা। যচ্চ সামাথ দেব। ত্বং পাওবৎ কান্তন্ত্রন্থ প্রতি॥৭॥ ব্যেত সন্তাপজ্ তুঃখা তব ভাকর মানসম্। অর্জ্রন্ প্রতি মাধ্রেব বিজেষ্যামি রণেইর্জুনম্ ॥ ৮॥ তবাপি বিদিতং দেব! মমাপাস্ত্রবলং মহৎ। জামদগ্রাতুপাত্তং যত্তথা দ্রোণামহাত্মনঃ ॥ ৯ ॥ ইদং স্বমনুজানীহি স্থেরশ্রেষ্ঠ। ব্রতং মম। ভিক্ষতে বজ্রিণে দদ্যামপি জীবিতমাত্মনঃ॥ ১০॥

স্থ্য উবাচ। যদি ভাত! দদাসোতে বজ্জিণে কুণ্ডলে শুভে॥ জ্মপ্যেনমথো জ্বা বিজ্যাৰ্থং মহাবল!॥ ১১॥

ভাগবভাষিতি ॥১॥২॥৩॥৪॥৫॥৬॥५॥৮॥৯॥১৯॥১

নিমমেন প্রদান্থ তে কুণ্ডলে বৈশ্বলতো!।
অবধ্যা স্থান ভূতানাথ কুণ্ডলাভ্যাথ নদ্যিতঃ॥ ২২॥
অর্জুনেন বিনাশ হিণ্ডব দ্নবস্থানত।
প্রার্থানো রণে বথসা কুণ্ডলে তে জিহারিতি। ১৩॥
স অ্মপ্যেনমারাধ্য স্থান্তাভিগ পুনং পুনং।
অত্যর্থেথা দেবেশমনোহার্থ পুরন্দরল্। ১৪॥
অনোহাথ দেহি মে শক্তিমানত্রবিনিবভিনীন্।
দাসামি তে সহস্রাক্ষণ কুণ্ডলে বর্মা চোভ্তমন্॥ ১৫॥
ইত্যেব নিমমেন অং দদ্যাঃ শক্রায় কুণ্ডলে।
তথা অং কর্ব। সংগ্রামে হনিবালি রণে রিপুন্॥ ১৬॥
নাহত্বা হি মহাবাহো! শক্তুনেতি করং পুনং।
সা শক্তিদ্বেরাজন্ত শত্রশাহ্য সভ্তমাহ।

এবস্কু সহস্রাণ শুঃ সহসান্তর্থীয় ।
ততঃ স্থ্যায় জপ্যান্তে কর্ণঃ স্থপ্ত ন্যবেদয়ং ॥ ১৮ ॥
যথাদূকং যথাতত্ত্বং মথোক্তয়ভ্যোর্নিশে ।
তৎ সর্ক্যান্তপূর্বের শশংসালৈ র্যন্তথা ॥ ১৯ ॥
তক্ত ত্বা ভগবান্দেবো ভাত্তঃ অর্তান্তস্থদনঃ ।
উবাট ত০ তথেত্যের কর্ণ স্থাঃ স্মানিব ॥ ২০ ॥
ততন্তত্ত্বমিতি জ্ঞাত্মা রাধেয়ঃ গর্বীরহা ।
শক্তিমেবাভিকাক্ষন্ বৈ বাসবং প্রত্যাপালয়ং ॥ ২১॥
ইত্যারন্যকে পর্কাণ কুওলাহ্রন্পর্কাণ স্থ্যকর্নশংবাদেদ্যা
থিকত্রিশতত্যোহ্য্যায়ঃ ॥ ৩০২ ॥

॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৮ ॥ অটুন্ম স্থার রুষঃ কর্ণঃ ॥ ১৯ ॥ স্বর্ভাল্ স্থানঃ রাহুদমনঃ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ইত্যারণাকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দাধিক ক্রিশতভ্যোধ্যায়ঃ ॥ ৩০২ ॥ জনমেজয় উবাচ।

কিন্তদ্গুহ্থং ন চাখ্যাতং কর্ণায়েহোফরশ্মিনা। কীদৃশে কুগুলে তে চ কবচপ্রৈব কীদৃশ্য । ১ ॥ কুতশ্চ কবচন্তুম্ম কুগুলে চৈব সন্তম। এতদিচ্ছাম্যহং শ্রে:ভুৎ তথ্যে জ্রহি তপোধন! ॥ ২ ॥

বৈশশারন উবাচ।

অথ রাজনু ব্রবীন্যেতত্তম্য গুহুং বিভাবসোঃ। যাদুশে কুণ্ডলে তে চ কবচপ্রৈত যাদৃশম্॥ ৩॥ কুন্তিভোজং পুরা রাজন্ ব্রাহ্মণঃ পযুর্গপস্থিতঃ। তিগ্যতেজা মহাপ্রাং শুঃ শাব্রুদণ্ডজটাধরঃ। ৪। , দর্শনীযোহনবদ্যাঙ্গস্তেজসা প্রজ্ঞান্নিব। মধুপিঙ্গো মধুরবাক্ তপঃস্বাধ্যাযভূষণঃ ॥ ৫॥ শ রাজান^ কুন্তিভোজমত্রবীৎ স্থম হাতপাঃ। ভিক্ষামিচ্ছামি বৈ ভোক্তুং তব গেছে বিমৎসর ॥ ৬॥ ন মে ব্যলীক কর্ত্তব্যং ত্ব্যা বা তব চানু গৈঃ। এবস্বৎস্থামি তে গেহে যদি তে রোচতেইন্য। ৭॥ যথাকামঞ্ গচ্ছেযমাগচ্ছেযং তথৈব চ। শ্ব্যাশনে চ মে রাজনাপরাধ্যেত কল্চন ॥ ৮॥ তবমবীৎ কুন্তিভোজঃ প্রীতিযুক্তমিদং বচঃ। এবমস্তু পরঞ্চেতি পুনিশ্চৈনমথাত্রবীৎ ॥ ৯॥ মম কন্যা মহাপ্রাজ্ঞ পূথা নাম যশস্থিনী। শীলর্জান্বিতা সাধী নিযতা চৈব ভাবিনী ॥ ১০॥

কিংতদ্গুহ্য মিতি॥ ১॥২॥৩॥৪॥৫॥ ७॥৭॥৮॥৯॥১०॥ অনবমন্য

উপস্থাম্ভতি সা ত্বাং বৈ পূজ্যানব্যন্য চ। তত্তাশ্চ শীলরুত্তেন তুটিং সমুপযাত্তিসি ॥ ১১ ॥ এবমুক্তা তৃত্ৎবিপ্রমতিপূজাযথাবিধি। উবাচ কন্যামভ্যেত্য পৃথা^ পৃথুললোচনাম্॥ ১২॥ অযং বংসে। সহাভাগো ব্রান্সণো বস্তুমিচ্ছতি। মম গেছে মৰা চাম্ভ ভথেত্যেবং প্ৰতিশ্ৰুতমু ॥ ১৩ ॥ ত্বি বংসে। পরাশ্বস্থ ত্রাদ্ধব্যাভিরাধনসু। তলে বাক্যম মিখা। ত্বপ কর্ত্তমর্থনি কহিচিথ। ১৪। অয়ং তপ্রা ভগবান্ স্বাধ্যাবনিয়তো * দিজঃ। यम्यवया गर्राटक उउटालय गग९ गता ९॥ २०॥ ব্রান্সণো হি পর্ত তেজো ব্রান্সণো হি পরন্তপঃ। ব্রাহ্মণানাৎ নমস্কারেঃ স্থর্য্যা দিবি বিরাজতে ॥ ১৬॥ অমান্যনু হি মানাখানু বাভাপিশ মহাস্থরঃ ! নিহতে। ব্ৰহ্মদণ্ডেন তালজজ্মস্তবৈধৰ চ। ১৭॥ গোহ্য^ বংসে † মহাভাগ আহিতস্ত্যি সাম্প্রতম্। বং সদা নিযতা কুর্য্যা ত্রাহ্মণস্থাভিরাধনম্॥ ১৮॥ জানামি প্রণিধানন্তে বাল্যাৎ প্রভৃতি নন্দিনি!। ব্ৰাহ্মণেষিহ সৰ্বেব্ৰু গুৰুবন্ধুৰু চৈব হ। ১৯। তথা প্রেষ্টের সর্বেষ্ মিত্রসম্বন্ধিমাতৃষু। ম্যি চৈব যথাবত্ত্বং পর্বেমাদৃত্য বর্ত্তমে ॥ ২০॥

অবসান মক্রা। ১১ ॥ ১২ ॥ বস্তুং বাসং কর্তুং॥১৩॥ পরাখন্য পরং আখাসং ক্রা অভিরাধনং কর্মিতি শেষঃ॥১৪॥১৫॥১৬॥১৭॥১৮॥ প্রণিধানং চিত্তৈকা গ্রাং॥১৯॥ আর্ত্যব্যাপ্য॥ ২০॥

শ নিয়ত ইতাত্ত্রির ত ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 শ মহাভাগ ইতাত্ত্র মহাভারইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

ন হাত্রেটা জনোহস্তীহ পুরে চাস্তঃপুরে চ জে। সম্যাগ্রন্ত্যানবদ্যাঙ্গি তব ভূতাজনেম্বপি॥ ২১॥ সন্দেটব্যান্ত মন্যে ত্বাপ দ্বিজাতিং কোপনং প্রতি। পুথে বালেতি কুত্বা বৈ স্কুতা চাসি মমেতি চ। ২২॥ র্কীনাঞ্চ কুলে জাতা শ্রহ্ম দ্যিতা সূতা। দ্ভা ঐতিমতা মছং পিতা বালা পুরা অবস্॥২০॥ বস্তুদেবস্থা ভূগিনী স্কুতানাং প্রবরা মন। অগ্রামণ্ডো প্রতিজ্ঞায় তেন।সি ছহিতা সম॥ ২৪॥ ভাদুশে হি কুলে জাঁচা কুনে চৈব বিবর্দ্ধিতা। সুখাৎ সুখমনু প্রাপ্তা ভ্রদান্ত দ্যিবাগতা ॥ ২৫॥ দৌদ্ধলেষা বিশেষেণ কথাঞ্ছিৎ প্ৰগ্ৰহ্থ গড়াঃ বালভাবাদিকুর্বনিত্ত প্রাযশঃ•প্রমদাঃ শুভে।॥ ২৬॥ পুথে!রাজকুলে জন্মৰূপঞ্চিপি ত্রাচ্ত্ত্য। তেন তেনাসি সম্পন্না সমূপেতা চ ভাবিনী॥ ২৭॥ সা ত্রং দর্পন প্রিত্যক্তা দশুং মানঞ্ ভাবিনি। আরাধ্য বরদং বিপ্রাং শ্রেষদা যোক্যাদে পূথে ॥২৮॥ **७वः व्याक्तामि क्ला**नि क्लान्यन्य **अ**वम्। কোপিতে চ দিজতোঠে ক্লেস দহেত মে কুলম্॥ ২৯॥ ইত্যারণ্যকে কুগুলাহ্রণ্পর্কাণ্ পৃথোপদেশে ত্র্যধিকত্রিওতমোহধ্যাবং ॥ ৩১৩॥

॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ অগ্রাং অত্রেদেরং মরা প্রথমমপত্তং তুভাং দের মিতি প্রতিজ্ঞাত মিতার্থঃ ২৪ ॥ ২৫ ॥ দেনজুলেরাঃ হুজু দৌলাতাঃ প্রগ্রহং নিজকং গতাঃ প্রাপ্তাঃ বিকুর্বস্তি দেন্টাং কুর্ব্বতি ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ইত্যারন্যকে পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপো জ্রাধিক জিশততমে গ্যারঃ ॥ ৩০৩ ॥

কুত্বাবাচ।

ত্রাঙ্গণং যন্ত্রিতা রাজন্নপত্তাতামি পুজয়া। যথাপ্রতিজ্ঞং রাজেন্দ্র । ন চ নিথ্যা ব্রবীমাহন ॥ ১॥ এব চৈব স্বভাবো মে পুজ্যেয়ং দিজানিতি। তব চৈব প্রিয়ং কার্যাং প্রেয়শ্চ পরমং ম্য ॥ ২ ॥ যদ্যেবৈষ্যতি সাযাহ্নে যদি প্রাতরখে। নিশি। যদ্যর্দ্ধরাত্রে ভগবান্ন মে কোপং করিয়াতি॥ ৩॥ লাভো মনৈষ রাজেন্দ্র। যদৈ পুজয়তী দিজান। আদেশে তব তিষ্ঠন্তী হিত^ কুর্য্যা^ নরে;ন্তম!॥৪॥ বিশ্রকো ভব রাজেন্দ্র । ন ব্যলীক^ দিজোন্তমঃ। বসনু প্রাপ্সাতি তে গেহে সত্যমেতদ্ব বীমি তে ॥ ৫॥ যং প্রিয়ঞ্চ দিজস্থান্ত হিতকৈ ব তবান্য!। যতিয্যামি তথা রাজন ব্যেত্ত তে মানসো জুরঃ॥ ৬॥ ব্রান্দণা হি মহাভাগাঃ পুজিতাঃ পুথিবীপতে।। তারণায সমর্থাঃ স্থ্যার্কাপরীতে বধায় চ। ৭।। সাহমেতদ্বিজানতী তোৰ্যায়ে দিজে।ভ্ৰমং। ন মৎক্তে ব্যথাপ রাজনু প্রাপ্সাসি দ্বিজসভ্যাৎ ॥ ৮॥ অপরাধে হি রাজেক ! রাজামশ্রেযদে দিজা?। ভবন্তি চ্যবনো যদ্ধৎ স্থকন্যায়াঃ ক্লতে পুরা ॥ ৯ ॥ নিযমেন পরেণাহমুপস্থান্তে দিজোত্তমম। যথা ত্বয়া নরেক্সেদং ভাষিত^ ব্রাহ্মণ্ প্রতি॥ ১০॥ अवश्वक्रिश्च व्रष्ट्रभाः श्रातिष्ठा मगर्था ह । ইতি চেতিচ কর্ত্ব্যং রাজা সর্ব্বমথাদিশৎ॥ ১১॥ ্রাকণ মিতি যক্তিতা নিয়মযুক্তা ॥১॥২॥৩॥৪॥ বিশ্রকো বিশ্বস্তঃ नालीकः অপিরং। ৫॥ ৬॥ १॥ ৮॥ ১॥ ১०॥ ১১॥

^{*} এরংক্রবন্তী মিত্যসা প্রাকৃ বৈশম্পারন উবাচ ইতি পাঠং ক পুস্তকে।

রাজোবাচ

এবমেতত্ত্বয়া ভদ্রে! কর্ত্তব্যমবিশঙ্কযা। মদ্দিতার্থং তথাত্মার্থং কুলার্থক্মাপ্যনিন্দিতে ॥ ১২ ॥ শ এবমুক্তা তু তাং কন্যাং কুন্তিভোজো মহাযশাः। পৃথাং পরিদদৌ তক্ষৈ দ্বিজায দ্বিজবৎসলঃ ॥ ১৩॥ ইযং ব্ৰহ্মনু ! মম স্কৃতা বালা স্থ্যবিবৰ্দ্ধিতা। অপরাধ্যেত যৎ কিঞ্জিল্প কার্য্যং হ্লাদ ত্বযা ॥ ১৪ ॥ দ্বিজাতধাে মহাভাগা রুদ্ধবালতপস্থিয়। ভবন্তাক্রোধনাঃ প্রাযোহপরাদ্ধেদ্বপি নিত্যদা॥ ১৫॥ স্থমহত্যপরাধেহপি কান্তি: কার্য্যা দ্বিজাতিভি:। যথাশক্তি যথোৎসাহ~ পূজা গ্রাহ্মা দিজোত্তম ! ॥ ১৬ ॥ ্তথেতি ব্রাহ্মণেনোক্তে স রাজা প্রীতমানসঃ। इः महन्त्रां १९७ मक्कां मः शृह्यते य नारविषयः ॥ ১२ ॥ তত্রাগ্নিশরণে ক্লিপ্তমাসন তস্য ভানুমৎ। আহারাদি চ শব্দং তৎ তথৈব প্রত্যবেদয়ৎ ॥ ১৮॥ নিক্ষিপ্য রাজপুত্রী তু তক্রীং মানং তথৈব চ। আতত্ত্বে পরমৎ যত্ত্বং ব্রাহ্মণস্থাতিরাধনে ॥ ১৯॥ তত্রসা ব্রাহ্মণ পরা পৃথা শৌচপরা সতী। विधिव পরিচারাईং দেববৎ পর্য্যতোগ্যৎ॥ २०॥ ইত্যারণ্যকে পর্বাণ কুগুলাহরণপর্বাণ পৃথাদ্বিজপরিচর্য্যাযান চতুরধিক্তিশততমোহধ্যায:॥ ৩০৪॥

॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ অগ্নিশরণে অগ্নাগারে॥ ১৮ ॥ তন্দ্রীং আলস্যং ॥ ১৯ ॥ পরিচারাইং পুজাইং ॥ ২০ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণ নৈলকতীয়ে ভারত ভারদীপে চতুর্ধিক ত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩০৪॥

^{*} এবমুক্তে,তাস্য প্রাক্ বৈশন্পায়ন উবাচ ইতি পাঠঃ ক প্রতেক।

বৈশস্পায়ন উবাচ।

না তু কন্যা মহারাজ! ব্রাহ্মনং সংশিতব্রতম্।
ভোষধামাস শুদ্ধেন মনসা সংশিতব্রতা॥ ১॥
প্রাতরেধ্যাম্যথেত্যুক্তা কদাচিদ্ধিজসন্তমঃ।
ভত আ্যাতি রাজেন্দ্র! সাযং রাত্রাবধো পুনঃ॥ ২॥
তঞ্চ সর্বাস্থ্য বেলাস্থ্য ভক্ষ্যভোজ্যপ্রতিশ্রবৈঃ।
পূজ্যামাস সা কন্যা বর্দ্ধমানৈস্ত সর্বাদা॥ ৩॥
প্রাদিসমুদাচারঃ শ্য্যাসনক্ষত্তথা।

দিবদে দিবদে তন্ত বর্দ্ধতে ন তু হীয়তে ॥ ৪॥
নির্ভং সনাপবাদৈশ্চ তথৈবাপ্রিয়য়। গিরা।
ব্রাহ্মণন্ড পৃথা রাজন চকারাপ্রিয়ন্তদা ॥ ৫॥
ব্যস্তে কালে পুনশৈচতি ন চৈতি বছশো দিজ:।
স্থাকুর্লভমপি হানং দীয়তামিতি দোহব্রবীং॥ ৬॥
ক্তমেব চ তং সর্বান্ধ পৃথা তথ্যে ন্যবেদ্যং।
শিষ্যবং পুত্রবাচেব স্থাক্ত স্থান্ধ ন্যবেদ্যং।
থাপেজান্থ রাজেন্দ্র! দিজাতিপ্রবর্ত্ত দা।
প্রীতিমুৎপাদ্যামাস কন্যারত্তমনিন্দিতা॥ ৮॥
তন্তান্ত শীলর্ভেন তুতোন্ধ দিজসভ্যঃ।
অবধানে চ ভূযোহস্তা: পর্ব মত্ম্মথাকরোং॥ ৯॥

সাধিতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ প্রতিশ্রবিঃ আশ্রেরিঃ শর্মাসনালৈরঃ ॥ ৩ ॥ অরাদিনা সমুদাচারঃ সমুপসপাণ ॥ ৪ ॥ নির্ভর্শনং ধিক্কারঃ অপাবাদোরাদে দূর্বাং পাচান্তরেহপদেশোব্যাজঃ অপ্রির্মা গালন রূপরা॥ ৫ ॥ ৩ ॥ ৭ ॥ মথোপজোষং প্রির্মনভিক্রম্য॥ ৮ ॥ শীলং শমাদি রুত্তং পরিচর্যা অব-ধানং ঐকাত্রং এতৈস্কুতোষ যদা অস্যাঃ পৃথারাঃ শেরার্থং অবধানেন সমাধিকাদোর্থ্যক্রেবিং বর্নেন ত্স্যাঃ কল্যাণং চিন্তিত বানিতার্থঃ॥ ৯ ॥ তাৎ প্রভাতে চ সায়য় পিতা পঞ্চ ভারত!।

অপি তুষ্যতি তে পুজি ব্রাহ্মণঃ পরিচর্যায়া॥ ১০॥
তং মা পরমমিত্যেব প্রত্যুবাচ যশস্থিনী।
ততঃ প্রীতিমবাপাগ্র্যাৎ কুন্তিভোজো মহামনাঃ॥ ১১॥
ততঃ সম্বংসরে পূর্ণে যদাসৌ জপতাম্বরঃ।
নাপশুজ দ্বৃতং কিঞ্চিং পৃথাযাঃ সৌহদে রতঃ॥ ১২॥
ততঃ প্রীতমনা ভূত্মা স এনাৎ ব্রাহ্মণোহববীং।
প্রীতোহস্মি পরমং ভূজে! পরিচারেণ তে শুভে॥ ১০॥
বরান্ র্ণীম্ব কলাণি! ছুরাপানান্ত্রৈবিহ !
বৈস্থং সীমন্তিনীঃ সর্ব্বা যশসাভিভবিষ্যসি॥ ১৪॥
কুন্তানি মম সর্ব্বাণি যন্তা মেন্বেদ্বিত্তম!।

ক্তানি মম সর্বাণি যক্তা মেশ্বেদবিক্তম !।
ত্ত্বং প্রসন্নঃ পিতা চৈব ক্তত্ বিপ্র বরৈর্দ্মম ॥ ১৫ ॥ বান্ধণ উপাচ।

যদিনেচ্ছসিমন্তস্ত্ৰু বরং ভদ্রে! শুটিস্মিতে!।
ইমং মন্ত্রং গৃহাণ স্বমাহ্বানায দিবৌকসাম্॥ ১৬॥
যং যং দেবং স্বমেতেন মন্ত্রেণাবাহ্যিয়াসি।
তেন তেন বশে ভদ্রে! স্থাতব্যন্তে ভবিষ্যতি॥ ১৭॥
অকামো বা সকামো বা স সমেষ্যতি তে বশম্।
বিবুধো মন্ত্রসংশান্তো ভবেন্ড্ তা ইবানতঃ॥ স্কু॥

বৈশন্পায়ন উবাচ। ন শশাক দ্বিতীয়ং সা প্রত্যাথ্যাতুমনিন্দিতা। তং বৈ দ্বিজাতিপ্রবর্ণ তদা শাপিভযান্নপ ়॥ ১৯॥

॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১০ ॥ ১৮ ॥ দ্বিতীয়ং দ্বিতীয়বারং॥ ১৯ ॥ ততন্তামনবদ্যাঞ্জী থাহ্যামাস স দ্বিজঃ ।
মন্ত্রগামং তদা রাজন্থ্রশিরিসি শ্রুত্র ॥ ২০ ॥
ত প্রদায তু রাজেন্দ্র ! কুন্তিভাজমুবাচ হ ।
উবিতাহন্দি স্থাং রাজন কন্যয়া পরিভোগিতঃ ॥ ২১ ॥
তব গেহেষু শ বিহিতঃ সদা স্থপ্রতিপূজিতঃ ।
সাধ্যিয়ামহে তাবদিত্যুক্ত্রান্তর্বীয়ত ॥ ২২ ॥
স তু রাজা দ্বিজং দৃষ্ট্যা তবৈবান্তর্ভিঙং তদা।
বভূব বিস্মাবিকঃ প্রথাক্য সমপূজ্যং ॥ ২৩ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি কুণ্ডলাহরণপর্বাণি পৃথামন্ত্রপ্রাঞ্চো পঞ্চাধিকত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩০৫॥

বৈশস্পায়ন উবাচ 1

গতে তন্মিন্ বিজ্ঞোঠে কন্মিৎ কিং কারণান্তরে।
চিন্তথাসাস সা কন্যা সন্ত্রগ্রাসবলাবলন্ ॥ ১॥
অযং বৈ কীদৃশন্তেন সম দন্তো সহাত্মনা।
সন্ত্রগ্রাসো বল্প তম্ম জ্ঞাম্মে নাতিচিরাদিতি॥ ২॥
এবং সঞ্চিত্তযন্ত্রী সা দদর্শকুণ যদৃচ্ছ্যা।
ব্রীডিতা সাভবদ্বালা কন্যাভাবে রজম্বলা॥ ৩॥

॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ বিহিতঃ বিশেষেণ হিতন্ত পোৰী। ॥ ২৩॥

ইত্যারণ্যকে পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীণে পঞ্চাধিক ত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩০৫,॥

' গতে ইতি ৮ ১ ॥ ২ ॥ ঋতুং রজঃ ॥ ৩ ॥

[া] বিহিত ইত্যত্র বিহিত মিতি পাঠঃ খ ম পুস্তকরে। ।

उटा इन्ग्रंडलङ्ग मा महार्रभयत्नि हिंडा। প্রাচ্যা^ দিশি সমুদ্যন্তং দদর্শাদিত্যমপ্তল । । ।। তত্র বদ্ধমনোদৃষ্টিরভবৎ সা স্থমধ্যমা। # ন চাতপ্যত ৰূপেণ ভানো: সন্ত্যাগতত্ত্য হা ॥ ৫॥ তভা দৃষ্টিরভূদিবা। সাহপশ্যদিব্যদর্শনন্। আয়ুক্তকবচণ দেবণ কুগুলাভ্যাং বিভূষিতম্ ॥ ৬॥ তন্তাঃ কৌতুহলং ত্বাসীন্মন্ত্রং প্রতি নরাধিপ !। আহ্বানমকরোৎ সাথ তম্ম দেবস্থ ভাবিনী ॥ ৭॥ প্রাণানুপস্পুশ্র তদা ছাজুহাব দিবাকরম্। আজগাম ততো রাজংস্তরমাণো দিবাকরঃ॥ ৮॥ মধুপিঙ্গো মহাবাছঃ কম্বগ্রীবো হদন্দিব। অঙ্গদী বন্ধমুকুটো দিশঃ প্রজ্বালয়রিব ॥ ১ ॥ যোগাৎ কুত্বা দ্বিধাত্মানমাজগাম ততাপ চ। আবভাবে ততঃ কুন্তীং দামা পরমবল্কনা। ১০॥ আগতোহস্মি বশ্ব ভদ্রে। তব মন্ত্রবলাৎক্বতঃ। † কিং করোমিবশো রাজ্ঞি বৃহি কর্ত্তা তদন্মি তে॥ ১১॥

॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬॥ १॥ পোণান্ ইন্দ্রিয়াণি চকুঃ শ্রোঞাদীনি উপস্পৃশ্য জলেন সমাগাচমোতার্থঃ ॥ ৮॥ ১॥ ১০॥ বশং কাম । ॥ ১১॥ ১২॥

গুমাতাং ভগবংস্তত্র যত এবাগতো ছুমি।

কৌতৃহলাৎ সমাহুতঃ প্রসীদ ভগবল্লিতি ॥ ১২ ॥

^{*} নচাতপাত রপেণেতাত্ত্র ন ততর্প হিরপেণেতি পাঠঃ ক পুস্তকে !

† কিং করোমিবশ ইতাত্ত্র কিংকরোম্যবশ ইতি পাঠঃ ক য পুস্তকরোঃ

স্ব্য উনাচ।

গমিষ্যেহহ যথা # মাত্রং ত্রবীষি তনুমধ্যমে।। ন তু দেবং সমাহ্র ন্যায্যং প্রেষ্যিতুং রুথা॥ ১৩॥ তবাভিসন্ধিঃ স্থভগে ! স্থ্য্যাৎ পুজো ভবেদিতি । বীর্য্যেণাপ্রতিমো লোকে কবচী কুগুলীতি চ। ১৪।। সা স্বসাত্মপ্রদানং বৈ কুরুম্ব গজগামিনি।। উৎপৎস্ততি হি পুত্রন্তে যথাসঙ্কপ্পমঙ্গনে ৷ ১৫ ॥ অথ গচ্চা ম্যহ্ ভদ্রে ! ত্বা সঙ্গম্য স্থাসিতে। यि पुर वहन नामा कतियामि सम वियम् ॥ ১৬॥ শলিব্যে ত্রামহং ক্রুদ্ধো ত্রাহ্মণং পিতরঞ্চ তে। ত্ৎক্লতে তানু প্রধক্ষ্যামি সর্ব্বানপিন সৎশয়ঃ॥ ১৭॥ পিতরপ্রৈব তে মূঢং যো ন বেক্তি ভবানযম্। তত্ত চ ব্ৰাহ্মণ্ডাদ্য যোহসৌ মন্ত্ৰমদান্তৰ ॥ ১৮॥ শীলরুত্তমবিজ্ঞায ধাস্তামি বিনয়ং পরমু ! এতে হি বিবুধাঃ সর্বে পুরন্দরমুখা দিবি॥ ১৯॥ ত্ত্বযা প্রলক্ষং পশান্তি সামন্ত ইব ভাবিনি । 1 পশ্য চৈনান্ স্থুরগণান্ দিব্যুপ চক্ষুরিদ্প হি তে। পুর্বামেব ময়। দক্তং দুষ্টবত্যসি যেন মামু॥ ২০॥

যথাহং গামিষ্যে তথামায়াং এবীষি ন তু তদ্যোগ্যু মিত্যাহ নজিতি রুখ। প্রসাদ ম প্রাপ্য ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ একিনং ভ্রুসিসং ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ বিনয়ং দণ্ডং ধাসঃশিম ধার্মিষ্যামি ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥

^{*} মা ইতাত্র মামিতি পাঠঃ ক ঘ পুত্তকরোঃ।

বৈশম্পায়ন উপ্চ।

ততোহণশ্যলিবশান্ রাজপুলী,
সাধানেব স্বেষু বিষ্ণোষু থস্থান্।
তাবন্ত ভালুমন্তং মহান্তং,
যথাদিতাং রোচমানাংস্তবৈব ॥ ২০॥
তা তান্ দৃষ্ট্য ব্রীডমানেব বালা,
স্থাং দেবা বচন প্রাহ ভীতা।
গচ্ছ স্থং বৈ গোণতে! স্ব বিমানং,
কন্যাভাবাদ্ধুংথ এযোহপচারঃ॥ ২০॥
পিতা মাতা গুরবশৈচ্ব যেহন্যে,
দেহাস্থান্ত প্রভাব প্রদানে।
নাহং ধর্মাং লোপ্যিয়ামি লোকে,
স্রীণাং রন্তং পূজ্যতে দেহরক্ষা॥ ২৩॥
ময়া মন্তবল জাতুমাহ্বন্ত বং বিভাবদো!।
বাল্যাদ্বালেতি তৎ কৃত্বা ক্ষন্তমার্হিদ মে বিভো!॥ ২৪॥
স্থ্য উবাচ।

বালেতি ক্সানুনযং তবাহং,
দদানি নান্যানুনযং লভেত।
আত্মপ্রদানং ক্রু কৃত্তি কন্যে,
শান্তিস্তবৈবং হি ভবেচ্চ ভীরু ॥ ২৫॥
ন চাপি গন্তঃ যুক্ত^ হি ময়া মিথ্যাক্তেন বৈ।
আসমেত্য স্বয়া ভীরু মন্তাহ্নতেন ভাবিনি।॥ ২৬॥

॥ ২১ ॥ অপচারোপরাধকৃতঃ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥

গমিষ্যাম্যনবদ্যাঞ্চি লোকে সমবহাশ্বতাম্। সর্কোষাং বিবুধানাঞ্ বক্তব্যঃ স্থাং তথা শুভে!॥২৭॥ সা বং ময়া সমাগচ্ছ পুঁত্রৎ লক্ষাদি মাদৃশম্। বিশিকী সর্বলোকেষু ভবিষ্যদি ন সংশয়ঃ॥২৮॥

ইত্যারণ্যকে পর্কাণি কুগুলাহরণ পর্কাণ কুন্তীস্থর্য্যাহ্বানে যডধিকত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩১৬ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

সা তু কন্যা বছবিধন ক্রবন্তী মধুরং বচঃ।
অনুনেতুং সহস্রাংশুং ন শশাক মনন্দ্রনী॥ ১॥
ন শশাক যদা বালা প্রত্যাখ্যাতুন তমোনুদ্র।
ভীতা শাপান্ততো রাজন্ দধ্যৌ দীর্ঘমথান্তরম়॥ ২॥
অনাগসঃ পিতুঃ শাপো ব্রান্ধান্ত তথৈব চ।
মনিমিতঃ কথং ন স্থাৎ ক্রদ্ধাদ্যাদিভাবসোঃ॥ ৩॥

11 29 11 25- 11

ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভারদীপো বড়দিক ত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩০৬ ॥

সাতুকন্যতি ॥ ১ ॥ দধ্যে চিন্তিত বতী অন্তরং,কালং ॥ ২ ॥ ৩ ॥ বালেন অপ্পবয়সাপি সতা সাধুনা মোহাচিত্ত পারবশ্যাৎ পাপং কৃতং ছিংসিতং যৈস্তানি নিস্পাপীন্যাপি তেজাং সি স্থাদীনি তপাং সি দ্বাস আদীনি নাভ্যা সাদ্যিতব্যানি অত্যন্তং প্রত্যাসতি বিষয়াণি ন কর্তব্যানি ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ বালেনাপি সতা মোহান্ত্ৰং পাপক্তান্তি।
নাভ্যাসাদ্যিতবানি তেজাংসি চ তপাংসি চ॥ ৪॥
সাহ্মদ্য ভূশং ভীতা গৃহীতা চ করে ভূশন্।
কথস্বকার্যাং কুর্যাং বৈ প্রদানং হাল্মনঃ স্বযু॥ ৫॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

সা বৈ শাপপরিত্রস্তা বহু চিন্তুযতী হৃদা।
মোহেনাভিপরীতাঙ্গী স্ময়মানা পুনঃ পুনঃ ॥ ৬ ॥
তং দেবমব্রবীদ্ধীতা বস্কুনাং রাজসম্ভম!।
ব্রীডাবিহ্বলযা বাচা শাপত্রস্তা বিশাম্পতে!॥ ৭ ॥

কুন্তাবাচ 1

'পিতা মে খ্রিষতে দেব! মাতা চান্যে চ বান্ধবা:।
ন তেয়ু ধ্রিমাণেয়ু বিধিলোপোভবেদযম্॥ ৮॥
ত্বযা তু সঙ্গমো দেব যদি স্যাদিধিবন্ধিতঃ।
মন্নিমিন্তং কুলস্যাস্য লোকে কীর্ত্তিরশেক্তঃ॥ ৯॥
অথবা ধর্মমেতং ত্বং মন্যসে তপতান্বর!।
খাতে প্রদানাদ্মন্তান্তব কামং করোম্যহম্॥ ১০
আত্মপ্রদানং ছুর্দ্ধর্ষ তব কুত্বা সতী হৃহম।
ত্বিয় ধর্মো যশকৈত্ব কীর্ত্তিরাযুক্ত দেহিনাম্॥ ১১॥

ত স্থ্য উবাচ।

ন তে পিতা ন তে মাতা গুরবো বা শুচিন্মিতে!। প্রভবস্তি বরারোহে! ভদ্রং তে শৃণু মে বচঃ। ১২।

॥ ৬॥ বন্ধুনাং সধীনাং তাভাইত্যর্থঃ ॥ ৭॥ প্রিয়তে জীবতি ॥ ৮॥ নশেং নশােং ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ । প্রভবদ্ধি স্বাম্য মইন্তি ॥ ১২ ॥ কাম্য়তে সর্কানিতি সর্বান্কামযতে যত্মাৎকমের্থাতোক্ষ ভাবিনি!।
তত্মাৎকন্যেহস্ক শ্রোনি! অতন্ত্রা বরবর্ণনি!। ১০॥
নাধর্মকরিতঃ কলিডের্থা ভবতি ভাবিনি!।
অধর্মং কৃত এবাহং চরেম্ব লোককাম্যয়।। ১৪॥
অনার্তাঃ ক্রিয়ং সর্বা নরাক্ষ বরবর্ণনি!।
অভাব এম লোকানাং বিকারোন্য ইতি আ্তঃ॥ ১৫॥
সা ম্যা সহ সক্ষ্ম্য পুনঃ কন্যা ভবিষ্যদি।
পুল্রক্ষ তে মহাবাছর্ভবিষ্যতি মহাযশাং॥ ১৬॥

কুন্তু।বাচ।

যদি পুজো মম ভবেত্ত্বতঃ সর্বতমোমুদ। কুণ্ডলী কবচী শুরো মহাবাহুর্দ্মহাবলঃ ॥ ১৭ ॥ স্থ্যা উবার।

ভবিষ্যতি মহাবা**ছঃ কুগুলী দিব্যবর্শ্মভূৎ।** উভয়ঞ্চামৃতময়**ু তহ্ম ভদ্রে! ভবিষ্যতি॥ ১৮॥**

কুন্তাবাচ |

যদ্যেতদমৃতাদন্তি কুগুলে বর্মা চোত্তমম্।
মম পুক্তস্ত যং বৈ ত্বং মন্ত উৎপাদযিব্যসি॥ ১৯॥
অন্ত মে সঙ্গমো দেব। যথোক্ত^ ভগবংস্কৃষা।
ভবীৰ্য্যৰূপদক্ষোজা ধর্মযুক্তো ভবেৎ স চ॥ ২০॥

স্ব্য উবাচ।

অদিত্যা কুগুলে রাজ্জি দত্তে মে মন্তকাশিনি।। তেন্দ্র দাক্ষামি বৈ ভীক্ল। বর্দ্ম চৈবেদমুক্তমম্॥ ২১॥

কন্যেতি কন্যাশক নির্বাচনং ॥ ১৩ ॥ তত্তহেতুই লোক কাম্যায়া লোক প্রিয়ায় কামবন্তরা ॥ ১৪ ॥ অন্যো বিবাহ নিয়মাদি বিকারঃ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ॥ ১৭ ॥ অমৃতময়ং সহজং ধর্ম ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

কুন্তু। উবাচ।

পরমণ ভগবদ্বেবং সঙ্গমিষ্যে ছয়া সহ। যদি পুজো ভবেদেবণ যথা বদসি গোপতে। ॥ ২২॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

তথেত্যক্ত্বা তু তাং কুন্তীমাবিবেশ বিহঙ্গমঃ। স্বৰ্জানুশকুৰ্যোগাত্মা নাভ্যাং পস্পৰ্শ চৈব তাম্॥ ২০॥ ততঃ সা বিহ্বলেবাদীৎ কন্যা স্থ্যক্ত তেজসা। প্ৰপাত চাথ সা দেবী শয়নে মূচচেতনা॥ ২৪॥

স্ধ্য উবাচ।

সাধ্যিয়াসি স্বশ্রোণি ! পুত্রং বৈ জনযিয়াসি । সর্বশস্ত্রভূতাৎ শ্রেষ্ঠং কন্যা চৈব ভবিষাসি ॥ ২৫ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততঃ সা ত্রীডিতা বালা তদা স্থ্যমথাত্রবীং।

এবমস্তি,তি রাজেন্দ্র ! প্রস্থিতং ভূরিবর্চসম্ ॥ ২৬ ॥
ইতি স্মোক্তা কুন্তিরাজাত্মজা সা,

বিবস্থাং যাচমানা সলজ্জা।

তন্মিন্ পুণ্যে শ্যনীয়ে পপাত,

মোহাবিক্টা ভক্ষমোনা লতেব ॥ ২৭ ॥

॥ २२ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २८ ॥ व्यक्तिः मक्रमारम्भकांखः ॥ २७ ॥ २० ॥

তিগ্নাং শুস্তাৎ তেজসা মোহযিত্বা,
যোগেনাবিশ্যাত্মসংস্থাঞ্চকার।
ন চৈবৈনাং দূষ্যামাস ভানুং,
সংজ্ঞাং লেভে ভূয এবাথ বালা॥ ২৮॥
ইত্যারনাকে পর্বানি কুগুলাহরনপর্বানি পৃথাস্থ্যসমাগ্রমে
সপ্তাধিক ত্রিশততমোহ্যায়ঃ॥ ৩০৭॥

বৈশন্পায়ন উনাচ।
ততো গর্ত্তঃ সমভবৎ পৃথাষাঃ পৃথিবীপতে!।
শুক্লে দশোন্তরে পক্ষে তারাপতিরিবাস্থরে ॥ ১ ॥
সা বান্ধবভযাদাল। গর্ত্ত ত বিনিগৃহতী।
ধার্যামাস স্প্রোণী ন চৈনাং বুরুধে জনঃ ॥ ২ ॥
ন'হি তাং বেদ নার্যান্যা কাচিদ্ধান্তেযিকামূতে।
কন্যাপুরগতাং বালা নিপুণাং পরিরক্ষণে ॥ ৩ ॥
ততঃ কালেন সা গর্ত্তং স্থাবে বরবর্ণিনী।
কন্যৈব তক্ত দেবক্ত প্রসাদাদ সরপ্রভন্ম ॥ ৪ ॥
তথৈবাবদ্ধকবচং কনকোজ্জ্বলকু গুল্ম।
হর্যক্ষে ব্যভক্ষাং যথাক্ত পিতরগুণা॥ ৫ ॥

আত্মগ্ৰহাৎ বচনবশাং এতাং ন দ্যৱামাস কন্যায় স্থাপনে নেডি শেষঃ ॥ ২৮ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্তাধিক ত্রিশততমোহধায়েঃ ॥ ৩০৭ ॥

ততইতি দশেতিরে একাদশে শুক্লেপক্ষে প্রতিপদি চন্দ্রইববাল উদ্ভূতঃ মাঘ শুক্ল প্রতিপদি কর্ণ নিথেক জন্মেত্যর্থঃ ॥১॥২॥৩॥৪॥ হর্ব্যক্ষঃ শিংহনেত্রং॥৫॥

জাতমাত্রঞ্চ ত৲ গর্ৱং ধাত্রা সংমন্ত্র্য ভাবিনী। মঞ্জ বাবাং সমাধাৰ স্বান্তীৰ্ণাৰাং সমন্ততঃ ॥ ৬ ৫ মধূচ্ছিউন্থিত। যা স্থায়াং রুদতী তদা। শ্লক্ষাথা স্থানিখামামন্ত্রামবাস্ত্র ॥ ৭॥ জানতী চাপ্যকর্ত্তব্যং কন্যায়। গর্ত্তধারণম । পুত্রস্বেহেন রাজেন্দ্র! করুণং পর্য্যদেব্যৎ ॥ ৮॥ ममुष्टकन्त्री मक्षु वामधनमा 🏶 स्तर्भा जटन । উবাচ ৰুদতী কুন্তী,যানি বাক্যানি তচ্চূণু ॥ ৯ ॥ স্বস্তি তে চান্তরীক্ষ্যেভ্যঃ পার্থিবেভ্যশ্চ পুত্রক!। দিব্যেভ্য**ৈ**চব ভূতেভান্তথা তোযচরাশ্চ যে॥ ১০ 🛭 শিবান্তে সম্ভ পন্থানো মা চ তে পরিপন্থিনঃ। আগতাশ্চ তথা পুত্র ! ভবর্ডোহচেতসঃ ॥ ১১ ॥ পাতু ত্বাং বরুণো রাজা সলিলে সলিলেশ্বর:। অন্তরীক্ষেহন্তরীক্ষন্তঃ পবনঃ সর্বাশন্তথা॥ ১২॥ পিতা **বাং পাতু সর্মত্র তপনস্তপতাং বরঃ**। যেন দভোহসি মে পুত্র ! দিব্যেন বিধিনা কিল। ১৩। আদিত্যা বসবো রুদ্রাঃ সাধ্যা বিশ্বে চ দেবতাঃ। মরুতশ্চ সহেক্রেণ দিশশ্চ সদিগীশ্বরাঃ ॥ ১৪॥ व्रक्षस्त वार स्वताः मर्स्य मरम्यू विषर्भयु ह । বেৎস্থামি বাং বিদেশেইপি কবচেনাভিস্থচিতম্॥ ১৫॥

॥ ৬॥ মধুচ্ছিষ্টং সিক্থকং ময়নমিতি ভাষায়াং তেনস্থিতারাং সর্বতো-লিপ্তারাং মঞ্যায়াং জল্পবেশো নভবেদিত্যর্থঃ ॥ ৭ ॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥

^{*} অশ্বন্যা ইতাত্ত অশ্বন্যা মিতি পাঠঃ খ পুশুকে I

ধনান্তে পুত্র ! জনকো দেবো ভারুর্বিভাবস্থঃ। যন্ত্রাণ দ্রক্ষ্যতি দিব্যেন চক্ষ্যা বাহিনীগতন্॥ ১৬॥ ধন্যা সা প্রমদা যা ত্বাং পুত্রত্বে কম্পিযিব্যতি। যক্তান্তঃ ভূষিতঃ পুক্র। স্তনং পাক্তসি দেবজ।॥১৭॥ কো মু স্বপ্নস্তবা দুকৌ যা ত্বামাদিত্যবর্চসম্। দিব্যবর্গ্মমাযুক্তং দিব্যকুগুলভূষিতম্॥ ১৮॥ পদাযতবিশালাকং পদাতামদলোক্ষ্লন্। স্থললাটং স্থকেশান্তং পুত্রত্বে কম্পেষিধ্যতি ॥ ১৯॥ धना। फ्रकान्ति পूळ ! द्वार ভূমी সম্প্রসাণকম্। ষ্মব্যক্তকলবাক্যানি বদন্তং রেণুগুঠিতম ॥ ২০॥ ধন্যা দ্রক্ষান্তি পুত্র ! স্থাৎ পুনযৌবনগোচরম্। হিনবদ্দসভূতং দিংহং কেশরিণ্ণ যথা॥ ২১॥ এবন বছবিধন রাজন ! বিলপ্য করুণং পৃথা। অবাহজত মঞ্যামশ্বন্যান্তদা জলে॥ ২২॥ রুদতী পুত্রশোকার্তা নিশীথে কমলেক্ষণা। ধাত্যা সহ পৃথা রাজন পুজদর্শনলালসা॥ ২৩॥ বিসর্জ্ঞযিত্ব। মঞ্জুষাং সংবোধনভ্যাৎ পিতৃ:। বিবেশ রাজভবনং পুনঃ শোকাতুরা ততঃ ॥ ২৪॥ प्रक्ष्या ज्ञानमाः मा यर्थो हर्षानु जी- निषेत्र । চৰ্মাণু ত্যাশ্চ যমুনাং ততো গঙ্গাৎ জগাম হ।। ২৫॥ গঙ্গায়াঃ স্থতবিষয়ং চম্পামনুষ্ধৌ পুরীম। স মঞ্বাগতো গর্তুর**কৈরুত্য**মানকঃ ॥ ২৬ ॥

অমৃতাত্মপিত দিব্যং ত**নু বর্দ্ম সকুগুলম।** বার্যামাস তং গর্জং দৈবঞ্চ বিধিনিশ্মিতম্॥ ২৭ ॥

ইতাবিণ্যকে পর্বাণি কুগুলাহরণ পর্বাণি কর্ণপরিত্যাগে অফাধিকত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩০৮ ॥

বৈশক্ষারন উবাচ।

এতিশিনের কালে তু প্তরাষ্ট্রস্থ বৈ স্থা।
স্তেত্যহির্থ ইত্যেব সদারো জাহুবীং যথৌ॥ ১॥
তক্ষ ভার্যাভবদাজন রূপেণাসদৃশী ভূবি।
রাধা নাম মহাভাগা ন সা পুত্রমবিন্দত॥ ২॥
অপত্যার্থে পরং যত্নমকরোচ্চ বিশেষতঃ।
সা দদর্শাথ মঞ্জু যামুস্থমানাং যদৃচ্ছরা॥ ৩॥
দত্তরক্ষাপ্রতিসরামন্বালভনশোভিতান্।
উন্মতিরকৈর্জাহুব্যাঃ সমানীতামুপস্থরন্॥ ৪॥
সা তা কৌতুহলাৎ প্রাপ্তা গ্রাহ্যামাস ভাবিনী।
ততো নিবেদ্যামাস স্কুতক্ষাধিরথক্ত বৈ॥ ৫॥

দৈবং দেবজং বিধিনা ঈশ্বরেণ নিমিতং॥ ২৭॥

ইত্যারণ্যকে পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে অফী।ধিক ত্রিশততমোহধ্যায়ঃ॥ ৩০৮॥

এতিশিরিতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩॥ দত্তোরকার্থং প্রতিসরোঁ দুর্কা কংকণাদি রূপোযস্যাং তাং অধালম্ভনং কুরুম হস্তদানং উপত্লরং সমীপং ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ স তামুদ্ধত্য মঞ্ধার্ৎসার্যা জলমন্তিকাৎ। যত্রৈরুদ্বাট্যামাস সোহপশান্তত্র বালকন্॥ ৬॥ তরুণ। দিত্যসঙ্কাশং হেমবর্দ্মধর তথা। মৃষ্টকুগুলযুক্তেন বদনেন বিরাজতা। ৭॥ স স্থতো ভার্যায়া সার্দ্ধ বিশ্ময়োৎফুল্ললোচনঃ। অস্কমারোপ্যতং বাল্ ভার্যাং বচনমন্ত্রবীৎ। ৮॥ ইদমত্যদ্ভুত্ত ভীৰু ! যতে। জাতোহস্মি ভাবিনি ! । দুউবান্ দেবগর্ত্তোহ্যং মন্যেহস্মাকমুপাগভঃ॥ ৯ ॥ অনপত্যস্থ পুজোহৰ দেবৈদত্তো ধ্রুবং মম। ইত্যুক্তা তং দদৌ পুত্রং রাধায়ৈ স মহীপতে। ॥ ১०॥ প্রতিজ্ঞাহ তং রাধা বিধিবদ্দিব্যরূপিণ্ম। পুত্রং কমলগর্ভভিং দেবগর্ত্তং শ্রিষারতম্ ॥ ১১॥ भूरभाष रेहन विधियषद्रश्य म ह वीर्यावान्। ততঃ প্রভৃতি চাপ্যন্যে প্রাভবনৌরসাঃ স্থতাঃ ॥ ১২ ॥ বস্থবর্শ্মধরং দৃষ্ট্রা তং বালং হেমকুগুলম্। নামাস্য বস্থবেণেতি ততশকুদিজাতয়ঃ ॥ ১৩ ॥ এবং স হুতপুত্রত্ব জগামামিতবিক্রমঃ। বস্থাবেণ ইতি খ্যাতো রুষ ইত্যেব চ প্রভু: । ১৪॥ ञ्जमा वर्दाश्रक्ष (बार्षः अ शूजः मवीर्यावीन्। চারেণ বিদিতশ্চাসীৎ পৃথায়া দিব্যবর্দ্মভূৎ। ১৫।

উৎসার্য্য পরতোনীরা ॥ ৬ ॥ १ ॥ ৮ ॥ মতোজাতোম্মি উৎপত্তি দিনাদার-ভ্যাবদ্য বেদমন্ত্রুতং দৃষ্টং ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ ১২ । বস্থবর্ম স্বর্ণকবচং ॥ ১৩ ॥ ॥ ১৪ ॥ অন্দের্ জুনপদ বিশেষের্॥ ১৫ ॥

^{*} জোঠইতাত্র ভোষ্ঠ ইড়ি পাঠঃ ব পুত্তক্স্য।

স্থতন্তুধিরথঃ পুত্রং বিরু**দ্ধং সময়েন ত**ম্। দৃষ্ট্য প্রস্থাপরামাস পুরং বারণসাহ্বযম্ ॥ ১৬॥ তত্তোপিসদনঞ্চক্তে দ্রোণস্যেষ্ট্রকর্মাণি। স্থাং তুর্য্যোধনেনৈব্মগ্রমৎ স চ বীর্যাবান্॥ ১৭॥ দোণাৎ রূপাচ্চ রামাচ্চ সোহস্ত্রগ্রামং চতুর্বিধ্য । লকু। লোকেহভবৎ খ্যাত: পরমেম্বাসতাৎ গত:॥ ১৮॥ সন্ধায় ধার্ত্তরাষ্ট্রেণ পার্থানাং বিপ্রিয়ে রতঃ! যোদ্দাশংসতে নিত্যং কাল্কনেন মহাত্মনা॥ ১৯॥ সদা হি তগ্য স্পৰ্দ্ধাসীদৰ্জ্জনেন বিশাম্পতে!। আৰ্জুনস্য চ কর্ণেন যতো দুফৌ বভূব সং॥ ২०॥ এতদ্গুত্ত্ মহারাজ! স্থ্যাসাসীন্ন সংশ্**য**ে। য সূর্য্যসম্ভবঃ কর্ণঃ কুন্ত্যাং স্থৃতকুলেতদা ॥ ২১॥ তস্ক কুণ্ডলিনং দৃষ্ট্যা বর্মাণা চ সমন্বিতম্। অবধ্যং সমরে মত্বা পর্য্যতপ্যদ্যুধিষ্ঠিরঃ॥ ২২॥ यना ठ करनी तार्छन्त ! जासूमस् निर्वाकतम्। স্টোতি মধ্যন্দিনে প্রাপ্তে প্রাঞ্জলিঃ সাললোপিত: ॥ ২৩॥

॥ ১৬ ॥ গুরুপদদনং উপদদনং ॥ ১৭ ॥ পরমেশা সতাং' মহাধন্থরতাং ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ যতঃকালে দৃষ্টঃ ॥ ২৩ ॥ ২১ ॥ ২১ ॥ ২৩ ॥ তবৈনমুপতিষ্ঠন্তি ব্রাহ্মণা ধনছেতুনা।
নাদেয় তত্ত্বত তৎকালে কিঞ্চিদন্তি দিছাতিযু ॥ ২৪ ॥
তমিক্রো ব্রাহ্মণো ভূত্বা ভিক্ষাং দেহীত্যুপন্থিতঃ।
স্থাগতঞ্চেতি রাধেযন্তমথ প্রত্যভাষত ॥ ২৫ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি কুণ্ডলাহরণপর্বাণি রাধাকর্ণপ্রাপ্তো নবাধিক ত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩১৯ ॥

বৈশশ্যায়ন উবাচ।
দেবরাজমনুপ্রাপ্তং ব্রাহ্মণচ্ছদ্মনার্তম।
দৃষ্ট্যা স্বাগতমিত্যাহ ন বুবোধাস্থ মানসমূ॥ ১॥
হিরণ্যকণ্ঠীঃ প্রমদা গ্রামান্ বা বুহুগোকুলান্।
কিং দদানীতি তং বিপ্রযুবাচাধির্থিস্ততঃ॥ ২॥

বানা উনাচ।
হির্ণ্যকণ্ঠ্য: প্রমদা যক্ষানাৎ প্রীতিবর্দ্ধনম্।
নাহং দন্তমিহেচ্ছামি ভদর্থিভা: প্রদীয়তাম্॥ ৩॥
যদেতৎ সহজং বর্ম কুপ্তলে চ তবানঘ।।
এতত্বৎক্ত্যু মে দেহি যদি সভাব্রতো ভবান্॥ ৪॥
এতদিচ্ছাম্যহং ক্ষিপ্রং ত্বা দন্তং পরন্তপ।।
এয় মে সর্বলাভানাৎ লাভঃ পরমকো মতঃ॥ ৫॥

11 28 11 20 11

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভারদীপে নণাদিক ত্রিশততমোধ্যায়ঃ॥ ৩০১॥

দেবরাজ মিতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ **অবনিং গৃহার্থং নি**বাপং ভাগতে

কৰ্ উবাচ।

অবনিং প্রমদা গাশ্চ নিবাপং বছবার্ষিক্য। তত্তে বিপ্রা প্রদাস্থামি ন তু বর্ম্ম সকুগুল্য। ৬॥ বৈশস্পায়ন উবাচ।

বেশপায়ন ডবাচ।

এবং বছবিধৈবিবিক্যেঘাচ্যমানঃ স তু দ্বিজঃ।

কর্পেন ভরতশ্রেষ্ঠ! নান্যং বরম্যাচত ॥ ৭ ॥

সাস্তিতশ্চ যথাশক্তি পূজিতশ্চ যথাবিধি।
ন চান্যং স দ্বিজপ্রেষ্ঠঃ কার্ম্যামাস বৈ বরম্ ॥ ৮ ॥

যদা নান্যং প্রর্গুতে বরং বৈ দ্বিজসন্তমঃ।

তদৈনমন্ত্রীন্তুযো রাধেয়ঃ প্রহসন্ত্রিব ॥ ৯ ॥

সহজং বর্ম্ম মে বিপ্র! কুগুলে চাম্তোন্তবে।

তেনাবধ্যোহন্মি লোকেষু জ্বো নৈতক্জহাম্যহম্ ॥ ১০ ॥

বিশালং পৃথিবীরাজ্য ক্ষেমং নিহতকল্টকম্।

প্রতিগৃহ্লীদ্ব মন্তন্ত্র শাধু ব্রাহ্মণপুক্ষব! ॥ ১১ ॥

কুগুলাভ্যাং বিমুক্তোহহং বর্ম্মণা সহজেন চ।

গ্রমনীযো ভবিষ্যামি শকুণা দ্বিজসন্তম! ॥ ১২ ॥

বৈশল্পায়ন উবাচ।

যদান্য ন বর বিত্রে ভগবান পাকশাসনঃ।
ততঃ প্রহস্ত কর্নস্ত পুনরিত্যত্তবীদ্বচঃ॥ ১৩॥
বিদিতো দেবদেবেশ পোগেবাসি মম প্রভো!।
ন ভু ন্যায্য ম্যা দাভুং তব শক্ত! র্থা ব্রম্॥ ১৪॥
ত্বং হি দেবেশ্বরঃ সাক্ষাভ্র্যা দেযো বরো মম।
ভান্যোধিণ্ডব ভূভানামীশ্বরো হাসি ভূভগুক্॥ ১৫॥

বীজমশ্মিনিতি ক্ষেত্রং বহুবার্ষিকং যাবজ্জীবিক রত্তিরূপং ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ॥ ১০॥ ১১॥ গমনীরোবধাঃ ॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥

যদি দাস্তামি তে দেব ! কুগুলে কবচং তথা ।
বধ্যতামুপ্যাস্তামি ত্বঞ্চ শক্রাবহাস্ততাম্ ॥ ১৬ ॥
তন্মাদ্বিমযং কৃত্বা কুগুলে বর্ম চোত্তমন্ ।
হরস্থ শক্র ৷ কামণ মে ন দ্যামহমন্যথা ॥ ১৭ ॥

শক্ত উনাচ।

বিদিতোই হং রবেঃ পুর্বিমায়ানেব তবান্তিকম্। তেন তে সর্ব্বমাখ্যাতমেবমেতন্ন সংশয়ঃ॥ ১৮॥ কামমস্ত তথা তাত। তব কর্ণ। যথেচ্ছসি। বর্জ্জন্তিয়া তুমে বজ্ঞং প্রবৃণীম্ব যথেচ্ছসি॥ ১৯॥

ৈবশস্পায়ন উবাচ।

ততঃ কর্ণঃ প্র**ক্**ষস্ত উপসঙ্গম্য বাসবম্। অমোঘাং শক্তিমভ্যেত্য বব্রে সংপুর্ণমানসঃ॥২০॥

कर्व छेवाह।

বর্দ্মণা কুগুলান্ডাঞ্চ শক্তিং মে দেহি বাসব!।

অমোঘাং শক্তসজ্ঞানাং ঘাতিনীং পৃতনামুখে॥২১॥

* ততঃ সঞ্চিন্তা মনসা মুহুর্ত্তমপি বাসবঃ।

শক্ত্যেপ্ পৃথিবীপাল! কর্ণণ বাক্যমথাত্তবীই॥২২॥

† কুগুলে মে প্রযক্ত্যে বর্দ্ম চৈব শরীরজম্।

গৃহাণ শক্তিণ কর্ণ! অমনেন সমযেন চ ॥২৩॥

। ১৬ ॥ ১৭॥ আয়িক্লেব আগিচ্ছলেব ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৬ ॥

^{*} ততঃ সঞ্চিন্তা মনসা ইতাস্য প্রাক্ বৈশম্পায়ন উবাচ ইতি পাঠঃ ক প্রতকে।

[🕂] কুওলেমে প্রথক্ত স্বেত্যদ্য প্রাকৃ ইন্দ্র উবাচেতি পাঠ: क পুস্তকে।

আমোঘা হস্তি শতশঃ শকুন্ মম করচুতা।
পুনশ্চ পাণিমভ্যেতি মম দৈত্যান্ বিনিম্নতঃ ॥ ২৪ ॥
সেবং তব করপ্রাপ্তা হত্তকং রিপুমুদ্ভিতম্।
গক্ষতং প্রতপত্তপ্ত মামেবৈষ্যতি স্থতজ ! ॥ ২৫ ॥
কর্ণ উলাচ।

একমেবাহমিচ্ছামি রিপুং হস্ত^ মহাহবে। গুৰ্ব্ধন্তং প্রতপন্তঞ্চ যতো মম ভষং ভবেৎ॥ ২৬॥

इस छेवा ।

কর্ণ উবাচ।

এবমপ্যস্ত ভগব ন্নেকবীরবধে মম।
অমোঘাং দেহিমে শক্তি যথা হন্যাং প্রতাপিনম্॥ ২৯॥
উৎকৃত্য ভূ প্রদাম্থামি কুণ্ডলে কবচঞ্চ তে।
নিক্নজেষু ভু গাত্তেষু ন মে বীভৎসতা ভবেৎ॥ ৩১॥

ইন্দ্র উবাচ 1

ন তে বীভৎসতা কৰ্ণ ভবিষ্যতি কথঞ্চন।
ব্রণদৈব ন গাত্তেষু যস্ত্ব পনান্তমিচ্ছদি। ৩১॥
যাদৃশস্তে পিতুর্বর্ণস্তেজক বদতাম্বর।।
তাদৃশেনৈব বর্ণেন দ্বং কর্ণ। ভবিতা পুনঃ। ৩২॥

11 28 11 20 11 29 11 29 11 25 11 20 11 20 11 20 11

^{*} একমিতাত এব মিতি পাঠঃ য পুস্তকে।

বিদ্যমানেষু শস্ত্রেষু যদ্যমোঘামসংশযে। প্রমন্তো মোক্ষ্যদে বাপি স্বয্যেবৈষা পতিষ্যতি॥ ৩৩॥
কর্ণ উবাচ।

সংশ্যং পরমণ প্রাপ্য বিমোক্তো বাসবীমিমান্।
যথা মামাপ শক্র ! স্থং সত্যমেত্রুবীমি তে॥ ৩৪॥
বৈশ্লপায়ন উবার।

ততঃ শক্তিং প্রজ্বলিতা প্রতিগৃহ বিশাম্পতে! শস্ত্র^ গৃহীত্বা নিশিত প্রদর্বগাত্রাণ্যকৃত্ত । ৩৫॥ ততো দেবা সানবা দানবাদ্য,

নিক্নন্ততং কর্ণনাত্মানমেব্য । দৃট্টা সর্ক্ষে সিংহনাদান প্রনেত্র,

র্ন ছফাসীন্মুখজো বৈ বিকারঃ॥ ৩৬॥

ততো দিব্যা ছুন্তুভয়ঃ প্রণেছঃ, পপাতোকৈঃ পুষ্পবর্ষঞ্চ দিব্যস্।

দৃষ্টা কর্ণং শস্ত্রসঙ্কৃত্তগাত্রং,

यूक्ष्माणि व्ययमानः नृतीतम् ॥ ७१ ॥

তত শিছত্ত্বা কবচং দিবামঞ্চা,

खरेथवार्जः अन्ति वामवाय।

তথোৎকৃত্য প্রদদৌ কুগুলে তে,

কর্ণান্তস্মাৎ কর্মাণা তেন কর্ণঃ॥ ৩৮ ॥

ততঃ শক্রঃ প্রহসন্ বঞ্চবিত্বা,

कर्नः लाक यमना त्याक्रिया।

কুতং কার্য্যং পাগুবানাং হি মেনে, ।
ততঃ পৃশ্চাদ্দিবমেবোৎপপাত॥ ৩৯॥

॥ ৩০ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ কণাতি হিনন্তি ক্সতিছিনতি বা অঙ্গানীতি কৰ্ণ ইত্যৰ্থঃ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ শ্রুত্বা কর্ণ- সুষিতং ধার্ত্তরাষ্ট্রা, मीनाः मर्द्य ভश्नम् इरामन्। ত * ক্ষাবস্থাং গমিত^ স্থতপুত্রং, শ্ৰুত্বা পাৰ্থা জহ্ন যুঃ কাননস্থাঃ † ॥ ৪০॥

जनरमजग्र छेत्राह ।

ক্ষা বীরাঃ পাগুবান্তে বভূরুঃ, কুতলৈতে শ্রুতবন্তঃ প্রিয়ং তৎ। কিং বাকাষু ধাদশান্দে ব্যতীতে, তমে সর্বাং ভগবান্ ব্যাকরোতু ॥ ৪১ ॥ বৈশস্পায়ন উবাচ।

लक्रा क्रकार रमक्रवर जाविद्या, विटेवः मार्क कामाकामासमारख। মার্কপ্তেয়াৎ শ্রুতবন্তঃ পুরাণং, দেবর্ষীণাঞ্চরিত বিস্তরেণ ॥ ৪২ ॥ 🖠

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি কুণ্ডলাহ্রণ পর্বাণ কবচ কুণ্ডলদানে দশাধিকশততমোহধ্যায়ঃ॥ ৩১০॥

সমাপ্তঞ্চ কুওলাহরণপর্ব।

1 80 1 83 1 82 1 ইত্যারণাকে পর্বাণু নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে দশাধিক ত্রিশত তমোহধ্যায়ঃ॥ ৩১০॥

ভাষতাত্ত্র তামিতি পাঠ: ক
ব পুস্তকরো: ! † কাননস্থাইতাত্ত কাননের ইতি পাঠঃ ষ প্রতেক। 🗓 প্রত্যাজন্ম: সরধাঃ সাত্র্যাত্তাঃ সর্বৈঃ সাদ্ধং স্তর্পোরোরবৈক ততঃ পুगार देवजनन नृतीया निखीर्याखर ननवामर ममवामिरछाकः (मांकः क-च श्खकत्ताः।

जनरमञ्जर छेत्रात्र।

এবং জ্বাধাং ভার্যায়ে । * প্রাপ্য ক্লেশমনুর্ব্তমম্। প্রতিপদ্য ততঃ ক্লফাং কিমকুর্বতি পাওবাং ॥ ১॥ বৈশম্পায়ন উবাহ।

এবং হ্রাযাং ক্লাযাং প্রাণ্য ক্লেশমনুন্তমন্।
বিহায কামাকং রাজা সহ জাতৃভিরচ্নতঃ : ২ ।
পুনদৈ তিবনং রম্যমাজগাম যুধিক্সির:।
সাতুমূলকলং রম্যং বিচিত্রবন্তপাদপার ॥ ৩।
অনুভূক্তকলাহারাঃ সর্ব্ব এব মিতাশনাঃ।
ন্যব্যন্ পাপ্তবাস্তর ক্ষম্যা সহ ভাষ্যা।। ৪ ।
ব্যন্ বৈতবনে রাজা কুন্তীপুলো যুবিন্তিরঃ।
ভীমসেনে।হর্জুনশৈচর মালীপুলৌ চ পাপ্তবৌ ।
ভামসেনে।হর্জুনশৈচর মালীপুলৌ চ পাপ্তবৌ ।
ভামসেনে।হর্জুনশৈচর মালীপুলৌ চ পাপ্তবৌ ।
ভামসেনাহর্জুনশৈচর মালীপুলৌ চ পাপ্তবৌ ।
ভামসেনাহর্জুনশৈচর মালীপুলৌ চ পাপ্তবৌ ।
ভামসেনাহর্জিনিক্রিণ্ড ধর্মালানো যত্রভাগ ।
ভাস্যাত্রসভ্তে যং প্রাণ্ড কুরুসভ্তমাঃ।
বনে ক্লেশ্ণ স্থাবাদকং তং প্রক্র্যামি তে শৃণু । ৭ ।

এবমিতি॥১॥২॥৩॥ অহুভুক্তাঃ ব্রত্মঃ ফলাহারাঃ ফলানে বার্হ্ড-শীলাঃ॥৪॥৫,॥৬॥৭। অর্ণাউত্তাধ্রেহ্যি মধন কাঠে ভাভাং সাহতং

^{*} ভাষ্যায়। মততে কৃষ্যা। মতি পাঙঃ ক প্তক্ষা।

অরণীসহিত^ মন্থং ব্রাহ্মণস্থ তপস্থিন:! মূপক্ত ধর্ষমাণক্ত বিষাণে সমসক্ষত। ৮॥ তদাদায় গতো রাজ তরুরমাণো মহামুগঃ। আশ্রমান্তরিতঃ শীঘ্রণ প্রবমানো মহাজবঃ ॥ ৯ ॥ হ্রিযমাণুস্ক তং দৃষ্টা দ বিপ্রঃ কুরুসভ্রম !। ত্বরিতোহভ্যাপমন্তত্র অগ্নিহোত্রপরীপাযা। ১০।। অজাতশকুমাসীনং ভ্রাতৃভিঃ সহিত^ বনে। আগম্য ব্রাহ্মণস্তূর্ণং সন্তপ্তস্চেদমব্রবীৎ॥ ১১॥ অরণীসহিত^ মন্থ^ সমাসক্তং বনস্পতৌ। মৃগন্ত ধর্ষমাণন্ত বিষাণে সমসজ্জত ॥ ১২ ॥ তমাদায় গতো রাজংস্ত্রমাণো মহামূগং। 'আশ্রমান্তরিতঃ শীভ্রণ প্রবয়ানো মহাজবঃ॥ ১৩॥ তক্ত গত্বা পদং রাজন্মাদান্য চ মহামূগম্। অগ্নিহোত্রং ন লুপ্যেত তদান্যত পাণ্ডবঃ । ॥ ১৪॥ ব্রাহ্মণস্থ বচঃ শ্রুত্বা সন্তপ্তোহ্থ যুধিন্তির:। ধনুরাদায কৌম্বেয়ঃ প্রাদ্রবন্তাভূভিঃ নহ। ১৫। সল্লা ধন্বিনঃ সর্বের প্রাদ্রবল্পরপুঞ্জবাঃ। ত্রাহ্মণার্থে যতন্ততে শীঘ্রমন্থগমন্গম্॥ ১৬। कर्निनानीकनाताहासू एक एका सहात थाः। नाविधान् পाखवास्क शश्चास्त्रा मृतमस्तिकार ॥ ১५॥

मस् निर्मायनम्खर ॥ ৮॥ जासमाखितिछः जासम मृत्रायः ॥ ৯॥ ३०॥ ॥ ১১॥ ১२॥ ५०॥ श्रमर मार्ट्या हिन्नू श्राया खाला छिनेन श्री छन। नत्रछ ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ ১२॥ তেষা প্রথমনানাং নাদৃশ্যত মহামৃগঃ।
অপশ্যন্তো মৃগং শ শাস্তা ছুংখং প্রাপ্তা মনস্থিনঃ॥ >৮॥
শীতলচ্ছাযমাগম্য ন্যথোবং গহনে বনে।
কুৎপিপাসাপরীতাঙ্গাং পাগুবাং সমুপাবিশন্॥ >৯॥
তেষা সমুপবিফানাং নকুলো ছুংখিতস্তদা।
অব্রবীদ্রাতরং † শ্রেষ্ঠ ! মমর্ষাৎ কুরুনন্দনম্॥ ২০॥
নাস্মিন্ কুলে জাতু মমজ্জ ধর্ম্যো,
ন চালন্ডাদর্থলোপো বন্ত্ব।
অনুব্রাং স্বভ্তেষু ভূষং,
সংপ্রাপ্তাং স্মংশ্যং কিং কুরাজন্॥ ২১॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি আরশেষপর্বাণি মৃগান্বেষণে একাদশাধিকত্রিশততমোইধ্যায়ঃ ॥ ৩১১ ॥

॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ধর্মো ন মমজ্জ ধর্ম লোপার্থ লোপ-চনাভূৎ আলস্যাদি-ভূগপচর্যাতে ত্রি অভ্নত্তরাঃ প্রতিবাক্য রহিন্তাঃ সর্বভূতের কার্যাথে উপস্থিতে ওমিত্যেব বদামে। নতু বাক্যান্তর মিতার্থঃ সংশয়ং ব্রাক্ষাত্ত কর্মলোপ নিমিতং দোষং ॥ ২১ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে একাদশাধিক ত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩০১১ ॥

শান্তেত্যত্ত আন্তেতি পাঠঃ ক য পুশুকে।
 † লেঙেন্তাত জ্যেতেতি পাঠঃ ক পুশুকে।

যুধিন্তির উবচে।

নাপদামতি মর্যাদান নিমিত্তং ন কার্ণস্। ধর্মান্ত বিভঙ্গতার্থমুভযোঃ পুণ্যপাপযোঃ॥ ১॥

ভীম উবাচ।

প্রাতিকাম্যনয়ৎ কুষ্ণাং সভাষাং প্রেষ্যবন্তদা। ন ম্যা নিহতস্ত্র ভেন প্রাপ্তাঃ স্মা সংশ্যম্ । ২ ।

অৰ্জুন উনাচ।

বাচন্তীক্লান্থিভেদিন্যঃ স্থতপুজেণ ভাষিকাঃ। অভিতীত্রা ময়া ক্ষান্তান্তেন প্রাপ্তাঃ স্ম সংশ্যন্ ৩॥

महत्मव छेगाह।

শিকুনিস্কৃ)ং যদাজৈষীদক্ষ্টুতেন ভারত।। সুম্যান হতস্তত তেন প্রাপ্তাঃ স্মুসংশ্যম্॥৪॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা নকুলং বাক্যমত্রবীৎ।
আ,কৃষ্ণ বৃক্ষণ মাজেয়। নিরীক্ষা দিশো দশ ৫॥
পানীযুমন্তিকে পশা বৃক্ষাংশ্চাপুদেকাশ্রিতান্।
এতে হি ভাতরং আন্তান্তব তাত। পিপাদিতাং ৬॥
নকুলস্কু তথে হ্যক্তবা শান্তমাকৃষ্ণ পাদপম্।
আব্বীদ্ধাতিবং জোষ্ঠানভিবীক্ষা সমস্ততঃ ॥॥॥

নাপ গমিতি নিমিত্তং ফলং ধর্ম: প্রারদ্ধ রূপস্থ অর্থং ফলং স্থ ছু:খ রূপং নিভঙ্গতি ॥ ১ । প্রেষ্যবং প্রেষ্যামিব ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৩ ॥ ৭ ॥

^{*} তুইত,এত মিতি পাচঃ ক য পুশুকরোঃ।

পশ্যামি বছলানুজন ! রক্ষানুদকসংশ্রামান !
সারসানাঞ্চ নিহ্রাদমত্রোদকমসংশ্রামা ॥ ৮ ॥
ততেহিরবীং সত্যপ্তিঃ কুত্তীপুল্রো যুগিন্তিরঃ ।
গচ্ছ সৌম্য ! ততঃ শীঘ্রং তুলৈঃ পানীয়মানয় ॥ ৯ ॥
নকুলস্ত তথেত্যক্ত্যা ভ্রাত্তপ্তেশ্ব শাসনাং ।
প্রাত্তবদ্যর পানীয়া শীঘ্রটিগর মুপদাত ॥ ১০ ॥
স দৃষ্ট্যা বিমলং তেয়ে সারটাঃ পারবারিত্য ।
পাতুকামস্ততো বাচমন্ত্রীক্ষাং স শুক্রাবে ॥ ১১ ॥

যক্ষ উব্ভিন্

ন মা তাত! সাহসং কার্মীর্মম পূর্বপরিগ্রহঃ।
প্রশ্ন মুক্ত্রা তু মাজেয় ততঃ পিব হরস্ব চ ॥ ১২।
স্থান্দ্রতা তু ভদ্বাক্যং নকুলঃ স্থাণপাদিতঃ।
স্থাপ্রক্ষীতলা তোষ পীত্বা চ নিপপাত হ ॥ ১৩ ॥
চিরাষমাণে নকুলে কুন্তীপুক্তো যুধিন্তিরঃ।
স্থাবীদ্রাভরং বীরং সহদেবমরিনদমং ॥ ১৪ ॥
ভাতা । হ চির্যাতো নং সহ্দেব তবাগ্রহঃ।
তথৈবান্য সোদ্র্যা পানী্যক্ষ অ্যান্য । ১৫ ॥
সহদেবস্থথে হ্রাক্ত্রা তাং দিশং প্রতাপদ্যত।
দদর্শ চ হত্র ভূমৌ ভ্রাতরং নকুলং তদা ॥ ১৬ ॥
ভ্রাত্শোকাভিসন্থ্যুক্ষ্যা চ প্রপীতিওক।
স্থিত্রার পানী্য্য ততো বাগভ্যভাষত ॥ ১৭ ॥

॥৮॥৯॥১০॥১১॥ সাহসং জলপানরপং পারিএহো নিয়ম: যোমৎ প্রশান্ বদেংসএবইতঃ পয়ঃ পিবেৎ হরেদিতি ॥১২॥১৩॥১৪॥১৫॥ ॥১৬॥১৭॥ •

^{*} থাতাত সাহস মিতাসা প্রাকৃ থক্ষ উবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তুকে নান্তি,।

মা তাত ! সাহসং কার্ষীর্দাম পূর্বেপরিগ্রহঃ। প্রশানুক্ত্ব বর্থাকামং পিবস্থ চ হরস্ব চ॥ ১৮॥ অনাদৃতা তু তথাকা সহদেবঃ পিপাসিতঃ। অপিবচ্ছীতলং তোষং পীত্বা চ নিপপাত হ॥ ১৯। অথাত্রবীৎ স বিজয়ণ কুন্তীপুক্তো যুধিষ্ঠিরঃ। ভাতরৌ তে চিরগতৌ বীভৎসো ! শকুকর্ষণ ! । ২ ।। তৌ চৈবান্য ভদ্ৰন্তে পানীয়ঞ্চ স্বমান্য। ত্বং হি নস্তাত ! সর্কেষাং ছুঃখিতানামুপাশ্রয়: ॥ ২১॥ এবমুক্তো গুড়াকেশঃ প্রগৃহ্থ সশরং ধনুঃ। আমুক্তথড়েগা মেধাবী তৎসরঃ প্রতাপদ্যত ॥ ২২ ॥ ्ठा शुक्रमार्फ् तो भानीयहत्रत शकी। তৌ দদর্শ হতৌ তত্র ভাতরো শ্বেতবাহন: ॥ ২৩॥ প্রস্থাবিব তৌ দৃষ্ট্র নরসিংহঃ স্থত্র:থিতঃ। ধনুরুদ্যম্য কৌস্তেযো ব্যলোক্যত তদ্বন । ২৪ । নাপশ্যন্তত্র কিঞ্চিৎ স ভূতমিশ্মন্থাবনে। সব্যসাচী ততঃ শ্রান্তঃ পানীয়ণ সোহভাধাবত । ২৫॥ অভিধাৰংস্ততো ৰাক্যমন্ত্রীক্ষাৎ স শুক্রবে। किमानीपान भानीय देन उक्क कार वला खुया ॥ २७ ॥ কৌন্তেয়। যদি প্রশ্নাশ্নতান্ মযোক্তান্ প্রতিপৎস্থাসে। ততঃ পাস্তাদি পানীয় হরিষ্যদি চ ভারত। ॥ ২৭॥ বারিতন্ত্রবীৎ পার্থো দৃশ্বমানো নিবার্য! यावदारेगिकिनिर्छिनः शूनरेनवर विषयां ॥ २৮॥

॥ ५৮॥ ५৯॥ २०॥ २५॥ २०॥ २८॥ २०॥ २७॥ १७॥ मृणामात्ना कृत्विक त्यवः॥ २५॥ এবমুক্ত্বা ততঃ পার্থঃ শরৈরস্তানুমস্তিতঃ।
প্রবর্ষ দিশঃ ক্রৎসাঃ শব্দবিদ্ধন্ধ দর্শবন্ধ । ২৯॥
কর্ণিনালীকনারাচানুৎস্কন্ ভরতর্ষভা।
সত্তমাঘানিষূন মুক্ত্বা ভৃষ্ণয়াভি প্রপীডিতঃ॥ ৩০॥
ভালেকৈরিষুস্ভ্রাতৈরস্তরীক্ষে বর্ষ হ।

যক্ষ উবাচ।

কিং বিধানেন তে পার্থ ! প্রশ্নান্ত জ্বা ততঃ পিব । ৩১॥

অনুজ্বা চ পিবন্ প্রশ্নান্ পাঁহৈব ন ভবিষ্যান ।"

† এবমুক্ত স্ততঃ পার্থঃ সব্যসাচী ধনপ্রয়ং॥ ৩২॥

অবজ্ঞাবৈব তাং বাচং পাঁহৈব নিপপাত হ।

অথাব্রবাদ্টীমদেন শক্তীপুল্রো যুধিষ্ঠিরঃ॥ ৩৩॥

নকুলঃ সহদেব ভ বীভৎসুক্ত পরস্তুপ!।

চিরং গতান্তোয়হেতোর্ন চাগচ্ছন্তি ভারত!॥ ৩৪॥

তাং কৈবান্য ভদ্রন্তে পানীয়ঞ্চ স্বমান্য।

ভীমদেনস্থে গুলুক্বা তা দেশং প্রত্যপদ্যত॥ ৩৫॥

যত্র তে পুরুষব্যান্তা ভাতরোহস্ত নিপাতিতাঃ।

তান্ দৃষ্ট্বা তুংথিতো ভীমন্ত্র্যা চ প্রপীডিতঃ॥ ৩৬॥

অমন্যত মহাবাদ্থা কর্মা তদ্যক্ষরক্ষসাম্।

স চিন্তব্যামাস তদা যোজ্বাং ধ্রুব্মদ্য বৈ॥ ৩৭॥

॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ বিধানেন যড়েন ॥ ৩১ ॥ ন ভবিষাসি সরিষাসি ॥ ৩২ ॥ ॥ ৩৬ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥

^{*} অনেকৈরিয়ু সংঘাতৈ রিভাস্য প্রাক্ সর্মোযানিধূনিতি চরণম্বরং ক পুস্তকে নাস্তি।

[†] এবমুক্তন্ততঃ পার্থ ইত্যাস্য প্রাকৃ বৈশন্পায়ন উবাচ ইতি পাঠঃ ক পুশুকে।

পাস্থামি তাবৎ পানীযমিতি পার্থো রুকেদেরঃ। ততেঃহভাধাবৎ পানীয়ং পিপাস্থর্ভরতর্বভঃ। ৩৮ । যক্ষ উব্যুদ্ধ

মা তাত! সাহসং কার্মীর্মম পূর্বপরিপ্রাহঃ।
প্রশান্ত ক্রা তু কোন্তেম! ততঃ পিব হরস্ব চ॥ ৩৯ ॥
ক্র এবমুক্ত ন্ত দা ভীনো বক্ষেণামিততেজসা।
অনুক্রৈব তু তান্ প্রশান্ পীত্রেব নিপপাত হ ৪০॥
ততঃ কুর্তীশ্বতো রাজা প্র চন্ত্য পুরুষর্বতঃ।
নমুপার মহাবাহুর্দহ্যমানেন চেত্রসা॥ ৪১॥
বাপেতজননির্ঘাব প্রবিবেশ মহাবনস্।
কুরুভিশ্ব বরাইশ্ব পশ্কি।ভশ্ব নিধোবত্য ॥ ৪২॥

1 28 11 28 11 80 11 85 11

* এবমুক্ত ইতাসা প্রাক্ বৈশাসাধ্যন উপতে ইতি পাঠঃ ক পুন্তকে তত শিচরগতান্ ভাতৃনথ জ্ঞাধা মুধান্তরঃ। চির্যেমাণো বহুণঃ পুনঃ পুনক্রাচ হ ॥ ১ ॥ মাজেয়ে কিং চির্যেয়েত গাণ্ডীবাকিং চিরাতে। মহাবলধরস্তর কিঃ ভূ ভীমশিচরগততে । ২ ॥ গাহ্ছামোন্যং পদং এই মিতি ক্রা মুধিন্তরঃ। স্মুক্তকে মহাবাহ হামানেন সেতসা ॥ ৩ ॥ . ততঃ কুভীস্তো রাজা প্রচিতা পুরুহর । আজুনাজানমেতক ভির্যালিম ব্রীং ॥ ৪ ॥ কিং জ্বিন্ম মদং ভূইং কি স্কিল্ফো হগো ভবেং। প্রাহ্মান্ত্রীয় যেগা ভবেং। প্রাহ্মান্ত্রীয় যেগা ভবেং। প্রাহ্মান্ত্রীয় মহাভূতং সপ্তাতেরাথ বাপতন্ ॥ ৫ ॥ ন পণান্ত্রথ বা বীরঃ পানীয় যত্র তে গাতাঃ। অবিক্তির্তির্বনে তোরং কালোহ্যমভিপাতিতঃ ॥ ৬ ॥ কিং ভূ তং কারণং যেন নাগান্তি পুরুষর্বভাঃ। এরমান্দীন বাক্যানি বিম্বা নুশসভ্যঃ ॥ ৭ ॥

ণ ব্যপেত জননিধোষ মিত্যদ্য প্রাক্ তত্ত কির গৃতানিত্যদি এব মাদীনি বাক্যানি বিষ্যানৃপদত্ম ইত্যন্ত দপ্তকোকঃ বৰ্মানাধিপতিয়ত ক পুস্তক্ত। নীলভাস্বরবর্ণেক পাদি পৈরুপশোভিতম্।
ভামরৈরুপগীতঞ্চ পক্ষিভিশ্চ মহাযশাং॥ ৪৩॥
স গচ্চন্ কাননে তন্মিন্ হেমজালপরিস্কৃতম্।
দদশ তৎসরং শ্রীমান্ বিশ্বকর্মারুত মথা॥ ৪৪॥
উপেত নলিনীজালৈঃ দিলুবারৈঃ সবেত সৈঃ॥
কেতকৈঃ করবীরৈশ্চ পিপ্পলৈশ্চিব সংর্তম্।
শ্রমার্ভস্তপাগম্য সরো দৃষ্ট্যথ বিশ্বিতঃ॥ ৪৫॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি আরণেষপর্বাণি নকুলাদিপতনে দ্বাদশাধিকত্রিশততমোধ্যায়: ॥ ৩১২ ॥

বৈশন্দায়ন উবাচ।

স দদর্শ হতান আভুন লোকপালানিব চ্যুতান ।

যুগান্তে সমনুপ্রাপ্তে শক্রপ্রতিমগৌরবান ॥ > ॥

বিনিকীর্ণধনুর্বাণং দৃষ্ট্য নিহতমর্জুন্ম।
ভীমসেন যমৌ চৈব নির্বিচেষ্টান গতাযুবঃ ॥ ২ ॥
সুদীর্ঘমুষ্ণ নিঃশ্বস্ত শোকবাঙ্গপরিপ্লুতঃ ।
ভান দৃষ্ট্য পতিতান ভাতুন স্বাংশ্চিন্তাসমন্থিতঃ ॥ ৩ ॥

॥ ৪৩ ॥ ছেমজালানি ছেমবর্ণানি কেসরাণি তৈঃ পরিকৃতং মঞ্জিতং॥ ৪৪ ॥ সিন্ধুবারৈর্জলজ বিশেষেঃ ॥ ৪৫ ॥

ইত্যারণ্যকে পর্ত্তাণি নৈলকগীরে ভারত ভারদীপে দাদশাধিক ত্রিশত তমোহধায়িঃ ॥ ৩১২॥

जिमेम् (र्भाउ॥ २॥ ७॥

ধর্মপুত্রে। মহাবাছর্মিললাপ স্ক্বিস্তরম্। নমু ত্বা মহাবাহো। প্রতিজ্ঞাতং রুকোদর । ॥ । ॥ स्राथं भने खा ७० । ব্যর্থং তদদ্য মে সর্বাপ ত্বায় * ভীম নিপাতিতে ॥ ৫॥ মহাত্মনি মহাবাহো কুৰূণাপ কীৰ্ত্তিবৰ্দ্ধনে। মনুষ্যসম্ভবা বাচো বিধর্মিণাঃ প্রতিক্রতা:॥ ৬॥ ভবতাং দিব্যবাচস্ত তা ভবস্তি কথং মুষা। দেবাশ্চাপি ষদাবেণ্চন স্থতকে স্বাপ ধনঞ্জয় ! n ৭ n সহআক্ষাদনবরঃ কৃন্তি ! পুত্রস্তবেতি বৈ। উত্তরে পারিপাত্তে চ জগুভূ তানি সর্বশেঃ॥ ৮॥ ्विध्यनकोः धियरिक्षामार्ह्न शूनत्रक्षमा । নাস্থ জেতা রণে কশ্চিদজেতা নৈষ কম্মটিৎ॥ ৯॥ সোহ্যণ মৃত্যুবশং যাতঃ কথণ জিফুর্মহাবল:। অষং মসাশাৎ সংহত্য শেতে ভূমৌ ধনঞ্জঃ ॥ ১০॥ আশ্রিত্য যং বয়ং নাথং ছুঃখান্যেতানি সেহিম। त्रात श्रमा वीरतो ह मना मकुनिवर्दशो ॥ >> ॥ कथः त्रिश्वयभः याट्ये कुछी शुट्यो महावत्ने। যৌ স্বাস্ত্রাপ্রতিহতৌ ভীমসেনধনঞ্জযৌ ॥ ১২ ॥ অস্থাসারমধং ভুনি হৃদ্ধ মম ছুহুদিঃ। यस्यो यदमरको दृष्णुं मित्र পতि को नावनीर्याटन ॥ ১०॥

॥ ৪ ॥ ৫ ॥ বিধর্ষিণ্য: অনৃতা: ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ন ক্স্যাচিদজেতা ২ পিছু
সর্কিসেবজেতা ॥ ৯ ॥ আশাং রাজ্যাশাং সংহত্য বিনাশ্য ॥ ১০ ॥ ১১ ॥
॥ ১২ ॥ ১৩ ॥

^{*} ভীম ইত্যত্ত্ৰ বীর ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

শান্ত্ৰজা! দেশকালজ্ঞা। স্তপোযুক্তা! ক্ৰিয়াশ্বিতাঃ ! ১ অকুত্বা সদৃশং কর্ম কিং শেশ্বং পুরুষর্যভাঃ ! ॥ ১৪ ॥ অবিক্ষতশরীরাশ্চাপ্যথেমুষ্টশরাসনাঃ। অসু-জ্ঞা ভুবি সঙ্গম্য কিং শেশ্বমপরাজিভাঃ!॥ ১৫। সাকুনিবাজে: সংস্থান দৃষ্ট্য ভাত্মহামতিঃ। স্থুখং প্রস্থপান প্রস্থিয়ঃ থিয়ঃ কন্টাং দশান গতঃ ॥ ১৬ ॥ এবমেবেদমিত্যুক্তা ধর্মাত্মা স নরেশ্বরং। শোকসাগরমধ্যস্থে। দধ্যৌ কারণমাকুল: ॥ ১৭॥ ইতিকর্ত্তব্যতাঞ্চেতি দেশকাল্বিভাগবিৎ। নাভিপেদে মহাবাছ শিত্যানো মহামতিঃ॥ ১৮॥ অথ সংস্কৃত্য ধর্মাত্মা তদাত্মানং তপঃস্কৃতঃ। এবং বিলপা বছধা ধর্মা পুত্রো সুধিষ্ঠিরঃ॥ ১৯॥ বুদ্যা * বিচিন্তথামাস বীরাঃ কেন নিপাতিতাঃ ॥ ২০॥ নৈষা~ শস্ত্রপ্রহারোহস্তি পদং নেহাস্তি কস্যচিৎ। তুত মহদিদং মন্যে জাতরো যেন মে হতা: ॥ ২১॥ একাগ্রং চিন্তযিষ্যামি পীত্বা বেৎস্থামি বা জলমু। স্থান্ত ছুর্য্যোধনেনেদমুপাংশুবিহিতঃ ফুতম্ ॥ ২২ ॥ গান্ধাররাজরচিতং সততং জিন্ধাবুদ্ধিনা। • যন্ত্র কার্য্যমকার্য্যৎ বা সমমের ভবত্যত॥ ২৩॥ কস্তম্ভ বিশ্বসেদ্ধীরো তুদ্ধুতেরকুতাত্মনঃ। অথ বা পুরুবৈগূ তৈ: প্রযোগোহ্যং জুরাত্মন: ॥ ২৪॥

॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ দধ্যোকারণং মরণছেতুং বিচারিতবান্ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ তপঃ স্তঃ ধর্মপুত্রঃ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ উপাংশু বিছিতং অস্মাভিরজ্ঞাতং সমিহিতং ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ হৃষ্কুতেঃ পাপকর্মণঃ ॥ ২৪ ॥

^{*} বুদ্ধোতাক্ত প্রাক্ এবং বিলপ্যোতিচরণদ্বাং ক প্রেকে নান্তি।

ভবেদিতি মহাবুদ্ধিবছধা তদচিন্তবং।
তথ্যসীন বিষেণেদমুদকং দূষিতং ষথা। ২৫ ।
মৃতানামপি চৈতেষাং বিক্তং নৈব জাষতে।
মুখবর্ণাঃ প্রসন্না মে ভ্রাভূণামিত্যচিন্তবং ॥ ২৬ ॥
একৈকশশ্চৌঘবলানিমান পুরুষসন্তমান্।
কোহন্যঃ প্রতিসমাসীত কালান্তক্যমাদৃতে ॥ ২৭ ॥
এতেন ব্যবসাধেন তত্ত্বোধ্ ব্যবগাঢ্বান্।
গাহমানশ্চ তত্ত্বোধ্ ব্যবগাঢ্বান্।

যক্ষ উন্তে।

ষ্ঠাং বকঃ শৈবলমৎস্তভক্ষো, ় নীতা মযা প্রেতবশং তবারুজাঃ। ত্ব> পঞ্চমো ভবিতা রাজপুঞ্চ,

ন চেৎ প্রশ্নান্ পৃচ্ছতো ব্যাকরোষি। ২৯। মা তাত! সাহসৎ কার্যীর্ম্ম পূর্ববপরিগ্রহঃ।
প্রশ্নান্তকু বু কৌন্তেষ! ততং পিব হরম্ব চ ৩০।

যুধিষ্ঠির উবাচ।

ক্ষদাণাং বা বস্থনাং বা সক্ষতা বা প্রধানভাক।
পূচ্চামি কো ভবান দেবো নৈতচ্চকুনিনা কৃতম্॥ ৩১ ।
হিমবান পারিপাত্রশ্চ বিস্কো। মলয এব চ।
চত্তারঃ প্রকৃতাঃ কেন পাতিতা ভূরিতেজসঃ॥ ৩২ ॥
অতীব তে মহৎ কর্মা কৃতঞ্চ বলিন। হর!।
যান্ন দেবা ন গন্ধর্বা, নাসুরাশ্চ ন রাক্ষসাঃ॥ ৩০॥

॥२৫॥२७॥ ওঘবলান্ মহাপ্রবাহ বেগান্ প্রতি সমাসেত প্রতিবৃদ্ধেৎ কালেন্তং করোতি যন্তাদৃশোষমঃ কালান্তক মমন্তন্মাং॥২৭॥২৮॥২৯॥ ॥ ৩০॥ প্রধানতাক্ প্রাধানাতাক্॥ ৩১॥ ৩২॥ তেওব॥ ৩০॥ তেওর। বিষহেরন্ মহাযুদ্ধে ক্ষত তে তল্মহাদুত্য।
ন তে জানামি যথ কার্যাং নাভিজানামি কাল্ফিডন্॥ ৩৪ ॥
কৌতৃহলং মহজ্জাতং সাধসঞ্চাযতং সম।
যেনামাদ্বিগ্রহদয়ঃ সমুৎপানশিরোজ্বঃ ॥ ৩৫ ॥
পৃচ্ছামি ভগবংস্তমাৎ কো ভবানিহ তিষ্ঠতি।

যক্ষ উল্বচ।

যক্ষোহমিশ্ম ভদ্রং তে নাগ্মি পক্ষী জলেচরঃ ॥ ৩৬॥ মথৈতে নিহতাঃ সর্বে ভ্রাতরন্তে মহৌজসঃ। বৈশম্পায়ন উধাচ।

ততন্তামশিবাণ প্রত্বা বাচং স পর্যাক্ষরাম্॥ ৩৭॥
যক্ষ ক্রবতো রাজন্পক্রম্য তদা স্থিতঃ।
বিরপাক্ষং মহাকাষং যক্ষং তালসমুদ্ধ্যম্॥ ৬৮॥
জ্বনার্কপ্রতীকাশমধ্য্যং পর্বতোপমম্।
রক্ষমাশ্রিত্য তিষ্ঠতং দদশ ভরতর্বভ!॥ ৬৯॥
মেঘগন্তীরনাদেন তর্জ্বয়ত্বং মহাস্বনম্।

यक छेला है।

ইমে তে ভাতরো রাজন্ বার্য্যাণা ম্যাসক্তং ॥ ৪০ ॥
বলান্তোয়ং জিহীর্মন্ততো বৈ মূদিতা ম্যা।
ন পেযমুদকং রাজন্ প্রাণানিহ পরীক্ষতা ॥ ৪১ ॥
পার্থ! মা সাহসং কার্যার্ম্ম পূর্বপরিগ্রহঃ।
প্রশান্তক্ত্ব তু কৌন্তেয়! ততঃ পির হরস্ক চ ॥ ৪২ ॥
যুধিন্তির উবাচ।

ন চাহং কামযে যক্ষ ! তব পূর্ব্বপরিগ্রহর্য। কামং নৈতঃ প্রশংসন্তি সন্তো হি পুরুষাঃ সদা॥ ৪৩॥

1 08 1 06 1 09 1 09 1 09 1 80 1 80 1 82 1 82 1 80 1

যদাত্মনা অমাত্মানং প্রশ^সেৎ পুরুষর্যভ ়। যথাপ্রজ্ঞ তে প্রশ্নান্ প্রতিবক্ষ্যামি পুচ্ছ মাম্॥ ৪৪॥

যক উবাচ।

কি প্রদানিত্যমুন্নযতি কে চ তস্যাভিতশ্চরা। কশ্চৈনমন্তং নযতি কক্মিংশ্চ প্রতিতিষ্ঠতি॥ ৪৫॥

যুধিছির উবাচ।

ব্রহ্মাদিত্যমুন্নযতি দেবাস্তর্ন্যাভিতশ্চরাঃ। ধর্মশ্চাস্তৎ নযতি চ সত্যে চ প্রতিতিষ্ঠতি॥ ৪৬ ॥

যৎযতঃ আত্মনিবাত্ম অরূপং বক্তবামতন্তে প্রশ্নন্ প্রতিবক্ষামি॥ ৪৪॥ কিংখিদাদিত্য মুন্নয়তীত্যাদি প্রশোতরমানিকা আত্মনস্তত্বং নির্নেমারকা-তরতি শোকমাত্মবিদিতি তজ্জ্ঞানস্থ ফলবত্ব প্রবণাত্তংসিদ্ধয়েচ উচ্চাবচং সাধন জাতমন্তাং নিরূপ্যতে তাং ব্যাখ্যাস্থামঃ । ৪৫ ॥ আদিত্যং আদত্তে শব্দাদীন শ্রোত্তাদিভি রিত্যাদিতো জীবন্তং গৌরোহমস্কোহং তুঃখ্যহং কর্তাছমিত্যাদ্যমুভবাদেছাদ্যাত্মত্মাভাসমানং বাদিভিশ্চানে-কধাবিকপ্পামানং ব্রহ্মবেদ উন্নয়তি দেহাদিভাঃ পৃথক্তরোতি ভাতিরেবাত্ম তম নির্ণয়েমানমিত্যর্থঃ তথাচল্ডাতিঃ নাবেদ বিশ্বায় তেতং বুছন্তমিতিনয় সর্ব্বেপি বেদাদাত্মানং জানস্তিনেত্যাছ দেবা ইতি দেবাঃ শমাদয় শুসাভিতশ্রাঃ সহায়াঃ অশুং অস্থানং অপহত পাপ্যাদি গুণাইক विभिक्येश उरकारण ভূতং • श्रामीकाणश श्री खान धर्माः माकारशहर श्री हा বাকর্মোপাসনারপোনয়তি প্রাপয়তি স্রত্যুক্তবিধং অরূপং স্থাণ বন্ধ ভাবং প্রাপ্য তদাধেন সত্যে সর্ববাধাবধি ভূতে শুদ্ধচিমাত্তে 'বু প্রতিষ্ঠিতো ভবতি তথাও আছতিঃ সএবং বিধানস্মাক্ষরীর ভেদাদৃধ মুৎ क्रमार्गायूचिन् यर्शालांक नर्सान् कार्यानांश्वारमुखः ममखरानिष्ठ अध्यर नौज्ञा कानर ७७: नमानि मश्रामार्याभवनात्कशामामा निर्वाचिख স্বৰ্গাখ্য সগুণ এন্দ দৰ্শনং ততঃ কেবলীজাৰ ইতি আচতেরৰ্থ:॥ ৪৬॥

यक छेराह।

কেন স্বিচ্ছ্োত্রিয়ো ভবতি কেন স্বিদ্ধিন্দতে মহৎ। কেন স্বিদ্ধিতীয়বান ভবতি রাজন কেন চ বুদ্ধিমানু॥ ৪৭॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

শ্রুতেন শ্রোতিষো ভবতি তপদা বিন্দতে মহৎ।
ধৃত্যা দ্বিতীয়বান্ ভবতি বুদ্ধিমান বৃদ্ধদেবয়া॥ ৪৮॥

यक्ষ উবাচ।

কিম ব্রাহ্মণানাং দেবত্বং কশ্চ ধর্ম্মঃ সভামিব। কশ্চেষাং মানুষো ভাবঃ কিমেধানসভামিব॥ ৪৯॥

॥ ৪৭॥ বেদদাসতো প্রতিষ্ঠাহেত্ব মুক্তৎ তত্রদৃষ্ঠৎ দারমাহশ্রুতেনেতি শ্রোত্রিয়োবেদায়ারী শ্রুতেন আচার্য মুখা দ্বেদার্থারধারনেন ভবতে নত্বকর গ্রহণ মাত্রেণ তত্বতপদাযুক্ত্যাচ শ্রুতসার্থানালোচনেন মহৎব্রহ্ম বিন্দতে জানীতে মানমেয়গতাহদংভাবনা নির্ব্ত্ত্যা নিশ্চিনোতি, প্রত্যাপ্রায়াধারয়তে মনঃ প্রাণেত্রিয় ক্রিয়াঃ যোগেনাব্যভিচারিলাপ্রতিঃ দাপার্থ সাত্রিকী ত্যক্তলক্ষণয়া নিনিধাসুনেনেতার্থঃ দ্বিতীয়ং জনীশ্রুদি বিশিষ্টাদবিদ্যাপ্রত্যুপ স্থাপিতাইজ্বাজপাক্তিপেরীতং বিদ্যাপ্রাপথ প্রতিচা বৎ দ্বিতীয়ং রূপং তদ্বান্ ভবতি এতত্রর নিশ্চয়াত্মিকা বৃদ্ধিপ্রস্কিবাঃ প্রোত্রেশান্তব্যামন্তব্যোমন্তব্যোমন্তব্যামন্তব্যা আচার্য্যাক্র প্রাণ্তির শ্রেত্রামন্তব্যামন্তব্যানিদিধাণ্ডিত্ব আচার্য্যান্ প্রথাবেন্দেত্যাদি রাজ্মদর্শন সাধনত্বেচ শ্রুবাভিক্তরিঃ স্বাধান্ত্রা বেদাধায়নং

যুধিষ্ঠির উব†চ।

স্বাধ্যায এষাং দেবত্বং তপএষাং সতামিব। মরণং মানুষো ভাবং পরীবাদোহসতামিব। ৫০॥

বক্ষ উব্চ।

কিং ক্ষত্রিয়াণাৎ দেবত্বৎ কশ্চ ধর্মাঃ সতামিব।
কল্ডেষাং মানুষো ভাবঃ কিমেষামসতামিব॥ ৫১॥
য়ৢধিষ্ঠির উবাচ।

ইপ্সেমেষ† ১ দেবত্বং যজ্ঞ এষা ১ সতামিব।
ভয় ১ বৈ মানুষো ভাবঃ পরিত্যাগোহসতামিব ॥ ৫২॥

বীক্ষ উবাচ।

কিমেকং যজ্জিয় সাম কিমেকং যজ্জিয়ং যজুঃ।
কা চৈষাং রূণুতে যজ্ঞং কাং যজ্জো নাভিবর্ত্ততে ॥ ৫৩॥
যুধিষ্ঠির উবাচ।

প্রাণো বৈ যজ্জিয়ং সাম মনো বৈ যজ্জিয়ং যজুঃ। ঋণেকা রুণুতে যজ্জং তাং যজ্জো নাতিবর্ত্ত ॥ ৫৪॥ যক্ষ উবাচ।

কিং স্থিদাপততা শেশু কৈ স্থিমিবপতাং বরন্। কি স্থিৎ প্রতিষ্ঠমানানাং কিং স্থিৎ প্রস্বতাং বরম্। ৫৫॥

বিপ্রাণাং দেবতং অর্গলোক প্রাপকং তপঃ শমাদিকং সন্চার
ইত্যুপাদেরদ্বরং মান্ন্যভাবো দেহাদাভিমানঃ মরণং জন্মরণপ্রাপকঃ
পরিবাদেদেব ব্রাক্ষণাদিং দূরণং অসদাচার ইতিহেরদ্বরং ॥ ৫০ ॥
॥ ৫১ ॥ পরিত্যাগঃ আর্তানা মিতি শেষঃ ॥ ৫২ ॥ ৫০ ॥ হেতোপান্তরদং
হেতুমাহ প্রাণমনসী নিক্ছমানে যজেসাম্যজ্বী ইব জ্ঞান্যজ্ঞোপকারকে

শক্রকামুখ্যাযজ্ঞং জ্ঞানং রণুতে স্বীকরোতি জ্ঞানোংপাদিকে ইতার্থঃ
তথাচ প্রতির্মনোবাচং প্রাণং তান্যান্থনে কুক্তেতি আন্তিতার্থ

শৈতংক্রয়ং প্রজাপতিনা স্ক্রমিত্যাহ তথাতংগ্রেপনিষদং প্রথমিত্যোপ
ন বদত্ব বিশেষণং বাচোমুখ্যব্যাহ ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

বর্ষমাপততাং শ্রেষ্ঠং বীজং নিবপতাৎ বরম্ব। গাবঃ প্রতিষ্ঠমানানাৎ পুক্রঃ প্রসবতাৎ বরঃ॥ ৫৬॥

হক্ষ উবাচ।

ইক্রিয়ার্থাননুভবন বুদ্ধিমান লোকপূজিত:। সম্মত: সর্বভূতানামুচ্চ্বসন্ কোন জীবতি। ৫৭।

যুধিন্তির উবাচ।

দেবতাতিথিভ্ত্যানাং পিতৃণামাত্মনক্ষ য়ঃ। ন নিৰ্বাপতি পঞ্চানামুচ্ছ্যুসন্ন স জীবতি ॥ ৫৮॥

শমাদীনাং প্রাণজয়াদীনাঞ্চাসম্ভবে হজ্জীদ্যেব কর্তব্য মিত্যাই আবপতাং আসমন্তাৎ দেবাংশুপরতাং বর্ষং রক্তিঃ শ্রেষ্ঠং ফলং সর্বলোকোপ কারকত্বাৎ যথোক্তং অ্যোপ্রান্তান্ততিঃ সম্যাদিত্য মুপতিষ্ঠতে আদিত্যাক্জায়তে বৃক্তি রিতি নিবপতাং নিবাপঃ পিতৃতপ্রণং তৎকুর্বতাং বীজং ক্ষেত্রারামাদ্যাত্মোপ কারকং ফলং আয়ুঃ প্রজাং ধনং বিদ্যাং স্বর্গং মোক্ষং স্থানিচ প্রবছন্ত তথারাজ্যং প্রীতান্তত্তং পিতামহা ইতি স্মৃত্যুক্তং প্রতিষ্ঠমানানা মিহেব প্রতিষ্ঠানিপ্রনাং বাবঃ শ্রেষ্ঠং প্রস্তান সন্ততি মিচ্ছুনাং পুত্রঃ শ্রেষ্ঠং ফলং দৌহিত্রাদিত্যঃ ব্যুবাং পুত্রম্য চ দৃষ্টার্থত্বেশি অতিথিপ্রীণন দ্বারা আদ্বশেদানাদি দ্বারা উপকারকত্বেন পরম্পরয়া প্রবাদ্যাহিকারহেতুত্বং জ্বেয়ং ॥ ৫৬ ॥ ইত্যোপি সাধনান্ত্রটো যন্তং নিক্ষতি ইন্দ্রিরার্থানিতি ইন্দ্রিরার্থান্ শন্দাদীন্ লোকেধনাদি সত্বন পুজিতঃ সংমতোদানাধিকারিছেন ॥ ৫৭ ॥ ন নির্বপতি ন প্রযন্ততি দেবতাদিত্যঃ ॥ ৫৮ ॥ উক্ত সাধনাশক্তেন মাতাপিত্রোঃ শুক্রমামনোনিরাধ স্তুর্বভূদ্ধান

यक छेत्राह ।

কিং বিদ্পুরুতরং ভূমেঃ কিৎ স্বিদুচ্চতরঞ্চ খাৎ। কি**ৎ স্বিদ্ধান্ত**তরং বাধোঃ কিং স্বিদ্ধতরং তৃণাৎ ॥ ৫৯॥

যুধিন্তির উপচ।

মাতা গুরুতরা ভূমে: খাৎ পিতোচ্চতরস্তথা। মন: শীঘ্রতর্ণ বাতাচ্চিন্তা বছত্রী তুণাৎ ॥ ৬০॥

यक छेता ।

কিং স্থিৎ স্থাপ ন নিমিষতি কিং স্বিজ্ঞাত ন চোপতি। কম্ম স্বিদ্দ্ৰং নাস্তি কিং স্বিদ্বেগেন বৰ্দ্ধতে॥ ৬১॥

ষুধিষ্ঠির উবাচ।

•ম**ংস্তঃ স্থুপ্তো ন নিমিষত্য**ুগুং জাত ন চোপতি। অশ্বানো হৃদয়ং নাস্তি নদী বেগেন বৰ্দ্ধতে ॥ ৬২ ॥

রাশ্চিন্তারান্তাগশ্চ কর্ত্রন্য ইত্যাহ কিংমিদ্ এর্মিতি ॥ ৫৯॥ ৬০॥ ৬১॥ নম্মনোনাশে পূন্যমেবাবশিব্যত ইত্যাশঙ্গনেত্যাহ মৎস্যইতি মৎস্থাইব মৎস্যে জীবঃ জাগ্রৎস্প্রের্যারিহলোক পরলোকরোর্বাতীররোরিব সঞ্চারেণ ম্বরুঃ স্বনীডভূ ১২ সজপং ব্রম্প্রান্তো ন নির্মাহতি মনোবল্লিপ্ত দৃষ্টির্নভবতি নহিক্ত দৃষ্টির্নভবিতি বিলাপের বিদ্যাতেইবিনাশিরাদিতি আচতেঃ নম্মৎস্যোবিনাশিরাদজাতশ্চেৎ কন্তর্হিজাত ইত্যত আহ্বতং পিগুর্মাণ্ডরপং জাতমুৎপারং সং নচোপত্তি ন চলতি চুপমন্দায়াং গতৌপুরুষ প্রবর্তি-তমেবাহংকারাদিজভঙ্গাতং চেইতে ইত্যর্থঃ কোহোবান্যাৎকঃ প্রাণ্ডান্দান আনম্বান্তানিত আতেঃ কন্তর্হিজাতালাবেত্যাঃ সংযোগস্য স্থান্সন্য বিরুদ্ধান্য ইত্যত আহ্ অশ্বনঃ শরীরস্য নির্ভ্ত দেহত্রাধ্যাসন্য যোগিনোহাদয়ং শোকনীডং নান্তি কথং ভর্হি সমাধে রাপির্যন্তিইতীত্যাহ নদীভিত্তনদীবেণেনবর্ধতে স্ব্র্থাবন্ধাপ্রস্থ স্থান্দান-বংসমাহিত্রির্যাহ প্রপ্রের্থান্তিসম সময়মাত্র জাতইত্যর্থঃ ॥ ৬২

यक छेगा ।

কিং স্বিৎ প্রবসতো মিত্রং কিং স্বিমিত্রং গৃহে সতঃ। আতুরস্থ চ কিং মিত্রং কি^ স্বিমিত্র^ মরিষ্যতঃ॥ ৬৩॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

দার্থ: প্রবসতো মিত্রং ভার্য্যা মিত্রং গৃহে সতঃ। আতুরস্ক ভিষঞ্জিত্রং দান্দ মিত্রং মরিষ্যতঃ॥ ৬৪॥

यक छेना ।

কোহতিথিঃ সর্বাভূতানাং কিং স্বিদ্ধর্মাং সনাত্রন_{ন্}। অমৃতং কিং স্বিদ্রাজেন্দ্র ! কিং স্বিৎ সর্বামিদং **জগৎ ॥ ৬৫ ॥**

যুধিষ্ঠির উবাচ।

অতিথিঃ সর্বভূতানামিয়িঃ সোমো গবামূতম্। সনাতনোহমূতো ধর্মো বাযুঃ সর্বমিদৎ জগং॥ ৬৬॥

যক উবার।

কিং স্থিদেকো বিচরতে জাতঃ কো জায়তে পুনঃ। কিং স্থিদ্ধিমস্ত ভৈষজাং কিৎ স্থিদাবপনং মহৎ॥৬৭॥

॥ ৬৩ ॥ মনোরোধাশক্তম দানমেব শ্রের ইত্যাহ সার্থো যথা প্রবসতোমিত্রমেবং মরিব্যতো মর্জ স্যাদানং মিত্রমিতার্থ্য ॥ ৬৪ ॥ ৬৫ ॥ দানসার্চিত্ত
শুদ্ধি দারাবজ্ঞানো যজ্ঞানেশ চিত্তকাগ্রাদারা সমফ্যুপান্তো প্রবৃত্তি
হেতৃত্বেনচ উপকারকত্মাহ অতিথিরিতি অগ্নিরাহবনীয়াদিরপঃ গবায়্তং
ক্রীরং তদেব সোমাধাং হোত্ব্যং সোয়ং সনাত্রনা নিত্যোধর্মঃ অমুতো
মোক্ষহেত্ঃ তত্ত্বারমাহ বায়ঃ সর্ক্রমিদং জ্বাং বায়ুরেব ব্যক্তিরায়ঃ
সম্ক্রিরিভিক্তাতঃ পিওব্রমাণাত্রক বায়ুরপত্র প্রাপ্তে মোক্ষারমিতার্থঃ
॥ ৬৬॥ ৬৭॥

যু ধর্তির উবাচ।

স্থা একো বিচরতে চন্দ্রমা জাযতে পুন:। অগ্নির্হিমন্ত ভৈষজ্য ভূমিরাবপনং মহৎ॥ ৬৮॥

যক্ষ উবাচ।

কিং স্থিদেকপদ ধর্দ্যাং কিং স্থিদেকপদং যসঃ। কিং স্থিদেকপদ স্থর্গ্য কিং স্থিদেকপদং স্থুখ্য ॥ ৬৯॥

যুধিষ্ঠির উন্চ।

দাক্ষ্যমেকপদ^র ধর্ম্ম্যং দানমেকপদ**্ যশঃ।** সত্যমেকপদং স্বর্গ্যৎ শীলমেকপদং স্থায়॥ ৭•॥

উক্তলক্ষণতা বান্নোরপি সংহারে কি মবশিষ্যত ইত্যাহ স্থ্যএকোবিচরতে স্থাবচ্চি ইঅকাশরপ আত্মৈবান্তি অবস্থান্তয়ে তদ ভাবে চ প্রকাশ্য স্থাবচ্চি ইঅকাশরপ আত্মেবান্তি অবস্থান্তয়ে তদ ভাবে চ প্রকাশ্য স্থাবচ্চি ইংইব কুতন্তর্হি প্রপঞ্চ ভান মত আহ চন্দ্রমাজায়তেপুনঃ চন্দ্রমামনোভূত্বতি প্রুতনে এবাবিদ্যাবশাহৎপদ্যতে তচ্চত্বঃশ প্রদং জগৎ কম্পরতি অবিদ্যানিবৃত্ত্যপায় মাহ অগ্নির্হিমদ্য ভৈষজ্ঞাৎ আনিবাগ্য ভূবেতি প্রতেথাবাে তত্ত্বম্যাদিকাহিমতা স্থানিত ভাবকস্যাদিকাভ্যিয়া ভ্রম্থ নিবারকং ভূমিঃ শরীরং তদেবমহদাবপনং বিদ্যাদ্রাজ্ঞান্ত্যা ভ্রম্থ নিবারকং ভূমিঃ শরীরং তদেবমহদাবপনং বিদ্যাদ্রাজ্ঞান্ত নিধান পাত্রং ইহেব সংসারিত্বদসংসারিত্রক ভাবেপিদ্রাদ্রাজ্ঞ কিয়ত ইত্যর্থঃ ॥ ৬৮ ॥ অন্তম্বাজ্ঞাং প্রশাজ্ঞাং বন্ধবিদ্যাদ্র কিয়ত ইত্যর্থঃ ॥ ৬৮ ॥ অন্তম্বাজ্ঞাং প্রশাজ্ঞাং বন্ধবিদ্যাদ্র স্থাধন মুপক্ষিপ্তং ততঃ সপ্তভিত্তং পদার্থ শোধন্তত ল্লিভি ভংপদার্থশোধঃ সমাধনঃ কৃতঃ ইদানীং পুনঃ প্রকার্যন্তরেণ সাধনাদ্রনির নিদ্ধত্ত্বং পদার্থকা রভেদভ্রমত্বং ব্রম্বানীত্যাদিমহাবাক্ষাং প্রাজ্ঞাং দর্শরতি নবজিঃ কিং বিদেক পদামিত্যাদিনা ॥ ৬৯ ॥ একপদং এক মেব পর্যবিদ্যান স্থাবং দাক্ষে ক্রের্থ গাবেনিতা ক্রিলিভ ক্রের্থ এবমুন্তরন্ত ॥ ৭০ ॥ উদ্যোগোদানং সত্তং শীলঞ্জ গেবার ক্রাজ্

यक छेन्।

কিং স্বিদাত্মা মনুষ্যক্ত, কিং স্থিদৈবক্তঃ সথা। উপজীবনং কি॰ স্থিদক্ত কি॰ স্থিদক্ত পরায়ণ্য ॥ ৭১॥

সুধিষ্ঠির উবাচ।

পুত্র আত্মা মনুষ্যক্ত ভাষ্যা দৈবকৃতঃ সথা। উপজীবনঞ্চ পর্ল্জন্যো দানমন্ত পরাযণ্য ॥ ৭২ ॥

যক্ষ উন্ত।

ধন্যানামুক্তমং কিং স্থিজনানা স্থাৎ কিমুক্তমন্। লাভানামুক্তম কিং স্থান সংখানাং স্থাৎ কিমুক্তমন্। ৭৩॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

ধন্যানামুক্তমণ দাক্ষ্যণ ধনানামুক্তমং প্রতম্। লাভানাং শ্রেষ্থারোগ্যং সুধানাং তুফিরুক্তমা॥ ৭৪॥

यक छेवाड ।

কশ্চ ধর্মঃ পরে। লোকে কশ্চ ধর্মঃ সদাফলঃ। কিং নিষম্য ন শোচন্তি কৈশ্চ শক্ষিন জীর্যাতে ॥ ৭৫॥

পি ন দান মেব পুত্রবদান্তা ভাষ্যাবংসখা পর্জকাবত্রপজীবনঞ্চ আত্মপ্রদাহ রমণীর কলভাং নাদত্তমুপতিষ্ঠতীতি বচনে নোপ জীবন হেতৃহাচে ভাছে কিং জিদান্তেতি ॥ ৭১ ॥ ৭২ ॥ ৭০ ॥ ধনাং ধনার হিতং ধনমপিঞ্চত মেব ন অর্থাদীত্যাহ উত্তমং প্রভাষতি লাভ আরোগ্যং ধর্মসাধনতাং তৃতিঃ সন্তোধণ্ণ উদ্যোগাধ্যরন মারোগ্যং সন্তোধণ্ণ উদ্যোগাধ্যরন মারোগ্যং সন্তোধণ্ণ কুট্রান্তে । ৭৪ ॥ ৭৫ ॥

যুগিষ্ঠির উনাত।

আনৃশংস্তা পরে। ধর্মপ্রযীধর্মঃ সদাফ্লঃ। মনো যম্য ন শোচন্তি সন্ধিঃ সন্ধিন ভীর্যাতে॥ ৭৬॥

যক্ষ উবাচ।

কিনু হিত্বা প্রিয়ো ভবতি কিনু হিত্বা ন শোচতি। কিনু হিত্বার্থবান্ ভবতি কিনু হিত্বা স্থুখী ভবেৎ॥ ৭৭॥

যুপিষ্ঠির উনাচ।

মানং হিত্বা ভবতি ক্রোধং হিত্বা ন শোচতি। কাম হিত্বার্থবান্ ভবতি লোভ হিত্বা সুখী ভবেৎ॥ ৭৮॥ যক্ষ উবার।

কিমর্থং ব্রাহ্মণে দানং কিমর্থং নটনর্ত্তকে। কিমর্থক্তিব ভৃত্যেষু কিমর্থক্তিব রাজস্থ ॥ ৭৯॥

মুধিন্তির উবাচ।

ধর্মার্থং ব্রাহ্মণে দানং যশোহর্থং নটনর্ত্তকে। ভূত্যেষু ভরণার্থং বৈ ভ্যার্থঞ্চৈব রাজস্ক ॥ ৮০ ॥

আনৃশংশুং সর্বভূতাভয়দানং সংনাস ইতার্ধঃ অয়ীমোক্ষমন্ত্র স্ত্রথীত আচতেরায়ী শব্দেনাত্রঃ তিমাত্র প্রণবউচাতে তদালিতোধর্মঃ অকার উকার মকারার্থানাং স্থুল স্ক্রম কার্থোপাধীনাং ক্রমেণ পূর্ব্ব প্রের প্রেরাজরত্র প্রবিলাপনেন অর্ধ্বমত্রার্থে তৃরীয়ে ব্রহ্মানংসদাকলঃ অবিনাশিকলঃ মোক্ষহেতৃত্বাৎ তম্ম ধর্মন্ত প্রাপ্তার্পায়েমনো নিপ্রহ্রএবতাবতৈব জাতাত্বতেরাভূষাশোকং তরতিমনোনিপ্রহ্ মার্গক্ষসন্তিঃ কপালুভিরেব প্রদর্শনীয় ইতি তাৎপর্ব্যার্থঃ ॥ ৭৬ ॥ মনোনিপ্রহেদ্ক হারং মানাদি চ্ছুক্টয় ত্যাগইত্যাহকির ইতি ॥ ৭৭ ॥ ৭৮ ॥ মানাদিত্যাগোপিধর্মকর মতোত্রাপি ব্রহ্মণে দত্তং যদানং তদেবধর্মহেতৃত্বাহ্পকরেণ্তি নান্তর ক্রেমিতাছ কিমর্থমিতি॥ ৭৯ ॥ ৮০ ॥

यक छेव ।

কেন স্থিদারতো লোকঃ কেন স্থিন প্রকাশতে। কেন ভ্যজতি মিত্রাণি কেন স্থর্গ^ ন গচ্ছতি॥৮১॥ যুধিষ্ঠির উবাচ।

অজ্ঞানেনারতো লোকস্তমসা ন প্রকাশতে। লোভাত্ত্যজতি মিত্রাণি সঙ্গাৎ স্থর্গং ন গচ্ছতি॥ ৮২॥ ফক্ষ উবাচ।

মূতঃ কথং স্থাৎ পুরুষঃ কথং রাষ্ট্রং মূত**় ভবেৎ।** আহিং মৃতং কথং যাস্থাৎ কথং যজো মৃত্যো ভবেৎ।৮০॥ যুধিটের উবাচ।

মৃতো দরিক্রঃ পুরুষো মৃত রাষ্ট্রমরাজকন। মৃতমশ্রোত্তিয়ং আদ্ধে মৃতো যক্তীস্তুদক্ষিণঃ ॥ ৮৪॥

। ৮১ ॥ নহুদানবলায়ানাদীন্ জিয়ামনোনিগৃয়তএবাতান্তিকোছঃখনাশো ভবিষাতি কিং প্রবিলাপনরপেণ এয়ীধর্মেনেতাগাশয়াছ অজ্ঞানেনেতি অজ্ঞানকার্যোণ স্থুল স্ক্রা শরীর দ্বরেন জরামরণশোক মোহাদ্যাশ্রেমেণ লোকাত ইতি লোক আত্মা আরুতন্তিরোহিতঃ কম্পিত ভুজদেনেব রজ্ঞঃ অতোজ্ঞাননাশার্থং এয়ীধর্মেবিশ্রমেইবাঃ নহুস্বস্থাে দেহদয়্রমা ভাবাদজ্ঞান নাশোস্তোব কিং এয়ীধর্মেনেতাত তাহ তমসামূলাজ্ঞানেন স্বয়্পাবপাগরতোতো ন প্রকাশতে তম্মাদেহত্রয়মপি প্রবিলাপনীয় মোবেতার্থঃ জ্ঞানাজ্ঞানয়ারের বিরোধাদজ্ঞানকৃতঃ সংসারো ন মনোরোধ মাত্রেণ নশ্রতি কিন্তু সর্ববাধেন রজ্জু মিহামিনার যথা সমূল্য ভরম্ম নাশস্তথা দেহত্রয়বাধেন স্বক্রপাধি গ্রমেনের সমূল্য সংসারস্তনাশ ইতি ভাবঃ অতোলোভসদ্বোরতাানো দোষমাহয়্ত ইতি দরিজো লুক্কিতঃ সদানাদ্য সমর্থকেন মৃতএব তত্ত্বান্তান মৃতং রাক্রমিব রাক্রহা প্রাণং ভূমিশতেঃ সঞ্চার স্থানং শরীরস্ত্ররাজকং নফ্টা প্রাণং হথা তথাদ রিজো জীবন্ধত ইত্যর্থঃ অগ্রেমং দৃষ্টান্তদ্বয়্ব গ্রুমিত প্রাস্থিমের ॥ ৮৪ ॥

যক্ষ উবার।

কা দিক্ কিমুদকং প্রোক্তণ কিমন্নণ কিঞ্চ বৈ বিষম্। আদ্বেশু কালমাখ্যাহি ততঃ পিব হরস্ব চ ॥ ৮৫॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

সন্তো দিগ্রলমাকাশং গৌরনং প্রার্থনা বিষমু। আদ্বন্ধ ব্রাহ্মণঃ কালঃ কথন বা যক্ষ মন্যাসে॥ ৮৬॥

॥ ৮৫ ॥ এবং লোভাদিত্যাগোন দানাদ্যস্থতানেন সমাদিসম্পত্যাত ৰুক্তস্ত অবণাদিমভোষৎক্ষাত্ৰ্যাং বন্ধাইস্বকাং তদাহকাদিগিতিসভোবেদ ্প্রমাণ নিষ্ঠাঃ দিক্দিশতি উপদিশতীতিদিক্ উপদেষ্টার ইতার্থ: আচাৰ্য্য বচনাৎ ব্ৰহ্ম জ্ঞাতব্যমিতিভাবঃ তথাজনং পঞ্চম্যামাত্তাবাপঃ পুৰুষ বচসোভবন্তীতিভাতেজনং পিগুৱদাগুত্মকং কাৰ্যাং তদভি मानीटिंडनम् एवन गार्किममिक ब्लीटिंगनम्हा आकार्यः मर्वानिहरा ইমানি ভূতানাকাশাদেৰ সমুৎপদান্ত আকাশেহন্তং যন্তীতিচ্চতে রাকাশং ব্যাক্তং কারণং ভদভিমানীঈশ্বর স্তেনোচ্যতে অন্যোর্জন মাকাশমিতি সামানাধিকরণ্যাদভেদ উপাধ্যংশপ্রহাণেন উভয় ত্রগুদ্ধচিন্মাত্র লক্ষণরা সোহং দেবদত্ত ইত্যত্ত্বেব তদেত দেশকাল্রপ বিশেষণ প্রছাণেন দেবদত্ত স্বৰূপ মাত্র লক্ষণযাত্রতাবানের সর্বেয় বেদান্তেয় জাতব্যোর্থ: নতুবাবর্তকে উপাধিভেদে জাগুতিসতি কথমনয়োর ভেদঃ স্থাদত আহুগৌরনমিতি গক্ততীতিগৌঃ ইক্সিলং তদ্প্রহং भक्षामार्शकाल्य वा जर जन्न जननीयर अविनाशनीयर रमन्नरापमनगारयन ৰ্যথাসৈত্মৰ খিল্য উদকে প্ৰাশস্ত উদক মেবায় বিলীয়তে অত্তহেতে मर्याबकर ভवजीजानिज्ञिकार्जिंगः উপাধ্যোমিগ্যাত্বাদেবরজ্জর গাবৎ প্রবিদয়ঃ ত্র সাধা ইত্যর্থ: প্রার্থনাকামঃ সএব বিষমিব বিষং জ্বামরণ হেছুত্বাৎ অতঃ কামং তাজ্য গুরুপদেশেন প্রপঞ্চং প্রবিলাপ্যপ্রত্যক্ वचाराएकमः माकार क्यामिकार्थः वाचरावचित्वकिक अक्षा व्यानव्यक्त कानः मभवः यहेमन मर्भाव नाजस्रोमन धर्मकानामिक भ्रमूर्णवर निकंनीत्रक नमाञ्चानमध्यादकविना ७०। शनानाशि कान नाधना-बिज्ञालनानि ह असे मिल्ह : पूर्वर वाज्जीवनानि श्रुवर ननमाजारका ধৰ্মাঞ্জঃ পরায়শতি কৰাই বা যক্ষমন্যাদে ইতি তবমতে এতাবতাকুত কুতাৰ্মভিনাতি বেভি প্রশাভি প্রায়: । ৮৬ ।

যক্ষ উবাচ !

তপঃ কি শক্ষণং প্রোক্তং কো দমশ্চ প্রকীর্ত্তিতঃ। ক্ষমাচ কা পরা প্রোক্তা কা চ ত্রীঃ পরিকীর্ত্তিতা॥৮৭॥

যুধিষ্ঠির উবাচ !

তপঃ স্বধর্মবর্তিত্বং মনসো দমনং দমঃ। ক্ষমা দ্বন্দুসহিষ্ণুত্ব^ ক্রীরকার্য্যনিবর্ত্তনম্॥ ৮৮॥

যক্ষ উবাচ।

কিং জ্ঞান প্রোচ্যতে রাজন কঃ শমশ্চ প্রকীর্ত্তিতঃ। দযা চ কা পরা প্রোক্তা কিঞ্চার্কবমুদাক্তম্॥ ৮৯॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

জ্ঞানং তত্ত্বার্থসমোধঃ শমশ্চিত্তপ্রশাস্ততা। দ্যা সর্বস্থেথবিত্বমার্জবং সমচিত্ততা॥৯০॥

যক্ষ উবাচ।

ক: শত্রুদ্ধ ক্র্তিষ: পুৎসাং কন্দ ব্যাধিরনন্তক:। কীদৃশক্ষ স্মৃত: সাধুরসাধু: কীদৃশঃ স্মৃত:॥ ১১॥ '

যুধিষ্ঠির উবাচ।

কোধঃ স্থত্ত্ৰঃ শক্তর্বোভো ব্যাধিরনন্তক:। সর্বাভূতহিতঃ সাধুরসাধুর্নির্দ্দযঃ স্মৃতঃ ॥ ৯২ ॥

যক্ষ উবাচ।

কো মোহ: প্রোচ্যতে রাজন্ কক্ষ মানঃ প্রকীর্ভিতঃ। কিমালস্কঞ্ বিজ্ঞেষ্ কক্ষ শোৰু: প্রকীর্ভিতঃ॥ ৯৩।

॥ ৮৭ ॥ তপ আদাইকত জানসাধনত সক্ষানাছ দ্বাভাগ তপঃ অধর্মেতি ॥ ৮৮ ॥ ৮৯ ॥ ৯০ ॥ ৯১ ॥ ক্রোধলোভ নির্দর্গনি ভাক্ত্ব সর্বা-ভূতহিতঃ আদিত্যর্থঃ ॥ ৯২ ॥ ৯০ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ।

মোহো হি ধর্মমূচত্ব মানজাত্মাভিমানিতা। ধর্মনিষ্ক্রিযতালভাং শোকস্বজ্ঞানমূচ্যতে। ১৪॥

यक छेना ।

কি হৈ যাম্বিভিঃ প্রোক্তং কিঞ্চ ধৈর্য্যমুদাহৃতম্। স্থানঞ্চ কিং পরং প্রোক্তং দানঞ্চ কিমিহোচ্যতে ॥ ৯৫॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

স্বধর্ম্মে স্থিরতা স্থৈর্য্যং ধৈর্য্যমিন্দ্রিখনিগ্রহ:।

স্থান মনোমলত্যাগো দানং বৈ ভূতরক্ষণম্॥ ৯৬॥

যক্ষ উবাচ।

কৃঃ পণ্ডিতঃ পুমান জ্জেযো নাস্তিকঃ কশ্চ উচ্যতে। কো মুর্খঃ কশ্চ কামঃ স্থাৎ কো মৎসর ইতি স্তঃ॥ ১৭॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

ধর্মজ্ঞঃ পণ্ডিতো জ্ঞেষো নাস্তিকো মূর্খ উচ্যত। কামঃ সংসারহেতুশ্চ হ্রন্তাপো মৎসরঃ স্মৃতঃ॥ ১৮॥

যক্ষ উবাচ।

কোহ্+ক্ষার ইতি প্রোক্তঃ কশ্চ দম্ভ: প্রকীর্ত্তিতঃ ! কিন্তদ্বৈং পরং' প্রোক্তং কিন্তৎ পৈশুন্যমূচ্যতে ॥ ৯৯ ॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

সহাজ্ঞানসহস্কারো দত্তো ধর্মধজোচ্ছ য:। দৈবং দানকলং প্রোক্তে পৈশুন্যং প্রদূষণম্॥ ১০০॥

ত্রিভির্মোহাদীনাং লক্ষণান্তাহ মোহোহীত্যাদিনা ॥ ৯৪ ॥ ৯৫ ॥ ৯৬ ॥ ৯৭ ॥

" নান্তিকো নান্তি পরলোড ইতি বাদী সএব মুর্থোন তত্যোতঃ পৃথক মুর্থঃ
অক্টব্যইত্যর্থঃ সংসারহেতুর্বাসনা ॥ ৯৮ ॥ ৯৯ ॥ মহচ্চতদজ্ঞানঞ্চ অহকারঃ
ধর্মঃ হজোক্রো হলবহাক্তিতো লোকের খ্যাত্যর্থঃ, দন্তদপ্রিপশুলা
নি ডাক্ত্রা দৈবাধীনো হলকালাভ সভুইোনিদ্ভঃ নিকাম্প ধর্মমাচরেদৃষ্ট্যর্থঃ ॥ ২০০ ॥

হক্ষ উবাচ।

थर्मान्डार्थन्ड काम्रम्ड शृत्रन्त्रात्रवाधिनः। এষা নিত্যবিৰুদ্ধানা কথ্যেকত সঙ্গমঃ॥ ১০১॥ যুধিষ্ঠির উবাচ।

যদা ধর্মক ভাষ্যা চ পরস্পরবশানুগো। তদা ধর্মার্থকামানাং ত্রযাণামপি সঙ্গমঃ । ১০২॥

ষক্ষ উবাচ।

অক্ষয্যো নরকঃ কেন প্রাপ্যতে ভরতর্ষভ!। এতবে পৃচ্চতঃ প্রশ্নং তৎ শীঘ্রণ বক্তু মর্হাস। ১০০। যুধিষ্ঠির উবাচ।

ব্রাহ্মণং স্বয়মাছুয় যাচমানমকিঞ্চিনম্। পশ্চান্নান্তীতি যো ভ্রমাৎ সোহক্ষয়ং নরকং ব্রজেৎ॥ ১০৪ । বেদেষু ধর্মশাস্ত্রেষু মিথ্যা যো বৈ দ্বিজাতিষু। দেবেষু পিতৃধর্ম্বেষু সোহক্ষযং নরকং ব্রজেৎ ॥ ১০৫ ॥ विमामारम धरन लाजाकानरजागविवर्षिकः। পশ্চানান্তীতি যো জ্বাৎ সোহক্ষয়ং নরকং ব্রজেৎ ॥ ১০৬॥ যক্ষ উবাচ।

রাজনু ! কুলেন রুত্তেন স্বাধ্যাযেন প্রুতেন হা। ব্ৰাহ্মণ্যং কেন ভবতি প্ৰক্ৰছেতৎ স্থৃনিশ্চিত্ৰণ ॥ ১০৭॥

 ३०३ ॥ नयर्थकामत्यादित्याधित्नाः मत्जाख्यम्त्राधित्याञ्च इंडा-महार्घ त्रापि धर्मार्थिरहाजािषः शाविवाजावस्त्रां। विरवाधी न ভবতি ষদাচ ভাষ্যাদানাদি প্রতিবন্ধকং বিনাধর্মে বিরোধনী ন ভবতি তদাধৰ্মাৰ্থান প্ৰস্তুতে ভাৰ্যাচ কামং পুৱয়তি তেন ত্ৰিনৰ্গোয়ং সক্ষয প্রাপ্তি তথাচ গৃহিণামপ্যন্তি ধর্মদ্বারেণ মোকেধিকার ইত্যুক্তং ॥ ১০২ ॥ অক্ষরোনরকঃ নিতাসংসারিত্ব ॥ ১০৩॥ তদ্বেতুমান্ত্রী সম্পদ মাহ বান্ধণ মিট্যাদিনা ॥ ১০৪ ॥ ১০৫ ॥ ১০৬ ॥ স্বাধ্যায়েন অক্ষাব্যপ্তা-চ্চতেন তদৰ্থগ্ৰহণেন সাৰ্থবেদাধিগমে নেত্যৰ্থঃ ॥ ১০৭ ॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

শৃণু যক্ষ কুলং ভাত ! ন স্বাধাবো ন চ্ প্রান্তম্ ।
কারণ হৈ দিজত্বে চ বৃত্তমেব ন সংশ্বাং ॥ ১০৮॥
বৃত্তং যত্নেন সংবৃক্ষ্যং ব্রাহ্মণেন বিশেষতা ।
আক্ষীণরত্তো ন ক্ষীণো বৃত্ততম্ভ হতো হতা ॥ ১০৯॥
পঠকাং পাঠকালৈ বৈ চান্যে শাস্ত্রচিন্তকাং ।
সর্বে ব্যসনিনো মুর্খা যা ক্রিযাবান্ স পণ্ডিতা ॥ ১১০॥
চতুর্বেদোহপি ত্ব্ব্তাং ন শৃদ্রাদ্ভিরিচ্যতে ।
যোহমিহোত্রপরোদান্তঃ স ব্রাহ্মণ ইতি স্মৃতা ॥ ১১১॥

যক্ষ উবাচ।

প্রিষবচনবাদী কিং লভতে, বিমৃশিতকার্য্যকরঃ কিং লভতে। বছমিত্রকরঃ কিং লভতে, ধর্ম্মরতঃ কিং লভতে কথ্য॥ ১১২॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

প্রিয়বচনবাদী প্রিয়ো ভবতি,

বিমৃশিতকার্য্যকরোহধিকং জয়তি। বছমিত্রকরঃ স্থুখং বসত্তে,

যশ্চ ধর্মারতঃ স গতিং লভতে ॥ ১১৩॥

ি যক্ষ উবাচ।

কো মোদতে কিমাশ্চর্য্যং কঃ পদ্থাঃ কা চ বার্ত্তিকা। বদ মে চতুরঃ প্রশান মৃতা জীবস্ক বান্ধবাঃ ॥ ১১৪॥

ক্ষণ নকারণং আধ্যারঃ ভাতঞ্চরং মিলিবৈক্ষেবতদপিনকারণমিতি বোজাং ॥ ১০৮ ॥ ১০৯ ॥ ১১০ ॥ অতিরিচাতেনীচতারামিতি পোবঃ ॥ ১১১ ॥ ॥ ১১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

পঞ্চমেহ্ছনি যঠে বা শাকং পচতি স্বেগ্ছে।
অনৃণী চাপ্রবাসী চ স বারিচর মোদতে । ১১৫ ॥
অহন্যহনি ভূতানি গচ্ছতীহ যমালযে।
শেষাং স্থিরত্বমিচ্ছত্তি কিনাশ্চর্যামতঃ পরম্ ॥ ১১৬ ॥
তর্কোহপ্রতিষ্ঠঃ প্রুত্তমো বিভিন্না,
নৈকো ঋষির্যন্ত মতং প্রমাণম।
ধর্ম্মন্ত তত্ত্বং নিহতং গুহাযাং,
মহাজনো যেন গতঃ স পন্থাঃ ॥ ১১৭ ॥
অম্মিন্থামেহমযে কটাছে,
স্থা্যাগ্রিনা রাত্রিদিনেস্কনেন ।
মাসর্তুদ্বীপিরিঘট্টনেন,
ভূতানি কালঃ পচতীতি বার্জা ॥ ১১৮ ॥

বক্ষ উবাচ।

ব্যাখ্যাতা মে ত্বা প্রশ্না যাথাতথাং পরস্তপ !। পুরুষন্ত্রিদানীং ব্যাখ্যাহি যশ্চ সংবধনী নরঃ ॥ ১১৯ ॥

কর্মোপান্তি জানানামন্তরদ সাধনং বৈরাগ্যমাহণ প্রশাচতুষ্টয়োত্রত্বেন হেবারিচর হেবন্ধ খণং প্রবাসঞ্চ অকুর্বন্যদৃচ্ছালাভ সন্তুফোভবেদিতার্থ ॥ ১১৫ ॥ অহনীতি দেহপ্রবিনাশির মন্ত্রমায় প্রাপ্তানপি ভোগাংশুক্তা শীত্র পরমার্থায় যতিত্ব্যমিতার্থঃ ॥ ১১৬ ॥ তক্ষীতি অপ্রতিষ্ঠঃ নির্পন্ন শৃষ্তঃ প্রকাপিবিভিন্নাঃ পরস্পর বিৰুদ্ধার্থ বাদিনাঃ মুনয়োপিত্যাখ্যাতার স্তাদৃশাএব অতোহনন্তাম্ম ধর্মশাস্তাদি বিদ্যাম্ম শ্রমমক্রবাব্রজন সংস্তর্মেবমার্গমন্ত্রদৃতর্থঃ ॥ ১১৭ ॥ অন্মিরিত্তি ভূজ্যমানা অপিশ্রয়াদ্দরো ন চিরস্থায়িন ইতি সর্বতোবিরাগ্য মেবাশ্রমেদিতিভাবঃ ॥ ১১৮ ॥ কর্মা জ্ঞান ফলে বিবেক্তাই পৃক্তিব্যাখ্যা ইতি যাথাত্থ্যং মথার্থং বর্ধাস্যাত্ত্রখা প্রশ্রহ পুর্বান্ত্রীরে বসভীতি পুরুষ স্তুৎ জীবস্তমিত্যর্থঃ কোজীবতি কাল্বাপ্তমকল কাম ইতি প্রশো ॥ ১১৯ ॥

যুধিষ্ঠির উনাচ !

দিবং স্পৃশতি ভূমিঞ্চ শব্দঃ পুণ্যেন কর্মণা।

যাবৎ স শব্দো ভবতি তাবৎ পুরুষ উচ্যতে॥ ১২০॥
ভূল্যে প্রিযাপ্রিযে যক্ত স্থগ্রহথে তথৈব চ।
অতীতানাগতে চোভে স বৈ সর্বাধনী নরঃ॥ ১২১॥

যক্ষ উবাচ।

ব্যাখ্যাতঃ পুরুষো রাজন্। যশ্চ সর্ব্বধনী নরঃ। তন্মান্ত্রমেক্ ভাতৃনাং যমিচ্ছদি স জীবতু॥ ১২২॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

খামো য এষ রক্তাকো বৃহৎসাল ইবোপিতঃ। ব্যুটোরকো মহাবাহুর্নকুলো যক্ষ! জীবভু ॥ ১২৩॥

यक्त উধার।

প্রিয়ন্তে ভীমদেনোহ্যমর্জুনো বং পরায়ণন্। স কম্মান্নকুল রাজন্! সাপত্র জীবমিচ্চসি ॥ ১২৪॥

তরোকন্তরং দিবমিতিশাভাাং পুণ্যেনকর্মণা সকামেন নিজামেন বা ক্সঞ্জমি
ব্যাপী কীর্ত্তি শব্দোভবতি যাবৎ কীর্ত্তিরস্তিতাবজ্ঞবিতীতার্থঃ পশ্চাদিহলোকে পূর্ববাসনাহরপাণি কর্মাণিকরোতি তত্তাপি সোপানারোহক্রমেণ নিজামোমুচ্যতে অবরোহক্রমেণ সকামোধিক মধিকং বাসনাপাশৈর্বধান্ত ইতি বিবেকঃ ॥ ১২০ ॥ তুল্যে ইতি ব্রহ্মবিদেব সর্ব্বধনী
যন্তমাজান মহ্ববিদ্য বিজ্ঞানতি সর্ব্বাংশ্চ লোকানাপ্রোতি সর্ব্বাংশ্চ
কামানিতি তক্তবাপ্তসকলকামন্বর্ভাতেঃ তক্তবাভাবিক মিদং লক্ষ্যং
তুল্যে প্রিয়াপ্রিরেইতি ত দেব সাধক্য্য যতুসাধ্যং জ্ঞান সাধন মিত্যুচাতে
যথোক্তং উৎপন্নাত্ম প্রবোধগুরুবেষ্ট্রভাদরোক্তণাঃ অযত্ত্বভাত্মত্ত
নতুসাধনর্মপণ ইতি ॥ ১২১ ॥ এবং পুরুত্ত জ্ঞানং পরীক্ষ্য ধর্মেছিতিং
পরীক্ষিত্বমাহ যমেক মিচ্ছসি সজীব ছিতি ॥ ১২২ ॥ ১২০ ॥ জীবং
জীবন্তং ॥ ১২৪ ॥

যক্ত নাগসহত্রেণ দশসংখ্যেনবৈ বলম্ !
তুল্যং তং ভীমমুৎস্কু নকুলং জীবমিছেসি॥ ১২৫॥
তথৈন মনুজাঃ প্রান্থভীমসেন প্রিযং তব।
তথ কেনানুমানেন সাপত্রং জীবমিছাসি॥ ১২৬॥
যক্ত বাছবল সর্কে পাণ্ডবাঃ সমুপাদতে।
হুর্জুনং তমপাহায নকুলং জীবমিছাসি॥ ১২৭॥

মুধিষ্ঠির উবাচ।

ধর্ম এব হতো হস্তি ধর্মো রক্ষতি রক্ষিতঃ।
ভন্মান্ধর্মান তাজামি মা নো ধর্ম্মো হতোহবধীৎ ॥ ১২৮॥
আনৃসংস্থাং পরে। ধর্মাং পরমার্থান্ন মে মতম্।
আনৃশংস্থাং চিকীর্মামি নকুলো যক্ষা জীবতু ॥ ১২৯॥
ধর্মাশীলঃ সদা রাজা ইতি মান মানবা বিছঃ।
স্বধর্মান্ন চলিষ্যামি নকুলো যক্ষা জীবতু ॥ ১৩০॥
কুন্তী চৈব তু মাদ্রী চ দে ভার্য্যে তু পিতৃর্মাম।
উভে সপুল্রে স্থাতান বৈ ইতি মে ধীয়তে মতিঃ॥ ১৩১॥
যথা কুন্তী তথা মাদ্রী বিশেষো নান্তি মে ত্যোঃ।
মাতৃত্যান সম্মিচ্ছামি নকুলো যক্ষা জীবতু॥ ১৩২॥

॥ ১২৫ ॥ अञ्चादिन न कूनशेष मामर्थित ॥ ১২७ ॥ ১২१ ॥ नः अन्यिन । भारिकीर ॥ १९৮, ॥ आनृमश्मार अदिवसग्रश्मद्रमार्थीर मजार ॥ ১२०॥ । १७० ॥ वीवर्ष निकिञ्च । ১७১ ॥ ১७२ ॥

यक छेवाछ।

যন্ত তেহর্থাচ্চ কামাচ্চ আনৃশ-ন্তং পরং মতম। তত্মান্তে ভ্রাতরঃ সর্বের জীবস্ত ভরতর্ষত ।॥ ১৩৩ ।

ইত্যারণাকে পর্বাণি আরণেয়পর্বাণি যক্ষপ্রশ্ন ত্রয়ে।
দশাধিকত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩১৩॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততত্তে যক্ষৰচনাতুদতিষ্ঠন্ত পাগুৰাঃ। কুৎপিপাদে চ সৰ্বেষাং ক্ষনেন ব্যপগচ্চতাম্॥১॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

শরক্তেকেন পাদেন তিষ্ঠন্তমপরাজিতম।
পৃচ্চামি কো ভবান দেবো ন মে যক্ষো মতো ভবান ॥ ২ ॥
বস্থনাম বা ভবানেকো ক্ষুদ্রাণামথ বা ভবান।
অথ বা মক্তাম প্রেষ্ঠো বক্ত্রী বা ত্রিদশেশ্বরং ॥ ৩ ॥
মম হি ভ্রান্তর ইমে সহস্রশত্যোধিনং।
তম্পোধং ন প্রপশ্যামি যেন সর্ব্বে নিপাতিতাং ॥ ৪ ॥
স্থাং প্রতিপ্রবৃদ্ধানামিক্রিযাণ্যপলক্ষ্যে।
স ভবান স্ক্রেদোস্থাক্মথ বা নং পিতা ভবান ॥ ৫ ॥

1 200 1

ইত্যারণ্যকে পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রোদশাধিক ত্রিশত ওমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩১৩ ॥

ভততেইতি ॥ ১ ॥ २ ॥ ७ ॥ श्रह्मः स्ट्रिक् माममण्डरः ॥ ৫ ॥

যক্ষ উবাচ।

অহত্তে জনকন্তাত ! ধর্মোহ্মূত্বপরাক্রমঃ ।
আং দিদৃক্রমূপ্রাপ্তো বিদ্ধি মাণ ভরতর্ষভ ! ॥ ৬ ॥
মশঃ সতাং দমঃ শোচমার্জ্রবং ক্রীরচাপলম্ ।
দানণ তপো ব্রহ্মচর্যামিত্যেতাস্তনবো মম ॥ ৭ ॥
আহিংসা সমতা শান্তিস্তপঃ শোচমমৎসরঃ ।
দারাণ্যেতানি মে বিদ্ধি প্রিয়ো হৃসি সদা মম ॥ ৮ ॥
দিষ্ট্যা পঞ্চম্ম রক্তোহ্সি দিক্ট্যা তে ষ্ট্পদী জিতা ।
দেপুর্বের মধ্যমে দ্বে চ দ্বেচান্তে সাম্পরায়িকে ॥ ৯ ॥

॥ ७ ॥ यनः भारिः मजाः यथार्थकायनः मत्मानात्कत्वित्रक्तः भोतः দ্বিবিধং মৃজ্জলাদিনাবাছং কামজোধাদিরাহিত্যাদান্তরং আর্জবং অবক্রত্য মার্দবিমিতি পাঠে অক্রুরতান্ত্রীরকার্য্য •প্রবৃত্তিবারককেতে বুরিত্তি বিশ্লেষঃ অচাপলং মনসঃ ছৈষ্যং দানং প্রাসদ্ধ তপঃ স্বধর্মাচরণং ত্রন্দর্যামুপস্থ নিগ্রহঃ তনবঃ শরীরাণি ॥ ৭ ॥ অহিং সাবাত্মনঃ শরীরেঃ পরপীডাবর্জনং সমতাম নাপমানাদিষ বৈষম্য শান্তিশ্চিত্ত নিপ্ৰছঃ তপঃ কৃচ্ছু চাক্ৰায়ণাদি শৌচং ব্যাখ্যাতং অমৎসরঃ পরগুণান দৃষ্ট্যাহসন্তাপঃ মংসরন্তদভাবঃ দ্বারাণি ধর্ম প্রাপ্তিমুখানি ॥ ৮ ॥ দিফ্ট্যাপঞ্চরকোসি পঞ্চরাত্মদর্শন সাধনের শান্ডোদাস্ত উপরত শুতিকুঃ সমাহিতো ভূরীআন্যেবালানং পশ্যতীতিশ্রুত্তেরু শমাদিরু দিষ্ট্যা পূর্ব্ব পুণ্যবশাৎ রক্তোদি তদ্য कलक्षविष्योभनीकाः भागत्त्र व्यात्र निष्य मिष्ठ भागिनकप्रियास्यानना-য়াপিপানে শোকং মোহং জরাং হ্ছামত্যেতীতিচ্ছুক্তাঃ তেষাং रक्षार পদানাर সমাহার: यहें भनी माञ्चला जिला उत्र भटनबू प्रभटन প্রজাতমাত্রত হলনাপিপানে প্রথমং ভবতঃ দেমধ্যে শোকমোছো শোক ইক্টবিয়োগজ শিভ্ৰস্যসন্তাপঃ মোছোহতি তাপেন কাৰ্য্যকাৰ্য্য প্রতি সন্ধান শূরত্বৎ এতেমধ্যেমধ্যমেবয়সি প্রাপ্তর প্রাঞ্চন্ত পঞ स्र महावटळ्यू कामटकार्या लाज्यमारहोमनमार्गाठ यहेलनी यहेलनीर সমাত কমামুচাতে নাত্ত সংশয়ঃ ইতি ব্যাচকুত দিধাপাধিকারাদে পুরে ইতি বাক্য শেষাসামঞ্জাচ্চোপেক্তিৎ সাম্পরায়িকে জরামূছুঃ উত্তর্থে বরস্থাপতিষ্ঠতঃ 💘 অন্তে সাম্পারায়িকে সম্পারায়ঃ পরলোক শুং প্রতি নেতু মুদিতে সাম্পরায়িকে। ১॥

ধর্মোইহুসন্মি ভদ্রন্তে জিজ্ঞাস্কুত্বামিহাগতঃ।
আনৃশংস্থান ভূমৌইন্মি বর্ন দাস্থামি ভেহ্নত্ব!। ১০॥
বরং র্ণীম্ব রাজেক্র ! দাতা স্থান্মি তবানত্ব!।
বে হি মে পুরুষা ভক্তান ভেষামন্তি দুর্গতিঃ॥ ১১॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

অরণীসহিতং যক্ত মূগো ছাদায় গছতি। তক্তাগ্নযোন লুপ্যেরন্ প্রথমোহস্ত বরো মম॥ ১২॥

যক উবাচ।

অরণীসহিত্ত**ং যস্তা ব্রাহ্মণস্থা হৃতং** মযা। মূগবেশেন কৌন্তেয়। জিজ্ঞাসার্থং তব প্রতাে!॥ ১৩॥ বৈশস্পায়ন উবাচ। দিদানীত্যের ভগবা**নুত্ত**রং প্রত্যপদ্যত।

যুধিষ্ঠির উবাচ।

বর্ষাণি ছাদশারণ্যে ত্রয়োদশমুপস্থিতম্। তত্ত্ব নো শাভিজাশীযুর্বসতো মন্ত্রজাঃ কচিৎ॥॥ ১৫॥

ব্দন্য বরষ ভক্ততে বরং স্বমমরোপম ।॥ ১৪॥

ধর্মোছ মিতিভন্ততে অহং ধর্ম শুবপিতান্মতি স্বরূপ প্রকাশনং ইতি ভন্ততে ইতানেন ইতি এব মুক্ত প্রকারেণ যশঃ প্রভৃতি দৃশভিধর্ম দারে কোণপ্রেনাদৃষ্টেন শম্পিঞ্চবাস্বক্তত বট্পদীজর কলং ভন্তং কল্যাণং মোক্ষ স্থাখ্যমন্বর সচ্চিদানন্দ মারস্তেত্ব অন্তিতি শেষঃ এবং প্রশাস্থাদমুখেন প্রতিপাদিতাং ব্রন্ধবিদ্যাং যশঃ সত্যং দমঃ শোচমিত্যাদি স্লোক ক্রেরণোপ সংহ্তা আখ্যারিকা মন্থ্যরতি ক্রিজা-ইরোমিহাগত ইত্যাদিনা ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ অরণীসহিতং অরণ্যোঃ সমা-রোপিত্যায়িং যন্ত্রা অরণ্যোঃ সহিতং সমুদার অরণীদ্র মিতি যাবং ॥ ১২ ॥ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ অরণ্যে গতাণীতি শেষঃ নঃ অন্যান্ ॥ ১৫ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ।

দদানীত্যেব ভগবানুত্তরং প্রত্যপদ্যত।
ভূষশ্চাশ্বাস্থামাস কৌন্তেযং সভ্যবিক্রমন্। ১৬ ॥
যদ্যপি স্বেন ৰূপেণ চরিষ্যথ মহীমিমাম্।
ন বো বিজ্ঞান্ততে কশ্চিক্রিষু লোকেষু ভারত!॥ ১৭ ॥
বর্ষাং ত্রয়োদশমিদং মৎপ্রসাদাৎ কুরুছহাঃ!।
বিরাটনগরে গূঢ়া ভাবিজ্ঞাতাশ্চরিষ্যথ॥ ১৮ ॥
যদ্বঃ সঙ্কম্পিত্র রূপে মনসা যন্ত্র যাদৃশন্।
তাদৃশং তাদৃশং সর্বের ছন্দতো ধার্যিষ্যথ॥ ১৯ ॥
ভরণীসহিতপ্রেদং ব্রাহ্মণায প্রযক্ত্রত।
জিজ্ঞাসার্থং ম্যা ভ্রেড্নাহ্নত্র মুগরূপিনা॥ ২০ ॥
প্রণীদ্বাপরং সৌম্য! বর্মিষ্টং দদানি তে!
ন ভূপ্যামি নরশ্রেষ্ঠ। প্রযক্তন্ন বৈ বরাংস্তব॥ ২১ ॥
ভূতীযং গৃহ্যতাং পুল্ল! বর্মপ্রতিমং মংৎ।
ত্বং হি মৎপ্রভবো রাজন্ বিজুরশ্চ ম্মাংশজঃ॥ ২২ ॥
সুধিন্তির উবাচ।

দেবদেবো মযা দৃষ্টো ভবান্ সাক্ষাৎ সনাতনঃ।

যং দদাসি বরং ভূফস্তং গ্রহীষ্যাম্যহু পিতঃ! ॥ ২৩ ॥

জবেষং লোভমোহৌ চ কোধঞ্জহুং সদা বিভো!।

দানে তপসি সভ্যে চ মনো মেসততং ভবেৎ॥ ২৪॥

ধর্ম উবাচ। উপপন্নো গুলৈরেকৈঃ স্বভাবেনাসি পাগুব!। ভবানু ধর্মঃ পুনশ্চেব যথোক্তং তে ভবাষ্যতি। ২৫।

॥ ५७ ॥ ५० **॥ ५**० ॥ इन्स्चः रेष्ट्रांडः ॥ ५० ॥ २० ॥ २० ॥ २२ ॥ २० ॥ ॥ २८ ॥ २० ॥ रिवमन्त्रायम खेवां ।

ইত্যক্তান্তর্দধে ধর্মো ভগবালে কভাবন:।
সমেতাঃ পাগুবাশ্চৈব স্থেস্পা মনস্থিন:॥ ২৬ ॥
উপেত্য চাল্ডমং বীরাঃ দর্ব্ব এব গতক্লমাঃ।
আরণেযং দত্তস্থেম ব্রাহ্মণায় তপস্থিনে॥ ২৭ ॥
ইদং সমুখানসমাগতং মহৎ,
পিতৃশ্চ পুজ্রস্তা চ কীর্ত্তিবর্দ্ধনম্।
পঠনরঃ আদিজিতেক্রিয়ো বশী,
সপুজ্রপৌজঃ শতবর্ষভাগভবেৎ॥ ২৮॥
ন চাপ্যধর্মে ন স্কুদিভেদনে,
পরস্থাবে পরদারমর্ষণে।
ক্রম্যভাবে ন রমেন্দ্রনঃ সদার্গ
নৃগং সদাখ্যানমিদ্রু বিজ্ঞানতাম্॥ ২৯॥

ইত্যারণ্যকে পর্বাণি আরণেষপর্বাণি নকুলাদিজীবনাদিবর প্রাপ্তৌ চ্তুর্দশাধিক ত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩১৪ ॥

॥ ২৬ ॥ আরবেরং অরণীসং পুটং ॥ ২৭ ॥ সমুখান সমাণতং ভীমাদীনাং সমুখানঞ্চ ধর্ম রাজেন সহ সমাণতং সংমেলনঞ্চেতি সমাহারঃ পিতৃ ধর্মশু পুত্রস্ত যুধিন্তিরস্ত চাইসমাণত মিতি সমাসৈক দেসভূত ম্যান্ত্রস্ততে ॥ ২৮ ॥ কদর্যভাবে কার্পঝো সাণ্ধানিং শুভাধানিং ॥ ২৯ ॥

> ইত্যারণাকে পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুর্দশাধিক ত্রিশত্তমোহধারঃ ॥ ৩১৪ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ধর্মেণ তেহভানুজ্ঞাতাঃ পাণ্ডবাঃ সত্যবিক্রমাঃ। অজ্ঞাতবাস^ বৎস্তস্ত শ্ছন্না বর্ষং ত্রয়োদশস্॥ ১॥ উপোপবিশ্ব বিদ্বাৎসঃ সহিতাঃ সংশিতব্ৰতাঃ। যে তদ্ধক্রা বসন্তি সা বনবাদে তপস্থিনঃ ॥ ২॥ তানব্রুবন্মহাত্মানঃ স্থিতাঃ প্রাঞ্জলযন্তদা। অভ্যন্তজাপযিষ্যন্তন্তং নিবাদং ধৃতব্ৰতাঃ॥ ০॥ বিদিতং ভবতাং সর্বাং ধার্ত্তরাইষ্ট্রয়থা বয়য়। ছল্না হৃতরাজ্যাশ্চনেযাশ্চ বহুশঃ কুতাঃ ॥ ৪॥ উষিতাশ্চ ৰনে ক্লুন্ডুং বর্ষ- ছাদশ বৎসরান্ত। অজ্ঞাতবাসসময়ং শেষ বৰং ত্রেদশম্॥ ৫॥ তদ্বসামো ব্যং ছলান্তদমুজ্ঞাতুমইথ। ञ्चरयाधनम्ह क्रुक्काञ्चा कर्नम्ह महरमोवलः ॥ ७॥ জानदृत्ता विषयः कूर्ग्रतृतायाचात्रदेवतिनः। যুক্তাচারাশ্চ যুক্তাশ্চ পৌরস্ত স্বজনস্তা চ। १॥ অপি নন্তদ্ভবেদ্ভূব্যে যদ্বয় বাহ্বাইণঃ সহ। সমস্তাঃ স্বেষু রীষ্ট্রেষু স্বরাজ্যন্তা ভবেম হি॥৮॥ বৈশম্পায়ন উাচ।

ইত্যক্ত্বা হুংখণোকার্ত্তঃ শুচিধর্ময়ুতন্তদা।
 সংমুদ্ধি তোহভবদ্রাজা সাক্রকপ্রে। যুধিপ্রিরঃ ॥ ৯ ॥
 তমথাশ্বাস্থান্ সর্কে ব্রাহ্মণা ভ্রাতৃত্তিঃ সহ।
 অথ ধৌম্যোধ্রবীদ্বাক্যং মহার্থ্ নুপতি তদা॥ ১০॥

ধর্মেণেতিবংসান্তঃ বন্ধুমিচ্ছন্তঃ ॥ ১ ॥ ব ॥ ছিতাঃ স্বধর্মনিষ্ঠাঃ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ যুক্তাঃ যোজিতাকারাবৈত্তে যুক্তা অবহিতাঃ পৌরশ্বস্কলন্ত ই অস্মাতি রাজিত্ত বিষমং কুর্বেতো রাফ্রান্তরে স্মাতির্গন্তব্য মিত্যাশরঃ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ অশুনির্গুর্ক প্রত্তাৎ শুচিরিন্ডোব পাঠঃ স্বচ্ছঃ ॥ ১ ॥ ১০ ॥

^{*} ইত্যুক্তে তাদ্য প্রাক্ বৈশম্পায়ন উবাচ ইত্রি পাঠঃ ক প্রকে নান্তি।

রাজন্ ! বিদ্বান ভবান দান্তঃ সভাসক্ষো জিতেন্দ্রিয়ঃ। নৈবং বিধাঃ প্রমুহুত্তে নর। ক্সাঞ্চিদাপদি॥ ১১॥ দেবৈরপ্যাপদঃ প্রাপ্তাশ্চরৈশ্চ বছশন্ত্রণা। তত্ত্ব সপভানাং নিগ্রহার্থং মহাম্মভিঃ ॥ ১২ ॥ हेट्छन निषधः आशा शिति अञ्चा अप जिमा। ছল্লেনোষ্য কুতং কর্মা দ্বিষতাঞ্চ বিনিগ্রহে॥ ১৩॥ বিষ্ণুনাশ্বশিরঃ প্রাপ্য তথাদিত্যা নিবৎস্থতা। গর্ত্তে বধার্থং দৈত্যানামজ্ঞাতেনোষিত । চিরম্॥ ১৪॥ প্ৰাপ্য বামনৰপেণ প্ৰচ্ছন্নং ব্ৰহ্মৰপিণা। বলের্যথা হৃত্ত রাজ্যং বিক্রমৈস্তচ্চ তে প্রান্তম ॥ ১৫ ॥ 🛫 তা নিনেন যজাপ: প্রবিশ্ব জ্লুমাসতা। বিবুধানাং ক্লভং কর্মা ভচ্চ সর্বাৎ প্রভং ত্বযা॥ ১৬॥ প্রচ্ছন্নঞ্চাপি ধর্মজ্ঞ ! হরিণারিবিনিগ্রহে। বজ্র প্রবিশ্ব শক্রম্ব যৎ কুতং ভচ্চ তে প্রভন্॥ ১৭॥ উর্বেণ বদতা চ্ছন্নসূরৌ ব্রহ্মর্যিণা তদা। য়ৎ কুতং তাত! দেবেষু কর্মা তাত্তেইনঘ। প্রতন্॥ ১৮॥ এব বিবস্বতা তাত! ছরেনোত্তমতেজ্যা। নিৰ্দন্ধাঃ শাত্ৰবাঃ সৰ্কে বসতা ভুবি সৰ্কাশঃ॥ ১৯॥ বিষ্ণুনা বসতা চাপি গৃহে দুশ্রথম্ভ বৈ। দশগ্রীবো হতশ্রন্প-শংযুগে ভীমকর্মণা ॥ ২•॥ এবমেব মহাত্মানঃ প্রচ্ছনান্তত্ত তত্ত হ। অজয্ঞাত্তবান যুদ্ধে তথা ত্বমপি জেষ্যসি ॥ ২১॥ তথা ধৌম্যেন ধর্মজ্ঞা বাক্যৈঃ সংপরিতোষিতঃ। শাস্ত্রবুদ্ধ্যা সুবুদ্ধ্যা চ ন চচাল যুধিষ্ঠিরঃ॥ ২২ ॥ ॥ ५५ ॥ ७२ ॥ छेबारांमर क्वा ॥ ५० ॥ ५८ ॥ ५८ ॥ ५० ॥ ५० ॥ 11. २० ॥ २১ ॥ निष्ठांन ছत्नुन भवन्वध्य नाजीक्ष्यतान् ॥ २२ ॥ जानीरवां ज्

ष्यथाद्ववीग्रहावोङ्डींगरमत्ना महावनः । রাজান বলিনাং ভোঠো গিরা সংপরিহর্ষয়ন্। ২০॥ অবৈক্ষা মহারাজ ! এব গাণ্ডীবধন্তব। ধর্মানুগত্যা বুদ্ধা। ন কিঞ্চিৎ সাহস্ কৃত্য্॥ ২৪॥ সহদেবো মথা নিত্য নকুল চ নিবারিতৌ । मक्ति विश्वशास एकाः मेळूनाः जीमविकस्मी। २०॥ ন বয় তৎ প্রহাম্বামো যাম্মিন্ মোক্ষ্যতি নো ভবান্। ভবান বিধত্তাং তৎ সর্বাং ক্ষিপ্র জেষ্যামহেরিপুন্ ॥ ২৬ ॥ ইত্যুক্তে ভীমদেনের ব্রাহ্মণাঃ পর্মাশিষা। উক্তাপুক্তাভরতান্যথা স্বানুষানু যসুপ্তান্॥ ২৭ । गर्व दिनविदना भूथा। य उत्या भूनयस्था। चारमञ्रु यथानाय∿ श्रूनर्मनका क्क्रया ॥ कि ।॥ गह (बीटमान विवाद मुख्या श्रम हु शा खुरी: ... खेलाय व्ययपूर्वीताः कृष्णामानाय**्रीयनः ॥** २० ॥ १ কোশমাত্রমূপাগমা তত্মাদ্দেশারিমিত্তঃ। শোভতে মনুজব্যান্তাশ্ছনবাদার্থমুদ্যতাঃ॥ ৩০॥ প্রবৃণাক্তবিদঃ সর্বে সর্বে মন্ত্রবিশারদাঃ। সিন্ধিবিগ্রহকালজ্ঞা মন্ত্রায সমুপাবিশন্॥ ৩১॥

ইতি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্রাং সংহিতায়া বৈষাসিক্যাং আরণ্যকে পর্বাণি আরণেযপর্বাণি অজ্ঞাতবাসমন্ত্রণে পঞ্চদশাধিকত্রিশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩১৫॥

সমাপ্তমারণেয় পর্ব।

আশীষং প্রমৃত্য ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ মন্ত্রার বিচারার্থন ॥ ৩১ ॥ ইতিল শ্রমংপদবাক্য প্রমাণ ক্ষর্যবাদাধুরন্ধর চতুধরি বংশাবতং সংগাবিন্দ স্থার স্থানালিকঠন্ত হতো ভারত ভারদীপে আরণ্য পর্বার্থন প্রকাশে পঞ্চদশানিক বিশ্বভারেশ্যেগ্রঃ ॥ ৩১৫ ॥

ত্র প্রতিষ্ঠিত ক্রিপ্ত ক্রি

প্রতিক্রি তিনি তিনি তিনি তিনি তিনিতার তি ইদমারণ্যক^ অন্থা মহাপাপেঃ প্রমূচ্যতে।

অধনোধনমাপ্নোতি পুত্রপোত্র সমন্নিতঃ ॥ ১॥

যণ যং প্রার্থাতেকামং তং তং প্রাপ্নোত্য সংশামণ।
নারীবাপুরুষোবাপি শুচিঃ প্রয়তমানসঃ ॥ ২॥
আরণ্যকে প্রতিই বিজ্বানান পায়সাদিভিঃ।
ক্রেন্ত্রামুক্তর্বার্থার ক্রেন্ত্রার্থার প্রপুজিতান ॥ ৩॥
বিজ্বান্যকরে ক্রেন্ত্রার্থার প্রাক্তরা । ৪॥
ভূতানিমুনরো দেব্যস্তথাপিত গণাশ্চরে।
বাচকং পুজয়েচ্চক্ত্যা বস্তানিঃ স্বর্ণভূষণেঃ॥ ৫॥
বিশেষতস্ত্রাংগিলাদেরাতুজপ পাইকে।
কাংসাদেহিরৌপাখুরা স্বর্ণশৃসী স ভূষণা।
পাত্নাং পরিতোষার্থান দ্যাদন্ধ দিজাত্যে॥ ৬॥
আরণ্যকাথ্য মাখ্যানং শৃণুয়াদেযানরোক্ষঃ।
স সক্ষকামমাপ্নোভি পুনঃ স্বর্গতিমাপ্নুয়াৎ॥ ৭॥
ইত্যারণ্যকে প্রবণ মহিমা দানবিধিশ্চ সমাপ্তঃ।